ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २४५१/५७ — घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८१

पौष शुक्ल ५, रविवार, सम्वत् २०४३ वि०, दिनांक ४ जनवरी १९८७

आर्य समाज मीरजापुर के वार्षिकोत्सव में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध सरस्वती द्वारा सऊदी अरब में राजकुमार भारद्वाज की गिरफ्तारी की कड़ी निन्दा

Mo-5

११ जनवरी १९८७ को सत्यार्थ प्रकाश रक्षा दिवस और १४ जनवरी १९८७ को अरब दूतावास पर प्रचंड प्रदर्शन की घोषणा

सार्वदेशिक सभा सऊदी अरब सरकार द्वारा भारत से नौकरी पर गये श्री राजकुमार भारद्वाज को महर्षि दयानन्द कृत अमर वैदिक ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश रखने पर जेल भेजने की कड़ी निन्दा करती है। यद्यपि भारत सरकार ने अरब सरकार से इस मामले में उच्चस्तरीय कार्यवाही करके उन्हें जेल से छुड़ाने का आश्वासन दिया है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने घोषणा की है कि यदि श्री राजकुमार भारद्वाज को जल्दी रिहा न किया गया तो देश और विदेश में जहाँ-जहाँ भी आर्य समाज के संगठन हैं, आगामी ११ जनवरी १९८७ को विरोध स्वरूप सत्यार्थ प्रकाश रक्षा दिवस मनाया जायेगा और १४ जनवरी १९८७ को दिल्ली स्थित अरब दूतावास पर प्रचण्ड प्रदर्शन किया जायेगा, जिसमें दिल्ली के आस-पास और बाहर के भी हजारों लोग सम्मिलित होंगे।

(विस्तृत विवरण भीतर के पृष्ठों पर पढ़ें)

शुभ नव वर्ष

हे विभु सदा आनन्द युत नव वर्ष यह अघमर्ष हो।
सद्भावना सद्बुद्धि हो, दारिद्र्य का अपकर्ष हो।
विकसित समुचा देश हो, सब भाँति से उत्कर्ष हो।
विद्या तथा वीरत्व का फिर केन्द्र भारत वर्ष हो।

—राजर्षि रणञ्जय सिंह
भूपति भवन, अमेठी राज्य (सुलतानपुर)

हिन्दी के अनन्य प्रेमी राष्ट्रीय नेता श्री वासुदेव सिंह दिवंगत

इस महान क्षति की पूर्ति कौन करेगा

लखनऊ, २३ दिसम्बर ८६ श्री वासुदेव सिंह भूतपूर्व अध्यक्ष विधान सभा तथा भूतपूर्व खाद्य और नागरिक पूर्ति मन्त्री का आज ७१ वर्ष की आयु में हृदयाघात के कारण निधन हो गया। वे अपने पीछे पत्नी और एक पुत्र को छोड़ गये हैं।

प्रवक्ता श्री वासुदेव सिंह महात्मा गाँधी तथा समाजवादी नेता डा० राम मनोहर लोहिया के कट्टर अनुगामी थे और राष्ट्र भाषा हिन्दी के अनन्य भक्त तथा समर्थक थे। उनका जन्म २०/११/१९१५ को प्रतापगढ़ जनपद के पट्टी ग्राम के एक कृषक परिवार में हुआ था। प्रतापगढ़ में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त वे वाराणसी और इलाहाबाद अध्ययन के निमित्त गये जहाँ से उन्होंने एम० ए० की उपाधि प्राप्त की।

वर्ष १९६७ में वे उत्तर प्रदेश विधान सभा के मध्यवर्ती चुनाव में संयुक्त समाजवादी पार्टी के अभ्यर्थी बन कर निर्वाचित हुए। पुनः वर्ष १९७४ तथा १९७७ में कांग्रेस (आई) के अभ्यर्थी बन कर पट्टी क्षेत्र से निर्वाचित हुए। १९६९ से १९७४ तक वे विधान सभा के डिप्टी अध्यक्ष के पद पर रहे और वर्ष १९७४ में पुनः निर्वाचित होने पर अध्यक्ष के पद पर प्रतिष्ठित हुए।

आर्य मित्र परिवार अपनी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के समस्त अधिकारियों की ओर से इस महान शोक में अपनी संवेदना प्रकट करता है। प्रभु से दिवंगत आत्मा को शांति तथा उनके वियोग में संतप्त पारिवारिक जनों, सम्बन्धियों तथा मित्रों को धैर्य प्रदान करने हेतु परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है।

—सम्पादक मण्डल

वार्षिक शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२०)
छमाही	१०)
विदेश में	७ पौंड
एक प्रति	४५ पैसे

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी

सम्पादक मण्डल—
दिवाकालिका 'बसन्त' 'वेद वारिधि' — आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए. — आचार्य देवव्रत अवस्थी

वर्ष ९०
अंक

ले आज मौन अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है।।

—सारस्वत मोहन मनीषी

सम्पादकीय—रविवार २८ दिसम्बर १९८६ दयानन्दाब्द १६२

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

हवन श्रुत : ! आदित्यास : !! अभिधेतन

आज केवल स्वदेश में ही नहीं, वरन् विश्व के अन्य देशों मे भी भारत के पजाब प्रदेश के आतङ्कवाद की चर्चा हो रही है। हत्यारे इतने निर्मम हो गए हैं कि महिलाओ और बच्चो तक को गोलियो से भून रहे हैं। डकैतो की भाति धुआधार लूट पाट कर रहे हैं और उन की धमकियों से भयभीत हो कर अथवा निराश्रित किए जाने पर अल्प सख्यक वर्ग पजाब छोड़ कर धीरे धीरे अन्य प्रदेशो मे जा रहा है। निस्सन्देह यह स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्य समाज की जो माग भारत सरकार के सम्मुख रखी थी कि बरनाला सरकार को तुरन्त पदच्युत कर के ५ वर्ष के लिए राष्ट्रपति शासन लागू किया जाय तथा नागरिकों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सेना को सौंपा जाए उस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया जिसके कारण असुरक्षा की भावना से अल्प सख्यको के पलायन मे धीरे-धीरे वृद्धि हो रही है।

सहस्रो की सख्या मे आए हुए इन शरणार्थियो की सहायतार्थ जहा अनेक सस्थाए कार्यरत है, वहा सब से अधिक ठोस कार्य आर्य समाज की शिरो मणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली कर रही है। इस शिरोमणि सस्था के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी इन विस्थापितो की सहायता के लिए रात दिन दौड धूप कर रहे है। उनके द्वारा २४ घंटे खुले हुए है। यदि किसी के आवास की व्यवस्था का प्रश्न है तो उस का तुरन्त समाधान किया जा रहा है। प्रत्येक विस्थापित परिवार को सरकार से १,००० की राशि प्रति मास दिलवाना, आवास गृहो का आवटन करवाना और इस शीत काल मे सर्दी से बचाने के लिए हजारो रजाइयों का बाटना तथा सरकार विरोधी नारे लगाने पर बन्दी बनाए जाने पर उन्हे छुडवाना आदि अनेक कार्यों को उन्होने किया जो अत्यन्त सराहनीय है। पूज्य स्वामी जी ने इस महान कार्य के लिए आर्थिक सहायता की जो अपील निकाली है, उस मे अपनी आहुति देना प्रत्येक आर्य का नैतिक कर्त्तव्य है। वेद ने इन व्यथित मानवो की सहायतार्थ यह प्रेरणा दी है—

जीवान्नो अभिधेतनादित्यास पुरा हथात्।

कद्ध स्थ हवन श्रुत । (ऋ० ८-६७-५)

अर्थात् हे (आदित्यास) अदिति के पुत्रो, पुत्रियो [हमारे] (हथात् पुरा) मरने से पहले (न जीवान्) हम जीवितो के लिए (हवन श्रुत) पुकार सुनने वालो। (कद्ध स्थ) जहा कहीं पर भी हो (अभिधेतन) सब ओर से दौड कर [सहायतार्थ] आओ।

आप ही 'आदित्यास' अर्थात् अदिति (अखण्ड शक्ति) के वास्तविक पुत्र और पुत्रियाँ हैं और इन के लिये ही वेद ने कहा है—

ते हि पुत्रासो अदितेः प्र जीवसे मर्त्याय। ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम्॥

(ऋ० १०-१८५-३ य० ३-३३)

अर्थात् (ते हि) वे ही (अदितेः पुत्रास) अदिति के पुत्र और पुत्रिया है जो (मर्त्याय जीवसे) मरणशीलो को जीवन देने के निमित्त (अजस्रम् ज्योतिः प्र यच्छन्ति) अजस्र ज्योति प्रदान करते हैं। वेदानुसार मानवों की दो ही कोटिया होती हैं एक अनार्य जो मायावी और धूर्त होते हैं। आसुरी वृत्तियो का पोषण कर वे दुख दारिद्र्य और भय का अन्धकार फैलाते है तथा दूसरे आर्य जो दैवी सम्पदाओ से युक्त हो कर मानव समाज का सतत कल्याण करने के निमित्त दिव्य ज्ञान के प्रकाश का प्रसार करते है और उन्हे सुखी, वैभव शाली और निर्भीक बनाते है

अपने को जो परमात्मा के भक्त कहते है, आज उनकी परीक्षा का समय आया है। केवल माला फेरना जाप करना, स्तुति कीर्तन करना, मौखिक सहानुभूति व्यक्त करना ही परमात्मा की पूजा नहीं है। 'भज' धातु से बने हुए शब्द 'भक्ति' का अर्थ है 'सेवायाम्' और सेवा की जाती है, दीनो, दुखियो और असहायो की। वास्तविक ईश भक्ति यही है और ऐसे सच्चे भक्तो के द्वारा की गई स्तुतियां ही उन्हे आगे बढ़ाने मे उन का आध्यात्मिक विकास करने मे सहायक होतीं है। वेद ने इस की पुष्टि करते हुए कहा है—

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम्।
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये॥

(साम० ४४)

अर्थात् (य विश्वा वसु दयते) जो सम्पूर्ण सम्पदा का दान करता है (जनानाम मन्द्र) जनो का आनन्दित करने के लिये [ऐसे ही] (होता) याज्ञिक श्रेष्ठ कर्मा [को] (अस्मै अग्नये प्रथमानि स्तोमा प्र यन्तु) उस अग्नी गति शील की स्तुतिया इस भाति बढती है (न) जैसे (मधो प्रथमानि पात्रा) जैसे मधु के व्यापक पात्र दानशीलता की इसी सत्यता को संत कबीर ने भी दर्शाते हुए कहा—

चिडी चोंच भर लै गई, नदि न घटियो नीर।
दान दिए धन ना घटे, कह गए दास कबीर॥

दानशीलता के कारण आज भी दानवीर कर्ण और भामा शाह अमरत्व को प्राप्त है। अब यह देखना है कि वर्तमान परिस्थितियो मे आर्य जगत के कितने दान वीर कर्ण और भामाशाह आगे आते है और स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती के द्वारा की गई अपील को सार्थक कर, परमात्मा के असली और अमृत पुत्रिया कहलाने का गौरव प्राप्त करते है।

—वसन्त

पजाब के हिन्दू पीड़ितो के लिए अपील

ताजा सूचना के अनुसार पजाब से ३६ हजार से अधिक हिन्दू परिवार दिल्ली आ चुके हैं। इनकी सहायता और पुनर्वास के लिए बडी मात्रा मे धन की आवश्यकता है। सर्दी का मौसम प्रारम्भ हो चुका है। विस्थापितो के लिये गरम कपडो की तुरन्त आवश्यकता है। जिस-जिस सज्जन तक मेरी अपील पहुचे, उन सबसे प्रार्थना है कि धन और सामान के रूप मे अपनी सहायता तत्काल भेजें। देरी न करें, अपनी सहायता आज ही भेजें।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धन और सामान भेजने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली—११०००२

संपादकीय टिप्पणी

★ ★ ★

राष्ट्र भाषा का विरोध राष्ट्रद्रोह

८ दिसम्बर ८६ को तमिलनाड के विभिन्न स्थलो से द्रविड मुनेत्र कषगम के अध्यक्ष श्री करुणानिधि सहित ५००० व्यक्ति हिन्दी विरोध के आन्दोलन के अन्तिम चरण मे गिरफ्तार किये गये। उन्होने अपना अन्तिमचरण सविधान की उस धारा को जिसमे लिखा था कि सघ की सरकारी भाषा हिन्दी होगी जिसकी लिपि देव नागरी होगी' फाडकर जला कर पूर्ण करने की चेष्टा की।

श्री करुणानिधि एक सुप्रसिद्ध नेता हैं एक पार्टी विशेष के राष्ट्रीय नेता है। उनके सरक्षण मे राष्ट्र भाषा-जिसने आज नही देश के स्वाधीनता से पूर्व सम्पर्क भाषा के रुप में सम्पूर्ण राष्ट्र वादी शक्तियो को सगठित किया। स्वाधीनता आन्दोलन को शक्ति दी। देश को स्वतत्र कराने मे जिसकी सर्वाधिक महत्व पूर्ण भूमिका रही। स्वाधीनता के साथ ही जिसे राष्ट्र भाषा के सम्मानित पद पर प्रतिष्ठापित करने के लिए राष्ट्र की सर्व प्रथम लोक सभा ने निर्णय लिया परन्तु केन्द्र की ढिलाई और अंग्रेजी दासता के पोषक तत्वो की ढिठाई से उसे वह गौरव नहीं मिल पा रहा।—का अपमान हो रहा है।

इन आन्दोलन कर्ताओ ने ४ बसें फूकी। बम विस्फोट किये पथराव किये। मार धाड़ की। यह कौन से विरोध का स्वरूप है। जो स्वीकृत राष्ट्र भाषा है उसका विरोध राष्ट्र द्रोह है। क्या यह एक पार्टी विशेष के ही लोगों का तामिलनाड है जो वे अपनी इच्छानुसार सरकार को मनवाने के लिए राष्ट्र विघाती हथ कण्डे स्तेमाल कर रहे है।

देश मे राजनीति से प्रेरित, अपनी नेतागिरी को चमकाने, एम० पी०, एम० एल० ए० व मिनिस्टर बनने की ललक मे विध्वसकारी व्यक्तियो को उभारते हैं। जनता मे सबसे जल्दी नाम फैलाने का सबसे आसान उपाय उनकी नजर मे यही है।

देश की आम जनता में हिन्दी के प्रति लगाव है। आदर है। प्रेम है। श्रद्धा है। जनसामान्य स्वीकार करता है कि देश को एक सूत्र मे बांधने की एक मात्र भाषा हिन्दी है। अंग्रेजी उसके विपरीत विघटन की प्रवर्तिका है। अत राजनीतिक नेताओ से विनम्र अनुरोध है कि वे अपनी नेतागिरी के लोभ को छोड़ें देश का हित देखें विदेशी भाषा कभी किसी देश को गौरवान्वित नहीं कर सकती। अत अंग्रेजी का मोह छोड़े। कुछ यह लचर दलील देते है कि हिन्दी में पूर्ण साहित्य नही है। यह उनका थोथा प्रोपोगण्डा है। हिन्दी मे अपार साहित्य ज्ञान-विज्ञान से भरि पूर्ण ग्रन्थ विद्यमान है। सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान सारे विश्व मे वेदो से फैला है। उनका रूप विध्वस कारी केवल इस लिए बन रहा है कि वेद के विपरीत उनका चिन्तन व निर्माण हो रहा है। संस्कृत हिन्दी की जननी है और दोनों की लिपि देव नागरी होने के कारण दोनो सर्वाधिक निकट हैं। इस लिए उसमे पूर्णता है। फिर भी जो भी अपेक्षा हो अन्य भाषाओं के ग्रन्थों का हिन्दी मे अनुवाद कराया जावे परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर मात्र हिन्दी को ही एक भाषा के रूप मे स्वीकार किया जावे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की सूचनाए—

कैशबुक

सभा के समस्त पदाधिकारियो, अन्तरग सदस्यो एव उपदेशको-प्रचारकों तथा निरीक्षको को सूचित किया जाता है कि सभा की कैशबुक ३१ जनवरी १९८७ तक खुली रहेगी अत अपना-अपना हिसाब शीघ्राति शीघ्र भेजने की कृपा करें ताकि उसका जमा खच वष ८६ मे किया जा सके।

सभा का वर्ष

उत्तर प्रदेश के समस्त आय समाजो को विदित हो कि सभा व समाजो का ३१ दिसम्बर १९८६ को वष समाप्त हो गया है। सभा के उपनियमानुसार आर्य समाजो को चाहिये कि १५ जनवरी १९८७ तक आर्य सभासदो की सूची बनावें, तत्पश्चात् २८ फरवरी १९८७ तक अपने-अपने समाजो एव सस्थाओ का निर्वाचन करें ओर प्रदेशीय सभा के लिये प्रतिनिधियो का भी निर्वाचन करें।

२—वार्षिक प्रतिनिधि चित्र फाम सभा कार्यालय से शीघ्र भेजे जाने की व्यवस्था हो रही है। पहुचने पर समाजो को चाहिए कि नियमानु-सार उनके स्थानो की पूर्ति करके भेजने की कृपा करें।

—मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

—पिथौरागढ़, डा० कच्चाहारी जिला कुष्ठ अधिकारी ५ जनवरी १९८७ से छह सप्ताह का कुष्ठ प्रशिक्षण "केन्द्रीय कुष्ठ शिक्षण एव अनुसधान सस्थान तिरुमनी चिन्गलपट—६०३००१ (तमिलनाडू)" मे प्राप्त कर २० सूत्री कार्यक्रम मे कुष्ठ उन्मूलन हेतु सेवा देंगे।

—लक्ष्मीचन्द्र मित्तल

सम्पादक की डाक

सविनय निवेदन है कि मै शताब्दी समारोह के अवसर पर लखनऊ गया था। वेद सम्मेलन मे ब्र० अशोक का भी मच पर वेद मन्त्र तथा व्याख्यान हुआ था। इससे सारी सभा अत्यन्त प्रभावित हुई थी।

अशोक को वेद प्रचार के लिये ही अध्ययन कराया गया तथा अध्य-यन अभी भी कर रहा है।

अशोक एक मास का था उसी समय नेत्रहीन हो गया। तीन-चार वर्ष सारे भारत मे आँख की उपचार के लिये भटकता रहा। ठीक नहीं हुआ। बोलने लगा तब से वेद मन्त्र का अभ्यास कराना आरम्भ किया गया तथा साथ-साथ सगीत और वैदिक सिद्धात पर बोलने का भी अभ्यास करता रहा। आठ वष की आयु से बगाल से जम्मू कश्मीर तक भ्रमण कर वेद प्रचार करता रहा। साथ-साथ अध्ययन भी करता रहा १९८३ मे स्वामी ओमानन्द जी के कन्या गुरुकुल, नरेला दिल्ली मे समस्त गुरुकुल के विद्यार्थियो मे सपूर्ण यजुर्वेद कण्ठस्थ प्रतियोगिता मे इन्हे प्रथम पुरस्कार मिला। सस्कार शास्त्री परीक्षा पास किया प्रथम श्रेणी से १० वर्ष की आयु मे दो शास्त्रीय सगीत की डिग्री प्रभाकर प्रयाग से तथा विशारद चण्डीगढ़ से प्राप्त किया। बगाल से जम्मू-कश्मीर के सैकडो आर्य समाज का लिखित प्रमाण पत्र मेरे पास है। का मेरा एक मात्र उद्देश्य है वेद प्रचार करने का इसके लिए आप लोगो से सहायता तथा सहयोग चाहता हू।

भवदीय

—रामेश्वर शर्मा वैष्णव बाध
पो० बर्नपुर, जि० बर्दवान/प० बगाल

केन्द्र सरकार से भी अनुरोध है कि वह अपनी ढुलमुलनीति छोडे। इस प्रकार के आन्दोलनो को कड़ाई से कुचल दे। ओर देश के सविधान के अनुरूप हिन्दी को उसके पुनीत पद पर सुशोभित करे। प्रधान मत्री सरकार के अन्य मत्री, दूर दर्शन पर, आकाशवाणी में अर्थात् देश विदेश की जनता के समक्ष अपने विचार हिन्दी में ही प्रस्तुत करने का सकल्प लें। इससे विश्व में राष्ट्र का गौरव बढ़ेगा।

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

स्वामी दयानन्द के प्रशंसक

महाराजा ईश्वरी नारायण सिंह, काशी नरेश

लेखक डा० —भवानी लाल भारतीय चण्डीगढ

जिस समय स्वामी दयानन्द ने काशी जाकर वहाँ के पण्डितो को मूर्तिपूजा की वैदिकता सिद्ध करने की चुनौती दी, उस समय काशी की गद्दी पर महाराजा ईश्वरी नारायण सिंह विराजमान थे। इनके पिता का नाम महाराजा उदितनारायण सिंह था। इनका जन्म १८२१ ई० मे हुआ था। १८३५ ई० मे चौदह वर्ष की आयु मे वे गद्दी पर बैठे तथा ५४ वर्ष तक इन्होने काशी राज्य का शासन किया। १८८९ ई० मे इनका निधन हुआ। महाराजा ईश्वरी नारायण सिंह विद्या व्यसनी, विद्वानों के सम्मानकर्ता तथा भारतीय संस्कृति के उपासक थे। उनकी सभा मे अनेक योग्य पंडित रहते थे जिन्हें राज्य की ओर से संरक्षण तथा सम्मान प्राप्त था।

जब १८६९ ई० मे स्वामी दयानन्द काशी आये तो सर्वप्रथम उन्होने राजधानी रामनगर मे एक वृक्ष के नीचे डेरा डाला। एक सन्यासी के आगमन तथा उसके द्वारा धारा प्रवाह मूर्ति पूजा खण्डन को सुन कर काशी के विद्वत् समाज में हलचल मच गई। जब महाराजा को स्वामीजी के आने का पता लगा तो उन्होने उनके आहारादि के लिए प्रतिदिन आठ आने व्यय करने का आदेश अपने कर्मचारियो को दे दिया। परन्तु वे स्वामी दयानन्द द्वारा मूर्तिपूजा के खण्डन को सुन कर अप्रसन्न ही हुए और काशी की पण्डित मण्डली को स्वामी जी से शास्त्रार्थ कर उन्हे पराजित करने के लिए कहा। स्वामी दयानन्द के जीवनी लेखक प० देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय ने लिखा है कि "राम नगर नरेश पार्थिव पूजा करते थे और अपने हाथ से पार्थिव लिंग बनाया करते थे। यह देख कर स्वामी जी ने उनसे कहा कि आप यह कुम्हार का खेल क्या कर रहे हैं।" परन्तु प० लेख राम ने फर्रूखाबाद निवासी प० बलदेव प्रसाद शुक्ल की साक्षी से लिखा है कि महाराजा के अनुरोध करने पर भी स्वामी जी उनसे भेंट करने के लिये नहीं गये और कहा कि यदि राजा की उनसे मिलने की इच्छा है तो वे स्वयं चले आवें अन्तत दोनो की भेंट नहीं हो सकी। महाराजा साहब यद्यपि स्वामीजी द्वारा मूर्ति पूजा का विरोध करना पसन्द नहीं करते थे, किंतु वे यह भी नहीं चाहते थे कि उनका कोई अपमान करे। जब उन्हे पता चला कि एक बार ५०-६० वैरागियो की भीड ने स्वामी जी के निकट जाकर उन्हे अपशब्द कहे हैं तो महाराज ने उन्हें बुरा भला कहा और चेता-

विश्व-वैचित्र्य

वनी दी की स्वामी जी हमारे पूज्य है। वे सन्यासी है। यदि कोई उनसे शास्त्रार्थ करना चाहे तो बेशक करे, किंतु उन्हे कुवाच्य कहना कभी भी सहन नहीं किया जायगा।

महाराजा की प्रेरणा से ही स्वामी दयानन्द और काशी के पण्डितो के बीच १६ नवम्बर १८६९ के दिन दुर्गाकुण्ड के निकट आनन्द बाग मे मूर्तिपूजा पर वह प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था, जिसका विवरण मुद्रित रूप मे उपलब्ध होता है। महाराजा ईश्वरी नारायण सिंह मूर्तिपूजा को शास्त्रोक्त सिद्ध करवाने के लिये इतने अधिक उत्सुक थे कि उन्होने शास्त्रार्थ के सभापति के रूप मे न्याय तथा सत्य को तिलाञ्जलि देने मे भी कोई संकोच नहीं किया। प्रथम तो उन्होने स्वामी जी के सहायकों के रूप मे शास्त्रार्थ मे उपस्थित रहने वाले प० ज्योति स्वरूप उदासीन तथा अन्य परमहंसो के शास्त्रार्थ स्थल मे प्रविष्ट होने मे ही बाधा दी, किंतु प० रघुनाथ प्रसाद कोतवाल द्वारा हस्तक्षेप किये जाने पर उन्हें शास्त्रार्थ स्थान मे प्रवेश तो मिल गया किंतु महाराजा ने स्वयं हाथ पकड कर पंडित ज्योतिस्वरूप को स्वामी जी के पास से उठा दिया। उन्हे भय था कि कहीं उक्त पण्डित स्वामी जी को शास्त्रार्थ मे सहायता न पहुचाये। कोतवाल द्वारा इस अन्याय का विरोध किये जाने पर भी महाराजा ने ध्यान नहीं दिया।

काशी शास्त्रार्थ का विस्तृत विवरण अनेकशः प्रकाशित हो चुका है। शास्त्रार्थ के अन्तिम चरण में जब स्वामी विशुद्धानन्द ने स्वामी दयानंद के द्वारा अपने पक्ष की पूर्णरूपेण प्रस्तुत किये जाने का अवसर दिये बिना ही उनके पराजित होने की घोषणा कर दी, तो महाराजा ने भी उनका साथ देते हुए ताली बजा, इस शास्त्रार्थ के गम्भीर वातावरण को नष्ट कर दिया। प० सत्यव्रत सामश्रमी ने स्वलिखित काशी शास्त्रार्थ के विवरण मे यह स्वीकार किया है कि स्वयं महाराजा को भी शास्त्रार्थ के इस अन्त को देख कर सन्तुष्टि नहीं हुई थी। किंतु यह कहना भी ठीक नहीं है कि महाराजा काशी शास्त्रार्थ के परिणाम से पूर्णतया असन्तुष्ट ही थे। देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के अनुसार जब एक बंगाली बाबू रजनीकान्त मुखोपाध्याय ने महाराजा को उपलम्भ पूर्वक कहा कि उनकी उपस्थिति मे ही पण्डितो ने स्वामी दयानन्द का कैसा अपमान किया था, तो महाराजा ने इतना ही कहा कि पण्डितो का शास्त्रार्थ का ढंग चाहे कितना ही नगण्य क्यो न था, किन्तु प्रचलित धर्म की रक्षा तो येन केन प्रकारेण करनी ही थी।

परन्तु यह भी सत्य है कि एक वीतराग सन्यासी के प्रति किये गये इस अन्यायपूर्ण आचरण ने महाराजा के हृदय को अन्तत पश्चातापाभिमुख किया और जब स्वामी दयानन्द १८७४ ई० मे पुन काशी आये तो राजा ने अपनी गाडी भेज कर उन्हे राम नगर के राजप्रसाद मे आमन्त्रित किया। स्वामी जी ने साधु व्यवहार दास के परामर्श को मान कर राजमहल मे जाना स्वीकार कर लिया। जब वे काशीराज निवास पर पहुचे तो महाराजा ने उन्हे स्वयं सिंहासन पर बैठा कर उनका सत्कार किया और पूर्व वर्णित शास्त्रार्थ मे प्रदर्शित व्यवहार के लिए क्षमायाचना की।

उदार सन्यासी को क्षमादान करने मे भला क्यो संकोच होने लगा। महाराजा बनारस के सभा पण्डित ताराचरण तर्करत्न ही काशी शास्त्रार्थ मे पौराणिक समुदाय के प्रमुख प्रवक्ता थे। उन्होंने हुगली शास्त्रार्थ के समय स्वीकार किया था कि यदि वे भी स्वामी जी की ही भांति सत्य कहने लगे तो महाराजा काशी उन्हें अपनी सभा से पृथक् कर देंगे। *

शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार

लेखक वैद्य, हकीम —श्री राम शंकर गुप्त
प्रधान आर्य समाज जलेसर मुकाम जलेसर
टाऊन, जिला एटा उत्तर प्रदेश

दयानन्द सन्देश मासिक पत्र का अक्टूबर सन १९८६ का अंक हमारी दृष्टि पथ पर है। इस अंक में महाशय पं० वीरेन्द्र मुनि शास्त्री एम० ए० उपाध्यक्ष विश्व वेद परिषद सम्पादक वेद ज्योति वेद सदन सी. ८१७ महानगर लखनऊ उत्तर प्रदेश का एक लेख "आयु केवल पिछले जन्मों के ही कर्म से निश्चित नहीं है" नामी प्रकाशित हुआ है, यह लेख महाशय वीरेन्द्र मुनि ने मेरे आर्य मित्र साप्ताहिक पत्र में प्रकाशित "आयु का ईश्वर द्वारा निश्चित निर्धारित होना और स्थावर में जीव का होना वैदिक सिद्धांत है" नामक लेख के प्रतिकार स्वरूप लिखा है। इस लेख में लेखक ने जो बातें मेरे प्रति लिखी है उनका उत्तर तो मै देना नहीं चाहता पर शेष रही बातों का उत्तर दिया जाता है।

लेखक महानुभाव लिखते है कि परन्तुहमें खेदहै कि आर्यसमाज जलेसर के प्रधान श्री गुप्त जी से मेरा लम्बा पत्र व्यवहार भी हुआ है उस पत्र व्यवहार का कोई लाभ न देख कर मैंने उन्हें लिखना बंद कर दिया मानव की १०० वर्ष निश्चित आयु मानने पर जब मैंने शताधिक वर्षों के उदाहरण दिये तो गुप्त जी ने सबको झूठा बतला कर अमान्य कर दिये।

मेरा कोई पत्र व्यवहार आयु के घटने बढ़ने के विषय में महाशय वीरेन्द्र मुनि से नहीं हुआ। न उन्होंने मुझे शत वर्ष से अधिक आयु को भोग कर दिवंगत होने वाले महाशयों के नाम दर्शाये मेरा उनसे सृष्टि सम्वत् के विषय मे अवश्य पत्राचार हुआ है। उन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को सृष्टि सम्वत् के सम्बंध में शास्त्रार्थ की चुनौती दी थी उनके इस चुनौती को आर्य समाज जलेसर ने अपने को उसका एक अंग मानते हुए स्वीकार कर लिया और जब स्वीकारी का पत्र उन्हें लिखा गया तो उनका साहस ही समाप्त हो गया और चुप्पी साध बैठे। अब उन्होने मुझे आयु के घटने-बढ़ने के सम्बन्ध में शास्त्रार्थ की खुली चुनौती अपने इस लेख के माध्यम से दी है। इस शास्त्रार्थ की चुनौती को मै स्वीकार करता हूं। शास्त्रार्थ जलेसर मे ही होगा अनयत्र नही होगा वह जलेसर आकर शास्त्रार्थ करें।

यदि वह लेखबद्ध लिखित शास्त्रार्थ करना चाहते हैं तो उनको चाहिये कि वह अपने "वेदज्योति" पत्र के पृष्ठो को शास्त्रार्थ के लिये खोल दें और होने दें लेखबद्ध शास्त्रार्थ, देखें कौन किसको पछाड़ता है। आर्य जगत उभय पक्षो को पढ़ कर स्वयं निर्णय ले लेगा कि कौन सत्य पर है और कौन असत्य पर है। मै दोनो प्रकार से

विचार-विमर्श

शास्त्रार्थ करने के लिये प्रस्तुत हूं।

छल-कपट और दम्भ से पूर्ण मेरा लेख नहीं है मेरा लेख तो सप्रमाण और सतर्क पूर्ण है जिसको आर्य जगत ने भी स्वीकारा है। इस सम्बन्ध में मेरे पास कतिपय आर्य महाशयों के पत्र भी आये है। इसके विपरीत मुनि जी ने छल-कपट और असत्यता कासहारा लेते हुए अपने इस लेख में लिखा है कि :—

अथर्व वेद १२/५/१९ में स्पष्ट कहा है—ब्रह्मचर्येण तपसा देवामृत्युमपाघ्नित" किंतु लेखक ने इस मन्त्रांस का अर्थ नहीं लिखा कि यह मंत्रांश अथर्व के ब्रह्मचर्य सूक्त का है। इस मंत्राश का अर्थ यह हुआ कि "ब्रह्मचर्य के तप से तपे हुए देव गण मृत्यु को हटा देते हैं" इस मंत्रांश से यह बात कहाँ निकलती है कि आयु को बढ़ा लेते है। आयु का बढ़ना और बात है मृत्यु का हटना और बात है। मृत्यु तो तभी हटेगी जब जीव का मोक्ष हो जायेगा और मोक्ष की प्राप्ति योगाभ्यास से होती है और योगाभ्यास ब्रह्मचर्य के पालन से सिद्ध होता है। इस मंत्रांश से आयु का कोई सम्बन्ध नहीं है।

आगे चल कर लेखक अपने इस लेख मे "भूयश्च शरदः शतात्" वाले वेद मन्त्र का सहारा लेते हुए लिखते है कि इस वेद प्रमाण के साथ आज कल भी १०० वर्ष से अधिक आयु के मनुष्य मिलते है। इस वेद मन्त्र के सम्बन्ध में मैने अपने गत लेखों में बहुत कुछ लिखा है वही यहाँ पर भी समझ लेना चाहिए। विशेष बात यह है कि "भूयः" शब्द के अर्थ पुनः अथवा फिर के है अतः इस मंत्रांश का अर्थ होगा कि पुनः अथवा फिर शत वर्ष तक देखें, सुने और जीवें।

"भूयः" शब्द का अर्थ निश्चय ही पुनः के है और इस कारण से पारस्कर गृह सूत्र कार ने भूयश्च शरदःशतात् मंत्रका विवाह ऐसे शुभ कर्म में इस मंत्र का वियोग करते समय निषेध किया है जो इस प्रकार है :—

सं प्रियौ रोचिष्णु सुमनस्य मानौ।
जीवेम् शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतमिति॥

(पारस्कर गृह सूत्र कण्डिकाह)

इस विनयोगी मंत्र के अन्त मे इति शब्द लगा कर आगे आने वाले वाक्य "भूयश्च शरदशतात्" का पढ़ने का निषेध किया है कारण कि विवाह ऐसे शुभ अवसर पर हो भूयश्च शरदःशतात्" का पढ़ा जाना अशुभ और अमंगलिक माना जाता है अतः इस मंत्रांश से लेखक का कोई प्रयोग सिद्ध नहीं होता है और न यह मन्त्र उसकी कोई सहायता ही करता है।

अब रहा "त्र्यायुषंजमदग्ने" वाला मन्त्र। इस मन्त्र का यजुर्वेद संहिता में महर्षि का किया हुआ पदार्थ भाष्य जो है उसमें तीन सौ और चार सौ वर्ष की गन्ध मात्र भी नहीं है। इस वेद मंत्र के संबंध में मैने अपने इस लेख में और अपने गत लेखों में बहुत कुछ लिखा है वही सब यहाँ पर भी समझना चाहिए।

डूबते को तिनके का सहारा वाली कहावत को चरितार्थ करते हुये लेखक लिखते है कि "इस सम्बन्ध मे आर्य समाज अल्मोड़ा के १९८४ के वार्षिकोत्सव पर डा० स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती ने भी स्वीकार किया था कि इस जन्म में किये कर्मो से पिछले जन्म के किये कर्मो के फल में परिवर्तन, संशोधन हो सकता है।

(क्रमशः)

शुद्धि आन्दोलन

हिन्दू धर्म में दीक्षित

बुलन्दशहर, जिला आर्य समाज द्वारा आयोजित शुद्धि समारोह में तीन मुस्लिम युवकों ने स्वेच्छा से हिंदू धर्म की दीक्षा ग्रहण की। इन मुस्लिम युवकों के नाम डा० शफी उल्लाह, अशरफ, और अहमद सईद थे। डा० शफी विज्ञान व विधि स्नातक के साथ बी. ए. एम. एस. की डिग्री प्राप्त चिकित्सक हैं।

इस अवसर पर आर्य समाज के जिला मन्त्री श्री धर्मेन्द्र शास्त्री ने युवकों को गुरु मन्त्र की दीक्षा देकर यज्ञोपवीत धारण कराया। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष शिव नन्दन दास ने तीनों को यजुर्वेद भाष्य ग्रंथ भेंट किये। इन युवकों का नया नामकरण डा० सुरेन्द्र कुमार आर्य, श्रीराम आर्य व बलदेव सिंह आर्य रखा गया है। इस अवसर पर अनेक हिंदू नेता उपस्थित थे।

★ ★

४६ ईसाई परिवारों की शुद्धि

मेरठ। २७ अगस्त को बागपत के निकटवर्ती गांव सन्तोषपुर बाघू मे ३०-४० वर्षों से ईसाइयों ने ५०-६० हरिजन परिवारों को बहला-फुसला कर व धन का लालच देकर ईसाई बना लिया था। आर्य समाज बागपत (मेरठ) के तत्वाधान में ४६ परिवारो के३१५ व्यक्तियो को उनकी प्रार्थना पर एक भव्य आकर्षक समारोह में शुद्ध करके वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई। समारोह के आयोजन मे आर्य सभा तहसील बागपत व आर्य समाज व आर्य वीर दल अग्रवाल मण्डी, टटीरी मेरठ के पदाधिकारियों व सदस्यो ने सहयोग दिया। क्षेत्रीय जनता द्वारा शुद्ध हुए व्यक्तियो का पुष्पमालाओ द्वारा स्वागत किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज मन्दिर का शिलान्यास भी किया गया।

★ ★

शुद्धिकृत के घर मानस पाठ

इसी प्रकार हैदरगढ़ (बाराबंकी) के मोहम्मद सलीम ने सपरिवार हिंदू धर्म अपनाया व मोहन लाल आर्य बन गये। इन्होंने अपने घर मे मानस पाठ का आयोजन कर लगभग पाच सौ प्रतिष्ठित व्यक्तियों को भोजन कराया।

★ ★

५२ ईसाई परिवार वैदिक धर्म में दीक्षित

बागपत, आर्य समाज बागपत द्वारा आहूत वेद प्रचार सप्ताह के अन्तिम दिन जन्माष्टमी पर्वपर संन्यासी स्वामी चन्द्रदेव ने समीपवर्ती गांव बाघू में ५२ ईसाई परिवारों के लगभग साढ़े तीन सौ सदस्यों को यज्ञोपवीत धारण करा कर तथा यज्ञ में आहूति दिला कर वैदिक धर्म में दीक्षित किया। इस अवसर पर गॉव मे आर्य समाज का गठन तथा मन्दिर की स्थापना की घोषणा भी की गई।

हिंदू धर्म से नवदीक्षित व्यक्तियों ने बताया कि उन्हें लगभग तीस वर्ष पूर्व बहका कर ईसाई बना दिया गया था।

परगना मैजिस्ट्रेट श्री मुकेश कुमार गुप्ता के अनुसार कुल ४१ व्यक्तियो ने धर्मान्तरण किया है।

★ ★

मुस्लिम युवती की शुद्धि

साहबगंज (गोरखपुर) लाल डिग्गी उद्यान स्थित पंडित राम प्रसाद बिस्मिल स्मारक यज्ञशाला में आशिया नाम की एक मुस्लिम युवती को वैदिक धर्म मे दीक्षित करके उसका नाम गीतादेवी रखा गया। उसका विवाह भोला प्रसाद यादव नामक एक सज्जन से कर दिया गया।

★ ★

खुर्जा में शुद्धि समारोह

खुर्जा। अग्रवाल धर्मशाला में जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान मे शुद्धि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें तीन मुसलमानों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया। यज्ञवेदी पर जिले भर के आर्यसमाजों के हजारो की संख्या में उपस्थित जन समुदाय के सामने जिला मन्त्री श्री धर्मेन्द्र शास्त्री ने गुरुमन्त्र की दीक्षा दी और यज्ञोपवीत धारण कराया। सभा के प्रधान श्री शिवानन्द दास आर्य ने यजुर्वेद भाष्य भेंट किया। "वैदिक धर्म की जय" के नारों से आकाश गूंज उठा।

★ ★

२७ जाटव परिवार वैदिक धर्म में

मथुरा जिलान्तर्गत भीमनगर (फरह) के २१ जाटव परिवार जो अमेरिकन डालरों के आधार पर विदेशी पादरियों द्वारा दिए गए लोभ लालच के शिकार होकर कुछ साल पूर्व ईसाई बन गये थे, वेद मन्दिर मथुरा के वैदिक मिशनरियों के प्रयत्न पुरुषार्थ से दिनांक २७ जुलाई रविवार को एक विशाल समारोह के मध्य शुद्धि संस्कार द्वारा पुन अपने पूर्वजों के पवित्र वैदिक धर्म में दीक्षित हो गये हैं। पश्चात् भीमनगर में आर्य समाज की स्थापना की गई।

—प्रेम भिक्षु

★ ★

सरदारपुरा (जोधपुर) मे शुद्धि

आर्य समाज सरदारपुरा (जोधपुर) में २४ अगस्त को एक ईसाई युवती ट्रायफिम अंजना मैसी (पुत्री श्री गुडविन जेमैसी) पाली निवासी को शुद्ध कर उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। सुश्री ट्राइफिम अंजना मैसी का नया नाम अंजना आर्या रखा गया। उनका विवाह श्री महेन्द्र पुरोहित (पुत्र श्री मोहन लाल जी) के साथ संपन्न हुआ।

सद्दीक खां, सत्यप्रकाश आर्य बने

ग्राम खुसहरी (देवीगंज) [बाराबंकी] के मुस्लिम परिवार ने स्वेच्छा से हिंदू धर्म ग्रहण किया और सद्दीक खां सत्य प्रकाश आर्य बन गये। उनकी पत्नी व बच्चे भी हिंदू धर्म में प्रवेश कर गये। बाराबंकी वि० हि० प० के तत्वाधान में कार्यक्रम हुआ। क्षेत्र के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे।

[हिन्दू सभा वार्ता से साभार]

आर्य समाज मीरजापुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर पत्रकार सम्मेलन का आयोजन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती द्वारा उद्बोधन और प्रश्नों के उत्तर

मीरजापुर १८-१२-८६ आर्य समाज मीरजापुर के वार्षिकोत्सव पर समापन के पूर्व दोपहर दो बजे, आर्य समाज के अधिकारियो द्वारा एक पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें दैनिक तथा साप्ताहिक समाचार पत्रों यथा अमृत प्रभात, नार्दन इंडिया पत्रिका, स्वतन्त्र भारत, पायनियर, आज, लखनऊ मेल, जनता, जयदेश, आन्धी पानी, आर्य मित्र, कैसूर टाइम्स आदि के समाचार प्रतिनिधियों ने भाग लिया। पत्रकारो को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा--

(१) सत्यार्थ प्रकाश सुरक्षा दिवस तथा साऊदी अरब दूतावास पर प्रदर्शन

दिनांक ११-१-८७ को विश्व की समस्त आर्य समाजें सत्यार्थ प्रकाश सुरक्षा दिवस मनाएंगी तथा १४/१/८७ को साऊदी अरब के राजधानी स्थित दूतावास पर प्रचण्ड प्रदर्शन किया जायेगा जिसमे दिल्ली प्रदेश के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, पंजाब आदि से लगभग एक लाख व्यक्तियों के सम्मिलित होने की संभावना है।

इन आयोजनों की पृष्ठ भूमि यह है कि लगभग ६ मास पूर्व श्री राम कुमार भारद्वाज नामक एक भारतीय जो जींद (हरियाणा) का निवासी है, नौकरी के लिए साऊदी अरब गया। उसके पास (वैदिक धर्म अनुयायी होने के कारण) सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की एक प्रति थी जिसे पढ़ने के लिए वह अपने साथ ले गया था। उसे इस बात की जानकारी नहीं थी कि सऊदी अरब जो मुस्लिम राज्य है, वहाँ अन्य धार्मिक ग्रंथो पर पूर्ण प्रतिबन्ध है अतएव किसी के द्वारा सूचना देने पर उसे बन्दी ग्रह में डाल दिया गया है जहां पर वह अभी तक बन्द है। जेल से उसने इस सम्बन्ध में पत्र लिखा है जिसके आधार पर देश के प्रधान मन्त्री ने विदेश मन्त्रालय को जांच के आदेश दिए है। १४/१२को सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग के निश्चयानुसार साऊदी अरब के दिल्ली स्थित राजदूत को भी पत्र लिखा गया है और यदि एक मास की अवधि में उसे मुक्त नहीं किया गया तो इसके लिए आंदोलन करना आवश्यक हो जायेगा।

स्वामी जी ने पत्रकारों के प्रश्न करने पर बतलाया कि नेपाल हिंदू राष्ट्र है, वहां धर्म परिवर्तन पर तो पूर्ण प्रतिबन्ध है पर अन्य मत के व्यक्तियों द्वारा अपनी धर्म पुस्तकों को साथ रखने में कोई प्रतिबन्ध नहीं है अतएव साऊदी अरब का यह कानून न्यायोचित नहीं है।

(२) दक्षिण भारत में हिंदी विरोध

हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा है और संविधान के अनुसार यह भारत के समस्त राज्यों की जहां अन्य प्रादेशिक भाषायें हैं,उनकी संपर्क भाषा है। अतएव इसका विरोध करना भारत के विधान का अपमान है। विरोधियों को यह भली-भांति समझ लेना चाहिए कि उनके विरोध से विधान मे कोई परिवर्तन होने वाला नहीं है। हिंदी को राष्ट्र भाषा इस देश का बहुमत मानता है और आर्य समाज तामिल नाडू सरकार का इस विषय मे समर्थन करती है।

पत्रकारो के प्रश्नों के उत्तर देते हुये स्वामी जी ने कहा कि दक्षिण के जो नेता हिंदी का विरोध करते है उनके बच्चे विद्यालयों में हिन्दी पढ़ते है। केरल में और तमिल नाडू प्रदेशों में ऐसा विरोध करना बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ करना है। इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि दक्षिण की अनेक अभिनेत्रियों और अभिनेताओं ने हिन्दी फिल्मो में कार्य किया है और अब भी कर रहे है। हिन्दी फिल्मे दक्षिण भारत मे भी प्रदर्शित होती है और उन्हें असंख्य दर्शक प्रतिदिन देखते हैं अतएव हिंदी समझने की क्षमता, पूर्ण भारत के समस्त प्रदेशो के नागरिको को है, जब कि अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के ज्ञाताओं की संख्या हिंदी के अनुपात से अतिशय अल्प है।

(३) पंजाब की स्थिति

पंजाब मे बरनाला सरकार से उग्रवाद और आतंकवाद को बढ़ावा मिल रहा है। अकाली सरकार बनने के तुरन्त बाद बन्दी गृहो से आतंकवादियों और राजनैतिक अपराधियों को मुक्त कर दिया गया और इधर जो सुरक्षा पट्टी का विरोध किया जा रहा है जब कि गुजरात और राजस्थान सरकार ने इसका समर्थन किया। यहां तक कि जम्मू और कश्मीर राज्य के राज्यपाल ने भी नई विधान सभा के गठन के पूर्व उस पर सहमति दे दी थी। इन सब बातों से स्पष्ट हो जाता है कि बरनाला सरकार आतंकवादियों के साथ है। विद्रोही पदच्युत सैनिकों को पुनः नौकरी देना भी इस आधार को संपुष्ट करता है। अतएव आर्य समाज ने यह मांग की है कि बरनाला की सरकार अविलम्ब पदच्युत की जाए। राष्ट्रपति शासन ५ वर्षों के लिये लागू किया जाए। ताकि अल्प संख्यको की सुरक्षा सेना के माध्यम से कराई जा सके। इस संदर्भ में पत्रकारो के प्रश्नो का समाधान करते हुए स्वामी जी ने कहा--

(अ) केन्द्र सरकार को पंजाब मे आतंकवाद को तथा वहां से अल्प संख्यकों के पलायन को रोकने के लिये सशक्त कदम उठाने होगे इस के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं है।

(आ) विस्थापितो के पुनर्वास के लिए सार्वदेशिक सभा सतत् प्रयत्नशील है। प्रत्येक विस्थापित को जहां १,०००) की मासिक सहायता सरकार द्वारा दिलवाई गई है, वहां उन्हें आवास के लिये भवन भी दिलवाए गए हैं। इसके अतिरिक्त हजारो रजाइयां भी सरदी से बचने के लिए बांटी गई हैं।

(इ) विस्थापितो का पलायन पंजाब के ग्रामों से ही अधिक हुआ है और इनमें बहुमत उन लोगों का है, जिनके परिवार के व्यक्ति मारे गए हैं अथवा जिनका व्यवसाय आदि समाप्त हो गया है। होशियारपुर, लुधियाना आदि जिलों से ही अधिक पलायन हुआ है।

(शेष पृष्ठ १०)

महान् दयानन्द

युगपुरुष महर्षि दयानन्द

—ब्रह्मचारी देवेन्द्र स्वदेश बन्धुः
अवै० उपदेशक, (आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ)

युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महराज उन्नीसवीं शताब्दी के उच्च कोटि के उद्भट विद्वान् तर्क शिरोमणि अद्वितीय वैय्याकरण, आदित्य ब्रह्मचारी परम वेदज्ञ योगिराज, परम आस्तिक, महान समाज सुधारक, वेदोक्त आर्य संस्कृति के पोषक, निर्भीक, अग्रगन्ता, अदम्य साहस, अविचल धैर्य के प्रतीक विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व थे।

भारत का ही नहीं अपितु समस्त विश्व का यह सौभाग्य रहा है कि भारत भूमि में एक दिव्य ज्योति आर्यमति महर्षि दयानन्द जी का जन्म हुआ। इस मानवीशक्ति ने जहाँस्वराज्य एवंस्वाधीनता के लियेभारतीय जनमानस में सिंह पराक्रम फूंका, वहीं विशुद्ध वैदिक धर्म मे दीक्षित कर पूरे समाज को निःश्रेयस की ओर उन्मुख किया। समूचे सामाजिक जीवन मे पावन चारित्र्य एवं नैतिकता का वृहद सूत्रपात किया, उन्होंने समस्त समस्याओं का निदान एवं निदेश किया, तथा वेद विद्या के प्रचार का पाठ पढ़ाया और विदेशी नास्तिक विचार धाराओ से जकड़ी मन· स्थिति को समसावच्छिन्न करके हमे प्रशस्त दृष्टिकोण दिया, महर्षि दयानन्द के आगे मनः प्रसूत कोरी कल्पनाएं रेत के बने भवन की तरह ढह गईं। इस महाविभूति ने जहाँप्रगति कीहर दिशा मे क्रांतिकारी जागृति उत्पन्न की वहीं असंगत एव अनर्गल प्रलापों को भी प्रभावित किया जिसके परिणाम स्वरूप पश्चिमी विचारकों ने यह लिखना प्रारम्भ किया कि सामाजिक जीवन असभ्यता की अवस्था से उन्नत होकर सभ्यता की अवस्था तक पहुंचा है। ऐसा कहना सर्वथा असत्य है जिससे विकासवाद की आधार शिला हिल गई, इसके लिये लोई का नाम उल्लेखनीय है।

वेदों और समस्त आर्ष ग्रन्थो मे जहाँ-जहाँ अर्थ वैभिन्य था। संशय ग्रस्त एवं अनिर्णीत था वहाँ-वहा महर्षि ने अपनी विशिष्ट क्षमता से निश्चायिकता और इससे भी बढ़ कर अधिक महत्वपूर्ण तथ्यो से अनुप्राणित एवं परिमार्जित कर विद्वानों के समक्ष अत्यन्त सरलीकृत रूप मे प्रस्तुत कर दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पुरातन वेदविहित दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया सामाजिक एवं धार्मिक कुप्रथाओ को उच्छेन के लिये उन्होंने कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का विश्वव्यापी अभियान चलाया जिसकी परिणति महान सुधारक कल्पतरु आर्य समाज के रूप में प्रकट हुई। जिसने अविद्यान्धकार, धर्म भ्रान्ति त्रास से त्रस्त मनुष्यता को पवित्र वेद ज्ञान का वेदामृत पिलाया।

महर्षि के ग्रन्थो तथा संकलित विज्ञापनो भाषणो को ध्यानपूर्वक पढ़ने से स्पष्ट होता है कि वे अपनी मान्यताओं पर सदा-सदा अवि-

देश के लिए

—चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
एडवोकेट कानपुर

★ ★ ★

देश का खाया हमने अन्न,
पिया इसका अमृतमय नीर !
तभी तो हैं पल कर बढ़ सके,
हमारे सबके पुष्ट शरीर !
देश के हम सब पर है हुए,
अकथ कल्याण, अमित उपकार !
देश के कण-कण से है रहा,
तभी तो निज प्राणों को प्यार !
चाहिए हमें—करें हम मुदित
देश-हित तन-मन-धन बलिदान !
और यदि अवसर आवे कभी,
देश की खातिर दे दें जान !

★★

हम सब भारत वाले

एक रहे है, नेक रहे है,
हम सब भारत वाले !
यो तो सीधे-सादे है,
पर आफत के परकाले !
वैसे तो हम हेल-मेल का
सबसे हाथ मिलाते !
पर जो हमसे लड़ने आता,
उसको धूल चटाते !

★★

ढोंग मारना नहीं जानते,
बातें नही बनाते।
लेकिन दुष्ट-देशद्रोही को,
हम हैं मजा चखाते।
एक रहे है, एक रहेंगे,
हमे एकता प्यारी।
नही एकता तोड़ सकेगा,
कोई कभी हमारी !

चल रहे उदाहरणार्थ उन्हीं के द्वारा कही यह बात "आर्य धर्म की उन्नति हो इस लिये मेरे सदृश बहुत से धर्मोपदेशक अपने देशमेहोने चाहिये एक व्यक्ति द्वारा कार्य सिद्ध नहीं होगा। फिर भी अपनी बुद्धि सामर्थ्य के अनुसार जो दीक्षा मैंने ली है उसे चलाऊँगा"। महर्षि ने अन्तिम क्षणो तक उक्त संकल्प का पालन किया और स्थान-स्थान पर अपने संदेशों में आर्य समाज के साथ मिल कर चलो वरना कुछ हाथ न लगेगा ऐसा कहते रहे।

आओ हम भी उनके संकल्प को पुनः दोहरायें एवं आर्य समाज के साथ मिल कर कार्य करते रहने का जीवन व्रत धारण करें—औरमहर्षि के राष्ट्रीय बलिदान को सार्थकत्व प्रदान करें।

❀ आर्य जगत ❀

दिन दहाड़े जघन्य अपराध
इन्हें मरना याद नहीं

दिनांक १९-१२-८६ को मीरजापुर के वार्षिकोत्सव से वापस आने पर श्री युगल किशोर जी सभा के भजनोपदेशक जब मेरे साथ सभा कार्यालय से बारबाग आए तो नई मोटर साइकल पर सवार दो नवयुवको ने गाडी रोकी और वाहन चालक ने श्री युगल किशोर जी से बातचीत करनी प्रारम्भ कर दी मैने यह सोच कर कि सम्भवत परिचित व्यक्ति से बात हो रही है, शिष्टाचार से आगे बढ़ गया। तब तक दूसरे व्यक्ति ने मुझ से आवास विकास परिषद का कार्यालय स्थान पूछा जब श्री युगल किशोर बात से निवृत्त हो कर मेरे पास आए तो उन्हे बोध हुआ कि उनकी जेब से ३०१) रुपया जो आ० स० मीरजापुर से दक्षिणा और मार्ग व्यय के तौर पर मिला था, निकाल लिया गया है। मोटर साइकल जा चुकी थी नम्बर नोट न किए जाने से पुलिस रिपोर्ट सम्भव नहीं थी। मैंने मार्ग व्यय देकर श्री युगल किशोर जी को हरदोई भेजा।

जीवन मे प्रथम बार इस घटना से द्रविभूत होकर मेरे हृदय से उन जघन्य अपराधियो के लिए दुर्भावना निकली जिन्होने एक सरल हृदय ग्रामीण निर्धन उपदेशक को दिन-दहाड़े लूट लिया था।

--वसन्त

आर्य समाज मीरजापुर का वार्षिकोत्सव सुसम्पन्न

आर्य समाज मीरजापुर (उत्तर प्रदेश) का वार्षिकोत्सव दिनांक १६-१२-८६ से १८-१२-८६ तक बड़े समारोह से मनाया गया। प्रतिदिन प्रातः ८-३० से १० तक हवन यज्ञ होता रहा जिसका सुसचालन श्री 'वसन्त' जी ने ब्रह्मा के रूप मे किया। यज्ञ की पूर्णाहुति१८-१२-८६ को हुई जिसमे यजमानो को आशीर्वाद स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रदान किया गया।

१६/१२/८६ की दोपहर को वर्षा होने पर भी नगर में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई जिसका सुसंचालन श्रीमती सतोष कपूर, प्राचार्या आर्य कन्या इन्टर कालिज तथा उपप्रधानाप्रतिनिधि सभा उ.प्र.ने किया। नगर के संभ्रांत व्यक्तियो के अतिरिक्त समस्त आर्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने तथा अध्यापक अध्यापिकाओ ने इस मे उत्साह के साथ भाग लिया।

वार्षिकोत्सव मे श्री युगल किशोर तथा श्री महानन्द भजनोपदेशको के अतिरिक्त श्रीमती कमला श्रीवास्तव कलाकार आकाशवाणी लखनऊ तथा भरतखण्डे संगीत विद्यालय की प्रशिक्षका के मधुर भजनो तथा श्री धर्मवीर पथिक ब्रह्मचारी के व्याख्यान के साथ श्री 'वसन्त' जी सम्पादक 'आर्य मित्र' के तीन दिन वेदोपदेश हुए। समापन दिवस पर स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा का सम्मान किया गया और ११,०००) की थैली पंजाब के विस्थापितों की सहायतार्थ भेंट की गई।

--[illegible]

आर्य समाज ने राष्ट्र की स्वाधीनता, सुरक्षा और अखण्डता के लिए सदैव बलिदान दिए है और देता रहेगा

★ ★ ★

आर्य समाज मीरजापुर के वार्षिकोत्सव पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के ओजस्वी उद्‌गार

★ ★

'वसन्त' जी के संन्यास लेने की घोषणा का स्वागत

दिनांक १८/१२/८६ की रात्रि को आर्य समाज मीरजापुर के समापन समारोह का शुभारम्भ सभा के भजनोपदेशक श्री युगल किशोर तथा महानन्द के भजनो के साथ हुआ। तत्पश्चात् श्री 'वसन्त' जी सपादक आर्य मित्र का वेद मन्त्रो.के आधार पर स्वराज्य की अर्चना विषय पर सारगर्भित वेदोपदेश हुआ जिसमे उन्होने राष्ट्र की वर्तमान समस्याए, आर्य समाज द्वारा किए गए प्रयासो तथा वेद द्वारा समस्याओ के निराकरण हेतु उपायो पर प्रकाश डाला।

लखनऊ के भरतखण्डे की सगीताचार्या तथा मधुरकण्ठी आकाशवाणी कलाकार श्रीमती कमला श्रीवास्तव के स्वागत गान के उपरात सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष को नगर के विभिन्न विशिष्ट व्यक्तियो तथा आर्य समाज और वैदिक शिक्षण सस्थाओ और 'वसन्त' जी सपादक आर्य मित्र द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। आ० स० की मन्त्री श्रीमती मधु चोपड़ा द्वारा भावविभोर करने वाला अभिनन्दन पाठ हुआ और ११,०००)की थैली पजाब से आए हुए विस्थापितो की सहायतार्थ भेंट की गई।

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने अपने व्याख्यान मे आर्य समाज की गतिविधियो पर प्रकाश डाला और सार्वदेशिक सभा द्वारा किए गए कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया।

अन्त मे स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने आर्य समाज के अधिकारियो का आभार प्रकट किया। विशेष रूप से आर्य कन्या इन्टर कालिज, महाविद्यालय तथा अन्य वैदिक विद्यालयो की अध्यापको को धन्यवाद दिया जिन्होने विद्यालयो की छात्राओ से न केवल सरस और शिक्षाप्रद कार्यक्रम प्रस्तुत कराएं परन्तु पजाब के विस्थापितो के लिये दी गई राशि मे भी ५,००) का सात्विक दान दिया।

पूज्य स्वामी जी ने श्री 'वसन्त' जी की इस घोषणा का, कि वे शीघ्र ही पारिवारिक उत्तरदायित्वो से निवृत्त हो कर संन्यास की दीक्षा लेंगे, अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि अभी तक तो वे उनकी लेखनी के ही महत्त्व से परिचित थे पर आज उनकी ओजस्वी वाणी तथा विद्वता का भी उन्हे साक्षात्कार हो गया है और उन जैसे विद्वानो के सन्यास लेने पर आर्य समाज की निःसन्देह उन्नति होगी और शोभा बढ़ेगी।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्य समाज मीरजापुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर पत्रकार सम्मेलन का आयोजन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती द्वारा उद्बोधन और प्रश्नों के उत्तर

(पृष्ठ ७ का शेष)

(ई) चुड़का ग्राम में २४ बस यात्रियों की निर्मम हत्या निस्सन्देह सबसे बड़ा कांड है। एक मास में लगभग ८० व्यक्तियों की हत्या बढ़ते हुए आतंकवाद का स्पष्ट प्रमाण है। भारतीय जनता पार्टी तथा आर्य समाज के अनेक कार्य्य कर्ताओं के साथ लगभग १७-१८ साम्यवाद पार्टी के कार्य्यकर्ता भी मारे गये है।

(उ) पंजाबी एक बोली है, भाषा तो गुरुमुखी है। हिन्दी केवल हिंदुओं की ही भाषा नहीं है अपितु सिख भी इसे बोलते हैं। गुरु ग्रंथ साहब धर्म पुस्तक इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है क्योंकि इसमें स्थान-स्थान पर वेद के महत्व को दर्शाया गया है, राम नाम की चर्चा की गई है और संत कबीर के दोहों का संकलन भी प्रचुर मात्रा में है।

(ए) पंजाब में आतंकवाद इस लिए समाप्त नहीं हो रहा है कि वहां की पुलिस ९० प्रतिशत सिख है और उग्रवादी भी उसमें भर्ती किए गए हैं। यदि इस पुलिस को बदल दिया जाए तो स्थिति संभाली जा सकती है। प्रधानमन्त्री को नरमी छोड़ कर कड़े कदम उठाने चाहिए। आतंकवाद का उन्मूलन तभी हो पाएगा।

(४) अन्य विषय

(अ) चीन को कोई अधिकार नहीं है कि वह अरुणांचल प्रदेश की नीति मे कोई हस्तक्षेप करे। आर्य समाज इस संबन्ध में सरकार को पूर्ण सहयोग देगा। देशवासियों को संगठित हो कर इस का मुकाबला करना होगा।

(आ) पंजाब मे पाकिस्तान द्वारा जो प्रशिक्षित आतंकवादी भेजे जा रहे हैं, उनकी रोकथाम सुरक्षा पट्टी बना कर, वहां उन प्रदेशों में सेना सेवा निवृत हिंदुओं को बसाने से ही सम्भव है। अपराधियों को दण्डित करने के लिये सैनिक अदालतें बना कर अभियोग चलाए जाएं।

स्वामी जी ने यह भी बतलाया कि किस प्रकार १०५ व्यक्ति जो ८० मृत व्यक्तियों के अस्थियों के कलश लेकर दिल्ली आ रहे थे, उन्हें विरोधी दलों द्वारा उत्तेजित किया गया जिसके फलस्वरूप उन्हें बन्दी बना कर तिहाड़ जेल भेजा गया वहां उन्होंने दौड़-धूप करके उन्हें छुड़ाया और गढ़ मुक्तेश्वर भेजने की व्यवस्था करवाई।

(५) निष्कासित व्यक्तियों से सावधान रहें

स्वामी जी ने पत्रकारों के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा विश्व के समस्त आर्य समाजो का नियन्त्रण करने वाली सर्वोच्च संस्था है जिसके वे अध्यक्ष हैं और श्री सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री है। अरब आदि मुस्लिम राज्यों को छोड़ कर विश्व के समस्त देशों में आर्य समाजें स्थापित हैं। उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री इन्द्र राज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी हैं। मीरजापुर आर्य समाज जिसका वार्षिकोत्सव हो रहा है उसके प्रधान श्री गणेश प्रसाद जी तथा मन्त्री श्रीमती चोपड़ा है। सार्वदेशिक सभा ने जिन्हें मान्यता दी है वे ही वास्तविक रूप मे आर्य समाज का कार्य करने के लिए अधिकृत है। इसके अतिरिक्त यदि प्रादेशिक स्तर पर अथवा किसी नगर में आर्य समाज के नाम पर कोई कार्य करता है तो वह निन्दनीय और दण्डनीय है। यदि मीरजापुर नगर में श्री कैलाश नाथ सिंह तथा उनके सहयोगियों ने जो आर्य समाज से कुकृत्यों के कारण ६ वर्षों के लिए निष्कासित किए गए है, कोई आयोजन रखा है अथवा धन संग्रह किया है, तो वह धोखा है। जिनसे धन संग्रह किया गया है, उन्हें चाहिए कि वे इस धोखाधड़ी की पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराएं।

पत्रकारो को सम्मेलन में पधारने के लिए धन्यवाद दिया गया और सम्मेलन समाप्ति की घोषणा की गई। ★

नीति निर्देश

★ ★ ★

यतः इस सभा की सुस्पष्ट नीति है कि आर्य समाज मन्दिरों में किसी भी प्रकार की संस्था, यथा दयानन्द बाल मन्दिर आदि, का संचालन नहीं होगा और जिन मन्दिरों में इस प्रकार की संस्थायें पूर्व से चलती आ रही हैं उनको मन्दिर से पृथक चलाने की व्यवस्था की जावे।

परन्तु खेद है कि बार-बार निर्देश देने के उपरान्त भी कतिपय आर्य समाजें सभा की इस नीति का अनुसरण नहीं कर रही हैं जिससे उनमें अनावश्यक विवाद बढ़ रहे हैं और आर्य समाजेतरतत्व इन विवादों से अनुचित लाभ उठाकर सभा के स्वामित्व आदि में संकट उत्पन्न कर रहे है।

अतः सिद्धांत, संगठन और सम्पत्ति आदि के हित में आर्य समाजों को पुनः निर्देश दिये जाते हैं कि— वे सभा की उक्त नीति का परिपालन करें अर्थात् मन्दिरो मे नई संस्थाएं न खोलें और पुरानी संस्थाओं को जून १९८७ तक मन्दिरों से पृथक् अन्यत्र चलाने की व्यवस्था करें।

सभा मन्त्री

निर्वाचन

जिला आर्यों प्रतिनिधि सभा बलिया—

प्रधान— श्री सुदर्शन सिंह जी
मन्त्री— श्री इन्द्र देव सिंह
कोषा०— श्री राधा कृष्ण

जिला आर्यों प्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर।

प्रधान— श्री ईश्वर सिंह
मन्त्री— श्री रघुवीर सिंह
कोषा०— श्री जिले सिंह आर्य

खुर्जा, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजीकृत) बुलन्दशहर के तत्वाधान मे डिबाई क्षेत्र दानपुर में श्री शिवचरणलाल गौतम के प्रयासो से एक मुस्लिम महिला "अमीना बेगम" को उसकी अपनी प्रार्थना पर हिंदू धर्म की दीक्षा दी गई।

प्रथम यज्ञवेदी पर शुद्धि संस्कार हुआ। नामकरण श्रीमती 'मीना-देवी' रखा गया। पश्चात् श्री० घनश्याम सिंह के साथ वैदिक रीति से विवाह संस्कार संपन्न हुआ।

यह कार्य श्री धर्मेन्द्र शास्त्री मन्त्री जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के पौरोहित्य मे हुआ। जिले के अनेक सम्भ्रान्त आर्य जन इस अवसर पर उपस्थित थे।

—सम्वाददाता

पुस्तक परिचय

महर्षि दयानन्द की वसीयत और— ?

★★ ★★ ★★

आदि शंकराचार्य के शिष्यों ने उन्हें भगवान शंकर का अवतार बना डाला और सारे संसार को वेदान्ती या अद्वैतवादी बना दिया। कैसे? शंकराचार्य के शिष्य प्रशिष्य उनके ग्रंथों के भाष्य के भाष्य लिखते गये और इस प्रकार उनके विचार फैलते चले गये। परन्तु १०३ वर्ष बीत जाने पर भी महर्षि दयानन्द के एक भी ग्रंथ पर भाष्य नहीं लिखा गया। महर्षि ने अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के नाम की गई वसीयत में यह काम उसे सौंपा था। किन्तु इस ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया गया। सन् १९८३ में अजमेर में महर्षि की निर्वाण शताब्दी मनाई गई। सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती अजमेर नहीं गये। परन्तु महर्षि की वसीयत के अनुसार उनकी इच्छा पूर्ति करने का संकल्प करके उसी दिन से महर्षि कृत ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पर भाष्य लिखने में जुट गये।

आचार्य उदयवीर शास्त्री, पं० युधिष्ठिर मीमांसक, डा० रामप्रसाद वेदालंकार, आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री आदि आर्य जगत के १५ विद्वानों के सहयोग से निरन्तर तीन वर्ष की साधना के फलस्वरूप स्वामी जी अपना संकल्प पूरा करने में सफल हो गये हैं। बड़े आकार (२०+३०) के लगभग १४०० पृष्ठों का दो जिल्दों में प्रकाशित होने वाला "भूमिका भास्कर" नामक यह ग्रंथ अभूतपूर्व प्रकाशन होगा। प्रत्येक आर्य समाज, सभा, गुरुकुल, कालेज, पुस्तकालय तथा आर्य पुरुष के पास यह ग्रंथ अवश्य होना चाहिये। महर्षि दयानन्द के प्रति यह वास्तविक श्रद्धांजलि होगी, क्योंकि ऐसा करके ही हम उनकी हार्दिक इच्छा की पूर्ति करेंगे। यह ग्रंथ 'इन्टर नेशनल आर्यन फाउण्डेशन' बम्बई की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है।

इस ग्रंथ के प्रकाशन पर लगभग एक लाख रुपये व्यय होंगे। छपने पर इसका मूल्य ३०० रुपये से कम नहीं होगा। परन्तु छपने से पूर्व मूल्य भेज कर आर्डर देने वालों को यह केवल २०० रुपये में मिलेगा। इस प्रकार पहले आर्डर देने वाले सज्जन न केवल कम मूल्य में पुस्तक ले सकेंगे वरन् वे ग्रंथ के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देकर यश के भागी भी होंगे।

साथ ही निवेदन है कि जो दानी आर्य पुरुष इस संदर्भ में आर्थिक सहायता कर सकें, वे अपने ड्राफ्ट—इंटर नैशनल आर्यन फाउण्डेशन के नाम से भेजने की कृपा करें। अपनी अग्रिम प्रति सुरक्षित कराने हेतु भी ड्राफ्ट इसी नाम से भेजें अथवा निम्न पतों पर सम्पर्क करें —

१— श्री देवेन्द्र कुमार कपूर प्रधान—आर्य समाज, विट्ठलभाई पटेल मार्ग, सान्ताक्रूज (पश्चिम) बम्बई—५४

२— श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, डी—१४/१६ माडल टाउन, दिल्ली—९

३— कैप्टिन देवरत्न आर्य, महामन्त्री—इन्टर नैशनल आर्यन फाउण्डेशन, ३०२—कैप्टिन विला, माउन्ट मेरी रोड, बान्द्रा—बम्बई ४०००५०

आवश्यकता है

"आर्य विद्या मंदिर'— डा० —ओबरा जिला मीरजापुर के लिए एक सुयोग्य प्रधानाध्यापक की अविलम्ब आवश्यकता है। योग्यता—एम० ए० बी०एड् या बी० ए० बीएड् अनुभव कम से कम दस वर्ष साथ ही आर्य समाजी होना अनिवार्य है। विद्यालय, में शिशु से कक्षा ५ तक की पढाई होती है। सेवा निवृत्त महानुभाव जो उक्त योग्यता के साथ शारीरिक स्वास्थ्य रखते हो आमंत्रित है। आवेदन पत्र निम्न पते पर भेजने की कृपा करे।

—राम नारायण आर्य
सचिव
आर्य विद्या समिति
आवास सं० ५— एफ—६३
डा —ओबरा
जिला—मीरजापुर

स्वामी आनन्दबोध जी के उद्‌गार

[पृष्ठ ९ का शेष]

अपने ओजस्वी व्याख्यान में स्वामी जी ने इस बात का उल्लेख किया कि आर्य समाज राष्ट्र का प्रहरी है और वे स्वयं आर्य समाज की रक्षा करने वाले एक चौकीदार हैं। आर्य समाज ने स्वाधीनता के पूर्व भी तथा उसके उपरांत भी देश की सर्वांगीण सेवा की है। चाहे दुर्भिक्ष पड़ा हो, चाहे अतिवृष्टि हुई हो, चाहे भूकम्प आए हो, आर्य समाज ने सदैव सेवा तथा सहायता शिविर लगाए हैं। वर्तमान समय में भी आर्य समाज अपनी पूर्ण शक्ति और सामर्थ्य के साथ पंजाब से आए हुए विस्थापितों की पूर्ण सेवा कर रही है। प्रत्येक परिवार को १,०००) मासिक अनुदान तथा उनके आवास का प्रबन्ध सरकार द्वारा कराने का प्रयत्न केवल आर्य समाज ने किया है। १,००० से अधिक रजाइयां शीत से बचने के लिए बांटी है और चौबीस घन्टे उनकी सेवा के लिये द्वार खोल रखे है। यदि किन्हीं कारणों से अथवा अन्य राजनैतिक नेताओं के उकसाने पर उन्हें पुलिस द्वारा बन्दी बनाया गया है तो उन्हें छुड़ाने और वापस पंजाब भेजने की व्यवस्था भी आर्य समाज ने ही करवाई है। जब तक समस्त विस्थापित अपने राज्य पंजाब में नहीं लौट जाते, उनका प्रयास जारी रहेगा।

स्वामी जी ने सिंह नाद गुंजाते हुए कहा कि पंजाब समस्या का एकमात्र समाधान है वहां की बरनाला सरकार को पदच्युत करना, ५ वर्षों के लिए राष्ट्रपति शासन को लागू करना तथा सुरक्षा का कार्य सेना को सौपना।

व्याख्यान के अन्त में स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज से जिन्हें उनकी काली-करतूतों के कारण निष्कासित किया गया है यदि वे आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी की हैसियत से अथवा स्थानीय आर्य समाज के नाम पर कोई आयोजन करते है या धन एकत्रित करते है तो ये कार्य असंवैधानिक है और केवल धोखा हैं। इनसे जनता को बचना चाहिए और धोखा-धड़ी करने वालों के विरुद्ध पुलिस में रिपोर्ट करनी चाहिए ताकि उन्हें दण्डित किया जा सके।

—आचार्य रमेश चन्द्र अवस्थी

★ ★ ★

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 46993 ४५६६३
पंजीकरण सं० एल. डब्ल्यू/एन पी ७६
पौष शुक्ल ५
रविवार, ४ जनवरी १९८७ ई०

ओ३म् आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

स्वास्थ्य-सुधा

तुलसी की चाय पिएं

तुलसी की दो जातियां होती हैं श्वेत तथा कृष्ण श्वेत तुलसी को रामा तुलसी तथा दूसरी को कृष्ण तुलसी कहते हैं। श्वेत की अपेक्षा कृष्ण तुलसी अधिक गुणकारी होती है।

भारतीय चाय के रूप मे एक तोला तुलसी के सूखे या गीले पत्त लेकर आधा सेर पानी मे उबाल डालिये थोडी देर पश्चात् उसमे इतने ही परिमाण मे दूध डाल कर तीन चार इलायची पीस कर डाल दें फिर थोड़ी सी शक्कर डाल कर उतार लें लीजिए उत्तम भारतीय चाय बन गई इस चाय का प्याला पीने से आलस्य सुस्ती अरुचि दाह वात विकार मन्दाग्नि कब्ज आदि विकार दूर होते हैं। बुखार भी शांत होता है।

तुलसी की यह चाय आधुनिक चाय की अपेक्षा श्रेष्ठ सस्ती एव आरोग्य वर्धक होती है। अत आधुनिक चाय के बदले मे तुलसी की चाय का नित्य प्रयोग करना चाहिए। ठण्ड के दिनो मे तुलसी की चाय लाभदायक होती है।

१— इन्फ्लुएन्जा मे तुलसी के ८-१० पत्ते तथा काली मिर्च के ७-८ दाने टुकड़ा करके लगभग डेढ़ पाव पानी मे उबाले जब एक पाव पानी बच जाए तो छान लें और थोड़ा सा नमक मिला कर चाय की तरह गर्म-गर्म पिये सुबह शाम तीन चार दिनो तक पीने से इन्फ्लुएन्जा काफुर हो जाएगा। कृपया उपयोग करके देखिये।

—डा० गोविन्द जी
६८, रामबाग, इलाहाबाद

अमर शहीद राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी बलिदान दिवस

अमर शहीद राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी का ५९ वा बलिदान दिवस समारोह दिनांक१७-१२-८६ को गोण्डा के जेल प्रांगण मे मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज गोण्डा द्वारा हवन के पश्चात् ही श्रद्धाजलि समारोह का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। जिसमे मुख्य अतिथि माननीय श्री राम नरेश शुक्ल राज्य मन्त्री उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ थे। कार्यक्रम का आयोजन श्री युत बाबू ईश्वर शरण भू० पू० विधायक एव अध्यक्ष स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी ने किया।

—बलबीर श्रीवास्तव

आवश्यक सूचना

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क माह नव.एव दिस १९८६ मे समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २०) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २०) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पडेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ सितम्बर १९८५ मे वार्षिक शुल्क २०) रु० हो गया है।

जिनका शुल्क १५ नवँबर ८६ को समाप्त

१८७९, ३२५४, ५३५४, ७०२८, ८३८२ ८६८२ ८८५४, ८८५९, ९३३१, १००२४, ११०५१, ११०५४, ११०७०, ११३६८, १२०५९ १२४४६, १२४४८, १२४५२, १२७५९, १२७६५, १२७७४ १२७७८, १३२८८ १३३४३ १३३४६, १३६४८, १३६५०, १३६५१, १३६५२, १३६५३ १३६५४

पन्द्रह दिसंबर ८६ को शुल्क समाप्त नवंबर

३४९, ६२४, ८५३, १०५३, २११०, २१६२, २२४०, २२५४, २२६७, २६५०, २६५६, २६६१, २९८७, ३६२७, ३९४७, ८४५०, ८८६८, ९३५२, ९७६४, ९७७०, ९७७२, १००२७, १००६१, ११०८७, ११०८८, ११३८९, ११७८३, ११७९६, १२४९० १२५१७, १२५२१, १२५३०, १२७८१, १२७९४, १२८०१, १२८०४, १३०२९, १३३५८, १३३६४, १३६५५, १३६५६, १३६५७, १३६५८, १३६५९, १३६६०, १३६६२, १३६६३, १३६६४, १२६६५, १३६६६,

नामकरण

(१) २२ नवम्बर को श्री रवीन्द्र वर्मा, के पाचवें पुत्र का नामकरण संस्कार किया गया नाम सर्वसम्मति से "अनुप रखा गया।

(२) १४ दिसम्बर को मुरलीधर आर्य, की द्वितीय सुपुत्री कुमारी सन्ध्या का कर्णवेध संस्कार श्री धर्म वीर आर्य के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ इस अवसर पर नगर के गणमान्य लोग सम्मिलित रहे।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप मे सब्बरवाल प्रिंटिंग प्रेस कैसरबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४१/५७ — घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८१

पौष शुक्ल १२, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनांक ११ जनवरी १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल—

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

★

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए.

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क	
आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	८ पौंड
एक प्रति	५० पैसे

वर्ष ६०

अङ्क २

प्रभु की अमृत वाणी—

युद्धेच्छओं के सम्मुख डट कर वीरत्व का प्रदर्शन करो

भागना कायरता है, राक्षसो का हनन वीरत्व है

धिष्व वज्रं गभस्त्यो रक्षो हत्याय वज्रिवः । सासहीष्ठा अभि स्पृधः ॥

[शं युर्वाहु स्पत्य । इन्द्र । निचृद्गायत्री] (ऋ० ६-४५-१८)

आज आर्य जाति इतनी निस्तेज और निर्वीर्य हो गई है कि प्रतिस्पर्धियो के सम्मुख डटने की, युद्धेच्छुओं से सघर्षरत होने की तथा राक्षसो के हनन की अपेक्षा, भयभीत होकर कांपते हुए सुरक्षा के निमित्त दूर भाग रही है। पलायनवादी वृत्ति वेदानुकूल नहीं है। वेद ने आसुरी वृत्तियों के सम्मुख घुटने टेकने अथवा उनसे पलायन करने की प्रेरणायें नहीं दी हैं। वेदानुसार जीवन एक घोर सघर्ष है। प्रत्येक मानव जीवन मे देवासुर सग्राम सतत चलता रहता है जिसमे अन्तिम विजय देवो की होती है। वैदिक धर्म वीरों का धर्म है और वीर धर्म केवल वीरता का प्रतिपादक है। वीर वही है जो सघर्षो से भय के मारे दूर न भागे अपितु शस्त्र धारण कर आक्रमणकारियों के सम्मुख डट जाए, उनसे लोहा ले और उनका हनन कर दे। इस वीर धर्म को प्रदर्शित करते हुए यह मन्त्र कहता है—

(वज्रिव) हे वज्रधारी, शस्त्रधारक ! वीरत्व से परिपूर्ण ! (गभस्त्यो वज्रम् धिष्व) दोनो भुजाओ में वज्र रूपी शस्त्र को धारण कर (रक्ष हत्याय) राक्षसों की हत्या के निमित्त।

वैदिक धर्मी आर्य जहां शास्त्रो से धर्म प्रचार करते हैं वहा अवसर आने पर असुरों के विरुद्ध जो धर्म का हनन करते हैं, अधर्म का प्रसार करते हैं और मानवीय जीवन को त्रस्त करते है, अपने हाथो में शस्त्र भी उठाते हैं। आर्यों का धर्म निरीह जनता पर आक्रमण करना नहीं है, वे तो शास्त्रों के आधार पर उनमे मानव धर्म की स्नेहमयी धारा प्रवाहित करते हैं पर जो अमानुष बनकर निरीह मानवों पर अत्याचार करते हैं, उनके प्राणों का हनन करते हैं, आर्य अपनी दोनों भुजाओं में वज्रधारी शस्त्र धारण करते हैं, उन असुरो का सर्वनाश करने के लिए।

दोनों हाथो में शस्त्रो को धारण कर राक्षसो के हनन के लिए जब वैदिक वीर उद्यत हो जाते है तो वे विषम परिस्थितियों मे भी युद्धभूमि से पलायन नहीं करते। वे डटकर खड़े हो जाते हैं उन हिंसकों का युद्धेच्छुओ का दृढ़ता से मुकाबला करने के लिए वेद की इस प्रेरणा को आत्मसात करते हुए—

(स्पृधः अभि सासहीष्ठाः) स्पर्धा करने वाले प्रति स्पर्धियों के सम्मुख दृढ़ता से प्रतिरोध करने के लिए।

जब वैदिक वीर रणभूमि में इस भांति डट जाते है तो आक्रमणकारी न आगे बढ़ पाते हैं और न ही जीवित लौटकर वापस भाग पाते हैं।

आज देश में बढ़ते हुए आतङ्कवाद को रोकने का एकमेव उपाय यही है और इसे आर्यों को साकार करके दिखाना है।

आर्य वीरो जागो ! अब उठो ! उभय भुजाओं में शस्त्र धारण करो।
राक्षसों के हनन हेतु, जोहर अपने ओज और तेज भरो॥
डटो रणक्षेत्र में, बढ़ो आगे, न भागो और न ही डरो।
भुजाओ 'वसन्त' अब दोषों को, कायरता मन से हरो॥

—वसन्त

ले आख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार ११ जनवरी १९८७ दयानन्दाब्द १६२
सृष्टि सवत् १९७२९४९०८७

धर्मो धारयते प्रजा

वर्ष १९८६ समाप्त हो गया इस वर्ष भर चारो ओर अराजकता, आतकवाद, उग्रवाद, साम्प्रदायिक उन्माद ईर्ष्या द्वेष अन्य वृत्तियो का नग्न ताण्डव होता रहा । सभी सुधी जन इससे अत्यधिक चिन्तित रहे । परन्तु निरन्तर चिंतन करते रहने के बाद भी किसी प्रकार की शाति स्थापना होती नजर नहीं आयी । प्राय सभी उपरोक्त उन्मादो के पीछे धार्मिक मदान्धता ही दृष्टिगत हुई । तथा कथित धर्म गुरु इस विद्वेषाग्नि को प्रचण्ड करने मे ही प्रयत्नशील लगते रहे । कुछ राजनीतज्ञ अपनी स्थिति मजबूत करने के लिये उन तत्वो को भीतर बाहर से सहयोग देने मे सतत प्रयत्नशील रहे ।

इस भयावह स्थिति को देख कर प्रबुद्ध युवा चिन्तको के मन से ही नहीं सभी प्रबुद्ध मानवो के मन मे धर्म के प्रति सन्देह उत्पन्न होना स्वाभाविक सा है । धर्म के प्रति अनास्था होना धर्म की निन्दा करना उस स्थिति मे आश्चर्यजनक नहीं ऐसे धर्म से जिससे अशान्ति, अराजकता, विसवाद, हत्या धर्म भेद पैदा हो देश के विखण्डित होने की स्थिति बने अरुचि होना सही ही है। ऐसे धर्म का तो नाश ही हो जाना चाहिए। ऐसा यदि कोई सोचता है तो बुरा क्यो लगे ।

ऐसी सन्दिग्ध व भयावह स्थिति पर चिन्तनशील प्रबुद्ध जनों ने धर्म पर लगे इस प्रश्न चिन्ह पर विचार करना प्रारम्भ किया कि परमपिता परमेश्वर ने मानव का जीवन प्रदान करके कर्मानुसार उसे दो भागो मे विभाजित किया है । वैदिक पथ का अनुसरण करने वाले को आर्य एव उसके विपरीत आचारो को दस्यु की सज्ञा दी है। साथही विवेक देकर यह अवसर प्रदान किया कि सभी सत्या सत्य का विवेचन करके दस्यु वृत्ति का परित्याग कर आर्य बनें । और आर्य सदव सजग रह कर धर्म के स्वरूप को स्वय समझ कर सबमे फैलायें, धर्म की स्थापना करें । परन्तु विवेक रहित हो प्रमादी, आलसी वृत्ति को ग्रहण कर प्राय आर्य वृत्ति से परे हो दस्यु वृत्ति को अपनाने के कारण हो तथा कथित धर्म गुरु भी धर्म के वास्तविक रहस्य को भूला बैठे हैं। वेद का सन्देश मानव मात्र के लिए है किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं । मानव रचित ग्रन्थ वर्ग विशेष से सम्बद्ध हैं । मानव रचित ग्रन्थो पर आस्था वेद से दूर होने के परिणाम स्वरूप ही हो गयी है । विभेदक वृत्ति उसी का परिणाम है ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि वेद का सन्देश जन-जन मे प्रचारित प्रसारित करने के लिये आर्य जन सन्नद्ध हो । चाहे राजनीतिक क्षेत्र के लोग हो, चाहे सामाजिक क्षेत्र के लोग हों, चाहे धार्मिक क्षेत्र के लोग हो सभी वेद पढे-पढायें । वेद का ज्ञान अपरिमित है । सर्वकालिक है । अन्य ग्रथो का ज्ञान परिमिति समय विशेष के लिए (सामयिक वर्ग विशेष प्रेरक है। अत वेद के प्रति आस्था रुचि उत्पन्न करना व करवाना हमारा (आर्य जनो का) पुनीत कर्तव्य बनता है ।

हमें अपने देश के ही नहीं विश्व की मानव जाति को अपने जीवन को सर्वांगीण पवित्र, शुद्ध, धार्मिक बना कर धर्म का सन्देश देना है । धर्म की स्थापना करके शाति समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करना है ।

वर्ष ८७ के आरम्भ में आइये हम सकल्प लें कि मनुमहाराज के निम्नलिखित श्लोक :—

धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौच मिन्द्रिय निग्रह धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्म लक्षणम् के अनुसार —

धृति— धैय, दृढता ग्रहणशीलता ।
क्षमा— माफ करना, सहन करना, सुख-दुख मे समान रहना ।
दम— मन पर आत्मा का एकाधिकार होना ।
अस्तेय— चोर वृत्ति का सर्वथा परित्याग ।
शौच— बाहरी व भीतरी पवित्रता ।
इन्द्रिय निग्रह— इन्द्रियों को आत्मा के निर्देशन में रखना ।
धी— बुद्धि विवेक की प्रखरता ।
विद्या— वेद ज्ञान की समृद्धि, वेद का पढना-पढाना ।
सत्य— सर्वथा सत्य का प्रयोग ।
अक्रोध—क्रोध का सर्वथा परित्याग ।

अपने अन्दर उपरोक्त दशो लक्षणो का पूर्णतया समावेश करके हमे सभी बन्धु-बान्धवो मे उनका अभ्युदय करना है । और इस भाति वास्तविक धर्म के स्वरूप को स्वीकार कर "धर्मो धारयते प्रजा" की उक्ति को सत्य सिद्ध करना है ।

हमारे राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री व सभी देश के ही नही विश्व के नेताओं ने वर्ष ८७ के प्रारम्भ मे सम्पूर्ण विश्व मे शाति स्थापना की कामना की है । हमारी सभी नेताओ से अपील है कि वे स्वय भी वेद को पढ़े, धर्म को समझे, और वास्तविक धर्म की स्थापना करके सम्पूर्ण मानव जाति को सुख समृद्धि से परिपूर्ण बनाने मे भागीदार बनें । प्राणि मात्र की रक्षा का सकल्प लेकर परमपिता परमेश्वर की सृष्टि को आनन्द उल्लास से परिपूर्ण करने के व्रती बनें ।

हमारा निश्चय हो कि —

ओ३म् सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु माविद्विषावहै ।

हम प्राणि मात्र के सरक्षक बनेंगे, स्वार्थी नहीं परमार्थी बनेंगे । सामाजिक हित चिन्तन मे दृढ रहेगे । चरित्रवान् तेजस्वी बनेगे वेद ज्ञान से परिपूर्ण हो कर जन-जन मे प्रेम फैलायेंगे, आनन्द बढायगे । द्वेष पनपने न दगें । सर्वथा उसका नाश करके सारी दुनिया को सुख समृद्ध बनायेंगे ।

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

सम्पादकीय टिप्पणी

यदन्तरम् तद्बाह्यम्

अन्तत पजाब के सत्तारूढ अकाली दल ने अपना वास्तविक स्वरूप प्रकट कर दिया जब केन्द्र को यह 'अल्टीमेटम' दिया गया कि यदि पजाब समझौते को लागू नहीं किया गया तो १४ जनवरी को मुक्तसर मे 'माघी सम्मेलन' के अवसर पर एक सघर्ष कार्य्यक्रम की घोषणा की जाएगी ।

[शेष पृष्ठ ८ पर]

अध्यात्म-सुधा

राष्ट्र रक्षा के लिए साधु कर्मा बनो

—महात्मा दयानन्द बान प्रस्थी,
तपोवनाश्रम, देहरादून

वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजे अद्या हुवेम ।
स नो विश्वानि हवनानि जोषद् विश्वशंभूरवसे साधुकर्मा ।।
यजु १७/२३

वाजे उतये अद्य हुवेम वाचः पति मनः जुव साधुकर्मा
विश्वकर्माणं स. विश्व शंभू नः विश्वानि हवनानि जोषत् ।।

संग्राम में कष्टो क्लेशो में फंसा साधक अपनी रक्षा के लिये आज पुकारता है । कष्ट कई प्रकार के होते है, प्रसगवश मुख्यतः अधिभौतिक अध्यात्मिक होते है । साधक उत्साही बन कर संघर्षो से टक्कर लेता है मुकाबला करता है । शत्रु शक्ति अधिक और कष्टों की मात्रा बहुत बढ़े, अपनी शक्ति अल्प न्यून अनुभव करके सहायता चाहता है ।

वेद मन्त्र में प्रस्ताव किया है पुकारो प्रभु देव को, एक महान शक्ति को, और अभी पुकारो रक्षा के लिए, समृद्धियो के लिए, शक्तियो के लिए ।

पुकारने से पूर्व दो बातो का ध्यान करना—

(क) ऐ पुकारने वाले ! तू पात्र भी है ।

(ख) जिससे मांग रहे हो, उसमें वह मांग पूरी करने की सामर्थ्य भी है या नहीं । प्रस्तुत मन्त्र मे दाता की सामर्थ्य को मन्त्र मे बताया गया है ।

(१) वह वाचःपति है— वाणी का, वक्तृत्व शक्ति, सुभाषण शैली का, बोले जाने वाले ज्ञान व भाषा का एक मात्र स्वामी है । यह केवल वैखरी वाणी से नहीं कहता परन्तु दृढ़ विश्वास से मान कर कह रहा हूं ।

वाच. पति की वाणी वेद की कल्याणी वाणी, ज्योति व शक्ति का संचार करने वाली, प्रेरणा प्रद, उत्साह जनक, कायरो को कर्मनिष्ठ बनाने की क्षमता वाली हो और विजय भावना को भर कर कहे

"चिड़ियां बाजूं बाज मरावां तदे गोबिन्द सिंह नाम कहावां"

ऐसी शुभ शक्तिशाली ओजस्वी व्यवहार में लाई जा सकने वाली वाणी का स्वामी दाता परमेश्वर है, उसी से ही मांगते हैं प्रभावशाली वाणी ।

(२) वही मनः जुवं है । मन जो कि ज्योतिषां ज्योति है, संकल्प शक्ति का स्रोत है, उस मन में विचारों की गुप्त प्रेरणा पवित्रता परिपक्वता प्रदान करता है । निराशाजनक स्थिति मे विजय की आशा भरता है । भयंकर संग्राम स्थिति का पासा पलटता है, मन में मजबूती लाता है, उसी सामर्थ्यवान स्वामी को सहायतार्थ पुकारता हूं कि दृढ़ सहनशील उदात्त मन प्रदान कीजिये ।

(३) वह ईश्वर साधुकर्मा है— जिसका कर्म न्याय, स्वभाव दयालुता का है । जो किसी भी परिस्थति में अपने न्याय व दयालुता को त्यागता नहीं है । विचित्र ढंग से इन दोनों विरोधी गुणो का सम्मिश्रण करके ज्ञानियो को चकित करता है, मोहित कर देता है ।

(४) विश्व शंभू— विश्व में सुख शांति स्वस्ति की स्थापना करने वाला एक मात्र सुधा सखा है । विषम परिस्थितियों में जब सब ससारी सखा साथ छोड़ जाते हैं वही अपने आश्रितों की सुध लेता है । सयम व सम्मान का सरक्षण स्वय करता है, योग क्षेम की रक्षा करता है । इन सब सुचारु कार्यों मे किसी अन्य पीर पैगम्बरों की सहायता पर, सिफारिशों पर निर्भर नहीं, स्वयं अपनी स्वःशक्ति से सुधार सवार और विस्तार करता है । ऐसे कल्याणकारी प्रभु को पुकारते हैं, कारण कि निर्माण और समृद्धि करण के जौहर पूर्ण संग्राम मे वही रक्षा करता तथा मार्ग प्रदशन करता है ।

(२) प्रसंग को जारी रखते हुए अगले मन्त्र १७/२४ में कहा कि—
विश्व कर्मन् इन्द्रं दातारं हविषा वर्धनेन् अवध्यं अकृणो :

(क) यह विश्व कर्मा प्रभु राष्ट्र को तारने के लिए हवियों को बढाता है और राष्ट्र को अवेध्य करना है, जिससे राष्ट्रछिद्रता नहीं कोई छेदने की हिम्मत तक नहीं करता, किसी भी परिस्थिति में राष्ट्र का बाल बांका नहीं हो सकता ।

(ख) तस्मै विश, समनमन्त पूर्वी अथ उग्र : विहव्यो: यथासत् ।। दूसरा उपकार प्रभु देव का कि राष्ट्र मे राजा प्रजा एक दूसरे का सम्मान करते हैं, सहयोग देते हैं । प्रजा राजा को पितावत् और राजा प्रजा को पुत्रवत् मान कर एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास करते है और कुर्बान होते है ।

प्रचण्ड विविध प्रकार की हवि/शस्त्रों से संपन्न कर देते हैं । नए-नए शस्त्र बनाने की सूझ आविष्कार दोनो रक्षा हेतु अथवा आक्रमण हेतु प्रभु देव प्रदान करते है । हथियारो के बनाने के लिए खनिज पदार्थ पैट्रोल इत्यादि भी प्रदान करते है । उनकी खोज कैसे कहा करनी होगी यह रहस्य प्रभु देव सुझवाते हैं । राष्ट्र में कुशाग्र बुद्धि वाले विद्वान, जिनकी बुद्धि मे इन प्राकृतिक रहस्यो को समझने की योग्यता हो और राष्ट्र के लिए जीवन अर्पित हो कर दिन रात एक करके एक निष्ठ हो कर कार्य करने वाले साहसी मेधावी व्यक्ति पैदा होते हैं परमेश्वर की महान्-महान् अनुग्रह से यही मेधावी राष्ट्र भक्त ही राष्ट्र को अवेध्य बनाते व उसकी ध्वज को ऊँचा करते है ।

(ग) राष्ट्र की रक्षा के लिए राष्ट्र में युगवीर कृष्ण शिवाजी सावरकर सुभाष बिस्मिल, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसी विभूतियां परमेश्वर पैदा करते हैं जो केवल अपना बलिदान नहीं परन्तु अपने जैसे सैकड़ों अन्य वीर भी रक्षा क्षेत्र में ला खड़े करते है । अन्याय अत्याचार अधर्म को समूलतः नाश करते हैं ।

आज हमारी आर्त पुकार है कि आर्य वृत्त राष्ट्र और आर्य जाति की रक्षा के लिए निज दया से ऐसे साधन व ऐसे वीर उपजाईये कि महर्षि दयानन्द जी के स्वप्न सार्थक हों, शत्रुओं की चढ़ी कमानें धरी की धरी रह जावें ।

★ ★ ★ ★

आर्य समाज राष्ट्र निर्माण का पुनः ध्वज वाहक बने

—डा० सूर्य देव प्राणाचार्य,
आर्य समाज मार्ग, गोरखपुर

लॉर्ड मेकॉले की शिक्षा नीति के परिणाम स्वरूप भारतीयो के द्वारा ही भारत पर अंग्रेजों का पूर्ण आधिपत्य हो चुका था। इस शिक्षा से शिक्षित लोग "वेद गड-रियो के गीत हैं, राष्ट्रीयता की देन भारत को अंग्रेजो द्वारा प्राप्त हुइ है सस्कृत एक मृत भाषा है, और आय मध्य एशिया से आये इत्यादि अनेक राष्ट्र विरोधी धारणाओ से प्रभावित सम्पूण भारतीय समाज इस प्रकार की विचारधारा से प्रभावित था। ऐसी विषम परिस्थितियो मे भारत वर्ष की पवित्र धरती पर महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उपर्युक्त विदेशी धारणाओ के विरुद्ध उन्होने वैदिक दुन्दुभी बजाई। सारे देश मे प्रबुद्ध वग मे वैचारिक क्राति का प्रादुर्भाव हुआ। इन वैदिक विचारों को स्थायित्व देने के लिये ऋषि दयानन्द ने सन् १८७५ मे बम्बई नगरी मे प्रथम आय समाज की स्थापना की। कुछ समय के पश्चात् ही सारे भारत मे विदेशी विचारो के विरुद्ध इन षड्यन्त्रो को नष्ट करने के लिये आर्य समाजो का जाल बिछ गया। पुन भारत को भारतीय आदर्शों से अनुप्राणित करने के लिये भारत का जन जन खडा हो गया। ये आर्य समाजें वेद, सस्कृत वैदिक सस्कृति तथा सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध प्रबल आदोलन का केन्द्र बन गई और बाल विवाह, अस्पृश्यता या छुआ-छूत तथा जाति व्यवस्था पर कुठाराघात करने लगी।

आवश्यकता यह प्रतीत हुई कि इन सामाजिक केन्द्रों का, जो आय समाज के रूप मे सारे विश्व मे फैली हुई हैं, सगठनात्मक ढाचा निर्मित किया जाये जिससे एक सिद्धात, एक आदश व एक-पद्धति से ये सब समाजें मिल कर कार्य कर सकें। इस प्रकार प्रान्तों मे आय प्रतिनिधि सभायें व केंद्र मे आय सावदेशिक सभा का सगठन हुआ।

इस प्रक्रिया के अन्तगत उत्तर प्रदेश मे जो देश का सर्वाधिक विशाल प्रदेश है, १८८६ मे आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई। सभा के सरक्षण मे अनेक राष्ट्रीय शिक्षणालय, गुरुकुल, दयानन्द विद्यालय, अनाथाश्रम, विधवा-आश्रम तथा सस्कृत शिक्षा के कन्द्रो की स्थापना की गई। उस समय देश मे इन सब कार्यों के परिणाम स्वरूप आय समाज वैदिक सस्कृति का सरक्षक और पाश्चात्य विचारो एव परम्पराओ का अवरोधक बन कर सामने आया। देश को पश्चिमीकरण की धारा विच्छिन्न हो गई। सारे देश मे वैदिक सस्कृति और परम्पराओ का उद्घोष होने लगा। एक नई सामाजिक क्राति से भारत के नगर और ग्राम गुंजित हो उठा।

राष्ट्र निर्माण

भारतीयो ने अपने गौरव को पहचाना।

इसी समय महात्मा गाधी भारतीयो की दुदशा, जो अफ्रीका मे हो रही थी, को देख कर भारत आये। उन्होने भारत की इस राजनीतिक दुस्थिति को देख कर उसके लिये प्रबल आंदोलन करने का सकल्प लिया। सामाजिक दृष्टि से आर्य समाज ने तथा उसके त्यागी तपस्वी एव कमंठ नेताओ ने राजनीतिक नवजागरण के लिये एक उवरा भूमि पहले से ही तैयार कर रखी थी। भारत की इन परिस्थितियो को देख कर महात्मा गाधी एक प्रभावशाली, अनुभवी एव देश भक्त तथा भारतीय स्थितियो के पूण जनकार व्यक्तित्व की तलाश करने लगे। इस काय के लिये वे बम्बई से सीधे गगा के उस पार हिमालय की उपत्यका मे स्थित गुरुकुल कागडी गये। वहाँ के आदश वातावरण एव उसके सचालक स्वामी श्रद्धानन्द का सान्निध्य प्राप्त किया। देश की तत्कालीन परिस्थितियो पर गभीर गवेषणा हुई। राष्ट्रोत्थान के लिये योजनाए बनी।

आदोलन पर आदोलन हुये। इनमे आय समाज के नेताओ ने पूरा सहयोग दिया। परिणाम स्वरूप ११४७ मे भारत को राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। स्वतन्त्रता के पश्चात् दुर्भाग्य से देश का नेतृत्व भारतीय आचार-विचारों से प्रभावित आर्य समाजियो एव उनके सदृश अन्य विचारो के हाथों से निकल गया और नेतृत्व पर ऐसे लोगों का अकुश हो गया जो शरीर से तो भारतीय थे परन्तु अन्त करण से पाश्चात्य आचार, विचार, शिक्षा सस्कृति और सभ्यता के पोषक थे। इन दिशाहीन स्वार्थी एव भारतीय आदर्शों से विहीन लोगो ने देश को समस्याओ के गर्त मे डाल दिया। इन लोगो ने सत्ता पर सदा बने रहने के लिये ऐसे कार्य किये जिससे देश में आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एव नैतिक मूल्यो का ह्रास होने लगा और आज भी हो रहा है।

आज इस देश की एक ज्वलन्त समस्या राष्ट्रीय एकता की है। देश मे अनेक देशद्रोही शक्तिया स्वार्थमयी भावना एव विदेशी प्रलोभनो से देश को दुर्बल करने पर तुली हुई है। इनका मूल शासको की अस्थिर एव स्वार्थ लोलुप सत्ता की तीव्र इच्छा मे सन्निहित है। आध्र प्रदेश के रामलू नामक व्यक्ति ने भाषाकार प्रातो के निर्माण के लिये अनशन किया। भारतीय शासको ने इसका विरोध किया परन्तु अनशन करते हुए उनकी मृत्यु हो गई। तुष्टीकरण के लिये श्री पणिक्कर के नेतृत्व मे भाषाधार प्रात की रचना के लिये समिति सगठित कर दी गई। भाषा के आधार पर देश अनेक प्रातो मे विभाजित हो गया। देश के विघटन की यह पहली प्रक्रिया थी। एक भाषा, एक रूप रग और एक सीमित प्रदेश मे रहने वाले लोग राष्ट्रीय एकात्मता के स्थान पर अपने स्वार्थ मे लिप्त हो गये। वे अब भारतीय नहा रहे। उनमे पजाबी, गुजराती, मराठा, तामिल, तेलगू के भाव उभर हो गये। इन स्वार्थमयी भावनाओ से एक-एक प्रात के दो-दो और तीन-तीन खण्ड हो गये। एक पजाब, हिमाचल, हरियाणा और पजाब मे तथा बम्बई महाराष्ट्र एव गुजरात मे विभक्त हो गया। अब तो प्राता के अनेक भाग किये जाने की प्रक्रियायें चल पडी हैं। शासक किंकर्तव्य विमूढ हैं। उनके तुष्टिकरण के परिणाम राष्ट्र को खण्डित और असुरक्षित कर रहे है।

(क्रमश)

★

शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार

लेखक वैद्य, हकीम —श्री राम शकर गुप्त
प्रधान आर्य समाज जलेसर मुकाम जलेसर
टाऊन, जिला एटा उत्तर प्रदेश

गतांक से आगे

अब इस सम्बन्ध मे महर्षि के निम्न वचनो, लेखो को कृपया ध्यान कर पढ़ें।

(१) अब कोई ऐसी शका निकाले कि पूर्व कृत पापो का दण्ड जीव को बिना भोगे छुटकारा नहीं मिलता यह हमारा मत है तो फिर पश्चाताप से कुछ भी लाभ नहीं है? क्या इसका उत्तर यह है कि पश्चाताप से पाप क्षमा नहीं होता परन्तु आगे पाप करना बन्द हो सकता है। चाहे कितना ही पश्चाताप हो जाये तो भी कृत पापो को भोगना पडेगा। इस का दृष्टान्त जैसे कोई कुए मे गिरा और उसके हाथ पाव टूट गये तो अब वह चाहे कितना पश्चाताप कर तो भी उसके हाथ पाव जो टूटे सो तो टूट ही चुके वह तो कुछ भी किये नहीं छूट सकता है। आगे के लिये कुए मे नही गिरगा इतना ही केवल होगा।

(उपदेश मन्जरी)

(२) प्रश्न—ईश्वर अपने भक्तो के पाप क्षमा करता है या नहीं। उत्तर—नहीं इस लिये सब कर्मों का फल यथावत देना ही ईश्वर

(३) इसके (जीव) कर्म और परमेश्वर के नियम तोड़ने का सामर्थ्य किसी का नहीं है।

(द्वितिय वृत्ति सन् १९८४ का सत्यार्थ प्रकाश)

अब लेखक इस बात का स्पष्टीकरण करे कि इनमे से कौन का कहना सत्य है और कौन का कहना मिथ्या है। लेखक महर्षि के लेखों और वचनो को सत्य मानता है अथवा डा० स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती के वचनो को सत्य मानता है।

आगे चल कर लेखक अपने इस लेख मे योग दर्शन का निम्न सूत्र देकर उसकी निम्न प्रकार व्याख्या करता है —

"सत मूले तद्विपाको जात्या-युर्भोगा ॥"

अर्थात् कर्मों के मूल पिछले तथा इस जन्म के दोनो प्रकार के कर्मों के मूल होने पर उसका परिणाम मनुष्यादि जाति उसकी आयु और उसके भोग हुआ करते हे, यदि पिछली भोगयोनि ही हो तो कर्म कहा से आयेगें।

विचार-विमर्श

इस योगदर्शन के सूत्र को मैने महर्षि के भाष्य के साथ अपने इस लेख मे दिया है और अपने पिछले लेखो मे भी इस योग दर्शन के सूत्र को महर्षि के भाष्य के साथ और स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी महाराज के भाष्य के साथ दिया है। दोनो महात्माओ ने अपने-अपने भाष्य मे पूर्व जन्म के कर्मो के अनुसार वर्तमान मे जीवो को जाति, आयु और भोग प्राप्त होते हैं ऐसा लिखा है उन्होने कहीं भी वर्तमान काल के कर्म से जाति, आयु और भोग का होना अपने-अपने भाष्य मे नहीं लिखा है।

मैं पूछता हू कि जीव का जन्म हो गया और जन्म के दस बारह वर्ष पश्चात् वह कर्म करने लायक होगा तो फिर उसके वर्तमान मे जन्म लेने मे वर्तमान के कर्म कैसे सहायक हो गये। दर्शनकार कहता है :—

"पूर्व कृत फलानुबन्धात्तदुत्पत्ति ॥४॥"

(न्या० द० अ०३ आहि० २ सूत्र ६४)

अर्थात् पूर्व शरीर मे किये कर्मो के फल के अनुबन्धन से इस शरीर की उत्पत्ति होती है।

और वेदान्त दर्शन में भी कहा गया है कि —

"कृतात्यये ऽनुशयवान्दृष्टस्मृतिभ्या यथेतमनेवञ्च ॥८॥"

(वेदान्त दर्शन अ० उप० २ स ८)

अर्थात् इष्ट कर्म फल भोग लेने पर शेष बचे सस्कारो से युक्त जीवात्मा जैसे यहा से गया था उसी से अथवा अन्य मार्ग से यहा वापिस आता है ऐसा स्मृतियो से जाना जाता है।

इस सूत्र का भाष्य करते हुए श्री जगद गुरु स्वामी शकराचार्य जी महाराज अपने ब्रह्म सूत्र के भाष्य मे लिखते है कि —

"स्मृति वर्णाश्रमाश्च स्वकर्म, निष्ठा प्रेत्य कर्म फलमनुभूय-तत शेषणा विशिष्ठ देश जाति, कुल स्नयायु श्रुत वृत्त वित्त सुख मेधसो जन्म प्रति पद्यन्ते इति" सानुशयना मेवावरोह दर्शयति"

(ब्र० सू० शा० भा० अ० ३पा०१ सू० ८ पृष्ठ स० ५७७)

अर्थात् "वर्णश्रमाश्च" वर्ण और आश्रम वाले अपने कर्म मे निष्ठा रखने वाले मरणान्तर कर्म फल का अनुभव (भोग) कर उससे शेष कर्म द्वारा अनुशय नामक कर्म द्वारा विशिष्ठ देश, जाति, कुल, आयु, ज्ञान, आचार, वित्त, सुख और मेधा वाले हो कर जन्म प्राप्त करते हैं। यह स्मृति भी अनुशय सहित जीव का अवरोहण दिखलाती है।

(हिन्दी अनुवाद स्वामी सत्यानन्द सरस्वती जी महाराज पृष्ठ स० ५७७)

इस सम्बन्ध मे मैंने धर्म सूत्र, गीता ग्रन्थ और महाभारत आदि के और वेद, उपनिषद के प्रमाण अपने गत लेखो मे दिये ही है वही सब यहा पर भी समझना चाहिये।

अरे मुनि जो महाराज वर्तमान के कर्म वर्तमान के शरीर धारण मे कोई सहायता नहीं करते हैं वह तो भविष्यत के लिये ही प्रभावशाली होते हैं जैसा कि न्याय दर्शनकार का कहना कि —

"न सद्य कालान्तरोपभोग्यत्वात ॥४५॥"

(न्या० द० अ० ४ आहि १ सू० ४५)

अर्थात् कालान्तर मे भो होने से तत्काल फल नही होता।

इस सम्बन्ध मे आचार्य शु ने भी कहा है कि —

यज्जायतेल्प क्रियया न
चापि महत्फलम्।
तद विप्राक्त नादेव के चिन्
गिह कर्मजमे ॥५॥

शुक्र नीति अ० १ श्लो० ५२

अर्थात् जो मनुष्यो को ठ कर्म से महान फल होता है वह पूर्व कर्म से ही होता है क्योकि जन्म के कर्म से किंचित भी होता।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

त्रुटियों के लिए क्षमा याचना

खेद है कि प्रेस की भूल कारण 'आर्य मित्र' दिनांक ४ वरी १९८७ के अक मे कुछ त्रु रह गई हैं—

(१) सम्पादकीय पृष्ठ २ पर दिनाक २८ दिसम्बर १ के स्थान पर ४ जनवरी १ पढा जाय।

(२) पृष्ठ स० ६ पर व नम्बर २ मे पैरा न० ४ मे उ पिकाओ द्वारा ५००) के पर ५०००) का सात्विक दिया गया पढा जाये।

उपर्युक्त त्रुटियो के लि खेद है।

—सम्पादक मण्डल

प्रवासी भारतीयों हेतु संघर्षशील—

आर्य समाज के अनुयायी संन्यासी भवानीदयाल

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

★ जीवन—ज्योति ★

सत्रहवीं शताब्दि में योरुपीय साम्राज्य का विस्तार तीव्रता से अफ़्रीका और एशिया में हुआ। भारत में साम्राज्य का विस्तार किया और अफ़्रीका में विकास हेतु श्रमिकों की पूर्ति भारत से की गयी। धीरे-धीरे भारतीय मूल के सहस्रों व्यक्ति अफ़्रीका के देशों में फैल गए विशेष रूप से डरबन—जोहन्सबर्ग में इन भारतीयों के साथ गोरी जाति अमानुषिक व्यवहार करती थी और बन्धक मजदूरों की दशा शोचनीय थी। जब इन अफ़्रीकी देशों में शिक्षित भारतीय संयोग से पहुंचे तो उनके उत्थान एवं रंगभेद निवारण हेतु आवाज बुलन्द की गई—मोहन दास कर्मचन्द गांधी का एक राजनैतिक जीवन भी जोहन्सबर्ग और डरबन में इसी दिशा में आरम्भ हुआ। इसके अतिरिक्त गोपाल कृष्ण गोखले, श्रीनिवास शास्त्री, भाई परमानन्द आदि के प्रयास उल्लेखनीय रहे। विदेशी ब्रिटिश नागरिक दीन बन्धु सी० एफ एन्ड्रूज का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। इसी के समकक्ष प्रवासी भारतीयों के उत्थान के लिए की गयी सेवाओं में श्रेष्ठतम है सन्यासी भवानी दयाल जी।

भवानी दयाल जी के पूर्वज जोहन्सबर्ग में श्रमिक होकर गये। इनके पिता श्री जयरामसिंह और माता मोहिनी देवी भी भारतीय थे बिहार निवासी। भवानी दयाल का जन्म जोहन्सबर्ग में १८९२ में हुआ। दक्षिण अफ़्रीका में जन्म लेने वाले बालक में पावक संस्कार भारतीय थे और दस वर्ष की आयु में ही वीर महापुरुषों के जीवन से प्रभावित होने लगे। उन्हीं दिनों में मोहनदास गांधी फोनिक्स में आश्रम चला रहे थे और भारतीयों के साथ बन्धक मजदूरों जैसे व्यवहार के विरुद्ध आवाज उठा रहे थे गांधी जी का पत्र 'इण्डियन ओपीनियन' भारतीयों में प्रिय था भवानीदयाल भी इसके पाठक हुए और भारतीय प्रवासियों के हित में काम करने का संकल्प किया।

भवानीदयाल के पिता बोहरा ग्राम बिहार (भारत) सपरिवार आगये भवानी दयाल भारत में आकर भारतीय नेताओं की राष्ट्रीय गतिविधियों से परिचित हुए तथा दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में हुई कलकत्ता कांग्रेसमें सम्मिलित हुये और निश्चय किया कि अब जीवन की गति भारतीय राष्ट्रीयता और प्रवासी भारतीयों की सेवा में ही अर्पित है—इसी बीच १९०८ में मुजफ्फरपुर के अंग्रेज कलेक्टर के ऊपर बम फेंकने के आरोप में अल्प वयस्क खुदीराम बोस को फांसी दी गई। भवानी दयाल के संकल्प मजबूत होते गये। पिता ने गृहस्थी में बांधने हेतु इनका विवाह अठारह वर्ष की आयु में कर दिया और अफ़्रीका भेजने का प्रयत्न किया कि वहां जाकर कार्य करें।

भवानी दयाल १९१२ में अफ़्रीका गये परन्तु गांधी जी के पूर्ण अनुयायी बन गये तथा इण्डियन ओपीनियन के हिन्दी संस्करण के सम्पादक हुए तथा फोनिक्स आश्रम में रहने लगे। दीन बन्धु एन्ड्रूज के सान्निध्य से प्रवासी भारतीयों की सेवा का व्रत और दृढ़ हो गया तथा भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम में भी योगदान का प्रयास किया। आर्यसमाज की विचारधारा से भी प्रभावित हुए तथा स्वयं को वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन में समर्पित किया। रूढ़िवादिता के विरोधी हुए। कट्टर पन्थ को समाप्त करने का प्रयास किया और अफ़्रीका में प्रवासी भारतीयों में आर्यसमाज के आदर्शों के प्रति आस्था जागृति की तथा दक्षिण अफ़्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रथम प्रधान भी हुए और वहां की प्रमुख आर्य समाज में भवानी दयाल सन्यासी कक्ष उनकी स्मृति में निर्मित है। जोहन्सबर्ग में रहते हुए अपने पुत्र रामदत्त तथा भतीजे को १९२० के लगभग भारत में गुरुकुल वृन्दावन में शिक्षा हेतु भेजा। भवानी दयाल जी व्यवहार में भी पूर्ण रूप से आर्य पुरुषों सा उदाहरणीय जीवन व्यतीत करते थे।

सादा सरल वेषभूषा खद्दर के वस्त्र भवानी दयाल के शरीर पर रहे। आर्यसमाज के प्रचार के साथ हिन्दी के प्रचार में भी अग्रसर रहे। दक्षिण अफ़्रीका में 'हिन्दी' नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया जिसके द्वारा कई वर्षों तक अफ़्रीका और मारिशस—फीजी—रोडेशिया—टंगानिका आदि क्षेत्रों में प्रवासी भारतीयों में व्यापक प्रचार किया। अन्त में सरकारी दमन और आर्थिक परिस्थितियों में पत्र बन्द हो गया। भवानी दयाल जी भारत में 'सरस्वती' के प्रमुख सम्पादक पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी के सम्पर्क में आए। लेखन के प्रति रुचि बढ़ी और प्रवासी भारतीयों से सम्बन्धित पुस्तकों की रचना की—प्रमुख हैं—१—दक्षिण अफ़्रीका में भारतीय सत्याग्रह का इतिहास। २—दक्षिण अफ़्रीका के अनुभव। ३—वैदिक धर्म और आर्य सभ्यता। ४—वैदिक प्रार्थना। ५—वैदिक धर्म और आर्यसमाज। ६—प्रवासी की कहानी। ७—कारावास की कहानी। ८—महात्मा गांधी का जीवन चरित। ९—ट्रान्सवाल और नैटाल में प्रवासी भारतीय आदि। भारत में पटना में भी रहते हुए 'आर्यावर्त' पत्र का प्रकाशन और सम्पादन किया तथा उग्र राष्ट्रीय विचारों के कारण ब्रिटिश शासन के कोप भाजन हुए तथा कई वर्षों तक हजारी बाग के कारावास में भी रहे।

भवानीदयाल जी जिस प्रकार सफल लेखक एवं सम्पादक थे उसी प्रकार से प्रभावशाली वक्ता भी थे—श्रोता शान्तभाव से उनका ओजस्वी भाषण सुनते थे। दक्षिण अफ़्रीका में रहने के कारण अंग्रेजी में भी लेखन तथा भाषण में पटु थे। विचारों में उग्र होने के कारण गांधी और श्रीनिवास शास्त्री की अंग्रेजों के प्रति खुशामदी नीति के भी विरोधी रहे और तार्किक रूप से इनकी आलोचनायें करते थे। निष्ठावान होने के कारण वैदिक धर्म और हिन्दुत्व के समर्थक थे। संन्यास लेने के बाद सदैव देश और विदेश में गेरुआ वस्त्र में रहे। सिर पर पगड़ी लम्बा कुरता तथा पायजामा। भारत में भी गांधी की 'खिलाफत' मुसलमानों के आगे समर्पण नीति के विरोधी रहे। सन् १९३५ तक कभी भारत और कभी अफ़्रीका में सामाजिक कार्यों में संलग्न रहे—भारत में जेल में भी रहे। अफ़्रीका में भारतीयों के हित में जुझारू नेता रहे और १९३५ में स्थायी रूप से भारत में आकर अजमेर में बस गये तथा 'प्रवासी भवन' स्थापित करके यहीं से शेष जीवन प्रवासी भारतीयों की सेवा के लिए कार्य करते रहे और यहीं १९५२ में उन का निधन हुआ—इस प्रकार प्रायः जीवन के चालिस वर्ष इस मानव श्रेष्ठ ने भारतीय हितों के लिए भारत और अफ़्रीका में संघर्ष किया जिसकी मिसाल मिलना कठिन है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मेरठ में ससमारोह सम्पन्न

दिनांक २१-१२-८६ रविवार को प्रातः ९ से १२ बजे तक केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ की ओर से मेरठ नगर की समस्त आर्य समाजों के सम्मलित साप्ताहिक सत्संग में श्री मानसिंह जी वर्मा प्रधान की अध्यक्षता में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस जीमखाना मैदान मे समारोह-पूर्वक मनाया गया। विशिष्ट अतिथि थे श्रीयुत सच्चिदानन्द जी शास्त्री महामन्त्री सार्वदेशिक सभा दिल्ली। संयोजन श्री इन्द्रराज जी ने किया जो कि केन्द्रीय समिति के मन्त्री हैं और प्रान्तीय सभा के अध्यक्ष हैं। कार्यक्रम विशेष यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। यजमान थे श्री भरतसिंह जी उपमन्त्री आर्य समाज मेरठ शहर। भक्ति संगीत एवं क्रान्तिकारी संगीत प्रस्तुत किया श्रीयुत् हरस्वरूप जी, श्रीयुत् मनवीर जी, श्रीयुत् कर्णसिंह जी, श्रीयुत् हीरालाल जी एवम् युवक हरि ओम् एवं प्रमोद कुमार ने। श्रीयुत् सत्य पाल जी शास्त्री ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शुद्धि पर बल दिया। श्रीयुत् मार्गसिंहजी प्रधान जिला सभाने श्रद्धानन्द जी का आर्य समाज का विविध रूपो में कार्य एवं सेवा करते हुए वैदिक धर्म पर बलिदान को प्रेरणादायक बताते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री स्वराज्य चन्द जी ने बड़े ओजस्वी शब्दो में पजाब में निर्दोष हिन्दुओं के रक्तपात को रोकने के लिए सार्वदेशिक सभा एवम् केन्द्रीय सरकार से सक्रिय पग उठाने का आग्रह किया। सुश्री कमला जी आचार्या आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय सासनी ने गुरुकुल की सेवा का संकल्प लेते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजली अर्पित की। श्रीयुत् सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने पंजाब की रोमांचकारी घटनाओं को सुनाते हुए केन्द्रीय सरकार से आग्रह किया कि सैनिक प्रशासक पंजाब में बिठा कर रक्तपात शीघ्र समाप्त किया जाय। उन्होने विस्तार से सार्वदेशिक सभा की ओर से पंजाब से आये हिन्दू भाईयो की सहायता का ब्यौरा देते हुए आर्य जनों से आर्थिक सहायता की अपील की तथा कुवैत में एक आर्य बन्धु को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने पर जेल में डालने की निन्दा करते हुए मांग की कि उसे तुरन्त रिहा किया जाय अन्यथा सार्वदेशिक सभा की ओर से दूतावास पर उग्र-प्रदर्शन किया जाएगा। श्री विद्यारत्न जी अधिष्ठाता विद्यार्य सभा के निर्देशन में श्रीयुत् इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश ने प्रान्तीय शताब्दी की प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवम् तृतीय आने वाली निम्नलिखित शिक्षण संस्थाओं को शील्ड प्रदान किए—

१—कन्या गुरुकुल [सासनी] हाथरस।

२—एम० सी० वैदिक इन्टर कालेज, आगरा।

३—आर्य कन्या पाठशाला इन्टर कालेज, मुजफ्फर नगर।

४—डी० ए० वी० इन्टर कालेज, खबरेड़ा।

५—गुरुकुल प्रभात आश्रम [टीकरी] भोलाझाल मेरठ।

६—दयानन्द बाल मन्दिर, टनकपुर।

७—गुरुकुल, एटा।

८—आर्य इन्टर कालेज, बहादराबाद।

तत्पश्चात् श्री आत्म प्रकाश जी प्रधान पंजाबी आर्य भ्रातृ सभा के निर्देशन में श्री इन्द्रराज जी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने आर्य समाज खानपुर, मेरठ, के मन्त्री जी को आर्य समाज के लिये २ दरियाँ, यज्ञ कुन्ड पात्र तथा साहित्य प्रदान किया। श्री मान सिंह जी वर्मा के अध्यक्षीय श्रद्धांजलि एवं श्रीयुत् इन्द्रराज जी द्वारा सूचनाओं और धन्यवाद के पश्चात् सभा समाप्त हुई।

मेरठ में गीता वार्ता का आयोजन

गीता में सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण पर सभा प्रधान पं० इन्द्रराज जी द्वारा उद्बोधन

आत्मचिन्तन मन्च के अन्तर्गत गीता वार्ता का आयोजन मेरठ के सम्भ्रान्त व्यक्ति सेठ मनोहर लाल जी ने अपने मकान महल हरि नगर में किया जिसमें नगर के सम्भ्रान्त व्यक्तियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। विषय था = तमोगुण—रजोगुण और सतोगुण। श्री डा० राम प्रकाश जी अग्रवालने अध्यक्षता की। श्रीयुत् इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश इस वार्ता के संयोजक थे। वार्ता कार थे प्रो० शिवानन्द जी प्राचार्य देव नागरी इन्टर कालेज, मेरठ। सर्व प्रथम संयोजक श्री इन्द्रराज जी ने लाला लाजपत राय के जीवन पर प्रकाश डालते हुये पंजाब में हो रहे निर्दोष हिन्दुओ के रक्त-पात की निन्दा की तथा प्रबल शब्दो मे कहा कि—आज अगर लाला लाजपत राय होते तो पंजाब की यह दयनीय अवस्था कभी न होती। साथ ही संयोजक महोदय ने मुख्य अतिथि श्री राधेलाल जी सिंहल, विशिष्ट अतिथि श्री सुबोध जी विनोद, सह सम्पादक 'प्रभात' मेरठ। श्री डा० राम प्रकाश जी अग्रवाल पूर्व प्राचार्य मेरठ कालेज, श्रीयुत् मास्टर सुन्दर लाल जी एवम् प्रो० शिवा नन्द जी का परिचय करवाया और सेठ मनोहर लाल का इस उत्तम प्रयास के लिये भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री हीरालाल जी के मधुर संगीत के पश्चात् श्रीयुत् प्रा० शिवा नन्द जी ने गीता पर बोलते हुये उसकी जीवन मे उपयोगिता का महत्व दर्शाते हुये—तमोगुण, रजोगुण और सतोगुण की व्याख्या की। तत्पश्चात् श्री सुबोध जी विनोद ने गीता मार्ग के प्रति अपनी निष्टा व्यक्त करते हुये कहा कि वे भी निरन्तर अपने व्यापार मे और जीवन में गीता के द्वारा बताये हुए मार्ग पर चलने का प्रयत्न करते रहते हैं। श्री राधेलाल जी मुख्य अतिथि ने सबको गीता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा की। श्री डा० रामप्रकाश जी अग्रवाल ने गीता पर बोलते हुए तमोगुण-रजोगुण और सतोगुण की विस्तार से व्याख्या की। मास्टर सुन्दर लाल जी ने लाला लाजपत राय जी को माला अर्पित करते हुए कहा कि बहुत पहले मुझे सौभाग्य मिला था कि मैने लाला जी को माला पहनाई थी। आज मै उनके चित्र पर नहीं अपितु चरित्र पर माला अर्पित कर रहा हूं। उन्होने तीनों गुणों का बड़े ही रोचक ढंग से वर्णन किया। अन्त में श्रीयुत् इन्द्रराज जी ने विषय पर बोलते हुए बहुत संक्षेप में कहा कि विद्वानजन सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण को एटम् [पर-माणु] के इलेक्ट्रोन, प्रोटोन और न्यूट्रोन में देख सकते हैं, वे भू—भुर्वा, स्वः में भी देख सकते हैं। वे भूलोक, अन्तरिक्ष लोक और द्यु लोक में भी देख सकते हैं। ब्राह्मण—क्षत्रिय—वैश्य और शूद्र के रूप में समाज में भी देख सकते है। विद्वानजन इन तीनों गुणों को अपने शरीर—अपने कर्तव्य, अपनी श्रद्धा आदि अनेक जीवन के स्थलों पर देख सकते है।

अन्त में 'आनन्द स्रोत—बह रहा पर तू उदास हैं' इस भजन के साथ सभा समाप्त हुई तत्पचात् सेठ मनोहर लाल जी की ओर से आगन्तुक महानुभावों को जलपान कराया गया।

देश दर्शन

अलीगढ़ मुस्लिम वि० वि० में सांप्रदायिकता

अलीगढ़, । पुलिस ने सिविल लाइन्स थाना क्षेत्र स्थित 'रायल प्रिन्टर्स प्रेस' पर छापा मार कर भारी मात्रा में राष्ट्र विरोधी तथा सांप्रदायिक तनाव भड़काने वाली प्रकाशित सामग्री जब्त की है।

पुलिस अधीक्षक शैलजाकांत मिश्र ने बताया कि जब्त की गई सामग्री यदि अलीगढ़ में वितरित हो जाती तो वहां सांप्रदायिक दंगा भड़क सकता था।

श्री मिश्र ने सम्वाददाताओं को बताया कि गत एक माह से अलीगढ़ विश्वविद्यालय परिसर मे सांप्रदायिकता भड़काने वाले पोस्टर चिपकाये जा रहे थे और इन्हीं घटनाओं को देखते हुए उप-कुलपति सैयद हाशिम ने वि० वि० परिसर मे पर्चा वितरण तथा बैठको के आयोजन पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। जिला मजिस्ट्रेट हरदेव सिंह ने ऐहतियातो तौर पर शहर मे धारा १४४ लागू कर दी है।

श्री मिश्र ने बताया कि दंगा भड़काने के षडयंत्र का पर्दाफाश उस समय हुआ जब पुलिस ने विश्वविद्यालय परिसर मे पोस्टर चिपकाते मो० मोबीन नामक एक लड़के को गिरफ्त मे ले लिया पूछताछ के दौरान जो संकेत उसने दिये उसी के आधार पर प्रेस पर छापा मारा गया।

पुलिस ने छापे के दौरान मुद्रक अली अहमद, प्रकाशक मोहम्मद हारून को गिरफ्तार कर लिया। इस सम्बन्ध में विश्वविद्यालय के 'अमीन हास्टल' के एम० एम० हाल में रह रहे दो छात्रो नकीम अहमद व मोहम्मद उस्मान को भी गिरफ्तार किया गया है, जब कि मामले से सम्बद्ध एक अन्य व्यक्ति हाफिज इलियास फरार बताया जाता है। पकड़े गये चारों अभियुक्तों के विरुद्ध रासुका के तहत कारंवाई की जा रही है।

कुलपति आवास पर आक्रमण

इस बीच उत्तेजित छात्रों की भीड़ द्वारा पिछले सोमवार की रात को अलीगढ़ विश्वविद्यालय के अहाते में तनाव की स्थिति पैदा हो गई है।

स्थिति की गम्भीरता को देखते हुये विश्वविद्यालय के अहाते में पुलिस एवं पी०ए०सी० तैनात कर दी गई है।

वरिष्ठ पुलीस अधीक्षक जी० ए० शर्मा ने बताया कि उत्तेजित छात्रों ने तीन छात्रों की गिरफ्तारी के खिलाफ कुलपति आवास पर हमला करने की कोशिश की थी।

उक्त गिरफ्तार छात्रों को उत्तेजनात्मक पोस्टर लगाने एवं पर्चे बांटने के आरोप में एक प्रिंटिंग प्रेस के मालिक समेत गिरफ्तार कर लिया गया था।

उपकुलपति ने बताया कि छात्रों के एक गुट की विश्वविद्यालय परिसर में अशांति पैदा करने की कोशिश से बाध्य होकर उन्हें पुलिस बुलानी पड़ी।

तानसेन कभी मुसलमान नहीं बने

ग्वालियर, । प्रसिद्ध विद्वान पण्डित हरिहर निवास द्विवेदी का मत है कि मुगल सम्राट अकबर के दरबार के प्रसिद्ध गायक तानसेन ने इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया था। और ग्वालियर में तानसेन की जो समाधी बताई जाती है वह उस तानसेन की नहीं है किसी अन्य तानसेन की भले ही हो।

डा० द्विवेदी ने यह बात अपने नए ग्रन्थ तानसेन की जीवनी और व्यक्तित्व में कही है। यह उनकी ५८ वीं कृति है। इस पुस्तक का विमोचन कल यहा हरिहर निवास द्विवेदी अमृत महोत्सव समिति द्वारा आयोजित एक समारोह में प्रसिद्ध और वयोवृद्ध पुरातत्ववेत्ता डा० हरिहर द्विवेदी ने किया।

समारोह का उद्घाटन प्रसिद्ध गायक पं० कृष्णराव शंकर पण्डित ने दीप प्रज्वलित करके किया। अध्यक्ष जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर के कुलपति डा० कृष्णकांत तिवारी थे।

द्विवेदी ने अपनी पुस्तक में तानसेन रचित पद देते हुए कहा कि गायक के अलावा वे ऊँचे साहित्यकार भी थे, उनके द्वारा रचे पदों की संख्या सैकड़ों में है। उनकी मृत्यु आगरा मे ही हुई थी मगर ग्वालियर मे सूफि संत मोहम्मद गौस के मकबरे के निकट तानसेन की जो समाधी बताई जाती है वह उन तानसेन की नहीं है। मो० गौस से उनका कोई लेना देना नहीं था अतः उनका मो० गौस का शिष्य बनने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

यूं तड़पा-तड़पा कर मारी जाती हैं गाये

बड़ौत, यमुना के आस पास के गांव में घोड़े पर सवार गाय व सांडो की हत्या करने वाले गिरोह से जनता भयभीत है।

यह गिरोह गाय व सांडों को घेर कर यमुना तट पर ले जाते हैं जहां यमुना को रेत में धसा कर इन्हें मार दिया जाता है।

टांडा से लेकर बागपत तक के यमुना तट के गावों में इस समय इनका आतंक छाया हुआ है। जो गांव वाला इन्हें ऐसा करने से रोकता है उन्हें गोली मारने की धमकी दी जाती हैं।

अनेक गांव वालों ने एक पत्र जिलाधीश को भेज कर इस आतंक को रोकने की मांग की है, पत्र में कहा गया है कि जिमाना। ढिकाना, बोबली, जागस, टाडा आदि में कई हत्या की गई है।

हिंदुस्तानी छोकरियाँ पादरी ले जाते हैं विदेश

कोचिन : केरल के मुख्यमन्त्री के० करुणाकरन ने बताया कि हमारे यहां से पढ़ी लिखी जवान लड़कियों को यूरोप देश इटली आदि में पादरी लोग फसलाकर ले जाते है वहां उन्हें नन्स (साध्वी) बना दिया जाता है। वायदा किया जाता है कि नर्स की ट्रेनिंग देकर भेज दिया जायेगा। पर वहा उनके साथ क्या किया जाता है इसकी रिपोर्ट मिली है। इस काम को रोकने के लिये नया कानून बनवाया जा रहा है।

[हिन्दू सभा वार्ता से साभार]

यदन्तरम तद्बाह्यम्

(पृष्ठ २ का शेष)

यह तथ्य सर्वविदित है कि अकाली सरकार पंजाब में आतंकवाद को कुचलने में सर्वथा अयोग्य सिद्ध हुई है क्योंकि उसके अनेक मन्त्रियों और कार्यकर्त्ताओं की सहानुभूति और अपरोक्ष सहयोग 'खालिस्तान' की मांग करने वालों से रही है। केंद्र की ढुलमुल नीति ने ही यह स्थिति ला दी है कि आज सत्तारूढ़ दल केंद्रीय सरकार को चुनौती दे रहा है।

अब भी समय है कि केंद्रीय सरकार आर्य समाज के सर्वोच्च नेता द्वारा घोषित राष्ट्रीयहित की मांग को स्वीकार करबरनाला सरकार को तुरन्त अपदस्थ कर राष्ट्रपति शासन लागू कर ५ वर्षों के लिए नागरिक सुरक्षा का कार्य्य सेना को सौंप दे अन्यथा पंजाब की स्थिति और भी भीषण हो जाने की पूरी सम्भावना है।

—वसन्त

राष्ट्रभृत् यज्ञ

श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य सहायक कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने सूचित किया है कि इस राष्ट्रीय सकट के अवसर पर जन जागरण हेतु दिनांक २४-१२-८६ से २८-१२-८६ तक प्रतिदिन प्रात. ७-३० से ११ तक एव साय ६-३० से ९ बजे तक आर्यसमाज स्टेशन रोड मुरादाबाद मे राष्ट्र भृत यज्ञ एव राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा।

वार्षिकोत्सव

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) डा० भोलाझाल मेरठ का वार्षिकोत्सव दिनांक १३, १४ जनवरी ८७ दिन मगलवार–बुधवार मकर सौर सक्रांति के पर्व पर होगा। जिसमे स्थानीय तथा बाहर के विद्वान भाग लेंगे।

सब भाई बहन इस अवसर पर सादर आमन्त्रित हैं।

इन्द्रराज मन्त्री

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) पो० भोलाझाल, मेरठ

(२)

आर्यसमाज बड़हलगज (गोरखपुर) का वार्षिकोत्सव दिनाक २३ मार्च से २४ मार्च १९८७ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा जिसमें आर्यजगत के ख्याति प्राप्त उपदेशक, भजनोपदेशक विद्वान एव वक्ता सम्मिलित हो रहे है।

हिमालय की सुरम्य घाटियों में

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम का वसन्तोत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम के तत्वावधान मे महर्षि कण्व की तपोस्थलि एव आर्य राष्ट्र भारतवर्ष के जन्मदाता महान भरत की जन्म स्थलि कण्वाश्रम कोटद्वार भाबर मे महान गुरुकुल बसन्त पचमी मेला ३, ४, ५ फरवरी को बडी धूमधाम से मनाया जायेगा।

ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी डा० भवानीलाल की नवीन कृति

का विमोचन ऋषि मेले के अवसर पर अजमर मे आर्यसमाज के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी के कर कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रसिद्ध विद्वान डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी ने इस ग्रथ की भूमिका लिखी है और यह ग्रथ लेखक से ही, जी–३ पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के पते पर पत्र लिखकर २० रुपये मे प्राप्त किया जा सकता है।

—सवाददाता

आर्यसमाज अमरोहा प्रांगण में–

लिहाफ वितरण समारोह

आर्यसमाज अमरोहा मुरादाबाद के प्रधान श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य ने सूचित किया है कि आयसमाज अमरोहा द्वारा प्रति वर्ष निर्धन असहाय नर-नारियों को जाडो मे लिहाफ बांटने का पुनीत कार्य किया जाता है।

इस वर्ष भी २८ दिसम्बर १९८६ रविवार को प्रात ८–३० से १०-३० बजे तक यज्ञ वेदोपदेश, सगीत आदि कायक्रम के अनन्तर श्री चिन्तामणि शर्मा आई पी एस डी आई जी पुलिस मुरादाबाद मण्डल के करकमलो द्वारा नेत्रहीन, विकलाग, असहाय स्त्री पुरुषो को लिहाफ वितरित किये गये।

इस वर्ष का यह तीसरा वितरण क्रम था।

शोक सभा

श्री वासुदेवसिंह जी को श्रद्धांजलि

२४–१२–८६ सायकाल ४ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ मे स्व०वासुदेवसिह को श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए एक शोक सभा का आयोजन राजर्षि श्री रणञ्जयसिह जी की अध्यक्षता मे किया गया। राजर्षि ने कहा कि महात्मा गाधी, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन तथा सरदार पटेल की भाँति श्री वासुदेवसिह जी कट्टर सिद्धान्तवादी थे। वे सच्चे राष्ट्रवादी तथा राष्ट्र भा[illegible] अनन्य भक्त थे। उनके निधन से राष्ट्र की अपार क्षति हुई है। स्वदेश के दक्षिणी भाग मे हिन्दी का जो विरोध किया जा रहा है उस[illegible] लिए हमे दृढता का परिचय देना होगा और यह ही उनके प्रति वास्तविक श्रद्धाजलि होगी।

सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने कहा कि जब शताब्दी समारोह का आयोजन किया जा रहा था और उसमे जब उन्हे आ[illegible] किया गया तो उन्होने कहा था कि–आर्यसमाज ने उन्हे जो [illegible] दिया है, उसके लिए वे सर्वदा ऋणी रहेगे। स्वामी दयानन्द जी के महान कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्होने कहा था कि गुजराती और सस्कृतज्ञ होते हुए भी उन्होने हिन्दी भाषा मे ही अपने ग्रथो की रचना की। श्री वासुदेवसिह जी ने शताब्दी समारोह मे भी अपना व्याख्यान शुद्ध हिन्दी भाषा मे ही दिया। उनके निधन से निस्सन्देह राष्ट्र की और हिन्दी प्रचार की अवर्णनीय क्षति हुई है।

महात्मा प्रभु आश्रित जन्म शताब्दी समारोह

१५ से २२ फरवरी तक राष्ट्रभृत् यज्ञ का आयोजन

स्वर्गीय पूज्य महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज जी की जन्म शताब्दी क उपलक्ष्य मे वैदिक भक्ति साधन आश्रम आय नगर रोहतक (हरयाणा) के तत्वावधान मे १०१ कुण्डो पर यजुर्वेद ब्रह्म पारायण यज्ञ अथवा राष्ट्र भृत यज्ञ १५ फरवरी १९८७ से २२ फरवरी १९८७ तक महात्मा दयानन्द जी संचालक तपोवन आश्रम देहरादून व रोहतक के ब्रह्मत्व मे कराया जायेगा।

१९–२०–२१ फरवरी का क्रमश वेद सम्मेलन, यज्ञ सम्मेलन व राष्ट्र रक्षा सम्मलन भ। होग, जिनमे आयजगत क उच्चकोटि के विद्वान विचार दॅग।

२१ फरवरी ८७ को प्रात यज्ञ उपरान्त इच्छुक महानुभावो को वानप्रस्थ आश्रम का दीक्षा दी जावगी। इच्छुक महात्मा दयानन्द जी स सम्पक कर।

२२ फरवरी को १–३० बजे यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त श्रद्धांजलिया दी जावेंगी और अन्त मे ऋषि लगर भ। होगा।

यज्ञ प्रेमी नर–नारी भाग लकर धम लाभ उठावें।

भोजन व निवास की व्यवस्था आश्रम द्वारा नि शुल्क हागी। अपन लिए ऋतु अनुकूल वस्त्र व बिस्तरा अवश्य लावें।

यज्ञ मे भाग लेने वालो के लिए यज्ञ समय पीत वस्त्र धोती कुर्ता ब्लौज पहनने होग।

प्रशान्त मुनि मन्त्री

वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक

नूतन वर्ष का वासन्ती रूप

नवोदित शिशुता का ससार,
सुपोषित बन जाये अभिराम।
युवा होकर वासन्ती रूप,
बनाये उपवन पुलक प्रकाम।
आदि हो जाये शिव उद्भूत,
इसी मे सचित हो उत्कर्ष।
भग्न हो भेदभाव प्राचीर,
एकता के गुंजित हों राग।
एक हो जाति, एक ही धर्म,
सुरभि पूरित जीवन हो याग।
उतारें भूतल पर मिल स्वर्ग,
मिलेगा विकसित बहुं फिर हर्ष।
विगत है अन्ध निशा का लोक,
उतरता स्वर्ण किरण आलोक।
भ्रान्तियां गति की हो निरुपाय
खिले नव फूल, मिटाकर शोक।
सुमति से गर्भित हो बहु राग,
करें दुर्भावों से संघर्ष।
भुलाया है जब से अस्तित्व,
स्वयं से दूर हुआ निरुपाय।
बढ़ा आतङ्कवाद का भूत,
कुचक्रों का है फिर सकाय।
सुसज्जित जो अमृत का स्रोत,
उसे पाने मे शेष प्रकर्ष।

डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी प्रोफेसर्स कालोनी श्यामगंज, बरेली

आर्यसमाजी आगे आएँ

आर्यसमाजी, आगे आएँ, है बढ़ रहा जमाना।
वैदिक वाणी को दुनियाँ के घर–घर हे पहुचाना॥
मानवता है मौन, दनुजता अट्टहास करती है।
आसमान है चिन्तित, आकुल-व्याकुल यह धरती है॥
सागर के खारे जल से है अमृत-धार बहाना।१।
सृष्टि हमेशा चलती रहती, पवन गमन करता है।
वृक्ष फूलता-फलता है, पा समय वही झड़ता है।
सरिता के जल से मत पूछो, उसे कहाँ है जाना।२।
युग न बन्द रहता, न समय ही कभी मौन रहता है।
चला सदा करती है अबला, ऊंच महल ढहता है।
मूल पकड़ जो बैठा रहता, होता है पछताना।३।
द्रुतगति से विज्ञान रहा बढ़, बढ़ी सभ्यता जाती।
मानव कब तक बैठ सुरक्षित रखे धरोहर-थाती।
है विकास का नाम जिन्दगी, रुकना ही मर जाना।४।
अगर चाहते हो जीना, युग की नाड़ी पहचानो।
कथन वेद का 'चरैवेति' है, उसका कहना मानो।
धोखा मे पड़ता जिसने है समय नहीं पहचाना।५।

—अनिल कुमार 'अनिल' ग्राम-नीरपुर, पो० रामनगर करारीकछार, गाँव-अथमलगोला, पटना—८०३२११

संन्यासी भवानी दयाल

(पृष्ठ ६ का शेष)

क्योंकि संन्यासी भवानीदयाल अवसरवादी नहीं थे। सिद्धान्त त्याग कर लाभ–लोभ की ओर नहीं झुके। संघर्ष में कभी नरम नहीं पड़े और वैदिक धर्म को राजनीति के तराजू पर तौलने के लिए तय्यार नहीं हुए सदैव दृढ़ रहे–निर्भय रहे और निर्भीक होकर मृत्यु का वरण किया।

आर्यसमाज ने प्रथम पचास वर्षों में जिन व्यक्तियों को प्रभावित किया ओर जो समाज सेवा मे आगे आये उनमें स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा हंसराज, भाई परमानन्द के समकक्ष सादर संन्यासी भवानी दयाल का स्थान है। १९१९ मे अमृतसर कांग्रेस मे प्रवासी भारतीयो के हित मे प्रस्ताव रखा १९२४ मे मथुरा मे दयानन्द जन्म शताब्दि महोत्सव मे सक्रिय रहे। हिन्दी साहित्य सम्मेलनो मे भाग लेते रहे तथा बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के १९३५ मे अध्यक्ष भी रहे।

सन्यासी भवानी दयाल जी का जन्म दिसम्बर दस १८९२ मे जोहन्सबर्ग मे हुआ था, अतः दिसम्बर मास मे भारतीय जीवन दर्शन मे पूर्ण आस्थावान व्यक्ति के प्रति श्रद्धाजलि समर्पित करना और उसका स्मरण करना हमारा कर्तव्य है। आज जब निष्ठा की कमी है। वैदिक धर्म के प्रति आस्था डगमगा रही है। भारत में अग्रजी का प्रभाव बढ़ रहा है। अफ्रीका में रंगभेद जोरो पर है। राजनीति में स्वार्थ और आत्मलाभ का दृष्टिकोण ह राजनीति अपने हित में ढाली जाती है। भारतीय नेता अग्रेजियत की ओर भाषा तथा वेषभूषा से अधिक झुक रहे है तब भूले-बिसरे आर्य श्रेष्ठ भवानी दयाल सन्यासी का स्मरण आवश्यक है जो महापुरुष विचारो से स्वामी दयानन्द जी का दृढ़ अनुयायी रहा। वेषभूषा में सदैव भारतीय रहा और अफ्रीका मे भारतीयो बन्धक मजदूरों की दशा के सुधारने मे गाधी और एन्डूज का प्रबल सहायक रहा और पत्रकारिता एव हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे स्वर्गीय गणेशशकर विद्यार्थी का अनुयायी रहा। नवीन पीढ़ी को ऐसे आर्य रत्न का परिचय प्राप्त करना श्रेयस्कर रहेगा।

पाणिग्रहण संस्कार

सभा के भूतपूर्व प्रचारक एवं भजनोपदेशक श्री विन्ध्येश्वरीसिंह जी के पौत्र चि० राजेश कुमारसिंह का पाणिग्रहण संस्कार वाराणसी निवासी श्री इन्द्रदेवसिंह की आयु० सुपुत्री, कु० रेखासिंह के साथ दि० २३ नवम्बर १९८६ को पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज हरपुर जमानिया [गाजीपुर] के प्रधान श्री बालरूप सिंह के प्रपौत्र का नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार दिनाक २२–११–८६ को सम्पन्न हुआ।

अन्य वेद प्रचार समारोह

—आर्य समाज औरंगाबाद महाराष्ट्र में 'महर्षि दयानन्द भवन' के उद्‌घाटन के उपलक्ष्य में 'राष्ट्रभृत यज्ञ' का प्रबल आयोजन हुआ। इसी अवसर पर आर्यजगत के प्रकाण्ड विद्वान श्री डा० अमरेश जी हैदराबाद का प्रभावशाली एवं ओजपूर्ण व्याख्यान हुआ।

—आर्यसमाज महाराजपुर जिला छतरपुर म० प्र० का वार्षिकोत्सव दिनांक ३०–११–८६ से २–१२–८६ तक भव्य आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ।

—नगर आर्य वीर दल भोजपुर (आरा) में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस दिनांक २३ दिसम्बर १९८६ को उत्साह के साथ मनाया गया।

समवेदना

निम्नलिखित आर्यों के दिवंगत होने के समाचार प्राप्त हुए है जिस के लिए सभा संवेदना व्यक्त करती है–

१–सुप्रसिद्ध आर्य नेता एवं समाज सेवी श्री ला० मदन मोहन लाल पट्टी वाले चन्दौसी निवासी।

२–पिथौरागढ़–टकाना में आर्यसमाज के प्रधान श्री पं० लक्ष्मीदत्त भट्ट की पूज्यनीया माता तुलसी जी का १०० वर्ष की अवस्था में।

३–निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद के कोषाध्यक्ष के पुत्र श्री रामेश्वर लाल जी अग्रवाल।

४–श्रीमती चन्द्रावती प्रधाना महिला आर्यसमाज बहराइच पत्नी श्री कृष्ण माधव जी सरन [पूर्व प्रधान आ० स०] का निधन २७–११–८६ को हो गया। आपकी आयु ७५ वर्ष की थी।

५–श्री लक्ष्मीनारायण जी कोषाध्यक्ष जनपद आर्य उप प्रतिनिधि सभा बहराइच, पूर्व प्रधान आर्यसमाज गिलौला [बहराइच] के भी निधन का समाचार प्राप्त हुआ है।

६–बुलन्दशहर के भजनोपदेशक श्री कर्मवीर सिंह चौहान।

७–आर्यसमाज चौक बुलन्दशहर के वरिष्ठ सदस्य श्री परसादीलालजी

८–गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के धर्माधिकारी कक्षा के छात्र श्री दिनेश ब्रह्मचारी (बिहार) की पूज्यनीय माता जी।

९–आर्यसमाज भागलपुर के प्रधान एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री पं० कमलनयन शर्मा।

१०–आर्यसमाज सदर बाजार बरेली के प्रधान पं०राधाकृष्णजी की धर्म पत्नी श्रीमती सत्यावती जी।

११–गुरुकुल महाविद्यालय वैरंगनियां बिहार के स्वामी रामकृष्ण जी वानप्रस्थी।

इन दिवंगत आत्माओं की शांति तथा सम्बन्धित जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना है।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

आवश्यक सूचना—

आर्यमित्र के वार्षिक शुल्क में वृद्धि

ग्राहक महानुभाव कृपया ध्यान दें

चूंकि डाक विभाग ने डाक से भेजे जाने वाले समाचार पत्रों पर ५ पैसे के स्थान पर १ जनवरी १९८७ से १५ पैसे के टिकट लगाने का निर्णय किया है अतएव आर्यमित्र के प्रत्येक साधारण अंक पर १० पैसे के अतिरिक्त टिकट लगाने से वर्ष भर में ५२ अंकों पर १० पैसे के दर से ५.२० अतिरिक्त व्यय बढ़ गया है। अतएव विवश होकर आर्यमित्र का शुल्क १ जनवरी १९८७ से २०) के स्थान पर २५) वार्षिक शुल्क करना पड़ा है।

'आर्यमित्र' के समस्त ग्राहक महानुभावों से हमारा विनम्र निवेदन है कि हमारी विवशता को देखते हुए वे वर्ष ८७ के लिए २५) भेजने की कृपा करें। उत्तरप्रदेश की समस्त आर्यसमाजें भी अपने वार्षिक चित्र दशांश भेजते समय आर्यमित्र का वार्षिक शुल्क २५) ही कृपया भेजें।

विश्वम्भर दयाल गुप्त
व्यवस्थापक

आर्य जगत

–गोंडा निवासी श्री देवकली प्रसाद आर्य के सुपुत्र चि० श्री यशवीर श्रीवास्तव का पाणिग्रहण संस्कार आयु० कौमुदी श्रीवास्तव पुत्री श्री बजरंगबली प्रसाद श्रीवास्तव निवासी बलरामपुर गोण्डा के साथ दिनांक ९–१२–८६ को पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

–आर्यसमाज पुलंग बंश का ३४ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २४ नवम्बर से ३० नवम्बर १९८६ तक धूमधाम से मनाया गया इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महोपदेशक विद्वान मनीषी तपोनिष्ठ आचार्य महात्मा रामकिशोर जी वैद्य वानप्रस्थी के ब्रह्मत्व में, प्रति दिन प्रातःकाल स्वस्ति, शांति राष्ट्रभृत यज्ञ आदि का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

–आर्यसमाज कायमगंज [फर्रुखाबाद] के वार्षिकोत्सव के अवसर पर तमिलनाडु में द्रमुक के नेतृत्व में चलाये जा रहे राजभाषा हिन्दी विरोधी आन्दोलन को अवांछनीय एवं राष्ट्र विरोधी मानते हुए निन्दा प्रस्ताव पारित किया गया।

शोक प्रस्ताव

–१४–१२–८६ को आर्यसमाज कायमगंज द्वारा एक शोक प्रस्ताव पारित कर पंजाब की आतंकवादी गतिविधियों में मारे गये निर्दोष हिन्दुओं के प्रति हार्दिक समवेदना व्यक्त करते हुए अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की गई एवं क्रूर आतंकवाद के शिकार परिवारों के बचे हुए आत्मीयजनों को इस संकट की घड़ी मे धैर्य एवं साहस से विषम परिस्थिति को सहन करने की शक्ति प्रदान करने हेतु परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की गई।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४५६९३
पंजीकरण सं० एल. डब्लू/एन. पी. ७९
पौष शुक्ल १२
रविवार, ११ जनवरी १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार

[पृष्ठ ५ का शेष]

महर्षि की दुहाई दे दे कर महर्षि के गौरव और गरिमा को छोछा-लेदर करने वाले मुनि जी महाराज अब आप इस सम्बन्ध मे महर्षि के इन लेखों को अपने छिपे वाले की आंखों को भली प्रकार खोल कर पढ़े जो इस प्रकार है।

महर्षि लेख (१) इस लिये पूर्व जन्म के पाप पुण्य के अनुसार वर्तमान जन्म और वर्तमान तथा पूर्व जन्म (शेष रहे) कर्मानुसार भविष्यत जन्म होता है।

(२) पश्चात धर्म राज अर्थात् परमेश्वर उस जीव के पाप पुण्य के अनुसार जन्म देता है।

(३) देखो जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप पुण्य के वश हो कर परमेश्वर की व्यवस्था से सुख दुःख के फल भोगने के लिये जन्मान्तर धारण करता है। क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी नाश कर सकता है।

(तृतिया वृत्ति सन १८८४ का सत्यार्थ प्रकाश)

उपर्युक्त महर्षि के लेखांशो से अब आपकी बुद्धि पर आवरण हट कर आपकी बात के ग्रहण करने मे समर्थ हो जावेगी कि पूर्व जन्म के कर्मानुसार भविष्यत जन्म होता है।

अपने इस लेख में लेखक ने केवल मात्र एक ही बात महत्व की दलील उठाई है कि "यदि पिछली भोग योनि ही हो तो कर्म कहा से लायेंगे।" लेखक की इस बात का उत्तर यह है कि यदि जीव किसी भी भोग योनि से अपने कर्मो का फल भोग कर और कुछ भी कर्म फल भोगने को शेष छोड़ कर नहीं आया है तो परमात्मा ने उस जीव को नूतन: कर्म करने के लिये मानव योनि दी है और उसको कर्म करने केलिये सामान्यत शतवर्ष का समय प्रदान किया हैताकि जीव अपनी इच्छानुसार स्वतन्त्र रूप से अच्छे अथवा बुरे कर्म शत वर्ष तक करे। इस जीव को न तो दुःख होगा न सुख होगा न राग होगा न द्वेष होगा न उन्नति होगी न अवनति होंगी उसका जीवन सामान्य रूप से चलेगा फिर जैसा सुकर्म करेगा वैसी जाति वैसी आयु और भोग जन्मान्तर मे पायेगा। यह नूतन जीव शत वर्ष तक देह धारण करेगा इस से अधिक अथवा न्यून नहीं।

(समाप्त)

★

ऋषि-राज कलेण्डर १९८७

इस कलेण्डर में देशी तिथियां, अंग्रेजी तारीख दी हैं। महर्षि की जीवनी के प्रत्येक पृष्ठ पर चित्र हैं। इसके अतिरिक्त वर्षों के ४० चिन्ह स्थान-स्थान पर गायत्री मन्त्र, आर्यसमाज के नियम हैं। १ कलेण्डर ६० पैसे, ४ कलेण्डर तीन रुपये १० कलेण्डर पांच रुपये, सौ का मूल्य ५०) पहले भेजे।

यज्ञ सामग्री ३-५० किलो आर्य डायरी ६) रु०।

पता—वेद प्रचार मण्डल
करोल बाग, रामजस रोड, दिल्ली—५

आवश्यक सूचना

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह नवं.एवं दिस.१९८६ में समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २५) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पडेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८५ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

जिनका शुल्क १५ नवंबर ८६ को समाप्त

१८७९, ३२५४, ५३५४, ७०२८, ८३८२, ८६८२, ८८५४, ८८५९, ९३३१, १००२४, ११०५१, ११०३४, ११०७०, ११३६८, १२०५९, १२४४६, १२४४८ .१२ ५२, १२७५९, १२७६५, १२७७४, १२७७८, १३२८८, १ ४, १३३४६, १३६४८, १३६४९ १३६५०, १३६५१, १३६५ , १३६५३, १३६५४

पन्द्रह दिसंबर ८६ को जिनका शुल्क समाप्त

३४९, ६२४, ८५३, १०५३, २११०, २१६२, २२४०, २२५४, २६५०, २६५६, २६६१, २९८७, ३६२७, ३९४७, ८४५०, ९३५२, ९७६४, ९७७०, ९७७२, १००२७, १००६१, ११०८७, ११०८८, ११३८९, ११७८३, ११७९६, १२४९०, १२५१७, १२५२१, १२५३०, १२७८१, १२७९४, १२८०१, १२८०४, १३०२९, १३३५८, १३३६४, १३६५५, १३६५६, १३६५७, १३६५८, १३६५९, १३६६०, १३६६२, १३६६३, १३६६४, १३६६५, १३६६६,

—व्यवस्थापक

—आर्य समाज मीरजापुर के ९९वें वार्षिकोत्सव के स्वर्ण सुअवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री पूज्य महात्मा आनन्द बोध जी के कर कमलो से महर्षि वेदपथिक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी पं० धर्मवीर जी आर्य ब्रह्माधारी व्याख्यान भूषण के निम्न पांच साहित्य सुमनो का विमोचन किया गया :—

१—यज्ञ और जीवन २—नैतिक शिक्षा ३—धर्म सूत्र ४—आजीवन स्वस्थ रहने की कला ५—वेद संदेश

इस अवसर पर वेदपथिक जी ने अपने शुभ संकल्प को दुहराया कि सर्वतोर संख्याता के २५ साहित्य सुमनों तथा शिक्षा प्रद चार्टों की बिक्री से दिल्ली में बनने वाले महर्षि दयानन्द वेद विश्व-विद्यालय के लिए एक करोड़ रुपयों का दान प्रदान श्रद्धा सहित किया जाएगा।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से विन्ध्यवासिनी प्रिन्टिंग प्रेस ९ बुलन्दबाग, लखनऊ से श्री विशम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४१/५७ | घोषणा पत्र स० ७/२८-७-८५

माघ कृष्ण ३, रविवार, सवत् २०४३ वि० दिनाक १८ जनवरी १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल—

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

★

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड
एक प्रति	६० पैसे

वर्ष ६०

अङ्क ३

प्रभु की अमृत वाणी—

उत्तिष्ठत! संनह्यध्वम्, प्रस्थात, प्रयात

प्र यात शीभमाशुभि सन्ति कण्वेषु वो दुव । तत्रा षु मादयाध्वै ॥

[कण्वो घोर । मरुत । गायत्री] (ऋ० १-३७-१४)

वदिक धर्म का नाद गुजाने वाले आयो तथा आयो ! क्या तुम मच्च हृदय से यह कामना करते हो कि सम्पूर्ण भूमण्डल पर वास करने वाले समस्त मानवो का एकमात्र धर्म वद धर्म हो जाए । वह धर्म वद धर्म जो प्रत्येक मानव मे मानवता का धारण कराता है । विश्व का आर्यकरण करने का जो स्वप्न स जते है उसे यदि अपनाना चाहते हो तो तुम्हारी साज घर बठकर अथवा किसी मन्दिर मे बैठकर कदापि पूरा नहीं होगा । तुम्हे सीमित और सकुचित चार दीवारियो से बाहर निकलना पडेगा और वहा पहुचना पडेगा जहा मानवता अत्याचारो, अनाचारो दुराचारो, शोषणो और पीडाओ से कराह रही है । परमात्मा अपनी पुनीत वेदवाणी मे तुम्हे आदेश देता है— (प्रयात) प्रयाण करो बाहर निकलो बढो और वहा पहुचो (शीभम) शीघ्र [illegible] (आशुभि) आशु गति से द्रुतगामी साधनो से ।

कहा ? जहा पीडाओ से मानवता पीडित है, मानवी प्रजा अत्याचारो की वेदनाओ से कराह रही है, दुराचारो के फलस्वरूप रोगों से ग्रसित होकर सिसक रही है, अश्रुपान कर धाराए बहा रही है ।

(कण्वेषु) सिसकने हुओ मे कराहते हुओ मे (तत्र उ) वहा पर ही उनमे ही, निश्चयात्मक रूप से उन स्थानो पर जहा ये दुखी मानव है । [किस लिए] (व दुव स न) तुम्हारी सेवाओ की जहा [आवश्यकता] है ।

यदि तुम अपने मे वद धर्म का पालन कर अपनी मनुष्यता को सिद्ध करना चाहते हो तो तुम्हे वद के आदेश का पालन करना होगा । यदि वेद का सुनना सुनाना पढना और पढाना तुम्हारा परम धर्म है तो तुम्हे यह भी आत्मसात करना होगा कि धर्म वही है जो धारण किया जाए और धारण किया हुआ ही तुम्हारा कर्म है अतएव धर्म कर्म से पृथक नहीं है ।

तुम अपने भीतर आनन्द पाना चाहते हो शान्ति पाना चाहते हो तो वह किसी हाट में कहीं बिकने नहीं जो माया के साधन से क्रय किए जा सके । वे तुम्हारे भीतर है पर वे तुम्हे तभी प्राप्त होंगे जब तुम दीन दुखीयो की सेवा का व्रत लेकर उनके पास पहुचोगे । प्रभु कह रहा है इस मन्त्र मे—

(तत्र उ) वहा ही [वहा सेवार्थ पहुचकर सेवा करोगे] (सु मादयाध्वै) सुष्ठुतया आनन्दित होओगे ।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिन्होने भूखे, नगे, पीडित मानवो की सेवा का व्रत धारण कर चारदीवारी से बाहर पग बढाए, सफलता ने उनके चरण चूमे और धरती पर उनका मत फैलता गया ।

अतएव वेद को परम धर्म मानने वालो ! वैदिक वीरो ! उत्तिष्ठत ! उठो ! स नह्यध्वम् सन्नद्ध हो जाओ, तैय्यार हो जाओ प्रस्थात, प्रस्थान करो, आगे बढो, प्रयात, पहुचो भूमण्डल के नगर नगर मे, वनों मे, पर्वतो पर, राज्य महल से लेकर कुटियाओ मे, नभ मे उडान भरते हुए जलाशयो को चीरते हुए, धरती को लाघते हुए, दुखियो को सुखी बनाकर मानव धर्म का पालन करने के लिए, उनका हृदय जीतकर उन्हें वेद धर्म का अनुगामी बनाने के लिए ।

वैदिक वीरो ! अब तुम उठो ! सन्नद्ध हो जाओ ।
निकल के चारदीवारी से बाहर, दृढता को अपनाओ ॥
मानवता की सेवा करने, प्रभु की पावन ज्योति जलाओ ।
पग हटें न पीछे 'वसन्त' जब तक निज लक्ष्य न पाओ ॥
कर विजय [illegible] वेद का [illegible] [illegible] बजाओ ।
चलो स्वय आर्य पहले फिर जग को आर्य बनाओ ॥

—वसन्त

से आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ।।

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

श्री रामकुमार भारद्वाज रिहा

सऊदी अरब की सरकार झुकी—

आर्य समाज की शानदार विजय हुई

ज्ञातव्य हो कि मई १९८६ में शाहपुर जिला जींद (हरियाणा) के श्री रामकुमार भारद्वाज जो कि सऊदी अरब में नौकरी के लिए गए थे तथा सऊदी अरब की सरकार ने उन्हें "सत्यार्थ प्रकाश" रखने के कारण गिरफ्तार करके कारावास में भेज दिया था, आर्य जगत एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती के अथक प्रयास से रिहा हो गये हैं तथा अपने गांव शाहपुर सकुशल वापस आ गये हैं।

श्री रामकुमार की गिरफ्तारी पर क्षुब्ध होकर स्वामी आनन्द बोध जी ने भारत के प्रधान मन्त्री एवं विदेश मन्त्री के सम्मुख इस प्रश्न को बड़ी गम्भीरता से उठाया था, तथा अरब दूतावास से उच्चस्तरीय संपर्क भी किया था। निश्चय ही, श्री राम कुमार की रिहाई आर्य समाज की शानदार विजय है।

सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार १८ जनवरी १९८७, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

श्री राम जन्म भूमि या बाबरी मस्जिद

कतिपय राजनीतिक नेताओं ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए अल्प संख्यक व बहुसंख्यक समुदाय में साम्प्रदायिक वैमनस्य फैलाने के लिये प्रयत्न करना अपना धर्म सा बना लिया है। खेद है प्रायः सभी राजनीतिक पार्टियो ने (बाहर से देखने मे मधुर परन्तु अन्दर से विषमय वातावरण बनाने में योगदायी) अल्प संख्यक सेल अपनी-अपनी पार्टियों में अल्प संख्यकों के हित चिन्तन का बहाना लेकर बनाये हैं।

इसी हित चिन्तन की भावना को लेकर आगामी २६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस के बहिष्कार का कतिपय राजनीतिक नेताओ ने जिनमें जनता पार्टी के सांसद श्री शहाबुद्दीन जैसे कई प्रमुख हैं—आह्वान किया है। उनके अनुसार श्री राम जन्म भूमि को बाबरी मस्जिद ही माना जाना चाहिए। अन्यथा वे सभी प्रकार की अराजकता, फैलाने से बाज नहीं आयेंगे। ऐसा उनके भाषणों व व्यवहार से संकेत मिलता है। कितना गिर चुका है हमारे तथा कथित नेताओं व पार्टियों का चरित्र। कब तक ऐसे साम्प्रदायिक तत्व सहन किये जाते रहेगे। क्या देश की संरक्षिका राजनीतिक पार्टियां इसी प्रकार अपनी-अपनी पार्टी को वोट पाने के लिए राष्ट्र विरोधी शक्तियो को प्रश्रय देती रहेंगी।

श्री रामजन्म भूमि या बाबरी मस्जिद इसका विवाद जब न्यायालय मे चल रहा है तो क्यों कोई भी वर्ग इस विषय को तूल देने का यत्न करता है। क्या यह स्पष्ट न्यायपालिका की अवमानना नहीं है। अपनी-अपनी मनोभावना मृदु रूप में इतिहास के साक्ष्य के साथ जन-मानस तक पहुंचाने का प्रयत्न एवं न्यायालय को उक्त साक्ष्यों से अवगत कराने का विधिक प्रयत्न का निश्चय ही प्रत्येक पक्ष को अधिकार है। परन्तु इस प्रकार आंदोलनात्मक, संघर्षात्मक, विद्वेषात्मक स्थिति उत्पन्न करना सर्वथा अनुचित है। गणतन्त्र दिवस, स्वाधीनता दिवस यह राष्ट्रीय पर्व हैं इनका बहिष्कार राष्ट्रद्रोह माना जाना चाहिए।

पिछले दिनों जब न्यायालय ने श्री राम जन्म भूमि का ताला खोलने का निर्णय दिया था वह स्थिति तो जिला प्रशासन द्वारा ताला बन्द किए जाने की स्थिति को खत्म करके आजादी से पूर्व की यथा स्थिति स्थापित करने के रूपमें थी।

ताला खुलने के बाद जब आन्दोलित हुआ था एक वर्ग उस समय देश के प्रख्यात साहित्य मनीषी और पत्रकार श्री शिवसिंह 'सरोज' एव पारिजातम् संस्कृत मासिक पत्रिका के प्रधान सम्पादक डा० प्रकाश मित्र शास्त्री ने अपने अलग-अलग लेखों में आयने अकबरी के राजकीय आदेशों को साक्ष्य रूप मे प्रस्तुत करके यह स्पष्ट किया था कि बाबरी मस्जिद को मन्दिर तोड़ कर ही बनाया गया था।

मेरे अनेकों मनीषी मुसलमान मित्रों से मेरी वार्ता हुई उन्होंने इस सत्य को स्वीकारा कि मुसलमान पहले आक्रामक बन कर आये अनेकों हिंदू मन्दिरों को तोड़ कर मस्जिदें बनायीं। परन्तु अब हम हिंदू मुसलमान एक भाई-भाई के रूप में रहते हैं अतः उन स्थानों को जहां मन्दिर तोड़ कर मस्जिदें बनायी गयी हैं, स्वयं मुसलमान नेताओ को चाहिए कि वह हिंदुओं को सौंप दें और मधुर वातावरण बना कर देश को समठित करें। परन्तु राजनीतिक स्वार्थ की सिद्धि इसमे बाधक है इस लिए वे ऐसा करते नहीं, बल्कि ऐसे कमजोर अंश बार-बार उभार कर हिन्दू-मुसलमानो को लड़ा कर देश को कमजोर करने का यत्न अवश्य करते हैं।

देश भक्ति तो इसमें है कि वे सभी अल्पसंख्यक नेता जो ऐसे साम्प्रदायिक तूल देते हैं—वास्तविकता को स्वीकार करके आक्रामकों द्वारा जहां-जहां हिंदू स्थलों को तोड़-तोड़ कर उनके पूजा स्थल बनाये गये हैं वे सभी हिंदुओं को स्वेच्छा से सौंपने का प्रयत्न करते, और देश में भ्रातृत्व—सौहार्द्र की भावना फैलाने में भागीदार बनते।

हमारे देश की सरकार का सिद्धांत सभी सम्प्रदायों को अपनी अपनी रुचि के अनुसार पूजा की पूर्ण स्वतन्त्रता देना है किसी भी वर्ग के साथ ज्यादती करना नही। इसी आधार पर वह तथ्यात्मक पहलुओं को भी नजरन्दाज करती है ताकि विश्व में उसकी धर्म निरपेक्षता पर आंच न आ जाये। परंतु तथ्यों को भूल कर सत्य को किसी कारण विशेष से स्वीकार न करना अधर्म होगा। ऐसे अधर्म सरकार को बचना ही चाहिए।

हमारे देश की विशेषता है कि यहां सभी मत सम्प्रदायो को अपना प्रचार करने, उन्हें पनपने की स्वतन्त्रता रही है इसी कारण अनेकों मत सम्प्रदायो की अपनी-अपनी पूजा पद्धति है। पूजा स्थल भी हैं। सभी की पूजा व पूजा स्थलों की स्वच्छता, पवित्रता, मर्यादा की रक्षा अवश्य करनी चाहिए। सभीको अपने मतानुसारसत्य प्रकट करना चाहिए और तर्क की कसौटी पर जो खरा सत्य हो उसे बिना किसी संकोच के स्वीकार भी करना

(शेष पृष्ठ ५ पर)

प्राचीन भारत में नारियों को सैनिक शिक्षा

—डा० शिवनन्दन कपूर

भारत में प्राचीन काल से ही सैनिक शिक्षा की व्यवस्था रही। नारियों को भी सैनिक शिक्षा दी जाती थी। वैदिक युग में कन्याओं को धनुर्विद्या सिखाने के संकेत मिलते हैं। (ऋग्वेद, १।११२।१०-१०-१०२-२) । उस युग में स्त्रियां न केवल सैनिक शिक्षा पाती थीं, अपितु युद्ध में भी जाती थीं। खेल राजा की पुत्री विश्पला अत्यन्त वीरांगना थी। वह पिता के साथ रण-क्षेत्र में भी पराक्रम दिखाती थी। एक बार समर भूमि मे उसका एक चरण बुरी तरह टूट-फूट गया। इस पर अश्वि देवो ने उसकी टांग काट कर लगा दी थी।

रामायण काल

वाल्मीकि रामायण के एक संस्करण में श्वेत द्वीप की चर्चा आती है। वहां सुन्दरियों का ही शासन था। नारियों के उस द्वीप में कोई पुरुष न था। रूपसियां ही वहां शासक, अधिकारिणी तथा सैनिकायें थी। नारद ने एक बार रावण को वहां की रूपसियों के रूप और धन की चर्चा कर उसे आक्रमण के लिए उकसाया। रावण ने श्वेत द्वीप पर चढ़ाई की किन्तु उसे न केवल मुंह की खानी पड़ी अपितु जीवन में सबसे अधिक अपमानित होना पड़ा। कैकेयी ने भी विधिवत् सैनिक शिक्षा प्राप्त की थी। राजा दशरथ के साथ वे भी युद्धों में जाया करती थीं। एक बार रथ का पहिया क्षतिग्रस्त हो जाने पर उन्होंने धुरी की जगह पर अपना हाथ लगा दिया था। इस प्रकार राजा की प्राण रक्षा कर उन्होने दो वरदान प्राप्त किये थे। देवी दुर्गा के वीर रूप की आज तक पूजा होती है। उन्होने भी नारियों की सेना का संगठन किया था।

पातंजलि ने भाला चलाने वाली वीरांगनाओं का वर्णन किया है। हर्ष के काल में नारियां न केवल शिक्षा प्राप्त कर युद्ध में जाती थीं, अपितु आहतों की सेवा शुश्रूषा भी करती थीं। स्कन्धावार (सेना का शिविर, पड़ाव) के पीछे के भाग में चिकित्सकों का शिविर रहता था। महिला स्वयंसेविकाओं के रूप में उनके साथ रहती थीं। वे समय पर चिकित्सकों को आवश्यक शस्त्र-औषधियां आदि पहुंचाया करती थी। घायलों की परिचर्या किया करती थी। साथ ही सब के लिए अन्न, पानी आदि की व्यवस्था और भोजन कराना भी उनका काम था। अर्थशास्त्र में भी ऐसी व्यवस्था करने का निर्देश दिया गया है (अर्थशास्त्र १०-३-६१)। स्कन्धावार के पीछे आधे भाग में राजा का अन्तःपुर रहा करता था उसके पीछे ही अन्तःपुर की ये रक्षिकायें भी उपस्थित रहती थी (अर्थशास्त्र १०।१।३) नारी सेना की ये रक्षिकायें निरन्तर सशस्त्र रहा करती थीं। सेना की रण-यात्रा के समय सैनिकों को उठाने के लिए महिला सैनिकायें हुआ करती थी। उन्हें 'याम चेटियां' कहा जाता था। (हर्षचरि, अ० ४) । भरहुत की मूर्तियों में सुदृढ़ अश्वारोहिणी वीरांगनाओं की प्रतिमायें भारत की वीर अंगनाओं की गाथा गाती हैं। कौटिल्य ने महिला धनुर्धरों का भी उल्लेख किया है। (धर्म और समाज, डा० राधाकृष्णम् पृ० १६४)।

महिला मण्डल

सिकन्दर का आक्रमण

जब-जब भारत-भूमि पर किसी विदेशी ने अपनी कुदृष्टि उठाई, इस देश की स्त्रियों ने भी तलवार संभाली। जब सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया तो उसे अनेक स्थानों पर लोहे के चने चबाने पड़े। कठ जाति पर आक्रमण के समय नारियो ने भी सशस्त्र संभाले। पुरुषों के साथ वे भी युद्ध क्षेत्र में व्यूहरचना मे संलग्न हुई। उनकी वीरता से यूनानी सैनिक स्तम्भित रह गये। नारियो की युद्ध शिक्षा तथा कठ जाति की वीरांगनाओं का वर्णन यूनानी इतिहासकारों ने भी किया है। (दी सिविलिजेशन आफ एनशियेण्ट इण्डिया, लुई रेनू, पृ०—७१)। मैंकक्रिडल ने भी मशकावती की रानी द्वारा आश्वकायन महिलाओं की सेना बना कर सिकन्दर का सामना करने की बात लिखी है। (इनवेजन पृ० १६४)।

गुप्त काल

स्ट्रैबो तथा मेगस्थनीज ने राजा की अंग रक्षिकाओ का संकेत किया है। स्ट्रैबो के अनुसार राजा की अंग रक्षक नारी-सेना हुआ करती थी। शिकार के लिए जाते समय भी यह नारी-सेना अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित हो कर साथ चला करती थी। वे रथों पर ही नहीं, घोड़ों और हाथियो पर सवार हो कर राजा के साथ-साथ चलती थीं। उनमें यवन देश से आई हुई सुन्दरियां भी रहती थीं। महिला रक्षिकाओं को अस्त्र-चालन के अतिरिक्त रथ, हाथी, घोड़े आदि का संचालन भी सिखाया जाता था। (अर्थशास्त्र, १५-१-५५) कौटिल्य ने भी 'स्त्री-गणैर्धन्विभिः' कह कर इसकी पुष्टि की है (अर्थशास्त्र, १-२१) प्रातः शय्या-त्याग करने पर ये धनुर्धारिणी सैनिकायें ही राजा का अभिनन्दन किया करती थीं। कभी-कभी नरपति की शोभा यात्रायें निकला करती थी। उस समय नारी रक्षिकायें भी साथ चलती थीं वे दोनो ओर रस्सियां तान कर सामान्य जनो का आना-जाना एक विशेष सीमा मे निषिद्ध कर देती थीं। यदि कोई सविघ्न व्यक्ति लांघ कर निषिद्ध सीमा मे चला तो राजा की रक्षा के लिए वे रक्षिकायें उसे बन्दी बना लेतीं या मार डालती थीं।

अलाउद्दीन का आक्रमण

राजपूताना की महिलायें तो शस्त्र चलाने तथा आत्म रक्षा में सदा कुशल रहीं। वे तलवार, भाला, धनुष आदि चलाना तथा घुड़सवारी अच्छी तरह जानती थीं अलाउद्दीन ने देवगिरि पर आक्रमण कर दिया। किले में उस समय सेना न थी। उसके लिए अच्छा अवसर था पर दुर्ग के वीर निराश न हुए। सामन्त कान्हा ने लोगो को संगठित कर युद्ध के लिए प्रेरित किया। मुस्लिम इतिहासकार एसामी ने लिखा है कि पहले धावे मे उन्होंने अलाउद्दीन की समुद्र की लहरों से उमड़ती-बढ़ती विशाल सेना को रोका ही नहीं, पीछे हटने के लिए विवश कर दिया। इस युद्ध में न केवल पुरुषों ने हथियार उठाये थे, अपितु महिलायें भी देश रक्षा के लिए आगे बढ़ी थीं। सेना के एक अंग का संचालन दो वीरांगनाओं ने ही किया था। शस्त्र-चालन मे कुशलता पाये बिना तथा रणनीति जाने बिना ऐसा संभव नहीं था। अलाउद्दीन निराश हो चला था। अन्त में उसने एक उपाय अपनाया अपनी सेना में उसने प्रचार करा

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्य समाज राष्ट्र निर्माण का पुनः ध्वज वाहक बने

—डा० सूर्य देव प्राणाचार्य,
आर्य समाज मार्ग, गोरखपुर

गतांक से आगे

इन विषम परिस्थितियो मे आर्य समाज का महान् दायित्व उपस्थित हो गया है। पूर्ण रूप से सगठित होकर सर्व प्रथम आर्य समाज सगठन को संगठित सशक्त और सिद्धान्तानुकूल बनाना होगा। देश का सौभाग्य है कि आज देश मे भारतीय आचार-विचार धर्म और सस्कृति के पोषक बड़ी सख्या मे सुलभ हैं। इनको सगठित करना होगा। आर्य समाजियो को ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलना होगा। वैदिक आदर्श है कि एक देश मे अनेक भाषा-भाषी अनेक बोलियो के बोलने वाले तथा अनेक सिद्धातो के मानने वाले लोग रहते

नाना धर्माण पृथिवी यथौकसम्।
सहस्त्र धारा द्रविणस्य मेदुहा
ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती॥

अर्थात् विविध भाषा-भाषी, नाना बोलियाँ बोलने वाले लोगो के लिए देश एक रक्षा गृह है। जब देशवासी सगठित होकर राष्ट्र की रक्षा मे तत्पर रहते है उस समय ही वे राष्ट्रीय आर्थिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक उन्नति करते हैं जैसे एक शान्त धेनु अपने अमृतमय दुग्ध से जन-जन का पोषण और सवर्धन करती है।

भौतिकता और पाश्चात्य अनुकृति से प्रभावित व्यक्ति समूह इन वैदिक आदर्शों के अनुरूप इस

राष्ट्र निर्माण

आये हैं उन सबको मिला कर राष्ट्र की रक्षा करनी चाहिए। यही राष्ट्र की उन्नति का मूल मन्त्र हैं। यह भूमि हमारी माता है और हम उस माता के सुपुत्र हे। यह आदेश वैदिक उद्घोष है। (माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या) वेद माग दशक हैं। राष्ट्रोत्थान के सूत्रो से वेद भरे हुए हैं। इन आदर्शो के अनुसरण से ही राष्ट्र उन्नति के शिखर पर आरूढ़ हो सकता है अथव वेद क पृथ्वी सूक्त मे एक मन्त्र आता है।

जन बिभ्रती बहुधा विवाचस

देश का निर्माण नहीं कर सकता है। इसके लिए आर्य समाज को एक मनस्वी के रूप में, सत्ता के व्यामोह से पृथक, ऋषि दयानन्द के आदेशो और आदर्शों के अनुसार जीवन निर्माण करते हुए राष्ट्र की एकात्मता और सुदृढता के लिए प्राणप्रण से सचेत होना होगा। इस कार्य के लिए समस्त आर्य समाजों को सगठित हो कर देश की एकात्मता के लिये प्रयत्न करना चाहिये। इस एकात्मता के मैं निम्न सुझाव देना चाहता हू —

१— भाषावार प्रात रचना समस्त विघटनों का मूल कारण है इसके विद्यमान रहते देश की एकता असभव है। भारत को उत्तर, दक्षिण, पूर्व पश्चिम और मध्य पाच भागो मे प्रशासन की दृष्टि से विभक्त कर देश की व्यवस्था की जानी चाहिए।

२— ऊँच-नीच, छुआ-छूत और जाति एव उपजाति व्यवस्था इस देश के भयानक रोग है। छ सौ छत्तीस जाति-उपजातियो मे देश विभक्त है, उनके रहते भारतीय समुदाय कभी सगठित नहीं हो सकता। इतिहास साक्षी है कि भूतकाल मे भी इस देश के विघटन मे ईर्ष्या, द्वेष, कलह, कुंठा के साथ इस जाति व्यवस्था ने एक बड़ा भाग लिया है। आर्य जन ऋषि द्वारा प्रतिपादित गुण कर्मानुसार सामाजिक व्यवस्था स्वय अपने परिवारो मे प्रारम्भ करे और भारतीय समाज मे एक आदर्श उपस्थित करे।

३— आर्य समाजी भाई परम्परावादी जाति सूचक शब्द अपने नाम के साथ न लगाए है अपनी सन्तानो के विवाह गुण-कर्मानुसार करें।

४— आर्य सदस्यता के लिये पूर्ण रूप से चरित्रवान्, त्यागी, तथा सिद्धातज्ञाता व्यक्ति ही आर्य सदस्य एव पदाधिकारी हो।

५— ६० वर्ष की आयु के पश्चात् उत्तरदायित्व पूर्ण पद पर कोई अधिकारी निर्वाचित न हो। वयोवृद्ध एव ज्ञानवृद्ध व्यक्ति नवयुवको का मार्ग दर्शन करे। अधिकारी और अतरग सदस्य कम से कम ३ घण्टा समय आर्य समाज के कार्यो मे अवश्य दें। यदि कोई आर्य सदस्य सिद्धातहीन पाया जावे तो उसे सदस्यता से पृथक् कर दिया जावे।

इन पच सूत्रो पर आज के नेतृत्व वर्ग एव आर्य जन विचार करेंगे, ऐसी मै आशा करता हू। अन्यथा हमारे उत्सव और समारोह केवल एक मेले का रूप लेकर रह जायेंगे।

आर्य जनो को विश्वनियता शक्ति दें, हम इस महान राष्ट्र की एकता और एव सुदृढता के लिये महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट आदर्शों के अनुसार इस राष्ट्र की उन्नति के लिये समस्त आर्य समाजों का सगठन करें और ए बार पुन आर्य समाज राष्ट्र निर्माण का ध्वज वाहक बन कर भारतीय जनता के सामने आवे। नान्य पन्था विद्यते ऽयनायेति।

[समाप्त]

★

[नव-गीत]

नव वर्ष शुभम्

हिन्द के सपूत तुम !
निराशा, आतक, विघटन
और अनेक समस्याओ कासमाधान
ढूढ़ने लगे जब,
सत्ता के चौखट पर,
उसका निदान
जहा पड़ी है,
नैतिकता की लाश
जन—मानस
असुरक्षित, उदास
समृद्ध सस्कृति की अमरबेल
मुरझाने लगी
अविश्वास की आग
स्वय को झुलसाने लगी।
भूल गये राष्ट्र धर्म
ततक्षण
फिर एक बार
विदाई के स्वर मे
एक और स्वर मिला दो।
वन्दे मातरम्
नव वर्ष शुभम्। नव वर्ष शुभम्।

—ब्रजकिशोर रस्तोगी मुर्तजाहुसैन
रोड राजा बाजार लखनऊ

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, इटावा।
प्रधान—श्री सुदर्शन सिंह आर्य
मन्त्री—श्री इन्द्र देव सिंह
कोषाध्यक्ष—श्री कमला प्रसाद सिंह

आर्य समाज

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

आर्य समाज ! आर्य समाज !
आर्य भूमि पर अरुणोदय-सा !
उठा उषा तू सज कर साज !
आर्य समाज ! आर्य समाज !

अन्धकार था चारों ओर,
देख लिया पर तूने चोर !
घर में शोर मचाया घोर !
सोते स्वजनों को धिक्कार !
जगा दिया ठोकर तक मार !
किया प्राप्त भय का परिहार !

अलस-प्रमादी अवसादी !
हम थे सोने के आदी !
जागा तू भैरव-नादी !
जगे विवादी भी कुछ स्वर !
पर हम चौंक उठे सत्वर !
उतरा कुछ तो तन्द्रक ज्वर !
किया क्या तूने खण्डन मात्र !
स्वयं बना मण्डन का पात्र !
गये गुरुकुल में वर्णी छात्र !
हिन्दू मानस महाराष्ट्र !
तू धरे राष्ट्र-भाषा की लाज !
आर्य समाज ! आर्य समाज !
शोक न कर तू, कर अभिमान !
कर निज वेद-विजय-रसपान,
किया वीर तूने बलिदान !

विधर्मियों से घर की फूट !
कराह रही थी अपनी लूट !
तू सतर्क हो उठा अटूट !
पर जो मुंह की खाते हैं !
मन-ही-मन चढ़ जाते हैं !
छिप कर घात लगाते है !

सहा सभी तूने प्यारे !
सिद्ध कर गये हत्यारे !
निज अविजय न्यारे-न्यारे !
"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" !
जयति कृतबुद्धि - कार्यम् ।

शुद्धि-वितान तने श्रद्धा का ।
किया दान तूने द्विजराज ।
आर्य समाज । आर्य समाज ।

★ ★

निर्वाचन

आर्य सेवा प्रचार समिति मीरजापुर ।

(१) श्री लाल बहादुर सिंह, कछवां— प्रधान

(२) श्री राजेन्द्र सिंह, वाराणसी— मन्त्री

(३) श्री राम नारायण सिंह, रामीपुर—कोषाध्यक्ष

प्राचिन भारत में नारियों को सैनिक शिक्षा

(पृष्ठ ३ का शेष)

दिया कि "जब यहां की औरतें इतनी बहादुर हैं, तब मर्दों का सामना करने की बात हमारे सिपाहियों में कहां है । इस लिए बेहतर होगा कि सिपाही चूड़ियां पहन लें और लौट चलें ।" इससे उनके सिपाहियों में एक नई उत्तेजना आ गई । वे प्राणों की बाजी लगा कर लड़े और विजयी हुए । पद्मिनी की युद्ध-योजना और साहस से ही (छल से) बन्दी बना लिये गये चित्तौड़ पति को अलाउद्दीन की कैद से छुटकारा मिल सका था । चांद बीबी और रजिया ही नही, नूरजहां ने भी अपने जौहर दिखाये थे । दुर्गावती ने अकबर की सेना को नाकों चने चबवाये । गढ़-मण्डल की अधीश्वरी दोनों हाथों से तलवार चलाती थी । ताराबाई ने अपने पराक्रम से पिता का प्रतिशोध लिया । इसमें साथ देने वाले वीर से ही उसने विवाह किया था । सोलंकी विक्रमादित्य की पत्नी अक्का देवी ने गोकाक बेलगांव के गढ़ पर डेरा डाला था । वह चतुर वीरांगना और राजनीति की पण्डिता थी । उसका शासन चार प्रदेशो पर था ।

सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम मे झांसी की रानी ने देश की रक्षा के लिए पुरुषों का ही आह्वान नहीं किया था, नारियो को भी शस्त्र शिक्षा देकर गठित किया था । उन्होंने स्वय भी हथियार चलाना सीखा था । महिला सेना की सेनानियां उसकी सहेलियां थी । नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज में नारियो की लक्ष्मी ब्रिगेड भी थी । सन् ४२ की क्रांति मे भी नारियो का योगदान रहा । आज भी महिलायें स्वेच्छा से सैनिक शिक्षा ग्रहण कर रही हैं । देश की प्रधानमन्त्री के रूप में एक महिला ने ही शत्रुओं की ललकार के बीच निर्भय रह कर दुर्गा के समान उन्हें सरलता से परास्त किया था । ★

श्री राम जन्म भूमि या बाबरी मस्जिद

(पृष्ठ २ का शेष)

चाहिए । किसी को भी किसी पर अनर्गल, आक्षेप, आरोप लगाने का अधिकार नहीं मिलना चाहिए ।

अन्त में मेरा सभी राजनीतिक दलों के शीर्षस्थ नेताओं से अनुरोध है कि वे देश हित में अपने-अपने दलों में साम्प्रदायिक विद्वेष फैलाने वाली वृत्ति के लोगों को स्थान न दें । ऐसे तत्व भारतीय राजनीति से अलग-थलग ही कर दिये जाने चाहिए । ताकि स्वच्छ राजनीतिक वातावरण में देश को समृद्ध होने का सुअवसर प्राप्त हो सके ।

सरकार का भी धर्म है कि वह सुशासन को स्थापित करने के लिए संवैधानिक व्यवस्था को कड़ाई से स्थापित करती हुयी बिना किसी संकोच के किसी भी प्रकार से साम्प्रदायिक विद्वेष अलगाव व राष्ट्रीयता विरोधी आन्दोलनकर्ताओ के साथ सख्ती से निपटे । उन्हें मनमानी करने की छूट न दे। सम्प्रदायिक विद्वेष को समाप्त करके शांति व अमन स्थापित करे ।

मनमोहन तिवारी

देश की बिगड़ती हुई राजनैतिक और सामाजिक स्थिति पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष का वक्तव्य

★ ★ ★

१– सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का यह निश्चित मत है कि पंजाब में न तो अकाली दल में नेतृत्व परिवर्तन और न कांग्रेस अकाली दल की संयुक्त सरकार स्थिति को सामान्य बनाने में सफल हो सकेगी। सभा का विचार है कि पाकिस्तान के साथ लगने वाली अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को पूर्णतया बन्द करके राज्य में मिलेट्री गवर्नर का शासन ही वहाँ की स्थिति में सुधार ला सकता है। हम चाहते हैं कि इस योजना पर अमल किया जाये। सार्वदेशिक सभा आतंकवादियों अथवा उनके समर्थकों के साथ किसी प्रकार की बातचीत शुरू करने के पक्ष में नहीं है। क्योंकि उससे कोई ठोस परिणाम निकलने की आशा नहीं है। तथा कथित आतंकवादी उन बाहरी शक्तियों के इशारे पर कार्य कर रहे हैं जो हमारे हितैषी नहीं है।

सार्वदेशिक सभा चाहती है कि सरकार उन बाहरी शक्तियों को स्पष्ट शब्दों में बता दे कि वह उनके इन षडयंत्रों की मूकदर्शक बनी नहीं रह सकती है। हमारा तो यह भी सुझाव है कि भारत सरकार ऐसी शक्तियों से अपना राजनैतिक सम्बन्ध भी तोड़ दे। आतंकवाद और आतंकवाद का समर्थन दोनों को ही देश द्रोह घोषित करके इनसे संबंधित व्यक्तियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाये जिससे दूसरे लोग सबक ले सकें।

२– अरुणांचल प्रदेश को राज्य का दर्जा दिए जाने पर चीन द्वारा उठाई गई आपत्ति की भी सभा निन्दा करती है। क्योंकि यह प्रदेश हमारे ही देश का एक अभिन्न अंग है। चीन की इस प्रदेश में घुसपैठ तथा उसके प्रशासनिक परिवर्तन पर उठाई गई आपत्ति एक भड़काने वाली कार्यवाही है। जिस तरह से यह कार्यवाही की जा रही है, उससे तो यही आशका होती है कि पश्चिम क्षेत्र में शत्रु के ऊपर हमारा सैनिक दबाव कम करने के लिए चीन पूर्व में एक और मोर्चा खोलना चाहता है। हमें डर है कि कुछ विदेशी ताकतें जो भारत को एक सुदृढ़ और शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरते हुए नही देखना चाहती हैं, यहाँ एक ऐसा क्षेत्र बनाना चाहती हैं जहां वे अपने आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों का परीक्षण कर सके।

३– यह सभा दक्षिण भारत मे हिन्दी के विरोध और भाषा के नाम पर चलने वाले आंदोलन के प्रति भी चिंता व्यक्त करती है। प्रदर्शनकारियों द्वारा तोड़-फोड़ तथा बम विस्फोट जैसी कार्यवाही से सरकार पर दबाव डाल कर नेहरू द्वारा दिए गए आश्वासन को कि– "हिन्दी किसी के ऊपर उसकी इच्छा के विरुद्ध नही लादी जायेगी," संविधान में सम्मिलित कराने का विरोध करती है। सभा संविधान में किसी भी ऐसे सशोधन का विरोध करेगी जो हिन्दी को अनिश्चितकाल तक संपर्क भाषा बनने से वंचित कर दे। यह सभा भारत सरकार से आशा करती है कि हिन्दी के सम्बन्ध में जान-बूझ कर फैलाई गई भ्रान्तियो को दूर करने का समुचित प्रयत्न करे। संविधान के अनुच्छेद ३५१ में हिन्दी को देश की समस्त भाषाओं के प्रतिनिधि के रूप में विकसित कराने का स्पष्ट आदेश है। अतः कुछ सत्ता लोलुप राज-

ऋषि मेला

★ ★★ ★

महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा में इस वर्ष २५-२६-२७ फरवरी १९८७ को शिव रात्रि के अवसर पर जो ऋषि मेला मनाया जा रहा है, इस उपलक्ष्य में टंकारा यात्रियों को ले जाने के लिए बसों का प्रबन्ध किया गया है।

दिनांक	प्रस्थान	पहुंच
२०-२-८७	प्रस्थान प्रातः ६ बजे आर्य समाज, करौल बाग दिल्ली से	पहुंच ५ बजे ब्यावर
२१-२-८७	प्रस्थान ब्यावर प्रातः ८ बजे	पहुंच सायं ६ बजे आबू रोड, वाया माउण्ट आबू
२२-२-८७	प्रस्थान आबू रोड प्रातः७ बजे	पहुंच सायं ५ बजे आर्य समाज राजकोट
२३-२-८७	प्रस्थान प्रातः७ बजे राजकोट	पहुंच सायं ५ बजे पोरबन्दर, (कन्या गुरुकुल) वाया-सोमनाथ मन्दिर
२४-२-८७	प्रस्थान प्रातः७ बजे पोरबन्दर	वाया द्वारका, द्वारकाबेट पहुंच जामनगर सायं ६ बजे
२५-२-८७	प्रस्थान प्रातः जामनगर	टंकारा वासता मोरबी पहुंच टंकारा १२ बजे
२६-२-८७		टंकारा में ही
२७-२-८७	प्रस्थान १० बजे टंकारा से	पहुंच अहमदाबाद ४ बजे सायं
२८-२-८७	प्रस्थान ७ बजे प्रातः अहमदाबाद (साबरमती आश्रम)	पहुंच ३ बजे उदयपुर,
१-३-८७	प्रस्थान उदयपुर से ८ बजे	पहुंच चित्तौड़गढ़, गुरुकुल ६ बजे वासता, नाथ द्वार हल्दी घाटी
२-३-८७	प्रस्थान चित्तौड़गढ़, चित्तौड़ किला पुष्कर ४ बजे वापसी अजमेर ७ बजे सायं	
३-३-८७	प्रस्थान अजमेर प्रातः ८ बजे जयपुर	(आमेर किला) से दिल्ली सायं ६ बजे

बस और रेल की सीटें बुक कराने की अन्तिम तिथि १-२-८७

सीटें बुक कराने के लिए आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–१ से सम्पर्क करें।

जिस क्रम संख्या में बस की सीटें बुक होंगी वैसे ही बस में भी उन्हें स्थान दिया जावेगा। टंकारा में ऋषि लंगर के लिए आप से पहले भी प्रार्थना की थी कि अधिक से अधिक आटा, चावल, दाल, घी, नकद आदि आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–११०००१ में भिजवाने की कृपा करें।

नेताओं से डर कर तोता-रटन्त की तरह बार-बार एक ही नारा लगाना कि हिन्दी किसी पर थोपी नही जायगी, न केवल विवेक शून्य है, बल्कि राष्ट्रीय भावना के भी विरुद्ध है।

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

★ ★ ★ ★

❀ आर्य जगत ❀

श्रीमद्दयानन्द बाल सदन लखनऊ में गुरु गोविन्दसिंह जन्म दिवस सोल्लास सम्पन्न

श्रीमद्दयानन्द बाल सदन मोतीनगर लखनऊ मे दिनांक ६–१–८७ को प्रात ९–३० बजे से १२ बजे तक गुरु गोविन्दसिंह जन्म दिवस सोल्लास मनाया गया जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ के समस्त पदाधिकारियो के अतिरिक्त लखनऊ के सैकडो आर्य नरनारियो ने भाग लिया और धर्म की रक्षा हेतु अपने को समर्पित करने का सकल्प लिया।

समारोह का शुभारम्भ श्री रूपचन्द्र जी 'दीपक' के आचार्यत्व मे राष्ट्र रक्षा यज्ञ से हुआ। यज्ञ के अनन्तर दयानन्द शिशु मन्दिर की छात्राओ एव श्रीमद्दयानन्द बाल सदन के बालक–बालिकाओ ने सुमधुर भजन गाये व वेद मन्त्रो का पाठ किया।

श्री अयोध्या प्रसाद मिश्र के भी सुमधुर भजन हुए। वैद्य कुन्दन लाल आर्य ने गुरु गोविन्दसिंह के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए गुरु तेग बहादुर, गुरु गोविन्दसिंह एव उनके पुत्रो जोरावरसिंह और फतेह सिंह के बलिदानो की ओजस्वी गाथा सुनायी।

आचार्य देवव्रत अवस्थी सम्पादक 'आर्यमित्र' ने अपने वेदोपदेश मे धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझकर धर्म के लिए बलिदान होने का सकल्प लेने का आह्वान करते हुए कहा कि धर्म प्रेम सिखाता है, द्वेष नहीं। धर्म शान्ति सिखाता है, अशान्ति नहीं। धर्म सगठन सिखाता है–विघटन नहीं। परन्तु आज देश मे चारो ओर धर्म के नाम पर मारधाड़ ईर्ष्या द्वेष आतकवाद, विल्गाववाद के आन्दोलन मदान्ध धर्म के नेताओ के नेतृत्व मे हो रहे है। चूकि वे नेता धर्म के स्वरूप को या तो जानते नहीं या जानकर स्वार्थ के वश अनजान बनकर विद्वेषाग्नि भड़काते हैं। इसलिए ऐसी सकटापन्न स्थिति मे आर्यो का बहुत बड़ा दायित्व हो गया है। हमे आज के इस पवित्र पर्व पर सकल्प लेना है कि हम स्वय धर्म के स्वरूप को समझ कर जन जन मे उसके वास्तविक स्वरूप के प्रसार के लिए प्रतिबद्ध होगे। धर्म की रक्षा के लिए प्राणाहुति देने को प्रवृत्त रहेगे और सच्चे धर्म के स्वरूप से सभी को अवगत कराकर अपने पूर्वजो के सपनो के सुख शाति समृद्धि से परिपूर्ण भारत का निर्माण करेंगे। —सजय अवस्थी (सम्वाद प्रेषक)

शुद्धि आन्दोलन

दिनांक २३ दिसम्बर १९८६ को आर्यसमाज ऋषिकेश देहरादून के तत्वावधान मे एक स्विस दम्पति, श्री रोल्फ बिल्ज व श्रीमती मोनिका को शुद्धि कार्यक्रम के अन्तर्गत वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया। उन्होने स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया तत्पश्चात् उनके नाम श्री रविकान्त एव श्रीमती रवि मेनका रखे गए।

ये हैं मायावी विषधर · · !

ज्यों ज्यो बढ़ता गया देश मे वस्तु दमन का चक्कर।
त्यों त्यो ओढ़ी वस्तु दलो ने आज सफदी की चद्दर॥

पर्दे के भीतर आज छुपी काली करतूतें कालो की।
शैतान जहा भगवान बना बस दुनिया माया वालो की॥
मायावी दानव देव बना बैठा मन्दिर के अन्दर।
ज्यो ज्यो

कहते 'पाठक' इस दुनिया मे भगवानो की भी कमी नहीं।
गुमराह जगत को करने मे गुमराहो की भी कमी नहीं॥
नकली चेहरा दुनिया मे है असली पर्दे के अन्दर।
ज्यो ज्यो

हो दुनिया वालो सावधान ! इनकी झूठी चालो से।
मीठी वाणी, मीठे भाषण इन दाँवपेंच के पालो से॥
भगवान नहीं, इसान नहीं ये हैं मायावी 'विषधर'।
ज्यो ज्यो

—भवाप्रसाद पाठक, बी ए एल एल बी

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सोल्लास सम्पन्न

निम्न लिखित आर्यसमाजो मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया–

१–जिला आर्योप्रतिनिधि सभा बरेली, २–आर्यसमाज हरजेन्द्रनगर कानपुर–७, ३–जिला आर्योप्रतिनिधि सभा कानपुर–महानगर, ४–आर्य समाज ऋषिकेश (देहरादून), जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ।

स्वामी श्रद्धान्द बलिदान-स्मृति-समारोह

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान–स्मृति–समारोह देहरादून जनपद मे विभिन्न स्थानो पर १३ दिसम्बर ८६ से मनाया जा रहा है और यह कार्यक्रम १८ जनवरी ८७ को समाप्त होगा।

—देवदत्त बाली प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला देहरादून

श्री प्रो. वासुदेवसिंह के निधन पर शोक प्रस्ताव

प्रान्त की निम्न आर्य समाजो ने, हिन्दी के अनन्य समर्थक तथा ओजस्वी वक्ता श्री प्रो० वासुदेवसिंह जी के निधन पर अपनी समवेदना प्रकट की है–तथा शोक प्रस्ताव पारित किए है–

१–स्त्री आर्यसमाज, बुढ़ाना गेट मेरठ शहर।
२–आर्यसमाज शोहरतगढ (बस्ती)
३–आर्य समाज कायमगज फर्रुखाबाद।
४–आर्य कुमार सभा गोण्डा।

धार्मिक

मकर-संक्रान्ति का महत्व

डा० [श्रीमती] महाश्वेता चतुर्वेदी, प्रोफेसर्स कालोनी
श्यामगंज–बरेली–२४३००५)

पर्व जब केवल औपचारिता निभाने के लिए सम्पन्न किए जाते हैं तो उनसे न पवित्रता प्राप्त होती है, न ही कोई रस और न ही कोई शक्ति। मकर संक्रान्ति पर्व का एक विशेष महत्व है। सूर्य जो आदित्य कहलाता है, जिसे अदिति का पुत्र कहते है, वह उत्तरायण में अग्रसर होता है। मानव भी अदिति के अमृत पुत्र और पुत्रियां हैं। वेद ने उन्हें अनेक मन्त्रों में 'आदित्यास:' कह कर संबोधित किया है। आदित के इन मानव रूप आवस्यों को भी जीवन में उत्तरोत्तर उन्नतिशील होना है, अन्धकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर जाना है।

आर्य जगत की सुप्रसिद्ध विदुषी लेखिका ने मूलरूप में मकरसंक्रान्ति के इस महत्व को ही अपने इस लेख में विदर्शित किया है।

—सम्पादक (बसन्त)

जनवरी मास में, प्रति वर्ष मनाया जाने वाला पर्व "मकर-संक्रान्ति" सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं, अपितु ज्योतिष की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इस पर्व की पूजा का मुख्याधार "सूर्य" है। ऋग्वेदीय सूर्य-सूक्तमें ऋचायें सूर्य की महिमा का गान करती है। सौर देवताओं में सूर्य का प्रमुख स्थान है। सूर्य के नेत्रो का भी वर्णन मिलता है, किन्तु सूर्य को स्वय "मित्र" और "वरुण" का नेत्र माना गया है। सूर्य नामक नेत्र "दूर दृष्टा" और "सर्व दृष्टा" माना गया है, क्योकि वह संसार का गुप्तचर है तथा प्रत्येक जीव के क्रियाकलाप को देखता है। स्थावरो को गति प्रदान करने वाला एक मात्र "सूर्य" ही है। "अदिति" को सूर्य की मां तथा द्यौ को सूर्य का पिता, तथा "उषा" को सूर्य की पत्नी माना गया है। किसी वैदिक ऋचा में सूर्य की उत्पत्ति "उषा" से मानी गयी है। "विश्वकर्मा" सूर्य का ही विशेषण है। ऋचाओं मे सूर्य को रश्मियो का समूह बताया गया है–

"चित्रं देवा ना मुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुण स्याग्ने।

आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।"

मकर-संक्रान्ति भारतीयों के लिये ऐसा ही है जैसा योरुप वालों का बड़ा-दिन। मान्यता है कि "मकर-संक्रान्ति" से दिन बढ़ने-लगता है। भारत में वर्षारम्भ "अगहन" से माना गया है–जिसका संस्कृत रूप है "अग्रहायण"। चान्द्रमास के वर्ष के दस दिन कम होने पर उसे लौंद-मास द्वारा सौरमास के वर्षों में बराबर किया जा रहा है। ज्योतिष के ये सूक्ष्म सूत्र सर्वप्रथम "आर्यों" ने ही आविष्कृत किये हैं। वैदिक-साहित्य में ज्योतिष का वेद-पुरुष का नेत्र–"ज्योतिषं नेत्रं प्रोक्तम्" कहा गया है।

"यजुर्वेद" मे संवत्सर से सम्बन्धित अनेक मन्त्र हैं–

"यमाय यम सूमथर्वभ्यो" (यजु० ३०।१५) इस मन्त्रानुसार प्रभव आदि साठ संवत्सरों में पांच पांच कर बारह युग होते हैं। वर्णित प्रत्येक युग में क्रम से संवत्सर, परिवत्सर, इडावत्सर, अनुवत्सर और इद्वत्सर, ये पांच संज्ञायें हैं, उन सब काल के अवयवों के मूल संवत्सरों को समझ कर जो लोग व्यर्थ समय नहीं गंवाते, वे सब प्रयोजनों की सिद्धि को प्राप्त होते है।

"ऐतिहासिक बात है, कि रोमन लोग इस महीने का वर्ष अति प्राचीनकाल में मनाते थे। किन्तु जूलियस-सीजर ने भारतीय ज्योतिष से प्रभावित होकर, वर्षों में परिवर्तन किया, तथा दस महीनों के स्थान पर, बारह-मास वर्ष के लिये नियत किये।" (भारतीय ज्योतिष का रोम पर प्रभाव त्रिलोचन, मैसूर लायब्रेरी) इसी पुस्तक के अनुसार 'जुलाई' जूलियस सीजर ने अपने नाम पर, तथा 'अगस्त' अपने बाबा 'अगस्टस' के नामानुसार रख लिया। मुसलमान आज भी चान्द्रमासों को मान कर पिछड़े हुए हैं। यदि ये भी हिन्दू-ज्योतिष से मिल कर कार्य करें, तो इनको ईद के चाँद की अनिश्चितता की कठिनाई दूर हो सकती है।'

'संक्रान्ति' से पूर्व के माह दक्षिणायन कहलाते है, 'संक्रान्ति' से उत्तरायण का आरम्भ होता है। शुभकार्यों के लिए भारतीय-ज्योतिष' में उत्तरायण (चौदह जुलाई तक) का महत्व एक स्वर से स्वीकार किया गया है। 'महाभारत' की कथा नुसार भीष्म-पितामह ने शरशैया पर पड़े-पड़े मृत्यु के लिए उत्तरायण की प्रतीक्षा की थी, तथा उत्तरायण के आरंभ होते ही उन्होंने अपने प्राणों का त्याग कर दिया था। 'सूर्य' का मेश तथा वृषभादि माहों में संक्रमण ही 'संक्रान्ति' है।

ऋतु-पर्व की दृष्टि से 'संक्रान्ति' को ग्रामों तथा नगरोंमें हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। देश के कुछ भागों में 'संक्रान्ति' के दूसरे दिन 'गऊ-पूजा' का आयोजन किया जाता है, जो कृषि-पूजा' एवं गाय के महत्व का प्रतीक है। अनेक वैदिक ऋचायें 'ग्राम' के माहात्म्य को मुखर करती हैं–'स न: पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते शं राजन्नोषधीभ्य:' (साम. उत्तरार्द्ध १।३) इस ऋचानुसार ईश्वर दूध देने वाले पशुओं के लिए सुखमय हो। पशु मानव के कल्याणार्थ शांतिमय हों। इस प्रकार ऋचाओं की व्याख्या विषद से विषदतम हो सकती है, जैसा कि चन्द्रलोकाकार ने कहा है–

'व्याख्यागम्यमिदं सर्वं उत्सवा मुधियामलम–। हृता दुर्मेधश्चास्मिन विद्रुत-प्रियतमामया ।। (चन्द्र)

अर्थात् व्याख्या एवं मनन के द्वारा ही किसी भा वस्तु का अर्थ-बोध हो सकता है।

'पर्व' चाहे सामाजिक हों या सांस्कृतिक, धार्मिक हों या जातिगत, उन्हें बुद्धि पूर्वक सोच समझ कर मनाने में ही मानव की सार्थकता है। 'पर्वों' को रूढ़ि समझ कर नहीं, अपितु उनके महत्व को ज्ञात कर मनाना चाहिये। ये 'पर्व' हमें अनुशासन, संस्कृति, धर्म, दर्शन, आचार, एवं सद्विचारादि की प्रेरणा देने में समर्थ हैं। इन्हें हृदयंगम न करना, हमारी अल्पज्ञता का सूचक है।

सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पूर्वी उ. प्र. के पदाधिकारी एवं सदस्यों को सूचित किया जाता है कि कार्य समिति की बैठक दिनांक १६–१–८७ को श्री अवधबिहारी शाखा संचालक के निवास स्थान डी १४/६४ टेढ़ी नीम वाराणसी पर २ बजे से 'होगी। यह बैठक १८–१–८७ को २ बजे तक चलेगी। जिसमें संगठन को सुदृढ़ करने पर विचार विमर्श किया जायेगा।

अत: आप सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि उक्त समय पर पधारने की कृपा करें।

—मन्त्री सार्वदेशिक आर्यवीर दल पू. उ प्र. सुल्तानपुर

दृढ़ संकल्प

तुम करो संकल्प ऐसा आज दृढ़ ।
भारती आंगन कभी बंटने न पाये ॥

बैठ पश्चिम मे सपेरा बीन लेकर प्रशिक्षित नाग-मण्डल छोड़ता,
विष विभाजन का उगलते ये रहें एकता के तार को है तोड़ता ।
मातृ भू की यह भुजा गौरवमयी
आज फिर दुर्भाग्य से कटने न पाये ।१।

हो न भारत शक्तिशाली यह कभी है विदेशी छल भरी यह भावना
नित्य ही लड़ते रहे गुरु ग्रंथ गीता बैरियो को पूर्ण होवे कामना ।
एकता की तरुण तरणी धार मे
डूब जाये यह कहीं उठने न पाये ।२।

आज अपने ही पराये हो निडर बीज विष के ये विषैले ब रहे
जल रहा है सामने नन्दन महा किन्तु माली मौन अब भी सो रहे ।
तुम बनो फौलाद की दीवार ऐसी
कारवाँ स्वातन्त्र्य का लुटने न पाये ।४।

गोविन्द गुरु, बन्दा विरागी की शहादत भेंटने तुमको यहां फिर आ रही
रणजोत, नलआ के तराने तीर के वीरता बीणा फिर से गा रही ।
राष्ट्र निष्ठा का सिंदूरी शुचि तिलक
ध्यान रखना ये जरा मिटने न पाये ।४।

फिर बुलाता है, तुम्हे यह प्यार से रे सुनो! जलियान वाला बाग भी
पथ प्रदर्शित कर रही है, लाजपत, भगतसिह की चिता की आग भी ।
आतङ्क का अवरोध करने के लिए
बढ़ गया हो जो कदम हटने न पाये ।५।

—कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम०ए० महोपदेशक, शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा) आगरा-६

बुद्धि निर्मल दो हमें

हे ज्ञान स्रोत परम पिता,
ज्ञानी बनाओ तुम हमे ।
अनुपम गिरा देकर प्रभो,
स्नेही बनाओ तुम हमे ॥
ज्ञान पूर्वक कर्म करके,
पा सकूं मैं उपासना ।
नाथ ऐसी शक्ति दे दो,
कर सकू मै साधना ॥
साधना की साज लेकर,
प्राप्त मै शुभ लक्ष्य कर लूं ।
दिव्य ज्ञान प्रकाश द्वारा,
शांति पावन प्राप्त कर लूं ॥
यह भावना है नाथ मेरे,
बुद्धि निर्मल दो हमे ।
ले अङ्क मे अपनी जननि,
आनन्द दे दो तुम हमें ॥

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

आर्य जगत—

अभूतपूर्व जागृति अभियान

शाहजहापुर—आर्य प्रतिनिधि सभा के जीवन दानी विद्वान धार्मिक एवं क्रांतिकारी वक्ता स्वदेश बन्धुः ने २५ दिवसीय जागृति अभियान के अन्तर्गत साईकिल मार्च से अनेकों स्थानो पर विशाल जनसभाओ का सम्बोधित करते हुए धूम मचा दी । उन्होने स्थानीय वातावरण मे सत्यार्थ प्रकाश एवं उसी महान प्रभूत ग्रंथ को समाज सुधार का कल्प तरु बताते हुए महर्षि दयानन्द को शाति एव जागृति का पुरोधा सिद्ध किया ।

ब्रह्मचारी देवेन्द्र स्वदेश बन्धुः ने इस २५ दिवसीय जागृति अभियान मे अनुमानित १५०० कि०मी० साईकिल चलाकर १७ सभायें आयाजित की, तथा प्रबुद्ध पाठको को सभा द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक आर्य मित्र के ग्राहक बनने का परामर्श दिया ।

जागृति अभियान मे ब्रह्मचारी जी ने बताया कि वे नववर्ष आरम्भ से ही एक लाख सत्यार्थ प्रकाश वितरण निधि, एवं वितरण काय प्रारम्भ करेंगे तथा धर्म सम्बोधि शिविरों का आयोजन करेंगे ।

बंकाक में सत्यार्थ प्रकाश के थाई भाषा अनुवाद का विमोचन

बंकोक (थाइलैण्ड) २६ अक्टूबर १९८६ को आर्यसमाज मे एक विशेष समारोह 'सत्याथ प्रकाश के थाई भाषा के अनुवाद का विमोचन तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का द्वितीय वार्षिक उपाधि वितरण' कार्यक्रम मनाया गया । स्वागताध्यक्ष श्री रामपलट पाण्डेय जी ने कार्यक्रम का संचालन किया । थाई राष्ट्र—गान और फिर भारत का राष्ट्र गान सुनाया गया ।

स्वागताध्यक्ष श्री रामपलट पाण्डेय जी ने आचार्य सनान छंयानुकूल जी (जिन्होने सत्यार्थ प्रकाश का थाई अनुवाद किया है) का संक्षिप्त परिचय दिया ।

आचार्य करुणा कुशलाशय जी ने (जो थाई विद्वान होते हुए हिन्दी का भी सम्यक ज्ञान रखते है) हिन्दी में आचार्य सनान छंयानुकूल जी का पूरा जीवन परिचय तथा उनकी उपलब्धियो के बारे मे बताया । आचार्य सनान जी ने सत्यार्थ प्रकाश के थाई अनुवाद तथा उसमे वर्णित विभिन्न धर्मों की समालोचना के बारे में थाई भाषा मे वक्तव्य दिया—जिसका अनुवाद आचार्य करुणा जी ने प्रस्तुत किया । आचार्य करुणा जी ने हिन्दी भाषा के प्रचार—प्रसार के सम्बन्ध मे भी विचार व्यक्त किया ।

प्रोफेसर कमलोग सर्वदानुकूल जी ने (जो सिल्पाकोन विश्व विद्यालय मे प्राध्यापक हैं] भी हिन्दी में तैयार किया हुआ अपना लेख इन दोनों समारोहो के बारे मे पढ़कर सुनाया ।

इसके पश्चात श्री तुङ्गनाथ दूबे जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन का संक्षिप्त इतिहास बताया तथा बंकाक केन्द्र से सम्पन्न दो परीक्षाओ के सम्बन्ध मे जानकारी दी । इसके पश्चात प्रथमा व मध्यमा के उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किया गया और उत्तमा प्रथम वर्ष के परीक्षार्थियों को पुष्पमालायें दी गईं तथा उत्तमा फाइनल के परीक्षार्थियो को उपाधि दी गई । सबसे अधिक अंक पाने वाले विद्यार्थियो को केन्द्र की ओर से विशेष पुरस्कार भी दिये गये ।

इसके उपरान्त श्री प्रेमशरणसिंह ने सत्यार्थ प्रकाश के थाई अनुवाद की उपयोगिता के बारे मे विचार व्यक्त किया तथा हिन्दी के परीक्षार्थियो को आशीष दिया । पूरे कार्यक्रम का वीडिओ कैसेट भी बनवाया गया ।

शिक्षा जगत

सभा के शताब्दी-समारोह की सैद्धान्तिक प्रतियोगितायें

सभा के धार्मिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक कार्यक्रमो के अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण अंग शैक्षिक भी है, जिसके फलस्वरूप विगत शताब्दी में उत्तर-प्रदेश के शैक्षिक जगत् मे डी० ए० वी० /आर्य / वैदिक विद्यालयों के प्रादुर्भाव की बाढ़ आ गई। फलत: उस शताब्दी के अन्त तक लगभग २४० इन्टर / हाई स्कूल स्तर तक संस्थाएं, १३० दयानन्द बाल मन्दिर और ३० स्नातक स्नातकोत्तर महाविद्यालय विद्यमान हैं।

शताब्दी-समारोह के आयोजकों ने इस समारोह के विभिन्न सम्मेलनो एवं कार्यक्रमों के साथ आर्य / डी० ए० वी० / वैदिक संस्थाओं को वैदिक सिद्धान्तो मे प्रतियोगिताओं का समावेश करके एक अभूतपूर्व सफल प्रयोग किया है।

इन्टर कक्षाओं तक के विद्यालयों में वाक्-प्रतियोगिता [यत्र नार्यास्तुपूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः]। वाद विवाद [राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि गोरक्षा में निहित है]; मन्त्रोच्चारण, महर्षि दयानन्द / आर्य समाज / वैदिक सिद्धांत प्रश्नोत्तरी; आर्य समाज के कार्यों पर सामूहिक सांकेतिक, गान; वैदिक / आर्य भजन; आर्य-विद्वानों व ऋषि के जीवन पर मुक्त चित्रण; स्काऊट / गाईड संकेत; योगासन तथा १०० मीटर दौड़, रुकावट-दौड़, खो-खो, कबड्डी, बैनर—सुलेख-पोस्टर—आर्य-विद्वान का चित्र-शिल्प जैसी प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई।

दयानन्द बाल-मन्दिरों के लिए मुक्त चित्रण, सांकेतिक गान, मन्त्रोच्चारण तथा रुकावट दौड़ की प्रतियोगितायें कराई गई।

प्रदेश में १५ आर्ष गुरुकुल भी हैं, इनके लिये भी मन्त्र, सूत्र, श्लोक प्रतियोगितायें भी आयोजित की गई। चारों दिन इन प्रतियोगिताओं के फल स्वरूप ऐसा अनुभव हो रहा था कि पूरा वातावरण वैदिक ध्वनि द्वारा गुंजाय मान हो गया है। सभी वर्ग के बच्चों की विभिन्न विषयों में अच्छी तैयारी थी और प्रत्यक्ष प्रतीत होता था कि आचार्य एवं आचार्याओं ने काफी परिश्रम किया है, जिसके लिए सभा अनुगृहीत है और साधु वाद भी प्रदान करती है।

इन्टर कक्षाओं तक के १८ विषयों के सामूहिक आकलन के आधार पर छात्राओं के निम्नलिखित विद्यालयों ने सम्मुख लिखे स्थान को प्राप्त किया—

[१] कन्या गुरुकुल सासनी, हाथरस—प्रथम

[२] आर्य कन्या इन्टर कालेज, मुजफ्फर नगर—द्वितीय

[३] बालिका विद्यालय इन्टर कालेज, लखनऊ—तृतीय

छात्र विद्यालयों में से निम्नांकित विद्यालयों ने सम्मुख लिखे स्थान को प्राप्त किया—

[१] एम० सी० वैदिक इन्टर कालेज, आगरा—प्रथम

[२] डी० ए० वी० इन्टर कालेज, छबरेड़ा—द्वितीय

[३] आर्य इन्टर कालेज, बहादराबाद—तृतीय

[४] डी० ए० वी० इन्टर कालेज, लखनऊ तृतीय

दयानन्द बाल-मन्दिरों की चार प्रतियोगिताओं में परिणाम निम्नवत् रहा—

[१] दयानन्द बाल-मन्दिर, टनकपुर तथा प्राथमिक विद्यालय गुरुकुल, हाथरस—प्रथम

[२] दयानन्द विद्यामन्दिर लखनऊ……………द्वितीय

[३] गुरुकुल सिराथू, दयानन्द बाल-मन्दिर आगरा, बाल-मन्दिर मिर्जापुर…………तृतीय

एक विशेष सम्मान समारोह और आयोजित किया गया, जिसमें निम्नलिखित विषयों के सर्वोत्तम स्थान प्राप्त को सम्मान किया गया—

[१] अन्त' विश्वविद्यालय "महर्षि दयानन्द दर्शन एवं राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता में उसकी उपादेयता" विषय पर शोध पत्रक।

[२] १९८५ की उत्तर-प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा परिषद् की हाई स्कूल एवं इन्टर की परीक्षाओं में समूचे प्रदेश के आर्य/ दयानन्द / वैदिक इन्टर कालेज, में से प्रदेश में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त छात्र एवं छात्राएं

[३] १९८५ के आंकड़ों के आधार पर प्रदेश भर में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त डी० ए० वी०/ आर्य / वैदिक इन्टर कालेजों को बसता अनुदान। सभी सम्मान प्राप्त कर्ताओं को यात्रा व्यय भी दिया गया।

इन तीनों प्रकार के सम्मान प्राप्त कर्ताओं को माननीय के० सी० पंत, केन्द्रीय मन्त्री, भारत सरकार ने स्वामी आनन्द बोध जी, स्वामी सत्य प्रकाश जी, गृह मन्त्री, उ० प्र० सरकार तथा श्री इन्द्रराज जी व श्री मनमोहन तिवारी एवं श्रीमती सन्तोष कु० कपूर एम० एल० सी० की उपस्थिति में अपने कर कमलों से सम्मानित किया।

शोध पत्रकमें जिनको सम्मानित किया गया उनके नाम इस प्रकार हैं। इनके सम्मुख लिखी धन राशि से सम्मानित किया गया—

[१] डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, प्रवक्ता, राजा रणञ्जय सिंह महाविद्यालय अमेठी १५००) रु० तथा प्रशस्ति पत्र

[२] प्रो० के० एल० अग्रवाल, रीडर, शिक्षा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय १५००) रु० तथा प्रशस्ति पत्र

[३] डा० किरण श्रीवास्तव, शोध कर्ता, गोरखपुर विश्वविद्यालय, ५००) रु० तथा प्रशस्ति पत्र

[४] श्रीमती अनीता सिंह, शोधकर्ता, गोरखपुर ५००) रु० तथा प्रशस्ति पत्र

[५] श्रीमती मनोरमा देवी, राजेन्द्रनगर लक्ष्मण पुरम् ५००) रु० तथा प्रशस्ति पत्र

[लखनऊ विश्वविद्यालय]

१—माध्यमिक शिक्षा परिषद की १९८५ की हाई स्कूल तथा इन्टर·

[शेष पृष्ठ ११ पर]

देश समाचार

[शेष पृष्ठ १० से आगे]

परीक्षाओं में प्रवेश की आर्य संस्थाओं में से प्रदेशीय स्तर पर प्रथम तीन स्थान प्राप्त छात्र छात्राओं की सूची—

हाई स्कूल-[छात्र]

प्रथम-राजीव कुमार-डा० हरिराम आर्य इण्टर कालेज, ज्वालापुर हरिद्वार ४७१/६०० ३००) रु०

तृतीय-अरविन्द कुमार-डी०ए०वी० इ० का० आर्यपुर सडा मैनपुरी ४५१।६०० २००) रु०

द्वितीय-मनोज कुमार दुबे-डी० ए० वी० इ० का० आर्यपुर संडा मैनपुरी ४५१।६००-२००) रु०

तृतीय-संजय कुमार यादव-डी० ए० वी० इ० का० झबरेड़ा सहारनपुर) ४४५।६०० १००) रु०

हाई स्कूल [छात्रायें]

प्रथम-कु० आन्शु सिह-दयानन्द बालिका विद्यालय इण्टर का० मोतीनगर लखनऊ ४५८।६०० ३००) रु०

द्वितीय-कु० गरिमा गोयल-आर्य कन्या पा० इण्टर का० रुड़की ४४६।६०० २००) रु०

तृतीय-कु० किरन तुलसियान-दयानन्द बालिका वि० इण्टर का० मोतीनगर [लखनऊ] ४४२।६०० १००) रु०

इण्टर [छात्र]

प्रथम-प्रमोद कुमार-डी० ए० वी० इण्टर का. बुलन्द शहर ३९८। ५००-३००) रु०

द्वितीय-राजीव सिंह-एन० सी० वैदिक इ० का० आगरा ३८४। ५००-२००) रु०

तृतीय-हरीश कुमार-डी० ए० वी०इण्टर का० बुलन्द शहर ३७८। ५००-१००) रु०

ब-इण्टर [छात्रायें]

प्रथम- कु० ज्योत्सना अरोरा- आर्य कन्या इण्टर कालेज, खुर्जा [बुलन्द शहर] ३६४।५००-३००) रु०

द्वितीय-कु० अनुराधा- आर्यकन्या इण्टर कालेज, रुड़की [सहारनपुर] ३६३।५००-२००) रु.

तृतीय-कु. शुभा आहूजा-आर्य कन्या इ. का. रुड़की [सहारनपुर] ३५७।५००-१००) रु०

तृतीय-कु० अनिता शुक्ला दयानन्द बालिका इण्टर का. मोतीनगर लखनऊ ३५७।५००-१००) रु०

३-विद्यालयों द्वारा दी गई सूचनाओं के आधार पर प्रवेशमें प्रथम द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त आर्य विद्यालयो को निम्नांकित धन राशि के बक्षता अनुदान से सम्मानित किया गया—

प्रथम-दयानन्द बालिका वि०. इण्टर का. मोती नगर, लखनऊ ३०००)

द्वितीय-आर्य कन्या पा० इण्टर का. मुजफ्फर नगर २०००) रु०

तृतीय-आर्य कन्या इण्टर कालेज, सिकन्दरा राऊ [अलीगढ़] १०००)

इन विद्यालयो को प्रधानाचार्याओं ने अपने-अपने प्रबन्ध की उपस्थिति के इस अनुदान की राशि के ड्राफ्ट प्राप्त किये।

इस सम्मान समारोह में परम आदरणीय स्वामी आनन्द बोध जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, परम आदरणीय स्वामी [डा०] सत्य प्रकाश जी वेद तथा विज्ञान के विशेषज्ञ, राजा रणञ्जय सिंह स्वागताध्यक्ष, उ० प्रदेश सरकार गृहमन्त्री, श्री दरबारी लाल ओ-डी. ए. वी. प्रबन्ध समिति दिल्ली, श्री रामनाथ सहगल, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नईदिल्ली महामन्त्री; पारितोषिक व्यवस्थापक श्री०माधव सिंह जी, मन्त्री विद्यार्य सभा, निर्णायक मण्डल व्यवस्थापक श्रीरोशनलाल जी, वि. श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, महामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, स्वामी ओमानन्द जी, झज्जर; श्रीमान इन्द्रराज जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०; श्री मनमोहन जी, तिवारी सभा मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. तथा सभा के सभी अन्तरङ्ग सदस्य उपस्थित थे और प्रदेश भर का आर्य जन सागर उमड़ रहा था।

सम्मान श्रीमान के. सी. पन्त जी केन्द्रीय मन्त्री भारत सरकार के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इसके पश्चात् श्रीमान, पन्त जी ने वैदिक सिद्धांत की कुछ विशिष्ट प्रतियोगिताओ के विजेताओं को पुरस्कृत किया और शेष पुरस्कार बाद में वितरित हुए।

सम्मान प्राप्त कार्य कर्ताओ को पुरस्कृत किए गए प्रतियोगियों को, संयोजन समिति शताब्दी समारोह शतशः साधुवाद प्रदान करती है, बधाई देती है और सभी आर्य संस्थाओं का जिन्होंने लखनऊ मे आकर प्रतियोगिताओं में भाग लिया धन्यवाद करती है।

[विद्यारत्न संयोजक प्रदेशीय प्रतियोगितायें तथा अधिष्ठाता विद्यार्य सभा आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश लखनऊ।

श्री पं० पन्नालाल जी पियूष अभिनन्दन समारोह

स्वस्ति पन्था मनुचरेम सूर्या चन्द्रम साविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमे महि॥ ऋ. मं. ५ सू. ५१ मं. १५
हम लोग सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृश सुख मार्गों के अनुगामी हों।

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध भजनो पदेशक पं. पन्नालाल जी पियूष संगीताचार्य, सिद्धांत शास्त्री, स्वतन्त्रता सेनानी पौष मास वि. सं.२०४३ दिसम्बर ८६ ई. मे अपने ७५ वर्ष पूर्ण कर चुके हैं।

आप गत ५८ वर्ष से वैदिक धर्म, आर्य समाज तथा सामाजिक सुधार दहेजवाद, छुआछूत, मादक द्रव्य निषेध आदि का प्रचार कार्य भजन गीतो के माध्यमसे करते रहे हैं। हैदराबाद सत्याग्रह, भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम मे आपने भाग लिया। सन् ३० से ३६ तक अजमेर में भारत केसरी श्री चान्दकरण शारदा, कर्मवीर प. जियालाल जी, श्री पं. प्रकाश चन्द्र जी, विजयसिंह जी, पथिक, पं. हरिभाऊ उपाध्याय आदि और उदयपुर मे श्री माणीक्यलाल वर्मा, श्री भूरेलाल बया, श्री बलवन्तसिंह जी मेहता, श्री कनक मधुकर, श्री मोहनलाल सुखाड़िया, श्री डा. बख्तावर लाल आदि के साथ मेवाड़ प्रजा मण्डल मे कार्य किया। सन् ४२ के अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन, सन् ५७ मे पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन सत्याग्रहों मे जेल यात्रा की। आपने संगीतज्ञ, प्रचारक भी तैयार किये। अब भी आप स्वस्थ है तथा भारत भर मे प्रचार यात्रा बराबर करते रहते है।

आपका ता. ४ जनवरी, ८७ रविवार प्रातः १० बजे आर्य समाज मन्दिर, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर मे अभिनन्दन किया गया तथा उपस्थित विद्वजनो ने उनके दीर्घायु के लिये अपनी शुभ कामनाएं अर्पित की।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४७५७३ ४५६६३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू एन पी ७४
माघ कृष्ण ५
रविवार १८ जनवरी १९८१ ई०

आर्य मित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सम्पादक के पत्र

आर्यत्व यही है

श्रीमान सम्पादक जी
नमस्ते !

इसे 'आर्यमित्र' साप्ताहिक मे मुद्रित करावें।

हम अक्टूबर १६ ता० को सभा के शताब्दी उत्सव के लिए लखनऊ गये थे। जाता मे अपना थैला छोड़कर रेल म चढ़ गये। थैले मे ५००) की सामग्रियां, कुर्ते, आर्यमित्र व सार्वदेशिक अखबार, दवा आदि थे। मेरे थैले को श्री ज्ञान नारायण मौर्य जी गोरखपुर ले गये। आर्यमित्र म मेरा पता था अतः मौर्य जी ने मेरा पता देखकर मेरे नाम पत्र लिखा कि आप लोगों ने जो ज्ञासी स्टेशन पर थैला छोड़ दिया वह मेरे यहां सुरक्षित है आकर ले लीजिए। मै लखनऊ से आते समय हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा के टूरिस्ट बस मे यात्रा करने के कारण बीमार पड़ गई अतः विजयवाडा म रहकर १ दिसम्बर को मौर्य जी का पत्र देखा। मैने मौर्य जी को पत्र लिखा कि रेल पार्सल द्वारा भेजिए। मौर्य जी ने डाक पार्सल द्वारा मेरा थैला भेजा जिसके लिए २३ २५ खर्च हुआ किन्तु डाक खर्च भी मत भेजिए उन्होंने ऐसा लिखा था—"उदार चरितानातु वसुधैव कुटुम्बकम्" मौर्य जी को भगवान शतायु करें। उनका पता यह है—
ज्ञाननारायण मौर्य, अग्रीकल्चरर फैनान्स आफीसर सेन्ट्रल बैंक गोरखपुर

विनीता—
सीता रत्नम मन्त्राणी
महिला आर्य समाज
कूचि पूडि, डाकघर—गुन्टूर जिला
(आन्ध्र प्रदेश) पिन—५२२३१३

माननीय महोदय,
सादर नमस्ते !

निवेदन है कि गुरुकुल बलत जि० मु० नगर यु० पी० गुरुकुल पद्धति से ५२ वर्ष से चल रहा है। इस समय आर्यसमाज विरोधी स्वामी कल्याण देव विरोधी तत्वों को साथ मे लेकर इस गुरुकुल का कन्या स्कूल अपनी पद्धति से बनाना चाहते है, अतः गुरुकुल के निर्माण आदि कार्य बन्द हो गये हैं। इनकी यह छेड़छाड़ आर्यजगत को चुनौती है।

आपका—
हरिश्चन्द्र, गुरुकुल बलत

मैं देवदत्त आर्य आर्यसमाज आर्यनगर, डिमौली महीउद्दीनपुर [मेरठ] का उप मन्त्री हूं। मेरी आयु भी अभी २१ वर्ष के लगभग है। मै कभी कभी आर्य समाज के कार्यों पर अपनी दृष्टि डालता हू तो मुझ दुःख होता है। हमारे द्वारा चलाए गए डी०ए०वी० विद्यालयों मे से १० प्रतिशत भी आर्य विचारों के नव युवक एवं नव युवती नहीं निकल रहे। क्या कारण है ? आर्य समाजों मे कागजी कार्य होने लगा है। मैं आपसे सानुरोध प्रार्थना करता हू। कि इस ओर गम्भीरतापूर्वक विचारने का कष्ट करें। धन्यवाद।

देवदत्त आर्य उपमन्त्री
आर्यसमाज डिमौली मुहीउद्दीनपुर (मेरठ)

पुस्तक परिचय

आशा का दीप— पृष्ठ संख्या—३६

लेखिका और प्रकाशिका—श्रीमती कमलेश बजाज, २४ हुक्का राम दास बाल्मीकि मार्ग, लालबाग लखनऊ।

उक्त पुस्तक भजनो का एक संग्रह है जो श्रीमती कमलेश बजाज ने अपने स्वर्गीय पतिदेव श्री रामसरन बजाज की पुण्य स्मृति मे प्रकाशित किया है। श्रीमती कमलेश बजाज का जीवन प्रारम्भ से ही बड़ा आध्यात्मिक रहा है। लखनऊ नगर के विभिन्न धार्मिक सत्संगों मे विशेष कर आर्यसमाज के अधिवेशनों मे उन्होंने भजनो को गाकर श्रोताओं को मुग्ध किया है। पुस्तक की भूमिका आचार्य देवव्रत अवस्थी प्रधान आर्य समाज श्रृंगारनगर लखनऊ ने लिखा है जिसमे श्रीमती कमलेश जी तथा उनके परिवार का परिचय दिया है।

आध्यात्मिक रुचि रखने वालो और भजन गाने वालो तथा सुनने वालो के लिए यह लघु पुस्तिका बड़ा उपयोगी है। यह निःशुल्क है और निम्नलिखित पते म मंगाई जा सकती है— श्रीमती कमलेश बजाज
द्वारा श्री प्रमभूषण कुकरेजा ६६ ए-एम आई जी
राजौरी गार्डन नई दिल्ली—११००२

— वसन्त'

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदास आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए
अस्थाई रूप में विन्ध्यवासिनी प्रिंटिंग प्रेस ९ कुन्दनबाग लखनऊ मे श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म् आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४१/५७ — माघ कृष्ण १०, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनाक २५ जनवरी १९८७ — घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८१

इस अङ्क के आकर्षण

पर्वों की प्रेरणाए
लोक तन्त्र की रक्षा का सकल्प
वेदोपदेश—पुरुषार्थी बनो
राजनैतिक समस्याए
सास्कृतिक समस्याए
युवको बलिदानो को याद करो।
सार सूचनायें
कविता कलाप
आर्य जगत

गणतन्त्र—विशेषाक

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
★
सम्पादक मण्डल—
विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'
★
आचार्य रमेशचन्द्र एम ए.
★
[illegible]
★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड
एक प्रति	६० पैसे

वर्ष ९०
अङ्क ४

प्रभु की अमृत वाणी—

अन्धकार से पार होकर ज्योति प्राप्त करें।

विमुच्यध्वमघ्न्या देव याना अगन्म तमसस्पारमस्य ज्योतिरापाम।
(यजु० १२-७३)

वेदानुसार मानव जीवन के दो पथ है। प्रथम देवयान और द्वितीय असुर यान। जीवन की जिस पद्धति की सज्ञा देवत्व है, उसी की प्राप्ति के लिये देवयान मार्ग पर चला जाता है। देवत्व का पथिक देवयान मार्गी बनकर अपने जीवन मे मोक्ष के द्वार को खोलता है। निज जीवन मे सुख शान्ति और आनन्द की धारायें प्रवाहित करता है। ऐसा देव जिस गृह समाज, राष्ट्र और विश्व मे निवास करता है उन सब मे दिव्यताओ का सचार करता है।

इसके सर्वथा विपरीत जीवन की आसुरी पद्धति को जो असुर अपनाते है वे स्वजीवन मे नरक के द्वार तो खोलते ही है, गृहो समाजो राष्ट्रो तथा ससार को भी घोर यातनाए देकर [illegible] कर देते है। 'असुर यान' पथ के पथिक नितान्त मायावी [illegible] दम्भी [illegible] पाखण्डी दुराचारी [illegible] और अत्याचारी होते है। स्वार्थ सिद्धि ही उनका [illegible] होता है और निज स्वार्थ पूर्ति के लिए वे सर्वथा निर्मम होकर जघन्य अपराधो की अभिवृद्धि करते रहते है।

वेद ने मानवो को देवयान मार्ग अपनाने की प्रेरणा देते हुए कहा है—
(अघ्न्या देव-याना वि+मुच्यध्वम) [illegible] अहन्तव्या। अहननशील। अहननीया। [illegible] यानाओ को विमुक्त करो। [illegible] शरीरस्थ समस्त इन्द्रियो को देवयाना बनाने के निमित्त उन्हे अहननीया बनाना ही उनका विमुक्तिकरण है। भद्र दर्शन भद्र श्रवण भद्र स्पर्श भद्र घ्राण तथा भद्र भक्षण ये भद्रताए ज्ञानेन्द्रियो की अहननशीलताए है। इसी प्रकार पञ्च कर्मेन्द्रियो की भद्रताए ही अभद्रताओ का विमुक्तिकरण है। देवयानी बनने के लिए इन्द्रियो का नियन्त्रण ही मोक्ष के द्वार को खोलता है।

जो देवयानी बनते है वे ही (अस्य तमस पारम अगन्म) इस मायावी आसुरी अन्धकार के आवरण को चीरकर उस पार हो जाते हैं जहा अक्षय ज्योति है दिव्य ज्ञान का प्रकाश है और वे कह उठते है (ज्योति अपाम) [हमने] ज्योति प्राप्त कर ली।

मानवो के समूह से ही परिवार बनते है परिवारो के समुदाय ही समाज का सृजन करते है, समाजो का समुच्चय ही राष्ट्र है और राष्ट्रो से युक्त धरती ही विश्व है। विश्व का कल्याण तब तक सम्भव नही जब तक राष्ट्र समुन्नत न हो, राष्ट्र तभी समुन्नत होते हैं जब समाज परिष्कृत होते है। समाजो का परिष्कृत होना सुपरिवारों पर आश्रित होता है तथा सुपरिवारों का निर्माण केवल मानव के देवयानी होने पर निर्भर करता है।

जिस स्वराष्ट्र का "गणतन्त्र दिवस" हम प्रति वर्ष उल्लास के साथ मनाते है, क्या उसके इस मूल 'देव यान' का भी हमने कभी चिन्तन किया है। जब मानव देवयानी नही बनेगा तो, उसके द्वारा सचालित परिवार और समाज कैसे उत्कृष्ट होगे और जिन्हे निर्वाचित कर जिनके हाथ मे हम राष्ट्र की सत्ता सौंपते हैं, यदि वे देवयानी नहीं हैं तो राष्ट्र कैसे उज्ज्वल और भव्य बनेगा। गणतन्त्र के पावन दिवस पर हम इस मूल की उपेक्षा न कर देवयानी बनने का सुव्रत लें और आत्मना दृढ प्रतिज्ञ बनें।

हे इन्द्रजितो! इन्द्रियो को अहननशील बनाओ।
देव यानी बनकर आसुरी वृत्तियों को दूर भगाओ॥
खोलो मोक्ष के द्वार, पाशों से सबको छुड़ाओ।
दूर करो तम को 'वसन्त' ज्योति से जीवन जगमगाओ॥

—वसन्त

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ।।

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार २५ जनवरी १९८७, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

सुसहासति

भारत राज्य में जनतन्त्र है। प्रत्येक वर्ष २६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस का राष्ट्रीय पर्व बड़े-समारोह पूर्वक देश में मनाया जाता है जिसमें समस्त देश वासी हर्षोल्लास के साथ सम्मलित होते हैं। इस वर्ष सैय्यद शहाब्बुद्दीन जो जनता पार्टी के नेता है तथा बाबरी मस्जिद की समन्वय समिति ने यह घोषणा की है कि देश के मुसलमान इस राष्ट्रीय पर्व का बहिष्कार करें। खालिस्तान की मांग करने वाले उग्र पंथियों को भी इस घोषणा से प्रसन्नता हुई है और वे भी अपने स्वर इस बहिष्कार के स्वर में मिला रहे हैं। जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर की अपील को भी सैय्यद शहाब्बुद्दीन ने ठुकरा दिया है और उन्होने अब तक उनके विरुद्ध कोई भी अनुशासन की कार्यवाही नहीं की है। भारत सरकार की ओर से भी वैधानिक कार्यवाही की प्रतीक्षा की जा रही है। इस संदर्भ में भारतीय जनता पार्टी ने बड़ा सराहनीय कार्य किया है कि उसने दिल्ली में अपने दल के एक नेता को तथा मैट्रोपोलियन कौसलर को ऐसी घोषणा करने के कारण निलम्बित कर दिया है।

जहा उपरोक्त बहिष्कार की घोषणा की गई है, वहा दूसरी ओर अखिल भारतीय मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के आवाहन पर देश के समस्त नागरिको के लिये समान नागरिक संहिता बनाने का घोर विरोध किया जा रहा है, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये लखनऊ के बेगम हजरत महल पार्क में मुसलमानों का एक विराट सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें ऐसे असंयमित भाषण दिए गए जिनका अनुमोदन किसी भी स्तर पर नही किया जा सकता। समान नागरिक संहिता बनाने की बात जिस संविधान में वर्णित है, उसमें मुसलमानों तथा अन्य समस्त अल्प संख्यक समुदायों के मौलिक अधिकारों का आश्वासन भी प्रदान किया गया है। इसकी अवहेलना कर मुसलमानों में धार्मिक उन्माद उत्पन्न करना राष्ट्र के साथ विश्वासघात करना है और उन्हें पथ-भ्रष्ट करना है, पथ विचलित करना है।

जब भारत वर्ष अंग्रेजी शासन से विभाजन के आधार पर मुक्त हुआ तो पाकिस्तान के निर्माता कायदे आजम मोहम्मद अली जिन्ना ने यह प्रस्ताव रखा था कि जन परिवर्तन कर लिया जाए अर्थात् भारत के समस्त मुसलमान पाकिस्तान भेज दिए जाएं और समस्त हिन्दू भारत भेज दिये जाएं पर हमारे देश के नेताओ ने इसे स्वीकार नहीं किया क्योंकि वे हिन्दू मुसलिम एकता के समर्थक थे और उन्हे विश्वास था कि राष्ट्रीय स्तर पर दोनो मतो मे एकता स्थापित करने में वे समर्थ हो जायेंगे। आज भारत को स्वतन्त्र हुए लगभग ४० वर्ष हो गए हैं परन्तु आज भी बहुधा हिन्दू मुसलिम संघर्ष होते रहते हैं। १४४ धारा लागू की जाती है, कर्फ्यू लगाया जाता है और स्थिति को नियन्त्रित करने के लिये अश्रुगैस, लाठी और गोली का भी सहारा लेना पड़ता है। अतएव इन परिस्थितियों में यह विचार करने पर विवश होना पड़ता है कि मूल त्रुटि अथवा न्यूनता कहां पर है जहां, इस देश के वासी इस देश में निवास करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर एकत्व से दूर पड़े हुए हैं और मत मतांतरों की भूल भुलैय्यों में भटक रहे हैं।

धर्म निरपेक्षता की आड़ में हमारे नेताओं ने मानव को मानव बनाने की जिन वैदिक शिक्षाओं की अवहेलना की है, ये सब दुष्परिणाम उनके अज्ञान के मूल स्वरूप हैं।

वेद कहता है—

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं
पृथिवी यथौकसम्। सहस्त्रं
धारा द्रविणस्य मे दुहां
ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ।।

(अ० १२-११-४५)

वेद के भूमि सूक्त का यह मन्त्र कहता है कि विविध बोलियां बोलने वाले, अनेक धर्मों का पालन करने वाले जन समूह को यथागृह पृथिवी आश्रय प्रदान करती है निश्चला दुधारु गौ की भांति। अतएव मेरे लिए, मुझ मानव प्रजा के लिए ऐश्वर्य की असंख्य धाराएं दुही जाएं।

राष्ट्र ऐश्वर्य वान, सुसम्पन्न तभी होगा जब वहां के जनों में एक राष्ट्रीयता होगी और यह तब तक सम्भव नहीं होगा जब तक उन्हें ईश्वरीय ज्ञान धारण नहीं कराया जाता। केवल वेद ही वह दिव्य ईश्वरीय ज्ञान है जो मानव को मानव बना कर उसमें सच्ची राष्ट्रीयता को ओत प्रोत करता है। ऋग्वेद, वेद का ज्ञान कांड है, इसका अन्तिम सूक्त संगठन सूक्त है जिसके चारों मन्त्र मनुष्य को समानता की लड़ी में पिरोते हैं। इस सूक्त के अन्तिम मन्त्र का अन्तिम शब्द है "सुसहासति"। ज्ञान काड के इस अन्तिम शब्द में तीन शब्दों की सन्धि है, सु+सह+असति। सु = उत्तम प्रकार से सह = संगठित बल, सामर्थ्य और असति = भवति। पूर्ण ज्ञान का ज्ञानमय इस एक शब्द में है और पूरा मन्त्र जो अन्तिम मन्त्र है, यह बतलाता है कि तुम्हारी संकल्प शक्ति, लक्ष्य दृष्टि एक समान हो। तुम सबके हृदय, उनकी भावनाएं एक हों जिससे तुम्हारे जीवन की सुगति हो।

इस वर्ष के गणतन्त्र दिवस पर अपने भूले भटके राष्ट्रीय बन्धुओं से हमारा सस्नेह अनुरोध है कि राष्ट्रीय संकल्प की एकता के लिए उन्हें अपने और समुदाय के हृदय और मस्तिष्क समान बनाने का संकल्प लेना चाहिये और अधम निकृष्ट स्वार्थ का परित्याग कर अपनी राष्ट्रीय महानता का परिचय देना चाहिये। जो साम्प्रदायिक नेता साम्प्रदायिकता की संज्ञाहीन औषधि सुंघा कर उसे अनाचार का प्रसार करते है और मुस्लिम समाज को पुरातन युग के भीतर ही अन्ध विश्वासों और कुरीतियों में आबद्ध करना चाहते हैं, उनका ही बहिष्कार करना इस राष्ट्रीय पर्व का संकल्प होना चाहिये। जब तक वैदिक ज्ञान से ऐसी सुशिक्षाएं नहीं दी जायेंगी, तब तक संकीर्णताओं से मुक्त नहीं मिलेगी और बृहद् उदार दृष्टिकोण अपनाना कदापि सम्भव नहीं होगा।

'वसन्त'

पर्वों की प्रेरणा

[श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश]

इस (जनवरी १९८७) मास में ६ प्रमुख पर्व हैं। छः में से ४ महानपुरुषों से सम्बन्धित तथा एक ऋतु से सम्बन्धित और एक राष्ट्रीय पर्व है। हमारे महान् पुरुषों की अपने जीवन के प्रकाश से हमारे लिए अद्भुत प्रेरणायें हैं। विशेष रूप से आज की विषम परिस्थितियों को देखते हुए हमें अपनी आजादी को अक्षुण्ण रखने के लिए इन महान पुरुषों के बलिदानों को स्मरण कर तप, त्याग और बलिदान के लिए तैयार होना होगा। एक तरफ पंजाब में निर्दोष व्यक्तियों का रक्त बहाया जा रहा है। उत्तरप्रदेश में धर्म परिवर्तन की जबरदस्त लहर। गोरखा लैण्ड, झारखण्ड आदि अनेकों समस्याएं देश के अन्दर हैं। बाहर पाकिस्तान नए हथियारों से लैस होकर हमें समाप्त करने का षड्यन्त्र कर रहा है। अमरीका हमारे उन्नति से चिन्तित है। चीन ने अब हमारी ही भूमि को अपनी भूमि कहना प्रारम्भ किया है। अन्दर और बाहर का वातावरण हमें चुनौतियां दे रहा है। गणतन्त्र दिवस का भी बहिष्कार शहाबुद्दीन जैसे तथाकथित देश भक्त कर रहे हैं ऐसे लोगों पर देशद्रोह का मुकदमा चलाने और गणतन्त्र दिवस को उत्साह से मनाने का संकल्प लेना चाहिए। समय आ गया है कि हम देश रक्षा के लिए बलिदान और संघर्ष के लिए तैयार हो जाएं।

आईए ! गुरु गोविन्दसिंह जी से प्रेरणा प्राप्त करें। क्या कोई ऐसा महान् पुरुष मिलेगा जो गृहस्थी होकर गृहस्थ के बन्धनों से ऊपर उठकर अपने चारों बेटों को हिन्दू जाति पर बलिदान कर दे। अपने पिता गुरु तेग बहादुर जी को भी जाति की रक्षा के लिए बलिवेदी पर चढ़ने की प्रेरणा करे और आयु भर हाथ में तलवार लेकर हिन्दू जाति की रक्षा के लिए संघर्ष रत रहे। आज पंजाब में निर्दोषों का रक्त बहाने वाले क्या गुरुओं से द्रोह नहीं कर रहे है। आज समय आ गया है कि इन आततायियों को कठोर दण्ड देने और इन्हे पूरी तरह से परास्त करने के लिए गुरु गोविन्दसिंह का बलिदान और संघर्ष का मार्ग अपनाया जाए।

लालबहादुर स्मृति दिवस पर एक ऐसे प्रधान मन्त्री की याद आती है जो लोभ और स्वार्थ से सर्वथा ऊपर भारत के जनजन को स्वतन्त्रता का अनुभव कराता-कराता इस संसार से विदा हो गया। न कोई अपना मकान, न कोई बैंक बैलेन्स। सादा जीवन, उच्च विचार। छोटा कद—महान आत्मा। 'जय जवान' और 'जय किसान' का नारा लगाने वाला वह चरित्रवान् प्रधान मन्त्री अपनी प्रेरणाएं भारतीय जनता के लिए छोड़ गया। उसका त्याग और बलिदान का रास्ता ठीक था। उस रास्ते को बार-बार स्मरण करने की आवश्यकता है। उस रास्ते पर चलने वाले लाल बहादुर शास्त्री की देय अर्चना आवश्यक है। पता नहीं क्यों ? शासक वर्ग भूल गया है उस बलिदान को। पता नहीं आज उसे जनता क्यों भूल गई है ? उस महान् के रास्ते पर चलना ही उसका स्मरण है। यही उस महान पुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म दिन २३ जनवरी। आज बड़ा विवाद है कि नेता जी जीवित हैं या बलिदान हो गये हैं। उस व्यक्तित्व के प्रति उन लोगों के मन में कितनी आस्था है कि वे नेता जी को जीवित मानते हैं। मृत नहीं मानते। भारत माता के परतन्त्रता के बन्धन काटने के लिए अपने देश से बाहर जाकर बिना साधनों के आजाद हिन्द फौज को संगठित करना और उसमे भी एक रानी झांसी ब्रिग्रेड को खड़ा करना कितना साहस का काम था। उनका सारा जीवन वीरता, साहस और त्याग से भरा हुआ है।

प्यारा देश हमारा है

वेद के पथ पर चलो जो देश प्यारा है।
आर्य वीरो बढ़ो ओझल किनारा है ॥
देश की रक्षा अनेकों ने कराई थी,
ज्ञान की ज्योति दयानन्द ने जलाई थी।
सत्यार्थ प्रकाश ज्ञान का पिटारा है—
आर्य वीरो…।१।
जानने से है नहीं कुछ बात सी बनती।
देश के टुकड़े बनाने की यहां ठनती ॥
व्यवहार में कुछ भी नहीं कर्तव्य हमारा है—
आर्य वीरो…।२।
देखते रोजाना लाखों गऊएं कटती है।
देश में देखो हजारों बहनें मरती हैं ॥
बहते रुधिर की लाल सी ये दुष्ट धारा है—
आर्य वीरो…।३।
मिल कर सदा चलते रहो ओ देश के वासी।
मातृ-भूमि है तुम्हारे प्रेम की प्यासी ॥
वहां तलक बढ़ते रहो जहां तक उजाला है—
आर्य वीरो…।४।
ऋषियो की सन्तान हो तुम ज्ञान का शोला।
मरने के पश्चात है बेकार ये चोला ॥
कहे जीतराम तू देश का रुस्तम सितारा है—
आर्य वीरो…।५।

—जीतराम आर्य

स्वामी विवेकानन्द जी का जन्म दिवस १२ जनवरी। स्वामी विवेकानन्द जी भी भारत माता के गौरव थे। विदेशों में जाकर भारत माता का मस्तक ऊंचा करने वाले उस महान् पुरुष को भी प्रणाम है। भारत माता रत्न गर्भा है। समय-समय पर इसके सुपुत्र ससार को प्रकाश का मार्ग दिखाते रहते है : स्वामी विवेकानन्द जी ने आध्यात्म मार्ग की झलक पश्चिम को दिखाई। पश्चिम वाले वैदिक सस्कृति के प्रति आकर्षित हो गए। उस समर्पित जीवन की आज भी बड़ी आवश्यकता है जो स्वार्थ से ऊपर उठ कर भारत, वैदिक संस्कृति और भारतीय सभ्यता के लिए मर मिटने वाला हो। आज आतंकवादी, उग्रवादी विघटनवादी शक्तियों को विवेकानन्द जी का राष्ट्रभक्ति, संस्कृति के गौरव का रास्ता ही परास्त कर सकता है।

मकर सौर संक्रान्ति

यह भी प्रकाश पर्व है। सारे के सारे सौर मण्डल का अन्धकार मार्ग से निकल कर प्रकाश के मार्ग पर अग्रसर होना प्रारम्भ हो जाता है। योगी लोग भी देवयान को पसन्द करते थे। पितृयान तो साधारण लोगों के लिए है। प्रकाश की तरफ बढ़ने वाले लोग अपना भौतिक शरीर भी दक्षिणायन में नहीं अपितु उत्तरायण में छोड़ना पसन्द करते थे। इस संक्रांति से दिन बड़े होने प्रारम्भ होते हैं और रात्रि कम होनी प्रारम्भ होती है। हमारे जीवनों में भी प्रकाश बढ़े और अन्धकार कम हो यह ही इस पर्व की प्रेरणा है। आज स्वार्थ, आपाधापी, अलगाववाद, हिंसा, विघटन, मद्यपान, आसुरी वृत्ति ये सब अन्धकार हैं। परोपकार, संगठन, सात्विक आहार—व्यवहार, अहिंसा आदि प्रकाश है। सर्वत्र प्रकाश फैले, अन्धकार दूर हो आसुरी वृत्तियां परास्त हों, दैवी वृत्तियां विजयी हों। यही सब का संकल्प हो।

महान पुरुषों के पद चिन्हों पर चलते हुए हम प्रकाश की ओर बढ़ते चले जाएं।

*

सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी की भारत के प्रधानमन्त्री से स्पष्ट मांग

राष्ट्रीय पर्वो तथा संविधान का अपमान करने वालो को भारतीय नागरिकता से अविलम्ब पृथक किया जाय ।

राष्ट्रीय पर्व का अपमान देश द्रोह है

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने भारत के पधानमन्त्री श्री राजीव गाधी जी से यह माग की है कि श्री सैय्यद शहाबुद्दीन तथा उनके अन्य सहयोगी जिन मुस्लिम नेताओं ने मुसलमानभाइयो को गणतन्त्र दिवस के बहिष्कार का फतवा दिया है, उनके विरुद्ध कठोर कानूनी कायवाही करते हुए उनकी लोकसभा की सदस्यता समाप्त की जाय और उनके ऊपर राष्टद्रोह का अभियोग चलाया जाय । श्री तिवारी ने कहा 'कि भारत की एकता एव अखण्डता को बनाये रखने के लिये आवश्यक हो गया है कि क्षेत्र-वाद, जातिवाद, भाषा व धर्म के नाम पर जो शक्तिया भारत को विभाजित करना चाहती हैं उनके विरुद्ध आय समाज जन जागरण अभियान प्रारम्भ करे । पजाब, बगाल, आसाम और कश्मीर मे धम, जाति और भाषा के नाम पर भारत को खण्डित करने का जो कुचक्र चल रहा है उसे आर्यजन कभी सफल नही होने देगें । साथ ही जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर तथा अन्य नेताओ से माग की है कि श्री शहाबुद्दीन जैसे लोगो को पार्टी से तुरन्त निकाला जाय अन्यथा जनता पार्टी के नेताओ का घिराव किया जायेगा ।

राष्ट्र भाषा हिन्दी के लिए थोपना शब्द का प्रयोग असगत है

जब हमारे देश के कर्णधार राष्ट्रभाषा हिन्दी के सम्बन्ध मे कोई वक्तव्य देने लगते है तो प्राय दो बातें वे अवश्य कहते हैं— एक तो यह कि हिन्दी को सरल बनाया जाना चाहिए और दूसरे कि 'हिन्दी थोपी नहीं जायेगी ।'

जहा तक हिन्दी के सरल बनाये जाने का प्रश्न है, उससे तो यह सिद्ध होता है कि ऐसा कथन करने वाले महानुभावो को हिन्दी का पूर्ण ज्ञान ही नहीं है अन्यथा ससार की सर्वोत्कृष्ट लिपि देवनागरी एव सरलतम भाषा हिन्दी के बारे मे ऐसी निराधार टिप्पणी कदापि न करते । ऐसा वक्तव्य देते समय सम्भवत उन्हे इसका अनुमान ही नही रहता कि उनके ऐसे कहने मात्र से हिन्दी भक्तो को कितना गहरा आघात पहुचता होगा ।

जहा तक हिन्दी के थोपे जाने की बात है, ऐसा कह कर स्वय हिन्दी का घोर अपमान करना है । थोपना शब्द का तो अर्थ होता है— किसी अनिच्छुक व्यक्ति पर बलात् कोई भार या अप्रिय वस्तु लादना । हिन्दी भार तो नहीं और न ही कोई बुरी वस्तु है । यह तो भारतीय सविधान मे स्वीकृत इस राष्ट्र की आदरणीया राष्ट्र भाषा तथा अपने आदि काल से इस देश की एकता अखण्डता और अनुपम सस्कृति की जीवन्त सवाहिका है । लोकमगल की भावना मे अहर्निश तपस्या मग्न सन्तो के कण्ठ से निकली भाषा का गौरव और महत्व साधु जन ही समझ सकते हैं । जो लोग हिन्दी के माध्यम से राजनीतिक उपलब्धि चाहते है, वे इसकी महत्ता और विशेषता भला क्या समझेगे ।

हिन्दी के सन्दर्भ मे ऐसा कथन करने वालो को सर्वशक्तिमान् ईश्वर सदबुद्धि दे मेरी उसमे यही करबद्ध प्रार्थना है ।

—राजर्षि रणञ्जयसिह भूपति—भवन,

अमेठी—२२७४०५ जनपद सुल्तानपुर उ० प्र० ।

मेरठ में राष्ट्रीय एकता दिवस

२ जनवरी ८७ को प्रसिद्ध समाजसेवी एव ट्रांसपोर्टर श्री जगन्नाथ चिम्पोटी ने राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप मे नव वर्ष पर सर्वधर्म प्रार्थना व यज्ञ का सफल आयोजन मेरठ गुड्स ट्रक आपरेटर एसोसियेशन के तत्वाधान में किया । इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने यज्ञ के बाद यजमानों श्रीमती देवबाला पत्नी श्री अमर जीत एव श्रीमती रमाकपूर पत्नी श्री विशम्भर लाल कपूर को आशीर्वाद दिया ।

मुख्य अतिथि स्वतन्त्रता सेनानी व सर्वोदय नेता मास्टरसुन्दरलालजी ने राष्ट्रीय एकता को सर्वोच्च प्राथमिकता हेतु युवाओ का आह्वान किया । गुरुद्वारे के ग्रन्थी भाई जोगा सिंह आदि ने गुरुग्रन्थ साहब का पाठ तथा स्थानीय चर्च के पादरी ने ईसा के वचनो का बाईबिल से पाठ किया । [illegible]

इसके बाद [illegible] के बच्चों द्वारा राष्ट्रीय एव सास्कृतिक भावनाओ से ओत-प्रोत कार्यक्रम को उपस्थित जनों ने सराहना की । युवा गायक कुलदीप शर्मा ने नेता जी सुभाष पर एक ओजस्वी गीत प्रस्तुत किया । अन्त मे सभी धर्मों के व्यक्तियो ने सामूहिक भोज मे भाग लिया ।

सभा प्रधान जी द्वारा वेद प्रचार

विगत ६ जनवरी १९८७ की रात्रि साढ़े आठ बजे शर्मा स्मारक के सामने मेडिकल एसोसियेशन हाल मे मेरठ महानगर लायन्स क्लब के सौजन्य से एक कार्यक्रम आयोजित हुआ । क्लब के सदस्यों के सम्मुख सुप्रसिद्ध विद्वान श्री इन्द्रराज जी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०) ने गायत्री मत्र पर अपना ओजस्वी प्रवचन दिया एव श्रोताओ के गायत्री मत्र पर किये गये प्रश्नो का उत्तर दे कर सब का समाधान किया ।

आवश्यक सूचना

धर्म शिक्षा परीक्षा १९८७

आर्य प्रतिनिधि उ० प्र० द्वारा सचालित धर्म प्रवेशिका, धर्म भूषण धर्माधिकारी परिक्षायें दि० ८-३-८७ को होगी जो विद्यालय इन परीक्षाओ मे अपने विद्यालयो को प्रविष्ट कराना चाहते है व १५ फरवरी १९८७ तक निर्धारित फार्मों को भर कर शुल्क सहित भेज दें । यह ज्ञातव्य है कि समान्यतया कक्षा ७, ९, व ११ के विद्यार्थी क्रमश धर्म प्रवेशिका, धर्म भूषण, धर्माधिकारी परीक्षाओ मे प्रविष्ट लेते है । फार्म और पाठ्य क्रम विद्यालयो को भेज दिये गये है यदि फार्म जिन विद्यालयो मे न प्राप्त हुए हो तुरन्त सभा कार्यालय से पत्र लिख कर मगा लें ।

—माधव सिंह मन्त्री

प्रदेशीय विद्यार्य सभा ५ मीराबाई मार्ग

लखनऊ

ऋषि-राज कलण्डर १९८७

इस कलेण्डर मे देशी तिथिया, अग्रजी तारीख दी हैं । महर्षि की जीवनी के प्रत्येक पृष्ठ पर चित्र हैं । इसके अतिरिक्त पर्वों के ४० चिन्ह स्थान स्थान पर गायत्री मन्त्र, आर्यसमाज के नियम हैं । १ कलेण्डर ८० पैसे ४ कलेण्डर तीन रुपये १० कलेण्डर पाच रुपये, सौ का मूल्य ४०) पहले भेजें ।

हवन सामग्री ३ ५० किलो आर्य डायरी ६) रु० ।

पता—वेद प्रचार मण्डल

करौल बाग रामजस रोड, दिल्ली—५

राष्ट्र निर्माण

गणतन्त्र दिवस पर लोकतन्त्र की रक्षा का संकल्प लें

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

२६ जनवरी का सुप्रभात प्रति वर्ष हमारे ज्ञात अज्ञात अमर हुतात्माओं के स्वर्णिम बलिदान का स्मरण कराने एवं उनके संकल्पों के सुखी समृद्ध भारत के निर्माण के लिए आत्माहुति देने की प्रेरणा देने आता है।

सदियों से पराधीनता की बेड़ी में जकड़ी भारत माता की बेड़िया काटने के लिए लाखों भारत के नर-नारियों ने (जिनमें न कोई हिन्दू था न कोई मुसलमान और न ईसाई—सभी भारतीय थे) अनथक वर्षों संघर्ष किया था, यातनाएं सही थीं बलिदान दिये थे, सबका निश्चय था कि सब कुछ बलिदान करके भी भारत माता को आजाद करायेंगे। उनके संकल्प पूरे होने का दिन आया। १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतन्त्र हुआ। परन्तु अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति के तहत मुहम्मद अली जिन्ना बहक गए और उन्होंने मुसलमानों के लिये पृथक् राष्ट्र पाकिस्तान की माग की, जिद की, अन्तत राष्ट्रीय नेताओं ने दुःखी हृदय उनकी इस माग को इस भावना के साथ स्वीकार कर लिया कि २ भागों मे ही सही सभी सुखी व स्वाधीन रहेंगे—भारत दो टुकड़ों में बंटा और फिर पाकिस्तान में भयंकर साम्प्रदायिक दंगे आरम्भ हुए। हिन्दुओं का पलायन आरम्भ हुआ—भारत में भी उसकी प्रतिक्रिया हुयी परन्तु भारत सरकार ने बड़ी ही गम्भीरता से उन्हें शांत करने का यत्न किया और पीड़ित—शरणार्थियों के पुनर्वास की व्यवस्था की। धीरे-धीरे सब ठीक होने लगा।

२६ जनवरी १९४८ को हमारा देश सम्पूर्ण प्रभुसत्ता संपन्न—लोकतन्त्र घोषित किया गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने—स्वतन्त्र भारत के लोकतन्त्र की कल्पना में राजार्य सभा की प्रतिष्ठापना के द्वारा सुराज्य की स्थापना का स्वप्न देखा था। और महात्मा गांधी ने भारत में राम राज्य की स्थापना का स्वप्न संजोया था। परन्तु उनके सपनों का भारत अभी तक हम नहीं बना पाये न बनाने की ओर हमारे कदम ही बढ़ रहे हैं। उन दोनों महापुरुषों की निर्माण की अवधारणा भारतीय दर्शन थी। परन्तु हम पश्चिमीय ताममाम में अपना गौरव मान बैठे हैं। इसमें शक नहीं है कि हम खाद्यान्न के विषय मे आत्म निर्भर हुए—वैज्ञानिक व आर्थिक विकास भी हमने खूब किया है। परन्तु शांति सद्भाव, संगठन—प्रेम, सौहार्द, एकत्व की भावना का अभ्युदय हम नहीं करपाये हैं।

भारत के प्रथम उप प्रधान मन्त्री और गृहमन्त्री लौह पुरुष सरदार पटेल—ने देश में फैली पृथक-पृथक रियासतों को समाप्त करके—एक सुगठित भारत के निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाये थे, सफलता भी मिली थी। परन्तु अंग्रेजों की चालबाजी से—फैली अंग्रेजियत ने भारतीयता को अपना स्थान नहीं बनाने दिया बिलगाव वादी वृत्तियों को प्रोत्साहन ही मिलता रहा। फलत दयानन्द या गांधी के सपनों के भारत के निर्माण की धारणा—ध्वस्त सी हो गयी

अपने ही देश मे अपनी भाषा हिन्दी, अपनी वेष भूषा—अपने महापुरुषों के गौरव की उपेक्षा होने लगी। हमें जो कुछ अमेरिका व इंगलैण्ड से कर्तव्य बताये जाये तत्काल अनुकरणीय हो जाते हैं, वहीं उसमें उत्तम संकेत भारतीय दर्शन के हम, बुर्जुआ, आउट आफ डेट, दकियानूसी कहकर उपेक्षा से—परे कर देते हैं। लार्ड मैकाले ने जैसा कहा था कि हम ऐसी अंग्रेजी और अंग्रेजियत डाल देंगे कि भारतीय देखने को भारतीय होगा, व्यवहार मे वह पूरी तरह से योरोपियन—होगा।

अपने राष्ट्रीय स्वरूप से उसे घृणा होगी। आज हो वही रहा है। अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी वेष भूषा, अंग्रेजी व्यवहार हमारा अंग बन रहा है। हमारा आचार भी विदेशी बन रहा है। इस सबसे देश का सम्वर्द्धन कभी न होगा। दासवृत्ति ही बढ़ेगी।

भारतीय दर्शन मे 'एकत्व मनुपश्यत' एकत्व की भावना अपनाने को कहा गया है। आज उसकी उपेक्षा से ही धर्म का स्वरूप बिगड़ गया है। वह संकुचित हो गया है। साम्प्रदायिक हो गया है। विघटनकारी हो गया है। इसीलिये बिलगाववाद आतंकवाद उग्ररूप मे फैल रहा है। राष्ट्रीय भावना जो आजादी से पूर्व जन-जन मे आप्लावित थी वह नष्ट हो रही है। आज पचमांगी तत्व खुले रूप मे सर उठा रहे हैं और सरकार कुछ भी कर पाने मे असमर्थ हो रही है।

चाहे खालिस्तान की माग हो, चाहे गोरखा लैण्ड की मांग हो चाहे शरियत के मुताबिक मुसलमानों को अपनी अलग पहचान की मांग हो, चाहे आक्रान्ताओं द्वारा मन्दिर तोड़कर—बनाई गई मस्जिद (राम जन्म भूमि) का बाबरी मस्जिद—ही मानने की माग। चाहे गणतन्त्र दिवस के बहिष्कार का आह्वान हो चाहे राष्ट्रीय ध्वज के जलाने की योजना हो। यह सभी मागें सर्वथा अराजक, देश द्रोह से परिपूर्ण मागें हैं। इस सबके पीछे पंच मांगी, राष्ट्र विरोधी तत्व ही सक्रिय हैं और वे अपने अपने तथा कथित जातीय वर्ग मे धर्म के नाम पर कमजोर नसों को उभार कर अराजकता पैदा कराते हैं। चारो ओर अराजकता का मूल कारण यही है।

आज के पवित्र पद पर शासन मे बैठे नेताओं, अन्य राजनीतिक पार्टियों के नेताओं व हम सभी प्रबुद्ध देश वासियों का—दायित्व है कि आत्म निरीक्षण करें और भारतीय दर्शन—के मुखापेक्षी होकर धर्म के सच्चे स्वरूप को पहचाने—जाने, माने, व्यवहार मे लायें, संकल्प ले कि हम ऋषि दयानन्द व महात्मा गांधी के सपनों के लोक तन्त्रीय भारत का—निर्माण करेंगे और शासन की गद्दी पर बैठे लोग अपना धर्म राष्ट्र—की सुरक्षा, प्राणी मात्र की रक्षा करके निभायें। कितनी ही कठोरता की आवश्यकता हो वोट की राजनीति से परे हटकर राष्ट्र—विघाती, पंच मांगी शक्तियों, मानवता विदारक वृत्तियों को सर्वथा नष्ट कर दें।

हम निम्न पंक्तियों को स्मरण करके सजग हो सचेत हो—और भारत मे पवित्र लोक तन्त्र की स्थापना करके सुखी समृद्ध हो—

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है॥
भरा नहो जो भावों से बहती जिसमे रस धार नहीं।
वह हृदय नहीं, वह पत्थर है जिसमे स्वदेश का प्यार नहीं।

युवकों बलिदानों को याद करो

(श्री मेवा प्रसाद पाठक बी० ए० एल० एल० बी०)

देश की आम जनता, विद्यार्थी एवं सभी प्रबुद्ध जन इस तथ्य से परिचित हैं कि किस तरह १६ वी शताब्दी के अन्तिम दशकों में "ईस्ट इंडिया" कम्पनी के रूप में व्यापार करने के बहाने अंग्रेज भारत में आये और व्यापार करते-करते इस देश की सत्ता ही हथिया बैठे। दरअसल व्यापार का एक बहाना था और हमारा भारत देश जिसे "सोने की चिड़िया" कहा जाता था, इस सोने के देश पर उन सभी लुटेरों की एक अर्से से गृद्ध दृष्टि लगी हुई थी अतेव अपनी पूर्व निर्धारित योजना के तहत वे यहां आये, यहां के सीधे साधे भारतीयों का अध्ययन किया और छल फरेब से रहित उदार भारतीयों के देश में विघटन का विष फैलाना शुरू कर दिया तथा शनैः-शनैः अपने कूटनीतिक दावपेंच में जनता और छोटे-मोटे राज्यो को फंसा कर कुछ को आपस में लड़ा कर मौका पाते ही यहां अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया और उदार भारतीयों को होश तब आया जब उन्होने अपने आपको, अपने देश को और अपनी पवित्र मातृ भूमि को गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा पाया। अब भारतवासी अपनी भूल पर पछताये, सरहाथों पर रखा परन्तु अब पश्चाताप के आग में जलने के शिवा शेष और क्या था। जो था, वह यह कि चुपचाप ब्रिटिश हुकूमत के सामने सर झुका कर उनके जुर्मों, सितम, अन्याय-अत्याचार को एक गुलाम की तरह खामोश सहते रहना परन्तु भारत माता के स्वाभिमानी पुत्रों के हृदय और मस्तिष्क में "मां" के हाथ पैरों में पड़ी गुलामी की बेड़ियां खटकने लगीं। उनका पुरुषार्थ जागा। उनसे खामोश न बैठा गया और उन्होंने अपने हक के लिए आवाज उठाई। लेकिन आतताई ब्रिटिश हुकूमत बहुमूल्य रत्नों से युक्त देश को इतने आसानी से कब छोड़ने वाली थी और देश के सच्चे सपूत अपने ही देश में अपने ही अधिकारों को गवां कर शान्त बैठने वाले कहां थे। उनके अन्दर अपने हक के लिए क्रांति की एक चिंगारी भड़की, नवजवानों में जोश उमड़ा और देश की स्वाधीनता के लिए गुलामी की बेड़ियों को तोड़ फेंकने के लिए, ब्रिटिश डकैतों से देश को बचाने के लिए तथा अंग्रेजी हुकूमत को देश मे समाप्त करने के लिए बारुद बन कर सामने आये। स्वाधीनता प्राप्ति के लिए जवानों ने तूर्य-नाद किया। सोये जवान जगने लगे। चिंगारी चारो तरफ फैलने लगी और थोड़े ही समय में देश की आन मान और मर्यादा की खातिर अपना सब कुछ लुटा देने के लिए आतुर आजादी के दीवानों की एक लंबी सेना तैयार हो गई।

"जंग" जारी हुआ। अन्याय और जुल्मों सितम से अहिंसा के व्रती भारतवासी जूझ पड़े। धरती निहत्थे भारतीयो के खून से रंगने लगी। कितने ही देश भक्त गोरो के काले खूंखार घोड़ों की टापो के नीचे बेर-हमी से कुचले गये, कितनी ही जनता ब्रिटिश तोपों की दहकती बरसती बारुदी आग की लपटों में जल कर राख बनी, कितनों के सीनों मे निर्ममता और बेरहमी के साथ संगीन और बर्छियो को उतारा गया और कितने ही "भारत मां" के तरुण लाडलों को आजादी के परवानों को अत्याचारी और क्रूर ब्रिटिश न्याय के तहत बिना किसी संकोच के फांसी के फन्दों पर क्रूरता के साथ लटका दिया गया मात्र इस लिए कि उनके आजादी की आवाज ब्रिटिश कानून की दहशत की चादर के नीचे दब जाय।

लेकिन यह उन फिरंगियों की भूल थी। उन्हें शायद हमारे जवानों के अमिट शक्ति, उत्साह और अमर संकल्प का पता नहीं था, एकता की उस फौलादी जंजीर का पता नहीं था जो ब्रिटिश के कच्चे लोहे की नहीं बल्कि भारतीय इस्पात की बनी थी, जिस पर न उनके तोपों का असर था और न ही संगीने उसे काट सकती थी और न ही उन्हें यह पता था कि फांसी का फन्दा जिसे वे अपना अमोघ अस्त्र मानते हैं वीर भारतीय शहीदों के लिए मात्र आजादी की विजय वैजयन्ती माल थी जो ब्रिटिश सत्ता अगवानी करके उन्हें पहना रही थी।

अतएव संगठन की जंजीर मजबूत होती गई। आजादी के परवाने देश की शमां के लिए जलते गये, और उससे कई गुना, असंख्य जलने के लिए सामने आते गये, जंग होता रहा, और अन्ततः १५ अगस्त सन् १९४७ को हमारे वीरों के मजबूत पंजों ने गुलामी की जंजीर को तोड़ फेंका, बारुद, हंटर, संगीन और तोपों की लड़खड़ाती बुनियाद पर टिकी ब्रिटिश सत्ता की दीवार ढह गई, "बरतानिया" साम्राज्य का मन-हूस झंडा गिर गया और दिल्ली के लाल किले पर हमारी आजादी का प्रतीक हमारा "प्यारा" तिरंगा लहलहा उठा।

वाह रे, आर्यावर्त्त के अमर आर्य पुत्रों क्या परिचय दिया था तुमने अपने शक्ति,संगठन,उत्साह,त्याग,बलिदान और अपनी मर्यादा का। परन्तु आज...आज क्या हो गया है हमें? कहां खो गये हैं हम? जो हम अपना अस्तित्व भूलते जा रहे हैं अपनी आन, मान और मर्यादा को भूलते जा रहे हैं।

आज हम पुनः एक बार विदेशियों की घातक सतरंजी चाल के मोहरे बनने वाले हैं। आज उसने हमारे देश में विघटन और अशान्ति का वह विष बो दिया है। जो देश को डस रहा है, प्रान्तवाद,साम्प्रदाय-वाद, भाषावाद और इन सब के माध्यम से अपने ही देश में अपने ही भाइयों द्वारा एक दूसरे की निर्मम हत्या, खूनी संघर्ष, आन्तरिक कलह अपने ही घर में अपनों द्वारा डकैती और लूट। इससे बड़ा दुर्भाग्य हमारे देश का और हमारा क्या होगा कि आज अपने ही पराये हो रहे हैं, अपने ही अपनों को खा रहे हैं, रक्षक ही भक्षक बन रहे हैं, और देश के नेता मौन द्रष्टा बने बैठे हैं। देश का अपरिमित धन २१ वीं सदी का भारत बनाने के नाम पर दिखावे की रईसी में व्यय किया जाता है। कहीं विकास के नाम पर बन्दर बांट करके खाया जाता है। देश मे विघटनवादी शक्तियां प्रबल हो रही हे। युवा शक्ति भी पथ भ्रष्ट हो रही हैं। आज हमारे युवक सत्य से अनभिज्ञ होकर घातक विदेशी वस्तुओं का अनुकरण करके मादक द्रव्यों का सेवन करके उनके अन्दर छुपे बीमारियों से अपने जीवन को बर्बाद कर रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति के रीति-रिवाजों, साज-सज्जा से लैस होकर सिगरेट, गांजा, चरस, अफीम, हशीश, कोकीन का शौकीन बन कर जहां हमारे देश के भावी कर्णधार अपने जिस्म को जला रहे हैं,घातक बीमारियों के मरीज होकर शारीरिक और बौद्धिक शक्ति को छीण कर रहे हैं वहीं इन मंहगी और विलासी वस्तुओं की पूर्ति के लिए चोरी, डकैती, स्मगलिंग जैसे भ्रष्टा-चारात्मक कारनामों को जन्म दे रहे हैं। इस लिए देश के जवानों समय की पुकार को सुनो, रुक कर सोचो, फिर आगे बढ़ो और याद करो अपने उन पूर्वजों को जो इतिहास के पन्नों में पढ़ने को मिलते हैं। अपने देश का अपनी वस्तुओं का मूल्य समझो, अपनी कुर्बानियों को याद करो, अपने बलिदानों को याद करो

[शेष पृष्ठ ८ पर]



पुरुषार्थी बनो

(श्री अमित प्रताप नारायण सिंह ग्रा० हाटा, पो० नदौली,
जिला देवरिया)

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।
गोजिद् भूयासमश्वजिद्, धनञ्जयो हिरण्यजित् ॥
[अथर्व ७-५०-८]

मेरे दाएं हाथ में पुरुषार्थ है और मेरे बाएं हाथ में विजय है। मैं गाय, धन और सुवर्ण को जीतने वाला होऊं। अर्थात् पुरुषार्थ के द्वारा सभी प्रकार की श्री मुझे प्राप्त हो।

पुरुषार्थ जीवन का आधार है, सुख का मूल है। पुरुषार्थ ही एक ओर कर्म है, तो दूसरी ओर विजय है। जहा पुरुषार्थ है, वहाँ सफलता अवश्यम्भावी है। अतएव मन्त्र मे निर्देश है कि मेरे एक हाथ मे पुरुषार्थ है, और दूसरे हाथ मे विजय या सफलता। मनुष्य जीवन मे क्या बनना चाहता है; इसका उसे सर्वप्रथम निर्णय करना है। लक्ष्य निर्धारित होते ही उसे पुरुषार्थ रूपी शस्त्र लेकर आगे बढ़ना है। विघ्नरूपी शत्रुओ को नष्ट करना है। विघ्नो और शत्रुओ का नाश होते ही सफलता उसके पैरो मे आ पड़ती है, आत्म समर्पण करती है। यही जीवन की सफलता का रहस्य है। संसार की ऐसी कोई वस्तु नहीं, जो पुरुषार्थ के द्वारा सुलभ न हो। चाहे वह पशु-धन वैभव हो, विद्या हो, शास्त्र हो, धन धान्य हो, मुक्ता रत्न या सुवर्ण आदि हो यहा तक की मोक्ष या निर्गुण तक उसके लिए दुर्लभ नहीं है। पुरुषार्थ के मन्त्र को अपने जीवन मे उतारने वाला कभी न दु:खित होता है और न कभी अपना साहस ही छोड़ता है। उसके लिए सर्वत्र विजय श्री है।

पुरुषार्थ जीवन है। पुरुषार्थी की सहायता परमात्मा करता है। देवता पुरुषार्थी को चाहते हैं। संसार भी पुरुषार्थी को ही चाहता है। निष्क्रिय, अकर्मण्य और आलसी को न संसार चाहता है, न परमात्मा, न देवता। अकर्मण्य पुरुष वस्तुतः संसार के लिए भार है। वह अपने लिए भी भार है और परिवार के लिए भी। अतएव कहा गया है कि देवता पुरुषार्थी को ही चाहते हैं, अन्य किसी को नहीं। संस्कृत का सुभाषित है कि—

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिःशक्तिःपराक्रमः।
षडेते यत्रवर्तन्ते तत्र देव सहायकृत ॥

उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पुरुषार्थ ये ६ गुण जहाँ रहते हैं वहाँ परमात्मा भी सहायता करता है। पुरुषार्थी के साथ समाज चलता है। पुरुषार्थी ही समाज और राष्ट्र का निर्माण करते हैं वे संसार का कल्याण करते हैं। और संसार उनका गुणगान करता है। पुरुषार्थ, आलस्य का त्याग तथा निरन्तर अपने कर्तव्य में तत्पर रहना समृद्धि का मूल है। सफलता का रहस्य है। पुरुषार्थ और स्वावलम्बन का महत्व बताते हुए ही अंग्रेजी की कहावत है—"गाड हेल्पस दोज हू हेल्प देम सेल्वस" (भगवान उन्हीं की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं)।

संसार में सुस्त और निकम्में आदमी किसी प्रकार की कोई उन्नति नहीं कर सकते। जो लोग ढीले ढाले, आलसी, कामचोर और प्रमादी होते हैं वे सदा दीन-हीन और दरिद्र होते हैं। सब प्रकार के धन उन्ह को प्राप्त होते हैं जो प्रत्येक कर्तव्य-कर्म के करने मे सदा सबसे आगे रहते हैं। जो सदा सतर्क और सावधान रहते हुए अवसर पर आगे बढ़ते हैं वे ही उचित अवसर पर उचित लाभ भी पाते हैं। आगे बढ़ने के लिए स्वावलम्बन अथवा पुरुषार्थ आवश्यक है। दूसरे के आश्रित रहने वाले अपने कार्य के लिए दूसरो का मुख ताकने वाले दूसरे सहारे जानने वालों मे न तो उत्साह होता है, न साहस और पुरुषार्थ का तो बिन्दु तक नहीं दिखाई देता है। इसलिए ज्ञान के साथ-साथ परिश्रम को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। एक कथा सुनिये—एक व्यक्ति था। बहुत निर्धन। बड़ा परिवार था। खाने, पीने, पहनने, रहने बहुत कष्ट होता था। जब कष्ट बहुत बढ़ गया, तो उन लोगों ने सोचा कि किसी दूसरे स्थान पर चलकर व्यापार या नौकरी करें। अगले दिन ग्रामसे चल पड़े। रास्तेमें रात हो गई। एक वृक्षके नीचे डेरा किया और पिता ने बेटे से कहा, "बेटा! जाओ, पास के वन से कुछ लकड़ियां ले आओ ताकि आग तो जलायें।"

बड़ा बेटा चलने लगा तो छोटा भाई बोला, "इन्हें मत भेजो जाकर लाता हू।" उससे छोटे ने कहा "नहीं पिता जी मै लाता हूं। पिता ने कहा, "अच्छा बेटा! सभी कार्य करो। एक लड़का लकड़ी लाये, दूसरा पानी, तीसरा पत्थर लगा कर चूल्हा बना ले। सब मिल कर कार्य करने लगे और सब कुछ ठीक हो गया तब उस पेड़ पर रहने वाला पक्षी हसा और बोला, "अरे भोले लोगो सब कुछ ले आये, परन्तु खाने को तः कुछ है नहीं पकाओगे क्या और खाओगे क्या?

वैसे पक्षी तो बोलते नहीं हैं, परन्तु समझाने के लिए यह कथा कही गयी है। पक्षी की बात सुनकर लड़के ने ऊपर देखा और कहा, "ठहर तुझे पकड़ेंगे और भूनकर खायेंगे।"

पक्षी डर कर बोला, "मुझे मत खाना, मेरे साथ चलो एक स्थान दिखाता हू, जहाँ तुम्हे सब कुछ मिल जायेगा।" वे सब चले। एक स्थान पर पहुचकर वह बोला, "इस स्थान, को खोदो।" उन लोगोने खोदा तो देखा नीचे, एक बड़ा कोष है। सोना चांदी हीरे, जवाहरात सभी कुछ उसमे है। उस दौलत को उन्होने निकाल लिया। घर आये। पड़ोसी ने यह दशा देखी तो पूछा, "अरे तुम एक ही रात मे इतने सम्पत्तिशाली कैसे हो गये?"

उन्होने पड़ोसी को सब बात बतायी। वे भी उसे पेड़ के नीचे पहुचे। वहा डेरा डाला। पिता ने पुत्र से कहा, "बेटा! जाकर थोड़ी लकड़िया ले आवो।" पुत्र चिढ़कर बोला, "छोटे को क्यो नहीं कहते उसकी टाग टूट गई है क्या?" पिता ने दूसरे से कहा, वह बोला "मै तो बहुत थक गया हू।" मुझसे चला नहीं जाता। दूसरे से क्यों नहीं कहते?" पिता ने दूसरे से कहा पर कोई न गया। अन्त मे उसकी पत्नी जाने लगी तो पति ने कहा, "अरे तू कहा जाएगी, बैठी रह छह हाथ-पाच तोड़ कर आ जायेगी।" इस प्रकार जब कोई नहीं गया तो वहा न चूल्हा जला, और न खाना पका। पक्षी ने यह देखकर कहा— "अरे तुम विचित्र लोग हो। लकड़ी तथा खाना पकाने का सामान नहीं तो क्या भूखे रहोगे? खाओगे क्या?"

बालक बोला, "तुझे खायेंगे।" पक्षी हसा और बोला, "आराम

(शेष पृष्ठ १५ पर)

सांस्कृतिक समस्याएं

कोई भी घटना होती है। उसके पीछे कारण होते हैं। उन समस्त कारणों के पीछे व्यक्ति की अमूर्त मानसिकता होती है। आज विभिन्न राष्ट्रों की विप्लवी इन उपद्रवी घटनाओं के पीछे एक सक्रिय नास्तिकता भरी मानसिकता है। तो अब इस समूची मानसिकता के परिवर्तन के दो जो अत्यधिक गहरे उपाय हैं उनको मानव जीवन में व्यावहारिक रूप से प्रत्यक्षी कारण हेतु भारत राष्ट्र में व्याप्त इस विषैली उपद्रवी स्थिति के पीछे लगी मानसिकता पर चोट करना चाहता हूं। उसके आमूल चूल परिवर्तन हेतु कुछ सावधानियो, और कुछ महत्वपूर्ण दूसरे बिन्दुओं पर विचार प्रस्तुत करूंगा।

सर्वप्रथम समस्त देशवासियों को मिली जुली संस्कृति की बातें करना अन्ततः देश के लिये आत्म घाती सिद्ध होगा, संस्कृति देश के पूर्वजों, मान्य आदर्श ग्रंथों कला साहित्य दर्शन आदि विभिन्न क्षेत्रों मे उन उच्चतम उपलब्धियो का संकुल होता है जिनके प्रति राष्ट्र के लोगों को गर्व होता है और जो सदैव एक होने को प्रेरित करती है। स्मरण रहे राष्ट्र के समीकरण मे निश्चित भूखण्ड होता है। जिसके प्रति लोगो को अपनत्व की मातृ भूमि होने की भावना होती है। वहा की परम्पराएं संस्कृति इतिहास और स्मृतियाँ उस भूखंड मे आवासी मनुष्यो को उच्च राष्ट्रीय जीवन की प्रेरणा से भरती रहती है। इस लिए मेरी दृष्टि मे राष्ट्र की सस्कृतिक शुद्धता के लिये संस्कृति की मिली जुली गाधीवादी विचारणा से देश की आत्म स्थिति के साथ प्रवन्चना होगी, संस्कृति देश की आत्मा है उस को अन्य तथा कथित संस्कृतियों के कुत्सित प्रभाव से सरक्षित करने का हर सम्भव उपाय करना नितान्त आवश्यक होगा।

मेरी मातृ भूमि–मेरी मान्यताएँ

लेखक ब्रह्मचारी देवेन्द्र स्वदेश बन्धु
आर्य समाज मेरठ शहर

साम्प्रदायिक दगो के कारण से सर्व धर्म समभाव एव धर्म निरपेक्षता के दुर्विचार का उदय हुआ इधर संस्कृति के समन्वय पर, विचार भावन लेखन समस्त सस्कृतियो के मिलान के लिये संयुक्त अधिवेशन सम्मेलन आयोजित होने आरम्भ हो गये।

मै इसे राष्ट्रद्रोह कह रहा हू इस विचार ने ही देश की अपनी आत्म पहिचान से वन्चित किया है, इसी भयातुर मृत मानसिकता के कारण देश विभाजित हुआ था और यही मानसिकता देश मे पृथक राष्ट्र मांगो को मजबूत करती है। यही मानसिकता देश की सीमाओ को स्वय मे समेटती है। और यही मानसिकता अनुपयोगी नागरिको की जन्मदात्री है। तो साझी मिली-जुली संस्कृति के प्रति तटस्थ हो कर युद्ध स्तर पर वैदिक आर्य संस्कृति को प्राथमिक निष्ठा से आप्लावित होकर आवद्ध सकीर्ण असांस्कृतिक स्वीकृतियों को विध्वस करें यही पहली सावधानिया, चारो ओर संस्कृति के नाम पर साम्प्रदायिक दगे मचा कर राष्ट्र द्रोही निर्दोष लोगो की हत्यायें कर रहे, एव पशु के सामूहिक झुण्ड जाने बना कर देश का उजाड कर रहे हैं। स्वयमेव मृगेन्द्रता के वीर भाव से जागो, जगाओ, राष्ट्रीय सांस्कृतिक आवश्यकता के लिये सबका अब चेतना युक्त सम्पर्क आवश्यक हो गया है। इसके लिये जो भी करना पडे हर बलिदान के साथ स्वय को समर्पित करने का अवसर आ गया है। अत्यन्त सावधानी से हम अपना मार्ग प्रशस्त करें।

२– समाजवादी, मार्क्सवादी, विचार धारा के भी कुप्रभाव से निष्प्रभाव रहना राष्ट्रीय आवश्यकता है क्योंकि यह एक नास्तिक विचार है, और कोई भी नास्तिक विचार जीवन को ऊचाईयों तक नहीं ले जा सकता, यह हमे पिछले अतीत के अनुभव से भली-भांति समझ लेना चाहिए। जैसे वर्ग विहीन समाज का उद्घोष करके पूरे राष्ट्रीय घटको को वर्गो मे विभाजित कर दिया शोषण मुक्ति के नाम पूरी राष्ट्रीय नागरिक आवश्यकताओ मे शोषण व्याप्त हो गया–फिर मजदूर किसान अन्य सर्व हारा वर्ग की गणना ही क्या। यहाँ तक कि इस व्यवस्था के साथ एक अवशिष्ट सामन्तवादी सत्ता एव शोषण मूलक अर्थ व्यवस्था का सूत्र पात हो गया। धर्म निरपेक्षता एव सर्व धर्म समभाव के आधार पर तमाम विचार वैमनस्य सक्रिय हो गया–इन सारी गतिविधियो से देश कुरूप होता जा रहा है, इस पर गम्भीरता से विचार करना होगा इसके लिये आर्य जनता प्रबुद्ध विचारकों, प्रतिनिधियो का एक आयोजन हों उसमे राष्ट्र सरक्षण के लिये उपाय खोजे जायें और उन्हे तुरन्त बिना विलब क्रियान्वित किया जाये। क्योकि हमे स्वय के अतीत के अनुभव से अब विशुद्ध सांस्कृतिक उज्ज्वल भविष्य मे आना चाहिये ★

निर्वाचन

आर्य समाज फतेहपुर।
प्रधान–डा० हर्ष वर्द्धन
मन्त्री–डा० विनय अरोड़ा
कोषाध्यक्ष–राज नारायण रस्तोगी

आर्य समाज ढक्का रोड 'सी' ब्लाक, जनकपुरी नई दिल्ली।
प्रधान–श्री रामकृष्ण सतीजा।
मन्त्री–श्री केशव देव सूद।
कोषाध्यक्ष–श्री हरिकिशन लाल गुलाटी।

श्री मद्दयानन्द बालसदन, मोती नगर, लखनऊ।
अध्यक्ष–श्री अर्जुन देव माहना
मन्त्री–कु० सतोष जी बत्रा।
कोषाध्यक्ष–श्री मदन लाल कपूर।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश।
प्रधान–श्री कृष्ण लाल आर्य
महामन्त्री–श्री भगवान देव चैतन्य
कोषाध्यक्ष–श्री अक्षेश सूद

युवको बलिदानों को याद करो

(पृष्ठ ६ का शेष)

और विदेशी अनुकरण की मोह निद्रा भग करो। अग्रेजी के अब सेलमे अपने बौद्धिक कालुष्य को अपने आध्यात्मिक ज्ञान के पवित्र जल से धो डालो, अपने धर्म का वास्तविक स्वरूप समझो और हिंसात्मक कारनामो को यहीं इतिश्री करके पुन नव शक्ति के साथ देश के एकता की टूटती जजीर को जोड लो और गणतन्त्र दिवस के इस पावन ऐतिहासिक और राष्ट्रीय पर्व पर सकल्प लो देश की एकता और अखडता की रक्षा हेतु अपना तन-मन-धन सर्वस्व अर्पण करने का। यही होगी देश के तमाम शहीदो के नाम सच्ची श्रद्धाजलि हमारे इस पुनीत पर्व के अवसर पर।

★ ★

उठो आर्य वीरो नई चेतना से
नयी शक्ति का अपना जौहर दिखा दो
बहुत कर गुजरने का है दम तुममे
हस्ती का अपने जलवा दिखादो।

★ ★

—आर्य समाज कुठिला (हरदोई) का वार्षिकोत्सव दिनांक ३१ जनवरी से २ फरवरी ८७ तक सोल्लास सम्पन्न होगा।

आवश्यक सूचना

सभान्तर्गत समस्त आर्यसमाजों और आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं को सूचित किया जा रहा है कि ३१ दिसम्बर ८६ को वर्ष समाप्त हो चुका है अतः सभा के नियमानुसार वर्ष १९८६ निमित्त कार्यालय से वार्षिक चित्र भेजे जा रहे हैं।

१५ जनवरी ८७ तक आर्य समाजों की सूची बनाकर २८ फरवरी तक निर्वाचन कर लें-तत्पश्चात वार्षिक चित्रों की सही खाना पूरी कर के सभा प्राप्तव्य धन सहित सभा कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ कोभेजने की कृपा करें।

जिन समाजों को वार्षिक चित्र प्राप्त न हुये हों, वह सभा कार्यालय को पत्र लिखकर मंगा लें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

अनुकरणीय पुनीत कार्य

३-१-८७ को प्रातः एक स्थानीय मुसलमान व्यापारी सभा मन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी के पास आया और दुःखी मन से बोला-मेरे एक बीस वर्षीय नवयुवक कर्मचारी का निधन हो गया है और वह चाहता है कि वैदिक रीति से उसका अन्तिम संस्कार हो। कृपया ये सौ रुपये स्वीकार करें और नवयुवक का दाह संस्कार करा दें। सभा मन्त्री जी ने द्रवित होकर दो सौ रुपये अपने पर्स से निकाले और आर्य समाज (गणेशगंज) लखनऊ से दीर्घकाल से जुड़े दो सिख बन्धुओ से इस कार्य हेतु अनुरोध किया। दोनों सिख बन्धुओं ने पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार उस नवयुवक का दाह संस्कार सम्पन्न कराया।

मेला प्रचार

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा उन्नाव के तत्वावधान में मेला तकिया (पाटन) में दिनांक २६ से २८-१२-८६ तक यज्ञ, वेद प्रचार एवं जन जागरण समारोह सम्पन्न हुआ। —रविदास शास्त्री
मन्त्री-आर्य उप प्रतिनिधि सभा, उन्नाव

अण्डाल (पश्चिम बंगाल) में वेद प्रचार

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षासमिति दिल्ली की पश्चिमी बंगाल में, अण्डाल स्थित शाखा ने दिनांक २५-१२-८६ से २८-१२-८६ तक अण्डाल के हिन्दी हिन्दू विद्यालय के प्राङ्गण में एक महायज्ञ का आयोजन किया जिसमे बाहर से पधारे हुए अनेकों सन्तों, महात्माओं, विद्वानों एवं विदुषियों के धार्मिक प्रवचन हुए। प्रतिदिन प्रातःकाल ७-३० बजे से १२ बजे तक, तथा सायंकाल २-३० बजे से ५ बजे तक पवित्र वेद मन्त्रों की ध्वनि के साथ सैकड़ों श्रद्धालु नर नारियों ने पावन यज्ञ में आहुति दीं तथा साधु महात्माओं के प्रवचन सुने। इस अवसर पर लखनऊ से पधारे यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री पं० इन्द्रदेव शास्त्री एवं पंडिता श्रीमती रोहिणी देवी शर्मा ने लोगों को धार्मिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी। अन्तिम दिन दिनांक २८-१२-८६ को विराट् हिन्दू सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता पश्चिम बंगाल विश्व हिन्दू परिषद् के नेता श्री राखो हरि चटर्जी जी ने की तथा श्री पं० केशव प्रसाद चौबे ने समस्त हिन्दू जाति को संगठित होने की अपील की। हिन्दू कल्याण समिति के मन्त्री तथा यज्ञ के आयोजक श्री जयनारायण चौबे ने समस्त अतिथियों का यथोचित स्वागत किया, आयोजन पूर्णतया सफल रहा।

केन्द्रीय आर्य सभा दिल्ली द्वारा आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध सरस्वती द्वारा उद्बोधन

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली में दिनांक २३ दिसम्बर १९८६को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का ६०वां बलिदान दिवस सोल्लास मनाया गया। इस अवसर पर एक विराट शोभा यात्रा का आयोजन हुआ जो स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन नया बाजार से चलकर लालकिला मैदान में विशाल सभा में परिणत हो गया जहां पर एक विशाल श्रद्धांजलि सभा सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में हुई। अपने अध्यक्षीय भाषण मे स्वामी जी ने कहा कि जिस राष्ट्रीय एकता के लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी ने बलिदान दिया वह इतिहास के पन्नों में सदा अमर रहेगा। उन्होंने मांग की कि दिल्ली नगर निगम के प्रांगण में जहां स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रतिमा लगी हुई है उसका नाम श्रद्धानन्द पार्क व घन्टाघर चौक जहां ३० मार्च १९१९ को रोलट एक्ट के विरोध में जब अंग्रेजों को सगीनों के आगे स्वामी श्रद्धानन्द जी ने छाती तानी थी-का नाम स्वामी श्रद्धानन्द चौक रखा जाये। उन्होंने सभी सम्प्रदायों के लोगों से राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को सुदृढ़ करने में योगदान की अपील की।

शुभ-विवाह सम्पन्न

कानपुर के प्रसिद्ध आर्य नेता तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के उपप्रधान श्री देवीदास आर्य के सुपुत्र चि० अजय जी एम० काम० का शुभ-विवाह बिहार साहेबगंज निवासी श्री अर्जुनदास आनन्दानी की सुपुत्री आयु० सुशीला बी० ए० के साथ एक जनवरी १९८७ को समारोह पूर्वक सिन्धी धर्मशाला गोविन्दनगर कानपुर में वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

इस शुभ अवसर पर प्रान्त तथा नगर के प्रतिष्ठित राजनैतिक एवं आर्य नेता उपस्थित थे जिन्होने वर-वधू को आशीर्वाद दिया। सुचारु प्रीतिभोज का भी आयोजन था।

विवाह अत्यन्त सादगी और दहेज रहित रीति मे हुआ तथा देवीदास आर्य जी ने हिन्दू भारतीय समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत किया।

प्रभु वर-वधू का भावी जीवन मङ्गलमय करें।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

उत्सव

नगर आर्यसमाज जौनपुर का १३ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २६ फरवरी ८७ से १ मार्च १९८७ तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न होगा जिसमे आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान्, उपदेशक, भजनोपदेशक सम्मिलित होंगे। आर्य जगत

—आर्यसमाज सांवलों आदि पंचपुरी गढ़वाल के प्रधान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, श्री शान्तिप्रकाशजी प्रेम प्रभाकर का ७२वां जन्म दिवस दिनांक १२-१२-८६ को आर्यसमाज मन्दिर पंचपुरी गढ़वाल में श्री गजयसिंह कन्डारी ज्येष्ठ प्रमुख विकास खण्ड दोरोखाल गढ़वाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर श्री प्रेम जी ने आ०स० पंचपुरी को १०१) एक सौ एक रुपये का सात्विक दान दिया।

—आर्य समाज इटारसी में दिनांक २३ दिसम्बर १९८६ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया।

सम्पादक के पत्र

मेरठ में शताब्दी समारोह कैसा ?

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० से निष्कासित कुछ तत्वो ने स्वयंभू पदाधिकारी बन कर मेरठ में २७ व २८ दिसम्बर, १९८६ को आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम से एक शताब्दी समारोह करने का ढोंग रचाया । बड़े जोर-शोर से प्रचार किया, हजारों व्यक्तियों के बैठने के लिए पण्डाल बनाया, लाउडस्पीकर एवम् बिजली आदि की भरपूर व्यवस्था की, हजारों रुपया अपव्यय किया परंतु उत्तर प्रदेश के समस्त आर्य जनों ने इन तत्वों को पूरी तरह ठुकरा दिया । इस तथा कथित प्रदेशीय सम्मेलन में मात्र ३०-४० व्यक्ति रजाई व कम्बलों में बैठे ठिठुरते रहे । विशाल मंच बनाया गया परंतु उस पर बैठने वाला कोई नहीं था । मात्र १-२ भजनों उपदेशक खाली पड़ी कुर्सियों को अपना अर्त्तनाद सुनाते रहे । इन तत्वों ने आर्य समाज के अन्दर आन्तिरिक कलह की चीख-पुकार की परंतु इनको सुनने वाला कोई नहीं था । लेकिन इनकी गतिविधियों से आर्य समाज की छवि अवश्य धूमिल हुई ।

नगर की जनता इन ढोंगियों के आयोजन पर हंसती-मुस्कुराती और आर्य समाज पर टीका टिप्पणी करती हुई अवश्य उस ओर से गुजर रही थी ।

नगर में शोभा-यात्रा का भी ढोंग रचाया गया जिसमे २ बैंड, १ बग्घी, ४-५ संन्यासी एवम् १०-१२ ग्रामीण नागरिक थे ।

इस कार्यक्रम से आर्य समाज को कोई लाभ हुआ हो या नहीं परन्तु इन तत्वों की जेबें अवश्य भर गई ।

आर्य जनों के मस्तिष्क में कुछ चिंता के बादल भी उभरे हैं कि क्या हमारा संगठन इतना कमजोर हो गया है कि हम अपने संगठन के नाम पर किन्हीं भी असामाजिक तत्वो को मनमानी करने से नहीं रोक सकते ?

कुछ स्थानीय समाचार पत्रों ने इनको वास्तविकता के विपरीत इस प्रकार से अपने समाचारों का पात्र बनाया जैसे इन्होंने कोई बहुत बड़ा कारनामा किया हो । इसके पीछे आर्य समाज के संगठन को बदनाम करना अथवा पैसा भी कारण हो सकता है । आर्य जनता को इस भ्रामक प्रचार से सतर्क रहना चाहिए ।

—स्वराज्य चन्द्र सम्पादक,
मासिक "सुमेधा" आर्य समाज,
मेरठ शहर

समवेदना

निम्नलिखित आर्यों के दिवंगत होने के समाचार प्राप्त हुए हैं जिसके लिए सभा समवेदना प्रकट करती है—

(१) श्री मदन मोहन लाल अग्रवाल बम्हौसी (मुरादाबाद)

(२) आर्य समाज करनैल गंज गोण्डा के भू० पू० आर्य सभासद श्री मुरली मनोहर लोहिया ।

इन दिवंगत आत्माओं की शांति तथा प्रिय जनो के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना है ।

सभा मन्त्री

आवश्यक—

आर्य जनों को सादर साधुवाद

मेरठ नगर में आर्य समाज से निष्कासित व्यक्तियों ने २७ तथा २८ दिसम्बर १९८६ को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नाम से एक शताब्दी समारोह का ढोंग रचाया । यद्यपि वास्तविकता यह थी कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का शताब्दी समारोह डी० ए० वी० कालिज लखनऊ में १७ से २० अक्टूबर ८६ तक बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हो चुका था ।

इस तथा कथित शताब्दी आयोजन का पूर्ण बहिष्कार उत्तर प्रदेश तथा भारत के अन्य प्रदेशों के आर्य समाजों तथा आर्यो-आर्याओं ने किया जिसके फलस्वरूप यह आयोजन पूर्णतयः विफल रहा और इसकी कटु आलोचना अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई ।

अधोहस्ताक्षरी आर्य जनों के प्रति सादर आभार प्रदर्शित करते हैं कि तथा तथित मेरठ शताब्दी आयोजन में न किसी ने भाग लिया और न ही कोई रुचि प्रदर्शित की और इस भांति एक अनुपम अनुशासन का भी परिचय दिया ।

—इन्द्र राज   —मनमोहन तिवारी
प्रधान   मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ।

श्री जय नारायण अरुण को हत्या की धमकी
अधिकारी सुरक्षा व्यवस्था करें

बिजनौर के प्रख्यात समाज सेवी वरिष्ठ पत्रकार 'प्रसाद के फूल' साप्ताहिक के प्रधान सम्पादक तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के उपमन्त्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ उपमन्त्री श्री जयनारायण 'अरुण' को उनकी निष्पक्ष पत्रकारिता से असंतुष्ट होकर किसी धर्मान्ध व्यक्ति ने उनको तथा उनके पुत्र की हत्या करने के धमकी भरे पत्र भेजें हैं । इस बात का पूर्ण विश्वास होते भी कि 'सबका रक्षक प्रभु है' हमारा सामाजिक दायित्व भी सुरक्षा व्यवस्था का है ।

उत्तर प्रदेश सरकार से अनुरोध है कि वह उनको एवं उनके परिवार की पूर्ण सुरक्षा व्यवस्था करे और गुप्तचर जांच के द्वारा शरारती तत्वों को गिरफ्तार करके समुचित दण्ड दें ।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी
सम्पादक आर्य मित्र साप्ताहिक

—धनौरा मण्डी जि० मुरादाबाद के ग्रामीण क्षेत्र में दिनांक १२—१२—८६ से २४—१२—८६ तक वैदिक धर्म प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के उपदेशक श्री पं० विश्वम्भर दत्त शास्त्री एवं स्वतन्त्र प्रचारक श्री नरेशदत्त जी शर्मा व श्री मेघाराम जी आर्य प्रचारक ने भाग लिया ।

आर्य जगत

—आर्य समाज शोहरतगढ़ (बस्ती) का १२ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १६,१७,१८, दिसम्बर ८६ को सोल्लास मनाया गया ।

"भारत में सक्रिय विघटनकारी शक्तियां
तथा
आर्य समाज का महान् दायित्व"

(श्री श्रीराम अवतार आर्य, ४६ गलीभरन, बरेली)

इस समय जो हमारे प्राचीन महान् गौरवशाली देश राष्ट्र तथा सनातन वैदिक धर्म की जो वीभत्स अधोगति होती जा रही है, जिसके लिये हम स्वयं ही उत्तरदाई हैं, उस पर प्रत्येक देश राष्ट्र भक्त नागरिक को चिन्तित होना स्वाभाविक है। एक समस्या हो तो कही जावे, परन्तु यहां तो समस्यायें ही समस्यायें हैं और नवीन नवीन प्रतिदिन उठ रही हैं और हम शान्त, निश्चेष्ट तथा निष्क्रिय हैं। पंजाब प्रदेश जल रहा है आसाम काश्मीर मिजोरम आदि में चिंगारियां उठ रही हैं तथा इन प्रदेशों सहित बिहार, पश्चिमी बंगाल राजस्थान, गुजरात ही नहीं सम्पूर्ण भारत में विघटनकारी पाकिस्तानी बंगला देशी तत्वों की भारी घुसपैठ तीव्र गति से हो रही है और हमारे देश के नेता अपनी सतुष्टीकरण की नीति तथा स्वार्थ सत्ता लोलुपता मे मस्त हो चैन की वशी बजा रहे हैं। हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र सभा की भाषा बनाने की बात कहने वाले नेता हिन्दी को भारत की राष्ट्र भाषा ही बनाने को प्रस्तुत नहीं है और डंके की चोट पर कहते हैं कि "हिन्दी किसी पर थोपी नही जावेगी" और उधर तामिलनाडु में अंग्रेजी देश विधान सभा की भाषा बनाने का प्रस्ताव पारित हो गया। बिहार मे उर्दू को भी महत्व देकर, उत्तर प्रदेश मे जहां १५% भी उर्दू भाषी नही हैं, उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने की मांग तथा प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु ५८% हिन्दी भाषी पंजाब मे, हिन्दी को यह स्थान प्राप्त कराने में असमर्थ हैं।

हमारे नेताओ तथा देश में व्यापक चरित्रहीनता अनैतिकता, भ्रष्टाचार फैला है, असमानता, मूल्य वृद्धि अराजकता, साम्प्रदायिक विद्रोह, अलगाव वाद, पृथकतावाद की गति तीव्र है परन्तु सामान्य नागरिक सुविधाओं का आभाव है। कार्यपालिका पर नेताओं का प्रभाव व दबाव रहता है, वे स्वतंत्र रूप से जनहित के कार्य करने में असमर्थ रहते हैं और प्रत्येक कार्य नेताओं विधायको, मन्त्रियों की संतुष्टी को ध्यान में रख कर ही करते हैं अन्यथा अयोग्य, अकुशल सिद्ध हो जाते हैं।

इसी प्रकार न्यायपालिका पर भी अंकुश रखने की कुचेष्टायें हो रही है जिससे वे प्रशासन के हित को ध्यान में रख कर ही अपने निर्णय दें। केन्द्रीय मन्त्री जिन्होंने संविधान की निष्ठा और सत्यता से पालन की शपथ ली होती है, वह भी समान नागरिक संहिता का विरोध कर अल्प संख्यको को भड़का रहे है। तथा कथित अल्पसंख्यको के नाम पर साम्प्रदायिक तत्वों को विशेषाधिकार तथा अलग

'राजनैतिक समस्यायें'

पहचान की स्वतन्त्रता प्रदान की गई है जो परिवार नियोजन जिसकी अत्यावश्यकता आर्थिक विकास हेतु अनिवार्य है पालन न कर भारी जन संख्या वृद्धि कर रहे है। स्थान-स्थान पर बलात् सामुहिक धर्म परिवर्तन किए जा रहे है तथा अवैध अस्त्र शस्त्र बम, दारूल उलूम देवबन्द अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय तथा मुस्लिम बहुल क्षेत्रो में निर्माण हो रहे है और साम्प्रदायिक उत्पात भड़काने वाले पौस्टर लेख आदि कितनी ही जगह बरामद हुए हैं। नेता, विधायक, सांसद, मन्त्रियो के भी सम्बंध डाकुओं तस्करों से अन्य असमाजिक तत्वों से होने के समाचार भी प्रकाशित हुए हैं। हिरोइन, हशिश, स्मैक जैसे मादक द्रव्यों के क्रय विक्रय संग्रह में लिप्त है।

मेरठ, मुरादाबाद, संभल न्यूरिया नेहठौर, इलाहाबाद, अहमदाबाद, हैदराबाद आदि-आदि अनेक महानगरी, नगरों, ग्रामों में खुलकर साम्प्रदायिक विप्लव हुए हैं जिनमें शान्त सहिष्णु बहुसंख्यक समुदाय व्यक्तियों की निर्मम क्रूर हत्यायें सैकड़ों की संख्या में की गई हैं। पंजाब में तो ऐसी घटनायें नित्य प्रति की साधारण बात हैं—और भारत सरकार तथा प्रदेश प्रशासन पूर्ण रूप से शिथिल तथा निकम्मा सिद्ध हो चुका है।

केवल आर्य समाज ही एक ऐसी सुदृढ़ बुद्धि जीवी संस्था है, जिसके पास ठोस कार्यक्रम, क्षमता साहस तथा संगठन शक्ति है तप, त्याग, बलिदान, सब कुछ करने को, मर मिटने की भावना है। वह प्रत्येक संभव उपाय से देश, राष्ट्र धर्म सबकी रक्षा करने हेतु दृढ़ संकल्प धारी एवं पूर्ण व्रती है जिसका प्रत्यक्ष और स्पष्ट प्रदर्शन उसने अनेक बार किया है, चाहे हैदराबाद धार्मिक आंदोलन चाहे सन् १९७५ की आर्य समाज शताब्दी समारोह दिल्ली अथवा सन् १९८३ का ऋषि निर्माण शताब्दी या गत मास का उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह जहां लाखों की संख्या में आर्य जनो की उपस्थिति थी।

जिसकी शोभा यात्राओ, में सम्पूर्ण भारत के काश्मीर से कन्या कुमारी अटक से कटक तक के असंख्य नर-नारी, बाल वृद्ध, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, गृहस्थ, सन्यासी, भजनीक, उपदेशक, प्रचारक आदि का क्रम-पंक्तिबद्ध समुदाय वैदिक मन्त्र, जयध्वनि, प्रेरक गीत गुंजाता, रंग-बिरंगे सहस्त्रों पताकाओं, मोहक बैंड बाजे, आर्य वीर दल के युवको का आकर्षक शरीरिक प्रदर्शन, सैकड़ों भव्य स्तम्भ, अनेको प्रवेश द्वार, स्थान-स्थान पर स्वागत सत्कार जल-पान की व्यवस्था अनुपम अलौकिक शोभायमान् नैसर्गिक हृदय की छटा के मध्य, पूर्ण शांति पूर्वक, सोल्लास मीलों लम्बे मार्ग पर प्रवाहित हो रहा था।

प्रश्न यह है, कि किस प्रकार हम अपनी अतुलित शक्ति-बल, संगठन, आदर्शों, परम्पराओं, मर्यादाओं का सदुपयोग कर "कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्" का स्वप्न साकार करने में समर्थ हों। आर्य समाज कदापि इस देश धर्म की अधोगति पर आंख मूंद कर नहीं बैठ सकता है, जिसका लक्ष्य तथा महान् दायित्व सम्पूर्ण विश्व में आर्य वैदिक सिद्धांत एवं मंतव्यों के प्रसार प्रचार का है। परन्तु विडम्बना है आज हमारे समक्ष दूरदर्शी, तपोनिष्ट, कर्मठ, व्रती महापुरुषो के नेतृत्व का अभाव है और समस्यायें वृद्धि पर है। विश्वास पूर्वक यह कहा जा सकता है, कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्धारित मार्ग पर चल कर, आर्य समाज ही इस संकट पूर्ण बेला की घड़ी मे समुचित मार्ग दर्शन मे समर्थ है और यह सिद्ध कर सकेगा कि उसके सदस्य, सदा अपने पूज्यनीय ऋषियो ज्ञानियों मनीषियो, महापुरुषो से अविरल प्रेरणाग्रहण करते रहे हैं और अनेकों विघ्न बाधाओ के मध्य भी सत्य और धर्म के मार्ग से कदापि विचलित नहीं होंगे।

स्वामी दयानन्द ने भी इसी उद्देश्य को समक्ष रख कर भारत के समस्त धर्म और मत मतान्तर अनुयायियों की एक सभा का आयोजन किया था, जिसमे उन्हे आरम्भ में तो पर्याप्त सफलता

(शेष पृष्ठ १५ पर)

भारत विभाजन की सत्य कथा

१९४७ में उर्मिला ने दाहिर पुत्रियों का इतिहास दोहराया

★★ ★★

–शिव कुमार गोयल

पाकिस्तान के निर्माण को एक मास भी नहीं हुआ था, दो सितम्बर १९४७ का दिन था।

शाम के पांच बजे लाहौर जिले के राजगढ़ स्थित फरीदकोट हाउस के सामने वाली सड़क पर मोटर साईकिल पर सवार पुलिस अफसर जैसे ही गुजरा कि बम के भीषण धमाके के साथ उसके शरीर के टुकड़े हवा में बिखर गये।

लाश के पास ही एक युवक व युवती खड़े हुए देख रहे थे कि कहीं उस लाश में जान तो नहीं है? युवक ने आगे बढ़ कर मृत अफसर की कमर में लटका रिवाल्वर निकाल लिया। युवक व युवती व हाँ से भागे ही थे कि पुलिस ने चारों ओर से घेर कर उन्हें पकड़ लिया।

मृत पुलिस अफसर नौलखा थाने का इन्चार्ज चौधरी नादिर अली था। पंजाब विश्वविद्यालय बी० ए० की छात्रा उर्मिला तथा उसके साथी जग्गी ने उसकी बम फेंक कर हत्या की थी। उर्मिला तथा जग्गी अब पुलिस की हिरासत में थे।

पुलिस ने रात भर भाग दौड़ कर १३ अन्य हिन्दू युवकों तथा ६ युवतियों को गिरफ्तार कर लिया। इनमें से सभी निर्दोष थे तथा उनका कसूर केवल यह था कि वे हिन्दू थे। चार हिन्दू युवतियों को भारत आ रही रेलगाड़ी से उतार कर इस मामले से जोड़ कर जेल मे डाल दिया गया।

तीन युवक कैलाश, जगदीश तथा इन्द्रजीत खोसला दंगे में आतताईयों द्वारा मारे गये। परिवार जन शवों की अंत्येष्टि कर लौट रहे थे कि उन्हें भी धर दबोचा गया था राजगढ़ बम काण्ड में फंसा दिया गया।

उर्मिला ने निर्भीकता के साथ अपराध स्वीकार करते हुए न्यायालय में कहा कि थानेदार नादिर अली ने मजहबी उन्माद में आकर गुण्डों का नेतृत्व करते हुए हिन्दू युवतियो के साथ बलात्कार किया था। अनेक निर्दोष युवतियों व दूध मुहे बच्चों की हत्या करते हुए मैंने इसे अपनी आंखों से देखा था। इस कामी कुत्ते के पापों का मजा चखाने के लिये ही हमने इसकी हत्या की है।

उर्मिला के बताये स्थान की तलाशी ली गई तो पुलिस को राइफलें व बम मिले इससे यह स्पष्ट हो गया कि कुछ हिन्दू युवक युवतियों ने पाकिस्तान की घोषणा होते ही आमतायियो से अपनी रक्षा के लिए क्रांतिकारी समिति का गठन कर लिया था।

१४ युवकों व युवतियों पर धारा ३०२ के अन्तर्गत एडीशनल जिलाधीश के न्यायालय में मामला चलाया गया। सेसन जज ने ६ युवकों को फांसी, ८ को बीस-बीस वर्ष का कारावास तथा सा तों युवतियो को आजीवन कारावास का सजा सुना दी।

लाहौर जेल में इन सभी बंदियों को अमानवीय यातनाएं दी जाने लगीं। एक दिन मुस्लिम लीग के मन्त्री शेख अमीन तथा इकबाल चीमा कुछ मौलवियों को साथ लेकर जेल पहुंचे। उन्होंने इन हिन्दू युवक-युवतियों से कहा, "यदि आप लोग मुसलमान बन जाएं तो सभी की सजा माफ कर दी जायगी। सभी ने दृढ़ता से उत्तर दिया–फांसी पर झूल जायेंगे लेकिन अपना धर्म नहीं त्यागेंगे।" मुस्लिम लीग के मन्त्री तथा मौलवियो ने जेलर को आदेश दिया–इन काफिरों से सख्त से सख्त मशक्कत ली जाए। इन्हें ऐसी तकलीफें दी जायें जिससे वे इस्लाम कबूल करने को मजबूर हो जायें।

जेलर ने इन बन्दियों पर अमानवीय अत्याचार ढाने शुरू कर दिये इन्हें १२-१२ सेर सरसों पेरने को दी जाती। पूरा न पेरने पर बेतों से पीटा जाता। सभा बन्दी गीता का पाठ कर धर्म पर दृढ़ रहने का प्रण करते तथा अत्याचार सहन करते। फांसी वाली कोठरी मे बन्द युवकों से भी इस्लाम ग्रहण करने को कहा गया किन्तु उन्होंने मौलवी के मुंह पर थूक दिया। सुरेन्द्र नामक कैदी को लाठियों से पीट-पीट कर अधमरा कर दिया गया। उसका बाजू तोड़ दिया गया।

लाहौर के बाद इन बन्दियों को जेहलम की जेल में रखा गया। ईद के दिन इन सभी को जेहलम की कोटपीरा मस्जिद ले जाया गया मौलवी अल्लादिया ने उनसे कहा– "आप लोग जेल में व्यर्थ यातनाएं क्यों सहन कर रहे हैं? इस्लाम कबूल करते ही तुम सब कि सजा माफ कर दी जायेगी। सुन्दर हूरों से तुम्हारा निकाह करा दिया जायेगा।' किन्तु वे धर्मवीर हकीकत राय के अनुयायी थे। उनमें से एक भी अपना धर्म छोड़ने को तैयार नहीं हुआ।

जेहलम जेल से उनका तबादला मिन्टगुमरी जेल में कर दिया गया। वहां भी मुल्ला-मौलवियों ने आकर धमकी दी यदि अब भी इस्लाम कबूल नहीं किया तो खतरनाक कैदियों से तुम्हारे शरीर के टुकड़े कर दिये जायेंगे। युवतियों के साथ सरे आम बलात्कार किया जाएगा। ये धमकियां भी उन्हें विचलित न कर सकीं।

मिन्टगुमरी जेल के बाद उन्हें लाहौर जेल भेजा गया। लाहौर जेल में बन्द पहलवान ने इन बन्दियों म धर्म के प्रति आस्था देखी त दंग हो गया दिलावर हिन्दू ही था तथा आतंक के माहौल में मुसलमा बन गया था। वह इनकी धर्म निष्ठा से प्रभावित होकर पुनः हिन्दू धर्म में वापस आ गया।

जेल में एक दिन जमादार ने दिलावर को 'काफिर' कह कर गाल दे दी। दिलावर ने रौद्र रूप धारण कर गंडासा उठाया तथा जमादा का सिर धड़ से अलग कर दिया। दिलावर को फांसी की सजा द गई। गीता का पाठ करके वह फांसी पर झूल गया। कैलाश और जग दीश घोर यातनाओं से इतने तंग आ चुके थे कि उन्होंने एक दूसरे क गला काट कर प्राणोत्सर्ग कर दिया। शेष हिन्दू बंदियों ने हिन्दू रहते हुए भी प्राण त्यागे।

★ ★

(हिन्दु सभा वार्ता से साभार)

कविता कलाप

मातृभूमि है मांग रही कुरबानी

—जयराम प्रसाद निर्भीक

उठो भारत के नर—केहरि अपनी तंद्रा को तोड़ो ।
सोओगे तुम अब कब तक अब तो निद्रा छोड़ो ॥

देखो सम्मुख शत्रु खड़ा है अलसायी पलकें खोलो ।
ले नंगी तलवार बढ़ो तुम हर-हर महादेव बोलो ॥
हे भारत के वीर पुत्र ! सुन भारत की युग वाणी ।
मातृभूमि है मांग रही तेरी फिर से कुरबानी ॥

मातृभूमि के चहुंदिक देखो विषधर नाग खड़े हैं ।
स्वर्गादपि गरीयसी को डसने अडिग अड़े हैं ॥
इसकी ही ममता में पलकर शैशव तुमने बिताया है ।
करुणा के रजकण में चलकर यौवन तुमने पाया है ॥
आज उसी को खण्डित करने को करता शैतानी ॥ मातृभूमि है · ॥

कहता है कश्मीर हमारा इसको पाक बनायेंगे ।
सारे मन्दिर तोड़-तोड़ कर मस्जिद इसे बनायेंगे ।
'अल्लाहो अकबर' के नारे फिर से हम गुंजायेंगे ॥
वेद, रामायण और गीता का अर्थी यहां जलायेंगे ।
गायत्री का मन्त्र बन्द कर फिर गुंजेगी कुरानी ॥ मातृभूमि है···॥

कोई कहता पंजाब हमारा इसे नहीं संग रहने देंगे ।
हम हिंद के परम शत्रु है नहीं अमन रहने देंगे ॥
भूल गये गोबिन्दसिंह को भूल गये उनकी वाणी ।
भूल गये वे गुरु नानक को जिनकी थी अमृत वाणी ॥
भूल गये भारत माता को बने हे जो खालिस्तानी ॥ मातृभूमि है···॥

जगह-जगह होते है दंगे हम तो सदा उजड़ते हैं ।
जिसको हमसे शरण मिली ले शमशीर वे लड़ते हैं ॥
कहते मन्दिर को मस्जिद वे काले झण्डे लहराते ।
भाई को गुमराह बनाकर ये तो नफरत फैलाते ।
असन-वसन सब यहीं का लेकर फिर भी करते मनमानी ॥ मातृभूमि है

नहीं भरोसा इनका करना इस बुजदिल सरकार को ।
करो भरोसा अपने बल का और अपने कर्तार को ॥
नेताओं से क्या मांगोगे जिनका नहो कोई दीन-ईमान ।
इनकी कोई जाति-धर्म नहीं ये तो है पूरे शैतान ॥
केवल कुर्सी इन्हें चाहिये यह है इनकी चाल पुरानी ॥ मातृभूमि है · ॥

कैसे धर्म बचेगा जहां नित लाखों गायें कटतीं हैं ।
कैसे राष्ट्र बचेगा जहां युवा शक्ति नित घटती है ॥
राम राज्य का भाषण देकर राक्षस राज्य बनाते हैं ।
रक्षक बने हुये हैं भक्षक नित नये नकाब लगाते हैं ।
कैसे राष्ट्र बचेगा अपना जब करतब इनके शैतानी ॥ मातृभूमि है···॥

जाग उठा यह देश महान

स्वर्णिम रश्मि उषा की आती,
जग में जागृत नयी प्रभाती,
आज दिशाएं आलोकित सी—
मृदु संगीत सौम्य हैं गातीं,
नवोन्मेष हो रहा धरणि पर—
गूंज रहा है मंगल गान ।
जाग उठा यह देश महान ॥

नूतन युग ने ली अंगड़ाई,
जागृत हुई नई तरुणाई,
नव विहान की शुभ्र घड़ी में,
हमने जागृत ज्योति जगाई,
युवा शक्ति है निर्भय होकर—
थाम रही कर्त्तव्य कमान ।
जाग उठा यह देश महान ॥

आती नभ से प्रगति प्रतिध्वनि,
कण-कण से समरसता की ध्वनि,
चमक रही है आशाओं की—
भारत में नव स्वर्णिम सी मणि,
गौरव—गरिमा का भारत की—
भू पर नहीं कहीं उपमान ।
जाग उठा यह देश महान ॥

—राधेश्याम 'आर्य विद्यावस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

देखो देश के ऊपर छाये हैं रिपु के काले बादल ।
पाक अमेरिका दोनो मिलकर करना चाह रहे घायल ॥
कश्मीर और पंजाब पर दोनों दांव लगाये हैं ।
चाह रहे दोनो, दोनो को ऐसी चाल चलाये है ॥
नाकाम कर इनकी चालो को दिखला दो अपनी मर्दानी ॥ मातृभूमि···

उठो कृष्ण के वंशज तुम कृष्ण चक्र धारण कर लो ।
उठा लो गाण्डीव अर्जुन का बलयुक्त भुजाओ पर धर लो ॥
राणा प्रताप का तेग शिवा की तलवार तुम्हें पुकार रही ॥
आजाद भगतसिंह की कुर्बानी आज तुम्हें ललकार रही ॥
हिन्दू राष्ट्र बनाना है तो दे देनी है जिंदगानी ॥ मातृभूमि है···॥

हक अनुनय से नहीं मिलेगा आगे बढ़ छीन लेना होगा ।
स्वाभिमान की रक्षा हित निज मस्तक भी देना होगा ॥
जागो वंशधर द्रोण कर्ण के समय नहीं बर्बाद करो ।
अपने लहू से सींच इसे पुनः इसे आबाद करो ॥
जग मे मान बढ़ाना है तो बनना होगा बलिदानी ॥ मातृभूमि है···॥

मातृभूमि की रक्षा हित रिपुदल मे ज्वाला बन जाओ ।
राष्ट्र विखण्डित करने वालों के हित राणा का भाला बन जाओ ॥
देश-द्रोही का नाम मिटाने को लाल, बाल और पाल बनो ।
बनें देश का जो मीरजाफर उसके हित तुम काल बनो ॥
देश यदि बचाना है तो बन निर्भीक हो अमर सेनानी ॥ मातृभूमि है

ईर्ष्या द्वेष दूर करो तुम वैरभाव को जाओ भूल ।
बिछुड़े हुये को गले लगाकर मिटा दो उनके हिय की शूल ।
बीज फूट का मत बोओ तुम सदा संगठित होना सीखो ।
अपनी शक्ति बढ़ानी हो तो बीज प्रेम का बोना सीखो ॥
एक देश हो, एक वेश हो, एक धर्म हो एक निशानी ॥ मातृभूमि

❀ आर्य जगत ❀

—महर्षि दयानन्दार्य गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) द्वारा संचालित वैदिक प्रचार मण्डल ने दिसम्बर ८६ में उलियापुर, कृष्णपुर, असगरपुर, परमनगर, फरीदपुर, रोशनाबाद, फतेहगढ़ (फर्रुखाबाद), खसौरा, अजतूपुर, निजामपुर, साण्डी (हरदोई) आदि नगरों में व्यापक प्रचार किया।

—आर्य समाज कटरा (शाहजहाँपुर) के तत्वाधान में ग्रामीण क्षेत्र के ४,६ ग्रामों में प्रचार कार्य दिनांक १९ से २६ दिसम्बर ८६ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ।

बिनहा ग्राम में नवीन आर्य समाज की स्थापना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अतरंग सदस्य सुदर्शन सिंह आर्य ने बिनहा ग्राम में नवीन आर्य समाज की स्थापना करके निम्न चुनाव कराया। प्रधान—सुरेश सिंह। मन्त्री—बादशाह सिंह। कोषाध्यक्ष—राम जी सिंह।

शताब्दी समारोह

आर्य समाज सदर बाजार दिल्ली, आगामी अप्रैल मास सन् १९८७ में अपना शताब्दी समारोह एवम् स्मारिका [इतिहास] का विमोचन करने जा रहा है। सभी आर्य संन्यासीगण, शास्त्रार्थ महारथी, आर्य विद्वानों एवम् भजनोपदेशकों से साग्रह निवेदन है कि उपरोक्त आर्य समाज से सम्बन्धित जिन किसी भी महानुभावों के पास संस्मरण हों, वो कृपया फरवरी मास सन् १९८७ तक मन्त्री जी आर्य समाज सदर बाजार दिल्ली के पास भेजने का कष्ट करें। —वैद्य इन्द्रदेव मन्त्री

अनुकरणीय विवाह

"आर्य समाज कृष्ण नगर प्रयाग के तत्वाधान मे प्रयाग उच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री अखिलेश द्विवेदी (विधुर) अपनी प्रतिज्ञानुसार सौ० इन्दु जो कि विधवा हो चुकी थी उन्ही के सग वैदिक रीत्यानुसार विधिवत पाणिग्रहण संस्कार दिनाक १०-१२-८६ को सम्पन्न हुआ। इस वैवाहिक समारोह में सैकड़ों लोगो ने उपस्थित हो कर वर वधू को आर्शीवाद दिया। इस प्रकार विधवा विवाह करा कर आर्य समाज ने अपनी अमिट छाप छोड़ी।"

भूल–सुधार

आर्य मित्र के अंक १ दिनांक ४/१/८७ पृष्ठ ६ पर शुद्धि आंदोलन के जो शुद्धि समाचार हिन्दू सभा वार्ता से ले कर प्रकाशित किए गए हैं, उनमें 'हिन्दू धर्म मे दीक्षित' तथा 'खुर्जा मे शुद्धि समारोह' शीर्षकों के अन्तर्गत बुलन्दशहर में जो शुद्धि समाचार प्रकाशित हुए हैं, उनमें आर्य समाज के जिलामन्त्री का नाम जो श्री धर्मेन्द्र शास्त्री तथा जिला प्रधान का नाम शिवनददासप्रकाशित हुए है,वे गलत है क्योकिश्री वीरेन्द्र पाल जी शर्मा जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के मन्त्री हैं, तथा श्री नारायणसिंह जिलोपसभा के प्रधानहैं जिन्हेंआर्यप्रतिनिधिसभाद्वारामान्यता प्राप्त है अतएव श्री धर्मेन्द्र शास्त्री को जो जिला मन्त्री तथा श्री शिवनन्दन दास को जिला प्रधान कहकर प्रकाशित हुआ है, इन पद सम्बोधन को रद्द समझा जाये और इस भूल का सुधार कर लिया जाए।

इस त्रुटिपूर्ण प्रकाशन के लिए हमे हार्दिक खेद है।

—सम्पादक मण्डल

उत्सव

(१) हर्ष का विषय है कि आपके अपने गुरुकुल गढ़पुरी जिला फरीदाबाद (हरियाणा) का अर्ध शताब्दी समारोह १३,१४,१५ फरवरी १९८७ शुक्रवार, शनिवार, रविवार को बड़े हर्ष और उल्लास के साथ होने जा रहा है। जिसमें संपूर्ण भारत के सुप्रसिद्ध विद्वान्, भजनोपदेशक, संन्यासी एवं राजनैतिक नेतागढ़ पधार रहे हैं। १ फरवरी से १५ फरवरी तक ऋग्वेद पारायण महायज्ञ चलेगा। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा संस्कृत भाषण, व्यायाम योगासन आदि कार्यक्रमों का व्यापक आयोजन किया जायेगा। अतः आप सभी वेदानुयायी धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस उत्सव में अपने इष्ट मित्रों के साथ पधार कर हमें अनुगृहीत करें।

बाहर से आने वाले महानुभावों के निवास एवं भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की गई है। ऋतु के अनुकूल वस्त्र साथ लावें।

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती मुख्याधिष्ठाता

(२) आर्य समाज देवनन्द का वार्षिक उत्सव ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर दिनांक २६,२७,२८ फरवरी १९८७ को मनाया जाना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर कई सम्मेलन भाषण प्रतियोगिता तथा आर्य वीर दल के क्षेत्रीय संगठन के कार्यक्रम रखे गये हैं।

उच्च कोटि के महात्मा, विद्वान एवं भजनिको को आमंत्रित किया गया है।

(३) आर्य समाज नैनी प्रयाग का सातवां वार्षिकोत्सव दिनांक २३ फरवरी से २५ फरवरी १९८७ तक धर्मशाला नैनीबाजार में होना निश्चित हुआ है। जिसमें आर्य जगत के प्रमुख विद्वान् वक्ता सम्मिलित होगें।

(४) महर्षि दयानन्दार्य गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) का वार्षिक महोत्सव गत वर्षो की भांति इस वर्ष ७,८,९ मार्च ८७ को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न होने जा रहा है जिसमें आर्य जगत के सुविख्यात आर्य विद्वान्, संन्यासी, उपदेशक एवं महोपदेशक पधार रहे हैं।

(५) आर्य समाज लोकहवा गोन्डा का चतुर्थ वार्षिकोत्सव ८, ९, १० फरवरी को बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न होगा।

निर्वाचन सार

आर्य समाज त्रिकालपुर (बलिया)।

प्रधान— श्री देव प्रसाद सिंह
मन्त्री— श्री नारायण सिंह
कोषा०— श्री राम दर्शन सिंह

आर्य सुहावल (बलिया)।

प्रधान— श्री दीप चन्द्र आर्य
मन्त्री— श्री प्रभु नाथ आर्य
कोषा०— श्री राम बचन आर्य

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर।

प्रधान—श्री ला० सलेक चन्द्र जी
मन्त्री— श्री अरविन्द कुमार गुप्त
कोषा०— श्री हरिदत्त शर्मा

★ ★

पुरुषार्थी बनो

(शेष पृष्ठ ७ से आगे)

बैठे रहो मुझे खाने वाले चले गये। तुम आपस मे ही फूटे बैठे हो। तुम से कुछ नहीं होगा।" यह कह कर वह वहा से चला गया।

यह है एकता और पुरुषार्थ न रहने का परिणाम। जो लोग परिवार मे मिलकर रहते हैं, उन्हें निश्चित रूप से सम्पत्ति मिलती है, सुख मिलता है। जो मिलकर नहीं रहते उन्हें, असफलता के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता।

याद रखो समृद्धि का मूल-मन्त्र एकता और पुरुषार्थ है। वेद कर्म करने की शिक्षा देता है, गीता और मनुस्मृति कर्म करने का पाठ पढ़ाते हैं। यह सभी धर्मग्रन्थ पुरुषार्थ के साथ-साथ एकता और सगठन की शिक्षा दे रहे हैं। पर, इन शिक्षाओ को जीवन मे न उतारने के कारण हमारे देश का हुआ करता सीमा कर खाक बना है। एकता और पुरुषार्थ में ऐसी शक्ति है कि इनके द्वारा मनुष्य जीवनमे निरन्तर आगे ही बढता चला जाता है। सम्पूर्ण ऐश्वर्यो को जीत लेता है। अत 'चरैवेति चरैवेति चले चलो, चले चलो।'

अत आप मातृभूमि की रक्षा के लिए पुरुषार्थी बनो, देश भक्त बलिदानी बनो, परिश्रमी और तपस्वी बनो, बुद्धिमान, मेधावी बनो, उदार और सेवा भावी बनो, विद्वान और परोपकारी बनो।

वेद की एक सूक्ति है, "प्रमृणि हिन शत्रून' शत्रुओ को कुचल डालो जो शत्रु तुम्हारी मातृभूमि पर आक्रमण करने के लिए कुदृष्टि उठाये उन दुष्टो की दोनो आखो को फोड डाल। उनके हृदयो को विदीर्ण कर दो। उनके जीभ काट डालो और उनके दातो को तोड दो। जो आततायी तथा अत्याचारी तुम्हारी सीमा मे घुसने की चेष्टा करें उनके पैरो को काट डालो जो तुम्हारी मातृभूमिके ऊपर अपने शस्त्रो से आक्रमण करने की तैयारी करें उसके हाथ तोड डालो। तुम्हारी जबान पर यह गीत हो—

जिसने तुझको अपमानित कर दुष्ट दृष्टि से ताका।

उसका सुख हम भस्म करेंगे बनकर दीप सलाखा। रण भेरी का नाद सुनकर अपने वीर पुरुषो का ध्यान कर शिवाजी और महाराणा प्रताप का स्मरण कर राष्ट्र को बचाने के लिये सन्नद्ध हो जाओ।

रण भेरी बाज चुकी जवानो मा ने तुझे पुकारा।
दुर्गा बनकर चलो देवीयो लेकर तेज दुधारा॥

हे रणधीर नव जवानो तुम्हारी शक्ति और पुरुषार्थ पर ही राष्ट्र को नाज है। अत तुम जगो और राष्ट्र को सबल सबल बनाओ। एक कवि के शब्दो मे—

हे मगलमय इस धरती पर करो अवतरित नन्दन कानन।
हो ज्योतिर्मय निज आभा से चमका दो धरती का आगन॥

निर्वाचन

आर्य समाज सदर बाजार (झासी)
प्रधान श्री शांति प्रसाद
मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र बांगवा
कोषा० श्री ओम शरण गुप्ता

आर्य समाज अमरपुर कोंडला (अलीगढ़)
प्रधान श्री अशोक कुमार आर्य
मन्त्री श्री यतीश कुमार आर्य
कोषा० श्री प्रेम पाल सिंह आर्य

आवश्यक सूचना

जनपद बुलन्दशहर की आर्यसमाजो को सूचित किया जाता है कि इस सभा द्वारा मान्यता प्राप्त जो जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर बंध है उसके प्रधान श्री नरायनसिंह तथा मन्त्री श्री वीरेन्द्र पाल शर्मा जी हैं। श्री धर्मेन्द्र शास्त्री तथा श्री शिवनन्दनदास को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लखनऊ ने उनके अवैध कार्यों के कारण छ छ वर्षों के लिए निष्कासित कर रक्खा है। अतएव वे किसी आर्य समाज या जिलोप सभा के सदस्य नहीं हैं।

अत जनपद की आर्य समाजें किसी प्रकार से भी भ्रमित न हो और इस सभा द्वारा मान्य जिलोपसभा से ही सम्पर्क रखें, सहयोग दें और उसके आदेशो का पालन करें।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ

शुद्धि समाचार

सिमडेगा अनुमण्डल अन्तर्गत श्री रामरेखा धाम मे—श्री देशपाल दीक्षित के पौरोहित्य एव तत्वावधान मे २५-१२-८६ को कु० पौलिना सोरेग, पिता सोहन सोरेग ग्राम ताराबोगा थाना बोलबा, की शुद्धि की गई। नया नाम पावती कुमारी रखा गया।

तत्पश्चात् श्री छुन्नूसिंह पिता अर्जुनसिंह सिमडगा निवासी के साथ विवाह कर दिया गया उक्त दम्पति के हाथ से यज्ञ शेष वितरण कराया गया और सभी ने ग्रहण किया।

आर्य जगत

"आर्य समाज आर्य नगर इस्लाम नगर मे दि० २३ दिसम्बर १९८६ को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया जिसमे अमर शहीद स्वामी जी को श्रद्धान्जलि दी गई तथा उनके अगरक्षक वयो वृद्ध आर्य वीर श्री धम पाल जी विद्या लकार की स्वस्थता तथा दीर्घ आयु की परमपिता परमेश्वर से कामना की गई।

भारत मे सक्रिय विघटनकारी शक्तिया तथा आर्य समाज का महान् दायित्व

(शेष पृष्ठ ११ से आगे)

प्राप्त हुई थी, परन्तु कतिपय दुराग्रहियो की हठवादिता के कारण जो वेदके अतिरिक्त पुराणो, कुरान, बाईबिल को भी ईश्वरीय कृतिया स्वीकार कराने परदृढ़ थे, मतैक्य न हो सका। यही कारण है कि यह गम्भीर आपात स्थिति पुन विकराल मुख खोले हमारे सम्मुख है और हमारी संस्कृति सभ्यता, मान्यताओ के ही नष्ट हो जाने की परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। महर्षि की इस महत्वाकाक्षा को पूर्ण और सफल बनाने हेतु सार्वदेशिक प्रदेशीय, उप-प्रतिनिधि आर्य समाजो का दायित्व है कि वे देश-विदेश के आर्य जगत के सम्पूर्ण मनीषियो से सम्पर्क कर, सगठित होकर इस महत्व पूर्ण अनिवार्य कार्य को पूर्ण करने की व्यवस्था करे, जिसमे उन्हे प्रत्येक देश भक्त आर्य सस्थाए पूरी तरह समर्पित भावना से सहयोग देगी। यह कार्य कठिन अवश्य है परन्तु दुष्कर और असाध्य नहीं है और हमे इस पुनीत कार्य को हर सभव उपाय से सफल बनाना है। विलम्ब घातक होगा।

इस अणु-परमाणु युग मे सम्पूर्ण सृष्टि का विनाश एक निश्चित तथ्य हैं। ससार मे सर्वे भवन्तु सुखिन, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मानवता, विश्व बन्धुत्व, सौहार्द, वसु धैव कुटम्बकम् के पवित्र सदेश को प्रसार करना समय की पुकार है अन्यथा मनुष्य और पशु मे कोई अन्तर नहीं है। इस पुनीत कार्य मे कोई विरोध किस प्रकार कर सकेगा और आर्यसमाज अवश्य सफल होगा, इसमे कोई सशय नहीं है।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पञ्जीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन. पी. ७६
माघ कृष्ण १०
रविवार, २५ जनवरी १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप मे विन्ध्यवासिनी प्रिंटिंग प्रेस ० बुलन्दबाग लखनऊ मे श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७

घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८१

माघ शुक्ल ३, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनाक १ फरवरी १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड
एक प्रति	६० पैसे

वर्ष ८०

अङ्क [illegible]

प्रभु की अमृत वाणी—

चमक, चमका दे, धूम मचा दे

स सीदस्व महा असि शोचस्व देववीतम ।
वि धूममग्ने अरुष मियेध्य सृज प्रशस्त दर्शनम ।।
(ऋ० १-३६-९)

विश्व झुकता है, झुकाने वाला चाहिए । ससार बदलता है युग प्रवतक चाहिए । जग जगमगाता है, जगमगाने वाला चाहिए । ये समस्त काय वह मानव करता है जो महा मानव बने और महा मानव वही बनता है जो आत्माग्नि को प्रबुद्ध करे । हम मानवो के भीतर एक आत्माग्नि है जिसे बोधनीय, प्रकाशन य और प्रशसनीय बनाया जा सकता है । परमात्मा अपनी वेद वाणी मे इस मन्त्र के माध्यम से मानवो को सम्बोधित करते हुए कहता है—(मियेध्य प्रशस्त अग्ने) हे अग्नि ! तू प्रबुद्ध और प्रशस्त हो सकता है । जिस अग्नि को सतत प्रज्वलित न रखा जाए वह शनै शनै हेय होती चली जाएगी पर जिस अग्नि मे प्रज्वलनशील पदार्थ का मिश्रण होता रहेगा, वह उतनी ही तीव्र प्रज्वलित होगी और उसका प्रज्वलन जितना तीव्र होगा उतना ही अधिक उसका प्रकाश होगा ।

मानव शरीरस्थ अग्नि ही वह आत्माग्नि है जिसे ज्ञान से प्रदीप्त किया जा सकता है । जिस अनुपात मे उसका ज्ञान प्रज्वलन होगा, उसी अनुपात से वह चमकेगी, जगमगाएगी, कांतिमान हो जाएगी । मानव शरीर के भीतर निहित यह अग्नि, ध्यान चिन्तन और मनन से ही प्रबुद्ध होकर प्रशस्त होता है अतएव मन्त्र इसकी वास्तविकता का आभास कराने के उपरान्त मन्त्रणा देता है—

(स+सीदस्व) सुस्थित हो । जब तक सम्यक रूप से स्थिरता नही होगी न ध्यान लगेगा, न चिन्तन होगा और न ही मनन होगा । मन की चचलता को एकाग्रता मे परिवर्तित करने पर ही सुस्थिति की प्राप्ति होगी और यह सामर्थ्य प्रभु ने तुझ प्रदान कराया है । प्रभु कहता है—तू (महान असि) महान है तथा (देव+वी+तम) अत्याधिक कान्तिमान है । अपनी महानता और दिव्यता के स्वरूप को पहचान और प्रबुद्ध होकर महान बनकर कान्तिमान बनकर (शोचस्व) चमक दमक चमका दे, दमका दे, जगमग जगमग कर दे ।

तेरी चमक जगमगाहट दिव्यता और प्रबुद्धता कैसी हो (अरुष) रोष विहीन (दर्शतम) दर्शनीय, जो पूर्ण विश्व मे तेरी (धमू वि+सृज) धूम मचा दे, यशस्वी बना दे ।

जो जगत मे शान्त, स्थिर और धैर्यवान होते है, जिनके भीतर दिव्यता जगमगाती है जो बाहर दिव्य वाणी से मानव जीवनो को जगजगाते है ऐसे महामानव ही दर्शनीय होते है और उनकी ही धूम मचा करती हैं । वे ही यशस्वी होते हैं और युग प्रवतक बनते हैं । आर्यों ने सदैव महामानव बनकर अपनी धूम मचाई है और स्वप्रबुद्धता से ससार को अपने अनुकूल बनाया है ।

हो प्रचेतित जग मे हे आत्म अग्नि ।
ज्ञान से हो सतत प्रज्वलित हे आत्म अग्नि ।
प्रबुद्ध बन कर चमके हे आत्म अग्नि ।
जगमगा दे विश्व को हे आत्म अग्नि ।
रोष और क्रोध रहित हो आत्म अग्नि ।
बन सर्वथा दर्शनीय आत्म अग्नि ।
दिव्यताओ से 'वसन्त' कर दीप्त आत्म अग्नि ।
धूम मचे जगत मे हो यशस्वी आत्म अग्नि ।

—वसन्त

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ॥
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

वसन्त—रविवार १ फरवरी १९८७ दयानन्दाब्द १६२
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

माविद्विषावहै

आज देश में फैलते आतंक और विग्रह पूर्ण वातावरण से प्रत्येक प्रबुद्ध नागरिक चिन्तित है। वे सभी इस आतंक और विग्रह, विद्वेष से दूर शान्ति सुख समृद्धि से पूर्ण भारत के निर्माण की कल्पनाएं करते रहते हैं। परन्तु ऐसा हावी हो गया है यह वर्ग भेद कि कोई एक दूसरे को सुनना ही नहीं चाहता—समझना ही नहीं चाहता। सभी अपनी-अपनी स्वार्थ समृद्धि के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में ही सब कुछ लेना देना चाहते हैं।

मेरे एक मुसलमान मित्र से एक दिन ऐसी ही चर्चा हो रही थी उन्होंने अपने दिल की टीसन को निकालते हुए कहा कि आज के इस लड़ाई झगड़े का मूल धर्म का झूठा मुखौटा है। आपके पंडित पुजारी हमारे मुल्ला मौलवी सिक्खों के ग्रन्थी, ईसाइयत के पादरी यानी सभी फिरकों के, धर्म के नुमाइन्दे कठमुल्ले पन के कारण ही धर्म का सत्यानाश कर रहे हैं। सच तो यह है कि धर्म के सच्चे रूप को कोई समझाता ही नहीं सब—अपनी-अपनी अलम्बरदारी से धर्म को समझाना या बताना चाहते हैं। धर्म का स्वरूप बड़ा विशाल है। धर्म को समझ लेने वाला संकुचित, स्वार्थी, दम्भी झगड़ालू हो ह नहीं सकता। सच्चे धर्म की पहिचान आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने की थी। और— धर्म के वास्तविक रूपको समझाते-समझाते शहीद हो गये। जानें कितनी मुसीबतें ढाई गयीं उस देवता पर परन्तु उस महापुरुष ने अपनी राह न छोड़ी। परिवार के बुजुर्ग मुखिया के रूप में उन्होंने बिना किसी लाग लपेट के परिवार के सदस्यों में जिनमें जो खामियां आ गयी थीं उनकी आलोचना की। पनपती बुराइयों, दकियानूसी पन को छोड़ने की ताकीद की। मैंने उनकी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश को आलोचक की तरह कई बार पढ़ा। परन्तु मुझे तो वह हर बार, नई लगी। उन्होंने अपनी उस किताब में सब मजहबों में फैली बुराइयों अन्ध विश्वासों—जिनके कारण ही एक दूसरे के प्रति नफरत फैलती है—की ओर इशारा करके उन्हें दूर करके प्यार बढ़ाने धर्म पर चलने का रास्ता दिखाया है। आज जरूरत इसी बात की है कि हम सभी उनके उसूलों को खुद समझें और सबको समझायें। बस रास्ता—इसके अलावा कोई नहीं है।

मैं उनकी चर्चा बड़ी गम्भीरता से सुनता रहा और यह सोचता रहा कि अन्य चिन्तक व विचारक ऋषि को समझने, उनके मन्तव्यों को समझने के लिये कितना प्रयत्नशील रहते हैं। परन्तु—हमारी चिन्तना शायद कुण्ठाग्रस्त हो गयी है या हम उन्हें समझना ही नहीं चाहते। इसीलिये देश की इतनी विग्रह पूर्ण स्थिति में जो हम या तो हताश हो बैठ गये गये हैं या कुछ कुर्सियों के व्यामोह में स्वयं विग्रह सृजन में तल्लीन हो गये हैं।

महर्षि दयानन्द ने अपना समग्र जीवन प्राणी मात्र के कल्याणार्थ समर्पित किया था। उन्होंने कहीं कोई कुर्सी नहीं चाही। उन्होंने— एकाकी मुक्त भी, होना भी नहीं पसन्द किया। सबके साथ नरक में रहना पड़े तो उन के सुधारके लिए वहां ही रहना अपना धर्म माना था—उन्होंने आद्योपान्त मानवता की रक्षा धर्म की स्थापना के लिए संघर्ष किया। भारत के स्वाधीनता संग्राम में नारी जाति के उत्थान छुआ-छूत का भेद भी मिटाने में उनके अनकेश:अनुयायियोंने समर्पित सेवा की। इसी से स्वराज्य सूर्य का उदय हुआ नारी-समाज बढ़ी छुआ-छूत का भेदभाव भी काफी हद तक मिटा। परन्तु (स्वाधीनता के—बाद) जब उनके शिष्य आलस्य और प्रमादवश ऋषि के मिशन को फैलाने का कर्तव्य समाप्त समझने लगे वे इस सबका दायित्व सरकार का मान बैठे, देश मे पुनः विकृति आने लगी। तरह-तरह के ढोंग पाखण्ड फैलने लगे, रोज नये-नये भगवान् पैदा होने लगे धर्म के नाम पर ईर्ष्या द्वेष फैलाया जाने लगा। कुछ स्वार्थी तत्वों ने ऋषि भक्त होने का जामा पहन कर दल बन्दी—कुर्सी परस्ती का विष घोलना आरम्भ कर दिया। परिणामतः आज—आर्य समाजों मे भी तमाम झगड़े व मुकदमें चलने लगे। झगड़ा करते-करते उस ऋषि का शिष्य होने का दम भरते हैं जिसने सत्य धर्म के प्रसार के लिए अपना जीवन खपाया। लोभ, लालच, प्रलोभन जिसे पथ—विमुख कर सके। महन्ती की गद्दियां (कुर्सियां) उनके पीछे—दौड़ती थीं वे उन्हें लातमार कर आगे—बढ़ते जाते थे। धर्म का प्रसार ही उनका लक्ष्य था। सुखी समृद्ध भारत का निर्माण उनका उद्देश्य था।

उन्हीं के तथा कथित भक्तों द्वारा कुर्सी का झगड़ा देखकर सिर-लज्जा से झुक जाता है। सच तो यह है कि कुर्सी के लिए झगड़ा करने वाले ऋषि दयानन्द के भक्त हो ही नहीं सकते। ऋषि दयानन्द के भक्त तो = वेद के इस आदेश के अनुरूप:—

सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

समाज और राष्ट्र की रक्षा के व्रती होंगे। विश्व में स्नेह सौहार्द—प्यार प्रसार ही उनका सङ्कल्प होगा।

इसलिए आज आवश्यकता है कि आर्य अपनी हताशा छोड़ें। अपनी पहचान करें, उठें, सजग हो, धर्म और अधर्म के युद्ध में सैनिक बनकर कूद पड़ें। मानवता की रक्षा करें। भ्रातृप्रेम का प्रसार करें। 'मा विद्विषावहै' का बिगुल बजायें और धर्म के सच्चे स्वरूप को फैलायें।

ईश्वर करे पथ विभ्रमित कुर्सी लोभियों का भी मन बदले—उन्हें अपनी भूल का अहसास हो और वे भी अपने को सच्चा आर्य बनावें। आपसी विग्रह द्वेष समाप्त कर—ऋषि दयानन्द के मिशन को फैलाने समग्र विश्व को आर्य बनाने की दिशा में कदम बढ़ायें। और सभी संगठित भाव से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के वैदिक उद्घोष को पूर्ण करें।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

वेद का मनन

[श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश]

स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति। स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्तिनो अदिते कृधि ॥

(ऋ० ५-५१-१४)

शब्दार्थ-(स्वस्ति) कल्याण कारी [होवें] (मित्रावरुणा) प्राण और अपान (स्वस्ति)कल्याणकारी [होवें] (पथ्ये) मार्गों पर (रेवति) ऐश्वर्य अथवा गौवें। (स्वस्ति) कल्याणकारी [होवें] (इन्द्रः) सूर्य (च) और (अग्निः) [विद्युत् रूप] अग्नि (च) और (अदिते) हे अखण्डित विश्व परमेश्वर अथवा अविनाशी, सदा एक रस विद्यमान प्रभो (नः) हमारा (स्वस्ति) कल्याण (कृधि) कीजिए।

विशेष--इस मन्त्र मे प्राण-अपान, ऐश्वर्य मार्ग-अथवा ऐश्वर्यों से पूर्ण गौवें, सूर्य और विद्युत् रूप अग्नि हम सबके लिए कल्याण करने वाले हो। वह सदैव अखंडित भगवान् भी हमारा कल्याण करें।

जब हम प्रार्थना के क्षेत्र मे आते हैं तो महर्षि दयानन्द जी का चमत्कार है कि प्रार्थना का अर्थ है उससे पूर्व पुरुषार्थ। उनका भाव बहुत उत्तम है "यादृशी प्रार्थना कुर्यात् तादृश कर्ममाचरेत्" अर्थात् भक्त जैसी प्रार्थना करे उससे पूर्व वैसा कर्म करे। कर्म करके थक जाने के पश्चात् व्यक्ति प्रार्थना करने का अधिकारी बनता है। अंग्रेजी में कितना सुन्दर यह कहावत है- '*God helps those who help themselves*' परमात्मा उनकी मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं। पुरुषार्थहीन, आलसी और प्रमादी व्यक्तियों की प्रार्थनाएं कभी स्वीकार नहीं होतीं।

अब जब हम इन प्रार्थना के शब्दों को दोहराते है कि प्राण और अपान हमारे लिये कल्याण कारी हो। केवल मात्र इतनी प्रार्थना मात्र से तो प्राण-अपान से कल्याण होता नहीं। हाँ जो प्राणायाम करेगा वह अवश्य लाभान्वित होगा। प्राण विद्या जीवन देने वाली-निरोगता देने वाली एवं आयु लम्बी करने वाली है।

कहा भी है "प्राणा: वं प्राणीना आयुः" प्राण ही प्राणियो की आयु है। नित्य प्रति प्राणायाम करने से प्राणी का कल्याण होता है तथा प्रार्थना सार्थक होती है कि प्राण अपान हमारे लिए कल्याणकारी हो।

'अमर रहे गणतन्त्र महान'

बढ़ो ! सपूतों ! हम भारत का,
नव निर्माण करें।
जर्जर से अपने समाज में,
नूतन प्राण भरें।
जगे पुनः प्यारे भारत में-
त्याग - तपस्या व बलिदान।
अमर रहे गणतन्त्र महान ॥

स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर,
हुए समर्पित शीश असख्यक।
बन्धन मुक्त बनाने मां को,
चलीं क्रान्ति की लहरें व्यापक।
अमर शहीदो ने जिसके हित-
दिया विहंस कर अपने प्राण।
अमर रहे गणतन्त्र महान ॥

रक्षा मे इसकी कटिबद्ध,
प्रतिज्ञाओं से हम आबद्ध।
धूल चटायेंगे अरिदल को,
हम हैं सजग तथा सन्नद्ध।
ऐश्वर्यों से हों पूरित सब-
खेत - खान बन व खलिहान।
अमर रहे गणतन्त्र महान ॥

-राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर

वेद-विवेचन

ऐश्वर्य मार्गों में अथवा मार्गों में निष्कण्टक घूमने वाली ऐश्वर्य से सम्पन्न गौवें हमारा कल्याण करें। जब ऐश्वर्य बढ़ने लगता है तो अनिष्ट भी बढ़ता है। शक्ति का सम्भालना बहुत कठिन है। ऐश्वर्य के मार्ग व्यक्ति को पथभ्रष्ट कर देते हैं। वे तब कल्याण कर हो सकते हैं जब उनका दुरुपयोग न हो अपितु सयम से सदुपयोग हो। परिवार के सम्यक् विकास के लिये शुद्ध भोजन का होना अत्यन्त आवश्यक है। गो दुग्ध परम सात्विकता, शुद्धता, पवित्रता और निरोगता को उत्पन्न करता है। स्वच्छता से विचरण करने वाली गौएं नानाविधि औषधियों को खाकर निरोग करने वाले दुग्धामृत से व्यक्ति का कल्याण करती हैं। अतएव सयम और गोपालन द्वारा यह दूसरी प्रार्थना भी सार्थक होती है- "स्वस्ति पथ्ये रेवति"

इन्द्र और अग्नि अर्थात् सूर्य और विद्युत् भी हमारे लिए कल्याणकर हों। सूर्य की किरणें उत्तम प्रकाश-निरोगता, पवित्रता एव स्फूर्ति देने वाली हैं। अन्धकार मे डूबे हुए मकानो मे रोग ही रोग है। प्रकाशयुक्त स्थानो मे स्वास्थ्य निवास करता है। प्राकृतिक चिकित्सको द्वारा स्नान को बड़ा महत्वपूर्ण और लाभ प्रद माना गया है। सूर्य प्रकाश, प्रेरणा, गति शीलता का द्योतक है। जीवन मे सूर्य के गुण आने से जीवन प्रकाशित हो उठता है। विद्युत् जब उद्योगों से जुड़ती है तो भौतिक सम्पदा का उत्पादन बढ़ने लगता है। जिसका उपयोग जनमानस में उत्कर्ष का द्योतक बन जाता है। प्रकाश और पुरुषार्थ से हमारी यह प्रार्थना भी सार्थक होती है-

"स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च"

वह अदिति भगवान् भी हमारा कल्याण करे। कल्याण के लिए अखण्डित-अविनाशी सत्ता का सम्पर्क आवश्यक है। खण्डित-विनाशी पदार्थों का सम्पर्क व्यक्ति को सदैव अकल्याण, अभद्र में बांधे रखता है। व्यक्ति सदैव दुख के क्षेत्र मे प्रसित रहता है। अखण्ड एक रस अविनाशी भगवान् के गुणो का जीवन मे उतारना व्यक्ति का कल्याण करता है। उस विशाल परात्पर सत्ता से कल्याण की प्रार्थना उसके उन विशाल नियमो को आत्मसात करते हुए कितनी सार्थक है। परमदेव परमात्मा हमारा सब ओर से कल्याण करें।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज सहतवार(बलिया) का ४२ वां वार्षिकोत्सव आगामी २७ से २९ मार्च ८७ तक करने का आयोजन किया जा रहा है उक्त अवसर पर आर्य जगत के विद्वान पधार रहे हैं।

भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता

—ब्रह्ममित्र अवस्थी
स्वामी केशवानन्द योग संस्थान ८/३ रूप नगर, दिल्ली—७

दर्शन शब्द शास्त्र और लोक दोनों में ही 'प्रेक्षण' अर्थात् 'जानना' अर्थ में प्रयुक्त होता है [दृशिर प्रेक्षणे]। जानन क्रिया गति क्रिया का एक अंग है, इसे संस्कृत भाषा के सभी विद्यार्थी स्वीकार करते हैं। व्याकरण शास्त्र में सुप्रचलित वाक्य 'गतेस्त्रयोऽर्थाः ज्ञान 'गमनं' प्राप्तिश्चेति' इस का प्रमाण है। ज्ञान से प्रारम्भ होने वाली गतिक्रिया का पर्यवसान प्राप्ति में होता है। इस का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक गति अर्थात् क्रिया ज्ञान से प्रारम्भ होती है, और उसका पर्यवसान प्राप्ति में, उपलब्धि में होता है।

व्याकरण शास्त्र के तृतीय आचार्य महर्षि पातञ्जलि ने 'क्रिया का अर्थ क्या है? इस प्रश्न को उठा कर एक महत्वपूर्ण समाधान मधुर शैली में दिया है "का पुनः क्रिया? ईहा। का पुनरीहा? चेष्टा। का पुनश्चेष्टा? व्यापार सर्वथा भवान् शब्देनैव शब्दान् व्याचष्टे, न किञ्चिदर्थजातं निदर्शयति. इत्येव जातीय का क्रियेति। (३) क्रिया नामेयमत्यन्तापरिदृष्टाऽशक्या पिण्डीभूता दर्शयितुम्। यथा गर्भो निर्लुठितः। साऽसावनुमान गम्या। (५) कोऽसा वनुमानः? इह सर्वेषु साधनेषु सन्निहितेषु कदाचित् 'पचति, ईत्येतद् भवति, कदाचिन्न भवति। यस्मिन्सन्निहिते पचति इत्येतद्भवति सा नूनं क्रिया। अथवा यथा देवदत्ते इह भूत्वा पाटलि पुत्र भवति सा नून क्रिया॥" [१/३/१ भुवादिय्स पृ० ११४] महाभाष्य में उद्धृत इस प्रश्नोत्तर का तात्पर्यार्थ यह है कि क्रिया की पूर्णता परिणाम में होती है, उपलब्धि में होती है। और दर्शन अर्थात् ज्ञान से प्रारम्भ होने वाली गति अर्थात् क्रिया की पूर्णता प्राप्ति में होती है, निरर्थक प्रयास से नहीं। अतएव यह निर्विवाद रूप से स्वीकार करना उचित होगा कि दर्शनशास्त्र में दर्शन अर्थात् चिन्तन रूप क्रिया जीवन में कुछ प्राप्ति के लिए है निरर्थक व्यापार नहीं। "न्याय दर्शन का प्रथम सूत्र "प्रमाण प्रमेय संशय प्रयोजन दृष्टान्त सिद्धान्त अवयव तर्क निर्णय वाद जल्प वितण्डाहेत्वा भासच्छल जाति निग्रह स्थानानां तत्व ज्ञानान्नि:श्रेयसाधिगमः' [१/१/१] में तत्व ज्ञान को निःश्रेयस् की प्राप्ति का हेतु माना गया है।

उपर्युक्त सूत्र गौतम के न्याय शास्त्र का है जिसके बारे में सामान्यतः लोग कहते हैं कि न्याय अर्थात् तर्क शास्त्र तो केवल बुद्धि का विलास है। यह शास्त्र तो चाकू और तलवार पर शान चढ़ाने वाली, धार को तेज करने वाली मशीन के समान है। और इस शास्त्र का केवल इतना ही प्रयोजन है कि बुद्धि को तेज कर लो। इसका जीवन में क्या उपयोग है, यद्यपि धार चढ़ाना स्वयं एक बहुत बड़ा उपयोगी कार्य है, धार के बिना उस वस्तु की सार्थकता ही नहीं बन पाती। यदि चाकू में धार नहीं है, वह भोजन के लिए सेब को छीलने और काटने का प्रयोजन सिद्ध नहीं कर सकती, तो उसका उपयोग ही क्या है? उसे लिया ही क्यो जाये? और शान चढ़ा कर धार बना कर एक चाकू को क्रियायोग्य बना कर उसमें सार्थकता का आधान किया जाता है। तात्पर्य यह है तत्व ज्ञान मूलक दर्शन का प्रयोजन परम पुरुषार्थ निःश्रेयस की प्राप्ति है। यदि कोई यह कहना चाहे कि हम निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष की कामना नहीं करते अथवा हमें ज्ञान ही नहीं कि निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष क्या है? फिर हमारे लिए न्याय शास्त्र का प्रयोजन क्या है? उसका उत्तर इतना ही पर्याप्त है कि केवल गाजियाबाद, अलीगढ़ और कानपुर जाने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति क्या हावड़ा तक जाने वाली ट्रेन दिल्ली हावड़ा एक्सप्रेस में नहीं बैठते। अरे भाई यह ट्रेन तो हावड़ा तक ले जा सकती है, यह तुम्हारी इच्छा की बात है कि तुम इससे अन्तिम स्टेशन तक जाओ अथवा पहले स्टेशन पर ही उतर लो। अर्थात् जो शास्त्र मोक्ष तक पहुंचाएगा वह उससे पहले धर्म अर्थ काम की भी पूर्ति करायेगा



ही। न्याय शास्त्र के प्रमाण आत्मा शरीर इंद्रिय अर्थ बुद्धि मन प्रवृत्ति दोष प्रेत्यभाव अर्थात् मृत्यु फल दुःख और अपवर्ग इन बारह प्रमेयों को जानने के लिए ही है। और इनमें अपवर्ग को छोड़ कर शेष सभी ग्यारह प्रमेय लोक से ही सम्बद्ध हैं, लौकिक पदार्थ ही है [आत्म शरीरेन्द्रियार्थ बुद्धिमनः प्रवृत्ति दोष प्रेत्यभाव फल दुःखाप वर्गास्तु प्रेमयम्। १/१/३/९] तथा प्रमाणों द्वारा प्रमेय का पूर्णबोध अर्थात् तत्व ज्ञान हो जाने के बाद गौतम के शब्दों में ही मिथ्याज्ञान की निवृत्ति होती है, मिथ्या ज्ञान की निवृत्ति सेदोषों कीनिवृत्ति होती है। दोषों की निवृत्ति, प्रवृत्ति को राग और द्वेष को मिटा देती है। प्रवृत्ति के समाप्त हो जाने पर जन्म क्रम से मुक्ति मिल जाती है, और उसका परिणाम होता है सम्पूर्ण दुःखों की निवृत्ति, जिसका अन्तिम परिणाम होता है अपवर्ग "दुःख जन्म प्रवृत्ति दोष मिथ्या ज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादपवर्गः।" [न्यायसूत्र १/१/१/२] इस कथन का तात्पर्य यह हुआ कि न्यायशास्त्र के प्रवर्तक गौतम के अनुसार उनके शास्त्र का प्रयोजन दुःखों की निवृत्ति करना है। दुःखों में फंसे हुए मानव को दुःख जाल से छुड़ाना है। सम्पूर्ण तर्क शास्त्र दुःखो के निवृत्ति के लिए ही है।

यही प्रयोजन सांख्य दर्शन के अध्ययन का है जिसे महर्षि कपिल ने 'अथ त्रिविध दुःखात्यन्त निवृत्ति रत्यन्त पुरुषार्थः' [सांख्य सूत्र १-१] सूत्र में स्वीकार किया है। बौद्ध दर्शन के आकार ग्रन्थ त्रिपिटक के दीघ निकाय के खुद्दक वर्ग में संकलित धम्मपद में भी अष्टांगिक मार्ग के आश्रयण का एक मात्र प्रयोजन दुःख निवृत्ति को ही माना है :—

'दुक्खं दुक्ख समुप्पादं दुक्खस्स च अतिक्कमम् अरियञ्चट्ठङ्गिकं मग्गं दुक्खूपसमगामिनम्।
एतं खो सरणं खेमं एतं सरणमुत्तमम्।
एतं सरणमागम्म सब्ब दुक्खा पमुच्चति॥[धम्मपद १४/१३/१४] बुद्धवग्ग।

इस प्रकार न्याय सांख्य और बौद्ध दर्शनो का प्रयोजन दुःख से पीड़ित लौकिक प्राणियों के दुःख की निवृत्ति कराना है। यदि आज हम दुःखी नहीं है, दुःख से पीड़ित नहीं है, अथवा अब भी हम दुःखों से पीड़ित नहीं रहेंगे, तब इन तीनों दर्शनों की प्रासङ्गिकता नहीं रह जाएगी। हावड़ा में पहुंच जाने पर अथवा हावड़ा में ही रहने वाले के लिए हावड़ा जाने वालीगाड़ियों की कोई प्रासङ्गिकता नहीं रहती, अथवा सुदूर रह कर भी यदि वहाँ पहुंचने की इच्छा नहीं है तो भी उसकी कोई प्रासंगिता न होगी।

[क्रमशः]

समीक्षात्मक—

आर्यों का आदि-देश

—आचाय रमेश चन्द्र, एम० ए०

विगत एक हजार वष के अन्तर्गत दो विदेशी जातिया भारत मे आईऔर दोनोनेभारतीय संस्कृति एव इतिहास को पूर्ण रूप से नष्ट करने का प्रयास किया। इस्लाम के अनुयायियो ने यहा की कला और संस्कृति के धारक मन्दिरो को नष्ट किया पुस्तकालयो को आग मे जलाया तथा प्रयास किया किसारा देशइस्लामधर्म स्वीकार कर लें। इसी प्रकार अग्रेज जाति ने कार्य प्रारम्भ किया और प्रकारान्तर से वेद-वैदिक-साहित्य और आर्य जगत के गौरवमय इतिहास पर प्रहार किया तथा यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि आय भारत मे बाहर से आये आक्रमणकारी थे और विदेशी थे। इस विचार धारा का सुनियोजित रूप से प्रचार किया गया। अग्रज जो संस्कृत के जानकार थे उन्होने पुस्तकें लिखी और भारतीयो के कैम्ब्रिज तथा आक्सफोर्ड की यहीं शिक्षा दी कि आय विदेशी थे। यह धारणा पनपी तथा भारत के भी इतिहास के विद्वान इसी धारणा के पोषक बने और आज तक यह धारणा जमी है तथा लघु बालको को कक्षा ४ और ५ मे पढाया जाता है कि आय विदेशी हैं। आज भारत मे प्राचीन गौरव एव संस्कृति के प्रहरी राजनीति मे नहीं है। प्रधानमन्त्री से लेकर सभी विदेशी राग मे अलाप रहे हैं तभी फिर ईसाई और मुसलमानो ने अनुकूल अवसर पा कर आय विरोधी, आवाज उठाना प्रारम्भ कर दिया है।

भारतीय लोक सभा मे एग्लो-इन्डियन सदस्य हे०फ्रैंक एन्थोनीने अग्रजी का पक्ष लेते हुए कहा कि संस्कृत आर्यों की भाषा है वह विदेशी थ अत संस्कृत भारत से बाहर की जाय इसी प्रकार गणतन्त्र दिवस के बहिष्कार की योजना प्रस्तुत करने वाले सासद श्री सहाबुद्दीन ने भी एक स्थल पर कहा कि आदिवासी भारत के मूल निवासी हैं। आय बाहर से आये आदिवासी ही अधिकतर मुसलमान हुए अत वही यहाँ के मूल निवासी हैं। इसी प्रकार की भ्रान्तिया फैल रही हैं और आर्यो के विषय को लेकर परम विद्वान लोकमान्य बाल गगाधर तिलक और भारतीयता के परम पोषक स्वर्गीय कन्हैया लाल माणिक लाल मुशी जी तक विदेशी विद्वानो के प्रवाह मे बह गये।

पुस्तक परिचय

भारत मे सन्त महात्माओ ने सदैव देश को सही दिशा प्रदान की। मुस्लिम युग मे उनके विचारो को थोथा सिद्ध करने वाले महात्मा कबीर हुए। अन्य सन्तो ने भी विदेशियो के विरुद्ध प्रचार किया तथा क्रान्तिदर्शी स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वैदिक सम्बल का आधार लेकर भारत को नवीन दिशा प्रदान की। और सम्प्रति स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने एक लघ पुस्तिका लिख कर इस भ्रम को दूर करने का प्रयास प्रारम्भ किया है।

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती (१४/१६ माडल टाऊन दिल्ली) से प्राय शिक्षित आर्य जन परिचित हैं पूर्व नाम आचार्य लक्ष्मी दत्त जी दीक्षित है आप प्राय पचास वर्ष तक शिक्षा जगत से सम्बन्धित रहे उपाधि एव स्नातक विद्यालयो मे प्राचार्य रहे और भारतीय धर्म दर्शन इतिहास का गम्भीर अध्ययन किया एव इसी आधार पर कतिपय उत्कृष्ट कोटि के ग्रन्थ की रचना की है जिनमे प्रमुख है—अनादि तत्व दर्शन, वेद मीमासा—तत्वमसि अथवा अद्वैत मीमासा, राजधर्म आदि अग्रेजी मे भी वैदिक कन्सप्ट आफ गाड, ऐज आफ शकर, पालिटिकल थाटस, थ्योरी आफ रियलिटी आदि—सभी रचना गम्भीर अध्ययन का परिणाम है एव ज्ञान प्रद है।

आर्य जाति को लेकर षडयत्र के साथ जो अभियान चल रहा है उसको ध्यान मे रख कर स्वामी विद्यानन्द जी ने आर्यों का आदि देश रूप मे विरोधियो के विचार और उनका खण्डन प्रस्तुत किया है। सत्य को प्रतिपादित किया है प्रत्येक कथन एव तथ्य के लिए भारतीय एव विदेशी विद्वानो के वाक्य एव प्रमाण भी उद्धृत किया है। इस प्रकार लघु पुस्तिका के रूप मे एक सकेत है बृहद रचना के लिए एक प्रारम्भिक भूमिका है। स्वामी सर्वदानन्द जी सरस्वती अध्यक्ष वैदिक यति मण्डल दयानन्द मठ, दीना नगर पजाब ने उदारतापूवक इस लघ रचना का प्रकाशन किया है जिसके लिए स्वामी सर्वदानन्द जी भी प्रशसा के पात्र है तथा आय जनो को, भारतीयो को सत्य ज्ञान के लिए उपकारी काय किया है।

आर्य समाज के लिए अपेक्षित है कि अपने प्रचार कार्य मे इस बात का भी सन्निवेश करे कि आय भारत मे ही प्रादुर्भूत हुई है साथ ही भारत सरकार और उसकी शिक्षा पद्धति जो इतिहास को विकृत करके प्रस्तुत करना चाहती है जिसमे महमूद गजनी और औरगजेब के सही इतिहास को तोड करके उन्हे भारत भक्त और हिन्दू धम विध्वसक नहीं लिखा जा सकता है। गुप्तकाल को स्वण युग भी नहीं लिखा जायगा। अर्थात जो सुनियोजित चाल ब्रिटिश चले थे कि भारत के मूल निवासी आत्म गौरव से गिर जाय वही योजना आज राजीव जी के समय तक चल रही है। अत ऐसे नाजुक अवसर पर स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने जो प्रयास किया है वह भूरि भूरि सराहनीय है बल्कि आय समाज प्ररित करके स्वामी जी आचाय लक्ष्मीदत्त दीक्षित से इस विषय पर बृहद रचना के लिए आग्रह करें।

समालोच्य लघु रचना है—आर्यों का आदिदेश लेखक स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती पूव आचाय लक्ष्मी दत्त दीक्षित १४/१६ माडल टाउन नई दिल्ली प्रकाशक वैदिक यति मण्डल दयानन्द मठ दीना नगर पजाब मूल्य दो रुपिया ★

आर्य समाज, अल्मोड़ा (उ० प्र०) द्वारा पारित प्रस्ताव

(१) यह सभा पजाब, त्रिपुरा और देश के अन्यान्य भागो मे क्रूर हिंसा द्वारा निरपराध नागरिको की हत्या करने वाले नर-पिशाचो की घोर निन्दा करती है, और राज्य तथा केन्द्रीय सरकारो से आग्रह करती है कि बिना विलम्ब किये और अब आगे अन्य लोगों की हत्या का अवसर दुष्ट हिंसको को न देकर उन्हे दृढता से तुरन्त कुचलने का कठोर उपाय किया जाये। क्योकि अत्याचारियों ने विगत पाँच वर्षों से भयकर लूट मार कर हजारो के जान-माल को नष्ट कर डाला है, और सरकार की सहनशीलता की पराकाष्ठा को लाघ कर आश्चर्यजनक हो चुकी है।

★ ★ ★

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा
(राजकोट) गुजरात
दिल्ली कार्यालय—आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—११०००१

ऋषि बोधोत्सव का निमंत्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर, सादर नमस्ते ।

इस वर्ष ऋषिबोधोत्सव २५, २६, २७ फरवरी १९८७ तदनुसार बुध, गुरु और शुक्रवार को ऋषि जन्म स्थान टंकारा में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है । इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा । जिसके ब्रह्मा आर्य जगत के तपस्वी विद्वान श्री पं० मदन मोहन जी विद्यासागर (हैदराबाद) होंगे । देश देशान्तर से पधारे ऋषि भक्त आर्य विद्वान तथा कलाकार इस सुअवसर पर ऋषि के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे । कन्या गुरुकुल बड़ौदा, पोरबन्दर तथा जामनगर की कन्याएं, टंकारा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी आर्य वीर दल ध्रांगध्रा एवं अन्य संस्थाओं के युवक समारोह के कार्यक्रमों में भाग लेंगे । ऋषि मेला पर आवास भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क होगा । बाहर से पधारने वाले सज्जन ऋतु अनुकूल अपने-अपने बिस्तर अवश्य साथ लायें ।

टंकारा ट्रस्ट के अधीन निम्न कार्य चल रहे हैं :—

१— ऋषि जन्म गृह प्रबन्ध
२— अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
३— गो-संवर्धन केन्द्र (विशाल गौशाला)
४— विश्व दयानन्द दर्शन चित्र-गृह
५— अतिथि गृह
६— आर्य साहित्य प्रचार-केन्द्र—पुस्तकालय तथा सार्वजनिक वाचनालय ।

ऋषि जन्म स्थली टंकारा में अनेक विशेष करणीय कार्य हैं—पानी की भयंकर कमी को दूर करने की व्यवस्था, ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग को एक सेठ के व्यक्तिगत कब्जे से छुड़ाना, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा ऋषि जन्म स्थली को विश्व दर्शनीय बनाना ।

टंकारा ट्रस्ट के अधिकारी जनता जनार्दन के सहयोग से टंकारा उत्सव की सफलता, टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा वहां के कार्य की कठिनाईयों को दूर करने का प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं । इन कार्यों के लिए कम से कम पांच लाख रुपये की आवश्यकता है । टंकारा की गोशाला में ३२ गायें हैं । इस गोशाला से विद्यार्थियों का शुद्ध दूध मिलता है । परन्तु हर वर्ष इस गोशाला में २०,०००/— रु० का घाटा हो जाता है, जो ऋषि भक्तों और गोभक्तों के दान से ही पूरा होता है ।

अतः आप से विनम्र निवेदन है कि आप ऋषिबोधोत्सव पर टंकारा अवश्य पधारिए और इस सारे कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहयोग भी दीजिए । यह दान राशि आप क्रास चैक/ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर से "टंकारा सहायक समिति दिल्ली" के नाम अथवा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के नाम से इसके दिल्ली कार्यालय, आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—११०००१ के पते पर भिजवा सकते हैं । आप से सानुरोध प्रार्थना है कि—आप अपनी ओर से, अपनी आर्य समाज, अपनी शिक्षण संस्था तथा अन्य संबंधित संस्था की ओर से अधिकाधिक राशि भेज कर ऋषि ऋण से उऋण हों और पुण्य के भागी बनें ।

धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में— अभी मतांधता जीवित है

बिहार में हिन्दू युवकों द्वारा मुस्लिम लड़कियों के साथ प्रेम विवाह करना बड़ा जोखिम भरा काम है । मुजफ्फरपुर तथा इसके आस-पास के इलाकों में अब तक दर्जनों ऐसे हिंदू युवकों की हत्या की जा चुकी है जिन्होंने मजहबी कट्टरता से ऊपर उठ कर मुस्लिम लड़कियों से शादी की थी । इसी काम में, फिलहाल, मुजफ्फरपुर शहर से करीब सात किलोमीटर दूर स्थित दादर गांव का निवासी शिवशंकर साहनी अपनी संभावित हत्या से आतंकित है । हुस्न आरा, जो शादी के बाद शोभा बन गई थी, के पिता ने कठमुल्लाओं के दबाव में आकर अहियापुर थाने में उसके विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करायी । प्राथमिकी के आधार पर शोभा और उसके पति को जेल भेज दिया गया । दो अप्रैल, १९८६ को धारा १६४ के तहत हुस्न आरा का बयान रिकार्ड किया गया जिसमें उसने खुद को बालिग बताते हुए अपनी मर्जी से शिव शंकर के साथ शादी की बात स्वीकार की । बाद में हुस्न आरा को जमानत पर रिहा कर दिया गया किंतु शिव शंकर को हवालात में ही रखा गया । आखिरकार, न्यायालय के आदेश पर रिहा कर दिया है परन्तु मुस्लिम कट्टरपंथियों की ओर से उसे लगातार धमकियां दी जा रही हैं ।

इसी प्रकार, ८ मार्च को कठमुल्लाओं ने समस्तीपुर के मथुरापुर गांव के निवासी अमरनाथ चौधरी को जिन्दा जला कर उसकी हत्या कर दी थी । चौधरी ने एक मुस्लिम लड़की रजिया खातून के साथ ४ फरवरी, को आर्य समाज मन्दिर, समस्तीपुर में पूर्ण वैदिक रीति के साथ प्रेम विवाह किया था । एक रात कुछ कट्टर मुसलमान आये और उसे जिन्दा जला कर राख कर दिया । और अब बारी है शिव कुमार साहनी की । यद्यपि उसके विरुद्ध चल रहे सारे मुकदमे खारिज हो चुके हैं फिर भी कठमुल्लाओं की ओर से मिल रही धमकियां उसकी हत्या के षड्यन्त्र को इंगित करती हैं ।

[पांचजन्य से]

प्रार्थना

हे विश्व प्रकाशक दयानिधे,
प्रभुवर सम्मति दे, प्रभुवर सम्मति दे ।
जीवन अर्पण करें देश हित,
बुद्धि हमें यह दे ।।प्रभु०।।१।।
राग द्वेष से दूर रहें हम ।
श्रेष्ठ मार्ग के पथिक बनें हम ।।
ग्रहण करें हम सत्य ज्ञान को,
भगवन यह वर दे ।।प्रभु०।।२।।
जीवन पर उपकार करें हम,
कर्ण दधीचि समान बनें हम,
भीम भरत अर्जुन समान ही ।
मुझको साहस दे ।।प्रभु०।।३।।

—राम पाल श्रीवास्तव आचार्य
गुरुकुल वेदाधि विद्यागार उतरौला (गोण्डा)

बाल जगत

हम चरित्रवान बनें

—श्री जगदीश शरण 'शीतल'
चान्दपुर (बिजनौर)

आज भारत मे आतंकवाद की महामारी भयंकर रूप धारण करती जा रही है। जिसके कारण चारो ओर भय आतंक तथा निराशा का वातावरण विद्यमान है। इसका मुख्य और विशेष कारण है चरित्र हीनता। जब-जब देश के व्यक्तियो का चरित्र दूषित होता है तब-तब अनाचार, दुराचार, अत्याचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार तथा नाना प्रकार के पापाचार होते हैं। अतएव चरित्रहीनता सब पापो की जननी है। सिनेमा घरो मे गंदे और अपर ध पूर्ण प्रदर्शित होने वाले चित्र, रेडियो और टेलीवीजन के दूषित तथा अशोभनीय कार्यक्रम इसके लिये विशेष उत्तरदायी है। जब माता पिता, भाई-बहन तथा घर के और अन्य व्यक्ति एक साथ बैठ कर इन चरित्रहीन कार्यक्रमो को देखते और सुनते हैं तो उनमे वह पवित्र सम्बन्ध शील तथा लज्जा कैसे रह सकती है। अर्द्धनग्न चित्र, कामुक और अपराधपूर्ण दृश्य, अश्लील गीत तथा संवाद बच्चो, नौजवान लडके-लडकियो को दूषित करने मे अग्नि पर घी का काम करते है।

इसी कारण अशोभनीय कार्य तथा अपराधो मे अधिक वृद्धि हो रही है। जब एक घर का चरित्र दूषित होता है तो समाज और सारे राष्ट्र का चरित्र दूषित होना स्वाभाविक तथा अनिवार्य है। यह दोष शासक वर्ग का नही तो और किसका है। जो यहा के सर्वेसर्वा हैं और जिनके द्वारा ही इन सब विभागो का संचालन होता है। यदि यही कार्यक्रम स्वच्छ तथा सुशिक्षित हो तो सारे समाज की काया पलट हो सकती है। वैसे तो रेडियो पर समाचारो से पहले संतो, महात्माओ तथा महापुरुषो की सूक्तिया और उपदेश प्रसारित किये जाते हैं। उदाहरणार्थ महात्मा गाधी कहते है शराब शरीर और आत्मा दोनो का नाश करती है इत्यादि। परन्तु इसके विपरीत हर वर्ष सरकार की स्वकृति से शराब की नई-नई दुकानें खुलती है। कैसा उपहास है इन महापुरुषो तथा इनके उपदेशो का। इस बुराई को दूर न करने के लिए सरकार यह तक देती है कि इससे होने वाली आय और कहाँ से प्राप्त हो।

मेरा शासक वर्ग से नम्र निवेदन है कि वह अपने तथा सरकारी खर्चों मे कमी करके त्यागमय जीवन बिता कर इस समस्या को भली प्रकार हल कर सकती है। किसी समय हिमाचल प्रदेश मे कांगड़ा प्रान्त के एक चारा नामक राजा हुए हैं। वह राज कोष से एक भी पैसा न लेकर बान बाट कर अपनी आजीविका चलाते तथा राजमहल का उपयोग केवल राज कार्यो के ही लिये करके स्वयं फूंस की साधारण झोपडी मे रहते। एक बार एक सेठ और सेठानी महाराज से मिलने आये। सेठानी रानी को देख कर बोली आप कैसी महारानी हो जो बहुमूल्य वस्त्र तथा आभूषण भी धारण नही करतीं। सेठ और सेठानी के जाने के बाद रानी ने महाराज से निवेदन किया देखा इस सादा जीवन बिताने के कारण आज मेरा कितना अपमान हुआ है। हमारी प्रजा तो इतनी साज सज्जा से रहे और हम उनके स्वामी होकर भी एक साधारण व्यक्ति की तरह जीवन व्यतीत करें। अत मुझे भी सेठानी की तरह सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण चाहिए।

महाराज ने उत्तर दिया जानती हो महारानी तुम्हारी इस विलासिता के लिये मुझे प्रजा पर कितने अधिक और नाना प्रकार के कर लगाने पड़ेंगे। उन करो से प्रजा दुखी होगी और मेरा अपयश होकर मेरा मरण होगा। भारत के प्रधानमन्त्री चाणक्य गंगा के किनारे फूंस की कुटिया मे रहते तख्त पर सोते और विदेशो के राजदूतो से नीचे बैठकर ही मत्रणा करते। यह था यहा के नरेशो तथा मन्त्रियो का आचरण और आदर्श। जब तक इस देश के राजे-महाराजे त्यागी और तपस्वी रहे तब तक यह देश सारे ससार का आध्यात्मिक गुरु तथा चक्रवर्ती सम्राट रहा। परन्तु जब से यह सम्राट प्रमादी तथा विलासी हुए तब से इस देश की दुर्गति और दुर्दशा प्रारम्भ हो कर इसको एक हजार वर्ष तक परतन्त्र और अपमानित होना पड़ा। आज हम स्वतन्त्र तो है परन्तु चरित्रहीनता के कारण देश की दशा दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। हर बुराई चरम सीमा पर है। यह देश के लिए एक गम्भीर सकट तथा भयंकर दुष्परिणाम का सूचक है। अत शासक वर्ग को इस चरित्रहीनता के अभिशाप को दूर करके अपने विवेक, साहस तथा आदर्श का परिचय देना होगा।

[१]

सत्य वक्ता वह गुणी वीर सदाचारी है।
प्राण से बढ़के जिसे अपनी प्रजा प्यारी है॥
जिसके शासन मे कोई मूर्ख न रोगी निर्धन।
ऐसा राजा ही सदा राज्य का अधिकारी है॥

[२]

धर्म राजा का करे अपनी प्रजा की रक्षा।
कर्म मानव का हो सतान की उत्तम शिक्षा॥
देश और जाति का उत्थान यदि करना है।
वेद ज्ञानी हो लगे वेद की घर घर कक्षा॥

आर्य समाज विधान सरणी का वार्षिकोत्सव

यह उत्सव एक प्रकार से बगाल का सम्मेलन के रूप मे ८ दिन का हुआ करता है इसमे सम्मिलित होने के लिये बिहार के, उत्तर प्रदेश, के दार्जिलिंग सिलीगुडी तक के मनुष्य इकट्ठ होते हैं। यह उत्सव इसवर्ष २० से २८ दिसम्बर ८६ तक मुहम्मदी पार्क मे मनाया गया।

आ० स० लाजपत नगर दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज लाजपत नगर दिल्ली का वार्षिकोत्सव पर दो द्विवसीय हिंदूसगठन सम्मेलन आयोजित किया गया। प्रथम दिवस ६ दिसम्बर शनिवार रात्रि ८ बजे सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजधानी के वरिष्ठ पत्रकार व आर्य जगत साप्ताहिक के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार ने देश व राष्ट्र शब्द मे अन्तर व राष्ट्र के स्वरूप की व्याख्या करते हुए ज्वलन्त समस्याओ पर प्रकाश डाला।

द्वितीय दिवस ७ दिसम्बर रविवार प्रात १० बजे अखण्ड भारत सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध जी ने विघटनकारी तत्वो द्वारा राष्ट्र की अखण्डता व सुरक्षा के खतरे का सकेत देते हुए राष्ट्रवासियो को एक जुट होने का आह्वान किया।

आर्य विद्वानो का अभिनन्दन

आर्य समाज लाजपत नगर के वार्षिकोत्सव पर पूज्य अमर स्वामी जी महाराज, प० शिव कुमार शास्त्री पूर्व सासद प० मेघश्याम वेदालकार, पं० इन्द्रसैन शर्मा का उनकी आर्य समाज के प्रति की गई सेवाओं, प्रचार-प्रसार मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का भव्य अभिनन्दन किया गया।

हैदराबाद सत्याग्रह पेंशन सम्बन्धी सूचना

भारत सरकार के गृह मन्त्रालय के स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग से पम्बन्धित गैर सरकारी सलाहकार समिति की बैठक में, जो १२ दिसं-ब्रर को स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता में हुई थी, अनेक उपयोगी विषयों पर चर्चा हुई। इस सम्बन्ध में स्वीकृत निश्चय अभी घोषित होने है। प्रति दिन आर्य सत्याग्रहियों की बढ़ती आयु (६०–८८ वर्ष) परिणाम स्वरूप हो रही बीमारी और मृत्युएं, उनकी विधवा पत्नियो जैसे अनेक मामलों को जल्दी निपटाने के लिए स्वामी आनन्द बोध सरस्वती गृहराज्य मन्त्री श्री चिन्तामणि पाणिग्रही से मिले और स काम में हो रही देरी की ओर उनका ध्यान खींचा। मन्त्री महोदय । इस बारे मे उचित व शीघ्र आदेश देने का वचन दिया। उन्होने न्यतम आवेदक होने से परिस्थिति का जायजा पर्यवेक्षक से लिया।

इस बीच आवेदकों के मामलो को शीघ्र निपटाने के लिए स्वतन्त्रता नानी सम्मान प्रभाग को अध्यक्ष महोदय ने आवश्यक आदेश भी दिये।

मुख्य समस्यायें दो प्रकार की हैं। पहली जिन्होंने पेंशन के लिए मय पर (३०–६–८६) निर्धारित फार्म पर आवेदन किया है, लेकिन समें विवरण (उदाहरणार्थ, जेल का प्रमाण पत्र, कारावास और रहाई की तारीखे) या बाद में निर्वाचित एम० एल० ए० अथवा म० पी० द्वारा आवेदक के साथ जेलों में रहने का प्रमाण पत्र नहीं ये और जहां जेलों के रिकार्ड नष्ट हो जाने या उपलब्ध न होने के रण न्यायालय के फैसले की प्रतिलिपि नहीं संलग्न की गई, उन मलों के निपटाने में देरी हो रही है। अनेक मित्रों ने इन कामों के ए जेल अधिकारियों या सरकार से पत्र व्यवहार करने का काम सभा र छोड़ दिया, जबकि यह काम इन्हीं को करना है। जेलों मे प्रमाण-त्र पाने के बारे में हमारे देखने में बहुत से मामले ये है कि जिनमें आवेदन डाक द्वारा भेजने पर दस दिन के भीतर धिकारियों ने प्रमाण पत्र भेज दिये। प्रमाण पत्र देने में जहां हैदराबाद र गुलबर्गा (कर्नाटक) जैसे स्थानों के अधिकारियों ने सुगमता से री कार्रवाई पूरी कर दीं, वहा निजामाबाद और औरंगाबाद सदृश ानो से प्रमाण पत्र बहुत कठिनाई से मिले हैं। कुछ छोटी जेलों से कार्ड नष्ट हो जाने के प्रमाण पत्र लोगो को मिले। कुछ स्थानो पर त्र भेजने मे और स्वयं जाने पर भी प्रमाण पत्र नहीं मिले। हमारे पास भी सूचना भी है कि कुछ मामलों में बिचौलियो और सरकारी कर्म-ारियो ने इन कामों के लिये धन लिया है। अनेक स्थानो पर आवेदको अपने कारावास या रिहाई की तारीखें ठीक तरह से याद न रहने के रण अथवा कुछ ने केन्द्रीय पेंशन पाने की खातिर कारावास की वधि गलत बताई और उनका रिकार्ड उनके बताये विवरण से मेल हीं खाता था।

यह भी देखने में आया है कि अनेक मामलों में ऐसे आवेदकों को न्द्र ने राज्य सरकार से जांच करने पर और फिर सिफारिश करके न्द्र को रिपोर्ट करने के लिए कहा है। इससे भी मामले तय होने मे ठनाई का सामना करना पड़ रहा है। इस मामले में दिल्ली प्रशासन (केन्द्र से) साढ़े चार मास कारावास भुगतने वालों की भी सिफा-रिश की है। अनेक सत्याग्रही, जिनके कारावास की अवधि केन्द्र द्वारा न्य अन्य आन्दोलनों को जोड़कर पांच मास बनती हो, वे भी केन्द्रीय सरकार से पेंशन के अधिकारी हैं। पांच मास से कम कारावास भुगतने लों के लिए राज्य सरकार द्वारा निर्धारित इस प्रकार की पेंशन की श और नियम अलग-अलग है। उन्हें राज्य से पता करना चाहिए।

दूसरी समस्या ऐसे सत्याग्रहियों की है, जिन्होंने सरकार द्वारा निर्धारित आवेदन की अन्तिम तारीख ३०–६–८६ तक अपने आवेदन निर्धारित फार्म पर केन्द्र और राज्य सरकारों को नहीं भेजे लेकिन बाद में उन्होंने (विशेषत: २२ नवम्बर के नवभारत टाइम्स में प्रकाशित सूचना के बाद) अपने आवेदन पत्र भेजे हैं। इनमें से जिन आवेदकों को भारत सरकार ने निर्धारित फार्म ३० जून तक नहीं भेजे थे, वे उस के बाद भी केन्द्र / राज्य को अपने आवेदन पत्र भेज सकते हैं। सभी आवेदक अपने कारावास / यातना के प्रमाण-पत्रों को शीघ्रातिशीघ्र सम्बन्धित सरकारों को भेज दें।

कुछ आवेदकों ने ३० जून से पूर्व इस सभा में अपने आवेदन पत्र भेजे। उनकी सूची (नाम और विवरण) केन्द्र के गृह मन्त्रालय को भेजी जा चुकी है। ऐसे व्यक्तियों को कारावास / यातना के प्रमाण के सरकारी रिकार्डों अथवा पुस्तकों, समाचार पत्रो की कतरनों, फोटुओं आदि से अपने विवरण सम्पुष्ट करने चाहिये। कारावास की अवधि के निर्णय होना तब भी शेष रहता है। सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर पेंशन दिये जाने के नियमों की सूचना न देने के कारण अब भी सैकड़ों व्यक्तियों को इस योजना की जानकारी नहीं है अनेक मामलों में केन्द्र से आवेदन निर्धारित अन्तिम तिथि तक न पहुंचने या बिना त्रुटि बताए अधूरा बताकर फार्म खारिज किये गये हैं।

आर्यसमाज के अधिकारियों को इस ओर ध्यान देकर सत्याग्रहियों का मार्गदर्शन करना चाहिए। ये लोग समाज की अमूल्य धरोहर और अभिमान की वस्तु हैं।

सच्चिदानन्द स्नातक

अवै० प्रेस एवं जनसम्पर्क सलाहकार

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह १५ जनवरी १९८७ मे समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २५) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८५ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

३३६, ८१८, १८१५, १९५७, २९६८, ५४३६, ६३२८, ६३३७, ६५७३, ६६९४, ८१८३, ८३८३, ८५०९, ८७००, ८७०९, ८७१३, ८७९१, ९०७५, ९०८६, ९३९०, ९७९२, १००६३, ११४४४, ११४६२, ११४७०, ११४७१, ११४७७, ११७८२, ११८१४, १२०७३, १२०८१, १२०८४, १२०९०, १२०९६, १२२९२, १२५४९, १२५५५, १२५७०, १२५७१, १२८१४, १३०३३, १३०३५, १३०४२, १३३७०, १३३७२, १३३८६, १३३८८, १३३९५, १३३९८, १३४००, १३४०२, १३४०६, १३४११, १३४१६, १३६६७, १३६६८, १३६६९, १३६७०, १३६७१, १३६७७, १३६७८, १३६७९, १३६८०, १३६८१, १३६८२, १३६८३, १३६८४, १३६८६, १३६८७, १३६८९, १३६९०, १३६९१, १३६९२, १३६९३, १३६९४, १३६९५।

विनीत–

—व्यवस्थापक

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोला-झाल मेरठ का वार्षिकोत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न

दि० १३ तथा १४ जनवरी १९८७ मकर सौर संक्रान्ति पर्व के शुभ अवसर पर गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। दि० १३।१।८७ को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान के अन्तर्गत दोपहर १ बजे से गुरुकुल भूमि में शोध कक्ष में वेद शोध गोष्ठी का शुभारम्भ हुआ। विषय था औपनिषदी संस्कृति। अध्यक्षता स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य गुरुकुल ने की। संयोजक थे डा० निरूपण जी विद्यालङ्कार आचार्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय सर्व प्रथम डा० रामनाथ जी सुमन का एवं श्रद्धेय आचार्य विशुद्धानन्द जी का नारिकेल आदि से प्राचीन पद्धति से सत्कार हुआ। डा० रामनाथ सुमन ने उपनिषद् काल संस्कृति पर प्रकाश डाला। आदरणीय श्रीयुत् आचार्य विशुद्धानन्द जी ने संस्कृत काव्य से अपना पत्र प्रारम्भ किया। अपना शोध पत्र संस्कृत में पढ़कर श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। तत्पश्चात् हिन्दी में ओजस्वी शब्दों मे विषय पर प्रकाश डाला। श्री इन्द्रराज जी मन्त्री गुरुकुल एवं प्रधान आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश ने उपनिषद् की इन्द्र और विरोचन की कथा सुना कर औपनिषदिक संस्कृति को आध्यात्मिक संस्कृति के रूपमें प्रस्तुत किया तथा पश्चिम को विरोचन की अर्थात्–आसुरी संस्कृति का अनुसरण करने वाला कहा। गोष्ठी प्रारम्भ में संयोजक डा० निरूपण जी ने विषय की भूमिका पर अच्छा प्रकाश डाला। अन्त में अध्यक्ष स्वामी विवेकानन्द जी ने समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान का परिचय देते हुए विषय का उपसंहार कर विशेष वक्ताओं का धन्यवाद किया। उक्त दिन का भोजन एवं जलपान श्रीमती कैलाशवती जी प्रधाना स्त्री आर्य समाज मेरठ शहर की ओर से था।

दि० १४।१।८७ को सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति प्रातः १०॥ बजे हुई। यजमान श्रीमती कैलाशवती जी एवं उनका परिवार था। ब्रह्मा स्वामी विवेकानन्द जी ने हार्दिक आशीर्वाद दिया। आज का समस्त भोजन व्यय श्री विनोद कुमार जी डेल्टा मेरठ की ओर से था एवं श्री आनन्द प्रकाश जी सरधना वालों की तरफ से प्रसाद वितरण हुआ एवं शेखपुरी ग्राम की ओर से प्रतिवर्ष की भांति गुड़ का प्रसाद वितरित किया गया। आज के विशिष्ट अतिथि आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य विशुद्धानन्द जी थे। ब्रह्मचारियों ने स्वागत गीतिका से उनका अभिनन्दन किया तथा श्री गुरुकुल मन्त्री इन्द्रराज जी ने वेदार्थ कल्पद्रुम के रूप में वेदार्थ पारिजात का उत्तर लिखने पर आचार्य श्री जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। ब्रह्मचारियों द्वारा कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। ब्र० भूपेन्द्र ने "संस्कृत का महत्व" पर, ब्र० प्रदीप ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति" पर, ब्र० कर्मवीर ने "गुरुकुल शिक्षा" पर, ब्र० विद्यानन्द ने संस्कृत में 'कर्म काण्डेषु पुनरावृत्ति' पर भाषण दिए। ब्र० कृष्णदत्त, नरेन्द्र, पुनीत एवं संजीव ने संस्कृत में एक संवाद प्रस्तुत किया, इनमे से एक मौलवी, दूसरा पादरी, तीसरा नास्तिक और चौथा वैदिक धर्मी बना। संवाद बड़ा रुचि पूर्ण रहा। संजय कुमार ने 'धर्म क्या है' तथा ब्र० योगेन्द्र ने 'संस्कृत भाषायाः महत्वम्' पर अपना-अपना भाषण किया। अन्त में आचार्य विशुद्धानन्द जी ने अपना प्रभावशाली प्रवचन देकर श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। इस अवसर पर आचार्य विशुद्धानन्द जी द्वारा गुरुकुल की हस्तलिखित त्रैमासिक पत्रिका अनन्त विजयम् में वाग् वर्धिनी परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक प्रतिस्पर्धा के अन्तर्गत प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले ब्रह्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। प्रथम ब्र० सुमेद प्रसाद पुरस्कृत रचना–'रक्षा मे हत्या'। द्वितीय दयाशंकर पुरस्कृत गद्य रचना श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जीवन झलकी। तृतीय गद्य पुरस्कृत रचना 'पुनरुद्धार का मार्ग'। तृतीय पद्य संस्कृत पुरस्कृत, रचना 'आश्रम वर्णनम्'। गुरुकुल प्रधान श्री मनोहर लाल जी ने सबका धन्यवाद किया। मध्याह्नोत्तर में ब्रह्मचारियों ने सूत्रान्ताक्षरी, श्लोक–अन्ताक्षरी एवं-मन्त्रान्ताक्षरी बड़ी सफलता पूर्वक प्रस्तुत की। केन्द्रीय आर्य समिति के प्रधान श्री मानसिंह जी वर्मा ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति को शिक्षा का वास्तविक समाधान बताया। श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान ने गणतन्त्र दिवस का बहिष्कार करने वाले शहाबुद्दीन पर देशद्रोह का मुकदमा चलाने का केन्द्रीय सरकार से अनुरोध करते हुये पंजाब में हत्या काण्डों का रोकने का आग्रह किया तथा गुरुकुल शिक्षा पद्धति को ही पुनः स्थापित करने का आग्रह किया क्योंकि इसी पद्धति द्वारा मानव का निर्माण हो सकता है। अन्त में स्वामी विवेकानन्द जी ने आशीर्वाद दिया। इस प्रकार वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज स्वरूप नगर, कानपुर का वार्षिकोत्सव

दिनांक ५, ६, ७ व ८ फरवरी १९८७, दिन बृहस्पतिवार, शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार को आर्य नगर धर्मशाला, आर्य नगर, कानपुर में परम हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के निम्नलिखित उच्चकोटि के विद्वान एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

१– श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' वेद वारिधि (लखनऊ)।
२– प्रो० उत्तमचन्द जी 'शरर' (पानीपत)।
३– आचार्य रमेशचन्द्र जी एम० ए० (लखनऊ)।
४– श्री सोहनलाल 'पथिक' संगीताचार्य (पलवल, हरियाणा)

कार्यक्रम

दिनांक ५ फरवरी बृहस्पतिवार से ७ फरवरी शनिवार तक। नित्य प्रातः ७ बजेसे १० बजे तक, सायं ५ बजे से ९ बजे तक यज्ञ, भजन एवं वेदोपदेश।

दिनांक ८ फरवरी रविवार, प्रातः ७ बजे से ११ बजे तक।
यज्ञ, भजन, उपदेश एवं यजमानों को आशीर्वाद व पूर्णाहुति।
१२ बजे ऋषि लंगर—

आर्य समाज बिसौली बदायूं द्वारा प्रस्ताव

(१) आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के समानान्तर सभा की काल्पनिक घोषणा का मेरठ में सभा शताब्दी समारोह के आयोजन को अनुचित तथा विघटन कारी मानते हुए परमपिता परमात्मा से इन गुमराह आर्य बन्धुओं को सद्बुद्धि की कामना की गई।

(२) पंजाब में आतकवादियों द्वारा निर्दोष मारे जाने वाले नागरिको के प्रति शोक प्रस्ताव पारित किया साथ ही हिन्दू समाज के अभिन्न अंग सिक्खों में उग्रवादी कहे जाने वालो को प्रभु से सद्बुद्धि की कामना की।

नेपाल में आर्य समाज का विकास

श्री रामचन्द्र सिंह क्रान्तिकारी बारा, नेपाल

भारत वर्ष के उत्तरी भाग मे विश्व के सर्वोच्च शिखर माउन्ट एवरेष्ट के गोद मे विश्व का एक मात्र हिन्दू राज नेपाल अवस्थित है। भौगोलिक रूप से हिमाली, पहाडी और समतल मैदानी भागो मे बटा यह नेपाल शदियो से एक स्वतन्त्र, सार्वभौम सत्ता सम्पन्न राजतन्त्रात्मक हिन्दू राज्य है। यहाँ के कुल जनसख्या के करीब ९० प्रतिशत लोग हिन्दू धर्मावलम्बी है। बाकी १०/ प्रतिशत मे बौद्ध, जैन, मुसलमान और ईसाई हैं। फिर भी यहाँ धार्मिक मेल मिलाप का अच्छा उदाहरण मिलता है। वैदिक धर्म के ऊपर भारत वर्ष मे जब विधर्मियो ने अपना साम्राज्य जमाना शुरू किया तो इसके कुप्रभाव से नेपाल भी नहीं बच सका। नपाल मे विदेशियो का शासन तो नहीं हुआ लेकिन यहा के वैदि सभ्यता के ऊपर पोप पडितो का प्रभाव पडने से मूर्ति पूजा बलि प्रथा तथा मास और शराब सेवन विकृतिया उत्पन्न हो गई। भारत मे स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज के स्थापना के बाद जो धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति हुई उसके प्रभाव से प्रभावित होकर नेपाल के युवक श्री माधवराज जोशी ने सन १८९६ मे काठमाण्डो मे आय समाज का प्रचार कार्यालय का स्थापना किया। इस समाज के स्थापना के बाद लोगो मे जो जागृति देखने मे आयी वह तत्कालीन राणा प्रधान मन्त्री, जो कि उस समय के प्रमुख शासक हुवा करते थे, श्री जग शम्शेर के आखो मे काटा जैसे चुभने लगा फलस्वरूप उन्हाने आय समाजियो का कैद करा कर उन्हे सामाजिक बहिष्कार का आदेश लागू करवा दिया। कैद से छुटने के बाद श्री माधवराज जोशी ने दार्जिलिंग मे अपना काय शुरू किया। सन १९२० के आस पास माधवराज जोशी का पुत्र अमरराज और शुक्रराज सिंह दरा गुरुकुल मे पढकर काठमाण्डो लौटने पर फिर आर्य समाज का स्थापना किया। इसके बाद फिर राणा सरकार ने आर्य सामाजियो को कैद कर लिया। कैद से छूटने के बाद आय समाजियो ने "मलामी गुठी" नामक सस्था का स्थापना कर अपना कार्य शुरू किया फिर भी राणा सरकार ने उन्हे नहीं छोड़ा। किसी को फासी किसी को कैद और किसी को देश से निकाल दिया। उसके बाद नेपाल मे आर्य समाज प्राय मृत सा हो गया।

लम्बे समयन्तराल के बाद सन् १९८१ में नेपाल के प्रवेश द्वार वीरगज मे आयोजित विश्व हिन्दू सम्मेलन जिसका उद्घाटन नेपाल नरेश श्री ५ महाराजाधिराज वीरेन्द्र वीर विक्रम शाहदेव के हाथो हुआ, हिन्दू धर्मावलम्बियो मे आर्य समाज की आवश्यकता महसूस हुई। पोप पडितो के वर्षो शोषण से पिडित नेपाली जनता मे स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वेद सम्मत सिद्धान्त के प्रति आशा उत्पन्न हुआ। जिसके फलस्वरूप तराई भाग मे जगह जगह पर वैदिक सिद्धान्त मे यज्ञ होना प्रारभ हो गया है। पर्सा जिला के भेडीहारी, सबैठवा, लहावर थकरी और उनके गावों मे आय समाज के स्थापना के साथ-साथ पर्सा जिला के मुख्यालय वीरगज मे जिल्ला प्रतिनिधि सभा का भी गठन हो चुका है। पिपरा-वीरवल मे विश्व हिन्दू सस्कृति विद्यापीठ की स्थापना हुई। तथा गुरुकुल स्थापना होकर वैदिक शिक्षा का प्रचार कार्य आरम्भ हो चुका है। सन् १९८५ मे पूर्वी नेपाल के सुनसरी जिला के मुख्यालय विराटनगर मे स्थानीय धर्मप्रेमी कार्यकर्त्ता श्री सीताराम जी अग्रवाल के सक्रियता से महात्मा आनन्द बोध स्वामी के उपस्थिति मे एक बृहद् वैदिक यज्ञ भी सम्पन्न हुआ। जिसका उद्घाटन भू० पू० प्रधान मन्त्री श्री नागेन्द्र प्रसाद रिजाल के हाथो हुआ। पर्सा जिला के धर्म प्रेमी कार्यकर्त्ता श्री नथुनी प्रसाद जी आर्य के सक्रियता से विगत ५-६ वर्षो से प्रत्येक साल हर एक आर्य समाजो तथा जिल्ला समाज मे वार्षिक समारोह नियमित रूप से सम्पन्न होते आ रहे है। जिसमे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् उपदेशक तथा भजनोपदेशको की उपस्थिति रहती है। सन् १९८५ के नवम्बर मे पर्सा जिला के हरिहरपुर बिर्त्ता गांव में पोप पडितो ने शास्त्रार्थ के लिये आर्य विद्वानों को आमन्त्रित किया। और जब आर्य जगत् के विद्वान वहा पहुचे तो पाप पडितो छोडकर भाग खडे हुए। फलस्वरूप आम जनता में आर्यसमाज के प्रति और गहरी आस्था उत्पन्न हो गयी है। विश्व के एक मात्र हिन्दू देश नेपाल में वैदिक सस्कृति के विकास के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा २-४ योग्य विद्वान् उपदेशक तथा भजनोपदेशक स्थायी रूप से नियुक्त कर दें तो आर्य समाज नेपाल में अच्छी तरह फल फूल सकता है। अन्त में नया साल सन् १९८७ के शुभ गमन के शुभ अवसर पर ईश्वर से प्रार्थना है कि सम्पूर्ण मानव जाति को सदबुद्धी प्रदान करें। सभी जीव सुस्वस्थ्य एवं दीर्घायु हो।

निर्वाचन

आर्य समाज हरिपुर (बलिया)
प्रधान श्री बच्चन शर्मा
मन्त्री श्री श्री प्रकाश
कोषा० श्री जयप्रकाश

आर्य समाज पिलखुआ गाजियाबाद
प्रधान श्री शान्ति प्रकाश जी
मन्त्री श्री डा० वेदप्रकाश जी गुप्त
कोषा श्री कृष्णानन्द आय

आर्य समाज चित्रगुप्त गंज लश्कर ग्वालियर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आय समाज चित्रगुप्त गज लश्कर ग्वालियर में हुतात्मा तथा बलिदानी अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का ६० वा बलिदान दिवस २३ दिसम्बर को समारोह से मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि थे, श्री रामचन्द्र जी 'विकल' ससद सदस्य नई दिल्ली। इस अवसर पर, श्री 'विकल' जी ने उपस्थित विशाल जन समूह के मध्य अपने ओजस्वी व्याख्यान में भारतीय स्वाधीनता सग्राम म आय समाज की महत्व तथा आय समाज प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के सराहनीय कार्यों की चर्चा की। उन्होंने यह भी बताया कि किस तरह से महर्षि ने आजादी की नींव भारत में डाली और किन तरह उनके अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश के स्वाधीनता के लिये अपनी आत्माहुति दी तथा उनके पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द का अनुकरण करके भगतसिंह, चन्द्र शेखर आजाद, और राम प्रसाद बिस्मिल जैसे, अनेका नेक क्रांतिकारी देश हित के लिये शहीद हुए। अमर हुतात्मा के इस पावन बलिदान दिवस पर श्री 'विकल' जी ने, वर्तमान समय में आर्य समाज की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि देश की एकता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये आर्य समाज आगे आये। तथा वर्तमान पीढ़ी में देश भक्ति की भावना पैदा करें।

अमरशहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल के साथ अन्याय और धोखा

काकोरी षड्यन्त्र के अमर शहीद पं० रामप्रसाद बिस्मिल ने जेल में फांसी लगने से दो दिन पूर्व 'आत्म कथा' लिखी थी। यह आत्म चरित्र है हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आत्म चरित्र जिसको ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया था। जब्ती के तीस साल बाद इस आत्म कथा को प्रकाशक–रामलालपुरी, संचालक आत्मा राम एण्ड सन्स दिल्ली–६ ने श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के सम्पादकत्व में दूसरी बार प्रकाशित किया। इस आत्मकथा में पं० राम प्रसाद बिस्मिल ने अपने जेल के अनुभव और व्यवहार के आधार पर अपने साथ बंगाली क्रान्तिकारियो के विषय में लिखा है-'जिन महानुभावों को मैं त्याग की मूर्ति समझता था, उनके अन्दर भी बंगालीपने का भाव देखा। मैंने जेल से बाहर कभी स्वप्न में भी यह विचार न किया था कि क्रांतिकारी दल के सदस्यों में भी प्रान्तीयता के भावों का समावेश होगा मैं तो यही समझता रहा कि क्रान्तिकारी तो समस्त भारत को स्वतन्त्र करने का प्रयत्न कर रहे हैं, उनका किसी प्रान्त विशेष से क्या सम्बन्ध ? परन्तु साक्षात देख लिया कि प्रत्येक बंगाली के दिमाग में कविवर रवीन्द्रनाथ का गीत 'अमर सोनार बंगला, आमितोमा के भालो बासी' मेरे सोने का बंगाल, मैं तुझसे मुहब्बत करता हूं। ठूंस-ठूंस कर भरा था।'

इस आत्म कथा के साथ ही परिशिष्ट एक में प्रसिद्ध लेखक क्रांतिकारी श्री मनमथनाथ गुप्त ने लिखा है–"यदि एक या चार या पांच या दस बंगाली क्रान्तिकारियों ने गल्ती की भी (मैं दिखा चुका हूं कि उन्होंने कोई गल्ती नहीं की) तो भी इस बात को वह रूप देना, जो पण्डित जी ने दिया, सम्पूर्ण रूप से अप्रत्याशित और अनुचित था। यह बहुत उचित होता यदि श्री मनमथनाथ गुप्त अपना मत अलग से प्रकाशित कराते। अमर शहीद अन्तिम धरोहर "आत्म कथा" के साथ ही अपना मत (असंगत और अनपेक्षित) प्रकाशित कराना क्या प्रकाशक सम्पादक और श्री म० ना० गुप्त जी का पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल की शहादत के बाद उनकी आत्मकथा में वर्णित किसी कथन का स्पष्टीकरण किसी अन्य लेखक द्वारा प्रकाशित कराना उस प्रेरणादायक अमर कृति की उपयोगिता को कम करने की दिशा में एक कदम माना जा सकता है।

पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल ने आत्म कथा में यह भी लिखा था–'मेरी यह इच्छा हो रही है कि मैं उन कविताओं में से भी चन्द का यहां उल्लेख कर दूं; जो कि मुझे प्रिय मालूम होती है और मैंने यथासमय कण्ठस्थ की थी।' उनकी प्रिय कविताओं को १९८५ संस्करण में प्रकाशित न करना क्या प्रकाशक आत्मराम एण्ड सन्स का उस अमर शहीद की इच्छा के प्रति विश्वासघात नहीं है? इस संस्करण में समस्त पाठकों को उन कविताओं से वंचित रखना क्या उनके प्रति अन्याय और धोखा नहीं है ?

प्रकाशक महोदय से आशा की जा सकती है कि–'आत्म कथा' के आगामी संस्करण में अमर शहीद की प्रिय कविताओं को भी प्रकाशित किया जायेगा और श्री मनमथनाथ गुप्त द्वारा लिखित परिशिष्ट एक को निकाल दिया जायेगा।

–अनूपसिंह
प्र० सम्पादक–'अनूप सन्देश'
देहरादून

–आर्यसमाज दर्शनपुरवा कानपुर मे दिनांक २-१-८७ दिन शुक्रवार को जन्मना ईसाई युवक रोबिन पुत्र-फिलिप को शुद्ध कर वैदिक धर्म में प्रवेश कराया गया तथा उसका नाम रमेशचन्द्र रखा गया। उसका विवाह एक योग्य कन्या चन्दा के साथ वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न हुआ।

उठो आर्य वीरो !

उठो आर्य वीरो बिगुल बज रहा है।
गया वक्त सोने का क्यों सो रहा है ॥

अधर्मी करोड़ों मिटाते वतन को।
सदा लूटते फूल के तेरे चमन को ॥
तू नादान इतना अभी सो रहा है।
गया वक्त सोने का क्यों सो रहा है ॥

भाई तुम्हारे करोड़ों मिटाए।
पूजास्थल तुम्हारे हजारों गिराए ॥
ध्वजा ओ३म् की है हाथ तेरे।
धर्म का पुजारी अभी सो रहा है ॥
गया वक्त सोने ... ...

तन हो तुम्हारा वज्र की भांति।
मन हो तुम्हारा समुद्र की भांति ॥
पवन बन, चट्टान अधर्म की गिराओ।
क्षत्रिय बन, बाण अग्नि के चलाओ ॥
सुदर्शन तेरे हाथ क्यों रुक रहा है।
गया वक्त सोने ... ...

ना खौला अभी खून तेरे बदन का।
चूमा जाता सदा लाल तेरे वतन का ॥
गौ–गंगा का अपमान करते अधर्मी।
मातृ-शक्ति का अपमान होता सदा ही ॥
नारी जाति का व्यापार नहीं रुक रहा है।
गया वक्त सोने ... ...

कमर बांधकर तुम खड्ग हाथ में ले लो।
गद्दार अधर्मी को ललकार दे दो ॥
तू है सुभाष, शिवा और बिस्मिल।
क्यों आलस्य मे जीवन पड़ा खो रहा है ॥
गया वक्त सोने का क्यों सो रहा है।

–पूर्ण प्रकाश मित्तल, मण्डल संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, बिजनौर

आवश्यक सूचना

सभान्तर्गत समस्त आर्यसमाजों और आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं को सूचित किया जा रहा है कि ३१ दिसम्बर ८६ को वर्ष समाप्त हो चुका है अतः सभा के नियमानुसार वर्ष १९८६ निमित्त कार्यालय से वार्षिक चित्र भेजे जा रहे हैं।

१५ जनवरी ८७ तक आर्य सभासदों की सूची बनाकर २८ फरवरी तक निर्वाचन कर लें–तत्पश्चात वार्षिक चित्रों की सही खाना पूरी कर के सभा प्राप्तव्य धन सहित सभा कार्यालय ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ कोभेजने की कृपा करें।

जिन समाजों को वार्षिक चित्र प्राप्त न हुये हों, वह सभा कार्यालय को पत्र लिखकर मंगा लें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

सूचना

आर्यसमाज बकसीपुर जि० हरदोई के प्रधान ठा० योगेन्द्रपालसिंह जी के सुपुत्र धर्मसिंह की हत्या बदमाशों ने करदी।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करें। –ब्रह्मानन्दार्य प्रचारक सभा

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 41913 ४५६६३०
पञ्जीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी. ७६
माघ शुक्ल ३
रविवार, १ फरवरी १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

समवेदना

निम्नलिखित आर्यों के दिवंगत होने के समाचार प्राप्त हुए हैं जिसके लिए सभा संवेदना व्यक्त करती है—

१—आर्य समाज फतेहाबाद आगरा के भू०पू० पदाधिकारी श्री माता प्रसाद जी बैरोठिया।

२—बदायूं जनपद के कर्मठ आर्य कार्यकर्ता श्री पं० धर्मपाल जी विद्यालंकार की धर्मपत्नी।

३—आर्यसमाज दर्शनपुरवा कानपुर के उपप्रधान श्री कर्णसिंह जी के बड़े भ्राता।

दिवंगत आत्माओं के धैर्य तथा प्रियजनों के शान्ति हेतु प्रभु से प्रार्थना है।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से त्रिलोक्यनाथ प्रिंटिंग प्रेस ९ कुन्दनबाग, लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म् आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० १२४१/५७

घोषणा पत्र स० ३/१८०० ८१

माघ शुक्ल १०, रविवार, सवत् २०४, वि० दिनांक ८ फरवरी १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल—

विक्रमादित्य 'वसन्त'
देव वारिधि

★

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड
एक प्रति	६० पैसे

वर्ष ८०

अङ्क ६

प्रभु की अमृत वाणी—

दानवता के हनन के लिए आत्म शक्ति की वृद्धि करें।

आ न इन्द्र पृक्षसेऽस्माक ब्रह्मोद्यतम।
तत्वा याचामहेऽव: शुष्ण यद्धन्नमानुषम् ॥

[विपव ऐन्द्र प्राजापात्यो वा वसुक्रद्द वासुक ॥ इन्द्र ॥ आर्च्यनुष्टप]   (ऋ० १०–२२–७)

दानव अमानुष होते हैं। उनमे न दया होती है न साधुता न सज्जनता और न ही का मानवता। दानव सदैव कठोर निर्मम पाषाण हृदयी क्रूर और हिंसक होते हैं। छल कपट धोखा द्वेष वैर उत्पन्न्य और विनाश उनका स्वभाव होता है।

मानव चूंकि साधु और सज्जन स्वभाव के होते हैं अतएव वे प्रेम और शान्ति से रहना चाहते हैं। वे 'जियो और जीने दो' की जीवन पद्धति को अपनाते हैं। उनसे जो शत्रुता रखता है उससे भी वे स्नेह और त्याग से मित्र बनाने की आकांक्षा रखते हैं परन्तु उनकी इस भावना को दानव उनकी कायरता और दुर्बलता समझकर उन पर और अधिक शोषण प्रहार करते हैं।

ऐसी विषम परिस्थितियों मे साधारण जनों का आतंकित होकर भयभीत होना सर्वथा स्वाभाविक है और वे मानव समूह में ऐसे वीर नायकों की कामना करते हैं जो इन दानवों को ललकारें उनसे लोहा लें और उन्हें विनष्ट कर दें।

भय की पराकाष्ठा ही साहस है। ज्ञानी और ध्यानी इस सत्य का साक्षात्कार करते हैं कि दानव परमात्मा से अधिक शक्तिशाली नहीं है। वह सर्वशक्तिमान जब साथ है तो भय किस बात का? आत्मा अजर और अमर है। परमात्मा की पुनीत वाणी के माध्यम से ऐसे वाग्वज्र उठते हैं—

(इन्द्र) हे इन्द्र! शत्रु विनाशक! [२] (न आ पृक्षसे) हमे सब प्रकार से स्पर्श कर रहा है तेरी शक्ति का हमे सतत आत्मा मे बोध हो रहा है। (अस्माक ब्रह्म उत यतम्) हमारा ब्रह्म ज्ञान उदीयमान हो गया है। आत्मस्वरूप को पहचान कर हमारा आत्म सत्त्व ऊंचा उठ गया है और हमारी एकमेव कामना है (त्वा तत् अव शुष्ण याचामहे) तेरे रक्षाकारी बल की हम याचना करते हैं क्योंकि उसे प्राप्त करके ही (यत अमानुष हन) जो अमानुषता है, दानवता है उसका हनन करने में विनाश करने मे हम समर्थ होंगे।

आर्यो! उठो! उस परम देव की शक्ति को आत्मा मे संजोओ और दानवता से धरती को मुक्त कर के सज्जन मानवों का त्राण करो ताकि आर्यत्व की पावन ज्योति मे यह धरा पुन जगमगा उठे।

दानवता के हनन के लिए उठो आर्यो!
करो भीतर आत्म शक्ति का संचित।
वह सब शक्तिमान तो तुम्हारे साथ है।
करो स्पर्श उसकी शक्ति का तुम सतत॥

उदीयमान करो उस दिव्य ज्ञान को।
उठाए जो आत्म सत्त्व को करे न भ्रमित।
अमानुष का विनाश दानवता हनन।
पावन व्रत धर्मी का होवे वसन्त।

—वसन्त

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ।।

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

सम्पादक— रविवार ८ फरवरी १९८७, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

मधुमाधवौ वसन्तः स्यात्

ऋतुएं ऋत की प्रतीक हैं। वेदानुसार संवत्सर चक्र की छहों ऋतुएं समान रूपेण सुहावनी हैं, चाहे वह वसन्त हो, चाहे ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त अथवा शिशिर। इन ऋतुओं में वसन्त को ऋतुराज कहा जाता है क्योंकि इस ऋतु के आगमन से जल थल में एक अपूर्व छबि छा जाती है। समस्त प्रकृति देवी एक नवल रंग में रंग जाती है। वन उपवन में एक नव यौवन आ जाता है। इस ऋतुराज के अवसर पर इतने पुष्प खिलते हैं कि मन्द सुगन्ध युक्त समीर सर्वत्र प्रवाहित होने लगता है। आयुर्वेद के अनुसार इस ऋतु में स्थावरों अर्थात् वनस्पतियों में नवीन रस का संचार होता है। जंगमो शरीरों में भी नवीन रुधिर का प्रादुर्भाव होता है जो उनमें उमंग और उल्लास की अभिवृद्धि करता है।

आर्यावर्त्त मे वन उपवन में विहार करनेवाले मानवों ने इस प्राकृतिक शोभा का निरीक्षण करते हुए उल्लास के स्वर में स्वर मिलाने के लिए वसन्त पञ्चमी पर्व की रचना की थी। इस अवसर पर आनन्दानुभूत होने के लिए विशाल भवन महोत्सवो के आयोजनं किये जाते थे और मानव जीवन को आनन्द मय बनाकर वेद की इस सूक्ति को सार्थक करना था—"इह रतिः, इह रमध्वम्" (यजु० ८। ५१) अर्थात् यहां, इस संसार में रमणीयता है, यहां रमणीयता से रमण करो।

अपने विद्यार्थी जीवन में मैंने उन सरस दृश्यों को देखा था जब मानव पीत वासन्ती वस्त्र धारण कर प्रकृति के साथ एक रूप हो जाता था। आकाश मे पीली पतगें और पीले गैसगुबारे उड़कर आकाश को भी वसन्ती रंग मे रङ्ग देते थे। समस्त धार्मिक सम्मेलनों में नर-नारी वसन्ती वस्त्रों को धारण किए हुए सम्मिलित होते थे और प्रत्येक परिवार में केसरी रंग का हलुवा बनता था और प्रसाद रूप में उसे या पीले लड्डू बांटे जाते थे। आर्य समाज के अनेक वार्षिकोत्सव भी इस अवसर पर आयोजित होते थे अथवा इस पर्व को विशेष रूप से प्रीति पूर्वक मनाया जाता था। बच्चों की खेल कूद की प्रतियोगितायें होती थीं, पुरुस्कार वितरित किए जाते थे। रात्रि के अधिवेशनों में अपार जन-समूह एकत्रित होता था। उस समय ध्वनि विस्तारक यन्त्र नहीं होते थे। रात के दो बज जाते थे। उपदेशकों के कंठ जवाब दे जाते थे। वे जनता से हाथ जोड़ कर अगले दिन पधारने के लिए निवेदन करते परन्तु जनता उठने का नाम नहीं लेती थी।

मेरे मानस पटल पर अब भी वे सुखद स्मृतियां अंकित हैं जो वसन्त ऋतु के आगमन पर सजीव हो उठती हैं। उस समय आर्य समाजों में कोई वाद विवाद नहीं थे, न परस्पर कोई मन मुटाव होता था, न ही पदों को ग्रहण करने का उन्माद होता था। आर्य समाज में प्रवेश आर्य बनने के लिए होता था और पद भार सेवा करने के लिए ग्रहण किया जाता था। आर्य समाज के पदाधिकारी बच्चों और नव युवकों को पूरा प्रोत्साहन देते थे और प्रीति पूर्वक संध्या यज्ञ, मन्त्र पाठ आदि सिखलाया करते थे। यथार्थ में वह युग आर्य समाज का एक वसन्त काल था और आशावादी वैदिक धर्म हृदय में इस आशा को पुनः संजोता है कि ऋतु चक्रानुसार वह वसन्त पुनः आएगा जब आर्य समाज के सदस्य इस तथ्य को आत्मसात करेंगे कि आर्य समाज आर्यों का समाज है अनार्यों का नहीं और आर्य उन्हें कहते हैं जिनके जीवन शुद्ध और पवित्र हों, जिनके अन्तःकरण में सत्य हो, ईमानदारी हो, सामाजिक व्यवहार शुद्ध हो, धन और जन के विषय में सच्चे और सुच्चे हों। आर्य का अर्थ ही है, सुशील, शुद्ध और शालीन। वास्तव में 'आर्य' वही हैं जिसे संसार आर्य कहे और संसार उसे ही आर्य कहेगा जो मन वचन और कर्म से श्रेष्ठ होगा।

विडम्बना तो आज यह है कि आर्य समाज का सदस्य न तो स्वयम् जानता है कि आर्यत्व क्या होता है और न ही उसे ऐसा बोध कराया जाता है। यदि हम आर्यत्व को धारण कर आर्य समाज में पुनः उस वसन्त को लाना चाहते हैं, जिसके लिए वेद ने कहा है—

वसन्तेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः ।
रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः ।।

(यजु—२१।२३)

तो हमें आर्यत्व के इन लक्षणों को जीवन में उतारना होगा यथा—

(१) 'आर्याः ज्योतिर् अग्राः' आर्य वह है जो ज्योति का अनुगामी है। किस ज्योति का? ज्ञान के आलोक का, आत्म ज्योति का, ब्रह्म के प्रकाश का।

(२) 'आर्यः सकर्मा' जो व्यावहारिक पुरुष है, जो कथनी के आदर्श को 'करनी में उतारता है वही आर्य है।

(३) 'आर्यः चरित्रवान' आर्य चरित्रवान होता है आर्य वही है जो नारी के गौरव और पावन स्वरूप अर्थात् मातृत्व को आत्मना स्वीकार कर, उसे महान बनाता है, पूजनीया बनाता है, भोग-विलास की सामग्री नहीं।

(४) 'आर्यः इन्द्रजितः' जो इन्द्रियों को वश में रख कर उनका स्वामी अर्थात् इन्द्र बनता है। ऐसे मानव को ही आर्य कहते हैं।

(५) 'आर्यः आस्तिकः' जो ईश्वर में पूर्ण आस्था रखता है। उसके न्याय नियम को स्वीकार कर दुःखों और विपत्तियों को सहर्ष झेलता है। वह ही आर्य कहलाता है।

यदि उपरोक्त पांच [गुण] मानव में आ जाए तो वह आर्यत्व से विभूषित हो जाए। विश्व का आर्य करण वही करेगा जो प्रथम अपना आर्य करण करेगा। जिसके जीवन में यह आर्यत्व आयेगा उसी के जीवन में आनन्दप्रद वसन्त आएगा और उसका सुवासित जीवन वेद के शब्दों में यह कह उठेगा—

'वसन्त इन्नु रन्त्यो'
(साम० ६१६)

अर्थात् (वसन्तः इत् नु रन्त्यः) वसन्त ही निश्चयात्मक रूप से रमणीय है।

—'वसन्त'

भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता

—ब्रह्ममित्र अवस्थी
स्वामी केशवानन्द योग संस्थान ८/३ रूप नगर, दिल्ली–७

[गतांक से आगे]

किन्तु जहां तक हम और आप सभी यह समझते हैं कि हम दुःखों के बीच फंसे हुए हैं और दुःखों से छूटना चाहते हैं, तथा गौतम कपिल और बुद्ध की कल्पनियों का विज्ञापन यदि सही है कि उनकी दर्शन (चिन्तन) रूप औषधि दुःख रूपी रोग को मिटा सकती है, तो हमें इन दर्शन रूपी औषधियों को प्राप्त करके उनका सेवन अवश्य करना चाहिए।

अष्टांग हृदयम् के प्रणेता वाग्भट्ट का यह कथन कि "सुखार्थाः सर्वभूतानां मताः सर्वाः प्रवृत्तयः" [आचाराध्याय २] सत्य है इसमें कोई सन्देह नहीं है, ऐसा मैं समझता हूं, और इसी कारण उपर्युक्त तीनों दर्शनों की प्रासंगिकता में वर्तमान ही नहीं किसी काल में भी संदेह नहीं होना चाहिए ऐसा मुझे लगता है। मैं समझता हूं आप भी इससे सहमत नहीं होंगे।

इस प्रसंग में एक प्रश्न उत्पन्न हो सकता है, दार्शनिकों के मन में तो यह प्रश्न अवश्य उठना ही चाहिए कि हम संसार को दुःखमय मानते हैं, इतना तो ठीक है, किंतु क्या उसका अभाव मात्र पर्याप्त है? अथवा दुःख के अभाव के बाद तत्स्थानीय सुख नामक पदार्थ अलग से प्रतीक्षित है। दुःख के अभाव के बाद उसके खाली स्थान को भरने के लिए कोई और भाव पदार्थ चाहिए? इस प्रश्न के लौकिक उदाहरणों के अनुसार दो उत्तर मिल सकते हैं प्रथम यह कि दुःख और सुख अन्धकार और प्रकाश के समान परस्पर विपरीत स्वरूप वाले भाव हैं अतः जैसे जब अन्धकार मिट जायगा, पूरी तरह मिटेगा, जैसा कि निरभ्र और नीरज (रजोहीन) अर्थात् बादल धूल और कुहरे से रहित आकाश में सूर्य के चढ़ जाने के बाद होता है, क्षीण चन्द्रमा के उदय होने के बाद नहीं, तब अन्धकार मिट जाता है, और पूरा प्रकाश फैल जाता है अर्थात् दुःख का मिट जाना पूरी तरह मिट जाना पर्याप्त है, दुःखाभाव होने मात्र से हमें तृप्ति मिल जाएगी। दूसरा उत्तर इससे भिन्न हो सकता है एक उदर रोगी है, आहार के रूप में लिया हुआ भोजन उसके आमाशय पक्वाशय छोटी या बड़ी आंत अथवा मलाशय में रुक जाता है, जिससे उसे पीड़ा होती है, चिकित्सक अपने उपचार द्वारा जब रुके हुए पदार्थ को बाहर निकाल देता है तब तत्काल पीड़ा तो मिट जाती है, किन्तु उसे स्थायी शांति नहीं मिलती, तृप्ति नहीं मिलती। उसे वह अभाव दुःख रहित तो कर देता है किन्तु सुख तब मिलता है

तृप्ति तब मिलती है, जब कोई स्वादिष्ट सुपाच्य पदार्थ उसके मुख में पहुंचे पेट में पहुंचे। अर्थात् दुःख का अभाव मात्र तृप्ति का कारण नहीं है, उसके स्थान पर सुख आनन्द अथवा इसी प्रकार का कोई अन्य पदार्थ प्राप्त भी हो।

इस दूसरे प्रकार के उत्तर को मन में रखने वाले विचारकों के लिए, दार्शनिकों के लिए जैमिनि-व्यास, कणाद और पतञ्जलि आदि आचार्यों के दर्शन हैं, जिनमें हृदय-वर्धक सुख अथवा आनन्द रूप किसी पदार्थ विशेष अथवा स्थिति विशेष की प्राप्ति को उन दर्शनों के प्रयोजन के रूप में [प्रत्यक्षतः अथवा अप्रत्यक्षतः] निरूपित किया गया है।

जैमिनिमुनि के मीमांसा दर्शन में मनु के सिद्धान्त 'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्' [मनु० २/६] को हृदय में रखते हुए द्वितीय सूत्र में "चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः' अर्थात् 'वेदोक्त कर्म धर्म हैं' कहते हुए धर्म की जिज्ञासा के समाधान के प्रसंग में सम्पूर्ण शास्त्र का प्रवर्त्तन किया गया है। मीमांसा शास्त्र के अनुसार यह धर्म स्वर्ग को प्राप्त कराने वाला, निश्श्रेयस् को प्रदान करने वाला है। जैसा कि, उपर्युक्त सूत्र का भाष्य करते हुए शबर मुनि कहते हैं— 'चोदनायां सत्यामग्नि होत्रात्स्वर्गो भवतीति गम्यते' [पृष्ठ ११] अर्थात् वैदिक कथन



से ही हमें पता चलता है कि अग्नि होत्र से स्वर्ग होता है। 'य एव श्रेयस्करः सएव धर्म शब्देनोच्यते [पृ० १३] 'यः पुरुषं निःश्रेयसेन संयुनक्ति स धर्म शब्देनोच्यते' [पृ० १४] अर्थात् निःश्रेयस को प्राप्त करने वाला ही धर्म है। यह बात 'सुखस्य मूलम् धर्मः' इस चाणक्य सूत्र में कही गयी है, तथा आयुर्वेद के आचार्य वाग्भट्ट ने 'सुखं च न विना धर्मात् तस्माद् धर्म परो भवेत्' वाक्य में दूसरे शब्दों में दुहराई है। मीमांसा-शास्त्र के इसी रहस्य को न्याय बिन्दु के लेखक वैद्यनाथ भट्ट 'सच प्रवर्तना रूप विधिबोधकः। प्रवर्तना च इष्ट साधनमेव इति वादादेः श्रेयःसाधनत्व ज्ञा भवति'[न्याय बिन्दु १/२पृ०२] अर्थात् वैदिक वचन प्रवर्तना [प्रवृत्ति] रूप विधि का बोध कराता है, यह प्रवर्त्तना अभीष्ट का साधन ही है। इस प्रकार वैदिक वचनों द्वारा 'विहित कर्म यज्ञयाग आदि हमारा कल्याण करने वाले हैं' इस प्रकार की प्रमा की उत्पत्ति होती है। स्वर्ग कामो यजेत, अग्नि होत्र जुहुयात्स्वर्ग कामः, सोमेन यजेत स्वर्ग कामः' इत्यादि वैदिक वचन इस उपर्युक्त अर्थ का ही प्रतिपादन करते हैं।

इन उपर्युक्त श्रुतियों को सुन के अनन्तर स्वर्ग के स्वरूप के सम्बन्ध में जिज्ञासा हो सकती है, उसके लिए तन्त्रवार्तिक में उद्धृत स्वर्ग की इस परिभाषा को देख लेना पर्याप्त होगा—

'यन्न दुःखेन सम्भिन्नं न च ग्रस्तमनन्तरम् अभिलाषोपनीतं च तत्सुखं स्वः पदास्पदम् ॥"

अर्थात् जहां दुःख का संस्पर्श नहीं है, जिसमें आनन्तर्य अर्थात् उत्तरोत्तर उत्कर्षापकर्ष नहीं है, अथवा मध्य में विच्छेद नहीं है निरन्तरता है, तथा अभिलाषा मात्र से प्राप्त है ऐसे सुख को स्वः या स्वर्ग कहते हैं।

तात्पर्य यह है कि मीमांसा शास्त्र का उद्देश्य मनुष्य को स्थाई रूप से दुःखों से छुड़ा कर उसको अनन्त सुख में अवगाहन कराना है।

कणाद प्रणीत वैशेषिक दर्शन का उद्देश्य भी धर्म का बोध कराना है, जिस धर्म के बोध से अथवा उसे प्राप्त करके प्रमाता को सम्पूर्ण अभ्युदय और निःश्रेयस् की प्राप्ति हो जाती है [यतोऽभ्यु दयनिःश्रेयस सिद्धिः सधर्मः [वै० सू० १/१/२]।

[क्रमशः]

श्री राम जन्म भूमि को बाबरी मस्जिद मत कहो

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

पिछले दिनो "मुसलमान बन्धुओ, विचार करो, अयोध्या मे राम जन्म मन्दिर या मस्जिद" शीर्षक से एक लघु पुस्तिका प्रकाशित हुयी थी। इस पुस्तक मे चार लघु लेख है। पहला लेख श्री अमरेश आर्य 'अफजल उलमा" एम० ए०, पी० एच० डी० का है। उन्होने अयोध्या जा कर उस भवन का स्वय निरीक्षण किया और अपने निरीक्षण परिणाम को इस प्रकार घोषित किया हे कि इस इमारत का रुख स्वय बता रहा है कि सचमुच यह इमारत मस्जिद के रूप मे निर्मित नहीं है, क्योकि इसमे नमाज मे इमाम के खड़े होने के स्थान का रुख ठीक तरह से "किबला" की ओर नहीं है। इमारत के अन्दर और बाहर की दीवारो पर जो स्थापत्य है, वह मस्जिद मे नहीं, हिन्दू मन्दिरो मे पाई जाती है। इस इमारत के आस-पास "वजू" करने का स्थान नही है और न ही ऐसे स्थान का कोई निशान है। इसके आस-पास की आबादी उपासना गृह आदि से यह प्रमाणित होता है कि यहा किसी मस्जिद का वजूद ही नहीं था। इसमे लगे पत्थर मे यह लिखा हुआ है कि "इस इमारत को मस्जिद मे रूपान्तर करने से पूव यह एक ऐसा उपासना गृह था जहा पर श्री राम, सीता और हनुमान का पूजा की जाती थी।' किसी पीर या मुर्शिद को खुश करने के लिये इस इमारत के ऊपरी हिस्सो मे थोडा सा रूपान्तर करके अधूरा मस्जिद का रूप दिया गया है। विद्वान लेखक ने अपनी निरीक्षण सूचना मे आलमगिरिया मे मुजमरात तथा बहरूल शईक क हवाले से यह भी उल्लेख किया है कि जबरदस्ती कब्जा की हुई इमारत को यदि मस्जिद मे रूपान्तरित किया जाये तो ऐसी मस्जिद मे नमाज पढ़ना निषिद्ध है। फिर उन्होने इस विषय पर सावजनिक रूप से शास्त्राथ के लिये उसे मस्जिद बताने वालो को मस्जिद सिद्ध करने के लिये चेलेन्ज भी किया ह।

दूसरा लेख मेरा हे। सन् १९६१ की श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर ससद मे श्री पण्डित प्रकाश वीर शास्त्री द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव और आर्य समाज दीवानहाल की महती सभा मे श्रीकृष्ण जन्म-दिन पर होने वाले अपने भाषण मे जो कुछ कहा था, इस लेख मे उसका उल्लेख है।

तीसरा लेख है श्री सीताराम गोयल का। आपने "दि रिपोर्ट आफ दी आर्क्योलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया न्यू सीरिज वौल्युम-एक" की पृष्ठ ६ से ६८ तक के प्रमाण से यह सिद्ध किया है कि वास्तव मे यह रामजन्म स्थान है। इस रिपोर्ट मे लिखा है कि "अयोध्या मे बाबर की मस्जिद का निर्माण हिजरी सन ९३० अथवा ईसवी सन १५२८ मे मीरखान द्वारा ठीक उसी स्थान पर करवाया गया, जहा 'रामचन्द्र जन्म स्थान मन्दिर बना था। इस मन्दिर के बहुत से भागो को मुसलमानो ने बाबर की मस्जिद के निमाण मे प्रयुक्त किया है।'

चौथा लेख श्री डा० वेद पाल सिंह का है। उन्होने श्री रामजन्म मन्दिर के मस्जिद मे रूपान्तरित होने की ऐतिहासिकता का वर्णन किया है। इस प्रकार के लेखो को झुठलाने के लिये आवश्यक है कि मस्जिद के पक्षधर अपने पक्ष को सिद्ध करने के लिये सार्वजनिक रूप से मच पर आना स्वीकार करें और इसके लिये उक्त लेखको से पत्र-व्यवहार कर समय व स्थान निश्चित कर लें। बुद्धिमानो का कार्य है कि वह सत्य को जानने का प्रयत्न करे और जो बात सिद्ध हो जाये उसे ईमानदारी से स्वीकार कर लें। यदि कोई इसके लिये तैयार नही तो उसे दुराग्रही के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है?

दुराग्रह वही लोग किया करते हैं, जो न्याय और नैतिकता से दूर का भी सबध नहीं रखते, और जगल के कानून मे विश्वास रखते हैं। इस पुस्तिका को पढ कर नजीबाबाद के किसी भाई ने "बाबरी मस्जिद का एक सिपाही अपना नाम लिख कर एक धमकी भरा "फुल स्केप साइज" के चार पृष्ठ का पत्र लिख मारा। आर्य धमकियों से भयभीत नहीं होते है। आर्य सत्य के लिए प्राणा हुति धर्म समझते है।

मै ऐसा मानता हू कि बहुत से हमारे मुसलमान भाई, साहबे ईमान हैं, उन्हे अवसरो पर चुप नहीं रहना चाहिए। उन्हे आवाज उठानी चाहिए और दरिन्दगी के धब्बो को इस्लाम की चादर पर अब अधिक नहीं लगने देना चाहिए इसे पुस्तिका के पहले लेख मे श्री अमरेश आर्य ने जो तथ्य दिये हैं और "आलमगीरिया में मुजमरात" तथा "बहरूल शईक" के जो हवाले दिये हैं, यदि वह ठीक हैं तो ईमानदार शिक्षित मुसलमानो को खुले आम वास्तविकता को स्वीकार करना चाहिये और इस प्रकार के फितना बरपा करने वालो की भत्सना करनी चाहिए। यदि वह अयोध्या जा कर इन तथ्यो की जाच कर स्पष्ट उत्तर देने को तैयार नहीं तो" "आलमगीरिया मे मुजमरात" तथा "बहरूल शईक" को देखें और फिर "इस्लाम की रूह" के हवाले से ही इस प्रकार बहशियाना विचार रखने वाले लोगो की भत्सना करें। यदि मुसलमानो का शिक्षित वर्ग आगे आकर इस प्रकार की ईमानदाराना आवाज उठायेगा तो वह न केवल इस्लाम की रक्षा ही करेगा अपितु मानवता (मजहबे इन्सानियत) की भी बहुत बडी सेवा करेगा। ★

'राजनैतिक समस्याएं'

आर्य जगत

आर्य समाज बरदहा बाजा (बहराइच) के तत्वाधान मे इमामगज स्थित समिति कार्यालय मे दिनाक २० दिसम्बर ८६ से २३ दिसम्बर ८६ तक 'वेद प्रचार महायज्ञ' का आयोजन किया गया।

—आर्य समाज इटारसी मे दिनाक १४-१-८७ को समारोह के साथ मकर सक्रान्ति पर्व मनाया गया हवन के पश्चात इस पर्व के विषय मे कई सज्जनो के भाषण हुए।

★

धार्मिक

आर्य समाज बनाम सम्प्रदाय

—श्री धर्मेन्द्र देव जी

आर्य समाज के सदस्यों आर्य समाज की विचारधारा मानने वाले गैर सदस्यों तथा गैर-आर्य समाजी लोगों के मन में आर्य समाज के स्वरूप को लेकर काफी भ्रान्तियां विद्यमान हैं। उनकी ये धारणायें वस्तुतः इस संस्था को एक सम्प्रदाय की कोटि में लाकर खड़ा कर देती है। संसार के तथा भारत के इतिहास पर दृष्टिपात करने से हमें पता चलता है कि समाज में व्याप्त बुराइयों, अंध विश्वासों, मिथ्याचारों, कुप्रथाओं तथा अनाचारों के निवारण के लिये समय-समय पर सन्त पुरुषों ने सुधार आन्दोलन चलाये। किंतु वे सभी आन्दोलन बाद में सम्प्रदाय बन कर रह गये। भारतेतर देशों में ईसा मसीह तथा हजरत मुहम्मद ऐसे ही सामाजिक आंदोलनों के सूत्रधार थे। अपने देश में महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य, कबीर तथा तुलसी ने भी अपने ढंग से सामाजिक सुधार के आंदोलनों का सूत्रपात किया था। इन सन्त महात्माओ के द्वारा चलाये गये ये आन्दोलन किसी न किसी सम्प्रदाय के नाम से आज भी जीवित है। सम्प्रदाय का स्वरूप धारण करने से कोई भी आंदोलन अपनी प्राण शक्ति गंवा बैठता है। कमोबेश मात्रा मे ये सभी आंदोलन निष्प्राण हो गये है। आर्य समाज एवं ब्रह्म समाज आधुनिक भारत के सुधार आंदोलन हैं तथा थियोसौफिकल सोसाइटी आधुनिक विश्व का सुधार आंदोलन है। किन्तु ये आंदोलन भी कुंठा एवं जड़ता से ग्रस्त हुये से दिखाई पड़ रहे हैं और उनकी प्राण शक्ति भी जाती हुई सी प्रतीत हो रही है।

क्या हम आर्य समाज को इस दुरवस्था से बचाने के लिये उत्सुक है। यदि हाँ, तो हमे इसे संप्रदाय के लक्षणों से पृथक रखना पड़ेगा। सम्प्रदाय दिन-प्रतिदिन के जीवन में दिखावटी सामूहिक समरूपता पैदा कर देता है तथा उसे कट्टरता की सीमा तक पक्का कर देता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस बलात्कृत समरूपता तथा कट्टरता ने मनुष्य जाति की जितनी हानि की है उतनी किसी वस्तु ने नहीं की। शायद अमेरिका द्वारा नागासकी एवं हिरोशिमा पर छोड़े गये एटमबमों ने भी इतना नुकसान नहीं किया क्योंकि यह नुकसान स्थानीय तथा अल्पस्थायी था जबकि संप्रदायवाद देशकाल की छोटी सीमा न मानते हुए मानवता को क्षति पहुंचाता रहता है, जिससे बचने के लिये पुनः किसी आंदोलन की जरूरत अनुभव होती है। स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना एक मत के रूप में नहीं की थी। सत्यार्थ प्रकाश के सभी चौदह समुल्लास लिखने के बाद उन्होंने "स्वमंतव्यामन्तव्य प्रकाश" नाम से एक संख्यारहित अध्याय जोड़ा है। इन अध्याय के निम्न उद्धरण द्रष्टव्य है—

"मैं अपना मंतव्य उसी को जानता हूं कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा नवीन कल्पना का या मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं हैं किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त में प्रचलित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो-जो आर्यावर्त वा अन्य देशों में धर्मयुक्त चालचलन है उसका स्वीकार और जो अधर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग नहीं करता न कराना चाहता क्यो कि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है।"

महर्षि के इस कथन को देख कर इस बात में कोई संशय करने की गुन्जायश नहीं है कि वे संप्रदाय के पक्षपाती नहीं थे। अतः यह कल्पना नहीं की जा सकती कि आर्य समाज की स्थापना नये संप्रदाय को चलाने के उद्देश्य से की गयी होगी। इस समाज की स्थापना के पीछे निहित भावना को अच्छी तरह समझने मे हमें आर्य समाज के नियमो को देखने से भी काफी सहायता मिलेगी—

१— सब सत्य, विद्या और पदार्थ विद्या से जो जाने जाते है उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२— ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।

३— वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४— सत्य के ग्रहण करने और असत्यके छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५— सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

६— ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और समाजिक उन्नति करना।

७— सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।

८— अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९— प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किंतु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०— सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालन मे परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम मे सब स्वतंत्र रहे।

इन नियमो को देख कर क्या कोई व्यक्ति यह कह सकता है कि इन्के पालन मे संप्रदाय भावना को जन्म मिल सकता है या उसका पोषण हो सकता है। वस्तुत. ये सारे नियम मानव धर्म को व्यवहार मे लाने के लिये सम्यक् विचार के आधार पर बनाये गये सूत्र हैं, जिनको ध्यान मे रख कर प्रत्येक व्यक्ति अपने आचरण को मानव धर्म के अनुकूल बनाये रखने का प्रयत्न कर सकता है। अतीत के महावीर स्वामी तथा महात्मा बुद्ध तथा मध्ययुग के सन्त कबीर तथा नानक ने युग की अपेक्षा के अनुसार सदाचार के जिन सिद्धांतो का प्रतिपादन किया था उन्हीं सिद्धातो को आधुनिक युग की अपेक्षा के अनुसार महर्षि दयानन्द नेउपर्युक्त दस नियमो मे प्रतिबिम्बित किया है।

इस विवेचना के बाद अब हम आर्य समाजियो के व्यवहार की समीक्षा करे। अधिकतर समाजें

(शेष पृष्ठ ६ पर)



महर्षि दयानन्द के ग्रंथों में संशोधन

उक्त शीर्षक से 'आर्य मित्र' दिनांक २८ दिसम्बर १९८६ के अंक में स्वामी विद्यानन्द सरस्वती का एक लेख प्रकाशित हुआ है। स्वामी जी ने जिस गहनता व निष्ठा के साथ महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का अनुशीलन किया है, उसे उनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति भलीभांति जानते हैं। स्वामी जी परम ऋषि भक्त है। महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों के प्रति उनकी निष्ठा सर्वविदित है।

'सत्यार्थ प्रकाश' व 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में जिन अशुद्धियों की ओर संकेत किया गया है। वे वस्तुतः विचारणीय हैं। हम स्वामी जी के विचारों से पूर्णतः सहमत हैं। क्या यह हम सब आर्यों के लिए लज्जाजनक नहीं है कि एक सौ वर्ष से अधिक व्यतीत होने पर भी आज तक उक्त ग्रन्थों के शुद्ध संस्करण प्रकाशित नहीं हो पाये हैं? कई विद्वानों ने इस दिशा मे बहुत प्रशसंनीय कार्य किया हैं, परंतु उनके द्वारा प्रकाशित संस्करणों में भी अनेक अशुद्धियां रह गई हैं।

स्वामी विद्यानन्द जी का सुझाव है कि अजमेर मे परोपकारिणी सभा के तत्वावधान में पांच विद्वान बैठ कर शीघ्र संशोधन कार्य को प्रारम्भ करें। आज कल श्री पं० उदयवीर शास्त्री जिन्होंनें सत्यार्थ प्रकाश पर अनुकरणीय शोध कार्य किया है, भी अजमेर में रहते हैं। उनका सहयोग भी इस कार्य में सहज सुलभ रहेगा।

हमें पूर्ण आशा है कि कार्य की महत्ता को ध्यान में रखते हुए परोपकारिणी सभा संशोधन कार्य को स्वामी विद्यानन्द जी के सुझाव के अनुसार शीघ्र प्रारम्भ करने की व्यवस्था करेगी।

—प्रो० रत्न सिंह
बी–२१, गांधी नगर गाजियाबाद (उ० प्र०)

मुझको पते चाहिए

१– श्री स्वामी ध्यानानन्द जी २– श्री चन्द्रदेव जी ब्रह्मचारी ३– श्री ब्रह्मचारी नन्द किशोर जी शास्त्री ४– श्री एम० ए० देवीदास जी आर्यमेरठ, ये सज्जन पत्र को पढ़ें तो स्वयं पत्र लिखें या कोई सज्जन जो इनके पते जानते हों पत्र लिखें मैं आभार मानूंगा।

—अमर स्वामी सरस्वती वेद मन्दिर
विवेकानन्द नगर गाजियाबाद

आर्य वीर दल संचालक का दौरा सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिम उत्तर प्रदेश (दिल्ली) के संचालक डा० बाल कृष्ण आर्य "विकल" अपने १५ दिवसीय दौरे में लखनऊ, सीतापुर, हरदोई, लखीमपुर, शाहजहांपुर, बरेली, रामपुर, मुरादाबाद, गाजियाबाद, इस्लाम नगर आदि जिलों में गये। जहाँ सभी आर्य वीर दल अधिकारियों में काफी उत्साह रहा और दल संगठन हेतु कई शिविरों का आश्वासन दिया गया, मुरादाबाद और गाजियाबाद में शीघ्र ही शिविर लगेंगे। —वेद प्रकाश गुप्त प्रान्तीय मन्त्री

नव वर्ष मंगलमय होवे

* * *

नव वर्ष मंगलमय होवे (१)
सुन्दर सुखद सुवास लिए नित,
जीवन–जन विजय होवे (२)
प्राची दिशि रवि किरण बिखेरे,
लाये स्वर्णिम दिवस सवेरे।
अंध तमिस्रा का क्षय होवे (३)
विद्वत् वर श्रुति मंत्र उचारें,
चहकें चिड़ियां पंख पसारे।
निश्छल विमल शुद्ध हिय होवे (४)
प्रतीची दिशि को सूर्य सिधाये,
रजनी सुभग शृंगार सजाये।
सब जन सोयें निर्भय होवें (५)
उदीचि दिशि में खड़ा हिमालय,
कहता आर्यों का यह आलय।
दुष्ट जनों से नहिं भय होवे (६)
दक्षिण सिन्धु चरण पखारे,
कहते भारत माँ के प्यारे।
जगती में तेरी जय होवे (७)
प्रभु भक्ति में सब लग जायें,
शुचितम श्रुति का मंत्र गुंजायें।
जन-जीवन "सिया" मधुमय होवे (८)

—सुश्री सिया सुन्दरी आर्या
यानपुरा (समस्तपुर) बिहार

* * *

उत्सव

* * *

आर्य समाज हल्द्वानी का वार्षिकोत्सव दिनांक २ मार्च से ६ मार्च १९८७ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा जिसमें आर्य जगत के ओजस्वी विद्वान् श्री आचार्य विशुद्धा नन्द जी शास्त्री, श्रीमती सावित्री देवी शर्मा, महोपदेशक श्री यशपाल आर्य दिल्ली तथा सभा भजनोपदेशक श्री गजराज सिंह राघव, जैसे विद्वान् जन सम्मिलत होंगे।

आर्य समाज बनाम सम्प्रदाय

(पृष्ठ ५ का शेष)

उपर्युक्त दस नियमों के पालन की ओर यथेष्ट ध्यान नहीं दे पा रही हैं। समाज के सदस्य भी अपने वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन जीने की शैली में इन नियमों को अनुस्यूत करना आवश्यक नहीं समझते। यही नहीं बहुत से सदस्य इन नियमों के विपरीत आचरण करते हुए भी अपने को आर्य समाजी होने के मिथ्या दम्भ से बोझिल करते हैं। जो व्यक्ति आर्य समाज के सदस्य नहीं हैं उनकी धारणा है कि जो कुछ सनातन धर्म का विरोधी है वही आर्य समाज है। उनकी दृष्टि में हवन करना सत्यार्थ प्रकाश का पाठ करना तथा मूर्ति पूजा का खण्डन करना एवं कभी-कभी वेद मन्त्रों का पाठ कर लेना ही आर्य समाज नामक संप्रदाय के लक्षण हैं। यदि उपर्युक्त दस नियम आर्य समाजियों में दृष्टिगोचर होते तो इस प्रकार की धारणा विकसित नहीं हो सकती थी।

दूरदर्शन तथा आकाशवाणी द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह की उपेक्षा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती द्वारा सूचना एवं प्रसारण मंत्री भारत सरकार को पत्र लिखकर जांच की मांग

महोदय,

२५ दिसम्बर १९८६ को दिल्ली में लगभग ८ किलोमीटर लम्बे मार्ग से राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी नेता स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस समारोह का विशाल जुलूस निकाला गया था। यह जुलूस पुरानी दिल्ली के प्रमुख बाजारों से होता हुआ लालकिले पर विशाल सार्वजनिक सभा में परिवर्तित हुआ था।

महात्मा गांधी दिल्ली को "श्रद्धानन्द की दिल्ली" कहा करते थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने ही दिल्ली की ऐतिहासिक जामा मस्जिद से हिन्दू-मुस्लिम इत्तहाद का नारा लगाया था। स्वामी श्रद्धानन्द ने ही चांदनी चौक में गोरो की संगीनो के आगे छाती खोलकर गोली चलाने के लिए ललकारा था। स्वामी श्रद्धानन्द (जो श्री मोतीलाल नेहरू के सहपाठी थे) ने ही जलियांवाला बाग के हत्याकांड के बाद कांग्रेस अधिवेशन बुलाया था, जिसके अध्यक्ष श्री मोतीलाल नेहरू और स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द थे। श्रद्धानन्द एक ऐसे महापुरुष थे, जिन्होने इस देश की जनता को आजादी के लिए प्रेरित किया था। वे किसी धर्म या सम्प्रदाय विशेष के न होकर सारे भारत के एक माननीय नेता और सन्त थे।

मुझे अत्यधिक खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि २५ दिसम्बर १९८६ को दिल्ली में निकाले गये उक्त विशाल जलूस का कोई समाचार दिल्ली दूरदर्शन के राष्ट्रीय कार्यक्रम (८-४० बजे) के अन्तर्गत प्रसारित नहीं हुआ, जबकि ईसाइयों के देश-विदेश के अनेक चर्चों मे प्रार्थना सभाओं के विस्तृत दृश्य और समाचार दिये गये थे। क्रिसमस के ग्रीटिंग कार्डों की दुकानो व बाजारो की सजावट के दृश्य लगभग एक सप्ताह तक प्रसारित होते रहे। ईसामसीह के जीवन पर वृत्तचित्र भी दिखाया गया।

दिल्ली की निजामुद्दीन चिश्ती दरगाह के उर्स का कार्यक्रम, भाषण व कव्वालियो का भी प्रसारण विस्तार से किया गया था।

मुझे दुःख है कि राष्ट्रीय स्वाधीनता के अग्रिम पंक्ति के नेता स्वामी श्रद्धानन्द का सरकारी संचार माध्यमो के २५ दिसम्बर के समाचार बुलेटिनों में कहीं नाम तक नहीं था। ऐसा प्रतीत होता है कि दूरदर्शन और आकाशवाणी में कुछ ऐसे कर्मचारी कार्यरत हैं, जो किसी सम्प्रदाय विशेष के साथ अधिक सहानुभूति रखते हैं और उन्हें भारतीय संस्कृति दर्शन और इसके महापुरुषो के विषय मे कोई ज्ञान ही नहीं है अथवा वे जानबूझकर इसकी उपेक्षा करते है।

देश भर से मेरे पास शिकायतें आ रही हैं। मेरा निवेदन है कि सरकार इसकी खुली जांच कराकर वस्तु स्थिति से देश की बहुसंख्यक जनता में फैले असन्तोष को दूर करे। भवदीय—

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

विशेष सूचना

'आर्य मित्र' का दिनांक २२-२-८७ का अङ्क 'ऋषिबोध विशेषांक' होगा अतएव १५-२-८७ का अङ्क प्रकाशित नहीं होगा। पाठक गण कृपया नोट करलें।

विश्वम्भर दयाल गुप्त
व्यवस्थापक

अत्यन्त आवश्यक सूचना

सभा के सभी उपदेशकों, भजनोपदेशको एवं ढोलकवादकों (नवीन एवं पुराने) से अनुरोध है कि आप अपने नाम, पिता का नाम, पूर्ण वर्तमान पता जन्म तिथि, प्रवेश तिथि, शैक्षिक योग्यता एवं गौण योग्यता आदि का प्रमाण पत्र के प्रमाणित प्रतिलिपि, सभी वांछित सूचनायें एक सप्ताह के अन्दर कार्यालय में भेज दें तथा जिनके फार्म नहीं भरे हैं पुनः फार्म लेकर (उपदेशक-भजनोपदेशक) भर कर भेजें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

उत्सव

आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर का १०७ वां वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर फाल्गुन कृष्ण १० से १३ तदनुसार सोमवार २३ से २६ फरवरी ८७ तक समारोह पूर्वक मनाया जाना निश्चित हुआ है। शोभा यात्रा, सोमवार २३ फरवरी ८७ को सायं ठीक ४ बजे से प्रारंभ होगी। समारोह में श्रीयुत पं० शिव कुमार जी शास्त्री पूर्व संसद सदस्य महोपदेशक, श्री युत प्रो० रत्न सिंह जी एम० ए० प्रसिद्ध दार्शनिक विचारक, श्रीयुत प्रो० उत्तम चन्द्र जी शरर एम० ए० आशु कविरत्न श्री ब्रत, श्रीयुत प० आशानन्द जी प्रसिद्ध आर्य प्रचारक तथा केन्द्रीय व प्रान्तीय सरकार के अधिकारियों के भी भाग लेने की आशा है।

वार्षिकोत्सव-यज्ञ

जनपद बाराबंकी के ग्रामीण अचल आर्य समाज रेंडुआ पलहरी जिनहट में आगामी १०, ११ व १२ फरवरी १९८७ प्रातः, मध्यान्ह एवं रात्रि को वृहद् स्तर पर यज्ञ, भजन, उपदेश व साहित्य प्रचार का कार्यक्रम रक्खा गया है।

ऐतिहासिक-पक्ष

लखनऊ आर्य समाज-दर्शन

(सिद्धान्त शिरोमणि श्री सुधीन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए०
साख्य योग तीर्थ)

आधुनिक भारत निर्माताओ मे प्रमुख नेता श्री-सुभाषचन्द्र का कथन था कि जहाँ-जहा प्रगति है वहाँ-वहाँ आर्य समाज दर्शन है अर्थात् आर्य समाज मानव मात्र के लिये जीवन सजीवनी है। भारत के दो प्रमुख महाकाव्य रामायण तथा महा भारत जिनमे भारतीय सस्कृति प्रतिफलित हुई है—रामानुज लक्ष्मण के सम्बन्धमें यह लिखा गया है कि वे सुषेण वैद्य द्वारा हनुमान को प्रदत्त सञ्जीवनी बूटी द्वारा जीवित हुए थे। इस ऐतिहासिक लक्ष्य से यह तो विदित हुआ कि सञ्जीवनी बूटी जीवन प्रदायिनी है। उन तपोनिष्ट लक्ष्मण द्वारा बसाई गई लक्ष्मणपुरी (लखनऊ) की आय समाजो का दर्शन भी महत्वपूर्ण है।

लक्ष्मणपुरी (लखनऊ) की समाजो मे गणेशगज आर्य समाज की नींव तो स्वयं वैदिक सस्कृति के पुनरुद्धारक प्रतिष्ठाता महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे। स्वर्गीय वेद विहारी (श्री रहस विहारी तिवारी जी जिनको यदि गणेश गंज आर्य समाज का प्राण कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं उनके अदम्य साहस एवं निर्भीकता की कहानी अमीनाबाद का हनुमान मन्दिर स्वय कह रहा है। इसके पश्चात् नगर आर्य समाज (लखनऊ), आर्य समाज बादशाह नगर का नाम आता है वर्तमान समय मे श्री शान्तिप्रकाश जी एडवोकेट एव नवयुवक एडवोकेट श्री रेवतीरमण जी जिन्होने कि अपनी काय क्षमता का आय समाज की शोभा—यात्राओ मे अच्छा परिचय दिया है—इस समय स्तुत्य कार्य कर रहे हे। श्री गिरिराज धरण जी भू० पू० मेयर लखनऊ की सेवायें भी अविस्मरणीय हैं। आय समाज बादशाह नगर मे स्वनाम धन्य सु श्री कमला प्रधान जी एव श्री रामदेव जी प्रशसनीय काय कर रहे हैं। इसके पश्चात् आर्य समाज डालीगज एव चौक के कायकर्त्ता श्री डा० वीरेन्द्र जी एव चौक के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री महाशय कुन्दन लाल जी के सराहनीय कार्य की प्रशसाकिये बिना भी नही रहा जा सकता। इस लक्ष्मण पुरी आर्य समाज को जिन दो शास्त्रार्थ महारथियो, श्री विज्ञान भिक्षु एव श्री धर्म भिक्षु को दिया था जिनकी विद्वत्ता एव तुलनात्मक धर्म विज्ञान की समीक्षा की प्रशसा अन्य मतावलम्बी भी मुक्तकण्ठ से करते नहीं थकते। इस समय लक्ष्मण पुरी मे जो समाजें अपने अनथक प्रयास एव सामाजिक जन सेवा द्वारा सबका मनोबल ऊचा कर रही है उनमे आर्य समाज ठाकुरगज सिविल ल इन्स (नरही) आर्य समाज लालबाग, आर्य समाज श्रृंगार नगर, आर्य समाज आदर्श नगर, आय समाज चन्द्र नगर, आर्य समाज राजा जी पुरम् का नाम उल्लेखनीय है। आय समाज सुदर अपनी महत्त्वपूण सामाजिक सेवा द्वारा दीनहीन दलित वर्ग की जो सेवा कर रहा है आने वाला समय वर्चस्व स्वय प्रकट करेगी। इतना ही नहीं आय महिला समाज गणशगज लालबाग नारायण स्वामी भवन स्त्री समाज, आर्य समाज कैलाशपुरी भी सामाजिक उत्थान के प्रशसन य कार्य कर रही हैं।

वर्तमान श्री नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, के वर्तमान रूप के सुस्थिर करने तथा रखने की जिन्होंने ऐतिहासिक कार्य किया है उनमे श्री महात्मा नारायण स्वामी श्री भगवानदीन जी, श्री मदन मोहन सेठ, इञ्जीनियर, श्री रामचन्द्र जी—वेद वेत्ता श्री रामदत्त जी शुक्ल एव श्री भृगुदत्त जी तिवारी का विशेष महत्त्व है। सभा की महनीयता एव सामाजिक उत्कृष्टता एव भव्यता के वतमान स्वरूप के प्रतिष्ठापक के रूप मे सुहृदय श्री प्रकाश वीर शास्त्री का नाम अत्यन्त सम्भाव के साथ स्मरणीय है। इसके अतिरिक्त जिन श्रद्धालु महानुभावो के नाम उल्लेखनीय एवं अभिनन्दनीय है लेख कलेवर की वृद्धि के कारण यहाँ पर लेखनी को विराम देने के लिये लेखक विवश है। साथ ही क्षन्तव्य भी।

"छप गई! छप गई!! छप गई!!!

(१) कुशवाहा क्षत्रियोत्पत्ति मीमासा—इसमे माता सीताजी, लव-कुश की उत्पत्ति, सूर्य वंश—वृक्ष, कुशवाहा (छछवाहा), क्षो री, काछी मुराव के सम्बन्ध मे विशद विवेचन है २० वष के खोज के बाद लिखा गया अनूठा इतिहास है। बड साइज पृष्ठ ३१६+८ कागज, छपाई, सजिल्द, मूल्य लागतमात्र ५० रु० भेजने मे ७ रु० व्यय। ५०रु० अग्रिम भेजने वाले को पोस्टेज फ्री।

(२) क्या अहीर, जाट, गूजर विदेशी हैं ? इसमे तीनो के सम्बन्ध मे ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अतिम सिद्ध किया गया है। पृष्ठ सख्या १७२, साइज १६ पेजी, छपाई आवरण उत्तम। मूल्य लागत १० रु० ५० पैसे एक प्रति मगाने वाले को १४ रु० भेजना होगा।

(३) गर्ग मुख महाचपेटिका ६ रु०।

(४) 'आचार्य महीधर और स्वामी दयानन्द का माध्यन्दिन भाष्य का आलोचनात्मक अध्ययन—डा० प्रशस्य मित्र शास्त्री का महर्षि दयानन्द वेद भाष्यपर लगाये गये आक्षपो का सप्रमाण उत्तर १६ पेजी, पृष्ठ स० ३२+४, मूल्य २ रु० ५० पैसे।

नोट—शिवपूजनसिह कुशवाहा शास्त्री वेद मन्दिर (गीता आश्रम) अशोक सिनेमा के सामने ज्वालापुर २४९४०७।

प्रान्तीय आर्य वीर दल महाराष्ट्र का मासिक-शिविर

गत मास की भाँति इस मास दिसम्बर १९८६ का मासिक शिविर २७ व २८ दिसम्बर शनिवार व रविवार को गुरुकुल हाई स्कूल घाटकोपार बम्बई मे बडी धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमे आठ शाखाओ के लगभग एक सौ आर्य वीरों ने भाग लिया।

प्रातीय सचालक श्री गुलजारीलाल जी आय न शिविर की अध्यक्षता की तथा प्रांतके महामन्त्री श्री अम्बालाल पटेल एव बम्बईके महामन्त्री ओ३न प्रकाश आय ने बडी सफलता पूर्वक शिविर का सचालन किया।

२८ दिसम्बर रविवार प्रात ६ बजे गुरुकुल से आय समाज न्यू मानिकलाल स्टट तक विशालशोभा यात्रा का आयोजन किया गया। जिसमे सभी आर्य वीरों तथा बम्बई के आय बन्धुओ ने भाग लिया।

संक्षिप्त समाचार

श्री रामकुमार भारद्वाज–गिरफ्तारी और रिहाई

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के नाम सऊदी अरब की जेल से हरियाणा के शाहपुर गाँव जि० जींद के निवासी श्री हरीसिंह के सुपुत्र श्री रामकुमार भारद्वाज का एक पत्र, जो उन्होंने ३० अप्रैल, १९८६ को लिखा था, १७ मई १९८६ को प्राप्त हुआ। पत्र में श्री भारद्वाज ने लिखा था कि भारत से जाते समय वह अपने साथ सत्यार्थ प्रकाश, गीता आदि कुछ धार्मिक पुस्तकें ले गए थे। जब वह अवकाश के समय इस पुस्तक को देख रहे थे तो उनके ही एक मुस्लिम दोस्त ने वहां सेना कार्यालय मे शिकायत कर दी। इस कारण उन्हें जेल मे बंद कर दिया गया और उनके साथ अमानुषिक व्यवहार किया गया। उनके पाँवों को रस्सी से बांधकर और हाथों को जकड़कर लिटाकर कोड़ो से निर्दयतापूर्वक मारा गया। उनके साथ जो अन्य हिन्दू थे, उनके साथ भी ऐसा ही दुर्व्यवहार किया गया। उन्हें बहुत यातनायें दी गईं। सऊदिया अलफर अलबतीन सेन्ट्रल जेल मे भेजे गये अपने पत्र में श्री भारद्वाज ने लिखा था कि "उन के साथ आगे भी दुर्व्यवहार किया जाएगा और कठोर दण्ड दिया जायेगा"। सहायता की प्रार्थना करते हुए उन्होंने लिखा था कि "वहाँ भारतीय हिन्दुओं पर जो अत्याचार किये जा रहे हैं, उनके विरुद्ध कार्यवाही की जाय और सऊदी अरब मे भारत के दूतावास तथा भारत के प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी को भी उनके विषय मे सूचित किया जाय।"

इस पत्र के प्राप्त होते ही सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय को दिनांक २८ मई, १९८६ को पत्र लिखकर रामकुमार भारद्वाज की रिहाई की मांग की। मन्त्रालय ने अपने ४ सितम्बर, ८६ के पत्र द्वारा उत्तर दिया कि रियाद में हमारे दूतावास ने सऊदी अरबिया के विदेश मन्त्रालय से श्री रामकुमार भारद्वाज को तुरन्त रिहा कराने की मांगकर दी है। साथ ही साथ यह भी लिखा कि सऊदी अरबिया में इस्लाम को छोड़कर किसी भी अन्य धार्मिक पूजा, उनके साहित्य तथा प्रचार पर पाबन्दी है। सभा प्रधान जी ने पुनः भारत स्थित अरबिया दूतावास को श्री भारद्वाज की रिहाई के लिए १८–१०–८६ को एक विशेष पत्र लिखा। इसके अतिरिक्त विदेश मन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी और प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी को भी ३०–१०–८६ को विशेष रूप से पत्र लिखकर श्री भारद्वाज की तुरन्त रिहाई की मांग की।

प्रधान मन्त्री जी से हस्तक्षेप करने की प्रार्थना के आधार पर इस मामले में बड़ी तेजी से कार्रवाई हुई। विदेश मन्त्रालय के गल्फ विभाग के अपर सचिव ने १८ नवम्बर ८६ को पत्र लिखकर सूचित किया कि भारतीय दूतावास इस मामले पर जरूरी कार्रवाई कर रहा है।

इधर भारत में केवल आर्य सामाजिक क्षेत्रों में ही नहीं अपितु समस्त राष्ट्रवादी जनता में भारद्वाज को गिरफ्तारी पर बड़ी प्रतिक्रियाएं हुईं। सबने भारत के धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त और उसके मित्र राष्ट्रों द्वारा उसके नागरिकों के साथ इस प्रकार के अत्याचारों पर कड़ी आपत्ति की। सार्वदेशिक सभा ने यह घोषणा कर दी थी कि यदि रामकुमार भारद्वाज को ११ जनवरी ८७ तक नहीं छोड़ा गया तो उस दिन सत्यार्थप्रकाश रक्षा दिवस और १४ जनवरी ८७ को दिल्ली में अरब दूतावास पर एक विशाल प्रदर्शन करके विरोध किया जायगा।

इस घोषणा पर विदेश मन्त्रालय ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती को अपने १० दिसम्बर, १९८६ के पत्र में लिखा कि रामकुमार भारद्वाज के सम्बन्ध मे प्रधान मन्त्री जी को लिखे गये पत्र के सन्दर्भ मे अरब सरकार के विदेश मन्त्रालय के साथ उच्च-स्तरीय कार्रवाई प्रारम्भ हो गई है और शीघ्र ही भारद्वाज की रिहाई की आशा है।

प्रधान मन्त्री जी के हस्तक्षेप के परिणाम स्वरूप श्री रामकुमार भारद्वाज को सऊदी अरबिया सरकार ने दिसम्बर १९८६ मे एक दिन रात्रि १० बजे चुपचाप जेल से रिहा करके उनको तत्काल भारत भिजवा दिया।

गत २५ दिसम्बर १९८६ को दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर आयोजित विशाल जन सभा में श्री भारद्वाज भी उपस्थित थे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने उनका हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर श्री भारद्वाज ने पूरी घटना का विवरण देते हुए यह भी बताया कि वह खाली समय मे सत्यार्थ प्रकाश देख रहा था तो हैदराबाद (भारत) के ही उसके एक मुसलमान दोस्त फैज मुहम्मद ने उसके साथ गद्दारी की थी।

अपनी रिहाई के लिए उन्होंने सार्वदेशिक सभा तथा उसके प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी का आभार प्रकट किया जिनकी जागरूकता से उन्हें काल कोठरी से मुक्ति मिली।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

प्रो० वासुदेवसिंह जी के निधन पर शोक प्रस्ताव

हिन्दी के अनन्य भक्त एवं ओजस्वी वक्ता श्री प्रो० वासुदेवसिंह जी के निधन पर प्रान्त की निम्नलिखित आर्यसमाजों ने शोकसभा करके दिवंगत श्री प्रो० वासुदेवसिंह की स्वर्गीय आत्मा को शांति तथा प्रियजनो के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

१–आर्यसमाज अमरोहा मुरादाबाद।
२–आर्य समाज अल्मोड़ा।
३–आर्य समाज मन्दिर पुरानी मण्डी आगरा।
४–आर्य समाज बनगांव व कटरा बाजार (गोण्डा)
५–आर्यसमाज बहराइच।

वेद प्रचारक मण्डल पश्चिम बङ्गाल की स्थापना

दिनांक ११–१–८७ को श्री तारकेश्वर आर्य के सभापतित्व मे वेद प्रचारक मण्डल पश्चिम बंगाल की स्थापना की गई।

संरक्षक–श्री पं० शिवधर आर्य भजनोपदेशक
प्रधान–श्री तारकेश्वर आर्य कलकत्ता
मन्त्री–श्री रामध्यान प्रसाद आर्य कलकत्ता

—रामध्यान प्रसाद आर्य मन्त्री

कब तक होती रहेंगी ये नर हत्यायें ?

पंजाब की समस्या दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। रोज प्रातः नर हत्याओं, आतंक, बर्बरताओं लूट खसोट के समाचारों से पूरित समाचार पत्रों के प्रथम पृष्ठ मिलते हैं। सैकड़ों मील दूर बैठ कर जब घटनायें पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं तो वहां के निवासियों की क्या मनःस्थिति होगी—यह विचारणीय है। पंजाब का गली कूंचा आतंक से पीड़ित हो रहा है। मानवता पर दानवता का नग्न तांडव बढ़ता जा रहा है। परन्तु केन्द्र सरकार बरनाला सरकार को अमन-चैन स्थापित करने के लिए समय पर समय बढ़ाती जा रही है। इसी स्तम्भ मे पहले भी हम लिख चुके हैं कि राजनीति के गन्दे पचड़े में फंस कर पंजाब का भ्रातृत्व स्नेह नीलाम किया जा रहा है। अमृतसर के जिस पवित्र गुरुद्वारे–हरिमन्दिर–से गुरुओं की वाणियां प्रसारित कर प्रेम और सौख्य बढ़ाया जाता था, जिस अकाल तख्त से राष्ट्र व जाति की रक्षा के संकल्प दिये थे, वहीं अब आतंक वादियों, लुटेरों, बदमाशों के अड्डे बनाये हैं। उन्हें गिरफ्तार करने के लिए जब कभी पुलिस कार्यवाही की जाये तो उसे गुरुद्वारा अपवित्र किये जाने की संज्ञा–देकर सामान्य सिक्खों को आन्दोलित करने का भूल किया जाता है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी पर भी आतंकवादी प्रभावी है। ग्रन्थी भी गुरुओं के पथ से भ्रष्ट हो गये हैं।

गुरुद्वारे किसी वर्ग विशेष की सम्पत्ति नहीं हैं वह भारतीय संस्कृति के संरक्षण के मूलाधार हैं। उनपर लुटेरों का आधिपत्य होना बड़े ही दुर्भाग्य की बात है।

पंजाब की बरनाला सरकार निर्वाचन में किये गये वायदो के अनुसार प्रदेश में शांति स्थापित करने में कतई सक्षम नहीं रही। भगोड़े सैनिकों, गिरफ्तार सिख फेडरेशन के युवकों, इन्दिरा गांधी के हत्यारों को छोड़ने की बातें, आतंकवादियों से–सुलभ वार्ता करने की बातें सर्वथा असंगत हैं। यह सब शांति स्थापन में कतई सहायक न होंगे–किसी भी आतंकवादी ने आत्म समर्पण करके आत्म–शुद्धि के लिए प्रायश्चित का क्या कहीं कोई संकल्प किया है मेरी जानकारी मे तो ऐसा कोई नहीं है। जिन्होंने अपराध किये, अपराध को अपना धर्म आज भी मान रहे हों अपने निज–स्वार्थ पूर्ति के लिए विदेशों से गुप्त सहायता व संरक्षण ले रहे हों वे कभी भी देश रक्षक नहीं कहे जा सकते वे तो देशद्रोही हैं उनके प्रति दया का बर्ताव करना या करने की मांग करना निरीमूर्खता है और यह देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के साथ खिलवाड़ है।

सत्तासीन या सत्ताहीन अकाली दल या अन्य वैसे ही कुछ लोग बातें करके समस्या को सुलझाने के बजाय उलझाते ही जा रहे हैं।

भारत सरकार मौन दर्शक बनी क्यों इस सबको सह रही है, समझ में नहीं आता। हमारे प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने ४८ घण्टे में समस्या के–निदान का ऐलान किया था। परन्तु कई ४८ घन्टे बीत गये इस बीच कितने ही निरपराध आतंकवाद के शिकार होकर दिवंगत हो गये। कितनी ही माताओं की गोदी सूनी हो गयीं, कितनी ही ललनाओं का सिन्दूर पुछ गया, कितने ही अनाथ हो गये। परन्तु प्रधान मन्त्री जी ने अभी कोई भी निदान नहीं–किया। यह कुछ राष्ट्रीय हित में नहीं है।

इस समस्या का निदान अविलम्ब ही होना चाहिये। मेरी दृष्टि में समस्या का निदान पूर्ण सख्ती से–आतंकवाद की समाप्ति के लिए बरनाला सरकार क्रियाशील हो अथवा त्याग-पत्र दे या फिर केन्द्र सरकार उसे पदच्युत करके वहां राष्ट्रपति शासन के अधीन अस्थायी सैनिक प्रशासन कायम करें इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय दृष्टिगत नहीं–होता। जो भ. हो अब देर न हो–प्रधान मन्त्री जी नरसंहार रोकने का उपाय करिये। मानवता की हत्या और आगे होने से बचाइये आतंकवाद का कठोरता से दमन करके–राष्ट्र को, राष्ट्रीयता की रक्षा कीजिये।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

आर्यमित्र साप्ताहिक
—नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 40993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल डब्लू/एन पी ७९
माघ शुक्ल १०
रविवार ८ फरवरी १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

१२९४६—श्री पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

श्री घासीराम प्रकाशन विभाग

बिक्री हेतु पुस्तकों की सूची

नाम पुस्तक	मूल्य	नाम पुस्तक	मूल्य
वेदार्थ कल्पद्रुम	६० ००	उपनिषद् ईशावास्यम्	१ ००
हिन्दू राज	२० ००	" केन	१ ७५
यज्ञ पर्व सुधा	२ ५०	" मुण्डक	२ ९०
काया कल्प	५ ००	" माण्डूक्य	०० ८०
श्रीमद्भगवद्गीता	८ ००	वेद चर्चा	०० ५०
सत्यार्थप्रकाश उपदेशामृत	४ ००	इस्लाम क्यों छोड़ा	२ ००
आयन मैनिफिस्टो	६०	इस्लाम में नारी	१ ००
ऋग्वेद रहस्य	५ ००	वेद और कुरान तुलनात्मक अध्ययन	२ ००
पाश्चात्य विद्वान और बाईसाइबल	०० १०	गीता	६ ००
यजुर्वेद ज्ञान पीयूष	१२ ००	देव यज्ञ	०० ६०
फिल्मी कुरान के विरुद्ध	१ ००	दैनिक यज्ञ प्रकाश	०० ५०
आर्य प्रतिनिधि सभा का इतिहास के (हीरक जयन्ती)	५ ००	सत्यार्थ प्रकाश	६ ००
आर्यसमाज अस्पृश्यता निवारण	५०	आजीवन स्वस्थ रहने की कला	१० ००
पारसी विदेशी	५०	परम धाम के पथिक	५ ००
जैन मत दर्पण	०० २०	योग यात्रिक	३ ५०
शराब बन्दी क्यों आवश्यक है	२५	स्वराज की अर्चना	४ ००
लघु सत्यार्थप्रकाश द्वितीय	०० ४०	अपने को पहचान	५ ००
" " तृतीय	०० ४०	स्टॉम इन पंजाब	८० ००
मेहरे बाबा मत दर्पण	०० १०	धर्म सूत्र	१० ००
इस्लाम और आर्यसमाज उद	२ ००	मांसाहार घोर पाप	१ ५०

नोट—उपरोक्त पुस्तकों पर कोई कमीशन नहीं दिया जायेगा।
आर्डर के साथ आधा धन अग्रिम भेजने की कृपा करें।

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नाम पुस्तक	मूल्य	नाम पुस्तक	मूल्य
नैतिक शिक्षा भाग ५	२ ५०	" " " १०	३ ००
" " " ८	३ ००	" " " ११	४ ००
" " " ९	४ ००	१२	३ ५०

नोट—नैतिक शिक्षा की पुस्तकों पर १५% कमीशन दिया जायेगा।
आर्डर के साथ आधा धन अग्रिम भेजें तथा रेलवे स्टेशन अवश्य लिखें।

पुस्तकें मिलने का पता—

घासीराम प्रकाशन विभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ—२२६००१

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि उ० प्र० द्वारा संचालित धर्म प्रवेशिका, धर्म भूषण धर्माधिकारी परिक्षायें दि० ८-३-८७ को होंगी जो विद्यालय इन परीक्षाओं में अपने विद्यालयों को प्रविष्ट कराना चाहते हैं वे १५ फरवरी १९८७ तक निर्धारित फार्मों को भर कर शुल्क सहित भेज दें। यह ज्ञातव्य है कि समान्यतया कक्षा ७, ९, व ११ के विद्यार्थी क्रमश धर्म प्रवेशिका, धर्म भूषण, धर्माधिकारी परीक्षाओं में प्रविष्ट लेते हैं। फार्म और पाठ्य क्रम विद्यालयों को भेज दिये गये हैं यदि फार्म जिन विद्यालयों में न प्राप्त हुए हों तुरन्त सभा कार्यालय से पत्र लिख कर मगा लें।

—माधव सिंह मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह १५ जनवरी १९८७ में समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनी द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २५) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८५ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

२२६ ८१८, १८१५, १९५७ २९६८, ५४३२ ६२२८, ६३३७, ६५७२ ६६९४, ८१८३, ८२८३, ८५०९, ८७००, ८७ ९ ८७१३, ८७९१, ९०७५ ९०८६, ९३९० ९७९२, १००६३, ११४४४ ११४६२, ११४७०, ११४७१ ११४८७ ११७८२, ११८१४, १२०७३, १२०८१, १२०८४ १२०९०, १२०९६, १२२९२, १२५४९, १२५५५, १२५७०, १२५७१ १२८१४, १३०२३, १३०३५, १३०४२, १३३७० १३३७२, १३३८६, १३३८८, १३३९५, १३३९८, १३४००, १३४०२, १३४०६, १३४११, १३४१६ १३६६७, १३६६८, १३६६९, १३६७० १३६७१, १३६७७, १३६७८, १३६७९, १३६८०, १३६८१ १३६८२, १३६८३, १३६८४, १३६८६ १३६८७ १३६८९, १३६९० १३६९१, १३६९२, १३६९३, १३६९४, १३६९५।

विनीत—
—व्यवस्थापक

ऋषि-राज कलेण्डर १९८७

इस कलेण्डर में देशी तिथियां, अंग्रेजी तारीख दी हैं। महर्षि की जीवनी के प्रत्येक पृष्ठ पर चित्र हैं। इसके अतिरिक्त पर्वों के ४० चिन्ह स्थान-स्थान पर गायत्री मन्त्र, आर्यसमाज के नियम हैं। १ कलेण्डर ८० पैसे, ४ कलेण्डर तीन रुपये १० कलेण्डर पांच रुपये, सौ का मूल्य ४०) पहले भेजें।

हवन सामग्री ३-५० किलो आर्य डायरी ६) रु०।

पता—वेद प्रचार मण्डल
करोल बाग, रामजस रोड, दिल्ली—५

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से विश्वभारती प्रिन्टिंग प्रेस ९ वृन्दाबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रबुद्ध आत्माग्नि

★

उत् बुध्यस्व अग्ने प्रति जागृहि त्वम् इष्टा पूर्ते सं सृजेथाम् अयं च ।
अस्मिन् सधस्थे अधि उत् तः अस्मिन् विश्वे देवाः यजमानः च सीदत ॥

(यजु० १५-५४, १८-६१)

पद्यार्थ—

ज्ञान ज्योति से होकर प्रदीप्त,
उत्कृष्ट बोध प्राप्त कर आत्माग्नि ।
इष्ट पूर्त्ति व स सृजन हेतु
सतत जागरूक रह आत्माग्नि ॥
उत्तरोत्तर उन्नतिशील जीवन के,
सहस्थान में हो स्थिर आत्माग्नि ।
सकल इन्द्रिय देव यज्ञमय बना ले,
हो सर्वथा अधिष्ठित आत्माग्नि ॥

—बसन्त

★ ओ३म् ★

आर्यमित्र

[साप्ताहिक]

ऋषि-बोध पर्व-विशेषांक

दयानन्दाब्द १६३, वैक्रमाब्द २०४३, सृष्टि सवत् १९७२९४९०८७

रविवार, फाल्गुन कृष्ण नवमी

वर्ष ९०] २२ फरवरी १९८७ [अङ्क ७ ८

★

★

स्वत्वाधिकारिणी—

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

नारायणस्वामी—भवन

५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मन्त्री

★

मुद्रक एवं प्रकाशक—

विश्वम्भर दयाल गुप्त

इस अङ्क का

मूल्य ५)

दयानन्द वचनामृत

संकलनकर्त्ता—संजय अवस्थी

★

१—वेद अपौरुषेय है। उसका ज्ञान पूर्ण है। निर्भ्रान्त है।

★ ★ ★

२—ईश्वर, जीव, प्रकृति यह तीन सत्तायें अनादि हैं।

★ ★ ★

३—परमात्मा को जानने के लिए—आत्मा को पहचानो—परमात्म-ज्ञान का मार्ग स्वतः खुल जायेगा।

★ ★ ★

४—विदेशी शासन कितना ही अच्छा हो वह स्वीकार नहीं करना चाहिए। स्वदेशी राज्य ही स्वीकार योग्य है।

★ ★ ★

५—हमें दूसरों के सुचरित को ही देखना व उसका अनुकरण करना चाहिए।

★ ★ ★

६—मै विश्व को कैद से छुड़ाने आया हूं।

★ ★ ★

७—मुक्ति अकेले नहीं चाहिए। सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण हित जीवन अर्पित करना कर्तव्य है।

★ ★ ★

८—धर्म को समझने वाला विशाल हृदय होता है। संकुचित वृत्तियां उसके पास नहीं रह सकतीं।

★ ★ ★

९—ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करो। ईश्वर विश्वासी कभी पाप नहीं करता।

★ ★ ★

१०—गुणों का ग्रहण अवगुणों का त्याग सत्संग से होता है।

★ ★ ★

११—पाप से घृणा करो। पापी पर दया करो। उसकी बुद्धि पवित्र करने की परमात्मा से प्रार्थना करो।

★ ★ ★

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान जी द्वारा—

ऋषि बोध पर्व पर आर्य जनों को–उद्बोधन

घोर अज्ञानान्धकार से परिव्याप्त था जब हमारा देश, पराधीनता की बेड़ियो से जकड़ी थी जब भारत माता–उन सकट की घड़ियो मे–आज के दिन एक दिव्य आत्मा ने ज्ञान की किरण देखी, उसे उद्बोध हुआ और वह तप, त्याग, साधना, की कठिन सीढ़ियो पर चढ़ता हुआ, चमका, और तड़प उठा भारत माता की बेड़ियो को काटने के लिए। तड़प उठा अज्ञानान्धकार को मिटाने के लिए।

वेद का ज्ञान प्रकाश फैलाया।

जन जन को वेद ज्ञान से परिपूर्ण करने के लिए–स्वाधीनता की अलख जगाने के लिए निकल पड़ा–यात्रा पथ पर। आत्माहुति दे दी हम सबके कल्याण के लिए।

ज्योतित हुआ गगन–स्वतन्त्र हुआ देश। पर पूर्ण स्वप्न साकार न हो सका उस देवता का। देश पाश्चात्य प्रवाह मे बहने लगा। विग्रह, आतक, द्वेष, ईर्ष्या, साम्प्रदायिक दुर्भाव सर्वत्र छाने लगा।



श्री प० इन्द्रराज जी

ऐसे सकटापन्न समय मे आज हम सब का पावन कर्तव्य है कि हम उद्बुद्ध हो, प्रेरणा लें। सुख और शान्ति का एकमात्र मार्ग वेद-पथ है–यह उस देव दयानन्द का उद्घोष था।

आओ आज के पवित्र पर्व पर हम देव दयानन्द के सपनो के भारत के निर्माण का सकल्प ले। हम व्रत लें–हम वेद पढ़ेंगे, पढ़ायेंगे, सुनेंगे, सुनायेंगे और वेद ज्ञान से पूरित होकर सब मे उस प्रकाश को फैलायेंगे। पाश्चात्य प्रवाह को रोकेंगे। देश को सुखी समृद्ध शान्ति सौहार्द से परिपूर्ण बनायेंगे।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के मंत्री जी द्वारा—

ऋषि बोध पर्व पर आर्य जनता के लिए सन्देश



श्री मनमोहन जी तिवारी

मूलशंकर जी ने आज के दिन ज्ञान-प्रकाश की एक रश्मि प्राप्त की थी। उस रश्मि से आत्मा को आलोकित करके वे महर्षि दयानन्द बन गये।

सम्पूर्ण राष्ट्र को जगाया। वेद का अनुपम प्रकाश फैलाया।

'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' का बिगुल बजाया। चेतना भरी। अन्धकार मिटने लगा। प्रकाश बढ़ने लगा। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि होने लगी। नारी का सम्मान बढ़ा। छुआछूत का भेद मिटने लगा। देश स्वाधीन हुआ।

हम फिर सोने लगे। ह्रास होने लगा। वेद से लोग फिर दूर होने लगे। अंग्रेजियत फैलने लगी।

देश मे आतंकवाद, उग्रवाद, विलगाववाद—साम्प्रदायिक विद्वेष बढ़ने लगा।

आज देश जल रहा है मानवता चीत्कार कर रही है। ऐसे समय मे आर्यों का धर्म इनसे संघर्ष करके उनका सर्वनाश करके राष्ट्र को बचाना है।

आइये! आज के पुनीत पर्व पर हम सभी व्रत लें महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रशस्त वेद पथ पर चल कर हम भारत को समृद्ध सुखी, शान्ति आह्लाद से परिपूर्ण बनायेंगे, उसके प्राचीन गौरवमय विश्व गुरुपद पर उसे पुन प्रतिष्ठापित करायेंगे।

प्रेम स्नेह सौहार्द्र जन जन मे फैलायेंगे समस्त विश्व को आर्य बनायेंगे।

उठो आर्य वीरो! सभी को जगाओ। वैदिक नाद गुंजाओ। देश को बचाओ। मानवता की रक्षा करो।

मनमोहन तिवारी

मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश



महर्षि दयानन्द सरस्वती

धृतव्रतो, महाप्राणो, महात्मा, धर्मधूर्वहः,
पुरोधा युगधर्मस्य, ज्योतिःस्तम्भस् तमो युगे,
संस्कृतेः प्रति संस्कर्ता, ऽद्यतनार्याग्रणीर् महान्,
आर्यत्वोद्धारपद्धत्या आद्यद्रष्टा कलौ युगे,
विधनयन् पताकां चान्वर्था पाखण्डखण्डिनीम्,
दयानन्दो मुनिर् वन्द्यो भारतीयेर् युगे युगे ॥

—डा० हर्ष नारायण

सम्पादकीय

उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत

उठो, जागो, वर प्राप्त करो, अन्यो को भी प्राप्त कराओ। सबके सुख मे अपना सुख मानो, यह भारतीय सस्कृति का, वेद का सन्देश है।

विश्व का गुरु कहा जाने वाला भारत, सोने की चिड़िया कहा जाने वाला भारत, जब वेद्र पथ से विभ्रमित होने लगा आपत्तियो के बादल छाने लगे। देश पराधीनता की बेडी मे जकडा गया, वैभव लुट गया, दरिद्रता डसने लगी, ज्ञान लुप्त हो गया, अज्ञानान्धकार ने ग्रस लिया भारत को। दूसरो को ज्ञान बाटने वाला भारत निरक्षरता का जगल बनने लगा। पाश्चात्य सस्कृति ने अपना फैलाव करना प्रारम्भ किया। शिक्षा विदेशी, सस्कृति विदेशी, वेष विदेशी, भाषा विदेशी हमारा आधार बन गयी।

अज्ञानान्धकार से त्रस्त भारत मे आज से लगभग पौने दो सौ वर्ष पहले–

"यदायदा धर्म हतिर्जगत्या प्रजायतेऽनर्थ वशात् बृहत्याम्।
तदा तदा कोपि परोपकारी तदुर्प्रति कामयतेऽर्थकारी"

उक्ति के अनुरूप महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होने महाशिव रात्रि की एक सामान्य घटना से उद्वेलित होकर सच्चे शिव, परमात्मा, सच्चे सुख, सच्ची शाति की प्राप्ति की प्रकाश की अनुपम किरण देखी। और दृढ सकल्प लेकर अपनी जीवन यात्रा प्रारम्भ कर दी। कठिन तप किया, साधना की, ज्ञानी गुरुओ की खोज मे घोर जगलो, पर्वतो उपत्यकाओ की खाक छानी 'जिन खोजा तिन पाइया' के अनुसार अन्तत उन्होने गुरु विरजानन्द को पा ही लिया और उनसे वेद ज्ञान का अमृत घट प्राप्त करके अपनी आत्मा को पूर्ण पवित्र बनाया और फिर समग्र मानव जाति को अमृत बाटने, भारत माता की पराधीनता की बेडिया काट कर सुखी स्वाधीन भारत बनाने का दृढ सकल्प लेकर कूद पडे समरागण मे। रात्रि दिवस अपने दुख-सुख की परवाह किये बिना जन-जन मे वेद ज्ञान का प्रकाश फैलाते फिरे। उनके तप और त्याग के परिणाम स्वरूप उनके अनुयायियो मे अजेय जागृति आयी और कठिन सघर्ष के बाद भारत स्वतत्र हुआ।

परन्तु स्वाधीनता के बाद शनै शनै भौतिक रूप मे जहा काफी कुछ समृद्धि प्राप्त हुयी वहीं स्वार्थ, छल, कपट, द्वेष, विग्रह साम्प्रदायिक दुर्भाव बढने लगा। जातिगत, दल गत, भाषा गत भेदभाव बढ़ने लगे। फिर भी देश के कर्णधारो को ऋषि के सन्देश स्मरण न आये। ऋषि दयानन्द के द्वारा दिये गये वेद पथ पर चल कर राष्ट्र समृद्ध करने, मानवता की रक्षा करने, के सन्देश को नासमझी के कारण नही समझा गया। बस देश की स्थिति बिगडने लगी और भाषायी समस्या, जातीय समस्या, साम्प्रदायिक समस्याओ ने बिलगाव, आतकवाद, उग्रवाद को प्रश्रय दिया। देश मे विध्वसक कार्यवाहिया प्रारम्भ हो गयीं। नेतागण जितना ही इन समस्याओ से निपटने का मार्ग ढूंढते है उतनी ही समस्यायें उलझती जाती है। नित्य देश के विभिन्न क्षेत्रो मे मार-धाड आन्दोलन विस्फोट होते रहते है। समस्यायें नित्य नयी नयी उभरती जाती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि, राष्ट्र के कर्णधार और जनता दोनो ही दयानन्द को समझें, दयानन्द के बताये मार्ग को देखें-उस पर चलें। उनका निर्दिष्ट पथ वेद पथ, है। वेद का ज्ञान, वेद का सदेश किसी व्यक्ति विशेष, किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं सम्पूर्ण मानव जाति के लिए समान रूप से है। अत वेद के अनुगामी बनें। वेद माता ने–ओ३म् स्वस्तिपन्था मनुचरेम सूर्या चन्द्र मसाविव। पुनर्ददताघ्नता जानता सगमेमहि" के द्वारा जहा सूर्य और चन्द्रमा की भाति नि स्वार्थ कल्याण सुख, शान्ति समृद्धि प्रसार के पथ पर चलने का (किसी व्यक्ति या वर्ग विशेष को नहीं) मानव मात्र के लिए सदेश दिया है वही" ओ३म् भद्र कर्णेभि श्रृणुयाम देवा। भद्र पश्येमाक्षभियजत्रा। स्थिरैरगैस्तुष्टुवास स्तनूभिव्यशेमहि देवहित यदायु" के द्वारा विश्व के हर क्षेत्र मे हर जीवन मे सुखी जीवन देखने, सुख सम्बर्द्धक सम्वाद सुनने-सुनाने, आनन्दमय वातावरण के विस्तार मे ही सम्पूर्ण जीवन यापन का सदेश दिया है।

इस प्रकार एक दो नही सम्पूर्ण वेद ज्ञान प्राणि मात्र के कल्याण पथ का सृजन करता है। किसी धर्म विशेष किसी वर्ग विशेष, किसी सम्प्रदाय विशेष का हित या अहित नहीं करता। इसके विपरीत जीवन सघर्ष, विग्रह उत्पन्नकराता है।

ऋषि बोध पर्व के इस पुनीत दिवस पर आइये हम सब मिल कर संकल्प लें कि, हम मानव मात्र में सुख समृद्धि कल्याण प्रसार के लिए वेद ज्ञान को प्राप्त करेंगे और उसे दूसरों में भी प्रसारित करने के लिए संकल्पित होंगे । उसके प्रकाशमय पथ पर चल कर सुखी समृद्ध होंगे। इस समय केवल मात्र महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चल कर ही वेद ज्ञान के रहस्य को समझा व जाना जा सकता है। वेद ज्ञान के द्वारा ही हम पूर्ण विज्ञान प्राप्त करके विश्व को विज्ञान के द्वारा निर्माणकारी पथ पर ले जाने में सक्षम होंगे। विज्ञान का विध्वंसकारी रूप नष्ट कर सकेंगे ।

वेद ज्ञान के द्वारा ही हम वैदिक संस्कृति का प्रचार व प्रसार करके भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के प्राणि मात्र को सुख समृद्धि से पूर्ण बनाने में समर्थ हो सकेंगे ।

—मनमोहन तिवारी

ऋषि दयानन्द बोध रात्रि पर

आई रात्रि बोध की,
पाया ज्ञान मूल ने
सच्चे शंकर पाने की
लौ लगी ज्ञान की ।

बहन का शव देखा, देखी
चिता पितृ- भ्रात की
गृह त्याग भटके ठौर-ठौर
विरजानन्द ने दी थी वेद ज्ञान की ।

देश को दिया मंत्र स्वराज्य का,
स्वदेशी स्वतंत्र समाज का,
स्वधर्म स्वाभिमान तथा
धाक जमाई श्रुति ज्ञान की ।

आलस क्यों अब छा गया ?
कमर कसो आर्य जन,
आओ साध पूरी करें।
दयानन्द महान् की ।

—ले० डा० ओ३म् प्रकाश (बर्मा वाले)
सी-३४, पञ्चशील एन्कलेव,
नई दिल्ली-१६

प्रणाम

—चन्द्रशेखर आर्य
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

★ ★

हे देव ऋषि हे देव दयानन्द,
तुमने भारत का कल्याण किया ।
जाति पाति का भेद मिटा कर,
तुमने सत्य धर्म का प्रचार किया ।
अन्यायों और अत्याचारों का,
दृढ़ता से प्रतिकार किया ।
ब्रह्मचर्य की शिक्षा को लेकर,
सारा जीवन प्रयत्न किया ।
मातृ भूमि हित मर-मिटने का,
तुमने दिया पावन सन्देश ।
भारतीय संस्कृति को लाना,
यही तुम्हारा था उद्देश्य
तेरे पद् चिन्हों पर चल कर,
स्वतन्त्र हुआ है भारत देश
"कृण्वन्तोविश्वमार्यम्" का,
तुमने मचवाया हाहाकार
वेदों का उपदेश दे कर के,
किया मानवता का उद्धार
ऐसे पूज्य महा ऋषि को हम,
करते प्रणाम हैं बारम्बार

★ ★ ★

(१) —मन भटकने न पाये—इसके आगे पत्थर की रेखा खींचे ।

(२) मन की स्थिति मजबूत हो—तो परिस्थितियों का सामना किया जा सकता है। उन्हें अनुकूल बनाया या सहा जा सकता है ।

(३) क्या तीर्थों में सचमुच मन को आध्यात्मिक संतोष मिलता है ?

★ ★

शिवत्व के लिए ही–

शिव रात्रि का व्रत लें



–श्री विक्रमादित्य जी 'वसन्त'

[बी-६४ वसन्तिका, राजाजीपुरम्, लखनऊ–२२६०१७]

वेद व्याख्या—

वेद मन्त्र–

शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरा।
मा द्यावा पृथिवी अभि शोचीर्मान्तरिक्ष मा वनस्पतीन् ॥

ऋषि वित देवता अग्नि (यजु० ११–४५)

पद–पाठ–

शिव. भव प्रजाभ्यः मानुषीभ्य. त्वम् अगिरः।
मा द्यावा पृथिवी अभि शोचीः मा अन्तरिक्षम् मा वनस्पतीन् ॥

व्याख्या–

प्रस्तुत मन्त्र मे मानवी प्रजाओ के लिए जो सुमानव है, महामानव है, उसे शिव बनने के लिए प्रेरित करते हुए कहा है–"अगिर त्वम् मानुषीभ्य प्रजाभ्य शिव भव"। 'अगिर' उसे कहते है जो अग अग रमा हुआ हो। परमात्मा की सब व्यापकता के कारण उसे भी 'अगिर' शब्द से अनेक वेद मन्त्रो मे सम्बोधित किया गया है परन्तु यहा उसे शिव बनने की जो प्रेरणा दी गई है, वह केवल उस सुन्दर और प्रिय मानव के लिए है जो अपने सुकर्मो के कारण व्यक्तियो के हृदय मे वास कर रहा है।

परमात्मा तो शिव स्वरूप है ही। शिव का अर्थ है–मगल कारक, कल्याणकारी। वेद ने प्रभु के शिव स्वरूप के लिए ही कहा है–'शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु' (यजु ३–६३) सर्वत कल्याणकर्त्ता होने के कारण परमात्मा का एक गुण वाचक नाम 'शिव' है। उसकी 'स्वधिति' पिता के तुल्य है अतएव उसके लिए ही नम कामना की अभिव्यक्ति की गई है।

प्रभु का सच्चा भक्त उस शिव स्वरूप के कल्याणतम रस का पान करके उसके शिवत्व को धारण करता है। प्रार्थना शैली मे इसकी भव्य अभिव्यक्ति करते हुए साधक विनय करता है–

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह न.।
उशतीरिव मातरः ॥

[ऋ० १०–६–२ यजु० ११–५१]

अर्थात् हे प्रभो ! जो तुम्हारा कल्याण प्रद तम रस है उसका हमे स्नेहमयी माताओ के समान सेवन कराओ। जो इस कल्याणकारक रस का आस्वादन कर लेता है वह अपने जीवन मे मुदित प्रमुदित हो जाता है। 'मोदा प्रमोद अगुली रङ्गानि मित्र मे सह' उसके अग प्रत्यग ही केवल मुदित प्रमुदित नहीं पोते अपितु सहनशीलता से भी उसको अटूट मैत्री हो जाती है। वह परमार्थी बनकर स्वय कष्ट सहता है पर दूसरे को सुख पहुचाता है। ऐसे जनप्रिय सुन्दर मानव की भी सज्ञा 'अगिर' हो जाती है क्योकि अपनी सुसेवाओ के कारण वह सब के साथ रमण करता है।

साधक की साधना का उद्देश्य केवल आत्मोन्नति ही नही है। वह जिस परिवार, समाज राष्ट्र और विश्व मे रहता है, उसका भो उसे कल्याण करना है। इन सबको नरक अथवा स्वर्ग बनाने वाले ये मानव ही तो है अतएव मानवा प्रजाओ के लिए उसे शिव बनाना है। वह इस शिवत्व को कैसे प्राप्त करे तो वेद प्रेरणा देता है-

देवस्य सवितुः सर्वं कर्म कृण्वन्तु मानुषः।
श नो भवन्त्व ओषधीः शिवा ॥
(अथर्व ६-२३-३)

देव सविता की प्रेरणा से युक्त होकर यदि मनुष्य कर्म करें तो हम सबके लिए युग प्रवाह शान्तिप्रद हो और सुकर्मा की ओषधिया मगलकारिणी हो जाए।

दूसरो को बनाने के पूर्व पहले स्वयम् बनना है इसलिए वेद सुप्रेरणा देता है-

मा अभि शोची द्यावा पृथिवी
मा अभि शोची अन्तरिक्षम्
मा अभि शोची वनस्पतीन्

आज का विज्ञानवेत्ता द्यौ ओर पृथिवी को सतप्त कर रहा है। अन्तरिक्ष को सता रहा है और वनो की वनस्पतियो को उजाड़ रहा है। वाह्य ओर आन्तरिक रूप से सर्वत्र इन का विनाश हो रहा है। वाह्य जगत मे यदि एटम बमो के परीक्षण से द्यौ पृथिवी अन्तरिक्ष को सतप्त किया जा रहा है। हरे भरे वनो के वृक्षो को काटकर फेका जा रहा है तो मानव जीवन का मस्तिष्क जो द्यौ है, हृदय जो अन्तरिक्ष है और नाभि से नीचे का प्रदेश जो भोग लोक रूपी भू है, उस को भी सर्वत्र सतप्त और भ्रष्ट किया जा रहा है। आहार विचार, आचार तथा व्यवहार सब दूषित किए जा रहे है। शिव स्वरूप महामानव ही अन्य मानवो को सुपथ पर ला सकते है अपने जीवन को आहुत करके। परमार्थ का मार्ग पुरुषार्थ का है। वेद ने सत्य का दर्शन कराते हुए कहा-

'अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः।
अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥'
(ऋ० १०-६०-१२ अ० ४-१३-६)

अर्थात् मेरा हस्त भग युक्त है। यह विश्व की ओषधि है, यह भगवान से भी बढकर है और यह शिव को सर्वत स्पर्श करने वाला है। 'हस्त' का प्रयोग इस मन्त्र मे कर्मवाचक है।

अपने को शिव बनाने का एकमेव साधन है अपने मनको शिव सकल्पी बनाना। रात्रि शयन के पूर्व यजुर्वेद के अध्याय ३४ के प्रथम ६ मन्त्र जिनके अन्त मे 'मे मन शिवसकल्पम् अस्तु' दिया हुआ है, उनके पाठ करने का बड़ा महत्व है। रात्रि शयन से पूर्व मानव जैसा चिन्तन करता है, उस चितन की धाराए उसकी निद्रावस्था मे उसके भीतर परिक्रमा करती रहती है। बच्चो को लोरिया देकर सुलाने के पीछे यही विज्ञान था। वेद के अनेक मन्त्रो मे जगदम्बा भी अपने अमृत पुत्र पुत्रियो को ऐसी ही लोरिया देती है। ज्ञानी और विवेकी अपनी रात्रियो को भोग रात्रिया न बनाकर उन्हे योग रात्रिया बनाते है। योग रात्रि ही वास्तव मे वह शिवरात्रि है जिसे प्रतीक स्वरूप मनाने के लिए हम शिवत्व का व्रत लेते है। वेद ने इन योग रात्रियो के लिए ही कहा है-

वर्धान् यं पूर्वी क्षपो विरूपः स्थातुश्च रथमृतप्रवीतम्।
अराधि होता स्वर्निषत्तः कृण्वन् विश्वान्यपासि सत्या॥
(ऋ० १-७०-४)

अर्थात् जिसे सनातन विरूपा रात्रिया बढाती है वही स्थावर व जगम, चर, अचर को ऋत प्रवीत किया करता है। जिस साधक ने रात्रियो मे ऐसी साधना की वह आत्मावस्थित हो गया और उसने सत्य कर्मो को किया।

ऋषि बोध पर्व पर यदि स्वामी दयानन्द के अनुयायी इस सत्य का बोध प्राप्त कर स्वयम् शिव बनने के लिए अपनी रात्रियो को शिव रात्रिया अर्थात् योग रात्रियाँ नही बनाएगे तो उस महान ऋषि के मन्तव्यो को कभी पूरा नही कर पाएगे। विश्व के आर्यकरण के पूर्व अपना आर्यकरण करना होगा और शिवरात्रि के पुनीत पर्व की वास्तविकता से अवगत होकर भोगमय जीवन को तिलाजलि देकर उन्हे जीवन की प्रत्येक रात्रि को शिवरात्रि बनाना होगा। ★



देश की दशा

श्रीयुत राजर्षि रणञ्जयसिंह जी,
(भूपति भवन, अमेठी राज्य (सुलतानपुर)

देश दशा देख दुख होता है अपार आज
बढ़ी अराजकता है हिंसा का प्रसार है।
स्वार्थवश ईर्ष्या का बोलबाला है चारों ओर
घोर अनैतिकता है भरा भ्रष्टाचार है।
ऐसी परिस्थिति में 'रणञ्जय सत्साहस से
कुटिल कुरीतियों का करना संहार है।
धर्म का प्रचार हो पाखण्ड पर प्रहार हो
सारे समाज का तभी सम्भव सुधार है।

ऋतुराज तभी मुस्कायेगा

[डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी, प्रोफेसर्स कालोनी,
श्यामगंज, बरेली—२४३००५]

★

आतंकवाद की जर्जरता,
जब भूतल से उठ जायेगी।
नव रचना का उन्मेष देख,
फिर दिशा-दिशा मुस्कायेगी,
आलस्य त्यागकर प्रतिजन जब,
समरस रागों को गायेगा।
असुरक्षा का भैरव नर्तन,
चेतना शून्य हो जायेगा।
जब सच्चरित्रता का धारक,
मानव न भटक जो जायेगा।
सबका होगा जब धर्म एक,
सब भेदभाव मिट जायेगा।
इस शक्ति स्वरूपा नारी का,
गौरव जब जग पहचानेगा।
इस अग्निदाहमय दानव का,
अस्तित्व क्षार हो जायेगा।
सौभाग्य छोड़कर आडम्बर
संगीत सरस सरसायेगा।
पाखण्ड कपट छल छद्मों का,
यह घना तिमिर उठ जायेगा।
हिंसा, लोलुपता का विप्लव,
किसको क्या कब दे पायेगा ?
स्वर्णिम विहान के आने पर,
जब जागरूक उठ जायेगा।
इस विकसित विश्व वाटिका में,
आशा विश्वासों की सुषमा।
सद्भावों के सुरभित प्रसून,
विकरित जिनकी होगी महिमा।
मानवता कोकिल की तानें,
कोना-कोना भर जायेगा।

दयानंदस्स्वामी नयन पथगामी भवतु मे

ऋषिबोध पर्व पर आत्मालोचन करें



--आचार्य वेदव्रत अवस्थी
वेद मन्दिर, हिन्द नगर, लखनऊ

ज्योतिष की गणनानुसार वष मे ११ शिवरात्रिया एव एक महाशिव रात्रि होती है। इस दिन शैव शिव की प्राप्ति हेतु व्रत उपवास करते है। महाशिवरात्रि को विशेष व्रत उपवास के साथ रात्रि जागरण भी धर्म माना जाता है। किम्वदन्ती है कि भगवान शिव प्रसन्न होकर अपने भक्त को दर्शन देने महाशिवरात्रि को आते हे। यह क्रम सहस्रो वर्षो से चलता चला आ रहा है। परन्तु आज तक किसी भी सौभाग्यशाली को उस रात्रि साक्षात् शिव के दर्शन नही हुये।

शिव लिग पर धूप दीप नैवेद्य चढा कर श्रद्धालु भक्त शिव लिग पर चढे अर्ध्य को खाते, और छितराते चूहे को ही देख कर शायद सतुष्ट हो जाते है। माना जाता है कि चूहा गणेश जी का वाहन है और गणेश जी शिव के पुत्र है-सतुष्टि का कारण शिव नही, शिव पुत्र नही चलो उनकी सवारी के ही दशन हो गये भाग्य के पट तो खुले। आज नही तो कल फिर शिव भी मिलेंगे ही, बस शायद इसी आशा की डोर से बधा पूजा का यह क्रम चलता रहता है। परन्तु शिव के दर्शन मिलते उनमे से किसी को भी नहीं।

महाशिवरात्रि के ऐसे ही घटना क्रम से लगभग पौने दो शताब्दी पूर्व मूल शकर के ज्ञान चक्षु खुल गये थे और फिर उन्होने सच्चे शिव के दर्शन पाने का दृढ सकल्प ले लिया था। वे मूल शकर से शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी बने और फिर दया के सागर स्वामी दयानन्द, महर्षि दयानन्द सरस्वती बन कर सभी पर दया करके उस आनन्द का पान कराने के लिए--जिसको अनेकश वर्षो तक कठिन तप साधना करके, गुरु विरजानन्द के चरणो की सेवा करके परमात्मा की अमृतमयी वाणी वेद को हृदयगम करके प्राप्त किया था--व्रती बन गये। वेद ज्ञान के पवित्र पथ के अनुगामी बन कर परमात्मा (सच्चे शिव का) साक्षात्कार करके उस परम देव सच्चे शिव की प्राप्ति का वेद मार्ग सपूर्ण मानव जाति के लिए प्रशस्त किया और उसी पथ पर चलते हुये सबको माग प्रशस्त कराते-कराते आत्माहुति दे दी। मुनि चरितामृतम् के लेखक ने अपनी काव्याजलि अर्पित करते हुये शायद इसी लिए लिखा है कि --

दयापूर्व आनन्द शब्दो यदीद समाख्यामिष प्राप्य
कैंकर्यकाम। तथा स्वामि शब्दोऽपि वाग्देवतायुक्
तदग्रे समागत्य साफल्यमापत्।

महाशिव रात्रि का पर्व ही महर्षि स्वामी दयानन्द का जन्म दिन है। (मूल शकर का नहीं। मूल शकर का जन्म दिन प्राप्त अभिलेखो के अनुसार फाल्गुन कृष्ण १० सम्वत् १८८१ है) । इसी लिए उनके अनुगामी, आर्य समाज के सभासद् इस पर्व को बडे हर्षोल्लास से मनाते है। इस दिन बडी सजधज से हाथी, घोडे, बैण्ड बाजे मोटर गाडियो, स्कूटर मोटर साइकिलो रिक्शो और पैदल

हर नगरो मे विशाल शोभा यात्राए निकाली जाती है । व्याख्यान मालाए आयोजित की जाती है । इससे निश्चय ही वर्ष मे एक बार एक अच्छे सगठन का प्रदर्शन हो जाता है उस दिन ।(परन्तु वह मात्र प्रदर्शन ही रह जाता है जब हम अपने को उस दिव्य देव के निर्दिष्ट ज्योतित वैदिक पथ पर समर्पित भाव से चलने मे पूर्ण लगन नही प्राप्त कर पाते) ।

उस दिन सार्वजनिक अवकाश नही होता इस लिए बहुत से सरकारी कर्मचारी इच्छा होते हुये भी सम्पूर्ण समारोहो मे भाग नही ले पाते । सार्वदेशिक सभा और प्रदेशीय सभाओ का पुनीत कर्त्तव्य है कि वह अपने-अपने स्तर से शासन पर प्रभाव डाल कर ऋषि बोध पर्व को सार्वजनिक अवकाश घोषित कराये । शासन स्वय ऐसा नही करेगा क्योकि शासन विग्रह मचाने,सघर्ष करने के लिए आमादा होने वालो के भय से बिना अधिक श्रम के उनके विभिन्न अवसरो के अवकाश घोषित कर देता है । उसे पता है आर्य समाज अनुशासन का पक्षधर है वह न विग्रह करेगा न सघर्ष । अत उसके निमित्त विशेष पर्वो के अवकाश देने की बात पर सोचने का अवकाश ही नहीं है । इस लिए सार्वदेशिक व प्रदेशीय प्रतिनिधि सभायें ही देश व प्रदेश की सरकारो पर नैतिक दबाव डाल कर ऋषि बोध पर्व को सार्वजनिक अवकाश घोषित कराने मे सफल हो सकेगी । बिना सार्वजनिक अवकाश घोषित हुए अपने अर्जित या आकस्मिक अवकाश मे से कोई हो इस कार्य के लिए अवकाश लेने को तत्पर होता है । यह लिखने मे किञ्चित् सकोच नही है कि आज हमारी चिन्तना भी कुछ उसी प्रकार की सी हो गयी है जैसे शिव भक्तो द्वारा शिवरात्रि या महाशिवरात्रि के व्रत उपवास करने की हे । शायद हम भी जुलूस निकालने भाषण देने व सुनने के अतिरिक्त ऋषि के प्रति श्रद्धाप्रकट करने का अपना और कोई साधन नही समझते ।

महर्षि दयानन्द का जब अभ्युदय हुआ था तब देश मे घोर अज्ञानान्धकार व्याप्त था । परन्तु शिव प्राप्ति की ललक ने एक छोटी सी घटना से उनके हृदय मे प्रकाश की किरणे बिखेर दी और उन्होने दयानन्द बन कर सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए वेदज्ञान का आलोकित पथ दिखा दिया और उस पथ पर चलने का सकेत दिया । पूर्वापर का विचार चिन्तन करके स्वय शुद्ध पवित्र हो कर कल्याण-आनन्द, शिव, पाने का मार्ग दिखाया और स्वय के लिए ही नही समाज के प्राणी होने के नाते सम्पूर्ण प्राणि मात्र के लिए कल्याण पथ पर चलने का सकेत दिया ।

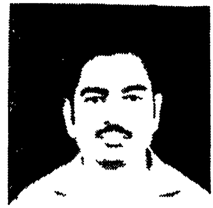
आज देश की गिरती अवस्था, बहुमुखी विग्रह, सघर्ष आतक, मार-धाड़, ईर्ष्या, द्वेष, छल, कपट साम्प्रदायिक विद्वेष के वातावरण के प्रभाव के बढते चरण देख कर निश्चय ही सकेत मिलता है कि हम दयानन्द के निर्दिष्ट वैदिक पथ से विमुख हो गये है ।

ऋषि दयानन्द ने जीवन की पूर्णता प्राप्त करने के लिए क्या, क्यो, कैसे की कसौटी को मन व मस्तिष्क मे लेकर चलने और तर्क की कसौटी पर सत्य सिद्ध करके स्वीकारने का सदेश दिया था । यदि हम अपने जीवन मे ऐसा नहीं कर रहे तो हमारे लिए शिव की कल्पना भी वैसे ही आधारहीन होगी जैसे शिव लिग पर मात्र भेंट चढाना ।

आज का यह पवित्र ऋषि बोध पर्व हमारे आत्मालोचन का पर्व है । इस दिन हमारा प्रत्येक आर्य का धर्म है कि हम सभी अपने-अपने अन्य सभी व्यापार से रिक्त होकर आत्मालोचन करे । आर्य समाजो द्वारा आयोजित समस्त कार्यक्रमों मे निष्ठाभाव से भाग लेकर हर होने वाली प्रक्रिया को गम्भीरता से देखें, सुनें और उसके अनुरूप अपने आचरण को बनाने, ऋषि दयानन्द सदृश देश जाति के लिए सुख-समृद्धि फैलाने के लिए आत्माहुति देने का सकल्प लें । प्रति वर्ष-विगत वर्ष मे किए सकल्पो को अपने जीवन मे झाक कर देखें कितना पूर्ण कर सके है । जो अपूर्णता रह गयी हो उसे नये वर्ष मे पूर्ण करने का व्रत लें जो सकल्प धारण कर चुके है उन्हे अपने अन्दर दृढ रखने का सकल्प लें ।

निश्चय ही इस प्रकार हमारा आत्मालोचन हमे पवित्र पवित्रतर-पवित्रतम बनाने मे सहायक बनेगा और हम सच्चे आर्य बन कर भारत राष्ट्र ही नही समग्र विश्व को-समग्र मानव जाति मे प्रेम, स्नेह, सौहार्द फैलाने मे सफल हो कर--सुख समृद्धि से परिपूर्ण बनाने के महर्षिदयानन्द के स्वप्न को साकार करने मे सक्षम होगे । ✶

महर्षि दयानन्द का दिव्य सन्देश विश्व में फैलाना है





(डा० आनन्द प्रकाश उपमन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली—२)

महर्षि दयानन्द के उपदेशो का मूल मन्त्र विश्वप्रेम और मानव एकता है। उन्होने धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रो की बुराइयो का खण्डन इसी दृष्टि से किया क्योकि मनुष्यो की एकता मे बाधक है। महर्षि ने अपने जीवन मे इस बात का भी प्रयास किया कि विभिन्न सम्प्रदायो के लोग सर्वमान्य सिद्धान्तो और मान्यताओ पर एक मत होकर आपस मे समीपता लायें परन्तु निहित स्वार्थो के कारण यह प्रयास सफल न हो सका। विश्व मे व्याप्त सभी विभेदक दर्शनो, चाहे वह नस्ल के आधार पर हो अथवा रङ्ग अथवा अमीरी-गरीबी के कारण, को जड से समाप्त करने का सीधा रास्ता समस्त भूमि को माता और ईश्वर को पिता अर्थात् सारे जगत् का रचयिता स्वीकार करना है। वेद का यही आदेश है और महर्षि ने इसी सदेश के द्वारा समस्त मानवता को एक करने का कार्यक्रम आर्य समाज को दिया। आर्य समाज ने अपने नियमो मे एक नियम—ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है—बताया। वास्तव मे ससार का उपकार करने की भावना से ही अनेक देशो मे आर्य समाज की स्थापना हुई थी परन्तु कालान्तर मे वह भारतीय मूल के निवासियो मे ही सीमित हो गया और उसने अपना कार्य क्षेत्र विद्यालय चलाना और विवाह-सस्कार कराना ही मुख्य रूप से बना लिया। इस प्रकार साधन को साध्य बना दिया गया। महर्षि दयानन्द के द्वारा दर्शाया गया मानव एकता का सच्चा मार्ग, जिसे हम ऋग्वेद के सगठन सूक्त के उच्चारण द्वारा प्रति सप्ताह अपने साप्ताहिक सत्सगो मे दोहराते है, आज प्रसन्नता की बात है कि विश्व मन्च पर स्थान पा चुका है। परन्तु अभी इसके भाव को समझने मे देर है, जिसमे वैदिक सस्कृति के मार्ग का अवलम्बन कर मन,विचार और कर्म की एकता का आवाहन किया गया है, यह उत्तरदायित्व आर्य समाज का है कि वह विश्व समुदाय के समक्ष महर्षि दयानन्द प्रतिपादित इस उदात्त विचार को रखे, जो विश्व जनीन एव सर्वहितकारी है। महाभारत के पूर्व तक समस्त भू-मण्डल पर आर्यो का चक्रवर्ती साम्राज्य था, धर्म का शासन स्थापित था, वेद-विरुद्ध कोई मत-सम्प्रदाय नहीं था और समस्त मानव समुदाय वैदिक सस्कृति का ही अनुयायी था—यही महर्षि का दिव्य सदेश, सम्पूर्ण विश्व को मैत्री, एकता और शान्ति के मार्ग पर ला सकता है।

देशान्तर मे कार्यरत आर्य समाज के सगठन को अपने इस लक्ष्य को सामने रखते हुए, अपनी शक्ति को समायोजित करने की आवश्यकता है। देशान्तर की आर्य समाजो का सार्वदेशिक सभा से निकट का सम्बन्ध होना चाहिये। इस दृष्टि से सार्वदेशिक सभा को अपने कार्यो का और भावी योजनाओ का परिचय निरन्तर देते रहना चाहिये। जिन देशो मे कार्य करने मे बाधायें सामने आई है, उनसे भी सार्वदेशिक सभा को अवगत कराते रहना चाहिये। जो आर्य-बन्धु भारत यात्रा पर आते है, वे अपने साथ यथा सम्भव जानकारिया ला सकते है और सार्वदेशिक सभा मे आकर अधिकारियो को अवगत करा सकते है। सभा के पास प्रचार साहित्य भी पर्याप्त मात्रा मे है, जिसे प्राप्त किया जा सकता है। देशान्तर के कार्य मे सगठन की दृष्टि से काम होने की

विशेष आवश्यकता है। संगठन की दृष्टि से कार्य से तात्पर्य है— साप्ताहिक सत्संगों की व्यवस्था, संस्कारों का ज्ञान, आर्य साहित्य का परिचय, मूल सिद्धान्तों का परिचय आदि। भारत के बाहर जहां पर आर्य समाज का कार्य प्रारम्भिक अवस्था में है, संगठन सम्बन्धी बातों का ज्ञान परम आवश्यक है। अतएव प्रचारक भी इस दृष्टि से जाने चाहिए कि वे संगठन को ठीक दिशा दे सकें। महर्षि दयानन्द का पावन मिशन सही दिशा में चलता रहे और इसका विकास होता रहे, इस दृष्टि से संगठन में मूलभूत सुधार अनिवार्य है।

महर्षि दयानन्द का सन्देश ही विश्व को विनाश से बचा सकता है। हमने पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्यौलोक, वनस्पतियों औषधियों, जल, विश्व देवः अर्थात सर्वत्र शान्ति की कामना की है। विश्व में जहां-जहां भी अन्याय, अभाव और अत्याचार है, वहां वहां आर्य समाज की आवश्यकता है। धार्मिक उन्माद के कारण कई देशों में युद्ध छिड़े हुए है, महिलाओं के ऊपर अमानुषिक अत्याचार किये जाते हैं और मनुष्यों के बीच असमानता का व्यवहार है। भारत की सामाजिक व्यवस्था के अनेक दोष प्रवासी भारतीयों में भी स्थान बनाते जा रहे हैं। ऐसे सभी स्थानों पर आर्य समाज के प्रचार की और दयानन्द के दिव्य सन्देश की आवश्यकता है। विश्व मन्च पर जब महर्षि दयानन्द का संदेश पहुंचाया जायेगा, तभी वास्तविक मानव शान्ति प्राप्त होगी। आर्य समाज मानवता का आन्दोलन है, रास्ता लम्बा है, पर मानवता की लड़ाई में पराजय कभी नहीं होती।

—ओ३म् नाम के जप से विश्व प्रेम की गंगा का प्रबल प्रवाह-प्रतिपल हृदयाकाश में प्रवाहित होने लग जाता है।

—ओ३म् नाम वह रत्न है जिसको प्राप्त कर लेने पर सब कामनाएं—मानव की समाप्त हो जाती हैं। केवल एक कामना लोक सेवा ही रह जाती है।

—सत्संग वेदकथा, धर्म उपदेश और सन्त समागम में नित्य जाने से ज्ञान चक्षु खुल जाते हैं। अज्ञान अन्धकार नष्ट हो जाता है।

देव दयानन्द

(डा० राजेन्द्र प्रसाद आर्य फूलपुर, आजमगढ़)

वीर था वह धीर था,
धर्म का धुरीण था।
समस्त मत वादियों से—
वाद में प्रवीण था।

जिसे देखकर असत्य,
स्वयं कांप था गया।
विधर्मियों का दल जिसे,
देख दहल था गया।

दया-दान वीर था,
आनन्द का फकीर था।
देव दयानन्द तो—
ज्ञान का शरीर था।

पाखण्ड कांपता था,
जिसे देख दूर से।
द्वेष-दम्भ हो गये,
उसे देख चूर से।

ऋषी था मुनी था,
स्नेह-शान्ति-दूत था।
माँ भारत का एक वह,
सच्चा सपूत था।

वही वेद-वैभव का,
व्यापक समीर था।
शक्ति - पुञ्ज - पूरित,
ऋषि का शरीर था॥

उन्हीं की हुंकार से,
अंग्रेज भी दहल गये।
क्रूर शासक डर गये,
छोड़ भारत चल गये।

महान् दयानन्द

मूलशंकर से महर्षि दयानन्द सरस्वती कसे ?

(श्री रमेशचन्द्र द्विवेदी, व्याकरण विभागाध्यक्ष गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय सिराथू इलाहाबाद उ० प्र०)

उन्नीसवीं शताब्दी मे और उससे पूर्व महाभारत काल के पश्चात् अनेको महापुरुष हुए हैं। जिन्होने सामाजिक कार्य करने के कारण देश विदेशो मे ख्याति प्राप्त की है और उन सभी के नाम भी आज बड़े गौरव के साथ लिये जाते है। किन्तु जैसी गुण कर्म के आधार पर विशेषताए महर्षि दयानन्द सरस्वती मे पाई गई वैसी विशेषताए किसी अन्य महापुरुष मे नहीं पाई गई। जिनके कारण ही मूलशङ्कर महर्षि दयानन्द सरस्वती के रूप मे विश्व विख्यात हुए है।

किसी भी व्यक्ति को महर्षि तब तक नही कहा जा सकता जब तक उस व्यक्ति के सामाजिक विविध कार्य और उनका आधार एव उसके वैयक्तिक जीवन पर शास्त्रीय मान्यता के अनुसार दृष्टिपात न कर लिया जाय।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का बचपन का नाम मूलशङ्कर था और वेदपाठी ब्राह्मण के घर मे जन्म लेने के कारण सस्कृत का अध्ययन और वेद सहिताओ का अध्ययन करना स्वाभाविक था। "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" इस सूक्ति के अनुसार मूलशङ्कर की पूज्यनीय माता-पिता को मूलशङ्कर से अपने लिए बडी-बडी आशाए थी, किन्तु माता-पिता को यह क्या पता था कि यह मूलशङ्कर भविष्य मे गृह त्याग कर दयानन्द के रूप मे दीक्षा ले लेगा और महर्षि दयानन्द बनकर जगत् मे विख्यात होगा।

त्रयोदशी का व्रत रखना एक साधारण घटना सभी के लए हुआ करती है किन्तु सच्चे शिव के दर्शन की रट लगाना और जीवन मे उसे पूर्ण कर लेना प्रत्येक पुरुष का कार्य नहीं होता है। इसी प्रकार अपने घर परिवार मे मृत्यु की घटनाओ को देखकर मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेना प्रत्येक पुरुष का व्रत नहीं होता है। इसके विपरीत ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत" इस वेद वचनको कोई ह सिद्ध कर पाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती मे इन दोनो ही सर्वोच्च स्थितियो के संस्कार (बीज) बचपन मे ही विद्यमान थे, जिनसे यह सिद्ध होता है कि प्रकृति के दो गुण रजोगुण और तमोगुण महर्षि के बचपन की अवस्था मे विद्यमान नही थे। वे उनके द्वारा विगत जन्मो मे ही पराजित किये जा चुके थे। "अनेक जन्म—ससिद्धिस्ततो याति परागतिम्" इस जन्म से उनमे मात्र सत्व गुण की स्थिति विद्यमान थी क्योकि "ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्वस्था" इस उक्ति के अनुसार उन्हे अग्नि की ज्वाला के समान भौतिक-प्रवृत्तियो से ऊपर ऊपर उठ जाना था और विद्वानो एव योगियो के निमित्त बनाकर ब्रह्म मे स्थित अर्थात् मुक्त हो जाना था। अत अनेको घरेलू तथा बाह्य समस्याओ पर चिन्तन कर वे आगे बढते गये और गृह त्याग कर सन्यास ले ही लिया तथा दयानन्द के नाम से पुकारे जाने लगे। अब वे मूलशङ्कर से दयानन्द सरस्वती बन चुके थे।

सरस्वती के प्रवाह मे प्रवाहित होने के लिये दयानन्द रूपी नीर का निर्मल स्रोत गुजरात टकारा से प्रवाहित हुआ था वह अनेको विद्वानो रूपी सगम मे मिलता हुआ अपने आप में स्वच्छ धारा-प्रवाह से आगे बढता ही गया। किसी भी कस्बे, नगर या महानगर के असत् विचारको रूपी गन्दे नाले उसको अस्वच्छ न बना सके। वह गगा की धारा के समान द्वितीय गगा के रूप मे सबको दयारूपी आनन्द के तरगो मे शीतलता देते ही रहे। एक ठिकाना मिला, रुकने का, ठहरने का। जो देखने मे लघुतम था किन्तु था समुद्र जैसा गम्भीर एक कुटीर और दयानन्द को सरस्वती को प्रदूषण से बचाने मे पूर्ण समर्थ, वह थे स्वामी विरजानन्द।

यहा अब स्वामी विरजानन्द की समुद्र सी सरस्वती से

दयानन्द की सरस्वती मिलकर ब्रह्मतेज से प्रदीप्त होकर महाकाश मे स्थित हो प्राणीमात्र पर दया पूर्वक बरसने का अपने गुरुवर से दयानन्द ने आदेश प्राप्त किया और यत्र-तत्र दिगदिगन्तरो मे विशाल गर्जनाओ के साथ अपने दयालु स्वभाव से ज्ञान-पिपासुओ के स्रोत्रो (कानो) को आप्लावित करने लगे। हरिण-हरिणियो जैसे भोले-भाले प्राणियो के लिए अपने सुन्दर सुडौल शरीर के नेत्रो के विषय बनने लगें। वही कुछ धनलिप्सु पूर्व-परम्पराग्रही शृगाल वृत्ति के लोग उनको धोखा देने की योजना बनाने लगे। कुछ मयूर जैसे कोमल हृदय वैदिक सिद्धान्तो से अनभिज्ञ चिल्ला-चिल्लाकर दूर भागने लगे।

कुछ करुणामयी वाणी मे विद्युत् की चमक के स्थान सद्धर्मरूप प्रकाश की ओर निहारने लगे। कुछ दीन हीन गौ सदृश अनाथ विधवाए आशा लगाने लगी। वेद ज्ञान भी मूकवाणी से अपने उद्धार का चिन्तन करने लगा। कुछ मस्त गजो की तरह शास्त्रार्थ के इच्छुक विद्वत् गण टोलिया बनाने लगे। कुछ विषधर सर्पो की तरह कुटिल कुचाली मनुष्य जहर पिलाने की योजना बनाने लगे। इन सब अपेक्षाओ, आवश्यकताओ और विपदाओ के बीच दयानन्द सरस्वती महर्षि दयानन्द सरस्वती बन यज्ञमय होकर समाज सुधार के कर्मो को करने मे निर्भीकता से अहर्निश डटे रहे।

मनुष्य आकृति वाले शरीरधारी जीवो को पूर्ण रूप से सही लक्ष्य का सकेत करना, उलझे हुए विचारको को सत्यार्थ विचार देना, कामान्ध, मोहान्ध, और लोभान्धो को मायावी आवरणो से रहित करना, ईश्वरीय लुप्त वेदज्ञान को पुन प्रकाशित करना, शब्द और अर्थो के समवाय सम्बन्ध मे व्यवहार्य वास्तविक धर्म को उद्घाटित करना ऋषि महर्षियो का प्रमुख कार्य हुआ करता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अपना व्यक्तिगत जीवन निष्काम कर्मयुक्त होने से कर्म फलो से रहित था। इसलिए वे सर्वदा ब्रह्म निर्वाण की दशा मे अर्थात् समाधि स्थिति मे रहकर सामाजिक कार्य करते हुए भी 'क्षीणकल्मष' पाप एव दोष रहित थे।

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाण ऋषय क्षीणकल्मषा।
छिन्नद्वैधा यतात्मान सर्वभूत-हितेरता ॥ गीता ५/२५

जिनके एक विषय मे दो प्रकार के विचार समाप्त हो चुके है और किसी भी इन्द्रिय का कोई विषय किसी भी क्षण जिसको सता न सके तथा प्रत्येक प्राणी के हित मे सर्वदा तत्पर रहे ऐसे ऋषि ब्रह्मनिर्वाण को प्राप्त करते है और श्री-श्री कृष्ण के विचारो के अनुसार महर्षि दयानन्द सरस्वती मे महर्षित्व के पूर्णत लक्षण घटित होते है—

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रह।
शारीर केवल कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥ गीता ४।२१
यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सर।
सम सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥ ४।२२
गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतस।
यज्ञायाचरत कर्म समग्र प्रविलीयते ॥ ४।२३
इहैव तैर्जित सर्गो येषा साम्ये स्थित मन।
निर्दोष हि सम ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिता ॥ ५।१९
न प्रहृष्येत्प्रिय प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम्।
स्थिरबुद्धिरसमूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थित ॥ ५।२०

वैदिक प्रमाणो के आधार पर—यजुर्वेद के चालीसवे अध्याय मे जो त्यागपूर्वक भोग और निष्काम कर्मो के करने का वर्णन है उनको वैसा ही भोगने और करने मे ऋषी महर्षि पूर्ण समर्थ होते है एव अ ादि तीन पदार्थ—ईश्वर-जीव, प्रकृति का पृथक्-पृथक् ज्ञान, एक परमेश्वर की उपासना, विद्या और अविद्या, सम्भूति और असम्भूति का विचार तथा ओ३म् (प्रणव) का ध्यान यह सब ऋषियो के द्वारा पूर्ण सम्भव है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की सामाजिक एव वैयक्तिक दिनचर्या प्रात से साय और साय से प्रात. तक यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के प्रत्येक मन्त्र मे वर्णित अर्थ के अनुसार पूर्णत सही पायी जाती है। इसीलिये वे मूलशङ्कर से महर्षि दयानन्द सरस्वती कहलाये। जीवन के अन्तिम क्षणो मे उन्होने ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना के बाद ये शब्द कहे थे—हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो।

स्वामी जी के कुछ रोचक प्रसंग

[प० प्रशस्यमित्र शास्त्री एम ए पी-एच डी, बी-२९ आनन्दनगर, जेल रोड, रायबरेली]

शिवरात्रि का पावन दिवस स्वा० दयानन्द सरस्वती के बोध दिवस के रूप मे सारे भारतवर्ष मे मनाया जाता है। इसी पर्व की एक छोटी सी घटना ने स्वामी दयानन्द को वास्तविक शिव को खोजने तथा उसे जानने के लिए प्रेरित किया था। इस बोध दिवस पर ही हम भी स्वामी दयानन्द सरस्वती से सम्बद्ध कुछ रोचक प्रसग उद्धृत कर रहे है जो कि मनोरजक होने के साथ ही ज्ञानवर्धक और मनुष्य के लिए प्रेरक भी है। इन प्रसगो से स्वामी दयानन्द की उदारता, तत्त्वज्ञता, गम्भीरता और तर्कशीलता के परिचय के साथ ही हमे पाखण्डो के प्रति अनास्था का भाव जागृत करने मे भी सहायता प्राप्त होती है–

१–भूत का आवेश

श्रावणी के दिन कुछ लोग एक बार स्वामी जी से मिलने के लिए आए जिनमे एक वैद्य भी थे। वैद्य जी के साथ एक नवयुवक था जिसके विषय मे वैद्य जी ने कहा कि इसमे भूत का प्रवेश है तथा बहुत चिकित्सा के बाद भी कोई आराम नहीं हुआ। स्वामी जी ने कहा कि आप वैद्य होकर भी ऐसी अज्ञानपूर्ण बातें करते है। भूत, भविष्यत् और वर्तमान तो तीन काल हैं। भूत योनि कोई नहीं है। वैद्यक ग्रन्थो मे ऐसे कई रोगो का वर्णन है जिसके होने से मनुष्य उलटी चेष्टा करने लगते और अण्ड बण्ड बकने लगते है। इसने कोई अतिमादक वस्तु कभी खा ली होगी।

अन्त मे स्वामी जी की बात ही सत्य निकली। उस व्यक्ति ने भाग बहुत पी ली थी और उसका ही सब विकार था। स्वामी जी ने उसके लिए एक ओषधि भी बतायी।

२ अनन्त की छुद्रता

स्वामी जी के एक भक्त श्री गगाप्रसाद के गुरु भी कभी कभी स्वामी जी के पास आया करते थे। एक दिन उन्होने अपने वस्त्र उतार कर कुटिया पर रखे और गगा स्नान को जाने लगे तो स्वामी जी ने देखा कि उनकी भुजा पर एक धागा बधा हुआ है। स्वामी जी ने उनके पास जाकर पूछा कि यह क्या है? उन्होने कहा कि अनन्त है। स्वामी जी ने उसे अँगुलियो से नापकर कहा कि यह इतने अगुल का है, यह अनन्त कैसा? इस पर उन्होने तत्काल ही उसे उतार कर फेंक दिया।

३–धन का सदुपयोग

पण्डित हरिशकर से स्वामी जी का जो शास्त्रार्थ हुआ वह बडा ही मनोरजक था। जब पण्डित जी स्वामी जी के पास गए तो उन्होने पण्डित जी का नाम पूछा। पण्डित जी ने एक श्लोक पढा, जिसका अर्थ था अपना और अपने गुरु का नाम लेना वर्जित है। स्वामी जी ने कहा कि जब आप सकल्प पढते है तो अपना नाम लेते है या नहीं। इस पर निरुत्तर होकर उन्होने अपना नाम बतला दिया। उस समय अनेक लोग महाराज के पास बैठे थे। पण्डित जी बडे अच्छे वैयाकरण थे और कन्नौज के विद्वानो मे अग्रगण्य थे। स्वामी जी ने मूर्तिपूजा के खण्डन और पञ्चमहायज्ञादि के मण्डन पर सप्रमाण वक्तृता दी।

प० गुरुप्रसाद और प्रयागनारायण ने 'कैलास' और 'वैकुण्ठ' नामक दो मन्दिर बहुत रुपया लगाकर बनाए थे। स्वामी जी ने उनसे कहा कि आप लोगो ने लाखो रुपया व्यर्थ खो दिया जिसे चूहडे, चमार और मुसलमान आदि खा गए। इससे तो यह अच्छा होता कि आप कान्यकुब्ज कन्याओ का जो ३०–३० वर्ष की कुमारी बैठी हैं, विवाह करा देते या कोई कलाकौशल का कारखाना खोलते जिससे कि देश और जाति का भला होता।

४–पितरो को तिल और अपने को लड्डू

एक दिन श्राद्ध पर व्याख्यान देते हुए स्वामी जी ने कहा कि ब्राह्मण-पण्डे पितरो को तिल और जौ देते हैं किन्तु

स्वयं खीर तथा लड्डू उड़ाते हैं। एक अनपढ़ ब्राह्मण को कहानी सुनाते हुए स्वामी जी ने बताया कि वह तिथि का भी ज्ञान नहीं रखता था। प्रतिपदा के दिन से हर तिथि को कोने में एक लाठी रखता जाता था और इस प्रकार वह लोगों को तिथि बतलाया करता था।

५—जन्म पर सूतक

एक बार एक सज्जन ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि जन्म के समय दस दिन का जो सूतक माना जाता है वह शास्त्रानुकूल है या नहीं? इस पर स्वामी जी ने उत्तर दिया कि केवल बालक की माता को एक रात का सूतक होता है। सूतक का बखेड़ा वैसे ही खड़ा कर लिया गया है। लोग उसमें संन्ध्या, हवन, पूजा-पाठ तक छोड़ देते हैं परन्तु असत्य भाषण आदि अशुभ कर्म कोई नहीं छोड़ता।

६—यज्ञोपवीत उतार लो

पं० गङ्गाप्रसाद स्वामी जी के बड़े भक्त थे। वह स्वामी जी के उपदेशों से प्रभावित होकर लोगों को यज्ञोपवीत धारण करने की प्रेरणा करने के साथ ही गायत्री जपने को कहते थे। एक दिन उन्होने स्वामी जी से कहा कि मैने बहुत से पुरुषो को यज्ञोपवीत धारण कराया है। स्वामी जी इस पर बहुत प्रसन्न हुए तथा उनसे पूछा कि यज्ञोपवीत देते ही जाते हो या किसी का उतारते भी हो? यह सुनकर पण्डित जी विस्मयान्वित हुए तथा पूछा कि क्या यज्ञोपवीत उतारा भी जा सकता है? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि यदि कोई अधर्म करे तो उसका यज्ञोपवीत उतार लेना चाहिए।

७—मुख न देखो

लुधियाना में स्वामी जी के व्याख्यान का आयोजन था। वहां दो व्यक्ति आए जिसमें एक तो भाषण सुनने की इच्छा से आया था किन्तु उसे उसके दूसरे साथी ने कहा कि—अरे! इस साधु का भाषण क्या सुनोगे। यह दुष्ट है, इसका मुख देखना भी धर्म विरुद्ध है, चलो यहाँ से। उनकी इन बातों को स्वामी जी ने सुन लिया। स्वामी जी ने उससे कहा कि—मेरे मुख में तो कोई विशेष बात नहीं है जिसे तुम देखो। यदि उसे देखने में कोई ग्लानि है तो मेरे पीछे खड़े हो जाओ। मेरी बातें केवल सुन लो।

★

देखो वह योगी आया

★

[श्री सत्यनारायण जी गोइन्का]

★

वह कौन युवा योगी जागा,
जिसका जगना वरदान हुआ।
वह तरुण तपस्वी तेजस्वी,
भारत मां का वरदान हुआ।
किसकी गम्भीर गिरा गूंजी,
किसकी आवाज बुलन्द हुई।
किसका सुन जागृति का निनाद,
स्वप्नों की निद्रा भंग हुई।
हम जाग उठे आलस तज कर,
करवट ले चेतना जागी।
हमने देखा, दृढ़ व्रत होकर,
वह घूम रहा था बैरागी।
वह महा क्रान्तिकारी कर में,
जलती ज्वाला की ले मशाल।
था फूंक रहा वह जीर्णशीर्ण,
इक महल रूढ़ियों का विशाल।
वह याज्ञिक बन कर–रहा हवन,
उठती थीं लपटें लाल लाल।
धर्मान्ध ढोंग बन रहे हवा,
स्वाहा स्वाहा कर स्वर कराल।
होती कुरीतियां चूर चूर,
पाखण्ड हो रहे खण्ड खण्ड।
अज्ञान रात्रि होती विदीर्ण,
नव उदित ज्ञान का मार्तण्ड।
वह प्रभा पुञ्ज आलोक विपुल,
पी गया जगत का अन्धकार।
हो गया प्रकाशित ओर छोर,
हट गया पृथ्वी पर से अनाचार।

★

सत्यान्वेषी-ऋषि दयानंद

(आचार्य इन्द्रदेव पाठक, एम० ए०, दर्शनवाचस्पति
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ।)

ऋषि पावन वसुन्धरा पर सृष्टि के आदिकाल से ही अनेको महापुरुषो ने समय समय पर जन्म लेकर वैदिक धर्म की उदात्त और नित्य परम्पराओ का प्रचार एव प्रसार किया है। वेदो के ज्ञान की जो अक्षुण्ण परम्परा सृष्टि के आदि-काल से लेकर ब्रह्मादि जैमिनि पर्यन्त ऋषि-मुनियो ने प्रवाहित रखी थी, उसी परम्परा के प्रेरक, उद्बोधक, एव ज्ञाता इस युग के महान् तत्वदर्शी ऋषिवर दयानन्द थे जिन्हे एक सामान्य घटना मात्र ने आज ही रात्रि को बालक मूलशङ्कर से सच्चा शङ्करानुयायी बना दिया। वास्तव मे महान आत्माओ के लक्षण ही यही होते है। सामान्य जन-जिन घटनाओ को साधारण समझते है, वे ही घटनाए महान् पुरुषो के जीवन मे असीमित मोड दे देती है। इसी को वैदिक विचार धारा मे "बुध्येम शरद शतम" कहा गया है। अर्थात हम संसार मे प्रतिक्षण घटित होती हुई घटनाओ से सच्चा ज्ञान प्राप्त करते रहे। मरते हुए इन्सान को किसने नही देखा है मगर वे युवराज गौतम ही थे, जिन्हे इस घटना ने गौतम से बुद्ध बना दिया, जिनकी करुणा और अहिंसा हमारी ही वैदिक परम्परा के ज्योतिमय स्वरूप की एक किरण है। शिव की प्रतिमा पर चढे हुए खाद्यान्न को खाते हुए चूहो को किसने नहीं देखा होगा। मगर वाह रे ? बालक मूल-शङ्कर ? तूने तो शङ्कर के मूल का ही पता लगा लिया। जडता की परिधि मे फसे हुए आदिदेव, महादेव, शिवशङ्कर को, उस तमस---की अन्धकारमयी, चूहो से भरी कोठरी से निकाल कर जन जन के ह्रदय-मन्दिर मे ज्योतिलिङ्ग बना कर प्रकाशवान् करने वाला तू ही तो है। तेरी जिज्ञासा, तेरी खोज अनुपम, तेरा दर्शन अनुपम, और फिर तेरे जैसा शङ्कर का खोजी, शङ्कर का उपासक, आज तक देखने को नही मिला। हम सबको भी उसी सच्चे शङ्कर का अनुगामी बना दिया। हमारी इबादत (सध्या) का समापन भी उसी दिन शिव की उपासना से करा दिया---

ओ नम शम्भवाय च, मयोभुवाय च,
नम शकराय च, नम शिवाय च।

कथानक की पुनरावृत्ति बौद्धिक वर्ग के सम्मुख पिष्टपेषणमात्र ही है। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि स्वामी दयानन्द उन महान् पुरुषो मे एक थे जिन्होने केवल आर्यावर्त्त को ही शरीरिक एव मानसिक दासता से मुक्ति दिलाने के लिये प्रयास नहीं किया अपितु समस्त विश्व एव प्राणिमात्र के कल्याण के लिए अपने जीवन को बलिदान कर दिया। अपने नियमो मे उन्होने लिखा है---ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात-शारीरिक, आत्मिक एव सामाजिक उन्नति करना।" वे केवल वाणी द्वारा उपदेश देने वाले तत्ववेत्ता ऋषि ही नहीं थे अपितु जिस सत्य का ससार मे प्रचार करना चाहते थे उसे क्रिया मे व्यवहृत करा देना भी उनका कार्य था। उन्होने मानव को आध्यात्मिक उन्नति का श्रेष्ठ मार्ग दिखलाने के लिये आधिभौतिक उन्नति को कभी हेय नही बताया। वे व्यक्तित्व और कृतित्व दोनो मे महान् थे। शिवरात्रि की एक छोटी सी घटनामात्र से इतना स्पष्ट है कि उनके जिज्ञासु हृदय मे शिव के उस स्वरूप को, जो मध्ययुग की अनेक मान्यताओ, किवदन्तियो एव कपोल कल्पित कथानको से घिर कर अपने कल्याणकारी स्वरूप को खो चुका था, सच्चे स्वरूप मे ससार के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया।

उनका आविर्भाव समाज मे व्याप्त कुरीतियो, धर्म के नाम पर प्रचलित अनेक प्रकार के मिथ्या आडम्बरो, एव ईश्वर के नाम पर फैले हुए अनेक मतमतान्तरो और पाखण्डो को दूर करने के निमित्त हुआ था। वे किसी देश अथवा जाति विशेष के न होकर मानव मात्र के थे, उनके बताये वैदिक आदर्शो पर चलकर हम निसन्देह मानवता का बडा कल्याण कर सकते है। वेद के शब्दो मे वे एक ऐसे परोपकारी सन्यासी थ---जिसे "मीढ्वान्" अर्थात बादल की तरह बरसने वाले कहा जाता है। वे मानव कल्याण के लिए ही धरती पर अवतरित हुए और मानव कल्याण के लिये ही समर्पित हुए।

वास्तव मे आज की रात्रि मे जिस "शिव' का अन्वेषण उन्होने किया था वह उसी कल्याणकारी, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी परमात्मा का ही नाम है जिसकी तीन शक्तिया (त्र्यम्बकयजामहे) सृजन, पालन और सहार निरन्तर कार्य कर रही है। ये तीनो ही शक्तिया कल्याण कारिणी हैं और यही उसके त्रिनेत्र है। तो आइये शिवरात्रि की इस पावन वेला मे हम वेद के शब्दो मे "असम्भूतिम उपासते" अज्ञानता और जडता की उपासना के विरुद्ध अभियान छेड़ने का व्रत लें और सच्चे शङ्कर की उपासना का बोध ससार को करायें। यही होगी हमारी उस महान् आत्मा के प्रति श्रद्धाजलि।

उठो आर्य वीरों

(ले० पूर्णप्रकाश मित्तल, संचालक आर्यवीर दल, बिजनौर)

उठो आर्य वीरों, बिगुल बज रहा है।
गया वक्त सोने का क्यों सो रहा है ?
विधर्मी करोड़ों, मिटाते वतन को।
सदा लूटते, खुल के तेरे चमन को ॥
तू नादान इतना, अभी सो रहा है।
गया वक्त सोने का, क्यों सो रहा है ॥
उठो आर्य वीरो··· ·····················।

भाई तुम्हारे, करोड़ों मिटाये।
मन्दिर तुम्हारे, हजारों गिराये ॥
ध्वजा ओ३म् की, है हाथ तेरे।
धर्म का पुजारी, अभी सो रहा है ॥
गया वक्त सोने का, क्यों सो रहा है।
उठो आर्य वीरो···················॥
तन हो तुम्हारा वज्र की भांति।
मन हो तुम्हारा समुन्द्र की भांति ॥
पवन बन चट्टान, अधर्म की गिराओ
क्षत्रिय बन बाण, अग्नि के चलाओ।
सुदर्शन तेरे हाथ, क्यों रुक रहा है
गया वक्त सोने का, क्यों सो रहा है।
उठो आर्य वीरों
ना खौला अभी खून तेरे बदन का।
भूना जाता सदा लाल तेरे वतन का ॥
गौ, गंगा का अपमान करते अधर्मी।
मातृ शक्ति का अपमान होता सदा ही ॥
नारी जाति का व्यापार नहीं रुक रहा है।
तू रक्षक सभी का, क्यों वक्त खो रहा है ॥
उठो आर्य वीरो························।
कमर बांधकर तुम खड्ग हाथ ले लो।
गद्दार अधर्मी को ललकार दे दो ॥
तू है दयानन्द, शिवा और बिसमिल।
क्यों आलस्यमें जीवन पड़ा खो रहा है ॥
गया वक्त सोने का, क्यों सो रहा है।
उठो आर्य वीरो························॥

हुआ जागरण रात का वह चिरन्तन

(धर्म वीर शास्त्री, पश्चिम बिहार, नई दिल्ली)

भले ही प्रणव का न अवतार था वह।
प्रखर मानवी बुद्धि का सार था वह ॥
भरा था अलौकिक गुणों से कि उसको।
स्वतः विश्व-जन ईश ही मान लेते ॥
करें क्या, उसी ने कहा—जीव-तन में।
कभी जन्म जग में न भगवान् लेते ॥
न सन्देह तो भी कि उस पार वाला।
समागत हुआ मुक्त इस पार था वह ॥
उसी ने खिलाया पुनः वेद-वारिज।
अरुण वह उसी से हुई दीप्त प्राची ॥
मिली वर्णगत अस्मिता को चुनौती।
हुए कर्म-गुण उच्चता-अर्थ-वाची ॥
सहज सौम्य सबके लिये चिर दयामय।
यमी योगिवर मुक्ति का द्वार था वह ॥
हुआ जागरण रात का वह चिरन्तन।
दृगुन्मेष का हेतु शिव के निलय में।
जगी सत्य की खोज की साध ज्यों ही।
दिये त्याग सुख-सद्म कैशोर वय में।
मठों-मन्दिरों, कन्दरा-काननों में।
फिरा घूमता धैर्य साकार था वह ॥
न कुछ बात उत्पात था मूषकों का।
सजग किन्तु उससे हुआ मूलशङ्कर ॥
न निद्रा हमारी कभी टूटती है।
बड़ी बात हो या घड़ी हो भयंकर ॥
अलस हम कहां, पूर्णतः चेतनामय।
कहां सर्वदा तप्त अङ्गार था वह ॥
बना मूल शङ्कर दयानन्द जिसमें।
दिशा-बोध देने निशा बोधवाली ॥
पुनः आ गई, वेद-सन्देश-वाहक।
बनो, दो सिखा आर्य-जीवन-प्रणाली।
चलो कुछ कदम, सोच लो शिष्य कि सके ?
महाशूर था शास्त्र-भाण्डार था वह।

"शिव संकल्प" की पावन बेला–

"शिवरात्रि"

(मेवा प्रसाद पाठक बी० ए० एल० एल० बी०)

पर्व इसलिए नहीं आते कि, उनके प्रति थोड़ी सी पूजा अनुष्ठान की अनौपचारिकता प्रदर्शित कर अपने आप को ईश्वर का परम श्रद्धालु, भक्त होने का दम्भ प्रस्तुत किया जाय बल्कि इसलिए आते हैं कि, उनके वास्तविक महत्व को, मूल को समझ कर उनसे एक आत्म प्रेरणा अर्जित की जाय और तदनुकूल अपने आपको सुसज्जित करने का संकल्प ग्रहण किया जाय।

'शिवरात्रि पर्व' का भी कुछ ऐसा ही प्रेरणापरक महत्व है जो आर्य जगत् में, आर्य समाज के संस्थापक, युग पुरुष, तत्व वेत्ता, महान योगी एवं विश्व शान्ति के स्वप्न द्रष्टा महर्षि स्वामी दयानन्द के 'बोध' पर्व के रूप में आयोजित किया जाता है। नव वर्ष के हर्षोल्लास के साथ ही कुछ थोड़े दिनों बाद यह पुनीत पर्व अपने अमृत संजीवनी शक्ति का हमारे अन्तर्गत अमृत संचार करने, हमें एक नई ज्योति एक नवीन दिशा और एक कल्याण प्रद सन्देश देने के लिए हर वर्ष आता है अपने उस शुभ रात्रि की पावन स्मृतियों को संजोये हुए, उस अमर "शिव संकल्प" की प्रेरणा का स्मरण लिए हुए जिसने एक अबोध चौदह वर्ष के के बालक "मूल शंकर" को वास्तविक शिव के मूल तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त किया तथा उसमें ज्ञान की दिव्य ऊर्जा प्रस्फुटित कर उसके आत्मा में सच्चे शिव का जागरण कर, शान्ति, दया और आनन्द का सागर 'दयानन्द' बना दिया। वही दयालु दयानन्द- जिसने अपने प्राणघाती अक्षम्य हत्यारे को विष के बदले में अमृत प्रदान कर जीवनदान की दया करके अपने "स्वनाम धन्य" का वास्तविक प्रमाण प्रस्तुत कर अपने नाम की सत्यता को जीवन के अन्तिम घड़ी में सिद्ध कर दिया।

आज ही की तरह वह भी एक शिवरात्रि थी जिस रात्रि की एक साधारण सी घटना ने बालक मूल शंकर के अन्तर्रात्मा मे, समाज में व्याप्त अंध विश्वास, अज्ञान और पाखण्डों के विरुद्ध क्रान्ति की एक चिंगारी उत्पन्न कर दी। उसे, शिक्षित किन्तु अल्पज्ञ, प्रौढ़ किन्तु अबोध उन भोले लोगों पर दया आई, उस झूठी अनौपचारिकता पर हंसी आई जो थोड़े से भांग, धतूरा, बेल पत्र, फल फूल, मिष्ठान्न आदि समर्पित करके उस पत्थर की बेजान प्रतिमा से महानतम् आकांक्षाओं के पूर्ति की आशा और लालसा लिए बैठे थे जो चूहों से, अपने लड्डुओं की भी रक्षा करने में असमर्थ था। महान् अन्धविश्वास की इस अज्ञानता को देख कर उसका बाल मन व्याकुल हो उठा। उसने संकल्प लिया उसी पल, उसी रात्रि समाज को इस अंधविश्वास से मुक्त कराने का, अज्ञान के अमानिशा से बाहर निकालने का, सत्य से अवगत कराने तथा असत्य से परे करने का और जो 'शिव' (कल्याण) का वास्तविक मूल है कल्याण प्रद है उससे अवगत कराने एवं सही दिशा प्रदान करने का।

किशोर मन मे उठी भावना पत्थर की रेखा बन गई। उस अल्प आयु के बालक ने परिवार, माता-पिता और प्रिय जनों का मोह खत्म करके, सीमित परिवार की सीमा को समाप्त कर विश्व परिवार से अपना नाता जोड़ लिया और घर की चारदीवारी से अपने आपको मुक्त करके, सुन-सान वीरान जंगल पहाड़ियो के कंटीले, पथरीले दुर्गम मार्गों पर चल पड़ा। योगी, विद्वान् जनो का संग हुआ और धीरे-धीरे योग्य गुरु की खोज मे भटकते जिज्ञासु ने प्रज्ञा चक्षु गुरु विरजानन्द की चरण सेवा का सानिध्य एक शिष्य के रूप में प्राप्त किया और उनसे वेदामृत पान करजबवापस लौटातो वेदों वाले ऋषि के उपाधि से विभूषित दिव्य ज्ञान गंगा के अनन्त प्रवाह से युक्त दिव्य दयानन्द बन कर लौटा जिसने समाज को सत्य और ज्ञान का अद्भुत प्रकाश पुन्ज "सत्यार्थ प्रकाश" दिया। वही सत्यार्थ प्रकाश जिसके अध्ययन मात्र से अज्ञान और आशंका का लेश मात्र तमस शेष नहीं रहता।

आज का यह पावन पर्व हमे स्मरण दिलाता है विश्व शान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द के उस कल्याणकारी स्वप्न का जिसकी अधूरी इच्छा शेष लिए वह इस संसार से चले गये। वह स्वप्न था "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" सम्पूर्ण विश्व के समस्त मानवों को श्रेष्ठ, सुसभ्य, सर्वगुण सम्पन्न मनसा,

वाचा, कर्मणा, एक सुमानव बनाने का ।

महर्षि जानते थे कि इस नाशवान् पच तत्वो के शरीर का कोई अस्तित्व नहीं जो इस ससार मे आया है उसे इस ससार से चला जाना है अत उनके द्वारा, उठाये गये, विश्व शान्ति, मानव निर्माण, सत्य के प्रकाश, असत्य के विनाश अज्ञानता के अन्धकार और पाखण्डो के विध्वस का यह क्राति अभियान आदि मे अन्त तक क्रियाशील रहे, रुके नहीं, थमे नहीं, वेदो का पवित्र कल्याण प्रद ज्ञान जन-जन तक पहुचे, इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रबल आकाक्षा के साथ उन्होने आर्य समाज की स्थापना की थी तथा अपने उत्तराधिकारियो के प्रबल और सबल कन्धो पर इस पुनीत कार्य का दायित्व समर्पित किया था इस विश्वास के साथ कि– हमारे अनुयायी हमारे न रहने के बाद भी सुमानव निर्माण के इस क्रान्ति अभियान को रुकने नहीं देंगे बल्कि विश्व के प्रत्येक मानव तक, जन-जन तक वैदिक ज्ञान का अमृत सन्देश प्रवाहित कर, उन्हे अज्ञान के तमस से दूर हटाकर "सत्यशिव सुन्दरम्" से अवगत कराकर उनके स्वप्न को साकार करेंगे । परन्तु आज हम ऋषि के अन्तिम स्वप्नो को, अन्तिम इच्छाओ को साकार करने मे, उजागर करने मे, कितना आगे बढ़े है अथवा कितना पीछे हैं इस पुनीत बेला पर शान्त चित्त होकर आत्म परीक्षण करने की बात है ।

आज परिवार से लेकर, समाज राष्ट्र और विश्व तक अशाति की जो चिगारी भडक रही है, इसका मूल कारण मानव मे सुमानवत्व का आभाव ही है । आध्यात्मिक ज्ञान और ईश्वर की आस्था से विमुख मानव आज दानव बन चुका है, और आदमखोर हिसक जगली पशुओ से भी ज्यादा क्रूर । आज मानव – मानव का शत्रु बन कर, उसका खून पानी की तरह बहा रहा है । दया, धर्म, को भूल कर शैतान बन रहा है । चारो तरफ अशाति ही अशाति है। दानवता का सर्वत्र नर्तन है परन्तु आर्य जन शान्त, बैठे है । क्या इन समस्याओ पर विजय प्राप्त नहीं किया जा सकता क्या अशान्ति की यह आग बुझाई नहीं जा सकती ? अवश्य ही बुझाई जा सकती है-परन्तु तब-जब मानव-मानव का शत्रु न रहे उसके अन्दर से ईर्ष्या, द्वेष, छल, क्रोध, लालच, असत्य, पाखण्ड आलस्य प्रमाद सर्वथा नष्ट हो जायें । फिर निश्चय ही विश्व शान्ति होगी, सारे ससार मे शान्ति और अमन का एक शीतल प्रवाह होगा ।

आज ऋषि बोध पर्व की पावन बेला पर, प्रत्येक आर्य जन, ऋषि से अवश्य प्रेरणा स्रोत ग्रहण करके, नव शक्ति के साथ "शिव सकल्प" ग्रहण करें, अपने सगठन को सुदृढ करने का । उसका विस्तार करने का और विचार क्रान्ति का व्यापक अभियान चला कर श्रेष्ठ सुसभ्य नागरिक तैयार करने का, क्योकि जब व्यक्ति सुधरेगा तो समाज राष्ट्र और विश्व सभी सुधर जायेगा । आर्य जन जहाँ भी हैं जिस क्षेत्र मे भी है समय निकाल कर मानव निर्माण की योजना को गति प्रदान करें। निश्चय ही इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व को आर्य बना कर महर्षि दयानन्द का "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का स्वप्न साकार होगा ।

अभयं स्वस्ति सातत्यम्

—डा० मुंशीराम शर्मा 'सोम'

उरु लोक स्व नो नय सकल विद् देव बलवान्
सदा यत्र ज्योति सुखमभयद स्वस्ति सुभगम्
विशाली ते बाहू स्थविर सुरनाथेन्द्र विहितौ
विरामो यत्राप्यो बृहति शरणे क्रीडनमपि
सकुचितो न लोको वैयग्रानन्दो विभाप्लुत
आभय स्वस्ति सातत्य भक्ताना शरण बृहत्
तन्त्र मा धेहि देवेन्द्र बाहू ते बलवत्तरो
ताभ्या रक्ष विशालाभ्या नाम्नैव रक्षकावुभौ

– किसी को दुःखी देख कर अपने मन मे सुख मत मानो, किन्तु सबको सुखी करके अपने आत्मा को सुखी जानो । जिस प्रकार से स्वाधीन हो के सब लोग सदा सुखी रहे वैसा ही यत्न करते रहो ।

– ईश्वर की उपासना तथा चित्त की वृत्तियो को सब बुराइयो से हटा कर, शुभ गुणो मे स्थिर करना ही सच्चा योग है तथा परमेश्वर और उसकी आज्ञा के विपरीत चलना तथा कुसस्कारो को अगीकार करना हो, वियोग है ।

—मनुष्य को मृत्यु सबसे डरावनी लगती है । मौत बडी होती है–परन्तु जीवन से बडी नहीं ।

—अपने अन्दर निडरता और मित्रता का भाव हो तो हिसक प्राणी भी मित्र बन जाते हैं ।

—मन दुर्बल भी है परन्तु मना लेने पर समर्थ और दृढ भी ।

ब्रह्मचर्य की अप्रतिम, अनुपम दिव्य विभूति--

महर्षि दयान्द सरस्वती

लेखक --आचार्य राजदेव नैष्ठिक

आचार्य, आर्ष गुरुकुल ऐखा कटरा (इटावा)

आदित्य ब्रह्मचर्या सिधविमलमह पुञ्जतोध्वान्त वृन्दम,
भिन्दानो वाम मार्गाचरण निशिचरानन्द रात्री निहन्ता ।
पुष्यात्माम्भोज कान्तो निगम यत वनोद्भासने चेतनाशु
ससारोबबोधनोऽय विलसतु हृदये श्री दयानन्द भानु ।।
(दयानन्द लहरी)

ब्रह्मचर्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण शब्द है । ब्रह्मचर्य का महत्व सभी आर्ष ग्रन्थो मे विस्तृत रुपेण वर्णित है ।

ब्रह्मचय शब्द मे दो पद हैं। प्रथम ब्रह्म तथा द्वितीय चय। ब्रह्म शब्द तीन अर्थो का बोधक है, ईश्वर, वेद और वीर्य तथा चर्य भी तीन अर्थों का द्योतक है चिन्तन, अध्ययन, रक्षण । तो पूर्ण अर्थ हुआ ईश्वर चिन्तन, वेद अध्ययन, तथा वीर्य रक्षण ।

महर्षि दयानन्द जी मे उपरोक्त तीनो गुण विद्यमान थे। महर्षि दयानन्द ब्रह्मचर्य के अनुपम पुजारी थे ऋषि की ब्रह्मचय के रक्षणादि कार्यो मे अतीव सतर्कता थी, इस विषय मे ऋषि जीवन की एक अनुपम घटना है कि जिस समय ऋषि वर गुरु विरजानन्द जी के निकट विद्याध्ययन कर रहे थे तब ऋषिवर ईश्वराराधन करने के निमित्त यमुना नदी पर एकान्त स्थल मे जाते थे । एक दिन का वर्णन है कि प्रातःकाल ब्रह्मवेला मे ऋषिवर यमुना की रेत मे ध्यान मग्न बैठे थे कि सहसा एक देवी यमुना मे स्नान करके आई उसने देखा एक परम हस जी पद्म आसन पर समाधिस्थ बैठे हैं, श्रद्धावती देवी ने भक्ति भावना से प्रेरित हो कर ऋषिवर के निकट आ कर चरणो पर सिर रख कर प्रणाम किया । शीतल वस्त्र का स्पर्श होते ही महर्षि ने अपने नेत्र खोले तो एक देवी का सिर देख कर" माता माता कहते हुए उठ खडे हुए तथा इस अनिच्छित स्पर्श के कारण तीन दिन तथा तीन रात पर्यन्त निराहार रह कर उस जगन्नियन्ता ओम के ध्यान और चिन्तन मे लीन रह कर स्पर्श रूपी पाप को दग्ध किया था । यह है महर्षि की ब्रह्मचर्य प्रियता क्योकि ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेते समय ऋषि ने स्वय सुना होगा कि ब्रह्मचर्य का सर्व प्रथम प्रबल शत्रु स्पर्श ही है ।

ब्रह्मचर्य ही वह दिव्य नौका है जो प्राणि मात्र को दुःख रूपी सागर से तार सकती है ब्रह्मचारी कभी किसी प्रकार का दुःख नहीं पाता वह बडी से बडी कठिनाइयो को भी सुख से पार कर देता है । उसके पास वह ओज, बल तथा तेज होता है कि व्याधिया तथा रोग शोकादि उससे डर कर दूर भागते है ।

ब्रह्मचर्य की महिमा का वर्णन करते हुए ऋषि कहते है "ब्रह्मचारी न काश्चन आर्ति मार्च्छति" अर्थात् ब्रह्मचारी कभी व्याधियो दुःखो और कष्टो को प्राप्त नहीं होता । ब्रह्मचर्य का पालन ही एक मात्र ऐसा है जो आशा हीन मानव को आशावादी बना सकता है एक कवि कहता है ।

कुछ करने की इच्छा मन मे, ब्रह्मचर्य को धारण कर ले,
सच्चे अर्थों मे जीवन का, आनन्द अभी तूभी ले ले ।।

वेद भी ब्रह्मचर्य की महिमा से ओत प्रोत है । एक स्थान पर तो दुःखी मानव को उच्च स्वर से पुकारकर वेद कहता है कि—

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्यु मपाघ्नत ।।

अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालक देव पुरुष मृत्यु पर विजय पा लेता है ।

उपरोक्त वेद मन्त्र गुरुदेव दयानन्द जी महाराज के जीवन मे पूर्ण रूपेण घटता है । जब ऋषि जी अन्तिम समय मे मृत्यु शैया पर पडे थे उस समय उनके समस्त शरीर पर विष के प्रभाव से छाले पड गये थे तथा वेग से अतिसार भी हो रहा था तन मे असह्य वेदना थी किन्तु ऋषि के मुख से उफ तक नहीं निकलता था काश यदि और कोई साधारण मनुष्य होता तो उसका जीना एक पल के लिए भी दूभर हो जाता मृत्यु जब ऋषि के समीप आती किन्तु वह ब्रह्मचर्य के प्रभाव से दूर भाग जाती । जब ऋषि ने इस देह का नाश अवश्यभावी समझा तब दीपावली के दिन बाहर से आए हुए समस्त आर्य जनो को बुला कर तथा करुणा पूर्ण दृष्टि से सब आर्य

जनो को देख कर अन्तिम विदाई ली। पुन नेत्र उन्मीलन करके वेद मन्त्रो से ईश्वर प्राथना की और बोले 'हे प्रभो तैंने अच्छी लीला की, अहा ! तेरी इच्छा पूर्ण हो। यह कह कर प्राण वायु को बलपूर्वक बाहर निकाल कर तथा समस्त आर्य जनो को रोता छोड कर महा प्रयाण कर गये। यह है ब्रह्मचर्य की महिमा का प्रबल प्रताप जिसके द्वारा मृत्यु पर पूर्ण विजय मिली।

आर्यों ! उस ऋषि ने शिवरात्रि के पावन पर्व पर चूहो के उपद्रव वाली घटना को देख कर प्रण किया था कि मैं सच्चे ईश्वर का साक्षात्कार करूगा। ऋषि ने ईश्वर का साक्षात्कार करने के लिए अखण्डित ब्रह्मचर्य को धारण कर ईश्वर का साक्षात्कार किया तथा उसके पुनीत वैदिक ज्ञान से समस्त ससार को आलोकित कर दिया।

आइये हम आर्य जन भी ऋषि के पुनीत जीवन से शिक्षा लेकर अपने जीवन का मार्ग प्रशस्त करें तथा किन्हीं अशो मे अविद्या अन्धकार को दूर कर ऋषि ऋण से मुक्त हो।

॥ ओम इति शम् ॥

निर्भीक दयानन्द

हिम खड अगारो से खेला निर्भीक दयानन्द सन्यासी।
युग युग पीछे अमृत पाई थी भारत की धरती प्यासी ॥
उस का पौरुष उस का साहस रवि बाद सितारो ने देखा।
गगा, यमुना, नर्मदा आदि के कूल कछारो ने देखा ॥
वे रहे गवाही शैलराज के ऊचे शिखरो क वासी ॥

हिल गई मतो की दीवारें हिल गई मान्यतायें थोथी।
सब लगे ढूंढने तुकचा को है खोल खोल अपनी पोथी ॥
जग ने माना प्रभु निराकार है अजर अमर और, अविनाशी ॥

आतकवाद के हाथो से अब राष्ट्रवाद बेहाल हुआ।
पजाब और त्रिपुरा अरुणाचल का है भूतल लाल हुआ ॥

ऋषि राज दिखाओ पथ बने सब राष्ट्रवाद के विश्वासी।
तुम क्षमा सत्य की महामूर्ति थेप्राणो को बलिदान किया।
विष देने वाले घातक को भी जीवन का वरदान दिया।
हे देव प्रेरणा दो जग हो, वर प्रेम शाति का अभिलाषी॥
जग उग्रवाद की लपटों मे है ध्वस्त निरस्त्रीकरण किया।
सहारक स्पृधा बढ़ी है विश्व शाति का हरण किया ॥
श्रुतियो की दीप्त शिखाओ से आलोकित होरण अभ्यासी॥
शासन की क्षमता बढे आज गति देनिज शिथिल,भुजाओ को
जो रोक सके पजाब और त्रिपुरा की सी, घटनाओ को
हो स्वच्छ प्रशासन असुरक्षित जीवन की, मिटे कालिमासी ॥

—धर्मेन्द्रनाथ 'अलिन्द'
हल्दौर (बिजनौर)

उलझन

कैसे गीत विजय के गाऊं।
कदम-कदम पर हार हो रही कैसे जय-उपहार सजाऊं ॥१॥
जिधर देखिए धूम-धाम से रावण का दरबार सजा है
समझौते की सुरापान कर हिंसा को हथियार सजा है।
निशाचरो की स्वतन्त्रता से करुणा का ससार सजा है।
आज अयोध्या के आगन मे कैसे मुक्ता चौकपुराऊं ।२॥
सुरसा का साम्राज्य बढ रहा तडित ताडिका तडक रही हैं
यज्ञो का विध्वस हो रहा मुनिजन छाती धडक रही है।
खर दूषण के वश धरो की आज बाहुएं फडक रही है।
मृग मारिच कुलाचें भरते कैसे इनकी चाल घटाऊं ॥३॥
राम खा गया धोखा ऐसा दुविधा सीता-हरण हुआ है
देव सो गये सारे ऐसे वञ्चकता का वरण हुआ है।
भरत-भाव पियलक्षणयती का अब तो सचमुच मरण हुआ है
स्वाभिमान हनूमान सो गया कैसे उसको आज जगाऊं ॥४॥
आज न अगद यहा दीखता कुम्भकर्ण बन जन मन-सोता
युद्ध काण्ड ले उनका फिर से सतलज व्यास तटो पर होता।
पन्जाबी पौरुष कावैभव अब कहा खा गया कैसे गोता।
कैसे नृप रणजीत सिह का तेज यहा फिर वापिस लाऊं ॥५॥
"प्रणव" सुनहरी आशाओ के देखो औंधे हुए नगाड़े
टूटे तार मनो वीणा के आतकी ध्वज यहा गाडे।
चौपाई चौपाये होकर रामायण के पृष्ठ न फाडे
वन-उपवन मे आग लगी है, तुलसी ढूंढ़ कहा से लाऊं ॥६॥

(कविवर "प्रणव" शास्त्री एम० ए० महोपदेशक)
-शास्त्री सदन राम नगर (कटरा)
आगरा-६ (उ० प्र०)

भारतीय-स्वाधीनता के मंत्रदाता

महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखिका-श्रीमती शशिबाला एम० ए०

भारत माता की गोद में समय-समय पर अद्वितीय मनीषी महापुरुष, सन्यासी एवं दार्शनिको ने जन्म लिया है, जिन्होंने भारत को ही नहीं अपितु विश्व को आलोकित किया है। ब्रह्मासे जैमिनीपर्यन्त ऋषियो की वदिक परम्पराओ एवं आदर्शों को लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती भी अवतरित हुए। यथार्थ में स्वामी जी का जन्म ऐसे समय में हुआ जब माँ भारती गुलामी की जंजीरो से जकड़ी हुई थी। राजनैतिक, सामाजिक एव आत्मिक दासता के विरुद्ध संघर्ष सर्व प्रथम स्वामी दयानन्द ने छेड़ा। शिक्षा की दिशा भी ठीक नहीं थी "स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्" के अनुसार स्त्री और शूद्र को शिक्षा के अधिकार भी नहीं थे। आज के अवसर पर हमें सिंहावलोकन करना है कि शिक्षा के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा संस्थापित आर्य समाज ने कौन से महत्वपूर्ण कार्य किये है? वस्तुतः आर्य समाज ने अपने सौ वर्ष के जीवन मे नारी जगत के लिए जगह-जगह आर्य कन्या इण्टर कालेज खोले है ? क्योकि कहा गया है"माता निर्माता भवति" माता ही निर्माण करने का कार्य कर सकती है। अतः स्त्री शिक्षा पर आर्य समाज ने बहुत बड़ा कार्य पूरे शताब्दो में किया है।

वास्तव में स्वामी जी ने कोई नया धर्म या मत नहीं चलाया बल्कि प्राचीनतम् धर्म ग्रन्थ वेद के प्रकाश एवं ज्ञान को संसार में प्रचारित करने की आवश्यकता समझी। बाल विवाह निषेध, विधवा उद्धार, अछूतोद्धार, सुदृढ़ सामाजिक संगठन आदि अनेक राष्ट्रीय समस्याओं को आर्य समाज की स्थापना से सुलझाया ! यही कारण है कि भारत के स्वाधीनता समर में जितना त्याग, बलिदान प्रत्येक क्षेत्र में आर्य समाज ने किया उतना किसी दल या संस्था ने नहीं किया। वेद की शिक्षा में राष्ट्रीयता का बोध होने पर "वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता :" अर्थात् हम सब राष्ट्र के सजग प्रहरी है, जन मानस में आत्मिक बल बढ़ा राष्ट्रीय प्रेम जाग्रत हुआ और 'वयं जयेम' अर्थात् हम जीते हैं अपने सिद्धान्त वैदिक दर्शन के इतने सत्य हैं कि वेद माता का पुत्र कभी हारता नहीं है यही बात है कि शताब्दियों की दासता में रह कर भी हम अपने अस्तित्व को सुरक्षित रक्खे हुए हैं। किसी ने कहा भी है-"क्या बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी। सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अपूर्व ज्ञान, तप एवं अगाध पाण्डित्यपूर्ण ब्रह्मचर्य से भारत के प्राचीन गौरव को प्रतिष्ठापित कर मानवता को नवीन प्रेरणा, नवीन शक्ति एवं नवीन दिशा देकर भारत के रंग-रंग में स्फूर्ति का संचार किया। पाखण्ड को खण्ड-खण्ड कर कुरान, बाइबिल पर प्रबल प्रहार कर राम कृष्ण की पावन परम्परा के अजस्र प्रवाह को प्रभावित किया। सामाजिक एवं राष्ट्रीय क्रांति को आंदोलन का स्वरूप देने के लिए ही स्वामी जी ने ८ अप्रैल १८७५ ई० मे काकड़वाड़ी बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी। स्वतंत्रता की पृष्ठ भूमि भी वास्तव में यही थी। १८५७ ई० के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में भी स्वामी ने अज्ञातवास में रहकर कार्य किये थे लेकिन संग्राम असफल होने पर स्वामी जी ने राष्ट्रीय क्रांति से पूर्व बौद्धिक और सामाजिक क्रांति की आवश्यकता समझी। इसी आवश्यकता के अन्तर्गत सत्यार्थ प्रकाश की संरचना की, जिसमें सत्य और असत्य का खुल कर विश्लेषण किया गया है। स्वतंत्रता के लिए भी सत्यार्थ प्रकाश में खुल कर स्वामी जी ने अपनी स्थिति राष्ट्रीय स्नेह से उजागर की है, जिससे 'यूनियन जैक' के उपासकों को धक्का लगा जैसे- "कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश का प्रभाव स्वतंत्रता की लड़ाई में विशेष रहा है, जिसमें महर्षि दयानन्द जी की राष्ट्रीय भावनायें दासता से ऐसे टकराती हैं जैसे पहाड़ों से निकली भागीरथी

चट्टानों से टकराती हैं एक उदाहरण और देखिये ।

"हम और आप को उचित है कि जिस देश के पदार्थों से शरीर बना और जिससे अब भी पालन होता है और आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से मिल कर करें। इस लिए जैसा आर्य समाज आर्यावर्त (भारतवर्ष)की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता ।"

राष्ट्र में शिक्षा के साथ-साथ स्त्री और शूद्रों की सामाजिक स्थिति भी ठीक नहीं थी। मुसलमान, ईसाई स्त्री जाति को पैर की जूती कह कर या गुलाम कह कर पुकारा करते थे। धर्म सुधारक भी 'ताड़न के अधिकारी' इनको मानते थे इसके विपरीत महर्षि दयानन्द जी ने स्त्री मर्यादा के विषय में सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में लिखा है– "स्त्री का पूजनीय देव पति है और पुरुष की पूजनीया अर्थात् सत्कार करने योग्य देवी स्त्री है ।"

दयानन्द दर्शन और उनके द्वारा संस्थापित आर्य समाज के आदर्श सिद्धांतों ने एक सौ वर्षों में सिद्ध कर दिया है कि आधुनिक भारत के निर्माण में उसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महत्मागांधी के विचार में महर्षि का योगदान देखिए—

"महर्षि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में और श्रेष्ठ पुरुषों मे एक थे। इनका चरित्र मेरे लिए अनुकरण का विषयहै उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत अधिक पड़ा ।"

भारत के महान् विख्यात लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने भी स्वतन्त्र रूप में स्वामी जी के कार्यों की सराहना की है—

"मैं आधुनिक भारत के महान् पथ प्रदर्शक स्वामी दयानन्द के प्रति श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता हूं जिन्होंने मतमतान्तरों और अनुष्ठानों के बीहड़ जंगल में, जिसमें देश के पतन काल में गहरी घास उग आई थी, मार्ग को परिष्कृत किया ताकि हिंदू लोग परमात्मा के प्रतिनिष्ठा और मानव सेवा का सादा और विवेकपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकें ।

सत्य के अप्रतिम दर्शन और दृढ़ निश्चय एवं साहस के सम्बल से उन्होंने हमारे आत्म सम्मान और हृदय को आलोकित करने के लिए, जो कार्य एवं प्रचार किया आधुनिक काल की प्रगतिशील भावना से संगति बिठाने के लिए प्रयत्नशील हो सकें और साथ ही भारत के उस गौरवपूर्ण भूतकाल से सम्पर्क बनाए रख सकें जबकि उसने वजूद को विचार और कर्म की स्वतन्त्रता में चमकती हुई अध्यात्म साधना में व्यक्त किया था ।"

स्वामी दयानन्द के 'आर्य समाज' आन्दोलन ने अनेकों बलिदानी सैनिक पैदा किए। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने लिखा है कि "आर्य समाज मेरी माता है" ।

इसी प्रकार विद्वानों, विचारकों की एक बहुत बड़ी संख्या है जिन्होंने स्वामी दयानन्द की बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्नता तथा राष्ट्र एवं मानवता के प्रति स्नेह की प्रशंसा की है। श्रीमती एनीबिसेष्ट लिखती है कि "आर्य समाज और थियो सोफिकल सोसाइटी के प्रसार से सफेद जाति (अंग्रेज) की वरीयता के विश्वास का उन्मूलन हुआ है ।"

भारत के ही नहीं विश्व के महानतम विद्वानों की लेखनी भी स्वामी जी के कार्यो की प्रशंसा लिखे बिना नहीं रही है जिसमें मैक्समूलर, रोम्यां रोलां, सर सैयद अहमद खाँ आदि अनेक विद्वान् हैं ।

अतः उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ने भारत के पुनर्जागरण और स्वाधीनता के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। बोधरात्रि के अवसर पर नई पीढ़ी का दायित्व आता है कि सौ वर्षों का सिंहावलोकन कर संगठन को मजबूत बनाने हेतु कृत संकल्प हों और स्वामी जी के महानतम् सूत्र "संसार का उपकार करना इस समाज (आर्य समाज) का मुख्य उद्देश्य है" को साकार बनाने में अपना सहयोग दें ।

हिंसक पशु कोलाहल रहित या प्रायः एकान्त सुनसान क्षेत्र ही खोजते हैं उसी क्षेत्र में वे विचरण भी करते हैं रात्रि या अन्धेरा ही उनके शिकार ढूंढने का समय होता है परन्तु उजाले में प्रतिरोध करने का डर उन्हें भी रहता है। अतीव मन-मन्दिर को न ही खाली अथवा सुनसान रखें और न ही उसमें अज्ञानता के तमस शेष रहने दें ।

'बोध का है पर्व आया

–राधेश्याम 'आर्य'
एडवोकेट, मुसाफिर खाना सुल्तानपुर

आज फिर से, देख लो,
यह बोध का है पर्व आया।
जागरण का नाद इसने,
अवनि तल पर है गुंजाया।

था इसी शिव रात्रि ने ऋषि–
वर दयानन्द को जगाया।
इस धरा पर वेद का फिर,
दिव्य सा अमृत बहाया।

भूमि मण्डल पर पुनः
वैदिक ध्वजा थी लहलहाई।
बज उठी थी धर्म की,
नव्य मधुयुत शहनाई।

वेद के पथ का पथिक,
फिर से बना यह विश्व था।
तुंग शिखरों पर प्रगति के,
फिर चढ़ा धर्मश्व था।

ऋषि दयानन्द के हृदय में,
जो जगी नव शक्ति थी।
वेद के प्रति राष्ट्र के प्रति,
जग उठी जो भक्ति थी।

जग उठे शिवरात्रि पर,
वह शक्ति कोटिक जनमनो में।
विश्व का उपकार करने को–
जगे नव ज्योति कण में।

दिव्य सासंदेश लेकर,
आ गयी संकल्प बेला।
विश्व में आर्यत्व भरने,
तुम बढ़ो। निर्भय, अकेला।।

ऋषि बोध पर्व पर उद्‌बोधन

–लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र'
भोजपुरा (मैनपुरी उ० प्र०)

तुम जगे ऐसे कि फिर सोये नहीं पल भर
प्रात लाया रात भर का, जागरण ऋषि वर।
प्रात, जिसमें मंत्र ही हों, नव प्रभाती स्वर।
प्रात, जिसमें यज्ञ से महके अवनि-अम्बर।
प्रात जिसमें, साम–गायक गा रहा सस्वर
ले चलो तम से मुझे प्रभु ज्योति के पथ पर।
मर्त्य पा जाये भटकता फिर अमृत का वर।
प्रातः जिसमें वेद रवि की रश्मियाँ भास्वर।
प्रात, जिसमें खिल सकें हर प्राण के शतदल।
प्रात, जिसमें मिल, सके, हर सांस को सम्बल।
प्रात जिसमें हँस रहा हो लोक का मंगल।
प्रात जिसमें प्राप्त हो, हर आत्मा को बल।
प्रात, जिसमें मातु–पितु फिर देव वाणी में,
गीत गा कर, शिशु जगायें प्रीति–वाणी में
प्रात, जिसकी सांझ हो गो धूलि की बेला
हर गली में हों रँभाता, धेनु का मेला,
धन्य हो, गुजरात, तुम हो धन्य टंकारा,
प्रात का सन्देश, काली रात के द्वारा।
आज की 'शिवरात्रि' फिर सन्देश लाई है।
और ऐसी रात को शत शत बधाई है।
हर मनुज बोले, यही वर माँगता हूं मैं,
आ गई शिव–रात्रि तो, लो जागता हूं मैं।
शक्ति दो प्रभुवर कलुष सब त्यागता हूं मैं।
हर शिवाले से कहे तुम, जागता हूं मैं।
हर जनमती सांस बोले, एक ही वर दो
यदि दया कर दो, दयानन्द चेतना भर दो
सत्य का दीपक लिये, स्वर आरती गूंजे।
देवता, जीवित जगत के आदमी पूजें।
कामना जागे, किसी में तो यही जागे,
माँगना चाहे मनुज तो बस यही माँगे,
कोख हो, तो 'मूल शंकर' मातु जैसी दो।
जन्म दो तो, पुण्य-भू गुजरात जैसी दो
प्रात दो, ऋषि बोध के उस प्रात जैसी दो।
रात दो, तो फिर उसी शिव रात जैसी दो।

"योगीराज दयानन्द और योग सिद्धियां"

—वैद्य कुबन लाल आर्य
५४९/१९२ अर्जुन नगर, आलमबाग लखनऊ

★

हमारे लखनऊ की दो विभूतिया है— श्री विक्रमादित्य जी बसन्त (प्रभु अर्पित जी) एव आचार्य वेद व्रत जी अवस्थी। दोनो महानुभावो के उपदेशामृत का पान करने का सौभाग्य मिलता रहता है। इन की इच्छा रहती है कि हम लोग भी आर्य मित्र मे कुछ लिख कर अपने कर्तव्य का पालन करें। 'यह सन्देश कई बार सुना—सोचा क्या लिखू, कुछ पढा तो 'नही हू—हा सुना बहुत है। आज एक सज्जन आये योग सिद्धियो की चर्चा करते हुए उन्होने इसी विषय पर आय समाज चन्द्र नगर के सत्सग मे अपने विचार रखने का आग्रह किया। मैने नम्रतापर्वक उन्हे भी उत्तर दिया— मैने सुना जरूर है—परन्तु अपना अध्ययन कुछ न होने के बराबर है। इस पर वह महाशय बोले— महर्षि ने लिखा है—तीसरे नियम मे— सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म हैं। जो सुना है उसे दूसरो को सुनाओ भी यही ऋषि का आदेश है। यह सुन कर मै चुप हो गया और फिर उन्हे स्वीकृति दे दी। रात मे जो कुछ याद आया उसे ही कल सत्सग मे सुनाना है और उसे ही लिखिबद्ध कर दिया है। यह लिखने से पूर्व आर्य समाज की विभूति श्रद्धय पूज्य महात्मा दयानन्द जी महाराज के चरणो मे मस्तिष्क झुका रहा हू—जिन के तपस्वी जीवन ने अपनी मधुर वाणी के द्वारा हम जैसे साधारण जनो को अमृतपान करा कर सन्मार्ग का यात्री बनाया। लेखक

मेरा ऋषि सच्चे शिव को प्राप्त करना चाहता है—शिव को प्राप्त करने के लिये योगाभ्यास आवश्यक बताया गया है यह जान कर बालक मूल शकर ने घर छोड दिया और वह योगियो की तलाश मे चल पडे। ढूंढते-ढूढते चानोद करनाली मे उनको दो योगी मिले उनके नाम है ज्वालानन्दपुरी एव शिवानन्दगिरी। उन्होने मूल जी को योग सिखाया—कुछ समय बाद वह दोनो साधू अहमदाबाद चले गये और मूल जी को एक मास बाद दुग्धश्वर के मन्दिर मे आने को कहा—धुन के पक्के दयानन्द वहा पहुच गये और उनसे योग सम्बन्धित अनेक प्रकार की क्रियायें सीखी। मेरे ऋषि ने इस सम्बन्ध मे स्वय लिखा— "वहा उन लोगो ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और मुझ निहाल कर दिया—उन दोनो महात्माओ की कृपा से मुझे क्रिया सहित सारी योग विद्या भलीभाति विदित हो गई। वास्तव म उन्होने मुझ पर एक महान उपकार किया है- अत मैं उनका हृदय से धन्यवाद करता हू॥

इसके बाद भी मेरे ऋषि योग विद्या के लिये जहा पता पाये वहा गये पर्वत, कन्दरा, नदी नाले वन, भूख-प्यास श्रम कोई भी उनको रोक न सका अन्त मे वह योगीराज बन कर जनता के सामने आये। हरिद्वार मे पाखड खण्डनीय पताका फहरा कर जब ऋषि प्रचार कर रहे थे तो एक साधू ने मेरे ऋषि से कहा था— दयानन्द तू तो चौबीस घन्टे की समाधि लगा लेता है-तूने इतनी सिद्धि प्राप्त कर ली है कि तू सशरीर ही स्वर्ग जाने मै समर्थ है—फिर इस प्रचार के झमेले मे क्यो पड गया। यह सभी लोग स्वीकर करते है कि ऋषि दयानन्द महान योगी थे और उनको कई प्रकार की योग की सिद्धिया प्राप्त थी परन्तु ऋषि इन सिद्धियो को प्रदर्शन करना उचित नही समझते थे। देहरादून मे महर्षि से मिलने जब कर्नल अलकाट ओर मैडम बलैविस्की दोनो पहुचे तो बात चीत मे कर्नल अलकाट ने महर्षि से पूछा— सुना है स्वामी शकराचाय अपनी आत्मा निकाल कर दूसरे शरीर मे प्रवेश करा देते थे—आप की इस सम्बन्ध मे क्या सम्मति है" ? ऋषि ने उत्तर मे कहा— "यह इतिहास की बात है इस सम्बन्ध मे मै दृढता से कुछ नहीं कह सकता—परन्तु मै इतना कर सकता हू कि मै अपने सारे शरीर की शक्ति अपने एक ही अग मे केन्द्रित कर दू—बाकी शरीर मे जान न होगी।"

मैडम बलावेस्की के एक पत्र के उत्तर मे स्वामी जी ने लिखा है— "मुझे कई प्रकार की सिद्धिया प्राप्त हैं—मैं सिखा सकता हू परन्तु सार्वजनिक रूप मे मै इनका तमाशा नहीं करना चाहता"। यह है सुन्दर उच्च एव आदर्श विचार उस

महान योगी के जिस ने सारे संसार को हिला के रख दिया यदि वह चाहते तो दुनियां उनको परमात्मा का अवतार बनाने को तैय्यार थी– परन्तु प्रभु के परम भक्त ने प्रभु की आज्ञा पालन करने मे ही अपना कल्याण समझा अपना जीवन और सुख सब दांव पर लगा दिया । आज अधिकांश लोग इसी योग विद्या के नाम पर जनता को खूब भ्रम में डाल कर लूट रहे हैं–सिद्धियां प्राप्त कराने के बहाने अनेक प्रकार के नशीले पदार्थ लोगों को प्रयोग करा रहे है–और स्वयं शान के साथ मौज-मस्ती उड़ा रहे हैं । यह सब योग के नाम पर धोखा-धड़ी और दुकानदारी है ।

वस्तुतः योगी लोगों को अनेक प्रकार को सिद्धियां प्राप्त होती है–यथा पानी पर तैरना पक्षियो की तरह उड़ना–अन्तर्ध्यान होना–सोमरस का पान कर युवा अवस्था को पुनः प्राप्त करना–भूत एवं भविष्य की बातों को जानना, दूसरों के दिल की बात जान लेना और बता देना, पूर्व जन्म का ज्ञान प्राप्त कर लेना–अपने शरीर में अत्यधिक शक्ति को केन्द्रित कर लेना–तीव्र गति से चलना, परोक्ष की बातों का ज्ञान होना, भूख-प्यास को वश मे रखना, शरीर को सूक्ष्म करना या बड़ा करना-शरीर बिलकुल हल्का कर लेना-या बड़ा भारी वजनदार बना लेना–दिव्य शब्दों का सुनना–हर समय ब्रह्म में लीन रहना–आदि आदि ॥

१–प्यारे महर्षि के जीवन को देखें–तो पग पग पर आश्चर्य जनक सिद्धियां हमे दिखाई देती है–यह तो सभी जानते है कि वेद भाष्य लिखाते समय यदि कोई शंका या कठिनाई सामने आई तो महर्षि उठ कर अन्दर चले जाते एवं समाधिस्थ हो जाते–बाद मे आकर सरलता से वेद भाष्य को पूर्ण करा देते-स्पष्ट है कि योग बल के सहारे ही वह वास्तविकता को प्राप्त कर लेते थे। गुरुवर विरजानन्दजी ने जब भूले हुए पाठ को पुनः पढ़ाने से मना कर दिया तो ऋषि जंगल मे जा यमुना किनारे समाधिस्थ हो गये–कुछ समय बाद पाठ स्वयं याद हो गया और आकर गुरु जी को सुना दिया गुरु जी ने प्रसन्न होकर शिष्य को गले लगा लिया ।

२– उदयपुर मे स्वामी जी के भक्त सहजानन्द जी ने सूर्योदय से पूर्व सैर करते समय नौलखा बाग के तालाब में स्वामी जी को जल पर पद्मासन लगाये पदम पत्र की तरह विराजमान देखा ।

३– अमृतसर में लाला पोहलू राय जी ने स्वामी जी को अचल समाधि मे देखा ।

४– प० ठाकुर दास जी के मन में स्वामी जी को ध्यान की अवस्था मे देखने की बड़ी इच्छा थी एक दिन उन्होंने देखा–कुटिया के अन्दर स्वामी जी का आसन भूमि से ऊपर उठा हुआ है– मुख मण्डल दिव्य प्रकाश से शोभित हो रहा है ।

५– आर्य समाज बम्बई के उत्सव में दानापुर से भी जनकधारी जी आदि कई सज्जन आये–स्वामी जी ने उनसे कहा आप लोगों ने घर से चलते समय कहा था कि अमुक प्रश्न स्वामी जी से पूछेंगे–अब पूछ लीजिये । सब लोग हैरान थे कि हमारे दिल की बात स्वामी जी को कैसे मालूम हो गई ।

६– प्रयाग के निवासकाल में राय बहादुर सुन्दर लाल जी महर्षि के दर्शनों को आये। महर्षि समाधि से उठकर आये सब ने नमस्ते की, महर्षि हंसने लगे–पूछने पर ऋषि बोले एक ब्राह्मण मिठाई ला रहा है उसमें विष मिला है-थोड़ी देर में एक व्यक्ति मिठाई लेकर आ गया । ऋषि ने मिठाई लेकर पहले कुछ मिठाई उसी लाने वाले को देनी चाही–परन्तु वह भयभीत होकर मिठाई छोड़ कर भाग गया बाद में वह मिठाई कुत्ते को दी गई और वह मर गया–(दूर या परोक्ष की बात जानना)

७– एक दिन उदयपुर मे ही राणा सज्जन सिंह जी और सहजानन्द जी आदि स्वामी जी के पास बैठे थे–अकस्मात स्वामी जी ने कहा कि-पं० सुन्दर लाल जी आ रहे हैं यदि पहले पता होता तो उनके लिये सवारी का प्रबन्ध करा देते । राणा ने कहा कि–अब सवारी का प्रबन्ध कर दें तो महर्षि बोले अब तो वह बैलगाड़ी से आ रहे हैं– जिसका एक बैल सफेद और दूसरे के शरीर पर लाल और सफेद धब्बे हैं अर्थात् चितकबरा है । उनके कल यहाँ पहुंचने की आशा है । अगले दिन पंडित जी आये और सब ने देखा जो कुछ ऋषि ने कहा था वह ही सब सामने आया ।

८– महर्षि वेद भाष्य लिखा रहे थे–तुरन्त उठे–कहा जल्दी से बाहर चलो, सब लोग कमरे से बाहर आ गये और कमरा सबके सामने गिर गया।

९– गुजरांवाला (अब पाकिस्तान) में एक पहलवान ने महर्षि को कुश्ती लड़ने के लिये ललकारा महर्षि ने उसे अपनी लंगोटी दी कि इस को निचोड़ो–बेचारा पहलवान बड़ा जोर लगता है पर एक बूंद पानी नहीं निकलता सबके सामने महर्षि ने लंगोटी निचोड़ कर जल निकाला साथ ही महर्षि ने अपना हाथ उस पहलवान की पीठ पर रखा उस पहलवान ने अपने ऊपर इतना बोझ अनुभव किया कि वह उठ ही न सका अपनी सारी शक्ति एक अंग में केन्द्रित करने की यह योग सिद्धि स्पष्ट है।

१०– सामान से लदी और कीचड़ में फंसी बैलगाड़ी को अकेले ही सरलता के साथ बाहिर निकाल कर रख दिया यह अधिक शक्ति प्राप्त करने की सिद्धि थी।

११– जालन्धर में दो घोड़ों की बग्गी रोक कर राव विक्रम सिंह को ब्रह्मचर्य के बल का दिखाना भी सिद्धि का अंग है।

१२– काशी में ध्यान मे बैठे हुए स्वामी जी को जब गुण्डों ने गंगा में फेंकने का यत्न किया तो महर्षि ने शरीर हलका कर लिया गुण्डों ने दोनों तरफ से बाहों को पकड़ कर उठा लिया फिर ऋषि ने दोनों बाहुओं को कस लिया और दोनों गुण्डों को साथ ले गंगा में कूद पड़े जल में समाधि लगा ली–गुण्डों को किये का फल मिल चुका तो उन्हें छोड़ दिया उनके साथी बाहर किनारे खड़े हो कर स्वामी जी के बाहर निकलने की प्रतीक्षा ही करते रहे। पता नहीं स्वामी जी कितनी देर जल में रहे।

१३– अमीर चन्द्र एवं युवक मुंशीराम आदि के कन्धों पर केवल हाथ रख कर ही उनका जीवन बदल दिया और वह भक्त अमीचन्द्र और स्वामी श्रद्धानन्द बन गये। मगरमच्छ के साथ नदी में नहाना कम सिद्धि तो नहीं।

१४– जीवन की अन्तिम घड़ी में संसार को खुल कर दिखाया कि उनके जीवन की वास्तविक सिद्धि क्या है हंसते हुए प्यारे प्रभु की गोद में जाना और गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे व्यक्ति का आस्तिक हो जाना यह एक आदर्श योग सिद्धि है। वैसे भी रुग्णावस्था में महान् कष्ट को शान्ति से सहन करना कम सिद्धि नहीं है।

१५– एक बार एक व्यक्ति ने महर्षि से पूछा– "क्या पातंजलि का विभूति पाद सच्चा है ? महर्षि ने उत्तर दिया- अक्षरशः सत्य है–वह कल्पना नहीं, क्रियात्मिक एवं अनुभव सिद्धि शास्त्र है। लोग दूसरी विद्याओं में धन एवं समय नष्ट करते हैं–यदि मेरे पास तीन मास रह कर कोई सीखे तो फिर वह स्वयं सच्चाई का अनुभव कर लेगा। योगी दयानन्द का जीवन ही योग सिद्धि का आदर्श है–ऐसे दिव्य दयानन्द के चरणों में बारम्बार सादर नमस्ते। महर्षि के जीवन से प्रेरणा लेकर हमें भी इस मार्ग पर चलने की शक्ति प्रभु कभी तो प्रदान करेगा ही। ★

बोध रात्रि झलक

★ ★

प–त्र पुष्प अर्पित करने तक जो प्रस्तर में अटके थे।
र–हे भले ही मनुजाकृति पर सत्य ज्ञान से भटके थे।
म–नुज आर्य को प्रभु चिन्तन की ओर न जाने दिया कभी।
पा–खण्ड अवनि का डाल स्वार्थ को मूर्ख बनाये शिष्य सभी।
द–ही दम्भ परिवार तथा निज बालक पर प्रयोग किया।
न–ही बुद्धि में कर्षन जी के उदित हुआ सुयोग नया।।
मो–हित होने गये मूल जी प्रस्तर से आशा लेकर।
ध–रणि शरण झुक पड़े भक्त निशि निद्रा के वश होकर।।
रा–शि अन्न तन्दुल निवेद्य खा मूषक उछला शिव चोटी पर।।
त्रि–भुवन पति निश्चेष्ट रहे प्रस्तर-प्रस्तर को कोटी प्रर।।
आ–शुतोष यह कैसे है शिव शक्ति विहीन मूषक प्रति ऐसे।
नं–गे फलक त्रिशूल पड़े है मन्दिर के किस कोण में कैसे।
ब–हन बिना ज्ञान शक्ति मूर्ति के बाहर है या अन्तर में।
प्र–खर तेज से युक्त प्रभु को निकले खोजने गिरि कन्दर में।।
ब–म शम युक्त ब्रह्मचारी ने खोज निकाले विरजानन्द गुरु।
हो–कर आर्ष ज्ञान से स्नात गुरु आज्ञा हित दयानन्द बन।।
पूज्य गुरु को भेंट लौंग की अर्पण करने गये यतीवर।
अनार्य निवारण आर्य प्रसारण हेतु शुआशिष लिया प्रणकर।
भारत ही क्या पूर्ण विश्व को आर्य बनाना तन-मन अर्पण कर
ऋषि वर दया आनन्द के तुम थे अक्षय शूर।
भारत से सब धर्म के किये छल बल अति दूर।।

डा० शिवरत्नलाल आर्य
सराय अगस्त (एटा)

जब ऋषि दयानन्द आये, घनघोर अंधेरा था, विजय श्री मिली, पर अब प्रकाश में भी अन्धकार बढ़ रहा है ।

ले० –श्री ब्रह्म प्रकाश शास्त्री, विद्यावाचस्पति
–शास्त्री सदन ११/१२४ पश्चिम
आजाद नगर दिल्ली ५१

ऋषि बोध पर्व आर्य समाज के लिए आत्म निरीक्षण का दिन है हमे इस उत्सव को मनाते समय विचार करना चाहिये, कि कब तक हम पूर्वजो की कमाई खाते रहेंगे । जब ऋषि दयानन्द आये उस समय किसी को यह विश्वास नहीं होता था कि वेद भारत मे विद्यमान है । ऐसा मानते थे कि वेदो को तो भस्मासुर पाताल मे ले गया है । ऋषि ने जर्मनी से वेद मगवा कर दक्षिण के वैदिक विद्वानो को बुला कर जनता के सामने सुनवाये तब कुछ विश्वास हुआ कि वेदो को ब्राह्मणो ने उस कठिन समय मे कठस्थ करके रक्षा की जब वैदिक साहित्य जलाया जा रहा था । ऋषि ने वैदिक नाद बजाया और रावण, उवट, महीधर तथा विदेशी विद्वानो की गलत अर्थ परम्परा को बदल कर अपने वेद भाष्य द्वारा सार्थक कर दिखाया। इसी लिए तो इस युग के योगी और ऋषि अरविन्द ने कहा है कि ऋषि दयानन्द के समान आज तक किसी भी विद्वान् ने वेद भाष्य नही किया है। यह भी ऋषि दयानन्द की सबसे बड़ी विजय जिसके कारण सचमुच मे दयानन्द ही इस युग के वेदो द्धारक है ।

मानव जीवन की नींव ब्रह्मचर्य आश्रम पर निर्भर करती है बाल विवाह की कुत्सित प्रथा से भारतीय समाज जीर्ण-शीर्ण हो चुका था । अष्ट वर्षा भवेद् गौरी इत्यादि अवैदिक विचार भारतीय समाज को खाये जा रहे थे, ऋषि ने इन विचारो का डट कर विरोध किया जिसके परिणाम स्वरूप श्रद्धानन्द, दर्शनानन्द आदि ऋषि के शिष्यो ने गुरुकुलो की स्थापना करके ब्रह्मचर्य आश्रम का पुनरुद्धार किया ।

इसी प्रकार बाल विधवाए हाहाकार और चीत्कार कर रही थीं ऋषि दयानन्द के प्रबल आदोलन तथा तत्पश्चात् आर्य समाज द्वारा विधवा आश्रमो की स्थापना से विधवा विवाह के विरोधी भी प्रबल समर्थक बन गये । इसी प्रकार ईसाई और मुसलमान आर्य जाति को भेड बकरियो की तरह मूंड रहे थे । अकबर बादशाह ने हिन्दू धर्म से प्रभावित हो कर जब बीरबल से हिन्दू बनने की इच्छा प्रकट की तो एक दिन बादशाह के साथ सैर को गये हुए बीरबल ने यमुना तट पर एक गधे की पीठ पर खुर्रा फेरना आरम्भ किया, और अकबर ने पूछा कि बीरबल यह क्या कर रहे हो ? तो बीरबल ने उत्तर दिया कि–जहा पनाह इसको गाय बना रहा हू उस समय बादशाह ने कहा कि कहीं गधे से भी गाय बन सकती है ? इस पर बीरबल का उत्तर था कि जिस प्रकार गधे से गाय नहीं बन सकती, उसी प्रकार मुसलमान से हिंदू भी नहीं बन सकता । इस प्रकार के दूषित विचार भारत के जन-जन मे व्याप्त हो गये थे । यदि कोई व्यक्ति मुसलमान का छुआ हुआ पानीभी पी लेता था तो उसे तत्कालीन ब्राह्मण समाज के विरोध से कोई भी अपनाने को तैयार नहीं होता था । ऋषि दयानन्द ने डटकर शुद्धि और अछूतो द्वार का डका बजाया, और देहरादून मे एक मुसलमान को शुद्ध करके इस को क्रियात्मक रूप दिया । ऋषि के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम आदि अनेक ऋषि के शिष्यो ने भारत भर मे विशेष कर उत्तरभारत मेशुद्धि का डकाबजा कर मौलवियो तथा पादरियो के छक्के छुड़ा दिये । आज वह दिन है जबकि सभी शकराचार्य और सनातन धर्म सभाए शुद्धि और अछूतो द्वार का प्रबल समर्थन करती हैं । यह ऋषि दयानन्द की विजय नहीं तो किसकी विजय है ।

इसी प्रकार ऋषि का आर्य समाज अन्य अनेक दिशाओ मे भी विजय प्राप्त कर चुका है । जैसे वैदिक अभिवादन का शब्द नमस्ते भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व मे जहां कहीं भी हिन्दू बसते हैं व्याप्त हो चुका है । भूत प्रेत का अध विश्वास इतना अधिक व्याप्त था कि गॉव के बाहर पीपल आदि के पेडो तथा श्मशानो मे भूत प्रेतो का वास समझा जाता था । यह विश्वास भी सत्यार्थ प्रकाश तथा आर्य उपदेशको ने नष्ट प्राय कर दिया है । इसी प्रकार और भी अनेक उपलब्धियो का ताज ऋषि दयानन्द और आर्य समाज को पहनाया जा सकता है ।

ऋषि के समय मे अज्ञान अविद्या और पाखण्ड का जबरदस्त बोलबाला था, ऋषि को मत मतान्तरों तथा पाखण्डों से जबरदस्त टक्कर लेनी पड़ी थी। और अन्त काल तक यह संघर्ष चलता रहा था परिणाम स्वरूप विरोधी पाखण्डी दल थर्रा गया था। सन् १९२५ ई० महर्षि जन्म शताब्दी मथुरा तक आर्य समाज पाखण्डों के उन्मूलन में प्रगति करता रहा, परन्तु फिर इसे क्या साप सूंघ गया। शिथिलता आनी आरम्भ हो गई, और यह शिथिलता अब चरम सीमा पर पहुंच चुकी है। स्वतन्त्रता से पूर्व जहां आर्य प्रतिनिधि सभाओं में उपदेशकों की संख्या पचास साठ तक होती थी, वहां अब पांच छः या अगुंलियो पर गिनने लायक भी नहीं रही है। शास्त्रार्थ बन्द हो चुके है। इस लिए पाखण्ड बढ़ रहा है। नये नये मत मतान्तर जन्म ले चुके हैं। धर्म के ठेकेदारों और भगवानों की फौज बढ़ती चली जा रही है।

विद्युत के प्रकाश और आश्चर्य में डालने वाले अदभुत आविष्कारों से चुंधिया सा गया मानव का मस्तिष्क अपनी चरम सीमा पर पहुंचता चला जा रहा है पुनरपि अन्ध विश्वासों का दास बनता चला जा रहा है। अब आप ही बताइये कि क्या यह प्रकाश के युग में अन्धकार की बाढ़ नहीं आ रही है ? मैंने बड़े बड़े विद्वानों डाक्टरों, वकीलों तथा इंजीनियरों को बुतपरस्ती मे पड़े कब्रों तक को सिर झुकाते देखा है। समझ में नहीं आता की उन्होंने पढ़ लिख कर भी दिमाग को ताला लगा दिया है। इसी प्रकार झूंठे भगवानों की तरह ही देवियों तथा भगवतियों की भी भयंकर बाढ़ आ गई है। कुछ वर्ष पहले तक वैष्णों देवी की बहुत कम चर्चा थी परन्तु अब यह देवी भारतव्यापी बन गई है। अनेक झूठी नई-नई देवियों का प्रचार बढ़ रहा है। जैसे सन्तोषी माता की उत्पत्ति हिन्दुओं की अक्ल का लाभ उठा कर हुई है। यह सब कुछ आर्य नेताओं तथा आर्य जनता के सामने हो रहा है और हम बुतों की तरह सब कुछ देखते हुए भी इसे नजर अंदाज कर रहे है। अब हमारा कार्य केवल जयकारों तथा कभी-कभी हवन कर लेने तक ही सीमित होता चला जा रहा है। दिन-प्रतिदिन वेद प्रचार घट रहा है। हमारे वार्षिकोत्सव मैदानों से सिमट कर आर्य समाज मन्दिरों तक ही सीमित होते चले आ रहे हैं। याद रक्खो ऋषि ऋण नहीं उतरा तो सर्वनाश हो जावेगा। अब भी समय है आर्य संस्कृति को केवल आर्य समाज ही बचा सकता है। इत्योम।

– जिस तरह जड़ से काटने पर वृक्ष नष्ट होता है वैसे ही पाप को छोड़ देने से दुःख नष्ट हो जाता है क्यों कि दुःख का वास्तविक मूल पाप है।

श्रद्धा सुमन

–श्रीमती सरस्वती गोयल
१८० साकेत, मेरठ

★ ★

पूज्य ऋषिवर आज तुमको बारंबार नमस्कार,
दूर कर अज्ञान अविद्या भर दिया जग में प्रकाश।
नहीं आततायियों से डरे निर्भय सर्वदा सत्य कहा।
सत्य रूपी प्रभु मिलन को सभी सुखों को तज दिया।।

जगह जगह शास्त्रार्थ किया पाखंडियों को परास्त किया,
धर्म ध्वजा लेकर जग में वैदिक धर्म उद्घोष किया।
ऋषि ने दिशाहीन लोगों को सत्य ज्ञान का दान दिया,
झूंठे आडम्बरो को छुड़ा कर सत्य मार्ग में प्रेरित किया।।

जड़ की पूजा छुड़ा कर दिखाया मार्ग ईश्वर का,
पौराणिक पंडितो को भी दिखा दिया मार्ग सत्य का।
वेदों के विद्वान् महर्षि दयानन्द थे,
सत्यार्थ प्रकाश के रचयिता महर्षि स्वयं थे।।

मेधावी शुद्ध विचार रत्न सागर थे,
पाखंड दूर करने को सदा तत्पर थे।
बार-बार विषपान किया फिर भी दुष्टों से किया प्रेम
होकर सर्व मान्य नेता भी सबसे किया सतत-प्रेम।।

ऋषि का जीवन यज्ञ रूप था जनता हित में नित्य अर्पित,
हम भी उनकी यज्ञ भावना अपने अन्दर भव्य भरें।
महर्षि का सब मिल कर श्रद्धापूर्वक स्मरण करें,
उनके उत्तम गुणों को हम अपने मन में ग्रहण करें।।

शिक्षायें ऋषि की अपना कर जीवन सफल बनाये हम।
मूर्ख जनों को शिक्षा देकर जग को सुपथ दिखलायें हम।।

ऋषि दयानन्द की दृष्टि में रुद्र का स्वरूप

लेखक -जगदीश आर्य,
'सिद्धान्त रत्न' (सासाराम) बिहार

★ ★

शिव रात्रि के दिन शिव-प्रतिमा पूजन के समय, बालक मूल शंकर को रुद्र के सच्चे स्वरूप का साक्षात्कार करने की प्रेरणा मिली। स्वामी दयानन्द का सम्पूर्ण जीवन तो तप की आभा से दे दीप्यमान था, उनका अखण्ड ब्रह्मचर्य, एवं उनकी अनवरत योग साधना रुद्र के सच्चे स्वरूप के उद्घाटन में लगा रहा। पौराणिक कथा है कि समुद्र-मंथन के क्रम में जिस हलाहल का प्रादुर्भाव हुआ, उसे रुद्र ने पान कर लिया था। ऋषि दयानन्द ने वेद-महासागर का मंथन कर जिस रुद्र तत्व का साक्षात्कार किया, उसके स्वरूप का अपने दार्शनिक विचार धारा में उद्भावित किया, उसका एक संक्षिप्त दिग्दर्शन पाठकों के सामने रख रहा हूं।

'रुद्र' के सम्बन्ध मे अनेक भ्रातियां हैं। पुराणो में और पुराणोत्तर साहित्य मे उन भ्रांतियो का विशद् वर्णन है। ऋषि दयानन्द ने उन भ्रातियो को तोड़ते हुए रुद्र के लोकोपकारी रूप को प्रकट किया। वे लीक पर न चल कर एक अलग मार्ग का जो ऋषि मार्ग था, अवलम्बन किया।

स्वामी जी ने वेद के 'रुद्र' पद को दो प्रक्रियाओं (पारमार्थिक एवं व्यावहारिक) में व्याख्यात किया है। वेद मन्त्रों का जो तीन प्रक्रियाओं (आध्यात्मिक आधिभौतिक एवं आधिदैविक) में अर्थ होता है, उनका स्वमी दयानन्द ने उपर्युक्त दो प्रक्रियाओं मे समाहित कर दिया है। पारमार्थिक प्रक्रिया से 'रुद्र' का अर्थ परमात्मा, आत्मा एवं शरीर तथा व्यावहारिक प्रक्रिया में अग्नि, वायु, प्राण, राजा, सेनापति-वीर, विद्वान, सभाध्यक्ष, ब्रह्मचारी, वैद्य आदि किया है। ऋषि दयानन्द ने श्लेषालंकारादि प्रक्रिया से 'रुद्र' पद का लोकोपकारी, स्वरूप चित्रित किया है। स्वामी जी के पूर्व जो वेद भाष्य मिलता है, उसमें 'रुद्र' एक निश्चित अर्थ में बद्ध हो गया है-श्री महाराज ने 'रुद्र' का उस कारा बद्ध से मुक्त कर खुले व्योम में विहार कराया है।

'रुद्र' पद की व्युत्पत्ति :-श्री स्वामी जी महाराज ने रुद्र की व्युत्पत्ति इस प्रकार की है-

१- 'रुदिर अश्रुविमोचने' (धातु पाठ २/६०) इस धातु से 'णिच्' और रक् प्रत्यय (रोदेर्णि लुक् च/उ० २/२२) होने से रुद्र शब्द सिद्ध होता है। अर्थ हुआ- 'यो रोदयत्य न्यायकारिणो जनान सरुद्र, जो दुष्ट कर्म करने हारा को रुलाता है, उस परमेश्वर का नाम 'रुद्र' है

जब दुष्ट कर्म करने वाले जीव ईश्वर की न्याय व्यवस्था से दु ख रूपी फल पाते है तब वे रोते हैं, और ईश्वर इस प्रकार उन्हें रुलाता है, इसलिये परमेश्वर का नाम 'रुद्र' है।

२- चवालिस वर्ष पर्यन्त तक ब्रह्मचर्य धारण करने वाले अपनी आत्मा को बल युक्त कर दुष्टों को रुलाने और श्रेष्ठ जनों का पालन करने वाले होते हैं, उस ब्रह्मचारी की 'रुद्र' सज्ञा है। स्वामी जी ने इसे मध्यम ब्रह्मचर्य कहा है।

निरुक्त में 'रुद्र' पद का निर्वचन इस प्रकार है :-

'रुद्रो रौतीति सतः रोरुयमाणो द्रवतीतिवा, रोदयतेर्वा, यद्रुदत्तद् रुद्रस्य रुद्रत्वम् इति काठकम् यदरोदीत्तद् रुद्रस्य रुद्रत्वम् इति हारिद्रवकम्' (निरु० १०-६)

'रुद्र' पद का पारमार्थिक आध्यात्म अर्थ-

१- ईश्वर अपनी सर्वज्ञता, व्यापकत्व एवं न्यायप्रियता गुणों के कारण जीवों को उनके कर्मानुसार फलों का प्रदाता होने एवं दुष्टों को दण्ड देकर रुलाने के कारण परमेश्वर रुद्र है। (यजु० १५/१)

वह उत्तम ज्ञान संयुक्त, विस्तृत है तथा प्राणियों के हृदय में रहने वाला है। (ऋ० १/४३/१)

तीनों कालों में वह सबका रक्षक है। (ऋ० ७/५६/१२)

वेद प्रतिपाद्य आत्म विद्या का प्रदान करने से ईश्वर रुद्र है (ऋ० १/११४/१)

स्थावर, जंगम जगत् में व्यापक भगवान् रुद्र है। (अथर्व० ७/८७/१)

हमारे माता-पिता और प्रिय तनुओं का हिंसन न करने वाला रुद्र हम पर कृपा करें।

उसकी उपासना करने वाला भक्त पके हुए ककड़ी फल की तरह सुगमता से बन्धन मुक्त हो जाता है, अर्थात् वह उपासकों का मोक्षदाता है।

(ऋ० ७/५९/१२)

यह 'मीढुष्टम' 'शिवतम है। अर्थात् अत्यन्त पराक्रम युक्त अत्यन्त कल्याणकारी-दुष्टों में अग्नि तुल्य तेजस्वी दाहक है। (यजु० १६/५१)

सब मंगलों का दाता होने से अभिष्ट कार्यों को सिद्ध करने वाला है। (यजु० १६/४१)

रुद्र पद का जीव एवं प्राण पक्ष में अर्थ– 'कद्रुद्राय प्रचेत से मीढुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शन्तमं हृदे।'

(ऋग्० १/४३/१)

हम (कत) कद प्रचेत से) प्रकृष्ट ज्ञान वाले (मीढुष्टमाय, अन्यों पर ज्ञानादि की वर्षा करने वाले (तव्य से) अतिमहान् (हृदे) हृदय-वासी (रुद्राय) जीवात्मा के लिए (शन्तमं,) अतिशय सुखकारक वेद का (वोचेम) उपदेश करें।

'एष तं रुद्रः भागः सह स्वस्राम्बिकया त जुषस्वस्वाहा। एष ते रुद्र भाग आखुस्ते पशुः।'' (यजु० ३/५७)

यह जो (रुद्र) प्राण है, इसका यह भाग है, जिसको (अम्बिकया) वाणी वा (स्वस्त्रा) विद्या क्रिया के (सह) साथ (जुषस्व) सेवन करता, वा जो (ते) इसके (आखुः) खोदने वाला पदार्थ व (पशुः) दर्शनीय भोग पदार्थ है जिसका यह (जुषस्व) सेवन करता है (तम्) उसका सेवन सदा मनुष्य सब करें। स्वामी जी ने इस मन्त्र में श्लेषालंकार माना है। (यजु० भाष्य)

प्राण रुद्र हैं। इसमें शत० ब्रा० १४/६/९ का श्री महाराज ने शरीरस्थ दश प्राणों एवं ग्यारहवां जीवात्मा को 'रुद्र' कहा है। प्राण की रुद्र संज्ञा इसलिये है कि जब प्राण शरीर से निकलते हैं तो उसके सम्बन्धी लोग रोते हैं।

प्राणावाव रुद्रा एतं ह्रीयं सर्वं रोदयन्ति।

'रुद्रा देवता' (यजु० १४/२०) श्री महाराज ने संस्कृत पदार्थ में प्राणोदय एकादशः तथा हिन्दी पदार्थ में (रुद्राः) प्राण आदि ग्यारह वां मध्यम् कक्षा के विद्वान किया है।

'रुद्र वर्त्तनी' (ऋग् मंडल १ अ० १ सू० ३ मन्त्र ३) संस्कृत पदार्थ में रुद्रस्य प्राणस्य, हिन्दी पर्दार्थ जिनका प्राण मार्ग है।

रुद्र का व्यावहारिक प्रक्रिया से अर्थ। इस प्रक्रिया में आधिभौतिक एवं आधिदैविक अर्थ भी समायोजित हैं।

आधिभौतिक अर्थ

विद्वान। प्रशंसा को प्राप्त दुष्टों को रुलाने वाला विद्वान मनुष्य के अज्ञान रूपी रोगों के नाश के लिए विद्या रूपी औषध प्रदान करता है। (ऋग्० २/३३/१२)

उपदेशक आप्तों के उपदेश और वेदादि शास्त्रों के ज्ञान से युक्त प्रज्ञाओं को धारण करते हैं। (ऋग्० १/११४/१)

हे (गिरिशन्त) मेघ वा सत्य उपदेश से सुख पहुंचाने वाले (रुद्र) दुष्टों को भय और श्रेष्टों के लिये सुखकारी शिक्षक विद्वन्! (यजु० १६/२)

(रुद्र) विद्वान् को चाहिए कि धर्म की नीति से प्रजाओं को प्रसन्न करें। (यजु० १६/४९)

हम प्रकृष्ट ज्ञान वाले अन्यों पर ज्ञानादि की वर्षा करने वाले अतिमहान हृदयवासी (रुद्राय) विद्वान जीव अतिशय सुखकारक वेद का (वोचेम) उपदेश करें। (ऋग्० १/४३/१)

(रुद्रः) रुद्र कोटि की आचार्या विदुषी (यजु० ४/२०)
(रुद्राः) मध्यकक्षा के विद्वान्। (यजु० १४/२)

ब्रह्मचारी–ऋषि दयानन्द ने चौवालिस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य धारण करने वाले को 'रुद्र' संज्ञा कही है। (वस्तुतः रुद्र एक उपाधि है जो आज कल बी० ए० एम० ए० आदि के समान समझना चाहिए।

(नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः) जटायुक्त ब्रह्मचारी तथा केश मुंडित संन्यासी। (यजु० १६/२९)

श्री महाराज ने रुध् धातु के एक अन्य निर्वचन में 'रोकना' अर्थ करते है [ऋग्० १/११४/४] इस अर्थ के ब्रह्मचारी अपने वीर्य को रोक कर संयम धारण करता है।

ऋग्०२/३३/२ मन्त्र के भावार्थ में श्री स्वामी जी महा-

राज ने लिखा है-- "जब आप्त विद्वान् तथा पढ़ने और उपदेश करने वाली स्त्री उत्तम शिक्षा से ब्रह्मचारी और श्रोता पुरुषों तथा ब्रह्मचारिणी और सुनने वाली स्त्रियों को शिक्षा युक्त करते हैं।

सभाध्यक्ष-

ऋग्० १/११४/३ में 'रुद्र' पद का पदार्थ इस प्रकार है 'रुद्ररुतः सत्योपदेशान् राति ददातीति तत्सम्बुद्धौ हे मीढ्वो रुद्र सभाध्यक्ष राजन्'। अन्यत्र दुष्ट शत्रुओं को रुलाने के कारण राजा रुद्र हैं। 'रुद्र दुष्टाना शत्रूणा रोदयित्'

[रुद्र] सभाध्यक्ष दिव्य कर्मो का कर्त्ता है।

[ऋ० १/११४/१०]

[रुद्र] सभाध्यक्ष का कर्त्तव्य है वह पुरुष एवं गौ हत्याकारको का विनाश करे। [ऋग्० १/११४/४]

[रुद्रः] प्रजा पालन रूपी यज्ञ का साधक है।

[ऋग्० १/११४]

यजु० अ० १६ कं २४, २५, एवं २६ मन्त्रों का देवता 'रुद्र' है, इन सभी मन्त्रों का अर्थ सभाध्यक्ष परक है।

सेनापति- राष्ट्र रक्षा हेतु प्रबल सैनिक शक्ति की आवश्यकता है इस निमित्त यजु० का १६ वा अध्याय का 'रुद्र देवता' विशेष रूप से द्रष्टव्य है, यह सारा प्रकरण सेनापति प्रकरण है।

वैद्य-

ऋग्वेद के कतिपय 'रुद्र' देवता वाले मन्त्रों में श्री महाराज ने रुद्र का अर्थ सर्व रोग दोष निवारक वैद्य किया है।

ऋ० २/३३/२ मन्त्र में 'रुद्र' पद का अर्थ-हे रुद्र वैद्यराज, ऋ० २/३३/४ मन्त्र में 'रुद्र' पद का अर्थ भिषग्राज कहा है---

यथा "भिषक्तमत्वा भिषजां शृणोमि"-

यजु० १६/४ एवं मन्त्र ५ को पृष्ठ भूमि में श्री स्वामी जी ने 'अथ-चिकित्सिक कृत्यमाह' हिन्दी में- 'अब वैद्य का कृत्य यह विषय अगले मन्त्र में कहा है-। मन्त्र के अन्वय में कहा है- हे गिरिश रुद्र वैद्यराज। मन्त्र के भावार्थ में उपमालंकार से चिकित्सा परक अर्थ किया है।

उसकी औषधियां वज्र तुल्य सुखकारक हैं (ऋग्० २/३३/२३)

कुपथ्य से उत्पन्न शरीर में व्याप्त रोगों को दवाओं से दूर करता है। [ऋग्० २-१३ का ३ एवं ४]

'रुद्र' पद का आधिदैविक अर्थ

वायु- 'कद्रुद्राय प्रचेत से मीढुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शन्तम हृदे।' [ऋग्० १/४३/१]

वायु पक्ष में- हम [कत्] कब [प्रचेत से] प्रकृष्ट ज्ञान के निमित्त भूत [मीढुष्टमाय] बल आदि सेचन करने वाले [तव्य से] अतिशय महान [रुद्राय] प्राण-वायु के ज्ञान के लिए [शन्तमं] अतिशय सुखकारक वेद का [वोचेम] उपदेश करें।

विद्युत वज्र

यजु० १६/३ मन्त्र मे 'गिरिशन्त' और 'इषुम्' पद का अर्थ इस प्रकार किया है। [इषुम्) बाणावलिम्। [गिरिशन्त] गिरिणा मेघेनघ शं तनोति तत्सम्बुद्धौ'। हिन्दी पदार्थ-[गिरिशंत मेघ द्वारा सुख पहुंचाने वाले सेनापति [इषुम] वाण को। भावार्थ-राजपुरुषों को चाहिए कि युद्ध विद्या को जान शस्त्र-अस्त्रों को धारण करके।

स्वामी जी ने 'गिरिशन्त' का अर्थ 'मेघ' किया है विद्युत मेघ मे ही शयन करता है, अर्थात् निवास करता है। इधर 'इषु' का अर्थ शस्त्र-अस्त्र भी है इस व्याज से 'रुद्र' पद का अर्थ विद्युत भी होगा।

यजु० १६/११ वें मन्त्र में आये हुए (धनुः) एवं (हेंतिः) पद का अर्थ क्रमशः धनुष एवं वज्र किया है। वज्र विद्युत अस्त्र-शस्त्र है इसमें संदेह नहीं।

'अग्नि'- 'रुद्र' पद का अर्थ विद्युत वज्र करने पर 'रुद्र का अग्नि अर्थ भी स्वतः सिद्ध है। अग्नियां तीन है द्यु अग्नि (सूर्य) अन्तरिक्ष अग्नि (विद्युत) पार्थिव अग्नि- पृथ्वी पर भी अग्नि। कवि कालीदास ने शकुन्तला नाटक के मंगलाचरण में रुद्र के आठ रूपों का वन्दना की है- उनमें से एक रूप अग्नि का भी है। यथा- "वहति विधिहुतं या हविः"। जो वेद मन्त्रों से आहुति हवि देवों को पहुंचाती है।

'रुद्रोऽग्निः। (ताण्ड्य ब्रा : १२/४/२५)

अग्नि ही रुद्र हैं। इसके आठ नाम है– जिनमें एक नाम 'रुद्र' है (शत० ब्रा० १/१/३/१८) मे आठों नामों का उल्लेख है।

रुद्र पद के विवेचन से हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि स्वामी दयानन्द ने रुद्र के जिस रूप का साक्षात्कार किया वह लोकोपकारक स्वरूप है।

यदि वेद मानव मात्र को उपदेश देने के लिये परम प्रभु ने प्रकट किया है, तब यह स्वाभाविक है कि वह प्रत्येक श्रेणी के मानव के लिये सीधे रूप में कहा गया हो। वेद के उपदेश सरल, सुगम एवं बोधगम्य हैं।

श्री स्वामी जी महाराज ने रुद्र तथा अन्य देवता वाचक पदों का अर्थ पारमार्थ एवं व्यावहारिक प्रक्रिया से किया है। पारमार्थ प्रक्रिया में अध्यात्म (ईश्वर आत्मा एवं शरीरपरक) तथा व्यावहारिक प्रक्रिया में (आधिदैवत एवं आधिभौतिक) अर्थ किया है। इस लेख में मैंने इसी दृष्टिकोण का सहारा लिया है। श्लेषालंकार तथा अन्य अलंकारों से अर्थों को विविध प्रकार से उद्भासित किया है।

स्वामी दयानन्द १९वी शताब्दी के भारतीय आकाश में तेज पुंज आदित्य के रूप में उदित हुए। अपनी विद्वता की आभा से वेद के चारों ओर जो घने बादल जमे हुए थे उन्हें छिन्न-भिन्न कर वेद सूर्य को भासमान् कर दिया।

ऋषि बोध रात्रि

लेखनी उस महर्षि का आज फिर गुणगान हो।
जिसने वैदिक धर्म में डाली नई फिर जान हो।।
शिवरात्रि का जागरण था और पूजा भार भी।
मूल शंकर को पिता ने आज सौंपा था सभी।।
एक आसन पर पिता थे एक आसन आप थे।
शिव के नामों का वहां पर जप रहे वह आप थे।।
आज मन मे हर्ष था ना भूख थी ना प्यास थी।
प्रेम श्रद्धा और भक्ति दर्शनों की आस थी।।
रात आधी जब हुई उनके पिता तो सो गये।
मानो पिता से पुत्र के बंधन अलग सब हो गये।।
देखते ही देखते बिल से चूहा निकला वहां।
बहुबार कूदा और उछला शिव की पिन्डी थी जहां।।
भोग जो शिव को लगाया था वही खाने लगा।
दृश्य ऐसा देख कर संदेह मन आने लगा।
जो पिता जी थे बताते क्या यही शिव है वही।
पर मुझे ऐसा यहां कुछ जान पड़ता है नहीं।।
एक चूहे से भी रक्षा कर नहीं सकता है जो।
कैसे रक्षा विश्व की वह कर सकेगा फिर कहो।।
सर्व शक्तिमान है वह यह तो शक्तिहीन है।
वह बुद्ध है वह शुद्ध है पर यह तो बुद्धिहीन है।
दीन पालक दीन बन्धु निर्बलों का प्राण है
चैतन्यता इसमें कहां यह तो निरा पाषाण है।।
अब ऋषि को सच्चे शिव का ज्ञान मन में हो गया।
अज्ञान का जो था अंधेरा दूर शीतल हो गया।।

—श्री जगदीश शरण 'शीतल'
चाँदपुर (बिजनौर)

प्रश्न– यदि पुनः जन्म होता है तो पूर्व जन्म का ज्ञान हमें क्यों नहीं रहता ?

उत्तर– आंख खोल कर देखो जब इसी जन्म में जो सुख-दु:ख तुमने बाल्यावस्था में अर्थात् जन्म से पांच वर्ष पर्यन्त पाये है उनका ज्ञान नहीं रहता, अथवा जो कि नित्य पठन पाठन और व्यवहार करते हैं उनमें से भी कितनी ही बातें भूल जाते है तथा निद्रा में भी यही हाल हो जाता है कि अब के किये का भी ज्ञान नहीं रहता। जब इसी जन्म के व्यवहारों को इसी शरीर मे भूल जाते है तो पूर्व शरीर के व्यवहारों का कब ज्ञान रह सकता है।

—ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

जिस शब्द और अर्थ का दूसरी बार उच्चारण और विचार हो—इसको अनुवाद कहते हैं। सो ब्राह्मण पुस्तकों में यथावत लिखा है इस हेतु से भी ब्राह्मण पुस्तकों का नाम इतिहास आदि जानना चाहिए। क्योंकि इनमें इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा और नाराशंसी ये पांच प्रकार की कथा सब ठीक-ठीक लिखी है। और भागवत आदि को इतिहास गति नहीं जानना चाहिए क्योंकि उनमें बहुत सी मिथ्याकथा लिखी है।

—ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

साधना पथ

विश्व ने चूमे सफलता के चरण
सिद्धि की बढ़कर उतारी आरती
'साधना' पथ में उपेक्षित सी खड़ी
स्नेह के दो शब्द केवल चाहती ।१।
साधकों का रक्त बनकर स्वेदकण
इस धरा को उर्वरा करता रहा
झिलमिलाते ही रहे श्रमबिन्दु पर
लोक यह उपहास सा करता रहा ।२।
देव प्रतिमा की हुई आराधना
कुर्सियों को हार पहनाये गये
मुकुट मणियों की हुई है अर्चना
श्रमिक राही किन्तु ठुकराये गये ।३।
पद प्रतिष्ठा की रही बस कामना
साधना-तप से रहे जो दूर हैं।
मान्य नेता वे बने इस लोक में
पा रहे भौतिक निधि भरपूर हैं ।४।
यह जगत तो गतानुगतिक ही रहा
नयन शंकर का न अब तक खुल सका
कौन समझाये यहाँ मतिमन्द को
सुपथ आलोकित न अब तक हो सका ।५।
छल प्रवञ्चन और कुटिल दुर्नीतियां
बन गई हैं सिद्धि का आधार अब
हंस पद तो पा रहे बगुला भगत
बक कहे जाते हैं मानस हंस अब ।६।
किन्तु सृष्टि का सनातन सत्य है
लोक हित में जो तपा है मर्त्य बन
अमर पद का वह सफल यात्री बना
बन गया आदर्श जग का दिव्य मन ।७।
भोग लिप्सा और भौतिक सिद्धियाँ
बन सके साथी न जीवन राह में
दे सकेंगे साथ क्या परलोक में
उस अतुल अपवर्ग धन के सामने ।८।
आदि में विष सा भयंकर जो हुआ
वही तो परिणाम में अमृत बना
साधना के कठिन पथ में जो व्रती
साहसी बनकर सदा अविचल रहा ।९।

मेरे महर्षि मेरे गुरु

यह कैसी ज्वाला जो जगत् में जल रही
तुम्हारे मंत्र जो गुंजाएं कानों में समाये अब तक।
तुम कोपीनधारी महावीर चल दिये जिस ओर
तुम्हारे तर्क बाणों से जगत में मच गया था शोर ॥
जो जहाँ था रह गया मुंह छिपाये अंधेरे में
न आते पास तब अब क्या आएंगे गुरु मेरे।
तुम्हारा नाम सुनकर पाखंड भी कांपता था
न हाथों में तेरे अस्त्र-शस्त्र पर भय उन्हें था गुरु मेरे ॥
ज्ञान की ज्योति जो बुझ गई थी
आर्यावर्त से तिरोहित हो गई थी।
अनेकों मत मतान्तर भी इस भूमि पर
कर रहे थे अपने अपने मठों में शोर ॥
तू न गुफा में रहा न हिंसा का लिया सहारा
तेरे जिह्वा पर काल बैठा था जिसने।
दिया इस जगत को झकझोर
ओ ऋषि दयानन्द गुरु मेरे ॥
मगर हमें अब क्या हो गया है
हम स्वयं निज महाभारत में पड़ गये
हमारी मुट्ठियाँ बँधी हैं तैयार हैं हमारे हाथ
स्वयं मृत्यु का वरण करेंगे, अब नहीं कोई जगन्नाथ ॥
अब किसका इन्तजार करें मेरे ऋषि
कृष्ण का या चन्द्रगुप्त का
जो खण्डित आर्यावर्त को करे पूरी
या इस भूमि पर महाभारत हो दूसरी ॥
मगर तुम्हारे तर्क का सहारा रहेगा अब।
जगत् उस ज्वाला में जलती रहेगी तब तक ॥

—रवि रवीन्द्र आर्य बाल विद्यालय जवाहर नगर
बड़काकाना हजारीबाग (बिहार)

प्रेय पथ व्यवहार में तो है सरल
डूबती नैया यहां सच जान लो
मुक्ति का आधार तो बस श्रेय है
अमृत साधन कल्पतरु पहचान लो ।१०।

कवियत्री—सावित्री देवी शर्मा एम. ए. वेदाचार्या
'सावित्री सदन', बरेली

एक था ऋषि भारत का

★

वे वैदिक निधि के अध्येता,
ऋषि परम्परा के वे प्रतीत।
विजय पाना उन पर सरल न था,
यह कथन नहीं मेरा अलीक॥
उनके शब्दों की ज्वाला से,
शत्रुता शत्रु की जलती थी।
काशी के पण्डितो की मण्डली भी,
बैठी हाथ मसलती थी।१।
करते थे ऋषिवर की तुलना,
वेगवती नदी की धारा से।
यह महा विभूति उदय हुई,
गुजरात ग्राम टंकारा से।
आचार्य शंकर के उपरान्त,
वेद पुनः जब सदय हुआ।
अन्यतम वेदवित दयानन्द
भारत भूमि पर उदय हुआ।२।
महा विभूति थे भारत की,
निर्भीक प्रकृति थे सिंह समान।
यूरोप जिनको भुला न सकेगा,
ऐसे हैं जो महिमावान॥
इन्हीं विभूति के मध्य में,
ब्रह्मचर्य के वे अवतार।
जिन्हें भूल जाना यूरोप के
लिए सिद्ध होगा दुश्वार।३।
महाव्रती इस दयानन्द में,
अनुपम नेतृत्व की क्षमता थी।
थे विचार कर्म से मिले हुए,
वेदों में भारी ममता थी॥
पाश्चात्य विचारों के समक्ष,
ऋषिवर कैसे झुक सकते थे।
विभ्रमित दार्शनिकों के संग में,
न समझौता कर सकते थे।४।
प्रौढ़ रहीं जिनकी शिक्षाएं,
थीं नव जागरण का आधार।
वेद लोक से लाकर जिसने,
बरसाये पुष्पो के हार॥
इन्हीं उग्र सन्देशों का,
परिणाम शीघ्र प्रतिफलित हुआ।
ज्ञानालोक अब फैल रहा,
अन्तः धरा का उल्लसित हुआ।५।
उत्साह संकल्प फूंक दिया,
निष्प्राण शरीर में भारत के॥
शब्द वीर के गूंज गये,
फिर दयानन्द ललकार उठा।
वेद मार्ग पर लौट चलो,
ऋषिवर का स्वर झंकार उठा।६।
अजेय योद्धा दयानन्द का,
सोत्साह करते सम्मान।
उग्र प्रचारक थे वेदों के,
संस्कृत के उद्भट विद्वान्।
अंग थे ऋषि परम्परा के,
साक्षात शौर्य था मूर्तिमान।
एकाकी शत्रुओं पर टूट पड़े,
पहन वेद का शिरस्त्राण।७।
न क्षमा किया ऐसे जन को,
उस योद्धा वीर दयानन्द ने।
सहस्र वर्ष के हुए पतन में,
योग दिया जिस भी जन ने॥
शिरोमणि देश का झुका भाल,
उठवा दिया ऋषि दयानन्द ने।
वेदो का डंका जगती पर,
बजवा दिया देव दयानन्द ने।८।
वह दिन ही युग प्रवर्तक था,
एक विप्र ने जब स्वीकार किया।
वेदो के अध्ययन करने का,
जगती भर को अधिकार दिया॥
इससे पूर्व तो शास्त्रों को,
बस ब्राह्मण ही पढ़ सकते थे।
उच्चारण तक भी संस्कृत में,
न शूद्र वर्ग कर सकते थे॥
काटी जाती थी जिह्वा तक,
यदि शूद्र ने मन्त्रोच्चार किया।
कानों में शीशा भरवा दी,
स्मृतियों में विस्तार किया॥

—देवेन्द्र कुमार परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय
आबू गोडा।

योग मार्ग यात्री महर्षि दयानन्द सरस्वती

[आचार्य दीनानाथ जी सिद्धान्तालंकार, के० सी० १७/बी-अशोक विहार, दिल्ली-५२]

व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया

महर्षि दयानन्द जब उत्तरप्रदेश के गंगा तटवर्ती क्षेत्रों में वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे थे तब कासगंज पहुंचने पर वहां के लोगों ने दण्डी विरजानन्द जी के देहान्त का समाचार सुना। स्वामी जी वहां से चल चुके थे। उस नगर के तीन भद्र पुरुष स्वामी जी को यह दुःखद समाचार सुनाने के लिए चल पड़े। सोरों में महाराज को इसका पता चला। गुरु दण्डी जी के इस निधन का समाचार सुनते ही महाराज एक वज्रपात से मूर्छित सदृश हो मौन ही बैठे रहे। कुछ देर बाद भक्त जनों के आग्रह पर बोले–आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया। जीवन में अनेक महान कष्टों और प्रिय जनों के वियोग पर भी जिस दृढ़ संकल्पी व्यक्ति का चित्त तनिक भी डावांडोल नहीं हुआ, आज गुरुवर के वियोग पर उनके नेत्रों से अनायास ही अश्रु बहने लगे।

केवल एक कौपीन की सम्पत्ति–ऋतु चक्र पर विजय

गंगा तीर पर विचरते हुए इस कठोर तपस्वी संन्यासी का जीवन कल्पनातीत श्रेय और मोक्ष मार्ग के यात्री का प्रेरक, सजीव मूर्तिमान था। सामान्य व्यक्ति के लिए इतने कठोर मार्ग का अवलम्बन सहज नहीं है। यह भी इस दिव्य पुरुष के किन्हीं पूर्व जन्म कृत उग्र सत् कर्मों का फल ही था, जो इस जन्म में पूंजी बन उन्हें स्वतः अनायास ही प्रेरणा दे रहा था। इस अनिकेतन तपस्वी की सम्पत्ति एक मात्र कोपीन के अतिरिक्त कुछ न थी। केवल इस सम्पदा के साथ महाराज को घने अरण्य मानव रहित गांगेय स्थलों, पौष माघ की तालुस्पर्शी शीत ऋतु में कई परीक्षक आधी रात, तीसरे पहर चुपचाप योगीराज को देखने गये। इनमें जिले का अंग्रेज कलक्टर भी था पर महाराज को सिद्धासन पर ध्यानावस्थित ही पाया।

स्वादेन्द्रिय पर पूर्ण संयम

महर्षि अधिकतः भिक्षा मांगने नहीं जाते थे। फलतः रूखा-सूखा जैसा भी अन्न कोई भी पहले लाकर दे देता, महाराज उसे ही अपनी निश्चित सीमा के अन्तर्गत प्रभु के प्रति धन्यवाद सहित, ग्रहण कर लेते। ऋषिवर ने कभी भी किसी के द्वारा दी गई मधुकड़ी का दोष कभी भी प्रदर्शित नहीं किया। किसी के भी सम्मुख व एकान्त में भी कभी भी भोजन सम्बन्धी स्वादिष्ट–अस्वादिष्ट व व्यंजन इत्यादि की न्यूनता व अधिकता की कभी चर्चा नहीं की। एक तपः पूत योगी के धर्म का पालन करते हुए स्वादेन्द्रिय पर महर्षि का अटल संयम था संस्कृत कवि के शब्दों में–

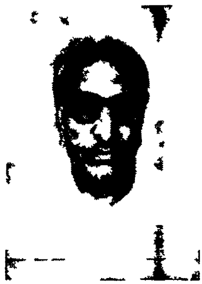
'मनसि वचसि काये पुण्य पीयूषपूर्णा,' की दीर्घकाय रातें, दूसरी ओर वैशाख व ज्येष्ठ की शरीर को सुखा देने वाली लू भरी आंधियों, वर्षा ऋतु की अजस्र मेघ वर्षा की बौछाड़ों और सावन भादों की धूप छाया की झांकियों में–दयानन्द हिमाचलवत तपोनिष्ठ, उस एक कौपीन को स्नान के समय धोकर सूखने के लिए डाल–स्वयं पद्मासन पर कई घण्टों तक समाधिस्थ हो जाते–यह ऋषिवर का दैनिक कार्यक्रम था। योगीराज का रात्रि काल अधिकतः तुरीयावस्था में ही व्यतीत होता। गीता के शब्दों में–

> या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
> यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतोमुनेः॥ २-६९

अर्थात् जब सब प्राणी सो जाते हैं, उस समय मुनि जागता है और जब सब जागते हैं, तब वह उस प्रभु की दिव्य लीला का प्रत्यक्ष दर्शन करता है।

> त्रिभुवनयुपद्वारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
> परगुण परमाणून पर्वती कृत्य नित्यम्,
> निज हृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥

अर्थात्–मन, वचन और शरीर को सदा सत् सत् कर्म रूपी अमृत से पूर्ण रख,तीनों लोकों को अपने उपकार-सेवा–सद्भाव द्वारा तृप्त करने वाला दूसरों के परमाणु तुल्य छोटे



शांति तभी होगी— जब हम सुमानव बनेंगे

ऋषि बोध पावन पर्व पर हम, सद्मानव बनने का व्रत धारण करें

★

आत्म प्रक्षालन करें अपना और समस्त आत्मिक कल्मष शिवरात्रि पर्व की पावन यज्ञाहुति मे होम करें। स्वय को सुसस्कृत करें, व्यक्तित्व का सुनिर्माण करें पुन विश्व के मानवमात्र को अपना परिवार समझ अपने साथ लेते चलें, उस शान्ति मार्ग की शीतल दिशा मे, जहा अशान्ति का अस्तित्व नहीं। जीवन को अध्यात्ममय बनावें, वातावरण को ईश्वरमय करें।

आज देश जल रहा है। हिंसात्मक लपटें धधक रही हैं। चारो तरफ हाहाकार है, मानवता का करुण आर्त्तनाद है, कहीं सम्प्रदाय तो कहीं प्रान्तवाद है धर्म का ह्रास है, अधर्म का प्रसार है मनुष्य ही मनुष्य का कर रहा विनाश है। पर क्यो नहीं ? मनुष्य करता इसका अहसास है।

आज इस शुभ वेला पर हम, प्रत्येक जन, एक साथ शिवत्व (कल्याण प्रद) का अमृत पान करें, दानवत्व के उन्मूलन का प्रबल सूत्रपात करें, विश्व के हर मानव मे धर्म का प्रसार और अधर्म का ह्रास करें, सच्ची श्रद्धाजलि होगी यही ऋषि के प्रति।

—विश्वम्भर दयाल गुप्त मुद्रक-प्रकाशक 'आर्यमित्र' लखनऊ

से गुणो को भी पर्वत सदृश मानकर अपने हृदय मे सदा सतत प्रसन्न—ऐसे महात्मा, योगीजन ससार मे कितने हैं। अर्थात् विरले ही है।

ऋषिवर अस्तेय की मूर्ति

योगीराज दयानन्द के सत्सग मे लोक निन्दा, व्यक्तिगत चर्चा, परदोष वर्णन, जनवाद, गप्प-कहानी, भोगवाद, आदि कुछ भी नहीं होता था, केवल प्रभु गुण चर्चा, वेद-शास्त्रो के तत्त्व सिद्धान्त और आत्म सुधार व परोपकार की ही चर्चा होती थी। श्रोताओ मे उपस्थित जन भी धर्म-कर्म की ही चर्चा करते थे।

ऋषिवर अपनी प्रचार यात्रा के सम्बन्ध मे किसी को भी अपने आगमन और प्रस्थान की सूचना नहीं देते थे। यह दोनो प्रकार की क्रियाएं चुपचाप अकेले ही स्वय करते थे। उनकी कुटी मे जो कुछ भी वस्तु किसी की पड़ी होती उसे वह किसी को बिना सौंपे व बताये चल देते। 'मा गृध कस्यस्विद्धनम्' किसी का धन, पदार्थ, वस्तु, सामान आदि मत लो क्योकि इस पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है। उनके चरणो मे भक्त जन श्रद्धापूर्वक, स्वत प्रेरणा से, दक्षिणा, भेंट समर्पण रूप मे धन, आभूषण इत्यादि अनेक पदार्थ अर्पित कर जाते, पर, महाराज इन सब पदार्थ व द्रव्यो पर तनिक भी दृष्टि डाले अछूता छोड अपने योग मार्ग पर स्थिर रहते।

ऋषिवर मुक्त सग– सतत सेवा यात्रा

लगभग अढाई वर्ष तक गगा तीरवर्ती स्थानो पर तप पूत सतत यात्रा प्रचार के बाद ज्ञान रवि का प्रकाश जन-मात्र तक विस्तृत करते ऋषिवर सर्वथा मुक्त सग और निर्मोह भावना से विश्व सेवा मे समर्पित हो गया।

★

शिव को प्रणाम है बार–बार

प्रभु की रचना अति ही अपार ।
शिव को प्रणाम है बार–बार ।।

सारा ब्रह्माण्ड स्ववश रखता,
प्राणी उर मे प्रवास करता ।
जो एक प्रकृति से जग रचता,
उसको आत्मा से जो लखता ।
वह ही पाता है सुख अपार ।
प्रभु को प्रणाम है बार-बार ।।

आप नित्य चेतन स्वरूप है,
भक्ति कामना सुघर भूप है ।
जो हो सदा आपको अपनो,
कर साक्षात देखते धमनो ।
मिलती उनको है शान्ति अपार ।
प्रभु को प्रणाम है बार-बार ।।

हे एक सर्व शक्तिमान प्रभो,
है आप समान न और विभो ।
रवि चन्द्र अग्नि मे तव प्रकाश,
जग मे होता नित नव विकास ।
जिससे भूतल पर सुख अपार ।
प्रभु को प्रणाम है बार-बार ।।

आगे–पीछे – दाए – बाए,
ऊपर–नीचे–आपको पाये ।
नित्य स्वरूप जगत मे व्यापक,
सृष्टि सत्या के सस्थापक ।
यह सकल विश्व महिमा प्रसार ।
प्रभु को प्रणाम है बार–बार ।।

जो प्रभु को करता साक्षात्,
हटते जन्म मरण के घात ।
अमर हो रहे तुमको जान,
बनते दु ख भागी नादान ।
सास–सास की करुण पुकार ।
प्रभु को प्रणाम है बार–बार ।।

हाथ-पाव बिनु सबको गहते,
आख बिना सबको सम लखते ।
कान बिना सुनते व जानते,
पर तुमको कोई न जानते ।
तुम ही शक्तिमान भरतार ।
प्रभु को प्रणाम है बार-बार ।।

प्रभो सूक्ष्म से अधिक सूक्ष्म हो,
पर महान मे भी असूक्ष्म हो ।
शुचि निवास जीवात्मा सुन्दर,
दया हुई दर्शन पाये नर ।
अनुपम दयालु हो निर्विकार ।
प्रभु को प्रणाम है बार-बार ।।

त्रिविध रूप ससृति निर्मन्ता,
तुम मे सब ब्रह्माण्ड समाता ।
तुमको जान मनुज जब जाते,
सच्ची शान्ति तुम्हीं मे पाते ।
त्रय तापो का मिले न छार ।
प्रभु को प्रणाम है बार-बार ।।

जितने ऋषि मुनि योगाभ्यासी,
मृत्यु गले मे डाली फासी ।
अन्तस्तल मे देख लिया है,
अमृत का वरदान लिया है ।
त्वरित गये भवसागर पार ।
प्रभु को प्रणाम है बार-बार ।।

निराकार प्रभु रूप रहित हो,
विश्व वपु शुभ नाम सहित हो ।
देख नहीं सकती है आखें,
जिनके मन ही उर मे राखे ।
निर्मल हो जाते है गिवार ।
प्रभु को प्रणाम है बार-बार ।।

आप स्वयं सब काम है करते,
नही किसी का आश्रय लेते ।
कोई नही आप सम जग मे,
अद्भुत शक्ति उमडती उर मे ।
ज्ञान तथा बल कार्य अपार ।
प्रभु को प्रणाम है बार-बार ॥

दिव्य स्वरूप सभी मे व्यापक,
आप एक न्याय सत्यापक ।
चेतन शुद्ध स्वरूप निर्गुण हो,
सब के द्रष्टा अरु निरुग्ण हो ।
नित्य दे रहे हो फल चार।
प्रभु को प्रणाम है बार-बार ॥

जो जग सदा सर्वदा रहता,
उसके कारण सबके भर्ता ।
सुख स्वरूप मुक्ति के दाता,
परम ब्रह्म अरु बुद्धि प्रदाता ।
चेतन स्वरूप को नमस्कार ।
शिव को प्रणाम है बार-बार ॥

रक्षक आप हमारे स्वामी,
जग पालक हो अन्तर्यामी ।
जग कर्ता रक्षक सहर्ता,
श्रेष्ठ आप ही सबके भर्ता ।
सबमे बडे अचल अविकार ।
विभु को प्रणाम है बार-बार ॥

आप भयो मे भय भरते है,
भीषण को शकित करते है ।
सबकी गति है शुचिकर्ता है,
रक्षक के रक्षा करता है ।
राजाधिराज पर-पर अपार ।
शिव को प्रणाम है बार-बार ॥

हम स्मरण आपका करते,
आप एक को ही है भजते ।
भवसिधु बीचि रक्षक जहाज,
नरता भरिये मानव समाज ।
है आप स्वयं सबके आधार ।
प्रभु को प्रणाम है बार-बार ॥

कोई नही आपका पालक,
कोई नही आपका शासक ।
आप कारणो के भी कारण,
सभी लोक को करते धारण ।
हे पतियो के अधिपति अपार ।
प्रभु को प्रणाम है बार-बार ॥

महेश्वरो के भी हो महेश्वर,
देवो के भी हो देवेश्वर ।
माता - पिता बन्धु गुरु मेरे,
सखा तुम्ही धन विद्या मेरे ।
शतबार आज है नमस्कार ।
प्रभु को प्रणाम है बार-बार ॥

हे पूज्यनीय सर्वस्व हमारे,
दीन मनुजता आज पुकारे ।
प्रभो सभी सतपथ गामी हो,
जननि जनक के अनुगामी हो ।
हो नर–नारी के सत् विचार ।
है यही विभाकर की पुकार ।
शिव को प्रणाम है बार-बार ॥

—ओंकारसिंह आर्य 'विभाकर', उमरा, सुलतानपुर

विश्वजनीन सन्देश

(श्रीवत्स शास्त्री निगमालङ्कार एम० ए०, एम० फिल०
गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला-झाल मेरठ, उ० प्र०)

महर्षि दयानन्द को विद्वत्ता और उनके प्रभाव से बौखलाये हुए समाज के कुछ लोगो द्वारा एव छद्मवेश मे उनके अनुयायी बने कुछ विरोधियो द्वारा यत्र-तत्र बहुधा उनके ऊपर कुछ आरोप प्रत्यारोप लगाये जाते रहते है। रूढि परम्पराओ के कुवासनाओ के दुष्प्रभाव से कुण्ठा ग्रस्त मस्तिष्क वाले ये लोग सदैव अपने स्वार्थ एव छोटी सी बात को लेकर कीचड उछालने रह ते है। यह बात महर्षि दयानन्द के साथ हो नही, समाज के इस प्रकार का यह वर्ग विशेष प्राय सभी महापुरुषो के साथ यही करता रहा है।

सतत गतिशील ससार मे समाज का उत्थान और पतन निरन्तर होता हो रहता हे। अत्यन्त पतन की ओर अग्रसर समाज का वातावरण या भगवान् की प्रेरणा महापुरुष को जन्म देती है। महान् विभूतियो से युक्त ये दिव्य आत्माये, जिन्हे हम महापुरुष कहते है कभी भी समाज, राष्ट्र या विश्व के एक वर्ग विशेष के साथ सम्बन्धित नही होते उनका विशाल हृदय ससार को एक परिवार समझता है। वह मानव का ही नही जीवमात्र का कल्याण चाहता है। उसके दिव्य सन्देश सभी के लिये होते है। वह समाज का धारा को उत्थान की ओर मोड देना चाहता है। इस स्थिति को समाज के गतिशील प्रबुद्ध लोग समझ लेते है और स्वीकार कर तदनुसार चल पडते हे जिससे समाज का प्रवाह विपरीत दिशा को छोडकर कल्याणकारी दिशा की ओर बहने लगता है।

परन्तु समाज का कुण्ठा ग्रस्त वर्ग विशेष इस प्रगति का विरोध करता रहता है क्योकि वह अपनी धूर्तता से समाज को मूर्ख बनाकर अपने स्वार्थ मे लगा हुआ होता है। अपनी तुच्छ स्वार्थ सिद्धि मे व्याघात स्वरूप इस प्रगति के प्रवाह के थपेडो को सहन नहीं कर पाता और बौखलाहट से ग्रस्त हो जाता है। इस प्रकार का व्यक्ति जब इस प्रगति के प्रभाव और व्यापकता मे समाता है तब 'विष कुम्भ पयोमुखम्' बनकर इस प्रगति के जडो को काटना प्रारम्भ कर देना है। ऐसी स्थिति मे सत्यनिष्ठ सच्चे श्रद्धालु और तत्वज्ञ व्यक्ति यदि उस महापुरुष के साथ होते है तो वह प्रगति अव्याहत गति से चलती रहती है, अन्यथा थोडे ही अन्तराल मे वह विरोधियो या विरोधी अनुयायियो के माया जाल मे फँस जाती है। ऐसी स्थिति मे प्रगति के प्रवाह को बनाये रखने के लिये विशेष रूप से विरोधी अनुयायियो से समाज की रक्षा नितान्त आवश्यक हो जाती है।

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट उस प्राचीन वैदिक प्रवाह के साथ भी यह सब हो रहा है। महर्षि के क्रिया-कलापो, विचारो और साहित्यो के अध्ययन से यह बातें बिल्कुल स्पष्ट हे कि उनका उद्देश्य कितना महान् और व्यापक था। दश नियमो मे उन्होने स्पष्ट घोषणा की है कि—ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये" इत्यादि। दिल्ली मे सभी सम्प्रदायो के प्रचारको और समाज सुधारको की एक सभा मे 'सत्य आश्रित पर एक स्थिर और सर्वमान्य सिद्धान्त' अपनाने का उनका विचार कितना उत्तम और श्रेयस्कर था। यदि सभी लोग सहमत हो जाते और एक सूत्र मे बन्ध जाते तो समाज का कितना उत्थान होता। किन्तु इन लोगो ने महर्षि के कल्याणकारी प्रस्ताव को स्वीकार नही किया क्योकि इन लोगो का उद्देश्य ही कुछ और था। पुनरपि महर्षि ने महान् आत्माओ के अनुरूप समाज के उत्थान के लिये सतत सघर्ष किया।

ससार का कल्याण करना उनका एक मात्र ध्येय था। इसके लिये उन्होने आदर्श स्वरूप वैदिक सस्कृति को सामने रखा। वैदिक सस्कृति को सामने रखने का उनका एकमात्र उद्देश्य था कि यह मानवमात्र के अभ्युदय और निःश्रेयस की सस्कृति है। यह अभ्युदय और निःश्रेयस भी केवल शुद्ध वैदिक सस्कृति मे ही निहित है इसलिये उन्होने इसके दूषित आवरणो को हटा देना चाहा चाहे वह पुराण हो या कुरान, त्रिपिटक हो या बाइबिल। उनके सम्पूर्ण क्रिया-कलापो और

विचारधाराओ का केन्द्र विशुद्ध वैदिक संस्कृति सम्पन्न समाज का निर्माण था जो आदर्श रूप मे वैदिक समाज ही हो सकता है। उसके लिए एकेश्वरवाद का होना, सत्य और कल्याणकारी भावनाओ से ओतप्रोत सिद्धान्तो का होना आवश्यक था इसलिये उन्होने बहुदेवतावाद, अवतारवाद, प्रचलित श्राद्ध तर्पण की पद्धति, मूर्तिपूजा, बहुविवाह, बाल विवाह, अनमेल विवाह, जातिवाद, अस्पृश्यता आदि गलत सिद्धान्तो और कुरीरियो का खण्डन किया और त्रैतवाद, षड् दर्शन समन्वय, उचित और तर्कसंगत श्राद्ध तर्पण पद्धति पञ्चयज्ञ पद्धति, स्त्री शिक्षा विधवा विवाह, नियोग, विदेश यात्रा, वर्णाश्रम व्यवस्था, उचित वय मे विवाह आदि का समर्थन किया। इस अवस्था मे यदि किसी की पण्डागिरी या पण्डिताई, महन्तपने या आचार्यपने की बलि चढ़ती हो तो समाज को सहर्ष स्वीकार कर लेनी चाहिये थी किन्तु समाज के बागडोर सम्भाले इन तुच्छ स्वार्थियो मे निज उदर से अधिक सोचने समझने की क्षमता ही कहा हो सकती है।

यदि विश्व कल्याण की भावनाओ को थोडी देर के लिए छोड भी दें तो इस राष्ट्र के लिए भी उनका कितना बड़ा बलिदान था। सन् १८५७ की क्रान्ति मे गुप्त रूप से किया गया उनका कार्य अब प्रमाणित हो चुका है (आर्यसमाज का इतिहास–डा० सत्यकेतु) इस महान कार्य के अतिरिक्त जहा वे नगर नगर घूमघूम कर कुरीतियो को दूर कर रहे थे वहीं लोगो मे आध्यात्मिक भावनायें भी जगा रहे थे। देश की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक स्थितियो से व्यथित हृदय वाले महर्षि का अन्तस्तल क्रांतिकारी विचारो से ओतप्रोत हो उनको सारे देश का भ्रमण कराया। एक गरीब मा को अपने मृत शिशु के शरीर से कफन उठाते देख उनका हृदय रो पडा। इन सब विषम परिस्थितियो ने महर्षि को भारत की अन्तरात्मा समझने के लिए मजबूर कर दिया। उन्होने कारण रूप मे अनेक बुराइयो को सामने पाया और उन पर प्रहार करना आरम्भ कर दिया। इस समय उनके सामने दो लक्ष्य विशेष रूप से थे। एक बुराइयो को दूर कर भारतीय अन्तरात्मा को जगाकर वैदिक समाज का पुनर्निर्माण कर ससार के प्रत्येक प्राणी को अज्ञान अन्याय और अभाव से मुक्त कराना। दूसरा इसके साधन रूप मे भारत का एकच्छत्र स्वतन्त्र राष्ट्र का निर्माण करना इन दो उद्देश्यो की पूर्ति के लिए सर्वस्व समर्पित म० दयानन्द के क्रियाकलापो को देखें तो कुछ भी अस्वाभाविक नहीं लगता। खण्डन-मण्डन युक्त उनकी व्याख्यान शैली, सब इसी के हो अग थे। उनके खडनो को देखकर भले ही कुछ लोग उनको गाली दें परन्तु उन्होने किया वही सब जो उस समय करना चाहिए था। उन्होने जानबूझकर यह कठोर शैली अपनायी जिससे हिंदुओ के हृदय मे चोट लगे और वे जाग उठें।

अब विचार कीजिये राष्ट्र की एकता, अखण्डता और सत्यासत्य के विमर्श के समय जातिवाद, प्रान्तवाद, बहुदेवता वाद, अनेकेश्वरवाद, पाखण्डयुक्त कर्मकाण्ड, बाल विवाह, अनमेल विवाह, अस्पृश्यता, स्त्रियो की अशिक्षा, विदेशगमन निषेध, मूर्तिपूजा, ग्रहपूजा, पर्दा प्रथा आदि प्रपञ्च कितने निरर्थक, हानिप्रद और खोखले है। अद्वैतवाद, शास्त्रो मे परस्पर विरोध जनसामान्य के ऊपर क्या प्रभाव छोडते हैं। इसलिए स्वामी दयानन्द द्वारा स्वीकृत पूर्वोक्त सिद्धान्त हो उक्त उद्देश्य की पूर्ति मे समर्थ हो सकते है।

इसी प्रकार वेदादि शास्त्रो की एक पक्षीय अर्थ करने की परिपाटी, या कहे स्वार्थ प्रेरित व्याख्यायें भी इस माग मे व्यवधान थे जिन्हे साफ करना आवश्यक था। विद्वानो को तो चाहिये यही था कि सब मिलकर सत्यासत्य का निर्णय कर समाज को कल्याणकारी मार्ग की ओर प्रवृत्त कराते किन्तु उन्होने स्वामी दयानन्द के परामर्श को और उनके मार्ग को अपना अपमान और बाधक माना। फलस्वरूप आज भी करोडो की सख्या मे जनता इनके मायाजाल मे फसकर चक्कर काट रही है।

अतएव आज आवश्यकता और अवसर है सच्चाई स्वीकार करने का, ढोंग पाखण्ड को उखाड कर सच्ची मानवता अनुप्राणित विशुद्ध वैदिक धर्म और राष्ट्र के सस्थापना की, देश के उत्थान और अखण्डता की भावनाओ से ओतप्रोत सर्वस्व देश हितार्थ आहुत कर देने वाले वीर युवाओ की, शुद्धता और सदाचार को जीवन मे उतारे हुए श्रेष्ठ आप्त पुरुषो की, परिवार और देश के प्रति अपने कर्त्तव्यो को समझने वाली धर्म प्राण माताओ और बहनो की, प्रेम, उत्साह

महर्षि ने कहा था

(उद्धृतकर्ता—ब्र० देवेन्द्र स्वदेश बन्धु आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश लखनऊ)

जो ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय वेदादि विद्या के पढ़ने-पढ़ाने हारे, सुशील, सत्यवादी, परोपकार प्रिय पुरुषार्थी, उदार विद्या धर्म की निरन्तर उन्नति करने हारे धर्मात्मा शान्त निन्दा स्तुति में हर्ष शोक रहित निर्भय उत्साही योगी ज्ञानी सृष्टि क्रम वेदाज्ञा ईश्वर के गुण कर्म स्वभावानुकूल वर्तमान करने हारे, न्याय की रीति युक्त पक्षपात रहित सत्योपदेश और सत्य शास्त्रों के पढ़ने हारे के परीक्षक, किसी की लल्लो-पत्तो न करें प्रश्नों के यथार्थ समाधान कर्ता अपने आत्मा के तुल्य अन्य का भी सुख-दुःख हानि-लाभ समझने वाले, अविद्यादि क्लेश हठ दुराग्रहाऽभिमान रहित अमृत के समान अपमान और विष के समान मान को समझने वाले, सन्तोषी जो कोई प्रीति से जितना देवे उतने से ही प्रसन्न एक बार आपत्काल में मांगे भी न, देने व वर्जने पर भी दुःख, बुरी चेष्टा न करना वहाँ से झट लौट जाना उसकी निन्दा न करना सुखी पुरुषों के से मित्रता दुखियों के साथ करुणा, पुण्यात्माओं से आनन्द और पापियों से उपेक्षा—अर्थात रागद्वेष रहित रहना, सत्यमानी सत्यवादी, सत्कारी निष्कपट ईर्ष्या द्वेष रहित गंभीराशय, सत्पुरुष धर्म से युक्त और सर्वथा दुराचार से रहित अपने तन-मन-धन को परोपकार में लगाने वाले पराये सुख के लिये अपने प्राणों को भी समर्पित कर्ता इत्यादि शुभ लक्षणयुक्त सुपात्र होते हैं।

—सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ३५१ एकादश समु०—

उद्यम, और उत्सर्ग की भावनाओं से संदीप्त किशोरों और बालकों को।

आइये हम सब राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत होकर महर्षि दयानन्द जैसे महान् आप्त पुरुषों के पद चिन्हों पर चलकर अखण्ड वैदिक राष्ट्र एवं सुदृढ़ वैदिक समाज के निर्माण में लग जायें और सुख शान्ति के दिव्य सन्देशों को विश्व के कोने-कोने तक पहुंचा दें।

★ सब मनुष्य इस प्रकार इच्छा करें कि हम लोग मोक्ष सुख के लिए यथायोग्य सामर्थ्य के बल से परमेश्वर की सृष्टि में उपासना योग करके अपने आत्मा को शुद्ध करें कि जिससे अपने शुद्ध मन से परमेश्वर के प्रकाश रूप आनन्द को प्राप्त हों। —ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

★ मनुष्य जब मन को जीत लेता है तब इन्द्रियों का जीतना—अपने आप हो जाता है क्योंकि मन ही इन्द्रियों को चलाने वाला है। —ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

★ प्राणायाम पूर्वक उपासना करने से आत्मा के ज्ञान का आवरण अर्थात् ढाँपने वाला जो अज्ञान है, वह नित्य प्रति नष्ट होता जाता है, और ज्ञान का प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ता जाता है। —ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

★ पूर्ण ब्रह्मचर्य से विद्या पढ़के और सत्य धर्म के अनुष्ठान से राजा राज्य करने को और आचार्य विद्या पढ़ाने को समर्थ होता है। —ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

नारी समाज पर महर्षि दयानन्द का ऋण

★ ★

पराधीन भारत की भारतीय नारी की दुर्दशा अवर्णनीय है अब तो उसकी कल्पना भी भयावह होती है। तब वह सब स्वाभाविक सा था।

पुरुष प्रधान समाज में नारी का अपना कोई व्यक्तित्व ही नहीं बचा था। घर की झाड़ू बुहारू, रोटी पानी और पति की सही व गलत सभी बातों को मत्था टेक कर स्वीकार करना ही धर्म बन गया था। पढ़ाई लिखाई से उसका कोई वास्ता ही नहीं था। पुरुषों की हर तरह की हविस पूर्ण करने को वह विवश सी थी। बाल विवाह, वृद्ध विवाह, बहु विवाह के दोषों से नारी हर तरह प्रताड़ित थी। विधवाओं की संख्या दिन पर दिन बढ़ रही थी। दुर्गा जैसी सशक्त व्यक्तित्व वाली नारी जाति को अबला नाम से सम्बोधित किया जाता था। नारी को यह सब कुछ धर्म समझ कर सहज स्वभाव से स्वीकारना पड़ता था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस सबको देखा समझा और द्रवित हो गये हमारी दुर्दशा को देख कर और उन्होंने क्रांति का बिगुल बजाया। नारी उत्थान का नारा बुलन्द किया। उन्होंने 'स्त्री शूद्रौनाधीयताम' को नारी जाति के प्रति छल पूर्ण पुरुषों का प्रपंच बता कर उसका सर्वथा विरोध करके माता ही संतान का निर्माण करती है इस लिए उसके स्वयं निर्मित होने का, उसको पूर्ण अधिकार बताया। पर्दा प्रथा, पुरुषों का बहु विवाह, बाल व वृद्ध विवाह का घोर विरोध किया। नारी शिक्षा का प्रबल प्रचार किया। जगह-जगह आर्य कन्या पाठशालाएं खोली गयीं। दुखी विधवाओं के दुःख निवारणार्थ उन्हें दूसरा विवाह करने का अधिकार दिलाया। इस भांति नारी जाति की सर्वांगीण उन्नति के लिए उन्होंने जो अपना उद्घोष किया उसी के प्रतिफल स्वरूप नारी समाज में जागृति आयी। शिक्षा बढ़ी, बाल-वृद्ध विवाह रुके, विधवाओं की इच्छानुसार उनके भी विवाह को समाज ने मान्यता देना आरम्भ किया।

आज नारी विश्व के हर क्षेत्र में पुरुषों की बराबरी करने को सक्षम है। अपनी योग्यता के अनुरूप वह ऊँचे से ऊँचे पदों पर अधिष्ठित है।

राष्ट्र के निर्माण में नारी के महत्वपूर्ण योगदान को अब सबने एक मत से स्वीकार कर लिया है। परन्तु आज हम फिर अपना रास्ता भटकने लगी है। हम पर पाश्चात्य का प्रभाव बढ़ने लगा है। जिससे हम बाहरी तामझाम दिखावे अपने स्वार्थ के अधिकारों की लड़ाई में फंसने लगीं हैं। बच्चे तो राष्ट्र के आधार स्तम्भ हैं उनका निर्माण माता के द्वारा ही होता है। माता का गुण कर्म स्वभाव उसकी संतान पर मूल रूपेण पूरी तरह भर जाता है। आज की बच्चों की उच्छृंखलता उद्दण्डता, की विकृति का कारण हम पर पाश्चात्य का प्रभाव ही है। निश्चय ही हम अपने को महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट पथ पर चला कर, वेद मार्ग को अपना कर पाश्चात्य प्रवाह से अपने को बचा सकती है। विदुषी, चरित्रशीला, निर्भय, नारी ही समाज मे विद्वान् विदुषी, चरित्रवान् चरित्रवती व निर्भय सन्तानों का सृजन कर सकती है।

महर्षि दयानन्द के सतत प्रयास व प्रबल उद्घोष से हमने अपने स्वरूप को पहचानना आरम्भ किया था उनका हमारे ऊपर बहुत बड़ा ऋण है हम उसे उतार तो कभी नहीं सकती परन्तु प्रयत्न तो कर ही सकती है।

आइये आज के इस पवित्र पर्व पर हम संकल्प लें कि हम महर्षि दयानन्द के निर्दिष्ट वैदिक पथ पर स्वयं चलेंगी। अन्यों को प्रेरित करेंगी। अपना जीवन परम पवित्र बना कर संतानों का सुनिर्माण करेंगी और राष्ट्र के लिए समर्पित होकर वीर प्रताप, शिवा, राम-कृष्ण, दयानन्द, गांधी, जवाहर, रानी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, पद्मिनी, गार्गी, मैत्रेयी, मंदालसा सदृश सुयोग्य पुत्र पुत्रियां राष्ट्र को प्रदान करेंगी।

और अपने पवित्र जीवन से विश्व में नारी के गौरव को सम्वर्द्धित करेंगी।

—श्रीमती सन्तोष कपूर, एम० एस० सी०
उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

★ ★ ★

अतुलनीय महा पुरुष महर्षि दयानन्द

लेखक –पिशोरी लाल प्रेम
ददाहू (रेणुका) हिमांचल प्रदेश

संसार में समय-समय पर अनेक महापुरुष हुए है। मैं हृदय से सबका सम्मान करता हूं। ऐसे महापुरुष भी हुए जिन्होंने अपने हत्यारों को भी क्षमा कर दिया था। मैंने अधिकांश महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़े हैं। परन्तु किसी महापुरुष का ऐसा जीवन चरित्र न मैंने पढ़ा न सुना जिसने अपने हत्यारे को न केवल क्षमा किया, अपितु उसे बचाने के लिए अपने पास से धन देकर उसे किसी दूर देश में भागने के लिए विवश किया हो।

महर्षि को कई बार विष दिया गया, परन्तु वह योग क्रिया द्वारा विष को बाहर निकाल देते थे। एक बार एक हत्यारा पकड़ा गया, परन्तु महर्षि ने यह कर उसे मुक्त करा दिया कि मैं संसार को मुक्त कराने आया हूं बन्दी बनाने नहीं आया।

अन्तिम बार जोधपुर में महर्षि को जगन्नाथ ने अति-घातक विष दूध में मिला कर दे दिया। थोड़ी देर में उनके पेट में दर्द हुआ, तब उन्हें विष का संदेह हुआ। महर्षि ने जगन्नाथ को बुला कर पूछा। जगन्नाथ ने भयभीत होकर कांपते हुए अपना अपराध स्वीकार कर लिया और महर्षि के पांव पकड़ लिये। महर्षि ने उसे उठाया धैर्य दिया और कहा जो होना था वह हो चुका। मुझे अपनी मृत्यु की चिंता नहीं परन्तु मेरा वेद भाष्य का कार्य अधूरा रह जायेगा। महर्षि ने उसे बचाने के लिये कुछ धन देकर उसे कहा कि अब तू बहुत दूर कहीं भाग जा नहीं तो तेरा बचना कठिन है। वाह रे दयालु दयानन्द कितना विशाल हृदय था तुम्हारा क्यों न संसार के लोग श्रद्धा से आपके समक्ष सिर झुकाएं। क्या यह क्षमाशीलता दया और अहिंसा की पराकाष्ठा नहीं।

मनुष्यों के लिए तो देव दयानन्द, दया के अवतार थे ही किन्तु दयानन्द की दया तो पशुओं के लिए भी अतुलनीय थी। एक बार एक बैलगाड़ी दलदल में फंस गई। गाड़ीवान बैलों को जोर-जोर से मारता रहा। परन्तु बैल पूरी शक्ति लगा कर भी गाड़ी दलदल से न निकाल सके। यह दृश्य देख कर दयालु दयानन्द ने बैलों को गाड़ी से खुलवा दिया और स्वयं गाड़ी को खेंच कर दल दल से निकाल लाए।

महर्षि दयानन्द के वैदिक धर्म प्रचार और पाखंड के खंडन से उत्तेजित हो कर राव कर्ण सिंह तलवार निकाल कर महर्षि को मारने के लिए आगे बढ़े। महर्षि ने उनसे तलवार छीन कर दो टुकड़े कर दिये और ललकार कर कहा—यदि धर्म चर्चा करनी हो तो मुझसे करो। यदि लड़ना है तो किसी राजपूत से जा कर लड़ो, साधू से क्या लड़ना। कर्ण सिंह लज्जित हो कर चले गए।

सरदार विक्रम सिंह ने महर्षि के ब्रह्मचर्य के विषय में जानना चाहा। महर्षि उस समय मौन रहे। परन्तु जाते समय जब विक्रम सिंह अपने दो घोड़ों के रथ पर बैठ कर घोड़ों को हांकने लगे तो घोड़ों के पूरा जोर लगाने पर भी रथ अपने स्थान से न हिल सका। विक्रम सिंह ने पीछे मुड़ कर देखा तो आदित्य ब्रह्मचारी देव दयानन्द ने पीछे से रथ को पकड़ा हुआ था। विक्रम सिंह को प्रत्यक्ष प्रमाण मिल गया, वह महर्षि के समक्ष नतमस्तक हो गया।

कड़ाके की ठंड में महर्षि ने गंगा के किनारे केवल एक लंगोटी में कई रातें व्यतीत की। क्या जब तक ब्रह्मचर्य का तेज और बल न हो ऐसे कार्य हो सकते हैं?

महर्षि ने अनेक मतवादियों के मूल ग्रन्थों को पढ़ा। उनकी आलोचना तथा वैदिक धर्म की पुष्टि में सत्यार्थ प्रकाश आदि कई ग्रन्थ लिखे। ऋग्वेद का ७/८ भाग और सम्पूर्ण यजुर्वेद का भाष्य किया। स्थान-स्थान पर घूम कर वेद प्रचार किया। शास्त्रार्थ किये, व्याख्यान दिये, कईयों को पढ़ाया भी। अल्प समय में महर्षि ने अकेले इतना अधिक कार्य किया जिसको सैकड़ों मनुष्य मिल कर भी नहीं कर सकते। बुद्धि को आश्चर्य चकित करने वाले ऐसे अनुपम कार्य केवल एक आदित्य ब्रह्मचारी हो कर सकता है।

महर्षि का आत्मिक बल भी अतुलनीय था। एक ओर समस्त संसार, तथा एक ओर अकेला लंगोट बंद साधू जो पाखंड खंडनी पताका लहराते हुए कहता है। चाहे मुझे तोप के मुंह के आगे बांध कर रख दो, चाहे मेरी उंगलियों को

बत्तियां बना कर जला दो, परन्तु मैं सत्य धर्म प्रचार कभी नहीं छोड़ सकता। अन्तिम घातक विष से महर्षि के समस्त शरीर पर फोड़े निकल आए। डाक्टर आए देख कर आश्चर्य चकित रह गए। उंगलि मुंह में दबा ली। इतने भयानक कष्ट में कोई जीवित नहीं रह सकता। परन्तु इस भयानक कष्ट में भी गुरुवर दयानन्द शान्त चित थे। मुख मन्डल पर तेज तथा ओज बरस रहा था। महर्षि ने वेद मन्त्रों का उच्चारण किया "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" इतना कहा और इस नाशवान शरीर को त्याग कर परम पिता प्रभु की गोद में चले गए। महर्षि के अन्तिम समय के इन क्षणों मे उनके आत्मिक बल और ईश्वर के अटूट विश्वास को देख कर मुनिवर गुरुदत्त जो कि पक्के नास्तिक थे वह सच्चे आस्तिक बन गए। गुरुदत्त ने देखा इतने घोर कष्ट में, भयंकर पीड़ा में, मृत्यु सामने खड़ी हैं। फिर भी दयानन्द ईश्वर का चिन्तन करते हुए कहते हैं "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" अवश्य कोई शक्ति ऐसी है जिसे ईश्वर कहते हैं। मुनिवर गुरुदत्त उच्च कोटि के विद्वान तथा दार्शनिक तो थे ही केवल ईश्वर विश्वास की कमी थी। वह भी पूरी हो गई। मुनिवर गुरुदत्त के मन मे ईश्वर विश्वास की ज्योति जल उठी और उसमें उसकी सब शंकाए भस्म हो गई। दयानन्द का जीवन तो परोपकार के लिए था ही परन्तु उनकी मृत्यु ने भी गुरुदत्त को ईश्वर और वेदों का भक्त बना दिया।

महर्षि में अनेक गुण थे इनका वर्णन करना कठिन है। कहते हैं गुणों में एक दोष था। वह दोष यह था कि सब गुण एक मनुष्य में इकट्ठे नहीं हो सकते थे। परन्तु महर्षि दयानन्द में सब गुणों ने इकट्ठे हो कर अपने इस दोष को हटा दिया। तात्पर्य यह कि कोई भी गुण ऐसा नहीं है जो महर्षि में नहीं था। यथार्थ में महर्षि दयानन्द गुणों की खान थे।

गुरुकुल राऊर केला की रजत जयंती

गुरुकुल वैदिक आश्रम-वेद व्यास-राऊर केला ७६९०४१ (उड़ीसा) का रजत जयन्ती समारोह १९८७ दि० २६,२७ तथा २८ फरवरी एवं १ मार्च १९८७ को गुरुकुल भूमि में सम्पन्न होगा। जिसमें बड़े-बड़े विद्वान भाग लेंगे। रजत जयन्ति का उद्घाटन पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल मेरठ करेंगे।

आर्य जनता ईसाई बाहुल्य क्षेत्र में गुरुकुल की हीरक जयन्ति में अधिक से अधिक संख्या में भाग ले ऐसी प्रार्थना है।

—इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

क्यों हुआ ऋषि को बोध ?

क्यों हुआ ऋषि को बोध इस शिवरात्री को ?
क्या कर ली उसने शोध ! इस शिव रात्री को ?

पाँच हजार वर्षों से थे हम मार्ग सनातन भूल रहे,
वेद-शास्त्र-सद्ग्रन्थ त्याग कर, मनमानी सब ठूंस रहे।
स्मृति–मेधा–विवेक तज बन बैठे थे अभिमानी,
जिधर-जिधर नजरें जाती थीं भरे कपट मुनि विज्ञानी।

लुप्त पन्थ में राज मार्ग की आवश्यकता थी यात्री को।
इस लिए हुआ ऋषि बोध ! इस शिव रात्री को ॥

मंगल दायक परम पवित्र हम, जिसे समझ बैठे भगवान,
कर ली थी आराध्य मान कर, मृतिका-शिला-देव पहचान।
भांग धतूरा चरस चण्डू से 'भक्त' लगे थे हम बनने,
मूषक-श्वान भी विष्ठा मूत्र से थे अपवित्र लगे करने।
पता नहीं आपा-धापी मे क्या-क्या जाती भ्रान्ति हो ॥
इस लिये हुआ ऋषि बोध ! इस शिवरात्री को ॥

सायण-उव्वट-महिधर सब वेदार्थों मे भटकाते थे,
वाम मार्ग में फंसे परस्पर पग-पग गोते खाते थे।
शंखासुर ले गया 'श्रुति' को बाबा वाक्य प्रमाण बना,
क्या अपनायें और क्या छोड़े, सभी अन्न था जहर सना।
कदम-कदम पर लगा हुआ था ग्रहण संस्कृति शान्ति,को ॥
इस लिये हुआ ऋषि बोध।
थी कर ली उसने शोध !! इस शिव रात्री को ॥

कहीं कुरानी, कहीं पुराणी, कहीं जैनी, औ सत् साईं,
अर्थ धर्म को भ्रष्ट बनाते सभी हैं पड़ते दिखलाई।
मोक्ष काम से प्राप्त करो औ रजनीश लगे कहने,
मर्यादा की लक्ष्मण रेखा लांघ लगे सीता हरने।
व्यभिचार और बलात्कार में दिया समाज ने क्रांति को ॥
हो पुनः ऋषि सम बोध इस शिवरात्री को ॥

★ ★ ★

—सत्यदेव प्रसाद आर्य 'भक्त'
प्रेमनगर, नेमदारगंज
(नवादा–बिहार)

अमृत वर्षा

स्वामी दयानन्द की प्रार्थना

★

सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्य्यं करवावहै ।

तेजस्विना वधीतमस्तु । मा विद्विषावहै ।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्ति. ।।

(तैत्तिरीय आरण्यके । नवम प्रपाठके । प्रथमानुवाके)

हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर ! आपकी कृपा, रक्षा और सहाय से हम लोग परस्पर एक दूसरे की रक्षा करें और हम सब लोग परम प्रीति से मिल के सबसे उत्तम ऐश्वर्य अर्थात् चक्रवर्ती राज्य आदि सामग्री से आनन्द को आपके अनुग्रह से सदा भोगें ।

हे कृपानिधे ! आपके सहाय से हम लोग एक दूसरे के सामर्थ्य को पुरुषार्थ से सदा बढाते रहें, और हे प्रकाशमय सब विद्या देने वाले परमेश्वर ! आपके सामर्थ्य से ही हम लोगो का पढा और पढाया सब ससार मे प्रकाश को प्राप्त हो और हमारी विद्या सदा बढ़ती रहे ।

हे प्रीति के उत्पादक ! आप ऐसी कृपा कीजिये कि जिससे हम लोग परस्पर विरोध कभी न करें किन्तु एक दूसरे के मित्र होके सदा वर्तें ।

हे भगवन् ! आपकी करुणा से हम लोगो के तीन ताप–एक 'आध्यात्मिक' जो कि ज्वरादि रोगो से शरीर मे पीडा होता है, दूसरा 'आधिभौतिक' जो दूसरे प्राणियो से होता है और तीसरा 'आधि दैविक' जो कि मन और इन्द्रियो के विकार, अशुद्धि और चचलता से क्लेश होता है, इन तीनो तापो को आप शान्त अर्थात् निवारण कर दीजिये, जिससे हम लोग सुख से वेद भाष्य को यथावत् बना के सब मनुष्यो का उपकार करें । यही आपसे चाहते हैं, सो कृपा करके हम लोगो को सब दिनो के लिए सहाय कीजिये ।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

पञ्जीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
Regd No. L W/N P 79

वेद का—

❋ आत्म जागृति सूक्त ❋

अहश्च कृष्णमहरर्जुनं च वि वर्तेते रजसी वेद्याभिः ।
वैश्वानरो जायमानो न राजावातिरज्ज्योतिषाग्निस्तमांसि ।१
नाहं तन्तुं न वि जाना म्योतुं न यं वयन्ति समरेऽतमानाः ।
कस्य स्वित्पुत्र इह वक्त्वानि परो वदात्यवरेण पित्रा ।२
स इत्तन्तुं स वि जानात्योतुं स वक्त्वान्यृतुथा वदाति ।
य ईं चिकेतदमृतस्य गोपा अवश्चरन्परो अन्येन पश्यन् ।३
अयं होता प्रथमः पश्यतेममिदं ज्योतिरमृतं मर्त्येषु ।
अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तोऽमर्त्यस्तन्वा३ वर्धमानः ।४
ध्रुवं ज्योतिर्निहितं दृशये कं मनो जविष्ठं पतयत्स्वन्तः ।
विश्वे देवाः समनसः सकेता एकं क्रतुमभि वि यन्ति साधु ।५
वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्वी३दं ज्योति हृदय आहितं यत् ।
वि मे मनश्चरति दूर आधीः किं स्विद्वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये ।६
विश्वे देवा अनमस्यन्भियानास्त्वामग्ने तमसि तस्थिवांसम् ।
वैश्वानरो ऽ वतूतये नो ऽमर्त्यो ऽवतूतये नः ।७

[ऋषि भरद्वाजो बार्हस्पत्य ॥ देवता—वैश्वानर] (ऋग्वेद ६

संक्षिप्त मन्त्रार्थ—

१–कृष्ण और श्वेत दिवस ज्ञातव्य घटनाओं सहित द्यौ और पृथिवी में घूमते रहते हैं। राजा के समान प्रकट होकर वैश्वानर अग्नि अर्थात् सूर्यवत् आत्मा ज्योति से तिमिर को छिन्न भिन्न कर देता है।

२–न मैं ताने को जानता हूं न बाने को। संघर्ष में गतिशील ज्ञान सम्पन्न तानाबाना बुनने वाले जिसे बुनते हैं, नहीं जानता। यहां इस विश्व में भला किसका पुत्र है जो पिता को अवर कर वक्तव्य कह सकता है।

३–वह ही इस ताने को जानता है वही बाने को जानता है। वही ऋतु ऋतु में वक्तव्यों को कहता है। जो अमरता का संरक्षक एक ओर अवर होकर तथा दूसरी ओर पर होकर देखता हुआ इन सब को जानता है।

४–यह प्रमुख होता है इसे देखो। मरणशीलों के भीतर यह अमर ज्योति है। इस अमरण शील ने जन्म लिया है, शरीर में स्थिर हो गया है और तत्व का विकास हो रहा है।

५–ध्रुव ज्योति से युक्त मन निहित है। गतिवान पदार्थों में सबसे अधिक गतियुक्त है। देखने के लिए समस्त देव गण मन के साथ सज्ञान होकर सरलता में एक क्रतु को आगे ले जाते हैं।

६–मेरे कान इधर उधर भटक रहे हैं। नेत्र इधर उधर भाग रहे हैं। यह ज्योति भी जो हृदय में विहित है इधर उधर भटक रही है। मेरा मन बहुत दूर विचरण कर रहा है। भला मैं क्या विशेष बोल सकूंगा, क्या चिन्तन कर सकूंगा।

७–हे आत्मन ! तुझे अन्धकार में स्थित देखकर समस्त देव भयाकुल हो, विनम्र होकर पुकार रहे हैं। सर्वनाशक हमें रक्षार्थ प्राप्त हो जाए।

[उपरोक्त सूक्तियों का ऋषि बोध पर्व पर मनन करें, चिन्तन करें और आत्म ज्ञान की उपलब्धि करें ताकि जीवन कल्याणकारी बने]

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ | घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८१

फाल्गुन शुक्ल २, रविवार, संवत् २०४३ वि०, दिनांक १ मार्च १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड
एक प्रति	६० पैसे

वर्ष ६०

अङ्क ९

प्रभु की अमृत वाणी—

राष्ट्र की रक्षा और शोभा शक्ति में है। आर्यों ने सदैव शक्ति की उपासना की है।

बलं धेहि तनूषु नो बलमिन्द्रानडुत्सु नः।
बलं तोकाय तनयाय जीवसे त्वं हि बलदा असि॥

[ऋषिः विश्वामित्र, देवता—इन्द्रः] [ऋ० ३-५३-१८]

आज सम्पूर्ण भारत में जब देशवासियो के दुबले पतले, पिचके हुए गालों और भीतर धंसे हुए नेत्रों से युक्त युवा शरीरों का सर्वत्र दर्शन होता है तो ऐसा अनुभूत होता है कि यह शारीरिक स्थिति, शुष्क ठठरियां हमारे लिये घोर लज्जाजनक हैं। व्यसन और विलास की वृत्तियों ने आज देशवासियों को भीतर से खोखला कर दिया है। इन दीमकों ने युवा शक्ति को भ्रष्ट ओर नष्ट कर दिया है।

राष्ट्र के इस कलंक को केवल आर्य ही दूर कर सकते हैं क्योंकि आर्यों ने सदैव शक्ति की उपासना की है। आर्यों ने वेदानुकूल जीवन पद्धति को अपना कर इस सत्य का परिचय दिया है कि राष्ट्र की रक्षा और शोभा शक्ति में ही केन्द्रित रहती है। व्यक्तिगत जीवन में सशक्त होकर राष्ट्रीय नायकों ने भी सदैव शक्ति का वर्धन ही अपना पुनीत कर्तव्य माना है। यह नितान्त सत्य है कि जब तक शासन और शासित वर्ग, दोनों ही इस सत्य का साक्षात्कार कर, शक्ति के उपासक नहीं बनते तब तक राष्ट्र की समस्याओ का समाधान नहीं हो सकता।

प्रस्तुत मन्त्र में राष्ट्र के अधिपति को सम्बोधित करके कहा गया है—

(इन्द्रः!) हे इन्द्रियों के स्वामी! राष्ट्र की सकल इन्द्रियों अर्थात् सम्पत्तियों तथा सन्ततियों के अधिपति! शत्रुओं को परास्त करने की क्षमता रखने वाले बलशाली नायक!!!

(बलं धेहि तनूषु नः) हमारे शरीरों में शक्ति की स्थापना करो (बलं अनडुत्सु नः) हमारे वाहनों को बलिशाली करो (बलं तोकाय तनयाय जीवसे)हमारी संततियों को सशक्त करो (त्वं हि बलदा असि) तू ही बलदाता है।

यथा राजा तथा प्रजा। जैसा अधिपति होगा वैसी ही उसकी प्रजा होगी। व्यक्ति विशेष के प्रयास उतने सफल नहीं होते, जितने कि राष्ट्र नायक की राष्ट्र व्यापी सुव्यवस्था से वे सुसम्पन्न होते हैं।

अब भी समय है कि हमारे राष्ट्र के नेता चेतें और पश्चिम का अन्धानुकरण त्याग कर राष्ट्र में व्यापक हिंसावृत्ति की रोकथाम के लिए, राष्ट्रवासियों के जीवनों को सशक्त बनायें। फैशन, विलास, दुराचार के समस्त साधनों को समाप्त कर, राष्ट्र में एक नवक्रान्ति लायें। वैज्ञानिक उपकरणों यथा सिनेमा, वीडियो, दूरदर्शन आदि का प्रयोग जीवन को पतित करने के लिए नहीं, अपितु ऊंचा उठाने के लिए करें। संतति निरोध के लिये कृत्रिम उपायों का आश्रय लेकर चरित्र को भ्रष्ट करने के स्थान पर ब्रह्मचर्य और संयम को बढ़ावा दें क्योंकि राष्ट्र की शोभा और रक्षा शक्ति में ही अन्तर्निहित रहती है।

आर्यो! उठो!! सशक्त बनो स्वयं
और राष्ट्र को बलशाली बनाओ।
जो हो रहे हैं अज्ञान से भ्रमित
उन्हें वेद के दिव्य संदेश सुनाओ॥

सुपथ गामी बनकर चलो सुपथ पर
राष्ट्र को शक्ति के चमत्कार दिखाओ।
विश्व झुकता है 'वसन्त' शक्ति से
आज सशक्त होकर उसे झुकाओ॥

—वसन्त

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार १ मार्च १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

संस्कृत के विना सुसंस्कृति नहीं

विश्व की प्राचीनतम भाषा संस्कृति ही है। इसे केवल भारत ही नहीं विश्व के प्रत्येक विद्वान् मनीषियों ने एक स्वर से स्वीकारा है। समस्त भाषाओं का उद्गम भी संस्कृत ही है यह सर्वमान्य सिद्धान्त है। भारतीय संस्कृति पर अनेकशः आक्रमण हुए परन्तु वह नष्ट न हुयी। सबको अपनी गोद में लेती गयी। केवल इस लिए कि हमारी संस्कृति का मूलाधार संस्कृत है। संस्कृत वाङमय मे ही घृणा, द्वेष, ईर्ष्या परिग्रह को त्याज्य-प्रेम—स्नेह निष्कपटता व अपरिग्रह को ग्राह्य माना गया है। वेद की भाषा संस्कृत है। जिसमें सृष्टि के लिए सम्पूर्ण पूर्ण ज्ञान देकर परम पिता परमेश्वर ने विश्व के सभी प्राणियों मे सुख, समृद्धि शान्ति ऐश्वर्य बिखेरने, संवारने का आदेश दिया है। कहीं पर भी कहीं किसी व्यक्ति या वर्ग के लिए कोई बात पक्षपात् पूर्ण नहीं कही गयी है।

हमारे सम्पूर्ण संस्कारों गर्भाधान से अन्त्येष्टि पर्यन्त-सभी में संस्कृत भाषा में ही उपदेश व आदेश दिये जाते है। संकल्प व आशीर्वाद के वाक्य भी संस्कृत में ही होते हैं। बिना संस्कृत के तो संस्कार करना असम्भव सा लगता है।

पराधीनता के युग में अंग्रेजों ने अपने वैभव के विस्तार के लिए संस्कृत की उपेक्षा करके अंग्रेजी का प्रचार प्रसार बड़ी ही तल्लीनता से करना आरम्भ कर दिया था। संस्कृत की सर्वथा उपेक्षा उन्होंने की परन्तु फिर भी वे उसे नष्ट नहीं कर सके चूंकि संस्कृत भारत के कण-कण में समाहित थी।

स्वाधीनता के बाद हमारी स्वदेशी सरकार ने संस्कृत के प्रचार-प्रसार पठन-पाठन की उपादेयता समझी। काफी कुछ उसकी समृद्धि हेतु योजनायें बनायी गयीं। अनेकों शोध संस्थान भी खोले गये। लाखों रुपये इसकी समृद्धि में व्यय किये जाते है। अत्यधिक तोष होता था यह सोच कर कि आज नहीं तो कल सही निश्चय ही गीर्वाणी संस्कृत के सर्वतोमुखी प्रसार से हमारा देश समृद्ध हो कर एकत्व की रज्जु में सम्पूर्ण विश्व को बांध सकेगा। परमात्मा की सृष्टि में एक बार फिर वह आनन्द के दिन लौट आयेंगे जब सब एक दूसरे के लिए जियेंगे। एक दूसरे के लिए मरेंगे। सब में बिना भेदभाव के अनन्य प्यार होगा। सबमें साम्य होगा। कोई भी ऊँच-नीच का भेद नहीं रहेगा। सभी परमात्मा के अमृत पुत्र-पुत्री अपनी-अपनी आन्तरिक पवित्रता से पवित्र होकर सम्पूर्ण विश्व को पवित्र और आनन्दित बनायेंगे।

देश में पाश्चात्य प्रवाह से प्रभावित शिक्षा पद्धति से अकर्मण्यता का समावेश देख कर देश के कर्णधारों ने ऐसी शिक्षा पद्धति निर्मित करने की आवश्यकता अनुभव की जिसमें शिक्षित होकर प्रत्येक बालक और बालिका स्वावलम्बी आत्म निर्भर बन कर देश को समृद्ध बनाने में योगदायी बन सके। परन्तु दुर्भाग्य ही कहा जायेगा जिन हाथों में नयी शिक्षा पद्धति की रूपरेखा सुनिश्चित करने का भार सौंपा गया उन्होंने भारतीय दर्शन, भारतीय साहित्य, वैदिक वाङ्मय को देखने समझने की आवश्यकता ही अनुभव नहीं की। पाश्चात्य दर्शन ही उनका प्रेरणा स्रोत बना। पाश्चात्य दर्शन में ही वे वह मार्ग, वह दिशा ढूंढने लगे जिससे योजना क्रियान्वित हो सके। परिणामतः उन्होंने नई शिक्षा पद्धति में संस्कृत के पठन-पाठन को स्थान देना शायद आवश्यक नहीं समझा। अब जो नई शिक्षा पद्धति स्वीकार की गयी है उसमें संस्कृत को तिलांजलि सी दे दी गयी है। यह योजना निश्चित रूपेण भारतीय संस्कृति व सभ्यता को पूर्णतया नष्ट करने वाली होगी।

आज विश्व के प्रत्येक देश ने संस्कृत की उपादेयता को स्वीकारा है। इसी लिए सभी देशों में संस्कृत के पठन-पाठन की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। वहां संस्कृत के अधिक से अधिक विद्वान् तैयार हो रहे हैं। विदेशों में जब संस्कृत की परम उपयोगिता सर्वात्मना स्वीकार की जा रही है तब अपने देश में उसकी इस प्रकार उपेक्षा की जा रही है उसे माध्यमिक पाठ्यक्रम में कोई स्थान ही नहीं दिया जा रहा। निश्चय ही इसके मूल में कोई वे तत्व क्रियाशील हैं जिन्हें भारत की समृद्धि से कुछ लेना देना नहीं। उनका उद्देश्य लार्ड मैकाले की योजना का भारत बनाने में सतत योगदेना ही है।

ऐसी संकटापन्न अवस्था में मै भारत सरकार के समादरणीय राष्ट्रपति एवं प्रधानमन्त्री जी एवं मानव संसाधन मन्त्री जी से विनम्र अनुरोध करूंगा कि वे समय रहते इस पर दृष्टि निक्षेप करें, सोचें-विचार करें, नई शिक्षा नीति लागू करने से पहले उसका पुनरीक्षण करें और देश की समृद्धि के लिए संस्कृत की अनिवार्यता को स्वीकार करके संस्कृत भाषा को उसके यथोचित स्थान पर प्रतिष्ठापित करायें। नई शिक्षा पद्धति में संस्कृत की शिक्षा अनिवार्य करें। बिना संस्कृत भाषा के भारत की संस्कृति नष्ट हो जायेगी यह सत्य स्वीकार करें। जिस देश की संस्कृति नष्ट हो जाती है उसका सर्वस्व लुट जाता है। वह देश नष्ट हो जाता है। अतः देश को विनाश से बचायें। देश की संस्कृति को बचायें। संस्कृत के पठन-पाठन को प्राथमिक कक्षाओं से ही अनिवार्य घोषित करें।

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

धर्मवीर हकीकतराय बलिदान—दिवस

देहरादून, ५ फरवरी। धर्मवीर हकीकतराय के बलिदान का स्मृत समारोह इस जनपद के विभिन्न स्थानों पर १ फरवरी से १५ फरवरी १९८७ तक मनाया गया।

इस क्रम की प्रथम सभा, गत रविवार को भोगपुर ग्राम में हुई जिसमें यज्ञ के अनन्तर श्री हीरालाल वर्मा ने कविता पाठ किया। मुख्य वक्ता जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान पं० देवदत्त बाली पत्रकार ने अपने भाषण में हकीकतराय के साथ-साथ छत्रपति शिवाजी के सुपुत्र सम्भाजी, गुरु तेगबहादुर जी, भाई मतिदास जी, गुरु गोविन्द सिंह जी के सुपुत्रों तथा वीर वैरागी आदि बलिदानियों का भी विशेष रूप से स्मरण किया। विदेशी आक्रमणों के समय अपने सतीत्व की रक्षा हेतु आत्माहुति देने वाली वीर ललनाओं को भी आपने प्रगाढ़ श्रद्धांजलि दी। आपने कहा कि ऐसे बलिदानियों के प्रताप से ही संस्कृति का दीपक जलता रह पाया है। इनका पुण्य स्मरण हमारा पावन कर्तव्य है।

सभा के अन्त में एक प्रस्ताव पारित कर शासन से मांग की गई कि राम-जन्म स्थान को बलात् हथियाने की धमकियां देने वालों को कड़ाई से दबा दें।

देश दर्शन

(ई)साई मिशनरियों के काले कारनामे

[श्री विशनस्वरूप गोयल, ३३१४, बैंक स्ट्रीट, करोल बाग, नयी दिल्ली]

हमारे देश मे आज अग्रेजो के शासनकाल को समाप्त हो जाने के ४० साल बाद भी अग्रेजी शासन काल से भी अधिक ईसाई मिशनरीज सक्रिय रूप से हमारे हिन्दू समाज के धर्मान्तरण के कार्य मे सक्रियता से जुटे हुए हैं। ये मिशनरीज दूरस्थ स्थानो पर बसे हमारे हिन्दू समाज के अभिन्न अग गिरिवासी, वनवासी, आदि वासी, अनुसूचित जाति तथा हरिजन बन्धुओ की गरीबी, पिछडेपन और उनके अनपढ होने के नाते उन्हे प्रलोभन के बल पर उनका धर्मान्तिरण कर उन्हे ईसाइयत मे मिला लेते हैं। इस काम के लिए इन मिशनरीज को प्रति वर्ष लगभग ४० करोड रुपये ईसाई देशो से आते है जिनकी हमारी सरकार को पूरी जानकारी है और वह यह भी जानती है कि यह सारा धन हिन्दुओ को ईसाई बनाने पर ही व्यय किया जा रहा है। हमारी सरकार इस प्रकार के विदेशी धन के आने और उसे इस प्रकार किसी एक मत का प्रचार अन्य मतो के परिवर्तन कर ईसाई बनाने पर प्रतिबन्ध लगाने के स्थान पर उन्हे और सहयोग प्रदान कर रही है।

इसी प्रकार हमारी सरकार ने जिस प्रकार मदर टैरेसा को यहा मानवता की सेवा का प्रतीक मानकर उन्हे हर प्रकार की सुविधायें, अनुदान तथा उपाधियो से विभूषित किया है वह भी यहा एक प्रकार से ईसाई मत के प्रचार और प्रसार मे सहयोग देना ही कहा जा सकता है क्या कभी हमारे राजनेताओ ने मदर टैरेसा द्वारा चलाये जा रहे यहा के अनाथ आश्रमो को इस दृष्टि से देखने का प्रयास किया है कि इन आश्रमो मे कहीं ईसाईयत का प्रचार तो नहीं हो रहा है। ये लोग तो वहा जाते हैं स्वागत कराया, हार पहने और चले आये। इन्होने कभी भी इस ओर ध्यान नहीं दिया है। मुझे मदर टैरेसा द्वारा सचालित कई अनाथ आश्रमो को देखने का अवसर मिला है और मैने उन्हे उसी दृष्टि से देखा है कि इन आश्रमो मे कोई देश विरोधी गतिविधिया तो नहीं चलायी जा रहीं। इन्हे देखने के बाद मै पूर्ण विश्वास के साथ यह कह सकता हू कि इन आश्रमो मे पलने वाले और रहने वाले लोगो को पूरी तरह ईसाइयत की ही शिक्षा दी जा रही है और बडे होकर जब ये यहा से निकलेंगे तो न केवल ईसाई होगे अपितु व ईसाई मत के कट्टरपन्थी प्रचारक बनेंगे।

जहा तक ईसाई पादरियो और मिशनो की बात है वैसे तो उन्हे 'फादर' कहा जाता है और वे भी हमारे यहा मानवीय सेवा के प्रतीक माने जाते है। किन्तु इन दिनो इन के कुछ काले और शर्मनाक कारनामे सामने आये है जो आखें चौंका देने वाले है। अब ये ईसाई मिशनरियाँ यह भी समझ गयी है कि हमारी सरकार डण्डे की भाषा ही समझती है। सिखो ने डण्डा उठाया उनसे डर गयी और उनकी बातें मान ली। मुसलमानो ने डण्डा उठाया उनकी बातें मान ली गयीं। हिन्दू डण्डा नहीं उठाता उसकी बात नहीं मानी जाती। इस कारण अब ईसाई मिशनरीज ने भी मुसलमानो की तरह ही आक्रान्ता व्यवहार अपनाना आरम्भ कर दिया है।

विवेकानन्द शिला स्मारक पर ईसाइयो की गिद्ध दृष्टि

कन्याकुमारी जहा हमारा स्वामी विवेकानन्द शिला स्मारक नामक तीर्थ स्थल है और जहा स्वामी विवेकानन्द को ज्ञान प्राप्त हुआ था वहा ईसाई मिशनरीज ने बडी तेजी से धर्मान्तिरण का कार्य सक्रिय रूप से चलाया हुआ है। वहा के रहने वाले सभी मछेरो को धन का प्रलोभन तथा अन्य सुविधायें प्रदान कर ईसाई बना लिया गया है। इन मछेरो से यहा तक भी कहा गया है कि जा तीर्थ यात्री शिला स्मारक देखने के लिए जाते है उन्हे जो मल्लाह नाव मे बैठाकर ले जाते है उन्हे मारो, धमकाओ और इस बात के लिए मजबूर कर दो कि वे उन नावो को चलाना छोडकर ईसाई बन जायें। वहा पर ऐसा ही किया जा रहा है जो एक प्रकार से हमारे इस महान तीर्थ स्थान पर एक भयकर आक्रमण ही है। यही नहीं वहा के मन्दिर का पुजारी जो एक अनुष्ठान करने की योजना बना रहा था उसका तथा उसके अन्य दो साथियो का ईसाइयो ने अपहरण करा लिया और आज तक उनका पता नहीं है। ऐसी आशा है कि उनकी हत्या कर उनके शवो को समुद्र मे फेंक दिया गया है। अब यह खोज तामिलनाडु सरकार को करनी चाहिये कि इन तीनो लोगो को कहा ले जाया गया।

श्री रामेश्वरम टापू को ईसाई होमलैण्ड बनाने की योजना

श्री रामेश्वरम टापू दक्षिण मे मुख्य भूमि से दूर सागर मे तैरता हुआ १२ मील लम्बा और पाच मील चौडा एक टापू है। यहा रामेश्वरम का मंदिर भी बना हुआ है जिसके दर्शन करने प्रतिदिन लगभग पाच हजार लोग यहा आते है। किन्तु ईसाई मिशनरिया इस स्थान को पूरी तरह ईसाई होम लैण्ड बनाने के लिए जी-जान से जुटी हुई है और अब इसके आस्तित्व को ही समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

(क्रमश)

आवश्यक सूचना

श्री रामचन्द्र शर्मा 'सगीत-विशारद" मधुर गायक, को जो ३।५ म।जें अपने उत्सव आदि पर बुलाना चाहे नीचे लिखे पते पर पत्र-व्यवहार करें।

पता—
श्री रामचन्द्र शर्मा सगीत 'विशारद'
स्थान पो० रुस्तमपुर न्यावली,
वाया सम्भल
मुरादाबाद (उ० प्र०)

नि:श्रेयस सिद्ध हेतु आर्य यति, मुनि, वानप्रस्थियों को नि:शुल्क सुविधा

नि श्रेयस प्राप्ति के जिज्ञासु एव साधको को सुविधा हेतु परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्वावधान मे गत रक्षा बन्धन पर्व से ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर (राज०) मे आर्य्य वानप्रस्थाश्रम की स्थापना हो गई। यह आश्रम आना सागर के तट पर स्थित है। स्थान अति रमणीक व शान्त और साधना योग्य है। आवास, पानी व बिजली आदि की सब सुविधा नि शुल्क है। आर्य यति महानुभावो को भोजन व्यवस्था भी नि शुल्क है। समर्थ साधको को अपना भोजन व्यय स्वय वहन करना होगा।

आश्रम मे प्रवेश के जिज्ञासु बन्धु, सभा मन्त्री अथवा व्यवस्थापक आश्रम से सम्पर्क करें।

मन्त्री,
परोपकारिणी सभा,
अजमेर

शिवमुनि वानप्रस्थ,
व्यवस्थापक
आर्य वानप्रस्था आश्रम
ऋषि उद्यान,
पुष्कर रोड, अजमे

भारतीय दर्शन को प्रासंगिकता

–श्री डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी,
स्वामी केशवानन्द योग संस्थान ८/३ रूप नगर, दिल्ली–७

* *

[गतांक से आगे]



वेदान्त दर्शन, जिसे उत्तर मीमांसा भी कहते है, में ब्रह्म की जिज्ञासा की गयी है, [अथातो ब्रह्म जिज्ञासा । १/१/१] और उस जिज्ञासा का समाधान किया गया है। ब्रह्म की जिज्ञासा का प्रयोजन आनन्द की प्राप्ति ही है। यह आनन्द सब दुःखों से रहित भावात्मक उपलब्धि है। जैसा कि बृहदारण्यक और तैत्तिरीय उपनिषदों में स्पष्ट स्वीकार किया गया है 'विज्ञानम् आनन्दं ब्रह्म [बृहदा० ३/९/२८] आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात् आनन्दाद्धि इमानि भूतानि जायन्त, आनन्देन जातानि जीवन्ति आनन्देन प्रयन्ति' [तै० ३/६/१] अर्थात् आनन्द ब्रह्म स्वरूप है वह आनन्द स्वरूप ब्रह्म ही समस्त प्राणियों की उत्पत्ति स्थिति और लय का कारण है। तात्पर्य यह कि परमशक्ति स्वरूप तत्व जिससे सृष्टि की उत्पत्ति आदि होती है वह नित्य आनन्द रूप है। छान्दोग्य उपनिषद में दूसरी भाषा का प्रयोग करते हुए 'उस आनन्द स्वरूप ब्रह्म को प्राप्त करना चाहिए' यही कहा गया है। 'यो वै भूमा तत्सुखम् नाल्पे सुखमस्ति, भूमैव सुखं भूमात्वेव विजिज्ञासितव्य:' (छा० ७/२३/१) अर्थात् जो भूमा है वही सुख है, अल्प में परिच्छिन्न में सुख नहीं है इस लिए भूमा को ही जानना चाहिए। भूमा के स्वरूप के परिचय के लिये उपनिषद् कार ने यहीं भूमा से विपरीतार्थक 'अल्प' शब्द का प्रयोग किया है, जहां भूमा से विपरीत स्थिति है, सुख का अभाव है। अल्प शब्द का अर्थ 'थोड़ा' 'परिच्छिन्न' आदि सुविदित है, अत: उसके विपरीत भूमा शब्द का अर्थ 'अधिक' 'अपरिच्छिन्न अथवा 'अनन्त' करना उचित होगा। भूमा पद के इस अनन्त अपरिच्छिन्न अर्थ की पुष्टि 'यत्र नान्यत्पश्यति नान्यच्छृणोति नान्यद् विजानाति' स भूमा' [छा० ७/२४/१] इस छान्दोग्य वाक्य से भी होती है। क्योंकि अपरिच्छिन्न पदार्थ ब्रह्म ही है जिससे बाहर कुछ भी देखा सुना नहीं जा जाता है अतः भूमा पद से ब्रह्म अर्थ समझना अनुचित नहीं है।

व्यवहार अथवा साधना की दृष्टि से वेदान्त जीव और ब्रह्म के अभेद बोध का उपदेश देता है। यह अभेद बोध चाहे 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि, नेहनानास्ति किञ्चन आदि महावाक्यों के अर्थ की भावना के द्वारा आचार्य शंकर के अनुसार अद्वैत भावना रूप किया जाए अथवा रामानुज के अनुसार जीव और ब्रह्म के बीच शरीर शरीरी भाव की भावना के द्वारा हो, जब साधक के मानस में पूर्ण अभेद बोध अथवा अंगागि भाव की प्रतिष्ठा हो जाती है तब उसका अल्पता और परिच्छिन्न भाव जो कि अविद्या के कारण उत्पन्न हुआ था, छूट जाता है और जीव के रूप में संसार में रहते हुए अपने भूमात्व का, अपनी अपरिच्छिन्नता का वह अनुभव करता है। उसे अपने पन और परायेपन की संकीर्णता कभी नहीं घेरती, जिसका परिणाम होता है कि अविद्या जनित अस्मिता से उत्पन्न राग और द्वेष मिट जाते हैं उसके सभी क्लेश मिट जाते हैं, वह पूर्ण आनन्द का अनुभव करता है।

इसी रहस्य को यजुर्वेद के चालिसवें अध्याय एवं ईशावास्योपनिषदमें–

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मान्येवानुपश्यति'
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥[६]
यस्मिन्न सर्वाणि भूतानि आत्मैवा भूद विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः ॥[७]

वाक्यों द्वारा एक स्वर से, समान शब्दों में ही स्वीकार किया है।

वेदान्त की उपर्युक्त भावना अथवा तत्वज्ञान किसी काल विशेष में ही प्रासंगिक नही है, सर्वकाल में सभी देश में प्रासंगिक है।

उपर्युक्त अभेद बुद्धि केवल आदर्श अथवा कल्पना मात्र को वस्तु नहीं है परम प्रभु ने इस अभेद भावना को सहज बुद्धि के रूप में प्रत्येक प्राणी में उत्पन्न किया है, शरीर के सक्षम होते ही यौवन के प्रवेश के बाद ही प्रदान किया है। आप हम सभी ने उसका अनुभव किया है, सहज प्रवृत्ति के रूप में अनुभव किया है अथवा करते हैं– अपने प्रेमी अथवा प्रेमिका के साथ, अपने पति अथवा पत्नी के साथ अपने पुत्र के साथ, मै विश्वास के साथ कहता हूं यदि आप कदाचित इस भावना को भूल गये हैं तो अपने स्मृति के पुराने पन्ने को पलट कर देखें अवश्य स्मरण हो आयेगा। इसी सहज प्रवृत्ति को अथवा सहज बुद्धि को योगीराज शिव को अर्ध नारीश्वर के रूप में प्रतिष्ठित करके, अथवा 'अगादअंगात्संभवसि हृदयादभि जायसे आत्मा वै पुत्र नामासि' इत्यादि वैदिक वचनों के रूप में हमारी संस्कृति ने आत्मसात् कर लिया था। यह अभेद बुद्धि वेदान्त की अभेद भाव साधना का अक्षरारम्भ है जो पिता द्वारा (परम पिता द्वारा) कराया जाता है, जीवन रूपी पाठशाला में इस अक्षरारम्भ को इसी प्रकार विकसित करने की आवश्यकता है, जिस प्रकार पुस्तकीय अक्षरारम्भ को विकसित करके हम विद्यार्थी अध्यापक अथवा प्राचार्य के रूप मे यहाँ तक पहुंचे है। पिता अक्षरारम्भ तो केवल एक बार ही करता है, जो उसने एक बार करा दिया। किन्तु होता क्या है, इस अभेद बुद्धि के पाठ को हम के० जी० कक्षा के प्रारम्भिक कक्षा मे ही भूल जाते है बहक जाते है, इस रहस्यमय पाठ का अभ्यास ही नहीं करते, उन अभागे बच्चों की तरह जो अक्षरारम्भ के बाद ही कुसंगति में पड़ कर कक्षा से भाग जाते है, उनके भाग्य में जूठे प्लेट धोना और जूते साफ करना ही बदा होता है और जीवन भर कष्ट पाते हैं, इस अभेद बुद्धि के पाठ का भी अभ्यास न करने वाले, इसे भुला देने वाले लोग भी जीवन भर पीड़ा का अनुभव करते है' इस पाठ को जिसने जितना याद रखा है वे उतना ही सुखी हैं अपने पास-पड़ोस में, मित्रों और रिश्तेदारों में खोज कर तुलना करके देख लीजिए पहली कक्षा का भी पाठ याद रहा अर्थात् पति पत्नी में भी अभेद बुद्धि बनी रही तो कम से कम पारिवारिक जीवन सुखी है। वेदान्त के इस पाठ को जिसने जितना अधिक अभ्यास किया है परिवार में, समाज,में देश में अथवा अन्तर राष्ट्रीय स्तर पर वह उतना ही सुखी हुआ है आनन्दित हुआ है। मदर टेरेसा, महात्मा गांधी, गुरु नानक, महात्मा बुद्ध, महावीर आदि इसके उदाहरण हैं, और 'वसु धैव कुटुम्बकम्' का वाक्यार्थ इसका फल है जो कम से कम आदर्श के रूप में हमारी संस्कृति में समाया हुआ है।

[क्रमशः]

आर्य बनें सब

सभी दिशाएं शान्तिमयी हों,
सभी दिशाएं मंगलकारी।
सभी करें कल्याण मनुज का,
सिद्धि–सिद्धियां भू की सारी।
न्याय मिले निष्पक्ष सभी को,
सभी दिशाएं मित्र बनें।
सहज स्वभाव बने जन जन का,
सद् व्यवहार सचित्र बने।
मानवता के तत्व सुपावन,
भू के कण कण में सरसें।
सदा सफलता – सौख्य – सरसता,
समरसता भू पर बरसे।
ईश उपासक बनें सभी हम,
ईश मनन में हों संलग्न।
वेद भानु की दिव्य ज्योति से,
ज्योतित हो, हम होवें मग्न।
हो सौभाग्य सभी मनुजों का,
स्वर्ग बने यह वसुन्धरा।
'ओ३म्' ध्वजा के तले सर्वदा,
हर्षित हो यह विश्व धरा।
'आर्य' बनें सब मनुज धरणि के,
वेद मार्ग अनुगामी हों।
दया–प्रेम–नैतिकता फैले,
ऐश्वर्यों के स्वामी हों॥

–राधेश्याम आर्य विद्या वाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

उसको जीवन कह सकते

न रुक पाये, न झुक पाये, उसको जीवन कह सकते!
तम को मार भगाता जो,
नया सबेरा लाता जो
सभी तरफ से घिरकर भी.
कांटो मे मुस्काता जो,
निज मंजिल पर चले बिना, नहीं चरण जो रह सकते!
न रुक पाये, न झुक पाये, उसको जीवन कह सकते!!
पर - हित मे जो रमता है,
जो न बर्फ सा जमता है,
मचल–मचल जो निर्झर सा,
नहीं कभी भी थमता है,
अडिग सैकड़ों शिला-खण्ड जिसके आगे बह सकते!
न रुक पाये, न झुक पाये, उसको जीवन कह सकते!!
जो झेले सभी कसाले,
ऊंच - नीच देखे - भाले,
आगे बढ़ सबसे पहले,
तोड़े जो भ्रम के जाले,
उससे आडम्बर के, ऊंचे पर्वत ढह सकते!
न रुक पाये, न झुक पाये, उसको जीवन कह सकते!!

–रमाकान्त दीक्षित कानोडियों की गली, भिवानी (हरियाणा)

पुस्तक-परिचय

सुगृहस्थ-आनन्दप्रस्थ

लेखक–श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' वेद वारिधि।

प्रकाश –वेद संस्थान, बी-६४ राजाजीपुरम्, लखनऊ।

पृष्ठ सं० २८, मूल्य दो रुपये।

सम्पूर्ण संसार मे आज प्रायः लोगो के वैवाहिक जीवन (गार्हस्थ्य जीवन) सुख प्रद नही रह पाते। कटुता–विषमताओ–सन्तानों के चरित्र दूषण से मानसिक अशान्ति युक्त हो जाते है। सभी अपने-अपने बौद्धिक स्तर पर उनका निदान खोजते है परन्तु वेद पथ से दूर होने के कारण निदान मिल नहीं पाता।

श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' वेदवारिधि जो एक अच्छे वक्ता और सुयोग्य लेखक है ने अपने एक व्याख्यान को लिपिबद्ध करके पुस्तक रूप मे प्रस्तुत करके एक स्तुत्य कार्य किया है। उक्त पुस्तक के माध्यम से उन्होने सर्वसाधारण के गार्हस्थ्य जीवन के मगलमय पृष्ठ को मुखर करके सुख, शान्ति और आनन्द सुचरित्र से पूरित गृहस्थ जीवन का वैदिक मार्ग प्रशस्त किया है। उन्होने विभिन्न वेद मन्त्रो के उद्धरण देकर गृहस्थ जीवन के सौख्य प्रसार की सुनिश्चित विधि दर्शायी है।

पुस्तक की भूमिका सुप्रसिद्ध पत्रकार विद्वान् मनीषी आचार्य रमेश चन्द्र अवस्थी ने लिखी है जिसमें उन्होने श्री 'वसन्त' जी के प्रति अपने हार्दिक उद्गार बिना किसी अतिरंजना के प्रस्तुत किये है।

निश्चय ही वेद के पथिक का गृहस्थ–सुगृहस्थ ही बनता है। आज के पाश्चात्य परिवेश मे उपर्युक्त पुस्तक का पठन, स्वाध्याय, दिशा परिवर्तन मे अत्यन्त सहयोगी होगा।

यह पुस्तक सर्वोपयोगी, संग्रहणीय, पठनीय व आचरणीय है। विषय वस्तु के दृष्टिकोण से मूल्य भी स्वल्प ही है।

–आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक आर्यमित्र

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली का निर्वाचन सम्पन्न

दिल्ली की २०० आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओ के सगठन आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का वार्षिक साधारण अधिवेशन दि० १८ जनवरी १९८७ को आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड में संम्पन्न हुआ, जिसमें दिल्ली की आर्य समाजों के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। चुनाव में सर्व सम्मति से महाशय धर्मपाल जी प्रधान तथा श्री राजेन्द्र दुर्गा जी महामन्त्री निर्वाचित हुए। बाकी कार्यकारिणी तथा अन्तरंग सभा के गठन करने का अधिकार भी उपर्युक्त दोनो महानुभावो को सौंपा गया। निर्वाचन की कार्यवाही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में संपन्न हुई। स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने उपस्थित सदस्यो को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश की वर्तमान परिस्थितियो को ध्यान मे रखते हुए हमें देश की एकता और अखण्डता के लिये मिल कर कार्य करना है।

हैदराबाद सत्याग्रह की मधुर स्मृतियाँ

—स्व० श्री जयेन्द्र शास्त्री अवै० उपदेशक दयानन्द संघ ग्रा० पो० हीरावाली

समवेदना

हैदराबाद सत्याग्रह के वीर सेनानी तथा आर्य समाज के समर्पित पुरोहित उपदेशक पं० जयेन्द्र शास्त्री का ८६ वर्ष की आयु में १४ जनवरी, १९८७ को निधन हो गया। आप सरल स्वभाव, सदाचार एवं शान्त प्रकृति के विद्वान् थे। संसार में रह कर गृहस्थ धर्म का पालन करने वाले निर्लेप साधक थे। हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू एवं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् और अध्यापन के माध्यम से छात्रों को वैदिक संस्कार देने वाले वेदाचार्य थे। सादा जीवन उच्च विचार आपकी सहज विशेषता थी। आप ३२ वर्षों तक पंजाब में आर्य समाज के महोपदेशक रहे, हैदराबाद सत्याग्रह में जेल गये तथा विभाजनोपरान्त बिजनौर में वेद प्रचार अधिष्ठाता रहे। आप मन-वचन-कर्म से आर्य थे और असाधारण कठिनाइयों में भी वैदिक पथ पर अडिग रहे। आपके निधन से मानव समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे। आर्य मित्र परिवार शोक सन्तप्त परिवार के प्रति अपनी समवेदना प्रकट करता है।

—सम्पादक मण्डल

पूज्यपाद श्री नारायण स्वामी जी के रियासत हैदराबाद में सत्याग्रह की सूचना मिलने पर मुझ जैसे भावुक युवक आर्योपदेशक के मानसपटल पर सत्याग्रह में सम्मिलित होने की प्रबल भावना का समुद्भूत होना स्वाभाविक था। मैं उन दिनों आर्य समाज मशीन मुहल्ला जेहलम में पौरोहित्य कार्य सम्पन्न करता था। दैवयोग से श्री स्वामी मंगलानन्द जी अपने दो साथियों सहित जेहलम पधारे। मैने भी उनके साथ सत्याग्रह में भाग लेने की इच्छा प्रकट की। अनुमति मिलने पर मैंने आर्य समाज से अवैतनिक अवकाश स्वीकार करा लिया। हम चारों व्यक्ति गोजरानवाला, दिल्ली होते हुए मार्ग के प्रसिद्ध स्टेशनों पर सत्याग्रही सम्बन्धी भाषण तथा प्रचार करते हुए झांसी जंकशन पर पहुंचे जहां अपार जन-समूह स्वागतार्थ उपस्थित था। रेलगाड़ी एक घण्टा रुकी और लगभग ४० मिनट मुझे भाषण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जहां तक मुझे स्मरण है वह भाषण मेरे समस्त पूर्व भाषणों में अधिक ओजस्वी तथा जोशीला था।

शोलापुर शिविर में श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज के आदेशानुसार श्री ब्रह्मचारी सत्यपाल जी के ३५ सत्याग्रहियों के जत्थे में गुलबर्गा स्टेशन के अन्दर ही निजामी पुलिस ने हमें अपने संरक्षण में लेकर जेल पहुंचा दिया।

गिरफ्तारी से पांचवें दिन हमें अदालत में उपस्थित किया गया। सरकारी वकील ने हमारे ऊपर कठिन उर्दू के प्रयोग द्वारा कुछ आरोप लगाए। हमारे जत्थेदार ने कठिन उर्दू भाषा को समझने तथा उत्तर देने में अपने को असमर्थ पा कर उत्तर देने का मुझे संकेत किया।

मैने बहस करते हुए प्रश्न किया कि मैं अदालत आलिया उच्च न्यायाधीश से दरयाफ्त करना चाहता हूं कि अभी जो साहब हमारे ऊपर इलजाम आमद आरोप स्थापना कर रहे थे क्या यह वस्तुतः वकील हैं या कोई ऐरागैरा नत्थू खैरा व्यक्ति हैं क्योंकि इन्हें हालात हाजरा सत्य वृतान्तः का कृतअन किंचिन्मात्रः भी ज्ञान नहीं है। उदाहरणतया :—

१— इनका कथन है कि इस जत्थे को पुलिस ने स्टेशन के बाहर नारे उद्घोष लगाते हुए गिरफ्तार किया था क्योंकि पुलिस को स्टेशन के अन्दर आकर गिरफ्तार करने का कोई अधिकार नहीं है। मैंने कहा कि वकील साहब को पता होना चाहिए कि हमारी गिरफ्तारी से अगले दिन श्री ला० खुशहाल चन्द्र जी खुर्सन्द का १६० सत्याग्रहियों का जत्था जिसके पास गुलबर्गा से अगले स्टेशन का टिकट था। रेलगाड़ी में सवार सत्याग्रहियों को बलपूर्वक उतार कर गिरफ्तार किया है जिससे पुलिस का स्टेशन के अन्दर जाकर सत्याग्रहियों को गिरफ्तार न करने का दावा सर्वथा मिथ्या है।

२— वकील साहब ने दूसरी बात रियासत में हिन्दू-मुसलमानों के साथ मसावातः समान बर्ताव की बात कह कर हमारे सत्याग्रह को व्यर्थ सिद्ध करने की चेष्टा की है। क्या वकील साहब मुझे बता सकेंगे कि आपके जेलखाने में मुसलमान कैदियों को नमाज पढ़ने के लिए मस्जिद बनी है, वहां हिन्दू कैदियों के लिए पूजा पाठार्थ मन्दिर का निर्माण क्यों नहीं है ? केवल हिन्दुओं को जलूस और अखाड़ों आदि पर ही प्रतिबन्ध क्यों है।

३— गिरफ्तारी के समय मेरे पास पुराने रिफार्मर समाचार पत्र के जीर्ण शीर्ण एक पन्ने की पुड़िया के आरोप में एक अभियोग क्यों उपस्थित किया गया।

४— हिन्दू मन्दिरों में घन्टे घड़ियाल बजाने पर ही आपत्ति क्यों है।

५— वकील साहब ने एक यह आरोप लगाया है कि इस जत्थे में ३६ सत्याग्रही थे जिनमें से एक माफी मांग कर चला गया है। मैंने इसका प्रतिवाद करते हुए कहा कि हमारा जत्था ३५ व्यक्तियों ही का था। पुलिस ने हमारे सत्याग्रह को बदनाम करने के लिए एक नकली सत्याग्रही को सम्मिलित किया और छोड़ दिया।

मेरी बहस के पश्चात् अदालत ने ३४ सत्याग्रहियों को ६-६ मास तथा मुझे ७ मास का कारावास दण्ड सुना कर जेल भेज दिया।

जेल में श्री चांदकरण जी शारदा (अजमेर) मेरी बहस को सुन कर अत्यन्त प्रसन्न हुए और मुझे शाबासी दी।

इसके दो तीन दिन पश्चात् जेल के मोहतामिम (मुख्य प्रबन्धक) ने जेल में एकान्त में मुझे बुला कर पूछा कि क्या आप वकील हैं ? मैंने कहा कि मैं वकील तो नहीं किन्तु वकीलों का गुरु जरूर हूं क्योंकि मै आर्य समाज मन्दिर तथा परिवारों में वैदिक संस्कार कराता हूं, उपदेश देता हूं जिस पर वकील आदि उपस्थित लोग मेरे चरण छूकर नमस्कार करते हैं। मोहतमिम साहब मेरे कथन को सुन कर मुस्कराये और बतलाया कि जज महोदय ने आपके विषय में पूरी जानकारी लेने का संकेत किया था क्योंकि आपकी बहस से जज महोदय प्रभावित हुए थे। अस्तु फिर उन्होंने कहा कि आपको जेल से विशेष सुविधा की आवश्यकता है। मैंने कहा हम सत्याग्रही समान हैं और सब के समान ही सुविधा का इच्छुक हूं। विशेष कुछ नहीं चाहिए। यह आपकी हमें

(शेष पृष्ठ ७ पर)

माता यशोदा देवी का निधन

'वेद वाणी' के सम्पादक, विख्यात वैदिक विद्वान श्री पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक की धर्म पत्नी श्रीमती यशोदा देवी का निधन ११ जनवरी १९८७ को हो गया। स्वर्गीया माता जी की अवस्था सत्तर वर्ष से अधिक थी और वे कैंसर रोग से ग्रस्त थी। १३ जनवरी १९८७ को आर्य समाज करौलबाग दिल्ली मे शोक सभा हुई और पाणिनि महाविद्यालय बहालगढ़ (सोनीपथ) में विशेष यज्ञ के पश्चात् उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

आर्य संन्यासी सत्यानन्द जी महाराज दिवगत

आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी, श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज वेद मन्दिर उधमपुर (जम्मू) में २२ जनवरी ८७ को दिवंगत हो गये हैं। श्री स्वामी जी का सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की सेवा में ही व्यतीत हुआ था और अन्तिम समय में आप उधमपुर में ही अपना कार्यक्षेत्र बना कर निवास करते थे।

आपका जन्म मीरपुर (कश्मीर) में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। उसके बाद आप सेना कार्यालय में कलर्क हो गए थे। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में आप स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती के सान्निध्य में आये और उन्हीं के पास रह कर गुरुकुल पोठोहार में विद्याध्ययन करने लगे। उसके बाद उपदेशक विद्यालय लाहौर में स्वामी वेदानन्द तीर्थ के पास रह कर शिक्षा ग्रहण की। विद्याध्ययन के पश्चात् आप गुरुकुल झेलम के आचार्य पद पर नियुक्त हुए और गुरुकुल की सेवा में लग गए।

आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद पर भी आसीन रहे। उसके बाद आप भारतीय जनसंघ (पंजाब) के भी अध्यक्ष रहे। इस समय तक आप आचार्य रामदेव के नाम से प्रसिद्ध थे। पंजाबी सूबे के विभाजन पर आपने दिल्ली में आमरण अनशन भी किया था। इस समय आप संन्यास ग्रहण कर चुके थे और आर्य जगत में स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने एक शोक सभा में उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का निधन आर्य जगत् की एक अपूर्णीय क्षति है, उनकी सेवाएं आर्य समाज को सर्वव प्रेरणाएं प्रदान करते रहेंगी।

—सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

आर्य समाज श्रृंगार नगर लखनऊ का निर्वाचन सम्पन्न

प्रधान— आचार्य वेदव्रत अवस्थी
मन्त्री— श्री वेदपाल निझावन
कोषाध्यक्ष— श्री रूप चन्द्र 'दीपक'
पुस्तकाध्यक्ष— श्री नवरत्न सिंह यदुवंशी
आय-व्यय निरीक्षक— श्री विक्रमादित्य 'बसन्त'

हैदराबाद सत्याग्रहियों की स्मृतियां

(पृष्ठ ६ का शेष)

सत्याग्रहियों में फूट डालने की नीति पसन्द नहीं है।

हमारे भोजन में प्रायः चरी की रोटी, लहसन' प्याज युक्त सब्जी तथा दाल खाने को मिलते थे। मैने वैसी सब्जी खाना पसन्द नहीं किया। कई दिन तक नमक से रोटी खाई। पश्चात् हम दो तीन व्यक्तियों के लिए अलग प्याज रहित सब्जी मिलने लगी। हमारी विशेष सब्जी को देख कर अन्य कई सत्याग्रही भी विशेष सब्जी की मांग करने लगे तथा प्रतिदिन ऐसी संख्या बढ़ने लगी। इस पर भोजन सेवकों ने हमसे कहा कि प्रतिदिन संख्या बढ़ते जाने से अलग सब्जी की व्यवस्था में कठिनाई हो रही है। मैने इस पर कहा कि यदि ऐसी बात है तो हमारी विशेष सब्जी बन्द कर दें। ऐसा कहने पर फिर हम ३,४ व्यक्ति ही सब्जी के लिए प्रमाणित रहे और केवल हमारे लिए ही विशेष सब्जी आने लगी।

लगभग २४,२५ दिन बाद हमें हैदराबाद सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया जहां हमें अनेक परिचित साथी यथा पं० कपिल देव जी द्विवेदी कुँवर सुखलाल जी आदि मिले, वहां भोजन बनाने का कार्य भी सत्याग्रहियों ने स्वयं संभाल लिया। प्रतिदिन प्रातः सायंकाल सन्ध्या यज्ञ का कार्यक्रम सामूहिक रूप से चलता था। सत्संग में मेरे प्रवचन होते थे जिसके कारण मुझे भोजन व्यवस्था से मुक्ति मिली हुई थी।

हैदराबाद जेल में किसी बात पर कर्मचारी वर्ग के साथ किसी दिन विवाद छिड़ने पर जेल के उच्चाधिकारी ने हमारे दो प्रतिनिधि बुला भेजे। इस पर मण्डी महाउद्दीन के श्री सन्तराम जी तथा मैं उपस्थित हुए। उक्त महोदय ने फर्माया कि देखिये जेल के नियमानुसार किसी बन्दी के साथ दो जवान (सिपाही) जाने आवश्यक होते हैं और कहा कि आपके ३०-३० सत्याग्रही पानी लेने बाहर जाते हैं और हमारा एक ही जवान आपके साथ होता है। रियासत ने आपके साथ कितनी रियायत की हुई है फिर भी आप लोग शांत नहीं रहते।

मैने निवेदन किया कि श्रीमान जी यह तो सत्याग्रहियों की सज्जनता तथा कृपा है कि जिन्होंने अपने साथ न जाने वाले ५९ जवानों का व्यय बचाया हुआ है। आपको मालूम होना चाहिए कि हम लोग यहां भागने के लिये नहीं आये है। हम लोग चोरी आदि अनैतिक अपराधी तो है नहीं। हम तो अपनी इच्छा से अपना अधिकार मांगने आये हैं। यदि आप हमें खुले मैदान में भी रखेंगे, हम फिर भी भागने वाले नहीं है।

मेरे उत्तर को सुन कर साहब बोले कि आर्य समाजी लोगो से कोई पार नहीं बसाती। मैने कहा कि सच्चे लोग सत्य से ही विजय पाते हैं। आप हम पर मिथ्या आरोप लगा कर क्यों दबाना चाहते है। यह कह कर हम वापस जेल में आ गए।

जेल से मुक्ति से २,३ दिन पूर्व आर्य समाज के नेता ला० देशबन्धु गुप्ता आदि हमसे मिलने आए और बताया कि निजाम सरकार कुछ झुक रही है और समझौता हो रहा है। हमने कहा कि आर्य समाज को गिर कर समझौता नहीं करना चाहिए। हम प्राणों को दांव पर रख कर यहां आये हैं।

तत्पश्चात् निजाम सरकार ने आर्य समाज की समस्त मांगे स्वीकार कर ली और हम लोग वर्धा आश्रम में श्री महात्मा गांधी जी से मिल कर और उनका साधुवाद प्राप्त कर दिल्ली होते हुए अपने गन्तव्य स्थानों को चले आए।

मकर संक्रांति का संदेश

—रघुबीर सरन आर्य विश्व सेवक
विश्व कल्याण शोध संगम २०२४१०
नरायन टोला, बहजोई, मुरादाबाद (उ० प्र०)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय" वैदिक संस्कृति का शाश्वत् सन्देश है। अर्थात् हम अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़े।
'भारत' शब्द का अर्थ 'भा'—ज्ञान या प्रकाश की साधना में 'रत'—लगा हुआ है।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपनी यौवनावस्था में होता है। रात अभी तक अपनी देह को बढ़ाती ही चली जाती थी। मकर ने उसको निगलना प्रारम्भ कर दिया। सूर्य ने उत्तरायण में प्रवेश किया अब दिन लम्बा होने लगेगा, ऊष्मा युक्त होने लगेगा। यह प्राकृतिक परिवर्तन हमें जीवन में आशावाद का पाठ पढ़ाता है। हमारे सोये आत्म विश्वास को जगाता है और कहता है कि हमारे जीवन में यदि कुछ शैथिल्य, निरुत्साह आदि दोष आ गये हैं, हमारी दीनहीन अवस्था है तो वह सदैव रहने वाली नहीं है। उसका अन्त सुनिश्चित है। हम उठ खड़े हो और अपने जीवन में संक्रान्ति लायें।

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्निबोधत'।

संक्रान्ति का अर्थ है सम्यक् क्रांति अथवा सम्यक् परिवर्तन। जिसके करने से हमारी मातृभूमि और राष्ट्र नये प्रकाशमय जीवन से ज्योतिर्मय हो उठेगा। हमारा प्रत्येक कार्य विवेक युक्त हो। विवेकशील या प्रकाश का उपासक वही होता है जो उदार है, यज्ञशील है, मिल बांट कर खाता है। दानशीलता ही इस पर्व का मुख्य संदेश है।

सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण को विशेष महत्व शाली मान कर ही मकर संक्रान्ति का पर्व मनाया जाता है। इस दिन तिल और गुड़ के लड्डू जो स्वास्थ्य रक्षा के सहायक हैं तथा दीनों के शीत निवारणार्थ कम्बल और घृतदान करने की प्रथा प्राचीन काल से प्रचलित है।

गीता में लिखा है—'भुञ्जन्ते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।' अर्थात् जो दान नहीं करते, अपने लिये ही पकाते हैं, वे पाप रूपी अन्न खाते है। दान भी ऐसे सुपात्र व्यक्ति को दिया जाना चाहिए जिसे उसकी नितान्त आवश्यकता हो तथा सुपात्रता हो। ऐसे दान का ही फल मनुष्य का कल्याण करता है। लोकेशणा के वशीभूत किया दान सात्विक नहीं होता है।

ऋग्वेद १०/५३/६ का कथन है—
तन्तु तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथोरक्ष धियाकृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो, मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।

अर्थ— संसार का ताना बाना तनता बुनता हुआ भी प्रकाश के पीछे जा। बुद्धि से परिष्कृत किये हुए ज्योतिर्मय अर्थात् प्रकाश युक्त मार्गो की रक्षा कर, निरन्तर ज्ञान और कर्म का अनुष्ठान करने वालों के उलझन रहित कर्म को विस्तृत करो। इन सब उपायों से मनुष्य बन और देवों की हितकारी सन्तान को उत्पन्न कर।

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। विज्ञान का कार्य आविष्कार करना है। आविष्कार उपकरणों में पूंजी लगाने वाले मन .हा लाभ कमाते हैं। उसके पीछे यह विवेक नहीं जुड़ता कि इससे किसी के साथ अन्याय तो नहीं हो रहा, कोई अनुचित लाभ तो नहीं उठा रहा। इसके अतिरिक्त आविष्कार के दूरगामी परिणामों पर भी कोई ध्यान नहीं दिया जाता है विज्ञान सुविधा जुटाने के नाम पर मनुष्य को हर तरीके से धन बटोरने की प्रेरणा देता हैं। वह संसार को नष्ट करने का बम बना सकता है किन्तु उसमें यह सोचने की शक्ति नहीं है कि इसका परिणाम क्या होगा। विज्ञान स्वसंचालित यन्त्रों से बना कारखाना तो लगा सकता है किन्तु उसमें यह सोचने की शक्ति नहीं है कि एक मालिक को सम्पन्न बनाने के साथ ही वह कितने श्रमिकों की रोजी रोटी छीन रहा है। ट्रेक्टर भूमि को जल्दी जोत तो देता है परन्तु भूमि में वह आकर्षण शक्ति उत्पन्न नहीं कर पाता जो बैलों के खुरों के स्पर्श से उत्पन्न होती है। बैलों के गोबर मूत्र से भूमि को जीवांश प्राप्त होता है जबकि ट्रेक्टर टूट-फूट कर कबाड़ा बन जाता है। रासायनिक खाद जमीन की जीवनी शक्ति को नष्ट करती है भले ही वह अधिक अन्न उपजाती है। जीवनी शक्ति के नष्ट होने पर शेष ही क्या बचता है। कीटाणु नाशक कीटों को तो मार देते हैं किन्तु साथ-साथ मनुष्य के लिये भी कितने घातक हैं यह बात भोपाल त्रासदी आज भी हमें बता रही है। यह परिवर्तन न तो सम्यक् क्रांति ही है और न ही परिवर्तन।

गो घृत, आम की लकड़ी, पौष्टिक व सुगन्धित वनस्पति द्वारा किये यज्ञ से पर्यावरण प्रदूषण तो समाप्त होता ही है साथ-साथ 'प्राण पर्जन्य' वर्षा के माध्यम से पृथ्वी को प्राप्त होता है जिससे अन्न में पौष्टिकता आती है। यज्ञ में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का क्रियात्मक रूप और दान अप्रत्यक्ष रूप से सन्निहित हैं। गो दुग्ध से स्वर्ण और स्फूर्ति के साथ-साथ विवेक बुद्धि के पदार्थ सहज में ही प्राप्त होते हैं। उसके गोबर से पर्यावरण प्रदूषण की समाप्ति के साथ-साथ परमाणु विकिरण समाप्त होता है तथा भूमि को खाद से सर्वोत्तम जीवांश मिलता है। गो मूत्र से अनेकानेक प्राण रक्षक औषधियां बनती हैं। इन सबसे समाज का हित ही होता है जबकि विज्ञान में दूरगामी परिणति का निष्कर्ष निकालने की क्षमता नहीं है।

परिवर्तन सीधी और उल्टी दोनो दिशाओं में हो सकता है। ब्रह्माण्ड के नवग्रह अनादि काल से एकता के सूत्र में बंधे हुए बिना किसी प्रकार का शोर किये, बिना एहसान जताये, बिना किसी इच्छा के, बिना बदले की भावना के परमेश्वर की आज्ञानुसार सेवा रूपी सनातन धर्म का पालन करते हुए जीवों का कल्याण कर रहे और जीव भी क्रमागत विकास करते हुए परमात्मा की निकटता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यही जीवन का रहस्य है यही कर्त्तव्य है, यही ध्येय है, यही सन्देश है, 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का।

आज संसार के दुःखों का मूल कारण पुत्रैष्णा, वित्तैष्णा और लोकेषणा वृत्ति की पूर्ति के लिये किये जाने वाले स्वार्थ पूर्ति के क्षुद्र उपाय हैं। मानव दिनों दिन सब कुछ जानते हुए भी अन्धकार के पथ पर चला जा रहा है। यही परिवर्तन की उल्टी दशा है और सीधी दशा है प्रकाश के पथ की ओर जाना। इस ओर हमें महापुरुषों के ज्ञान, दान और वीरता से परिपूर्ण चरित्र ही ले जा सकते हैं।

जातिवाद, पंथवाद, प्रान्तवाद, आतंकवाद, अलगाववाद, भाषावाद कुरीतियां आदि सामन्तशाही व्यवस्था और घिनौनी राजनीति की देन

[शेष पृष्ठ ९ पर]

निर्वाचन

आर्य समाज असुरन रेलवे कालोनी, गोरखपुर
प्रधान– श्री के० एन० सिंह
मन्त्री– श्री कल्पनाथ आर्य
कोषा० श्री राम जी वर्मा

आर्य समाज ईसानगर सीतापुर
प्रधान– श्री राम औतार आर्य
मन्त्री– श्री नेतराम आर्य
कोषा०– श्री बराती लाल आर्य

आर्य समाज कुठिला पो० बेहटा गोकुल (हरदोई)
प्रधान– श्री सुरेश चन्द्र तिवारी
मन्त्री– श्रीमती कुसुम आर्या
कोषा०–श्री सत्य देव तिवारी

आर्य समाज हरिद्वार
प्रधान– श्रीमती सन्तोष कुमारी रंगन
मन्त्री– श्री दिनेश चन्द्र शास्त्री
कोषा०–श्रीचन्द्र प्रकाश शर्मा

आर्य समाज अम्बहटा (सहारनपुर)
प्रधान– श्री मोहन लाल सर्राफ
मन्त्री– श्री सुरेश चन्द्र आर्य
कोषा०– श्री रमेश चन्द्र

आर्य समाज धामपुर (बिजनौर)
प्रधान–श्री भारत भूषण आर्य
मन्त्री– श्री केवल कृष्ण शास्त्री
कोषा० श्री देवेन्द्र कुमार अग्रवाल

आर्य समाज चांदपुर (बिजनौर)
प्रधान– श्री जगदीश चन्द्र शीतल
मन्त्री– श्री देवेन्द्र त्यागी
कोषा०– श्री योगेन्द्र कुमार आर्य

आर्य समाज महावीरगंज लखनऊ
प्रधान– श्री जगदीश नारायण भटनागर
मन्त्री– श्री ओमोमित्र शास्त्री
कोषा०–श्री राम सागर वर्मा

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा रामपुर
प्रधान– श्री राम स्वरूप आर्य विशारद
मन्त्री– श्री अभय स्वरूप जी एडवोकेट
कोषा०– श्री ओ३म प्रकाश जी आर्य

आर्य समाज शान्ति नगर मिर्जापुर
प्रधान– श्री शरद कुमार कमानी
मन्त्री–श्री राजेन्द्र सिंह यादव
कोषा०–श्री सुभाष चन्द्र सिंह

आर्य समाज शाहगंज, जौनपुर
प्रधान– श्री सन्त प्रसाद आर्य
मन्त्री– श्री दयाशंकर आर्य
कोषा०– श्री राधेश्याम आर्य

आर्य समाज करौंदा मिर्जापुर
प्रधान– डा० गुलाब सिंह
मन्त्री– श्री कैलाश नाथ सिंह फोरमैन
कोषा०– श्री ज्ञानी सिंह आर्य

आर्य समाज बड़हलगंज, गोरखपुर
प्रधान– श्री द्वारिका प्रसाद आर्य
मन्त्री– श्री मक्खन लाल आर्य
कोषा०– श्री राम नारायण आर्य

आर्य समाज गंगा प्रसाद रोड रकाबगंज लखनऊ
प्रधान– श्री रमेश चन्द्र जी
महामन्त्री– श्री शान्ति प्रकाश जी
मन्त्री– श्री रेवती रमण जी
कोषा०–श्री जगत नारायणजी

आर्य समाज बक्शीपुर, गोरखपुर
प्रधान– श्री अवधेश कुमार आर्य
उपप्रधान– डा विनय प्रताप
मन्त्री– श्री राम नरेश गांधी
कोषा०–श्री वीरेन्द्र नाथ आर्य

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मीरजापुर
प्रधान–श्री लाल बहादुर सिंह
मन्त्री– श्री कपिल देव सिंह
कोषा०–श्री रामनारायणसिंह

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के समस्त सम्मानित अंतरंग सदस्यों प्रान्त के जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं के सम्मानित प्रधान एवं मन्त्री महानुभावों से निवेदन है कि अपने जिला और शहर में आर्य समाज एवं आर्य विचारधाराओ के व्यक्तियों द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं के नाम, संस्था के सम्मानित प्रबन्ध समीति के अध्यक्ष एवं प्रबन्धक का नाम उनके निवास के पूर्ण पते सहित शीघ्र ही सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

–मनमोहन तिवारी मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ

आर्य जगत

–आर्य समाज रम्पुरिया बरेली का वार्षिकोत्सव दिनांक ९ फरवरी से ११ फरवरी १९८७ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ।

–आर्य समाज चौक प्रयाग का १११ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २४ फरवरी से २७ फरवरी १९८७ तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

मकर संक्रान्ति का सन्देश

(पृष्ठ ८ का शेष)

है क्योंकि कुर्सी का उद्देश्य येन केन प्रकारेण अपने को बचाये रखना है। यदि भारत सरकार 'सादा जीवन उच्च विचार' को राष्ट्रीय आदर्श मान कर स्वयं पालन करने लगे तो नागरिक भी ऐसा करने को बाध्य हो जायेंगे। 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' का मकर सभी वादों को धीरे-धीरे निगल जायेगा और 'सत्यं वद्-धर्मम् चर' का नारा जन जीवन में व्याप्त हो जायेगा। हमे भूत से भविष्य को जोड़ते हुए सुखमय भविष्य का निर्माण करने की प्रेरणा मकर संक्रान्ति का पर्व हर वर्ष आकर सुनाता है। काला धन चाहे वह चोर-बाजारी से कमाया गया हो या भ्रष्टाचार से या दलाली द्वारा, हमें मृत्यु के बाद कर्मो का फल भोगने के लिये यमराज के पास अवश्य ले जायेगा और हम धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के फल चतुष्टय से वंचित हो कर नीचे की योनियो मे बार-बार जाते रहेंगे। इस प्रकार मानव जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष से हम जन्म जन्मांतर तक वंचित होते रहेगें यही बात वेद हमे अपनी ऋचाओ के माध्यम से समझाकर सम्यक् क्राति की प्रेरणा देता आ रहा है। ★

आर्य समाज रुहालकी दयालपुर पो० भगवानपुर (सहारनपुर)
प्रधान–श्री चौ०रामकला सिंह
मन्त्री– श्री वेदपाल वशिष्ठ
कोषा०– श्री चमन लाल

आर्य समाज मठपारा दुर्ग (म० प्र०)
प्रधान– श्री गुलाब चन्द्र जी बंसल
मन्त्री– श्री टुन्नी लाल आर्य
कोषा०– श्री राम लाल जी लूथरा

आर्य समाज बीसलपुर पीलीभीत
प्रधान– श्री डा० पूर्णानन्द
मन्त्री– श्री रामस्वरूप शास्त्री
कोषा० श्री चन्द्रपाल

आर्य समाज केराकत, (जौनपुर)
प्रधान– श्री राजाराम आर्य
मन्त्री– श्री धर्मेन्द्र कुमार आर्य
कोषा०– श्री ज्ञान प्रकाश

आर्य समाज शास्त्रीनगर, मेरठ
प्रधान– श्री वेद प्रकाश
मन्त्री– श्री राजेन्द्र कुमार
कोषा०– श्री अनिल कुमार

आर्य समाज बिटावधा (मुजफ्फर नगर)
प्रधान– श्री पं० बाहीराम सरस
मन्त्री– श्री ऋषिपाल वर्मा
कोषा०– श्री विजय सिंह

आर्य जगत

१—आर्यसमाज इटारसी में दिनांक २६—१—८७ को गणतन्त्र दिवस तथा दिनांक ३—२—८७ को बसन्तोत्सव एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

२—आर्यसमाज मवई (गोंडा) का वार्षिकोत्सव दिनांक ६—२—८७ को सोल्लास सम्पन्न हुआ।

३—आर्यसमाज मौला बांकीपुर उन्नाव का चौथा वार्षिकोत्सव १३-२-८७ से १५-२-८७ तक यज्ञ एवं वेद प्रचार के साथ सम्पन्न हुआ।

४—आर्यसमाज मेरापुर फर्रुखाबाद के तत्वावधान मे बसन्तोत्सव पर्व दिनांक ३—२—८७ को सोल्लास सम्पन्न हुआ।

५—आर्यसमाज कुठिला, हरदोई का वार्षिकोत्सव दिनांक ३१ जनवरी से २ फरवरी ८७ तक मनाया गया।

६—आर्यसमाज शालीमार बाग दिल्ली का वार्षिकोत्सव दिनांक ३० जनवरी से १ फरवरी ८७ तक भव्य आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ।

७—आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी के सौजन्य से दिनांक २५ जनवरी ८७ से १ फरवरी ८७ तक निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन हुआ।

८—आर्यसमाज कायमगंज (फर्रुखाबाद) के तत्वावधान में जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों—मण्डुआ मजरा, कुँआखेड़ा, वजीर आलम खां में, वेद प्रचार का कार्य सम्पन्न हुआ।

९—आर्यसमाज टूंडला (आगरा) द्वारा जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में दिनांक ४-१-८७ से १४—१—८७ तक वेद प्रचार का कार्य सम्पन्न हुआ।

१०—आर्यसमाज बिजनौर का वार्षिकोत्सव दिनांक ११ से १३ फरवरी १९८७ के मध्य भव्य आयोजनों के साथ हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

११—स्त्री आर्यसमाज साकेत मेरठ के तत्वावधान में दिनांक २६ जनवरी १९८७ को गणतन्त्र दिवस पर्व भव्य आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें देश के अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

नई शिक्षा नीति में संस्कृत को हटाने का षड्यन्त्र

(आर्यसमाज गोविन्दनगर कानपुर का प्रस्ताव)

आर्यसमाज गोविन्दनगर के तत्वावधान में आयोजित सभा में उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपाध्यक्ष तथा केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने कहा कि नयी शिक्षा नीति में संस्कृत को हटाने के पीछे आर्य (भारतीय) संस्कृति को हटाने का षड्यन्त्र है। आर्यसमाज जो अपने जन्म काल से संस्कृत का पक्षपाती रहा है, इस नापाक साजिश को सफल नहीं होने देगा।

सभा में स्वीकृत प्रस्ताव में भारत सरकार से मांग की गई है कि संस्कृत को एच्छिक नहीं बल्कि अनिवार्य भाषा बनाया जाये। त्रिभाषा फार्मूले से आधुनिक भाषा शब्द हटाकर केवल भारतीय भाषा जोड़ा जाये।

दूसरे प्रस्ताव में गणतन्त्र दिवस का बहिष्कार करने वालों को पाकिस्तानी बताया गया जो भारत को पुनः दो कौमों के आधार पर विभाजन का षड्यन्त्र रच रहे है।

मूल-सुधार

'आर्यमित्र' दिनांक ८ फरवरी १९८७ के अङ्क में पृष्ठ सं० ९ के द्वितीय कालम में 'छप गई, छप गई, छपगई, शीर्षक से विज्ञापन सूचना प्रकाशित हुई है।

खेद है कि पत्र में लिखावट स्पष्ट न होने के कारण विज्ञापन के पैरा नं० २ के द्वितीय पंक्ति मे, 'क्षत्रिय' के स्थानपर 'अन्तिम' छप गया है अतएव उसे क्षत्रिय ही पढ़ा जाय। तथा नीचे की पंक्ति में 'नोट' के स्थान पर मंगाने का पता पढ़ा जाय। त्रुटि हेतु खेद प्रकाश है।

—व्यवस्थापक

पुनीत कार्य में सहयोग दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ने पंजाब के विस्थापितों के लिए सहायता अभियान चलाया है जिसमें नये वस्त्र तथा आर्थिक सहयोग के अतिरिक्त आवास की व्यवस्था भी की जा रही है। उन्हें स्वावलम्बी भी बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

आर्य जनों से इस पुनीत कार्य में सहयोग की प्रार्थना है।

कृपया सम्पर्क करें—

डा० धर्मपाल महा मन्त्री　　ओम प्रकाश आर्य—मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५—हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

पाणिग्रहण संस्कार

श्री कपिल अरुण दाम्पत्य सूत्र में बंधे

बिजनौर के प्रसिद्ध समाजसेवी, पत्रकार एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री जयनारायण अरुण के पुत्र श्री कपिल अरुण का शुभ विवाह दिनांक १४—२—८७ को आर्यसमाज बिजनौर में पूर्ण वैदिक रीति से सोल्लास सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती मन्त्री श्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान पं० इन्द्रराज जी एवं मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी, स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, प्रो० ज्वलन्तकुमार शास्त्री, प्रो० दिनेशचन्द्र त्यागी, पं० विद्यारत्न जी आर्य, पं० नरेशदत्त जी शर्मा, पं० राकेश आर्य, पं० रामचन्द्र शर्मा सहित अनेकों आर्य नेताओं, विद्वानों तथा नगर के प्रतिष्ठित नागरिकों अधिकारियों ने पधार कर वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान किया।

विवाह सभी प्रकार के आडम्बरों से रहित पूर्ण सादगी से प्रातःकालीन सुरम्य वेला में सम्पन्न कराने के लिये श्री जयनारायण अरुण को हार्दिक बधाइयां व शुभ कामनायें।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी सम्पादक

आर्य कुमार सभा गोंडा के मन्त्री चि० श्री सत्यप्रकाश श्रीवास्तव का शुभ पाणिग्रहण संस्कार आयुष्मति कु० निशा श्रीवास्तव निवासी गोंडा के साथ वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। —बलबीर श्रीवास्तव

नवीन आर्यसमाज की स्थापना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के अन्तरङ्ग सदस्य श्री सुदर्शनसिंहजी के सहयोग से बलिया जनपद के डुमरिया ग्राम में नवीन आर्यसमाज की स्थापना की गई जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये—प्रधान—श्री सत्य नारायण आर्य, मन्त्री—श्री आनन्द प्रसाद आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री ऋषिदेव प्रसाद आर्य।

समवेदना

श्री सदाजीवत लाल जी का निधन, निश्चय ही हिंदू संगठन की अपूरणीय क्षति है—

शोक पूर्ण समाचार है कि, विश्व हिन्दू परिषद के न्यासी एवं कोषाध्यक्ष तथा भारत कल्याण मंच के अध्यक्ष श्री सदाजीवत लाल जन्नूलाल जी बहल (बम्बई) अब हमारे बीच नहीं रहे तथा उनका निधन गत दिनों बम्बई मे हो गया। वे एक प्रतिष्ठित व्यापारी होते हुए भी सर्वप्रथम एक क्रियाशील देश भक्त थे। वह सात्विक, निरभिमानी, सत्य एवं मृदु भाषी, समाज सेवी एवं प्रमुख गोभक्त तथा अ० भा० गो० संरक्षण परिषद के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। आज उनका निधन निश्चय ही हिन्दू संगठन की अपूरणीय क्षति है।

मैं "आर्यमित्र" की ओर से दिवंगत श्री सदाजीवत लाल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, उनके स्वर्गीय आत्मा की चिर शान्ति तथा शोक विह्वल परिवार एवं प्रिय जनो के असीम धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना करता हूं।

—सम्पादक

समवेदना

निम्नलिखित आर्यों के दिवंगत होने के समाचार प्राप्त हुए है जिसके लिए सभा समवेदना व्यक्त करती है—

१—आर्यसमाज जूही कानपुर के भू०पू० प्रधान श्री सतपाल जी।

२—आर्यसमाज अकबरपुर फैजाबाद के भू० पू० प्रधान श्री परमेश्वर दीन जी।

३—श्री धर्मेन्द्र शर्मा आर्यसमाज नया शहर इटावा के धर्मपत्नी के भ्राता श्री मुरारीलाल शर्मा आर० आई०।

४—आर्यसमाज पडरौना (देवरिया) के भूतपूर्व सदस्य श्री रुद्रनारायण सिंह जी।

५—आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर कानपुर के प्रधान श्री नानकचन्द्र जी आर्य के मामा ग्रा० दिनौरा, उतरौला (गोण्डा) निवासी श्री गुरुप्रसाद श्रीवास्तव।

६—लखनऊ के वयोवृद्ध कर्मठ कार्यकर्ता श्री हजारीलाल जी।

७—आर्यजगत के ख्यातिप्राप्त विद्वान् पं० युधिष्ठर जी मीमांसक की धर्मपत्नी पूज्या माता यशोदादेवी जी।

८—जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा मेरठ के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री श्यामलाल जी।

९—आर्यसमाज सदरपुर (मुरादाबाद) के भू० पू० प्रधान तथा आर्य समाज सम्बलीपुर के प्रधान श्री जगतसिंह वर्मा जी।

१०—आर्यसमाज जनकपुर (बरेली) के श्री गंगाराम जी आर्य की पूज्यनीया माता जी।

११—आर्यसमाज कैसरबाग लखनऊ के सम्माननीय सदस्य श्री उमाशंकर वर्मा जी।

१२—आर्यसमाज अग्रवाल धर्मशाला उझानी बदायूं के कर्मठ सदस्य श्री शिवशंकर जी प्रेमी।

१३—आर्यसमाज गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान) के वयोवृद्ध कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री आनन्दीलाल जी शर्मा।

१४—आर्यसमाज केराकत (जौनपुर) के संस्थापक श्री जगदम्बाप्रसाद जी की धर्मपत्नी।

१५—आर्यसमाज केराकत के सम्मानित सदस्य श्री कमलाकान्त जी की पूज्यनीया माता जी।

प्रभु दिवंगत जनों को शांति तथा शोक संतप्त प्रियजनो को धैर्य प्रदान करें। मन्त्री सभा

वार्षिकोत्सव

निम्नलिखित आर्यसमाजो के वार्षिकोत्सव अंकित तिथियों में, हर्षोल्लास एवं भव्य आयोजनों के साथ सम्पन्न होंगे।

१—आर्यसमाज बतियाना (मुजफ्फरनगर) दिनांक ७ से ९ मार्च ८७

२—आर्यसमाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) दिनांक ७ से ९ मार्च ८७

३—आर्यसमाज विद्युतगृह कासिमपुर(अलीगढ़) ,, ८ से १० मार्च ८७

४— ,, भगतपुर पो० गोबिन्दपुर(आजमगढ़) ,, १२ से १४ मार्च ८७

५—गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) दिनाक ७ से ९ मार्च ८७

६—आर्यसमाज गया (बिहार) का ६४ वा वार्षिकोत्सव दिनांक २ अप्रैल ८७ से ५ अप्रैल ८७ तक।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६३
पञ्जीकरण स० एल. डब्ल्यू/एन पी. ७६
फाल्गुन शुक्ल २
रविवार, १ मार्च १६८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सम्पादक के पत्र

श्रीमान् सम्पादक जी, 'आर्यमित्र', लखनऊ

नमस्ते !

'आर्यमित्र' ४ जनवरी १६८७ के पृष्ठ संख्या ५ पर 'विचार-विमर्श' स्तम्भ मे 'शास्त्रार्थ की चुनौती स्वीकार' लेख के अन्तर्गत लेखक महोदय श्री रामशकर जी गुप्त ने भूयः शब्द का अर्थ करते हुए लिखा–'इस विनयोगी मन्त्र के अन्त मे इति शब्द लगाकर आगे आने वाले वाक्य 'भूयश्च शरदः शतात्' का पढ़ने का निषेध किया है–कारण कि विवाह ऐसे शुभ अवसर पर ही भूयश्च शरद शतात् का पढ़ा जाना अशुभ और अमांगलिक माना जाता है ।

इस अश को पढ़कर हमारे जैसे साधारण बुद्धि के लोग भ्रम मे पड़ सकते हैं–शास्त्रार्थ तो विद्वान् ही कर सकते हैं हम तो केवल इतना ही जानते है कि महर्षि दयानन्द जी ने सस्कार विधि के विवाह प्रकरण मे वर-वधू सूर्य्य का अवलोकन करते समय 'तच्चक्षु ··· ··· भूयश्च शरद शतात' इस मन्त्र को पढें ऐसा ही लिखा है। औरपण्डित मण्डली भी इसी रूप मे इस मन्त्र का पाठ सदा वर-वधू से कराती है ।

क्या यह पाठ उचित है या अनुचित ? कृपया इस पर प्रकाश डालने का कष्ट करें । —वैद्य कुन्दनलाल आर्य

५४६/१६२ अर्जुननगर, आलमबाग, लखनऊ

नेपाल में यजुर्वेद एवं सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्वावधान मे आर्यसमाज पचरा (नेपाल) मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एव आर्यसमाज पोपरा (नेपाल) मे सामवेद पारायण महायज्ञ धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ । आचार्य प० रामकृष्ण शास्त्री (कलकत्ता) के आचार्यत्व मे दोनो यज्ञ सम्पन्न हुए ।

आवश्यकता–हिन्दी व्याख्याता

अजमेर के एक मान्यता प्राप्त हायर सेकेन्ड्री विद्यालय के लिए हिन्दी व्याख्याता एम० ए०, कम से कम द्वितीय श्रेणी तथा बी० एड० वेतन शृंखला ८२०–१५५० मे प्रारम्भिक वेतन मय भत्तो रु० १४४०/- पर आवश्यकता है ।

आवेदन मन्त्री आर्यसमाज शिक्षा सभा, अजमेर को शीघ्र भेजें ।

आवश्यकता

लाला रामशरण दास स्मारक स्थिर निधि, आर्य समाज मन्दिर, हासी के लिए एक अच्छी भजन मण्डली की जो कि जिला हिसार के अन्तर्गत प्रचार कार्य कर सकें । अच्छा वेतन । इस निधि का प्रधान कार्यालय–आर्य समाज मन्दिर, हासी मे है । संपर्क करें–

प्रधान, आर्य समाज मन्दिर, हासी हिसार । (हरियाणा)

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क १५ फरवरी १६८७ में समाप्त हो गया है । बी० पी० भेजने में रु०५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि बी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २५) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी बी० पी० भेजी जायेगी । अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो बी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा । कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं । १ जनवरी १६८५ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है ।

७४३, १६३०, २२२३, ४२७३, ४७८५, ४७८६, ४७६१, ५४८६, ५६२२, ८५१६, ८७३०, ८०६७, ६१००, ६१०६, ६६०३, ६८०४, ६८०८, ६८१३, ६८२२, ६८३४, १००६१, १००६६, १००६७, ११५११, ११५१४, ११८५३, १२५७६, १२५७८, १२५८८, १२८२०, १२८२४, १२८३१, १२८३२, १२८३८, १२८४०, १२८४३, १३०५२, १३०५३, १३०५५, १३०५६, १३४२२, १३४२५, १३४२६, १३४२८, १३६६६, १३७००, १३७०१, १३७०३, १३७०४, १३७०५, १३७०६, १३७०७, १३७०८, १३७०६, १३७१०, १३७११, १३७१२, १३७१३, १३७१४, १३७१५, १३७१६, १३७१७, १३७१८, १३७१६, १३७२०, १३७२१, १३७२२, १३७२३, १३७२४, १३७२५ । विनीत–

—व्यवस्थापक

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप मे एम०पी०प्रिंटिंग प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४१/५७

घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८१

फाल्गुन शुक्ल ६, रविवार, सवत् २०४३ वि०, दिनाक ८ मार्च १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल–

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

★

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही "	१३)
विदेश मे	१५ पौंड
एक प्रति	६० पैसे
वर्ष	८०
अङ्क	१०

विश्व की समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत है

मानवीय संस्कृति का आधार संस्कृत है

संस्कृत की उपेक्षा से सँस्कृति नष्ट हो जायेगी

सम्पूर्ण विश्व मे भारत राष्ट्र, भारतीय सस्कृति और भारतीय वाङ मय का अपना एक अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान ह । समस्त मनीषी इस बात को एका-मना स्वीकार करते ह । इसका सम्पूर्ण श्रेय सस्कृत को है । सस्कृत भाषा तो भारत-राष्ट्र की आत्मा ह ।

विश्व की प्राचीनतम भाषा सस्कृत ह । यह सर्वमान्य सिद्धान्त है । प्राय समस्त भाषाओ का उद्गम सस्कृत से ह । इसीलिये इसे सब भाषाओ की जननी कहा जाता है । इसके सुसम्बद्ध वाङ्मय को मानव सस्कृति के साथ विश्व के विविध ज्ञान विज्ञान के आदिस्रोत होने का गौरव प्राप्त है । इसका विशाल वाङ्मय मानव सस्कृति एव सचित ज्ञान का अक्षय भण्डार है । इसके विविध विषयो पर विश्व के मनोषी निरन्तर शोध कार्या मे सलग्न रहते है ।

१–सस्कृत भाषा सम्पूर्ण विश्व म मनीषियो द्वारा अपने भावो को अभिव्यक्ति के लिए सशक्त भाषा के रूप मे प्रयोग मे लाई जाती ह ।

२–सस्कृत मे आज भी सकडो पत्र पत्रिकायें निकलती ह एव नवीनतम साहित्य-सृजन होता है ।

३–कम्प्यूटर प्रयोग क लिए वैज्ञानिको ने सस्कृत को सर्वश्रेष्ठ उपयोगी भाषा स्वीकारा है ।

४–अपनी सर्वाङ्गीणता क कारण सस्कृत भारतीय जीवन मे–सस्कारो मे भरी हुयी है । आयुर्विज्ञान सस्कृत मे अनुपमेय है । विधिक्षम–न्यायपालिका क क्षेत्र मे भी सस्कृत साहित्य का अपना वर्चस्व है । विधि वेत्ताओ के लिए मनु आदि के मन्तव्य जो सर्वाङ्गीण न्याय उपलब्ध कराने मे सहायक होत ह सस्कृत म है ।

फिर भी पता नही कसे और क्यो ' भारत की नई शिक्षा नीति म नई शिक्षा पद्धति मे सस्कृत को माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम म निष्कासित कर दिया गया है । यह निष्कासन दुर्भाग्यपूर्ण है । भारत का प्रबुद्ध जनमानस इससे उद्वेलित है ।

देश के शासक–राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, मानव ससाधन मन्त्री का दायित्व है कि वे अपना दृष्टि निक्षेप कर तथा अपना ध्यान इस भयकर भूल के लिए लगायें ।

बिना सस्कृत के सस्कृति नष्ट हो जायगी इस सत्य को स्वीकार करके माध्यमिक पाठ्यक्रम म सस्कृत को अनिवार्य कराय ।

शासको का ध्यान आकृष्ट करने क लिए आर्यसमाजें, शिक्षण सस्थायें एव अन्य सामाजिक सस्थायें अपने अपने यहा एतदर्थ प्रस्ताव पारित करके उन्हे सरकार को भेज । तार भेजकर सस्कृत की उपेक्षा का प्रबल विरोध करें ।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार ८ मार्च १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

उत्क्राम महते सौभगाय

इस समय आर्य जगत के लगभग समस्त पत्र-पत्रिकाओं में संस्कृत भाषा के प्रति किए गए अन्याय को लेकर तथा उसे पुनः भारत की गौरवशाली भाषा के पद पर स्थापित करने के लिए अनेक लेख प्रकाशित हो रहे हैं। ये समस्त प्रयास अत्यन्त सराहनीय हैं और आर्य जगत मे सर्वत्र इन का स्वागत किया जा रहा है।

यह निर्विवाद है कि संस्कृत ही देव भाषा है और विश्व की समस्त भाषाओं की जननी है। जिस आंग्ल अर्थात् अंग्रेजी भाषा के प्रति हमारे शिक्षित देशवासी आकर्षित हो रहे हैं और उसे अपनाते चले जा रहे हैं तथा भावी संतति का समस्त शिक्षण उस विदेशी भाषा के माध्यम से करके अपने को सौभाग्यशाली समझ रहे हैं, उस के शब्दकोश के असंख्य शब्द इस देव भाषा के ही विकृत रूप है। यहाँ संक्षेप मे पाठको की जानकारी के लिए कुछ शब्द इस तथ्य के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किए जा रहे है।

संस्कृत शब्द	अंग्रेजी शब्द
मातृ	मदर
पितृ	फादर
भ्रात	ब्रदर
दुहितृ	डाटर
स्वसा	सिस्टर
सूनुः	सन
युवा	यूथ
अहम	आई एम
यूयम	यू
ते	दे
वयम्	वी
मुखम्	माऊथ
नासा	नोज
भ्रू :	ब्रो
हस्त:	हैंड
आगम्	कम
गौ	कौऊ
पथ	पाथ

ऐसी अनगिनत शब्द माला प्रमाण स्वरूप दी जा सकती है परन्तु स्थाना भाव के कारण केवल कुछ शब्दो को ही प्रतीक रूप में दिया जा रहा है ताकि विदेशी भाषा के मोहग्रस्त इस देशवासियो के भी चित लोचन खुल सकें। इसके अतिरिक्त यह बात भी नितान्त सत्य है कि देव भाषा संस्कृत मे जो सरस ग्रंथ उपलब्ध हैं, वह विश्व की किसी अन्य भाषा मे नही है। गूढ़ ज्ञान और विज्ञान को थोड़े से शब्दो मे व्यक्त करना जो सागर को गागर में भरने के सदृश है, यह प्रमुख विशेषता इस देव भाषा की है यथा—

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा मा अमृतं गमय।

अर्थात् मुझे असत्य, अज्ञान से सत्य और ज्ञान की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो। विश्व की किसी अन्य भाषा में जीवन के लक्ष्य का इतना सुस्पष्ट चित्रण इतने संक्षिप्त शब्दों में व्यक्त नहीं किया गया है।

किसी विशेष महत्व के गुणगान करने से ही जैसे किसी अभीष्ट की सिद्धि प्राप्त नहीं होती, उसी भांति केवल देवभाषा की महत्ता की अभिव्यक्ति, विज्ञापनबाजी अथवा कागजी आन्दोलन करना सर्वथा निरर्थक है, जब तक जो हमारी कामना है, हम उसे व्यवहारिक रूप न दें। आज अपने को आर्य कहने वाले अथवा आर्य समाज की सदस्यता धारण करने वाले जब स्वयं अंग्रेजी के मोह का परित्याग नहीं करते। अपने बच्चो की शिक्षा के लिए उन विद्यालयो मे भेजते हो, जहां अंग्रेजी भाषा को प्रमुखता दी जाती है और उस भाषा के माध्यम से ही समस्त विषयो का पठन-पाठन कराया जाता हो, अपने घरों तथा दुकानों पर अंग्रेजी भाषा के नामपट लगाने में शान समझते हो, विवाह तथा अन्य मांगलिक अवसरों पर समस्त निमन्त्रण पत्र अंग्रेजी भाषा में छापे जाते हों, जहां राष्ट्र भाषा की उपेक्षा ऊपर से लेकर नीचे तक के समस्त नेता और राज्याधिकारी करते हों, वहां संस्कृत को राष्ट्र की दूसरी भाषा बनाना, गौरवशाली बनाना, क्या नक्कारखाने में तूती की ध्वनि के समान निरर्थक नहीं है।

वेद कहता है "उत्क्राम महते सौभगाय" (यजु० ११/२१) अर्थात् महान् सौभाग्य के लिए पुरुषार्थ कर। अतएव यदि हम इस देव भाषा को सौभाग्यशाली बनाना चाहते हैं तो हमे पुरुषार्थ का परिचय देना होगा। दृढ़ प्रतिज्ञ हो कर व्रती बन कर ऐसे व्रत लेने होंगे—

(१) आर्य जन अपने पुत्र तथा पुत्रियो को संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण अवश्य करायें। अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा देने वाले विद्यालयों का पूर्ण बहिष्कार करें और अपने बच्चों को वहां कदापि न भेजें।

(२) आर्य समाजों के भवनों में संस्कृत पढ़ाने के लिए पाठशालायें खोली जाएं जहाँ प्रतिदिन सायंकाल एक या दो घन्टे के लिए संस्कृत का

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्य मित्र साप्ताहिक के स्वामित्व के संबन्ध में विवरण

फार्म ४

प्रपत्र नियम ८

१— प्रकाशन का स्थान—भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
२— प्रकाशन की आवर्तिता—साप्ताहिक, प्रति मंगलवार व शुक्रवार।
३— मुद्रक का नाम—श्री विश्वम्भर दयाल गुप्ता स्वत्वाधिकारी श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ के लिये।
४— राष्ट्रीयता—भारतीय
५— प्रधान सम्पादक श्री मनमोहन तिवारी ८, गनेशगंज लखनऊ।
सह सम्पादक—श्री विक्रमादित्य जी वसन्त, बी, ६४ वसंतिका राजाजीपुरम, लखनऊ—२२६०१७
श्री आचार्य रमेश चन्द्र जी एम० ए० २० नेहरू नगर लखनऊ
श्री आचार्य देवव्रत अवस्थी, वेद मन्दिर हिन्द नगर, लखनऊ—५
६— पत्र का स्वामित्व किसके पास है—श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ।

मै विश्वम्भर दयाल गुप्ता घोषित करता हूं कि मेरी जानकारी में और विश्वास के अनुसार दिये गये विवरण सही हैं।

दिनांक—१ मार्च १९८७ — विश्वम्भर दयाल गुप्ता
मुद्रक प्रकाशक आर्य मित्र साप्ताहिक
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ उत्तर प्रदेश

सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण

(श्री उमाकान्तउपाध्याय२८, डी० नयन चन्द्र दत्त स्ट्रीट कलकत्ता ७००००६)

कलकत्ता से प्रकाशित "बामाल" नामक बंगला साप्ताहिक (२/१/१९८७ ई०) में सामाजिक एवं धार्मिक सम्प्रीति और सद्भावना का बहाना बना कर साम्प्रदायिक विद्वेष और गम्भीर उत्तेजना फैलाने का प्रयास किया गया है। आर्य समाज और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के युगान्तरकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में झूठे आक्षेप और मिथ्या बातें प्रकाशित की गयी है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस ग्रन्थ रत्न का बीस-बाईस भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और आज तक करोड़ों प्रतियां संसार के कोने-कोने में बिक चुकी हैं। यह ग्रन्थ स्वतन्त्रता संग्राम के दिनों में राम प्रसाद बिस्मिल और भगत सिंह जैसे अनेक क्रांतिकारियों का प्रेरणा-स्रोत रहा है। सम्पूर्ण संसार के तमाम उत्कृष्ट विचारकों ने इस ग्रन्थ रत्न की उन्मुक्त प्रशंसा की है। बामाल के सम्पादक को अपने संकुचित साम्प्रदायिक दकियानूसी विचारों के कारण यह ग्रन्थ सम्प्रीति सद्भावना विरोधी लगता है। जबकि महर्षि स्वामी दयानन्द ने स्वयं मनुष्यों में साम्प्रदायिक जड़ता को मिटा कर मनुष्य मात्र में सम्प्रीति और सद्भावना के विस्तार के लिए यह ग्रन्थ लिखा है।

महर्षि स्वयं लिखते हैं, "जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसी लिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसी लिए विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।"

"मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है, परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रक्खी है और न किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की सर्वत्र सत्यार्थ प्रकाश बड़े आदर और सम्मान से पढ़ा जाता है।

यह ठीक है कि पिछले दो-चार वर्षों में देश के विभाजन के जिम्मेदार, देश की एकता के शत्रु मुस्लिम लीगी फिर उसी पुराने राग को अलापने लगे हैं। सरकार उनके साम्प्रदायिक, विघटनकारी, अराष्ट्रीय हौसलों को पस्त करने में नरमी बरत रही है। इस नरमी का लाभ उठा कर कुछ साम्प्रदायिक एवं विचार स्वतन्त्रता से घबड़ाने वाले मुसलमानों ने दंगा करने के षडयन्त्र का हौसला बुलन्द किया था और पुलिस को झूठी सूचना देकर सत्यार्थ प्रकाश को एक जब्त पुस्तक बताया था। पुलिस अधिकारियों ने बिना अधिक छानबीन किए साम्प्रदायिक झगड़ालू, दंगाई तत्त्वों को संतुष्ट करने के लिए आर्य समाज के पण्डाल से सत्यार्थ प्रकाश की पुस्तकें उठा ली थीं। किन्तु जब पुलिस कमिश्नर को वस्तुस्थिति से परिचित कराया गया तो उन्होंने पुलिस की इस कार्यवाही पर दुःख प्रकाश किया एवं आदेश दिया कि पुलिस स्वयं ससम्मान सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियाँ पण्डाल में वापस दे आए। साम्प्रदायिक सद्भावना के विरोधी कुछ मतान्ध मुसलमान पुलिस के कान भरते रहे किन्तु पुलिस ने उन्हें टका-सा जवाब दे दिया और सत्यार्थ प्रकाश की सैकड़ों प्रतियां, कई भाषाओं में, मुहम्मद अली पार्क मे नौ दिनों व्यापी वृहत् उत्सव में बिना किसी रोक-टोक के निरन्तर बिकती रहीं और पुलिस ने पूरी शान्ति और सुव्यवस्था रखी।

बामाल के सम्पादक एक विचित्र सा सुझाव देते है कि इस्लाम सम्बन्धी कोई भी साहित्य सेंसर बोर्ड द्वारा सेंसर हो कर ही प्रकाशित होना चाहिए। यह साम्प्रदायिक सुझाव केवल इस्लाम सम्बन्धी पुस्तकों के बारे में ही क्यों हो ? या तो बौद्ध, जैन, ईसाई, हिन्दू, मुसलमान सबकी सबसे सम्बन्धित पुस्तकों को सेंसर किया जाय; अन्यथा यह प्रस्ताव अपने आप में पूरा साम्प्रदायिक है।

बामाल के सम्पादक सरकार को २३ दिसम्बर के लिए आगाह करते हैं; वस्तुतः २३ दिसम्बर सन् १९२६ ई० को एक मतान्ध और साम्प्रदायिक मुसलमान ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को गोली मार कर उनकी हत्या कर दी थी। २३ दिसम्बर स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस है और यह मतान्ध साम्प्रदायिक लोगों के छटपटाने से बन्द नहीं हो सकता। यह बलिदान दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाता है और प्रतिवर्ष मनाया जायेगा। इस उन्नति का कारण नहीं है।"

—सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका से उद्धृत।

"यही सज्जनों की रीति है कि अपने वा पराये दोषों को दोष और गुणों को गुण जान कर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें। और हठियों का हठ दुराग्रह न्यून करें करावें, क्योंकि पक्षपात् से क्या-क्या अनर्थ जगत् में न हुए और न होते है। सच तो यह है कि इस अनिश्चित क्षण भंग जीवन में पराई हानि करके लाभ से स्वयं रिक्त रहना और अन्य को रखना मनुष्यपन से बहिः है।"

—सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास की अनुभूमिका से उद्धृत।

बामाल के सम्पादक अपने साम्प्रदायिक विचारों के कारण इतिहास के तथ्यों को झुठलाने का प्रयास करते है। सत्यार्थ प्रकाश १८८२ ई० (१९३९ विक्रमाब्द) में प्रकाशित हुआ था। बामाल के सम्पादक चालाकी से इसे १९३९ सन् लिखते है। १०४ वर्षों पुरानी पुस्तक को नवीन सिद्ध करने का यह घृणित प्रयास सर्वथा निन्दनीय है एवं महर्षि दयानन्द के भक्तों को ठेस पहुंचाने के उद्देश्य से किया गया है।

बामाल के सम्पादक का यह कथन कि सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशित होने पर अंग्रेज सरकार ने इसे जब्त किया था, सर्वथा मिथ्या एवं साम्प्रदायिक संघर्ष को भड़काने वाला है। अंग्रेज सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश को कभी भी जब्त नहीं किया था। सत्य से घबड़ाने वाले हीलाहवाला तो सदा ही करते रहते है, हां १९४६ ई० में सिंध प्रदेश की लीगी सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास को जब्त करने की साम्प्रदायिक विद्वेषमयी घोषणा अवश्य की थी किन्तु जिस प्रकार मुस्लिम लीग साम्प्रदायिक विद्वेष विक्षोभ एवं देश के विभाजन के लिए लिखित रही है, उसी प्रकार सम्पूर्ण देश के हिन्दू मुसलमान, कांग्रेसी एवं गैर कांग्रेसी सभी नेताओं ने सिंध की मुस्लिम लीगी सरकार की तीव्र भर्त्सना एवं निन्दा की। हजारों-हजार आर्य समाजी अपनी प्राणप्रिय पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिए सत्याग्रह पर उतारू हो गए।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

बाल जगत

वीर बालक दासो

—स्वा० दयानन्द विदेह वेद संस्थान,
राजौरी गार्डन, नई दिल्ली–२७

महाराष्ट्र में दिगंबर पन्त कुलकर्णी नामक ब्राह्मण तात्कालीन मुगल बादशाह के पास कर वसूली का काम करता था। उसका जीवन भक्तिमय था। दिगम्बर पन्त अन्न भन्डारों का व्यवस्थापक था।

उसका बेटा था दासो। वह पिता के साथ बालपन से घूमा करता था। वह मेधावी, तेजस्वी और जिज्ञासु बालक था। अपने पिता से अनेको प्रकार का प्रश्न पूछ कर आश्चर्य में डाल देता था। उस काल में मुगलों का बोल-बाला था।

एक दिन मौलवी उनके गाँव में मुस्लिम-मत के प्रचार के लिये आये। उनको देख कर दासो ने पूछा– "पिताजी! ये लोग कौन हैं और किस लिये आये है?

पिता ने उत्तर दिया– "अपना मत प्रचार करने के लिये।"

इनको यहा कौन भेजता है? पिता ने उत्तर दिया–"बादशाह।"

"पिताजी बादशाह के पास इतना धन कहां से आता है?"

"बेटा! प्रजा राजा को कर देती है, राजा उसमे से कुछ अपने मत प्रचार मे तथा मत परिवर्तन में खर्च करता है।

दासो ने कहा– "पिता जी! मत परिवर्तन के कार्य में लोगों का पैसा क्यो लगाया जाता है? दिगम्बर पन्त के पास इसका कोई उत्तर नहीं था। पन्त मौन था। दासो ने कहा– "तो लोग ऐसे अधार्मिक प्रवृत्ति के लिए धन क्यों देते है?" जो राजा संस्कृति को स्थान नहीं देता, दूसरे का धर्म हरण कर अन्याय करता है, उसको धन देना पाप है।" दासो के गम्भीर प्रश्नों की झड़ी से दिगम्बर पन्त ने मौन धारण कर लिया। परन्तु उसका हृदय जल रहा था। उसे लगता था कि क्षुद्र अनैतिक राजा की नौकरी करना भी पाप है, परन्तु वह मजबूर था।

एक दिन नर्तकियों का एक बड़ा समूह राजदरबार की ओर जाते हुए उस गाँव से गुजरा। उनको देख कर दासो ने पूछा– "पिता जी! ये कौन है? बेटा! ये नाच करने वाली राजा के दरबार मे जा रही हैं। राजा इनके नृत्य देखना चाहते हैं।

"पिता जी– "पिता जी! राजा इनको भी धन देता होगा?" "हां!"

"तो क्या राजा के भोग-विलास के लिए प्रजा कर देती है? प्रजा के धन से मौज करने वाला राजा पापी और अधार्मिक है। उसे कर देना बन्द कर देना चाहिये। उसको कर देना पाप है। आज के राजनीतिज्ञ के पास इस प्रश्न का उत्तर होगा या नहीं, इसमे सन्देह है। परन्तु दासो ने बाल्यकाल से ही इन क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया था। उसने कहा– "पिता जी आप इस अनैतिक नौकरी को छोड़ दीजिये।" आप खून-पसीना बहा कर कर वसूल करते है उससे राजा मौज करता है। इससे संस्कृति का कुछ कार्य नहीं होता और व्यर्थ ही आप पर पाप चढ़ता है।"

पुत्र की बात दिगम्बर को अच्छी लगी, परन्तु आचरण में लाने की हिम्मत नहीं होती थी। परिवार के भरण-पोषण की चिंता थी। वह दासो की बात टालता रहा। एक बार मुगल बादशाह के राज्य में घोर अकाल पड़ा। लोग भूख से तड़पने लगे। भूख से तड़पते बच्चों को देख कर दासो ने अपने पिता से कहा– "पिता जी आप मेरा कितना ध्यान रखते है और सुन्दर भोजन खिलाते हैं। परन्तु मेरे मित्रों को चार दिन से भोजन नहीं मिला है। उनके घर में अन्न का दाना नहीं है और यहां अन्न के भण्डार पड़े हैं। जिसके पसीने से यह अन्न पैदा हुआ है वे बिना अन्न के भूखों मरने लगें हैं। आप इन भूखी प्रजा के लिये अन्न का भण्डार खोल दीजिये।" बेटा दासो! यह अनाज राजा का है। बिना बादशाह की इजाजत मुझे देने का अधिकार नहीं है। "पिता जी! जरा आप विचार करें। जो अन्न-भण्डार आपत्ति के समय प्रजा के काम न आये उनकी क्या उपयोगिता है। जो राजा प्रजा के कष्टों को नहीं देखता, दुःखों से रक्षा नहीं करता, वह प्रजा का रक्षक नहीं भक्षक है। कोठारों में अनाज सड़ रहा है और लोग भूख से बिलख रहे हैं। आपको मेरा सौगंध है। दासो ने हठा ग्रह पकड़ लिया। दूसरे दिन राज्य के सभी कोठार खोल दिये गये। प्रजाने अपनी भूख शांत की, पिता-पुत्र को आर्शीवाद दिया और राजा को शाप।

बादशाह को जब यह समाचार मिला तो वह आग बबूला हो गया। दिगम्बर पन्त को राज दरबार में बुलाया गया। जब मालूम हुआ कि अधिक अपराध दासो का है तो दासों को भी दरबार में हाजिर किया गया।

दरबार लगा था। पिता-पुत्र दोनों कठघरे में खड़े थे। बादशाह ने दिगम्बर पन्त से पूछा– "क्या सचमुच तुमने बिना राजाज्ञा के कोठारों को खुलवाया है?" दासो ने पिता के कहने से पूर्व ही उत्तर दिया– "शाहन्शाह! प्रजा आप की है। ऐसे महान् संकटकाल में उसी की रक्षा करना आपका परम धर्म है। मेरे पिता जी ने उस धर्म को निभाया और आप का सम्मान बढ़ाया है। लोग आपको आर्शीवाद और जय-जयकार दे रहे हैं।"

दासो की निर्भयता और साहस को देख कर लोग स्तम्भित हो गये। बादशाह भी उसकी निर्भयता तेजस्विता देख कर दंग रह गया।

दासो ने आगे कहा– "हुजूर! प्रजा को अन्न-वस्त्र, घर तथा शिक्षा देना आपका परम कर्तव्य है। प्रजा आपको इसी लिये कर देती है। मेरे पिता जी ने उन्हीं को अन्न देकर कौन सा अपराध किया है?

बालक की वाक्पटुता और निर्भयता को देख कर राजा ने नीति से काम लेकर उसे अपने वश में करना चाहा। उसने सोचा यदि दासो को मुसलमान बना दिया जाए तो धर्म प्रचार में बड़ा सहायक सिद्ध होगा।

बादशाह ने निर्णय सुनाया कि दिगम्बर ने राज्य का अक्षम्य अपराध किया है इसलिये उसे पांच लाख अशर्फियों का दण्ड दिया जाता है। उसे जमा करने के लिये एक महीने का समय दिया जाता है। तब तक बंधक के रूप में दासो नजरबन्द रहेगा। यदि तीस दिन के अन्दर जुर्माना अदा नहीं किया तो एकतीसवें दिन दासो को पाक (मुसलमान) बना दिया जायेगा। इस निर्णय को सुन कर दिगम्बर पन्त कांप उठा। उदास मुख वह दरबार से घर आया। घर में आ कर चुपचाप खड़ा रहा। पत्नी उसे अकेला पा कर गम्भीरता से पूछने लगी मेरा दासो कहां है? बहुत बार पूछने पर दिगम्बर पन्त ने धर्म पत्नी से कहा "दासो अब मेरा नहीं रहा।" वह अब वह वेद-उपनिषद् गीता के स्थान पर कुरआन का पाठ करेगा और मस्जिद में

(शेष पृष्ठ ६ पर)

कन्या गुरुकुल, हाथरस का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस के ७८ वें वार्षिक महोत्सव का समापन करते हुए संस्था के कुलपति आचार्य महेन्द्र प्रताप शास्त्री ने आगुन्तक आर्य विद्वानो गणमान्य अतिथियो एव स्थानीय जनता के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हुए कहा कि आप लोगों के अपरिमित स्नेह एव सहयोग से यह संस्था अनेक कठिनाइयो के बावजूद अपने लक्ष्य और उद्देश्यों की पूर्ति की ओर निरन्तर अग्रसर हो रही है।

लगभग ४०० कन्याओं वाले इस विशाल वैदिक गुरुकुल मे ३१ जनवरी से ३ फरवरी तक चलने वाला यह भव्य आयोजन वैदिक विद्वानो के सदुपदेशो, भजनीको के मधुर संगीत तथा गुरुकुल की बालिकाओ के परिश्रम साध्य प्रदर्शन के कारण स्मरणीय बन गया।

अलवर (राजस्थान) के मान्य विद्वान् स्वामी दर्शानन्द जी के कर-कमलों द्वारा ओ३म् ध्वजा-रोहण के साथ यह रगारग कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। तदोपरान्त भारत सरकार के सहायक शिक्षा सलाहकार (संस्कृत) श्री रामकृष्ण शर्मा की अध्यक्षता मे सरस्वती परिषद का संस्कृत अधिवेशन एव भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। अपराह्न मे भजनोपदेशक श्री मनवीर जी तथा बालिकाओ के गायन, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प० ओ३म् प्रकाश शास्त्री के व्याख्यान के पश्चात् हाथरस के प्रतिष्ठित उद्योगपति श्री विजेन्द्र कुमार लोहिया ने गुरुकुल की छात्राओ की आकर्षक हस्त शिल्प कला प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

१ फरवरी को उत्तर प्रदेश के ऊर्जा मन्त्री श्री सुनील शास्त्री के मुख्य आतिथ्य मे गुरुकुल का दीक्षान्त समारोह सम्पन्न हुआ। अपने दीक्षान्त भाषण मे शिक्षा सम्बन्धी विचार प्रकट करते हुए मान्य मन्त्री जी ने कहा कि वे गुरुकुल की उन्नति के लिए हर सम्भव सहायता करेंगे। मन्त्री जी के कर-कमलो द्वारा नवस्नातिकाओ को पारितोषिक वितरण किया गया।

२ फरवरी को एक आर्य सम्मेलन तथा गुरुकुल सभा के मन्त्री श्री माधव सिंह एव गाजियाबाद के विद्वान् प्रो० रतन सिंह जी के व्याख्यान श्री विश्वम्भर दयाल जी भगत की अध्यक्षता मे पारितोषिक वितरण समारोह तथा छोटी बालिकाओ की पुष्प वाटिका का मोहक प्रदर्शन हुआ।

अन्तिम दिवस का कार्यक्रम वृहद-स्वस्ति-यज्ञ की पूर्ण आहुति के साथ प्रारम्भ हुआ। इस दिन गुरुकुल का नव-प्रविष्ट ब्रह्मचारिणियो का वेदारम्भ संस्कार प्राचार्या सुश्री कमला कुमारी ने सम्पन्न कराया। इस मांगलिक अवसर पर प० विद्या प्रसाद आर्य के भक्ति संगीत एव श्री ओ३म् प्रकाश जी शास्त्री के गम्भीर प्रवचन हुए। दोपहर मे गुजरात के श्री धीरुभाई मगन भाई आर्य की अध्यक्षता मे राष्ट्र हित सम्मेलन हुआ। जिसमे प्रमुख वक्ता सर्व श्री माधव सिंह जी एव पन्डित विद्यारत्न जी थे। इस दिन ब्रह्मचारिणियो के व्यायाम और संगीत का अनूठा प्रदर्शन हुआ जिसकी सभी ने मुक्त कंठ से सराहना की। कार्यक्रम के मध्य प्रतिदिन कुलपति आचार्य महेन्द्र प्रताप शास्त्री द्वारा धन संग्रह की अभ्यर्थना का इच्छित परिणाम निकला तथा आर्य बन्धुओ ने उदारता पूर्वक गुरुकुल को हजारो रुपये का दान दिया।

इस सम्पूर्ण समारोह मे गुरुकुल सभा के पदाधिकारियो एव आमन्त्रित विद्वानो ने संस्था के वर्तमान उन्नत स्वरूप का श्रेय कुलपति श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री तथा मुख्याधिष्ठात्री श्रीमती अक्षय कुमारी शास्त्री को दिया। इस अवसर पर कुल माता स्व लक्ष्मी देवी के प्रति, उनकी त्याग और तपस्या का स्मरण करते हुए श्रद्धांजलि व्यक्त की गयी। वर्तमान आयोजन की सफलता के लिए संस्था की प्राचार्या कमला कुमारी जी ने अथक परिश्रम किया। कार्यक्रम का संचालन गुरुकुल सभा मन्त्री माधव सिंह जी ने तथा आभार प्रदर्शन माननीय कुलपति जी ने किया।

सत्यार्थ प्रकाश के संबन्ध में स्पष्टीकरण

(पृष्ठ ३ का शेष)

सत्याग्रही जत्था महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्व मे कराची पहुचा भी पर किसी को गिरफ्तार नहीं किया गया और मुस्लिम लीगी सरकार का जब्ती का आदेश बनावटी एव बन्दर-घुड़की से अधिक नहीं सिद्ध हुआ। उल्लेखनीय है कि सारे ससार मे जहा भी विचार-स्वतन्त्रता है, वहा सम्बन्ध में दामाल के सम्पादक को सरकार को सचेत करने के बजाय उन मतान्ध, हिंसक, झगडालू हत्यारे लोगो को उदारता और सहनशीलता, साम्प्रदायिक सद्भाव और सम्प्रीति की सलाह देनी चाहिए, जिन्होने आर्य समाज के कई नेताओ की मतभेद के कारण हत्या कर दी और आर्य समाज बड़ी दृढ़ता से अपनी सहनशीलता का परिचय देता हुआ केवल बौद्धिक उत्तर देता रहा है, तथा किसी प्रकार के झगड़े फसाद और हिंसा मे विश्वास नहीं करता। लगता है दामाल के सम्पादक का साम्प्रदायिक आवरण सर्वथा हट गया है और वे अपने को उग्र, झगडालू, साम्प्रदायिक लोगो के पक्षधर बना रहे है।

हम दामाल जैसे साम्प्रदायिक पत्रों से अधिक सावधानी की आशा करते हैं और चाहते है कि वे स्वय साम्प्रदायिक सम्प्रीति और सद्भावना का ईमानदारी से प्रयास करें।

उत्क्राम महते सौभगाय

(पृष्ठ २ का शेष)

पठन-पाठन कराया जा सके।

(३) आर्य जगत के समस्त हिंदी पत्र—पत्रिकाओ के कतिपय पृष्ठ 'स्वय संस्कृत शिक्षण' के रूप मे आरक्षित कर दिए जाए और सरल विधि से संस्कृत पढ़ना-लिखना, समझना इनका व्यवहारिक अभ्यास कराया जाए।

(४) विद्यालयों में संस्कृत की प्रतियोगिताए आयोजित की जायें तथा संस्कृत भाषा मे बोलने वालो को सर्वाधिक पुरस्कृत किया जाए।

(५) विवाह आदि के निमन्त्रण पत्र केवल संस्कृत मे छापे जायें।

(६) सार्वदेशिक सभा, प्रान्तीय सभाए तथा अन्य सम्बद्ध आर्य समाजें तथा शिक्षण संस्थायें संस्कृतज्ञो के सहयोग से ऐसी सरल पुस्तक प्रकाशित करें, जिनमें व्यवहारिक रूप से सरल शब्दो मे संस्कृत बोलने और समझने की प्रेरणा मिलती हो ताकि आर्य जन प्रतिदिन के जीवन व्यवहार मे परस्पर इस भाषा का प्रयोग कर सकें। जैसे एक बालक बिना पुस्तकें और व्याकरण आदि पढ़ें अपने गृह मे मातृ भाषा को बोलना पहले सीखता है और तत्पश्चात् विद्यालय मे व्याकरण से उसको परिष्कृत करता है, उसी भांति हमारे आर्य परिवारो मे जब तक दैनिक वार्तालाप मे इस भाषा का प्रयोग नही होगा, हम इसे विश्वव्यापी तो क्या ? राष्ट्र व्यापी भी नहीं बना सकेंगे।

क्या आर्य जगत उपरोक्त व्यावहारिक उपायों को क्रियान्वित कर, कथनी को करनी मे परिणत कर अपने उद्देश्य को सफल बनाने के लिए अग्रसर होगा जहां तक आर्य मित्र के द्वारा इसे व्यवहारिक रूप देने का प्रश्न है, ऐसी स्थायी व्यवस्था की जा रही है जिसका परिचय आगामी अंको मे हमारे पाठको को मिलेगा।

--वसन्त

भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता

—श्री डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी
स्वामी केशवानन्द योग संस्थान ८/३ रूप नगर, दिल्ली–७

[गतांक से आगे]



वेदान्त दर्शन के इस अभेद भाव को सर्वंखल्विदं ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि आदि महावाक्यों के अर्थ की यही प्रतिष्ठा है और इनकी प्रासंगिकता कभी समाप्त नहीं होती। आवश्यकता है इन सिद्धान्तों को जीवन में उतारने की—

'अधीति बोधाचरण प्रचारणैः दशाश्चतस्रः प्रणयन्नु पाधिभिः'

श्री हर्ष का यह वचन जितना राजा नल के लिए प्रासंगिक है उतना ही हमारे और आपके लिए भी है। और यदि ऐसा नहीं हुआ आचरण-प्रचारण नहीं चला तो रास्ते चलते लोग हमे और आप को कहेंगे अरे ये तो फिलासफर हैं जिसका तात्पर्य है कि वे हमें या आपको अर्ध विक्षिप्त समझ रहे हैं। इस अभेद बुद्धि के वेदान्त विद्या को भी हमे महर्षि पतञ्जलि के इस वचन 'चतुर्भि प्रकारै विद्योपयुक्ता भवति आगमकालेन स्वाध्यायकालेन प्रवचन कालेन, व्यवहार कालेन इति के साथ पढ़ना चाहिए। तभी इसकी प्रासंगिकता है। अनुसक्ति की प्रासंगिकता भी तो उसका प्राणि मात्र के लिए व्यवहार करने पर ही तो होती है, केवल प्रयोगशाला में सफल परीक्षण तक रहने पर किस विज्ञान की प्रासंगिकता रहती है।

अब मैं अपने सबसे प्रिय दर्शन योगशास्त्र पर केवल संकेत मात्र करके अपने निबन्ध को समाप्त करना चाहूंगा। योगशास्त्र के आचार्य यद्यपि अनेक हैं इसकी शाखाएं भी लगभग दो दर्जन तो हैं ही, इस शास्त्र के सर्व प्रतिष्ठित आचार्य पतञ्जलि के समय भी कम से कम आठ सम्प्रदाय सुप्रचलित थे जिनका उल्लेख उन्होंने योग सूत्र के प्रथम पाद में किया है। वैसे तो सभी दर्शन साधना के ही विषय हैं केवल अध्ययन के नहीं; किन्तु योग दर्शन के कुछ सिद्धांत आज भी साधना के रूप में ही स्वीकृत हैं [विश्वविद्यालय के क्षेत्र को छोड़ कर, अर्थात् अंग्रेजों की कृपा से विश्वविद्यालयों में तो बिना साधना किये कोई व्यक्ति योगी अर्थात् योग का विद्वान कहला सकता है] योग कहते हैं चित्त के व्यापारों के चित्त की वृत्तियों के, पूर्ण निरोध को। और यह कार्य सम्पन्न होता है, यह स्थिति बनती है अभ्यास और वैराग्य द्वारा [अभ्यास वैराग्याभ्यां तन्निरोधः ! योग सूत्र १.१२]। यहां अभ्यास का अर्थ है चित्त की पूर्ण एकाग्रता के लिए प्रयत्न [तत्र स्थितौ यत्नोऽभ्यासः। वही १.१३] और वैराग्य का अर्थ है तृष्णा का अभाव, चित्त का लौकिक अथवा अलौकिक अर्थात् स्वर्गीय किसी भी विषय की कामना कभी न होना [दृष्टानुश्रविक विषय-वितृष्णस्य वशीकार संज्ञा वैराग्यम् वही १.१५]। चित्त की एकाग्रता लौकिक जीवन में प्रतिक्षण चाहिए कक्षा मे बैठ कर भी मन से अनुपस्थित रहने पर अर्थात् पढ़ाये जाने वाले पाठ पर चित्त एकाग्र न रहने पर पढ़ाई न हो सकेगी, चित्त की एकाग्रता के बिना अध्यापन भी नहीं हो सकता। किसी साथी के साथ किसी अधिकारी के साथ तीव्र विवाद हो जाने पर, कोई विषम सामाजिक स्थिति उत्पन्न हो जाने पर चित्त मे विक्षेप हो जाने पर हम क्या पढ़ या पढ़ा सकें हैं, इसे हम अपने बीते कल का स्मरण करके अनुभव कर सकते हैं। चित्त की एकाग्रता के बिना कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं हो पाता कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् की शकुन्तला इसका काव्य साहित्यिक अर्थात् काव्यगत उदाहरण है, वह स्वयं को दिये गये अतिथि सत्कार के कार्य को भूल बैठी प्रेम के चक्कर में, उसके परिणाम स्वरूप मिला दुर्वासा का शाप और फिर दीर्घकालीन वियोग। प्रत्येक कर्म में चित्त की एकाग्रता का होना अनिवार्य है तभी सफलता मिलेगी।

चित्त की सम्पूर्ण एकाग्रता का नाम है असम्प्रज्ञात या निर्बीज समाधि और तूफान युक्त समुद्र की तरह चित्त का अतिशय विक्षिप्त अर्थात् चंचल होना है उन्मादावस्था। हमारी आपकी स्थिति मध्य की है। यह हम पर निर्भर है कि हम पागलपन की ओर, विक्षेप की ओर, बढ़ें या एकाग्रता की ओर, समाधि की ओर। समाधि की दिशा मे, एकाग्रता की दिशा मे, जितना बढ़ेंगे उतनी ही सफलताएं अर्जित कर सकेंगे। लौकिक सफलताएं भी एकाग्रता होने पर ही मिल सकेंगी। हम चाहे अध्यापक हों अथवा लेखक, विचारक हो या वैज्ञानिक, वकील हो या प्रशासक, हमारी सफलता चित्त की एकाग्रता पर ही निर्भर है। योग सूत्रकार पतञ्जलि ने इसके दो सहचारी उपाय बताए हैं: अभ्यास और वैराग्य। अभ्यास के क्रम में हमें चाहे तो तप स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान को अर्थात् कष्ट सहिष्णुता, तत्वज्ञान का अर्जन और सभी कर्म और उसके परिणामों को प्रभु को समर्पण अर्थात् पूर्ण प्रपत्ति के, संक्षिप्त किन्तु कुछ कठिन, मार्ग को अपना लेवें और चाहे यम नियम आसन प्राणायाम धारणा ध्यान और समाधि की अष्टांग साधना को, यह हमारी आपकी इच्छा और योग्यता पर निर्भर है।

वैराग्य की साधना के लिए अविद्या अस्मिता राग द्वेष और अभिनिवेश कष्ट हैं यह समझना पड़ता है। और इनसे बचने की इच्छा भर करनी पड़ती है। अविद्या अस्मिता अर्थात् अहंभाव राग और द्वेष तो प्रायः सभी को विदित हैं, किन्तु अभिनिवेश के सम्बन्ध मे कुछ भ्रम विद्वानों मे है। योग सूत्र के व्याख्याकार व्यास ने मृत्यु भय से बचने के तीव्र आग्रह का उदाहरण देकर इसे समझना चाहा, और हमने अभिनिवेश का पूर्ण अर्थ छोड़ कर इसे ही अभिनिवेश मान लिया। अभिनिवेश पद का अर्थ है आग्रह, लगाव, हठ। यह बहुत बड़ा क्लेश है, तमाम क्लेशो का मूल है। हर प्रकार के झगड़े के मूल में आग्रह ही रहता है, और आग्रह को अभिनिवेश को छोड़ करके ही अशान्त दो राष्ट्रों के बीच, दो पार्टियो के बीच, मालिक और मजदूर के बीच, प्रशासक और प्रशासित के बीच समझौते हैं और उसके बाद शान्ति की स्थापना होती है। आचार्य और अध्यापकों के बीच पति पत्नी के बीच भी बहुत बार अभिनिवेश (आग्रह) के कारण मनमुटाव अशान्ति का जन्म होता है और क्लेश बढ़ते हैं। अभिनिवेश (आग्रह) को क्लेश समझना और उसका त्याग करना ही इन विवादों को समाप्त करने का एकमात्र उपाय है।

अभिनिवेश का त्याग कर ने पर राग और द्वेष की निवृत्ति होती है, तथा राग और द्वेष मिटते ही अस्मिता अर्थात् 'मैं' 'मेरा' 'तू' 'तेरा' का, अपने पराये का भेद मिट जाता है। सकल विश्व कुटुम्ब स्वरूप ही नहीं आत्ममय हो जाता है कुटुम्ब में भी मैं-तुम का भेद रहता है, किन्तु इनके बीच समष्टि भाव को विकसित कर लिया जाता है, आग्रह को

(शेष पृष्ठ ९ पर)

हे दया निधान

—आचार्य वेतव्रत अवस्थी

दाता दयालु दीनबन्धु हे दया निधान
कृपा करो ऐसी पिता अतिशय कृपा निधान ।।
हम पाप पक मे फसे, फसते ही जा रहे ।
हम कुकर्म की गली मे बढ़ते ही जा रहे ।।
ऐसी कृपा करो की हो जाये शुद्ध मन ।
करुणा करो ऐसी पिता हो शुद्ध तन वचन ।।
आ न सकें पाप के विचार ही कभी ।
मन के बुरे विचार भी जल जायें सब अभी ।।
सत्सगती से प्रीति हो कुसगती त्यागें ।
चल वेद मार्ग पर सभी भ्रम भ्रान्ति भगा दें ।।
ऐसी कृपा हो जाये तो देखें वह शुभ विहान ।
फैलायें चारो ओर वेद ज्ञान का वितान ।।

वसुधा का कण-कण प्रमुदित

सुन्दर स्वास्थ्य हमारा होवे,
जन जन का हो स्वस्थ शरीर ।
हृष्ट-पुष्ट हो अग हमारे,
धरती के जन जन हो वीर ।

चलें सुपथ पर शक्तिशील हो,
जगती-तल के सारे लोग ।
सुख सम्पन्न सभी जन होवें,
हर्षित हो, नित रहे निरोग ।

भीम बनें, हनुमान बनें सब,
शक्ति पुञ्ज से दीपित जन ।
ऊचा रहे मनोबल सबका,
अनुशासित हो सारे जन ।

ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर,
करें शरीर सुरक्षा सब ।
नवल चेतना आए जन मे,
जागृत हो मानवता अब ।

शिक्षा-शील, सुजनता-समता,
विकसित हो महिमण्डल पर ।
सद्भावो की गरिमा मन मे,
सहिष्णुता, शुचि बढ़े निरन्तर ।

बलशाली बन, अन्यायो से,
लड़ें निरन्तर लोग सभी ।
निर्बल की रक्षा करने मे,
हटें न पीछे मनुज कभी ।

धरती के कण कण से फूटे,
अजस्र शक्ति का स्रोत महान ।
नव उल्लास जगे जन मन मे,
गूंजे शक्ति शांति का गान ।

नव आशा-अभिलाषाओ का,
रवि हो भू पर आज उदित ।
स्वस्थ-समुन्नत-सुन्दर तन हो,
वसुधा का कण-कण प्रमुदित ।।

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

पुस्तक परिचय

यज्ञ शक्ति

लेखक एव सग्रहकर्ता—डा हरपालसिंह, एम एस सी (ऐजी) पी एच डी
मन्त्री जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर
श्रीमती सरला चौधरी एम० ए०
वरिष्ठ उप प्रधान जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर
पृष्ठ सख्या—३६

उपरोक्त पुस्तक मे यज्ञ शक्ति का परिचय निम्नलिखित विषयो के आधार पर कराया गया है (१) आध्यात्मिक स्वरूप (२) वैज्ञानिक स्वरूप (३) स्वास्थ्य पर प्रभाव (४) रोग निवारण (५) जल वृष्टि (६) जल शुद्धि (७) वायु शुद्धि (८) कृषि उत्पादन मे वृद्धि इनके अतिरिक्त यज्ञ से सम्बन्धित महत्वपूर्ण प्रश्नो का समाधान भी इस पुस्तक मे किया गया है और यज्ञ महिमा का एक भजन भी इसमे समाविष्ट किया गया है ।

पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है । इसका प्रकाशन श्री जगतराम अरोड़ा चेरिटेबल ट्रस्ट ११३/७९ स्वरूपनगर कानपुर द्वारा किया गया है और श्री रामलुभाया बजाज प्रधान आर्यसमाज के सौजन्य से इसे वार्षिकोत्सव पर सप्रेम भेंट के रूप मे वितरित किया गया है । उपरोक्त पुस्तक २ ए/१७० आजाद नगर कानपुर-२ तथा ३४ फ्रेन्डस कालोनी स्वरूप नगर कानपुर—२ से नि शुल्क प्राप्त की जा सकती है । —बसन्त

वैदिक पुरोहित श्री सूर्यप्रकाश जी

श्री सूर्यप्रकाश जी वैदिक पुरोहित सस्कार एव वैदिक कर्मकाण्ड की प्रक्रिया मे अत्यन्त कुशल हैं व्यवहार कुशल तथा जनभावना का समादर करते हैं । कानपुर नगर एव देहात के आर्यजन श्री सूर्यप्रकाश जी की सेवायें स्वीकार करें । सम्पर्क—श्री सूर्यप्रकाश जी ५३/१० नयागज (बेरी वाल कुआ के सामने) कानपुर—प्रात ९—१० के मध्य आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर । —आचार्य रमेशचन्द्र सम्पादक

हैदराबाद सत्याग्रह पेंशन सम्बन्धी सूचना

हिम्मत मत हारिये—विजय निश्चित है

(श्री ब्रह्मदत्त स्नातक, अवैप्रेस एवं जनसम्पर्क सलाहकार)

श्री टीकाराम पुत्र श्री चौ० मिल्लड़-सिंह, गांव व डाकखाना पोली जिला जीन्द (हरियाणा) से टीकाराम के अंगूठे लगा आवेदन पत्र २० जनवरी ८७ का इस सभा मे प्राप्त हुआ। वह लिखते है कि मे एक अनपढ़, साधारण जमींदारा व मजदूरी लावने वाला व्यक्ति हूं। मै हैदराबाद आर्यसमाज सत्याग्रह में गया था और केन्द्र। राज्य सरकारों को प्रार्थना पत्र भेजा था। मेरे पास जेल प्रमाण पत्र नहीं है आप मेरी बाबत हैदराबाद जेल से पता लगाने की कृपा करे।

हमारी मेज पर उत्तर के लिये जमा लगभग सौ पत्रों में से यह एक पत्र है। अंगूठा लगाकर पेंशन के लिये आवेदन करने वालों मे गरीब असहाय विधवा और अत्यन्त रोगी व वृद्ध पेंशन के आवेदक भी है। इन सबमें विभिन्न प्रकार की समस्याएं मुखर होती हैं। पारसौल (जिला बुलन्द शहर) से एक मित्र ने एक सप्ताह के अन्दर चार पत्रों को भेजकर मार्ग दर्शन मांगा है। गृहराज्यमन्त्री श्रीचिन्तामणी पाणिग्रही और उप सचिव स्वतन्त्रता सम्मान प्रभाग को भेजे आवेदन पत्रों की प्रतिलिपि भेज कर वहा से उत्तर न, आने अथवा अपेक्षित उत्तर नहीं मिलने पर भी बड़ी आशा से हमारे माननीय बन्धु इसी सभा को लिखते रहे है। परन्तु सभा अथवा गठित उपसमिति की अपनी सीमाएं है। सरकारी ढांचे में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना भी उपसमिति के कार्य क्षेत्र में नहीं आता।

मोटे तौर पर सत्याग्रह में भाग लेने वाले अट्ठाईस हजार सत्याग्रहियों में से मुश्किल से दस पन्द्रह फीसदी सत्याग्रही उस काल के जीवित हैं। कुछ और संख्या उनकी विधवाओं की है। सूचना के अभाव में अथवा आवेदन की प्रक्रिया को नहीं जानने के कारण जिन लोगों ने आवेदन पत्र नियत समय पर या अब तक नहीं भेजे, उनकी भी संख्या बड़ी है। ऐसे लोग कभी सूचना पाकर हमें लिखते हैं कि दूर दराज में अखबार न पहुंचने के कारण रेडियो द्वारा बारम्बार इस प्रकार की सूचनायें प्रसारित करने की व्यवस्था होनी चाहिए। सभा या सलाह कार समिति यह भी करने से असमर्थ है।

बीस वर्ष की आयु में अपने से अल्प आयु के गुरुकुल वृन्दावन के छात्रों को लेकर मैने भी १९३९ में इस सत्याग्रह में भाग लिया था। उनमें से उन छः में से मेरी टोली का एक साथी फीजी द्वीप समूह में मेरी आंखों के सामने दिवंगत हुआ। एक थाईलैंड में परिवार के बच्चों को छोड़कर मर गया। विदेशों में और हमारे यहां भी ऐसे हजारों व्यक्ति राष्ट्र द्वारा स्वतन्त्रता सम्मान बिना पाये संसार से चले गए। आज हम कुछ लोग जीवित है, परन्तु देखने में यह आ रहा है कि ३० सितम्बर १९८५ के सरकारी आदेश द्वारा इस श्रेणी को स्वाधीनता सेनानी मानने के बाद, और विशेष रूप से १९७६ सितम्बर के बाद, सलाहकार उपसमिति के गठन पर अनेक आर्थिक दृष्टि से समर्थ व्यक्ति भी अब तक सरकार द्वारा पेंशन जारी नहीं होने पर आक्रोशित है। एक पत्रकार बन्धु स्वभावतः ७० वर्ष की आयु के बाद पेंशन रूप में सम्मान पाने की आशा छोड़ चुके हैं। यह सब कुछ स्वभाविक होते हुए भी सरकारी विभाग की कार्य प्रणाली और उप समिति के कार्य क्षेत्र को देखते हुए निराश होने की कोई बात नहीं है। निराशा मृत्यु है और इस आयु में और विशेषता आर्य समाजी को उसका परित्याग कदापि नहीं करना चाहिये।

भारत सरकार द्वारा ३० सितम्बर ८५ की घोषणा के बाद अब तक सभी को पेंशन सरकार द्वारा स्वीकृत न होने के कारण अनेक हैं। अफसर शाही उसमें प्रमुख है, परन्तु निश्चित कार्य प्रणाली का पालन एक दूसरी समस्या है। जिसके अभाव में १९८६ में सरकारी नौकरी के दौरान मेरे द्वारा इस मामले को उठाए जाने पर भी आज दिन तक यह मामला अधर में लटका हुआ है। जबकि मेरे एक अन्य पत्रकार बन्धु (श्री उदयवीर विराज) द्वारा सजगता से पूरी कार्य प्रणाली अपनाने पर अब से कई मास पहले पेंशन और बकाया राशि मिल गई थी, ऐसे कुछ अन्य मामले भी पेंशन के लिए स्वीकृत हो चुके हैं।

भारत सरकार ने १३ नवम्बर ८६ को गैर सरकारी सलाहकार सात सदस्यीय समिति का गठन करने की घोषणा की। इसके एक महीने के भीतर पहली बैठक हुई जिसमें दिल्ली से बाहर के सदस्य भी आये थे। स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने उसकी अध्यक्षता की। संयुक्त सचिव तथा डाइरेक्टर एवं अनुसचिव भी वहां उपस्थित थे। इस बैठक में व्यापक रूप से विचार हुआ। इसी काल में गृह मंत्रालय के स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग ने अवधि के भीतर प्राप्त, बाद में आए तथा अधूरे आवेदन पत्रों की एक सूची उपसमिति को भेजी है। उपसमिति के अध्यक्ष स्वामी जी, पंडित वन्देमातरम, रामचन्द्र राव जी और इन पंक्तियों के लेखक ने अधिकारियों के साथ अनेक बार बैठकों में समस्या के समाधान के लिए विचार विनिमय और पत्राचार किया। ३०।६।८६ तक इस सभा में प्राप्त आवेदनों की सूची गृह मंत्रालय को पहले ही भेजी जा चुकी है। इसके अतिरिक्त जिन लोगों ने जेल के प्रमाण पत्र अथवा कारावास, रिहाई के विवरण सरकार को दिए हैं, उनकी जांच के लिए अधिकारियों का एक दल जेलों के रिकार्ड की सम्पुष्टि के लिए वहां गया हुआ है। इससे कारावास और यातना की सम्पुष्टि में जो देरी होने के कारण पेंशनें स्वीकृत नहीं हो पा रही हैं, उन पर कार्यवाई अगले मास इस रिपोर्ट के प्राप्त होने के बाद हो सकेगी। गृह मंत्रालय द्वारा टाइम बार्ड आवेदनों पर भी यदि कारावास की, यातना की सम्पुष्टि सरकारी रिकार्डों में मिल गई, तो उन पर भी विचार हो सकता है। इस सरकारी व्यवस्था से प्रमाण पत्र मंगाने का कष्ट अब आवेदकोंको नहीं करनाहोगा।

सलाहकार उपसमिति की बैठक अगले मास हैदराबाद में करने के लिए स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग को कहा जा चुका है। इससे पूर्व अध्यक्ष स्वामी जी के आंखो का आपरेशन भी इसी कारण से स्थगित कर दिया गया है। १२ दिसम्बर की मीटिंग में दिए हुए सुझाव सरकार के विचाराधीन हैं और उसके बारे में शीघ्र ही निर्णय समिति को प्राप्त होगा।

गृह मंत्रालय से ११०५ आवेदकों की सूची प्राप्त हुई है जिनमें से ३५१ की यातनाएं उनके खुद कथनानुसार ६ःमहीनेसे अधिक रहा है। १६१ आवेदकों की,सूचियां ३०। ६।८६ से पूर्व प्राप्त ५९४ केसों का फैसला, पूर्व निजाम राज्य के सरकारों की रिपोर्ट प्राप्त होने पर होगा। इस विषय में उन सरकारों को भी पत्र गृह मंत्रालय ने भेज दिया है। ३१-३-८२ से पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को राज्य सरकार से सम्पुष्टि होने के बाद पेंशनें गृह मंत्रालय ने ३०।१०।८५ के बाद स्वीकृत कर दी है। ऐसे मामलों का विवरण समिति ने मांगा है।

शुद्धि आन्दोलन

हिंदू शुद्धि संरक्षणीय समिति हरियाना द्वारा ईसाईयों की शुद्धि

कार्यालय आर्य समाज मन्दिर समालखा जिला करनाल दिनांक २६ १९८७ को सायं ४.०० बजे गांव मूडा (रामनाथ पुरम में यज्ञ हवन किया गया और ईसाई लोगों ने अपनी स्वेच्छा से वैदिक हिन्दू धर्म ग्रहण किया और ईसाईयों से सतर्क रहने तथा वैदिक धर्म का पालन करने की प्रतिज्ञा की। समालखा के प्रधान श्री महेश राम आर्य भीष्म देव जी के उपस्थिति में स्वामी सेवा नन्द सरस्वती महामन्त्री हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति हरियाणा ने शुद्धि संस्कार कराया।

साजिदा बेगम से सावित्री देवी

श्रीमती साजिदा बेगम पुत्री सूबेदार निवासी ग्राम मंसूर जोत थाना कोतवाली उतरौला जनपद गोण्डा को आर्य समाज मन्दिर उतरौला में शुद्ध करके उनका नाम सावित्री देवी रखा गया तद्उपरान्त श्रीमती सावित्री देवी का विवाह वैदिक रीति से आर्य समाज मन्दिर मे श्री रामछबीले ग्राम रुस्तम नगर थाना कोतवाली उतरौला जनपद गोण्डा के साथ सम्पन्न हुआ। विवाहोपरान्त सहभोज का आयोजन किया गया जिसमे ५०० व्यक्तियों ने सहभोज में भाग लिया।

नामकरण संस्कार

दिनांक १२ फरवरी दिन गुरुवार को श्री सुखराम आर्य के सुपुत्र का नामकरण संस्कार वैदिक रीत्यानुसार श्री दया शंकर जी के पौरोहित्य में सोल्लास सम्पन्न हुआ। बच्चे का नाम सत्यव्रत रखा गया।

आर्य समाज में वसन्तोत्सव पर संगीत प्रतियोगिता

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज मन्दिर, सब्जी मण्डी, देहरादून में भजन गायन प्रतियोगिता एकल और समूहगान के रूप में रविवार दिनांक १५ फरवरी को प्रातः ९ बजे से आयोजित की गयी। १३ फरवरी को पछवादून के सोरना गांव में आर्य समाज डोमरी के तत्वाधान में वसन्तोत्सव की सभा स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में हुई जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में भाषण करते हुए जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा देहरादून के प्रधान श्री देवदत्त बाली ने धर्म पर बलिदान होने वाले सभी शहीदों को श्रद्धांजलि भेंट की। उसी दिन सायंकाल विकास नगर में रविदास हरिजन सभा की ओर से आयोजित रविदास जयन्ती की सभा को भी श्री बाली और श्री नैनसुख वर्मा मंत्री जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा ने सम्बोधित किया।

श्री बाली ने कहा कि जो सामाजिक क्रांति अपने पीछे सन्त रविदास और महर्षि दयानन्द जैसे महापुरुषों का आशीर्वाद लिए हैं, उसे कोई रोक नहीं सकता है। ऊँच-नीच की झूठी दीवारें अधिक दिन तक टिकने वाली नहीं हैं।

वीर बालक दासो

(पृष्ठ ४ का शेष)

बांध देगा।" यह कहते-कहते वह फूट-फूट कर रोने लगा।

बादशाह दासो को मुसलमान बनाना चाहता था इस लिये जबर्दस्ती के बजाय युक्ति से काम लेना चाहा। उसने दासो को प्रतिदिन एक अशर्फी खुश करने के लिये देना आरम्भ किया। दासो को भी विश्वास हो गया कि उसके पिता जी पांच लाख अशर्फी दे नहीं सकेंगे और उसे मुसलमान बनना पड़ेगा।

रात्रि का समय था। शांत वातावरण में दासो अकेला बैठा आर्तभाव से विचार मग्न है—"इस सृष्टि में मेरा कौन है? भगवान के अतिरिक्त मेरा और कोई दुःख का साथी नहीं है। इस विचार में डूबा वह प्रभु की स्तुति कर रहा था। उसे जो अशर्फी प्रतिदिन मिला करता, वह दान कर देता था, यह सूचना बादशाह तक पहुंची।

बादशाह दासो के पास आया और उसे समझाने लगा— "दासो तुम जैसे चतुर और तेजस्वी व्यक्ति को व्यर्थ इतना कष्ट नहीं उठाना चाहिए। तुम क्षुद्र हिन्दू जाति में पैदा हुए हो, यही मेरे लिये दुःख की बात है। तुम चिंता छोड़ कर मुसलमान बन जाओ फिर मेरा यह सम्पूर्ण राज्य तुम्हारे चरणों में भेंट होगा। दासो बालक था, परन्तु शेर था। वह बोला—"हुजूर बादशाह! आपके गुलामी के इस वैभव को मैं ठोकर मारता हूं।" उसने सचमुच बाएं पैर से लात मारने का अभिनय किया। आप की इस सम्पत्ति पर मैं थूकता हूं। मेरा धर्म आर्य है, मैं आर्य धर्म में ही मरूँगा।" इकतीसवें दिन बादशाह की दासो को मुसलमान बनाने की योजना थी। आर्य धर्म के रक्षक एक महा सेठ ने प्रभु प्रेरणा से पांच लाख अशर्फी देकर दासो को छुड़ा ले गया।

आर्य धर्म के प्रति अगाध निष्ठा रखने वाले दासो को अनन्त प्रणाम!!

बच्चों! तुम्हें भी ऐसी ही वीर बालक, ओजस्वी और निडर बनना होगा तभी तुम महान् संस्कृति की रक्षा कर सकोगे। इस सूक्ति को याद कर लो—ओजस्व में तेजस्व मे।

मेरे अन्दर ओज और तेज होना चाहिए। ✱

भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता

(पृष्ठ ६ का शेष)

समाप्त किये बिना ढीला करके सहकारिता का भाव खड़ा कर लिया जाता है किन्तु आत्ममयता की भावना का विकास हो जाने पर अस्मिता समाप्त हो जाती है अथवा अस्मिता अनन्त विस्तार को प्राप्त कर लेती है। जिसे वेदान्त के अहंब्रह्मास्मि और सर्वंखल्विदंब्रह्म आदि महावाक्यों के द्वारा प्रकट किया है। इस स्थिति तक पहुंचते ही अविद्या स्वतः निर्मूल होकर समाप्त हो जाती है। यह है अभिनिवेश को क्लेश समझ कर उसके त्याग की कामना का प्रभाव अर्थात् वैराग्य की साधना।

अष्टांग योग में सहअस्तित्व की भावना के रूप में अहिंसा आदि यमों को आज भी सम्पूर्ण विश्व में उपादेय माना जा रहा है। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आसनों का, मानसिक स्वास्थ्य के लिए धारणा और ध्यान का तथा अनेक असाध्य रोगों की चिकित्सा के प्राणायाम का प्रयोग आज विश्व भर में प्रचलित हो रहा है।

इस सब को देखते हुए भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता को सर्वात्मना स्वीकार करना होगा। आवश्यकता इस बात की है कि कहीं हमारे पड़ोसी हमारे लिए अपशब्द के रूप में फिलासफर शब्द का प्रयोग न करने लगें इस लिए हम दार्शनिक सिद्धांतों को अपने जीवन मे उतारें सम्पूर्ण समाज में अभिनिवेश के त्याग द्वारा राग द्वेश को निर्मूल कर अद्वैत भाव की प्रतिष्ठा करें। समाप्त

ईसाई मिशनरियों के काले क़ारनामे

(गतांक से आगे)

[श्री विशनस्वरूप गोयल, ३३१४, बैंक स्ट्रीट, करोल बाग, नयी दिल्ली]

श्री रामेश्वरम् टापू के ३७ गाव है जिनकी कुल जनसख्या एक लाख के लगभग है। इन ३७ गावो मे से १० गाव पूरी तरह से ईसाई बना लिये गये है जिनकी आबादी १६००० है। ये सभी ईसाई है। श्री रामेश्वरम टापू पर इस समय ईसाइयो की सख्या लगभग ३५००० हजार है जो वहा की कुल आबादी का ३५ प्रतिशत है। मुस्लिम आबादी तो वहाँ केवल एक हजार के लगभग ही है। यहा की शिक्षा और चिकित्सा व्यवस्था पर ईसाई मिशनरियो का पूरा अधिपत्य है।

क्योकि यहा के सभी मछेरे ईसाई बन चुके है इसलिये वे अधिकाश ईसाई मिशनो द्वारा प्राप्त की गयी सहायता और धन से सम्पन्न हैं। अब वे तस्करी जैसे अवैध धन्धो मे भी सलग्न होते जा रहे हैं। ईसाई मिशनरियो की सहायता से ही अब इन मछेरो के पास ८०० नौकायें तो यान्त्रिक भी मौजूद है जिनका उपयोग वे तस्करी के काम के लिए ही करते है। इन मछेरो ने समुन्दर के किनारे को वहा पर नावें खडी करके इस प्रकार जानबूझकर घेर लिया है।

काण्वेन्ट स्कूलो से सावधान रहो

केरल के मिशन विद्यालयो मे अध्यापन काय करने वाले दो ईसाई पादरियो को न्यायालय द्वारा छात्र–छात्राओ के साथ यौनाचार करने के अपराध मे दण्डित करने के समाचार के साथ ही अब बिहार के राची तथा राजस्थान की उद्योग नगरी ब्यावर से मिश्र न्यूज ब्यूरो द्वारा प्रषित स्थानीय सैण्ट पाल स्कूल मे नन्हे-नन्हे बालक बालिकाओ के साथ स्कूल के पादरी अध्यापको द्वारा जघन्य कुकृत्य किये जाने के समाचार भी प्राप्त हुए है।

सिटी थाने मे इस सन्दर्भ मे प्रथम सूचना रिपोर्ट एफ आई आर ४८/८६ धारा ३५४ तथा ३७७ तथा दूसरी एफ आई आर २०/८६ धारा ३५४, ५०७ तथा ३७७ भारतीय दण्ड सहिता के अनुसार सैण्ट पाल स्कूल के दो पादरी अध्यापको, लियो वालस और बैंजल दयाल के विरुद्ध दर्ज हुई है। जिनमे कहा गया है कि ये दोनो पादरी अध्यापक बालक तथा बालिकाओ को अपने घर ट्यूशन के बहाने से बुलाकर उन्हे फेल करने का भय दिखा विगत दो साल से यौनाचार करते आ रहे है।

देश दर्शन

विधायक श्री सोहनसिह ने इस सारे मामले को राज्य विधान सभा मे उठाकर ब्यावर के सैण्ट पाल स्कूल को बन्द करने और तत्सम्बन्धी पादरी शिक्षको को गिरफ्तार करने की माग की। इस से पुलिस सक्रिय हुई और दोनो अभियुक्तो को गिरफ्तार कर लिया गया है। दोनो ही पुलिस रिमाण्ड पर है।

केरल के ईसाई मत के गुरू को आजीवन कारावास

कोटयम के सत्र न्यायाधीश श्री ९० आर० विजयन ने स्थानीय महाविद्यालय की एक छात्रा की हत्या के अभियोग मे जान चेरिअन ईसाई मत के गुरू को आजीवन कारावास का दण्ड दिया। महाविद्यालय की छात्रा जाली मैथ्यू के साथ बलात्कार के प्रयत्न मे जान चेरियन ने यह हत्या की थी।

★

ईसाई पादरियो का भ्रष्टाचारी व्यवहार

जिन ईसाई पादरियो को हम ईमानदार और मानव सेवा का ठेकेदार के प्रतीक के रूप मे मानते हैं उनकी भ्रष्टाचार गतिविधियो के मामले भी अब सामने आने लगे हैं। तमिलनाडु के सैण्ट एन्थोनी गिल्ड से सम्बन्धित पादरी इग्नेशियन के खिलाफ केन्द्रीय जाँच ब्यूरो ने 'भारतीय राज्य व्यापार निगम' से करोडो की धोखा धडी करने का मामला दर्ज किया है।

नेपाल सरकार से शिक्षा ले

नेपाल विश्व मे एक हिन्दू राज्य है। वहा ईसाइयत का प्रचार करने वाले को ६ मास के कारावास का दण्ड दिया जाता है और हिन्दू को ईसाइयत ग्रहण करने पर एक वर्ष का कारावास। काठमाण्डू न्यायालय मे अभी हाल मे एक भारत की राष्ट्रीयता वाले श्री सुमन शर्मा को ईसाई मत स्वीकार करने पर एक साल कारावास का दण्ड दिया है। हमारे प्रधान मन्त्री को इससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

सस्कृति को नष्ट करने का षडयन्त्र

यहा ईसाई जनसख्या किस तेजी से बढ़ रही है उसे भी देखा जाए। सन् १६१८ मे सारे देश मे

१०५६००० १६५१ मे
८३६२०००० १६६१ मे
१०७२८००० और १६७१
१०४२०००० है। कुछ प्रदेशो मे इनका प्रतिशत इस प्रकार है नागालैण्ड, ६७ ८, तमिलनाडु २०, मेघालय ४७, गोवा, दमन दीव ३१ ८, आसाम २६ ५५, मणिपुर २६ तथा केरल मे २१ प्रतिशत है। इन आकडो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ये सभी राज्य सीमावर्ती हैं इस कारण यह अन्तंराष्ट्रीय राजनीति का ही खेल खेला जा रहा है जिससे यह देश पुन गुलाम हो जाए। ★

डा. सुमन उपकुलपति कानपुर विश्व विद्यालय को सम्मानित किया गया

प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय की पुत्र वधु एव स्वर्गीय प्रो० श्री प्रकाश जी की धर्मपत्नी डा० सुमन का आर्यसमाज स्वरूपनगर के साप्ताहिक अधिवेशन मे रविवार दि० १८ जनवरी को आर्यन बल गेस्ट हाउस मे यज्ञ के पश्चात् सम्मानित किया गया। डा० सुमन ने सामाजिक व व्यवहारिक क्षेत्र मे होने वाली कुरीतियो पर प्रकाश डाला। भूतपूर्व प्रधान श्री जगमोहन खन्ना ने भी उनके सम्बन्ध मे विचार प्रकट किये और सम्मानित किया। डा० सुमन आर्यसमाज स्वरूपनगर के सक्रिय सदस्य है।

श्री सहदेव बेधड़क जी की भजन मण्डली

प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री पृथिवीसिह जी बेधडक के युवा पौत्र श्री सहदेव जी बेधडक आर्यसमाजो मे अपनी जिमदा भजन मण्डली के माध्यम से उत्तरप्रदेश, पजाब हरियाणा तथा राजस्थान मे सतत वैदिक धर्म का पुनीत प्रचार कर रहे हैं और 'पितु पुत्र अनुव्रत' को सार्थक कर रहे हैं। उनसे पत्र व्यवहार इस पते पर किया जा सकता है–
श्री सहदेव बेधड़क ग्राम व पोस्ट शिकोहपुर (जिला मेरठ) उत्तरप्रदेश।

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा आयोजित—

ऋषि बोध पर्व पर विशाल शोभा यात्रा

—सुशील अवस्थी दैनिक 'जागरण' लखनऊ

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ ने ऋषि बोध पर्व पर दिनांक २६-२-८७ को नगर मे एक विशाल शोभा यात्रा निकाली। जिसमें हजारों आर्य नरनारियों, बच्चो, युवक युवतियों ने सोत्साह भाग लिया। जुलूस लगभग एक किलोमीटर लम्बा था।

विभिन्न आकर्षक उपदेशामृत बैनरों व चित्रों से सुसज्जित अनेको ट्रकें शोभा यात्रा मे चल रही थीं। जिन पर स्त्री और पुरुषो की भजन मण्डलियां भजन गाती व नारे लगाती चल रही थीं।

एक ट्रैक्टर ट्राली पर सुसज्जित यज्ञ मण्डप बना था जिसमे मातायें बहनें पवित्र वेद मन्त्रों का उच्च स्वर से पाठ करती हुई यज्ञ करती हुई विराजमान थीं। यह यज्ञ ध्वनि प्राचीन भारत की गौरव गाथा का स्मरण करा रही थी।

जुलूस में आगे हाथी पर ओ३म् ध्वज लिये हुये नगर के वयोवृद्ध विद्वान् वैद्य कुन्दनलाल आर्य विराजमान थे।

उसके पीछे बैण्ड बाजे वाले ऋषि महिमा के गीतो की ध्वनि बजाते गाते चल रहे थे। नगर के सभी आर्य विद्यालयों विशेष कर दयानन्द शिशु मन्दिर, दयानन्द विद्या मन्दिर, शांति ज्योति बालिका विद्यालय, दयानन्द बाल सदन, डी० ए० वी० कालेज एवं बालिका विद्यालय मोती नगर की छात्र-छात्राओं, शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भाग लेकर शोभायात्रा की शोभा को जहां द्विगुणित किया वहीं संकेत दिया कि महर्षि दयानन्द का मिशन तीव्र, तीव्र तर, तीव्रतम रूप से पूर्ण करने के लिए बच्चे और युवा भी सोत्साह बढ़ने को समुद्यत है, बड़ों से बड़ी श्रद्धा से मार्ग दर्शन को प्राप्त करने को समुत्सुक हैं। अनेको स्कूटर, मोटर साइकिलों साइकिलो पर ओ३म् ध्वज लगाये आर्य वीर चल रहे थे।

यात्रा में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी, आचार्य देवव्रत अवस्थी, डा० आनन्द 'सुमन' देहरादून एवं जिला सभा लखनऊ के प्रधान श्री अर्जुन देव महाना मन्त्री श्री मदन मोहन जोशी, संयोजक श्री रेवतीरमण रस्तोगी, श्री विश्वम्भर दयाल, गुप्त सहित नगर की सभी आर्यसमाजो के अधिकारी व सभासद सोत्साह ऋषि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने का संकल्प लेते हुए चल रहे थे।

शोभा यात्रा ठीक १-३० बजे से श्रीमद्दयानन्द बाल सदन मोती नगर से आरम्भ होकर डी० ए० वी० कालेज, नाका, गणेशगंज, फतेह गंज, अमीनाबाद बाजार घूमकर मौलवीगंज होती हुई ठीक ४-३० बजे रकाबगंज मे नगर आर्यसमाज में समाप्त हुयी और वहाँ जिलासभा प्रधान श्री अर्जुनदेव महाना की अध्यक्षता मे एक सार्वजनिक सभा आयोजित की गयी जिसमें डा० आनन्द सुमन सहित अनेकों वक्ताओं ने महर्षि दयानन्द के प्रति कृतज्ञता के भाव व्यक्त करते हुये राष्ट्र निर्माण कारी वैदिक पथ पर चलने का संकल्प लेने का सन्देश दिया।

मार्ग में अनेको स्थानों पर शोभा यात्रा का स्वागत बड़ी ही श्रद्धा से किया गया। जगह-जगह पानी पिलाने की सराहनीय व्यवस्था थी। विशेष रूप से गणेशगंज में श्री रमनलाल अग्रवाल, अमीनाबाद में श्री जायसवाल स्मार्ट शू कम्पनी एवं श्री देशराज मलिक, राज चप्पल स्टोर्स, अरोड़ा अचार वाले, रकाबगंज में आर्यसमाज नगर ने लड्डू, फलों, फुलियों, सौंफ, मिश्री, गरी, इलायची आदि से सबका भरपूर स्वागत किया।

पुलिस की व्यवस्था भी प्रशंसनीय थी। नगर के अनेक पुलिस अधिकारी एवं नगर मजिस्ट्रेट ने भी साथ-साथ चलकर शोभा यात्रा को पूर्ण सफल बनाने मे सहयोग प्रदान किया।

सम्भवतः जिला सभा के अधिकारियों ने नगर के पत्र प्रतिनिधियों एवं दूरदर्शन से विधिवत सम्पर्क नहीं किया क्योंकि समाचार पत्रों के फोटोग्राफर्स एवं प्रायः दूरदर्शन के कैमरामैनो की अनुपस्थिति रही। इससे जन सामान्य तक इस शोभायात्रा का विवरण जो आसानी से पहुंचाया जा सकता था—वह नहीं पहुंचाया जा सका। ★

उत्सव

आर्यसमाज राजा बाजार बड़हा देवरिया का ५४ वां वार्षिकोत्सव बड़े समारोहपूर्वक ११ १२ व १३ मार्च ८७ तीन दिनो तक मनाया जायेगा जिसमें आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान्, उपदेशक व भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

आर्य वीर दल की आवश्यक सूचना

१—आर्यसमाजो के प्रधान—मन्त्री एवं आर्य वीर दल के अधिकारी कार्यकर्त्ताओं की सेवा मे निवेदन है कि जहां आर्य वीर दल की स्थापना प्रशिक्षण, शाखा, शिविर, सम्मेलन करना चाहते हों वे योग्यतम सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रचारक, शिक्षकों के वास्ते निम्न पते पर कृपया सूचित करें वहा भेजे जा सकेंगे।

२—सार्वदेशिक आर्य वीर दल के निर्धारित वीरो, अधिकारियों के पीतल के बैज, केसरिया फौजी (सुभाष केप) टोपी वनवासी, पिछड़ी जन जाति मे प्रचारार्थ वितरित करने हेतु पीतल को सुनहरी व सफेद ओ३म् के सुन्दर लाकिट और आर्य वीर दल का साहित्य इत्यादि निम्न पते से प्राप्त हो सकते हैं। पत्र द्वारा जानकारी प्राप्त करें।

जयनारायण आर्य
उप संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल उत्तरप्रदेश
सराय ग्वाली जयगंज अलीगढ़

नेपाल में वेद प्रचार

स्वामी मोक्षानन्दजी सरस्वती द्वारा नेपाल में वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। १३ से १६ नवम्बर तक मुरलीचौक लक्ष्मीनारायण मन्दिर में तथा २० व २१ नवम्बर ८६ को ग्राम बहुवरनौतन में यज्ञ तथा वेद कथा के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। २२ से २६ नवम्बर ८६ तक गायत्री महायज्ञ रानीघाट बीरगंज मे सम्पन्न हुआ।

प्रचार के अन्तिम चरण मे दो मुसलमान महिलाओं की शुद्धि कर उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया और दो आर्य कार्यकर्ताओं ने, जिनके नाम श्री रामचन्द्र आर्य एवं श्री विश्वनाथ ब्रह्मचारी हैं, वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ग्रहण की।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 40993 ४५६६३
पञ्जीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
फाल्गुन शुक्ल ६
रविवार, ८ मार्च १९८७ ई०

आर्य मित्र

१२१४६—की पुस्तकालयाध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आर्यसमाज स्वरूप नगर कानपुर का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

आर्यसमाज स्वरूपनगर कानपुर का १२ वां वार्षिकोत्सव दिनांक ५–२–८७ से ८–२–८७ तक धर्मशाला आर्यनगर कानपुर के विशाल प्रांगण में अत्यन्त समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रत्येक दिन प्रात काल वृहद वैदिक यज्ञ तथा सायंकाल गायत्री यज्ञ हुए जिसमें प्रतिदिन १० से १५ यजमान सपत्नीक पधारे। यज्ञो का संचालन श्री बसन्त जी के ब्रह्मत्व में श्रीमती स्वदेश धवन के वेदपाठ और व्याख्या के साथ हुआ। चारो दिन प्रात क्रमश ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद के १०० मन्त्रो की प्रतिदिन अतिरिक्त आहुतियां दी गई।

इस वार्षिकोत्सव में स्वामी सत्यानन्द जी, बसन्त जी, आचार्य रमेश चन्द्र अवस्थी (सम्पादक द्वय 'आर्यमित्र') उत्तमचन्द 'शरर' डा० महावीर जी गुरुकुल कांगड़ी, लक्ष्मण कुमार शास्त्री के व्याख्यान, प्रवचन तथा वेदोपदेश हुए और श्री मोहनलाल जी 'पथिक' के भजन हुए।

८–२–८७ को यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् ऋषि लंगर भी हुआ जिसमें सकडो आर्य परिवारो ने भाग लिया। ऋषिलंगर का समस्त व्यय श्री रामलुभाया बजाज, प्रधान आर्यसमाज की पूज्य माता जी ने वहन किया। इस उत्सव के समापन पर 'यज्ञ शक्ति' नामक पुस्तक जो श्री जगतराम अरोड़ा चरिटेबल ट्रस्ट ११३/७६ स्वरूप नगर द्वारा प्रकाशित की गई थी, का निःशुल्क वितरण किया गया। उत्सव को सफल बनाने के लिए श्री प्रधान जी के अतिरिक्त श्री जगमोहन खन्ना, श्रीमती प्रभा मेहता तथा श्रीमती सरला चौधरी का विशेष सराहनीय सहयोग रहा।

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह १५ फरवरी १९८७ में समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ३ ५० अधिक पोस्टेज लगते है इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २५) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८५ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

३७३, १९४०, २४२३ ४४७३, ५७८४ ४७८९, ४७९१, ५४८६, ५९४४, ८५१६, ८७३०, ८०९७, ९१००, ९१०६, ९६०८, ९८०४, ९८०८, ९८१२, ९८२२, ९८३४, १००९१, १००९६ १००९७, ११५११, ११५१४, ११८५३, १२५७६, १२५७८, १२५८८, १२८२०, १२८२४ १२८३१, १२८३४, १२८३८ १२८४०, १२८४३, १३०५२, १३०५३, १३०५४, १३०५६ १३४२२, १३४२५, १३४२६, १३४२८, १३६९९, १३७०० १३७०१, १३७०३, १३७०४ १३७०५ १३७०६, १३७०७, १३७०८, १३७०९, १३७१०, १३७११, १३७१२, १३७१३, १३७१४, १३७१५, १३७१६, १३७१७, १३७१८, १३७१९, १३७२०, १३७२१ १३७२२ १३७२३, १३७२४, १३७२५। विनीत—

—व्यवस्थापक

पुरोहित की आवश्यकता

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा झांसी को संस्कार आदि सम्पन्न कराने हेतु एक पुरोहित की तुरन्त आवश्यकता है वेतन योग्यतानुसार सम्पूर्ण वैदिक कर्म काण्ड में दक्ष जन सम्पर्क करें—

पता—श्री जगदीशचन्द्र चावला मन्त्री
जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा झांसी
द्वारा आर्यसमाज सदर बाजार झांसी

मुनि गुरुदत्त लेखावली

गुरुदत्त एम० ए० का नाम आर्यजगत में विख्यात है। ये मृत्यु के समय महर्षि के निकट थे। उनकी मृत्यु देखकर वे आस्तिक हो गये। उन्होंने बहुत से लेख व पुस्तकें प्रकाशित की, जो अंग्रेजी में छपी थी उसका हिन्दी अनुवाद भगवद्दत्त ने किया। जो १९१८ में राजपाल एण्ड सन्स लाहौर में प्रकाशित हुआ था अब १० वर्ष बाद पुन ये ग्रन्थ कुछ वृहद आकार में प्रकाशित हुआ है पृष्ठ संख्या ३०० मूल्य १५) शीघ्र मगायें।

पुस्तकें मिलने का पता—

पता—वेद प्रचारक मण्डल, करौलबाग, रामजस रोड, दिल्ली-५

श्रीमान् प० आचार्य शिवाकान्त जी उपाध्याय एम० ए० [redacted] माज राजेन्द्रनगर नई दिल्ली से लिखते हैं—

[redacted] थिक प० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी द्वारा लिखित मोक्ष सुख और मानव जीवन ग्रन्थ रत्न को पढ़ा सूत्र रूप में एक साथ मोक्ष सुख पर इतना सुन्दर विवेचन मिलना अत्यन्त दुर्लभ सा है। अत मैं श्री धर्मवीर जी के इस प्रबल प्रयास के लिए उन्हें बधाई देता हूं और जन साधारण से निवेदन करता हूं कि इस अनुपम ग्रन्थ के स्वाध्याय से अपने जीवन को सफल बनायें।

इन सूत्रो के माध्यम से जन कल्याण का जो स्तुत्य प्रयास श्री प० धर्मवीर जी ने किया है उसकी सफलता के लिये मैं परम कृपालु परमात्मा से प्रार्थना करता हूं और सर्वसाधारण को इस ग्रन्थ के स्वाध्याय की कामना करता हूं। यह ग्रन्थ हर कर में हर घर में भेंट करने योग्य है।

शिवाकान्त उपाध्याय
मगलवार पौष बदी १४ संवत २०४३
१०–१२–८६

श्री पूज्य महात्मा दयानन्द जी

संचालक वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून लिखते है।

मोक्ष सुख और मानव जीवन साहित्य दर्शन आदरणीय श्री वेद पथिक प० धर्मवीर जी आर्य झण्डधारी द्वारा लिखित पढ़ने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। श्री झण्डाधारी जी स्वाध्यायशील सज्जन हैं और आर्य साहित्य समुद्र से अद्भुत मोती चुन चुन कर एक सुन्दर गुलदस्ता बनाकर जनता जनार्दन को सौंप रहे है। मैं उनके प्रबल प्रयास की सराहना करता हूं और प० धर्मवीर जी को साधुवाद करता हूं। प्रभु देव इन्हें ऐसी प्रज्ञा बुद्धि देते रहें जिससे उन्होंने आर्य जगत् मानव जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति के सुन्दर सूत्र क्रम बद्ध किये है। जनता इनसे लाभ उठाये यही निवेदन है।

दयानन्द वानप्रस्थी
पौष बदी १५ संवत २०४३
३१–१२–८६

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एम०पी० प्रिंटिंग प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७

घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८५

फाल्गुन शुक्ल १५, रविवार, सम्वत् २०४३ वि० दिनांक १५ मार्च १९८७

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

*

सम्पादक मण्डल—

विक्रमादित्य 'वसन्त'

वेद वारिधि

★

आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड
एक प्रति	६० पैसे

वर्ष ९०

अङ्क ११

प्रभु की अमृत वाणी—

बनो सुमन सम सुगन्धित, बढ़ो आगे जगत महकाने

नू मर्तो दयते सनिष्यन् यो विष्णव उरुगायय दाशत् ।
प्र य सत्राचा मनसा यजात एतावन्तं नर्यमा विवासात् ॥

[वसिष्ठ / विष्णु / निचृत त्रिष्टुप] (ऋ० ७-१००-१)

वासन्ती (आषाढ़ी) नवसस्येष्टि का पर्व जिसे होलिकोत्सव भी कहते है, प्रत्येक वर्ष फाल्गुन सुदि पूर्णिमा को उल्लासपूर्वक मनाया जाता है । आर्य पर्व केवल आमोद प्रमोद के साधन नहीं होते वरन् उनमे आध्यात्मिकता और वैज्ञानिकता का भी सम्मिश्रण होता है । आषाढ़ी शस्य की उपज सब उपजो की श्रेष्ठ होती है अतएव सम्पूर्ण विश्व मे यह आनन्दोत्सव मनाया जाता है । वसन्त की नई ऋतु के परिवर्तन पर अस्वास्थ्य के प्रतिरोधार्थ अग्नि यज्ञों मे जहा यवो को आहुत किया जाता है वहा सामाजिक आधार पर ऊँच-नीच छोटे बड़े के विचार का परित्याग करके स्नेहवश स्वच्छ हृदय से परस्पर मिलन भी होता है अतएव सकल वैर विरोधो को अग्निदेव की साक्षी मे भस्मसात कर दिया जाता हैं और होली को प्रेम प्रसार की छटा से विभूषित किया जाता है ।

पर आज अज्ञानवश इस पर्व के वास्तविक मर्म से अनभिज्ञ होकर गुलाल आदि के स्थान पर ओछे रङ्गो, कीचड आदि का प्रयोग, भाग, धतूरे तथा अन्य मादक द्रव्यो का सेवन, देवर भाभी जीजा साली के पावन सम्बन्धो पर अश्लीलता को बढ़ावा देना मानव को मानवता से दूर ले जा रहा है । मानवता के इस ह्रास को रोकने के लिए तथा उसे सवारने के लिए वेद मानवो को प्रभु का दिव्य सन्देश देता है—

१—(मर्त) मरणशील मानव (एतावन्तम नर्यम्) इतने मर्यकों अर्थात बहुत, सकल मानव समाज को (नु) शीघ्र (आ+विवासात्) पूर्ण रूपेण सुगन्धित करे (य सनिष्यन् दयते) जो त्यागी बनकर दानशील बनें ।

२—(य उरु+गायाय विष्णवे दाशत) जो बहुस्तुत्य सर्वव्यापक के प्रति समर्पित होवे ।

३—(य) जो (सत्राचा मनसा प्र+यजाते) सत्यनिष्ठ मन से प्रयजन करे ।

मानव का सुधार सुमानव ही कर सकता है । सुमानव ही त्यागी बनकर दानशील होता है । दानशीलता की सुप्रेरणा प्रभु से प्राप्त होती है और सुमानव ही सतत साधनाशील होकर प्रकृष्ट रूप से श्रेष्ठतम कर्म करता है ।

मानव समाज मे आज जो दुर्गन्धियां व्याप्त हैं, उन्हे सुगन्धियो मे परिणत करने के लिये सुमानवों को त्यागी, सुसेवक और सुधारक बनना होगा । मानवो के आहार, विचार, आचार और व्यवहार, घृणा, भर्त्सना, कटाक्ष और रोष से नहीं अपितु स्नेह सौहार्द और सहानुभूति से परिवर्तन होंगे । जो कि विश्व सुधारक सर्वव्यापक विष्णु के प्रति सच्चे हृदय से आत्मना समर्पित होंगे, वही सतत साधना से यह परमोत्कृष्ट यज्ञ का सम्पादन कर सकेंगे ।

आर्यो ! इस होलिका पर्व को आनन्दमय बनाने के लिए आज व्रती बनकर विश्व सुधार का पावन सङ्कल्प लो ।

ऋतुराज के आगमन पर उठो आर्यो,
इस भूतल को अब भव्य बनाने।
त्यागी, दानी, व सुकर्मी बनकर,
मानवता से मानव की सेज सजाने ॥

युग प्रवर्तक होकर युग को बदलो,
शान्ति के मधु—गान सुनाने ।
बनो सुमन सम सुगन्धित 'वसन्त',
बढ़ो आगे पुन जगत महकाने ॥

—'वसन्त'

सम्पादकीय

...प्रकाशित है कि दिनांक १५ मार्च से १८ मार्च १६८७ तक (...

—सम्पादक

...रविवार १५ ... १६८७ ...

समता का पर्व होली

होली का उत्सव और उसकी अथवत्ता आकांक्षा यही हो सकती है कि हम सब निवर मैत्रिय भाव से रहे क्योंकि यह हमारे परस्पर सम्मिलन की मैत्रिय की पूरक प्रक्रिया है। अत होली हमारे जीवन मे एकतानता सम्पूर्ण स्वाभाविक मैत्री जीवन शक्ति सचार की प्रतीति एव आचरण की व्यवहारिकता पर उतर कर राष्ट्रीय जीवन मे वो जो सदभाव की अन्तर्निहित आकांक्षा है वह तीव्रता से उदघाटित हो यही तो है होलिकोत्सव की सार्थकता उज्वलता सम्वरता एव अथवत्ता।

होलिकोत्सव के पीछे कुछ ऐतिहासिक तथ्यों और दूसरे शब्द अर्थों पर विचार करने से होली की ये जो जीवन चेतना है कि आज प्रत्येक व्यक्ति परस्पर गले मिल कर अपने राग विद्वेष से विरत हो जाने का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है इसकी विवेचना अत्यधिक विशद हो जायगी। अत होलिकोत्सव की पावन भावदशा को लेकर होलिकोत्सव की आज के सदर्भ मे कितनी प्रासंगिकता है उस पर विचार करना अनिवार्य है।

...मता जब देश मे विभाजन के स्वर अलापने वाले कतिपय राष्ट्रद्रोही गणतन्त्र दिवस का बहिष्कार करने मे न हिचकाते हो समस्त जन शक्ति का प्रतीक राष्ट्रीयध्वज को अवज्ञा कहराने का दुःसाहस करते हो निर्दोष निबल आश्रित व्यक्तियो की ही नहीं अपितु उच्च अधिकारियो की हत्या करने कराने का अभिमान समझने लगे हो अर्थात भारत जब अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्रो के तूफान से जूझ रहा हो तो होलिकोत्सव की महत आवश्यकता किस राष्ट्र भक्त को अनुभव नही होती होगी।

शोषण मूलक अथतन्त्र ने इस समूची राजनैतिक व्यवस्था ने व्यक्ति व्यक्ति के बीच आक्रोश की दरार डाली है पूंजी एव श्रम के प्रति बने आदर से आज व्यक्ति व्यक्ति से क्रूर तिरस्कार का शिकार हुआ है इतना ही नहीं बल्कि उनमे आपसी साझेदारी के स्थान पर उन्हे बेईमानी कालाबाजारी जमाखोरी इत्यादि कु-कृत्य करने को विवश कर दिया है।

वस्तुत इस प्रकार वर्गीकृत बहुपक्षीय साम्प्रदायिक वातावरण मे प्रत्येक राष्ट्रवासी को अपनी सम्पूर्ण जागरूक चेतना से होलि को सब को अन्त आकांक्षा को समझना है उसकी प्रेरणा से सामाजिक जीवन मे पुन मिलन सार भागीदारी के प्रति पवित्र उत्तरदायी होना है होलिकोत्सव की समानता एकतानतामूलक चेष्टा राष्ट्र का प्राण है इसका आभास हमे अपेक्षणीय है। ऊँच नीच छूत अछूत पक्ष विपक्ष सभी अन्तर्विरोधों को निष्पक्ष स्वय मे समेट कर होलिकोत्सव की एक ही आकांक्षा है कि आओ! प्रिये मिलें, मनायें होलिकोत्सव! सबकी सबको समर्पित सम शुभाकांक्षाएं, ऐसा हर्षोल्लास, ऐसा नूतनोत्साह साधुवाद भरा अभिवादन धन्यवाद भरा अनुमोदन, ऐसा हो हमारा होलिकोत्सव।

—मनमोहन तिवारी

संतत अध्ययनशील

श्री शिवपूजन सिंह जी कुशवाहा

—आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०

आर्य मित्र के पाठक एवं आर्य समाज से सम्बन्धित व्यक्ति श्री शिव पूजन सिंह जी कुशवाहा शास्त्री एम० ए० से परिचित है क्योंकि आपके लेख निरन्तर पत्र पत्रिकाओ मे वैदिक दर्शन के सम्बन्ध मे तथा आर्य समाज की गतिविधियों के सम्बन्ध मे प्रकाशित हुआ करते है। कुशवाहा जी अध्ययनशील व्यक्ति है शास्त्री एम० ए० तक की शिक्षा स्वार्जित है वर्षों कानपुर मे रहे एक व्यवसायिक प्रतिष्ठान मे कार्य करते हुए सदैव स्वाध्याय मे लगे रहे प्रचार प्रसार सभा निर्वाचन आदि से दूर रहते हुए स्वमुखी स्वाध्यायी जीवन व्यतीत किया और प्रायः चालीस के लगभग छोटी बड़ी पुस्तको की रचना की। प्रमुख है- अथर्व वेद की प्राचीनता स्वामी दयानन्द जी कृत वेद भाष्यानुशीलन उपनिषदो की उत्कृष्टता दयानन्द की दृष्टि मे यज्ञ वैदिक शासन पद्धति सामवेद स्वरूप वैदिक सिद्धान्त मार्तण्ड ... जीवन (उप ...) ... आदि। श्री कुशवाहा जी ने खण्डन मण्डन इस्लाम मसीहा आदि मतों की तर्कमूलक आलोचना पौराणिक साहित्य श्रीमद् भागवत मे व्याकरण दोष आदि अधिक टक्कर का साहित्य भी प्रस्तुत किया है। ... पूर्व मेरठ कालेज के दर्शन प्राध्यापक डा० राजेन्द्र कुमार गर्ग ने एक पुस्तक प्रकाशित की थी दयानन्द ... पुराण ... तर्क सम्मत उत्तर कुशवाहा जी ने दिया था गर्ग मुख महाचपेटिका।

श्री कुशवाहा अध्ययन करते रहते है यही इनका जीवन का ध्येय है और जो कुछ अध्ययन मनन किया है उसको अपनी रचनाओं द्वारा पाठको तक पहुंचा देने मे ... तथा परोपकारी जैसे पत्रों के आदरणीय सम्पादक ... और दयानन्द वैदिक ... महाविद्यालय सोनीपत के संस्थापक ... को भी शामिल किया है।

अध्ययनशील श्री कुशवाहा जी साधुवाद के पात्र है कि आपने उत्कृष्ट साहित्य समाज को दिया है आप ... साहित्य समादृत हो और अधिक से अधिक आर्य जन उपदेशक भजनीक विद्यार्थी आदि इसका अध्ययन करे तो हितकर होगा। सम्प्रति कुशवाहा जी का सम्पर्क सूत्र- श्री शिव पूजन सिंह कुशवाहा वेद मन्दिर (गोशाला) अशोक सिनेमा के सामने ज्वालापुर।

उठो-संसार रूपी नदी को पार करो

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए०, आर्यसमाज, गोरखपुर]

अध्यात्म सुधा

रीयते संरभध्वं-
मुत्तिष्ठत प्रतरता सखायः ।
अत्रा जहीम अशिवाम् ये असन् ।
शिवान्वयमुत्तरेमाभिवाजान् ॥
अथर्व वेद १२–२–२६

(अश्मन्वती) पत्थरों वाली नदी (रीयते) वेग से बह रही है (संरभध्वं) तुम संवेग से एक मत होकर कार्य करो । (उत्तिष्ठत) उठ खड़े होओ (सखायः) सखा बनकर (प्रतरत) पार कर जाओ (अत्र) यहां (अशिवान्) अशिव विचारों एवं कार्यों को (जहीम) छोड़ जांय (वयम् शिवान् वाजान्) हम कल्याणकारी क्रियाओं को (अभि) सामने रखकर (उत्तरेय) पार उतर जांय ।

जीवन मे सफलता का रास्ता कांटों से भरा हुआ है । असफलता और अवनति के रास्ते मे कोई रुकावट, कोई बाधा नहीं है, किन्तु उन्नति की मंजिल पर जब हम अपने कदम उठाते हैं तो पहला कदम उठाते ही हम पर संकट आने प्रारम्भ हो जाते हैं । इस मंजिल के कष्टों, पीड़ाओं, बाधाओं दुःख और मुसीबतों को जिसने पार कर लिया वह जीवन मे सफल हो जाएगा । इस मन्त्र मे इन्हीं कठिनाइयों को, संसार की वेगवती पत्थरों वाली नदी कहा गया है ।

इस नदी को पार करना है । इसका क्या उपाय है ? वेद ने पहला उपाय बतलाया है 'संरभध्वं' अर्थात् संवेग से एक मत होकर कार्य करो । यदि तुम इस पथरीली नदी को पार करना चाहते हो तो अपने मन मे व्यग्रता, व्याकुलता एवं उस कार्य के लिए, उसकी सिद्धि के लिए संवेग लाना होगा । योग दर्शन मे चित्तवृत्ति के निरोध का प्रमुख उपाय अभ्यास और वैराग्य बताने के बाद कहा है–

तीव्रसंवेगानामासन्नः (समाधि-लाभः) तीव्र संवेग वालों के लिए चित्तवृत्ति का निरोध समीप होता है । संवेग केवल जोश को ही नहीं कहते । संवेग मे विवेक भी होता है । संवेग का मतलब है कि मन को स्थिर रखिए, अपने मन में अदम्य उत्साह को सदा जमाए रहिए । प्रायः होता है कि हम कभी कभी अदम्य उत्साह से किसी कार्य मे लग जाते हैं, पर जब उस कार्य मे बाधा आई तो पीछे हट जाते है अथवा कुछ दिन कार्य करने के बाद सो जाते है या शिथिल हो जाते हैं । वेद का यह मन्त्र कहता है 'उत्तिष्ठत' उठ खड़े होओ । उत्तिष्ठत का अर्थ बड़ा व्यापक है। निद्रा, आलस्य, प्रमाद का त्याग करके काम मे लग जाओ और तब तक कार्य में आराम न लो, जब तक कार्य की सिद्धि न हो जाय । कठोपनिषद २–१–१८ मे भी कहा है 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्नि-बोधत । क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया, दुर्गं पथस्तत् कवयो वदन्ति' उठो, जागो उत्तम पदार्थ प्राप्त करके निरंतर ज्ञान युक्त होओ । यह मार्ग छुरे की तीक्ष्ण और दुर्लंघ्य धारा के समान दुर्गम है ।

आगे वेद ने कहा है कि इस पथरीली (नदी को पार करने के लिए उठो और इसके लिए अपने समान विचार आचारवान् लोगों की मंडली बना लो । यदि समान विचार वालों की एक मंडली या संघ बना लिया जाएगा तो नदी को पार करने में सुविधा होगी । आर्यसमाज ऐसा ही तो समाज है । सच्चे अर्थ मे आर्य बनो ।

तैरते समय, नदी को पार करते समय अपने ऊपर भार रखकर नदी को पार करना कठिन होगा । इसलिए वेद मंत्र कहता है-'अत्राजहीऽ-शिवान् येऽसन्' जो दोष है, अमंगल है, दुरित है उन सबको हम यहीं छोड़ते हैं । काम, क्रोध, मद और लोभ की दुष्प्रवृत्तियां हैं, उन को हम यहीं छोड़ते है । अमंगल और दोष दूर होने पर ही हम कल्याणकारी क्रियाओं को प्राप्त कर सकते हैं अपना भार तैरने से पहले हलका कर सकते हैं ।

अत. संसार रूपी नदी को पार करने के लिए उठो और बढो । आत्म विश्वास, साहस और शांति की पतवार लेकर निकल पड़ो । शिवान्–शिव संकल्पो को लेकर तैरोगे तो इस संसार रूपी नदी को पार कर लोगे । आत्मविश्वास, साहस, कर्तव्य निष्ठा यही सद्भाव है इनको लेकर चलने वाला जीवन मे संसार रूपी नदी पार कर लेता है । याद रखिए, प्रत्येक मनुष्य मे विद्वान्, व्याख्यानदाता, वायुयान चालक, पहलवान्, धनवान, सेना नायक, सब कुछ बनने की शक्ति अन्तर्निहित है । जो व्यक्ति अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लेता है और आत्मविश्वास के साथ उस ओर बढ़ने लगता है तो उसका जागृत आत्म विश्वास उसकी शक्ति को दुगना कर देता है और उसकी सोई हुई शक्ति जाग उठती है तब पथरीली वेगवती नदी पार हो जाती है । याद रखिए–

१–यदि जीवन एक चुनौती है–
तो उसका सहर्ष स्वागत करो ।

२–यदि जीवन एक साहस है–
तो बढ़े चलो, बढ़े चलो ।

३–यदि जीवन एक संघर्ष है–
तो लड़ो रुको नहीं ।
तो लड़ो झुको नहीं ।
लड़ो स्वत्व के लिए ।
लड़ो सत्य के लिए ।
युद्ध अनिवार्य है, मित्र, यही आर्य है ।

४–यदि जीवन एक दुःख है–
तो इसको अपना सौभाग्य कह

५–यदि जीवन एक खेल है–
तो अच्छी तरह खेलो ,

६–यदि जीवन एक दुःखान्त नाटक है–
तो जीवन गति को मोड़ दो

७–यदि जीवन एक रहस्य है–
तो जीवन गुत्थी सुलझाओ ।

८–यदि जीवन एक संगीत है–
तो गाकर जीवन में मधुरता भरो ।

९–यदि जीवन एक अवसर है–
तो मौके की ताक मे रहो ।

१०–यदि जीवन एक स्वप्न है–
तो इसे वास्तविक बनाओ ।

११–यदि जीवन एक यात्रा है–
तो "उठकर नित्य सवेरे
निज नैया का लंगर खोल ।

१२–यदि जीवन एक सौंदर्य है–
तो उसका पान करो सदे ।

१३–यदि जीवन एक वचन है–
तो उसका पालन करो ।

इस प्रकार यह मन्त्र कहता स्वतन्त्रता, सुख और शान्ति [illegible] प्राप्त करना ही पथरीली नदी [illegible] पार करना है । स्वावलम्बन, आत्म-निर्भरता, साहस ही सम्बल हैं स्वतन्त्रता ही जीवन का लक्ष्य है जहां स्वतन्त्रता होती है वहां सु[illegible] है वहा शान्ति रहती है । इसलि[illegible] स्वावलम्बन तथा स्वतन्त्रता [illegible] मार्ग अपनाइए । यही वेदोपदे[illegible] है । ★

दो बातें सदैव याद रखें

—श्रीमती सन्तोष महाजन
५६५ क/२८ स्नेह नगर लखनऊ

असतोमा सद्गमय। तमसोमा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतमगमय। हे प्रभो! हमे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धेरे से प्रकाश की ओर ले चलो तथा मृत्यु से अमृत की ओर चलो।

निरन्तर सत्सग मिलते रहने से मे जोजान सकी दो बातें इसलेख के माध्यम सेलिखरही हू ताकिअपनी सुनी हुईपुरानी बातोको दोहरा सकू स्वय अपने मे ढाल सकू। पवित्र बन सकू। इस मे मेरा अपना कुछ भी नहीं, सब विद्वानो से ही सुना हुआ है। बहुत समय से लगभग चालीस वर्ष से मुझ आर्य समाज के सत्सगो मे जाने का अवसर प्राप्त हुआ सत्सग अच्छा लगा जब जब सुनती रही, विचार पवित्र होते रहे।

बातें तो सब वही पुरानी सी जो पहिले सुनी हुई थी। परन्तु रोज रोज नयी ही लगती रही। सुनते-सुनते जैसे जैसे समय बदला वैसे वैसे ही विचार बदलते गए। दो बातें मेरे मन को बडी अच्छी लगीं। वे ये थी पहली बात है मृत्यु कोनभूलना मृत्यु तो सामने खडी है यह अनुभूति रखना। मृत्यु केभय से कर्तव्य निष्ठाबढती है।आलस प्रमाद दूर होताहै कितनी आश्चय की बातह कहम प्रतिदिनकहीन कहीं मृत्यु को आते देखते है पर फिर भूल जाते कि यह मृत्यु हमे भी आनी है। उनकी बात तो छोडिए जिनको राम का कुछ ज्ञान नही। परन्तु जब ऐसे मनुष्यो को जो बडे बडे श्रेष्ठ कर्म भी करते है यज्ञ करते जप भी करते है, दान भी करते और भी बडी बडी सेवाए करते परन्तु मोह मे फस कर लोभ की वृत्ति धारण करते ह और ऐसे पाप करने लग जाते है जो उन्हे नहीं करना चाहिए। यज्ञ दान तप श्रेष्ठ कर्म इस लिए किये जाते है कि हमारे अन्दर काम क्रोध आदि वृत्तिया जो भरी है उनका नाश हो और हम अपने जीवन का सुधार कर लें और शान्ति प्राप्त करें। अज्ञानवश हम यह भूल रहे कि यज्ञ आदि करने से धन सम्पत्ति मिल सकती है मगर शान्ति नहीं।

यदि हमने किसी को सताया किसी की आत्मा को दुखाया तो निश्चय ही हमे अपने पर अभिमान आ गया। मौत हमे भी डसेगी। कर्म का दण्ड मिलेगा यह याद नही रहा। हमने गन्दे व्यापार मे, आलस्य प्रमाद मे जीवन का अनमोल समय बिता दिया। पितृ जनो के सपने पूरे न कर सके समय पूरा हो गया मौत ने एक मिनट भी अवकाश नहीं दिया ले गयी उठा कर। प्रभु हमे मुक्ति प्रदान करे, एक जन्म दो जन्म जितने भी लगें, हम अपने जीवन को उन्नति पर लेते जाए मृत्यु सदा सामने है पता नहीं कब आ जाए। इसलिए सब अच्छा करें बुरा नहीं। सबको सुख पहुचाये दुःख नही। इस प्रकार सुपथ पर चल कर और मोक्ष को प्राप्त करें। दूसरी बात है "भगवान को सदा याद रखना भगवान को याद न रखना बडा ही पाप है परमात्मा की स्थिति को अनुभूत करने से पाप की वृत्ति नष्ट होती है। भगवान जो हम सब का पिता है सबका पालक है सरक्षक है। बडे-बडे ऋषि मुनि भी उसकी महिमा को सम्पूर्ण वर्णन न कर सकें तो मै एक तुच्छ बुद्धि वाली उस प्रभु की महिमा का वर्णन कहा तक कर सकती हूँ। परन्तु निश्चय ही यह दृढ विश्वास के साथ लिख रही हू कि हम भगवान को जब अपने पास देखते हैं तो हम कोई भी पाप नहीं कर सकते। उस प्रभु की रचना बडी निराली है, दुनिया का सारा वैभव उसने हमारे लिए फैलाया विविध रग के पत्त-पत्त डाली-डाली फल-फूल पक्षियो को जहा भी देखो प्रभु की रचना की अनुपम छटा दिखायी पडती है।

कहीं गुलाब का फूल खिल रहा है कही उसी के साथ काटे है। कहीं आम का मीठे फल का पेड तो वहीं साथ मे ही नीम का कडवा पेड भी खडा है। कहीं पहाड है कहीं सागर है। दिन मे सूरज की चमक है तो रात मे चादनी की अद्भुत निराली छटा है उसकी। परन्तु हम अपने पर गुमान करके उस भूल जाते है और पापो मे फस जाते हैं। एक कथा है जब गुरु कोअपने शिष्यो को पढ़ा कर विदा करना था तो उनकी परीक्षा लेने उसने अपने तीन शिष्यो को एक-एक खिलौना देकर कहा जाओ एकान्त मे जाकर इसे तोड देना। एक शिष्य तो थोडी ही दूर जा कर दूसरी ओर घूम कर खिलौना तोड कर चला आया दूसरा कुछ दूर गया जहाँ कोई मनुष्य नहीं था खिलौना तोड कर ले आया। तीसरा शिष्य बहुत दूर घूम फिर वापस ले आया और कहने लगा, मै जहा भी गया मुझ सवत्र भगवान अपने सामने नजर आता था कोई भी खाली स्थान नही मिला इस लिए मैं खिलौना न तोड सका वापस ले आया हू गुरु ने उसे परीक्षा में पास की और घर भेज दिया।

निश्चय ही यदि हमने अपने जीवन की नाव खेने मे सामने मृत्यु और अपने को प्रभु की गोद मे बैठा देखने की अनुभूति किया तो हमारा यज्ञ सत्सग स्वाध्याय और जो सभी शुभ कार्य करेंगे वे सब सफल होंगे। हम पाप से बचेंगे। मोक्ष की राह मिलेगी। आवागमन के चक्र से बचेंगे। मानव जीवन सफल होगा।

भवन सहायतार्थ अपील

महानुभाव

जैसा कि आप सबको विदित है उत्तर प्रदेश मे कुमाऊ एक स्वर्गतुल्य स्थानहै। इस स्वर्ग तुल्य स्थान का भवाली प्रवेशद्वार है।भवाली सेअल्मोडा रानी खेत, भीमताल, नौकु चयाताल सातताल, घोडा खाल, रामगढ मुक्तेश्वर, नैनीताल, हल्द्वानी को मार्ग जाते है।

भवाली के मुख्य चौराहे पर आर्य समाज भवन स्थापित है। आर्य समाज का भवन एक महानुभाव बाबू शम्भूनाथ रिटायर्ड तहसीलदार की पुण्य भेंट है। लकडी की इमारत पुरानी होने के कारण जीर्ण शीर्ण अवस्था को प्राप्त है। नीचे की मंजिल मे तीन चार दुकान हैं दूसरी मंजिल जीर्ण अवस्था मे है और वहा एक पुस्तकालय स्थापित हैं। तीसरी मंजिल टूट फूट चुकी है और किसी समय पूर्णरूप से गिर सकती है। आर्य समाजी और आर्य धर्म प्रेमी सज्जनो के एक दो दिवस ठहरने के लिये भी भवाली मे कोई स्थान नहीं है।

इन सब कठिनाईयो को देखते हुए भवाली आर्य समाज की संस्था ने यह निश्चय किया है कि आर्य समाज भवन को तीसरी मंजिल पर एक आधुनिक अतिथि भवन का निर्माण किया जाय जिसमे आधुनिक शौचालय व स्नानगृह आदि सम्मिलित हो ताकि सभी आर्य बन्धु भवाली मे एक दो दिन आनन्द से निवास कर सकें।

भवाली एक छोटा सा उद्योग रहित, पूंजी रहित कस्बा है आर्य समाज व आर्य समाज संस्था भी धनाभाव के कारण आगन्तुक अतिथि गणो का समुचित आदर सत्कार करने मे असमर्थ है। अतएव आर्य समाज भवाली और उसके सभी सदस्यगण आप महानुभावो से प्रार्थना करते है कि आप सब आगे आइये और इस शुभ कार्य मे तन-मन और धन से हमारी सहायता कीजिये ताकि आर्य समाज भवन भवाली का जीर्णोद्धार किया जा सके और आधुनिक अतिथि भवन का निर्माण किया जा सके जहाँ आप सभी पधार कर एक-दो दिवस आधुनिक सुख सुविधा पूर्वक निवास कर इस कुमाऊ रूपी स्वर्ग के प्रवेशद्वार का आनन्द प्राप्त कर सकें।

विनीत

भूमित्र आर्य 	आर्य समाज मन्दिर एव पुस्तकालय जीर्णोद्धार समिति
प्रकाशक —भूमित्र आर्य, मन्त्री, आर्य समाज भवाली

युवावस्था के प्रारम्भकाल तक ही–

"ऋषिवर दयानन्द के अन्तःकरणमें उद्भूत तीन धारणायें"

[आचार्य डा० सुरेन्द्र देव स्नातक, शास्त्री, शिरोमणि, बी० ए० एम० एस०, एम० ए० (संस्कृत तथा हिन्दी) पी–एच० डी०, अवकाश प्राप्त प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, स्नातकोत्तर संस्कृत–विभाग, भोगांव (मैनपुरी)]

ऋषिवर दयानन्द की युवावस्था के प्रारम्भिकाल के समय तक उनके अन्तःकरण मे तीन प्रकार की धारणाओं का सृजन हो चुका था तथा वे तीनो धारणायें क्रमश परिपक्वता की ओर अग्रसर हो रही थी। तत्कालीन ये धारणायें निम्नलिखित रूप मे थी –

१– पुराणों मे वर्णित मूर्ति पूजा आदि धार्मिक प्रणाली के प्रति ऋषिवर की अनास्था सबन्धी धारणा।

२– ससार के प्रति उचित वैराग्य सबन्धी धारणा।

३– उपवास [व्रत] इत्यादि बाह्य साधनों के प्रति रुचि का ही उत्पन्न न होना, साथ ही उनके प्रति अश्रद्धा की धारणा।

इनमे से प्रथम धारणा का उद्रेक तो शिवरात्रि के दिन उनके पिता द्वारा व्रत को कराये जाने और सपूर्ण रात्रि जागरण हेतु आदेश दिये जाने तथा ऋषिवर द्वारा उसके वास्तविक एव सच्चे अर्थों मे पालन किये जाने से हुआ था। इस सबन्ध का विवरण उनके द्वारा स्वय लिखी गई "आत्म कथा' मे निम्नलिखित रूप मे उपलब्ध होता है –

"जब शिवरात्रि आई तब १३ त्रयोदशी के दिन कथा का माहात्म्य सुना के शिवरात्रि के व्रत करने का निश्चय करा दिया। परन्तु माता ने मना भी किया कि इससे व्रत नहीं रहा जायगा तथापि पिताजी ने व्रत का प्रारम्भ करा दिया। और जब १४ चतुर्दशी की शाम हुई तब बडे-बड़े बस्ती के रईस अपने पुत्रो के सहित मन्दिरों मे जागरण करने को गये। वहाँ मैं भी अपने पिता के साथ गया और प्रथम प्रहर की पूजा भी करी, दूसरे प्रहर की पूजा को करके पुजारी लोग बाहर निकल के सो गये। मैंने प्रथम से सुन रखा था कि सोने से शिवरात्रि का फल नहीं होता है। इस लिये अपनी आखो मे जल के छीटें मारके जागता रहा। और पिता भी सो गये तब मुझको शका हुई कि जिसकी मैंने कथा सुनी थी वही यह महादेव है या अन्य कोई? क्योंकि वह तो मनुष्य के समान एक देवता है। वह बैल पर चढ़ता, चलता-फिरता, खाता-पिता, त्रिशूल हाथ मे रखता, डमरू बजाता, वर और शाप देता और कैलाश का मालिक है, इत्यादि प्रकार का महादेव कथा मे सुना था। तब पिता को जगा कर मैंने पूछा "यह कथा का महादेव है या कोई दूसरा। तब पिता ने कहा कि क्यों पूछता है? तब मैंने कहा– "कि कथा का महादेव तो चेतन है वह अपने ऊपर चूहो को क्यो चढ़ने देगा और इसके ऊपर तो चूहे फिरते हैं। तब पिताजी ने कहा कि कैलाश पर जो महादेव रहते हैं उनकी मूर्ति बना और आवाहन करके पूजा किया करते हैं, अब कलियुग में उस शिव का साक्षात् दर्शन नहीं होता इसलिये पाषाणादि की मूर्ति बना के उन महादेव की भावना रख कर पूजन करने से कैलाश का महादेव प्रसन्न हो जाता है। ऐसा सुन के मेरे मन मे भ्रम हो गया कि इसमे कुछ गड़बड अवश्य है।
पिताजी प्रात काल रात्रि के भोजन की सुन के बहुत गुस्से हुये कि तने बहुत बुरा काम किया। तब मैंने पिता से कहा कि यह कथा का महादेव नहीं है इसकी पूजा मैं क्यो करूँ? मन मे श्रद्धा नहीं रही, परन्तु ऊपर के मन पिताजी से कहा कि मुझको पढ़ने से अवकाश नहीं मिलता कि मैं पूजा कर सकूं।"

उक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि ऋषिवर दयानन्द के हृदय मे प्रथम धारणा यह बन गई कि मेरे द्वारा मन्दिर मे देखी गई शिव की प्रस्तर निर्मित मूर्ति वस्तुत 'शिव' नहीं है। यह एक मात्र ढकोसला है। अतएव मैं भविष्य मे इसका पूजन नहीं करूँगा। इसके अतिरिक्त वास्तविक शिव के दर्शनों की उत्कट अभिलाषा उनके मानस मे अङ्कुरित हो गई। परिणाम स्वरूप उन्होने अपने भावी जीवन का पर्याप्त समय इसी की खोज मे लगा दिया। अन्ततोगत्वा उनकी भेंट प्रज्ञाचक्षु गुरुवर विरजानन्द से हो गई। उनके द्वारा ऋषिवर दयानन्द ने सर्वप्रथम यह शिक्षा ग्रहण की कि ऋषिकृत ग्रन्थों का ही अध्ययन करना चाहिए, मनुष्यकृत ग्रन्थो का नहीं। क्योकि मनुष्यकृत ग्रन्थ त्रुटिपूर्ण हुआ करते हैं। अतएव उनके द्वारा ईश्वरी ज्ञान की उपलब्धि होना सम्भव नहीं है। ऋषिकृत ग्रन्थों के अध्ययन से ही उस ईश्वरीय ज्ञान की उपलब्धि की जा सकती है। इसी ज्ञान का अध्ययन कर तुम वास्तविक शिव को समझ सकने मे समर्थ हो सकते हो।

गुरुवर विरजानन्द द्वारा दिये गये उपर्युक्त गुरु ग्रन्थ को प्राप्त कर उन्होंने गुरुवर से सभी शास्त्री ग्रन्थो का अध्ययन कर सम्पूर्ण वैदिक साहित्य का सम्यक् अनुशीलन किया और यह भी समझ लिया कि –

"न तस्य प्रतिमा अस्ति" यजुर्वेद अध्याय ३२/मन्त्र–३ ॥

अर्थात् उस परमात्मा की मूर्ति नहीं है। साराश रूप मे यह कहना उचित ही होगा कि वह परमात्मा मूर्तिधारी नहीं है। और वे इस निष्कर्ष पर भी पहुच गये कि 'शिव कल्याणे' धातु से 'शिव' शब्द सिद्ध होता है जिसका अर्थ है कि जो कल्याण स्वरूप है और जो कल्याण का करने हारा है वही 'शिव' शब्द वाच्य है। [देखिये सत्यार्थ प्रकाश प्रथम समुल्लास के अन्तिम भाग मे]

२– ऋषिवर के हृदय मे उद्भूत हुई द्वितीय धारणा थी ससार के प्रति वैराग्य सबन्धी धारणा। इससे सम्बन्धित घटनाओ को पाठकों ने उनके जीवन चरित्र मे पढ़ा ही होगा। एतत्सम्बन्धी प्रथम घटना के समय उनकी आयु १६ वर्ष की थी। उस समय उनसे छोटी उनकी बहिन को "हैजा" हुआ था। चार घण्टे के पश्चात् ही उसका प्राणान्त हो गया था। इस घटना का प्रभाव उनके हृदय पर बहुत ही बुरा हुआ। वे सोचने लगे कि "ऐसे ही मैं भी मर जाऊँगा, जितने जीव ससार मे है उनमें से एक भी न बचेगा। अतएव उन्होंने सोचा कि कुछ ऐसा उपाय करना चाहिये कि जिससे यह दु ख छूटे और मुक्ति हो।"

परिणामस्वरूप इसी समय से उनके मन मे वैराग्य की भावना जाग्रत हुई। इस घटना के अनन्तर उनकी १९ वर्ष की आयु मे उनसे सर्वाधिक स्नेह करने वाले बडे धर्मात्मा तथा विद्वान् उनके चाचा की भी मृत्यु हो गई। इस द्वितीय घटना के कारण पूर्वोदित उनकी वैराग्य की भावना में अत्यधिक दृढ़ता आ गई। किन्तु उन्होने अपनी दृढ़

(शेष पृष्ठ ७ पर)

धृति—

धर्म का प्रथम लक्षण

—श्री हरिदास ज्वाल
एम० ए०, डिप-इन-एड, साहित्यरत्न
अध्यापक, आर्यसमाज स्कूल, पटना—

धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ धारण करना होता है। धारण करने से तात्पर्य पालना और पोसना भी होता है। जो धारण करने, पालने-पोसने योग्य हो वह धर्म है। किसी वस्तु के स्वभाव यानी प्रकृति को भी धर्म कहते हैं। आग का धर्म जलाना और जल का धर्म शीतल करना है। मनुष्य को दोनो की अहर्निश जरूरत है। इसके अतिरिक्त उसे कई अन्य आवश्यक वस्तुओं की जरूरत पड़ती है जिनके बल पर उसका जीवन बनता है। तात्पर्य यह कि जीवन मेल से बनता है। जीवन ही नहीं प्रत्येक वस्तु और धर्म भी मेल और समन्वय की रीति-नीति का नाम है। धर्म जीवन यापन करने की एक प्रणाली है।

मनु ने धर्म के दस लक्षण बतलाये है।

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौच-
मिन्द्रियनिग्रह ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं
धर्मलक्षणम् ॥

इन मे धृति का नाम सर्वप्रथम आता है। यहा धृति पर बल दिया गया है। यह धृति शब्द भी धृ धातु से बना है। धृति का तात्पर्य है धैर्य मनुष्य के धारण करने वाले श्रेष्ठ गुणो मे से एक है। यह धारण योग्य है। दशविध धर्म बताने की प्रेरणा दूसरे धर्म ग्रन्थो मे भी है। हमारे दोनो हाथो की दस अंगुलियां इस प्रकार की शिक्षा देती हैं। यह दस धर्म ही हुआ। ईसाई धर्म वालो ने भी दस नियम (टेन कमाण्डमेन्ट्स) द्वारा धर्म की शिक्षा दी है। जैनियो मे दशांग धर्म का वर्णन है। महर्षि दयानन्द ने भी दस नियम बना कर आर्यत्व की कसौटी पर खरा उतरने की शिक्षा दी है। इस नियमो को पालन करने वाला ही आर्य समासद बनने का अधिकारी है। मनुष्य दस धर्मों का पालन अपने दस इन्द्रियो के बल पर ही करता है। मनु द्वारा वर्णित दशविध धर्मों मे धृति को प्राथमिकता दी गयी है।

धृति के साथ उत्साह संयुक्त रहता है। ये एक दूसरे के पूरक गुण हैं। बिना उत्साह के धृति नहीं ठहरती, धृति के बिना उत्साह नहीं आता है। उत्साह, उमंग, उल्लास, उद्यम, अध्यवसाय मनुष्य की धृति यानी धारण शक्ति को बढ़ाते हैं। धृति यानी धैर्य धारण करो, ठहरो पकड़ो। उत्साह यानी कर्म चेतना और कर्म-प्रेरणा। उत्साह की बाढ़ जोर-शोर से आती है और चली जाती है। उसके साथ यदि धीरज रहा तो कर्मठता मे निष्ठा आती है, नही तो उत्साह रफू चक्कर हो जाता है और काम बिगड़ जाता है। इस लिए कहा गया है— 'धृत्युत्साह समन्वित'। यह ऐसा गुण है जिसको यदि मनुष्य अपना ले यानी अभ्यासपूर्वक आत्मसात् कर ले तो वह तीनो बल शारीरिक बल, मानसिक बल और आत्मिक बल का राजा हो जाय।

महाराज भर्तृहरि ने कहा है—

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीरा ॥

तात्पर्य, सारी विपत्तियो को मोल लेकर भी धीर लोग न्याय के पथ से विचलित नहीं होते है। सब दशा मे उनकी समान स्थिति होती है। वैसा ही पुरुष धृति का उत्तमोत्तम पात्र है। महर्षि स्वामी दयानन्द ने उपर्युक्त कीर्ति को अपने जीवन मे आत्मसात् कर लिया था। यही तो जीवन का आदर्श है। उसी आदर्श की ओर जो बढ़ता रहता है, वह धीर, वीर और गम्भीर के साथ-साथ धर्मात्मा है। धर्म मे उसकी आस्था निहित है। वेद शास्त्र पढ़ कर लोग पण्डित हो सकते है, युद्ध काल मे निपुण लोग बलिष्ठ हो सकते हैं, लोक व्यवहार और व्यापार मे पारंगत लोग चतुर कहला सकते है, सेवा कार्य मे निपुण लोग समाज सेवी कहला सकते है परन्तु इन सभी परिस्थितियो मे जो धैर्य धारण किए हुए कार्य करता है, वह धर्मात्मा कहलाएगा। यह मानवीय गुण ऐसा है, जिसके अपनाने से अनेक गुण उसमे स्वयमेव समाविष्ट हो जाते है।

धार्मिक

धृति से ही चारों वर्णों और चारो आश्रमों के कार्य चलते हैं। ब्राह्मणो का ब्रह्मज्ञान, क्षत्रियो का क्षात्रधर्म, वैश्यो का व्यापार और व्यवहार, शूद्रो की सेवा और श्रम शक्ति सब धैर्य के बल पर ही राष्ट्र को समुन्नत करते है। इसी प्रकार ब्रह्मचारियो के ब्रह्मचर्य, तप और स्वाध्याय, गृहस्थो के पञ्च यज्ञ और सम्पूर्ण गृहस्थी का व्यवस्था, वानप्रस्थी के तप, ज्ञान और उपासना तथा सन्यासियो की वैराग्य पूर्ण परोपकारिता सब के सब धैर्य के ही सम्बल से समन्वित होकर फलीभूत होते हैं। पसार के चारो वर्णों और चारो आश्रमो की समस्याओ के निदान का भण्डार गृहस्थो के पास है। पर उसी गृहस्थ के पास हैं जो धृति रखता है।

मनुष्य मे पांच कर्मेन्द्रियां और पांच ज्ञानेन्द्रियां होती हैं। इनके अतिरिक्त अन्तःकरण है। इसमे मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त, इन चार वृत्तियो का योग है जिनके द्वारा इन्द्रियों को अपने कार्य करने मे प्रेरणा और बल मिलता है। अन्तःकरण मे जैसे बुद्धि शक्ति है वैसे धृति भी शक्ति है जो प्राण के परिणाम स्वरूप पैदा होती है। बुद्धि शोध शक्ति है और धृति नियमन शक्ति है, जो अपने पर काबू पैदा करती है। प्राण शक्ति के परिणामस्वरूप धृति उत्पन्न होती है। जिसका प्राण जितना बलवान् है उसकी धृति उतनी ही बलवती होती है। धृति को मनोबल का नाम भी हम दे सकते है। वह मन का बल है इस लिए इच्छा शक्ति भी इसे कह सकते है। वेद मन्त्रो मे बार-बार आया है— 'तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु' अर्थात् वह मेरा मन दृढ संकल्प वाला हो। दृढ संकल्प का हेतु मनुष्य मे प्राणवान शक्ति धृति है। यह अन्तःकरण का वस्तु है। इस लिए धृति को हम धर्म का श्रेष्ठ लक्षण मानेंगे।

धैर्य गुण की प्राप्ति अभ्यास से होती है। मन को स्थिर रखने से धैर्य की सिद्धि होती है। यह केवल विचार की वस्तु नही। छोटे छोटे कष्टो को सहने से सहनशीलता बढ़ती है। भोजन समय पर न मिले तो धृति को अपनाइये, बिगड़ कर आग बबूला न हो जाइए इससे मन को शान्ति मिलेगी। मन मे स्थिरता होती है। कष्ट सहने के छोटे छोटे संकल्पो द्वारा हम बड़े-बड़े संकल्पो को दृढतापूर्वक निभा सकते है। जैसे कुछ दिनो तक नमक न खाना, कुछ दिन तक फल और दूध पर रहना, जाड़े मे प्रातःकाल स्नान करने का अभ्यास करना आदि ऐसे काम है जिनके द्वारा धृति प्राप्ति की मौन साधना

(शेष पृष्ठ ६ पर)

"ऋषिवर दयानन्द के अन्तःकरण में उद्भूत तीन धारणायें"

(पृष्ठ ५ का शेष)

वैराग्य की भावना के बारे में अपने माता-पिता से तो कुछ भी न कहा। अपने मित्रों से यह अवश्य कहा कि– "मेरा मन गृहाश्रम करना नहीं चाहता।"

उनके माता-पिता को यह ज्ञात हो गया। अतएव उन्होंने सोचा कि इसका विवाह शीघ्र ही कर देना चाहिये। विवाह तय हो गया। उन्होंने अपने मित्रो से कहा कि मेरे माता-पिता से कह दो कि वे मेरा विवाह अभी न करें। किसी प्रकार उनका विवाह एक वर्ष के लिये रोक दिया गया। इतने मे उनका बीसवाँ वर्ष समाप्त हो गया और इक्कीसवें वर्ष का आरम्भ हुआ।

वैराग्य की दृढ़ भावनाओं मे उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई। उधर माता-पिता उनका विवाह करने को पूर्णतया उद्यत थे। इतने में उनका इक्कीसवा वर्ष भी समाप्त हो गया तथा विवाह की तय्यारी भी पूर्ण कर दी गई। वैराग्य की नित्य प्रति वृद्धि को प्राप्त होती हुई धारणाओ के कारण विवश होकर वे घर से निकल पड़े। इससे पूर्व भी वे एकबार घर से निकल चुके थे किन्तु पकड़ लिये गये थे। अतएव उन्होने घर से पर्याप्त दूर पहुंचने का प्रयास किया और उसमे उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई। अतएव उन्होने अनेक मतमतान्तरों, सम्प्रदायों आदि की वास्तविकता को समझा किन्तु उनकी जिज्ञासा किसी भी प्रकार शान्त न हो सकी। उन्होंने योग की शिक्षा ग्रहण की। योगाभ्यास आदि के साथ उन्होंने अनेक विद्वानों, योगियो का सत्सङ्ग प्राप्त किया और कुछ काल के अनन्तर स्वामी पूर्णानन्द के समीप पहुंच कर सन्यास ग्रहण कर लिया इस समय इनका नाम दयानन्द सरस्वती रखा गया। इस स्थिति में भी उनको दु:खों से छुटकारा प्राप्त होने अथवा मुक्त होने सम्बन्धी यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति न हो सकी। उनकी लगन निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होती रही और एक दिन ऐसा आया कि जब उन्होने ऐसे गुरु को प्राप्त कर लिया कि जिनसे यथार्थज्ञान की प्राप्ति कर अथवा यथार्थज्ञान का श्रवण कर और तदनन्तर मनन तथा निदिध्यासन अथवा चिन्तन कर अमर अथवा सांसारिक त्रिविध तापों अथवा दु:खों अथवा कष्टो से छुटकारा प्राप्त करने अथवा मुक्त होने सम्बन्धी सम्पूर्ण साधनो अथवा उपायों को समझ लिया। इस भांति युवावस्था के प्रारम्भिक समय मे उद्भूत हुई उनकी द्वितीय धारणा भी पूर्ण हो गई।

युवावस्था के प्रारम्भिककाल मे ही उद्भूत हुई उनकी तृतीय धारणा भी स्वय ही पूर्ण हो गई। पुराणों की रचना मनुष्यकृत होने के कारण उनका पुराणो पर से विश्वास उठ गया तथा उनमे वर्णित व्रतों, उपवासो आदि की ओर से भी उनका ध्यान पूर्णरूपेण हट गया। अतएव उनके प्रति उनकी अनास्था अथवा अश्रद्धा का हो जाना भी सत्य सिद्ध हो गया।

इस भांति युवावस्था के प्रारम्भिककाल मे जिन धारणाओ का सृजन हुआ था ऋषिवर दयानन्द की वे सम्पूर्ण धारणायें पूर्णता को प्राप्त हुई।

अतएव यह कहा जाना नितान्त सत्य ही है कि महान् पुरुषो के जीवन के प्रारम्भिककाल मे इस प्रकार की धारणाओ का उत्पन्न होना स्वाभाविक ही हुआ करता है।

वैदिक धर्मियों द्वारा मद्यनिषेध पद यात्रा
विसावर में शराब का ठेका समाप्त

विसावर मे शराब के ठेके को हटाने के लिए वैदिक मिशनरी निर्माण केन्द्र वेद मन्दिर मथुरा से आर्य उपप्रतिनिधि सभा मथुरा के तत्त्वावधान मे जिला सभा के प्रधान वैदिक मिशनरी श्री अभय देव जी वानप्रस्थ, वैदिक मिशनरी श्री देवेन्द्र जी आर्य श्री स्वामी नित्यानन्द जी, श्री चरण सिंह जी आर्य (ऊवा गांव) श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य (विसावर) आदि के पुरुषार्थ एव आचार्य श्री प्रेम भिक्षु जी की प्रेरणा से पिछले कुछ समय से हस्ताक्षर अभियान चल रहा था। इसी क्रम में जिला सभा ने मद्य निषेध समिति का निर्माण किया। जिसके सयोजक श्री राजेन्द्र सिंह वर्मा एडवोकेट निश्चित हुए और जन-जागरण के लिए वैदिक मिशनरियों द्वारा पद यात्रा और अन्त मे शराब के ठेके पर धरना एव अनशन आदि का निश्चय किया गया।

इस वैदिक मिशनरी पद यात्रा का आरम्भ 'आर्य समाज बेरी' के उत्सव से हुआ। पद यात्रियो का अभिनन्दन वेद मन्दिर मथुरा पर वसन्तोत्सव के साथ किया गया। ४ फरवरी को पद यात्रा 'दघेंटा' से नगला विधि, सराय दाऊद, बजगढ़, तसीगा, बिलारागढ़ बटोई, मुरंका उमराव, पचावरी, नगला शेखा भरतिया, विधीपुर, नगला मदारी नगला छत्ती होती हुई ८ फरवरी को प्रात विसावर पहुंची। सर्वत्र पदयात्रा का भावविभोर हृदय से स्वागत किया गया। ८ फरवरी को प्रात विसावर मे सभी स्थानो की भांति ग्राम फेरी लगाई गई। दोपहर १ बजे से श्री सरदार सिंह जी की अध्यक्षता में विराट् सभा का आयोजन बीज गोदाम पर हुआ। जिसमे उपर्युक्त गावो की जनता बडी सख्या मे थी। श्री बाबू सिंह जी श्री देवी सिंह जी श्री उदयवीर जी आदि भजनोपदेशको एव वक्ताओं के साथ ही प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नरदेव जी आर्य भी पहुंच गये थे। श्री प्रेमभिक्षु जी के सान्निध्य में एक सगोष्ठी का आयोजन किया गया अर्जुन सिंह, एडवोकेट (सराय दाऊद) ने स्वय को आमरण अनशन के लिये प्रस्तुत किया। श्री ठाकुर लाल जी जिनके भतीजे शराब के ठेके वाली दुकान पर ही कार्य कर रहे थे ने अपने भतीजो को काम करने के लिए मना कर दिया। उन्होने ही श्री भगवान सिंह जी को अपनी विनम्रता से तैयार किया। तथा उन्होने दुकान न देने का सकल्प किया। और श्री ठाकुर लाल जी ने भी दुकान पर ताले लगा दिये। श्री ठाकुर लाल जी और श्री भगवान सिंह जी ने बीसियों गावो से बडी सख्या मे उपस्थित जन समूह मे आकर अपनी प्रतिज्ञाए दोहरायी जयघोषो के साथ इन दोनो को जिला सभा के मन्त्री डा० द्वारिका प्रसाद जी द्वारा मालाएँ पहिनाई गई। आचार्य श्री प्रेम भिक्षु जी ने अपने प्रेरक प्रवचन मे इनका धन्यवाद किया। तथा श्री आचार्य जी एव श्री स्वामी नित्यानन्द जी ने समस्त जन-समूह की ओर से वेद मन्त्रो द्वारा इन्हें शुभाशिष दिया। इस सभा का सचालन श्री देवेन्द्र आर्य ने किया।

—वेद प्रचार मण्डल फैजाबाद के तत्वाधान मे, दिनाक २६ एव २७ फरवरी १९८७ को आर्य समाज राजे सुल्तानपुर मे वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ तथा २८ फरवरी से २ मार्च ८७ आर्य समाज हसवर, ३ एव ४ मार्च आर्य समाज मुबारकपुर, दिनांक ५ मार्च मकदूम नगर, ६ मार्च से ८ मार्च बाबडगंज (लाजपतनगर) ९ मार्च आर्य समाज देवकाली तथा दिनाक १० एव ११ मार्च १९८७ को आर्य समाज सहादतगंज फैजाबाद मे, वेद प्रचार की योजना है यह प्रचार कार्य श्री कामता प्रसाद जी कर्मठ के सयोजकत्व मे सम्पन्न होगा।

स्नेह की वृष्टि करो तुम

★

ले सुधा का कलश कर मे,
स्नेह की वृष्टि करो तुम।
प्रेम से, सान्निध्य से,
सौजन्य की वृष्टि करो तुम ॥

फाग फूला, प्रीति महकी,
वृक्ष पर नव पत्र आये।
भर उमंगे हृदयतल मे,
राग नव ऋतु ने सुनाये ॥

यह मिलन का पर्व है,
आगे बढ़ो, बाँहे पसारो।
ग्रन्थि बन्धन ऐक्य का हो,
मधु सनी वाणी उचारो ॥

हो अगर प्रहलाद पर–
सकट, कहाँ फिर आँच आये।
आज तब नृसिंह बन कर,
कष्ट के कटक सहारो ॥

प्यार के सुन्दर सुमन से,
मानवो की गोद भर दो।
वेद की पावन ऋचा सुन,
धन्य हो सब, मोद भर दो ॥

इस और गुलाल से हो,
मधु मिलन, ऐसा सुहाना।
विश्व जन की दिव्यता को,
मान पाये यह जमाना ॥

आ गया नव अन्न, खेतो मे–
छटा चहु ओर छाई।
झूम कर सारी प्रकृति ने,
आज है 'होली' मनाई ॥

–सावित्री रस्तोगी, जवाहरनगर मेरठ

वन्दना

★

हे दयामय करुणानिधे ! तुम सर्व शक्तिमान हो,
ससार रचते हो सदा, ऐश्वर्ययुत भगवान हो ।१। हे
तुम शुद्ध निर्मल शान्त हो, चेतन निरञ्जन करुणाकर,
सुख वृष्टि करते हो सदा, जैसे कोई घनश्याम हो ।२। हे
सारे मेरे दुर्गुण तथा, दुर्व्यसन मुझसे दूर हो,
दुख दूर कर दो हे प्रभो ! तुम अपार सुख के निधान हो ।३।हे
कल्याण कारक गुण कर्म और शुद्ध मेरा स्वभाव हो,
मेरी आत्मा मे शान्ति दो, प्रभो ! आप मेरे प्राण हो ।४।हे

–ब्र० दयाशकर 'बालादित्य' शास्त्री प्रभाताश्रम, भोलाझाल, (मेरठ)

विवाह संस्कार

श्री राजाराम ओमर कानपुर निवासी के सुपुत्र का विवाह सस्कार वैदिक रीति से २२-१-८७ को वैदिक पुरोहित श्री सूर्यप्रकाश जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। विवाह आदर्श दहेज रहित था। –सवाददाता

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

श्रीमन् सम्पादक जी,

सप्रेम नमस्कार।

मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि राष्ट्रीय स्वाधीनता सग्राम के अग्रणी नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी का २५ दिसम्बर १९८६ को मनाये जाने वाले समारोह (जो बलिदान दिवस के उपलक्ष्य पर हुआ था) मे विशाल जुलूस निकला था और वह लालकिले पर सार्वजनिक सभा के रूप मे परिवर्तित हो गया था। उसका प्रसारण न दूरदर्शन ने ही किया न आकाशवाणी ने। जबकि ईसामसीह आदि के जीवन के वृत्त चित्र, देश विदेश के चर्चों के विस्तृत समाचार एव विस्तृत दृश्य आदि प्रसारित किये गये। ऐसा क्यो किया गया। क्या यह बहुसख्यको आर्यों के प्रति घोर अन्याय नहीं है। मै शासन से अपेक्षा करता हू कि इसकी निष्पक्ष जाच कराकर उचित न्याय दिला सकें। दिल्ली की निजामुद्दीन चिश्ती दरगाह के उर्स का कार्यक्रम, भाषण व कव्वाली आदि का प्रसारण भी विस्तार पूर्वक हुआ था। इस साम्प्रदायिकता युक्त भावना से क्या बहुसख्यको की भावना दूषित नही होती है।

रमेशचन्द्र गुप्ता कक्षा १२ व
कौशलेन्द्र विक्रम इण्टर कालेज प्रयागपुर (बहराइच)

★

प्रिय महोदय,

चरण स्पर्श !

पत्राशय यह है कि मैंने ऋषि दयानन्द कृत 'सत्यार्थ प्रकाश' पुस्तक पढ़ी मुझे बहुत अच्छी लगी। अब तो मैं उसे प्रतिमाह एक बार अवश्य पढ़ता हू तथा मैंने सकल्प लिया कि जीवन भर इस पुस्तक को पढ़ूगा तथा इसको प्रत्येक घर मे पहुचाऊगा। इस उद्देश्य से प्रेरित होकर मै अभी तक चौदह (१४) लोगो को इस पुस्तक को पढ़ने को दिया है वे लोग काफी प्रभावित है। मै वरिष्ठ अफसर से लेकर शिक्षको कर्मचारियो किसानो एव विद्यार्थियो को यह पुस्तक पढ़ने को देता हू यहा तक कि मै अभी तक दयानन्द आनन्दस्वामी, जगदीश्वरानन्द सरस्वती कृत बहुत सारी पुस्तको का भी अध्ययन कर चुका हू तथा प्रत्येक नई पुस्तक पढ़ता हू। –वीरेन्द्र प्रसादसिंह, द्वारा–श्री मथाप्रसाद

गेवाल बिग्हा (बयान पर), पोस्ट–साहमोर तकेया
गया–८०३००१

★

सेवा मे सम्पादक 'आर्यमित्र' लखनऊ

महोदय,

बड़े क्षोभ के साथ हमे कहना पड़ रहा है पिछले महीने हमारे नगर रेणुकूट मे एक महाशय डा० माणिक्यानन्द जी गोसाईगज, फैजाबाद से पधारे थे और वहा पर आश्रम खोलने के लिए विज्ञप्ति के अनुसार– जिसमे महर्षि दयानन्द जी का चित्र बना था, यहा से एक हजार रुपये ४–५ लोगो से मिलकर ले गये थे परन्तु आज तक उनका फिर कुछ पता नहीं चला।

इस प्रकार से छलकार वेष मे धोखाधड़ी करने वालो से बचाने के लिए आर्यमित्र मे प्रकाशित किया जाय। प्रार्थी–

बालधारीसिंह रघुपतिसिंह गजेन्द्रसिंह
प्रधान उपप्रधान
आर्यसमाज रेणुकूट (मीरजापुर)

धर्म का प्रथम लक्षण

[पृष्ठ ६ का शेष]

हम कर सकते हैं। अपनी संकल्प शक्ति को कार्यान्वित करने के लिए प्रयत्नशील होना पड़ेगा। गायत्री मन्त्र के जप करने का अभ्यास और समय बढ़ाते जाना, अर्थ पर विचार करते हुए साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक हवन यज्ञ करने के अभ्यास को नियमित करना। नित्य प्रति स्वाध्याय की आदत डालना ऐसे ही कम है, जिनसे धृति की शक्ति बढ़ती जाती

जिन पुरुषों में धृति की कमी होती है, उनका बोध चाहे कितना भी बड़ा हो, पर वे ज्यादा पुरुषार्थ नहीं कर पाते। उनको कुछ सूझा तो दूसरों को वे समझाते हैं, लेकिन समाज को उनके वचनों पर विश्वास नहीं होता। क्यों नहीं होता? बात यह है कि जिन्होंने बुद्धि बल से बातें बतायीं, लेकिन उन पर अमल करके नहीं दिखाया वैसे पुरुषों के शब्दों पर समाज का विश्वास नहीं होता, फलत असर भी नहीं पड़ता। प्रत्यक्ष अनुभूत नि सृत जो बातें हृदय में उतरती हैं, वे भी कम से कम शब्दों में लोगों के सामने रखी जाएं तो वे तथ्य प्राणवान् होते हैं। उनसे प्राण संचार होते हैं और समाज को बोध देते हैं। यह धृति का काम है।

धृति अन्त करण की शुद्धता से प्राप्त होती है। लोभी, कामी का हृदय शुद्ध नहीं रहता। जो पुरोहित दक्षिणा की मुद्रा ही पर विशेष ध्यान रखता है। जो डाक्टर केवल फीस की राशि पर विशेष ध्यान देता है। वह धृति को खो बैठता है। फलत उसके कार्य असफल हो जाते हैं और वह निन्दनीय हो जाता है। उपदेष्टा को मनसा, वाचा, कर्मणा एक रस होना चाहिए रोगी की सेवा में महिलाओं की धृति अद्भुत करामात दिखाती है। महिलाओं में सहनशीलता अधिक होती है, जो धृति का ही उपलक्षण होता है। उनके सामने सहन करने के प्रसंग भी काफी आते हैं। इससे वे धृति गुण का विकास अधिक कर सकती हैं। परन्तु अपने बच्चे की शल्य चिकित्सा (आपरेशन) जो बच्चे की प्राण रक्षा हेतु डाक्टर करता है, उसे वे देख भी नहीं सकतीं। यह महिलाओं में धृति की हीनता का उदाहरण है। फिर भी गीता के विभूति योग अध्याय में कहा गया है—

कीर्ति श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा।

अर्थात् महिलाओं में कीर्ति, श्री, वाणी, स्मृति, मेधा, धृति और क्षमा इन सात गुणों का समावेश रहता है।

हिंसा और अहिंसा दो विरोधी तत्त्व हैं। दोनों धृति की अपेक्षा रखते हैं। आतंकवादी जब हिंसा की प्रकटता पर उतर आते हैं तो धृति की अत्यन्त आवश्यकता होती है। यह उनका दुष्ट कार्य होता है परन्तु धृति शक्ति के बिना सम्भव नहीं। अहिंसा की भी यही दशा है। विरोधियों के मुकाबले में अहिंसा पर आरूढ़ होना धृति के बल पर ही सम्भव है। किसी का बिना दिल दुखाये, अपना काम साधने में धृति की बड़ी आवश्यकता है। अपनी हानि उठा कर अहिंसा व्रत का पालन करना पड़ता है। यहाँ पर मनुष्य की धृति ही कार्यशील हो सकती है।

दया और आनन्द के सागर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती धृति के अवतार थे। दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द को जब एक बार उन्होंने पुन वैदिक ज्ञान रूपी सूर्य का प्रकाश फैलाने की गुरु दक्षिणा दे दी तो उसे जीवन पर्यन्त धृति और उत्साह के साथ निबाहा। विरोधियों के अपमान और तिरस्कार सहे, लाठी, डंडे और ढेलों का प्रहार सहा, जीवन में सत्रह बार विष पान किया, माता-पिता और गेह का नेह त्यागा, अन्त में प्राणों की आहुति चढ़ायी। मरते समय में भी घोर नास्तिक, उद्भट विद्वान् गुरुदत्त विद्यार्थी को ज्ञान का अमृत पिलाया। इतना ही नहीं आपने प्राण घातक जगन्नाथ को अभयदान देकर मुक्त किया। यह धृति की पराकाष्ठा है। ठीक ही कहा गया है—'महापुरुषों का हृदय वज्र से भी कठोर और कुसुम से भी कोमल होता है। स्वामी श्रद्धानन्द दिल्ली की चांदनी चौक पर ब्रिटिश सरकार के तोप के आगे सीना तान कर आगे बढ़ते गए और अपने सभी स्वयंसेवकों को पीछे कर दिया। मरते वक्त भी अपने कातिल अब्दुल रशीद को अमृत सा जल पिलाया। वीरवर भगत सिंह ब्रिटिश सरकार के कारकुनों पर बम का धड़ाका करके भी अपने स्थान पर धृति के साथ डटे रहे। राम प्रसाद बिस्मिल फांसी के तख्त पर हंसते-हंसते चढ़े। यही है धृति का पालन जिससे मनुष्य धर्म की गद्दी पर आसीन होकर श्रेष्ठ विभूति का अधिकारी होता है। अत धृति श्रेष्ठ धर्म है।

आवश्यक सूचना

—प्रत्येक आर्य समाज के प्रधान एवं मन्त्रियों से विनम्र निवेदन है कि अपनी-अपनी समाज का निर्वाचन जिला सभा से प्रमाणित करवा कर सभा को भेजा करें, जिससे आर्य मित्र में प्रकाशित किया जा सके।

अगर बिना प्रमाणित कोई समाज भेजती है तो उसमें विलम्ब लगना स्वाभाविक है।

—मनमोहन तिवारी मन्त्री

दयानन्द शिशु सदन ब्रह्मपुरी मेरठ में पारितोषिक वितरण समारोह

मेरठ, दिनांक ११/२/८७ को प्रात १० बजे दयानन्द शिशु सदन ब्रह्मपुरी मेरठ का पारितोषिक वितरण समारोह उत्साह पूर्वक मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान प० श्री इन्द्रराज जी थे तथा अध्यक्षता श्री वीरेन्द्र कुमार जी ने की।

सर्वप्रथम मुख्य अतिथि का सम्मान आर्य समाज व उससे सम्बन्धित संस्थाओं के प्रधान तथा प्रधानाध्यापिको, श्री जगदेव शास्त्री श्री हुकमचन्द्र गुप्त, श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त, श्रीमती सरला गर्ग व श्रीमती व्रजेश गोयल ने माल्यार्पण से किया। तदुपरांत स्वागतगान व नन्हे मुन्नों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। प्रबन्धक सदन डा० राजेन्द्र आर्य ने मुख्य अतिथि के सम्मान में सम्मान पत्र पढ़ा। बच्चों के कार्यक्रम से प्रसन्न होकर मुख्य अतिथि ने १००), अध्यक्ष कार्यक्रम ने १०१) तथा प्रबन्ध सदन ने ५०) बच्चों के उत्साह वर्धन हेतु प्रदान किये।

तदुपरान्त मुख्य अतिथि महोदय ने ८५ बच्चों को उनके उत्साह वर्धन हेतु पुरस्कार वितरण किया एवं अपने सुन्दर प्रवचन से बच्चों का मार्ग दर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन डा० राजेन्द्र आर्य ने किया।

स्नेह पर्व होली

★

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

प्रीति भरा यह पर्व होलिका,
दाह करे भय भ्रान्ति भीति का।
प्रेम रंग में रंग कर प्राणी,
सफल बनाये शुभ जवानी।

ऊंच नीच का भेद मिटाकर,
पावनता का पाठ पढ़ा दे।
दानवता का सर्वनाश कर,
मानवता की अलख जगा दे।

घर घर में नित पंचयज्ञ हों,
वायु प्रदूषण सभी नष्ट हों।
अन्नपूर्ण भण्डार सभी हों,
सुख समृद्धि से पूर्ण सभी हों।

दुरित दूर हो भेद रीति का,
फैले प्रकाश सुख शान्ति नीति का।
वेद ज्ञान की फैले धारा
संकल्प सभी हों पूर्ण हमारा।

★

कैसे खेलेंगे वे होली ?

★

जहां चलती पिचकारी कुकरम की,
जलती मानवता की होली।
जो झुलस रहे बारूदों में,
कैसे खेलेंगे वे होली।
जहां कदम कदम ममता की,
चिग्घाड़ अनाथ आहतों की।
जो कंधों पर ढाते लाश फिरें,
कैसे खेलेंगे वे होली॥
जहां लाशें बहुतल के बीच बनीं,
जो घर से बेघर बार हुए।
जो सिसक रहे अपनों के लिए,
कैसे खेलेंगे वे होली।

—देवाप्रसाद पाठक बी. ए., एल. एल. बी.

★

आया होली का त्यौहार

★

भेद-भाव हो दूर धरा से,
मिटे गरीबी, मंहगायी।
जगे जवानों में मानवता—
भरी नवलतम तरुणायी।
जन जन में उपजे फिर व्यापक—
प्रेम-दया व सद् व्यवहार।
आया होली का त्योहार॥

कलुष वृत्तियां सारी जग की,
होली के संग आज जलें।
मनुज त्याग दे द्वेष भावना,
सभी परस्पर गले मिलें।
नव आशा, अभिलाषाओं का—
पुनः धरा पर हो संचार।
आया होली का त्योहार॥

जाति – पांति के, छूत-छात के,
सब मिटें हों कलुषित भाव,
बढ़े सभी का नित्य निरन्तर,
मानवता की ओर झुकाव।
त्याग तपों से, बलिदानों से—
करें मनुजता का शृंगार।
आया होली का त्योहार॥

-राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, एडवोकेट मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर

होली है होली

जब उठी शहीदों की अर्थी,
कटने लगी माता की 'बेड़ी'।
फांसी के फन्दे से अन्तिम,
श्वास ने भारत मां की जै बोली।
मन में तमन्ना शहादत की,
मस्तानों की, दीवानों की।
वतन पे मिटने वालों की,
देखो कैसी होती होली॥
रोशनसिंह, अशफाक उल्ला,
बिस्मिल औ राजेन्द्र लाहिड़ी।
भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु,
ने खेली निज खून की होली।
शीश चढ़ाने की बारी में,
पहला नम्बर मेरा हो।
कभी देश में युवकों की,
ऐसी भी थी टोली!!!!
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्,
बोलती जवानों की टोली।
गुलाल की जगह बरसती गोली,
वही शहीदों की होली॥
जाति, धर्म, रंग-भेद मिटाकर,
सब को गले लगा लो।
गले से निकले एकहि बोली,
होली है होली॥

—ब्रजकिशोर रस्तोगी, ३३-मुर्तजाहुसेन रोड, राजाबाजार, लखनऊ-३

क्या स्वामी दयानन्द त्रैतवादी ही थे ?

(श्री स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती वैदिक प्रचारक, सम्पादक, वैदिक साहित्य प्रकाशन, बाजना, मथुरा, उत्तर प्रदेश)

बिहार प्रदेशीय आर्य सभा के मुख्य पत्र "स्वाध्याय निलय" नामक पत्र मे "प्रकाशित मेरठ निवासी पूज्य स्वामी आत्मानन्द तीर्थ जी महाराज का लेख—"स्वामी दयानन्द त्रैतवादी नहीं थे" को पढ़कर आश्चर्य हुआ। स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने अपने लेख मे ही त्रैतवाद स्वेच्छा से ही स्वीकार कर लिया है। वे अपने ही उक्त लेख मे कई स्थान पर स्वामी दयानन्द को त्रैतवादी सिद्ध कर रहे है। वे स्वामी दयानन्द का उद्धरण देते हुए लिखते हैं कि—सृष्टि रचना के तीन कारण है—प्रथम—निमित्त कारण परमात्मा, द्वितीय—उपादान, कारण प्रकृति—तृतीय—साधारण कारण जीवात्मा है। आगे वे पुन स्वीकार करते है कि प्रत्येक रचना के लिये एव कार्य के लिये—निमित्त कारण, उपादान कारण तथा तीसरा साधारण कारण का होना अत्यधिक आवश्यक है। जब अपने ही लेख के विरुद्ध स्वय स्वामी जी त्रैतवाद को स्वीकार कर रहे हैं। तब समाधान स्वयमेव हो जाता है।

अब स्वामी जी ही सिद्ध करें कि—"काल एव आकाश यदि जड़-प्रकृति का (उपादान कारण का) अग नही है तो यह तत्व किस कारण के गुण व अग है ? इनकी सत्ता 'किस कारण कोटि" के है। क्या महर्षि दयानन्द जी महाराज एव वेद ने कोई सृष्टि का चौथा कारण भी दिया है ? यदि "आकाश एव काल" को जड़ प्रकृति के अतिरिक्त भिन्न तत्व का अग माना जाय तो जगत रचना का कोई चौथा कारण भी मानना पड़ेगा। इस दिशा मे उस चौथे कारण का नाम करण पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने कर ही दिया होगा। कृपया हम जैसे मन्द बुद्धि को चौथा कारण बतायें ताकि हम अपनी भूल को स्वीकार कर सकें।

निष्पक्ष रूप से आर्यों के लिए वेद ही सर्वोपरि मान्य प्रमाण कोटि के आधार ग्रन्थ हैं। इस विषय मे वेद का क्या निर्णय है उसे जानना एव मनना आवश्यक है वेद भी त्रैतवाद का ही पोषक है निम्न प्रमाण प्रस्तुत है—

"द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समान वृक्ष परिषस्वजाते।
तयोरन्य पिप्पल स्वादु अत्ति अनश्नन्नन्य अभिचाकशीति ॥"
(ऋग्वेद—१/१६४/२० तथा अथर्ववेद—६ । ६ । १०)

अर्थात् प्रकृति पीपल के वृक्ष मे दो चेतन पक्षी (आत्मा एव परमात्मा) विराजमान है। इनमे से एक पक्षी जीवात्मा (साधारण कारण) प्रकृति (उपादान कारण) मे फल भोग रहा है, तीसरा चेतन पक्षी (परमात्मा एव निमित्त कारण) केवल साक्षी दृष्टा न्यायाधीशवत् तटस्थ रहता है।

उपरोक्त वेदमन्त्र से त्रैतवाद ही सिद्ध होता है। ठीक इसी प्रकार अथर्ववेद भी त्रैतवाद की पुष्टि करता है। यथा—

"बालात एकम् अणीयस्कम् उत् एक नैव दृश्यते।
ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया ॥"
(१०-८-२५)

अर्थात् बाल से भी सूक्ष्म ऐसा अणुतम तत्व जो अपने स्वाभाविक रूप से जीवात्मा का (साधारण कारण के रूप मे) वर्णन है। दूसरा ऐसा सूक्ष्म तत्व प्रकृति (उपादान कारण) जो मूल रूप मे अदृश्य, अव्यक्त रहता है, जो दिखाई नहीं देता। तीसरा मेरा प्रिय देवता सर्वान्तरयामी परमात्मा के रूप मे वर्णन हुआ है।

इस प्रकार वेद तो सर्वथा त्रैतवाद सिद्धान्त का प्रेरक है नाकि बहुत्ववाद का प्रेरक होवें। आर्यों का नीति प्रेरक ग्रन्थ मनुस्मृति ने वेद की निन्दा करने वाले को नास्तिक कहा है। क्या स्वामी दयानन्द वेद के विरुद्ध मान्यता रखते थे ? कहीं ऐसा तो नहीं कि हम स्वामी दयानन्द के दिये गये निर्णय को अन्योन्य विषय का अन्यत्र दूसरे ही अर्थों मे भ्रम तो नहीं कर बैठे। क्योंकि स्वामी दयानन्द वेदोद्धारक ही थे। वेद विरोधी नहीं। हम आर्यों का दायित्व है कि इस नास्तिक कोटि मे आने से बचें और वेदो के त्रैतवादी दर्शन का महत्व समझें।

हमारी समझ मे स्वामी जी को प्रकृति के दोनो पक्षो का ध्यान रहा। प्रकृति के भी तो दो स्वरूप होते हैं। पहला-अव्यक्त, अदृश्य एव स्वाभाविक मूल रूप मे सूक्ष्म सत्ता मे रहना। दूसरा—इस स्वाभाविक मूल प्रकृति का ही व्यक्त जगत-विकार के रूप मे दृष्टि गोचर हो रहा है इसी को सांख्य मे—सत्त्वरजतम साम्या-वस्था वाली एव त्रिगुणी प्रकृति कहा गया है। साम्यावस्था प्रकृति का वही स्वरूप है कि जिससे प्रकृति के अन्य सूक्ष्म भूत उत्पन्न होते है। इन सूक्ष्म भूतो से प्रत्यक्ष प्रकट दीखने वाला स्थूल जगत बनता है उसी मूल सूक्ष्म इकाई का नाम अदृश्य साम्यावस्था प्रकृति है। आकाश, काल, दिशायें आदि सब इसी सूक्ष्म अदृश्य प्रकृति की मूल इकाई के अन्य-विकार युक्त अग है। अनादि वह सत्ता होती है जो अपने स्वभाव से अपना स्वभाव स्वतन्त्र रख सकें। आकाश, काल एव दिशाओ का प्रलयावस्था मे लोप हो जाता है। इनका लोप हो जाना सिद्ध करता है कि इनकी सत्ता पर अन्य सत्ता का आच्छादन हो जाता है। इस दशा मे आकाश काल एव दिशाओ का अनादित्वता का स्वयमेव लोप हो जाता है। सृष्टि के साथ ही इनका व्यक्त होना ही इनका जन्म मानना होगा। अत इनकी सत्ता प्रकृति से स्वतन्त्र नही है। काल दिशायें एव आकाश उसी मूल प्रकृति तत्व जो त्रैतवाद का अग है—का विकार मात्र है इनका जनक प्रकृति तत्व ही है। त्रैतवाद विरुद्ध लेखनी उठाने के पूर्व निम्न तथ्यो पर विचार अनिवार्य है—

१—आकाश—सृष्टि रचना से प्रकट होना ही इनका उत्पन्न होना है। इससे पूर्व इनकी सत्ता लुप्त रहती है किन्तु ईश्वर द्वारा प्रकृति के रचना चक्र मे आने ही ये प्रकट होते है। प्रकृति के मूल तत्वो को ईश्वर अपनी कौशलिक सृष्टि क्रिया से प्रेरित करता है। तभी उत्पन्न प्रकृति के विभिन्न विकारो के सदृश्य काल आकाश दिशायें आदि भी प्रकट होती है।

२— काल—"कलसंख्याने' से "काल" शब्द बनता है—यह गणनात्मक शब्द है। मात्रात्मक एव गुणात्मक योग भी सृष्टि का गुण है। जो इस काल शब्द सृष्टि व्यवस्था के अंतपरकस्म संयुक्त होता है। इस रचना क्रम मे "काल' को प्रकृति का विकार ही मानना पड़ेगा। गुण सदैव अपने गुणी की सत्ता को प्रकट करने का माध्यम होता है। गुण को गुणी से पृथक किया ही नहीं जा सकता। क्योंकि काल प्रकृति का

(शेष पृष्ठ १२ पर)

क्या स्वामी दयानन्द त्रैतवादी ही थे

(शेष पृष्ठ ११ से आगे)

अभिन्न गुण है साथ ही आकाश एवं दिशायें भी इस काल के समान अपेक्षा कृत संयुक्त विकार हैं। काल कोई ऐसा तत्व नहीं है कि जिसकी सृष्टि रचना से पूर्व सत्ता रहती हो। काल आकाश एवं दिशायें सृष्टि की अपेक्षा से उसके अंगवत प्रकट होते हैं। काल सदैव एक न होने के कारण त्रिकाल, सृष्टिकाल, प्रलयकाल आदि नाम से सृष्टि मे सृष्टि के बाद प्रकट होने वाले शब्द है। जिनकी सत्ता प्रकट एवं विभाजित होती रहती है अर्थात त्रिकाल, प्रलयकाल, सृष्टिकाल सृष्टि पूर्व काल आदि रूपों मे विभाजित रहती है वह कभी भी अनादि सत्ता नहीं हो सकती है। यदि सृष्टि चक्र न होता तो काल नामक विकृत सत्ता भी प्रकट न होती ।

१– त्रैतवाद– इस वाद का अर्थ प्रमुख रूप से ईश्वर, जीव, प्रकृति तक ही सीमित है। प्रत्येक जड़ पदार्थ-प्रकृति का अथवा उपादान कारण का अंग है। प्रत्येक रचनाक्रम मे इन्हीं तीन सत्ताओं का सृष्टि रचना मे महत्व है। इन्हीं तीन को मिलाकर त्रैतवाद कहते हैं। उदाहरणार्थ–

१–जीवात्मा रूपी भोक्ताओ के अभाव में सृष्टि रचना सर्वथा असम्भव है। (साधारण कारण)

२– निर्माता एवं सृष्टिकर्ता के अभाव में सृष्टि सर्वथा असम्भव है। (निमित्त कारण)

३– सृष्टि विषयक ज्ञान तथा सूक्ष्म पदार्थ के अभाव में रचना असम्भव है। (उपादान कारण)

४– इन तीन कारणों के अतिरिक्त अन्य कौन सा सृष्टि सम्बन्धी कारण स्वामी जी को दृष्टिगोचर हुआ, कि जिससे स्वामी महर्षि दयानन्द त्रैतवादी न होकर बहुतत्ववादी सिद्ध आपके द्वारा हो रहे है ?

५– यदि काल आकाश एवं दिशाओ के रूप में स्वामी दयानन्द को बहुतत्ववादी स्वीकार कर लिया जाता है तो निम्न तत्वों को भी अनादि मानना पड़ेगा १–ईश्वर, २–जीव, ३–ईश्वर–जीव का भेद, ४–प्रकृति, ५–प्रकृति–ईश्वर भेद, ६–प्रकृति तथा जीवात्मा का भेद, ७–इन सबके विशिष्ट विभेद भी मानने पड़ेंगे। इस प्रकार से इनके अतिरिक्त भी असंख्य काल्पनिक को भी स्वीकार करना पड़ेगा।

पंजाब शान्ति मार्च अभियान दल का लखनऊ में भव्य स्वागत

पंजाब में आतंकवाद की समाप्ति एवं शांति स्थापना हेतु समस्तीपुर बिहार से श्री मोहन लाल दीवान एवं जिला सभा समस्तीपुर के मन्त्री श्री नवलकिशोर शास्त्री के नेतृत्व में पंजाब शान्ति मार्च अभियान दल दिनांक ४–३–८७ को लखनऊ पहुंचा। दल में दरभंगा प्रमण्डल आर्य सभा के उप प्रधान श्री विश्वम्भर आर्य प्रज्ञा चक्षु भी हैं।

लखनऊ मे जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में लखनऊ की समस्त आर्य समाजों की ओर से दल का भव्य स्वागत किया गया।

आर्य समाज गणेशगंज में एक गोष्ठी का आयोजन भी किया गया। वहां दल के सदस्यों ने अपने अभियान की योजना की चर्चा की।

यह दल अमृतसर स्वर्ण मन्दिर में २३–३–८७ को पहुंचेगा।

बुन्देलखण्ड मण्डल की आर्य समाजों के नाम पत्र

संयोजक बेचारीलाल आर्य २५/२८ (१) हाता प्यारेलाल नगरा, झांसी २८४००३

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, झांसी की योजनानुसार बुन्देलखण्ड मण्डल झांसी, जालौन, बांदा, हमीरपुर एवं ललितपुर जिलों की समस्त आर्य समाजों का बुन्देलखण्ड आर्य महा सम्मेलन का आयोजन दि. १ से ३ नवम्बर, १९८७ तक झांसी के एतिहासिक दुर्ग के क्षेत्र में करने का निश्चय किया गया है। इस आयोजन के अन्तर्गत सामवेद पारायण यज्ञ एवं अन्य सम्मेलनों का आयोजन किया जावेगा। इस आयोजन में आर्य जगत की महान विभूतियों जिनमें प्रमुख सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती महामन्त्री श्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी एवं मन्त्री श्री पं० मनमोहन तिवारी जी, वेद विज्ञानाचार्य पं० वीरसेन जी वेदश्रमी, पं० मदन मोहन विद्या सागर श्री प्राचार्या सावित्री देवी शर्मा आदि के पधारने की आशा है।

इसी क्रम में बुन्देलखण्ड की समस्त आर्य समाजों का इतिहास एवं एक स्मारिका प्रकाशन की भी योजना है जिसमें आर्य समाजों की स्थापना काल से अब तक की विस्तृत विवरण, आर्य समाजों द्वारा संचालित शिक्षा संस्थाओं का इतिहास, प्रमुख और विद्वानों एवं आर्य नेताओं तथा कार्यकर्त्ताओं की जीवन झांकी आदि का समावेश होगा। इस हेतु लिखित सामग्री एवं चित्र ब्लाक आदि संयोजक के पास दिनांक १५ अप्रैल, १९८७ तक भेजे जाने चाहिये।

आयोजन को सफल बनाने हेतु पचास हजार का बजट बनाया गया है। धन संग्रह हेतु नोट छापने की व्यवस्था की जा रही है जिन पर दान प्राप्त किया जावेगा।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र की समस्त आर्य समाजों के प्रधानों/मन्त्री महोदयों से प्रार्थना है कि वे इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग प्रदान करें। एक विशेष बैठक १९ अप्रैल १९८७ को २-३० बजे आर्य समाज शहर, झांसी में होगी जिसमे सभी से पधारने का अनुरोध है।

आर्य जगत

—आर्य समाज बरसरा [बलिया] में दिनांक ३-२-८७ को बसन्तोत्सव पर्व सोल्लास मनाया गया।

—आर्य समाज बहजोई (मुरादाबाद) में दिनांक १३-२-८७ को महर्षि दयानन्द सरस्वती का १६३ वां जन्म दिवस पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

—आर्य समाज गाजियाबाद में ऋषि बोध सप्ताह दिनांक १७ फरवरी से २६ फरवरी तक सोल्लास सम्पन्न हुआ।

ऋषि दयानन्द क १० निदेशक सिद्धांतों से हम विमुख न हों.

(श्री चन्द्रकिरण शर्मा कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०)

आर्य समाज के रचनात्मक कार्यों मे स्वामी दयानन्द जी सरस्वती जी के द्वारा प्रतिपादित १० निदेशक सिद्धान्तो को बाल, युवा, वृद्ध नर नारियो मे पठन, पाठन सामग्री, उपदेश समाचार पत्रो के द्वारा उनके जीवन मे स्थापित कराना मुख्य उद्देश्य है और इसी कार्य मे सहयोगार्थ जिला सभा, प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा का गठन किया गया था। जनता जनार्दन मे भी अभी तक इस रचनात्मक सस्था के प्रति उत्साह ही दृष्टि गोचर हो रहा है फलस्वरूप प्रत्येक तर पर उत्सवो अथवा पर्वो मे मुक्त हस्त से धन जन साधन का सहयोग मिलता रहा है। परन्तु आज साधारण जनता के मुख से एक ही प्रश्न निकल रहा है कि आज आय समाज मे क्रांति की भावना नही रहीं अपितु अपने लक्ष्य के प्रति उदासीनता आ गई है। हम सबको सिद्धात-४ के अनुसार वास्तविकता को स्वीकार करने मे तनिक सकोच नही होना चाहिये, और विचार करने हेतु आतुर होना हम सबका परमकर्तव्य है कि आखिर हमसे कहा भूल हो रही है अथवा हम किस स्थान पर पथ से भटक गये हैं। गम्भीर चिन्तन के बाद एक ही बात सामने आती है कि जिन सिद्धान्तो के मूल्यो को स्थापित कराने के लिये स्वामी जी ने इस रचनात्मक सस्था को जिस आशा और विश्वास के साथ स्थापित किया था आज हम सब मूल विषय से भटक रहे हैं और हममे इस मिशनरी भावना का अभाव सा हो रहा है। हमने सम्पूर्ण कार्य साप्ताहिक यज्ञ, सत्सगो, अन्तरग अथवा साधारण सभा की बैठका तक ही सीमित कर लिया है। लक्ष्य विहीन होकर पदो के लिए झगडने लगे हे अत आज सारा चिन्तन राजनीति से परिपूर्ण हो गया है और रचना का स्थान लगभग समाप्त हो गया है। स्थान-स्थान पर तथा प्रत्येक स्तर पर रचना द्वारा विकास के स्थान पर विनाश मनमुटाव, परस्पर विवाद, अनिमितता, अवैधानिकता, अनैतिकता, उच्छखलता, स्वच्छन्दता, अनुशासनहीनता तथा तीनो प्रकारकी ऐषणाओ ने अपना पूरा अधिपत्य एव साम्राज्य जमा लिया है। फलस्वरूप हम स्वामी दयानन्द जी सरस्वती स्वय वैदिक प्रचार प्रसार की भावना का पूर्ण करने मे अक्षम हो गये है। कृपया शात भाव से विचारे एसा दशा मे क्या हम सब मिलकर इस महा विनाश कारी प्रारम्भ मे बचने का उपाय नहो सोच सकते, यदि अब भी हममे सोचने को शक्ति नहीं है तो हमे अपने को आर्य समाज का सदस्य कहने से लज्जा का अनुभव करना चाहिये। यदि विचार करना अभिष्ट हे तो हमे इस सगठन स्वरूप इस प्रकार बनाना आवश्यक होगा कि आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य एव कार्यकर्ता अपने-अपने स्तर पर स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित १० निदेशक सिद्धाता का प्रचार, प्रसार, उपदेश सगीत, पुस्तको द्वारा साधारण जनता तक पहुचाने का तन-मन, धन से पूर्ण प्रयास करें। अपनी व्यक्तिगत इच्छाओ पर नियत्रण करते हुये सामाजिक इच्छाओ के साथ सामजस्य करे, स्थानीय आर्य समाज, जिला सभा, आय प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक आर्य प्र० सभा इस कार्य मे पूर्णरूपेण सहयोग अजस्र रूप मे देती रहे तो बहुत शीघ्र हो खोई हुई आर्य समाज की प्रतिष्ठा को प्राप्त करने मे सफल होना सम्भव है। अब जिला सभा, आयप्रतिनिधि सभा, आदि को बैठके विवादो के निपटानेमे अपना समय बरबाद न करके रचनात्मक कार्यशैली पर विचार करने का अवसर होना कि क्षेत्र मे कितना कार्य हुआ है, और कौन-कौन से क्षेत्र मे भविष्य मे कितना कार्य होना है। आइये हम सब अपने-अपने मनो को टटोले कि आज हम कहा हैं और क्या करना चाहते हैं।

जिला सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, तथा सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के अधिकारी गण, सदस्य गण इस प्रकार अपनी अपनी योजनायें बनाये कि छोटी इकाई के कार्य मे अधिक से अधिक सहयोग किस प्रकार इन्हे प्रदान कर उपरोक्त १० निदेशक सिद्धान्तो की जनता, जनार्दन के मनो मे स्थापित कराने मे सहायक हो सकते हैं।

श्री निःशुल्क गुरुकुल-महाविद्यालय अयोध्या (फैजाबाद) को दान देनेवाले उदारजनों की सूची

१ दान परमवीर श्री रामविलास जी अग्रवाल श्री कृष्ण कम्पनी बाबोनरोड, कलकत्ता ६०००01 ने गुरुकुल महाविद्यालय के लि १६००/ इ० की ४ बडी दरिया दान दी।

२ दान परमवीर श्री मेवालाल जी सुरेशचन्द्र जी ७६ अमहर्स्ट स्ट्रीट कलकत्ता ६००००६ ने १०००/ मूल्य के १०१ खुर्पा ६ फावडा ताबा दान मे दी।

३-दान परमवीर श्री ईश्वर चन्द्र जी आर्य ८ राजेन्द्र देव रोड कलकत्ता ६००००६ ने ६०००/ मूल्य के आश्रम के ब्रह्मचारियो के लिए १२७ स्वेटर प्रदान किये।

४-दान परमवीर श्री गंगाधर जी ३६ मदनमोहन बर्मन स्ट्रीट कलकत्ता ७ प० पगरक ने ब्रह्मचारियो के लिए २८ गद्दी दिये।

५- दान परमवीर रघुवीर प्रसाद गुप्त २२३/डी विधान सरणी कलकत्ता ७०००0७ ने २० कत्तव्य दर्शन एव इसके पूर्व भी आप कर्तव्य दर्शन दान रूप मे ब्रह्मचारियो के लिए दिया था।

शौलमित्र पाण्डेय प्राचार्य श्री नि शुल्क
गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या, फैजाबाद

आर्य जगत

—आर्य समाज लोकहवा गोण्डा का चतुर्थ वार्षिकोत्सव दिनांक ८ फरवरी से १० फरवरी १९८७ तक हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया।

—आर्य समाज तिलक द्वार मथुरा मे ऋषि बोध पर्व सप्ताह सोल्लास मनाया गया। दिनांक २६-२-८७ को भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया।

—आर्य समाज उसका बाजार बस्ती मे दिनांक ५ फरवरों से ८ फरवरी १९८७ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन, श्रीयुत पं० शिवनारायण जी वेद पाठी के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ।

—आय समाज नेमदार गज (नवादा-बिहार) के तत्वावधान मे, ऋषि बोधोत्सव के क्रम मे निकटवर्ती ग्रामीण क्षत्रो मे व्यापक रूप से वेद प्रचार का काय सम्पन्न हुआ।

—आय समाज गौरही के तत्वावधान मे, जनपद के, विभिन्न आर्य समाजो, जमालपुर, अदन हाट, बरेज आदि मे वेद प्रचार का कार्य सम्पन्न हुआ।

—आर्य समाज शाहजोत (गोण्डा) के मन्त्री श्री ओम प्रकाश आर्य के चि० पुत्र का मुण्डन सस्कार दि० ८-२-८६ को ससमारोह सपन्न हुआ। सस्कार सत्य नारायण द्विवेदी "विजय" ने सम्पन्न कराया।

शुद्धि आन्दोलन

गुरुकुल आश्रम आमसेना द्वारा शुद्धि अभियान

★ ★

आठ सौ से अधिक ईसाई वैदिक धर्म की शरण में ?

६/७/८ फरवरी ८७ को गुरुकुल आमसेना का महोत्सव समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक साधु सन्यासी एव विद्वान् पधारे थे। इस अवसर पर शुद्धि के दो कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए पहला ७ फरवरी को गुरुकुल मे ३६ परिवारो के १५४ ईसाइयो ने स्वेच्छा पूर्वक वैदिक धर्म की दीक्षा ली। पुन. १० फरवरी को कॅंटोपालि (बलागीर) मे १६६ परिवारो के ६७० से अधिक ईसाईयो ने हिन्दू धर्म की शरण ली। दोनो कार्यक्रम उल्लासमय वातावरण मे सम्पन्न हुए। इस अवसर पर श्री पृथ्वीराज शास्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महात्मा श्री प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी (धुरी) श्री ओमानन्द जी (हरिद्वार) आदि ने आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम का सचालन श्री प० विशिकेशन शास्त्री ने अत्यन्त योग्यतापूर्वक किया। इस आयोजन मे सार्वदेशिक सभा से आर्थिक सहायता तथा श्री प्रेम प्रकाश जी से वस्त्रों की सहायता मिली। इस सारे कार्यक्रम के आयोजन का श्रेय श्री स्वामी धर्मानन्द जी आचार्य गुरुकुल आमसेना एव प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा को है। जिनके अथक प्रयत्न से सारा आयोजन सफल हो सका।

★ ★ ★

सिमडेगा अनुमण्डलान्तर्गत श्री रामरेखा धाम मे माघ पौर्णमासी के शुभ अवसर पर श्री देशपाल दीक्षित एव श्री महन्त रामरेखा धाम के तत्वाधान मे दिनाक १२-२-८७ को ३ ईसाई परिवारो के ९ सदस्य पुनः हिन्दू धर्म मे दीक्षित किये गये।

उक्त सदस्यो को हजारो नर-नारियो ने आशीर्वाद प्रदान किया।

★ ★

—आर्य समाज रसूलपुर कर्सा, (बदायूं) के तत्वाधान मे दिनाक ६/२/८७ को यज्ञ एव हवन के पश्चात् एक मुस्लिम युवक तथा युवती ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण कर, वैदिक धर्म मे प्रवेश किया तथा उनका नाम मुहम्मद मुन्ने अली से मुन्ना लाल शर्मा तथा कनसूमन बेगम से कुन्ती देवी रखा गया।

आवश्यक सूचना

सभा के अवैतानिक उपदेशको एव भजनोपदेशकों (दयानन्द संघ) से निवेदन है कि सभा की वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित होने जा रही है, कृपया आप अपना-अपना सक्षिप्त कार्य विवरण ८५-८६ दो वर्षो का १५ अप्रैल, ८७ तक अवश्मेव भेज दें, इसके पश्चात् प्राप्त होने पर प्रकाशित होना सम्भव नहीं हो सकेगा।

—मनमोहन तिवारी मन्त्री

जालन्धर में प्रो० सहगल की हत्या के विरोध में डी० ए० वी० संस्थाएं बन्द

नयी दिल्ली, ३ मार्च डी० ए० वी० कालेज जालन्धर के प्रसिद्ध प्रो०श्री एस०के०सहगलकी आतकवादियों द्वारा हत्या के विरोध मे डी०ए० वी० कालेज प्रबन्धक समिति ने पंजाब के सभी डी० ए० वी० संस्थाओं को छः मार्च तक बन्द रखने के आदेश जारी किये हैं। संतप्त परिवार को २५,००० (पच्चीस हजार) रुपये अनुग्रह राशि दिये जाने की भी घोषणा की है। प्रोफेसर सहगल की हत्या की सभी बुद्धिजीवियो एवं आर्य नेताओ ने घोर भर्त्सना की है।

डी ए वी. कालेज प्रबन्धकर्ता समिति ने केन्द्र तथा पजाब सरकार से मांग की है कि हत्यारो की तुरन्त खोज की जावे तथा डी. ए. वी. सस्थाओ को पूर्ण सरक्षण दिया जावे। ज्ञातव्य है कि डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकर्ता समिति का एक शिष्ट मण्डल गत नवम्बर मास मे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मिला था और इस आशका से उनको पूर्व अवगत करा दिया गया था। इससे स्पष्ट है कि सरकार उनको सरक्षण देने मे असमर्थ रही है।

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० आवश्यक सूचना

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र० द्वारा सचालित धर्म शिक्षा परीक्षा मे सम्मिलित होने वाले विद्यालयो, परीक्षार्थियों को सूचित किया जाता है कि इस वर्ष विद्यालयों मे गृह परीक्षाऍं मार्च के प्रथम सप्ताह मे ही प्रारम्भ हो जायेगी अत· धर्म शिक्षा परिक्षाऍं ८ मार्च १९८७ के स्थान पर २६ अप्रैल १९८७ को होगी जिन विद्यालयो ने परीक्षार्थी सूचियाँ अभी तक न भेजी हो वे १० अप्रैल १९८७ तक अवश्य भेज दें।

इस वर्ष प्राथमिक शिक्षा परीक्षा २० अप्रैल १९८७ से प्रारम्भ होगी।

माधव सिंह मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ० प्र०

आवश्यकता-हिन्दी व्याख्याता

अजमेर के एक मान्यता प्राप्त हायर सेकेण्ड्री विद्यालय के लिए हिन्दी व्याख्याता एम० ए०, कम से कम द्वितीय श्रेणी तथा बी० एड० वेतन शृंखला ८२०—१५५० मे प्रारम्भिक वेतनमय भत्तो रु० १४४०/— पर आवश्यकता है।

आवेदन मन्त्री आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर को शीघ्र भेजें।

उत्सव

(१) आर्य समाज भरथना इटावा का वार्षिकोत्सव दिनाक १८ से २० मार्च १९८७ के मध्य सम्पन्न होगा।

(२) क्षेत्रीय आर्य समाज रामपुर सफेद बाद में दिनांक २० मार्च से २१ मार्च तक क्षेत्रीय आर्य सम्मेलन का आयोजन होगा।

आदर्श विवाह

हरिद्वार निवासी श्री जितेन्द्र कुमार कौशिक पुत्र श्री डा० के० एम० ठक्कर का शुभ पाणिग्रहण संस्कार आयुष्मति सुशीला शर्मा पुत्री श्री केशव राम शर्मा, हरिद्वार के साथ दिनांक १८/२/८७ को वैदिक रीत्यानुसार बिना दहेज सम्पन्न हुआ।

आर्य वीर दल पूर्वी उत्तर प्रदेश कार्य समिति वर्ष १९८७ के लिये

१—संचालक—श्री अवधबिहारी खन्ना, [illegible]
२—सहसंचालक—श्री आर्य मुनि वानप्रस्थी, द्वारा आ स केराकत, जौनपुर
३— " श्री श्यामसुन्दर आर्य, आचार्य नरेन्द्रदेव रोड (बल्देव निवास के बगल मे) फैजाबाद।
४—मन्त्री श्री प्रयागदीन कमलवास, द्वारा आ स वाधमण्डी, सुल्तानपुर
५—उपमन्त्री—श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य, द्वारा जवाहरलाल जी आर्य सर्राफ, केराकत।
६—कोषाध्यक्ष—श्री उमाकान्त आर्य द्वारा प्रमिला वस्त्र भण्डार, मडुआ डीह, वाराणसी।
७—उप संचालक (कमिश्नरी) श्री रमाशंकर आर्य केराकत, नया चौराहा, केराकत वाराणसी।
८—उप संचालक (कमिश्नरी) गोरखपुर श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद आर्य द्वारा आर्यसमाज फूलपुर, आजमगढ़।
९—उप संचालक (कमिश्नरी) लखनऊ—श्री धीरेन्द्रकुमार श्रीवास्तव, आर्यसमाज, सीतापुर।
१०— " " फैजाबाद—श्री सत्यप्रकाश आर्य, प्रवक्ता डिग्री कालेज, अमेठी रामनगर सुल्तानपुर
११— " " इलाहाबाद—श्री हरिश्चन्द्र आर्य, मु० पो० कल्यानपुर, कचरौली घाता फतेहपुर
१२— " " कानपुर—श्री शिवपूजन जी द्वारा आर्यसमाज हरजेन्द्रनगर, कानपुर।
१३—बौ० अध्यक्ष श्री सत्यदेव जी शास्त्री, राजघाट, वाराणसी।
१४— " डा० आनन्द प्रकाश जी, बी० एच० यू० वाराणसी
१५—व्यायाम शिक्षक श्री प० काशीनाथ जी शास्त्री, शाहगंज, जौनपुर।
१६— " श्री रामसेलावन आर्य ग्राम ससेवा, पो० बिंतीसमपुर, फतेहपुर
१७— " श्री हरिश्चन्द्र आर्य द्वारा आ० स० हरजेन्द्रनगर, कानपुर।
१८— " श्री बसन्तसिंह आर्य द्वारा आ० स० बगहा, मीरजापुर
१९—पदेन श्री मनमोहन तिवारी, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
२०— " श्री देवनसिंह, अधिष्ठाता, आर्य वीर दल उ० प्र० ग्राम पो० बगहा, मीरजापुर।
२१—प्रतिष्ठित सदस्य श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर, मीरजापुर।
२२— " " श्री रामकिशोरजी त्रिपाठी द्वारा आ स सुल्तानपुर।
२३— " " श्री प० माताप्रसाद त्रिपाठी, आ स अमुनियाबाग, फैजाबाद।
२४— " " श्री रामगोपाल अ.व द्वारा आ स लल्लापुरा वाराणसी
२५— " " श्री ब्रह्मदेव राय, आर्यसमाज, आजमगढ़।
२६— " " श्री डा० गयाप्रसाद शास्त्री, मोनापुर, कानपुर
२७— " " श्री राजेन्द्रसिंह, बी० २२/१५७ ई० १, विनायका, भेलूपुर, वाराणसी।
२८— " " श्री ब्यासंसिंह, आर्यसमाज, सहतवार, बलिया।
२९— " " श्री जयकरणसिंह, आर्य मण्डल, संचालक कानपुर, देहात ग्राम व पत्रालय कनवापुर, कानपुर देहात।
३०— " " श्री अमरनाथ वर्मा, नवाबगंज, गाजीपुर।
३१— " " श्री मंगलदेव विश्वकर्मा, आ० स० रेलवे कालोनी असुरनपुर, गोरखपुर।

आय-व्यय निरीक्षक—श्री बुद्धदेव आर्य द्वारा आर्यसमाज लल्लापुरा, वाराणसी।

दिनांक १८—१—८७ ई०

अवधबिहारी खन्ना
संचालक आर्यवीर दल पूर्वी उत्तरप्रदेश
वाराणसी

आर्यसमाज रेणुकूट (मीरजापुर) का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

दिनांक १३ से १५ फरवरी १९८७ तक आर्यसमाज रेणुकूट (मीरजापुर) का १७ वां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। १३—२—८७ की दोपहर को नगर मे एक विराट शोभा यात्रा निकाली गई जिसमे महर्षि दयानन्द पूर्व मा० विद्यालय की अध्यापिकाओं तथा विद्यार्थियो ने भी भाग लिया। वृहद वैदिक यज्ञ 'स्वस्ति याग' के रूप मे श्री 'बसन्त' जी द्वारा सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर उनके वेदोपदेशो के अतिरिक्त श्री जयप्रकाश आर्य महोपदेशक हरियाणा के व्याख्यान तथा चौ० सहदेवसिंह 'बेधड़क' मेरठ तथा ओमप्रकाश आर्य भजनोपदेशको के भजन भी हुए।

दि० १६—२—८७ को महर्षि दयानन्द पूर्व मा० विद्यालय का वार्षिकोत्सव भी बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमे श्री 'बसन्त' जी का मुख्य अतिथि रूप मे स्वागत किया गया तथा अभिनन्दन पत्र प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर व्यायाम प्रदर्शन, खेलकूद, मन्त्रपाठ आदि की प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त संगीत के रोचक कार्यक्रम रखे गए तथा शिक्षाप्रद नाटक का भी प्रदर्शन किया गया।

आर्यसमाज ओबरा (मीरजापुर) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज ओबरा का २२ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २६—२—८७ से १—३—८७ तक समारोहपूर्वक मनाया गया। स्वामी मोक्षानन्द जी तथा श्री 'बसन्त' जी के प्रवचन, वेदोपदेश तथा चौधरी बलवानसिंह जी आर्य बुलन्दशहर के भजनोपदेश हुए। प्रतिदिन प्रातः वृहद वैदिक यज्ञ मे 'तपो याग' के चारो वेदो से संकलित वेद मन्त्रो से आहुतियां दी गई यज्ञ का संचालन ब्रह्मा रूप मे श्री 'बसन्त' जी द्वारा सम्पन्न किया गया।

इस अवसर पर चार बच्चो का उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार तथा एक बालक के जन्म दिवस पर वर्षापन संस्कार भी श्री बसन्त जी द्वारा कराये गए।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४०९२ ४५६६६
पंजीकरण सं० एल एलडब्लू/एन पी ०६
फाल्गुन शुक्ल १५
रविवार १५ मार्च १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

१२९४६—श्री पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

ग्रा. कुन्डेसरा तहसील ठाकुरद्वारा मुरादाबाद के तहसील आर्यसम्मेलन मे सभा प्रधान जी का भव्य स्वागत

श्री बत्तूसिह जी द्वारा अपना भवन आर्यसमाज को दान



श्री बत्तूसिह जी एव उनकी धर्मपत्नी

"ग्राम कुन्डेसरा, तहसील ठाकुरद्वारा, जिला मुरादाबाद के तहसील सम्मेलन मे सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का भव्य स्वागत किया गया। उनके साथ श्री विक्रम सिह जी, प्रधान जिला सभा, एव श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य, जिला सभा एव प्रधान आर्यसमाज सम्मस थे। विशाल जनसमूह को सूचित करते हुए उन्होने हिन्दुओ को एकजुट होकर वर्तमान विघटनकारी शक्तियो का मुकाबला करने का आह्वान किया। उन्होंने पंजाब और कश्मीर समस्या पर बोलते हुए वहा राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग की तथा उग्रवाद की समस्या से निबटने के लिए सेना को ये क्षेत्र सौंपने की माग की। तत्पश्चात् श्री बत्तूसिह ने अपना भव्य मकान आर्यसमाज के लिए दान किया। जिसका विधिवत प्रवेश सभा प्रधान जी द्वारा कराया गया। हजारो व्यक्तियो के मध्य सभा प्रधान जी ने पति पत्नी को आशीर्वाद दिया। एवं उनके इस दान की सराहना की।"

भारत भ्रमण



श्री विश्वमित्र मेधावी

गुरुकुल महाविद्यालय सिहमू इलाहाबाद के कुलपति श्री विश्व मित्र मेधावी सम्प्रति भारत भ्रमण पर है वे स्थान स्थान पर भ्रमण करते हुये भारतीय वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए गुरुकुल शिक्षा की पद्धति की आवश्यकता पर जन मानस का ध्यान आकृष्ट कर रहे हैं। उनका भ्रमण निश्चय ही सराहनीय है।

विश्व में सुख शान्ति प्रसार के लिए मात्र वेद का मार्ग ही अनुकरणीय है। जिसका सम्पूर्ण ज्ञान गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से ही सम्भव है।

... आर्य जनता का कर्तव्य है कि वह श्री मेधावी का अपने क्षेत्र मे ... करके प्रचार-प्रसार में पूर्ण योगदान करें। गुरुकुल के लिए अधिकाधिक सहयोग दे। —आचार्य वेदव्रत अवस्थी

नेपाल मे स्वामी मोक्षानन्द जी द्वारा वेद प्रचार

१—दिनाक १३ से १५ जनवरी १९८७ धर्म नगर, पिपरामठ बीरगज नगर पचायत दुर्गा मन्दिर मे सामवेद पारायण महायज्ञ तथा वेदोपदेश हुए। इस यज्ञ का आचार्यत्व श्री रामकृष्ण शास्त्री ने एव यज्ञ का ब्रह्मा पद पूज्य स्वामी मोक्षानन्द जी महाराज ने ग्रहण किया।

२—दिनांक १८ से २१ जनवरी तक बीरगज नगर मे भक्तजनो के गृहो पर यज्ञ एव वेदोपदेश हुये।

मुनि गुरुदत्त लेखावली

गुरुदत्त एम० ए० का नाम आर्यजगत मे विख्यात है। वे मृत्यु के समय महर्षि के निकट थे। उनकी मृत्यु देखकर वे आस्तिक हो गये। उन्होंने बहुत से लेख व पुस्तकें प्रकाशित की, जो अंग्रेजी मे छपी थीं उसका हिन्दी अनुवाद भगवद्दत्त ने किया। जो १९१८ मे राजपाल एण्ड सन्स लाहौर मे प्रकाशित हुआ था अब १० वर्ष बाद पुन ये ग्रन्थ कुछ वृहद आकार मे प्रकाशित हुआ है पृष्ठ संख्या ३००, मूल्य १५) शीघ्र मगायें।

पुस्तकें मिलने का पता—
पता—वेद प्रचारक मण्डल, करौलबाग, रामजस रोड, दिल्ली-५

श्री रमेशचन्द्र जी वानप्रस्थी का संन्यास आश्रम मे प्रवेश



देहली के उद्योगपति श्री रमेशचन्द्र जी वानप्रस्थी अध्यक्ष वेद प्रचार मण्डल ने दिनाक १ फरवरी १९८७ को वानप्रस्थ आश्रम से सन्यास मे प्रवेश किया तथा स्वामी ओमानन्द जी द्वारा सन्यास आश्रम की दीक्षा ग्रहण की। इस अवसर पर, दिल्ली के प्रायः सभी आर्यसमाजों के मत्री एव प्रधान महानुभावो ने उपस्थित होकर, श्री वानप्रस्थी जी का स्वागत किया।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए अमवालबीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप मे एम०पी० प्रिंटिंग प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित,

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८५

चैत्र शुक्ल ७, रविवार, संवत् २०४४ वि० दिनांक ५ अप्रैल १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल—

विक्रमादित्य 'बसन्त'
'वेद वारिधि'

★

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए.

★

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड
एक प्रति	६० पैसे
वर्ष	९०
अङ्क	१३

प्रभु की अमृत वाणी—

संसार का कल्याण ऋषियों तथा ऋषिकाओं के द्वारा होता है, राजनीति के नेताओं द्वारा नहीं

प्रत्यर्धियज्ञानामश्वहयो रथानाम् ।
ऋषि: स यो मनुर्हितो विप्रस्य यावयत्सख: ।।

[विमदऐन्द्र: प्राजापत्यो वा वसुकृधा वासुक्र: / पूषा] (ऋ० १०-२६-५)

आज विश्व में राजनीति का बोलबाला है मानव धर्म का नहीं। जो मानवीय जीवन का एक अङ्ग है, उसे सर्वाङ्ग समझकर, जीवन की प्रत्येक आवश्यकता को उस पर आधारित कर दिया गया है जिसके फल स्वरूप मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसको ही सर्वमान्य समझ लिया गया है। धर्म के नाम पर जो बाह्याडम्बर किए जा रहे हैं, संघर्ष और हिंसाएं की जा रही है उसके मूल में वह कूटनीति है जिसे आज का सभ्य मानव राजनीति की संज्ञा देता है।

वर्तमान राजनीति का आधार है 'विषेन विषं हन्यते' अर्थात् विष से विष को दूर करो, कांटे से कांटे को निकालो, लोहे से लोहे को काटो जबकि वेदानुसार मानव धर्म का उद्देश्य है–'अमृतेन विषं हन्यते' अर्थात् अमृत से विष को दूर करो। जब एक विष को विष से दूर किया जाता है तो उससे अधिक तीव्र विष दिया जाता है और विषों को विष से दूर करने की शृंखला केवल विष की ही मात्रा को बढ़ाती है जबकि अमृत से विष को दूर करना, जल से अग्नि को बुझाना है, स्नेह से द्वेष को दूर करना है और दान वृत्ति से भदानताओं को दूर करना है।

संसार का कल्याण इस प्रकार की विषैली राजनीति से न कभी हुआ है और न कभी होगा। विश्व का हित तो धार्मिक सन्तों, ज्ञानियों, मनीषियों, महात्माओं और ऋषियों ने सदैव किया है और भविष्य में भी ऐसा करने की क्षमता उनमें ही होगी। वेद का यह मन्त्र बतलाता है–

(ऋषि स:) ऋषि वह है (य: यज्ञानाम् प्रति+अधि) जो श्रेष्ठतम कर्मों का प्रतिपादक बनकर (रथानाम् अश्व हय:) [जीवन के] रथों को तीव्रगति से हांकता हुआ (मनु: हित:) मनुष्य का कल्याण कर्ता (विप्रस्य यवयत् सखा) विप्रो के [देवासुर] संग्राम में उनका मित्र है।

ऋषि और ऋषिकाएं संसार का मङ्गल करते हैं क्योंकि उनके ज्ञान लोचन खुले हुए होते हैं। 'ऋषयो मन्त्र द्रष्टार:' ऋषि ही मन्त्रद्रष्टा होते हैं, उनके रहस्यों को जानते है और उनके अनुकूल अपने जीवन रथ को प्रेरित करते हैं। उनके जीवन यज्ञीय होते है। यज्ञो के तुल्य होकर उनकी जीवन गति रमणीय हो जाती है। वे मेधावी विशिष्ट प्रकृष्ट पूरक और पुष्टिकारक बनकर मानव जीवन को सुखी बनाने वाले जिज्ञासुओं और साधकों के सखा बनकर उनके जीवन में, उनसे निर्मित समाजों और राष्ट्रों में चलने वाले सतत देवासुर संग्रामों में उन्हें विजय प्राप्त कराते हैं।

अतएव जिन्हें विश्व के आर्यकरण की चिर साध को पूरा करना है, उन्हे ऋषि और ऋषि का बन कर गतिशील होना पड़ेगा, अपने को आर्यत्व से परिपूर्ण करना पड़ेगा तथा वेद की पावन शिक्षाओं को जीवन में ओत-प्रोत करके अपनी जीवन ज्योति से मानवों के जीवन दीपों को जलाना होगा।

राजनीति की कूटनीतिज्ञता से हो त्रस्त,
आज मानव पाना चाहता है जीवन में त्राण।
वह भटकता है राजनीति की चकाचौंध में,
पर किञ्चितमात्र भी नहीं होता है कल्याण ।।

वेद कहता है चलाओ ऋषि परम्परा को,
जैसे जीवन को चलाते हैं सतत हमारे प्राण।
बनो 'बसन्त' स्वयं ऋषि, घोर साधना से,
उतारो पार सबको, पाओ जीतेजी निर्वाण ।।

—'बसन्त'

ले आंख मीच अन्याय वेख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार ५ अप्रैल १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि सवत् १९७२९४९०८७

मनसा मनांसि गृभ्णामि । हृदयानि वशेषु कृणोमि ।

आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अनुयायियों के विशेष आग्रह पर वेद के प्रचारार्थ, मानवों के आर्य-करण तथा सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य के उद्देश्यों को लेकर की थी। ऋषियों की दृष्टि मे दिव्यता होती है। मानवो की त्रुटियों को वे भली-भांति जानते हैं इसलिए उन्होंने आर्य समाज के संगठन की भावी संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए यह चेतावनी भी दी थी कि आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य किसी नवीन मत का आविष्कार नहीं है अपितु वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिये है और यदि इसमें व्यवस्था ठीक न रखी गयी तो कालान्तर में यह भी केवल एक मत बन कर रह जाएगा।

मै जब वर्तमान परिस्थितियों पर दृष्टिपात करता हूं तो मुझे आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी का उपरोक्त कथन शब्दशः नहीं बरन् अक्षरशः सत्य अनुभूत होता है। आज आप किसी भी अन्य मत के अनुयायी से पूछें कि आर्य समाज क्या है तो आपको केवल यह उत्तर मिलेगा कि यह स्वामी दयानन्द का चलाया हुआ एक मत है। वह कदापि यह नहीं कहेगा कि यह उन आर्यों का संगठन है जो विश्व का वेद के आधार पर आर्यकरण करना चाहते है और जो वेद को मानव का एक मात्र धर्म बना कर, वैदिक संस्कृति की पुर्नस्थापना करके, समस्त संसार के कल्याणार्थ एक परमात्मा की उपासना, परस्पर सौहार्द, एक ध्वज, एक विश्व भाषा अर्थात् वह देव भाषा संस्कृत जिस ने विश्व की समस्त भाषाओं को जन्म दिया है तथा सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य को स्थापित करके इस जगत की सर्वाङ्गीण उन्नति करना है।

आर्य समाज के प्रति इस संकुचित धारणा के लिए यदि निष्पक्ष हो कर सूक्ष्मता से देखा जाए तो स्वयं आर्य समाज के सदस्य ही उत्तरदायी हैं। स्वामी दयानन्द जिस वेद का पुनुर्द्धार चाहते थे, उसकी चर्चा को त्याग कर जब धर्म प्रचार को अधिकांश रूप में केवल स्वामी दयानन्द के गुणगान तक सीमित कर दिया गया है, प्रत्येक विज्ञप्ति, पुस्तक पत्र-पत्रिकाओं में उनके चित्र प्रकाशन को अधिक महत्व प्रदान किया गया है और उनके चरित्र की उपेक्षा की गई है तो जनसाधारण इसके अतिरिक्त और क्या निष्कर्ष निकाल सकता है? मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में आर्य समाज की जो सजीवता साप्ताहिक अधिवेशनों, वार्षिक उत्सवों वेद कथाओं और आर्य पर्व समारोहों में देखी थी, उसके अब कहीं दर्शन नहीं होते। आज इन अधिवेशनों और समारोहों में युवा पीढ़ी के दर्शन दुर्लभ हो गए हैं, केवल अधेड़ और वृद्ध व्यक्ति ही उंगलियों पर गिनी जाने वाली संख्या में आते हैं। विद्वानों का शनैः शनैः लोप हो रहा है, जो जा रहे है, उनका स्थान लेने वाले आगे नहीं आ रहे हैं।

दैनिक अधिवेशनों की क्या कहें, साप्ताहिक अधिवेशनों की भी घोर दुर्दशा है। अग्नि होत्र के समय बड़ी कठिनाई से कुछ व्यक्ति एकत्रित हो पाते हैं, केवल चटपटे व्याख्यानों के श्रवण के लिए उपस्थिति हो जाती है। वार्षिकोत्सव में जहां पहले वेद प्रवचन और सैद्धान्तिक व्याख्यान होते थे, वहा या तो राजनैतिक भाषण होते है या ऋषि दयानन्द का कोरा गुणगान होता है। कहीं-कहीं तो जनता का मनोरंजन करने के लिए हलके-फुल्के चुटकुले सुनाए जाते हैं, गपोड़ पन्थ वर्णित होता है, यहां तक कि तुलसी कृत रामायण जिसे जाल ग्रन्थ की संज्ञा स्वामी दयानन्द ने दी है, उसकी चौपाइयों और दोहों का पाठ किया जाता है, कहीं वाल्मीकि रामायण की चर्चा होती है कहीं गीता और उपनिषद की और इन सब में जिसे प्रमुखता दी जानी चाहिए उस वेद को गौण रखा जाता है। जिस वेद का पढ़ना-पढ़ाना सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म,आर्य समाज के नियमों में वर्णित किया है, वह आर्य समाज के सदस्यों में यदि शून्य नहीं तो न्यूनतम् अवश्य है। जहां कहीं वेद मन्त्रों का पाठ होता है, वहां भी एक संकुचित बत में वह रहता है। न तो मन्त्रों के अर्थों को जानने का प्रयास किया जाता है, आचरण में उतारने की बात तो दूर रही है। यही कारण है कि संगठन सूक्त का पाठ करते हुए भी असंगठित और शान्ति पाठ करते हुए भी अशान्त रहते हैं। ईर्ष्या, द्वेष, दुर्भावना, विरोध, वैमनस्य और संघर्ष ये सब कुपरिणाम वेदवत जीवन न अपनाने के कारण हैं। न्यायालयों में वाद विवाद के अम्बार लगे हुए हैं। शिक्षण शालाएं और मन्दिर राजनीति के अखाड़े बन गए हैं।

यह नितान्त सत्य है कि जब तक आर्यत्व का प्रदर्शन हमारे चरित्रों में नहीं होगा और हम आत्मीयता के सूत्र में बन्ध कर एकात्मता का परिचय नहीं देंगे हमारा प्रसार नहीं होगा। यदि हमारी यह प्रबल आकांक्षा है कि सकल विश्व वेद प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण करे तो हमें स्वयं वेदानुकूल जीवन बनाना होगा। एक वेद मार्गी दूसरों को प्रेरित करते हुए क्या कहता है, वेद के ही शब्दों में इसे जानिए—

अहं गभ्णामि मनसा मनांसि यम चित्तमनु चित्ते भिरेत। मम वशेषु हृदयानि वः कृणोमि यम यातमनुवर्त्मनि एत। अर्थात्—

[अथर्वा। अथर्वाङ्गिरा मनः। सरस्वती]

(अथर्व ३-८-६, ६-९४-२)

(१) (अहम् मनसा मनांसि गृभ्णामि)

मैं मन से मनों को ग्रहण करता हूं।

(२) (मम् वः हृदयानि वशेषु कृणोमि)

मैं तुम्हारे हृदयों को अपने आकर्षणों से वश मे करता हूं।

(३) (मम् चित्तम अनु चित्तेभि आ+इत्)

मेरे चित्त का अनुगमन करते हुए अपने चित्तों के साथ चले आओ।

(४) (मम यातम् अनु वर्त्मा नः आ इत्)

मेरे गमन का अनुगमन करते हुए चले आओ।

यदि हमें विश्व का आर्यकरण करना है तो मन से मनों का ग्रहण करना सीखें। हृदय से हृदयों का सामंजस्य करें जो बिना प्रीति और त्याग के सम्भव नहीं है। जब तक आर्य समाज के सदस्य अपने स्वजीवन का ऐसा सुनिर्माण करके आर्यत्व का प्रत्यक्ष परिचय नहीं देगें, जनसाधारण के चित्त उनके न तो चित्तों का अनुगमन करेंगे और न ही उनके मार्ग का अनुगमन करेंगे। कथनी जब तक करनी का व्यवहारिक रूप नहीं लेगी, हमारी क्रांति और आंदोलन निर्जीव बने रहेंगे, उनमें वह सजीव प्रवाह नहीं आयेगा जो किसी युग के प्रवर्त्तन के लिये आवश्यक होता है।

--वसन्त

अध्यात्म सुधा

ओ३म् कर तल कर पृष्ठे

वैद्य कुन्दन लाल आर्य ५४९/१९२ अर्जुन नगर,
आलमबाग लखनऊ ।

महर्षि दयानन्द ने प्रत्येक मनुष्य के लिये प्रति दिन पाच महा यज्ञ करने परमावश्यक बताये हैं—इनके करने से इस लोक और परलोक—दोनो की सिद्धि होती है । इन पच महायज्ञो मे पहला ब्रह्म यज्ञ और दूसरा देव यज्ञ है । शेष तीन यज्ञ करें या न करें—परन्तु आर्य समाजी सन्ध्या हवन तो करता ही है अर्थात् पहले दो यज्ञ करता ही है । यह बात भी माननी पडेगी कि प्राय अधिकाश लोग यह कहते हैं कि वर्षो सन्ध्या हवन करते व्यतीत हो गये—परन्तु हमे कुछ मिला नहीं । यह बात सत्य है कि उन्हें कुछ नहीं मिला—जब आर्य समाजी कम सख्या मे थे—तो उनका मान सम्मान आदर अधिक था—उनकी बात का काफी प्रभाव होता था—आज हम सख्या मे बहुत आगे हैं परन्तु हमारी अब कोई सुनता नहीं । इस पर यदि ध्यान पूर्वक विचार करें—तो सरलता से इस रोग का निदान और चिकित्सा सामने दिखाई देती है । पहले लोग सन्ध्या हवन करते थे और महर्षि के आदेशा नुसार अपने जीवन को चलाते और यश प्राप्त करते थे । वह लोग सन्ध्या हवन की प्रत्येक क्रिया को श्रद्धा से समझते और करते थे—दिखावा लेश भर भी नहीं था । आओ हम भी विचार करें—कि किस प्रकार सन्ध्या हवन करके हम भी लाभ उठा सकते हैं ।

सर्व प्रथम तो एक सूत्र ऋषि ने हमारे सामने रखा-सन्ध्या हवन करने से पूर्व जल से आचमन करो—अर्थात् पहले अपने अन्दर आहुति दो—बाहिर कुण्ड मे बाद मे देना । अपने आपको समझना-जानना पहचानना यह पहली शर्त है—उस परब्रह्म को प्राप्त करने की । यह जानने के लिये स्वाध्याय—अपने अध्यन और वेद ज्ञान के अध्यन की परमावश्यकता है—अब सरलता से सूत्र हाथ लग गया कि परब्रह्म क प्राप्त करने से पूर्व शब्द ब्रह्म स्वाध्याय का करना परमावश्यक है । महर्षि ने पच महायज्ञ विधि मे लिखा "अथ ब्रह्म यज्ञातर्गत सन्ध्या प्रकरण प्रोच्यते ।।" ब्रह्म यज्ञ को हमने सन्ध्या ही समझ लिया—जब कि सन्ध्या ब्रह्म यज्ञ का एक भाग है । यदि हम स्वाध्याय पूर्वक सन्ध्या करते हैं तो फल इच्छा नुसार अवश्य मिलेगा । सन्ध्या का उद्देश्य है—इच्छानुसार-भरपेट शान्ति को प्राप्त करना—पहले मन्त्र का भाव यह ही है । मेरे अन्दर शान्ति नहीं—मुझे यह शान्ति प्राप्त करना है । मैं अपनी वर्तमान स्थिति से सन्तुष्ट नहीं मुझे इससे ऊपर उठना है तभी मै नर होकर नारायण से मिल सकूंगा—मनुष्य से देव बनूंगा अर्थात् उत्तम पुरुष (मैं) उस परब्रह्मपुरुषोत्तम की गोद मे बैठ सकूंगा—खुदी को भली-भांति जान कर खुदा को जानना—जो इन्द्रियो से तो दिखाई नहीं देता परन्तु इन्द्रिया उसकी शक्ति से कार्य करती हैं—बस इसी चिन्तन का नाम आत्म चिन्तन है—जो सन्ध्या द्वारा सरलता से हो सकता है । चिन्तन शब्द भी रहस्य पूर्ण —महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश प्रथम समुल्लास मे लिखा—"चिति सज्ञाने" ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त करना—सम्यक ज्ञान चिन्तन है । चिन्तन—चि+तन—चि—का अर्थ चिनना चयन करना—जैसे कारीगर ईन्ट पर ईन्ट चिनकर सुन्दर भवन बना लेता है+तन का अर्थ है फैलाव—परमात्मा की शक्ति या कृपा तू ने कितनी प्राप्त की—कितना तू ने उसका विस्तार किया+परमात्मा की प्रत्येक अवस्था (स्टेट एण्ड स्टेज) का ज्ञान प्राप्त करना ही आत्म चिन्तन का लक्ष्य है । महर्षि ने पच महायज्ञ विधि मे लिखा—'सन्ध्या शब्द का अर्थ यह है कि भली-भाति ध्यान करते हैं वा ध्यान किया जाय परमेश्वर का जिसमे, वह सन्ध्या है ।

तो आओ सन्ध्या करें—आत्म चिन्तन करें—अपने लिये शान्ति चाहने वालो पहले अपने आप को देखो पहचानो । सन्ध्या का दूसरा और तीसरा मन्त्र दोनो बडे महत्वपूर्ण मन्त्र है—पहले अपने राज्य का निरीक्षण करो-तो प्रभुके राज्य का निरीक्षण सरल हो जायेगा । परमात्मा की मनुष्य को महत्व पूर्ण सर्वोपरि यदि कोई देन है तो वाणी और पाणि है—परमात्मा ने मनुष्य को ही बोलने का सामर्थ दिया— और उसे ही स्वतन्त्र अपनी इच्छानुसार कार्य करने का अधिकार दिया—और किसी योनि मे यह अमूल्य वस्तु प्राप्त ही नहीं है । जो चिन्तन द्वारा इस वाणी और पाणी-कर-हाथ को जान लेता है—उसे ही सन्ध्या की आनद मिलती है । इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र मे भी भक्त अपने शरीर रूपी राज्य का निरीक्षण करता है—पहले वह वाणी से आरम्भ करता है और कर तल कर पृष्ठ पर पूर्ण करता है— तब वह यश बल का भागीदार बनता है । सब इन्द्रियो का निराक्षण कर जब हाथ पर पहुचा—तो हाथ को फैला कर हथेली को देखा—जैसे आईना [शीशा] को व्यक्ति देखता है । देखा—इस पर रेखायें हैं—यह उज्जवल है—प्रकाशित है या मलिन है—धूमिल है—इन रेखाओ को देखो परीक्षण करो यही योग क्षेम है—किसी चीज को प्राप्त करना—जो अपने पास नहीं है—वह योग है और जो वस्तु प्राप्त की है—उसे सम्हाल कर रखना सदुपयोग करना क्षेम है । तूने क्या प्राप्त करना था क्या प्राप्त किया ? उसे कितना सम्भाल कर रखा? यह ही योग क्षेम है—तुझे प्रभु ने बुद्धि दी है—देख अपनी हथेली को—फिर सोच कर बता—तूने क्या देखा । रेखायें—तेरे कर्म की—प्रत्येक इन्द्रिय के आचरण की कितनी स्पष्ट हैं । सुनार सोने की परख कसौटी पर करता है—हाथ की अगुलियो से सोना पकड कर कसौटी पर कसता है रगडता है—जब तक रेखा स्पष्ट हो नहीं जाती, रेखा स्पष्ट हो गई सोना के खरा खोटा होने का निश्चय हो गया—खोट इसमे मिला है तो कितनी मात्रा मे—यह भी सामने आ गया । इसी तरह तू भी अपने कर्मों की रेखा को आत्म चिन्तन की रगड से स्पष्ट करके देख—तू स्वय इनको देख कर प्रसन्न होता है या भय से कांप जाता है । यदि भय से कापता है तो उठ आगे यतन कर—इसी कमी को दूर कर—अब आत्मा ही तुझको आशीर्वाद देगी तूने अच्छा काय किया—तू प्रसन्न है तो यह तेरे हाथ की सुन्दर रेखायें तुझे प्यारी लगेगी—तू इन कर तल की रेखाओ को देख—जी भर कर देख—बडे प्रेम से देख—अर्थात् अपने किये कर्मों की पडताल कर—स्वय ही निर्णय कर—तेरी आत्मा अब किस दशा मे है—तेरे प्रत्येक कर्म पर तेरी नजर हो—यह है कर तल । दूसरा भाग है कर पृष्ठ—हथेली तेरे सामने है—हाथ की पीठ तेरे सामने नहीं—तुझे यह भी याद रखना होगा कि ससार भी तुम्हारे ऊपर नजर रखे है—दुनिया तुझे किस रूप मे देखती है या तुझ पर हसती है । तेरा उपहास करती है या घृणा करती है । यदि तू इस पृष्ठ पर भी ध्यान नहीं देता तो तेरा चिन्तन एकागी रह जावेगा । तू ने अपने सत्यकर्मो एव प्रयत्नो से जो प्राप्त किया वह योग है—उसे प्राप्त कर दूसरो को उसका समुचित

(शेष पृष्ठ ८ पर)

महात्मा प्रभु आश्रित जन्म शताब्दी पर राष्ट्र भृत् एवं ब्रह्म पारायण यज्ञ सुसम्पन्न

महात्मा प्रभु आश्रित के जन्म शताब्दी महोत्सव पर दिनांक १५/२/८७ से २२/२/८७ तक वैदिक साधन आश्रम रोह तक में १०१ कुण्डों में राष्ट्र भृत् एवं यजुर्वेद ब्रह्म परायण यज्ञ समारोह सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा दयानन्द जी थे। अध्यक्षता स्वामी दीक्षानन्द जी ने की।

१०/२/८७ से १४/२/८७ तक नगर के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभात फेरियां निकाली गई।

१४/२/८७ को मध्याह्न२ बजे से एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गयी जो नगर के मुख्य बाजारों से होती हुई आश्रम परिसर में समाप्त हुई।

यज्ञ मण्डल एवं सभा पंडाल अत्यन्त आकर्षक बने थे। समारोह में वेद सम्मेलन, यज्ञ सम्मेलन व राष्ट्र रक्षा सम्मेलन भी हुये। प्रत्येक कार्यक्रमों में श्रोताओं के अपार जन समूह से पंडाल खचाखच भरा था। १५-२-८७ को स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने ध्वजारोहण किया।

आर्य गुरुकुल एटा एवं गुरुकुल गौतम नगर देहली के ब्रह्मचारियों ने सस्वर वेद पाठ किया। अध्याय समाप्ति पर स्वामी दीक्षानन्द जी उस अध्याय के सम्बन्ध मे बड़ी ही रोचक व वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करते थे।

अभ्यागतों के निवास की व्यवस्था आर्य नगर हरि नगर व सन्त नगर में जो आश्रम के निकट ही थे, की गयी थी। भोजन की व्यवस्था आश्रम की ओर से की गयी थी। प्रायः प्रतिदिन ५००० व्यक्तियों ने भोजन किया। भोजन की वितरण व्यवस्था आर्य वीरदल के स्वयं सेवकों ने बड़ी ही तल्लीनता से की।

समारोह में पं० पृथ्वीराज जी आचार्य राम प्रसाद जी गुरुकुल कांगड़ी, स्वामी मोक्षानन्द जी पं० जैमिनी जी, पं० शिवाकान्त जी उपाध्याय, ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी, पं० यशपाल शास्त्री आचार्य हरिदेव जी, वागीश जी, पं० राम दत्त शर्मा, मीरायति जी, पं०सत्यपाल पथिक एवं यादराम जी पं० जयदेव बतोई वालों ने अपने मनोहर उपदेशों के द्वारा देश को सुखी समृद्ध बनाने के लिए वेद की शरण मे आने और यज्ञ को अपने जीवन का अंग बनाने का सन्देश दिया।

चार ब्रह्मचारियों ने कण्ठाग्र वेद परीक्षा दी जिसमें ३ गुरुकुल गौतम नगर व एक गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के थे चारों ही उत्तीर्ण हुये और उन्हें आश्रम की ओर से प्रत्येक को १०००/– एवं जनता की ओर से भी प्रायः प्रत्येक को १०००/– इस प्रकार प्रत्येक को दो-दो हजार रुपये पारितोषिक दिया गया।

दो ब्रह्मचारियों तथा एक ७५ वर्षीय वानप्रस्थी ने आसन व्यायाम सरिया मोड़ना, थाली फाड़ना आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किये उन्हें भी १०००।– इसप्रकारप्रत्येक को २-२हजार रु.पारितोषिकदियागया।

समारोह में सौ से अधिक किसी वेद के यज्ञ को पूर्ण करने वाले नर नारियों को, किसी वेद संहिता को कण्ठस्थ करने वाले को महात्मा प्रभु आश्रित जी के जीवन काल में सेवा करने वालों या उनकी सन्तानों को एक गर्म शाल एक तांबे की प्लेट और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रत्येक यजमान को सम्पूर्ण यज्ञ पात्रों का सेट, ४ आसन शताब्दी संस्कार की ६ पुस्तकों का सेट भेंट स्वरूप दिया गया। विद्वानों व ऋषियों को भी दक्षिणा के अतिरिक्त पुस्तकों के सेट दिये गये महोत्सव में लगभग पचास लाख रुपये व्यय हुये। जो दानियों ने मुक्त हस्त से प्रदान किया किसी प्रकार की कमी नहीं हुयी। प्रभु की महती दया रही। कहीं किसी भी आगन्तुक को किसी भी प्रकार का असन्तोष दृष्टिगत नहीं हुआ। यज्ञ समारोह का वीडियो कैसेट भी बनाये गये हैं।

—आर्य समाज खेड़ा अफगान सहारनपुर का वार्षिकोत्सव दि. ७ मार्च से ६ मार्च १६८७ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ महात्मा आर्य भिक्षु जी के ओजस्वी उपदेश प्रवचन हुए।

—आर्य समाज भरवा सुमेरपुर (हमीरपुर) का १७ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १ मार्च से ४ मार्च ८७ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ।

—आर्य समाज बांस गांव गोरखपुर का ६३ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १४ फरवरी ८७ से १६ फरवरी ८७ तक भव्य आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ।

आर्य जगत

वैदिक विवाह संपन्न

आर्य समाज बेजुरी (बलिया) के उपमन्त्री श्री राम प्रसाद जी का शुभ पाणिग्रहण संस्कार ग्राम बुल्लापुर निवासी श्री दीनानाथ प्रसाद जी की आयुष्मति कन्या के साथ पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार संपन्न हुआ। पुरोहित का कार्य आर्य नेता श्री सुदर्शन सिंह जी द्वारा सम्पन्न हुआ।

आर्य महा सम्मेलन

आर्य समाज अजतुपुर पोस्ट हरपालपुर हरदोई में एक भव्य आर्य महा सम्मेलन का आयोजन दिनांक २६ मई ८७ से ३१ मई १६८७ के मध्य सम्पन्न होगा, जिसमें आर्यजगत के महान् विद्वान नेता,उपदेशक भजनोपदेशक सम्मिलित होंगे।

आर्य समाज मन्दिर हेतु भूमिदान

हर्ष का विषय है कि आर्य समाज रजपुरा जिला बदायूं हेतु श्रद्धेय स्वामी ब्रह्मानन्द जी के महान् तप और त्याग से प्रभावित होकर स्थानीय श्री सुन्दर लाल जी आर्य सुपुत्र श्री नन्दकिशोर जी आर्य ने १८ मी. लम्बी तथा ८ मी. चौड़ी भूमि आर्य समाज के भवन हेतु दान दी है। इसके लिये स्थानीय आर्य समाज की ओर से दानदाता को बधाई दी गयी।

आर्य समाज बदायूँ का वार्षिकोत्सव संपन्न

१ मार्च रविवार आर्य समाज बदायूं के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्य कुमार सभा उत्तर प्रदेश के संयोजक श्री विमल कुमार एडवोकेट ने युवा शक्ति का आवाहन आर्य समाज के मंच पर किया और बताया कि राष्ट्र एवं समाज के निर्माण में कुमार-कुमारियां आगे आयें। आर्य समाजों में युवा पीढ़ी से सम्बन्धित वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, खेल तथा सामाजिक कार्य सेवा शिविरों का आयोजन करके युवकों को कार्यक्रम दिए जाए। इस समारोह में मुख्य अतिथि श्री मती सन्तोष कपूर उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश थी।अन्तमें,समाज मन्त्री श्री महेन्द्र कुमार एडवोकेट ने धन्यवाद प्रस्ताव किया और आश्वासन दिया कि बदायूं में आर्य कुमार-कुमारी सभा की इकाई शीघ्र ही गठित हो जाएगी।

आईए—नवसंवत्सर का स्वागत करें

(श्री प० इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश)

★ ★ ★

संवत् २०४४ हम सब के लिए मंगलमय हो ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है। आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर आर्यजगत की ओर से नवसंवत् के शुभारम्भ पर आप सब पाठक गण बधाई स्वीकार करें।

आज देश मे भारत को तोडने के प्रयास हो रहे हैं। विदेशी शक्तिया देश को खण्ड खण्ड करना चाहती हैं। अंग्रेज तो भारत से विदा हो गया। परन्तु अंग्रेजियत भारत मे पहले से भी अधिक है। भारत का पूरा का पूरा पूर्वाञ्चल प्रदेश अब ईसाई प्रभाव मे है। गोरखालैण्ड की माग बराबर बनी हुई है। झारखण्ड की मांग के पीछे ईसाई मिशनरी थे। अब उत्तराखण्ड की भी माग होने लगी है। मीनाक्षीपुरम् और रामनाथपुरम के धर्म परिवर्तन के पीछे पैट्रो डालर काम कर रहा है। हर प्रान्त मे विदेशी शक्तिया सक्रिय हैं। यह सब इसलिए हो रहा है कि हमने अपनी सब सांस्कृतिक मूल्यो को छोड दिया है। आज देश मे कब्र पूजा पर हिन्दू जा रहा है। हिन्दू युवा शक्ति शराब मे और जुए मे डूबी हुई है। नशीली गोलिया युवा शक्ति को खोखला कर रही हैं। विज्ञान टेलीविजन आदि अपने साधनो के द्वारा व्यक्ति परिवार और समाज को भौतिकवादी बना रहा है। पजाब आदि प्रान्तो मे आतङ्कवाद और उग्रवाद का बोलबाला है। बाबरी मस्जिद और राम जन्मभूमि का मामला न्यायालयो मे है। हमारा न्यायपालिका से विश्वास उठ गया है। हमने न्याय और कानून को अपने हाथ मे ले लिया। अब बाबरी मस्जिद और राम जन्मभूमि का मामला गलियो और सडको पर आ गया। क्या इस प्रकार से देश चल सकता है ?

हमारे पास सृष्टि संवत् हैं, जो इस समय १९७२९४९०८७ वा वर्ष चल रहा है। हमारे यहा कृष्ण संवत् है जो इस समय ५२१० है। हमारे पास विक्रमी संवत् है जो इस समय २०४३ चल रहा है। हमारे पास शक संवत् है जो इस समय १९०८ चल रहा है। इतना कुछ होते हुए भी हमने इन सबको छोड रखा हैं और ईसवी सन् को पकड रखा है। कितनी परतन्त्रता की बात है। अंग्रेजियत ने हमे दबोच रखा है। जब सन् बदलेगा तो सारे भारत मे बधाई पत्र (ग्रीटिंग कार्ड) भेजे जायेंगे। सरकार और समाज पूरे जोर शोर से नए सन् का स्वागत करेगी।

परन्तु विक्रमी संवत् जो अपना है। जिसके साथ समस्त ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धित हैं। जिससे हमारा अतीत जुडा हुआ है। उस पर हम मौन हैं। देश को विघटित करने वालो की मूलभूत बातों को हमने कस के पकड रखा है। हम अपना आपा ही भूल गए हैं।

अब नया संवत् आ रहा है। आइए इसका स्वागत करें। हृदय से स्वागत करें। जो हमें अपने अतीत से मिलने वाला है, उसका अभिनन्दन करें। यह अभिनन्दन हमारी परतन्त्र मानसिकता से हमें छुडा देगा। तभी हम पूरी तरह से स्वतन्त्रता का उपभोग कर सकेंगे।

★

मर्यादा पुरुषोत्तम 'श्रीराम'

लो आई रामनवमी फिर नया अनुराग जागा है।
नहीं जो आज भी हर्षित कोई होगा अभागा है ॥
इसी दिन जन्म लेकर इस धरा पर राम थे आये।
बहारो ने मुदित होकर बहु दिशि फूल बरसाये ॥
हमारे देश के ऊपर बडा ही घोर संकट था।
विदेशी दासता का चुभ रहा उर एक कंटक था ॥
ऋषि मुनियो की भूमि पर असुर उत्पात करते थे।
मिटाकर वेद मर्यादा दुखी दिन रात करते थे ॥
रहे चौदह बरस वन मे प्रजा के दुख निवारण को।
किया स्वाधीन भारत को मिटाकर दुष्ट रावण को ॥
पुन उद्धार वैदिक धर्म का श्रीराम ने कीना।
असुरता के अधरे को मिटा ससार से दीना ॥
तपस्वी थे मनस्वी थे बडे धर्मज्ञ ज्ञानी थे।
हृदय सम्राट जन जन के बडे ही वीर दानी थे ॥
प्रजा पालक वचन पालक बडे नीतिज्ञ तेजस्वी।
हिमालय की तरह दृढता बडे गम्भीर ओजस्वी ॥
गुरु माता पिता सेवक अनुज प्रेमी मधुर भाषी।
सदा स्वाध्याय वेदो का सदा सत्संग अभिलाषी ॥
दयालु दीन बधु सत्यवादी और सदाचारी।
सदा ही एक पत्नी के रहे अवधेश व्रतधारी ॥
चरित यह राम का कितना सुहाना और सुन्दर है।
सभी का मार्गदर्शक है गुणो का एक सागर है ॥
तभी तो आज तक उनके गुणो का गान करते हैं।
उन्हें भगवान की ज्योति समझ सम्मान करते है ॥
अमर रहना यदि जग मे बनाओ राम सा जीवन।
तभी चमकेगा महकेगा तुम्हारे मन का यह उपवन ॥

—जगदीश शरण 'शीतल' प्रधान आर्यसमाज चादपुर (बिजनौर)

★

सत्य पर लगा हुआ है 'सैंसर'

★

यह कलयुग है कहा रहा अब 'श्रीराम' का नाम,
सत्य और सती सीता का यहा कहा सम्मान।
सच कहने वालो की होती मिट्टी यहाँ पलीत,
निरपराध को होती फासी, अपराधी की जीत।
झूठो का है बाजार, सत्य पर लगा हुआ है 'सैंसर',
सत्य न्याय का अन्त हो रहा हुआ धर्म को 'कैंसर'।
आने वाली सदी मे पैदा करना है कुछ नाम,
तो छोड सभी बातें सीखो तिकडमबाजी का काम।

—मेवाप्रसाद पाठक बी० ए०, एल-एल० बी०

हम सबका वही सहारा

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

ओ३म् नाम है प्यारा
हम सबका वही सहारा

जो शरण मे आता उसकी
किश्ती पार लगे हैं उसकी
वह सच्चा खेवन हारा
हम सबका पालन हारा

ओ३म् नाम है प्यारा
हम सबका वही सहारा

हम जीवन ज्योति जगायें
उसका प्रकाश फैलायें
फैले वेद ज्ञान की धारा
हो मन मस्त हमारा

ओ३म् नाम है प्यारा
हम सबका वही सहारा

वर्ष प्रतिपदा मंगलमय हो

प्रेषित है
उल्लास के क्षण
बधाईयो के कण
कालक्रम मे प्रथम
सवत्सर
की वर्ष प्रतिपदा
समृद्धि, सजीवन सदैव सर्वदा

जिस सस्कृति ने
बढ़ायी आपकी मान मर्यादा सदा
जिसकी रक्षा हित
बलिदान हो गये
प्रताप, गुरु गोविन्द, शिवा
केशव-माधव ने गायी जिसकी यशोगाथा।
जिसके पराक्रम के स्वर गूंजते सदा

चन्द्रगुप्त, खारवेल, शालिवाहन
अशोक, हर्ष यशोवर्मन
और विक्रम का पराक्रम
ही क्यो विस्मरण!
नववर्ष २०४४ की चैत्र पावन प्रतिपदा
[३० ३-१६८७]
पर शुभगल भावना।

—ब्रज किशोर रस्तोगी
३३—मुर्तजा हुसैन रोड, लखनऊ

शंखनाद

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

दुरिताओ की होली होली
अब स्वस्ति गान करना होगा
आतकवाद अब बन्द करो
यह शखनाद करना होगा
लेकर प्रेम प्रीति का गागर
सबको उससे रगना होगा

धर्म भेद सताप मिटा कर
स्नेह सुधा रस भरना होगा
वाणी मे माधुर्य भरा हो
व्यवहार शुद्ध करना होगा
मन वच कर्म शुद्ध कर अपने
राष्ट्र सुरक्षा करना होगा।

आर्य जगत

—आर्य समाज पिलखुवा गाजियाबाद का बारहवां वार्षिकोत्सव २४ से २६फरवरी ८७ को बडे धूमधाम से सम्पन्न हुआ। सभा मे महात्मा अमर स्वामी, माता कैलाशवती आदि के प्रवचन हुये।

—३ फरवरी से१३फरवरी तकसामवेद अथर्ववेद पारायण यज्ञ प्रधान आ स गोनी हरदोईद्वाराबेनीगज निवासीरामप्रसाद आर्ययजमान के घर पर हुआ। सभा के प्रचारक उदयप्रकाश व युगुल किशोर ने प्रचार बेनीगज इन्टर कालेज तथा नगर मे किया जनता पर अच्छा प्रभाव पडा।

—गोनी आर्य समाज हरदोईका वार्षिकोत्सव१६,१७,१८ फरवरी को सोल्लास मनाया गया।

भवाली समाचार

आर्य समाज भवाली की एक उपसमिति आर्य समाज मन्दिर पुस्तकालय जीर्णोद्धार कमेटी का गठन किया गया है। जिसके पदाधिकारी निम्न निर्वाचित हुए हैं — १ अध्यक्ष श्री बहादुर सिंह अधिकारी जी, उपाध्यक्ष श्री लक्मीदत्त बिमवाल जी, मन्त्री श्री रघुवश लाल अवस्थी जी, उपमन्त्री श्री मदन लाल शास्त्री, कोषाध्यक्ष श्री नारायण सिंह जी।

महात्मा हंसराज दिवस

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, दिल्ली डी ए वी सस्थाओ एव समस्त आर्य सस्थाओ की ओर से सम्मिलित रूप से हर वर्ष की भाति इस वर्ष भी महात्मा हसराज दिवस रविवार, १६ अप्रैल १६८७ को प्रात नौ से एक बजे तक तालकटोरा गार्डन, इन्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली मे बड़े समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

मेरी दिल्ली व दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्रों की समस्त आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजो एव शिक्षण सस्थाओ से एव अन्य समस्त आर्य सस्थाओ से प्रार्थना है कि उस दिन अपनी आर्य समाज का साप्ताहिक सत्सग स्थगित कर अधिकाधिक सख्या मे उपर्युक्त लिखित कार्यक्रम मे अवश्य सम्मिलित हों।

मुझे पूरी आशा है कि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार कर अधिकाधिक सख्या में इस कार्यक्रम में उपस्थित होंगे। विस्तृत कार्यक्रम प्रकाशित होने पर शीघ्र भिजवा दिया जायेगा। रामनाथ सहगल

पुस्तक परिचय

वेदाध्ययन कैसे करें ?

लेखक– श्री अभय देव, प्रकाश सदन, आर्य नगर अजमेर
प्रकाशक– वेद संस्थान, सी २२ राजौरी गार्डन नई दिल्ली ११००२७
पृष्ठ संख्या– ३३ मूल्य २.५०

उपरोक्त पुस्तक का प्रकाशन, वेद संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' की ९ वीं प्रयाण तिथि ५ मार्च १९८७ के अवसर पर उनकी पावन स्मृति मे श्रद्धांजलि के रूप मे किया गया है। इस लघु पुस्तक में दो निबन्धों का संकलन है, प्रथम–वेदाध्ययन कैसे करें तथा द्वितीय वेद का सुनना सुनाना।

जो साधारण जन वेदाध्ययन मे रुचि रखते हैं, उनका उचित मार्ग दर्शन प्रथम निबन्ध से होता है क्योंकि इसमे ठीक और सरल पद्धति की जानकारी दी गई है। वेद क्या है, वेद की भाषा का ज्ञान कैसे प्राप्त करें और वेद स्वाध्याय के लिए मस्तिष्क खुला रख कर कैसे चिन्तन और मनन करें, इनका सुस्पष्ट निर्देश किया गया है।

द्वितीय निबन्ध में वेद को कैसे सुना जाए और कैसे सुनाया जाए ताकि सुना और सुनाया हुआ भीतर ठहर सके और उसके अनुकूल आचरण हो सके, इस पद्धति का विस्तार से दिग्दर्शन कराया गया है। प्रवचन करने तथा श्रवण करने की जो उपयुक्त विधियां हैं और जिनके पालन से आचरण में आर्यत्व आता है, यह इस निबन्ध की विशेषता है।

वेद का स्वाध्याय करने वाले तथा वेद प्रवचन करने वालों के लिए यह पुस्तक नितान्त उपयोगी है। प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर तथा आर्य विद्यालय में इस पुस्तक को अधिकाधिक मंगा कर वितरित करना चाहिए ताकि वेद के स्वाध्याय, पठन-पाठन, श्रवण-श्रावण मे जन साधारण की रुचि को जाग्रत किया जाए और वेद के आधार पर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के उद्देश्य को क्रियात्मक रूप दिया जा सके।

यह पुस्तक वेद संस्थान (उत्तर प्रदेश शाखा) बी–६४ राजाजी पुरम् लखनऊ २२६०१७ से भी प्राप्त की जा सकती है।

–बसन्त

सब कुछ लीडर चर गए

कैसे दिन आ गए न जाने कैसी हवा चली,
तितली प्यारी लगे फूल को दुश्मन लगे कली !

हर चेहरा अपना लगता था कल तक जिसके अन्दर,
आज पराई-सी लगती है कैसे वही गली !

हाकिम रिश्वत के रिश्ते में चाचा हैं या ताऊ,
गवर्नमेंट के घर पर यह कन्या जन्मी और पली !

किशमिश पिस्ते और चिलगोजे सब कुछ लीडरचर गए,
जनता के हिस्से में रह गई केवल मूंगफली !

–विजय निर्बाध

अमृत वर्षा

मन्त्रोच्चारण कौन करे ?

सब संस्कारों में मधुर स्वर से मन्त्र उच्चारण यजमान ही करे किन्तु मध्य भाग जैसा कि जिस वेद का उच्चारण है, करे। यदि यजमान न पढ़ा हो, तो इतने मन्त्र तो अवश्य पढ़ लेवे। यदि कोई कार्यकर्त्ता जड़ मन्दमति काला अक्षर भैंस बराबर जानता हो, तो वह शूद्र है अर्थात् शूद्र मन्त्रोच्चारण मे असमर्थ हो तो पुरोहित और ऋत्विज मन्त्रोच्चारण करें और कर्म उसी मूढ़ यजमान के हाथ से करावें।

–स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्रो० सहगल की निशृंस हत्या

शान्त रहने की अपील

डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्ता समिति के अध्यक्ष प्रो० वेद व्यास जी ने प्रो० सहगल की नृशंस हत्या को घृणित व शर्मनाक कहते हुए कहा है कि डी० ए० वी० कालेज जालन्धर के प्रो० एस० के० सहगल की निशृंस हत्या पर समस्त डी० ए० वी० बिरादरी को गहरा धक्का लगा है। उनकी हत्या आतंकवादियो द्वारा की गयी थी जो कि उनको मारने का यह झूठा कारण बताते है कि उन्होंने सिक्ख विद्यार्थियों के साथ भेदभाव किया था। डी० ए० वी० आन्दोलन का सौ साल का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि डी० ए० वी० संस्थाओं ने शिक्षा के क्षेत्र मे अमूल्य सेवा की है और इस विषय मे उन्होने किसी प्रकार के धर्म, जाति व विचारधारा के नाम के कारण कोई भेदभाव नहीं किया। डी० ए० वी० संस्थाएं स्वतन्त्रता आन्दोलन में अग्रण्य रही हैं और देश भर में फली ३६९ से अधिक ये संस्थाएं राष्ट्रीय प्रगति तथा विकास में अपना पूरा सहयोग दे रही हैं। सिक्ख विद्यार्थियों के साथ भेदभाव का आरोप सर्वथा निराधार है।

मैं डी० ए० वी० संस्थाओं के अध्यापकों, विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों और अन्य हितैषियों से अनुरोध करता हूं कि वे उग्रवादियों के घृणित कार्यों से उकसावट मे न आए। वे उग्रवादी विदेशी ताकतों के हाथ मे खेल रहे है और हमारे देश की शान्ति तथा उन्नति को पलीता लगाना चाहते है।

डी० ए० वी० प्रबन्धकर्ता समिति ने "पंजाब हत्या कांड सहायता निधि" स्थापित करने का निश्चय किया है जिससे कि उग्रवादियों द्वारा घायल किए व्यक्तियो और शहीद व्यक्तियों के परिवारो की सहायता की जा सके।

आचार्य चाहिए

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा के लिये आचार्य की तुरन्त आवश्यकता है। आचार्य पद के लिये ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का गहरा अध्ययन तथा दर्शन, व्याकरण व अंग्रेजी की विशेष योग्यता आवश्यक है। प्रौढ़ सज्जनों को प्राथमिकता दी जायेगी।

पता :–रामनाथ सहगल, मन्त्री, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–११०००१

"ओ३म् कर तल कर पृष्ठे"

(शेष पृष्ठ ३ से आगे)

वितरण कर देना ही क्षेम है—दोनो बराबर साथ-साथ चलेंगे तो योग क्षेम होगा। इसी का नाम आत्म चिन्तन है—यही सन्ध्या है—उठ, बहुत बोलता है जरा इस वाणी से आरम्भ कर अपनी सब इन्द्रियो की पड़ताल कर—अपनी और दूसरो पर इसकी प्रतिक्रिया को देख—यही कर तल और कर पृष्ठ का दर्शन है—इसी दर्शन के बाद तुझे यश और बल मिलेगा—तभी सन्ध्या करने का तुझे आनन्द मिलेगा—फिर तू कहेगा-अब कुछ प्राप्त हो रहा है। इस अवस्था को पाकर तू एकान्तवास का प्रेमी हो जायेगा—तेरी वाणी चुप हो जायेगी एक विशेष मस्ती-नशे में तू डूबा रहेगा—नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात। धीरे-धीरे गुन-गुनाता रहेगा।

"विश्वपति के ध्यान मे जिसने लगाई हो लगन,
क्यों न हो उसको शांति—क्यो न हो उसका मन मगन।
और कवि केवल के शब्द तुझे उत्साहित करेंगे—
तेरी खुश नसीबी है केवला—तेरा इस तरफ जो मन बसा।
जरा जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा—दरे बाम है वह खुला हुआ॥

आर्य जगत

विशाल विश्व के मानव समाज के नाम विश्व शांति का दिव्य संदेश

सुप्रसिद्ध आर्य नेता, साहित्यकार स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी वेद पथिक प० धर्मवीर आर्य ब्रह्मचारी ने एक प्रेस वक्तव्यमे यह बतलाया कि वेद ही विश्व शाति के आधार हैं।

आपने कहा है कि वेदोक्त और धर्म युक्त मानव समाज का जीवन बनेगा तभी विश्व शाति का स्वर्ण प्रभात आयेगा।

राजधानी दिल्ली नगर मे विश्व शांति सम्मेलन का आयोजन

राजधानी दिल्ली नगर को विश्व शाति का केन्द्र बना कर विश्व के राष्ट्र नायकों के नाम विश्व शाति का पावन सदेश वेद-पथिक प० धर्मवीर आर्य ब्रह्मचारी भेज रहे हैं। भारत जननी का सदेश लेकर विश्व के राष्ट्रनायको से मिलने का समय वेदपथिक जी कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द वेद विश्व विद्यालय का निर्माण

राजधानी दिल्ली नगर मे वेदपथिक जी ने यह बतलाया है कि १०० एकड़ भूमि मे दिव्य दर्शनीय महर्षि दयानन्द वेद विश्व विद्यालय का निर्माण होगा।

एक करोड़ रुपयों का दान

श्री वेद पथिक जी ने कहा है कि महर्षि दयानन्द वेद विश्व विद्यालय के निर्माण यज्ञ मे १ करोड रुपयों का शुभ दान धर्मवीर ग्रन्थमाला के साहित्य सुमनो की बिक्री से दिया जायेगा। श्री वेद पथिक जी ने कहा है कि महर्षि दयानन्द वेद विश्व विद्यालय की योजना पर दस करोड रुपयो का व्यय होगा।

उत्सव

—आर्य समाज जौनपुर का वार्षिकोत्सव ९ अप्रैल से १२ अप्रैल १९८७ तक मनाया जायेगा। जिसमे स्वामी स्वरूपानन्द जी आगरा, श्रीमती सावित्री देवी वेदाचार्या बरेली, पधार रही हैं। पुस्तक विक्रेताओं से निवेदन है कि अवश्य ही पधारने की कृपा करें।

स्व० श्री पं० शांति स्वरूप जी की स्मृति मे—

कुण्डलिया

(प० ब्रह्मानन्द आर्य)

पण्डित शांति स्वरूप जी, किया स्वर्ग प्रस्थान।
आर्य जगत् मे छा गया सुनकर शोक महान्॥
सुन कर शोक महान, स्वजन स्नेही सब रोते।
कर-कर उनकी याद, आंसुओ से मुंह धोते॥
कहे ब्रह्मानन्द आर्य, धर्म वैदिक के मण्डित।
दयानन्द के शिष्य गुणागर बुधवर पण्डित॥

'टंकारा मे ऋषि बोधोत्सव का भव्य समारोह"

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी ऋषि बोधोत्सव दिनाक २५, २६, २७ फरवरी को टंकारा मे बडी धूमधाम से मनाया गया। उत्सव के आरम्भ मे ही श्री प० प्रानन्द प्रिय जी का अभिनन्दन किया गया और उनका प्रेरणादायक प्रवचन हुआ।

२० फरवरी से यजुर्वेद पारायण महायज्ञ प० मदन मोहन जी विद्यासागर के ब्रह्मत्व में हुआ जिसकी पूर्णाहुति २६ फरवरी को प्रात १० बजे हुई। इस अवसर पर जहाँ देश के विभिन्न भागो से आर्य जन यहा पधारें, वहाँ आर्य कन्या महाविद्यालय बडौदा, जामनगर, कन्या गुरुकुल पौरबन्दर, गुरुकुल सूपा, गुरुकुल झांगड़ा के छात्र-छात्राओं ने भी भाग लिया।

'हिदुत्व के रक्षक' का प्रकाशन

आर्य समाज के युवा वक्ता डा० आनन्द सुमन द्वारा सचालित क्रांति प्रकाशन तपोवन आश्रम देहरादून आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान प० गगाप्रसाद जी द्वारा रचित पुस्तक स्वामी दयानन्दस कन्ट्रीब्यूशन टू हिन्दू लाइजिस्टी का हिन्दी अनुवाद हिन्दुत्व के रक्षक महर्षि दयानन्द का प्रकाशन कर रहा है पुस्तक की दो हजार प्रतियोपर ३००००)/—का व्यय है ३०० पृष्ठो की यह पुस्तक समाज मे महान क्रांति का सूत्रपात करेगी ऐसा विचार है प्रकाशन से पूर्व जो सज्जन सदस्य बन जायेंगे उन्हे यह पुस्तक केवल २५) रु० मे उपलब्ध कराई जावेगी प्रकाशन के पश्चात् मूल्य ४०) रु० होगा।

श्री वेद पथिक जी ने केन्द्रीय सरकार से प्रान्तीय सरकारों से उद्योग पतियो, श्रमिको, कृषकों से भारत की धर्म प्राण जनता से विश्व के राष्ट्र नायको से एव मानव मात्र से विश्व शाति अभियान को सफल बनाने के लिये सहायक बनने का अनुरोध किया है।

महामहीम राष्ट्रपति जी से भेंट

श्री वेद पथिक जी ने राष्ट्रपति जी से देश के स्वतन्त्रता सग्राम सेनानियों के साथ मिल कर राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी को यज्ञ और प्रार्थना से मानसिक रोगो का निवारण अपना नूतन ग्रन्थ भेंट किया है।

यदि आर्य समाज न होता तो–

लेखक–डा० शकुनचन्द्र गुप्त स्थान पो० लालगंज
जिला रायबरेली

आर्य समाज की स्थापना भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से दस वर्ष पूर्व सन् १८७५ ई० में महान् समाज सुधारक आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के जन्मदाता, वेदों एवं संस्कृत भाषा के महान् विद्वान् तथा आजन्म ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बम्बई मे की थी। वे आर्य समाज को कोई सम्प्रदाय न मान कर महान् आन्दोलन मानते थे। जिसका उद्देश्य उनके मतानुसार देश में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं आत्मिक जागृति उत्पन्न कर लोगों को अनेक कुरीतियों, आडम्बरों एवं रूढ़ियों से मुक्त करना, वेदों का ज्ञान मानव मात्र तक पहुंचा कर विश्व को आर्य बनाना, स्वदेशी भावना फैला कर देश को विदेशी दासता से मुक्त करना तथा देशवासियों में प्राचीन भारत की उपलब्धियों तथा इतिहास के प्रति गौरवभाव उत्पन्न करना था।

निस्सन्देह आर्य समाज को अपने उद्देश्यों की पूर्ति में महान् सफलताएं मिली। अपने १११ वर्षों के इतिहास में उसने जो महान् सफलताएं प्राप्त की, वे सराहनीय एवं ऐतिहासिक महत्व की हैं। यद्यपि उसने अपने जीवनकाल में कई उतार चढ़ाव देखे, आजादी के पूर्व जहां उसका कार्य बुलन्दी पर था, स्वतन्त्रता के बाद उसमे शिथिलता आई परन्तु कुल मिला कर उसकी उपलब्धियां इतनी अधिक है, जिस पर भारत को गर्व है तथा देशवासी जिसके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकते हैं।

कहना अनुचित न होगा कि भारत के वर्तमान स्वरूप के निर्धारण में आर्य समाज का सर्वप्रमुख योगदान रहा है। यदि उसका जन्म न हुआ होता तो निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि भारत स्वतंत्र हो पाता अथवा नहीं उसका वर्तमान धर्मनिरपेक्ष स्वरूप कायम रहता।

जिस प्रकार कि इस समय देश के नागालैंड, मिजोरम, मेघालय, केरल तथा तमिलनाडु आदि राज्यों में जहां तक आर्य समाज का संदेश नहीं पहुंचा, ईसाइयत का जोर है। इस बात की पुष्टि के लिए इतना ही पर्याप्त है कि यदि आर्य समाज जन्म न लेता तो भारत फिलीपाइन्स, अफ्रीका तथा अमरीका के अधिकांश देशों की भांति ईसाई बहुल देश बन जाता।

यदि आर्य समाज अस्तित्व में न आता तथा उसकी वैदिक विचारधारा अधिकांश देशवासियों में "हिन्दी हिन्दू, हिन्दुस्तान की भावना जाग्रत कर देश को एकता के सूत्र में आबद्धन रखती तो भारत का वर्तमान विशाल स्वरूप न रहता तथा वह पश्चिमी योरोप की भांति राष्ट्रों के समूह के रूप में परिवर्तित हो जाता।

यदि आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने गुजराती भाषी होते हुए हिन्दी को अपना कर, उसको आर्य समाज की भाषा के रूप में मान्यता देकर, उसे आर्य भाषा की संज्ञा देकर तथा उसमें अपने 'सत्यार्थ प्रकाश' आदि ग्रन्थ लिख कर अखिल भारतीय भाषा के रूप में प्रतिष्ठित न किया होता तो हिन्दी का देश की राष्ट्रभाषा बनना कठिन हो जाता। जिस प्रकार की तमिलनाडु एवं नागालैंड आदि में जहां तक कि आर्य समाज का सन्देश नहीं पहुंचा, हिन्दी का प्रबल विरोध हो रहा है, उपर्युक्त धारणा की पुष्टि के लिए पर्याप्त है।

यदि आर्य समाज न होता तो देशवासियों को धर्म के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान न होता। वे वेदों के वास्तविक अर्थ से अपरिचित रहते। वे सायण आदि पौराणिकों द्वारा किये गये वेदों के अर्थो के अनुसार कर्मकांड करते हुए अज्ञान के शिकार बने रहते। विश्व की दृष्टि में वेद 'गड़रियों के गीत' ही बने रहते। उन्हें स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा किये भाष्यों के कारण प्राप्त प्रतिष्ठा न मिलती तथा विश्व में मानव जाति के प्राचीनतम ज्ञान साहित्य के रूप में उन्हें मान्यता न प्राप्त होती।

यदि आर्य समाज न होता तो विश्व की प्राचीनतम एवं महानतम भाषा संस्कृत मृत भाषा बन जाती। यदि आर्य समाज ने अपने गुरुकुलों तथा डी० ए० वी० कालेजों द्वारा संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार में योगदान न दिया होता तथा प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों का वास्तविक अर्थ संसार के सामने प्रस्तुत न किया होता तो संस्कृत को पहली भाषा के रूप में वह मान्यता न प्राप्त होती, जो इस समय प्राप्त है। उसके इस दिशा में किये गये प्रयासों का ही परिणाम है कि आज उसे देश के संविधान में उल्लखित भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। उसके प्रचार के लिए काशी आदि अनेक स्थानों में विश्वविद्यालय कार्यरत हैं।

आर्य समाज के आन्दोलन का परिणाम है कि देश अनेक कुरीतियों से मुक्त हो चुका है। यदि वह अस्तित्व मे न आता तो देश में हजारों वर्षो से विद्यमान छुआछूत, बालविवाह, विधवाओं के निरादर, नारी उत्पीड़न तथा जातिपात की कुप्रथाएं न समाप्त होती, बढ़ते ढोंग एवं आडम्बर न खत्म होते। देश समतावादी समाज के निर्माण के अपने वर्तमान लक्ष्य को निर्धारित न कर पाता तथा देश को कमजोर करने वाले अनेक कारण न समाप्त हुए होते।

देश में नैतिकता की स्थापना तथा स्वदेशी भावना के प्रसार में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उसने अपने गुरुकुलों, वेद प्रचार सप्ताहों, साप्ताहिक अधिवेशनों तथा वार्षिकोत्सवों द्वारा राष्ट्रवाद एवं भारतीय जीवन के नैतिक मूल्यों के प्रचार के लिए जो अभूतपूर्व एवं सराहनीय कार्य किये, उसे भुलाया नहीं जा सकता है। "विदेशी सुराज से खराब से खराब स्वदेशी राज अच्छा होता है" की स्वामी दयानन्द की अमृतवाणी तथा आर्य समाज के अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" में लिखित स्वामी दयानन्द के विचारों ने देश में नैतिकता एवं राष्ट्रवाद के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान किया। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय तथा श्याम जी वर्मा आदि स्वाधीनता संग्राम के नेता आर्य समाज की ही देन थे।

आर्य समाज ने देशवासियों को देश के विगत गौरवशाली इतिहास का स्मरण दिला कर उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न करने तथा देश को योरोप की सांस्कृतिक एवं भाषाई दासता से मुक्त कराने का जो प्रयास किया, उसे भुलाया नहीं जा सकता है। उसके द्वारा स्थापित गुरुकुल, डी० ए० वी० कालेज तथा अन्य शिक्षा संस्थाएं भारतीयता, भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद एवं स्वदेशी भावना के केन्द्र रहें हैं और अब भी हैं।

निस्सन्देह आर्य समाज की भारतवासियों तथा मानव समाज के प्रति की गई सेवायें अनेक है। उसके उपकार को भुलाया नहीं जा सकता है। परन्तु दुःख का विषय है कि अब उसके कार्य में शिथिलता आ गई है। उसी का परिणाम है कि इस समय देश में अराष्ट्रीयता, अनैतिकता, दानवता, अभारतीयता तथा अंग्रेजियत तेजी से बढ़ रही है, फूट, विभाजन एवं अलगाववाद की प्रवृत्तियां जोर पकड़ रही हैं तथा देश की स्वतन्त्रता खतरे में पड़ती दिखाई पड़ रही है। ऐसी परिस्थिति में आवश्यकता है आर्य समाज के आन्दोलन को जोरदार बनाने तथा उसके कार्यक्रम एवं विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास किये जाए क्योंकि वह ही उपर्युक्त आपदाओं एवं संकट से देश की रक्षा कर सकता है।

अमर शहीद पं० लेखराम जी को श्रद्धांजलि

गत दिवस केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के तत्वावधान मे आर्य समाज रतनलाल नगर मे अमर शहीद धर्मवीर पण्डित लेखराम आर्य मुसाफिर बलिदान दिवस समारोह आयोजित किया गया । समारोह मे वक्ताओ ने प० लेखराम की जीवनी पर प्रकाश डालते, हुए कहा कि सच्चे मानव धर्म एव देशहित पर बलिदान होने की परम्परा से मानवता व देश की सस्कृति जहा अक्षुण्ण रहती है, वहीं भावी पीढ़ी को इस ओर सत्प्रेरणा प्राप्त होती रहती है । पण्डित लेखराम वैदिक धर्म के प्रबल प्रचारक तथा देशभक्त थे ।

"दहेज रहित विवाह सम्पन्न"

कानपुर—आर्य समाज के पूर्व प्रधान श्री दीवान चन्द्र खन्ना के विशेष प्रयासो से आर्य समाज वार्ड १७ के सस्थापक सभासद श्री राम विलाश मिश्र की सुपुत्री सुषमा मिश्रा का विवाह स्व० श्री सत्य नारायण मिश्र के सुपुत्र चन्द्रशेखर मिश्र के साथ धन के लेन-देन के बिना, दहेज रहित सम्पन्न हुआ । चन्द्रशेखर मिश्र के बड़े भाई ने धन लेकर विवाह करने को वर बेचने की सज्ञा देते हुए दहेज-प्रथा एव दहेजियो की निन्दा की । विवाह के अवसर पर नगर के गण्यमान्य नागरिको ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया तथा वर-पक्ष के इन विचारो की सराहना की ।

श्याम प्रकाश महामन्त्री केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर

आधुनिक समाज

(शिवकुमार रैकवार धुरखी, सुतौली (बहराइच)

(१)

आसुरी प्रवृतियों से आवृत समाज आज ,
　　देवत्व विहीन दिशा हीन है मनुजता ।
अनुरक्ति अर्थ में अधर्म युक्त कर्म सभी ,
　　आचरण हीन, दीन-हीन सा भटकता ।
ओज, तेज, बल बुद्धि शून्य सस्कृति शून्य ,
　　शुचि वेद मार्ग 'शिव' मानता सकीर्णता ।
महावीर बुद्ध, रामकृष्ण, गुरुनानक के ,
　　अनुयाइयो मे न दिखाई देती एकता ।

(२)

भिन्न भिन्न मतवाले मतवाले हो रहे हैं ।
　　द्वेष ईर्ष्या से सना हुआ तन-प्राण है ।
उत्कृष्ट आर्य जाति भ्रष्ट हो गई है 'शिव'
　　उत्कृष्टता की खोई हुई पहचान है ।
ढोगी भगवानो की बाजार लगी ठौर-ठौर ,
　　पौर-पौर भेदभाव शक्ति है न शान है ।
लगता मनुजता का बेड़ा गर्क हो गया है ,
　　धरती सुलग रही धुआ आसमान है ।

(३)

आत्मा देवत्व से विहीन अपवित्र हुई ,
　　मन मे कुभाव हृदय क्रूरता का वास है ।
सत्य-धर्म-न्याय का निशान मिलता न कहीं ,
　　पूजा और उपासना की आज उपहास है ।
परिणाम अत्याचार-अनाचार-भ्रष्टाचार ।
　　नोच रहा आदमी ही आदमी का मांस है ।
हिन्दी, हिन्दू, हिन्द द्रोहियो के हौसले बुलन्द ,
　　शासन नपुसक स्वदेश का ह्रास है ॥

शम्भु दयाल दयानन्द वैदिक संन्यास आश्रम गाजियाबाद का ३०वां वार्षिक यज्ञ-महोत्सव

धर्म प्रेमी भाइयो एवं बहिनो ।

आपके प्रिय आश्रम का यज्ञ-महोत्सव मिति चैत्र शुक्ला १४ सोमवार से वैशाख कृष्णा ६ रविवार २०४४ तदनुसार १३ अप्रैल से १९ अप्रैल १९८७ तक आश्रम के प्रागण मे समारोह पूर्वक सम्पन्न होगा ।

इस शुभ अवसर पर सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (आश्रमाध्यक्ष) स्वामी मुनीश्वरानन्द जी विवेकतीर्थ, स्वामी यज्ञानन्द जी सरस्वती, स्वामी चन्द्रदेव जी सरस्वती, प० सत्यानन्द जी वेदवागीश, ब्रह्मचारी अखिलेश्वर जी (वैदिक प्रवक्ता) के वेदोपदेश तथा श्री मामचन्द जी आदि सगीतज्ञो के मनोहर भजन सुनने को मिलेंगे ।

निर्वाचन

आर्य समाज लालबाग लखनऊ
प्रधान श्रीमती उर्मिला आर्या
मन्त्री श्री इं० सत्यदेव सनी
कोषा० श्री विश्वमित्र अरोड़ा

आर्य समाज रघपुरा बदायूं
प्रधान श्री सोनपाल
मन्त्री श्री शिवकुमार आर्य
कोषा० श्री दयाशकर

आर्य समाज फैजपुर बदायू
प्रधान श्री महेन्द्रपाल
मन्त्री श्री ओमपाल आर्य
कोषा० श्री श्रीपाल

आर्य समाज सिविल लाइन्स नरही लखनऊ
प्रधान श्री ब्रह्मदत्त जी दीक्षित
मन्त्री श्री डा० लक्ष्मीनारायण गुप्त
कोषा० श्री राजेन्द्र सिंह

आर्य समाज सेवहारा बिजनौर
प्रधान श्री चौ० रणवीर सिंह
मन्त्री श्री डा० सन्तराम
कोषा० श्री सुनील कुमार

आर्य समाज लालगज, रायबरेली
प्रधान श्री डा० शकुनचन्द्र गुप्त
मन्त्री श्री गजराज आर्य
कोषा० श्री भगवती प्रसाद गुप्त

आर्य समाज फतेहपुर पूठी (मेरठ)
प्रधान श्री जयपाल सिंह मुन्शी जी
मन्त्री श्री ओम प्रकाश आर्य
कोषा० श्री त्रिलोकचन्द्र गुप्त

आर्य समाज कृष्ण पोल बाजार जयपुर (राज०)
प्रधान श्री प्रिसपल विजय बिहारीलाल जी माथुर
मन्त्री श्री डा० ओम शरण जी विजय
कोषा० श्री सूरज नारायण जी गुप्त

आर्य समाज सिकन्दरपुर (बलिया)
प्रधान श्री बलराम प्रसाद आर्य
मन्त्री श्री विजय कुमार
कोषा० श्री बलराम प्रसाद

आर्य समाज जसवन्त नगर इटावा
प्रधान श्री कुवर लाल आर्य
मन्त्री श्री तिलकसिंह यादवेद
कोषा० श्री बृजेशसिंह चौहान

आर्य समाज मऊरानीपुर झांसी
प्रधान श्री रघुबीरसिंह एडवोकेट
मन्त्री श्री श्रीपालसिंह आर्य
कोषा० श्री सत्य प्रकाश शर्मा

आर्य समाज सीपरी बाजार झांसी
प्रधान श्री नाथूराम आर्य
मन्त्री श्री माता प्रसाद त्रिपाठी
कोषा० श्री निहाल चन्द्र बजाज

स्त्री आर्यसमाज सीपरी बाजार झांसी
प्रधान श्रीमती पदमा यतीन
श्रीमतीशकुन्तला चड्ढा मन्त्राणी
कोषा० श्री „ सुशीला देवी

आर्य समाज कर्णपुर दस फर्रुखाबाद
प्रधान श्री उदयपाल सिंह आर्य
मन्त्री श्री कृष्णपाल सिंह आर्य
कोषा० श्री धर्मपालसिंह आर्य

पुलिस थाने में हिन्दू कन्याओं का धर्म परिवर्तन एवं विवाह

आर्यसमाज के प्रारम्भिक काल में और उससे पूर्व भी शास्त्रार्थों का युग रहा है। जगतगुरु शंकराचार्य ने शास्त्रार्थ कर-कर के भारत से नास्तिकता को भगाया और महर्षि दयानन्द जी ने मुसलमानों, ईसाईयों और अपने ही हिन्दू भाइयों से शास्त्रार्थ कर-कर के वैदिक धर्म का प्रचार किया। हिन्दुओं को मुसलमान और ईसाई होने से केवल बचाया ही नहीं अपितु शुद्धि का मार्ग अपनाकर अपने वैदिक धर्म से निकले हुए भाइयों को पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित करने का अभियान चलाया। स्वतन्त्रता के पूर्व शास्त्रार्थों द्वारा समझ बूझकर लोग अपने-अपने मत को छोड़कर वैदिक धर्म को स्वीकार करते थे। आज भी यदि कोई भी व्यक्ति समझ बूझ कर सिद्धान्तों के आधार पर धर्म परिवर्तन करता है तो इस पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये परन्तु यदि किसी की गरीबी का लाभ उठाकर किसी का धर्म परिवर्तन किया जाता है तो यह आपत्तिजनक है।

आज भारत जनतान्त्रिक राज्य पद्धति अपनाये हुये है। परन्तु विदेशी शक्तियां इस जनतन्त्र का भी शोषण करके इसको अपने-अपने विश्वास के अनुसार बहुमत प्राप्त करने के पूर्ण प्रयास में है। मुसलमान अरब देश पैट्रो डालर की अथाह धनराशि भेजकर सारे देश का इस्लामीकरण करने में प्रयत्नशील हैं। ईसाई भी सारे देश में छा जाना चाहते हैं। आज का धर्म परिवर्तन ज्ञान पूर्वक नहीं है अपितु गरीबी अज्ञान और जातिवाद का लाभ उठाकर एक राष्ट्रीयता परिवर्तन है। जब बहुमत इस्लाम या ईसाई का हो जायेगा तो अपने आप भारत विदेशियों के हाथ बिक जायेगा।

अब तक तो पैसे के प्रलोभन में यह धर्म परिवर्तन का कार्य होता आया जिससे हिन्दू समाज और राष्ट्रवादी लोग बहुत चिन्तित हैं परन्तु अब एक बड़ा ही रोमाञ्चकारी हिन्दू कन्याओं के धर्म परिवर्तन और विवाह का समाचार हैदराबाद के 'न्यूज टाइम्स' में प्रकाशित हुआ जो कि राष्ट्रभक्त लोगों एवं सरकार की जानकारी के लिए हम दे रहे है—

"हैदराबाद नगर के बंजाराहिल पुलिस स्टेशन में एक हिन्दू, एक मुसलमान और एक ईसाई लड़के से पार्वती, धमनी, कमला नाम वाली तीन हिन्दु कन्याओं का विवाह समारोह पूर्वक कराया गया। पुलिस पण्डित, काजी और पादरी को बुलाकर ले आयी। थाने को खूब रोशनी से सजाया गया। जलपान की व्यवस्था भी पुलिस ने की। कन्याओं के पिताओं के विरोध एवं हर प्रकार की स्थिति का सामना करने हेतु पुलिस बन्दोबस्त को मजबूत बनाया गया। यह सारा आयोजन किया इस थाने के पुलिस सब इन्सपेक्टर एम० के० अन्सारी ने। हैदराबाद के पुलिस इतिहास में यह शायद पहली घटना है।"

(वर्णाश्रम पत्रक फरवरी ८७ के अंक से साभार)

इस देश के हर राष्ट्रवादी नागरिक को दुःख होगा कि पुलिस जो कि रक्षक होनी चाहिये, एक सम्प्रदाय विशेष के सब इन्सपेक्टर के कारण भक्षक बन गई। पुलिस थाना ही विवाह स्थल बन गया और पुलिस के जबरदस्त आतङ्क के अन्तर्गत तीनों कन्याओं का जबरदस्ती धर्म परिवर्तन करके माता-पिता की मर्जी के विरुद्ध विवाह कर दिया गया।

क्या भारत सरकार की आंखें खुलेंगी? क्या उन पुलिस कर्मियों के विरुद्ध कोई कार्यवाही होगी, जिन्होंने ऐसा जघन्य अपराध किया? क्या हिन्दु समाज चेतेगा? और इस प्रकार की दुर्घटनाओ की पुनरावृत्ति न हो इसका कोई ठोस उपाय खोजेगा।

इन्द्रराज
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

आर्यसमाज माडल टाऊन लुधियाना का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज माडल टाऊन लुधियाना का वार्षिकोत्सव हर्ष एवं उल्लास के वातावरण में, दिनांक २८ एवं २९ मार्च १९८७ को भव्य आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ। इस समारोह में दिल्ली के आ० श्री विक्रम जी शास्त्री, आर्यजगत' दिल्ली के सम्पादक एवं ख्याति प्राप्त विद्वान् पं० क्षितीशचन्द्र जी वेदालंकार, प्रो० रत्नसिंह जी गाजियाबाद आदि महानुभाव सम्मिलित हुए। उत्सव सफल एवं सराहनीय रहा।'

आर्यसमाज मेरठ शहर में होली मिलन समारोह

१६ मार्च ८७ के मध्यान्होत्तर ३ बजे से ५ बजे तक होली मिलन एवं जलपान का कार्यक्रम आर्यसमाज मन्दिर मेरठ शहर में भक्ति संगीत से आरम्भ हुआ। तत्पश्चात भक्ति संगीत कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्री मनोहरलाल जी सर्राफ, प्रधान ने सब आगन्तुक महानुभावों का स्वागत करते हुए सबको आर्यसमाजों के साप्ताहिक सत्संगों में आने की प्रेरणा की। श्रीयुत इन्द्रराज जी मन्त्री समाज ने सब बन्धुओं का अभिनन्दन किया साथ ही कहा कि होली का पर्व सबके लिए मंगलमय हो।

आर्यसमाज शास्त्रीनगर मेरठ में होली यज्ञ

१५ मार्च ८७ को सायं ४ बजे आर्यसमाज शास्त्री नगर मेरठ की ओर से स्कीम नं० ७ सैक्टर ६ में खुले स्थान पर विशेष होली यज्ञ आयोजित किया गया। श्री देवदत्त जी आदि चार यजमान थे। इस अवसर पर श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान के द्वारा भाषण प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वाले बच्चों को पुरस्कार दिलवाया गया। अन्त में सभा प्रधान जी ने अपनी शुभकामना सबके प्रति समर्पित करते हुये होली सबके लिये मंगलमय हो—ऐसी भगवान से प्रार्थना की।

श्री डी०के० गुप्ता के आवास पर होली यज्ञ

१५ मार्च ८७ को प्रातः ८-३० बजे श्री डी० के० गुप्ता जी ३-ए. शास्त्री नगर मेरठ द्वारा उनके घर पर आयोजित होली यज्ञ मे सभा प्रधान श्रीयुत इन्द्रराज जी सम्मिलित हुए तथा सबको होली की शुभकामनायें अर्पित करते हुए उन्होंने परिवारों में बैर विरोध की होली जलाने पर बल दिया तथा परिवार को आशीर्वाद दिया।

जीमखाना मैदान में होली यज्ञ

१५ मार्च ८७ को आर्यसमाज मेरठ शहर की ओर से रात्रि ७ बजे एक विशाल होली यज्ञ का जीमखाना मैदान मेरठ शहर में आयोजन किया गया। गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों ने सुमधुर वेद पाठ किया।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45913   ४५९९३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
चैत्र शुक्ल ७
रविवार, ५ अप्रैल १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सरकार साम्प्रदायिकता को कठोरता से कुचल द

कानपुर-आर्यसमाज गोविन्दनगर के तत्वावधान मे गोविन्द नगर मे आयोजित एक सभा मे पारित एक प्रस्ताव मे उन लोगो को देशद्रोही बताया गया जिन्होने सर्वे मे मजहब पहले बताकर आम मुसलमान की मानसिकता को प्रकट किया है। भारत सरकार तथा राज्य सरकार देश की एकता व अखण्डता के लिए अल्प सख्यको मे बढ़ती साम्प्रदायिकता को कठोरता से कुचल दे तथा समान नागरिक कानून बनाये। राम जन्म भूमि हिन्दुओ के ही सुपुर्द कर दे।

सभा की अध्यक्षता श्री देवीदास आर्य ने की तथा सचालन शुभ कुमार बोहरा ने किया। सभा मे श्री मदनलाल चावला, दीवानचन्द्र बत्रा, श्रीमती दर्शना कपूर, वीरा चोपडा आदि के भाषण हुए।

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का वार्षिकोत्सव

प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का १६ वा वार्षिकोत्सव ५, ६, ७ अप्रेल ८७ रवि, सोम, मगलवार को सोल्लास मनाया जाना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर दूर दूर से उच्चकोटि के विद्वान् भाग लेने आ रहे हैं। प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी कन्याओ के उत्तमोत्तम चित्ताकर्षक कार्यक्रम होंगे।

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क माह १५ मार्च १९८७ मे समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २५) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पडेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८५ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

३५७, १४३२, २१५४, २३७२, ४३३०, ६०४३, ६३९४, ८१३४, ८२१३, ८२१५, ८२३८, ८७३७, ९४१०, ९४१९, ९६२७, ९६५५, ९९०९, १०१२०, ११९४१, १११४८, १११५३, ११५६२, ११८८०, १२११४, १२१२४, १२१४०, १२१४३, १२१४४, १२६०८, १२६११, १२६३०, १२८४४, १२८४८, १३०६२, १३०६३, १३०६५, १३०६८, १३०६९, १३४२८, १३७२६, १३७२८, १३७२९, १३७३०, १३७३२, १३७३३, १३७३६, १३७३७, १३७३८, १३७३९, १३७४०, १३७४१, १३७४२, १३७४३, १३७४४, १३७४५, १३७४६, १३७४८, १३७४७।

विनीत—
—व्यवस्थापक

कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा आचार्य दत्तात्रेय वाव्ले पुरस्कृत

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के तत्वावधान मे विचार साहित्य के क्षेत्र मे दिया जाने वाला गोवर्धन पुरस्कार इस वर्ष अर्थात् सन् १९८७ के लिए दयानन्द स्नातकोत्तर कालेज, अजमेर के पूर्व प्राचार्य तथा आर्य समाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रेय जी वाव्ले आय को दिये जाने की घोषणा विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा० वीरेन्द्र जी अरोडा द्वार की गई है।

बिना दहेज विवाह

आर्यसमाज मन्दिर कृष्ण नगर प्रयाग के विशाल यज्ञशाला मे दिनाक ११-२-८७ को चि० दिलीप कुमार पु० स्व० श्री शिवराम कीटगज का पाणिग्रहण संस्कार आयु० कु० रानी पु० स्व० श्री सतलाल के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह ने वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान कर वर्तमान मे दहेज न लेने-देने का निर्णय लिया।

मुनि गुरुदत्त लेखावली

गुरुदत्त एम० ए० का नाम आर्यजगत मे विख्यात है। ये मृत्यु के समय महर्षि के निकट थे। उनकी मृत्यु देखकर वे आस्तिक हो गये। उन्होने बहुत से लेख व पुस्तकें प्रकाशित कीं, जो अग्रेजी मे छपी थीं उसका हिन्दी अनुवाद भगवद्दत्त ने किया। जो १९१८ मे राजपाल एण्ड सन्स लाहौर में प्रकाशित हुआ था अब १०वर्ष बाद पुन ये ग्रन्थ कुछ बृहद आकार मे प्रकाशित हुआ है पृष्ठ सख्या ३००, मूल्य १५) शीघ्र मगायें।

पुस्तकें मिलने का पता—
पता—वेद प्रचारक मण्डल, करोलबाग, रामजस रोड, दिल्ली-५

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप मे एम०पी० प्रिटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ | घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८५

चैत्र शुक्ल १३, रविवार, संवत् २०४४ वि० दिनांक १२ अप्रैल १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल—

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

★

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए.

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड
एक प्रति	६० पैसे

वर्ष ९०

अङ्क १४

प्रभु की अमृत वाणी—

सुकर्मा, स्वस्थ, सरल, सहृदयशील मानव धरा को स्वर्ग बनाते हैं

यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्वः स्वाया ।
अश्लोणा अङ्गैरहुता स्वर्गे तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान ।।

[ऋषि–ब्रह्मा / कौशिक / देवता–यामिनी / अन्तरिक्षादयो] (अथर्व० ३-२८-५, ६-१२०-३)

जिस धरा पर इस समय हम वास कर रहे हैं, वह एक नरक धाम बना हुआ है। मानव चूंकि कर्म करने में स्वतन्त्र है अतएव जिस भाँति उसका निर्माण होगा, उसका जैसा आहार, विचार, आचार और व्यवहार होगा, वैसा ही यह संसार होगा। आज का मानव इन सबमें भ्रष्ट है इसलिए उसने इस धरा को भी दूषित कर रखा है। आज का मानव अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करके द्यौ से छेड़खानी कर रहा है, अन्तरिक्ष को त्रस्त कर रहा है, धरती की वनस्पतियों को उजाड़ रहा है और जीवों के प्रति अपने दया धर्म को तिलांजलि देकर वह क्रूर, पाशविक, निर्मम, हिंसक बन गया है। प्रभु के आनन्द धाम को उसने अपने कुकर्मों से असंख्य वेदनाओं का स्थान बना दिया है।

स्वर्ग और नरक इस धरा पर ही व्याप्त हैं कहीं अन्यत्र नहीं। विभिन्न मत मतान्तरों ने इस धरा से परे मानव की काल्पनिक स्वर्गों की रचना करके उसे पथ भ्रष्ट कर दिया है। यह कैसी विडम्बना है कि धरा पर जिन वस्तुओं का धर्म के नाम पर निषेध है, काल्पनिक स्वर्ग में उनकी भरमार की गई है। इन्द्र स्वर्ग का राजा है और उस स्वर्ग में कल्पवृक्ष हैं, कामधेनुएं हैं जो मानव वहां पहुंच जाता है, उसकी समस्त कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं चाहे वे सत्य हों, चाहे असत्य हों। इस काल्पनिक स्वर्ग में मदिरा पान होता है। मेनका, उर्वशी, रम्भा आदि अप्सराओं के अश्लील नृत्य होते हैं। इन अप्सराओं का प्रयोग इन्द्र तपस्वियों के तप को, भंग करने के लिए करता है। धरती पर मदिरा पान करना, परस्त्री गमन करना अधार्मिक है पर उस ख्याली जन्नत मे शराबों के चोबच्चे हैं, ७२ हूरें जिनका सौंदर्य अद्वितीय है, प्राप्त होती हैं।

पर सत्य विद्याओं का ग्रंथ वेद कहता है–(तत्र स्वः गे) वहीं उस स्वर्ग मे (पितरौ च पुत्रान्) पितरों को अर्थात् माता, पिता, आचार्य, गुरुजन [अपने से श्रेष्ठ जनों] तथा पुत्र-पुत्रियो संततियों [अपने से अल्प सम्बन्धियों को देखें, अपने परिवार और परिजनों को सुखी देखें। 'स्वः का अर्थ है–आनन्द और 'गः' स्थान का, गति का परिचायक है। जहा शाश्वत सुख, शान्ति, ज्ञान का प्रकाश, स्वच्छन्द विचरण मुक्त विहार, निर्बन्धता, सौन्दर्य और स्वस्थता है, वहीं स्वर्ग है? पर ये सब कहां उपलब्ध हो सकते हैं तो वेद के ही शब्दों में (यत्र) जहां (सु+कृतः) सुकर्मा अच्छे श्रेष्ठकर्म करनेवाले (स्वायाः तन्वः रोगम् विहाय) अपने तनों को निरोग रखते हुए, स्वस्थ रहकर (अङ्गैः अश्लोणा) कुटिलताओं का परित्याग करते हुए (सु+हार्दः) परस्पर स्नेहशील होकर, सहृदयी बनकर एक दूसरे के प्रति अर्पित होकर (मदन्ति) आनन्द मग्न रहते हैं। संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। निरोग रहना, स्वस्थ और बलिष्ठ होना शारीरिक उन्नति है। कुटिलताओं का परित्याग आत्मिक उन्नति है और स्नेहशील होकर एक दूसरे के प्रति समर्पित होना सामाजिक उन्नति है। इस धरा को स्वर्ग बनाना ही संसार का उपकार करना है। इसे नरक धाम से स्वर्ग धाम बनाने के लिए जब तक आर्य अपनी कमर नहीं कसेंगे, पुरुषार्थी नहीं बनेंगे और इस नियम को करनी में नहीं उतारेंगे, उनका उद्देश्य कदापि पूरा नहीं होगा।

धर्म हमारा वेद है और आर्य हमारा नाम। ऊंचा उठना, आगे बढ़ना, ये ही दोनों सुन्दर काम।
बन तपस्वी तप करते हैं, धरा बनाने आनन्द धाम। लक्ष्य सिद्धि बिना 'वसन्त' नहीं करेंगे हम विश्राम ।।

—'वसन्त'

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है।।

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

अन्तरंग सभा सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के समस्त अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य महानुभावों को सूचित किया जाता है कि अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक १९ अप्रैल ८७ दिन रविवार को प्रातः १० बजे से आर्य समाज मन्दिर गणेशगंज, लखनऊ में होना निश्चय हुआ है।

कृपया नियत तिथि और समय पर पधार कर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान कीजिये।

—मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

सम्पादकीय

ओ३म्—रविवार १२ अप्रैल १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

संवत्सराः त्वा वर्धयन्तु

ज्योतिष के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सूर्य सिद्धांत' तथा अन्य अनेक शास्त्रों के अनुसार चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि को सृष्टि का सृजन हुआ था। जब सृष्टि का सृजन होता है तो धरा वृक्ष पौधों औषधियों वनस्पतियों फलों और फूलों से लदी हुई होती है। हरी भरी छटा का सर्वत्र दर्शन होता है। सुरभित पुष्पों की सुगन्धि से युक्त शीतल पवन समस्त प्राणियों को मस्ती से विभोर कर देता है। अतएव सृष्टि की रचना का प्रथम दिवस अत्यन्त सुखद सुहावना मन मोहक तथा आनंदप्रद होता है। जिस वस्तु का शुभारम्भ ही इतना भव्य हो, उसको कालान्तर भी ऐसा ही सरस और सुखद होना चाहिए, आर्यों की वेदानुसार सदैव ऐसी ही मान्यता रही है। सृष्टि के विकास क्रम को दर्शाते हुए वेद कहता है—

सविता प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीये आदित्यश्चतुर्थे चन्द्रमाः पञ्चम ऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे। मित्रो नवमे वरुणो दशम इन्द्र एकादशे विश्वेदेवा द्वादशे।

(यजु ३९।६)

अर्थात् प्रथम सविता, फिर क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य चन्द्रमा, ऋतु, मरुत, बृहस्पति, मित्र, वरुण, इन्द्र तथा सबसे अन्तिम रूप में समस्त देवों का सृजन होता है।

सृष्टि की उत्पत्ति के उपरान्त विश्व के वेद जो काल गणना करने का क्रम बनाते हैं, उसे ही वैदिक वाङ्मय में 'संवत्सर' कहते है। इस शब्द का स्थूल अर्थ ३६५ दिवसीय वर्ष माना जाता है। पर इस शब्द का वास्तविक अर्थ है–सम्+वत्+सर अर्थात् सम्यक् सतत, गतिशीलता। सृष्टि की इस काल 'गणना में' 'भारत, का जो ज्योतिष शास्त्र है, वह अनुपम है, अद्वितीय है, और सर्वथा सत्य है। सूर्य सिद्धान्तके अनुसार सृष्टि के चार युग होते हैं जिन्हें क्रमशः सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग कहते हैं। इनके एक काल को चतुर्युगी अथवा महा युग कहते हैं। एक सहस्र महायुग सृष्टि का जीवन या कल्प होता है, जो वर्ष गणना के अनुसार चार अरब बत्तीस करोड़ वर्षों का होता है। इसके पश्चात् ही महा प्रलय होती है।

जब आर्यावर्त में आर्य सार्व भौम चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करते थे, तो जहां एक परमात्मा की उपासना, एक ध्वज, एक भाषा एक जैसे रीति रिवाज होते थे, वहां इस सृष्टि संवत् की ही मान्यता दी जाती थी पर कालान्तर वेद विद्या का लोप हो जाने के कारण तथा आर्यत्व की क्षीणता से विश्व में अनेक मत मतान्तरों ने अपने-अपने महान पुरुषों के नाम पर सम्वत चलाए और उन्हें मान्यता प्रदान की। ईसाइयों द्वारा मसु मसीह के नाम पर चलाया हुआ ईस्वी जो आज विश्व विख्यात है। मुसलमानों द्वारा चलाया हुआ हिजरी सम्वंत जिसे मुस्लिम प्रधान देशों में मान्यता दी जाती है। भारत में इस समय जो दो सम्वत् मुख्य रूप से प्रचलित हैं, उनमें से एक है विक्रमी सम्वत् तथा दूसरा शाका सम्वत्। भारत सरकार जहां ईस्वी सम्वत्को मान्यता दे रही है, वहां शाका सम्वत् को भी प्रयोग में ला रही है। साधारण जनता अब भी विक्रमी संवत का प्रयोग कर रही है, पर सरकार द्वारा इसकी उपेक्षा से अनेक जनों की यह भ्रान्ति स्वभाविक रूप से उदित होती है कि भारतीयों के लिए कौन-सा सम्वत् ठीक है?

शाका संम्वत, जिसका १९०९ वां वर्ष चल रहा है, उसका आरम्भ सम्राट कनिष्क के राज्याभिषेक से है अतएव यह विक्रमी सम्वत् के १८५ वर्ष पश्चात् व्यवहार में लाया गया है। इस सम्वत् की अपूर्णता का मुख्य आधार यह है कि इसके साथ ग्रह नक्षत्र एवं सूर्य का बन्धन नहीं है जो कि विक्रमी सम्वत् से सर्वथा जुड़ा हुआ है। विक्रमी संवत् का प्रारम्भ महाराज समुद्र गुप्त के सुपुत्र प्रतापी सम्राट चन्द्र गुप्त द्वितीय, जिन्हें 'विक्रमादित्य' कहा जाता है, ने किया जैसा कि ऐतिहासिक जन बतलाते हैं, सर्वथा असत्य है क्योंकि यह सम्वत् ईसा सम्वत् से ५७ वर्ष पुराना है, जब कि उपरोक्त सम्राट का प्रादुर्भाव इसके चलन के बहुत वर्षों पश्चात् हुआ था। वास्तविकता यह है कि इसके प्रवर्त्तक उज्जयिनी के महा यशस्वी सम्राट शूर वीर विक्रमादित्य थे, जिनके नव रत्नों वाला दरबार प्रसिद्ध है और जिन में महा कवि कालीदास तथा वैद्यराज धन्वन्तरि जैसे सुविख्यात विद्वान् थे। इस महा पराक्रमी सम्राट ने शक आक्रमणकारियों को भारत से बाहर खदेड़ कर उत्तर भारत, कश्मीर-पंजाब और मध्य प्रदेश आदि को अपने साम्राज्य में सम्मलित किया। यथार्थ तो यह है कि राजनैतिक तथा ऐतिहासिक कारणों से जिस वास्तविक आधार को जन साधारण विस्मृत कर चुके थे, उन्हें ही इस सम्राट ने पुनर्जीवित किया।

यद्यपि सृष्टि सम्वत् जिसके १,९७,२९,४९,०८७ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और उसकी सत्यता को हमें स्वीकार करना पड़ता है तथापि यह भी निर्विवाद है कि विक्रमी सम्वत् गणित ज्योतिष के आधार पर सर्वथा खरा उतरता है क्योंकि यह ऋतुओं, ग्रहों और नक्षत्रों की गति से अब तक युक्त है और आगे भी रहेगा। वैशाख में सूर्य सदा मेष राशि में, ज्येष्ठ में वृष राशि में तथा इसी भांति १२ राशियों में सूर्य की स्थिति उन्हीं राशियों में होगी जो कि वर्णित हैं जब कि अन्य सम्वत्सर काल से सम्बन्धित नहीं हैं। सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण आदि की सत्य गणना का आधार किसी अन्य सम्वत् को प्राप्त नहीं है अतएव विक्रमी सम्वत् ही मान्य होना चाहिए।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही सृष्टि का प्रारम्भ हुआ था। हमारे समस्त पर्व, उत्सव, जन्म दिन संक्रान्ति, अमावस और पूर्णिमा इस सम्वत् से युक्त हैं। सप्ताह के सात दिवस भी ग्रहों के नामों से जुड़े हैं और हमारे पूर्वजों के जो जन्म दिवस हम मनाते हैं, उनमें भी तिथियों का महत्व स्पष्ट रूप से झलकता है यथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, राम नवमी, बुद्ध पूर्णिमादि। विक्रमी सम्वत् २०४४ का आगमन हो चुका है। यह नव वर्ष हमारे जीवन में हमें सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के लिए सर्वदा उद्यत करें। हम विद्या की वृद्धि और अविद्या का नाश करें और वेद के शब्दों में "संवत्सराः त्वा वर्धयन्तु" (यजु० २७/१) अर्थात् संवत्सर तेरा वर्धन करें, अभ्युदय करें, इस मन्त्रांश को सार्थक करें।

—वसन्त

आर्य समाज की भावी रूपरेखा

(बुद्धिजीवियों के सम्मेलन की आवश्यकता)

(डा० प्रशान्त वेदालकार ७/२ रूप नगर दिल्ली)

आर्य समाज स्थापना शताब्दी १९७५ में सम्पन्न हुई और महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी १९८३ मे। १९८६ का वर्ष डी० ए०वी० शताब्दी का वर्ष था, इसका महाधिवेशन फरवरी १९८७ मे सम्पन्न हुआ। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा सत्यार्थ प्रकाश रचना शताब्दिया भी सम्पन्न हो चुकी हैं। इस काल मे निरन्तर अपने लेखो तथा आर्य समाज के मन्चो से यह प्रश्न उठाता रहा हू कि आर्य समाज के बुद्धि जीवियो की एक सगोष्ठी करके आर्य समाज की भावी रूपरेखा निश्चित करनी चाहिये। विशेष रूप से अजमेर मे सफल निर्वाण शताब्दी पर जब आर्य समाजियो का कुम्भ देखा, उनकी महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के प्रति आस्था और विश्वास के दर्शन किये तो मै उक्त बात को और भी जोर-जोर से कहने लगा। पर कहीं इस प्रकार की विचार गोष्ठी आयोजित नहीं की गयी।

जब मै आर्य समाज की भावी रूपरेखा निर्धारित करने के लिये बुद्धि जीवियो की सगोष्ठी की चर्चा करता हू तब मै यह मानकर चलता हू कि राष्ट्र के निर्माण मे आर्य समाज की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है, उसका योगदान ब्रिटिश शासन द्वारा प्रवर्तित शिक्षा प्रणाली के समक्ष भारतीय एव गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के माध्यमसे देश को वास्तविक शिक्षा देने की दृष्टि से अनुपम रहा है। अग्रेजोने भारत पर अग्रजी लादनी चाही तो आर्य समाज ने स्वभाषा का नारा बुलन्द करके हिन्दी और सस्कृतको आवश्यकता पर बल दिया,और यहसिद्ध किया कि भारतीय भाषाओ के माध्यम से ही राष्ट्र उन्नति कर सकता है। राष्ट्र की भावात्मक एकता के लिये महर्षि दयानन्द ने आर्य भाषा हिन्दी तथा सस्कृत पर बल दिया, उसका प्रचार और प्रसार किया। महर्षि दयानन्द ने ही स्वाधीनता का महत्व प्रतिपादित कर दिया था, १८५७ के राष्ट्रीय विप्लव मे उन्होने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था, अपनी आयु के अन्तिम तीन वर्षों मे स्वय राजस्थान मे रहकर राजपूत राजाओ को विदेशी शासन के विरुद्ध लोहा लेने के लिये वे तैयार करते रहे। बाद मे उन्ही की प्रेरणा प्राप्त कर लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, सरदार अजीत सिंह, श्री मदनलाल ढींगरा, श्री रामप्रसाद बिस्मिल, श्री गेंदालाल, ठा० रोशनसिंह, सरदार भगतसिह, चौ० मुख्त्यारसिंह, श्री हर विलास शारदा तथा अन्य अनेक ने स्वधीनता यज्ञ मे अपनी-अपनी आहुतियाँ दीं राष्ट्र की स्वाधीनता के इतिहास मे इनका योगदान सर्वोपरि है। अस्पृश्यता निवारण, गोसवर्द्धन, स्वदेशी आदोलन, मद्यनिषेध, माँस व धूम्रपान आदि नशीली वस्तुओ का विरोध, व्यक्तिगत जीवन मे नैतिकता व निष्ठा का प्रतिपादन आदि अनेक ऐसे कार्य थे, जिनमे आर्य समाज अग्रणी रहा और देश के पथ भ्रष्ट लोगो का मार्ग दर्शन करता रहा। उस समय का पथभ्रष्ट युवक आर्य समाज की ज्योति से प्रकाश ग्रहण करता रहा और उसको स्वधर्म और स्वराष्ट्र के प्रति निष्ठा बनी रही। उसकी विचारधारा भारतीय बनी रहे, अपने महान् धार्मिक ग्रन्थो, अपने साहित्य को अनुपम रचनाओ, अपने गौरवपूर्ण इतिहास व अपने महान् पुरुषो, अपने भौगोलिक व विविध प्रदेशो की अनुपम सम्पदाओ के प्रति उनकी आस्था उत्पन्न करके उन्होने कभी भारतीय युवक को हतोत्साहित नहीं होने दिया, उसने आर्य समाज के कारण कभी सास्कृतिक रिक्तता अनुभव नही की।

पर स्वतन्त्रता प्राप्तिके बाद हम ऐसा नहीं कह सकते। १९५६-५७मे पजाब मे हिन्दी पर सकट आने एर हिन्दी रक्षा-आन्दोलन चलाने पर लगा कि वह स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी देश-निर्माण व देश को ठीक दिशा देने का कार्य सम्पन्न करता रहेगा पर उस आन्दोलन की सफलता पर आज प्रश्नवाचक चिन्ह लगा हुआ है। बाद मे भी कभी गोरक्षा आन्दोलन, कभी मद्यनिषेध, कभी भाषायी-विवादो मे आर्य समाज के सदस्य भाग लेते रहे है पर कभी उसकी महत्वपूर्ण भूमिका नही रही। दूसरो के नेतृत्व मे उसके उत्साही सदस्य केवल अपने मन की उत्तेजना को शात करते रहे, पर वे कुछ कर पा रहे हैं, ऐसा उनको कभी आभास नही हुआ।

यह बात नही कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी आर्य समाज के मन्चो से राष्ट्र निर्माण की बातें नहीं होती रही। यह कहना भी गलत है कि आर्य समाज ने राष्ट्र को ठीक दिशा दिखाने मे कभी या कोई कृपणता की हो। जब-जब राष्ट्र ने गलत दिशा मे सोचा तभी आर्य समाज ने उसको चेतावनी दी। पर उसकी चेतावनी मे इतना बल नहीं रहा कि राष्ट्र के कर्णधार उसको सुन लें। भाषा वार प्रातो, हिन्दू कोड बिल, शिक्षा मे भारतीय मूल्यो की अवहेलना, चीन का आक्रमण, साप्रदायिकता, पजाब व आसाम जैसी समस्याए, धर्मान्तरण, अस्पृश्यता-निवारण शोषण, मद्यनिषेध आदि अनेक ऐसे प्रश्न है, जबकि आर्य समाज के मन्चों से आर्य समाजी नेता चेतावनी दे रहे हैं, पर परनाला वहीं रहा इसके कई कारण थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व आर्य समाज का प्रा[illegible] सम्पूर्ण नेतृत्व कांग्रेस के साथ मि[illegible] कर स्वतन्त्रता प्राप्ति का प्रय[illegible] करता रहा। स्वतन्त्रता प्राप्ति बाद भी उसके नेता कांग्रेसी [illegible] अत काग्रेस की गलत नीतियो [illegible] विरोध करने मे उनको व्यवहारि[illegible] कठिनाइया प्रतीत हुई। कुछ आ[illegible] समाजी काग्रेस की ही सहाया[illegible] से लोकसभा वह राज्य सभा त[illegible] विधान सभाओ तथा अनेक महत्व[illegible] पूर्ण सरकारी पदो पर आसीन [illegible] गये, उनमे काग्रेस द्वारा राष्ट्र को कमजोर कर[illegible] की नीतियो का विरोध करने [illegible] उतना नैतिक साहस नहीं था इनका लाभ काग्रेस विरोधी राज[illegible] नीतिक सगठनो ने उठाने [illegible] प्रयत्न किया, पर वहा आर्य समा[illegible] का अपने अस्तित्व को लीन करन[illegible] पड़ा, परिणाम स्वरूप वहां [illegible] उसकी प्रभावी भूमिका न र[illegible] सकी। कुछ ने निर्दलीय रूप [illegible] राजनीति मे प्रवेश किया, पर द[illegible] दलीय राजनीति मे अधिक दिन तक उनकी दाल न गल सकी, इन सबका दुष्परिणाम यह र[illegible] कि आर्य समाजी राजनीतिक दृष्टि से विभक्त होता रहा और अन्द[illegible] ही अन्दर उसने अपने को खोखल[illegible] भी अनुभव किया। ऐसा भी सम[illegible] आया और सभवत आज भी य[illegible] स्थिति है कि प्रमुख आर्य समाज[illegible] उधर चल दिये जिधर उनको कु[illegible] लाभ दिखायी दिया। अर्थात् रा[illegible] निर्माण कम अपना भविष्य अधि[illegible] की नीति धीरे-धीरे उन्होने अप[illegible] ली। अपना संगठन कमजोर देख कर आर्य समाजियो ने अपने शैक्ष[illegible] णिक व दूसरी सस्थाओ के लि[illegible] सरकारी अनुदान प्राप्त करने [illegible] लिए सत्तारूढ़ दल के साथ ताल[illegible] मेल बिठाना आरम्भ किया।

क्रमश :

सिंहावलोकन

भावनाओं का मूल्यांकन

एम० पी० पाठक, बी० ए०, एल० एल० बी०

मनुष्य एक भावुक प्राणी है। भावनाओ के अविरल प्रवाह मे हिलोरें खाते रहना उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति सी है। हर पल हर घड़ी विचारो का आवागमन लगा ही रहता है और सोचने विचारने की यही श्रृखला जब क्रियात्मक रूप धारण करती है तो किसी न किसी कारण, घटना अथवा क्रिया का रूप प्रकट करती है और शनै शनै मनुष्य उसका आदी बन कर तदनुकूल आचरण करते हुए अपने विचार और भावनाओ का प्रतिमूर्ति बन जाता है। विचारो की यह पहुंचिका जोमानव के अन्तरात्मा की अदृश्य दुनिया मे प्रस्फुटित होतीहैंयह शुभअथवाअशुभ निर्माणक अथवा विध्वंसक भी हो सकती हैं। शुभ भावनाओ का अभ्युदय, मनुष्य के सुख, समृद्धि शान्ति एव सफलता का द्योतक होता है और जब यह अपना उदार रूप धारण करता है तो मात्र अपने तथा प्रिय जनो तक सीमित न रह कर सम्पूर्ण समाज राष्ट्र अथवा विश्व तक के कल्याण का स्रोत बन जाता है और उसकी अन्तरात्मा मे समस्त विश्व के प्रति अगाध स्नेह, आत्मीयता एव मैत्री की भावना जागृत हो जाती है। परातीत काल से वर्तमान तक अनेकानेक ऐसे योगी, समाज सुधारक युग, प्रवर्तक सन्त पुरुष होते चले आये हैं जिन्होने विपुल वैभव सुख-समृद्धि और पारिवारिक वृत की तिलाजलि देकर विश्व कल्याण का मत्र एव सन्देश जन जन की भावनाओ तक सचारित करने का प्रयत्न किया यह उनकी अन्तरात्मा मे प्रस्फुटित शुभ भावनाओ का ही प्रतीकात्मक रूप था जो आज ग्रन्थो मे,योगिराजश्री कृष्ण,मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम महात्माबुद्ध,स्वामी रामकृष्ण परमहस, समर्थगुरुरामदास, महर्षि दयानन्दसरस्वती,कबीर और तुलसी आदि के रूप मे अमर हैं।

ठीक इसके विपरीत जब मनुष्य की अशुभ भावनायें अपना क्रियात्मक रूप प्रकट करती हैं तो वह मनुष्य का स्वय का विनाश तो करती ही हैं साथ ही परिवार, प्रियजनो समाज राष्ट्र और विश्व के प्रति भी महान् घातक महामारी बन जाती है। अशुभ भावनाओ के इस विषाक्त प्रवाह से क्रोध, हिसा, अह, ईर्ष्या-द्वेष आदि के कीटाणु जन्म लेते हैं जो मनुष्य को शनै शनै मानवत्व से दानवत्व की ओर प्रेरित करना प्रारम्भ करते है और वह दूषित विचारो की गहनतम अमानिशा मे घिर कर ईश्वर, धर्म, दया और न्याय को भूल कर अनीति, अनाचार, दुराचार, हिसा, पाप, का आवरण ओढ कर सामाजिक विध्वंश की ओर अभिमुख हो जाता है। मानवीय विध्वंश की यह प्रक्रिया धीरे-धीरे अनुकरण की महामारी बन कर एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे तक होते हुए विषैली हवा की तरह अधिकाधिक जन मानस तक छा जाती है। फिर शुरू होता है भ्रष्टाचार और हिंसात्मक कारनामो का दौरा-दौर जैसा कि आज हो रहा है। कहने की आवश्यकता नही कि आज परिवार से विश्व तक अशाति की चिगारी किस तरह उड रही है, और समाज किस तरह धू-धू करके जल रहा है। आज मनुष्य का खून पानी से सस्ता है। मानव-मानव के सीने मे, बेहिचक खजर भोंक रहा है, मनुष्य का जीवन साग भाजी की तरह हो गया है, बेरहमी और निर्दयता की भावना इस पराकाष्ठा पर पहुच चुकी है कि आज उसके ऊपर किसी के चीखो पुकार, फरियाद, हाहाकार, करुण क्रन्दन का कोई असर ही नही प्रतीत होता। आज मनुष्य-मनुष्य से इतना भयभीत है जितना हिसक पशुओ से भी नहीं। सचमुच मनुष्य को मनुष्य कहने मे भी भय हो रहा है, आशका हो रही है और ऐसा प्रतीत होता है कि मानो मायावी दानवो ने मानवी सत्ता और उसके बुद्धि विवेक पर अपना आधिपत्य ग्रहण कर लिया हो। रिश्वत, चोरी,डकैती, व्यभिचार, खून,कत्ल आज के मानवकी दिनचर्याबनकर रह गये हैं। इन सब का एकमात्र कारण मनुष्य की वह अशुभ भावनायें ही हैं जो आज अशान्ति और विध्वंश की ज्वाला बन कर धधक रही हैं।

इन अनैतिक अनिष्टकारी गतिविधियो का दायित्व हम सब पर है। सम्पूर्ण मानव जाति पर है। क्योंकि, जो महामारी मानव भावनाओ के दुष्क्रमण से प्रवाहित होती है उसका जिम्मेदार किसे ठहराया जायेगा? आज मानव तनधारी तो हैं परन्तु मानव नहीं। योग प्रदर्शक हैं परन्तु युग प्रवर्तक नही, सामाजिक नेता हैं परन्तु समाज सेवक नहीं, जनता के प्रतिनिधि तो हैं जन सेवक नहीं, धर्म गुरु नाम तो है परन्तु धर्म-पथ प्रदर्शक नहीं,आज न्याय वकीलो की वाक् चातुर्य मे छिप गयाहै। अर्थात् आज सर्वत्र स्वार्थ परता की ही भावना दृष्टिगत होती है।

अतएव वर्तमान परिवेश मे आवश्यकता है कि प्रत्येक जन अपना आत्म निरीक्षण शान्त चित्त हो कर करें, और अपने अन्तर में भावनाओ के मध्य पनप रहे कुसंस्कारों के अकुर को पनपने से पहले ही चुन-चुन कर उखाड़ फेंके। अध्यात्म मार्ग का अनुसरण करें, ईश्वरीय सत्ता को दृढ़ता एव बिना किसी सन्देह के साथ स्वीकार करें। जीवन, खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार और व्यवहार को आध्यात्मिक बनायें। काम क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या द्वेष आदि आन्तरिक विनाशक शत्रुओ को भस्मीभूत करके, सत्य, दया, धर्म, न्याय का आभूषण धारण करें,साथहीमनुष्य और मनुष्यताका वास्तविक अर्थ समझ कर अपने आपको सच्चा मनुष्य, सच्चा धर्म निष्ठ, सच्चा जन सेवक, सच्चा समाज सुधारक और सच्चा नेता बना कर विश्व शान्ति के लिए कटिबद्ध हो। स्वार्थ की भावना को समाप्त करें परमार्थ की ओर अग्रसर हो। और समस्त मानव जाति को आत्मीय मित्र एव प्रिय जनो की भाति अपने दामन मे समेट लें, असम्भव को सम्भव करके दिखा दें। यही भावनाओ का वास्तविक मूल्याकन होगा। यही मानव जीवन की सफलता का रहस्य होगा। और यही एक मनुष्य होने के नाते मनुष्य का सच्चा कर्त्तव्य होगा।

★ ★

निर्वाचन

आर्य समाज कासगज (एटा)
प्रधान श्री रामस्वरूप आर्य तारबाबू
मन्त्री श्री दिनेश चन्द्र बिरला
कोषा० श्री गौरीशकर महेश्वरी

आर्य समाज मवाना (मेरठ)
प्रधान श्री दया प्रकाश जी सर्राफ
मन्त्री श्री कान्ति प्रकाश जी
कोषा० श्री प्रेम प्रकाश जी

आर्य समाज सुजानगंज जौनपुर
प्रधान श्री बटेश्वर नाथ तिवारी
मन्त्री डा० राम अकबाल तिवारी
कोषा० श्री गगा प्रसाद आर्य

आर्य समाज कृष्णा नगर (मथुरा)
प्रधान श्री कन्हैया लाल जी आर्य
मन्त्री श्रीमती राज कुमारी गुप्ता
कोषा० श्री कृष्ण लाल आहूजा

स्वामी दयानन्द सम्बन्धी साहित्य के साधिकार

शोधकर्ता विद्वान्

—डा० भवानी लाल भारतीय

—आचार्य रमेश चन्द्र, एम० ए०

भारतवर्ष के इतिहास मे उन्नीसवीं शताब्दि का विशेष महत्व है। इस शताब्दी मे जहाँ राजनैतिक रूप से इग्लिश जाति ने अपने साम्राज्य वाद की जड़ें भारत मेमजबूत की वहीं इस युग मे कई समाजसुधारक भी हुए जिन्होने सामाजिक नवचेतना को नई दिशा दी। स्वामी दयानन्द जी की यह विशेषता रही कि उन्होने सामाजिक चेतना के साथ राष्ट्र मे राजनैतिक चेतना को भी जागृत किया तथा विदेशी शासन को उखाड फेंकने का सकेत किया। यद्यपि स्वामी जी के कार्य कलाप के युग को सौ वर्ष हो बीतें है परन्तु उनके तथा आर्य समाज सम्बन्धी आन्दोलन और मान्याताओ को लेकर मत-मतान्तर का भी उहापोह है और जो निर्धारित मान्यतायें है उन पर भी विवाद चिन्ह है। स्वामी जी द्वारा रचित साहित्य पर भी शका समाधान किया जाता है कि जो सज्जन स्वामी जी द्वारा बोले हुए विषय को लिखते थे वह अपनी ओर से भी न्यूनाधिक किया करते थे। उसी प्रकार उनके जीवन और घटनाओ के सम्बन्ध मे भी विभिन्न उदगार है। बहुत से लेख हैं बहुत से ग्रन्थ हैं। सब मे विभिन्नतायें है। अत स्वामी दयानन्द सरस्वती आर्य समाज—और आर्य समाज सम्बन्धी साहित्य पर जो शोधकर्ता विद्वान् हमारे सामने है उनमे सबसे बडा योगदान डा० भवानी लाल भारतीय का है। प्रारम्भ से ही इस विषय मे भारतीय जी की रुचि रही और स्नातकोत्तर उपाधि ग्रहण के बाद सस्कृत भाषा और साहित्य को आर्य समाज का योगदान विषय पर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करके राजस्थान विश्वविद्यालय से पी एच डी की उपाधि ग्रहण की। विगत पैंतिस वर्षों से लेखन क्षेत्र मे है तथा लगभग पचास छोटे बडे ग्रन्थो का लेखन, प्रणयन, अनुवाद आदि कर चुके है। डा०भारतीय ने बीस वर्ष से अधिक समय तकराजकीय शिक्षा केंद्र अजमेरकालेज मे अध्यापनकिया और सप्रति छ वर्षों से चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय मे दयानन्द पीठ के प्रमुख प्रोफसर एव अध्यक्ष हैं जहाँ इसी विषय मे शोधकार्य हो रहा ह। दयानन्द निर्वाण शताब्दि के अवसर पर नवजागरण के पुरोधा नामक एक विद्वतापूर्ण ग्रन्थ लिख कर प्रकाशित कराया जो महर्षि दयानन्द का शोधपूर्ण प्रारम्भिक जीवन चरित्रहै और स्वामीजी तथा उस समय के भारत की मान्यताओ परिस्थितियो पर प्रकाश डालता है। महर्षि दयानन्द और विवेकानन्द शीर्षक पुस्तक भी तुलनात्मक दृष्टि मे उच्चकोटि की है तथा उन्नीसवीं शताब्दी के दो सन्यासियो तथा देश भक्त महानात्माओ का विस्तृत परिचय प्रस्तुत करती है। अध्ययन के प्रति रुचि लेखन, के प्रति बलवती शक्ति एव जीवन मे सरलता व्यवहार मे विनम्रता नेत्रो मे समदर्शितापूर्ण स्नेह तथा शारीरिक चेष्टाओ मे बाल सुलभ क्रिया कलाप डा० भारतीय की विशेषतायें है जिनसे प्रभावित होकर प्रत्येक व्यक्ति आपका प्रशसक और समर्थक हो जाता है। आपकी विद्वता और गरिमा को ही लक्ष करके विभिन्न सस्थाओ और शिक्षा केन्द्रो ने आप को सम्मानित किया है।

महत्वपूर्ण रचनायें डा० भारतीय की बहुत सी है। परन्तु विगत वर्ष डा० भारतीय की दो महत्वपूर्ण शोध सम्बन्धी रचनायें प्रकाशित हुई है। जिनका यहाँ उल्लेख कर रहा हू।

१— आर्य समाज विषयक साहित्य परिचय— लेखक—सम्पादक डा भवानी लाल भारतीय—प्रकाशक—गोविन्द राम हासानन्द देहली, पृ सख्या १२८, मूल्य पच्चीस रुपये।

यह रचना विस्तृत रूप से आर्य समाज विषयक जो भी ग्रन्थ प्रक शित हो चुके है उसकी पूरी जानकारी देता है। और एक प्रकारान्त से आर्य समाज का इतिहास भी है। आर्य समाज विषय साहित्य पर्ि चय देते हुए आर्य समाज का इतिहास सभा सस्थाओ का इतिह विभिन्न अवसरो पर शताब्दि—अर्द्ध शताब्दि के अवसर पर प्रकाशि स्मारिकाओ का परिचय, आर्य समारोहो का विवरण, गुरुकुलो व परिचय, विदेशो मे प्रकाशित आर्य साहित्य, आर्य समाज के नियम विभिन्न भाषाओ मे प्रकाशित हुए, आर्य समाज के ग्रन्थो का विश्व भाषाओ मे अनुवाद, सन्दर्भ ग्रन्थ, शोध ग्रन्थ आदि की सूची प्रस्तुत अरबी, फारसी, अग्रेजी आदि विश्व की भाषाओ मे आर्य समाज नियमो का जो अनुवाद है उस भाषा का मूल चित्र सारिका आदि सगृहीत है। इस प्रकार से यह लघु ग्रन्थ एक बहुत बडी कमी की पू करता है तथा आर्य साहित्य सम्बन्धी सराहनीय जानकारी से परि है।

२— महर्षि दयानन्द के भक्त प्रसशक और सत्सगी—लेखक—ड भवानी लाल भारतीय प्रकाशक—स्वामी सत्य प्रकाश प्रतिष्ठान, पृ १७०,मूल्य बीस रुपिया।

प्रस्तुत रचना स्वामी जी के जीवन मे जो उनके सम्पर्क मे आ प्रसशक रहे—भक्त हुए तथा सत्सग से लाभान्वित हुए उनमे से अधिक प्रमुख व्यक्तियो का परिचय है जो स्वामी जी के जीवन की विभि घटनाओ की कहानी कहता है और उनके समय की परिस्थितियो प्रकाश दर्शाता है।

डा० भारतीय के शब्दो मे—स्वामी दयानन्द अपने युग के महाप्रा व्यक्तित्व के महापुरुष थे जिनके विचार तथा विश्वास देश काल-म सम्प्रदाय की सीमाओ से ऊपर उठ कर धरती पर बसे मानव अभ्युत्थान की ओर ले जाते है। इसलिये बहुसख्यक हिन्दुओ के अ रिक्त ईसाई ओर मुसलमान भी उनके प्रति आस्थावान थे। उनसे सप करके विचार विनिमय करते थे। अमेरिकन विद्वान् जैक्सन-डेवि फ्रासीसी विचारक रोमा रोलो—अलीगढ़ विश्वविद्यालय के सस्थापक स सैय्यद अहमद खा, दीन बन्धु एन्ड्रूज, योगी अरविन्द, विचारक टी ए वास्वानी तथा महाकवि टैगोर आदि स्वामी दयानन्द के प्रसशक लिये रहे कि उनमे मानवता के समुत्थान के प्रयास थे। स्वामी जी ए देशीय न हो विश्व व्यापक मार्ग दर्शक थे। तथा सिद्धात धर्म-दर्शन मानवता के आदर्शों एव मापदण्डो पर खरे उतरते थे साथ ही वैज्ञानि एव तर्क मूलक भी थे।

डा० भारतीय ने अपने ग्रन्थ मे प्राय पचास व्यक्तियो का उल्ले किया है उनमे प्रमुख है—श्रोशी अमर लाल, पडित सुन्दरलाल स्वाम विशुद्धानन्द सरस्वती, काशी नरेश ईश्वरी नारायण सिह, भारते हरिश्चन्द्र, राजा जयकृष्ण दास, सर सैय्यद अहमद खा, रईस दु प्रसाद, माजी हरिकुवर, पडित भीमसेन शर्मा, महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकु केशव चन्द्र सेन, रामकृष्ण परमहस, गोपाल राव हरि देशमुख, श्या जी कृष्ण वर्मा, महादेव गोविन्द रानाडे, जगन्नाथ शकर सेठ, महादे कुण्टे, पण्डिता रमाबाई, सर टी माधव राव, मुशी अलखधारी, डा रहीम खा स्वामी,अच्युतानन्द, मुशी समर्थदास,योगी कालूराम, शाहपुरा धीश नाहरसिह, राणा सज्जन सिह, मोहन लाल विष्णु पण्डला

(शेष पृष्ठ ७ पर)

जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर का नव निर्वाचन—

१९ अप्रैल १९८७ को आर्य समाज गोरखपुर (वक्शीपुर) में संपन्न होगा

गोरखपुर जिले की सभी आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि कुछ निहित स्वार्थी तत्वो द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ के नियन्त्रण से अलग नितान्त अवैधानिक रूप से एक अलग जिला आर्यो प्रतिनिधि सभा गोरखपुर पञ्जीकृत करवा कर जिले मे एक भ्रमपूर्ण वातावरण उत्पन्न कर आर्य समाजो की सम्पत्ति पर अवैध कब्जे के षडयन्त्र तथा सभा से विद्रोह के कारण आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने गोरखपुर की जिला आर्यो प्रतिनिधि सभा को निरस्त कर प्रशासक । रिसीवर नियुक्त कर दिया था । अब गोरखपुर जिले मे विधिवत आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नियन्त्रण मे जिला आर्योप्रतिनिधि सभा गोरखपुर का निर्वाचन दिनांक १९ अप्रैल १९८७ को २ बजे दिन मे आर्य समाज मन्दिर बक्शीपुर गोरखपुर मे होना निश्चित किया है । इस हेतु डा० विनय प्रताप सयोजक पूर्वी प्रचार विभाग को सभा ने निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किया है । जिले की सभी समाजो के प्रतिनिधि यथा समय निर्धारित स्थान पर उपस्थित होकर निर्वाचन मे अपना योगदान दें तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० से सम्बद्ध विधिवत निर्वाचित जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर का गठन करसमाज के सगठन एवकार्यो मे सहयोग करें।

—मनमोहन तिवारी, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

आर्य समाज गोरखपुर (बक्शीपुर) के तत्वाधान मेआर्य समाज स्थापना दिवससंपन्न

दिनाक ३० अप्रैल चंत्र सुदी प्रतिपदा सवत् २०४३ को आर्य समाज का स्थापना दिवस आर्य समाज गोरखपुर बक्शीपुर मे सम्पन्न हुआ । उक्त अवसर पर प्रात काल प्रभात फेरी व पश्चात विशेष यज्ञ एव स्थापना दिवस का कार्यक्रम प्रधान श्री अवधेश कुमार राय जी की की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ ।

तपोवन का वार्षिक वृहद् यज्ञ २०अप्रैल से

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का वार्षिक वृहद् यज्ञ सोमवार दिनाक २० अप्रैल से आरम्भ हो रहा है । यह सामवेद-पारायण यज्ञ रविवार दिनाक २६ अप्रैल को पूर्ण होगा । यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा दयानन्द वानप्रस्थ होगे । इस अवसर पर वेद प्रवचन करने के लिए नई दिल्ली से प० पृथ्वीराज शास्त्री और गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय से वहा के उपकुलपति प० रामप्रसाद वेदालकार पधार रहे है । ब्रह्मचारी आर्य नरेश भी पधारेंगे ।

निर्वाचन

आर्य समाज मुहद्दीपुर, गोरखपुर
प्रधान श्री रमापति सिंह स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी
मन्त्री श्री सेवालाल जी आर्य
कोषा श्री डा बी आर मौर्या

लखनऊ में आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह सपन्न

१९ बालक बालिकाओं के सामूहिक यज्ञोपवीत

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा आयोजित आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह दिनाक २९-३-८७ को प्रात ७/३० बजे से ११/३० बजे तक श्री मद्दयानन्द बाल सदन मोती नगर मे सोल्लास सम्पन्न हुआ । जिसमे लखनऊ की सभी आर्य समाजो के सैकडो आर्य नर-नारियो ने भाग लिया ।

समारोह का समारम्भ वृहद् यज्ञ से हुआ । जिसमे बाल सदन के १५ बालक एव ४ बालिकाओ के उपनयन एव वेदारम्भ सस्कार सम्पन्न कराये गये ।

ठाकुर वीरेन्द्र बहादुर सिंह ने अपने उपदेश के द्वारा आर्य समाज के दस नियमो की सारगर्भित व्याख्या प्रस्तुत की । आचार्य देवव्रत अवस्थी ने उपनयन एव वेदारम्भ की हृदयग्राही व्याख्या करते हुए आर्य समाज की सदा सर्वदा उपादेयता का सकेत दिया और कहा कि देश मे आतकवाद, साम्प्रदायिक विद्वेष एव वर्ग भेद को समूल नाश करके सुख शान्ति समृद्धि की स्थापना आर्य समाज ही कर सकता है । अत आर्य समाज के सभासद् अपने कर्त्तव्यो को पहचाने और देश को समृद्ध बनाने का सकल्प लें ।

सभा की अध्यक्षता श्री अर्जुन देव महाना प्रधान जिला सभा ने की समारोह की समाप्ति के पश्चात् जलपान की व्यवस्था भी सराहनीय रही ।

—सजय अवस्थी सम्वाद प्रेषक

हैदराबाद सत्याग्रह सम्मान पेंशन के सम्बन्ध मे,
सार्वदेशिक प्रधान—

स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती की गृहराज्यमन्त्री श्री चिन्तामणि पाणिग्रही से भेट

दिनाक २० मार्च १९८७ को अपरान्ह ३ बजे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ प्रोफेसर शेरसिंह, बाबू सोमनाथ एडवोकेट, गृहराज्य मन्त्री श्री चिन्तामणि पाणिग्रही से मिले । हैदराबाद सत्याग्रह मे भाग लेने वाले सेनानियो के सम्बन्ध मे गृहमन्त्रालय के अधिकारियो द्वारा की जा रही लापरवाही की ओर मन्त्री महोदय का ध्यान आकृष्ट किया गया जिससे पेन्शन के अधिकारी स्वतन्त्रता सेनानियो मे असन्तोष हो रहा है । लगभग एक घण्टे तक आर्य नेताओ ने अपना दृष्टिकोण रखा ।

श्री पाणिग्रही जी ने पेन्शन प्राप्त करने के अधिकारी सत्याग्रहियो के प्रति बडी सहानुभूति से सभी मुद्दो पर विचार करने का आश्वासन दिया । गैर सरकारी सलाहकार समिति का कार्यकाल ३१ मार्च को समाप्त हो रहा था । समिति का कार्य पूरा करने के लिए सभा प्रधान के लिखित अनुरोध पर इसे आगामी ३० सितम्बर तक बढा दिया गया।।

समिति की आगामी बैठक जिसे गृहमन्त्रालय के सैल ने रोक दिया था श्री पाणिग्रही ने २५ मार्च को बैठक बुला कर अपनी सिफारिशें भेजने के अनुरोध को भी स्वीकार कर लिया ।

धार्मिक

राम नवमी-श्री राम जन्मभूमि

—श्री इन्द्रराज जी प्रधान,
आ० प्र० स० उत्तर प्रदेश

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीयुत् भगवान राम की जन्म भूमि पर विवाद भारतवर्ष के लिये अत्यन्त ही खेद और लज्जा का विषय है। इस देश मे रहने वाले सभी भारतवासी उस विश्व पुरुष की सन्तान है। भगवान् राम हम सबके है। जब हमे भारत मे भाई चारे से रहना है तो उदारतापूर्वक, जिस स्थल से कोटि-कोटि मानवो की भावनाए जुडी हुई है वह भगवान राम जी की जन्मस्थली, उस ट्रस्ट को मिल जानी चाहिए जिसको हिन्दू मात्र की मान्यता प्राप्त है।

राजनीति मे भगवान् राम ने एक अमूल्य आदर्श उपस्थित किया है। आज के साम्राज्यवादी एव साम्यवादी लोग जहाँ एक बार कब्जा कर लेते है फिर पुन वह स्थल लौटाते नही है। परन्तु भगवान् राम ने जहाँ-जहाँ विजय श्री प्राप्त की, वहा वहा का राज्य वहीं श्रेष्ठ पुरुषो को सौंप दिया। कभी स्वप्न मे भी उस पर आधिपत्य जमाने की कोशिश नहीं की।

बाली को मार कर सुग्रीव को राज्य सौपा तथा रावण को मारकर विभीषण को राज्य सौंपा। यहा तक कि जब दो बार वनवास की समाप्ति के पश्चात् राज्याभिषेक हुआ देश-देशान्तर के राजाओ ने अमूल्य वस्तुए भेंट की, विभीषण भी पुष्पक विमान भगवान् राम के चरणो मे अर्पित करनाचाहता था तब सबके समक्ष पुष्पकविमान की भेंट को अस्वीकारकरते हुए उन्होने कहाकि,विभीषण! यह पुष्पकविमान कुबेर का था। रावण ने आक्रमण कर जबरदस्ती पुष्पक विमान पर कब्जा कर लिया था। अब वह आप मुझे भेंट कर रहे हो यह पुष्पक विमान लूट मात्र है जिसे मै तीनो कालो मे भी स्वीकार नहीं कर सकता। यह था आदर्श भगवान् राम का।

हम आर्य लोग राम जन्म भूमि को प्रयास करने पर पूरी तरह से अपने वश मे नहीं कर पाए। भगवान् राम के आदर्शो के अनुकूल हम किसी की एक इन्च भूमि भी ले नहीं सकते परन्तु यह भी यथार्थ है कि हम किसी भी मूल्य पर एक इन्च भूमि दे भी नही सकते। ऐतिहासिक स्थल तो किसी एक विशेष सम्प्रदाय के नहीं होते अपितु ससार की धरोहर होते है इस लिए इस स्थल पर एक विशाल मन्दिर का निर्माण ससार के लिए कल्याण और मगल का कार्य होगा। आज की परिस्थितियो मे धनुषबाण हाथ मे लिए हुए उन आसुरी शक्तियो को परास्त करने वाले मर्यादा पुरुषत्तम श्रीराम को शतशत प्रणाम।

आर्य समाज गुलावठी में— सभा प्रधान जी का भव्य स्वागत

आर्य समाज गुलावठी (बुलन्दशहर) का वार्षिकोत्सव दिनाक १७/३/८७ को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ तथा सभा प्रधान श्री प इन्द्रराज जी का मुख्य अतिथि के रूप मे भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर देश को वर्तमान परिस्थितियो पर सभा प्रधान जी के ओजस्वी व्याख्यान हुए तथा उन्होने यज्ञ द्वारा वायु प्रदूषण को समाप्त करने एव वैचारिक स्वच्छता तथा शुभ सस्कारो को ग्रहण करने पर बल दिया। इसके साथ ही उन्होने कन्या गुरुकुल हाथरस की ब्रह्मचारिणियो द्वारा भजन एव व्यायाम प्रदर्शन के कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशसा की। उत्सव सराहनीय एव सफल रहा।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए पाँच महायज्ञ आवश्यक

१८/३/८७ को, सेवा समिति, गीता भवन प्रहलाद नगर मेरठ के ओर से चल रहे यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने गायत्री मन्त्र पर अपने विचार प्रकट करते हुए सब उपस्थित भाई-बहनो से गायत्री मन्त्र के जप का आग्रह किया। साथ ही यह भी सकेत किया कि गृहस्थी लोग तभी सुख का अनुभव कर सकते है जब घर मे प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि पवित्र हो। आज राष्ट्र मे हिंसा और उग्रवाद का बोलबाला है क्योकि लोगो की बुद्धिया तामसिक हो गई है। सबकी बुद्धिया यदि पवित्र हो जायें तो हिंसा आतकवाद और उग्रवाद अपने आप समाप्त हो जाये। उन्होने बोलते हुए आगे बताया कि प्रत्येक व्यक्ति को पाच महायज्ञ अवश्य करने चाहिये।

(१) ब्रह्मयज्ञ—सध्या और स्वाध्याय, (२) देव यज्ञ— हवन और विद्वानो का सत्कार, (३) पितृ यज्ञ—माता-पिता की सेवा एव सदा को अच्छी सन्तान देना, (४) अतिथि यज्ञ—ब्रह्म ज्ञानी अतिथियो का स्वागत (५) बलि वैश्वदेव यज्ञ— पशु-पक्षी कीट-पतगो, अपाहिज आदियो का भरण पोषण करना। ये छोटे-छोटे यज्ञ हैं परन्तु इनको महा यज्ञ कहा गया है। गृहस्थी इन पाच महा यज्ञो को करने से परम सुख को प्राप्त करता है। आइये गायत्री मत्र के जप से बुद्धि को पवित्र करें तथा इन पाच ५ महायज्ञो से अपने पारिवारिक एव सामाजिक जीवन को सुखमय बनायें।"

स्वामी दयानन्द संबन्धी साहित्य के साधिकार—

(पृष्ठ २ का शेष)

कर्नल सर प्रताप सिंह, जोधपुर नरेश जसवन्त सिंह, पादरी स्काट, प्रो म्योनियर विलियम्स, हैनरी अल्काट, मैडम ब्लैवेटस्की आदि।

विद्वान् लेखक डा० भारतीय ने अधिक से अधिक विस्तृत परिचय दिया है—दुर्लभ चित्र प्रस्तुत किये हे और उन तथ्यो पर प्रकाश डाला है जिनसे आकृष्ट हो कर यह सब स्वामी दयानन्द के सत्सगी बने, खोज और अध्ययन की गहराई मे जाकर तथ्यो का उल्लेख हे।कर्नल सरप्रताप सिह का तो विस्तृत वर्णन है जो उस समय की गतिविधियो पर प्रकाश डालता हे तथा शोधकर्ताओ को दिशा प्रदान करता है।

डा० भवानीलाल भारतीय की इन आलोच्य रचनाओ का तथा अन्य कृतियो का अवलोकन आर्य जनो, शोधकर्ताओ, उपदेशको आदि को करना चाहिये-आशा है भविष्य मे इस दिशा मे और प्रयास होगा—डा० भारतीय की यह रचनायें और अन्य कृतियो के लिये सम्पर्क कीजिये प्राप्ति स्थान डा० भवानीलाल भारतीय, अध्यक्ष दयानन्द पीठ, सी—३ पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ—१४

स्वास्थ्य-सुधा

शराब से सर्वनाश

(स्वामी सेवानन्द सरस्वती महामन्त्री हिन्दू शुद्धि समिति हरियाणा)

यह तो सभी लोग जानते है कि शराब पीने से बुद्धि नष्ट होती है, शराब अन्दर और अकल बाहर यह बात बड़े बूढ़े और बुद्धिमान कहते आये हैं। इसमें सभी का एक मत है, हृदय मस्तिष्क और मन शराबसे ये सभी कमजोर होते हैं। चेहरा कान्तीहीन और तेजहीन हो जाता है, शरीर रोगों का घर और मन, कुकर्म करने को तैयार हो जाता है। शरीर आलसी, कामी क्रोधी हो जाता है। यह ताकत का नाश करके उमर को कम कर मनुष्य को मौत के मुंह में ले जाती है। पीने वाले को चोर जार जुआरी कायर, क्रूर पापी और मांसाहारी बना देती है। दुनिया का कौन सा पाप है जो पीने वाले से नहीं करवाती। मनुष्य के कीमती जीवन को मिट्टी में मिलाकर इस लोक और परलोक दोनों को बिगाड़ती है, इसलिये भारत के धर्माचार्यों ने इसका खण्डन किया। पहले कहीं लोग यह प्रचार करते थे कि मदिरापान से रोग दूर होते हैं और दवाई के तौर पर इसका इस्तेमाल कर लेना चाहिये। आज विश्व मे यूरोप और अमेरिका के अच्छे-अच्छे और बड़े-बड़े डाक्टर इसमिथ्यात्वकी पोलखोलने लगे हैं, तथा इस निष्कर्षपर पहुंचे है कि शराब किसी भी रूप में स्वास्थ्यवर्धक और जीवनदायिनी नहीं है। शराब किसी रोग को दूर नहीं करती, इसलिये यह औषधि नहीं है। परन्तु शराब विष (जहर) है, जो हृदय दिमाग मस्तिष्क गुर्दे और फेफड़ को भयंकर क्षति पहुंचाती है, पागलपन का मुख्य कारण शराब है। गले के कैंसर को और मिर्गी को बढ़ाती है, उपर्युक्त कारणो से यूरोप और अमेरिका के डाक्टरों ने उनका प्रयोग बन चिकित्सा मे बन्द कर दिया है। शराब पीने से शरीरिक मानसिक, आत्मिक और नैतिक पतन होता है और समाज का सारा ढ़ाचा बिगड़ जाता है, बड़े-बड़े राष्ट्र और जातियों को किस प्रकार शराब ने घरघाट का नहीं छोड़ा, सब ऐश्वर्य मिट्टी मे मिला दिया इस पापी शराब नें बड़े-बड़े साम्राज्यों का सर्वनाश कर डाला। इसकी झांकी नीचे के पक्तियों में पढ़ेंगे। तथा इससे शिक्षा लेकर संसार से शराब को समूल नष्ट करने का प्रयत्न करेंगे, जिससे इसका कोई नाम लेवा और पानी देवा न रहे। ऋषियों के पवित्र आर्य वर्त (भारत) को इस पापिनी के पंजे से निकालना हम सबका मुख्य कर्तव्य है। यदि देश में रही तो हम नहीं रहेंगे, न ही हमारे देश में कुछ बचेगा। इस डायन का नाम व निशान सारे संसार से मिटा कर छोड़ना है। इसी धारणा को धारण करके हमें कटिबद्ध हो जाना चाहिये। यदि एक सौ सच्चे सेवक भी संगठित होकर इस पवित्र कार्य को करने में जुट जायें तो वह दिन दूर नहीं जब राजा अश्वपति की घोषणा सब ओर फिर सुनाई देने लगेगी।

जो राष्ट्र शराब की आदत का शिकार है कहना चाहिए कि उसके सामने विनाश मुंह फाड़े खड़ा है। इतिहास में कितने हो प्रमाण हैं कि इस बुराई के कारण कई साम्राज्य मिट्टी में मिल गये।

प्राचीन भारत का इतिहास हमें बताता है कि पराक्रमी यादव जाति जिसमें श्रीकृष्णने जन्म लिया था इसी बुराईके कारण नष्ट हो गई। रोमन साम्राज्य के पतन का एक सहायक कारण भी शराब ही है। शराब बन्दी में देरी राष्ट्र के लिये भयावह है।

शादी के समय में कई लोग शराब पीते है और बरात की शोभा खराब करते है। शराब बीमारी का घर बन जाती है, शराब पीने वाले की पत्नी भी उससे हमेशा दुःखी रहती है और बच्चे भी खराब हो जाते हैं और समाज में इज्जत भी नहीं रहती। शराबी आदमी कभी भरोसे मन्द नहीं रह पाता।

इसलिये सभी पवित्र विचार वालों मनुष्यों का धर्म है कि वे गांव गाव गली-गली में शराब की खराबी का प्रचार करके नादान मनुष्यों को इसके चंगुल से बचायें।

सरकार का भी धर्म है कि वह शराब के ही ठेकों की—नीलामी पूर्णतया बन्द करें। शराब बन्दी की नीति को पूरी तरह से लागू करें।

दानव दहेज

(श्री सत्यव्रत चौहान सिद्धांत शास्त्री पढ़री मैनपुरी उ० प्र०)

सदियों से डाल रक्खा भारत में आज डेरा।
कब तक विनास होगा दानव दहेज तेरा॥

भारत में आर्य ललना क्यों आज रो रही है,
लालच से घोर ज्वाला अभिशाप भोग रही है।
मानव दहेज का मुख सुरसा सा बढ़ चला है,
युग के पवन सुतों के उस पार बढ़ चला है।

सब बुद्धि जीवियों का इसने किया है घेरा।
कब तक विनाश होगा दानव दहेज तेरा॥

होता कहां स्वयंम्बर व्यवसाय हो गया है;
वर का वरण यहां पर इक आय हो गया है।
जीवन चिर प्रसवित कलियां न खिल सकीं हैं,
वे चाहतीं जिसे थीं घड़ियां न मिल सकीं हैं।

जीवन वसन्त कितना मानस भवन में डेरा।
कब तक विनाश होगा दानव दहेज तेरा॥

होकर निराश कितनी विषपान कर चुकी हैं,
सुकमारियां अनेकों जल—के मर चुकी है।
पर जन समाज अब तक जागृत न हो सका है,
कलुषित जगत का यह धब्बा न धो सका है।

तुझको समय—समय पर ऋषियों ने आन हेरा।
कब तक विनाश होगा दानव दहेज तेरा॥

पढ़कर उनींद में क्या देखोगे और सपना,
होकर सजग विचारो कर्तव्य आप अपना।
मृतप्राय जाति में अब ऐसा विवेक भर दो,
दानव दहेज का, यह दुनियां से दूर कर दो।

संकल्प आज कर लो स्वर है विनम्र मेरा।
कब तक विनाश होगा दानव दहेज तेरा॥

आर्य जगत

—दिनाक ४ मार्च ८७ से ८ मार्च ८७तक नगर महिला आर्य समाज माडियाबाद का वार्षिकोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री ब्रह्मचारिणी वेद विदुषिता सुमित्रा देवी जी, आचार्या कन्या गुरुकुल नरेला के ब्रह्मत्व मे अपनी ब्रह्मचारिणियो सहित अथर्व वेद आंशिक यज्ञ सम्पन्न हुआ।

—महर्षि दयानन्द गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) का १६ वाँ वार्षिकमहोत्सव दि० ७,८,९ मार्च ८७ को गुरुकुल प्रांगण मे वेद, राष्ट्र रक्षा, धर्म रक्षा, गोरक्षा आदि सम्मेलनो के रूप मे अतिहर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

—आर्य समाज इटारसी मे दिनाक १६-३-८७ को वासती अषाढ़ी नव सस्येष्टि होलिकोत्सव महा पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

—आर्य कुमार सभा, गोण्डा द्वारा १६ मार्च १९८७ को स्थानीय गाधी उद्यान गोण्डा मे "होली मिलन समारोह" मनाया गया।

—आर्य समाज फखरपुर (बहराइच) का ५५ वा वार्षिकोत्सव दि० ६ मार्च से ८ मार्च १९८७ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। वार्षिकोत्सव मे श्री प० केशव देव शास्त्री महोपदेशक सभा, प ब्रह्मानन्द जी आर्य भजनोपदेशक सभा के प्रभावशाली उपदेश एव प्रवचन हुए।

—आर्य समाज पुरवा (उन्नाव) के तत्वाधान मे दिनाक ७ मार्च से ९मार्चतक यज्ञ एव वेदप्रचार का कार्यक्रम बडे धूम-धाम से सम्पन्न हुआ।

—महर्षि दयानन्द वैदिक संस्थान(आर्य समाज) महरामऊ(उन्नाव) के तत्वाधान मे दिनाक १० से १२ मार्च ८७ तक यज्ञ एव आर्य महासम्मेलन सम्पन्न हुआ।

—मथुरा जनपद के कस्बा सोख मे ११ मार्च से १५ मार्च १९८७ तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का भव्य आयोजन किया गया यज्ञ के ब्रह्मा थे गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के भू० पू० मुख्याधिष्ठाता श्री प० वेद प्रकाश आर्य एवम् वेदपाठ गुरुकुल ब्रह्मचारियो ने किया।

—आर्य समाज मड़ियाहू (जौनपुर)का ३८ वा वार्षिकोत्सव दिनाक २७,२८ एव २९ मार्च को समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमे आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् एव भजनोपदेशक सम्मलित हुए।

—आर्य समाज भगतपुर, गोविन्दपुर जनपद आजमगढ़ का ११ वा वार्षिक उत्सव दिनाक १२,१३ व १४ मार्च १९८७ को सोल्लास मनाया गया जिसमे सभा के सर्वश्री ओतमनारायण शास्त्री उपदेशक व शिवदेव 'बेधड़क' भजनोपदेशक के भजनोपदेश हुए।

—आर्य समाज गाधी कालोनी (मुजफ्फर नगर) मे नगर की समस्त आर्य समाजों का सम्मिलित शिवरात्रि उत्सव(बोधोत्सव)बहुत ही धूम-धाम से मनाया गया।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्बन्धित सभी आर्य समाजो के मन्त्री महोदयो से अनुरोध है कि वह अपने उत्सवो पर सार्वदेशिक सभा देहली और प्रान्तीय सभा के अधिकारियो को बुलाने पर अपने-अपने जनपद की जिला सभा से स्वीकृति अवश्य ले लिया करें ताकि सगठन दृढ़ हो और आने वाले महानुभावो की सुरक्षा का भार जिला सभा पर अवश्य रहे।

—मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

नव संवत्सर मंगलमय हो

जिस सृष्टि पर हम निवास करते हैं उसकी रचना आज से १,९६ ०८,५३,०८६ वर्ष पूर्व सर्वशक्तिमान परमात्मा ने की थी। वह इस सृष्टि का निमित्तकारण है। उसने हमे यह ससार उत्तमकर्म करते हुए मोक्षपद की प्राप्ति के लिए बनाया था। आर्यों के जीवन मे इस पर्व का विशेष महत्व हैं क्योकि आज ही के दिन ११२ वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द ने चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, विक्रमी, सवत् १९३२ को बम्बई मे सर्व प्रथम आर्य समाज की स्थापना अपने कर कमलो से की थी। इसका उद्देश्य विश्व मे वैदिक आदर्शों का प्रचार करना था।

नव सवत्सर का यह आल्हादकारी आगमन ऋषि के कार्यों को पूर्ण करने की हमे प्रेरणा दे—इस कामना के साथ विश्व के सब आर्यों का शतशत अभिनन्दन है। तो आइए—

"नव सवत्सर की इस पावनवेला मे,
हम सब मिल कर करें कामना—
शान्ति की, समृद्धि की,
"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" की,
जगती मे आर्यों के—
उत्थान की, प्रगति की,
मगलमय भविष्य की।।"

—आचार्य इन्द्रदेव पाठक
एम० ए०, दर्शन वाचस्पति, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ

आर्य समाज बरबीघा (मुंगेर)
प्रधान श्री रामधनी आर्य
मन्त्री श्री दामोदार आर्य
कोषा० श्री शुकदेव

आर्य समाज राइट टाउन, जबलपुर
प्रधान श्री आचार्य रामलाल आर्य
मन्त्री श्री सी०डी०शुक्ला एडवोकेट
कोषा० श्री डी. के. श्रीवास्तव

आर्य समाज जौनपुर
प्रधान श्री अयोध्या प्रसाद शास्त्री
मन्त्री श्री सुरेन्द्र कुमार प्रधान
कोषा० श्री पन्नालाल जी

स्त्री आर्य समाज गाधी कालोनी मुजफ्फर नगर
प्रधान श्रीमती फूल कुमारी
मन्त्री श्रीमती सुशीला चौधरी
कोषा. श्रीमती पुष्पा बत्रा

आर्य समाज खानपुर (मेरठ)
प्रधान श्री सोदान आर्य
मन्त्री श्री बालेश्वर आर्य
कोषा श्री जगदीश प्रसाद आर्य

आर्य समाज नगीना (बिजनौर)
प्रधान श्री रामचरण जी शास्त्री
मन्त्री श्री अनिल कुमार
कोषा श्री नवरत्न सिंह जी

गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास (राऊरकेला) उड़ीसा का रजत जयन्ती समारोह धूम-धाम के साथ सम्पन्न

उडीसा प्रात के आदिवासी क्षेत्रो मे ईसाईयो के बढते हुये प्रभाव को रोकने तथा वहा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार को बढाने के लिये स्वतन्त्रता सेनानी एव तपोनिष्ठ सन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने २५ वर्ष पहले जिस गुरुकुल वेदव्यास रूपी पौधे को आरोपित किया था, वह अब एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। यह गुरुकुल महर्षि वेदव्यास की जन्म भूमि मे ब्राह्मणी नदी के किनारे पर प्रसिद्ध इस्पात नगर राऊरकेला से ७ कि० मी० की दूरी पर स्थित है। इस समय यहा महाविद्यालय बन चुका है। जिसमे सस्कृत एव वेद-वेदाग का, लगभग २०० आदिवासी छात्र अध्ययन कर रहे है। गुरुकुल वेदव्यास न केवल एक शिक्षा केन्द्र ही है बल्कि यह उडीसा प्रान्त मे आर्य समाज की छावनी के रूप मे भी कार्य कर रहा है। इसी को केन्द्र बनाकर स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज समस्त उडीसा प्रदेश मे ईसाई पादरियो व मिशनरियो का मुह तोड उत्तर देने के लिये शुद्धि का प्रचण्ड अभियान चला रहे है। अभी २६ फरवरी से १ मार्च ८७ तक गुरुकुल महाविद्यालय वेद व्यास का रजत जयन्ती समारोह विशाल स्तर पर मनाया गया जिसमे देश भर से आर्य जन सम्मिलित हुए। गुरुकुल के प्रधान श्री सीताराम आय के नेतृत्व मे कलकत्ता से तथा गुरुकुल के सरक्षक श्री ओम प्रकाश गुप्ता के नेतृत्व मे आर्य समाज शक्ति नगर दिल्ली से स्त्री पुरुषो की विशेष टालिया समारोह मे पधारी। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रघुहरि डालमिया ने की तथा इसमे मुख्य अतिथि जिला कलक्टर रहे। उन्होने स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज को इस महत्वपूर्ण कार्य मे पूण सहयोग देने के लिये जनता को आश्वासन दिया। इसी प्रकार वेद सम्मेलन ऋषि बोध सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन एव व्यायाम सम्मेलनो का आयोजन भी किया गया जिसमे डा० भवानी लाल जी भारतीय अध्यक्ष दयानन्द चेयर [चण्डीगढ], श्री आत्मानन्द शास्त्री, बृजबिहारीराय, प्रेमपाल शास्त्री दिल्ली, जगवीर सिंह एडवोकेट [हरियाणा] आदि विद्वानो के व्याख्यान होते रहे। २७ फरवरी को राऊरकेला नगर मे विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसका नगर निवासियो ने शानदार स्वागत किया। यह समारोह सस्था के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। गुरुकुल के आचार्य प० वेदव्रत जी ने समारोह का आयोजन किया। गुरुकुल के सस्थापक व सचालक स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज ने जहा आगन्तुक महानुभावो का धन्यवाद किया वहीं गुरुकुल के बहुमुखी विकास के लिये सहयोग की अपील भी की। इस अवसर पर महाविद्यालय भवन की आधार शिला श्री डालमिया के कर कमला से रखी गई। तथा समारोह की स्मारिका का विमोचन किया गया। समारोह को सफलता मे उडीसा के विभिन्न जिला से पधारे आर्य जनो का विशेष सहयोग रहा। श्री योगेन्द्र कुमार उपाध्याय डा० श्री ...स, श्री भूदेव शास्त्री, प्रसन्न कुमार शास्त्री व अन्य उत्साही विद्वानो ने विशेष भूमिका निभाई।

"आर्यन हैरिटेज" पत्रिका को लोकप्रिय बनाने हेतु डी. ए. वी. प्रबन्धकर्ता समिति के संगठन सचिव श्री दरबारी लाल जी का अनुरोध

श्री दरबारी लाल-सगठन सचिव, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्ता समिति ने सभी डी० ए० वी० सस्थाओं के सचालकों को पत्र भेज कर उनसे अनुरोध किया है कि वे समिति की ओर से प्रकाशित अंग्रेजी मासिक पत्रिका "आर्यन हैरिटेज" के अधिक से अधिक सख्या मे ग्राहक बनायें। यह पत्रिका प्रति मास अधिक से अधिक लोकप्रिय होती जा रही है क्योकि इसके प्रमुख सम्पादक और समिति के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी इसे अधिक से अधिक उपयोगी बनाये जाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहे हैं। उनकी पैनी लेखनी द्वारा लिखे गए इसके सम्पादकीय अत्यन्त उपयोगी और सशक्त भाषा मे होते हैं। भारतीय सस्कृति, भारतीय सभ्यता, राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ, राष्ट्रीय सगठन, ग्राम विकास, पर्यावरण आदि अनेक विषयो पर मूर्धन्य और अनुभवी विद्वानो के लेख इसमे प्रकाशित किए जाते हैं। यह पत्रिका अपने वैभवशाली अतीत का दिव्य-दर्शन नई पीढी को कराती है और पश्चिमी देशो को भारत से जोडती है।

आर्य महाविद्यालय किरठल, मेरठ, का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य महाविद्यालय किरठल मेरठ का ७० वा वार्षिकोत्सव दिनाक ६ से ८ मार्च १९८७ तक भव्य आयोजनो के साथ मनाया गया। ८ मार्च को समापन समारोह के अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आर्य ने गुरुकुलो को महत्ता पर प्रकाश डाला तथा इन्हे धर्म व सस्कृति का सरक्षक बताया। गुरुकुलो म शिक्षित युवको को वेद प्रचार, समाज सुधार, राष्ट्र निर्माण एव राष्ट्रीय एकता व अखण्डता बनाए रखने मे सदैव की भाति सक्रिय योगदान देते रहने का भी उन्होंने आवाहन किया। डा० धर्मपाल ने आर्य समाज की श्रेष्ठ उपलब्धियो को विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि आर्य समाज ने पोप पाल के आगमन पर काला हान्डी क्षेत्र मे ३ लाख आदिवासियो को न केवल ईसाई बनने से बचाया अपितु इस अवसर पर ९,५०० ईसाईयो को भी वैदिक धर्म मे पुन प्रविष्ट किया गया।

क्रांतिकारी सावरकर पुरस्कृत

मेरठ देश के ख्यातिप्राप्त लेखक व पत्रकार श्री शिवकुमार गोयल की पुस्तक "क्रांतिकारी सावरकर" को शकुन्तला सिरोठिया बाल साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया।

इलाहाबाद की इस सस्था ने इस पुस्तक को राष्ट्रीयता की प्रेरक व बाल साहित्य की श्रेष्ठ पुस्तक माना है।

क्रांतिकारी सावरकर मे महान देशभक्त विनायक दामोदर, सावरकर के क्रांतिकारी जीवन के प्रेरक प्रसग सरल भाषा मे बच्चो के लिये दिये गये है।

इस पुस्तक का प्रकाशन दिल्ली के प्रमुख प्रकाशक श्री गोविन्दराम हासानन्द ने किया है।

पुस्तक-परिचय

गर्गमुख महाचपेटिका-

लेखक—डा० शिवपूजनसिंह कुशवाहा—शास्त्री एम० ए०, साहित्यालंकार—वेद मन्दिर (गीताश्रम) अशोक सिनेमा के सामने ज्वालापुर—उत्तर प्रदेश—पृष्ठ संख्या ११० मूल्य चार रुपिया।

श्रीमद् भागवत पुराण में व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियाँ-

लेखक—डा० शिवपूजनसिंह कुशवाहा—शास्त्री एम०ए० साहित्यालंकार पता उपरोक्त, पृष्ठ ५०, मूल्य चार रुपिया।

डा० कुशवाहा जी सतत अध्ययन एवं लेखन प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं, प्राय: आपके लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते है, तर्क सम्मति आपकी लेखनी है। शास्त्रीय अध्ययन कुशवाहा जी का गम्भीर है, आर्य साहित्य तथा उसके विद्वानों के सम्बन्ध में गहन अध्ययन करके ही कुशवाहा जी अपने विचार प्रस्तुत करते हैं,अपने अध्ययन एवं मननशील जीवन में उन्होंने प्राय: ४० से अधिक लघु वृहद ग्रन्थों की रचना की है, आर्य जगत आपसे अत्यन्त लाभान्वित है।

समालोच्य पुस्तक में प्रथम हैं डा० कुशवाह जी का उत्तर जो डा० राजेन्द्र कुमार गर्ग मेरठ कालेज मेरठ की पुस्तक 'दयानन्द गाली पुराण' के उत्तर में दिया गया है, डा० गर्ग दर्शन के प्राध्यापक हैं—न जाने किन परिस्थितियों में दुर्भावना वश ऋषिवर दयानन्द जी के सम्बन्ध में अनर्गल पूर्ण पुस्तक लिख गये। डा० कुशवाहा ने स्वामी दयानन्द जी पर किये हुए प्रत्येक आक्षेप का तर्क सम्मति एवं कुशलता के साथ उत्तर दिया है तथा गर्ग जी की समस्त भ्रान्तियों का मुँहतोड़ जवाब है, पुस्तक के अध्ययन से पौराणिक भ्रान्तियों पर भी प्रकाश पड़ता है, पुस्तक पठनीय है, डा० कुशवाह के अध्ययन का मापदण्ड है तथा गर्ग जी के प्रति कोई कटुता नहीं है।

द्वितीय आलोच्य पुस्तक में श्रीमद्भागवत पुराण में व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों का दिग्दर्शन है ऋषिवर वेदव्यास उच्चकोटि के विद्वान् थे उनसे व्याकरण सम्बन्धी सामान्य अशुद्धियाँ नहीं हो सकती थीं। वर्तमान भागवत पुराण पोप पंथी है तथा पोप पण्डितों का संकलन है अतएव अशुद्धियां है ऐसा विद्वान् डा० कुशवाहा जी का मत है। भागवत पुराण के विभिन्न स्थलों एवं श्लोकों का अध्ययन करके उदाहरण प्रस्तुत करते हुए ७८० अशुद्धियों की सूची पुस्तक में कौमुदी का अध्ययन करने वाला विद्यार्थी भी नहीं कर सकता है। अतः यह सब प्रक्षेप ग्रन्थ हैं जो आर्य साहित्य को कलुषित करते हैं।

डा० कुशवाह जी धन्यवाद के पात्र हैं, उनका गम्भीर अध्ययन सराहनीय है।

पुस्तकों का मुद्रण स्वच्छ है, दोष रहित है और प्रशंसनीय है, आशा है आर्यसमाज के उपदेशक इन पुस्तकों से लाभान्वित होंगे। पुस्तकें डा० कुशवाहा जी से सम्पर्क करके प्राप्त की जा सकती हैं।

—आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

पंजाब पीड़ितों की सहायता निधि में दिल खोलकर दान दें

प्रो० व्यास जी की अपील

पिछले कुछ समय से आतंकवादियों द्वारा धर्म के नाम पर निर्दोष व्यक्तियों की हत्या की जा रही है। यही नहीं स्त्रियों और मासूम बच्चों तक को नहीं छोड़ा जा रहा है। कुछ समय पूर्व आतंकवादियों द्वारा डी०ए०वी० कालेज, जालन्धर के लेक्चरार श्री मलकियतसिंह सैनी पर कातिलाना हमला किया गया था और लगातार पांच गोलियां दागी गयीं थीं। प्रभु कृपा से वह बच गए किन्तु उसके कुछ दिन बाद ही आतङ्कवादियों ने प्रो० एस० के० सहगल की दिन-दहाड़े हत्या कर दी। निर्दोष व्यक्तियों की हत्याओं का यह सिलसिला अभी तक बन्द नहीं हुआ है। धर्मान्ध व्यक्तियों द्वारा मारे गए व्यक्तियों के परिवारों की सहायता के लिये डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी ने डी०ए० वी० संस्थाओं व उनसे सम्बन्धित व्यक्तियों विद्यार्थियों के अभिभावकों, डी० ए० वी० संस्थाओं के पुराने विद्यार्थियों और सभी सहयोगियों से अनुरोध किया है कि वे इस कोष में दिल खोलकर दान दें जिससे कि आतङ्कवादियों द्वारा सताए गए व्यक्तियों की उचित सहायता की जा सके। धन मनी आर्डर, बैंक ड्राफ्ट व बैंक द्वारा 'सचिव, डी०ए०वी० प्रबन्धकर्तृ समिति, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली पो० ११००५५' के पते पर भेजा जाए जिसकी रसीद समिति कार्यालय द्वारा दी जाएगी। दानी सज्जनों के नाम आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की पत्रिका 'आर्य जगत' में और समिति की मासिक पत्रिका 'आर्यन हैरिटेज' में भी छापे जायेंगे।

—दरबारी लाल संगठन सचिव

शुभ पाणिग्रहण संस्कार

अशोक कुमार पुत्र बाबू नन्दम सा० भटवाको पोखरी, मीरजापुर का शुभ विवाह संस्कार रसड़ा बलिया निवासी कुमारी सुशीला पुत्री श्री कृष्ण मोहन के साथ दिनांक २३-३-८७ को वैदिक रीति से श्री सुदर्शनराय ने सम्पन्न कराया।

मुनि गुरुदत्त लेखावली

गुरुदत्त एम० ए० का नाम आर्यजगत में विख्यात है। ये मृत्यु के समय महर्षि के निकट थे। उनकी मृत्यु देखकर वे आस्तिक हो गये। उन्होंने बहुत से लेख व पुस्तकें प्रकाशित कीं, जो अंग्रेजी में छपी थीं उसका हिन्दी अनुवाद भगवद्दत्त ने किया। जो १९१८ में राजपाल एण्ड संन्स लाहौर में प्रकाशित हुआ था अब १० वर्ष बाद पुन: ये ग्रन्थ कुछ वृहद आकार में प्रकाशित हुआ है पृष्ठ संख्या ३००, मूल्य १५) शीघ्र मंगायें।

पुस्तकें मिलने का पता—

पता—वेद प्रचारक मण्डल, करौलबाग, रामजस रोड, दिल्ली-५

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993   ४५९९३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी. ७९
चैत्र शुक्ल १३
रविवार, १२ अप्रैल १९८७ ई०

आर्य मित्र



उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनि...

इक प्रश्न उभरता आता है

जन के निर्मल मस्तिष्कों मे इक प्रश्न उभरता आता है ।
शासन किस चिड़िया को कहते क्या सविधान से नाता है ।
कोरे आश्वासन के बल पर कब तक बहलाया जायेगा ।
शवों के अश्रु प्रपातो से कब तक नहलाया जायेगा ॥
क्या अर्थ धर्म निरपेक्ष राष्ट्र का जातिवाद का अन्त कहाँ ।
है राष्ट्र द्रोह किसको कहते हैं कहां मौलवी सन्त कहा ॥
यों निर्दोषो का तप्त लहू कब तलक बहाया जायेगा ।
और राष्ट्रवाद का अस्थि कलश है कहाँ कहाँ पर जायेगा ।
कर ली हैं सभी व्यवस्थायें यह शोर मचाया जाता है ।
अपराधी छुटकर भाग रहे घुसपैठ नहीं रुकपाता है ॥
है नियत सुरक्षा दल फिर भी अविरल हत्याओ का क्रम है ।
जब प्रधान मन्त्री तक न सुरक्षित होगा और मिरा भ्रम है ॥
गणतन्त्र दिवस का बहिष्कार है राष्ट्र द्रोह माना जाये ।
अपमान राष्ट्र के झडे पर फांसी का दण्ड दिया जाये ॥
यदि मस्जिद तोड़ बना मन्दिर तो मुसलमान अधिकारी हैं ।
मन्दिर की मस्जिद बनी हिन्दुओ को दो क्या लाचारी है ॥
अब किस को दोष लगाते हो विष दन्त तुम्हीं ने पाले हैं ।
बस लगे वोट की लिप्सा मे घर क्रूर ततइये जाले हैं ॥
उस शाहबानो की घटना को तुमने ही तो सहलाया था ।
जब सविधान से अलग और मुस्लिम कानून बनाया था ॥
दी गौण राष्ट्र भाषा को कर उर्दू को पहनाई माला ।
हिन्दी के मात्र समर्थन पर दी वासुदेवसिंह को हाला ॥
जो भारतीयता के पोषक उनको दुतकार दिखार दिया ।
जिसने भारत के खड किये केरल मे उससे प्यार किया ॥
जो सविधान और राष्ट्र ध्वजा का द्रोही वह भारतीय कैसा ।
अधिकार वोट का उसे न हो निष्कासित हो वासी कैसा ॥

–धर्मेन्द्रनाथ अलिन्द, हल्दौर (बिजनौर)

★

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के प्रति

राम तुम्हारा चरित प्रेरणा का स्रोत है ।
दिव्य गुणो से ओतप्रोत है ॥
निराशो मे आत्म विश्वास उपजाने वाला है ।
अधमो को ऊंचा उठाने वाला है ॥
पथभ्रष्टो को पथ से लगाने वाला है ।
कष्टो को मिटाकर सच्चा सुख लाने वाला है ॥
जीवन मे नई ज्योति दिखलाने वाला है ।
मन मे पवित्रता के अंकुर उगाने वाला है ॥
पुराकाल से कर रहा मानवमात्र का पथ प्रदर्शन ।
सचमुच तुम्हारा जीवन चरित्र है एक श्रेष्ठ दर्शन ॥

–शकुनचन्द्र आर्य लालगंज, (रायबरेली)



मान्य भाई बसंत जी,

सादर नमस्ते !

आशा है आप सानन्द होगे । आपने 'आर्यमित्र' को अपने सुस्थिर विचारो से पोषित कर नि.सन्देह स्तुत्य कार्य किया है । आपकी कल्याण मयी कविता आर्यों को प्राणवान बनाकर, कार्य कौशल मे नियुक्त कर सके यह कामना है ।

बाल दिवाकर हस
प्रधान संचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल, नई दिल्ली

आचार्य प्रवर श्री बसन्त जी,

सादर नमस्ते !

आपने 'आर्यमित्र' के शताब्दी मे मेरी एक रचना हिन्दी के प्रति प्रकाशित कर मुझे प्रोत्साहित किया । इसी से प्रेरणा पाकर ऋषि बोध अङ्क के लिये मै अपनी दो रचनायें प्रेषित कर रहा हू । आपके कुशल सम्पादन में 'आर्यमित्र' पुन. पूर्व की भाति प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है । यह हर्ष और गौरव की बात है । आप नवोदित कवियो और लेखको की लेखनी को भी 'आर्यमित्र' मे स्थान दे रहे है । इससे निश्चय ही वैदिक विचारो की अभिवृद्धि होगी ।

सत्यव्रत शास्त्री
आर्यसमाज पड़री, (मनपुरी)

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भरद दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

ओ३म् आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४१/५७ — घोषणा पत्र स० ७/२८–२–८५

बैसाख कृष्ण ६, रविवार, सवत् २०४४ वि० दिनाक १९ अप्रैल १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड
एक प्रति	६० पैसे
वर्ष	८०
अङ्क	१५

प्रभु की अमृत वाणी—

महान लक्ष्य की सिद्धि के लिये स्वजीवन को मधुर बनाएँ

अश्विना पिबत मधु दीद्यग्नी शुचिव्रता। ऋतुना यज्ञवाहसा ॥

[मेधातिथि काण्व / अश्विनौ] (ऋ०–१५–११)

इस ससार मे प्रत्येक मनुष्य जीवन मे माधुय की कामना करता है, कटुता कोई नहीं चाहता परन्तु जब जीवन की मधुरता के लिए मानव कोई प्रयास न करे और उसके अधिकाश कम कटुताओ से युक्त हो तो जीवन मे मधुरता कैसे आ सकती है। वेदानुसार परमात्मा आनन्द स्वरूप है और उसकी सृष्टि भी आनन्दस्वरूप है। समस्त रचनाए मधुर है। सूय चन्द्र सितारे, पृथिवी, अन्तरिक्ष, द्यो, अग्नि वायु, जल, ओषधि तथा वनस्पतिया आदि सब मधुरताओ से ओतप्रोत हे। परमात्मा ने जगत को आनन्द धाम बनाया पर मनुष्यो ने अपने कुकर्मो स इसे दु खो का धाम बना दिया है।

मानव के पाच लोक है यथा (१) आत्म लोक (२) पारिवारिक लोक (३) सामाजिक लोक (४) राष्ट्रीय लोक ओर (५) विश्व लोक। विश्व का कल्याण तब तक नही हो सकता जब तक राष्ट्रो का सुनिर्माण न हो, राष्ट्र तब तक फूल फल नहीं सकते, जब तक उसके भीतर स्थित समाज समुन्नत न हो। समाज तभी समुन्नत होग जब हमारे परिवार सुसभ्य ओर सुसस्कृत होग और परिवारो की यह स्थिति तभी होगी, जब मानव का आत्मलोक परिष्कृत और मधुर होगा।

वेदानुयायी आर्य विश्व मे मानव जीवन को मधुर बनाने का शिव सकल्प करते है और इसका शुभारम्भ वे अपने व्यक्तिगत जीवन से करते है। स्वजीवन को मधुर बनाने के लिये वेद के शब्दो मे वे अपने अश्वियो को सम्बोधित करते हुए कहते है—

[१] (अश्विना ऋतुना मधु पिबतम्) हे मेरे दोनो अश्वियो ! तुम सत्य साधना के माध्यम से मधुरता का पान करो। अश्व उसे कहते ह जिसमे आशुगति हो। मानव जीवन को सचालित करने वाले दो केन्द्र हं, मस्तिष्क जिसमे बुद्धि का वास है ओर हृदय जिसमे मन प्रतिष्ठित है। मस्तिष्क विचार केन्द्र है और ज्ञान उसकी सम्पदा है। ज्ञान चक्षु है और विवेक उसका प्रकाश है। विवेक मानव का पथ-प्रदशन करता है और भावना केन्द्र की श्रद्धा [श्रत+धा अर्थात सत्य धारणा] मन के शिवसकल्पो और श्रेष्ठ कर्मो से पार उतारती है। जब तक वेदानुकूल ज्ञान और सत्य धारण नही होगा, जीवन मे मधुरता नही आएगी। अश्वियो को सत्य साधना मे रत करने के लिए ताकि वे जीवन को मधुरता से ओतप्रोत कर सकें, प्रस्तुत मन्त्र कहता है—

[२] (दी दो अग्नि शुचिव्रता यज्ञ वाहसा) आत्म मन पञ्ज्ञानन ओर प्रदीप्त बनो, शुचिताओ के व्रती बनो और यज्ञ वाहक बनो। ज्ञान ज्योति भीतर के तम का नाश करती है और आत्माग्नि को प्रदीप्त करती है। आय अन्ध विश्वासी नही होते, वे लकीरो को नहीं पीटते, कुरीतियो को नहीं अपनाते, पाखण्ड आडम्बरो को सवथा त्यागते हं और ज्ञान के प्रकाश मे इस सत्य का साक्षात्कार करते ह कि उन की समस्त साधनाओ का उद्देश्य है जीवन का माधुर्य और जिसका मूल है शुचिता अतएव वे शुचिव्रता बन कर सामाजिक और आत्मिक शुचिताओ [५ यम और ५ नियम] से जीवन को शोधत ह। जीवन का शोध उन्हे यज्ञवाहक बनाता है अर्थात वे श्रेष्ठ कर्मा बनते ह। उनके प्रत्येक काय मे श्रेष्ठता झलकती है। मन, वचन और कम उनकी श्रेष्ठता के परिचायक होते ह और वे सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझते हं। माधुय पूण समष्टि मे वे अपनी व्यष्टि का माधुय पाते हं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के कृण्वन्तो विश्वमायम् उदघोष क मूल मे मानव जीवन को मधुर बनाने का ही मन्तव्य था जिसे आज उनके अनुयायियो को पूण करना है अपने जीवन को मधुर बनाकर उसे दृष्टान्त रूप मे विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करके, अतएव हम इस नव वर्ष के लिए अपने को सुप्रेरित करें।

—'बसन्त'

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

नव संवत्सर करे परस्पर प्रेम प्रसारित

हे परमेश्वर नव संवत्सर, करे परस्पर प्रेम प्रसारित।
भद्र भाव वसुधा कुटुम्ब का दया तथा आनन्द समन्वित।
सतत सत्यता सहित रणञ्जय, विद्या, बल, धन तेवा परिहित।
दुरित दूर हो विश्व शान्ति हो, प्राणिमात्र हों परम प्रफुल्लित॥
—राजर्षि रणञ्जयसिंह जी
भूपति-भवन, अमेठी (सुल्तानपुर)

सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार १६ अप्रैल १६८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि संवत् १६७२६४६०८७

धर्म वह नहीं ! जिसे समझा जारहा है

आज देश में चारों ओर ही धर्म के नाम पर उन्माद, संघर्ष साम्प्रदायिक विद्वेष बढ़ता जा रहा है। जितना ही उस पर अंकुश लगाने की चर्चा होती है उतना ही वह बढ़ता जा रहा है। उत्तरोत्तर उसका सीमन होने के बजाय वृद्धि ही होती जा रही है।

सभी राजनीतिक नेता एकमत होकर धर्म को राजनीति से अलग रखने की बात भी संसद में विधान सभाओं में व सामान्य सभाओं तथा वक्तव्यों में कहते रहते हैं। परन्तु इस उन्माद से उन्मत्त लोगो को अपने राजनीतिक दलों से हटाने की या तो इच्छा नहीं करते या फिर हटाने की शक्ति ही नहीं है। जिनके कारण धर्म कलुषित हो रहा है।

यह बिल्कुल ही सत्य है कि ऐसी अराजकता पूर्ण स्थिति उत्पन्न करने में तथा कथित धार्मिक नेता पूर्णरूपेण जिम्मेदार हैं क्यों कि वे स्वयं धर्म के रहस्य को या तो जानते नहीं या जान कर भी अपने निज स्वार्थ से लिप्त होने के नाते अंगीकार नहीं करते और अपने स्वार्थ पूरक मन्तव्यों को ही धर्म का आवरण देकर जन सामान्य में फैलाने को प्रयत्नशील रहते हैं। दीर्घ काल हो गया तब से अनेकों मत सम्प्रदाय हमारे देश में पनपे, बढ़े, परन्तु उन सम्प्रदायों के संस्थापक प्रायः धर्म के किसी अंग विशेष को लेकर उस पर ही चलने का संदेश देते रहें और उनके अनुगामियों से एक नया संप्रदाय बन गया फिर अज्ञानता ने या फिर क्षुद्र लोकेषणा ने लोगों को ऐसा जकड़ा कि अपने उक्त संप्रदाय के संस्थापकों के नाम पर अपना बाजार चलाने की वृत्तियां सहज ही पनपती गयीं। प्रबुद्ध जन उनके विभिन्न संप्रदायों के माध्यम से भी धर्म के विभिन्न अंगों की पहचान कराने की चेष्टा भी करते रहे। कोई संप्रदाय बढ़े, कोई लुप्त हो गये।

परन्तु जब स्वार्थी तत्वों ने धर्म के नाम पर अपने मन्तव्यों को कहीं प्रलोभनों व कहीं भय के माध्यम से फैलाने की चेष्टा आरंभ कर दी तो वह धर्म का सर्वथा विद्रूप हो गया।

आज का समाज उसी विद्रूप को धर्म मान कर चलने की चेष्टा कर रहा है इसीलिए शासकीय व्यवस्था के सुसंचालन हेतु कहा जाने लगा कि धर्म को राजनीति से न जोड़ा जाये। आज धर्म उसे माना जा रहा है जिन वृत्तियों से समाज में संकोच संगठन के बजाय विघटन, मानवीय मूल्यों का अव मूल्यन होता हो। वर्ग विशेष अपने-अपने वर्ग को सर्वतो प्रमुख माने जाने या अपने वर्चस्व को बलात् दूसरे से स्वीकार कराने में धर्म का दर्शन कराने की चेष्टा [illegible] अत्यधिक भयावह है। यदि सच्चे धार्मिक नेताओं ने इसके विरुद्ध संगठित आवाज नहीं उठाई तो धर्म नष्ट हो जायेगा। संस्कृति नष्ट हो जायेगी राष्ट्र नष्ट हो जायेगा।

धर्मो धारयते प्रजाः— धर्म प्रजा को सुखी, समृद्ध बनाता है। धर्म का सामान्य अर्थ कर्त्तव्य है। कर्त्तव्य का मूल अर्थ जिस प्रक्रिया के करने से सर्वांगीण हित दृष्टिगत हो। मनुस्मृतिकार ने धर्म के लक्षणों की चर्चा करते हुए लिखा है कि धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौच मिन्द्रिय निग्रहः धीर्विद्या सत्यम्-क्रोधो दशकम् धर्म लक्षणम्॥ अर्थात् जिसमें धैर्य है दृढ़ता है, गृहण-शीलता है। जिसमें सहनशक्ति है, क्षमाशीलता है। जो अपने मन को अपने अनुरूप चलाने में सक्षम है। जो किसी भी प्रकार की चोर वृत्ति से रहित है। जो भीतर बाहर से शुद्ध और पवित्र है। जिसका अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण अधिकार है मन की इच्छा से इन्द्रियों का वशी नहीं होता। जो धारणवती बुद्धि-पूर्वापर काविचार करने की क्षमता रखता है। जो विद्वान् है (विद्वता वह जो वेद के अनुरूप सर्वहितकारी हो) जो सत्यवादी ईश्वर की सत्ता का विश्वासी, है जो क्रोध के वशीभूत नहीं होता वह ही धार्मिक कहा जाता है। इनके विपरीत आचरण वाला धार्मिक नहीं हो सकता।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जो भी धर्म के अलम्बरदार बन रहे हैंचाहे [illegible] आतंक मचा रहे हों चाहे पूर्वांचल में प्रलोभन दिखा कर विधर्मी बना कर अपना वर्चस्व स्थापित करने पर लगे हों चाहे वे अरब देशों से अतुल धन प्राप्त करके देश के इस्लामीकरण की भावना से ग्रस्त लोभ हों वे सभी धर्म के कट्टर शत्रु हैं।

निश्चय हो धर्म के सच्चे संरक्षणों को धर्म के वास्तविक स्वरूप की सुस्पष्ट व्याख्या जन सामान्य में प्रस्तुत करने के लिए संकल्पित होना पड़ेगा। आज इस कठिनतर कार्य को पूर्ण करने का गुरुतर भार आर्य समाज पर ही है क्योंकि सम्प्रति मात्र आर्यसमाज ही धर्म के इस सच्चे स्वरूप को जानता मानता और स्वीकारता है।

निष्काम, निःस्वार्थकर्त्तव्यनिश्चय ही पूर्ण होते है। इस पूर्ण विश्वास के साथ कि निश्चय ही आज नहीं तो कल धर्म के सच्चे स्वरूप की पहचान होगी। राष्ट्र सुखी व समृद्ध बनेगा। निराशा, कुण्ठा से रहित आज सजग धर्म चेतना देने का अवसर आ गया है। हमें देश वासियों देश के कर्णधारों सभी को बता देना है कि धर्म वह नहीं है जिसे समझा जा रहा है। अपितु धर्म वह है जो सबको जोड़ता है। सबसे प्यार-स्नेह बढ़ाता है। मानवत्व की रक्षा करता है। ऊँच नीच का संकीर्ण भेद नहीं उपजने देता। और राष्ट्र के लिए संगठित व समर्पित होने की चेतना देता है।

मनमोहन तिवारी

बोध रात्रि के पश्चात् आर्य समाज स्थापना दिवस

(श्री इन्द्रराज जी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश)

अभी शिवरात्रि गई। यह बोध रात्रि थी। बालक मूलशंकर को इस शिवरात्रि ने महर्षि स्वामी दयानन्द बनाया। यह केवल बालक के लिये बोध रात्रि नहीं बनी अपितु सारे विश्व के लिए बोध रात्रि बन गई। और उस महान् युगपुरुष ने संसार में उस बोध रात्रि को सफल बनाने के लिए 'आर्य समाज' नाम की संस्था की स्थापना की। सारे संसार मे एक ऐसा तहलका मचाया इस आर्य समाज ने कि संसार से पाखण्ड, रुढ़ीवाद और अन्धविश्वास ने भाग जाने का फैसला किया। सारे संसार को वेदों का प्रकाश जगमगाने लगा। हर व्यक्ति हर सम्प्रदाय और समाज इस प्रकाश से लाभान्वित होने लगा। आज के इस भयंकर युग मे, जहां आणविक हथियारो की होड़ लगी हुई है, जहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं आणविक युद्ध मे सारा का सारा मानव समाज ही भस्म न हो जाए, उस पवित्र वेद ज्ञान के आलोकित होने की कितनी महती आवश्यकता है। वेद मे ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान सब कुछ है। वेद सारे मानव समाज को विज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान भी करवाना चाहता है। प्रकृति और पुरुष साथ-साथ चले। प्रकृति के बिना पुरुष लगंड़ा और पुरुष के बिना प्रकृति अन्धी दोनों का समन्वय ही कल्याण मार्ग पर अग्रसारित कर सकता है। इस दृष्टिकोण से आर्य समाज की स्थापना हुई और इस के सार्वभौम दस नियम महर्षि दयानन्द जी ने बनाएं जो इस प्रकार हैं–

१– सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२– ईश्वर सच्चिदा नन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्याय कारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३– वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४– सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५– सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

६– संसार का उपकार करना, इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७– सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथा योग्य वर्तना चाहिए।

८– अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९– प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०– सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में, सब स्वतन्त्र रहें।

यह आर्यन् मैनीफैस्टो है। जब धार्मिक जगत् गुरुडम में डूबा हुआ था जो कि एक दूसरी तरह की तानाशाही है। उस से बिल्कुल हट कर स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज को निर्वाचन पद्धति दी जो कि जनतांत्रिक पद्धति है। यह जनतान्त्रिक पद्धति हमें उस समय प्राप्त हुई जबकि हमारे देश के कर्णधारो ने उसका स्वप्न भी नही लिया था। १०० वर्ष के पश्चात् भी आज हम स्वतन्त्र होने के बाद भी परतन्त्र मानसिकता मे बन्धे हुए है। रूढ़िवाद, अन्धविश्वास, धार्मिक एवं आर्थिक शोषण, भाग्यवाद, आलस्य और प्रमाद, मद्यपान और जुआ, जातिवाद और वर्गवाद, छुआछूत और ऊंच-नीच, दहेज के कारण आत्म हत्याएं और हत्याएं, उग्रवाद और आतंकवाद, विघटन और घृणा हिंसा और चरित्र हनन आदि भयंकर बुराईयों में फंसे हुए है। भ्रष्टाचार ने हर क्षेत्र में विनाशक परिस्थितियाँ उत्पन्न की हुई है। आज राजनीति एक वेश्या का रूप धारण कर चुकी है। हमारे देश के कर्णधार बरबस विनाश, भ्रष्टाचार, अनैतिकता एवं हिंसा की ओर धकेले जा रहे हैं। ऐसी भयंकर विनाशकारी परिस्थितियों का मुकाबला केवल वेदो की पवित्र, प्रचण्ड प्रकाश युक्त, विज्ञानयुक्त अग्नि ही कर सकती है। वेदो के आधार पर सार्वभौम और सार्वतान्त्रिक आर्य समाज के दस नियम आज इस पूरे भौतिकवाद के घटाटोप को भगाने मे पूरी तरह से सक्षम है। इस समय केवल आवश्यकता है आर्य समाज के जागरूक होने की। कितनी बड़ी चुनौती है आर्य समाज को। आईए! आर्य समाज के स्थापना दिवस पर बुराईयों के विरुद्ध बिगुल बजा दें ताकि सारा ससार सुख; शान्ति और आनन्द, का अनुभव कर सके। राष्ट्रवादी और अहिंसक शक्तिया उभर सकें। पाप का शमन हो पुण्य का उदय है। अधर्म का नाश हो और धर्म की जय हो।

नये वर्ष पर शुभ कामना

वेद, दिशा नभ, नेत्र विक्रमी संवत् शुभ हो आपको।
निकट न आने दें परमेश्वर शोक और संताप को॥
दो सहस शुभ चवालीस है वीर विक्रमादित्य का।
नित्य सुखों के साथ आपको दर्शन हो आदित्य का॥
मेकाले के पुत्र जनवरी में नव वर्ष मनाते है।
अपनी भूल भ्रान्ति से भारत को इग्लैंड बनाते है॥
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा आपका शुभ दिन है नव वर्ष का।
देता है सन्देश आपको हर्ष और उत्कर्ष का॥
घर-घर मे हों यज्ञ वेद का पाठ सुखी परिवार हो।
धर्म, सभ्यता, संस्कृति का भूमण्डल में विस्तार हो॥
ईशकृपा से सुख प्रसन्नता प्रेम रहे परिवार मे।
अमर, धर्म के साथ आपका यश फैले संसार में॥

शुभ कांक्षी– –अमर स्वामी सरस्वती
वेद मन्दिर विवेकानन्द नगर गाजियाबाद।

सूचना

आर्य समाज के सभी अधिकारियों से निवेदन है कि सभा के उत्साही प्रचारक डा० महावीर शास्त्री का निम्न रूप में सेवा लेकर सभा को सहयोग दे के उत्सव संस्कार वेद कथा के लेख लिखें शास्त्री प्रातः यजुर्वेद से यज्ञ करा कर भजनोपदेश, योगासन, प्राणायाम का प्रदर्शन एवं साध्यको से योगाभ्यास प्रशिक्षण देते हैं। रात्री को वेद वाल्मीकीय रामायण कथा एवं इस्लाम ईसाई मतों पर भी व्याख्यान करते है शास्त्री जी द्वारा लिखी २६ पुस्तकों की सूची मंगाइए

डा०महावीर शास्त्री उपदेशक योग शिक्षा योगाश्रम रायगंज (गाजीपुर)

आर्यों ! उत्तराखण्ड के सीमान्त प्रदेश की सुधि लो

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उत्तर प्रदेश)

उत्तर में चीन की सीमा से मिलने वाला यह प्रदेश शिक्षा तथा आर्थिक दोनों ही प्रकार से पिछड़ा हुआ है। ऐसे क्षेत्रों में ईसाई मिशनरी एक दम सक्रिय हो जाते है। कारण यह है कि ईसाइयत की लचर विचारधारा से शिक्षित लोग तो प्रभावित नहीं होते इस लिये अशिक्षितो में ही ईसाई मिशनरी अपना जाल फैलाते है। अशिक्षा के साथ यदि कहीं निर्धनता का अभिशाप भी हो तो उससे ईसाइयों को और भी सरलता हो जाती है। उस स्थिति में वह स्कूलो और अस्पतालो की स्थापना करके उनके माध्यम से अविद्याग्रस्त निर्धनों का धर्म हरण करते है। सवर्ण हिन्दुओं की मूर्खतापूर्ण छुआछूत, घृणा तथा जन्म जातिगत भेदभाव के कारण पिछले वर्गो के लोग सरलता से इनके चंगुल में फँस जाते हैं।

उत्तराखण्ड के दो मण्डलों कुमायूँ और गढ़वाल के छः जनपदों की स्थिति बड़ी विकट है। एक दम पार्वत्य प्रदेश है, जो हिमालय की ऊँची-ऊँची चोटियों से लेकर सुदूर दक्षिण तक फैला हुआ है। इस क्षेत्र में निर्धनता और निरक्षरता का बोलबाला है।

अविद्याग्रस्त निर्धन जन धर्म के मर्म को नहीं समझ पाता वह तो बस पेट की आग बुझाने के लिये सब कुछ करता रहता है। सहस्त्रों वर्षों से पददलित, अपमानित और प्रताड़ित रहते हुए भी वह इस परम्परागत धरोहर को संभाले हुए है।

यदि इतिहास की गहरायी में जायें तो यही परिणाम निकलेगा कि जिन लोगोने मुस्लिम साम्राज्य के समय में किसी भी मूल्य पर इस्लाम स्वीकार नहीं किया, उन्हीं को बंश परम्परा के यह लोग हैं। जबकि बड़े-बड़े क्षत्रिय, ब्राह्मण और वैश्य मुसलमान बन गये, उन्हें संभालने और वापस लेने के लिये तो क्या कोई ठोस पग उठायेंगे, इन शेष दलित जनों को भी सीने से लगाने को तैयार नहीं। ऐसी परिस्थिति में वह ईसाइयत क्यों नहीं स्वीकार करेंगे ?

इस क्षेत्र में आर्य समाज की शक्ति स्वल्प है। अलमोड़ा और नैनीताल जनपदों में तो फिर भी कुछ है। वहाँ को कई समाजें तो अधिक दृष्टि से भी सम्पन्न हैं। वहाँ के कार्यकर्त्ता ध्यान दें तो बहुत कुछ किया जा सकता है किन्तु चमौली, उत्तरकाशी, टिहरी तथा पौड़ी, जनपदों में कोटद्वार

राष्ट्र निर्माण

और सांवलो पञ्चपुरी को छोड़ कर अन्य कहीं नहीं है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को भी इस ओर ध्यान देना चाहिये।

इस सीमान्त क्षेत्र की यदि उपेक्षा की गयी तो कुछ ही वर्षों में केरल और नागालेंड जैसी स्थिति उत्पन्न हो जायेगी और तब सम्भव है कि असम और नागालेण्ड के विद्रोहियों की भांति इधर भी चीन की सहायता से विद्रोह खड़ा हो जाय। यह कार्य तो केवल और केवल मात्र आर्य समाज ही कर सकता है, इस समस्या का हल होगा भी सामाजिक स्तर पर ही। ब्रिटिश काल में आर्य समाज ने इन क्षेत्रों में ईसाइयत से टक्कर ली थी। उस समय ईसाइयत की गति अवरुद्ध हो गई थी। और इन क्षेत्रों के दलित बन्धु अपने नाम के साथ आर्य लगाने लगे थे। परन्तु उस समय आर्य समाज का वह कार्य दलितों तक ही सीमित रहा, सवर्णों में आर्य समाज की विचार धारा का प्रचार नहीं हो सका।

अब स्थिति यह है कि इन क्षेत्रों के सवर्ण सभी आर्यसमाजियों को शूद्र समझते हैं। मैदानी क्षेत्र से कोई व्यापारी अथवा सरकारी सेवारत सवर्ण व्यक्ति स्थानान्तरित हो कर इन क्षेत्रों में आता है और वह अपने नाम के साथ आर्य शब्द लगाता है अथवा वार्तालाप में यह प्रकट हो जाता है कि वह आर्य समाजी विचारों का है तो वहाँ के सवर्ण जो केवल ब्राह्मण और ठाकुर ही है—उसे भी शूद्र समझने लग जाते तथा उसके साथ भी भेदभाव और छुआछूत का व्यवहार करने लगते हैं। आर्य समाज के उपदेशकों प्रचारकों को क्या समझते होंगे ? यह अनुमान इसी से लगाया जा सकता है।

इस समय स्थिति ब्रिटिशकाल से भी भयंकर है। ईसाइयो ने अपने कार्य की गति इन क्षेत्रों में पहले की अपेक्षा कई गुनी अधिक तीव्र कर दी है। अब वहाँ के दलितों में जाकर ईसाई मिशनरी यह कहते हैं कि तुम लोगों ने आर्य बन कर क्या लिया ? यह लोग तो अब भी तुम्हें शूद्र ही समझते हैं और पहले की ही भांति भेदभाव पूर्ण छुआछूत का व्यवहार तुम लोगों के साथ अब भी करते हैं। यदि तुम लोग ईसाई बन गये होते तो यह लोग इस प्रकार का व्यवहार नहीं कर सकते थे। अब भी आप लोगों का हित ईसाई बनने में ही है।

इस समस्या का वास्तविक हल न तो वहाँ के दलित वर्गों में प्रचार से ही होगा और न ईसाइयों को शास्त्रार्थ के चैलेन्ज करने से। कभी-कभी हमारा कोई कार्य कर्त्ता जा कर इन लोगों में मिल जुल कर खा-पी आये तो भी समस्या सुलझेगी नहीं, जब तक वहाँ के सवर्णों में ही कार्य नहीं किया जाता। इन्हीं लोगों में पढ़े लिखे अधिक हैं और पढ़े-लिखे व्यक्ति को बदलने का प्रकार साहित्य से अच्छा दूसरा नहीं हो सकता।

पौड़ी जनपद के विशिष्ट बन्धु श्री सुरेश चन्द्र और श्री आनन्द प्रकाश जी के सुझाव पर मेरी लिखी पुस्तक "हिन्दू नहीं आर्य गुण कर्म" से पुस्तक हजारों की संख्या मे वितरित की जाती हैं। इसी भाँति वेद स्मृति गीता आदि में उद्धरण युक्त अन्य प्रचुर साहित्य के वितरण की नितान्त अपेक्षा है।

'हम क्या जानें' पत्रक भी उन क्षेत्रों में वितरित कराया गया है। अब शीघ्र ही 'आर्य समाज क्या है; तथा श्री डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार कृत 'सत्यार्थ प्रकाश एक सर्वाङ्ग पूर्ण सम्पूर्ण धर्मशास्त्र। की भी कम से कम ६ सहस्त्र प्रतियाँ उक्त जनपदों में वितरित कराने के लिये छप रही हैं। निश्चय ही इस प्रकार साहित्य के माध्यम से सवर्णों मे प्रेम स्नेह पनपा कर विधर्मीकरण को रोका जा सकेगा।

आर्य समाज अमेठी का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज अमेठी (सुलतानपुर) का वार्षिकोत्सव दिनांक ७ मई से १० मई १९८७ के मध्य हर्षोल्लास एवं भव्य आयोजनों के साथ सम्पन्न होगा जिसमें आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान् वक्ता, उपदेशक, भजनोपदेशक सम्मलित होंगे।

आर्य समाज की भावी रूपरेखा

(बुद्धिजीवियो के सम्मेलन की आवश्यकता)

(डा० प्रशान्त वेदालकार ७/२ रूप नगर दिल्ली)

(गताङ्क से आगे)

आर्यसमाजके मन्चोपर सत्तारूढ दलो के नेता मुख्य अतिथि बनकर आने लगे, वे ही उमके समारोह की शोभा बनने लगे। इन लोगो को निमन्त्रित करने मे उन लोगो का आर्य समाज के सैद्धान्तिक मतो से कितनी समानता है ? उनका चरित्र आर्य समाज के मच के उपयुक्त भी है या नही ? आदि बातो की उपेक्षा होती रही। आज भी हो रही है। देखा यह गया है कि निमन्त्रित नेता 'हमारा' कितना 'कल्याण' कर सकता है। दूसरी ओर अनेक आर्य समाजी विभिन्न राजनीतिक दलो के साथ मिलकर राजनीति मे आगे बढे, पर वे आर्य समाज का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए करते रहे और आज भी उनकी दृष्टि आर्य समाज का कार्य करने की कम, अपने स्वाथ साधन तथा आय समाजी कायकर्त्ताओ व मतदाताओ का सक्रिय समथन प्राप्त करने की अधिक रहती है। इस समय इन्दिरा काग्रस, जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, लोकदल तथा अन्य दलो मे भी आय समाजी है, पर उनकी वहा आर्य समाज की दृष्टि से कोई भूमिका नहीं।

ये सब बातें हम किसी व्यक्ति विशेष पर दोषारोपण करने के लिए नहीं लिख रहे, हम इसमे प्रत्येक आय समाजी को समान रूप से से दोषी मानते है। आर्य समाज किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है। हमारी यह निश्चित मान्यता है कि नेतृत्व भी तभी कमजोर पडता है, जब उसके अनुयायियो मे कोई दम नहीं होता। इसका अर्थ यह भी नही है कि प्रत्येक आय समाजी दुर्बल और सिद्धांतहीन है। आज भी ऐसे अनेक ठोस आर्य समाजी है जो अपने व्यक्तिगत जीवन व सिद्धांतो मे दृढ हैं। इनमे से अनेक उसे ठीक मार्ग पर लाने के लिए अपने हाथ पैर मार रहे हैं, उनमे से कुछ देश और आर्य समाज दोनो की दुरवस्था को देखकर चिन्तित हैं, कुछ थककर उदासीन हो गए हैं, कुछ केवल देख रहे है कि आगे क्या होता है?

यह लिखना पुनरावृत्ति होगी कि देश ठीक दिशामे आगे नही बढ पा रहा। राष्ट्रीय नेताओ मे चारित्रिक गरिमा नहीं है। उसके दलो की नीतिया खोखली है। उसका कारण अवसर वादिता के सिद्धातो का अनुसरण है। देश मे विघटन है। अनैतिकता और भ्रष्टाचार है। देश के युवक दिशाहीन होकर इधर-उधर भटक रहे है और उन्हे कोई भी व्यक्ति या सस्था ठीक मार्ग दर्शन नहीं कर पा रही। ऐसे समय मे उन सभी सस्थाओ का दायित्व है कि वह अपने सैद्धातिक पक्ष व गौरवपूर्ण इतिहास को स्मरण कर राष्ट्र के सास्कृतिक खोखले पन को दूर करें। आर्य समाज अपने सिद्धात व व्यवहार मे स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूव यह कार्य करता रहा है। अत उसका यह काम करना और देश को ठीक दिशा देने के लिए आगे आना और भी आवश्यक है।

हम कहते रहे हैं कि आय समाज को अमृतसर, दार्जिलिग और गौहाटी मे आर्य-महासम्मेलन आयोजित करके वहा के लोगो को राष्ट्रीय धारा मे लाने का एक क्रातिकारी कार्य आरम्भ करना चाहिए। इससे वहा रहने वाले हिन्दुओ व राष्ट्रीय भावात्मक एकता के समर्थक लोगो का मनोबल भी बढेगा। इन प्रदेशो मे विशेषत भारत के सभी सीमावर्ती प्रदेशो मे आर्य सिद्धातों के आधार पर चलने वाली सस्थाओ की स्थापना पर हमने हमेशा बल दिया है। हमने निरन्तर यह लिखा है कि ईसाई मिशनरियो व पेट्रो-डालर के बल पर मुसलमानो के कार्यो की समीक्षा करके उनके नापाक षड्यन्त्रो के विरुद्ध एक आन्दोलन करके भारत सरकार से उनके अवैध काम पर रोक लगाने का काम करना चाहिए। हमने अनेक स्थानो पर यह प्रतिपादित किया है कि वे सभी धर्म व व्यक्ति जिसकी निष्ठा भारत से अधिक कहीं बाहर है, उनके मतदान के अधिकार पर एक प्रश्न-चिन्ह लगाना चाहिए।

आज यदि आर्य समाज के कुछ कर्णधार अग्रजी की ओर अधिक झुक रहे है, तो उसका कारण हमारी दुबलता है, हम सरकार से अपनी भाषा के लिये भी लड़ नहीं पा रहे। आज यदि हम गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के स्थान पर 'पब्लिक स्कूलो की नकल करना चाह रहे है तो यह भी हमारी दुर्बलता की निशानी है, क्योकि हम सरकार को देश के लिए उपयोगी किसी शिक्षा प्रणाली को प्रर्वातित करने के लिए बाध्य नहीं कर पा रहे और न हममे स्वय उस प्रकार की राष्ट्र हित मे साधक शिक्षा सस्था स्थापित करने की शक्ति रह गयी है।

हमारे सदस्यो मे मद्यनिषेध के आन्दोलन चलाना तो दूर मद्यपान करने वाले लोगो का विरोध करने का भी नैतिक साहस नहीं है। अनेक आर्य समाजी तो मद्यपान भी करने लगे हैं यही स्थिति सिगरेट और अन्य नशीली वस्तु की है। आज हम दहेज, मिथ्या आडम्बर, स्त्री–स्वतन्त्रता, अस्पृ यता निवारण, स्वदेश प्रेम औ रचनात्मक विषयोपर केवल भाष तो देते है, पर राष्ट्र इसे व्यवहा मे क्यो नही ला पा रहा, इसव कारण या आत्म निरीक्षण ह नही कर पा रहे है। हम सैद्ध न्तिक रूप से वर्ण व्यवस्था व मानते है, आश्रम–प्रणाली प हमारा विश्वास है, पर व्यवहा मे ये व्यवस्थाए कितनी व्यवहारि है यह सोचने की हमने कभी आव श्यकता अनुभव नहीं की। हम शैक्षणिक व सामाजिक दृष्टि उन्नत 'हरिजन' वर्ग को उच्च व मे लाकर उनमे स्वाभिमान उत्प करने के आन्दोलन भी नहीं चलाए आखिर वे कब तक विशेषाधिका की वैशाखी से चलते रहेगे। उ 'हरिजन' आज भी उपेक्षित और प्रताडित है उनकी उन्न के लिए हमारे क्या प्रयत्न है हम मीनाक्षीपुरम मे हरिजनो मुसलमान बनने पर या आदि वासियो को पोप द्वारा ईसाई बना पर जागते अवश्य हैं, पर उन हमारा काम नहीं है। यदि का हो तो हमे मुसलमान व ईसाइय से कोई चिन्ता न हो ? इसी प्रका वनवासी व गिरिजन क्षेत्रो गुरुकुलो की स्थापना करके उन शिक्षित और सस्कारी करने क हमने प्रयत्न नहीं किया। हम कह रहे हैं कि यदि विश्व की ५०० आर्य समाजें दस-दस हरिजन य उपेक्षित या वनवासी या गिरिज बालको को गोद ले लें और उन अपने सिद्धातो के अनुसार सस्कार करें तो आर्य समाज की युव पीढी तैयार हो सकती है। आ समाज का यह कार्य ऐतिहासि दृष्टि से क्राति कर सकता है।

जब मैने देखा कि आर्यसमा की कोई सस्था इस महान् का की ओर ध्यान नहीं दे रही त मैने गत मई १६८६ मे कुछ लोग को एकत्र किया।

क्रमश .

क्या हिंदी कभी राष्ट्रभाषा का स्थान पा सकेगी ?

[काशीनाथ शास्त्री, गोंदिया (महाराष्ट्र)]

एक ओर जहां हिन्दी विरोधी लोग विशेषकर तमिलनाडु का कट्टर पंथी हिन्दी विरोधी दल हाथ धोकर हिन्दी का विरोध कर रहा है वहीं दूसरी ओर केन्द्र सरकार की हिन्दी के प्रति ढुल-मुल नीति और राजनेताओ का अंग्रेजी के प्रति विशेष अनुराग भी हिन्दी के प्रचार व प्रसार मे बाधक है। हमारे आदरणीय प्रधानमन्त्री या अन्य मन्त्रीगण जब विदेशों में जाते है तब वहां अपना भाषण अंग्रेजी में देकर या पढ़ कर अपने देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति उन्हें कितना प्रेम है इसका परिचय तो देते ही हैं, किन्तु अपने देश में भी प्रायः सभी समारोहों और किसी भवनादि के शिलान्यास या उद्घाटन में अंग्रेजी में भाषण झाड़ते हैं। ऐसा लगता है कि ये नेतागण हिन्दी में भाषण देना हेठा या कम योग्यता की बात समझते हैं। अभी हाल में सोवियत नेता गोर्बाच्येव के स्वागत में जब प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने अंग्रेजी में भाषण दिया तब गोर्बाच्येव ने श्री राजीव गाधी के भाषण का उत्तर रूसी भाषा में दिया। जो मानो एक दूसरा प्रबल प्रहार था क्योंकि इसके पहिले श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित रूस मे भारतीय राजदूत के रूप मे जब अपना परिचय पत्र अंग्रेजी में देने लगीं तो तत्कालीन रूसी नेता ने कहा "क्या आपके अपने देश की कोई भाषा नहीं?" यह एक प्रकार से भारतीयता पर पहिला प्रहार था जो भारत को सहन करना पड़ा।

हमारे आदरणीय राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी हिन्दी की दुर्दशा पर क्षुब्ध व दुःखी हो रहे है। परन्तु उनकी सुनता कौन है? अभी एक अवसर पर उन्होने हिन्दी की दुर्दशा की तुलना करते हुये ठीक ही कहा है कि "मा के बेटे राजगद्दी पर बैठे है और मा दरवाजे पर खड़ी है।"

देश के अधिकांश कर्णधारो के अंग्रेजी प्रेम के कारण ही दूसरे लोग भी अंग्रेजी के व्यामोह में फसे है। क्योंकि 'यथा राजा तथा प्रजा' यही कारण है कि आज जगह-जगह हिंदी का अपमान हो रहा है। 'अपना उत्सव' का निमन्त्रण पत्र हिन्दी में छपा हुआ दिये जाने पर हिन्दी विरोधियो ने आसमान सिर पर उठा लिया और संसद भवन में ही वे निमन्त्रण पत्र फाड़ कर फेंक दिये। यह राष्ट्रभाषा का और संविधान का घोर अपमान था। किंतु इस निन्दनीय कृत्य पर हमारे प्रधानमन्त्री व अन्य मन्त्री चुप्पी साधे रहे। लोक सभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने तो यह कह कर कि 'कहीं कुछ चूक हो गई है' मानो हिंदी विरोधियो के विरोध का समर्थन ही कर डाला। प्रधानमन्त्री का बार-बार यह आश्वासन देना भी कि 'हिन्दी किसी पर थोपी नहीं जायेगी' मानों आग में घी का काम करता है।

तमिलनाडु मे करुणाकरन के दल के लोग संविधान के उस अंश की प्रतियां जला रहे हैं जिसमे हिन्दी को राष्ट्रभाषा की मान्यता दी गई है। हिन्दी विरोधियो को स्वप्न में भी हिन्दी सताती होगी और ऐसा लगता होगा कि हिंदी हमको खाये जा रही है।

देश में कम से कम ८० प्रतिशत फिल्में हिंदी में तैयार होती हैं। यदि किसी प्रदेश के किसी बड़े नगर में २५ सिनेमा घर है तो उनमें से अधिक से अधिक चार या पांच सिनेमाघरों में ही अंग्रेजी व इतर भाषाओं की फिल्म चलती है। शेष सभी सिनेमाघरो में हिंदी की ही फिल्में दिखाई जाती हैं जिन्हें सभी भाषा-भाषी देखते व समझते हैं। किसी भी ग्राम या नगर में लेन-देन और सम्पर्क का काम सभी पढ़े-लिखे और अनपढ़ों के बीच हिंदी के ही माध्यम से होता है और उसी में सम्भव भी है। परन्तु इतने पर भी हिंदी का विरोध संसार का आठवां आश्चर्य है। ऐसे में बार-बार यही प्रश्न उठता है कि क्या हिंदी कभी राष्ट्रभाषा का अपना स्थान पा सकेगी? अन्त में हिंदी के कट्टर विरोधियों से यही कहना है कि :—

राष्ट्र से प्रेम है तो राष्ट्रभाषा का सम्मान करो।
वर्ना किसी और देश को प्रस्थान करो॥

कैसी जगह मुझे ले आये

—जयनारायण अरुण, पत्रकार बिजनौर

गाँव गुजरिया कैसे आये ?
रह-रह कर जियरा घबराये
अपनी सुध-बुध भूल गई मैं—
कैसी जगह मुझे ले आये ?
गाँव गुजरिया कैसे आये ?
विश्वासों का ऐसा बन्धन,
जिसमें बरबस उलझ गया मन
निकलूं भी तो कैसे निकलूं—
इस जग का ऐसा आकर्षण।
और अधिक उरझे मन-पन्छी,
ज्यों-ज्यों बचने को अकुलाये।
कैसी जगह मुझे ले आये ?
गांव गुजरिया कैसे आये ?
पंचमहल में सोना-चान्दी,
पाच खड़ीं द्वारे पर बान्दी,
बाहर पाँच यमों का पहरा,
चहुंदिसि नूतनता की आँधी
आशाओ की घिरी बदरिया,
किन्तु निराशा ही बरसाये।
कैसी जगह मुझे ले आये ?
गांव गुजरियां कैसे आये ?
सम्बन्धों का ताना-बाना,
अब तक हाय, नहीं पहचाना,
मै अपनी खुद क्या लगती हूं
यह सम्बन्ध कभी नहिं जाना।
बाहर के दर फिरी झांकती,
पर अन्तर-पट खोल न पाये।
कैसी जगह मुझे ले आये ?
गाँव गुजरिया कैसे आये ?
अब तो मै मजबूर हो गई,
थक कर चकनाचूर हो गई,
जितना पास पहुंचना चाहा,
उतना तुमसे दूर हो गई।
ऐसी हुई बावरी तुम बिन,
अब तो अखियाँ भर-भर आयें।
कैसी जगह मुझे ले आये ?
गाँव गुजरिया कैसे आये ?

धार्मिक

धर्मिष्ठ राम द्वारा शिवलिंग की स्थापना या

कल्याणकारी शिव की आराधना

(सुश्री सूर्या, स्नातिका पाणिनी कन्या महा विद्यालय, वाराणसी–१०)

१६ नवम्बर १९८६ तथा १८ जनवरी १९८७ के साप्ताहिक "आर्य सदेश" पत्र के ३ एव १२ अक मे "हिन्दुस्तान मे ईसाई मिशनरियो के काले कारनामो का भन्डाफोड" इस शीर्षक से "श्री विशम्स्वरूप गोयल" का एक लेख प्रकाशित हुआ है। जिसमे लेखक ने तीर्थस्थलो मे ईसाईयो द्वारा किए गए कुकृत्यो की चर्चा की है और प्रसग वश 'रामेश्वरम' तीर्थ स्थल की पवित्रता का बखान करते हुए एक बहुत सिद्धा त विरुद्ध बात लिख गए है कि "श्री रामेश्वरम टापू" वह स्थान है जहा भगवान राम ने लका विजय से पूर्व शिवलिंग की स्थापना कर शिव की पूजा की थी।" मुझे प्रस्तुत लेख मे इसी वाक्य पर आपत्ति है जिसका निराकरण मे आगे प्रस्तुत कर रही हू।

प्रथम तो मुझे इस बात का ही खेद है कि जिन सत्य सिद्धान्तो के लिए ऋषिवर मृत्यु पर्यन्त जूझता रहा वही आज कपोल कल्पित तर्कहीन बातें ऋषि सिद्धात प्रचारक पत्रिकाओ मे छपें।

किसी भी व्यक्ति के धार्मिक, पारिवारिक, सामाजिक एव राष्ट्रीय व्यक्तित्व के परिलक्षक उस व्यक्ति के चारित्रिक विशेषण हुआ करते है तथा वे विशेषण ही सामन्य असामान्य का भेद कराते हुए उस व्यक्ति को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने मे सक्षम होते है, वस्तुत हम देखते है कि ये विशेषण उस व्यक्ति के सम्पूण जोवन की बहुमूल्य उपलब्धि होती है। इस विशेषता से युक्त आज हम अपने राष्ट्रोन्नायक महर्षि दयानन्द, अमर-हुतात्मा श्रद्धानन्द, लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल इत्यादि सभी महापुरुषो को देखते सुनते है, ठीक वैसे ही नौ लाख वष पूर्वोत्पन्न राम के वैदिक सस्कृति से ओत-प्रोत उज्जवल जीवन के परिचायक सत्यवादी, मर्यादा-पुरुषोत्तम राम, महात्मा, कृतज्ञ, धर्मज्ञ, धार्मिक, धर्मात्मा, धर्मिष्ठ इत्यादि विशेषणो ने राम को एक विशेष स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया है।

राम को रामायण मे हर्ष-विषाद दुख-सुख प्रत्येक अवसर पर सत्यवादी, धर्मज्ञ, धार्मिक इत्यादि विशेषणो से ही पुकारा गया है। यहा पर इन विशेषणो से युक्त प्रत्येक काण्ड के कुछ नमूने दिए जाते है तद्यथा—

ज्येष्ठ धर्म प्रधाने च न राम नेतुमर्हसि
बाल० २०/१२

ज्येष्ठे पुत्र प्रिय राम द्रष्टुमिच्छामि धार्मिकम्
अयो० १४/२४

विद्धि माम् ऋषभि तुल्य विमल धर्ममास्थितम्
अयो० १९/२०

धर्मपालो जनस्यास्य शरण्यश्च महायशा ।
अरण्य १/१८

धर्मज्ञस्य कृतज्ञस्य कथं पाप करिष्यिति ।
किष्कि० १६/५

भवान् क्रियापरो लोके भवान् देवपरायण ।
आस्तिको धर्मशीलश्च व्यवसायो च राघव ।।
किष्कि० २७/३५

तस्य धर्मात्मन पत्नी स्नुषा दशरथस्य च ।
सु० २२/१९

तत् श्रुत्वा परमप्रीतो रामो धर्मभृता वर ।
यु० १११/६६

इस प्रकार हम सम्पूर्ण रामायण मे देखते हैं कि राम की धार्मिकता ज्वार भाटे के समान हिलोरें ले रही है। उनका प्रत्येक कदम, प्रत्येक कार्य धर्म की मर्यादा से बधा हुआ है वह राम रच मात्र भी धर्म की डोरी से च्युत नहीं है। राम की इस धमज्ञता धर्मनिष्ठा को जानने से पूव हम धम को जान लें। छान्दाग्योपनिषद् मे धर्म का स्वरूप बताते हुए कहा है।

त्रयाधर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययन दानमिति प्रथम
तप एव द्वितीयो, ब्रह्मचर्याचार्य कुलवासी तृतीय ।
छान्दो० प्र० २/२३/प्रपा/१

धर्म के तीन स्कन्ध अर्थात् अवयव = भाग है।

प्रथम है यज्ञ–अर्थात् देवयज्ञ, शुभकर्मादि करना, अध्ययन–अर्थात् ज्ञान की पराकाष्ठा को पहुचना, दान अर्थात् त्याग की प्रवृत्ति = लोभ से कोसो दूर रहना।

दूसरा है–तप–यानि स्वात्म पर नियन्त्रण रखते हुए निराकार ब्रह्म की उपासना करना।

तीसरा है–ब्रह्मचय–व्रत धारण करते हुए अनेक कष्टो को सहकर आचाय कुल मे रहना।

उपनिषद के इस वचन की गरिमा बडी गहन है। अन्य धर्मशास्त्रोक्त धम के लक्षण इसी मे समाहित हो जाते है। राम के जीवन मे धम के ये तीनो स्कन्ध इतने रच–पच गए है कि अन्ततो गत्वा बाल्मीकि–कवि कह ही उठे—

"रामो विग्रहवान् धम" अर्थात् राम धर्म की साक्षात् प्रति मूर्ति है।

यहा पर मुझे धर्म के प्रथम और तृतीय स्कन्धो पर कुछ न लिखकर दूसरे स्कन्ध पर ध्यान दिलाना है क्योकि इन दो स्कन्धो को मोटे तौर पर आबालवृद्ध सभी जानते है कि राम ब्रह्मचय व्रत मे दीक्षित होकर विश्वामित्र के साथ शिवाश्रम, सिद्धाश्रम इत्यादि आश्रमो मे यज्ञ के रक्षार्थ १० वर्ष तक रहे, तथा राज्य छोडकर १४ वष पर्यन्त वनवास मे रहना, ओर सुग्रीव एव विभीषण को उनके भाइयो के मृत्यु के पश्चात् उनके राज्य को लोष्टवत् मान उन्हे सौंप देना इससे बढ़कर और कौन सा दान तथा त्याग हो सकता है। राम ने द्वितीय स्कन्ध तप को अपनी काया के आच्छादन के भाति अगीकार किया हुआ है चाहे अयोध्या वास हो, चाहे आश्रम वास हो, चाहे बनवास, दुख हो या सुख प्रत्यक परिस्थिति मे उस देवाधि देव की उपासना, तथा अग्निहोत्र को नहीं भूलते। राम की इस ईश्वर भक्ति को रामायण के निम्न श्लोको मे देखा जा सकता है—

प्रभातकाले चोत्थाय पूर्वा सन्ध्यामुपास्य च ।
प्रशुची परम जाप्य समाप्य नियमेन च ।।
बाल० २९/३१

(शेष पृष्ठ ८ पर)

"धर्मिष्ठ राम द्वारा शिवलिंग की स्थापना या कल्याणकारी शिव की आराधना"

(शेष पृष्ठ ७ आगे)

एकयामावशिष्टायां रात्र्यां प्रतिबुध्य सः ।
पूर्वां सन्ध्यामुपासीनो जजाप यतमानसः ।।
अयो० ६/६.

उपास्य तु शिवा सन्ध्यां दृष्ट्वा रात्रिमुपागमत्
अयो० ४६/१३.

नामनुष्ये भवत्यग्निर्व्यक्तमत्रैव राघवो ।।
अयो० ६३/२७.

एतस्मिन्नाश्रमे वासंचिरं तु न समर्थये ।
तमेवमुक्त्वा परमं रामः सन्ध्यामुपागमत् ।।
अरण्य० ७/२२.

अथ तेऽग्निं सुरांश्चैव वैदेही रामलक्ष्मणौ ।
काल्यं विधिवदभ्यर्च्य तपस्वी शरणे वने ।।
अरण्य० ८/३.

भवान् क्रियापरोलोके भवान् देवपरायणः ।
अस्तिको धर्मशीलश्च व्यवसायी च राघवः ।।
कि० २७/३५.

ये स्थल पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि वह मर्यादा पुरुषोत्तम राम उस निराकार सर्वान्तर्यामी प्रभु का ही उपासक था। उसी निराकार, व्यापक, कल्याणकारी परमात्मा के ही विष्णु, शिव इत्यादि नाम हैं। शेवयति कल्याणं करोति इति शिवः। पुनः इन स्फटिकवत् सुस्पष्ट स्थलों को देखते हुए सुस्पष्ट है कि राम एकेश्वरवादी आस्तिक धर्मिष्ठ थे। मूर्ति पूजक नहीं थे।

राम ने शिवलिंग की स्थापना की या नहीं इस निर्णय से पूर्व किंचित् निम्नलिखित बातों पर दृष्टिपात करें—

१—मूल रामायण युद्ध काण्ड के २२ वें सर्ग में जहां पुल बांधने की चर्चा है वहां कहीं भी आगे-पीछे शिवलिंग की स्थापना का लेशमात्र भी व्याख्यान नहीं है।

२— जिन कूर्म, शिव, पद्मादि पुराणों में रामचन्द्र द्वारा सेतु मध्ये महादेवमीशानं कृत्तिवाससम्।

स्थापयामास वैलिंग पूजयामास राघवः। कूर्म पुराण० सुपुण्य कामाकृह्य जलधिमुत्तीर्य पारावारतटे सेनां समवस्थाप्य शिवप्रतिष्ठां तत्रकृत्वा मुनिभिर्देवैरभ्यर्चितो योध्यामगमत् ।।
पद्म० पुराकल्पीय रामा. ३२.

इत्यादि वचनों द्वारा शिवलिंग की स्थापना, पूजा तथा उसके दर्शन से पाप निवारण का महात्म्य बताया गया है। उन्हीं पुराणों में कहा है कि त्रेता अर्थात् राम के युग में मूर्ति पूजा नहीं थी, तद्यथा—

सत्येषु मानसी पूजा देवानां तृप्ति कारिणी
त्रेतायां वहिपूजा च यज्ञदानादिका क्रिया
द्वापरे मूर्तिपूजा च देवानां वै प्रियंकरी
कलौ तु दारुणे प्राप्ते ब्रह्मपूजन मुत्तमम् ।
भविष्य पु० प्रतिसर्ग. ३. अ० २२/११. १२.

अर्थात् त्रेता में यज्ञ, दान, इत्यादि, धार्मिक कार्य होते थे। पद्म-पुराण, शिवपुराण, भविष्य पुराण, इत्यादि पुराणों में तो यहां तक कहा है कि शिव के भक्त एवं पूजक पाखण्डी, अछूत शूद्र एवं विष्ठा के कीड़े होते हैं तथा शिवलिंग का प्रसाद विष्ठा के समान है एतादृश विरोधाभास युक्त बातें इन कपोलकल्पित ग्रन्थों में भरी पड़ी हैं। शिव की पूजा और अपमान एक पलड़े पर हैं।

युद्ध काण्ड के १२३ वें सर्ग के २० वें श्लोक में "महादेव" शब्द देखकर तिलक, भूषण इत्यादि टीकाकारों ने भी रामचन्द्र द्वारा शिवलिंग की स्थापना का चमकर प्रतिपादन किया है जब कि इन्होंने सेतुबन्ध के वर्णन में भी किंचित् मात्र भी इस विषयक चर्चा नहीं की है।

इस संदर्भ में जगत्गुरु महर्षि दयानन्द, रामचन्द्र के इस असत्य कलंक को दूर करते हुए एकादश-समुल्लास में लिखते हैं कि—"रामचन्द्र के समय में उस लिंग वा मन्दिर का नाम चिन्ह—भी न था किन्तु यह ठीक है कि-दक्षिण देशस्थ राम नामक राजाने मन्दिर बनवा लिंग का नाम रामेश्वर रख दिया है। जब रामचन्द्र सीता जी व हनुमान् आदि के साथ लंका से चले, आकाश मार्ग में विमान पर बैठे अयोध्या को आते थे तब सीता जी से कहा है कि—

अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद् विभुः
एतत् तु दृश्यते तीर्थं सेतुबन्धः इति ख्यातम् ।।
युद्ध. सर्ग. १२३/२०, २१.

हे सीते? तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे और इसी स्थान में चातुर्मास किया था और परमेश्वर की उपासना ध्यान भी करते थे। वही जो सर्वत्र विभु व्यापक देवों का देव महादेव परमात्मा है उसकी कृपा से हमको सब सामग्री यहां प्राप्त हुई और देख? यह सेतु हमने बांधकर लंका में आके उस रावण को मार तुझको ले आए। इसके सिवाय वहां बाल्मीकि ने अन्य कुछ भी नहीं लिखा, ये महर्षि के अमृत तुल्य वचन तथा इस श्लोक का 'विभु' शब्द ही बताता है कि वह देवों का देव परमात्मा एक देशी नहीं है निराकार एवं सर्वदेशी है रामचन्द्र उसी सर्वदेशी के उपासक हैं और तो और रामायण के सभी पात्र अयोध्यावासी, वनवासी, लंकावासी, सभी जन उस सर्वव्यापी ईश के ही चिन्तक हैं और सम्पूर्ण कार्य यज्ञ द्वारा ही सम्पन्न किए गए हैं। यदि उन सबका बखान किया जाए तो दूसरी रामायण प्रस्तुत हो सकती है। फिर राम के विषय में कहना ही क्या? जो राम अपने को ऋषि तुल्य तथा धर्म में आस्थित बनाता है और सत्य की शपथ खाता हुआ "रामोद्विर्नाभिभाषते" की प्रतिज्ञा करता है यदि वही आस्तिक कहा जाने वाला राम सम्पूर्ण जीवन में निराकार की उपासना तथा यज्ञ-यगादि करने के पश्चात् किसी निम्न क्षण में पत्थर के आगे मत्था टेक देता है एवं अपनी प्रतिज्ञा को भूल जाता है तो क्या उसके माथे असत्य वादिता का सिरमौर नहीं बांधेगा?

अतः हमें निःसंदेह मानना होगा मर्यादा-पुरुषोत्तम राम ने ऐसा कार्य नहीं किया। केवल अपने स्वार्थ के वशीभूत स्वार्थी तत्वों ने इस कार्य को राम के साथ जोड़ा है। क्योंकि इस प्रक्रिया में पीढ़ी दर पीढ़ी माल चाबने को मिलेंगे और देश की पूंजी को उपभोग करते हुए मठाधीश की गद्दी बरकरार रखेंगे। यही कारण है कि आज गद्दी के आगे इन लोगों को न देश की चिन्ता है न देशवासियों की।

महान् दयानन्द

प्रेम-उपकार के पुंज-
महर्षि दयानन्द सरस्वती

(डा०) -विजय पाल शास्त्री एम० ए० आचार्य
डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान नई दिल्ली।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन सार्वजनिक रूप मे था।

उनके समस्त जीवन का मुख्य कार्य धर्म प्रचार था। वे आर्यो के धर्म को सर्वोत्तम, सर्वप्राचीन और ईश्वर प्रदत्त मानते थे। आर्य धर्म मे आत्म विचार और ब्रह्म विचार तथा ब्रह्म विज्ञान का ऐसा उत्तम वर्णन किया गया है कि दूसरे सम्प्रदायो मे उसका स्वरूप अभी तक स्वप्न मे भी नहीं देख सके। आत्म ज्ञान से आर्यो का पहले उत्थान हुआ था। इस आत्म तत्व को बोध का मूल स्रोत वेद है। वेद से ही तात्विक ज्ञान का निस्सरण हुआ है। अत स्वामी जी की वेदो मे अपार भक्ति थी। वे पक्के वेदानुगामी महान् व्यक्ति थे वे वेद विश्वास को। स्थगित कर के किसी से भी सन्धि करने को समुद्यत न थे। इसी अड़चनो के आ पडने पर बम्बई, अहमदाबाद के प्रार्थना समाज, कलकत्ते के प्रेमियो के अप्रीतिपात्र, लाहौरी ब्राह्मण उनसे इतने रुष्ट हो गये कि खान पान बन्द कर दिया। परन्तु महर्षि अपनी धारणा से अगुल भर भी इधर-उधर नहीं हुए।

महाराज वेद विश्वास के साथ ईश्वर विश्वासी भी थे। जब उनको ज्ञात हुआ कि मैडम ब्लेवेस्टिकी जी ईश्वर मे विश्वास नहीं रखती हैं, तो उन्होने झट ही थियोसोफीकल सभा से अपना सम्बन्ध भग कर लिया।

महाराज सार्वजनिक हित के लिये ही हाथ मे तर्क का तीर लेकर खण्डन के ससार मे उतरे थे। महाराज नेसत्यार्थ प्रकाश मे आर्या वर्त्तीय मतो से भिन्न मतो पर भी समालोचन की है उन्होने वर्णाश्रम मर्यादा को गुणकर्म के अनुसार माना है किसी जाति मे उनका उत्तम तथा निकृष्ट होना, जन्म और नाम ही से नहीं माना। वे शूद्रो के सुधार के बड़े पक्षपाती थे उन्हें भी सर्जन कर्त्ता की सर्वश्रेष्ठ सृष्टि समझते थे। श्री स्वामी जी महाराज ने स्त्री जाति केसुधार का भी परम कार्य किया। शास्त्ररीति से उनको वेदाधिकार दिया है। महिलाओ की महत्ता को जितना उन्होने वर्णन किया है उतना अन्य आचार्य ने नहीं किया। महर्षि ने शिक्षा सुधार पर भी बड़ा बल दिया है। वे जानते थे कि जब तक सर्वसाधारण मे सुशिक्षा का प्रचार नही होता तब तक उन्नति नहीं हो सकती।

स्वामी जी को यह भी ज्ञात था कि भारत भूमि रत्न गर्भा है। सुजला सुफला है। ऊसर नही। महाराज के महात्म्यो मे हम प्रथम पद एक निराकार ईश्वर के पूजन को देते हैं। दूसरा महत्व वेद विश्वास है। तीसरा माहात्म्य शास्त्र रीति से स्त्रीजाति को स्वातन्त्र्य देना उनको वेदाधिकार प्रदान करना। चतुर्थ माहात्म्य शूद्रो का उद्धार है। महाराज के उच्चतम जीवन की घटनाओ का पाठ करते समय प्रतीत होने लगता है कि आज तक जितने महात्मा हुये उनके जीवनो के सभी समुज्वल अश महर्षि मे पाये जाते है।

महाराज के जीवन को जिस पक्ष से देखें वह सर्वाङ्ग पूर्ण सुन्दर प्रतीत होता है त्याग-वैराग्य की न्यूनता नहीं, श्रद्धा व भक्ति की अपार, ज्ञान अगाध तर्क अथाह, प्रेम-उपकार का पुंज वह ओज-तेज-प्रताप, लोकहित सकल कला परिपूर्ण महर्षि है।

समवेदना

निम्न आर्यो के दिवगत होने के समाचार प्राप्त हुए है जिसके लिए सभा समवेदना व्यक्त करती है-

१- आर्य समाज बेहटा गोकुल हरदोई के प्रधान श्री शान्ति स्वरूप जी।

२- आर्य समाज एत्मादपुर (आगरा) के आर्य श्रेष्ठ श्री विद्याराम जी।

३- आर्य समाज मोहमदी (खीरी) के सदस्य श्री मथुरा प्रसाद जी

प्रभु दिवगतजनो को शान्ति तथा प्रियजनो को धैर्य प्रदान करे।

सभा मन्त्री

बिहार राज्य में वैदिक धर्म प्रचार

बलिया आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अतरग सदस्य श्री सुदर्शन सिहआर्य ने गत १८ मार्च से २९ मार्च तक बिहार राज्य मे भोजपुर जिला म वैदिक धर्म का प्रचार समारोहपूर्वक किया। इस सदर्भ मे१८से२०मार्च तक आर्य समाज बरनाथा २१ से २२ मार्च जगदीशपुर आर्य समाज २३ मार्च को ग्राम तेन्दुनी। २४ से २५ मार्च को ग्राम उत्तरवहा तथा २६ से २९ माच तक नई बाजार आर्य समाज के उत्सव मे प्रचार किया। १२ दिनो तक भोजपुर जिले मे वैदिक धर्म प्रचार की धूम मची रही इनके साथ स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र गाजीपुर प० गगाधर शास्त्री, बाबा बिहारी दास। राजपति शास्त्री रहे।

उत्सव

आर्य समाज उसण्ड पो० बेहट (सहारनपुर) का वार्षिकोत्सव दिनाक १० मई से १२ मई १९८७ तक भव्य आयोजनो के साथ सपन्न होगा।

★

अखिल भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी सम्मेलन सँपन्न

शनिवार फाल्गुन सुदी ६ दिनांक ६/३/८७ को एम० पी० क्लब दिल्ली में प्रातःकाल दस बजे इस समारोह का उद्‌घाटन सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी आर्य नेता वेदपथिक पं० धर्मवीर आर्य झंडाधारी ने वेद मन्त्रों के पाठ के साथ राष्ट्रीय प्रार्थना से किया।

इस समारोह मे राष्ट्र भाषा हिन्दी को समृद्ध बनाने का तथा लोकप्रिय बनाने का प्रस्ताव वेदपथिक जी ने प्रस्तुत किया। इस समारोह में देश भर से आये हुए सैकड़ों स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियो ने भाग लिया।

इस समारोह का संचालन श्री डा० मदनमोहन चोपड़ा मन्त्री अखिल भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी ने किया। श्री पं० राजाराम जी शास्त्री अध्यक्ष अखिल भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी समिति की अध्यक्षता में कार्य का संचालन हुआ।

इस समारोह में श्री कृष्णचन्द्र जी पंत ऊर्जा मन्त्री भारत सरकार भी पधारे और राष्ट्र के कर्णधारो का स्वागत किया। श्री पूज्य गोविन्द बल्लभ जी पन्त की जन्म जयन्ती भी मनाई गई।

संध्याकाल ६ बजे राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी ने स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियो का परिचय श्रीमान डा० मदनमोहन चोपड़ा ने राष्ट्रपति जी से कराया। श्री पं० राजाराम जी शास्त्री भी इस समारोह में राष्ट्रपति जी के साथ रहे। यज्ञ और प्रार्थना से मानसिक रोगों का निवारण नामक अपना ग्रन्थ राष्ट्रपति को वेदपथिक पं० धर्मवीर जी आर्य झंडाधारी ने भेंट किया है।

इस अवसर पर सभी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियो को राष्ट्रपति जी ने जलपान चाय पान करा करा अभिनन्दन किया। इस स्वागत की अनुपम झांकी दूरदर्शन को भेंट की गई है।

क्षेत्रिय आर्य सम्मेलन रामपुर सफेद बाग का भव्य समारोह

सभी क्षेत्रीय आर्य बन्धुओं के सहयोग से बड़ी धूमधाम से मनाया गया। २० मार्च से वृहद यज्ञ आर्य जगत के सुयोग्य विद्वान् वैदिक मिशनरी पं० इन्द्रजीत जी शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में प्रारंभ हुआ जिसकी पूर्ण आहुति २२ मार्च ८७ को प्रातः १० बजे हुयी इस अवसर पर क्षेत्रीय विभिन्न ग्रामों से जमना कुमखया, गोहावर, अवल पुर, कलबकरी, तुड़लतीफपुर, बोबड़ाखुर्द आदि से पधारे स्त्री पुरुषों ने इस महायज्ञ मे पूरी श्रद्धाभक्ति से सक्रिय भाग लिया।

इस अवसर पर शहीद सम्मेलन आर्य सम्मेलन, चरित्र निर्माण सम्मेलन एवं राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के विशाल आयोजन उच्चस्तर पर किये गये। इन सम्मेलनों के माध्यम से सरकार की शिक्षा नीति मे संस्कृत की उपेक्षा एवं राष्ट्रीय ज्वलन्त समस्याओं के समाधान की दिशा में हजारो की उपस्थिति मे प्रस्ताव पारित कर जहाँ जनता से सहयोग की मांग की गयी वहाँ शासन का ध्यान भी आकर्षित किया गया।

आधुनिक भीम श्री विश्वपाल जयन्त ने जंजीर तोड़ना, बल्ली का चूरा करना, सीने पर पत्थर तुड़वाना, गले से सरिया मोड़ना, हाथ से तश्तरी फाड़ना एवं कार रोकने का सफल प्रदर्शन कर दर्शकों की अपार भीड़ को आश्चर्य चकित कर दिया।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस दिनांक ८-३-८७ को महिला जगत को विशेष सम्मान देने की भावना से आर्य समाज लालबाग लखनऊ ने सर्व सम्मति से श्रीमती उर्मिला सेवक को समाज का प्रधान निर्वाचित किया है।

लखनऊ में भव्य महावीर मेला प्रचार

आर्य समाज महाबीरगंज (अलीगंज) लखनऊ का वार्षिकोत्सव दिनांक १६ मई ८७ से १९ मई ८७ तक समारोह पूर्वक आयोजित है।

वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिन १९ मई को ज्येष्ठ का पहला मंगल होने के कारण भव्य मेला प्रचार की योजना है जिसमे जनपद की सभी समाजे सक्रिय भाग लेंगी।

आर्य समाजों में आर्य समाज स्थापना दिवस

हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया।

१– आर्य समाज कृष्णानगर मथुरा
२– आर्य समाज गवां (बदायूं)
३– आर्य समाज पिथौरागढ़
४– जिला आर्यो प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर
५– आर्य समाज तालिब नगर अलीगढ़
६– आर्य समाज नेमदारगंज नवादा (बिहार)
७– केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर
८– आर्य समाज अमेठी सुलतानपुर

अमृत वर्षा

तपस्वी बन

हे शिष्य ! तू जो यथार्थ का ग्रहण, सत्य भावना, सत्य बोलना, वेदादि सत्य शास्त्रो का सुनना, अपने मन को अधर्म आचरण मे न जाने देना, श्रोत्रादि इन्द्रियो को दुष्टाचार से रोक, श्रेष्ठाचार मे लगाना, क्रोधादि के त्याग से शान्त रहना, विद्या आदि शुभ गुणो का दान करना अग्निहोत्रादि और विद्वानो का सङ्ग कर जितने भूमि, अन्तरिक्ष और सूर्यादि लोको मे पदार्थ है, उनका यथाशक्ति ज्ञान कर और योगाभ्यास, प्राणायाम, एक ब्रह्म परमात्मा की उपासना कर ।

ये सब कर्म करना ही तप कहाता है ।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

दयालू जगदम्बा

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

धन सम्पत्ति का लोभी प्राणी,
भक्त नही बन सकता ।
दया हीनता का वह देही,
अन्त सुख से वचित रहता ।
करके पाप कमाई जो,
नेकी का आडम्बर करता ।
प्रभु क्षमा उसको नहि करते,
तड़प तड़प कर है वह मरता ।
चलो चलें हम प्रभु चरणो मे,
अपना शीष झुकाय ।
पाप छोड़ सद्धर्मी बनकर,
जीवन सफल बनायें ।
बड़ी दयालू जगदम्बा हैं,
सब पर करुणा करती ।
निष्कपटी छल रहित,
मनुज के सभी ताप है हरती ।

कानपुर महानगर
आर्यसमाज स्थापना दिवस-समारोह
विशाल शोभा यात्रा

स्वामी आनन्द बोध का ओजस्वी प्रवचन

कानपुर महानगर की आर्य उप प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज स्थापना दिवस २९ तथा ३० मार्च १९८७ को विशेष रूप से आयोजित किया गया । २९ मार्च को आर्यसमाज मेस्टनरोड से एक विशाल शोभा यात्रा निकली जो दो किलोमीटर लम्बी थी जिसमे हाथी, बैण्ड, आर्य शिक्षा सस्थाओ के बालक-बालिकाये थे तथा नगर के आर्यसमाजो का सक्रिय सहयोग था । शोभा यात्रा का नेतृत्व उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान प० विजयपाल शास्त्री मन्त्री डा०हरपालसिंह एव विशिष्ट आर्यजन कर रहे थे । आर्यमित्र सम्पादक आचार्य रमेशचन्द्र तथा समाज के उपप्रधान श्री पुत्तीलाल यादव एडवोकेट का सराहनीय योगदान था । नगर के प्रमुख क्षेत्रो से होती हुई शोभा यात्रा आर्यसमाज मेस्टन रोड मे समाप्त हुई जहा हाल मे सभा श्री मनमोहन जी तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अध्यक्षता मे हुई जिसमे प्रमुख वक्ता उत्तरप्रदेश के राजस्व मन्त्री श्री बलदेवसिंह आर्य थे ।

३० मार्च को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती तथा सभा मन्त्री श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री के साथ कानपुर नगर मे पधारे । स्टेशन पर प्रमुख आर्यजनो ने आपका स्वागत किया और साय आर्यसमाज मेस्टन रोड मे स्वामी जी का भाषण हुआ । नगर की आर्य समाजो द्वारा स्वागत हुआ । आचार्य रमेशचन्द्र जी ने स्वामी जी के सघर्षमय जीवन की सराहना की । स्वामी जी ने राष्ट्र को जाग्रत करने के लिये बल दिया और कहा कि राम जन्म भूमि के प्रश्न पर आर्यसमाज मूक दर्शक नही, नेतृत्व करेगा । अरब देशो के पैसे पर मुस्लिम साम्प्रदायिकता की लहर के प्रति स्वामी जी ने भारत सरकार को सावधान किया । इसरायल के साथ मैत्री के लाभ बताये ।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने भाषण देते हुए आर्यसमाज को सगठित होकर मुस्लिम साम्प्रदायिकता से सतर्क रहने की अपील की ।

इस अवसर पर 'जागरण' सम्पादक श्री नरेन्द्र मोहन जी, श्रीमती आशारानी, श्रीमती सरला चौधरी, डा० हरपालसिंह ने भी विचार व्यक्त किया और विजयपाल शास्त्री ने आभार व्यक्त किया । लाला मूलचन्द एव सूर्यप्रकाश जी ने अतिथियो का स्वागत तथा प्रसाद वितरित किया । —सम्वाददाता

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

क्षेत्रीय आर्य परिषद हरिद्वार जून ८७ ई० के प्रथम पक्ष (पखवाड़े) मे एक १०० युवको का आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर लगाने जा रही है । इच्छुक युवक जिनकी आयु १४ से ३० वर्ष के बीच हो और न्यूनतम शैक्षिक योग्यता आठवीं श्रेणी उत्तीर्ण है । २० रुपये प्रवेश शुल्क के साथ सादे कागज पर ३० अप्रैल ८७ ई० तक निम्न पते पर आवेदन कर सकते है । —नक्कलसिंह आर्य बन्धु

पता—ग्राम कटारपुर, पो० कनखल, जिला—सहारनपुर (उ०प्र०)

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६३
पंजीकरण स० एल डब्लू/एन पी ७६
वैसाख कृष्ण ६
रविवार, १६ अप्रैल १६८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

शुद्धि आन्दोलन

नूरुद्दीन नरेन्द्र कुमार बने

दिनांक ७-२-८७ को रामनवमी के शुभ अवसर पर आर्य समाज चन्द्रनगर लखनऊ मे श्री नरेन्द्र कुमार माथुर जिन्होने भ्रम वश इस्लाम स्वीकार करके अपना नाम नूरुद्दीन रख लिया था—पुन श्री देवव्रत जी अवस्थी द्वारा वैदिक धर्म स्वीकार किया। आचार्य श्री अवस्थी ने उनका नाम पुन नरेन्द्र कुमार रखा।

—यशपाल दीवान मन्त्री आर्य समाज चन्द्रनगर, लखनऊ

उठो आर्य वीरो

यहा सो रहे हो सुखद नींद मे क्यो ?
उठो आर्य वीरो वतन को बचाओ।
भवर मे अविद्या के आई है नौका,
जिसे आज पतवार बन तुम बचाओ।
विधर्मी निरन्तर यहा बढ़ रहे है,
सतत साधुओ का हृदय दह रहे हैं,
नहीं देखते क्यो ? लगी आग घर मे,
जगो ! बन प्रलय सिन्धु उसको बुझाओ।
उठा दो यहा एक प्राचीर ऐसी,
इसी से लगे आज अपने पराये।
हृदय की बढी जा रही दूरियाँ जो,
जिन्हे एक होकर यहा मिल मिटाओ।
मनस्वी विवेकी कहीं आज होते,
परस्पर विभेदे नहीं बीज बोते।
सफल आज नेतृत्व तुम कर न पाये,
करो अनुगमन ! मत सुपथ को भुलाओ।
बनी वन्दिनी भारती रो रही है,
वृथापुत्र दल भार को ढो रही है।
समर्पित अमर सुनु से कह रही है—
'तुम्हीं आज इनसे प्रतिज्ञा कराओ।'
स्वजन नित्य कितने मिटाये गये है,
भवन और मन्दिर गिराये गये है !
न खौला अभी तक रुधिर क्यो तुम्हारा,
सुदर्शन, उठो, आज अपना चलाओ।
दयानन्द बिस्मिल शिवाऽश्फाक तुम हो,
भगतसिंह कर्तार सिखगुरु तुम्ही हो।
सुमेधा जगाकर सभी विघ्न-बाहक,
गदा, वीर हनुमान की तुम उठाओ।

श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी प्रोफेसर्स कालोनी श्यामगज, बरेली

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

हमारे तिस्नेहमू श्रद्धालु श्री 'बसन्त' जी ओर भावना उत्प्रेरक आप के द्वारा प्रस्तुत वेदामृत का पान कर हार्दिक प्रसन्नता होती है, अनेकश धन्यवाद।

आप सहमत होगे कि पजाब या अन्यत्र जो भी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है उसका मूल कारण 'गुरुडमवाद' आदि धार्मिक पाखण्ड ही है। आशा है आप मनोयोग पूर्वक यह अजू पढ़ेंगे और निर्भयतापूर्वक समालोचना के साथ ही अपना सम्पादकीय लेख भी लिखेंगे। आर्य जनता के श्रीराम पन्थ से बडी हानि हो रही है। कम से कम आर्य जनता इससे सावधान हो जावेगी। आशा और विश्वास के साथ,

आचार्य प्रेमभिक्षु
तपोभूमि, मथुरा

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क माह १५ अप्रैल १६८७ मे समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २५) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १६८५ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

४०५, १२५६, २८१८, ३६५१, ३६६३, ४०००, ४४०४, ४८७६, ५५५६, ६११८, ६४०५, ६६५३, ७०४७, ८०२१, ८२४८, ८३४६, ८५४२, ८७७०, ८७८१, ८७८४, ८६१६, ६४३७, ६४४०, ६६४८, ६८६१, १००४२, १०१३६, १११६१, १११६२, १११८६, १११८७, १११६३, ११८६६, ११६००, १२१५५, १२१५७, १२८७०, १२८७४, १२८७५, १३०७०, १३०७५, १३०७६, १३०७८, १३०८५, १३०८७ १३१०८, १३४४१, १३४४२, १३४५४, १३४५७, १३४५६, १३७५०, १३७५१, १३७५२, १३७५७, १३७५६, १३७६०, १३७६१, १३७६२, १३७६३, १३७६४, १३७६५, १३७६६, १३७६७, १३७६८, १३७६६, १३७७०, १३७७१, १३७७२, १३७७३, १३७७४, १३७७५, १३७७६, १३७७७, १३७७८, १३७७६, १३७८०, १३७८१, १३७८२, १३७८३, १३७८५, १३७८६, १३७८७ १३७८८, १११६६, १२८६७।

विनीत—
व्यवस्थापक

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एम० पी० प्रिंटस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भरद दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित।

ओ३म्
आर्य मित्र
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८५

बैसाख कृष्ण १३, रविवार, सवत् २०४४ वि० दिनांक २६ अप्रैल १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

सम्पादक मण्डल—
विक्रमादित्य 'बसन्त'
'वेद वारिधि'

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड
एक प्रति	६० पैसे

अङ्क १६

नई शिक्षा पद्धति से संस्कृत का निष्कासन भारतीय संस्कृति पर जघन्य प्रहार

१० मई ८७ को विरोध दिवस

संस्कृत अनिवार्य न होने पर प्रबल आन्दोलन होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अन्तरङ्ग सभा दिनांक १९-४-८७ को लखनऊ के आर्य समाज गणेशगंज के भव्य सभागार में हुयी। जिसमे प्रदेश के सभी जनपदो के अन्तरङ्ग सदस्यों ने भाग लिया।

सभा मे अन्य विषयों के अतिरिक्त पंजाब में बढ़ते आतङ्कवाद के समापन के लिए राष्ट्रपति शासन की मांग की गयी।

अयोध्या में श्रीराम जन्म भूमि को बाबरी मस्जिद बनाने की कुटिल चाल को पूर्ण न होने देने का निश्चय किया गया।

मेरठ में हुये साम्प्रदायिक दगे को पूर्व नियोजित मानते हुये उसकी घोर भर्त्सना की गई एवं दंगाइयों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की मांग की गई।

भारत सरकार ने नई शिक्षा पद्धति से माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम मे संस्कृत को सर्वथा उपेक्षित निष्कासित कर दिया है। इस नीति को भारतीय संस्कृति के विनाश की एक कुटिल चाल कहा गया है। सर्व सम्मति से निश्चय किया गया कि केन्द्र सरकार पर दबाव डाला जाये कि वह नई शिक्षा पद्धति मे संस्कृत को अनिवार्य विषय घोषित करे। अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय बनाये।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

वे स्वच्छन्द घूम रहे हैं जिन्हें जेल में होना चाहिये आर्थिक अपराधी जेल रेखा से बाहर हैं

श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह की स्पष्ट घोषणा

देहली मे महात्मा हसराज जयन्ती पर आयोजित एक जन सभा मे भूतपूर्व केन्द्रीय वित्त मन्त्री व प्रतिरक्षा मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने बड़े ही स्पष्ट शब्दों मे घोषणा की कि आज अनेकों आर्थिक अपराधी स्वच्छन्द ससम्मान विचरण कर रहे हैं जबकि उन्हें जेल की सीखचो में होना चाहिये था। जैसे देश में अनेकशः लोग गरीबी की रेखा से ऊपर जीवन यापन कर रहे है ऐसे ही अनेको धनाढ्य आर्थिक अपराधी जेल रेखा से बाहर हैं। आज मानवता, न्याय, ईमानदारी कराह रही है आतङ्क, अन्याय, भ्रष्टाचार बढ़ रहा है यह सब पश्चिमीय सभ्यता की देन है।

उन्होंने स्पष्ट शब्दो मे कहा कि हम महर्षि दयानन्द, महात्मा हसराज सरीखे महापुरुषो के जीवन व निर्देशो का अनुसरण करके ही राष्ट्र को समृद्ध व सुखी बना सकते हैं। आर्यसमाज व उसके द्वारा संचालित संस्थाओं का दायित्व है वे विलगाववाद का प्रबल विरोध करके नैतिक शिक्षा व भारतीय दर्शन की शिक्षा व्यवस्था द्वारा राष्ट्रीय एकता की नीव मजबूत करें।

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नही वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार २८ अप्रैल १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि सवत् १९७२९४९०८७

साम्प्रदायिक विषधर कब तक डसते रहेंगे ?

श्री राम जन्म भूमि को बाबरी मस्जिद ही मनवाने के लिए कतिपय निहित स्वार्थी तत्व साम्प्रदायिक उन्माद फैला कर झूठ को सत्य करने के प्रयत्न मे सतत यत्नशील है। वे हर प्रकार से अपने भाषणों वक्तव्यो में उत्तेजनायें फैला कर विघटनवादी तत्वों को प्रोत्साहित कर रहे है। वे साम्प्रदायिक विषधर पग-पग पर मानवता—राष्ट्रीयता को डस रहे हैं। अभी हाल में कानपुर के हलीम मुस्लिम कालेज एवं दिल्ली के वोट क्लब पर उन सम्प्रदाय-वादियो ने जी खोल कर विषवमन किया और एक वर्ग विशेष को जीजान से उभारने का यत्न किया।

जब निरन्तर श्री शहाबुद्दीन, श्री सुलेमान सेठ जिन्हे हमने सांसद के नाम से ही जाना था, विद्वेषात्मक भाषण करके मात्र अपना उद्देश्य बाबरी मस्जिद बनाना बता रहे है। जब वे यह भी कहने लगे है कि उनका विश्वास न्यायपालिका पर नहीं, उनका विश्वास किसी पर नही उनका विश्वास तो केवल अपने लक्ष्य बाबरी मस्जिद ही प्राप्त करने पर है, फिर भी सरकार शान्त क्यों बैठी है? उन्हे अब तक खुले बवाल मचाने, जन-जन मे नफरत पैदा करने और आग लगाने की छूट क्यो देती जा रही है।

विधान सभा का सदस्य भारत माता को डायन कहे और प्रदेश सरकार चुप बनी रहे अजीब बात है।

मौलाना बुखारी ने अगर कहा कि हमें किसी बात से कुछ लेना देना नही हमें तो बस बाबरी मस्जिद चाहिए। वे यद्यपि धार्मिक नेता के रूप मे जाने जाते है परन्तु धर्म से उन्होने अपना वास्ता रखा ही कहां ? वर्षों पहले से वे राज-नीतिक मंच के खिलाड़ी बन कर धर्म से ऊपर अपने स्वत्व की रक्षा व सम्वर्धन का उद्देश्य बना कर चल रहे है यह कौन नहीं जानता। ऐसे पंचगामी खुलेआम अपनी कुटिल देशघाती योजनायें फैलाने को स्वतन्त्र क्यो है ?

देश का अधिकांश मुसलमान इन विवादो मे कतई नहीं पड़ना चाहता वह तो देश में भाईचारे से रहना चाहता है परन्तु उन्हें चैन से नहीं रहने देना चाहते वे लोग जो देश मे एक दूसरे पाकिस्तान की योजना लेकर संसद और विधान सभाओं में घुस गये हैं और अपने उस समृद्ध मुखौटे को लगा कर बेधड़क साम्प्रदायिक द्वेष फैला रहे हैं। राजनीतिक पार्टियां जिनके माध्यम से वे उन स्थानो पर पहुंचे हैं अपने पार्टी के वोट के स्वार्थ के कारण उनके गलत को न तो रोकने के लिए मुंह खोलती है नाहीं उन्हें पार्टी से निकालने की हिम्मत करती हैं। अब इन राजनीतिक पार्टियों में भी प्रायः देशहित समाप्त होकर पार्टी हित ही लक्ष्य बनता जा रहा है। क्या करें आखिर किसी तरह से अपनी पार्टी का अस्तित्व जो रखना है।

सामान्य मुसलमान जब उसकी कमजोर नब्ज़ कुरेदी जाती हैं वह आक्रोश में आने लगता है। समूह प्रदर्शन भी करता है उत्पात में भी सम्मिलित हो जाता है परन्तु उसे वैसी अशान्ति रुचती नहीं। यह मैं उसी वर्ग के अनेकशः मित्रों के साथ हुये वार्तालाप के अनुसार दृढ़ता से लिख रहा हूं।

आज देश में विघटनवादी पंचगामी तत्व हल्ला मचा कर गाली-गलौज करके कुरान खुदा व इस्लाम की कसम खिला कर भोली जनता को बर्गलाने में सतत यत्नशील है। जगह-जगह अराज-कता फैला कर पुलिस व सरकार पर अल्पसंख्यकों को सताने के नारे लगाते है। समाचार पत्र भी कभी-कभी ऐसा कुछ लिख देते है कि मानों वे वाकई सताये जा रहे है। जबकि वास्तविकता यह है कि अल्पसंख्यक होने का वे बहु-संख्यक पर अत्याचार करके अपना हल्ला मचा कर अपने बचने का लाभ कमाते हैं।

अयोध्या की पवित्र नगरी को जो साम्प्रदायिकता की ज्वाला से बची शान्त निर्भ्रान्ति सी भारतीय जन मानस को राम के पवित्र जीवन की संदेशवाहिनी अब तक रही है उसे ये साम्प्रदायिक तत्व नष्ट भ्रष्ट करना चाहते हैं। वहां के सदियों से रहने वाले सभी वर्गों के लोगों (हिन्दू-मुसलमानों) मे द्वेषाग्नि भड़का कर अयोध्या को नष्ट करने के साथ ही देश में नफरत की आग तेजी से फैला कर दूसरे पाकिस्तान की परि-कल्पना कर रहे है।

इससे पूर्व भी इसी कालम में हम लिख चुके हैं कि न्यायालय में चल रहे विवाद को सड़कों पर लाना न्याय पालिका का घोर अपमान है। राम जन्म भूमि या बाबरी मस्जिद का विवाद जब न्यायालय में विचाराधीन है तो इसे सड़क के हो हल्ला की राजनीति से हल करने का प्रयत्न किया जा रहा है। परन्तु शासन पता नहीं क्यों इसे सहन कर रहा है।

भारतीय संविधान में राष्ट्र को धर्म निरपेक्ष कहा गया है। धर्म निरपेक्ष का अर्थ धर्म विहीनता तो नहीं है। प्रत्येक प्राणी का पशु पक्षी, कीट पतंग सभी का अपना-अपना धर्म है वे विश्व के किसी भी कोने में रहते हों कभी अपना धर्म नहीं छोड़ते वे अपने धर्म का पूर्णतया निर्वाह करते हैं।

परमात्मा ने मानव को धर्म के सार तत्व को भलीभांति समझ कर, उसे आत्मसात् कर सम्पूर्ण सृष्टि को आनन्दित रखने का आदेश दिया है—परन्तु आज मानव ही महा अधार्मिक हो गया है। आज हम अपने धर्म को सर्वथा भूल बैठे है। धर्म का स्थूल अर्थ कर्तव्य है। कर्तव्य वह जिससे सार्वजनीन हित हो। संविधान में धर्म निरपेक्ष का अर्थ—प्रत्येक मनुष्य अपने अपने ढंग से अपनी-अपनी भावनाओ के अनु-रूप पूजा करने को स्वतन्त्र है। न शासन उस पूजा पद्धति में हस्तक्षेप करेगा। न कोई व्यक्ति ऐसा है न कि हो हल्ला करके अपनी अधार्मिक वृत्ति को फैलाने की स्वतन्त्रता। परन्तु आज कुछ ऐसा ही हो रहा है कि अल्पसंख्यक के नाम पर ईसाई, मुसलमान (वे जो केवल अपने सम्प्रदाय को चारों ओर फैलाने का लक्ष्य लेकर चले है—वे नहीं जो उन मतों में रहते हुये भी मानवता के उपासक है) अपने सम्प्रदायों के अस्तित्व को खतरे की आवाज उठाकर भारतीय संस्कृति को नष्ट करने पर उतारू है। अयोध्या मे रामजन्म भूमि को बाबरी मस्जिद बनाने की मांग ऐसी ही कुचाल है।

फैजाबाद गजेटियर के अनु-सार अयोध्या और उसके आस-पास चार प्रमुख हिन्दू तीर्थ स्थल थे। इन्हीं में से एक स्थल राम कोट भी था। हिन्दू इसे भगवान राम का जन्म स्थान मानते और उसकी पूजा किया करते थे। १५२८ में बाबर अयोध्या आया और उसकी फौज ने करीब एक हफ्ते तक डेरा डाला, बाबर ने भवन गिरवाया और उसे मस्जिद मे बदल दिया। इस मस्जिदके

निर्माण में प्राचीन भवन का ही सामान प्रयोग में लाया गया। इस मस्जिद के अन्दर और इसके बाहर इसके निर्माण का समय ९३५ हिजरी फारसी में अंकित है। बाबरी मस्जिद के निर्मित हो जाने के बाद इस मस्जिद में रहने वालों ने हनुमान गढ़ी पर कब्जा करने के लिए हमला किया जो हनुमान गढ़ी वालों ने नाकाम कर दिया।

१८वीं सदी के मध्य तक साम्प्रदायिक सद्भाव की ऐसी स्थिति पैदा हो गई कि दोनों समुदाय पूजा, इबादत साथ-साथ करने लगे।

बीच मे कुछ छुटपुट वारदातें होती रहीं जिससे वहां एक पुलिस चौकी बना दी गई। १९४९ मे २२ दिसम्बर के बाद इस स्थान पर ताला डाल दिया गया था (दैनिक जागरण ४ अप्रैल १९८७) जिसे ही गत वर्ष न्यायालय ने खोला था।

"मैने अपने बाल्यकाल जब मै गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद में पढ़ता था—बात सन् ४०–४१ की है उक्त तथाकथित मस्जिद को भी देखा था, राम चबूतरा, सीता रसोई भी देखी थी। मस्जिद में कभी झाड़ू भी नहीं लगती थी उसके परकोठे (बुर्ज)पर लम्बी लम्बी घास फैली थी। मस्जिद के अन्दरूनी गेट पर ताला लगा था जिस पर जंग लगी थी—जबकि सीता रसोई, राम चबूतरा जो बिलकुल खुले रूप मे था, साफ सुथरा पूजा के वातावरण से परिपूर्ण था भक्त श्रद्धालु आते पूजा करते पुजारी जी प्रसाद देते।

उपरोक्त स्वयं देखी स्थिति का वर्णन करने की आवश्यकता इसलिये समझी कि यह स्पष्ट बता दूँ कि वहां दीर्घकाल से कभी नमाज भी अदा नहीं की गई। जब कि पूजा नित्य होती थी। परन्तु वहां के निवासियों मे कभी उस मस्जिद को तोड़कर मन्दिर बनाने की आवाज नहीं उठाई। फिर इन धर्म का मुखौटा चढ़ाकर कुटिल राजनीतिज्ञों की—मन्दिर हटाकर मस्जिद बनाने की मांग निश्चित रूपेण देश को पराधीन बनाने की प्रच्छन्न चाल है।

यह विषय प्रदेश की सरकार का है या भारत सरकार का यह विधिवेत्ता जाने। मै तो इतना ही कहूंगा कि शासन को चाहिये कि वह बिना लाग लपेट के इस विवाद को अविलम्ब समाप्त कराये।

भारत की धरती पर जन्मे, पले, बढ़े मुसलमान भाइयों का पवित्र धर्म है कि वे ऐसे पंचमांगी तत्वों से सावधान रहें। राम जन्म भूमि को राम जन्म भूमि के रूप मे ही रहने देने की आवाज बुलन्द करें। (अनेकों निश्छल मुसलमान युवको ने ऐसी आवाज उठायी है) भाईचारे को बढ़ायें। विदेशी आक्रान्ता बाबर के वंशज बनने वाले शत्रु हैं मित्र नहीं—ऐसी भावना जागृत करें।

न्यायालय शीघ्रातिशीघ्र इस विवाद को न्याय देकर समाप्त करे। जो न्यायालय को नहीं मानते सरकार को नहीं मानते भारत माता को नहीं मानते, बस बाबरी मस्जिद ही माँगते हैं सरकार उन्हें देशद्रोही घोषित करे और उनको अब और अधिक विष-वमन की आज्ञा न दे।

उनकी संसद व विधानसभाओं की सदस्यता निलम्बित की जानी चाहिये और उन्हें गिरफ्तार कर के कठिन से कठिन दण्ड देना चाहिये। राजनीतिक पार्टियों को चाहिए कि वे ऐसे साम्प्रदायिक व देशद्रोही तत्वों को अपनी पार्टी से निकाल कर अपनी पार्टी की छबि अब और खराब होने से बचायें तथा राष्ट्र को सुगठित करने की दिशा में एक दूसरे के सहयोगी बनें।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

[प्रथम पृष्ठ का शेष]

यह भी निश्चय हुआ कि प्रदेश की जिला सभायें अपने-अपने मुख्यालयो पर तहसील व नगर की प्रमुख आर्यसमाजो के प्रधान मन्त्रियो की बैठक बुलायें और सरकार की इस नीति का प्रबल विरोध करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के महामन्त्री पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने घोषणा की कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने एतदर्थ एक उपसमिति बनायी है। जिसके संयोजक डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी, श्री विमलदेव भारद्वाज, डा० किशनलाल हैं।

सार्वदेशिक सभा ने सम्पूर्ण देश में १० मई ८७ को संस्कृत रक्षा हेतु विरोध दिवस मनाने का निश्चय किया है।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा शीघ्र ही अखिल भारतीय स्तर पर प्रसिद्ध शिक्षा विदों की एक आवश्यक बैठक आयोजित कर रहे हैं। दिल्ली मे हस्ताक्षर अभियान चालू है। सरकार को मांग पत्र दिया जा चुका है।

हमने प्रदेशीय स्तर पर भी हस्ताक्षर अभियान जन सम्पर्क सभायें गोष्ठियां, विधायको, सांसदों एवं प्रतिष्ठित नागरिकों व संस्कृत प्रेमियों से विस्तृत सम्पर्क स्थापित करके संस्कृत की अनिवार्यता को सिद्ध करना है।

एतदर्थ उपरोक्त अन्तरङ्ग सभा ने निश्चय किया है जिला सभायें मुख्यालयों पर प्रमुख समाजो के प्रधान मन्त्रियों की बैठकें बुलायें।

तहसील स्तर पर बैठकें आयोजित करके कार्यक्रम घोषित करें।

जिला स्तर के संस्कृत प्रेमियों, शिक्षक, विद्यार्थी, विद्वान्, साधु-सन्त विभिन्न धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं तथा जिले भर की आर्य समाजों के सदस्य सम्मिलित जुलूस निकालें जिनमें झण्डे नाम के पट के अतिरिक्त संस्कृत समर्थक वाक्यो युक्त बैनर भी हों।

यथासम्भव प्रभात फेरियां व पदयात्रायें करें।

१० मई को विरोध दिवस मनाया जाये।

मानव संसाधन मन्त्री केन्द्र सरकार, प्रधान मन्त्री, मुख्य मन्त्री व जिलाधीश को विरोध पत्र या तार सामूहिक व व्यक्तिगत भेजे जायें जिनमें संस्कृत अनिवार्य करने की मांग हो। उनकी प्रतिलिपि सार्वदेशिक सभा व उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व मन्त्री को भी भेजें।

सभा ने सर्व सम्मति से एक संस्कृत रक्षा संघर्ष समिति का गठन भी किया जिसके संयोजक आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री है।

भावी रूपरेखा की प्रतीक्षा करें।

इन्द्रराज	मनमोहन तिवारी
प्रधान	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

जीवन ज्योति

राष्ट्रीय महामानव मर्यादा–पुरुषोत्तम राम

(श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश)

प्रस्तुत लेख विलम्ब से प्राप्त होने के कारण, राम नवमी के पावन अवसर पर प्रकाशित नहीं किया जा सका। महान पुरुषों की जीवन ज्योति ने सदैव साधारण जनों का मार्ग प्रशस्त किया है। उनके जीवन चरित्र सदैव अनुकरणीय रहे है और रहेंगे। हम चित्रों को नहीं, उनके पीछे जो चरित्र है, उन्हें अपने जीवन मे उतारें। यही हमारी सच्ची श्रद्धान्जलि होनी चाहिये।

——सम्पादक

प्रति वर्ष राम नवमी के दिन मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म दिवस मनाया जाता है। राम एक राष्ट्र पुरुष थे, एक युग पुरुष थे। वे मानवीय मूर्तियो के मूर्तरूप थे। परिवार से विवाद उपस्थित होने पर उन्होंने राज्य को ठोकर मारी और १४ वर्ष के लिये वन का रास्ता लिया। बाली को जीतने के बाद सुग्रीव को राज्य दे दिया और लंका को जीतने के पश्चात् रावण के भाई विभीषण को राज्य दे दिया। वे विस्तारवादी नहीं थे एवं तथा कथित राजनीतिज्ञ भी नहीं थे जो आज कल असत्य का व्यवहार करके उसको राजनीति का ओढ़ना उढ़वा देते है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के समय हिन्दु-मुसलिम सिख ईसाई का जन्म भी नहीं हुआ था। उस समय आर्य राज्य, वानर राज्य और राक्षस राज्य था। सर्वत्र अपने बाहुबल और चरित्र बल के आधार पर वे सब आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त करने मे समर्थवान हो गए।

आधुनिक युग के राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी हिन्दू-मुसलिम और ईसाई को निरन्तर एक राष्ट्रीय विचार धारा में ओतप्रोत करने का प्रयास करते रहे परन्तु उनके मन-मस्तिष्क में राम राज्य की परिकल्पना थी।

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज्य स्वप्नऊं नहीं व्यापा॥

राम राज्य की परिभाषा करते हुए तुलसी दास जी कह गये कि राम राज्य इतना उत्तम था कि किसी को भी तीनो तापों में से स्वप्न में भी एक ताप का भी दुःख नहीं था।

भारतीय संस्कृति में ओतप्रोत राम भारतीय संस्कृति के प्राण हैं। घर हो या राज्य, परिवार हो या समाज। भगवान् राम सर्वत्र आदर्श पुरुष थे। हम सब भारतीयों के आज भी–राष्ट्र पुरुष राम है। ये कुछ वर्षों से ही तो आर्यो मे से मुसलमान और ईसाई हुए। इनको धमनियों में भी राम और कृष्ण का ही रक्त प्रवाहित हो रहा है। परन्तु विदेशी शक्तियों के ईशारे पर कुछ स्वार्थी मतान्ध लोगों ने आज उस राष्ट्रीय पुरुष भगवान् राम की जन्मभूमि से ही खिलवाड़ करना प्रारम्भ कर दिया है। भारत में रहने वाला हर नागरिक राष्ट्र-राष्ट्र के प्रति निष्ठावान् होना चाहिए। राष्ट्र पुरुष राम के प्रति भी सबको आस्था और श्रद्धा होनी चाहिये। परन्तु पिछले कुछ दिनों से कुछ ऐसा विषाक्त वातावरण बनाया जा रहा है कि जैसे हम विदेशी हों और हमारा कोई और राष्ट्र पुरुष हो। आज के कुछ स्वार्थी राजनैतिक नेताओं की दृष्टि में भारत में कोई ईमानदार व्यक्ति या संस्थान नहीं रह गया है। भारत की न्यायपालिका के न्याय को तिलाञ्जलि देकर अब सड़कों पर जेहाद बोला जा रहा है। क्या भाई-भाई का रक्त बहाने की तैय्यारी नहीं कर रहा। न्यायपालिका को कोसना। उस पर अविश्वास प्रकट करना आदि बातें जनतन्त्र को खोखला करने की बातें हैं। जब जनतन्त्र ही नहीं रहेगा तो आवाज कैसे सुनी जाएगी? किसकी सुनी जाएगी और कौन सुनेगा? पड़ौसी देश पाकिस्तान का उदाहरण हमारे सामने है। वहां हिन्दू नहीं है। वहां मुसलिम जनता ही तानाशाही का विरोध कर रही है। वहां जनतन्त्र की मांग हो रही है। न्यायपालिका से विश्वास हटाना आत्महत्या करने से भी अधिक है।

हे युग पुरुष, राष्ट्र महा पुरुष राम! आप ही बतायें कि जब इस देश के अज्ञानी नागरिक आपके जन्म स्थल पर ही वाद, विवाद और संघर्ष कर रहे हैं तो आप का जन्म दिवस ही हम लोग मनाने के पात्र कहां रह जाते हैं।

राज नैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए जो लोग देश का वातावरण साम्प्रदायिकता एवं हिंसा द्वारा विषाक्त कर देना चाहते है समय रहते शासन को उनसे निपटना चाहिए। यदि शासन मौन रहा तो यह देश के कर्णधारों की कमजोरी समझी जाएगी और इस विषाक्त क्रिया की प्रतिक्रिया भी विषाक्त होगी। एक ऐसी भयंकर विद्वेष की अग्नि प्रज्जवलित हो उठेगी जिससे सब कुछ भस्मीभूत हो जाएगा।

राम सबके हैं। उनका जीवन और आदर्श सारे संसार के लिये प्रेरणा दायक हैं। जीवन के हर क्षेत्र में वे एक महान आदर्श है। ये क्षुद्र साम्प्रदायिक लोग अपने स्वार्थों में अन्धे होकर उस युग पुरुष के गौरव को कदापि नहीं घटा सकते। उस महा पराक्रमी युग पुरुष ने अनेकों असुरों को परास्त किया था। रावण जैसे दुर्दान्त राजा को परलोकवासी बनाते हुए अपने सीमित साधनों मे चरित्र के बल पर–विजय श्री प्राप्त करके हम सबका मार्ग प्रशस्त कर गये कि आज यदि हम एकत्र होकर उनके मार्ग का अनुसरण करें तो अराष्ट्रीय, विघटनकारी, आतंकवादी और उग्रवादी शक्तियों को परास्त कर हम बापू के स्वप्न को साकार कर राम राज्य की स्थापना कर सकते हैं।

परम पिता परमात्मा हमें सुमति प्रदान करे। हम संगठित हों और विघटन कारी शक्तियों को परास्त करें।

काशीपुर (नैनीताल) में वेद प्रचार

राम नवमी के पावन पर्व पर वैदिक सत्संग आवास विकास कालोनी काशीपुर द्वारा वेद प्रचार का भव्य आयोजन किया गया। प्रातःकाल ९ बजे से १२॥ बजे तक वृहद वैदिक यज्ञ, भजन तथा वेदोपदेश हुए। मध्याह्न श्री राम कुमार सेठ के नवनिर्मित मकान का गृह प्रवेश वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ और सायंकाल ७॥ से रात्रि १२॥ बजे तक भजनों और उपदेशों का क्रम चला।

इस अवसर पर रुद्रपुर के भजनोपदेशक श्री जय प्रकाश तथा श्री विक्रमादित्य 'बसन्त' वेदवारिधि सम्पादक आर्य मित्र लखनऊ तथा वेद सविता अजमेर विशेष रूप से आमंत्रित किए गए थे। श्री 'बसन्त' जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुए और वेदोपदेश भी उनके द्वारा दिए गए। अन्य भजनोपदेशकों तथा विद्वानों ने भी इस आयोजन में भाग लिया।

सम्पूर्ण आयोजन का श्रेय श्री शांति प्रसाद जी गोयल को है जिन्होंने तन मन धन से इसे पूर्ण सफल बनाया।

आर्य समाज की भावी रूपरेखा

(बुद्धिजीवियों के सम्मेलन की आवश्यकता)

(डा० प्रशान्त वेदालंकार ७/२ रूप नगर दिल्ली)

(गताङ्क से आगे)

यह बैठक श्री स्वामी विद्यानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। इसमे दिल्ली विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग के प्रोफेसर डा० कृष्णलाल, डा० सत्यदेव चौधरी (भू० पू०) प्रोफेसर पश्चिमी जर्मनी), सुप्रसिद्ध साहित्य कार पद्मभूषण श्री क्षेमचन्द्र जी सुमन, गुरुकुल कागडी के भूतपूर्व इतिहास के प्रोफेसर वेदव्रत जी, श्री राजेन्द्र दुर्गा (मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा) तथा अनेक गणमान्य विद्वान एवं विचारक एकत्र हुए। मैने सबके सामने अपने मन की उक्त पीडा का वर्णन किया। मैने वहा यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि बुद्धिजीवियो—प्राध्यापक, चिन्तक, विवेचक, शास्त्र अनुशीलक आदि—का एक सम्मेलन बुलाकर आर्य समाज की भावी रूपरेखा पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाए। सबने मेरे इस प्रस्ताव का न केवल समर्थन किया वरन् इस प्रकार की सगोष्ठी के द्वारा आर्य समाज को गतिशील बनाने के लिए इसे बहुत आवश्यक समझा। वहा यह निर्णय लिया गया कि बड़े स्तर पर एक विचार गोष्ठी करने से पूर्व छोटे स्तर पर विभिन्न प्रातो मे कुछ बैठकें आयोजित की जाय। उनमे उक्त गोष्ठी की आवश्यकता पर प्रकाश डाला जाए और उन बैठको मे उपस्थित आर्य सज्जनो से इस सम्बन्ध मे उनके विचारो को सुना जाए।

इसी मध्य मेरा यूरोप जाने का कार्यक्रम बन गया। मैने यह आवश्यक समझा कि यूरोप जाने से पूर्व इस सम्बन्ध मे एक पत्रक विभिन्न बुद्धिजीवियो व विभिन्न आर्य—पत्र—पत्रिकाओ को भेज दिया जाए। उस पत्रक मे मैने बुद्धिजीवी सम्मलन की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए लिखा था, हमे उन कारणो का अनुसन्धान करना चाहिए जिस कारण हमारे आर्य समाज के आन्दोलन मे शिथिलता आई है और जिन कारणो से आर्य समाज के परिवारो की सन्तान आर्य समाज से उदासीन हो रही है। मैने लिखा कि आज अनेक ऊंचे-ऊंचे पदो पर आर्य समाजी आसीन हैं, पर आर्य समाज के सगठन मे वे रुचि ग्रहण नहीं करते। आदि-आदि।

यूरोप मे ११ जून से १० सितम्बर १९८६ तक रहा। यूरोप मे इगलैण्ड तथा हालैण्ड मे आर्य समाज का अच्छा कार्य है। हमने फ्रास तथा इटली मे यज्ञ करके वेदमन्त्रो का यूरापीय लोगो को अर्थ समझाया। उन सभी को वैदिक मन्त्रो मे विश्व शाति व विश्वबन्धुत्व का भाव उत्पन्न करने की शक्ति प्रतीत हुई। इस समय सारा विश्व किसी ऐसे सार्वभौम ज्ञान को प्राप्त करने के लिए लालायित है जो उन्हे व्यक्तिगत तनावो से हटाकर पारिवारिक, सामाजिक राष्ट्रीय व अन्त राष्ट्रीय शांति प्रदान कर सकें। मुझे बराबर इस यात्रा मे यह लगता रहा कि आर्य समाज ही अपने कार्य का नई दिशाओ मे विस्तार करके विश्व की उक्त आवश्यकता को पूरा कर सकता है। मुझे वहा भी आर्य समाज के मच पर बुद्धिजीवियो के सम्मेलन के द्वारा आय समाज की भावी रूपरेखा निर्धारित करने की आवश्यकता का निरन्तर अनुभव होता रहा।

जब मै लौटा तो मैने देखा कि अनेक आर्य समाजी सस्थाओ ने मेरे द्वारा भेजे गये पत्रको का उत्तर दिया। अनेक आर्य समाजी पत्र—पत्रिकाओ ने मेरे उस पत्रक को अपने-अपने पत्रो मे प्रकाशित किया। पजाब—आर्य—प्रतिनिधि—सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने आर्य—मर्यादा मे उस पत्रक को आधार बनाकर तीन सपादकीय लिखे। श्री भवानीलाल जी भारतीय (अध्यक्ष दयानन्द पीठ, पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ) ने उस विषय पर लम्बा पत्र व्यवहार किया और इसको महती आवश्यकता अनुभव की। आर्य-मित्र के सम्पादक श्री रमेश चन्द्र जी ने भी इस कार्य मे अपनी रुचि प्रदर्शित की। श्री भद्रसेन जी ने (साधु आश्रम होशियारपुर) लिखा मेरी दृष्टि मे एक वास्तु कलाविद् की तरह एक विकास का आदर्श मानचित्र बनाया जाए, जिसको सभी के सहयोग से सम्पन्न किया जाए। वस्तुत इस बिना योजना के श्रम, शक्ति, समय, वित्त आर्य समाज का लग रहा है। योजना तो कुछ व्यक्ति ही मिलकर बना सकते है। उन्होने इस कार्य का आरम्भ दिल्ली से करने का परामर्श दिया। श्री लल्लन (मन्त्री आर्य समाज बदायू) ने लिखा—'यह सत्य है कि आर्य समाज राष्ट्र का नेतृत्वकर सकता, जनमानस को प्रेरित कर सकता है। आर्य समाज को जागरूक भूमिका को अपना कर ही राष्ट्र को टूटन को बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्य समाज मे गतिशीलता की आवश्यकता है, परन्तु भौतिकवादी बढती प्रवृति, अधिकार प्राप्त करने की मनोवृत्ति और उसके गम्भीर परिणामो से जनमानस के मस्तिष्क पर अच्छी छाप नहीं है। शक्ति, सत्ता और धन ही लक्ष्य है जो देश के लिए घातक है, हर क्षेत्र मे मर्यादा टूटती जा रही है। सदाचार और नतिकता मखौल बनकर रह गया है। आपके प्रयासो मे हम भी सम्मिलित है।' इस प्रकार के अनेक पत्र आए। बम्बई से डा० रवीन्द्र अग्निहोत्री (राज भाषा अधिकारी स्टेट बैंक) ने इस कार्य मे उत्साह दिखाया और बुद्धिजीवियो की एक लम्बी सूची भेजी जो पूरे देश भर के बैंको व अन्य क्षेत्रो मे उच्च पदो पर कार्यरत है। वे सभी आर्य समाज से सहानुभूति रखते हैं, पर आर्य समाज मे निष्क्रिय है। मेरे पास अनेक विद्वानो ने देश को दुरवस्था पर आसू बहाए हैं और इस अवस्था के सुधार के लिए आर्य समाज को गतिशील बनाने के लिए अनेक सुझाव दिये हैं।

मैने इस सम्बन्ध मे विभिन्न प्रदेशो मे कुछ विचार गोष्ठियां भी आयोजित की। जालन्धर में श्री वीरेन्द्र जी से, अबोहर में प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' तथा डा० विश्वबन्धु (डी० ए० वी० कालेज), लखनऊ मे डा० हर्षनारायण, श्री जयदेव शर्मा, तथा श्री इन्द्रचन्द्र जी से मै मिला और उक्त सगोष्ठी को रूपरेखा पर मेने विस्तार से चर्चा की। सभी ने उसकी सफलता के लिए अपना सहयोग देने का विश्वास दिलाया। जयपुर मे श्री सत्यव्रत सामवेदी (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान) का कहना था कि यह सच है यदि अभी आर्य समाज न सम्भला तो सामने महान् विनाश ही विनाश है। आर्यसमाज को राष्ट्रीय समस्याओ के समाधान मे जुटना चाहिए, उसके बिना यह धर्म व आध्यात्मिकता का प्रचार न कर सकेगा। कलकत्ता मे श्री सीताराम जी आर्य (प्रधान आर्य समाज कलकत्ता) श्री गजानन्द आर्य (उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, दिल्ली) तथा श्री आनन्द आर्य (कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, बगाल)। क्रमश.

आवश्यक निर्देश

ऐसा ज्ञात हुआ है कि कई आर्य समाजों के खाते एक व्यक्ति के द्वारा ही संचालित किये जा रहे है यह अनुचित है। नियमानुसार सभी के खाते प्रधान मन्त्री कोषाध्यक्ष के नाम से ही खुलेंगे और उनका परिचालन उपरोक्त तीन में से दो कोई अनिवार्य रूप से करेंगे।

जहां कहीं ऐसी अनियमितता हैं वे उसे–तत्काल ठीक करके खाते के संयुक्त खाते के रूप में संचालित करना आरम्भ करें।

मन मोहन तिवारी
सभा मन्त्री

प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ० प्र०

आवश्यकता

प्रदेश के आर्य विद्यालयों के निरीक्षण के लिये ५००–२०–६०–७०० एवं १००) मंहगाई तथा वास्तविक मार्ग व्यय देय के आधार पर दो निरीक्षकों की आवश्यकता है जो वैदिक सिद्धान्तों में निष्णात, स्नातकोत्तर योग्यता प्राप्त निष्ठावान व्यवहार कुशल आर्य समाजी हों। अनुभवी शिक्षकों को वरीयता दी जायेगी। आवेदन–पत्र आवश्यक प्रमाण–पत्रों की प्रमाणित प्रतिलिपियों सहित आगामी २१ मई ८७ तक सभा कार्यालय में पहुंचने चाहिए।

माधव सिंह
मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ० प्र०
५ मीरा बाई मार्ग, लखनऊ।

आवश्यकता

आर्य शिशु मन्दिर चोपन, मीरजापुर हेतु प्रशिक्षित सहायक अध्यापिकाओं की आवश्यकता है जिसके लिए गणित, अंग्रेजी, विज्ञान एवं आर्य परिवार के अभ्यर्थीयों को वरीयता दी जायेगी। आवास की सुविधा उपलब्ध है। आवेदन पत्र, प्रबन्धक, आर्य शिशु मन्दिर, चोपन मीरजापुर को भेजें। जिसका अन्तिम तिथि १५–५–८७ है।

भवदीय
प्रबन्धक
आर्य शिशु मन्दिर चोपन मीरजापुर

साधना शिविर का आयोजन

वेद संस्थान नई दिल्ली में प्रतिवर्ष होने वाला ग्रीष्मकालीन साधना शिविर सोमवार ११ से रविवार १७ मई १९८७ तक होगा। इसमें महर्षि दयानन्दके ब्रह्मत्वमें यज्ञ होगा और उनके प्रवचनोंके अतिरिक्त डा० बद्रीप्रसाद पंचोली रामाश्रम शर्मा, स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती, अभयदेव शर्मा, विक्रमादित्य 'वसन्त' तथा जगदीश चन्द्र"शैलेन्द्र"के वेदोपदेश और व्याख्यान होंगे। योग प्रशिक्षण स्वामी दयानन्द 'विदेह' के द्वारा होगा तथा श्रीमती चन्द्र प्रभा शर्मा के शास्त्रीय शैली निबद्ध गान होंगे।

साधक इस साधना शिविर से आध्यात्मिक लाभ उठाने के लिये शिविर के नियम मंगायें तथा अपने स्थान का पत्र लिख कर आरक्षण करा लें ताकि उन्हें आवास की कोई असुविधा न हो। पत्र व्यवहार इस पते से करें–

रमेश चन्द्र गुप्त, सचिव साधना सदन वेद संस्थान, सी २२ राजौरी गार्डन नई दिल्ली––११००२७।

सम्पादक के पत्र

श्रीमान सम्पादक महोदय आर्यमित्र लखनऊ

श्रीमन्महोदय

निवेदन है कि हरिद्वार में क्षेत्रीय आर्य परिषद् के–नाम से एक संगठन बनाया गया है। इस संगठन का सम्बन्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० तथा जिला सभा सहारनपुर से किन्चित भी नहीं है। क्षेत्रीय आर्य परिषद के नियमों में प्रथक से रजिस्ट्रेशन कराने का विधान है। आर्य प्रतिनिधि सभा एक रजिस्टर्ड संस्था है, आर्य समाजें आर्यप्रतिनिधि सभा के साथ जुड़ी हैं। यदि आर्य समाजें किसी उपर्युक्त संगठन के साथ जुड़ती हैं तो वह असंवैधानिक हैं। गत क्षेत्रीय परिषद की बैठकों में मै स्वयं सम्मलित हुआ था, इस संगठन को मैंने जिला सभा तथा प्रान्तीय सभा से जोड़ने की बात कही थी–जिसे स्वीकार नहीं किया गया। इस संगठन के प्रमुख व्यक्तियों ने शताब्दी समारोह के निमित्त धन संग्रह मे भी व्यवधान उत्पन्न किया था। इनके यहां आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० तथा जिला सभा का कोई अस्तित्व नहीं है। कुछ लोगों के द्वारा यह भी कहा गया कि इन सभाओ पर भी अंकुश लगाने की जरूरत है, आर्य–प्रतिनिधि सभा उ० प्र० एक धनवान संस्था है, किसी प्रकार धन–भेजने की आवश्यकता नही है।

दिनांक १९ अप्रैल के अंक में इसी संगठन की–एक सूचना छपी है वह असंवैधानिक है, किसी आर्य समाज के द्वारा यदि आर्यमित्र में इस प्रकार की सूचना छपवाई जाती है जो आर्य प्रतिनिधि सभा के अस्तित्व को ही स्वीकार न करें–उसकी मान्यता से पूर्व सूचना छपना उपयुक्त नहीं है। विचार करें।

देवेन्द्र विद्या भास्कर
सम्वाददाता आर्यमित्र
प्रबन्धक–आर्य समाज भवन हरिद्वार

ब्र० आर्य नरेश जी द्वारा वैदिक धर्म प्रचार–

राष्ट्र, संस्कृति तथा युवा शक्ति के उत्थान हेतु उद्गीथ-साधना स्थली [हिमांचल) के संस्थापक ब्र० आर्य नरेश जी द्वारा मार्च २४ से अप्रैल १ तक निम्न स्थानों पर वैदिक धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार एवं पुस्तकों का वितरण किया गया।

गुजरात के आर्यसमाज राजकोट के पश्चात् महाराष्ट्र के अचलपुर, आकोट, देवरखेड़, भण्डारय, चौसाला, नीमखेड़ा, अञ्जनगांव, परसापुर एवं नागपुर आदि की पाठशालाओं, देवालयों, पारिवारिक सत्संगों तथा सार्वजनिक स्थानों पर आर्य धर्म, वर्ण व्यवस्था, शिक्षा, राष्ट्र रक्षा यज्ञ एवं ईश्वरीय धर्म वेद कर्म फल तथा पारिवारिक-शांति पर अनेकों प्रवचन हुए।

इसके पश्चात् दिल्ली के शिवाजी एनक्लेव, उत्तम-नगर, राजोरी-गार्डन, नारनौल, चण्डीगढ़, तपोवन, देहरादून, छुटमलपुर, शब्बीरन, (उ० प्र०) शक्ति नगर, मिर्जापुर तथा चेम्बूर, बम्बई में ईश्वर साधना, समाज सुधार और योग ध्यान आदि विषयों पर प्रवचन हुए।

आगे पूने की ओर प्रस्थान हुआ। ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी का धर्म के सम्बन्ध मे सन्देश–

धर्म उस आत्मवत शाश्वत कर्म को कहते हैं जिसके करने से शरीर आत्मा तथा राष्ट्र की उन्नति होती है तथा जिसके करने से पूर्व मध्य तथा पश्चात् भय शंका एवं लज्जा की अनुभूति नहीं होती है।

आर्य समाज मेरठ शहर में नई शिक्षा नीति में संस्कृति को हटाने के विरोध में विराट सभा

२२.३.८७ को संस्कृत भाषा के विद्वानों, वैद्यों, कवियो, लेखकों, आचार्यों, प्राचार्यों विद्यार्थियों, पत्रकारों, अधिवक्ताओं तथा अन्य संस्कृतानुरागियों का आर्य समाज मन्दिर बुढ़ाना गेट, मेरठ शहर में सर्वोदय नेता मास्टर श्री सुन्दर लाल जी की अध्यक्षता में नई शिक्षा नीति में संस्कृत को हटा देने के कारण एक विराट सम्मेलन हुआ, जिसमें निम्नलिखित सज्जनों ने अपने-अपने विचार प्रकट किये—

१–श्री शिवानन्द जी शर्मा, प्राचार्य, देवनागरी इन्टर कालेज।
२–श्री माधोसिंह जी, अध्यक्ष जिला आर्य समाज।
३–श्री कालीचरण जी पौराणिक, धर्म संघ सनातन धर्म रक्षिणी सभा।
४–श्री डा० रामेश्वर दयालु जी अग्रवाल, भू० पू० प्रवक्ता मेरठ कालेज।
५–श्री डा० कर्ण सिंह जी, प्रवक्ता मेरठ कालेज।
६–श्री जगन्नाथ जी व्यास।
७–श्रीमानसिंह जी वर्मा, भू० पू० सांसद।
८–श्री छज्जूराम जी सारस्वत, संस्कृत चूड़ामणि, श्री बिल्वेश्वर संस्कृत विद्यालय।
९–श्री कृष्ण कुमार जी शर्मा, 'बेताब'।

श्री इन्द्रराज जी, अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने निम्नलिखिति प्रस्ताव प्रस्तुत किया। जिसका समर्थन प्रो० श्री शिवानन्द जी शर्मा, प्राचार्य, देवनागरी इन्टर कालेज मेरठ ने किया।

"यह विराट सम्मेलन एक स्वर से यह प्रस्ताव पारित करता है कि नई शिक्षा नीति में संस्कृत को अनिवार्य रखा जाए। यह बड़ा ही खेद का विषय है कि नई शिक्षा नीति में संस्कृत को कोई स्थान नहीं दिया गया है। हमारी मान्यता है कि संस्कृत सर्वाधिक समर्थ वैज्ञानिक, स्वाभाविक एवं सारे देश को एक सूत्र मे बांधने वाली कड़ी है। भारत की एकता, अखण्डता, प्रभु सत्ता की सुरक्षा के हित में संस्कृत को नई शिक्षा नीति के पाठ्यक्रम मे अनिवार्य विषय बनाया जाए।"

सभा के अन्त में मास्टर श्री सुन्दर लाल जी ने अध्यक्षीय भाषण दिया। श्री राजकुमार जी भारद्वाज ने सबका धन्यवाद दिया।

निर्वाचन

आर्य समाज मेरठ शहर
प्रधान श्री मनोहर लाल जी शर्राफ
मन्त्री श्री इन्द्रराज जी
कोषा० श्री देवेन्द्र स्वरूप जी

आर्य समाज शास्त्री नगर, विजय-नगर कानपुर
प्रधान श्री सोमेश्वर प्रसाद आर्य
मन्त्री श्री अमर सिंह आर्य
कोषा० श्री रामसिंह आर्य

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ
प्रधान श्री अर्जुन देव महाना
मन्त्री श्री इ० सत्यदेव सैनी
कोषा० श्री हरीराम गुप्त
आय व्यय निरीक्षक श्री विनोद चन्द्र गुप्त

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर लाल बंगला कानपुर ७
प्रधान श्री नानक चन्द्र आर्य
मन्त्री श्री कर्णपाल सिंह
कोषा० श्री भगवान दास

आर्य समाज उसण्ड (सहारनपुर)
प्रधान श्री जगदीश प्रसाद
मन्त्री श्री बिजेन्द्र कुमार
कोषा० श्री नरेश कुमार

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा इटावा
प्रधान श्री श्री नारायन जी गुप्त उर्फ टोपाजी
मन्त्री श्री बुद्धसेन जी सक्सेना
कोषा० श्री शिवप्रसाद जी गुप्ता

डोली बनादी तूने

(सारस्वत मोहन 'मनीषी' एम० ए० बी० एड० शोधार्थी डी० ए० वी कालेज, अबोहर)

एक जंगल में नई बस्ती बसा दी तूने।
बस्त-पत्थर पे नई जोक लगा दी तूने।
लोग माने या न मानें, या करिश्मा कोई;
अर्थियां जितनी चलीं, डोली बनादी तूने।
सच तो यह है कि किया काम निराला ऐसा;
आग पानी में ऋषि जैसे लगा दी तूने।
रात किया दिन को हिरन ऐसे नशे से नफरत;
जिसका टूटे न नशा ऐसी पिला दी तूने।
तेरी निष्ठा का कोई मूल्य चुकाये कैसे;
बुझती हुई वेद-शमां फिर से जला दी तूने।
चांद, सूरज व सितारे थे कभी कैद जहां;
ऐसे अम्बर में पुनः धूप उगा दी तूने।
जिनके पांवो में न पायल थी न बिंदिया मुख पर;
ऐसी अबलाओं की फिर मांग सजा दी तूने।
ढूंढ इतिहास को देखा, न मिला तुझ जैसा;
अपने कातिल को भी जीने की दुआ दी तूने।
भूल पायेगी न सदियां भी 'मनीषी' तुझको;
गर्दनें गर्व की पैरों मे झुका दी तूने।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन, रविवार, ३१ मई १९८७ को

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली की एक बैठक २९ मार्च को डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली में हुई। जिसमें यह निश्चय हुआ कि–प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन रविवार, ३१–५–८७ को प्रातः १०–३० से १–३० बजे तक आर्य समाज "अनारकली", मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में होगा।

मेरी आर्य प्रादेशिक प्रति निधि सभा को समस्त आर्य समाजों से प्रार्थना है कि वे वर्ष १९८६–८७ का दशांश एवं अपने समाज के प्रतिनिधियों के नाम कार्यालय को भिजवाने की कृपा करें। उपसभाओं के मन्त्रियों एवं प्रधानों से निवेदन है कि वे अपनी उपसभा का आय–व्यय का विवरण तथा वार्षिक रिपोर्ट सभा–कार्यालय को यथाशीघ्र भिजवायें। इसमें विलम्ब न करें। क्योंकि सभा को "वार्षिक रिपोर्ट" प्रकाशित होनी आरम्भ हो गई है।

रामनाथ सहगल
मन्त्री–आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

शुद्धि एवं विवाह

कानपुर नगर के प्रतिष्ठित वैदिक—पुरोहित श्री सूर्य प्रकाश जी ने विगत माह ईसाई युवती रोजा मैरिया मैन्जारेश की वैदिक रीति से शुद्धि करके नवीन नाम करण राधा देते हुए उसका विवाह श्री मनोज चतुर्वेदी के साथ सम्पन्न कराया—परिवार एवं आर्य जन उपस्थित थे—

सम्वाददाता

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ।।

—ऋग्वेद ५-५१-१५

गीतिका

(पद्यात्मक अनुवाद)

[श्री रामनिवास विद्यार्थी सुन्दर सदन, फजलपुर (मेरठ)]

स्वस्ति पंथ अनुगमन करें हम ।
हे प्रभु सूर्य चन्द्रमा के सम आजीवन आचरण करें हम ।।
बनें सूर्यवत् विश्व प्रतापी,
तेजस्वी ज्ञानी निष्पापी,
दानी न्यायव्रती एकाकी प्रगतिशीलता वरण करें हम ।।
चन्द्र समान सौम्य हम होवें,
कटुता द्वेष विषमता खोवें,
शान्तमना सम्पति विपत्ति में कभी नहीं विषवमन करें हम ।।
संग करें नित दाताओं का,
संग करें ज्ञाताओं का सत्संगति आमरण करें हम ।।
रवि समान हो जीवनदानी,
गुण ग्राही तपमूर्ति सुहानी,
चन्द्र समान अमृत रस वर्षी, अग्नि सोम गुण ग्रहण करें हम ।।
सूर्य विशाल चन्द्र लघुतर हे,
फिर भी युग पद साथ अमर है,
छोटे बड़े सभी मिल जुल कर भवसागर संतरण करें हम ।।

हे भारत के राम ! उठो !!

[श्री राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना (सुलतानपुर)]

आसुरी प्रवृत्तियों को,
प्रचण्ड विभीषिका को
नष्ट कर विनष्ट कर
धूल में मिलाया था
रावण सहित लंका को
साध्वी सीता के
मान की, सम्मान की
रक्षा कर सुरक्षा कर
शान्ति की, सफलता की
समृद्धि की, सम्पन्नता की—
महिमा बढ़ाया था भारत के आँगन में ।
मनुजता विकास कर
दनुजता का ह्रासकर
कुतत्वों का नाशकर
ज्योतिमय प्रकाश कर
नव्य नवल आश व
स्वदेश मे सुहास भर
सुतत्वो की प्यास हर
जनगण अभिलाष बन
जगा दीप ज्योति अमर
पुण्य इस वसुधा पर
बिखेरा आलोक किरण
वैदिक सद्धर्म की
स्निग्धतम् ।
पर, पुनः भारत यह
आसुरी प्रवृत्तियों की
भीषण प्रचण्ड ज्वाला मे
आज फिर दग्ध है,
अत्याचार—भ्रष्टाचार—शोषण—अन्याय है
स्वार्थ की, लिप्सा की दीवाल भीमकाय है
मानवता कुंठित है
प्रेम—दया लुंठित है
एक नहीं शत शत है
सीताएं रो रहीं
रावण से दानव के
अतुलित अत्याचारो से
सतीत्व निज खो रहीं
भाई ही भाई के
शोणित का प्यासा है
दानवता विनाश की
दीखती न आशा है
ऐसी विषम परिस्थितियो में
हे भारत के राम ! उठो !!

बढ़ो सपूतो

बढ़ो सपूतो बढ़ो
शीश पर कफन बांधकर बढ़ो
कि अवसर आया है बलिदान का ।
बैरी खड़ा परखने खातिर पानी हिन्दुस्तान का ।।
जिसकी खातिर हमें तोड़ना पड़ा कि मां की मूरत को
हाय राम ! आजादी आई कैसे अशुभ महूरत को
स्वागत करना पड़ा कि जिसका हमें खून की धारों से
उसकी रक्षा कैसे होगी भैया थोथे नारों से
चढ़े हुए है विषधर जालिम चारों दिशि दीवारों पे
उधर बगावत की बू आती देखो मिजो पहाड़ों से
असम और बंगाल लाल लपटों मे देखो जलते है
शंकर के केरल में पग पग निर्भय बागी पलते है
उठो जवान उठो
कि कसकर कमर गरज कर अड़ो
बदल दो रुख जालिम तूफान का ।
बैरी खड़ा परखने खातिर पानी हिन्दुस्तान का ।
मावस के हाथों 'पूनम की मांग उजड़ने मत देना
सूरज की छाती पर पापी तम को चढ़ने मत देना
प्यार मांगता प्यार लुटाओ गोली मारे गोली दो
जिसकी जीभ रक्त की प्यासी उसे खून की होली दो
मान बेचकर शाँति मिले तो लेना उसे कभी ना रे
दुनिया करे मखौल तो ऐसा जीना भी क्या जीना रे
सीमा पर आवाज लगाये दुश्मन खड़ा कमीना रे
बैरी दे ललकार तो भैया कैसा खाना—पीना रे
चढ़ो ठुमक कर चढ़ो
बजाते बिगुल बताते चलो
कि कैसा लोहा हिन्दुस्तान का ।
बैरी खड़ा परखने खातिर पानी हिन्दुस्तान का ।
दोहरे रिपुओं से क्या डरना कल लड़ते तो आज लड़े
उनके हामी एक साथ मिल कल चढ़ते तो आज चढ़ें
महा स्वार्थ मे अंधा यह जग कल चिढ़ता तो आज चिढ़े
विश्व युद्ध की क्या आशंका कल छिड़ता तो आज छिड़े
साफ-साफ कहना ही होगा अब हमको दरबारों से
शासन नारो से न चलेगा ये चलता तलवारो से
दिल्ली क्या संकेत करेगी उसकी कीली ढीली है
आज हवा मे परिवर्तन है मौसम मे तबदीली है
सुनो रे भैया सुनो
लगाकर कान ध्यान से सुनो
कि मौका लोहू की पहचान का ।
बैरी खड़ा परखने खातिर पानी हिन्दुस्तान का ।।

—बलबीरसिंह 'करुण' ६७ केशवनगर, अलवर (राज०)

धनुर्बाण धारण कर
दनुजता का नाश करो
मनुजता में प्राण भरो
अनयका, अन्याय का
दमन करो,
दानव विहीन करो, वग्ध इस—भूतल को,
स्वर्ग फिर बनाओ तुम, धरती को स्वदेश को,
शंखनाद गूंज उठे
सारी फिर धरती पर
मानवता का, आर्यत्व का
सौम्य—सुरम्य—स्निग्ध
स्रोत बहे वसुधा पर ।।

आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में—

क्रांतिकारी संस्था 'आर्य समाज'

डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी,
प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज, बरेली २४३००३५

आम लोगों की धारणा है कि "आर्य समाज" भी, अन्य सम्प्रदायों के समान एक सम्प्रदाय है। किन्तु सत्य इसके विपरीत है। "आर्य समाज" एक क्रांतिकारी संस्था है, जिसका आधार सार्वभौम वैदिक धर्म है, वैदिक धर्म का प्रसार करना, पाखण्ड खण्डिनी पताका कर्म द्वारा स्थापित करना एवं सद्विचारों को गति प्रदान करना इस संस्था का लक्ष्य है। अन्याय, अत्याचार, हिंसा, अधर्म, कुरीतियों व अन्य कुकर्मों के विरोध में यदि कोई संस्था निर्भयता से क्रांति का बिगुल बजाने की सामर्थ्य रखती है, तो एक मात्र संस्था "आर्य समाज" ही है। "आर्य" शब्द जातिगत नहीं, अपितु श्रेष्ठता का प्रतिपादक है। वस्तुतः श्रेष्ठों के समाज से ही राष्ट्रोत्थान तथा विश्व शान्ति सम्भव है। जो शक्तियां "मानव" को दानव बनाने का प्रशिक्षण दे रही है, वे निश्चित रूप से दानवी शक्तियां है, तथा दानवता विनाश के लिए होती है। श्रेष्ठ समाज के अभाव में ही आतंकवाद ने विश्व में अपने राज्य का विस्तार आरम्भ कर दिया है।

आर्य समाज ने जो कार्य किये हैं वे कार्य विश्व भर की कोई संस्था नहीं कर सकती। हृदय-परिवर्तन का जो कार्य "आर्य जन" कर सकते है, वह अन्य कोई नहीं कर सकता, चाहे वह व्यक्ति किसी धर्म व जाति का हो। अज्ञान, पाखण्ड, अन्धविश्वास व अन्य कुरीतियो के विनाश हेतु, वैदिक-धर्म दर्शन व संस्कृति के प्रसार हेतु सर्वप्रथम मानिक चन्द की वाटिका, बम्बई में महर्षि दयानन्द ने 'आर्य समाज' की स्थापना की थी, तब से निरन्तर यह संस्था सद्विचारों के प्रसार में क्रियाशील है जिसे विश्वभर के विचारकों एवं बुद्धिजीवियों ने महत्व प्रदान किया है।

इस संस्था ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये है। सन् १९२१ की मर्दुमशुमारी मे हजारो मेहतरों को ईसाई लिखे जाने से इसी संस्था ने बचाया था। इसी प्रकार चौदह हजार आगाखानियों को शुद्ध कर हिन्दुओं में मिलाने का महत्वपूर्ण कार्य मुन्शीराम ने ही किया था। यही मुन्शीराम बाद में शुद्धि कार्य के संचालक व स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से जाने गये।

आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जिसने देश को महान् देशभक्त प्रदान किये। पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल, जो आर्य समाजी थे, ने एक ऐसा देशभक्त तैयार किया जो मुसलमान था जिसका नाम अश्फाक उल्ला खां था, तथा जिसकी समाधि आज भी शाहजहाँपुर में स्थित है। जब कि गांधी जी आदि नेताओ ने कोई भी देशभक्त मुसलमान तैयार नहीं किया। आर्यत्व से परिपूर्ण तेजस्वी व्यक्ति ही ऐसे कार्य कर सकता है। जब पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल को फांसी की सजा हुई, तो उनका शिष्य अश्फाक उल्ला खां, जो अफगानिस्तान पहुंच चुका था, शीघ्र भारत लौट आया और स्वयं को पुलिस को समर्पित करते हुए कहा— "मैं अपने गुरु से पहिले फांसी पर चढ़ूंगा।" इस प्रकार हंसते-हंसते अपने प्राणों को मातृ भूमि की रक्षार्थ अर्पित कर दिया।

कांधी (कानपुर) में वेद प्रचार

कानपुर। ग्राम कांधी में सुरेन्द्र मुनि जी (गुरुकुल आश्रम, ब्रह्मावर्त-बिठूर) की प्रेरणा से पं० राधाकृष्ण तिवारी के १२ वर्षीय दौहित्र आर्य कुमार (पुत्र डा० राजनारायण शर्मा बी. ए. एम. एस.) के उपनयन-वेदारम्भ संस्कार के अवसर पर ९ व १०मार्च १९८७ को स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी के प्रवचन संयम-नियम, संस्कार और सृष्टि रचना पर हुये। जलेश्वर जी भजनोपदेशक के ईश्वर स्वरूप व मद्य-निषेध सम्बन्धी भजन हुये। पं० जयराम त्यागी (गुरुकुल बुलबुल, कानपुर) ने गायत्रीमन्त्र की व्याख्या के साथ अन्धविश्वास से बचने की प्रेरणा दी। स्वामी जी ने संस्कार कराते हुए पं० छेदालाल जी द्विवेदी को वैदिक पुरोहित बनने की प्रेरणा दी।

दिल्ली में महात्मा वेद भिक्षुः जयन्ती

नई दिल्ली, १७ मार्च। दयानन्द संस्थान, हिन्दू रक्षा समिति, मासिक पत्रिका "जनज्ञान" आदि अनेक उपक्रमो के माध्यम से देश और धर्म की सेवा के लिए जीवन दान करने वाले महात्मा वेदभिक्षुः जी की उनसठवीं जयन्ती १४ और १५ मार्च को वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, इब्राहीमपुर ग्राम में उत्साहपूर्ण वातावरण मे मनाई गई।

दोनों दिन बृहद् यज्ञ हुआ, प्रभु भक्ति के गीत गाये गये और वेदोपदेश हुआ। १५ मार्च को हवन यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद महात्मा वेदभिक्षुः जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा हुई, जिसमे श्री रामकृष्ण भारती, श्री बनारसी सिंह, प्रो. धर्मवीर, श्री कैलाश सत्यार्थी, श्री अनिल लोढ़ा, श्री सत्यपाल शास्त्री आदि ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किये।

भाग्यवाद व फलित ज्योतिष देश के लिये घातक

—देवीदास आर्य

हरिद्वार :—आर्य समाज तथा स्त्री आर्य समाज ज्वालापुर के वार्षिकोत्सव का समापन करते प्रख्यात महिला उद्धारक तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री देवीदास आर्य (कानपुर) ने कहा कि भाग्यवाद तथा फलित ज्योतिष का अंध विश्वास देश के लिये घातक है। यह रोग साधारण जन से राजनेताओं तक फैल रहा है। आर्य समाज को अब अन्य बुराइयों की तरह इसके विरुद्ध भी आंदोलन चला कर पुरुषार्थ में विश्वास पैदा करना चाहिये। सभा में भारी संख्या में स्त्री पुरुष उपस्थित थे।

गांधी जी का पुत्र "हीरालाल" जब मुसलमान होकर शेख अब्दुल्ला बन गया, तब पण्डित विजय शंकर जी (बम्बई) के सत्प्रयासों से ही शुद्ध होकर पुन. 'हिन्दू' बनाया गया। शुद्धि कार्य के द्वारा आर्य समाज ने असंख्य विधर्मियों को आर्य बना कर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्रों में मिलाया। इस वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म व्यवस्था है। हमें भी सच्चा आर्य बन कर विश्व कल्याण हेतु सद्विचारों द्वारा अधर्म के विनाश हेतु क्रियाशील होना चाहिये, तभी मानव जीवन की सार्थकता है— "दयानन्द के वीर सैनिक बनेगें।

दयानन्द का काम पूरा करेंगे।"

यह स्मरण निरन्तर रहना चाहिये।

आर्य समाज स्थापना दिवस सोल्लास सम्पन्न

प्रांत की आर्य समाजों में विगत दिनांक ३० मार्च १९८७ को आर्य समाज स्थापना दिवस का पुनीत पर्व एक नव उत्साह हर्ष एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ कुछ आर्य समाजो के नाम निम्नांकित हैं–

१–आर्य समाज सुलतान बाजार हैदराबाद
२–आर्य समाज सीसामऊ कानपुर
३–आर्य समाज हांसीपुर (मीरजापुर)
४–आर्य समाज कलवारी (बस्ती)
५–जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा आगरा।

आर्य जगत

आर्यसमाज घोसिया वाराणसी का उत्सव दिनांक ३० मार्च से १ अप्रैल सन् १९८७ तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

निर्वाचन

आर्य समाज गाजीपुर
प्रधान श्री अमरनाथ जी वर्मा
मन्त्री श्री जयकृष्ण जी आर्य
कोषा० श्री हरिनारायण जी आर्य

आर्य समाज श्रद्धानन्द मार्ग, नादेड़
प्रधान श्री पं० ये नेरकर
मन्त्री श्री प्रा० सत्य काम पाठक
कोषा० श्री प्रा० कुशलदेव

आर्य समाज सण्डीला (हरदोई)
प्रधान श्री जगन्नाथ जी
मन्त्री श्री डा० सत्य प्रकाश जी
कोषा० श्री गंगाराम जी

आर्यसमाज सांवली आदि पंचपुरी, गढ़वाल
प्रधान श्री शांति प्रकाश जी प्रेम प्रभाकर स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी
मन्त्री श्री वासुदेव जी विमल
कोषा० श्री बलवन्तसिंह जी रावत

आर्य समाज असालतपुर, मुरादाबाद
प्रधान श्री हरिसिंह जी त्यागी
मन्त्री श्री प्यारे लाल जी रस्तोगी
कोषा० श्री सुधीर कुमार आर्य

मेला प्रचार समिति शिव शंकरी (मिरजापुर)
प्रधान श्री बलिकरन सिंह
मन्त्री श्री बंकू रामसिंह
कोषा० श्री रामनारायन सिंह

महिला आर्य समाज–गणेशगंज, लखनऊ
प्रधाना श्रीमती राजवंशी जो
मंत्राणी श्रीमती कुसुम सूद
कोषाध्यक्षा श्रीमती [illegible] देवी।

आर्य समाज सिकन्दरपुर (बलिया)
प्रधान श्री बलराम प्रसाद
मन्त्री श्री विजय कुमार

आर्य समाज–तिहैया (आगरा)
प्रधान श्री जुगेन्द्र सिंह आर्य
मन्त्री श्री चरनसिंह जी आर्य
कोषा० श्री अतरसिंह जी आर्य

आर्यसमाज टॉडा अफजल, मुरादाबाद
प्रधान श्री ऋषिराम वर्मा
मन्त्री श्री छतरसिंह जी आय
कोषा० श्री आनन्द प्रकाश आर्य

आर्य समाज टेहरा महेशरा (मुरादाबाद)
प्रधान श्री डा० रामकरन सिंह
मन्त्री श्री ईश्वर दयालु गुप्त
कोषा० श्री कैलाश चन्द्र जी

आर्य समाज अल्मोड़ा (उ० प्र०)
प्रधान श्री जगत प्रकाश खुल्बे
मन्त्री डा० जयदत्त उप्रेती आचार्य
कोषा० श्री पूरनसिह

स्त्री आर्य समाज साकेत (मेरठ)
प्रधाना श्रीमती सुशीला सिंह
मंत्राणी श्रीमती सरोज आर्या
कोषाध्यक्षा श्रीमती कमला शर्मा

आर्यसमाज तिलहर (शाहजहांपुर)
प्रधान श्री वृजनन्दनप्रसाद जी आर्य
मन्त्री श्री लोकेश कुमार जी आर्य
कोषा० श्री सुरेशचन्द्र जो आर्य

निम्नलिखित आर्यों के दिवंगत होने के समाचार प्राप्त हुए हैं जिनके लिये यह सभा समवेदना व्यक्त करती है—

१–आर्य समाज नादेड़, महाराष्ट्र के उपमन्त्री श्री बाबू राव जी हनुमन्त राव, बाघ मारे जी।

२–आर्य समाज झबरेड़ा (सहारनपुर) के युवा सदस्य श्री महावीर सिंह पुत्र श्री चौहलसिंह।

३–आर्य समाज झबरेड़ा के पुराने कार्यकर्ता श्री जय भगवान की पूज्यनीय माता जी का।

४–आर्य समाज रीवा के श्री बलवन्त सिंह जी आर्य।

५–आर्य समाज बांदा के श्री शिवरतन जी आर्य।

६–आर्य समाज मुहद्दीपुर गोरखपुरके भू० पू० उपप्रधान श्री शंकरप्रसाद जी।

प्रभु दिवंगत को शांति तथा प्रिय जनों को धैर्य प्रदान करें।

सभा मन्त्री

आर्य समाज महराजपुर छतरपुर (म० प्र०) के प्रधान श्री भागीरथ जी चौरसिया की हत्या–

महाराजपुर। आर्य समाज के प्रधान श्री भागीरथ जी चौरसिया दिनांक ३१-३-८७ को जब वह प्रातः छतरपुर में अपने निवास से घूमने के लिये गये थे, उस समय असामाजिक तत्वों द्वारा उनकी निर्मम हत्या दिन दहाड़े कर दी गई। श्री भागीरथ जी छतरपुर जिले के माने हुए व्यवसायी एवं समाज सेवी तथा आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। महाराजपुर में उनके द्वारा अनेक संस्थाओं का निर्माण किया गया। छतरपुर नगर में आर्य समाज की स्थापना का श्रेय श्री भागीरथ जी को ही है, उनके असामायिक निधनसे आर्यसमाज व नगर की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना संभव नहीं है, उनके इस निधन पर आर्य समाज महाराजपुर शोक संवेदना व्यक्त करती है और परमपिता परमात्मा से उनकी दिवंगत आत्मा की शांति एवं परिवार को इस गहन दुःख सहने लिए केईश्वर क्षमता प्रदान करे इस हेतु प्रार्थना करती है।

स्व० श्री भूपेन्द्र पाण्डे की अन्तिम यात्रा

पिथौरागढ़। आर्य समाज मन्दिर मे १६ मार्च, १९८७ को पं० भूपेन्द्र पाण्डे अवर अभियन्ता [बहनोई–पं० जनार्दन पाण्डे] की दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा परिजनों के धैर्य हेतु स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने परमात्मा से प्रार्थना की। स्व० भूपेन्द्र पाण्डे ८ मार्च को हल्द्वानी में दुर्घटना–ग्रस्त हो गए और उसी दिन अपने पीछे धर्मपत्नी, दो पुत्रियां और दो पुत्र छोड़कर जीवन की अन्तिम-यात्रा पर चले गए।

वैदिक विवाह सम्पन्न

आर्य समाज सिकन्दरपुर (बलिया) के मन्त्री श्री विजय कुमार के सुपुत्री कुमारी अर्चना बरनवाल का शुभ पाणिग्रहण संस्कार श्री मनोज कुमार बरनवाल बी०ए० स्थान पो० सिगारपुर जनपद गाजीपुर के साथ पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। पुरोहित का कार्य बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के शास्त्रार्थ महारथी पं० गंगाधर शास्त्री जी द्वारा १७-२-८७ को सम्पन्न हुआ।

सुविख्यात संस्कृत विद्वान पण्डित चारुदेव शास्त्री दिवंगत

आधुनिक पाणिनि के नाम से जाने माने विद्वान पण्डित चारुदेव जी शास्त्री का हृदय गति रुकने से देहावसान हो गया। इस समय उनकी आयु ९० वर्ष की थी। उनका पार्थिव शरीर रूपनगर स्थित उनके सुपुत्र के आवास पर दर्शनों हेतु रखा गया था। कल निगम बोध घाट पर उनका अन्तिम संस्कार सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने शोक सभा में दिवंगत आत्मा के प्रति गहरा शोक प्रकट करते हुए कहा कि आर्यजगत के इस महा विद्वान् के प्रयाण से महती क्षति हुई है।

श्री स्वामी जी ने कहा श्री चारुदेव जी शास्त्री ने संस्कृत व्याकरण आदि के कई ग्रन्थ लिखे हैं। उनकी विद्वत्तापूर्ण लेखन शैली को साहित्यिक क्षेत्र में बड़ा सम्मान मिला है। १९७४ मे उनका सार्वजनिक अभिनन्दन भी किया गया था। संस्कृत के विद्वानों में वह सदैव प्रशंसा व सम्मान के योग्य रहे है। उनकी महान प्रतिभा व व्यक्तित्व के आधार पर बनारस विश्वविद्यालय ने डी०लिट् की उपाधि से उन्हें सम्मानित किया था। पजाब सरकार ने भी उन्हें संस्कृत शिरोमणि साहित्यकार घोषित किया था। वह अनेक भाषाओ के ज्ञाता भी थे। लाहौर और अम्बाला मे डी० ए० वी० कालेज मे अध्यापन का कार्य भी करते थे। आर्य समाज के साथ उनका गहरा सम्बन्ध था। उनके निधन से संस्कृत का एक महान विद्वान हमने खो दिया है।

शोक सभा मे दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई और शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गई।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक सभा

दक्षिण भारत में व्यापक शुद्धि समारोह

दक्षिण भारत मे सार्वदेशिक सभा के प्रमुख कार्यकर्ता और प्रचारक श्री एम० नारायणस्वामी ने दिनांक २७ मार्च १९८७ को बड़े समारोह के साथ ग्राम नार्थम पट्टी, मुथु रामलिंगापुरम पंचायत (तमिलनाडु के ईसाई ग्राम) के अन्तर्गत ४६ परिवारों के २५० सदस्यों को वैदिक धर्म में दीक्षित किया। शुद्धि के बाद उनको जनेऊ दी गई। इस कार्यक्रम में पंचायत के प्रधान श्री जगरक्षक ने बड़ी सहायता की आर्यसमाज मदुराई के तीन सदस्यो ने भी बहुत बड़ा सहयोग दिया।

इसके अतिरिक्त २९ मार्च ८७ को कुडुकराई ग्राम (कन्याकुमारी जिले) में ७ ईसाई परिवारों के १६ सदस्यों को वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। यहां स्थानीय आर्यसमाजों के कार्यकर्ताओं ने बड़ा सहयोग दिया। इस ग्राम में गत माह भी ५ ईसाई परिवार शुद्ध किये गए थे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक सभा

आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज चन्दैना (सहारनपुर) का वार्षिकोत्सव दिनांक १२ जून से १४ जून १९८७ तक हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न होगा।

पुस्तक-परिचय

तपोभूमि [मासिक] मथुरा का नवंबर १९८६ का अँक

तपोभूमि मथुरा मासिक पत्रिका का प्रकाशन विगत ३३ वर्षों से हो रहा है। इस पत्रिका ने आर्य जगत को सदैव सरल सुन्दर सरल और सुबोध पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई है और अनेक उपयोगी तथा महत्वपूर्ण विशेषांकों का प्रकाशन कर, सत्य विद्या अर्थात् वेद के प्रसार में अनुपमेय सहयोग प्रदान किया है।

नवम्बर ८६ का अङ्क पाखण्ड खण्डन की शृंखला की एक नवीन कड़ी है। इस अङ्क में आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य प्रेमभिक्षु जी द्वारा पं० श्रीराम शर्मा आचार्य गायत्री तपोभूमि के नाम खुले पत्र को प्रकाशित किया गया है। श्रीराम शर्मा जो गायत्री मन्त्र (यजु० ३६-३) की प्रतिमा बनाकर गायत्री यज्ञ मे उसका पूजन करवाते है, अब अपने पूर्व जन्मो की चर्चा करते हुए अपने भीतर सन्त कबीर, समर्थ गुरु रामदास तथा परमहंस रामकृष्ण की ही आत्मा का ही वास बतलाते हैं और अपने गुरुदेव के रूप में किसी सूक्ष्म देहधारी के दर्शन आदि का वर्णन करते है। उनके द्वारा प्रचारित अन्य अनेक मिथ्या धारणाओ का इस खुले पत्र में अनावरण किया गया है और सशक्त तर्कों द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि ये समस्त पाखण्ड तथा आडम्बर लोकेषणा तथा वित्तेषणा की सिद्धि के लिए किये जा रहे हैं।

इस वैज्ञानिक युग में जब शिक्षित वर्ग भी अन्धविश्वासो का शिकार होकर ढोंगियों और पाखण्डियो का शिष्यत्व ग्रहण कर अज्ञान के तिमिर में भटक कर ठोकरें खाता है तो अशिक्षित वर्ग की क्या दुरावस्था हो सकती है, इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। सत्य प्रकाशन मथुरा को इस अङ्क मे वर्णित सत्य को पुस्तकाकार कर उसे अधिकाधिक संख्या में प्रकाशित कर वितरित करना चाहिये ताकि गुरुडम के शिकार होने से भोलो जनता की रक्षा की जा सके।

आर्य जनों को चाहिये कि वे सत्य प्रकाशन मथुरा की पत्रिका तपोभूमि के इस अङ्क को स्वयं पढ़ें तथा अन्यों को पढ़ावें और इसे पुस्तकाकार करने के लिए अपना पूर्ण सहयोग दें।

—वसन्त

'गुरुडम—एक अभिशाप'

इस विषय पर 'आर्यमित्र' दिनांक ३-५-८७ के सम्पादकीय की प्रतीक्षा करें।

सस्वर वेद पाठ प्रशिक्षण शिविर

इस वर्ष १५ मई से जून मास के अन्त तक १५, १५ दिनो के लिये तीन प्रशिक्षण शिविर इन्दौर मे आयोजित किये जावेंगे, जो इस निमित्त प्रशिक्षणार्थ आना चाहें और यज्ञ चिकित्सा विज्ञान सीखना चाहे वे शीघ्र ही—वेद सदन महारानी रोड इन्दौर ४५२००७ से सम्पर्क करें।

वीरसेन वेदश्रमी
अध्यक्ष—वेद सदन—महारानी पथ, इन्दौर

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45933 ४५६६६
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
वैसाख कृष्ण १३
रविवार २६ अप्रैल १६८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आर्य वीर दल शिविर का आयोजन

आर्य वीर दल दिल्ली की ओर से एक शिविर का २२ से ३१ मई १६८७ तक का आयोजन किया गया है।

इसमे १६ से ३५ वर्ष के युवक भाग ले सकेंगे। अत सभी आर्य समाजो / आय स्त्री समाजो / आय सस्थाओ के माननीय प्रधानो / मन्त्रियो से निवेदन है कि अपनी समाज / सस्था की ओर से कम से कम दो युवको के नाम तथा १० रुपये प्रवेश शुल्क भेजकर नाम अंकित करावें।

डा० धमपाल — श्यामसुन्दर बिरमानी
महा मन्त्री — महा [illegible]
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा — आय वीर [illegible] दिल्ली
१५ हनुमान रोड नई दिल्ली—११०००१

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करे

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क माह १५ अप्रैल १६८७ मे समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहको की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २५) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पडेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १६८५ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

४०५, १२५९, २८१८, ३६५१, ३६६३, ४०००, ४४०४, ४८७६, ५५५६, ६११८ ६४०५, ६६५३, ७०४७, ८०२१, ८२४८, ८३४६, ८५४२, ८७७०, ८७८१, ८७८४, ८६३६, ६४३७, ६४४०, ६६४८, ६८६१, १००४२, १०१३६ १११६१, १११६२, १११८६, १११८७, १११६३, ११८६६, ११६००, १२१५५, १२१५७, १२८७०, १२८७४, १२८७५, १३०७०, १३०७५, १३०७६, १३०७८, १३०८५, १३०८७ १३१०८, १३४४१, १३४४२, १३४५४, १३४५७, १३४५६, १३७५०, १३७५१, १३७५२, १३७५७, १३७५६, १३७६०, १३७६१, १३७६२, १३७६३, १३७६४, १३७६५ १३७६६, १३७६७, १३७६८, १३७६६, १३७७०, १३७७१, १३७७२, १३७७३, १३७७४, १३७७५, १३७७६, १३७७७, १३७७८, १३७७६, १३७८० १३७८१, १३७८२, १३७८३, १३७८५, १३७८६, १३७८७ १३७८८, १११६६, १२८६७।

विनीत—
व्यवस्थापक

श्री "राम" जन्मोत्सव पर्व

निम्नलिखित आय समाजो मे, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र जी का जन्मोत्सव पव दिनाक ७ अप्रैल १६८७ को हष एव उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

१—आर्य समाज इटारसी।
२—आर्य समाज कृष्णानगर, मथुरा।
३—आर्य समाज अजमेर।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए अपवालनीय आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ | घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८५

वैसाख शुक्ल ५, रविवार, संवत् २०४४ वि० दिनांक ३ मई १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल–

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

★

आचार्य रमेशचन्द्र एम. ए.

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	९०
अङ्क	१७

पिछड़े वर्गों की रैली वर्ग भेद बढ़ाने का काम करेगी

वर्ग भेद बढ़ाने वाले आंदोलनों के विरुद्ध प्रबल आवाज उठाने की आवश्यकता

पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति, जनजाति और अल्पसंख्यक राष्ट्रीय संघ की ओर से २७–४–८७ को लखनऊ में आयोजित रैली इन वर्गों की आर्थिक और सामाजिक समता की मांग पर ४० प्रतिशत आरक्षण की मांग वर्ग भेद बढ़ाने का काम करेगी।

जनवादी पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्रजीत यादव का कहना है कि प्रदेश के पिछड़े वर्गों का आरक्षण १५ प्रतिशत से बढ़ाकर ४० प्रतिशत कराना, मण्डल आयोग की सिफारिशों को लागू करवाना, अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षण देना तथा डा० अम्बेदकर के नाम पर केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना करवाना उनकी इस रैली के आयोजन का मुख्य मुद्दा है।

देखने में यह भले ही पिछड़े वर्ग को सुख दिलाने का लुभावना ड्रामा है परन्तु वास्तव में इससे जन-जन मे वर्ग भेद की भावना ही प्रबल होगी। भाई चारे का धागा कमजोर होगा। सवर्ण अवर्ण में भेद पैदा करवाकर झगड़े करके अपनी नेतागिरी चमकाने की यह कुत्सित चाल है।

भारत की समृद्धि के लिए आवश्यकता है कि ऐसा आन्दोलन छेड़ा जाये जिसमें मानव-मानव का हित सन्निहित हो जिसमे राष्ट्रीयता की विचारधाराएं बलवती हो सकें। जिसके द्वारा ऊंच-नीच का भेद नष्ट हो जाये। सभी भारतीय एक दूसरे के पूरक हों। एक दूसरे के सुख दुःख को अपना सुखदुःख मानकर सहभागी हो और भारत की आजादी की अक्षुण्णता के लिए सर्वस्व अर्पण की स्वतः वृत्ति जागृत हो।

प्रेस कौंसिल का निर्णय

'सरिता' एवं 'कारवां' को प्रकाशित लेखों के प्रतिवादक लेख प्रकाशित करने होंगे

सरिता एवं कारवां पत्रिकाओ में प्रायः वेद एवं हिन्दू दर्शन, देवी देवताओं के सन्दर्भ में अनर्गल लेख प्रकाशित होते रहने पर आर्य समाज शृंगारनगर लखनऊ के सभासद श्री बलदेव राज नन्दा ने कई उनके प्रतिवादक लेख व पत्र भेजे परन्तु उन पत्रों में न उन्हें प्रकाशित किया गया ना ही उन्हें कोई उत्तर दिया गया। फलतः उन्होने प्रेस कौंसिल आफ इण्डिया फरीद कोट हाउस नई दिल्ली को एक याचिका प्रस्तुत की।

कौंसिल की २४–२५ मार्च ८७ को जयपुर में हुई बैठक में उस याचिका पर निर्णय दिया गया कि जो भी लेख उक्त पत्रिकाएं प्रकाशित करती हैं यदि उनका प्रतिवादात्मक लेख व पत्र आते हैं तो उन्हें भी प्रकाशित करना होगा।

श्री नन्दा को पत्र संख्या १४/१७६/८५, दिनांक ३१-३-८७ द्वारा इस निर्णय की सूचना दी गयी।

श्रीयुत राजर्षि रणञ्जयसिंह जी स्वस्थ

मेडिकल कालेज से लखनऊ निवास पर पहुंचे

समस्त आर्य बन्धुओं को यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता होगी कि हमारे वयोवृद्ध वरिष्ठ आर्य नेता तथा सभा के भू०पू० प्रधान अमेठी नरेश श्रीयुत राजर्षि रणञ्जयसिंह जी, पूर्णरूपेण स्वस्थ हो गये हैं तथा अपने आवास पर वापस आ गये हैं और स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

ज्ञातव्य हो कि श्रीयुत राजा साहब दिनांक १६–४–८७ को अचानक हृदय का दौरा पड़ जाने के कारण अस्वस्थ हो गये थे, तथा लगभग एक सप्ताह से स्थानीय मेडिकल कालेज के हृदय रोग विभाग में, आवश्यक उपचार पर थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की गत अन्तरंग सभा दिनांक १९–४–८७ में, सभा के समस्त अधिकारियों तथा अन्तरंग सदस्यों ने, श्रद्धेय राजा साहब के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हेतु प्रभु से प्रार्थना की थी।

'आर्य मित्र' श्रीयुत राजा साहब के दीर्घ जीवन की कामना करता है। —आ० देवव्रत अवस्थी

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ।।

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार ३ मई १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

आरक्षण वरदान नहीं अभिशाप है

परमात्मा के इस विश्व में मनुष्य, मनुष्य, के साथ प्रीति व स्नेह का बर्ताव करते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए सृष्टि को समृद्ध व सुखदायी बनाने के लिए उत्पन्न हुआ है । परन्तु—अज्ञानता के कारण वह कर्तव्य विमुख होकर एक दूसरे के प्रति शत्रु का सा व्यवहारी बनने लगा । परिणाम चारों ओर ही अशान्ति का साम्राज्य छाने लगा ।

हमारे देश में सवर्ण असवर्ण का भेद ऐसा छा गया था कि एक वर्ग दूसरे वर्ग को बिल्कुल ही प्रताड़ित करने लगा था । महर्षि स्वामी दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ उन्होने मानवता के प्रति इस अमानवीय व्यवहार को देखकर उसके प्रति प्रबल आवाज उठायी पद दलितों तथा कथित अछूतों को गले लगाने का सन्देश दिया । बिना किसी भेद के मानव मात्र को वेद अर्थात् सम्पूर्ण—विद्या पढ़ने, ज्ञान बढ़ाने, सबके साथ समान व्यवहार करके प्रीति पूर्वक रहने का नारा दिया था । बाद में राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने इस आन्दोलन को और बल दिया । स्वाधीनता के प्रबल आन्दोलन के समय यह भेद प्रायः समाप्त प्राय था । स्वाधीनता के बाद—हमारी राष्ट्रीय सरकार ने इस समानता को संवैधानिक रूप भी दे दिया । दीर्घकाल से पद ,दलित लोगों को स्वतन्त्र देश में सुख शान्ति से जीवन यापन की भावना से विभिन्न स्थानों पर अस्थायी आरक्षण की व्यवस्था करा दी । परन्तु यह आरक्षण की व्यवस्था मानसिक दुर्बलता के कारण अपना—सही कार्य न कर सकी । इसे राजनीतिज्ञों ने ऐसा राजनीतिक जामा पहनाना आरम्भ किया कि अब "आरक्षण भीख नहीं हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" ऐसे नारे देकर कमजोर दिलों को उभार कर अपना उल्लू सीधा करने का प्रपंच खूब जोर शोर से रचा जाने लगा है ।

हमारे देश के पूर्व नेताओं की सुभावना के प्रतिफल स्वरूप उन दलितों व असवर्णों को ऐसे अवसर मिले कि बाबा भीम राव अम्बेदकर जैसे राष्ट्रीय महापुरुष प्रकट हुए जिन्हें इस युग का मनु कहा गया—उन्होने हमारे देश के सम्विधान का निर्माण किया ।

परन्तु उनके नाम का सहारा लेकर चलने वाले—कुटिल राजनीतिज्ञ उनकी जैसी प्रतिभा संजोने के बजाय उन्हें एक खेमे का नेता प्रचारित करने लगे हैं । उन्हें राष्ट्रीय नेता के पद से हटाकर एक वर्ग विशेष का नेता मानने का कुचक्र रचना आरम्भ कर दिया है ।

आज आरक्षण के नाम पर ये राजनीतिज्ञ खुलकर वर्ग भेद फैला रहे हैं । सवर्ण असवर्ण का नारा जोरों से प्रचारित करके अनुसूचित पददलित, जन-जाति—अल्पसंख्यक नाम से कुछ लोगों के दिलों की कमजोर नसों को उभार कर एक दूसरे के प्रति नफरत पैदा करके अपने को उनका एक मात्र शुभ चिन्तक बताने का कुचक्र चला रहे हैं । यह प्रवृत्ति देश के लिए विघाती है । इस प्रवृत्ति से किसी का भी भला होने का नहीं ।

वास्तविकता तो यह है कि ऐसी प्रवृत्ति पनपाने वाले राजनीतिज्ञ जिनके वे रहनुमा बनने का ढोंग रचते हैं उन्हीं में भेद बढ़ा रहे हैं । उनमें दलित, बहुत दलित प्रताड़ित होता जा रहा है । उनका समृद्ध चालाक वर्ग आरक्षण की सीढ़ी के सहारे समृद्ध और समृद्ध होता जा रहा है । यह दिशा—देश के लिये अत्यधिक हानिकर है ।

आज आवश्यकता इस बात की है कि देश का प्रबुद्ध, चिन्तन शील वर्ग—सही चिन्तना को आन्दोलन का रूप दे और ऐसे विघाती तत्वों से जन—मानस को सावधान करे ।

शासन को चाहिये कि देश मे बढ़ती—अस्थिरता—अशान्ति को सही दृष्टि से देखें व उसके समाधान का सही रूप दें । शान्ति और अमन का समाधान एक मात्र महर्षि दयानन्द द्वारा प्रशस्त मार्ग ही है—कि सबकी पढ़ाई की व्यवस्था एक जैसी हो । सबको समान रूप से विद्यालयो में पढ़ने का अधिकार रहे । गरीब-अमीर की रेखा से ऊपर विद्यालयों की संचालन व्यवस्था हो ताकि सभी वर्ग सभी विद्यालयों में समान रूप से प्रविष्ट हो सकें ।

योग्यता के अनुरूप सभी को नौकरियां दी जायें । छोटे बड़े अमीर गरीब छूत अछूत की वृत्ति पनपाने वालों को शासन निरुत्साहित करे जनता उन्हें मान्यता—न दें ।

आज रैलियां करके आरक्षण को स्थायी, ४० प्रतिशत करने की प्रबल मांगें की जा रही हैं इन्हें उभरने से पहले ही चाहिए कि शासन समाप्त कर दें । तात्कालिक प्रभाव से आरक्षण को समाप्त करके हर स्थान पर सबको प्रवेश का, नौकरी का, पद पाने का, शिक्षित होने का अधिकार प्रदान करें । राजनीतिक और सामाजिक संस्थायें—स्वार्थ को छोड़कर राष्ट्र और मानवता की रक्षा के संकल्प के साथ ऐसी विषमताकारी वृत्तियों को—समाप्त करने के कदम उठायें ।

समानो मन्त्र समितिः समानी समानं मनः सह चित्त मेषाम् ।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेनवो हविषा जुहोमि ।।

के वैदिक आदेश के अनुसार मानव-मानव में वर्ग विश्लेषण के स्थान पर चिन्तन, मनन, में एकरूपता एक दूसरें के प्रति सहृदयता प्रीति व स्नेह का अभ्युदय करने का प्रयत्न करें । और देश में फैलती विषमता को दूर करके राष्ट्र को समुन्नत करने का व्रत लें । निश्चय ही यह हमारे प्रयत्न हम सबको हमारे राष्ट्र को सुखी समृद्ध व आनन्दित करेंगे ।

मन मोहन तिवारी

श्री केसरवानी जी नहीं रहे

भूतपूर्व अध्यक्ष जिला आर्य—उपप्रतिनिधि सभा जनपद लखनऊ एवं कर्मठ समाज सेवी, गोरक्षण सभा, श्रीमद् दयानन्द बाल सदन मे यज्ञ के प्रथम शिलान्यास कर्ता तथा वेद प्रचारिणी सभा अमीनाबादके संस्थापक वयोवृद्ध नेता श्री जे० पी० केसरवानी का ८३ वर्ष की आयु पर दि० १३–४–८७ को निधन हो गया, १६–४–८७ को शांति यज्ञ एवं शोक सभा सम्पन्न हुयी ।

"आर्यमित्र" परिवार इस घटना से अत्यधिक दुःखी है । प्रभु उन्हें सद्गति व उनके परिवार को धैर्य दें ।

सम्पादक

वेद-विवेचन

प्रभु की अमृत वाणी—
तपस्वियों के तप की ज्वाला दुरिताओं को भस्म करती है

विश्व के आर्यकरण के लिए सूर्य के समन तपस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी यशस्वी बनें

यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे ।
देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः संस्पृशस्पाहि ।
अर्चिरसि शोचिरसि तपसोऽसि ॥ (यजु० ३७–११)

मानव जीवन की तीन स्थितियां होती हैं यथा आत्म विस्मृति, आत्म जागृति और आत्मावस्थिति । जब तक आत्म विस्मृति की स्थिति रहती है,मनुष्य संशय ग्रस्त होकर, इधर-उधर भटकता है, अशान्त और दुःखी होता रहता है पर जो आत्मना अपने को जागरूक कर लेता है, वह अपने अनमोल जीवन का यथार्थ मूल्यांकन करने में समर्थ होता है । वेद माता मानव को अन्तर्बोधत्व प्राप्त कराते हुए कहती है–(अर्चिः असि, शोचिः असि, तपः असि) तू ज्वाला है, तू पावक है और तू तप है । जो तपस्वी बनने की आकांक्षा रखते हैं, उन्हें अपने आत्म स्वरूप को जानना आवश्यक हो जाता है । जिस मानव जीवन में न उमंग हो, न उत्साह हो और न ही साहस हो, वह तो मृत तुल्य होता है । जीवन वही जिसमें इनकी सतत ज्वाला जलती हो । जहां ज्ञान की जितनी प्रचण्ड ज्वाला जलती है, वहाँ उतनी ही निष्पापता होती है । यह निष्पापता ही शुद्धता का मूल है । जो स्वयं शुद्ध होता है, वही अन्यों का पावक बनता है । शुद्ध और पवित्र जीवन को ज्ञान की ज्वाला अग्नि में कुन्दन सम चमका देती है तपस्या में ही वह सामर्थ्य है जो जीवन को सुधन्य करता है ।

तपस्वी आस्तिक होते हैं । उनका आराध्य परम देव होता है जिसे वे ज्ञानपूर्वक जानते हैं, उसके सत्य स्वरूप को जानकर आत्मना उसे मानते हैं और उसके द्वारा प्रदत्त भीतरी प्रेरणाओं से जीवन को सफल बनाते हैं । वह दिव्य पावन परम देव कैसा है तो मन्त्र बतलाता है–

(सविता देवः त्वा मधु अनक्तु) प्रकाश स्वरूप परम देव तुझे माधुर्य से युक्त करता है, सींचता है मधुरताएं प्रदान करता है । मधुरताओं की प्राप्ति के लिये जीवन से विषमताओं, दुरिताओं, विषयों, विकारों वासनाओं, पापों और भोगों को दूर करने के लिये तपस्वी उस सर्व शक्तिमान तथा सर्व नियन्ता से प्रार्थना करता है–(पृथिव्या सम्+ स्पृस पाहि) पृथिवी के संस्पर्श अर्थात् भोगमय जीवन पद्धति से मेरी रक्षा कर मेरी आत्मा में ऐसी ज्ञान ज्योति दे कि मैं अपनी आत्म जागृति की स्थिति को पहुंचकर अपना रक्षण कर सकूं ।

आत्मना जागरूक करने के लिये, जीवन जीवन को मधुरताओं से ओतप्रोत करने केलिये तथा आत्म रक्षण के लिए देव सविता कहता है कि हे मेरे अमृत पुत्र और पुत्री! (त्वा यमाय त्वा मखाय, त्वा सूर्यस्य तपसे) मैंने तुझे संसार में सर्वश्रेष्ठ प्राणी किसलिये बनाया है तो सुन यम के लिये, पांचों यमों और नियमों का पालन करते हुए संयमित जीवन के लिये ताकि तू महानताओं से युक्त होकर शान्ति प्राप्त कर सके, यज्ञ–श्रेष्ठतम कर्म के लिये और सूर्य के समान तप करने के लिये ।

शुभ जीवन वहीं है, जिसमें श्रेष्ठता है श्रेष्ठता वही है जहां दिव्यता है और दिव्यता वहीं है, जहां तप है । जगत को सतत प्रकाशवान् करने वाला तेजस्वी और तपस्वी एकमेव सूर्य है और 'सूर्य एकाकी चरति' के अनुसार वह अकेला चलता है । संदिव्य साधों की साधना करने वाले भी सूर्य के समान तपस्वी बन कर, संसार के मानवों का आर्यकरण करने के लिये उन्हें सतत ज्ञान प्रकाश से आलोकित करने के लिये अकेले चलते हैं और अपनी श्रेष्ठ आत्म शक्ति से युग का प्रवर्तन करते हैं ।

हम आर्य तपस्वी बनकर ही,इस जग को स्वर्ग बनाएंगे ।
चमकेंगे सूर्य समान हम, अज्ञान अन्धेरा मिटायेंगे ॥
शुद्ध बुद्ध बनाएंगे जीवन, दुरिताएं दूर हटायेंगे ।
हम ज्ञान की पावन ज्वाला में, कटुताएं सारी जलायेंगे ॥
होते हैं आर्य श्रेष्ठ कितने, करनी से यह बतलायेंगे ।
होगा 'बसन्त' कृपालु प्रभु, हम अमृत पुत्र कहलायेंगे ॥

—'बसन्त'

गुरुकुल दूल-भूल (कानपुर) में सामूहिक वानप्रस्थ संस्कार

कानपुर–गुरुकुल दूल-भूल में रामनवमी २०४४ विक्रमी को आचार्य जयराम त्यागी के संयोजन में सर्वश्री बाबूराम मिश्र (राममुनि),श्रीमती बिटान (विमला मति), ब्रह्मसिंह [ब्रह्ममुनि], जलेश्वरसिंह भजनोपदेशक [जलेश्वर मुनि], हनुमान [हनुमान मुनि], कृष्णकुमार [कृष्ण मुनि] एवं रामकुमार रस्तोगी–आर्यसमाज लालगंज जनपद रायबरेली [कुमार मुनि] को स्वामी गुरुकुलानन्द पयाहारी द्वारा वानप्रस्थ की दीक्षा दी गई । उक्त अवसर पर ८८ वर्षीय वैद्य चन्द्रशेखर शुक्ल ने संन्यास की दीक्षा लेकर 'चन्द्रानन्द सरस्वती' नाम ग्रहण किया । श्रीमती रानी देवी [धर्मपत्नी–प्रतापनारायण तिवारी] और श्रीमती मुनिया देवी [पुत्री–ओंकार द्विवेदी] ने गृहस्थाश्रम की शिक्षा-दीक्षा ली ।

स्व० मनुदेव वानप्रस्थी शांति यज्ञ

पिथौरागढ़–आर्य समाज मन्दिर में १४ अप्रैल १९८७ को डा० नन्दलाल गांधी (सदस्य आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर) के पिता वैद्य मनुदेव वानप्रस्थी की दिवंगत आत्मा हेतु शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ । स्वामी गुरुकुलानन्द पयाहारी ने १०१ वर्षीय मनुदेव जी की दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा परिजनों के वैदिक धर्म मार्ग पर चलते रहने हेतु परमात्मा से प्रार्थना की ।

–आर्यसमाज मन्दिर चोपन मीरजापुर का तीन दिवसीय पच्चीसवां वार्षिकोत्सव २७–३–८७ से २९–३–८७ तक बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ मनाया गया । जिसमें आर्यजगत के विद्वान् श्री स्वामी मोक्षानन्द जी तथा डाक्टर आचार्य पुष्पावती एवं भजनोपदेशकों ने भाग लिया ।

आर्य समाज नाम अपरिवर्तनीय है

—आचार्य देवव्रत अवस्थी, वेद मन्दिर हिन्द नगर लखनऊ—

डा० रामेश्वर दयालु जी गुप्त, रामेश्वर कुन्ज, आर्यनगर ज्वालापुर (हरिद्वार) द्वारा प्रेषित आर्यों का अंतर्नाद पत्रिका दिसम्बर ८६ की प्रति प्राप्त हुई थी सम्पूर्ण पत्रिका पढ़ने के बाद कहीं हर्ष हुआ तो कहीं आत्मिक क्लेश भी हुआ।

आर्य समाज का नाम महर्षि दयानन्द ने किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं मानव समाज में उत्तम गुण कर्म स्वभाव वालों के समूह का नाम आर्य समाज रखा है जहां उनकी भावना संकीर्ण न होकर इतनी विस्तृत है कि उसकी गरिमा पर जितना ही दृष्टि निक्षेप किया जाय व आत्म शोधन किया जाये उतनी ही इसकी महत्ता बढ़ती सी लगती है। इनके उक्त लेख का उत्तर जो मैंने भेजा है सर्व साधारण की जानकारी हेतु मित्र मे प्रकाशित कर रहा हूं। (--देवव्रत अवस्थी)

उनकी अन्य बातों पर क्रमशः अपने मनोभाव प्रकट करूं उससे पूर्व उन्होंने अपने पत्र में सार्वदेशिक सभा के प्रधान एवं उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान के सन्दर्भ मे जो भी लिखा है यद्यपि पत्रिका में वह सब विषयान्तर है फिर भी लिखा है इसलिए तदर्थ में भी कुछ उत्तर निवेदित कर रहा हूं।

१—यह पढ़कर अत्यधिक हर्ष हुआ कि आप एक आर्य परिवार में ही जन्में आपके अनुसंधान के विषय भी ऋषि दयानन्द व आर्य समाज से सम्बद्ध ही रहे आप कई स्थानों पर आर्य समाज के मन्त्री व प्रधान भी रहे।

इतने सबके बाद भी आपके विचारों में ऋषि की मान्यताओं व आर्य समाज की आवश्यकता पर सन्देह जन्मा इसका अत्यधिक खेद है। मुझे सब कुछ पढ़कर ऐसा लगा कि आपने सब कुछ पढ़कर न पढ़ा सा कर दिया है। उसे हृदयंगम करना शायद आपका ध्येय ही नहीं बना, मात्र आलोचना ही लक्ष्य रहा या फिर कहीं आपके मन में कुछ ऐसी लोकेषणा जागृत हुई कि यदि ऋषि के विचारों में कुछ विपरीतिता भ्रांति के दृष्टि कोण को दर्शाते हुए प्रकट की जाये तो जन-मानस में प्रसिद्धि अत्यधिक आसान हो जाएगी, यह तो आप ही जाने ?

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती के बारे में जहां तक मेरी जानकारी है, उन्होंने अपने कार्यक्रमों को आर्य समाज की समृद्धि का लक्ष्य करके ही बनाया है। राजनीतिक विचार धारा में भी उनका लक्ष्य आर्य समाज का उत्कर्ष ही रहता है। संगठन के लिए वे व्यग्र रहते हैं। सामयिक परिस्थितियों में यदि कहीं कुछ खीझ सी भी होती है तो मूल में आर्य समाज के संगठन में शिथिलता का सन्देश होने पर ही होती है। वे सर्वात्मना ऋषि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

आपने लिखा है कि आपने आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री इन्द्रराज जी को अपनी पत्रिका इसलिए नहीं भेजी कि वे पेशेवर पुरोहित हैं—यह पढ़कर भी क्लेश ही हुआ। आपने किसी कारण पूर्वाग्रह में ऐसा लिखा, लगता है। जहां तक मेरी जानकारी है पं० इन्द्रराज जी एक निस्पृह समाज सेवी विनम्र विद्वान कर्मठ कार्यकर्ता हैं। उनका पौरोहित्य पेशा नहीं धर्म है। पौरोहित्य आजीविका नहीं ऋषि दयानन्द के सिद्धांतों के घर-घर में प्रचार का एक सीधा साधन है। शायद आपको पता नहीं वे पौरोहित्यमें प्राप्त दक्षिणा आर्य समाज के लिए ही समर्पित भाव से व्यय करते हैं। यदि आप उन्हें भेजते तो वे निश्चय ही अपने सद् विचारों से आपको सूचित करते। आग्रह दुराग्रह कुछ भी न करते।

अब मैं आपके अन्य विचारों पर क्रमशः अपने भाव व्यक्त कर रहा हूं। आपने लिखा है कि आर्यसमाज के कार्य अब पूर्ण हो गए, इसलिए इसका नाम बदल दिया जाये।

आर्य समाज के सभी कार्य अभी होने शेष हैं। उनका प्रकाश अवश्य फैला है। जिन योजनाओं को ऋषि ने इंगित किया था उनकी विविध प्रकार से उपयोगिता आंकी जाने लगी है।

१—शिक्षा प्रसार हुआ परन्तु वह दिशा विमुख राष्ट्र विघाती बन रहा है। अंग्रेजियत, प्रभावी है। आज भी ऋषि दयानन्द की भावनाओं के अनुसार वैदिक गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के प्रचार प्रसार के लिए सतत आन्दोलन की आवश्यकता हैं। नारियों में जागृति आई है परन्तु उत्थान उन्नति विमुख है। नारी को उसके वास्तविक स्वरूप की पहचान कराने के लिये ऋषि दयानन्द की भावनाओं का निरन्तर प्रसारण आवश्यक है। जो संस्थाए चल रही हैं वे भी दिग्भ्रमित सी होने लगी हैं। लक्ष्य टूट सा रहा है। उन्हें झकझोरने की आवश्यकता है।

२—विधवा विवाह की आवश्यकता महर्षि दयानन्द ने नारी को पतन से बचाने के लिये स्वीकार की थी न कि, वासना पूर्ति के लिए। आज का इन्सान विषय वासनाओं के प्रति ही अतिशय आकृष्ट हो रहा है और इस प्रकार के विवाह प्रायः ऐसे ही भावनाओं से प्रेरित होते हैं। हमें गम्भीरता से उनके वास्तविक पहलू पर दृष्टि रखनी होगी।

सरकार के किसी भी कार्य हेतु नियम बना देने मात्र से कार्य पूर्ण नहीं हो जाते जनमत के उसे स्वीकारने की बात रहती है। बाल विवाह विरोधी कानून बने कितने वर्ष हो चुके परन्तु आज भी पिछड़ी जातियों में बाल विवाह कुप्रथा क्या विद्यमान नहीं हैं।

हिन्दू संगठन-ऋषि दयानन्द ने हिन्दू नामक किसी वर्ग के लिए कुछ नहीं, मानव मात्र के उत्थान का बीड़ा उठाया था। आर्य समाज को मात्र हिन्दू नाम से जोड़ना महर्षि दयानन्द का अपमान है।

ब—२, स्वाधीनता तो मिली परन्तु सुराज्य स्थापित करना शेष है। स्वराज्य आन्दोलन में जहां त्याग व समर्पण था वहीं अब स्वार्थ व दलगत राजनीति ही सब जगह प्रभावी हो रही है। महर्षि की आकांक्षा का भारत नहीं बन सका है फिर कहां पूर्ण हो गया वह कार्य ?

ब—३, आपके हिसाब से ऊंच-नीच का भेद समाप्त है। परन्तु यह कोरी विडम्बना है। सामाजिक परिवेश में मनुष्य अपने मन से निश्चय

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य समाज की भावी रूपरेखा

(बुद्धिजीवियो के सम्मेलन की आवश्यकता)

(डा० प्रशान्त वेदालकार ७/२ रूप नगर दिल्ली)

(गताङ्क से आगे)

मे आर्य समाज कलकत्ता मे वहा के बुद्धिजीवियो की एक सगोष्ठी आयोजित की जिसमे लग भग ७५ उत्साही बुद्धिजीवी आर्य समाजियो ने भाग लिया । लगभग २० व्यक्तियो ने उस गोष्ठी मे अपने विचार व्यक्त किये, जिसमे प० उमाकात उपाध्याय आदि प्रमुख थे, सभी ने कहा कि इस विषय पर गम्भीरता से विचार होना चाहिए । इसी प्रकार सिलीगुडी मे वहा के आर्य समाज के मन्त्री श्री सर्वेश्वर झा ने दो दिवसीय एक विचार-गोष्ठी आयोजित की जिसमे वहा के अध्यापको, सपादकों, शिक्षा शास्त्रियो ने भाग लिया और अपने-अपने विचार रखे । विशेष रूप से शिक्षा के माध्यम का लेकर "आर्यसमाज की भूमिका"—इस विषय पर वक्ता बोले । यह सबने कहा कि इस प्रकार के विषयो पर वर्तमान परिस्थितियो मे एक विचार गोष्ठी के द्वारा आय समाज को अपनी नीति निर्धारित करनी चाहिये ।

आपको स्मरण होगा कि जब बौद्ध मत मे शिथिलता आने लगी तो धर्म सगीति का आयोजन करके उसके शैथिल्य को दूर करने व उसकी रूपरेखा मे युगानुरूप परिवर्तन करने तथा उसे प्रभावी बनाने के लिए व्यापक योजना बनाई गई थी । इस प्रकार की तीन सगीतिया हुई । इतिहास प्रमाण है कि शिथिल बौद्ध मत सक्रिय हुआ, उसमे समयानुसार अनेक परिवर्तन हुए तथा उसका व्यापक प्रसार हुआ । आज २५०० वर्षों के उपरान्त भी उसमे जीवन है, वह ससार का एक प्रमुख मत है ।

मेरी योजना यह है कि पहले बुद्धिजीवी आर्य समाजियो का एक तीन–दिवसीय सम्मेलन हो, जिसमे विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, प्राध्यापक, उच्च पदों पर आसीन प्रशासनाधिकारी, सम्पादक, लेखक, अभियन्ता, चिकित्सक तथा अन्य मुख्य व्यक्ति इसमे एकत्र हों, और उसमे अपने–अपने विचार व्यक्त करें । ये विचार लिखित रूप मे हो । उन लिखित निबन्धो पर प्रतिनिधि अपने विचार व्यक्त करें । बाद मे उन लिखित निबन्धो व प्रतिनिधियो के विचारो को प्रकाशित करके उन्हे प्रचारित और प्रसारित किया जाय, और कुछ समय के उपरांत उन पर पुन विचार हो और अन्त में सार्वदेशिक सभा, प्रतिनिधि सभाओ व प्रादेशिक सभा को वे विचार क्रियान्वित करने के लिए दिये जाय ।

यह सच है कि किसी विषय पर सैद्धान्तिक विचार उतना कठिन नही है जितना कि उसको व्यवहार रूप मे लाना । अत उक्त सम्मेलन मे सैद्धान्तिक विचारो के क्रियान्वयन पर भी एक सगोष्ठी आयोजित करने का विचार है ।

इस सारी योजना मे विपुल धनराशि के व्यय होने का अनुमान है । हम विद्वानो को उनके लिखित वक्तव्यो पर पारिश्रमिक न भी दे सकें तो भी उनके मार्ग व्यय आदि की व्यवस्था करनी ही होगी । उनके सम्मान पूर्वक निवास आदि का प्रबन्ध—जहा वह सम्मेलन हो, उस स्थान के प्रसिद्ध आर्य समाजी परिवारो मे किया जाए । एक मोटे अनुमान के अनुसार इस सब पर कम-से-कम ५० हजार रुपये व्यय होगा । इसके लिये हमे आर्यसमाज को गतिशील बनाने के इच्छुक व्यक्तियो के सक्रिय सहयोग की आवश्यकता है । हम विभिन्न आर्य समाजो, प्रतिनिधि सभाओ, सार्वदेशिक सभा से भी इसमे सहयोग देने की अपील करते है । हमे विश्वास है कि आप शीघ्र ही धनराशि भेजकर अपने निर्णय से हमे अवगत करायेंगे ।

इसके लिए हमने 'आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन' नाम से एक सस्था का गठन किया है, धन प्राप्त होने पर उसी के नाम से एक खाता खोलकर कार्य का समुचित सचालन एक समिति करेगी । समिति के पदाधिकारियो का निर्णय शीघ्र ही एक बैठकमे किया जाएगा । उसके लिए पाठक भी अपने सुझाव भेज सकते हैं ।

प्रस्तावित विचार गोष्ठी मे मुख्य रूप से तीन विषयो पर विचार होगा ।—

१—भारत की शिक्षा समस्या विशेष रूप से आर्य समाज से सम्बद्ध शिक्षा सस्थायें । भारत की शिक्षा समस्या मे भारतीयता व शिक्षाके माध्यम की समस्या प्रमुख है । आर्य समाज से सम्बद्ध शिक्षा सस्थाए तीन प्रकार की हैं—[क] गुरुकुल [ख] आर्य विद्यालय एव आर्य महाविद्यालय तथा [ग] डी० ए० वी० सस्थाए । ये सभी प्रकार की सस्थाए अपने आदर्शों से हट चुकी है । उसका मूल कारण भारत सरकार की शिक्षा नीति है । हम अपनी सस्थाओ का विकास अपने आदर्शों के अनुरूप न करके उसे सरकारी शिक्षा–नीति के अनुसार चलाने के लिए बाध्य हो गए हैं । हममे न उनका स्वतन्त्र विकास करने की क्षमता है और न भारत सरकार से सघर्ष कर उनको अपने अनुरूप बनाने की शक्ति है । डी० ए० वी० सस्थाओ का विकास हम पब्लिक स्कूलो की नकल पर कर रहे हैं ' इसके अपने आदर्श तिरोहित हो चुके हैं । निबन्ध लेखक इस पर दिशा निर्देश करेंगे । इसी प्रसगमेभारतीय युवको के चरित्र निर्माण एव उनमे सास्कृतिक रिक्तता की समस्या पर भी विचार किया जायेगा ।

[२] 'राष्ट्रीय समस्या और आय समाज' । हमारा राष्ट्र इस समय एक ओर विघटनकारी तत्वो से जूझ रहा है । उस पर विदेशी शक्तिया दबाव डाल कर उसे फिर से पराधीन करने के उपक्रम मे लगी है । दूसरी ओर अभारतीय एव भारतीय सस्कृति भिन्न तत्व हावी होकर हिन्दुत्व को समाप्त करने मे लगे हैं । देश मे अल्पसख्यको की समस्याए भयकर रूप से है । सत्तारूढ दल सतुष्टीकरण की नीति को अपना रहा है । सविधान मे अल्पसख्यको व हरिजन वर्ग को दिए गए विशेषाधिकारो का वैदिक वर्ण व्यवस्था से क्या सम्बन्ध है ? क्या आश्रम व्यवस्था देशकी बेकारीकी समस्या को आज भी दूर कर सकती है ? भारतीय स्त्री क्या आज भी घर की सम्राज्ञी बनने मे समर्थ हैं ? दहेज तथा अन्य कारणो से स्त्री की दुर्दशा को दूर करने मे आर्य समाज क्या करे ? आदि प्रश्नो का विवेचन दूसरे विषय के अन्तर्गत होगा ।

[३] आर्य समाजो के पारस्परिक सघर्ष आर्य समाज के सविधान व कार्यक्रमो मे युगानुरूप परिवर्तन की आवश्यकता आर्य समाज एक सस्था अथवा सगठन भी है और एक विचार एव सिद्धात भी । आर्य समाज के सिद्धात सर्वथा वैज्ञानिक हैं और आज के युग मे भी सर्वथा उपयोगी

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वेद वेदांग पुरस्कार १९८७ के लिए

पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड का नाम घोषित

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई द्वारा निर्धारित वेद वेदांग पुरस्कार चयन समिति ने वर्ष १९८७ के लिए आर्यजगत के प्रख्यात विद्वान् पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड का चयन किया गया है। ७८ वर्षीय पं० विश्वनाथ जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक वांग्मय के प्रचार प्रसार में समर्पित किया है और आज भी अथर्ववेद का भाष्य पूर्ण करने में संलग्न हैं।

इस पुरस्कार के लिए चुने गये विद्वान् को २१०००/-की थैली, रजत ट्राफी, अभिनन्दन पत्र एवं शाल भेंट कर सम्मानित किया जाएगा।

इस वर्ष आर्यसमाज सान्ताक्रुज ने एक और नवीन पुरस्कार की घोषणा की है। जिसके अन्तर्गत वेद वेदांगों के विद्वान एवं अनुसन्धान कर्ताओं के अतिरिक्त जिन विद्वानों ने उपदेशक, भजनोपदेशक एवं कार्य कर्ता के रूप में जीवन पर्यन्त आर्यसमाज की सेवा की है, ऐसे एक विद्वान को प्रतिवर्ष ११०००/-की थैली, रजत ट्राफी, अभिनन्दन पत्र एवं शाल से सम्मानित किया जाएगा।

इस द्वितीय पुरस्कार के लिये सर्वप्रथम आर्यजगत के सुप्रसिद्ध संन्यासी, शास्त्रार्थ महारथी पूजनीय अमर स्वामी जी महाराज का चयन किया गया है।

इस वर्ष से आर्यसमाज सान्ताक्रुज ने प्रति वर्ष दो विद्वानों के सम्मान का शुभारम्भ किया है। यह समारोह मई मास के अन्तिम सप्ताह में आयोजित किया जाएगा।

इस वर्ष की मनोनीत चयन समिति के सदस्य थे, स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक, पं०उदयवीर जी शास्त्री (दोनों पिछले वर्षों में वेद वेदांग पुरस्कार विजेता) पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, श्री ओंकारनाथ जी आर्य, श्री देवेन्द्रकुमार जी कपूर, कैप्टिन देवरत्न आर्य, श्री महाशय चमनलाल, श्री कस्तूरीलाल जी नवान, श्री नरेन्द्र कुमार जी पटेल।

अन्तिम निर्णय आर्यसमाज की अन्तरंग सभा ने दिनांक १२-४-८७ को लिया।

जो व्यक्ति एवं संस्थाएं उपरोक्त पुरस्कार १९८७ के विजेताओं के प्रति अपने संस्मरण अभिनन्दन पत्र, या लेख आदि भेजना चाहे वे १५ मई १९८७ तक आर्यसमाज मन्दिर सान्ताक्रुज (प०) को भेज सकते हैं।

देवरत्न आर्य महामन्त्री

—आर्यसमाज जौनपुर का ८७वां वार्षिकोत्सव दि० ९ अप्रैल से १६ अप्रैल तक टाउन हाल के मैदान में श्री तारानाथ जी की अध्यक्षता में मनाया गया। जिसमें श्री स्वरूपानन्द महाराज श्री महेन्द्रपाल जी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल एवं श्री प्रो० उत्तमचन्द्र जी शरर एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री महिपालसिंह ने भाग लिया इस वर्ष उत्सव प्रभावशाली रहा।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा जौनपुर के माध्यम से दि० ९ मार्च से १६ अप्रैल तक जनपद के विभिन्न समाजों में उत्सव एवं प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ। प्रचार में आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक श्री स्वामी सुकर्मानन्द जी श्री नेमप्रकाश भजनोपदेशक एवं श्री क्षेमचन्द जी के अतिरिक्त स्थानीय व्यक्तियों में श्री आर्यमुनि जी महाराज एवं श्री तारानाथ जी ने भाग लिया।

अजमेर में खुलने वाले विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय हो

राजस्थान के मुख्य मन्त्री को श्री छोटूसिंह एडवोकेट का पत्र

सेवा में—माननीय श्री हरदेव जोशी जी,
मुख्य मन्त्री राजस्थान सरकार

महोदय,

राजस्थान सरकार ने राजस्थान में कुछ नये विश्वविद्यालय खोले जाने का निर्णय लिया है। यह बड़े हर्ष की बात है कि आप उन विश्व विद्यालयों का नामकरण राजस्थान के महापुरुषों के नाम पर कर रहे हैं। आपको विदित है कि राष्ट्र के अग्रिम समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने दलितवर्ग को उठाने, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने तथा शिक्षा के प्रसार में अकथनीय कार्य किया है। सारे देश में हजारों की संख्या में डी० ए० वी० कालेज गुरुकुल तथा अन्य संस्थायें हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन का अधिकतर समय राजस्थान के उत्थान में लगाया। आर्य समाज के धर्म ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना भी उन्होंने उदयपुर के 'नौलखा महल' में बैठकर की। राजस्थान उनका सबसे बड़ा कर्म क्षेत्र रहा है। उन्होंने राजस्थान के उद्धार के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। उनकी अन्त्येष्टि राजस्थान के प्रमुख नगर अजमेर में ही हुई।

सन् १९८३ मे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी मनाई गई। जिसमें देश विदेश से आये हुए लगभग दस लाख व्यक्तियों ने भाग लिया। स्व० श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने उस शताब्दी समारोह का उद्घाटन किया था, आर्य जनता की ओर से उनसे यह पुरजोर मांग की गई थी कि महर्षि दयानन्द की स्मृति में अजमेर में उनके नाम पर विश्वविद्यालय की स्थापना की जावे। उन्होंने आश्वासन दिया कि समय आने पर विचार किया जावेगा।

माननीय मुख्य मन्त्री जी अजमेर में आर्य समाज की सबसे अधिक संस्थायें चल रही हैं वहां का डी० ए० वी० कालेज राजस्थान के प्रमुख कालेजों में है। अजमेर के नागरिक महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज से भावात्मक तरीके से भी जुड़े हुए हैं। मैं राजस्थान तथा देश के करोड़ों स्वामी दयानन्द के श्रद्धालुओं की ओर से पुरजोर मांग करता हूं कि आप अजमेर में खुलने वाले सम्बद्ध विश्वविद्यालय का नाम महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय रखेंगे। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि जनता की भावना का आदर करते हुए आप हमारा आवेदन स्वीकार करेंगे।

भवदीय—

छोटूसिंह एडवोकेट
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
अलवर

उत्सव

—आर्यसमाज मुगलसराय का ६९वां वार्षिकोत्सव दिनांक २९ मई से १ जून १९८७ तक हर्षोल्लास के साथ मनाया जावेगा। जिसमें आर्य जगत के ख्याति प्राप्त उपदेशक, भजनोपदेशक सम्मिलित होंगे।

—आर्यसमाज जोधपुरखेड़ी (बिजनौर) का ७१ वां वार्षिकोत्सव ६ से ८ जून ८७ के मध्य सम्पन्न होगा। इस अवसर पर आर्यजगत के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान, भजनोपदेशक आर्यजगत के नेता पधारने हेतु आमन्त्रित हैं। सामयिक परिस्थितियों के सम्बन्ध में कई महत्वपूर्ण सम्मेलन होंगे।

वनिता विवेक

नारी समाज की ज्वलन्त समस्या

[श्री आनन्द प्रकाश आर्य अधिष्ठाता प्रचार विभाग, आर्योपप्रतिनिधि सभा, जनपद बिजनौर गढ़वाल

★

आज विज्ञान की अनेक दुर्लभ उपलब्धियों से वैज्ञानिक जन तो हर्षित हैं ही मानव समाज भी इन उपलब्धियो पर ईश्वरीय सत्ता पर विजय का प्रतीक मानने लगा है जो गर्वातिरेक मनुष्य का भ्रम ही कहा जा सकता है। आज की नवीनतम उपलब्धि गर्भ काल के दौरान उदरस्थ शिशु के लिंग को प्रसव से पूर्व जान लेना है। कुछ लोग इस उपलब्धि को स्त्री-पुरुष की इच्छानुसार सन्तान को धरा पर उतारना कह सकते हैं परन्तु यह खोज समस्त नारी समाज के लिए एक अजीब मुसीबत व उलझन बन कर रह जायेगी।

यदि गर्भस्थ सन्तान परिवार वालो की इच्छा के विपरीत होगी तो उसके जन्मने से पूर्व ही गर्भपात की वैधानिकता का सहारा लेकर गर्भपात करा उससे छुटकारा पाने का प्रयास होगा ही। अब विज्ञान के इस करिश्मे से वह भले ही सन्तुष्टि अनुभव करें किन्तु यह स्थिति उस दम्पति के जीवन को नारकीय बना कर छोड़ेगी और इससे सारा ही समाज प्रभावित होगा।

बच्चा माँ के लिये कितना प्यारा होता है कल्पना नहीं की जा सकती। इसके पालन पोषण के लिये वह कितना कष्ट सहती है और अपने इस हृदय के टुकड़े को कष्ट उठा कर भी हँस मुख देखना चाहती है। अब उसकी इच्छा के विपरीत गर्भपात की बात सामने आने से उस पर क्या गुजरेगी कहा नहीं जा सकता। हम समाचार पत्रो मे विज्ञापन पढ़ते हैं कि अमुक क्लिनिक मे आओ शुल्क जमा करो और जानो की स्त्री के गर्भ मे लड़की है या लड़का इसका शुल्क भी कोई साधारण रकम नहीं होती जो हरेक चुका सके। पता लगने पर यदि लड़की हुई तो निश्चित ही कहीं-कहीं मातम छा जायेगा और यदि लड़का हुआ तो उस देवी के लिये वरदान बन जायेगा।

यदि पारिवारिक जन समझदार हैं पुत्र अथवा पुत्री को समभाव समझते हैं तो ठीक अथवा कलह रूपी सरदर्द जन्म ले लेगा पारिवारिक सुख शान्ति चौपट हो जायेगी। हर दशा मे यह भ्रूण परीक्षण नारी समाज के लिये कल्याणकारी नहीं बन सकेगा, इस भ्रूण परीक्षण का उद्देश्य भले ही कुछ हो किन्तु अभी हमारा समाज इतना विवेकशील प्रबुद्ध नहीं जो इस उपलब्धि का प्रयोग लाभकारी बना सके। सबसे पहले तो स्त्री समाज में ही इतनी जागरुकता नहीं है कि लड़के व लड़की को समभाव दे, सदियो की मानसिक दासता के वशीभूत हमारी सांस्कृतिक धार्मिक उन्नत मान्यतायें धराशाई हो गई है और रही सही कमी को आज के आर्थिकता की उद्देश्य ने चौपट करके रख दिया है। अभी तो दहेज रूपी दानव के कारण ही न जाने कितनी बाल कलिकाये प्रस्फुरित होने से पहले ही कुम्हला जाती हैं अथवा खिलने से पूर्व ही अपना अस्तित्व मिटा लेती है ऐसी घटनायें प्रतिदिन समाचार पत्रों मे प्रकाशित हो कर मानवता के मुख पर कालिख पोत रही हैं। वर्तमान की यह उपलब्धि निश्चित रूपेण कटे पर नमक छुरकने का काम करेगी जो एक चिन्तनीय स्थिति है।

इस गम्भीर और सामयिक चिन्तन पर आज समाज मनीषियो को विचार करना होगा अथवा परिणाम दुखद होगा। टी० वी० के अश्लील प्रसारणो ने तो समाज का चरित्र चौपट कर दिया और यह भ्रूण परिक्षण पारिवारिक सुख-शान्ति को घुन लगायेगा। एक समय था कि कन्या के जन्मने को हीन भावना से जान गला घोट दिया जाता था जो कि आज भी कहीं-कहीं किसी रूप मे चल रहा है और अब इसकी पुनरावृत्ति गर्भकाल मे भ्रूण परीक्षण करा कर गर्भपात कराने की वैधानिक छूट के कारण पनप उठेगी। यह धारणा आज निर्मूल बन गई है कि बेटा बुढ़ापे का सहारा होता है हमने अनेक माता पिताओ को कई पुत्रो वाला होने पर भी बुढापे मे रोटी के टुकड़ो के लिये तड़पते देखा है कितनो को अपने दुखड़े रोते देख रहे है।

इस नवीनतम उपलब्धि के दूरगामी परिणामो पर नारी समाज की प्रबुद्ध महिलाओ को चिन्तन करना चाहिये तथा यह उद्घोषणा सर्वत्र करें कि लड़का हो या लड़की सबको जीने खाने-पीने और कर्म क्षेत्र मे कार्य करने का समान अधिकार है उनके अपने अपने दायित्व हैं, इस परीक्षण का उन्हे विरोध करना चाहिये अथवा नारी जीवन नारकीय बन जायेगा।

जीवन को उन्नत सुखी समृद्ध बनाने के लिये वेद, वेदाग शास्त्र कर्मशील होने का उपदेश करते हैं जब तक शरीर मे शक्ति है तब तक कर्मठ होकर कार्य करते चलो। स्त्री-पुरुष, लड़का-लड़की समाज के अभिन्न अग हैं यदि एक अग भी कमजोर होगा तो गिरावट आ जायेगी पतन होने लगेगा। इस लिये सावधान होकर आज हम पाश्चात्य प्रवाह की आधी से बचें। हम जिस ओर भाग रहे हैं पाश्चात्य सभ्यता के परिणामो को भुगत कर वह लोग सुख-शान्ति के लिये भारतीय आध्यात्म की ओर आ रहे हैं कैसी विडम्बना है यह। मानसिक दासता के जन्मदाता भ्रूण परिक्षण एव अन्य ऐसी ही बातो का यथा व्यापारिक क्षेत्र मे विज्ञापनो पर नारी के बेढगे अर्द्ध नग्न चित्र अथवा धार्मिक चिन्ह प्रयोग का सर्वत्र विरोध होना चाहिए और महिला कल्याण सस्थायें नारी समाज इसमे आगे आयेगा तो अधिक प्रभावी होगा।

विवस्वत वेद मन्दिर का, वार्षिकोत्सव संपन्न

गोरखपुर १३ मार्च। सहजनवा घकसरा के शिवपुर (नवनी) ग्राम मे स्व० स्वामी वेदव्रता नन्द जी द्वारा स्थापित विवस्वत वेद मन्दिर का पाचवां वार्षिकोत्सव दिनाक ९ मार्च से १२ मार्च तक सपन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजित 'विजय यज्ञ' के ब्रह्मा वेद, उपनिषद, व्याकरण तथा आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वान् गुरुकुल एटा के आचार्य विश्वदेव जी रहे। आचार्य जी ने इस अवसर पर उपस्थित विशाल ग्राम्य जन समूह को सम्बोधित करते हुये गृहस्थ जीवन के उदात्त आदर्शों की वेद सम्मत व्याख्या की। वेद मन्दिर के सर्व सचालक आर्य गुरुकुल महाविद्यालय खानपुर हरियाणा के कुलपति स्वामी श्रेयोनन्द वैदिक यति ने वेद मन्त्रो की सरल व्याख्या प्रस्तुत की तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा सस्वर वेद पाठ, शस्त्र विद्या तथा सस्कृत सम्भाषण का भव्य प्रदर्शन करवाया अनेको पीडितो के नि शुल्क दवाइया भी वितरीत की गई। गुरुकुल खानपुर हेतु एक ब्रह्मचारी का व्यय महिला आर्य समाज गोरखपुर की प्रधान श्रीमती सुशीला बरनवाल द्वारा प्रदान किया गया। समस्त कार्यक्रम मे आर्य समाज गोरखपुर (बक्शीपुर) का सक्रिय योगदान रहा।

श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या का वार्षिकोत्सव संपन्न

गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या [फैजाबाद] के वार्षिकोत्सव पर २ अप्रैल से ८ अप्रैल ८७ तक राष्ट्रभृत यज्ञ पं० सत्यमित्र शास्त्री के द्वारा सम्पन्न हुई। यज्ञ का संयोजन श्री केदारनाथसिंह ने किया। यज्ञ का पूर्ण संचालन श्री शर्ममित्र पाण्डेय प्राध्यापक गुरुकुल ने किया।

संस्कृत सम्मेलन दिनांक ६ अप्रैल ८७

पं० सत्यमित्र शास्त्री की अध्यक्षता मे संस्कृत सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने तथा अनेक विद्वानों ने संस्कृत की उपयोगिता पर अपने विचार रखे। इस सम्मेलन की सारी कार्यवाही संस्कृत भाषा के माध्यम से हुई जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया गया।

"अयोध्या स्थितस्य गुरुकुल महाविद्यालयस्य संस्कृत भाषा विषये राज्यस्य राष्ट्रस्य वा या उपेक्षावृत्ति दृश्यते तां प्रति इयं सभा स्वक्षोभं प्रदर्शयति। नवीन पाठ विधावापि उपेक्षा दृश्यते राष्ट्र नेतृणाम्। इमं सभा उच्चैस्तर्यः शब्दैः प्रस्तावं सर्वसम्मतया पारयति मत् न केवलं संस्कृत भाषा सर्व परीक्षासु अनिवार्या कार्या अपितु राष्ट्रभाषा रूपेण स्वीकृत्य सम्मानमीयापीयम्।

अन्त मे पं० सत्यमित्र शास्त्री ने संस्कृत भाषा के महत्व को अनेक दृष्टान्तों से स्पष्ट किया। गुरुकुल महाविद्यालय के कुलपति आचार्य वसुमित्र शास्त्री ने गुरुकुल शिक्षाप्रणाली की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए संस्कृत भाषा को राष्ट्रभाषा का स्थान देने की मांग की। सायंकाल सात बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम मे गुरु दक्षिणा एकांकी का अभिनय गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा किया गया जिसका निर्देशन श्री सर्वाजीत तिवारी ने किया। तदनन्तर ब्रह्मचारियो ने गीतो एवं भजनो के माध्यम से दर्शकों का मनमुग्ध कर लिया।

राष्ट्र भाषा सम्मेलन ७-४-८७

गुरुकुल महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव के द्वितीय दिन पर 'राष्ट्र भाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता अमेठी नरेश राजर्षि रणञ्जयसिंहजी ने किया। सर्वप्रथम वैदिक मंगलाचरण हुआ। ब्रह्मचारियों ने राष्ट्रभाषा के सन्दर्भ में अपने-अपने विचार व्यक्त किये। कलकत्ता से आये हुए पं० रामकृष्ण शास्त्री ने कहा कि राष्ट्र भाषा हिन्दी को उचित सम्मान मिलना चाहिये।

उन्होने कहा कि गुरुकुलो की स्थापना करके जगह-जगह पर संस्कृत प्रचार करना चाहिये। जो राष्ट्र भाषा हिन्दी की जननी है। पं० राम किशोर शास्त्री जो राज्य भाषा समिति के सदस्य भी हैं उन्होने कहा कि-दक्षिण भारत से लेकर उत्तर भारत तक अनेक भाषा सम्मेलनों मे देखा और पाया कि हिन्दी भाषा को सभी लोग स्वीकार कर रहे हैं। राज्य स्तर पर भी राष्ट्र भाषा हिन्दी को उचित स्थान देने के लिए सरकार कटिबद्ध है। अध्यक्ष पद से बोलते हुए अमेठी नरेश राजर्षि रणञ्जयसिंह ने कहा कि-राष्ट्र भाषा हिन्दी संविधान में घोषित है फिर भी हमें सम्मेलन करना पड़ रहा है। यह कष्ट है। उन्होंने अनेक स्मरण दिलाते हुए कहा कि हिन्दी को पूर्ण सम्मान मिलना चाहिए। आज के राष्ट्र नेता कहते हैं कि हिन्दी को सरल बनाना चाहिए तथा हिन्दी किसी पर थोपी नहीं जानी चाहिए। मैं कहता हूं कि हिन्दी से सरल कौन भाषा है हमें राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता है क्योंकि मैंने वह समय भी देखा है जब महामना मालवीय जी ने गवर्नर से कहा कि हिन्दी को अदालत में अधिकार दिया जाय।

कार्यक्रम दि० ८-४-८७

प्रातःकाल राष्ट्रभृत यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। यज्ञ के ब्रह्मा श्री शर्म मित्र पाण्डेय थे। नवीन ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार श्री आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान प० सत्यमित्र शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी के द्वारा सम्पन्न हुआ। श्री शास्त्री जी ने ब्रह्मचारियो को उपदेश दिया। इस अवसर पर सन्त, महात्मा, आर्यजनों से यज्ञशाला खचाखच भरा था। अनेक दानियों ने ब्रह्मचारियों को दान भी दिया। इसी दिन ब्रह्मचारियों के द्वारा अनेक आसनों का भी प्रदर्शन किया गया। जिसका निर्देशन श्री केदारनाथ सिंह ने किया। उत्सव के सम्पूर्ण कार्यक्रमों के संचालन में मुख्याधिष्ठाता श्री रामजी शुक्ल मन्त्री श्री ज्ञानेन्द्र भटनागर एवं गुरुजनों का कार्य सराहनीय रहा।

★ ★ ★

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का निर्वाचन सम्पन्न

श्री छोटूसिंह एडवोकेट प्रधान निर्वाचित

अलवर १२ अप्रैल ८७ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का साधारण अधिवेशन दिनांक ११ व १२ अप्रैल ८७ को वैदिक विद्या मन्दिर स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर मे सम्पन्न हुआ जिसमें राजस्थान के लगभग २०० समाजो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। श्री विद्यासागर शास्त्री निर्वाचन अधिकारी थे। प्रधान पद के लिये श्री छोटूसिंह एडवोकेट अलवर तथा श्री दत्तात्रेय आर्य अजमेर प्रत्याशी थे। बाद निर्वाचन श्री छोटूसिंह भारी बहुमत से विजयी घोषित किये गये बल्कि पदाधिकारी तथा अन्तरंग के सदस्य सर्व सम्मत निर्वाचित किये गये। कुल पदाधिकारी समेत ३५ सदस्यों की अन्तरङ्ग गठित की गई। सर्वश्री दत्तात्रेय आर्य वरिष्ठ उपप्रधान, ओमप्रकाश झंवर मन्त्री श्री सत्यनारायण शाह कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुये।

इस अधिवेशन में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करके निश्चय किया गया कि-

१-इस सत्र में राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा का शताब्दी समारोह उत्साहपूर्वक मनाया जावेगा जिसमें राजस्थान में वेद प्रचार एवं जन-जागरण का ठोस कार्यक्रम बनाया जावेगा।

२-पंजाब में छाये हुए आतङ्कवाद को समाप्त करने के लिये निश्चय किया गया कि हर मोर्चे पर आतङ्कवाद का मुकाबला किया जावे राष्ट्र की एकता अखण्डता एवं सार्वभौमिकता को हर कीमत पर कायम रखा जावेगा।

३-आर्य जगत की शिरोमणी सार्वदेशिक सभा के आह्वान पर राजस्थान बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने में पीछे नहीं रहेगा।

४-साधारण सभा में इस पर भी बड़ी चिन्ता व्यक्त की गई कि देश मे छाये हुए अन्धकार के कारण कानून होते हुए भी जगह-जगह पर महिलायें जिन्दा जलाई जा रही हैं, नर बलो हो रही है, बाल विवाह तथा दहेज प्रथा ने भी अपना विभत्स रूप धारण किया हुआ है एक स्वर से पूरे सदन में सरकार से यह बलपूर्वक मांग की कि वो नियमों का कड़ाई से पालन करावे।

आर्य समाज की भावी रूपरेखा

(शेष पृष्ठ ५ आगे)

हैं, पर हम उनका प्रचार उतने सशक्त रूप से नहीं कर पा रहे। उसका एक कारण हमारे संगठन की कुछ दुर्बलतायें हैं। हमें उन दुर्बलताओं को दूर करने के लिए उसकी कार्य-प्रणाली व संविधान में कुछ अपेक्षित परिवर्तन करने होंगे जिससे उसके पारस्परिक संघर्ष समाप्त हो सकें। कम-से-कम न्यायालय में हमें न जाना पड़े। यह भी देखना होगा कि महर्षि दयानन्द, आर्य समाज तथा आर्ष सिद्धान्तों पर आस्था रखने वाली संस्थाएं संगठन से परे न रहें। हमारा लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' है। व्यष्टिसे समष्टि, व्यक्तिगत उन्नति से अन्तःराष्ट्रीय उन्नति करना हमारा लक्ष्य है। इस महान् लक्ष्य को प्राप्त करने में हमे उपाय सुझाने होंगे, हमें अपने मन्तव्यों को पूरे विश्व मे पहुंचाना है। व्यक्तिगत चरित्र व ज्ञान के विकास के लिये अच्छे साहित्य का होना आवश्यक है। आज आर्य समाज पुस्तकालय पर ध्यान नहीं देते, उनका आरोप है कि लोगों को पढ़ने में रुचि नहीं है, ये सब प्रश्न भी नए परिपेक्ष्य में विचारणीय हैं। प्रचार के आधुनिकतम साधनों का प्रयोग भी हमें करना होगा। जो बुद्धिजीवी हमसे दूर हो गए हैं, उन्हें अपने निकट लाने के प्रयास करने होंगे। युवा वर्ग आज कई कार्यक्रम लेने के लिये तड़प रहा है, उसे नए-नए कार्यक्रम देने होंगे। और भी अनेक प्रश्न हैं जिन पर विचार की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध मे हम आर्य-संस्थाओं पदाधिकारियों के अतिरिक्त अन्य विद्वानों के विचार प्रस्तुत करना चाहेंगे।

हमने अपने इस लेख में आर्य समाज की भावी रूपरेखा के लिए बुद्धिजीवियों से सम्मेलन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है तथा उसकी एक संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत की है। इसके लिए मुझे पाठकों के सहयोग की आवश्यकता है। पाठकों से निवेदन है कि--

(१) उक्त सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करें तथा अपने सुझावों से हमें अवगत करायें, पत्र-पत्रिकाओं में भी इस सम्बन्ध में एक विचार मंच आरम्भ होना चाहिए।

[२] उक्त विचार गोष्ठी की अभी तिथि तय नहीं की गई, शीघ्र ही उसकी घोषणा होगी। पर उसके लिए जो प्रतिनिधि बनना चाहें अभी से सम्पर्क करना प्रारंभ करें। सभी आर्य-संस्थाओं से निवेदन है कि उक्त विचार गोष्ठी के लिए अपने यहा से अधिक से अधिक प्रतिनिधि बनाएं।

[३] यद्यपि हम आर्य समाज बुद्धिजीवी विचार गोष्ठी को सभी सूचनाएं समाचार-पत्रों में देते रहेंगे तो भी आपसे निवेदन है कि आप ५१ रूपया भेज कर इसके सदस्य बनें। ताकि व्यापक स्तर पर पत्र-व्यवहार द्वारा भी संपर्क किया जा सके।

[४] आप अपने नगर के उन विद्वानों के नाम एवं पते भेजें जिनको कि आपकी दृष्टि में उक्त विचार गोष्ठीमें भाग लेना चाहिए। यह आवश्यक नहीं है कि वे किसी आर्य समाज के सदस्य ही हों। पर हा, उनका आर्य समाज से परोक्ष सम्बन्ध अथवा सहानुभूति आवश्यक है।

आपकी यज्ञ में रुचि है। आप अनेक भौतिक यज्ञ सम्पन्न करते हैं। पर यह विचार-यज्ञ उन भौतिक यज्ञों के उद्देश्य की ओर अधिक सार्थकता प्रदान कर सकता है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस विचार यज्ञ में भी आप अपनी 'आहुति' डालेंगे और आर्य समाज की भावी रूप रेखा निश्चित करने में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर पुण्य के भागी बनेंगे।

वैवाहिक आवश्यकता

उ० प्र० सचिवालय लखनऊ के स्वागत कक्ष मे कार्यरत लिपिक के पद पर मासिक आय ९००) रुपये, कद ५ फुट ५ इंच आयु ३१ वर्ष दृष्टिहीन युवक हेतु कम-से-कम इन्टर मीडिएट शिक्षा प्राप्त, सुशील, एवं सात्विक विचारों से युक्त वधू की आवश्यकता है जाति बन्धन रहित स्थायी पता--श्री ध्रुव नारायण सिंह पुत्र श्री सूरजभान सिंह, ग्राम पोस्ट राजधानी वाया सरदार नगर, गोरखपुर। पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें। द्वारा--श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

जिला सभा मुरादाबाद द्वारा सस्ती उत्सव प्रचार योजना

१५ मई से १५ जून, १९८७ सस्ती उत्सव योजना के अन्तर्गत समारोहों का आयोजन १०००/-रुपये व्यय, दो भजन मण्डली और दो उपदेशकों की व्यवस्था। पैगम्बरपुर, चकछावी, राम नगर, सुनपुरा, चाऊपुरा, मनकुआ काजीखेड़ा, क्षेत्रों में प्रभावशाली प्रचार का आयोजन। अवलपुर-समदू में भव्य सम्मेलन का आयोजन। २-३-४ जून को उत्सव आर्य समाज धनौरा मण्डी ५-६-७ जून को उत्सव आर्य समाज ढोली धनौरा क्षेत्र।

१ मई से ३० मई अध्यापक गोष्ठी दि० २१-३-८७ के निश्चयानुसार मद्य निषेध, चरित्र निर्माण, देश भक्ति के संदर्भ मे दस सम्मेलनों का निर्णय कांठ क्षेत्र में। व्यवस्थापक श्री बलवीर सिंह जी अध्यक्ष। मई, जून, १९८७ मे डिलारी, ठाकुर द्वारा, हसनपुर, बिलारी, क्षेत्रों में आर्य सम्मेलनों का सुन्दर आयोजन। डिलारी ठाकुर द्वारा व्यवस्था तहसील आर्य सभा, ठाकुरद्वारा, हसनपुर व्यवस्था श्री डा० विनोद प्रधान आर्य समाज, हसनपुर, बिलारी, व्यवस्था श्री कपिल आर्य मंत्री, आर्य समाज, बिलारी। २० मई से ५ जून, साधना शिविर, विचार गोष्ठी, आर्य समाज गंज स्टेशन मार्ग मुरादाबाद मे आयोजित निर्देशन पूज्यपाल स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज। ६ जून से ३० जून तक जनपदीय सामूहिक पदयात्रा कार्यक्रम वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार। साहित्य वितरण यज्ञों का आयोजन समाज सुधार कार्यक्रम। निर्देशनः स्वामी सर्वदानन्द जी महराज।

१ जून से १५ जून ८७ तक क्षेत्रीय प्रचार योजना पुरोगम क्षेत्रीय बैठक धनौरा क्षेत्र के सर्व सम्मत निश्चय के अनुसार सम्पन्न होगी।

१-२ जून ८७ आर्य परिवार सम्मेलन ब्रजघाट व्यवस्था आर्य समाज संभल।

जनपदीय स्तर पर आर्य सम्मेलन करने का निर्णय।

आर्य समाजों का पुनर्जीवन नवीन स्थापना निरीक्षण कार्य।

जनपद के विद्यालयों में नैतिक शिक्षा चरित्र निर्माण विषयो पर उपदेशो का प्रभावी आयोजन।

हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री
जिला सभा मुरादाबाद, अमरोहा

आर्य समाज नाम अपरिवर्तनीय है

(शेष पृष्ठ ४ से आगे)

ही इसे दूर कर देना चाहते हैं परन्तु आज वोट की राजनीति इसे और ज्यादा ही बढ़ाती चली आ रही है। इस वर्ग भेद की नीति को आर्य समाज का प्रबल आन्दोलन ही तोड़ सकता है।

आपने स्वामी आनन्द बोध पर यह लिखा है कि वे सब काम छोड़ कर हिन्दुओ के अधिकारो की रक्षा की लड़ाई लड़ रहे हैं और सब छोड़ दिया है। यह सर्वथा भ्रम है। उनका आन्दोलन उठते पनपते वर्ग भेद के समूल नाश के लिये ही है।

ब-४, अछूतोद्धार ऋषि का लक्ष्य था तो सरकारी करण में वह कम करने के बजाय उनके वर्गों का उदयन ही हो रहा है। प्रेम प्रीति बढ़ाने के बजाय शासन का वर्गीकरण व राजनीतिक पार्टियों द्वारा इसका पुष्टिकरण भाई चारे को ही नष्ट कर रहा है। आर्य समाज को इसे सजग प्रहरी की तरह दूर करना है।

ब-५, संस्कृत का प्रचार-प्रसार कागजों में निश्चय ही खूब हो रहा है पैसे भी खर्च हो रहे हैं परन्तु उसके प्रति जन रुचि आकृष्ट केवल आर्य समाज ही करा सकता है। जन रुचि का आभाव ही आज नई शिक्षा पद्धति मे संस्कृत का निस्कासन है। हमे इसकी सरकारी तंत्र मे भी भरपूर आवश्यकता समाहित करानी है।

ब-६, हिन्दी राष्ट्र भाषा संविधान में बना दी गई है परन्तु क्या वह सच्चे अर्थों में बन सकी है ? आज अनपढ़ भी अपने बच्चों को इंगलिश मीडियम स्कूलों मे ही पढ़ाने को क्या लालायित नहीं हो रहा है। पापा, मम्मी, माम, डेडी, डैड, टाटा ही हमारे आदर्श वाक्य नहीं बन रहे। निश्चय ही हिन्दीके प्रचार-प्रसार के लिये ऋषि दयानन्द के सच्चे भक्तों को ही बीड़ा उठाना पड़ेगा। उसका सही स्थान आर्य समाज ही दिला सकता है।

क्योंकि, कितनी ही गिरावट आ गई हो आज भी आर्य समाज मे अन्यत्र से काफी अधिक चरित्र व राष्ट्र निष्ठा विद्यमान है।

ब-७, शुद्धि मन से होती है दिखावे से नहीं। आज इस आन्दोलन में तो व्यापार सा लगता है या राजनीतिक प्रपंच। आर्य समाज ही इस शुद्धि को शुद्ध रूप दे सकेगा।

ब-८, नशा बन्दी का काम सरकार कागज में करती है पर शराब के ठेकों की नीलामी, भी सरकार ही करती है। नशे के विरुद्ध जनमत आर्य समाज को ही तैयार करना है।

ब-९, शिक्षा प्रसार का काम सरकार ने निश्चय ही काफी हद तक संभाल लिया है। परन्तु उसकी नीति धर्मनिरपेक्षिता के नाम पर चारित्रिक ह्रास करने वाली बन रही है। आज पुनः आर्य समाज को ही आवाज इसके लिए उठाने का ठेका लेना पड़ेगा जिससे राष्ट्र भाषा, भारतीय सस्कृति का सही रूप मे प्रसार हो सके।

ब-१०, गरीबी से ग्रस्त युवियो, देवियो को व्यभिचार के नर्क से छुटकारा मात्र कानून बनाने से नहीं मानसिक चेतना बदलने से होगा जो मात्र आर्य समाज ही कर सकता है।

स-१, शिक्षा प्रसार सरकार के ऊपर ही आश्रित होकर नहीं किया जा सकता। यह ठीक है कि शिक्षण संस्थाओं में निस्कासन व नियुक्ति पूर्ण रूपेण हमारे हाथ में नहीं है परन्तु हमें अपनी आचार संहिता निर्मित करने का पूर्ण अधिकार है। नियुक्तियों व विमुक्तियों में उसका व्यवहार अपेक्षित हो सकता है। व्यक्तिगत द्वेष वश किसी को हटाने या स्वार्थ वश किसी को रखना अवश्य हमारे हाथ में नहीं है। हमें अपनी शिक्षा, संस्थाओं में नैतिक शिक्षा, यज्ञ-हवन, संध्या व्याख्यान मालाओं के प्रसार में कोई रोक-टोक नहीं हो सकती हमें उधर ध्यान देने की आवश्यकता है।

स-२, अनाथ बच्चों के पालन में सरकार धन निश्चय ही व्यय कर रही है परन्तु दायित्व तो किसी न किसी सामाजिक संस्थापर ही रखना होगा। जैसा आज भी हो रहा है।

स-३, सरकार वृद्धों के जीवन यापन के लिए व्यवस्था करे यह उत्तम है परन्तु वानप्रस्था आश्रम सरकार को सौंप दिए जायं यह सुझाव युक्ति संगत नहीं। सरकारी आश्रमों में वैदिक विचार धारा का लेश मात्र न रह सकेगा।

ब-१, आश्रम व्यवस्था पूर्ण मनोवैज्ञानिक है आवश्यकता है जन-जन में इसके विश्लेषण के करने की।

आपने गुरुकुलीय व्यवस्था को अव्यवहारिक बताया है। यह आपकी अपनी सूझ अवश्य है परन्तु मैं बड़ी ही दृढ़ता से कहूंगा कि यदि शिक्षण क्षेत्र में गुरुकुलीय व्यवस्था ही सर्वत्र लागू हो जाये तो कुछ वर्षों में ही काया कल्प हो सकता है। अपना देश स्वर्ग बन सकता है। घरों में बच्चों का लाड़ प्यार उनकी आवश्यक अनावश्यक मांगों की मोह वश पूर्ति या धनाभाव से अपूर्ति उन्हें पथ भ्रष्ट करती है। गुरुकुलीय व्यवस्था में प्यार व अमिट स्नेह बढ़ता है। मै अपने गुरुकुलीय जीवन धारा के माध्यम से सगर्व कहता हूं कि वही व्यवस्था मात्र उपयोगी है।

आपने लिखा है कि बुढ़ापे मे शिक्षण कार्य लेना ज्यादती है। परन्तु घर पर खाट ही तो नहीं तोड़ते पढ़ाते भी हैं। घर के काम काज बूढ़े करते ही हैं क्या वहां ज्यादती नहीं है। निश्चय ही यह आपकी अवधारणा कुछ उचित नहीं है।

ब-२, आज बिरादरी वाद, जातिवाद अत्यधिक दुर्भाव में सहायक बन रहा है। महर्षि दयानन्द ने गुण कर्म स्वभावानुसार वैदिक वर्ण व्यवस्था का निदर्शन किया है उसे जन-जन में प्रसारित करना हमारा धर्म बनता है। शिक्षक, ब्राह्मण, शासक, सेना, पुलिस, क्षत्रिय, व्यापारी वैश्य व अपने विचार के बिना उपरोक्त की आज्ञाओं का मात्र पालन करने वाले शूद्र हैं। ये एक दूसरे के पूरक हैं एक दूसरे बिना समाज का ढांचा टूट जाएगा, यह आर्य समाज ही समझ सकता है।

ब-३, पंच महायज्ञ के लिए आपका लेखन तो अत्यधिक खेद जनक रहा। आहने ब्रह्मयज्ञ व दैव-यज्ञ को तोता रटन्त लिखकर, अपनी सम्पूर्ण विद्या को ही नष्ट कर दिया। पंच यज्ञ जीवनके अंग बने निश्चय ही प्रत्येक मंत्र के अर्थ को समझ तदनुरूप आचरण का सन्देश जन-जन में पहुंचाने की आवश्यकता है। मन्त्रों का हिन्दी में अनुवाद अवश्य ही होना चाहिए, प्रत्येक व्यक्तियो को सिद्धान्तों को भली-भांति समझने के योग्य होना चाहिए। पुरोहित एक शिक्षक या गाइड है।

क्रमशः

आर्य जगत

महात्मा हंसराज दिवस सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर मेस्टन रोड में महात्मा हंसराज का जन्म दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया इस अवसर पर डा० विजयपाल जी शास्त्री, प्रो० लक्ष्मीधर शर्मा, श्री जयदेव गुप्त आदि ने अपने विचार दिये कि महात्मा जी एक कर्तव्य परायण महान आत्मा थे आप वर्षों डी० ए० वी० कालेज लाहौर के प्राचार्य प्रथम बने रहे हैं।

आप स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त, लाला लाजपतराय, जीवन लाल के साथ देश की सेवा करते रहे।

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर [गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त] में नये छात्रों का प्रवेश एक मई १९८७ से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, समाज शास्त्र आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है।

निःशुल्क शिक्षा हिन्दी माध्यम योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध व आवास की मात्र ३०) रु० तीस रुपये] मासिक पर समुचित व्यवस्था, शुद्ध घृत व दूध की उपलब्धि के लिये गुरुकुल की अपनी गऊशाला इस गुरुकुल की अपनी विशेषताएं हैं।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा पांच पास होना जरूरी है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिलें अथवा पत्राचार करें। नरेशकुमार शास्त्री आचार्य

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय

करतारपुर [जिला जालन्धर]

आर्यसमाज—शक्तिनगर, मिर्जापुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज शक्तिनगर का तृतीय वार्षिकोत्सव २५ मार्च से २८ मार्च १९८७ तक डा० भवानीलाल भारतीय [चण्डीगढ़] की अध्यक्षता में राष्ट्रीय एकता, वेद, शिक्षा एवं संस्कृति एवं आर्य युवा सम्मेलन के रूप में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय [चण्डीगढ़] ब्रह्मचारी आर्य नरेश [दिल्ली],डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री [अमेठी]. आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री [कुरुक्षेत्र] एवं भजनोपदेशक विश्रामसिंह आर्य [चुनार] आदि के चार दिन तक व्याख्यान प्रवचन, उपदेश भजन आदि की अमृत वर्षा होती रही। उत्सव के अन्तिम दिवस शनिवार २८ मार्च को आर्य युवा सम्मेलन में ठा० आर्य नरेश [दिल्ली] व डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री [अमेठी] ने ओजस्वी भाषण से शक्तिनगर के युवकों में जागृति की लहर पैदा कर दी। समस्त विद्वानों ने सम्पूर्ण कार्यक्रम में श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया।

आर्यसमाज बेलवलिया(बिहार)का ५वां उत्सव सम्पन्न

बिहार राज्य में भोजपुर जनपद के अन्तर्गत आर्यसमाज बेलवलिया का उत्सव गत १४ अप्रैल से १६ अप्रैल तक बड़े ही समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान सर्वश्री सूर्यबली पाडेय जौनपुर, वानप्रस्थी बिहारी दास, सियाराम 'निर्भय' आरा, सत्य प्रकाश आर्य भजनोपदेशक पटना तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तरंग सदस्य श्री सुदर्शनसिंह के व्याख्यान व उपदेश हुए। नागरिकों की काफी चहल-पहल रही।

—आर्य समाज राजाबाजार खड्डा (देवरिया) का ५४ वां वार्षिकोत्सव ११ मार्च ८७ से १३ मार्च ८७ तक समारोह पूर्वक संपन्न हुआ।

—आर्यसमाज उमरी कामपुर (देहात)का ६४ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १५ मार्च से १७ मार्च १९८७ तक बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। प्रत्येक दिन प्रातःकाल ८ बजे दिन से रात्रि के ११ बजे तक यज्ञ शंका समाधान प्रवचन भजन उपदेश के कार्यक्रम लघु समय अन्तराल के साथ होते रहे। अन्तिम दिन मंत्री श्री विश्वम्भर नाथ आर्य के पौत्र एवं श्री अशोक कुमार सचान के पुत्र का नामकरण संस्कार कराया गया। बालक का नाम "गौरव मित्रार्य्य" रक्खा गया।

वैवाहिक आवश्यकता

उत्सव

—आर्य समाज कस्बा सोहन ईटगांव (फतेहपुर) का वार्षिकोत्सव दिनांक २३ मई से २५ मई १९८७ के मध्य भव्य आयोजनों के साथ मनाया जायेगा।

—आर्य समाज अजीतमल इटावा का वार्षिकोत्सव दिनांक २२ मई से २४ मइ १९८७ तक हर्षोल्लास के साथ संपन्न होगा।

—आर्य समाज पाहसैयद राजा देवरिया का वार्षिकोत्सव आर्य उप प्रतिनिधि सभा गाजीपुर के तत्वावधान मे ३०, ३१ मई और १ जून ८७ को पं० सूर्यबली पांडेय, पं० राजपति शास्त्री, श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री योगीन्द्र प्रसाद जी तथा पं० नरसिंह तिवारी एवं श्रीमती ऊषा राय प्रवक्ता आदि विद्वानों के द्वारा बड़े धूमधाम से सम्पन्न होगा इसी दौर में क्षेत्रीय समाजों में जोधपुर, टिसौरा और महेवा का भी कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

'आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल. डब्ल्यू/एन. पी. ७९
वैसाख शुक्ल ५
रविवार, ३ मई १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आन्दोलन

आर्यसमाज जौनपुर में मुस्लिम परिवार की शुद्धि

दिनांक ११ अप्रैल को आर्यसमाज जौनपुर के ८७ वें वार्षिकोत्सव पर श्री उत्तमचन्द जी शरर के प्रयास से श्री प० सूर्यबली पाण्डेय के आचार्यत्व मे ५ मुस्लिम परिवार की शुद्धि हुई। श्री शरर जी ने उन का नाम श्री सकटाप्रसाद त्रिपाठी उनकी पत्नी का चन्द्रावती रखा पूर्व नाम आयशा,इकबाल था। पुत्री आसमा का गीता कुमारी,सल्मा का नाम ऊषा, पुत्र उमर का नाम अवधेश,कुमार रखा। पश्चात सायंकाल समाज के वार्षिकोत्सव पर इस परिवार का जनपद की समस्त समाजो की ओर से एवं विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ आदि संस्थाओ की ओर से अभिनन्दन हुआ। समाज के नवयुवक मन्त्री श्री सुरेन्द्रकुमार प्रधान ने इस अवसर पर १०००) भेंट किया।

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करे

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क माह १५ मई १९८७ मे समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २५) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

६२०, ८९१, २४९०, २७५४, २८४६, २९१८, ३३५४, ४४१२, ४७९७, ६१३१, ६१३९, ६५१२, ६६६५, ८१८९, ९१३०, ९१३९, ९४५२, ९६५५, ९८१०, ११९९४, ११५९८, ११६००, ११६१९, ११६३३, ११९२३, ११९२५, १२१८८, १२१८९, १२१९१, १२६५९, १२८९२, १२८९४, १२९००, १२९०४, १२९०५, १२९०९, १३११३, १३११०, १३११६, १३११८, १३४६७, १३४६८, १३४७३, १३७८९, १३७९० १३७९१, १३७९२, १३७९३, १३७९९, १३८००, १३८१०, १३८११, १३८१२, १३८१३, १३८१४, १३८८०, १३८८२।

विनीत—
व्यवस्थापक

उत्सव

—आर्यसमाज शाहजहापुर (रजिस्टर्ड) का ११० वर्षीय वार्षिक उत्सव दिनाक २१ मई से २४ मई तक समारोह पूर्वक सम्पन्न होगा।

—आर्य समाज बिहारीगढ़ (सहारनपुर) का वार्षिक उत्सव २१ से २३ मई तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न होगा।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए अमरनाथदीप आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ | घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८५

वैसाख शुक्ल १२, रविवार, संवत् २०४४ वि० दिनांक १० मई १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

★

वर्ष ९०
अङ्क १८

सरकार आतंकवाद के समूल नाश के लिए प्रतिबद्ध हो

पञ्जाब में नरहत्यायें दैनन्दिन कार्य बन गई

अदालत परिसर में अन्धाधुन्ध गोली वर्षा करके ३ कुख्यात आतंकवादी जबरन छुड़ाये गये

पजाब में नित्य निरपराध लोगो की हत्यायें अब साधारण बात हो गई हैं। पुलिस प्रशासन शान्ति स्थापन में असफल है। २७-४-८७ को अमृतसर न्यायालय में आतङ्कवादियों ने अन्धाधुन्ध गोलियां बरसायीं जिसमें ९ व्यक्ति मारे गये। आतंकवादी जबरदस्ती पुलिस से ३ कुख्यात आतंकवादी छुड़ा ले गये। ये आतङ्कवादी शिनाख्त के लिये लाये गये थे।

मरने वालों मे एक सुरक्षाबल का इन्सपेक्टर व २ सिपाही भी हैं।

पजाब मे पुलिस से आतंकवादियों को छुड़ाने की यह पहली घटना नहीं है। पहले भी कई बार कुख्यात आतंकवादी पुलिस से छुड़ा लिये गये। परन्तु इसके निरोधक उपाय अब तक पंजाब प्रशासन न ढूंढ़ सका। यह घटनायें पंजाब पुलिस पर एक प्रश्नचिन्ह बनाती हैं?

सरकार को चाहिये कि अब इन घटनाओं के प्रतिरोध के लिए सख्त कदम उठाये। दोषी पुलिस कर्मियो को भी कठिन दण्ड दे। सशस्त्र सुरक्षाबल को पूर्ण सक्षम बनाकर आतङ्कवादियों को देखते ही गोली मारने का आदेश दे।

विशेष अदालत का गठन करके गिरफ्तार आतंकवादियों को तत्काल दण्डित कराने की व्यवस्था हो।

पाक को शस्त्रास्त्र पूर्ति से गम्भीर खतरा

५० करोड़ डालर के हथियार खरीद की पाकिस्तानी योजना

अमेरिका द्वारा निरन्तर पाकिस्तान को शस्त्रास्त्रों की आपूर्ति से भारत उपमहाद्वीप के लिए गम्भीर खतरा उत्पन्न हो रहा है, विदेश मन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी ने यह लोक सभा को बताया। उन्होने कहा कि-भारत के इस सन्देह की भावना से अमेरिकी कांग्रेस और सीनेट को भारत के उपविदेश मन्त्री श्री नटवरसिंह ने स्पष्टतया अवगत करा दिया है।

श्री तिवारी ने लोक सभा मे १९८७-८८ की अनुदान मांगों पर हुई बहस का समापन करते हुये उक्त बात कही।

नवीनतम समाचारों के अनुसार पाकिस्तान ५० करोड़ डालर के हथियार खरीद की एक नयी योजना बना रहा है। प्रेक्षकों के अनुसार इस खरीद का उद्देश्य अमेरिकी व चीनी सहायता से नये लड़ाकू जेट विमान बनाना है। पाकिस्तान के इन विमानों को सेबर-२ नाम दिया है। ये विमान प्रक्षेपास्त्रों तथा उच्च स्तरीय राडार से युक्त होने से अमेरिकी एफ-१६ लड़ाकू विमानों जैसे ही घातक होंगे।

—आ० वेदव्रत अवस्थी

से आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ।।

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

—रविवार १० मई १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

"नहि त्वा कश्चन प्रति"

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना इस उद्देश्य से की थी कि यह संस्था वेद प्रचार के माध्यम से पाखण्ड, आडम्बर, अशिक्षा, अविद्या और असत्य को दूर करके विश्व का आर्य करण करे। स्वामी दयानन्द ऋषि थे और उनके पास एक दिव्य दृष्टि थी। उस दिव्य दृष्टि से ही उन्होंने स्पष्ट रूप में इस तथ्य को आत्मानुभूत किया था कि जब तक सत्य विद्या का प्रसार नहीं होगा, जन साधारण असत्य को अपना कर, अविद्या रूपी अन्धकार की भूल भुलैयों में भटकते रहेंगे, अन्ध विश्वासों की दल-दल मे धंसते रहेंगे और विनाश को प्राप्त होते रहेंगे। सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़नेमें सर्वत: उद्यत रहने के लिये उन्होंने वेद को ही सत्य विद्याओ का पुस्तक घोषित किया था और उसका पढ़ना-पढ़ाना, सुनना और सुनाना आर्यों का परम धर्म बतलाया था।

स्वामी दयानन्द ने जीवन पर्यन्त केवल वेद के आधार पर सत्य का प्रदर्शन किया, पाखण्ड का खडन किया और शास्त्रार्थों को चुनौती देकर, उनमें सर्वत्र विजय प्राप्त की। वे अपनी उपलब्धियों का श्रेय केवल वेद प्रतिपादित सत्य को देते थे। उनके हृदय मे एक वेदना थी कि आर्यावर्त्त में भारत जो कभी जगत गुरु था, जिसकी पावन भूमि ने असंख्य ऋषियों, ज्ञानियों, ध्यानियों, मुनियो तपस्वियों और सन्तों को जन्म दिया था, उसकी दुर्दशा उनकी संततियो के द्वारा छल कपट, ढोंग और आडम्बर युक्त जीवनों के माध्यम से कर दी गई है और जिसका प्रमुख कारण है, उनका धर्मके मूल, वेद प्रतिपादित सत्य से हट जाना। एक ईश्वर के स्थान पर अनेक कल्पित देवी देवताओं का प्रतिमाओ के रूप में पूजन, महान पुरुषो को परमात्मा के अवतार घोषित कर उनकी लीलाओं का मिथ्या प्रदर्शन तथा अपने को ही सिद्ध पुरुष मान कर अथवा परमात्मा का प्रतिनिधि मान कर, गुरुडम के आधार पर स्वार्थ सिद्धि करना और भोली भाली जनता को पथ भ्रष्ट करना।

आज स्वामी दयानन्द हमारे मध्य मे विद्यमान नहीं हैं परन्तु उनके असंख्य अनुयायी हैं और उनके सम्मुख आज एक बहुत बड़ी चुनौती है जिसका सामना उन्हे करना है। स्वामी दयानन्द जी के काल में देश की जो अधोगति थी, आज उसकी दुर्दशा और भी भयंकर है। इस देश की धरती पर ऐसे अनेक व्यक्ति विचरण कर रहे हैं जो अपने को परमात्मा अथवा उसका प्रतिनिधि घोषित करके गुरुडम का जाल बिछा कर, शिष्य और शिष्याओं को 'उसमें फंसा कर, उन्हें सत्य मार्ग से विचलित करके, अपनी लोकेषण और वित्तेषणा की पूर्ति कर रहे हैं। रजनीश पहले आचार्य बने, फिर भगवान। अपने देश के चेले चेलियों से संतुष्टि न [illegible] तो विदेशियों को अपने मनमोहक जाल में फंसा, 'भोग से समा[illegible] [illegible]न्मुक्त यौनाचार को बढ़ावा दिया अमरीका में रजनीश पुरम् [illegible] [illegible]पना की परन्तु 'सत्यमेव जयते नानृतम्' के अनुसार पाप का घड़ [illegible] कर फूटा, बन्दी गृह में बन्दी हुए वहां से निष्कासन हुआ-जब कहीं [illegible]कसी अन्य देश में शरण न मिली तो पुन: भारत लौट आए। बाल दिवाकर भगवान बनकर सम्प्रदाय चला रहे हैं और ब्रह्माकुमारियों के पिता, ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिमूर्[illegible] के प्रतीक बन कर, पाखंड के पाताल में भोली-भाली धर्म परायण जनता को धकेल रहे हैं। इसी भांति अन्य अनेक ऐसे सम्प्रदाय हैं, [illegible] गुरुडम का बोल बाला है।

आर्य समाज, जिसे इनसे सशक्त लोहा लेना है, वह अपने परम [illegible]र्म को विस्मृत कर, अनेक नगण्य कार्यों में अपनी शक्ति का व्यय कर रहे हैं अथवा अपने-अपने क्षेत्र मे निकृष्ट पदों के मोह मे एक दूसरे से जूझ रहे है जिसके कारण युवा वर्ग उससे निरन्तर दूर होता चला जा रहा है और उसके सम्पर्क में आने वाले अनेक प्रतिभा वान मनुष्य भी परे हट कर, असत्य की खाइयो में पुन: गिरते चले जा रहे हैं। इस शृंखला की नवीनतम कड़ी में गुरुडम को बढ़ावा देने वाले पं० श्रीराम शर्मा हैं जो आचार्य रूप मे 'गायत्री परिवार' का संचालन कर रहे हैं। गायत्री यज्ञों में गायत्री की प्रतिमा पूजन से आरम्भ करके गुरुडम अवतार वाद और चमत्कारवाद आदि तक का प्रचार, उन सबके लिए वेदना मय तो है ही पर सर्वथा असहनीय भी क्योकि सत्य मार्ग का पथिक जब असत्य मार्गी हो जाए, संन्मार्ग को तज कर कुमार्ग को अपना लें और अपने साथ दूसरो को भी डुबोने का प्रयत्न करें, तो आवश्यक हो जाता है कि जन साधारण को सचेत किया जाए, उनकी रक्षा की जाए और उनके क्षीर नीर विवेक को जाग्रत किया जाए।

श्री राम शर्मा आर्यसमाज चौक मथुरा के अध्यक्ष, श्री विरजानन्द ट्रस्ट श्री विरजानन्द विद्यालय तथा डी० ए० वी० जू० हाई स्कूल के अध्यक्ष पदों को सुशोभित कर चुके है। उन्होने स्वामी दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन भी किया होगा और उन्हें यह भली-भाति विदित होगा कि इस ग्रन्थ के ११ वें समुल्लास में स्पष्ट रूप से वर्णित है कि प्रतिमा पूजन कैसा घोर पाप और जघन्य अपराध है और जिसके कारण इस आर्य जाति का सर्वनाश हो गया और वह सहस्त्रों वर्ष तक पराधीनता के बन्धन में बन्धी रही और दासत्व की वेदनाओं को भोगती रही। आपका अपने को 'वेद मूर्त्ति' कहलवाना, पुस्तकों पर छपवाना, चारो वेदो का भाष्यकार, षट् शास्त्रों का ज्ञाता, ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदों का व्याख्याता बतलाने के साथ अब ऐसा घोषित करना कि प्रकाश पुञ्ज के दर्शन के साथ योगियो के सूक्ष्म शरीर आप के सम्मुख उभरते हैं और बोलते हैं, आदि बातें सत्य से तो परे हैं ही, पर अन्य अनभिज्ञो के लिए उन्हें जाल में फांसने के लिए भी हैं।

आचार्य प्रेम भिक्षु : जी ने श्री राम शर्मा के नाम एक खुला पत्र प्रकाशित कर, सत्य असत्य के निर्णयार्थ जो चुनौती दी है, उसका हम स्वागत करते हैं। यह खुला पत्र तपोभूमि मासिक पत्रिका, जो सत्य प्रकाशन मथुरा द्वारा प्रकाशित की जाती है, उसके नवम्बर ८६ के अंक में छापा [illegible] है। आर्य जनो को चाहिये कि वे इस खुले पत्र को पढ़कर वास्तवि[illegible] [illegible] जानें और गायत्री परिवार के सदस्यों को पढ़ा

(शेष पृष्ठ १० पर)

स्वामी दयानन्द का ऐतिहासिक भ्रमण

[डा० शिव पूजन पाण्डेय, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ]

महाशिव रात्रि की घटना, बहिन की अल्प आयु मे मृत्यु एव सर्वाधिक स्नेह करने वाले चाचा का निधन आदि घटनाओ ने उनके मन मे वैराग्य की भावना को जागृत किया। इसी भावना से उत्प्रेरित होकर स्वामी दयानन्द (पूर्व नाम मूल शकर) ने गृह त्याग का निर्णय लिया जिसकी परिणति १८४६ मे जन्म स्थली को छोडकर की।

स्वामी दयानन्द ने गुजरात के विभिन्न स्थानो का भ्रमण करने के उपरात १८५५ मे उत्तर प्रदेश (१८५६–१८७७–इस प्रान्त को नार्थ वेस्टर्न प्राविन्सेज एण्ड अवध १८७७–१९३७–यूनाइटेड प्राविन्सेज आफ आगरा एण्ड अवध लेकिन अध्ययन की सुविधा हेतु उत्तर प्रदेश नाम से ही सम्बोधित करते रहेंगे।) मे प्रवेश किया। सर्व प्रथम प्रदेश के उत्तरी पहाडी क्षेत्रों मे ही जाना श्रेयस्कर समझा। इसी वर्ष उन्होने ऋषिकेश, टिहरी, रुद्रप्रयाग, अगस्त्य मुनि (रुद्र प्रयाग से १० मील दूर) एवं शिवपुरी मे लगभग पाच माह व्यतीत किया। तत्पश्चात् केदार नाथ, गुप्तकाशी, त्रियुगी नारायन, गौरीकुण्ड, भीमगुफा, तुंगनाथ की चोटी जो मूर्तियों, पुजारियो एव सनातनी विद्वानो से परिपूरित स्थान था, भ्रमण किया। अपनी यात्रा यथावत् बनाये रखते हुए वे ऊखीमठ से गुप्तकाशी, जोशीमठ तथा बद्रीनारायण पहुचे जहा उनका वार्तालाप नम्बूदरी ब्राह्मण (प्राय दक्षिण भारत मे प्राप्य) रावल जी से हुआ। तत्पश्चात् अलकनन्दा पार करते हुए उन्हें अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पडा। लेकिन विपरीत परिस्थितियो के बावजूद उन्होने वसुधारा से बद्रीनरायन होते हुए रामपुर स्टेट मे राम नगर के पीपल कोठो नामक स्थान पर विश्राम किया। तदुपरान्त चिल्किया घाटी से नैनीताल मे काशीपुर के लिए प्रस्थान किया। वे दिसम्बर १८५५–फरवरी १८५६ तक नैनीताल के द्रोणसागर नामक स्थान पर रहे।

प्रारम्भिक वर्षों मे स्वामी दयानन्द जी का मुख्य उद्देश्य ज्ञानार्जन करना था, जिसके लिए वे योग्य विद्वानों की खोज मे पहाड़ी क्षेत्रो मे भ्रमण करते रहे, परन्तु पहाड़ी क्षेत्रो के भ्रमणोपरान्त कुछ अन्य मनीषियो के ससर्ग हेतु मैदानी क्षेत्रो की भी यात्रा प्रारम्भ की। ५ अप्रैल १८५६ मे शृगी रामपुर (फर्रुखाबाद) से कानपुर पहुचे, तत्पश्चात् सितम्बर १८५६ मे इलाहाबाद, मिर्जापुर, फतेहपुर–होते हुए वाराणसी पधारे। जहा भूमनन्द, कर्ताराम और राजाराम जैसे विद्वानो से सम्पर्क हुआ। वाराणसी से चुनारगढ़ का भ्रमण किया।

अन्तत. उन्हें आत्मानुकूल गुरु की प्राप्ति हुई जिनसे तर्क और व्याकरण मे महारथ हासिल की। उनका नाम था स्वामी विरजानन्द जी दण्डी।

स्वामी दयानन्द ने गुरु की सेवा मे १८६०–१८६३ तक का समय व्यतीत किया और मथुरा मे ही ज्ञानार्जन किया। गुरु की शिक्षा से प्रेरित होकर १८६३ से वृन्दावन, आगरा, मथुरा आदि स्थानो का भ्रमण किया और अपने वक्तव्यो को मुखरित किया।

(१८६७–१८६९) का समय उनके ज्ञान की तेजस्विता की परीक्षा का था। १८६७ मे पटियाली सराय, एटा, कायमगज (फर्रुखाबाद) और अनूपशहर पधारे–जहा सस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् अम्बादत्त जी से स्वामी दयानन्द का शास्त्रार्थ हुआ। शास्त्रार्थ मे अम्बादत्त जी ने अपनी हार स्वीकार की और अपने अनेक शिष्यो सहित स्वामी जी के शिष्य बन गए। इस बीच कर्णवास के हीरा वल्लभ भी उनसे शास्त्रार्थ मे पराजित हुए। १८६८ मे अपने वक्तव्यो एव तर्कों से प्रभावित करते हुए रामघाट, कठिलाघाट, चंदियाघाट, अनूपगढ़, सरोन का भ्रमण किया। लेकिन इसी दौरान उनके गुरु विरजानन्द की मृत्यु के समाचार ने उन्हे अत्यधिक दुखी किया। इसी वर्ष अक्टूबर माह मे स्वामी दयानन्द ने सरावल, शहबाजपुर, कादरगज, नवोली आदि स्थानो का भ्रमण किया। कायम गज के पडित हरिशकर जी से एक शिक्षालय में पौराणिक विषयो पर शास्त्रार्थ हुआ और पडित जी पराजित हुए इनके अतिरिक्त बलदेव प्रसाद और परमानन्द ने भी तर्कों से पराजित होकर स्वामी दयानन्द की शिष्यता ग्रहण की।

२५ जूलाई १८६९ मे स्वामी दयानन्द बिठूर, मदारपुर से कानपुर पधारे और भैरव मन्दिर के निकट दरगाहीलाल के सान्निध्य मे रहकर हृदयनारायन जी के आतिथ्य को स्वीकार किया। स्वामी जी की उपस्थिति कानपुर के प्रकाण्ड विद्वानो, ज्योतिषियो के लिए बाधा थीं। स्थानीय विद्वानोमे हलधर ओझा और लक्ष्मण शास्त्री प्रमुख थे, जिन्होने कलक्टर थेन की अध्यक्षता मे शास्त्रार्थ हेतु स्वामी दयानन्द को चुनौती दी। उक्त तार्किक युद्ध का समाचार सम्पूर्ण कानपुर क्षेत्र में फैल गया और लोगो ने दूर दराज क्षेत्रो से आना शुरू किया। विद्वानो ने मूर्तिपूजा का समर्थन किया तथा एकलव्य को उत्कट सफल मूर्ति पूजक बताया जबकि स्वामी दयानन्द ने इसका खण्डन करते हुए एक अभ्यास मात्र बताया। वैदिक तथ्यो के आधार पर उन्होने मूर्तिपूजा के विरोध मे तर्क देते हुए कहा कि "यदि सेवक को स्वामी आदेश दे कि, उत्तर दिशा की ओर जाओ तो तीन दिशायें स्वत निषेधात्मक मान ली जाती है।" जबकि विद्वानो का कहना था कि "वेद मे कहीं भी मूर्तिपूजा के निषेध की बात नहीं कही गया है।"

इसके बावजूद विद्वानो ने बहुमत के आधार पर अपनी विजय की घोषणा कर दी लेकिन अध्यक्ष कलक्टर "थेन' ने अपने निर्णय को सुरक्षित रखा और अगले दिन अपने निर्णय की सूचना निम्न रूप से प्रकाशित की—"महाशयो मेरी सम्मति मे स्वामी दयानन्द की युक्तिया वेदानुकूल थी यदि आप लोग चाहेंगे तो प्रमाण भी दे दूगा।"—पी० डब्ल्यू० थेन।

तीसरा और अत्यन्त महत्वपूर्ण शास्त्रार्थ वाराणसी मे सम्पन्न हुआ। वाराणसी विद्वानो, मनीषियो एव कर्म काण्डियो का गढ़ माना जाता था। उसके साथ स्थानीय राजा एव आम लोगो की धार्मिक भावना जुडी हुई थीं। १७ नवम्बर १८६९ को काशी नरेश ईश्वरी प्रसाद नारायण सिह ने स्वामी दयानन्द के बढते प्रभाव एव अपने पडितों के मन स्थिति को देखते हुए भव्य शास्त्रार्थ का आयोजन किया। स्वामी दयानन्द को उनके तर्कों एव ज्ञान को चुनौती दी।

क्रमश

आर्य समाज नाम अपरिवर्तनीय है

—आचार्य देवव्रत अवस्थी, वेद मन्दिर हिन्द नगर लखनऊ—५

(गताङ्क से आगे)

आय समाज के पुरोहित जहा तक मेरी जानकारी है आपकी परिभाषा से दूर ही रहते हैं वे सस्कारोंमे सस्कारो की यथा अवसर व्याख्या ही करते हैं। आपने लिखा है कि प्रार्थना मन्त्रो के आठ मन्त्रो से ही दुकान के उद्‌घाटन जन्म दिन या मृत्यु सम्बन्धी यज्ञ कराते ही देखा है। मुझे तो अपने ५६ वर्ष के जीवन मे आर्य समाजो मे ऐसा कभी देखने को नहीं मिला। हर अवसर पर विद्वान तत्कार्य अनुरूप ही मन्त्रो का पाठ व उनकी व्याख्या करते हैं। कई पुस्तकें भी प्रकाशित हैं। सस्कार विधि मे भी प्राय सभी का वर्णन व विवरण ऋषि ने दिया है। अध्यात्म सुधा के नाम से वैदिक साधन आश्रम रोहतक से भी एक पुस्तक प्रकाशित है।

द—४, आपने १६ सस्कारों को अव्यवहारिक बताया है आप ऐसे विचारो से वैदिक सस्कृति के नाश का ही प्रचार कर रहे हैं दयानन्द के सिद्धातो का नहीं। प्रत्येक सस्कारो का महत्व समयानुसार समझाने की नितात आवश्यकता है। सभी सस्कार सबके यहां अपनी अपनी परम्परानुसार होते अवश्य हैं उनको सस्कार विधि वर्णित व्यवस्थानुसार प्रचारित करने की आज नितान्त आवश्यकता है। क्योकि सस्कार मानव निर्माण की सीढ़ी है।

आप लिखते हैं कि विवाह १५ मिनट मे होना चाहिए यदि कोई एक मिनटमें ही कर लें तो कोई मना कैसे कर सकता है। परन्तु विवाह के महत्व को समझने वाले ही दूसरे को उसके समझाने की प्रेरणा दे सकते है। विवाह वासना पूर्ति का साधन नहीं एक समाज के सम्बर्धन का मूल है। उसका रहस्य १५—२० मिनट मे ही किसी को नहीं बताया जा सकता है। आर्य समाज के विद्वान निश्चय ही समयानुसार उचित व्याख्या प्रस्तुत करते है। उसमे यथावश्यक समय घटा बढ़ा लेते हैं। मैं स्वय भी विवाह कराता हू। साधिकार सगर्व लिखने में सकोच नहीं है कि ऐसे आप जैसे विचार वाले कई लोगों ने सस्कार सुनने के बाद सस्कार के महत्व को सर्वात्मना स्वीकारा है। मुझसे जब कोई पूंछता है सस्कार मे कितना समय लगेगा ? मेरा एक ही उत्तर रहता है "जितना वर और कन्या चाहेगे।" सामयिक व्याख्या से प्रभावित वर कन्याओं या उनके परिजनो ने सस्था की व्याख्या मे कभी मुझे रोका नहीं।

कृपया अपने विचार बदलें यह विचार आर्योचित नहीं हैं।

द—५—६, मूर्ति पूजा का ऋषि ने विरोध किया है परन्तु किसी पूर्वज का अपमान करने को नहीं कहा। पूर्वजो का सम्मान उनकी आज्ञाओ के पालन मे है मात्र फूल माला चढ़ाने मे नहीं। वेद भाष्य पर आपने लिखा है कि—हमारे यौगिक अर्थ व्यर्थ सिद्ध हो रहे हैं। यह आप भूल जाते हैं कि, महर्षि के वेद भाष्य से आज सम्पूर्ण जग प्रभावित है और उसे पूजा का विषय न मान कर सर्वांगीण ज्ञान का स्रोत मानने को विवश है।

द—७, महर्षि दयानन्दने सत्यार्थ प्रकाशमे देवताओ का सही विरले-
षण करके पाखण्ड से छुटकारा दिलाया है देवताओ का खण्डन नहीं किया है। आपके यह विचार अपरिपक्व हैं।

८—महर्षि दयानन्द ने मृत्यु दिवस मनाने को मना इसलिए किया है कि दिवगत आत्मा अपने कर्मानुसार नये शरीर मे चला जाता है पिछले सम्बन्धियो से कोई नाता नहीं रहता। हम उनकी स्मृति मे दु खी होते या पड़े पुजारियो के चक्कर मे लुटते रहते हैं। क्या आप यही चाहते हैं कि लोग आगे भी उसी प्रकार धूर्तों द्वारा लूटे जाते रहे ?

द—९, आर्य समाज कोई मत नहीं, कोई सम्प्रदाय नहीं यह विशुद्ध सनातन धर्म स्थापित करने का एक आन्दोलन है। कई शिक्षण सस्थाओ ने सस्थाओं पर नियन्त्रण हेतु अल्पमत की माग की भी है परन्तु मै इसके सर्वथा विरोध मे हू। मेरा दृष्टिकोण है कि आर्य समाज सरकारी तत्र पर स्पष्ट दबाव डाले भारतीय सस्कृति के प्रचार प्रसार हेतु नैतिक शिक्षा के प्रबल प्रचार के लिए। वह कागजी बनकर न रहे। हमारी सस्थाओ मे अनिवार्यताए उनकी कक्षायें रहें।

उपरोक्त लम्बी चर्चा के बाद बिल्कुल ही खुलासा हो जाता है कि आर्य समाज की आज से ११२ वर्ष पूर्व जैसी आवश्यकता थी वैसे ही आज भी है और सदा ही रहेगी। सत्य असत्य की समीक्षा करते रहना, जन-जन मे भारतीय वैदिक सस्कृति का प्रचार प्रसार करते रहना भी समाप्य नहीं है जहा इसमे रुकावट आयेगी वहीं देश बिगड़ेगा।

इसलिए मान्यवर आप अपनी ऐसी मान्यता का प्रचार छोड़ें सच्चे आर्य बनकर आर्य समाज के सच्चे स्वरूप को स्वीकार करके सबको उसकी उपादेयता समझाने के लिए कृत सकल्पी हो।

पण्डाल सुलगता रहा

बक्सर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव होकर रहा—

बक्सर ११ अप्रैल ! आर्य समाज बक्सर (बिहार) का ८०वां वार्षिकोत्सव बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया गया। दो अप्रैल से सात अप्रैल तक छ दिनो का कार्यक्रम बड़ा ही रोचक रहा। तीन अप्रैल को शोभा यात्रा एव झाकी निकाली गयी, जो नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई समारोह स्थल तक पहुचकर एक विशाल सभामे बदल गई। परन्तु दु ख की बात है कि कुछ उपद्रवियो द्वारा सात अप्रैल को पण्डाल में आग लगा दी गयी। फिर भी कार्यक्रम रुका नहीं, चलता ही रहा यह यहां के कार्यकर्ताओं के धैर्य एव आत्म सम्बल का परिचायक था।

इस अवसर पर श्री प० महेन्द्रपाल शास्त्री (पूर्व इमाम मेरठ) ने कुरान शरीफ की आयतो एव वेद की ऋचाओ की तुलना प्रस्तुत करते हुए यह सिद्ध किया कि वेद ही एक मात्र ऐसा ग्रन्थ है जिसमे सार्व भौमिकता है। वेद शाश्वत है 'अमर हैं। समारोह मे भजनोपदेशक कुवर महिपाल सिह ने अपने क्रान्तिकारी भजनो से सबको और श्रोताओ को प्रेरणा दी। समारोह मे प० शम्भुनाथ आर्य, राम कुमार आर्य, बिहारीलाल वर्मा, सुरेन्द्रनाथ ज्ञानप्रकाश आदि के भी प्रवचन हुए।

शरीयत के अनुसार श्री राम जन्म भूमि को बाबरी मस्जिद नहीं बनाया जा सकता

(डा० अमरेश, अफजल उल उलमा मद्रास युनिवर्सिटी)

दिनांक १० मार्च १९८७ ई० के दिल्ली नगर के प्रसिद्ध पंचतारा अशोक होटल के कक्ष क्रम संख्या ४०६ में विश्व हिन्दू परिषद, राम जन्म भूमि मुक्ति यज्ञ समिति, मजलिस ये मुशावरत, में जो भेंट वार्ता हुई थी यह वर्तमान परिस्थितिमें प्रमुख चर्चा का विषय बनी हुयी है। यद्यपि दो घंटे की दीर्घावधि चर्चा में किसी प्रकार की निर्णयात्मक वार्ता न हो सकी।

इस मीटिंग में श्री सय्यद शहाबुद्दीन एम. पी. ने अपनी धूर्तता का परिचय प्रदर्शित करते हुये प्रस्तुत कार्य के सम्पादन के लिए बड़ी दक्षता एवं चतुराई से सभा के आयोजन के पूर्व ही समाचार संवाददाताओं को बड़ी कुटिलता से उन्हें वहां से निस्कासित किया। यद्यपि हिन्दू प्रतिनिधियों की ओर से वार्ताकारों की उपस्थिति से सम्बन्धित कोई आपत्ति नहीं उठाई गई थी तथापि श्री शहबुद्दीन साहेब ये नहीं चाहते थे कि संवाददातओं के माध्यम से अपनी कुटिलता का पर्दाफाश हो जाए। हिन्दुस्तान के कट्टर संकीर्ण सांप्रदायिकता के समर्थक व पोषक श्री गुलाम मुहम्मद बनातवाले एम. पी. प्रारम्भ से लेकर मीटिंग के अन्तिम क्षण तक सांप्रदायिकता का विष उगलते रहे। जितने वक्तव्य मुसम्मानो की ओर से दिये गए है उससे यह स्पष्ट होता है कि वे इस ज्वलन्त समस्या को सुलझाने के पक्ष में नहीं है, अपितु दीर्घकाल तक उलझाना ही चाहते है।

मुसलमानों की ओर से अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए एक नया षडयन्त्र रचा जा रहा है। जिसके कारण हिन्दू प्रतिनिधियो के समक्ष एक प्रश्न उपस्थित किया गया है, "क्या हिन्दू इस बात को सिद्धकर सकते हैं कि इस संसार में भगवान राम नाम की कोई महान विभूति का जन्म हुआ था? गृहीत कर लिया जाए कि श्री भगवान रामचन्द्र जी का इस देश में जन्म हुआ था।

क्या यह प्रमाणित किया जा सकता है कि विवाद ग्रस्त क्षेत्र अयोध्यामें ही उनका जन्म हुआ था।" उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर हिन्दू नेताओं द्वारा जिस ढंग से देना चाहिए था उस प्रकार से नहीं दिया गया। समाधान कारक उत्तर न देने के कारण मुसलमानों का दुस्साहस बढने लगा और ऊल जुलूल बातें करने लगे। अतः समय और विषय की गंभीरता को ध्यान में रखते हुये प्रस्तुत किये गए उपरोक्त प्रश्नो का उत्तर सम्यक रूप से दिया जाना चाहिए।

यह सत्य है कि श्री भगवान राम नाम की महान विभूति इस संसार में विद्यमान थी। इसके लिए अनेक प्रमाण प्रस्तुत हैं। भारत की समस्त भाषाओं में जहां उनका उल्लेख है, वहीं अरबी तथा फारसी भाषा के ग्रन्थों में उनके जीवन का सविस्तृत परिचय उपलब्ध होता है। स्वयं मुस्लिम उलमा इन ग्रन्थों के प्रणयिता हैं। और उन्होंने श्री रामजी के प्रति अनन्य श्रद्धा निष्ठा, एवं आस्था प्रकट की है। उनकी मान्यता यही रही है कि भगवान राम जी का अवतरण इसी पुनीत अयोध्या नगरी में ही हुआ था। इसके अतिरिक्त जर्मन तथा योरोपीय भाषाओं में ऐसे अकाट्य प्रमाण दिए गए हैं जिन्हें कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। हम मुस्लिम बन्धुओं को सच्चे हृदय तथा विनीत भाव से यह स्पष्ट करना चाहते है कि आवश्यकता पड़ने पर इन प्रमाणों को निर्भयता पूर्वक न्यायालय में प्रस्तुत करने के लिए सिद्ध है। इसमें हमें किसी प्रकार का संकोच या भय नहीं है। उनसे पुनश्च अनुरोध है कि वे इस विश्वास में न रहें कि भोले-भाले कुछ हिन्दुओं की आंखों में धूल डालकर अपने स्वार्थ की पूर्ति में अनायास सफल हो जावेंगे।

क्या मुसलमान अपना मुख इस दुनिया के समक्ष दिखा सकेंगे जब कि हम आपके धार्मिक ग्रन्थो के आधार पर ही आपके अनुचित कृत्यों को जनता के समक्ष प्रस्तुत करेंगे? अतः इस सन्दर्भ मे आपको सचेत करना चाहते हैं कि भविष्य मे इस प्रकार सांप्रदायिक उन्माद को भड़काने वाली निम्न स्तर के कार्य कलापों से सावधान रहें।

इस समय सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न हमारे समक्ष यह उद्भव होता है कि क्या इस्लामी शरीयत के सिद्धांतो के आधार पर अयोध्या के राम जन्म भूमि जैसे विवाद ग्रस्त क्षेत्र में एक मस्जिद हो सकती है अथवा नहीं? जहां तक इस्लामी शरीयत का सम्बन्ध है उसके आधार पर किसी भी अवस्था मे उस स्थान पर एक मस्जिद हो भी नहीं सकती इसलिए कि :

१. उस स्थान के आसपास उतनी मुस्लिम आबादी नही है जितनी एक मस्जिद के लिए इस्लामी शरीयत के अनुसार होनी चाहिए।
२. यदि उस स्थान को मस्जिद मान ली जाए तो वह एक ऐसी मस्जिद होगी जो अनुचित प्रकार से कब्जा की हुई जगह पर निर्माण की गई है। अनुचित रूप से कब्जा की गई जगह पर खड़ी की गई मस्जिद अथवा अनुचित रूप से कब्जा की हुई इमारत को मस्जिद के रूप मे रूपान्तरित कर उसमे नमाज पढ़ना, प्रवेश होना अथवा उसमे मार्ग जाना शरीयत के आधार पर अनुचित एवं निषिद्ध है (मुजमरात)
३. जिस स्थान पर मूर्ति पूजा की जाती हो ऐसे स्थान को मस्जिद में रूपान्तर करना शरीयत के अनुसार दण्डनीय अपराध है। (अलमनार)
४. अन्य मतावलम्बियों के पूजागृहों को मस्जिद मे परिवर्तित करना शरीयत के आधार पर दण्डनीय अपराध है (आलमगिरिया)
५. किसी स्थान या इमारत के विषय मे जब तक इस बात का प्रामाणिक आधार (दस्तावेज) न हो कि वह स्थान समस्त मुस्लिम जाति के नाम प्रतिष्ठापित की गई है। ऐसे स्थानों के सम्बन्ध में मुतालबा करने का अधिकार हर मुसलमान को शरीयत के अनुसार प्राप्त नहीं है। (मुहल्ला)
६. किसी स्थान पर कोई मस्जिद हो अथवा किसी इमारत को मस्जिद का रूप दिया गया हो। जब इसके सम्बन्ध में इस प्रकार की जानकारी मिल जाए कि वह अनुचित कब्जा करके बनायी गयी है केवल इस प्रकार की जानकारी प्राप्त होने पर ऐसे मस्जिदों की मस्जिदी हैसियत समाप्त हो जाती है। यद्यपि वहां पर नमाज भी क्यों न पढ़ी जाती हो। (अलमजहरिया)

इस प्रकार के अनेक प्रमाण इस्लामी शरीयत के अंगीकृत एवं प्रमाणिकृत ग्रन्थों में विद्यमान है। इन सभी धार्मिक तथ्यों से आंख मोड़कर केवल राजनैतिक स्वार्थ साधने के लिए पवित्र राम जन्म भूमि को बाबरी मस्जिद मे रूपान्तिरित करने के लिए जो संघर्ष की जा रही है वह शरीयत के साथ कोई न्यायोचित कार्य नहीं है। यदि कोई इस भ्रम में पड़ा हो कि हम हिन्दुओं को बड़ी सुगमता से मूर्ख बना सकते है तो ऐसों से हमारा अनुरोध है कि वे तुरन्त ऐसे कार्यो का परित्याग कर दें। यदि भारतीय मुसलमानों को अपने इस्लामिक स्मारको की रक्षा की इतनी बड़ी चिन्ता है तो आगे आएं इस समस्या को अपने ही शरीयत के आधार पर समस्या सुलझाने के निमन्त्रण को स्वीकार करें। यदि उन्हें अपने ही शरीयत की जानकारी नहीं है तो हम उन्हें उसकी जानकारी देने को तैयार है।

ार्य समाज सदर बाजार दिल्ली के ताब्दी समारोह की तिथियों में परिवर्तन

आर्य समाज सदर बाजार दिल्ली का शताब्दी समारोह स्मारिका तिहास) विमोचन का कार्य अप्रैल मास सन् १९८७ मे होना श्चित हुआ था, किन्तु आदरणीय स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ाराज से विचार विमर्श होने के पश्चात् उपरोक्त कार्यक्रम आगामी टूबर मास सन् १९८७ मे होना निश्चय हुआ है। कृपया कार्यक्रम समय के बदलने की सूचना नोट कर लेवें।

आपके सहयोग एवम् शुभकामनाओं के लिए आर्य समाज-सदर जार आभारी है। कृपया दृष्टि बनाये रक्खें। धन्यवाद।

(वैद्य इन्द्र देव) मंत्री

जिला आर्योप प्रतिनिधि सभा गोरखपुर का निर्वाचन सम्पन्न

विगत १६ अक्टूबर १९८५ से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश आमगढ़ द्वारा निरस्त जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर का वर्ष ९८७ हेतु नव निर्वाचन दि० १९-४-८७ को विधिवत् सम्पन्न हुआ। समें प्रधान—श्री कल्पनाथ आर्य, उपप्रधान—श्री अवधेश कुमार राय, ी रमापति सिंह, श्री डॉ० पतिराज कश्यप, मंत्री—श्री के० एन० सिंह, रिष्ठ उपमंत्री—श्री ब्रह्म शरण लाल, संगठन मन्त्री—श्री अयोध्या प्रसाद, चार मंत्री—कौशल किशोर श्रीवास्तव, कोषाध्यक्ष—श्री वैजनाथ प्रसाद, य व्यय निरीक्षक श्री वीरेन्द्र नाथ आर्य निर्वाचित हुये।

उक्त निर्वाचन को आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. मान्यता प्रदान रते हुये इसे ही गोरखपुर जिले की विधिमान्य, प्रामाणिक जिला ार्योप प्रतिनिधि सभा घोषित करती है। निर्वाचन अधिकारी पूर्वी चार विभाग के संयोजक डॉ० विनय प्रताप जी रहे।

मनमोहन तिवारी मंत्री सभा

ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त (आधुनिक भीम) योग प्रचार हेतु विदेश यात्रा पर

ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त (आधुनिक भीम) संस्थापक गुरुकुल हाविद्यालय कण्वाश्रम दि० १२ मई को वैदिक धर्म एवं योग प्रचार हेतु पान, कनाडा, अमेरिका, स्विटजरलैण्ड, युगोस्लाविया, थाईलैण्ड, टेन, आदि देशो के लिए प्रस्थान कर रहे हैं। ब्रह्मचारी जी गुरुकुल हाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक हैं। इन्होने अपने शरीर को ब्रह्मचर्य वं प्राणायाम से वज्रवत् किया है। आपके शरीर सौष्ठव को देखकर . पू. राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरी ने आपको आधुनिक भीम की उपाधि दान की थी। आपके प्रदर्शन में दो गाड़ी एक साथ रोकना तथा जीप ोकना हाथी-बाधने वाली जंजीर तोड़ना। ट्रक्टर छाती से पार कराना, ाठ सूत का सरिया गले से मोड़ना, आँख से सरिया मोड़ना, हाथों की ाड़ी बन्द करना आदि साहसिक कार्य आते हैं। इसके अलावा फ्री ाइल कुश्ती मे भी आप दक्ष हैं। अरब देश के पहलवान 'जल्लादे रब' टाइगर साहब सिंह आदि प्रसिद्ध पहलवानों को परास्त करके ापने कुश्ती जगत् में खलबली मचा दी है।

"गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम" कोटद्वार से १० कि. मी. श्चमोत्तर में स्थित है।

प्रधानाचार्य
गुरुकुल महाविद्यालय
कण्वाश्रम (पौड़ी गढ़वाल)

"लाक्षागृह [बरनावा] मेरठ में सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का भव्य स्वागत"

विगत दि० ५-३-८७ को सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी के श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह बरनावा (मेरठ) में पहुंचने पर ब्र० कृष्णदत्त जी एवं प्रबन्ध समिति के अधिकारियों ने माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया। श्री सभा प्रधान जी ने सर्वप्रथम ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का धन्यवाद दिया कि उन्होंने लाक्षागृह जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल पर एक संस्कृत विद्यालय खोलकर एवं महात्मा गांधी जी की मूर्ति स्थापित करवा कर इस चतुर्वेद महायज्ञ का आयोजन करके चारों तरफ का वातावरण सुगन्धित कर रखा है। ये स्थल एक तीर्थ स्थान के समान है। जिसमें लाखो लोगो की भावनायें जुड़ी हुई हैं। बीच-२ में साम्प्रदायिक लोग शरारत करके इस वातावरण को दूषित करने का प्रयास करते रहते हैं। ऐसे विघटनकारी तत्वो से हमे सावधान रहने की आवश्यकता है। आज देश में विदेशियो के इशारे पर साम्प्रदायिक शक्तियां देश का विघटन करना चाहती हैं। पंजाब जो हमारे देश का सिर है उसी को आतंकवाद और हिंसा के भय से काटने का प्रयत्न किया जा रहा है। कहीं झारखंड और कहीं गोरखालैण्ड की बात अपने देश की स्वतंत्रता के लिए भयंकर खतरा बन गई है। इसलिए इस यज्ञ वेदी पर उपस्थित अपार जन-समूह को ये व्रत लेना चाहिये कि हम कभी भी अराष्ट्रीय तत्वों, साम्प्रदायिक तत्वों, विघटनकारी एवं उग्रवादी तत्वों के सामने नहीं झुकेंगे और अपने राष्ट्र की रक्षा के लिये अपने रक्त की अन्तिम बूंद तक बहा देंगे परन्तु देश के टुकड़े किसी भी हालत में नहीं होने देंगे।"

श्री सभा प्रधान जी का धन्यवाद किया गया।

—विगत २ मार्च ८७ को जगदीश शरण राजवंशी कन्या इन्टर कालिज बेगम पुल मार्ग, मेरठ के सत्रावसान के अवसर पर एक विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री इन्द्रराज जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, विशेष आमंत्रित अतिथि थे। इस अवसर पर श्री इन्द्रराज जी ने कहा कि अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष और आनन्दमय कोष—इन पांच का शरीर मे विशेष महत्व है। इनके माध्यम से हम अपना सर्वांगीण विकास कर सकते हैं प्राणायाम के द्वारा अपनी आयु-बुद्धि बढ़ा सकते हैं।

विद्यालय के प्रबन्धक श्री राजेन्द्र प्रसाद गोयल, राजहंस प्रकाशन, मे उपस्थित छात्राओं का आवाहन किया कि वे भविष्य में जीवन को किस प्रकार चलायें। उसमें क्या-२ परिवर्तन करें। छात्रायें जिस क्षेत्र मे भ जायें वहां कालेज, अपने परिवार एवं राष्ट्र के नाम को उज्ज्वल करें।

अन्त में श्री इन्द्रराज जी ने अध्यापिकाओं एवं छात्राओं को पुरस्कार वितरित किये। प्रबन्धक महोदय ने प्रधान जी का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

आचार्य विश्वश्रवा: जी अमेरिका से वापस

आचार्य विश्वश्रवा जी दो मास अमेरिका में रहकर लौटे हैं। वहां उनके व्याख्यान आर्य समाज मन्दिर, चर्च, विश्वविद्यालय तथा अन्य संगठनों में होते रहे। एक विश्वविद्यालय ने आचार्य जी को निकट पर सम्मानित डि० लिट०, की उपाधि देने का निश्चय किया है।

आचार्य जी की आंखों का आपरेशन हो जाने पर भी ठीक दिखाई नहीं देता अतः ग्रन्थों का प्रकाशन रुका हुआ है।

हम कितने धर्म-निरपेक्ष हैं ?

रंगमंच पर राजनीतिक और अश्लीलता आदि को लेकर अक्सर विवाद उठते रहे हैं। कई एक बार नाटक को आपत्तिजनक करार देकर पुलिस और प्रशासन ने नाटक की प्रस्तुति पर प्रतिबंध लगाए या रङ्ग कर्मियों की पुलिस ने पिटाई की या पूरे रङ्गकर्मी दल को गिरफ्तार कर लिया गया। कई एक मर्तबा कुछ नाटक दिव-अर्थी संवादों और अश्लीलता की वजह से विवाद और आलोचना के घेरे में आए। पर कुछ पहले बम्बई में अचानक एक नाटक जो प्रेक्षकों की अच्छी भीड़ जुटा रहा था विवाद के घेरे मे आ गया। इस नाटक के विवादग्रस्त होने की वजह न राजनीतिक थी और न ही कोई और बल्कि धार्मिक भावना के मुद्दे पर वह नाटक सुर्खी में आया।

नाटक था-'शेक्सपीयर की रामलीला। यह नाटक रिजर्व बैंक में काम कर रहे छब्बीस वर्षीय के० इकबाल ख्वाजा ने लिखा है। उनकी इस शेक्सपियर की राम-लीला' की प्रस्तुति के बाद यह सवाल उठ खड़ा हुआ कि क्या धार्मिक सहिष्णुता सिर्फ हिन्दू के लिए है ? यह सवाल तब उठा, जब आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के कैप्टन देवरत्न आर्य ने तार के जरिए यह कहा कि इस नाटक ने हिन्दुओंकी भावनाओं को बुरी तरह ठेस पहुंचाई है। कैप्टन आर्य ने इस नाटक पर तत्काल प्रतिबन्ध लगाने की भी माग की और एक आम संयुक्त हिन्दू मोर्चा के बैनर तले १०० व्यक्तियो का एक जुलूस पृथ्वी थियेटर पहुंच गया। हुआ यह कि 'इण्डियन एक्सप्रेस' में उस नाटक का कथा सार छपा था, जिसमें कहा गया था कि "रावण और सीता के किरदार रोमियो और जुलियट की तरह खेले गए।" ख्वाजा का कहना था कि मैंने लोगों को समझाने की कोशिश की थी कि 'इण्डियन एक्सप्रेस' में जो कुछ छपा, वह पूरी तरह गलत है, मगर क्रुद्ध और उत्तेजित लोगों से कौन तर्क कर सकता है ? पर कैप्टन आर्य का कहना है कि··· रामलीला' जैसे नाटक नई पीढ़ी के दिमाग को दूषित करने के लिए ही हैं, वरना ख्वाजा ने 'शेक्सपियर की कुरान क्यो नहीं लिखा और खेला ?

उत्तेजित भीड़ के नेताओ को ख्वाजा ने नाटक देखने की दावत भी दी, पर नाटक हो कैसे सकता था। अततः ख्वाजा ने अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष विक्रम सावरकर के पैर छूकर उनकी हर माग मानने का वादा किया और रामलीला की आगामी प्रस्तुतिया रद कर दीं।

सांप्रदायिक नजरो से हमारा हिन्दी रंगमंच कल-आज-कल अब तक बचा हुआ था, लेकिन अब यहाँ भी संप्रदायवादी हवा के झोके पहुंचने लगे है। हालाकि हिन्दी रंगमंच पर यह पहली बार था, पर क्या गारंटी है कि यह आखिरी बार है। (इससे पहले बम्बई मे केरल कैथोलिक समुदाय के लोगो ने एक नाटक पर इसलिए आपत्ति उठाई थी, क्योंकि उसमें 'क्राइस्ट' को एक सामान्य व्यक्ति की तरह पेश किया गया है) इसमें दो राय नहीं है कि राम लीला से हिन्दुओं की धार्मिक आस्था जुड़ी हुई है और ऐसे नाजुक विषय पर हास्य की रचना दुस्साहस भरा काम है। शायद ख्वाजा ने सोचा होगा कि बम्बई का प्रेक्षक वर्ग इस विषय को उसके वास्तविक अर्थों में ही देखेगा। पर यह हुआ नहीं। यह होगा भी नहीं, क्योकि आखिर हम धर्म निरपेक्ष हैं ··· ··· ··· ··· ··· ···ख्वाजा ने भी यही कहा है कि अब हम यह नाटक नहीं खेलेंगे।

अवधेश व्यास

शिक्षा का मूलाधार राष्ट्रीय और नैतिक चरित्र

विश्वनाथ प्रताप सिंह

"आज का शिक्षक यदि विद्यार्थी मे प्रश्न करने की भावना उत्पन्न कर दे तो यह समझना चाहिए कि उसने यदि पूरी नहीं तो कुछ शिक्षा तो दे दी है। शिक्षक को सोचना होगा कि वह जो शिक्षा दे रहा है, उससे छात्र का केवल बाहरी ज्ञान ही बढ़ रहा है अथवा उसके भीतर की चेतना को भी वह जगा पाया है या नही ? "ये शब्द आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से ताल-कटोरा इण्डोर स्टेडियम, मे दिनाक १९ अप्रैल को आयोजित महात्मा हंसराज दिवस के उपलक्ष्य मे मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए भू० पू० केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कहे।' उन्होने आगे कहा कि, न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त उसके स्कूल जीवन के आरम्भ मे ही उसके मस्तिष्क मे कौंधा था, जब उसने अपने अध्यापक से प्रश्न किया कि, पेड़ से अलग होने वाला सेब नीचे को क्यों गिरता है, ऊपर क्यो नहीं जाता ? शिव लिंग पर उछलकूद मचाने वाले चूहे को सर्वशक्तिमान शिव भगा क्यो नहीं पा रहा है ? महर्षि दयानन्द के मन मे यह प्रश्न तब उठा जब वह बालक मूलशंकर मात्र थे।

हमारी शिक्षा का मूलाधार राष्ट्रीय और नैतिक चरित्र होना चाहिए, इसके लिए शिक्षको का चरित्रवान होना अत्यन्त आवश्यक है। डी. ए. वी. आन्दोलन के जन्म से महात्मा हंसराज के मन-मस्तिष्क मे यह बात विद्यमान थी, इसलिए उन्होने उत्तम-राष्ट्रीय और वैयक्तिक चरित्र का स्वयं अपना उदाहरण अपने सहयोगियों के सम्मुख रखा। उसी का यह परिणाम है कि आज न केवल भारतवर्ष में अपितु समस्त विश्व में फैली हुई डी. ए. वी. संस्थाएं शिक्षा के साथ-साथ राष्ट्रीय शिक्षा एव नैतिक-चरित्र का पाठ भी भूले भटके इस मानव समाज को देने में समर्थ हो सके है।

हमे महर्षि के जीवन से अनेक शिक्षाएं प्राप्त होती हैं। जहाँ उनकी बोध-रात्रि की घटना बड़ी शिक्षाप्रद है, वहाँ उनके निर्वाण की घटना भी हमे निर्देश देती है कि जो तुम्हे विष का प्याला प्रस्तुत करे, उसको तुम अमृत का पान कराओ। यह बात केवल महर्षि दयानन्द सरीखा महापुरुष ही कर सकता था।

इस समारोह को प्रि० कृष्ण सिंह, प्रि० तिलकराज गुप्त, श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री, श्री वेद प्रताप वैदिक, प्रो० शेर सिंह, श्री रामचन्द्र विकल-संसद सदस्य, स्वामी सत्य प्रकाश जी सरस्वती ने भी सम्बोधित करते हुए वर्तमान मे डी. ए. वी. के सम्मुख उपस्थित समस्याएं, आर्य समाज का कर्तव्य, शिक्षकों का दायित्व, विश्व को भारत की देन आदि-आदि विषयो पर अपने विचार व्यक्त किए। अन्त मे समारोह के अध्यक्ष म० अमर स्वामी सरस्वती महाराज ने अपने आर्शीवचन द्वारा खचा-खच भरे इण्डोर स्टेडियम में समागत जन समूह को उपकृत किया। —रामनाथ सहगल

अनुकरणीय

—खेड़ा हटाना (मेरठ) दि० २८-४-८७ में श्री चौ० महावीरसिंह जी के दो लड़कोंका टेवा [लग्नपत्र] हरियाणा से आया। उन्होने २) रुपये लेकर उक्त विवाह स्वीकार किया तथा भविष्य में भी दहेज न लेने का आश्वासन दिया। उपस्थित लोगों ने इस अनुकरणीय कार्य की सराहना की।

मेरठ के पूर्व नियोजित दंगे की भर्त्सना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दिनांक १९-४-८७ को मेरठ में पूर्वनियोजित साम्प्रदायिक दंगे की घोर भर्त्सना की गयी। सर्वसम्मति से सदस्यों ने ऐसे घटनाओं के प्रति रोष प्रकट करते हुए निम्न लिखित प्रस्ताव पारित किया और दंगाइयों को कठिन दण्ड देने की मांग की।

प्रस्ताव

दिनांक १४-४-८७ को शब-ए-बारात के अवसर पर मेरठ में हुये दंगे मुस्लिम साम्प्रदायिक तत्वों द्वारा पूर्व नियोजित थे। एक ही समय में एक ही प्रकार से एक जैसे हिंसक-साधनों के उपयोग दंगे को योजना बद्ध होने की पुष्टि करता है। इतने बड़े स्तर पर नियोजित पूरे स्थानों पर आगजनी के फलस्वरूप भी प्रशासन बिल्कुल विफल रहा। गुप्तचर विभाग इतना निष्क्रिय रहा कि इस भयानक विस्फोट का उसे कुछ भी पता न चल सका। वास्तविकता तो यह है कि इस दंगे को प्रशासन ने जिस ढंग से लिया है वह मात्र औपचारिकता रही। दंगे सम्बन्धी कार्य वाही प्रशासन की अदूरदर्शिता का परिचायक है।

कर्फ्यू लगाने का निर्णय बहुत विलम्ब से लिया गया जिससे स्थिति से निपटना अत्यधिक कठिन हो गया। और दंगाई आतंक कर्फ्यू रहित क्षेत्रों में व्याप्त हो गया।

इस दंगे में एक विशेष सम्प्रदाय को निशाना बनाकर उसके अधिक से अधिक धन, जन की हानि के गयी। प्रशासनकी ओर से नौचन्दी मेला के दुकानदारों से ४८ घण्टे में दुकानें हटा लेने के आदेश तथा बिजली पानी एवं सुरक्षा की व्यवस्था तुरन्त हटा लेने के कारण दुकानदारों की अपूरणीय क्षति हुयी। यह भी अदूरदर्शिता रही।

इन सब बातों की गम्भीरता को देखते हुये प्रशासन इस दंगे में बिल्कुल असफल रहा।

इस अवसर पर समाज सेवी प्रेस प्रतिनिधि नागरिक परिषद के सदस्यों को पास न देना भी एक अदूरदर्शी निर्णय था।

अयोध्या, कासगंज और मेरठ में दंगा भड़काना एक गहरा षड़यन्त्र है जो पूरे प्रदेश को साम्प्रदायिक दंगों की आग में झोंक देना चाहता है।

दैनिक जागरण मेरठ में प्रकाशित दंगाई कारण का एक प्रत्यक्ष द्रष्टा प्रेस प्रतिनिधि ने खण्डन किया है। उन्होंने कहा है कि शब-ए-बारात में आतिशबाज, पटाखेबाज, ऊच्छंखलतासे पटाखे और आतिशबाजी चला रहे थे, जिसका प्रभाव दूसरे सम्प्रदाय की दुकानों, घरों पर पड़ रहा था, जिससे तनाव व्याप्त होता जा रहा था पुलिस इन्सपेक्टर ने बड़ी ही निष्ठा और सक्रियता से इस उन्माद का प्रतिरोध किया तो दंगाइयों ने उन पर प्राणघाती हमला किया। बारुद (हिंसक साधनों) को फेंका। सार्वजनिक सुरक्षा भंग होने की स्थिति को देखकर पुलिस इन्सपेक्टर को गोली चलानी पड़ी जिससे दंगा काफी हद तक नियंत्रित हुआ। इसके लिए वह बधाई का पात्र है।

अतः यह सभा प्रदेश सरकार से मांग करती है कि इस दंगे को सख्ती से दबाया जाये तथा दंगाइयों को सख्त से सख्त सजा दी जाये। जिन लोगों को अग्नि काण्डों से हानि हुई है जिन लोगों की दंगाइयों द्वारा हत्यायें हुयी हैं उनके परिवार को वित्तीय सहायता, संरक्षण एवं अन्य प्रशासनिक सुविधायें दी जायें। नौचन्दी मेले के समस्त दुकानदारों को किराये वापस किये जायें ताकि इतनी बड़ी हानि की कुछ क्षति पूर्ति हो सके।

श्री रामजन्म भूमि सरकार हिन्दुओं को सौंप दे!

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ की अन्तरंग सभा, दिनांक १९-४-८७ को लखनऊ में हुई जिसमें निम्नांकित प्रस्ताव पारित हुआ।

प्रस्ताव

मर्यादा पुरुषोत्तम राम हमारे राष्ट्रीय महामानव हैं उनकी जन्म स्थली अयोध्या एक ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय धार्मिक स्थल है जिसके साथ कोटि कोटि हिन्दुओं की भावनायें जुड़ी हुई हैं। इसमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप असह्य है। विगत दिनों से बाबरी मस्जिद को सामने रख कर जो राष्ट्र विरोधी भाषण दिये गये वे सभा उनकी घोर भर्त्सना करती है और सरकार को चेतावनी देती है कि समय रहते ऐसे विघटन कारी तत्वों को कठोर दण्ड देकर दबा दें जो कि देश में स्थान-स्थान पर विष फैलाकर पूरे देश में अराजकता पैदा कर रहे हैं।

सभा पुनः चेतावनी देती है कि राम जन्म भूमि हिन्दुओं का पावन धर्म स्थल है, उसे पूर्णतया हिन्दुओं को सरकार तुरन्त सौंप दे अन्यथा आर्य जनों को विवश होकर तीव्र आन्दोलन छेड़ना पड़ेगा जिसका पूर्ण दायित्व सरकार पर होगा।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, ५ मीरा बाई मार्ग, लखनऊ

अखिल भारतीय संस्कृत रक्षा समिति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन
रामलीला मैदान, नई दिल्ली—११०००२

श्रीमन् नमस्ते।

आपको विदित है कि संविधान की धारा ३४३ के अनुसार राष्ट्र—भाषा के नाम से प्रसिद्ध देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को राजभाषा स्वीकार किया गया है। उच्च स्तर के चिन्तन, शिक्षण अनुसंधान एवं प्रशासन, न्यायपालिका' विधायिका और कार्यपालिका आदि से संबंधित समस्त कार्यों के लिए संस्कृत निष्ठ हिन्दी ही उपयोगी हो सकती है। इसलिए संविधान की धारा ३५१ में हिन्दी को समृद्ध और सक्षम बनाने के लिए मुख्य रूप से संस्कृत से शब्दावलि को लेने पर बल दिया गया है।

यह भी निर्विवाद है कि आज भी देश की सभी भाषाओं में ओत—प्रोत संस्कृत की शब्दावली और उसमें उपलब्ध साहित्य और कर्मकाण्ड ने ही समूचे देश को एकता के रूपमें बांधा हुआ है। वस्तुतः इस देश का इतिहास और धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराएं संक्षेप में इस देश की अस्मिता संस्कृत के बिना सुरक्षित नहीं रह सकती। इस लिए आपसे निवेदन है कि आप निम्नलिखित प्रस्ताव पारित करें।

नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत निर्धारित पाठ्यक्रम में किसी न किसी स्तर पर प्रत्येक भारतीय के लिए अनिवार्य रूप से संस्कृत के पठन पाठन की व्यवस्था की जाए। एतदर्थ आवश्यक है कि त्रिभाषा सूत्र में मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा के साथ तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत को अनिवार्यता बनाया जाए। यह भी निश्चित है कि जब तक अंग्रेजी की अनिवार्य रहेगी, तब तक संस्कृत को उसका समुचित स्थान दिया जाना संभव न होगा।

इसलिए हमारी मांग है कि पाठ्यक्रम में त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत अंग्रेजी के अध्ययन की व्यवस्था विश्वविद्यालयों में ऐच्छिक विषय के रूप में की जाए।

उपरोक्त प्रस्ताव पारित कर—प्रकाशनार्थ सभी समाचार पत्रों तथा कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली एवं संयोजक संस्कृत रक्षा समिति के पास भेजें। भवदीय

ब्रह्ममित्र अवस्थी संयोजक

मुक्तक

कौन कहता है व्यथा धर्म की यूं छोटी है,
बीच मझधार के चलने से परख होती है।
प्यार या दुश्मनी छिपती नहीं छिपाने से,
सत्य आचरण की सबसे बड़ी कसौटी है॥

० ० ०

दर्द से पैदा हृदय में छन्द होते हैं,
गीत तो कवि के सभी निर्द्वंद होते हैं।
युग युगों तक जब कहीं कलिकाल रोता है,
तब कहीं पैदा दया के नन्द होते हैं॥

० ० ०

दूर पश्चिम में अभी तक चैन का एक पल नहीं है,
प्यार या सौहार्द का भी दूर तक सम्बल नहीं है।
देश की तुम व्यर्थ में सौगन्ध खाकर क्या करोगे,
हाथ में गंगाजली पर मन तो गंगा जल नहीं है॥

० ० ०

हो भरत का वंश मैं उपकार करना छोड़ दूं,
प्रीति से क्या दर्द का उपचार करना छोड़ दूं।
[illegible]
और मैं मन्दिर में भी जयकार करना छोड़ दूं॥

० ० ०

शैतानियत की क्या कोई तदबीर नहीं है,
इन्सानियत की क्या कोई तस्वीर नहीं है।
हो सिक्ख या हिन्दू हो मुसलमां या ईसाई,
ये देश किसी एक की जागीर नहीं है॥

० ० ०

है फूल सी कोमल मगर कांटों में पली है,
वीरान में हंसती कली गुलशन से भली है।
रोकर जियो तो जिन्दगी लगती है कसैली,
हंस कर मरो तो मौत भी मिश्री की डली है॥

—हरीश शर्मा, सिविल लाईन्स, बिजनौर

नीच संग कीच में प्रबुद्ध भी जो खो गये

ठहरे हुए थे अमृतसर में महर्षि,
सत्य धर्म का प्रचार करते हुए वहां।
पान मदिरा करके तिलकधारी कुछ,
एक दिन आ गये शास्त्रार्थ करने वहां॥

'शिव' देव दयानन्द के समीप आके सभी,
देने लगे गालियां शास्त्रार्थ करना कहां।
ईंट, धूल, पत्थरों को फेंकने का क्रम शुरू—
कर दिया ऋषिवर बैठे हुए थे जहां॥

शांतचित देव दयानन्द मुसकाते रहे,
किन्तु पास बैठे भक्तजन क्षुब्ध हो गये।
तत्पर हुए संघर्ष के लिए तुरन्त,
मना किया ऋषि ने विवश चुप हो गये।

राजर्षि रणञ्जयसिंह जू देव के जन्म दिवस पर

'एक अभिव्यक्ति'

अवध प्रान्त के राजशिरोमणि धर्म जगत के प्राण।
मानव जीवन के गरिमा गुरु देते जग को त्राण॥
वसुन्धरा के रत्न अनूपम जैसे हरि के बाण।
धन्य अमेठी नृपति रणञ्जय करते जन कल्याण॥

अज्ञ जनों को नहीं विदित है तव महिमा कल्याणी।
धर्म नीति के कुशल प्रचारक तव विवेकयुत वाणी॥
विद्यालय अनेक सरक्षित जिनसे पुलकित प्राणी।
नृपति रणञ्जय युग युग गूंजे तव अक्षयनिधि वाणी।

नृप शतायु हो जिनसे प्रेरित रहे सदा यह देश।
भव त्रयताप प्रपीडित मानव नहीं सहे अब क्लेश॥
सब जग को प्रेरित करते हैं जैसे नित्य दिनेश।
वैसे सदा प्रेरणा दो प्रभु प्रमुदित परम महेश॥

—महेश अवस्थी प्रवक्ता, राजकीय जुबली कालेज, लखनऊ

ले लो ज्ञान रे बन्दे

जर जोरू जायदाद में पड़ा रहा जो कोय,
तेली बैल समान है वो अपना ढोता बोय॥
माया मोह छोड़ कर सारे, रहना एक समान रे बन्दे।
अपनी कथा देख के मूरख, मत करना अभिमान रे बन्दे॥
धर्म को माने कर्म को जाने, मानुष की पहचान रे बन्दे।
दुख में रोये, सुख में गाये, मूरख वो इन्सान रे बन्दे।
विपत्ति पड़े तो हंस के जीना, प्रायश्चित्त करे निदान रे बन्दे।
शान से जीना, आन पे मरना, मत सहना अपमान रे बन्दे।
परोपकार ही सदाचार है, मिले तभी सम्मान रे बन्दे।
सत्य अहिंसा ही जीवन है, हिंसा मृत्यु समान रे बन्दे।
सबका दाता एक विधाता, यही है सत्य समान रे बन्दे।
मन्दिर बुत है मस्जिद चुप है त्याग इसे नादान रे बन्दे।
अन्तरयामी सबका स्वामी, ले ले तू वरदान रे बन्दे।
मुक्ति है आनन्द की युक्ति मिले तभी भगवान र बन्दे।
प्रकाश मिले सत्यार्थ प्रकाश से, ले ले तू महर्षि का ज्ञान रे बन्दे।
समय की गति पहचान लो 'शंकर' स्वयं करत उत्थान रे बन्दे।

—दयाशंकर आर्य आर्यसमाज गोरखपुर (बखशीपुर)

नीचता के चिन्ह सारे इनमें प्रकट 'शिव',
उचित न होगा यदि हम भी क्रुद्ध हो गये।
अज्ञानी ज्ञानी में रहेगा फिर अन्तर क्या?
नीच संग कीच में प्रबुद्ध भी जो खो गये॥

—शिव कुमार 'रैकवार' धुरजी, सुतौली (बहराइच)

नहि त्वा कश्चन प्रति

(शेष पृष्ठ १ से आगे)

कर उन्हे भी सचेत करें ताकि कुफ्रम के अभिशाप से उन्हें बचाया जा सके। यदि आचार्य ओरम शर्मा अपने द्वारा व्यक्त विचारो में किंचित मात्र भी सत्य का दर्शन करते हो तो उन्हे न केवल इस खुले पत्र का खुला उत्तर देना चाहिये वरन् शास्त्रार्थ की चुनौती को भी स्वीकार करना चाहिए ताकि सत्य और असत्य का खुलम खुल्ला सार्वजनिक रूप में निर्णय किया जा सके क्योंकि वेदानुसार 'सत्ये नोत्तभिता भूमि' [अ० १४/१/१] भूमि सत्य से टिकी हुई है 'नतस्य प्रतिमाऽस्ति' [य० ३२/३] उस परम की कोई मूर्त्ति नहीं है और 'नहित्वा कश्चन प्रति' [ऋ० ८/६४/२ साम० १३५५] तेरा कोई प्रतिनिधि या प्रारूप नहीं है।

—वसन्त

निर्वाचन

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा
कानपुर देहात
प्रधान श्री ओ३म प्रकाश जी आर्य
मन्त्री श्री जयकरन सिंह जी आर्य
कोषा० श्री प्रभुदयाल जी आर्य

आर्य समाज बहजोई (मुरादाबाद)
प्रधान श्री चन्द्रपाल आर्य
मन्त्री डा० लव कुमार आर्य
कोषा० श्री अनिल कुमार

तहसील आर्य सभा ठाकुर द्वारा
(मुरादाबाद)
प्रधान श्री शान्ति स्वरूप सिंह जी
मन्त्री श्री सोम प्रकाश आर्य
कोषा० श्री छज्जू मल जी

आर्य समाज सम्भल (मुरादाबाद)
प्रधान श्री विक्रमसिंह आर्य
मन्त्री श्री विशेष बाबू
कोषा० श्री सत्य वीर जी

आर्य समाज मन्डी बास, मुरादाबाद
प्रधान श्री वेद प्रकाश जी
मन्त्री श्री अम्बरीष कुमार जी
कोषा० श्री राधा रमन जी

आर्यसमाज नगला अब्बू, गाजियाबाद
प्रधान श्री चन्द्र किरन शर्मा
मन्त्री श्री भगतराम शर्मा
कोषा० श्री राम निवास

आर्य समाज रामपुर सफेद बाग
प्रधान श्री जीवन सिंह जी
मन्त्री श्री भूदेवसिंह जी
कोषा० श्री मनू सिंह जी

आर्य समाज सराय तरीन हयात नगर (मुरादाबाद)
प्रधान श्री देवेन्द्र आर्य जी
मन्त्री श्री भूमित्र आर्य
कोषा० श्री हरिश्चन्द्र आर्य

आर्य समाज नामनेर (आगरा)
प्रधान श्री बृजलाल जी खंडेलवाल
मन्त्री श्री दीवान वृतपाल आर्य
कोषा० श्री भगवान जी

आर्य समाज अडींग (मथुरा)
प्रधान श्री जगदीश चन्द्र त्यागी
मन्त्री श्री जगदीश प्रसाद शर्मा
कोषा० श्री महावीर प्रसाद आर्य

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद द्वारा त्रैमासिक-प्रचार-कार्य

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद द्वारा जनवरी फरवरी मार्च के त्रैमासिक प्रचार में—

श्री प० इन्द्रजीत जी शास्त्री, श्री प्रो० उत्तम चन्द्र जी शरर, श्री विशम्भर दत्त जी शास्त्री, श्री प्रो० रमेश चन्द्र जी, श्री हरपाल जी शास्त्री, के अतिरिक्त सुयोग्य भजनोपदेशक श्री ओम प्रकाश जी वर्मा श्याम चन्द्र जी आर्य पथिक, श्री सत्यपाल जी, श्री राम चन्द्र जी शर्मा, ब्रह्मचारी कढक सेन, ब्रह्मचारी राम लाल आर्य, राकेश आर्य, तेजपाल सिंह आर्य, श्रीमती आशा, श्रीमती मीरा, श्री प० आशा राम जी, आदि ने अधोलिखित स्थानो पर प्रचार कार्य किया।

कैलसा, पृथीपुर, रामठ, काजीपुरा पठमी, अमनिया, फर्रुखाबाद, अमरोहा, रामपुर सफेद बाग, सदरपुर, कासमपुर, फतेहपुर बिश्नोई, सुरजन नगर, रामपुर घोघर, शेरगढ, बगडी, जब्बा, मीठा, नन्हेडा अल्यार, कुन्डेसरा, सकरावा, नगला, लेहडरा, कलोंदा, हस्तमापुर, हरफरी, सुराकपुर, कमसाव, मढी सलेमपुर, काजीपुरा, मोढी, हजरतपुर, ऊंट खेडा, शादीपुर, धनौरा मन्डी, मोहद्दीनपुर आदि।

हरिश्चन्द्र आर्य

पंजाब में बढ़ते आतंक व निरपराध प्राणियो की हत्या की घोर निन्दा

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरग सभा दिनांक १९-४-८७ मे पजाब मे निरन्तर हो रही जघन्य हत्याओ, आतंकवाद उग्रवाद की बडी गम्भीरता से चर्चा करके उसकी घोर भर्त्सना की गयी और निम्न लिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ।

प्रस्ताव

"पजाब मे निरन्तर निरपराध व्यक्तियों की जघन्य हत्याओ, बढ़ते आतंकवाद पर घोर चिन्ता व्यक्त करते हुये सभा ने सर्वसम्मति से केन्द्र सरकार से अनुरोध किया कि वह पजाब की इस दुरवस्था से रक्षा करने के लिए सक्रिय कदम उठायें। इस सदन का निश्चित मत है कि वहा शाति स्थापन के लिए अविलम्ब राष्ट्रपति शासन लागू किया जाना चाहिए और सीमा पट्टी का निर्माण होना चाहिए एव अपराधियों को कठिन से कठिन दण्ड देने के लिए पृथक से विशेष न्यायालय का गठन किया जाना चाहिए।

आर्य समाज सीसामऊ, कानपुर
प्रधान श्री लक्ष्मण कुमार शास्त्री
मन्त्री श्री बसवन्त राय जी लाम्बा
कोषा० श्री वेदपाल जी

स्त्री आर्य समाज सीसामऊ, कानपुर
प्रधान श्रीमती शशिकान्ता जी शास्त्री
मन्त्री श्रीमती स्वर्ण कुमारी जी अरोडा
कोषाध्यक्ष श्रीमती शीलवती जी सक्सेना

आर्य समाज अफजल गढ़ बिजनौर
प्रधान श्री चौ० विजयपाल सिंह
मन्त्री श्री सतीश कुमार आर्य
कोषा० श्री चौ० चरन सिंह

आर्य समाज टाडा बादली रामपुर
प्रधान श्री कुलदेव जी आर्य
मन्त्री श्री सुधीर कुमार जी आर्य
कोषा० श्री विनोद कुमार जी आ

हमारी डाक

राष्ट्रपिता और राष्ट्रपति–एक विवेचन

[इस स्तम्भ मे व्यक्त विचारो से सम्पादक मण्डल का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं समझना चाहिए।]

जिस देश के रहने वाले अपने देश को जन्म भूमि, मातृभूमि, पितृ भूमि तथा पुण्य भूमि मानते हैं क्या उस देश का भी कोई राष्ट्रपिता या राष्ट्रपति उस देश का निवासी हो सकता है ? यह बात हमारे सामने एक प्रश्न चिन्ह के रूप मे खडी है।

१९४७ मे देश के विभाजन के पश्चात दो शब्द राष्टपिता तथा राष्ट्रपति हमारे देश मे पूरी तरह से प्रचलित हुए। हममेसे किसी ने भी इस बात पर विचार नहीं किया कि राष्ट्रपिता और राष्ट्रपति यह दोनो शब्द कहा तक सार्थक हैं। क्योकि जिस देश को वहा के निवासी अपनी मातृभूमि, पितृभूमि तथा पुण्यभूमि मानते है फिर उसका पिता व पति कहा से आ गया ? क्या देश कोई स्त्री या पुरुष होता है जिसका पति या पिता होता है ? इस राष्ट्रपिता का सीधा सा यह अर्थ निकलता है कि पिता के बाद ही उसकी सन्तान का जन्म होता है पिता है तो सन्तान होगी अन्यथा नहीं। इससे यह स्पष्ट होता है कि हमारा देश या राष्ट्र गांधी जी के पूर्व नहीं था जब गाधी जी इस राष्ट्र के पिता बने तब यह देश सन्तान के रूप मे उनके बाद पैदा हुआ। इसके बाद डा० राजेन्द्र प्रसाद जी को इस देश का राष्ट्राध्यक्ष होने के नाते राष्ट्र पति घोषित कर दिया गया। इस देश की परम्परा के अनुसार गाधीजी डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के श्वसुर हो जाते है क्योकि पिता तो उसकी पुत्री या पुत्र का श्वसुर होता है। जब महात्मा गाधी राष्ट्र के पिता हुए और राजेन्द्रप्रसाद जी राष्ट्र के पति, तो यह नाता बनना स्वाभाविक ही है।

किन्तु हमे यह नहीं भूलना चाहिये कि हम सभी इस राष्ट्र के पुत्र व पुत्रिया हैं किन्तु उस राष्ट्र का पिता या पति बनाना किसी भी मानव को राष्ट्र का अपमान करना है। किसी भी राष्ट्र का न कोई पिता होता है और न पति। जब अंग्रेजी मे "प्रसीडेन्ट आफ इण्डिया" कहा जाता है तो उसका सीधा सा अर्थ है कि हिन्दुस्थान का अध्यक्ष, इसका तात्पर्य यह है कि डा० राजेन्द्रप्रसाद इस राष्ट्र के अध्यक्ष तो हो सकते थे किन्तु पति नहीं।

क्योकि पिता से ही आगे किसी पुत्र या पुत्री का जन्म होता है। किन्तु यह राष्ट्र के लिये अपमानजनक बात है कि उसका किसी व्यक्ति को पिता बना दिया जाए और किसी को पति। हम सभी को इस बात पर विचार करना चाहिये कि इस प्रकार कहना कहा तक उचित है? राष्ट्रपति के लिए जैसा कि ऊपर कहा गया है राष्ट्राध्यक्ष शब्द का सम्बोधन ही उचित प्रतीत होता है न कि राष्ट्रपति। तथा गाधी जी को पहले नागरिक के नाते राष्ट्र पुत्र कह सकते न कि राष्ट्रपिता। अब इससे भी आगे कुछ लोगो ने स्व० इन्दिरा गाधी को राष्ट्र माता भी कहना आरम्भ कर दिया था इन दोनो से भी अनुचित बात है। राष्ट्र पिता, या माता अथवा पति शब्दो का राष्ट्र के प्रति प्रयोग करना किसी भी राष्ट्र के लिए अपमानजनक ही कहा जा सकता है। क्योकि राष्ट्र कोई प्राणी नहीं जिसके पिता, पति तथा माता होते हो। राष्ट्र तो अपने देश के नागरिको के रहने के स्थान को कहा जाता है जो जड होता है इसी लिये इसे जन्म भूमि, पितृभूमि तथा मातृभूमि आदि से सम्बोधित किया जाता है। किन्तु हमारे देश मे सारा कुछ इसके विपरीत हो रहा है और इन शब्दो को किन्ही व्यक्तियो के लिए प्रयोग कर राष्ट्र का अपमान किया जा रहा है। जो एक बहुत खेदजनक बात है।

इस विषय पर देश के बुद्धिजीवियो से मेरा आग्रह है कि वे इस पर अपने विचार देने का कष्ट करें साथ ही इस विषय पर देश भर मे एक चर्चा भी आरम्भ होनी चाहिये कि इन शब्दो का प्रयोग किन्हीं व्यक्तियो के लिए करना कहा तक उचित प्रतीत होता है। आशा है इस पर देश के बुद्धिजीवी और विचारक अपने विचारो से अवश्य ही अवगत कराने की कृपा करेंगे।

विशन स्वरूप गोयल
सम्पादक
राष्ट्रवाणी लेख तथा समाचार सेवा
३३१४ बैंक स्ट्रीट, करोल बाग, नई दिल्ली

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एस. डब्लू/एन. पी. ७९
वैसाख शुक्ल १२
रविवार, १० मई १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

वैदिक संस्थान नजीबाबाद को वेदप्रचारार्थ नि:शुल्क वितरण हेतु

सभा द्वारा १००० सत्यार्थ प्रकाश भेंट

लखनऊ—आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ द्वारा स्वामी वेद मुनि परिव्राजक अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद को उत्तराखण्ड के सीमान्त अंचलों मे वेद प्रचारार्थ नि:शुल्क वितरण हेतु ऋषि कृत अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की एक हजार प्रतियां भेंट की गयीं।

ज्ञातव्य है कि उत्तराखण्ड के सीमान्त एवं पिछड़े पर्वतीय क्षेत्रो टिहरी, उत्तरकाशी, पौड़ी, सतपुतली, लैन्सडौन, दुगड्डा, कोटद्वार आदि में ईसाइयत का प्रचार व्यापक स्तर पर है साथ ही वहां पर सक्रिय तथा कथित ईसाई मिश्नरियां वहां के सवर्ण-असवर्ण के वर्ग भेद की भावना का लाभ उठाकर गरीब हिन्दुओ एवं अछूतों को गुमराह करके उनका धर्म परिवर्तन करने में, एक अर्से से क्रियाशील हैं।

धर्म परिवर्तन के इस दुस्साहस पूर्ण रवैये के निरोध हेतु तथा वहां के हिन्दुओं में वर्ग भेद की भावना को समाप्त करने हेतु स्वामी जी पिछले चार वर्षों से, तन, मन, धन से कृत संकल्प हैं साथ प्रचार एवं वैदिक साहित्य के वितरण का कार्य भी वे कर रहे शीघ्र ही, इन पिछड़े सीमान्त क्षेत्रो में, एक व्यापक प्रचार यात्रा के आयोजन की योजना भी है।

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह १५ मई १९८७ मे समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें ताकि वी० पी० नहीं भेजी जाये जिन ग्राहकों की तरफ अब तक मूल्य शेष है, वे भी शीघ्र ही २५) रु० भेज दें अन्यथा उनके नाम भी वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

६२०, ८९१, २४९०, २७५४, २८४६, २९१८, ३३५४, ४४१२, ४७९७, ६१३१, ६१३९, ६५१२, ६६६५, ८१८९, ९१३०, ९१३९, ९४५२, ९६५५, ९८९०, १११९४, ११५९८, ११६००, ११६१९, ११६३३, ११९२३, ११९२५, १२१८८, १२१८९, १२१९१, १२६५९, १२८९२, १२८९४, १२९००, १२९०४, १२९०५, १२९०९, १३११३, १३११०, १३११६, १३११८, १३४६७, १३४६८, १३४७३, १३७८९, १३७९० १३७९१, १३७९२, १३७९३, १३७९९, १३८००, १३८१०, १३८११, १३८१२, १३८१३, १३८१४, १३८८०, १३८८२।

विनीत—
व्यवस्थापक

पुनर्विवाह

आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर मे दि० १९-४-८७ को विधवा कमलादेवी आत्मजा श्री बद्रीविशाल जी वाजपेयी का पुनर्विवाह विधुर श्री बी० एल० तिवारी आत्मज स्व० श्री राम अभिलाष तिवारी के साथ प्रोहित श्री सूर्यप्रकाश जी द्वारा प्रो० लक्ष्मीधर जी, श्री शम्भूराय उप मन्त्री आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर तथा श्री दिनेश्वर आर्य मन्त्री आर्यसमाज समस्तीपुर बिहार की उपस्थिति में सम्पन्न कराया गया।

निर्वाचन-

आर्यसमाज कन्या पाठशाला उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बहराइच के प्रबन्ध समितिका का नव निर्वाचन

१ बख्शी राममोहन अध्यक्ष (पदेन)
प्रधान आर्यसमाज बहराइच
श्री हरिराम वर्मा प्रबन्धक
,, कृष्णमाधव सरन सहा० प्रबन्धक
सदस्य प्रबन्ध समिति
,, रामछबीले शुक्ल एडवोकेट
,, प्रेमचन्द गुप्त ,, ,, ,,
,, चरतसिंह ,, ,, ,,
,, मनोहरलाल वैद्य ,, ,, ,,
,, कन्हैयासिंह ,, ,, ,,
मनोनीत सदस्य
,, वीरेन्द्रकुमार टण्डन प्राचार्य
राजकीय इण्टर कालेज बहराइच
श्री शिवनारायणसिंह अध्यक्ष
कांग्रेस (ई) जनपद बहराइच
श्री धर्मपाल जी भूतपूर्व विधायक
श्री देवू बाबू निगम
श्रीमती शान्ती श्रीवास्तव पदेन
प्राचार्या आर्य कन्या पाठशाला
उच्चतर माध्यमिक वि०
(वरिष्ठता क्रम की दो शिक्षिकायें)
श्रीमती सत्यवती श्रीवास्तव
श्रीमती शिवदेवी सिन्हा

आर्यसमाज दीवा मल्ला डांगू
पौड़ी गढ़वाल
प्रधान—श्री देवीराम शर्मा
मन्त्री—श्री महेशचन्द्र भट्ट
कोषा० श्री प्रतापचन्द

आर्यसमाज दोरगाव कोटा
(बुलन्द शहर)
प्रधान श्री रणजीतसिंह
मन्त्री श्री कुशलपालसिंह
कोषा० डा० लोकेन्द्रसिंह

आर्यसमाज मवाना मेरठ
प्रधान श्री दयाप्रकाश जी सर्राफ
मन्त्री श्री कान्तिप्रकाश
कोषा० श्री प्रेम प्रकाश जी

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४१/५७

घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८५

ज्येष्ठ कृष्ण १२, रविवार, सवत् २०४४ वि० दिनाक २४ मई १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

वर्ष	९०
अङ्क	२०

मेरठ में साम्प्रदायिक आग भड़की

७० मरे सैकड़ो घायल—दँगाइयो को देखते ही गोली मारने का आदेश

सेना के हाथ सुरक्षा सौंपी गई—अनिश्चित कालीन कर्फ्यू के बाद भी दगाइयो का नग्न ताडव

मेरठ के घनी आबादी वाले मुहल्ले इमलियान व हाशिमपुरा मे साम्प्रदायिक उपद्रव कुछ थमने के बाद पुन भडक उठा और कोतवाली देहली गेट लिसाई गेट सिविल लाइन्स थाना क्षेत्रो मे दगाइयो ने खुलेआम मारकाट की, आग लगायी। आधे से ज्यादा शहर इस आग मे झुलसने लगा।

२१ मई को प्रात काल तक मिली सूचना के अनुसार ७० व्यक्ति मारे गये व सैकडो घायल हो गये। मेरठ मे सेना बुला ली गई है और दगाइयो को देखते ही गोली मारने के आदेश दे दिए गए हैं।

मेरठ मे बार-बार भड़कते दगे सरकार के लिए गम्भीर चेतावनी है। य साम्प्रदायिक तत्व टोलियां बनाकर सारे देश मे घूम घूमकर साम्प्रदायिकता उभार रहे है। शासन को उन पर तीक्ष्ण दृष्टि रखनी चाहिए। अन्यथा सारा प्रदेश ही नहीं देश भी इनकी कुचालो से त्रस्त हो जायगा।

पंजाब में राष्ट्रपति शासन लागू

पुलिस महानिरीक्षक श्री रिबैरो का सेवाकाल एक वर्ष बढ़ाया गया

राष्ट्रपति शासन लागू होने के दूसरे दिन ही अपदस्थ बरनाला सरकार के २ मन्त्री सहित ४१७ व्यक्ति गिरफ्तार किए गए

निवर्तमान मुख्य मन्त्री श्री बरनाला ने राष्ट्रपति शासन लागू करने व उनके मन्त्रिमण्डल के सहयोगी मन्त्रियो की गिरफ्तारी की निन्दा करके अपनी सकीर्ण मनोवृत्ति का परिचय दिया है।

राष्ट्रपति ने सविधान की धारा ३५६ के अन्तर्गत पजाब की दिनानुदिन बिगडती स्थिति के कारण श्री सुरजीतसिंह बरनाला की सरकार को तात्कालिक प्रभाव से अपदस्थ कर दिया और ६ मास क लिए विधान सभा निलम्बित करके राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया।

एक दूसरी सूचना मे पजाब के पुलिस महा निरीक्षक श्री रिबैरो का सेवाकाल (जिनका सेवाकाल ३१ मई को समाप्त हो रहा था) एक वर्ष के लिये बढा दिया गया और पजाब मे आतङ्कवाद समाप्त करने के लिए अधिकृत कर दिया गया है।

श्री रिबैरो ने अपना आतङ्कवाद विरोधी मुहिम चालू करके अपदस्थ २ मन्त्रियो सहित ४१७ व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया है और आतङ्कवादियो की खोज निर्बाध गति से चालू है।

आर्थिक अपराधियो के कारनामो की जॉच हेतु आयोग गठित हो

—विश्वनाथ प्रतापसिह

भूतपूर्व वित्त रक्षा मन्त्री श्री विश्वनाथ सिह ने इलाहाबाद मे एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्थिक अपराधियों के कारनामो की जाच के लिए आयोग गठित किया जाना चाहिए ताकि सभी तथ्य जनता के सामने आ सकें। उन्होने कहा कि हमारे खून पसीने की कमाई विदेश भेजना देशद्रोह है। देशद्रोहियों से हमारा कोई समझौता नहीं हो सकता।

ले आख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार २४ मई १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

पंजाब में राष्ट्रपति शासन

पंजाब की निरन्तर बिगड़ती हुई स्थिति से विवश अन्ततः केन्द्रीय सरकार ने वहां की बरनाला सरकार को अपदस्थ करके ६ महीने के लिए राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया।

यह कदम बहुत पहले ही उठाया जाना चाहिये था। ताकि अनेकों निरपराध लोगों की जानें बच जातीं परन्तु केन्द्र ने बड़ी ही सहनशीलता का परिचय-श्री बरनाला को आतंकवाद पर नियंत्रण करने के लिये दीर्घकाल तक—अवसर देकर दिया। उनके पूर्णतया अक्षम हो जाने पर, जब उनके मन्त्रि मण्डल के सहयोगियों के सहयोग से ही आतंकवादियों ने पंजाब में एक समानान्तर सरकार सी बना कर नियंत्रण करना आरम्भ कर दिया था—पूर्ण उद्दण्डता से खालिस्तानी झण्डे अमृतसर गुरुद्वारा परिसर में लहराने लगे थे, तब यह कदम केन्द्र सरकार उठाने को विवश हुयी।

केन्द्र के इस कदम का सम्पूर्ण देशवासियों ने एक स्वर से समर्थन किया है। विरोध केवल उन्होने ही किया है जिनके—मन में देश के प्रति प्रेम का अभाव है। जो अपने विचारों, भावों व—कर्तव्यों को बलात दूसरे पर लाद कर अपना वर्चस्व रखना चाहते है। या फिर वे देश को विखण्डित करना चाहते हैं।

श्री बरनाला ने केन्द्र के इस कदम के प्रति नाराजी प्रकट की है। केन्द्र ने प्रदेश में शान्ति स्थापित करने के लिए उन्हें एक दो नहीं पूरे १९ महीने का अवसर दिया। पूर्ण सहयोग व समर्थन—दिया परन्तु वे उसमें सफल न हुये। वे कदम-कदम पर आतंकवादियों के समक्ष झुकते गये। अमृतसर के गुरुद्वारे में जो कुछ सिक्खों का ही नहीं सम्पूर्ण देशवासियों का तीर्थ स्थल है, वहां—आतंकवादी अपना प्रभुत्व स्थापित करके खालिस्तानी झण्डे निर्द्वन्दता से फहराते रहे वे मूक दर्शक बने सब देखते रहे। गुरुद्वारे के तथा—कथित प्रमुख ग्रन्थी राष्ट्रीयता विरोधी विलगाववादी अकाल तख्त से घोषणायें भी करते रहे, उन्हें उस सबकी कहने की छूट देते रहे उन पर कुछ भी नियंत्रण करने का प्रयत्न नहीं किया। उनके सहयोगी मंत्री भी आतंकवादियोंको खुला सहयोग देते रहे। वे कुछ न कर सके अगर केन्द्र का पूर्ण समर्थन न रहता तो उनग्रन्थियों के हुक्मनामे के साथ बरनाला कबके कुर्सी से उतार कर सड़क पर खड़े कर दिये गये होते यदि प्रतिरोध करते तो ईश्वर को भी प्यारे कर दिये जाते तो कोई आश्चर्य नहीं है।

इस सीमा तक उन्हें केन्द्र का सहयोग मिलने के बाद भी वे केन्द्र के अनिवार्य कदम की आलोचना कर रहे हैं तो यह उनकी बुद्धि का दिवालियापन ही कहा जायेगा।

श्री बरनाला मन्त्रि मण्डलके सहयोगियों ने ही आतंकवाद से अबल मोर्चा लेने वाले पुलिस महा निदेशक रिबैरो को हटाये जाने की मुहिम चालू करायी थी। उनकी हत्या का असफल—प्रयास भी किया गया था। सिविल पुलिस में बहुत से चेहरे खुले आम आतंकवादियों के सहयोगी हैं यह स्पष्ट होते हुये भी उन्हें कुछ भी दण्डित न किया

केन्द्र सरकार ने यह बहुत विलम्ब से ही सही—बहुत सही—कदम उठाया है। सरकार को चाहिये अब बिना किसी राजनीतिक लाग लपेट के देश की अखण्डता की रक्षा के लिये उग्र व.ी, आतंकवादी विघटनवादी तत्वों को समूल नष्ट करने के लिये श्री रिबैरो को विशेष शक्ति दें। सीमावर्ती क्षेत्र की चौकसी की कड़ी व्यवस्था करें कि एक भी आतंकवादी, प्रशिक्षित आतंकवादी, प्रच्छन्न आतंकवादी (विदेशी तत्व) सीमा के अन्दर कहीं से भी न प्रविष्ट हो सकें। पुलिस में जो भी सन्दिग्ध चेहरे हैं उन्हें गिरफ्तार किया जाये। बरखास्त बरनाला मन्त्रिमण्डल के दो मन्त्रियों को गिरफ्तार कर लिया गया है ऐसे ही अन्य सन्दिग्ध मंत्रियों को भी गिरफ्तार किया जाये। और एक विशेष अदालत का गठन करके सभी गिरफ्तार आतंकवादियों पर तत्काल देश द्रोह का मुकदमा चला कर उन्हें कठोर दण्ड दिया ज य।

श्री बरनाला ने अपने मन्त्रिमण्डल के मन्त्रियों की गिरफतारी की निन्दा करके अपनी राष्ट्रीयता पर भी प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। कोई मत, सम्प्रदाय या दल राष्ट्र से ऊपर नहीं हो सकता। उनके मन्त्रिमण्डल के जिन मन्त्रियों ने आतंकवादियों को प्रच्छन्न या खुला सहयोग दिया, श्री बरनाला का धर्म था वे स्वयं ही उन्हें—मन्त्रिमण्डल से बर्खास्त करके गिरफ्तार करते। वे स्वयं ही निष्ठापूर्वक राष्ट्रद्रोही आतंकवादी तत्वों को नष्ट करने के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग करते। उन्होंने ऐसा कुछ भी न करके केवल अपनी कुर्सी की रक्षा के लिए एक समय थोड़ी अपनी शक्ति का परिचय दिया था जब ग्रन्थियों ने—उन्हें तनखैया घोषित किया था शेष उनके शासन में आतंकवादी वृत्तियों में कमी आने के बजाय निरन्तर बढ़ोत्तरी ही होती रही हैं वह इतनी बढ़ गयी कि इसके आगे उसे सहन करने की सीमा नहीं थी।

अब जब केन्द्र ने पंजाब को आतंक मुक्त करने के लिए अपना ध्यान देकर उनकी कमजोर सरकार को अपदस्थ करके—राष्ट्रपति शासन लागू किया है तो उनका यदि राष्ट्रीयता में विश्वास है केन्द्र सरकार के इस कदम का पूर्ण समर्थन—करना चाहिए और शासन को अपना पूर्ण सहयोग आतंकवाद के विनाश और शान्ति स्थापन में देना चाहिये।

श्री रिबैरों का कार्यकाल ३१ मई को समाप्त हो रहा था। सरकार ने उनका सेवा काल एक वर्ष के लिये और बढ़ा दिया है तो यह बहुत ही अच्छा किया है। पूर्ण विश्वास है कि पंजाब के राज्यपाल श्री सिद्धार्थ शंकर राय जो बड़ी ही सूझ-बूझ वाले हैं, वे श्री रिबैरो जैसे योग्य पुलिस अधिकारी व सुरक्षा अधिकारियों व सैनिकों के प्रबल सहयोग से शीघ्र ही पंजाब से आतंकवाद को समूल नष्ट करने में सफल होंगे। पंजाब में अमन शान्ति स्थापन का प्रभाव सम्पूर्ण देश में शांति स्थापन में सहयोगी होगा। इस अमन चैन के लिए केन्द्र सरकार को अपना रुख भी सख्त ही रखना—होगा वह राजनीतिक प्रभाव में इसमें चूक कतई न करे।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

वेद-विवेचन

राष्ट्रवासियो सावधान हो जाओ

(श्री सुरेश चन्द्र वेदालंकार, एम० ए० एल० टी०, आर्य समाज गोरखपुर)

आविष्टु राहितानम्,
विश्वकर्मणा धाम्ना ।
आ चित्तानि चा वो,
व्रतेषा वोऽहं समितिं ददे ।
अथर्व ५०—१९६—४

(अभिभू) पराजयकारी (अहम्) मैं (विश्वकर्मणा धाम्ना) सर्वकर्मक्षम तेज के साथ (आगमम्) आ गया हूं। (वः चित्तम्) तुम्हारे विचारों को—इरादों को (आददे) वश में किए लेता हूं। (वः समितिम्) तुम्हारी दलबन्दी को (आददे) वश मे किए लेता हूं।

आज भारतवर्ष हमारी मातृभूमि चारो ओर संकटों से घिरी हुई है। प्रत्येक व्यक्ति, अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए विनाश राष्ट्रसेवा का ढ़ोंग कर रहा है। मुझे तो आज सर्वत्र कपोत और उत्पीड़क दिखाई दे रहे हैं। क्रिकेट का मैच हो, हाकी का खेल हो, एशियाई प्रतियोगिता हो या विश्व प्रतियोगिता। एक भारतीय प्रवासी का मन यह सब देख रहा होता है और दूसरी ओर भारत का अन्न-जल ग्रहण करने वाला शाहबुद्दीन और उसके चमचे, राष्ट्रीय स्वाभिमान, राष्ट्रीय पताका और राष्ट्रीय पर्वो का अपमान करने के नारे लगा रहे हैं, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से मुसलमानों की संस्कृति का प्रचार हो रहा है। भारत ... भारत ... की ... से ... के ईसाई ... के धार्मिक गुरुओं ... को सरकारी ... राजकीय सम्मान कर सरकार ने ... इतिहास के नये ... और ... की ... का ... भी ... के ... न हो ... । ... राष्ट्रीयता, ... अलगाववाद ... नष्ट ... रहे हैं। ऐसे (समय मिलता और) उदासीनता को मिटाता हुआ वेद मंत्र कहता है —

अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा
घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् ।
अर्कस्त्रिधातू रजसो विमानो—
ऽजस्रो घर्मो हविरस्मि नाम ।
यजु १८/६६

मैं आया हूं—दहकता हुआ अंगारा हूं स्वभाव से ही जागरूक हूं। मेरी आंख में तेज है, मेरे मुख मे अमृत है। मैं सूर्य हूं, तीन तेजो से युक्त हूं सारे भूमण्डल को अपने कदमों से माप लेने वाला हूं, अक्षय हूं, जलता हुआ यज्ञकुण्ड हूं। आहुति हूं।

कितना प्रेरणादायक मंत्र है। मैं आज आर्य जाति से वेद के शब्दो मे कहूंगा —

उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः ।
समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीडाः ।
दधिक्राम अग्निमुषसं च देवी-
मिन्द्रावतोऽवसे नि ह्वये वः ।
ऋग्वेद के १०-१०१-१ मंत्र कहता है .—

उठो, जागो, हे भाइयों मनोबल से अनुप्राणित हो जाओ। एक राष्ट्र के वासी, संस्कृति के उपासक तुम सब अपने अन्दर उत्साह की अग्नि प्रज्वलित करो। तुम्हारे देश, तुम्हारी कीर्ति और तुम्हारी संस्कृति की रक्षार्थ मैं उस 'अग्नि' का आह्वान करता हूं जिसके स्पर्शमात्र से जिसके धारण करने से मनुष्य गतिशील बन जाता है, तुम्हारी रक्षा के लिए जगमगाती हुई उस ऊषा का आह्वान करता हूं जिससे व्यक्ति और राष्ट्र का जीवन दीप्तिमान एवं ज्योतिर्मय हो उठता है। राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने उत्थान के लिए अपने जीवनो को अग्निमय बनाओ, अपने जीवनो को ज्योतिर्मय बनाओ।

ऋग्वेद ९-६३-२९ मंत्र कहता है —

अपघ्नन् सोम रक्षसोऽभ्यर्ष कनिक्रदत् । द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम् ।।

अरे मनुष्य तू कमजोर नहीं—शक्तिशाली है। राक्षसों का विध्वंस करता हुआ गर्जता हुआ आगे बढ़—आगे बढ़। जाज्वल्यमान उत्तम शक्ति और बल को प्राप्त कर।

समझो मत हमको ठंडे,
हम दहक रहे अंगारे हैं।
आई ऊपर राख और ही,
असली रूप हमारे हैं।

अब प्रत्येक राष्ट्र भक्त हिन्दू अपने को कमजोर समझ रहा है। यह हीनता की भावना हमें दूर करनी चाहिए। यह सोच कि तू क्या कर सकता है, देख—

एक एवाग्निर्बहुधा समिद्ध
एकः सूर्यो विश्वमनुप्रभूतः ।
एकैवोषाः सर्वमिदं विभाति
एकं वा इदं वि बभूव सर्वम् ।।
ऋ ८/५८/२

अकेली आग कितनी चमक से चमकती है? अकेला सूर्य विश्व को प्रकाशित करता है। अकेली ऊषा सब दृश्यमान वस्तुओं को चमका रही है। अकेला परमेश्वर सर्वत्र व्याप्त हुआ है। तू भी अकेला क्या नहीं कर सकता? अर्थात् अकेला भारत ... को ... कर ... ।

भारत के वीरो! उठो! वेद के शब्दों में कहता हूँ —

सिंह प्रतीको विशो अद्धि सर्वा
व्याघ्र प्रतीकोऽव बाधस्व शत्रून् ।
एक वृष इन्द्र सखा जिगीवाञ्
छत्रूयतामा खिदा भोजनानि ।।
अथर्व ४-२२-७

शेर होकर शत्रु प्रजाओं को हड़प जा, तू बाघ के समान शक्तिशाली बनकर शत्रुओं को भगा दे। तेरे समान दूसरा कोई वीर नहीं तेरे सभी मित्र भी वीर हैं, तू सारे संसार को जीतने वाला ... से जो शत्रुता करे, तेरे देश पर जो अपनी कुदृष्टि डाले उनको परास्त कर दे, उन्हे समाप्त कर दे।

वेद के यह मंत्र राष्ट्र की संकट घड़ियों में राष्ट्रवासियों के मनोबल और संकल्प को ऊंचा उठाने वाले हैं। इन मंत्रों से हम प्रेरणा लें और अपने तन, मन, धन को राष्ट्र के लिए अर्पित कर दें।

द्वितीय वेद संगोष्ठी सम्पन्न

वेद संस्थान, नई दिल्ली के तत्वावधान मे गत शनिवार (११ अप्रैल, १९८७) को प्रारम्भ हुई द्वितीय वेद संगोष्ठी "वेद में सृष्टि एवं मानव की आयु का निर्धारण" एवं वैदिक वाङ्मय मे वसु' सम्पन्न हुई। संगोष्ठी मे भिन्न भिन्न महाविद्यालयों तथा अन्य संस्थानो से आए विद्वानो ने उपरोक्त विषयोंपर अपने-अपने शोध पत्र पढ़े और उन पर विचार विमर्श किया। सुप्रसिद्ध भौतिक वैज्ञानी, डा० मनोहर लाल गुप्त ने अपने तीन शोध-पत्रो द्वारा वेद मे सृष्टि और मानव की उत्पत्ति पर विचार रखे। उन्होंने आधुनिक विज्ञान की खोजों और उसी संदर्भ मे वेद के मंत्रों का समन्वय करते हुए सुन्दर विवेचना प्रस्तुत की।

सुविख्यात रसायन वैज्ञानिक एवं संन्यासी स्वामी डा० सत्य प्रकाश, मुख्य अतिथि ने संगोष्ठी मे भाग लेने वाले विद्वानो को आशीर्वाद प्रदान किया।

राष्ट्रीय नेता महावीर हनुमान

लेखक पवन कुमार—एम० ए० सिद्धांत शास्त्री, लखनऊ

मंगलवार का दिन महावीर हनुमान के जन्म दिवस के रूप मे मनाया जाता है। मधु मास चैत्र की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा की तिथि को पुष्य नक्षत्र मे मंगलवार की प्रभात बेला मे मां भारती के यशस्वी पुत्र आर्य संस्कृति के कीर्ति स्तम्भ महावीर हनुमान जी ने माता अंजनी और महाराज पवन के पुत्र रुप मे जन्म लिया।

माता अंजना और पिता पवन की बारह वर्षीय कठोर ब्रह्मचर्य संयम साधना तथा तपस्वी साधना के फल स्वरूप इस दिव्य आत्मा का धरा धाम पर अवतरण हुआ। ऋषि अगस्त की योजना के अनु-सार बालक को प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करना तथा वैदिक संस्कारो से संस्कारित करना माता अञ्जना की साधना बन गयी। माता निर्माता होती है। इस कथन को हनुमान जी की जननी अञ्जना ने प्रमाणित कर दिया।

बालक हनुमान के वैदिक संस्कार महर्षि अगस्त की देखरेख मे सम्पन्न हुए। मुनिवर अगस्त के गुरुकुल में प्रविष्ट होकर बालक हनुमान ने वेद वेदांगो का अध्ययन किया। ऋषि अगस्त ने भी वानर जाति के तरुणवीरो को सम्बोधित और प्रशिक्षित किया। उन्होने वानर राष्ट्र के नयी पीढी के निर्माण का उत्तरदायित्व वहन किया। महर्षि अगस्त्य ने योजना बद्ध रूपसे वानर जाति के जिन तरुणोको अपने ज्ञान विज्ञान के केन्द्र अपने आश्रम मे राष्ट्रीय सेवा के भाव से दीक्षित किया। उस के प्रमुखनायक महावीर हनुमान थे। अभिनायक महावीर हनुमान जी ने आजन्म अखण्ड ब्रह्मचर्यव्रती होकर श्रीरामके राष्ट्रोद्धार कार्य सार्वभौम चक्रवती आर्य साम्राज्य की संस्थापना कार्यमे महत्वपूर्ण योगदान दिया। राक्षसआश्रमो को ध्वस्त करने लगे थे। इसी कारण श्री परशुराम को योग साधना त्याग कर धनुष धारण करना पड़ा २१ बार उन्होंने उच्छृंखल क्षत्रिय शासको का मर्दन

अत्याचार तो कम हो गये पर क्षत्रिय राजाओ का बल न घटा।

अवसर पाकर वानर राष्ट्र और असुर राष्ट्र परस्पर मैत्री सम्बन्ध के आधार पर अत्यधिक प्रबल हो गया उनके लकाके राक्षस राजा रावण के अत्याचार तो शक्ति वर्द्धन के साथ बहुत बढ़ गये युग की मांग थी कि इस बल के केंद्रीय शासक पुन चक्रवर्ती आर्य राज्य की स्थापना करें।

महाराज दशरथ के अश्वमेध यज्ञ के समय ऋषियो द्वारा निर्मित योजना के आधीन ऋषि भृग के द्वारा पुत्र कामेष्ठि यज्ञ कराया गया जिसके परिणाम स्वरूप राजा दशरथ की तीन रानियो के चार वीर पुत्रो ने जन्म लिया था जिनके नाम राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न थे।

निश्चित योजना के अनुसार ये चारो राजकुमार महर्षि वशिष्ठ के आश्रम मे वेदाध्ययन तथा ज्ञान विज्ञान की विविध शाखाओं का अध्ययन करते रहे। श्रीराम ने धनुर्विद्यामे प्रवीणता प्राप्त की राम और लक्ष्मण को ही महर्षि वशिष्ट की प्रेरणा से महर्षि विश्वामित्र जी ले गये। वहीं पर राम और लक्ष्मण ताड़कासुबाहू को मार डाला। उनकी राक्षस सेना को समाप्त कर दिया। उस समय बिहार प्रान्त का शाहाबाद जिला नैमिसारण्य कहलाता था। इसी नैमिषारण्य के स्थापित रावण के सैनिक उपनिवेश को समूल नष्ट कर ऋषि मुनियो का निर्भयता पूर्वक यज्ञ करने का आश्वासन दिया। महामुनि विश्वामित्र से राम और लक्ष्मण के बला अति बल की विद्या ग्रहण की तथा अनेक दिव्य शस्त्रास्त्रों का सैद्धान्तिक परीक्षणात्मक अनुभव प्राप्त किया सीता स्वयंवर मे विशाल धनुष तोड कर राम ने शक्ति पराक्रम किया। तथा आर्यावत के अन्य राजाओ पर अपनी शक्ति की धाक जमा ली तथा राजा सरिध्वज जनक की पुत्री सीता से उनका विवाह हुआ।

ऋषियो की योजना के अनु-सार वे देव जाति के सक्रिय सह-योग से गुरु वशिष्ट तथा महारानी कैकेयी तथा दासी मन्थरा के पुरुषार्थ तथा मौन रुप से अपनी स्वीकृतिमे राम १४ वर्ष के लिए दण्ड कारण्य वन मे पधारे। वन मे निवास करते हुए श्री राम ने भील वन जातियो से सम्पर्क किया। निषाद राज को आत्मीय बनाया।

जन नायक राम ऋषियो के आश्रम मे पधारे वहा पर ऋषियो के अस्थि समूह तथाध्वस्त आश्रमो को देखकर निश्चर हीन करो महि असुर का नाश की सत्य प्रतिज्ञा की।

श्री राम ने ऋषि वशिष्ठ विश्वामित्र के गुरुकुलों मे धनुष विद्या के विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किये थे। पर विशेष वैज्ञानिक अस्त्र शस्त्रो की प्राप्त के लिए श्री राम महर्षि अगस्त्य के आश्रम मे पधारे वहा से श्री राम को दिव्य वैष्णव धनुष तथा अनेक दिव्यास्त्र ब्रह्मास्त्र प्राप्त हुआ। महर्षि अगस्त्य ने श्रीराम को विश्वकर्मा का बनाया हुआ। ब्रह्म दत्त नाम का विष्णु धनुष्य तीक्ष्ण बाणो से भरे दो बाणो के बने दुपुर बाण कोष, चांदे और सोने से मूठे वाले अस्त्र दियो। जिससे राक्षसो को मारने मे सफल हुए।

महर्षि वशिष्ट महर्षि अगस्त्य राष्ट्र निर्माता थे। वे सच्चे अर्थो में राष्ट्र के जाग्रत पुरोहित थे। राष्ट्र निर्माण की दिशा में हमारे पुरोहित उपदेशक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। आर्य राष्ट्र तथा वानर राष्ट्र में राज्य तो था पर सुराज नहीं था। राक्षसी सभ्यता फैली थी। ऋषि मुनि कष्ट पा रहे थे। एक समय ऋषि वशिष्ठ और विश्वा-मित्र ने राष्ट्रपुरुष तरुण छात्र धर्म के मूर्ति स्वरूप राम के निर्माण का बीड़ा उठाया। सर्व प्रथम महर्षि अगस्त्य ने हनुमान जी के पिता पवन जी को राष्ट्र एकता के व्रत में दीक्षित करने का प्रयत्न किया पर पवन देव से व्रत का विस्मरण हुआ तब उन्होने पवन व अंजना के १२ वर्ष के अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत को संयम पूर्ण साधना के फल-स्वरुप उत्पन्न हनुमान को इस व्रतमे दीक्षित करने के लिए मांगा।

ऋषियो ने अपने कर्तव्य का अनुभव किया। ऐसे आर्य वीर को बहुविद्या प्रशिक्षण देकर तैयार करने का उन्होने संकल्प किया। ऋषि श्रृंग के द्वारा पुत्र कामेष्ठि यज्ञ से लेकर महर्षि वसिष्ट एव महामुनि विश्वामित्र के प्रशिक्षण तथा अगस्त ऋषि के आश्रम तक आर्य वीर श्री राम निर्माण की यह प्रक्रिया मौन भाव से चलती रही। इधर महामुनि अगस्त्य ने योजना बद्ध रुप मे वानर जाति के युवा पीढ़ी को भी अपने ज्ञान विज्ञान के केन्द्र अपने आश्रम मे दीक्षित किया। उन्हें राक्षस द्रोह के भाव से तैयार किया तथा देवों और आर्यों केप्रेम भावना से संकल्पित किया। वानर जाति के इस युवा पीढ़ी के नायक थे महावीर हनुमान। उन्होने आजन्म ब्रह्मचर्य व्रती रहकर श्री राम के राष्ट्रोद्धार सार्वभौमचक्र-वती आर्य साम्राज्य के संस्था-पन के कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया उन्हीं के सक्रिय सहयोग से राम राज्य स्थापित हो सका। महावीर हनुमान के नेतृत्व मे वानर वीरों के बल विक्रम और शौर्य से एक बार पुनः वैदिक युग साकार हो उठा।

श्री राम और हनुमान के नेतृत्व मे लोक संग्राहक राष्ट्र धर्म हुआ। आर्य राष्ट्र देव राष्ट्र वानर राष्ट्र और राक्षस राष्ट्र सर्वथा एकीभूत हो गए। एकान्त भोगवाद और भौतिकवाद पर टिकी राक्षसी सभ्यता पूर्ण विनष्ट होकर समस्त राष्ट्रों के सर्वत्र वैदिक स्वराजऔर एक ओर एक मेव वैदिक आध्यात्म मूलक संस्कृति का ध्वज लह-

(शेष पृष्ठ ७ पर)

स्विष्ट कृत आहुति

[श्रीचन्द कुन्दन लाल आर्य ५४६/१९१, अर्जुन नगरआगनबाग, लखनऊ-५

आज अकस्मात् आर्य मित्र का ३० नवम्बर ८६ का अंक सामने आ गया–उस में "यज्ञो वै श्रेष्ठ तमं कर्म" शीर्षक के अन्तर्गत आदरणीय पण्डित श्री इन्द्र देव जी पाठक लखनऊ का लेख पढ़ कर प्रसन्नता हुई। इस लेख में हमारे पण्डित जी ने महर्षि दयानन्द जी महाराज के कार्यों के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यों के व्रत आदि की चर्चा की है और इस कार्य को सफलताके निरीक्षण को भी यज्ञ के अन्तर्गत ही माना है। यज्ञ कर्म सुन्दर एवं श्रेष्ट है ही–यज्ञ शब्द भी बहुत प्यारा है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने यज्ञ की सुन्दर विधि संसार के सामने रखी–जिस को देख कर आज विरोधी भी इस विधि को उचित मानकर इसी विधि से यज्ञ कर और करा रहे हैं। इसी यज्ञ विधि की प्रत्येक प्रक्रिया आदर्श–उत्तम एव विचारणीय है। महर्षि के एक–एक शब्द के भाव को समझने के लिये अनेकों बार मनन करना पड़ेगा। जितना हम इस विधि पर विचार मनन करते हैं–उतना ही अधिक आनन्द प्राप्त होता है। यज्ञ प्रेमियो के चरणों में बैठकर मुझे भी यज्ञ करने का सौभाग्य प्राप्त है–यज्ञ करता हूं, और जब स्विष्ट कृत या प्रायश्चित आहुति पर आता हूं, तो उस समय की अपनी मनोदशा का वर्णन करना सम्भव तो नहीं है–फिर भी मैं यज्ञ प्रेमियो की सेवा मे कुच्छ निवेदन करने का दुस्साहस कर रहा हूं। विद्वत् जन मेरे शब्दों पर ध्यान न देकर केवल भावना को ही सम्मुख रखने की कृपा करें। इस लेख में मेरा कुछ भी नहीं है–आर्य विद्वान् महानुभावों द्वारा सुनाया हुआ ही आप की सेवा में रख रहा हूं।

इस स्विष्ट कृत या प्रायश्चित आहुति का सीधा सा अर्थ है "जीवन में मिठास भर दे और चित्त को पवित्र कर दें"। यज्ञ करने वाले व्यक्ति के अन्दर यदि यह दोनों बातें नहीं है–तो उसे विचारना होगा कि मेरी विधि में, भावना में एवं कार्य में कहीं त्रुटि है–बस यहीं से आनन्द का मार्ग खुल जाता है। इस मन्त्र का विचारणीय अर्थ है "अधिक वान्यून", प्रभु अपने कर्मों में परिपूर्ण है–परन्तु मनुष्य अल्प शक्ति एवं अल्प बुद्धि वाला होने के कारण उसके कर्म में कुछ न कुछ भूल हो जाना स्वाभाविक है। अपनी भूल या पाप कर्म को स्वीकार कर लेना भी महानता है ऐसा करने पर ही मनुष्य का मन–मस्तिक एवं हृदय निर्मल हो जाता है। तभी उस में प्रभु आ विराजते हैं–प्रभु दर्शन या प्रभु प्राप्ति ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है। आओ इस रहस्य को एक उदाहरण से स्पष्ट करें।

हम अपने घरों में प्रायः देखते है कि बच्चे खिलौनों से खेलते है खेल–खेल में खिलौना टूट भी जाता है। एक बालक से खिलौना टूट गया–वह उठा–टूटे खिलोने को कहीं छिपा दिया मां पूछती है–खिलौना कहां है? वह बच्चा चालाकी से उत्तर देता है "मुझे पता नहीं"–वह झूठ बोलता है और मां उस को डाटती है भला बुरा कहती है–मारती भी है–इस प्रकार बालक झूठ बोल अपनी गलती को छिपा कर मां का कोप भाजन बनता है। वहीं दूसरी ओर एक बालक रो रहा है–मां पूछती है–मेरे लाल क्यों रो रहें हो? बेटा सिसकियां लेता हुआ कहता है। मां! मेरा यह खिलौना मुझ से टूट गया है। यह सुनते ही मां बच्चे को गोद में उठा लेती है प्यार से आंसू पोंछती है–सान्त्वना देती है–मेरे लाल चुप्प हो जाओं–मैं तुझे नया खिलौना ले दूंगी। मित्रों–विचार करों–दोनों का कर्म एक ही है–परन्तु दोनों को फल भिन्न मिलता है।

अब मार्ग साफ हो गया–यदि मानव अपना–अपनी समाज–देश–राष्ट्र का कल्याण चाहता है तो उसे अपनी भूलों पर पर्दा नहीं डालना चाहिये वरन उसे चाहिए कि अपनी भूलों को स्वीकार कर प्रायश्चित करें। मेरे प्यारे महर्षि का जीवन तो इस स्विष्ट कृत आहुति से ओत प्रोत है–किसी ने किसी त्रुटि की ओर ध्यान आकृष्ट किया–तो तुरन्त उसे स्वीकार कर उस का मार्जन कर लिया। यहीं नहीं अपनी भूल के कारण अपने पूज्य गुरु जी को मार भी खायी परन्तु नराज नहीं हुए–अपनी भूल को स्वीकार कर गुरु देव के हाथ धीरे दबाने लग गये। तभी तो यह आदर्श दिव्य दयानन्द बन गये। हम आर्यों को भी अपने कर्मों की समीक्षा इसी प्रकार करनी चाहिये तभी हमारा यज्ञ कर्म श्रेष्ट बन पायेगा। यहीं तो आदरणीय पाठक जी स्पष्ट रूप से अपने लेख में कहना चाहते है–जो स्पष्ट हो गया। हमारे पूर्वज पुराने आर्य समाजियों में क्या विशेषता थी–जिस के कारण वह संसार मे आदर्श बन गये और आगे ही बढ़ते गये–सफलता ने उनके पांव चूमें–समुद्र पार बैठे हुये डेविड जैम्शन ने पुकार कर कहा–भारत में महर्षि दयानन्द ने एक आग जलायी है–वहआग जिस तेजी से आगे बढ़ रही–उस से स्पष्ट होता है कि सारा संसार जल्दी ही इनकी लपेट में आ जावेगा–अर्थात आर्य समाज सब ससार फल जावेगा–और यह सत्य है कि आर्य समाज सब सन्सार में फैल गया है। आज हम कुच्छ कहीं भूल कर रहें हैं–इस को हम स्वीकार कर भविष्य में उस का मार्जन कर लें तो हम पुरानी स्थिति प्राप्त कर सकते है। यहीं प्रायश्चित्त है।

यह कर्म कैसे सम्भव होगा–आओ इस पर विचार करें। यज्ञ अग्नि में ही किया जाता है–अग्नि पैदा करने के लिये रगड़ करना आवश्यक है। अर्थात् रगड़ करने से ही अग्नि उत्पन्न होती है। दो अरणी की लकड़ियों को आपस में रगड़ने से अग्नि प्रज्वलित हो जाती है। ठीक इसी प्रकार मन–आत्मा हृदय और मस्तिष्क–ज्ञान और कर्म श्रद्धा और भक्ति–स्वाध्याय और सत्संग प्राण और अपान में रगड़ पैदा कर के अपने अन्दर समर्पण–त्याग और निः स्वार्थ सेवा रूपी अग्नि (भावना) को पैदा करना होगा– तभी हम गर्भ के कष्ट से मुक्ति पा कर भर्ग को प्राप्त कर सकेंगे। गर्भ और भर्ग में अक्षर तो समान है ग+र+भ–इन को आगे पीछे रखने से ही गर्भ भर्ग या भर्ग बन जाता है। स्वार्थ के पीछे चलोगे गर्भ मिलेगा–स्वार्थ को पीछे कर दोंगे–भर्ग मिलेगा–इस पर विचार किये बिना समर्पण भावना नहीं होगी। आत्म समर्पण ही मनुष्य की सफलता की कुन्जी है। भक्त आत्म समर्पण से ही प्रभु का प्यारा बनता है–समाज में ऊंचा उठता है। विवाह में कन्या जब अपने आप को पति के समर्पण कर देती हैं तो पति के सारे गुणों या पदो में सरलता से भागीदार बन जाती है। बिना पढ़े लिखे पुरषार्थ किये डाक्टर की पत्नी डाक्टरानी–मास्टर की पत्नी मास्टरायन या मास्टरनी–पण्डित की स्त्री पण्डितायन आदि बन जाती है। भगवान राम–कृष्ण दयानन्द–श्रद्धानन्द–लेखराम आदि महापुरुषों के जीवन स्पष्ट रूप से इस दिशा में हमारा मार्ग दर्शन कर रहें हैं। हम आर्य समाजियों को अपने अन्दर रगड़ से यह समर्पण भावना पदा करनी होगी–तभी हमारे प्रचार कार्य में मिठास और आकर्षण उत्पन हो सकेगा। अपने व्यक्ति गत जीवन की साधना में भी मनुष्य जब ऊपर उठता है तो वह हर स्वर की भावना को देखकर सुख प्राप्त कर लेता है–अर्थात भक्त के निः छल हृदय की पुकार (समर्पण) सुन कर भगवान–भक्त को कष्टों से मुक्त कर अपनी आनन्द मयी गोद में उसे बिठा लेता है। प्रभु का तो सुन्दर स्वभाव है। यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः॥ आर्याभिविनय मन्त्र ६॥ अर्थात प्रभु हमारी कामना को पूर्ण करने है–जब हम समर्पण करते हैं। समर्पण के लिये पहले लगन होनी चाहिये और बाद में "इदं न मम" की भावना। बस बेड़ा पार है–यज्ञ किया स्विष्ट कृत आहुति दी–समर्पण किया–श्रद्धा से सिर झुकाया–वाणी ने कहा "इदं मम"। यही है यज्ञ की स्विष्ट कृत आहुति। आओ–आर्य बन्धुओं–महर्षि दयानन्द के इस पवित्र यज्ञ में हम भी आहुति डालें और आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति कर यश के भागी बने।

मांस आर्यों का भोजन नहीं है

—श्री सतीश चन्द्र गुप्त, एडवोकेट
उप प्रधान मण्डी बांस आर्य समाज मुरादाबाद ।

मानव के लिये मांसाहार किसी भी परिस्थिति से, किसी स्तर पर और जलवायु या प्रदेश के लिये उचित नहीं है । वैदिक परम्पराओं की मान्यताओ से यह तथ्य सर्व विदित हो चुका है और आज के तनाव के युग में मांसाहार के प्रश्न को एक जटिल तथा अधिक पेचीदा बना दिया है । और यह कहना भी अतिशयोक्ति न होगा कि चिकित्सक और वैज्ञानिक भी अपनी सच्ची राय तटस्थ व निष्पक्ष रूप से नहीं दे पा रहे हैं लगभग ३१ वर्ष पूर्व महात्मा गांधी ने प्रायः इसी प्रकार के विचार मांसाहार के प्रति रखे थे ।

हमारे प्राचीनतम ग्रन्थ गीता में सात्विक, राजसी व तामसिक आहारों की चर्चा की गई है और आज के बदलते युग में इस प्राचीन मान्यता को कि आदमी जैसा खाता है वैसा ही बन जाता है, अब वैज्ञानिक आधार मिलने लगा है ।
अभी हाल मे भारत के चिकित्सको ने यह व्यक्त किया है कि शाकाहारियो की अपेक्षा मांसाहारियों के बृहदंत्र (पेट का कैन्सर) होने की अधिक सम्भावना रहती है ।

इन सब तथ्यो की जानकारी होने पर हमें यह प्राचीन आर्यों के भोजन के विषय में खोज करनी पड़ेगीं । स्वाध्याय से पता लगता है कि एक समय था जबकि भारत की समस्त जातियां मांस, अण्डा तथा मछली से सर्वथा दूर रहती थी । उनकी आयु लम्बी, काया निरोगी, शरीर स्वस्थ व चुस्त रहता था ।

चीनी यात्री फ़ाइयान जो भारत सरीखे देश मे सन् ३९९ मे यात्रा पर आया था । लिखता है कोई भी आर्यजन, किसी भी जीवित प्राणी का वध नहीं करता था । न मादक पेय ही पीता था और कहीं पर भी बूचड़खाने तथा शराब की दुकानें न थी ।

एक पुराना घिसा-पिटा प्रश्न सामने आता है कि क्या ईश्वर ने इंसान को मांस खाने के लिए उत्पन्न नहीं किया, क्या मांस प्राकृतिक भोज्य नहीं है, उत्तर में यही कहा जायेगा कि मांस मनुष्य का भोजन नहीं है क्योंकि मनुष्य के शरीर का ढांचा उन पशुओ के समान नहीं हैं जो मांस खाते हैं । मनुष्य की आंत लम्बी होती है जिसमे मांस सड़ जाता है जिससे बीमारी फैलती है । जबकि मांसाहारी पशुओं की आंत छोटी होती है ।

मनुष्य को प्रकृति ने शाकाहारी बनाया है । देखिये मांसाहारी पशुओ की पाचन प्रक्रिया मे मांस को पचाने के दस गुना हाईड्रोक्लोरिक ऐसिड अधिक होता है और इसका प्रत्यक्ष कारण प्रतीत होता है कि प्रकृति का उपदेश कभी भी मनुष्य को मांसाहारी बनाने का नहीं । न ही मनुष्य शरीर की रचना से ही यह पता लगता है । ईश्वर ने शाकाहारियो के शरीर की रचना मासाहारियों के शरीर रचना से कतई भिन्न है, तब आप ओर हम विचारे कि यदि शरीर रचना के विपरीत कोई भी आचरण करते हैं यानि हम मांस खाते है तो यह कृत्य शरीर रचना के विपरीत होगा और इसके परिणाम भी दुखद होगे । हम रोगो से ग्रस्त होकर अपना जीवन नष्ट करेंगे ।

आर्यों के पूर्वज रामकृष्ण सब विशुद्ध शाकाहारी थे यह सब प्रमाणित सत्य है । ऐतिहासिक ग्रथों में इस सत्य की जानकारी भली-भांति अंकित है ऐसे महापुरुषों की आयु लम्बी, जीवन पवित्र तथा शरीर व काया निरोगी थी ।

एक बात तो निर्विवाद है कि सृष्टि की उत्पत्ति के पश्चात जब मनुष्य ने चलना फिरना प्रारम्भ किया होगा तो उसको फल, सब्जी मेवा पदार्थ उपलब्ध हुए होंगे न कि मांस । पशुओं की खाल काटने के लिये चाकू, वह भी तेज धार वाला, फिर मास को पकाने के लिये अग्नि पर रखने के लिये उचित बर्तन कहीं उपलब्ध न थे, बर्तनो आदि का अति प्राचीनतम काल में आविष्कार होन था इससे भी सिद्ध है कि हमारे पूर्वज ऋषि-मुनि सब शाकाहारी थे ।

किसी ने कहा है कि प्रकृति का नियम अटल है उसे कोई भंग नहीं कर सकता । जैसा करोगे वैसा भरोगे दूसरो को तबाह और नष्ट करके कोई अपना सुख चाहे यह बिल्कुल असम्भव है बल्कि दूसरो को तबाह करने वालो की बर्बादी भी निश्चित है । इस कारण अण्डे, मांस मत खाओ । यह दूसरे की जिन्दगी को तबाह करने से प्राप्त होते हैं ।

इस छोटे से लेख से स्पष्ट होगा कि मांस आर्यों का भोजन नहीं है ।

चम्पारण जिले में लगातार उत्सवों एवं यज्ञों की धूम

इस वर्ष चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्वावधान में २१ मार्च से लेकर २९ अप्रैल तक लगातार-जिला स्थित आर्य समाजों का उत्सव एवं यजुर्वेद पारायण महायज्ञ, गायत्री महायज्ञ, स्वर्ण जयन्ती समारोह आदि धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुए । जिला के विभिन्न आर्य समाजों में निम्न लिखित कार्यक्रम सम्पन्न हुए ।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बलाही, आर्य समाज गोविन्दपुर, आर्य समाज तुरकौलिया आर्य समाज रक्सौल, आर्य समाज मैनाटांड, आर्य समाज चौनाहा (स्वर्ण जयन्ती महोत्सव)

यजुर्वेद पारायण एवं गायत्री महायज्ञ

आर्य समाज घोड़ासहन, आर्य समाज मेहती, आर्य समाज बेतिया, आर्य समाज जयमूर्ति नगर ।

यह कार्यक्रम उपर्युक्त आर्य समाज में वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन' महिला सम्मेलन आदि अनेक सम्मेलनों के साथ सम्पन्न हुए । इन सम्मेलनों एवं यज्ञो की सम्पन्नता विभिन्न आर्य समाजो मे जिला में पधारें हुए विद्वान उपदेशको, आचार्यों एवं भजनोपदेशको द्वारा विधिवत हुये ।

चम्पारण में अपूर्व वैदिक धर्म मेला

चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्वावधान में ९, १०, ११ मार्च को गायत्री महायज्ञ एवं वैदिक धर्म मेला आर्य समाज जगदीशपुर मे धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ ।

महिलाओं की उपस्थिति बहुत अधिक रहती थी यज्ञ मे उनकी श्रद्धा सराहनीय थी । दूर से आने वाले श्रोताओं के लिए लंगर खुला था । हजारों की संख्या में लोग प्रतिदिन भोजन, जलपान करते थे । यह एक अपूर्व आदरणीय वैदिक धर्म मेला था । सैकड़ों की संख्या में लोगो ने यज्ञोपवीत धारण किया तथा अभक्ष्य पदार्थ न खाने की प्रतिज्ञा की ।

मंत्री
जिला सभा, रक्सौल

राष्ट्रीय नेता महावीर हनुमान

(शेष पृष्ठ ४ से आगे)

राया । अंजनी कुमार महावीर हनुमान व अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रती तथा तप: पूत वेद वेदांगो के विद्वान वानर राष्ट्र के नायक गदाधारी बजरंगी सेवा धर्म के मूर्तिमान प्रतीक महर्षि अगस्त जी के जीवन की सम्पूर्ण सबसे बड़ी पूंजी उनके शिष्य महावीर हनुमान इस रामराज्य के मूल संस्थापक थे। ऐसे महापुरुष का हम श्रद्धा भाव से स्मरण करते हैं ।

महावीर हनुमान की सच्ची पूजा

राम और हनुमान का जय घोष करने वाले, श्रद्धा प्रत्यांचा उठाओं अपनी सोई हुई गदा, राम और हनुमान के भक्तो मत भूलो राष्ट्र और हनुमान की संस्कृति और राष्ट्रीयता अभिन्न है । धर्म व राजनीति अलग अलग नहीं । सदाचार या चरित्र पूजा भी सर्वोत्तम पूजा पाठ है । स्वधर्म राष्ट्र धर्म का सम्बन्ध वर्णाश्रम धर्म सच्चा वैदिक धर्म मानव धर्म है ।

आवश्यकता और समय की मांग है कि हनुमान जी के भांति राष्ट्र देवता के भक्त बने । कहे राष्ट्र देवता को अपना सर्वस्व समर्पित है । यह राष्ट्र देव के लिए है, मेरे लिए नहीं । इसका पाठ पढ़ते हुए व्यक्तिगत जीवन केसमष्टि राष्ट्र के चरणों में अर्पित करें व सच्चे यौगिक बने । आज हनुमान जैसे अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत आदर्श सेवा भावना निर अभिमानता शौर्य विश्व के प्रतीक गदाधारी की आवश्यकता है ।

राम राज्य के प्रताप व आध्यात्मिक मूल मे महावीर हनुमान का ब्रह्मचर्य अपूर्व तप अनुपम शौर्य अपार साहस अद्भुत राजनीति सत्ता के ऊपर निरभिमानिता एवं सेवा साधना है ।

अभूतपूर्व कहानी से युक्त पवित्र चरित्र

मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने अपनी सफलताओं के मूलाधार सेवा धर्म के प्रतिमूर्ति वीर वर हनुमान का मूल्यांकन किया व कृतज्ञ स्वाभावी भारतीय प्रजा भी महावीर हनुमान की प्रभुत्व समय के घात प्रतिघातों के बीच भारतीय कवि कण्ठो ने उनके गौरव को ज्येष्ठ को प्रथम मंगल उस वीर पुरुष के चार चरित्र का स्मरण करता है तथा हमे अपने कर्तव्य का बोध कराता है । आइए आज के पावन दिन हम महावीर हनुमान की चरित्र पूजा का व्रत ले अर्थात उनके चारित्रिक गुणो पर आचरण करने का संकल्प करें । वीर बने धीर बने , यहीं हनुमान जी की पूजा का सही प्रकार है ।

गुरुकुल आश्रम, ब्रह्मावर्त-बिठूर (कानपुर)

के चिकित्सालय, वाचनालय, प्रेस, यज्ञशाला, पाकशाला, २०० आवास-कक्ष, सभागार, गुरुकुल विद्यालय, गौशाला, नलकूप, आकाश जलटंकी आदि हेतु गुरुकुल के संस्थापक स्वामी गुरुकुलानन्द कन्दाहारी ने सभी से मुक्तहस्त हो दान की अपील की है ।

नवीन आर्य समाजों की स्थापना

आर्य समाजके कर्मठ मिशनरी प्रचारक श्री महानन्दार्य भजनोपदेशक (बमही-चुनार निवासी मिरजापुर जिला के ग्राम, बामेसोती, अबलहाट, अब्दालपुर, बरें व कोलकम, पसहीं तथा अहरौरा बजार में, गत मार्च माह में जमकर प्रचार किया, फलस्वरूप इन्हीं ने तीन ग्रामों में नया आर्य समाज की स्थापना किया । प्रचारक जी ने मिरजापुर तथा अन्य स्थानों में अब तक कुल २८१ आर्य समाजें कायम किया ।

जिहादे इस्लामी की ओर से-आर्य समाज के नेताओं को धमकी भरे पत्र

दिल्ली ६ मई ८७ तथा कथित जिहादे इस्लामी संगठन की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेताओ को एक और धमकी भरा पत्र प्राप्त हुआ है जिसमे लिखा है :—

"भारत पर इस्लामी साम्राज्य आने वाला है । तुमने इस्लाम को नुकसान पहुंचाया है । एक-एक का बदला लेंगे । हमारी तलवार दुधारी चमक उठी है । एक मुसलमान एक हजार पर भारी पड़ेगा । तुम्हारे सब लीडर हमारी हिट लिस्ट में हैं । सिक्खों का बदला भी अब हमें लेना है ।"

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती को पहले भी इस तरह के धमकी भरे पत्र उग्रवादियों की ओर से कई बार मिल चुके हैं । सार्वदेशिक पत्र के सम्पादक को भी कुछ दिन पूर्व कड़ा धमकी पत्र प्राप्त हुआ था ।

श्री स्वामी जी ने प्रकट किया कि इस प्रकार के षड्यन्त्रों और धमकी भरे पत्रो के पीछे विघटनकारी और राष्ट्र-द्रोही शक्तियों का हाथ है, जो भारत मे अस्थिरता और भय का वातावरण बनाने मे संलग्न है ।

इस धमकी भरे पत्र की फोटो प्रतियां दिल्ली पुलिस के आयुक्त तथा भारत सरकार को सूचनार्थ भिजवा दी गई है ।

सच्चिदानन्द शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक सभा देहली

आर्य समाज आर्य नगर, डिमौली, महीउद्दीनपुर (मेरठ)

का भवन निर्माण दिनांक ६ जून १९८७ से प्रारम्भ होगा जिसके लिए धन की आवश्यकता है । आर्थिक सहायता पहुंचा कर आर्य समाज की सहायता करें ।

निर्वाचन

आर्य वानप्रस्थ आश्रम-ज्वालापुर सहारनपुर
प्रधान श्री मक्खनलाल जी नागपाल
मन्त्री श्री महेन्द्र मुनि जी
कोषा० श्री गुलशन राय जी [सौम्य मुनि]

आर्य समाज काशीपुर नैनीताल
प्रधान श्री सत्येन्द्र चन्द्र गुड़िया
मन्त्री श्री जयसिंह "सरोज"
कोषा० श्री ओमकुमार चौहान

नगर आर्य समाज जौनपुर
प्रधान श्री डा० राम जी विशारद
मन्त्री श्री राधे मोहन गुप्त
कोषा० श्री धर्मेन्द्रनाथ आर्य

उन बलिदानों का क्या होगा?

मानवता ही यदि भारत मे,
खो देगी अपना अस्तित्व ।
मां ही भूलेगी भारत मे
प्यार भरा सब सुखिर ममत्व ।
अरबों–खरबों की लागत के–
इन निर्माणो का क्या होगा ?
नैतिकता का पतन हो रहा,
दनुज तत्व बढ़ रहे अभय !
धर्म–कर्म सब व्यर्थ बने हैं,
बढ़ता द्वेष यहां निर्भय ।
मानव उर मे तिमिर रहा यदि–
ज्योतित बल्बों का क्या होगा ?
निर्धनता का तथा विषमता–
का यदि होगा नित मर्दन ।
झूठ–कपट–व्यभिचारों का ही,
यदि होगा नव अभिनन्दन ।
चोरी डाका–कत्ल न रुकता–
इन पुलिस दलो का क्या होगा ?
घूस बढ़ेगी, मिथ्या होगी,
जनगण को न न्याय मिलेगा ।
कृषक तथा मजदूरो का यदि,
शोषण होता यहा रहेगा ।
भूखा यदि इन्सान रहा तो–
भगत–सुभाष–शिवा–राणा के–
उन बलिदानों का क्या होगा ??

–राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

धधक रहा है देश स्वतन्त्रता खतरे में

धधक रहा है देश स्वतन्त्रता खतरे में
तुम सुरा सुन्दरी में मदहोश पड़े,
फिल्म तारिकाओं सा रूप धरे ।
है प्रश्न हमारा तुमसे क्या जीवन है ऐसे जीने में
धधक रहा है देश स्वतन्त्रता खतरे में ।
गली गली में आज बिलखती मानवता है,
सच पूछो तो आज बहन को भाई से खतरा है ।
मां को विश्वास रहा न बेटे में,
धधक रहा है देश ·· ··· ··· ··· ···
होटल में जाकर बाबू जी अण्डा मांस उड़ाते हैं,
घर में 'विकल' दुधमुंहे बच्चे नकली स्तन पी सो जाते हैं ।
ऐसे बाबू कहलाने से डूब मरो चुल्लू भर पानी में,
धधक रहा है देश··· ·· ··· ··· ···
हम कहते बच्चे पैदा हों वीर शिवा राणा प्रताप से,
क्या यह सम्भव हो सकता है परिवार नियोजन से ।
हिजड़ों से क्या पैदा होंगे अभिमन्यू अर्जुन,
धधक रहा है देश ··· ··· ···

–डा० बालकृष्ण आर्य 'विकल' बिन्दकी, (फतेहपुर)

बाल जगत

गणेश प्रसाद वर्णी

(श्री राष्ट्र बन्धु १०९/३०९ रामकृष्ण नगर कानपुर–२०८०१२)

विश्वास नहीं होता कि एक रुपये से बनारस जैसे विशाल नगर में एक शिक्षा केन्द्र का शुभारम्भ किया गया था जिस व्यक्ति ने इतना बड़ा संकल्प किया था, वह बड़ा नहीं था । दुबली पतली काया के एक साधारण आदमी का यह असाधारण काम था । चाणक्य जैसा लगनशील और महामना जैसा मांगने वाला यह व्यक्ति था गणेश प्रसाद वर्णी ।

अग्रवाल महासभा से लौटते हुए तीन व्यक्ति चले आ रहे थे । आपस में बातें करते–विषय था, काशी में एक विद्यालय स्थापित किया जावे । लम्मनलाल जी कामावालो ने एक रुपया इसके लिए दिया । वर्णी जी ने बड़ी प्रसन्नता से ले लिया । उनके तीसरे साथी बाबा जी थे । उन्होंने कहा, भाई एक रुपये से क्या होगा ?

वर्णी जी ने आत्म विश्वास से कहा–महाराज ! आपका आशीर्वाद ही सब कुछ करेगा । जरा से बीज से ही बट का विशाल वृक्ष बन जाता है जिसके नीचे हजारों नर-नारी, पशु-पक्षी आश्रय पाते हैं । कौन जाने, वीर प्रभु ने इस एक रुपये में ही विद्यालय के उत्थान का मूल कारण देखा हो ।

'नहीं शब्द को मिटा दो' जिसके अन्तःकरण की प्रेरणा थी, ऐसे व्यक्ति में अध्यवसाय का सागर हिलोरें मार रहा था । लौटकर उस व्यक्ति ने एक रुपये के चौंसठ पोस्ट कार्ड खरीदे और एक ही बैठक में चौंसठ व्यक्तियो को लिखे । लिखने के ढंग और शैली मे इतना आकर्षण था कि दमड़ी न जाय चमड़ी चाहे चली जाये–ऐसे लोगों ने भी दिल खोल कर दौलत दी जिसकी बदौलत ज्येष्ठ सुदी ५ विक्रमी १९६२ के दिन विद्यालय का उद्घाटन बड़ी शान से सम्पन्न हो गया ।

सादगी और संयम से जिन्दगी बिताते हुए उस विद्यार्थी ने विद्यालय पहले स्थापित किया, बाद में उसी में शिक्षा ग्रहण की । अनेक स्थानों की यात्रा की, नाना प्रकार के प्रवाद सुने, अड़चनें हल कीं और और हलकी फुलकी परेशानियों में जैसे बने रहे उसी तरह बड़ी परेशानी में भी अलमस्ती की जिन्दगी बिताई । गुरुकुल में रहकर कठोर अनुशासन का पालन किया । आचार्य के प्रति श्रद्धा और निष्ठा निभाई ।

एक बार अपने आचार्य की अनुमति बिना मांगे वह रामनगर (काशी) में रामलीला देखने चले गये । जब लौटे तो गुरु जी की फटकार सुनी । विद्यालय से निष्कासन का आदेश सुना, लेकिन बड़ी शालीनता से अपने स्थापित किये विद्यालय में बनाये गये कठोर नियमों का पालन किया, क्षमायाचना की, प्रायश्चित्त के लिए एक महीने तक मधुर भोजन न करने का निश्चय किया । दुबारा फिर वैसी गलती नहीं की ।

☆

समान नागरिक संहिता क्यों ?

—पुत्तीलाल यादव, एडवोकेट—कानपुर ।

(गतांक से आगे)

वहाँ जाति धर्म और लिंग से ऊपर उठकर सभी नागरिको को समान दर्जा प्राप्त है। सन् १८७० से लागू समान पारिवारिक कानून के अन्तर्गत गोवा में चाहे किस धर्म का व्यक्ति हो उसका विवाह एक संविदा है। विवाह का पञ्जीकरण अनिवार्य है। सम्पत्ति पर पति पत्नी का समान अधिकार है परन्तु उसकी सुरक्षा का दायित्व पति पर है। सम्पत्ति का विक्रय पति पत्नी दोनो की सहमति से ही हो सकता है। गुजारे भत्ते के सबंध मे दोनो को समान अधिकार प्राप्त है। तलाक आपसी सहमति या न्यायालय द्वारा होती है। तलाक देने पर सम्पत्ति का बटवारा अपने आप होगा तथा जो न मानने वाला होगा वह दूसरे को अपनी आय का १/३ तक गुजारे के लिये देने को बाध्य किया जा सकता है। गोवा मे तमाम कोशिशो के बाद भी मुस्लिम समुदाय के लोग पर्सनल ला लागू नहीं करा सके हैं क्योकि गोवा की मुस्लिम महिलायें अत्यधिक जागरूक संगठित और साहसी हैं। समान और अनिवार्य नागरिक संहिता की सबसे बड़ी देन यह है कि गोवा दामन और दीव मे आज तक कभी साम्प्रदायिक दंगे नहीं हुये। गत दिनो जो भी उपद्रव हुये वे भाषायी या गोवा को राज्य का दर्जा दिये जाने वाले आन्दोलन की उपज थे, वहाँ सभी समुदायो और मतावलम्बियो के बीच बहुत अच्छा सद्भाव एव सौमनस्य है।

समय की आवश्यकता

आज हमे अपने देश मे प्रचलित मजहबो से जुडी हुई रस्मो तथा औपचारिकताओ को सीमित करने की आवश्यकता है। व्यक्तिगत अनुष्ठान, पूजा वन्दना, आरती, सन्ध्या, नमाज, हवन आदि धार्मिक क्रियाओ के लिये प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र हो परन्तु सबकी पारिवारिक और सामाजिक प्रथाओ को समान नागरिक कानून बनाकर एक परिधि मे बांधने की आवश्यकता है। विवाह, पृथकता, तलाक, संरक्षण गुजारा, गर्भधारण, गर्भपात, गोद, सम्पत्ति का मिलना और उसका बटवारा तथा हस्तान्तरण आदि ऐसी बाते हैं जिनको सबके लिये समान बनाया जाना चाहिये।

इस समानता से अनेक लाभ होगे। प्रत्येक नागरिक को पता रहेगा कि उसे क्या अधिकार प्राप्त है। मात्र कुछ विशेष सुविधाओ के लिये धर्मान्तरण बन्द हो जायेगा। साम्प्रदायिकता हमेशा के लिये समाप्त हो जायेगी। संविधान मे वर्णित कानूनी समानता तथा एक नागरिकता का निर्माण होगा। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने इसके लिए पहल करके एक प्रशसनीय कार्य किया है। उन्होने कहा है कि "समान नागरिक संहिता को जल्दबाजी मे नहीं तैयार किया जायेगा। इस पर देश मे व्यापक चर्चा की जानी चाहिए।" चर्चा सर्वत्र शुरू हो चुकी है। इस चर्चा तथा बहस से कुछ साम्प्रदायी सावक विचार सामने आ रहे हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि प्रस्तावित समान नागरिक संहिता के प्रति हमारे देश के नागरिक संकीर्ण और स्वार्थी दृष्टिकोण छोड़कर इसे राष्ट्रीय आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य मे देखें।

१० मई १९८७, संस्कृत रक्षा दिवस पर पारित—प्रस्ताव

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद लखनऊ के समस्त प्रतिनिधि गण सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार द्वारा नई शिक्षानीति मे संस्कृत की उपेक्षा के लिए घोर निन्दा करते हैं। "संस्कृत संस्कृतिस्तथा"—भारतीय संस्कृति संस्कृत पर आधृत है। संस्कृत की उपेक्षा भारतीयता तथा मानव संस्कृति की उपेक्षा के तुल्य है। समस्त वैदिक वाङ्मय, प्राचीन साहित्य, भारतीय दर्शन, भारतीय संस्कार एवं संसार की समस्त भाषाएँ संस्कृत से ही ओत प्रोत तथा प्रादुर्भूत हैं। आज वैज्ञानिक भी मानते हैं कि सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत कम्प्यूटर के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है। साथ ही राष्ट्रभाषा हिन्दी तो संस्कृत पर ही आधारित है तो क्या संस्कृत की उपेक्षा राष्ट्र भाषा की उपेक्षा नहीं है ? ऐसी मातृभाषा की उपेक्षा करने पर जनमानस का उद्वेलित होना स्वाभाविक है, अस्तु किसी प्रकार का कोई नया संघर्ष न पैदा कर राष्ट्रीय एकता तथा सम्प्रभुता के लिए आवश्यक है कि संस्कृत को उचित स्थान दिया जाय।

हम सभी इस प्रस्ताव के माध्यम से भारत सरकार के प्रधानमंत्री तथा अन्य कर्णधारो एव शिक्षाविदो से पुरजोर माग करते हैं कि माध्यमिक स्तर तक संस्कृत को अनिवार्य विषय बनाया जाय तथा गुलामी की देन विदेशी भाषा अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय बनाया जाय।

हम है, समस्त भारतीय नागरिक तथा
जनपद लखनऊ के आर्य प्रतिनिधि गण

प्रवेश सूचना

(सत्र १९८७-८८)

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान

अन्तर्गत आर्य विद्या सभा—डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्ता समिति, नई दिल्ली

पद	धर्म शिक्षक
प्रवेश योग्यता	एम० ए० (संस्कृत) अथवा आचार्य। हिन्दी अंग्रेजी भाषा तथा वैदिक सिद्धान्तो का ज्ञान
पाठ्यक्रम अवधि	एक वर्ष
सुविधाए	शिक्षा, आवास, पानी, व बिजली सर्वथा नि शुल्क।

योग्य छात्रों को २०० रु० मासिक छात्रवृत्ति।

पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद सफल अभ्यर्थियो को डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओ मे 'धर्म शिक्षक' पद पर जे० बी० टी० वेतनक्रम मे नियुक्ति की गारन्टी।

केवल निष्ठावान् आर्य समाजो हो पूर्ण विवरण सहित आवेदन पत्र १५ जून, १९८७ तक निम्न पते पर भेजे —

विजय पाल शास्त्री
प्राचार्य,
डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान
आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली—११०००१

हाड़ौती क्षेत्रीय आर्य वीर दल शिक्षण शिविर, कोटा [राज-]

समाज मे व्याप्त अन्याय, अत्याचार तथा भ्रष्टाचार से लड़ने के लिये युवा शक्ति को एक निश्चित विचार धारा [वैदिक विचार धारा] पर संगठित करके उनमे चरित्र निर्माण करने तथा देश प्रेम की भावना भरने के उद्देश्य से आर्य परिवार संघ, कोटा के तत्वावधान मे, आर्य विज्ञान नगर, कोटा (राज–) पर दि० १७-५-८७ से २४-५-८७ तक १२ वर्ष से ऊपर के १०० आर्य वीरो का आर्य वीर दल शिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है। शिविर मे शिविरार्थियो के आवास, भोजन, अल्पाहार आदि की नि:शुल्क व्यवस्था की गयी है। प्रवेश शुल्क के रूप मे मात्र १०) रुपए लिए जायेंगे।

हनुमान प्रसाद संयोजक

४ म २७ विज्ञान नगर, कोटा कोटा [राज–] ३२४००५

पाठ्यक्रम में संस्कृत अनिवार्य हो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश पर १० मई ८७ को सम्पूर्ण देश मे माध्यमिक–पाठ्यक्रम से संस्कृत के निष्कासन पर विरोध दिवस मनाया गया। वहा वक्ताओ ने संस्कृत की अनिवार्यता को अभिव्यक्त करके तदर्थ प्रस्ताव पारित करके भारत के राष्ट्रपति–प्रधान मन्त्री, मानव संसाधन मन्त्री को भेजे हैं। हमे नित्य ही सब ओर से प्रस्तावो की प्रतिलिपि प्राप्त हो रही हैं। सभी के प्रस्ताव प्रकाशित करने–मे स्थानाभाव से कठिनाई के कारण तक जिन आर्य समाजो के पारित प्रस्ताव मुझे मिल गये हैं उनके नाम ही प्रकाशित कर रहे हैं।

आर्य समाज लाल बाग लखनऊ।
आर्य समाज आदर्श नगर लखनऊ।
आर्य समाज बस्ती।
आर्य समाज हल्द्वानी नैनीताल।
आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।
आर्य समाज चौक प्रयाग।
जिज्ञासु सरलतम संस्कृत प्रचार समिति प्रयाग।
आर्य समाज मन्दिर मिसखुवा गाजियाबाद।
नगर आर्य समाज गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ।
वैदिक साधन, आश्रम तपोवन देहरादून।
आर्य समाज टाडा अफजल–मुरादाबाद।
आर्य समाज केराकत जौनपुर उत्तर प्रदेश

डा० प्रतिभा मेहता विशेष शोध कार्य हेतु अमेरिका जा रही हैं

डा० प्रतिभा मेहता केन्द्रीय औषधि अनुसंधान केन्द्र लखनऊ मे अपना चिकित्सा रसायनमे शोध कार्य समाप्त करने के बाद अब लिवरपूल विश्व विद्यालय लिवरपूल अमेरिका मे विशेष शोध कार्य हेतु सरकार की ओर से भेजी जा रही हैं। पहली जून को वहा अपना कार्यभार ग्रहण करेंगी आर्य समाज का प्रचुर मात्रा मे साहित्य भी प्रचारार्थ अपने साथ ले जा रही हैं। आर्य समाजके प्रति निष्ठावती छात्रा हैं। हम उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

वेद पथिक पं० धर्मवीर आर्य [illegible] आर्य समाज नत्थूपुर मधुबन (आजमगढ़) के यज्ञशाला के लिए १०००० दस सहस्त्र रुपयों का शुभ दान

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली की मासिक बैठक आर्य समाज करोलबाग दिल्ली मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के [illegible] प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में रविवार वैसाख सुदी ९ दिनांक ३-५-८७ को सम्पन्न हुई जिसमे दिल्ली की आर्य समाजों के [illegible] ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के [illegible] श्री महाशय धर्मपाल जी ने किया। इस महति सभा में वेद पथिक पं० धर्मवीर आर्य प्रचारक ने यह घोषित किया कि आर्य समाज नत्थूपुर, मधुबन आजमगढ़ की यज्ञशाला के निर्माण के लिए मैं अपनी पेन्शन की रकम में से दस सहस्त्र रुपया सहर्ष भेंट कर रहा हूं। वेद पथिक जी की इस घोषणा से वैदिक धर्म के नारों और तालियों की गड़गड़ाहट से आकाश गूंज उठा।

एक करोड़ रुपयो के दान का अभियान

वेद पथिक जी ने अपने ग्रन्थो की बिक्री से महर्षि दयानन्द वेद विश्व विद्यालय दिल्ली के निर्माण कार्य मे एक करोड़ रुपयों का दान प्रदान करने का अभियान चला रहे हैं। वेद विश्व विद्यालय की योजना २५ करोड रुपयोकी है। मधुबन शहीद स्मारक कोषमे भी अपने ग्रन्थों की बिक्री से वेद पथिक जी दो लाख रुपयो का दान प्रदान करने का शुभ संकल्प किये हैं। यह योजना-दो करोड रुपयो की है। श्री वेद पथिक जी ने बतलाया है कि उत्तर प्रदेश के [illegible] श्री वीर बहादुर सिंह जी को भी मधुबन शहीद स्मारक स्थल पर यज्ञ मे आहुति देने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं। उ० प्र० सरकार से मधुबन शहीद स्मारक के लिए एक लाख २५ सहस्त्र रुपया स्वीकृत हो गया है।

श्री वेद पथिक जी ने प्रेस प्रतिनिधियो को यह बतलाया कि मधुबन शहीद स्मारक की आधार शिला सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामंत्री श्रीयुत् पं० [illegible] जी [illegible] कमलों से रख चुके है।

श्री वेद पथिक जी ने बतलाया कि आर्य समाज नत्थूपुर की यज्ञशाला की आधार शिला लोक सभा के सदस्य श्री राजकुमार राय जी कर कमलो से मंगलवार ज्येष्ठ, कृष्ण १४ संवत् २०४४ दिनांक २६ मई को आर्य समाज नत्थूपुर के महोत्सव पर रक्खी जायेगी।

इस शुभ अवसर पर उत्तर प्रदेश के जिले का आर्य सम्मेलन भी होगा जिसकी अध्यक्षता के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान [illegible] आर्य [illegible] जी को निमन्त्रण दिया गया है। महाराजा काशी नरेश श्रीमान् विभूति नारायण सिंह जी को भी आमन्त्रित किया है।

निर्वाचन

[illegible]

स्त्री आर्य समाज [illegible] एटा	आर्य समाज [illegible]
प्रधान श्रीमती [illegible]	प्रधान श्री [illegible]
मंत्राणी श्रीमती [illegible] आर्या	मन्त्री श्री [illegible]
कोषाध्यक्षा श्रीमती [illegible]	कोषा० श्री [illegible]

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का भव्य वार्षिकोत्सव संपन्न

पाणिनि कन्या महाविद्यालय का षोडस वार्षिक अधिवेशन दिनांक ५, ६, एवं ७ अप्रैल ८७ को हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान शास्त्रार्थ महारथी शान्तिप्रकाश जी डा० प्रशान्त वेदालंकार, श्री प० मदनमोहन जी विद्यासागर, डा० सुद्युम्न आदि ने उत्सव में आयोजित विविध सम्मेलनों में अपने विचार प्रस्तुत किये। तीन दिन तक नित्यप्रातः वृहत यज्ञ भी हुआ। स्वमन्तव्या-मन्तव्य प्रकाश के ५१ सिद्धान्तो पर ६ कन्याओं का वाद-विवाद विशेष आकर्षक रहा।

यह विचित्र सुसंयोग था कि महाविद्यालय की संस्थापिका पूजनीया आचार्या डा० प्रज्ञा देवी जी के जीवन की स्वर्ण जयन्ती का भी यही वर्ष रहा और इस सुखद अवसर पर स्नेह-भक्ति भाव से ओतप्रोत भावनाओं के मनकों को माल्यरूप प्रदान किया सुश्री मेधा देवी आचार्या ने पत्रिका "समर्चना" के प्रकाशन-सम्पादन से।

आर्य वीर दल का जिला स्तरीय सम्मेलन

पिलखुवा आर्य वीर दल ६ जून को अपना द्वितीय वार्षिक उत्सव जिला सम्मेलन के रूप मे मना रहे है। यह सम्मेलन आचार्य धर्मपाल जी गुरुकुल व प्रधान संचालक बाल दिवाकर हंस जी की देखरेख में होगा।

आर्यसमाज नैनीताल का वार्षिकोत्सव

सदा की भांति २० से २७ मई तक आर्यसमाज नैनीताल का वार्षिकोत्सव विविध सम्मेलनों के साथ आयोजित है।

भारत के भूतपूर्व गृह मन्त्री पं० गोविन्द वल्लभ पन्त की स्मृति में स्मारिका भी इस अवसर पर प्रकाशित होगी। श्री पन्त जी इस आर्य समाज के सभासद थे।

उत्सव संपन्न

आर्यसमाज नगर गोसाईगंज फैजाबाद का १६ वाँ वार्षिकोत्सव एवं आर्य वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम तथा वैदिक गुरुकुल महर्षि दयानन्द नगर गोसाईंगंज का उत्सव दिनांक २६ अप्रैल से २८ अप्रैल १९८७ ई० तक नगर क्षेत्र गोसाईगंज में सम्पन्न हुआ।

भूल सुधार

३ मई के 'आर्यमित्र' में वेद वेदांग पुरस्कार का समाचार छपा है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के उपप्रधान श्री धर्मेन्द्रसिंह जी ने पत्र द्वारा हमारी त्रुटि इङ्गित की है हम उनके आभारी हैं।

भूल से उसमें श्री पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड की आयु ७८ वर्ष छपी है। जबकि उनकी आयु ९८ वर्ष है।

प्रभु उन्हें शताधिक्य आयु दें। —सम्पादक मण्डल

अमेरिका में जन्मोत्सव यज्ञ

श्रीमती कमलेश बजाज ने अपने पौत्र पंकज सुपुत्र श्री सुभाष बजाज के जन्मोत्सव पर २५ सिमिट ड्राइव वालिंग फोर्ड अमेरिका में वैदिक यज्ञ किया। अमतों को यज्ञ का महत्व समझाया।

देव और असुर

जग मे परहित के लिये जो भी जिया करते हैं।
ऐसे धर्मी को सभी देव कहा करते है॥
झूठे वाचाल जो अपने ही लिय जीते है।
ऐसे दुष्टो को असुर नाम दिया करते है॥

—जगदीशशरण शीतल प्रधान आर्यसमाज चांदपुर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पिन कोड सं० २४९४०४

सूचना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद के लिए २ स्नातक तथा १ स्नातिका का निर्वाचन होना है। इसके लिए अधोहस्ताक्षर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उन स्नातकों से पञ्जीकरण हेतु प्रार्थना पत्र आमंत्रित करता है जिन्हें इस विश्वविद्यालय से स्नातक, स्नातको त्तर तथा पी. एच. डी. उपाधि प्राप्त किये ५ वर्ष हो चुके हों।

अत: वर्ष १९८२ तक उपाधि प्राप्त महानुभाव निम्न प्रपत्र अप पंजीकरण हेतु शुल्क ५/रू०, सदस्यता शुल्क २/रू० (वार्षिक) अथवा सदस्यता शुल्क २५/रू० (आजीवन) मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल आर्डर सहित दिनांक ३० जून १९८७ तक अधोहस्ताक्षरी के नाम प्रेषित करें। उक्त शुल्क अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय मे नकद भी जमा कराया जा सकता है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, दिनांक १-५-८७ — डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव

नोट—जिन स्नातकों ने वर्ष १९८७ के विज्ञापन के आधार पर आजीव शुल्क २५/रु० जमा कराया है उनके अतिरिक्त प्रत्एक स्नातक को जो पंजीकरण कराना चाहते है सदस्यता शुल्क जमा कराना होगा।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पंजीकृत स्नातक/स्नातिका के रूप में पंजीकरण हेतु प्रार्थना-

१—नाम ... ...

२—पिता का नाम ...

३—विश्वविद्यालय पंजीकरण सं ...

४—उच्चतम उपाधि जो गुरुकुल कांगड़ी वि० वि० से प्राप्त की हो

५—उक्त उपाधि प्राप्त करने का वर्ष

६—अनुक्रमांक जिससे उक्त उपाधि प्राप्त की

७—मनीआर्डर / पोस्टल आर्डर / बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद जमा किये गये धन का विवरण जिसके द्वारा वांछित शुल्क जमा किया ग

८—वर्तमान पता व्यावसायिक विवरण सहित ..

मैं, श्री यह प्रमाणित करता हूं कि उपर्यु तथ्य सत्य हैं। अत: मैं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पंजी स्नातक के रूप में पंजीकरण हेतु प्रार्थना करता हूं।

स्थान— हस्ताक्षर

तिथि— पता—

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 40913 ४५६६३
पञ्जीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
ज्येष्ठ कृष्ण १२
रविवार, २४ मई १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आवश्यक सूचना

उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजो को सूचित किया जा रहा है कि सभा कार्यालय से वार्षिक चित्र भेजे जा चुके हैं, जिन्हे अब तक प्राप्त न हुये हो, पत्र लिखकर मगालें।

२—नियमानुसार चित्रो की खाना पूरी करके सभा प्राप्तव्य दशांश, सूबकोटि एव आर्यमित्र आदि के धन सहित २० जून तक भेजने की कृपा कीजिये।

मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

राम जन्म भूमि हड़पने की चाल नहीं चल सकेगी

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद आगरा के तत्वावधान मे आयोजित 'आर्यसमाज स्थापना दिवस' पर सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित किए गये।

प्रथम—श्री हरिगोपालसिंह चौहान ने निम्न प्रस्ताव पढ़ा जो सर्व सम्मति से पारित हुआ—

"आर्य उप प्रतिनिधि सभा आगरा के तत्वावधान मे आयोजित यह आर्य सम्मेलन यह अनुभव करता है कि कुछ साम्प्रदायिक शक्तिया विदेशी ताकतो से प्रेरणा लेकर तथा उनसे आर्थिक सहयोग प्राप्त कर शक्ति के प्रदर्शन के आधार पर राम जन्म भूमि पर कब्जा करने की धमकी ही नही दे रह है वरन खुले रूप मे हिन्दू या उनकी सस्कृति व सभ्यता के विरुद्ध गाली गलौज की भाषा का प्रयोग कर रहे है। आर्य समाज सदैव मे बिना किसी वर्ग या समाज के विरुद्ध द्वेष रखते हुए राष्ट्र की एकता व अखण्डता के लिए कार्य कर रहा है शासन की भाट एव तुष्टीकरण नीति के कारण इन साम्प्रदायिक शक्तियो का व्यवहार राष्ट्र व समाज विरोधी होता जा रहा है। यदि इन शक्तियो के कुत्सित मसूबे का विरोध न किया गया तो आर्यसमाज के उद्देश्यो के विपरीत ही होगा।

अत यह सम्मेलन सर्वसम्मति से निश्चय करता है, यदि शासन ने राम जन्म भूमि के बारे मे कोई ढिलाई दी या तुष्टीकरण की नीति अपनाई तो आर्यसमाज हैदराबाद सत्याग्रह की भाति राम जन्म भूमि के बारे मे उन साम्प्रदायिक शक्तियो के मसूबो को पूरा न होने देगा (जो घृणा एव जोरजबरदस्ती मे विश्वास रखता है) सत्याग्रह करने के लिए विवश होना पड़ेगा।

द्वितीय प्रस्ताव—श्री रोशनलाल गुप्त ने पढ़ा जो सर्वसम्मति से निश्चय हुआ—

'गत सोमवार ३० मार्च ८७ को दिल्ली मे बोट क्लब पर आयोजित मुस्लिम सम्मेलन मे इमाम बुखारी एव अन्य वक्ताओ ने जो साम्प्रदायिकता को उभारने वाले देश द्रोहात्मक भाषण दिये उनसे देश की एकता एव अखण्डता को खतरा पैदा हो गया है और देश मे साम्प्रदायिक सघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई है। अत आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद आगरा के तत्वावधान मे आयोजित यह आर्य सम्मेलन केन्द्रीय सरकार से माग करता है कि वह ऐसे व्यक्तियो के विरुद्ध अविलम्ब दृढतापूर्वक कानूनी कार्यवाही करे और भविष्य मे इस प्रकार के भाषणो पर कानूनी रोक लगायी जाय। अन्यथा उसके परिणामों के लिये केन्द्रीय सरकार स्वय उत्तरदायी होगी।'

उपस्थित जन समुदाय ने बड़े जोर से ऊची ध्वनि के साथ सर्व सम्मति से उपर्युक्त दोनो प्रस्ताव पारित किए।

अमृत वर्षा

विनाशकाले विपरीत बुद्धिः

यह किसी कवि का वचन है कि जब नाश होने का समय निकट आता है तब उल्टी बुद्धि होकर उल्टे काम करते हैं। कोई उनको सूधा समझावे तो उल्टा मानें और उल्टा समझावें उसको सूधा मानें। जब बड़े बड़े विद्वान, राजा महाराजा ऋषि महर्षि लोग महाभारत युद्ध मे बहुत से मारे गये और बहुत से मर गये तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला। ईर्ष्या द्वेष अभिमान आपस मे करने लगे। जो बलवान हुआ वह देश को दबाकर राजा बन बैठा। वैसे ही सर्वत्र आर्यावर्त देश मे खण्ड-खण्ड राज्य हो गया। पुन द्वीपद्वीपान्तर के राज्य की व्यवस्था कौन करे? जब ब्राह्मण लोग विद्या हीन हुए तब क्षत्रिय वैश्य और शूद्रो के अविद्वान होने मे तो कथा ही क्या कहनी? जो परम्परा से वेदादि शास्त्रो का अर्थ सहित पढ़ने का प्रचार था वह भी छूट गया। केवल जीविकार्थ पाठमात्र ब्राह्मण लोग पढ़ने रहे सो पाठ मात्र भी क्षत्रिय आदि को न पढ़ाया। क्योंकि जब अविद्वान हुए गुरु बने गए तब छल कपट अधर्म भी उनमे बढ़ चला। ब्राह्मणो ने विचारा तो ‿ विका का प्रबन्ध बाधना चाहिए। सम्मति करके यही ‿ कर क्षत्रिय आदि को उपदेश करने लगे कि हम ही तुम्हारे ‿ व है। बिना हमारी सेवा किये तुमको स्वर्ग व मुक्ति न मिलेगी। किन्तु जो तुम हमारी सेवा न करोगे तो घोर नरक मे पड़ोगे। जो जो पूर्ण विद्या वाले धार्मिकों का नाम ब्राह्मण और पूजनीय वेद और ऋषि मुनियो के शास्त्र मे लिखा था उनको अपने मूर्ख विषयी कपटी लम्पट अधर्मियो पर घटा बैठे। भला वे आप्त विद्वानो के लक्षण इन मूर्खो मे कब घट सकते है? परन्तु जब क्षत्रियादि यजमान सस्कृत विद्या मे अत्यन्त रहित हुए तब उनके सामने जो जो गप्प मारी सो सो बिचारो ने सब मान ली।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

नवीन प्रवेश के लिए स्वर्णिम अवसर

गुरुकुल वैदिक सस्कृत महाविद्यालय, मिरापू, इलाहाबाद का नया सत्र १ जुलाई ८७ से प्रारम्भ हो रहा है। प्रवेश १५ अगस्त तक चलेगा। यह महाविद्यालय राज्य सरकार से 'क' वर्ग प्रथम श्रेणी में मान्यता प्राप्त तथा सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। यहा प्रथमा (कक्षा ६) से आचार्य (एम० ए०) पर्यन्त अध्ययन अध्यापन की और छात्रावास की उत्तम व्यवस्था है। यहा आधुनिक विषयो के अतिरिक्त वेद, निरुक्त, दर्शन, न्याय, धर्मशिक्षा, नैतिक शिक्षा, सगीत सध्या-हवन, योगासन व्यायाम धनुर्विद्या आदि का दैनिक अभ्यास एव प्रशिक्षण की सुयोग्यतम आचार्यो द्वारा अच्छी व्यवस्था है।

अपने बच्चो को सुयोग्य सदाचारी, देशभक्त नागरिक बनाने के लिए गुरुकुल मिरापू मे प्रवेश कराना न भूलें। स्थान सीमित है। शीघ्रता करें। विशेष जानकारी के लिए २/- दो रुपये भेजकर नियमावली मगायें।

कक्षा ५ उत्तीर्ण छात्र प्रवेश के लिए अर्ह है।

डा० रमामित्र शास्त्री
प्राचार्य

स्वत्वाधिकारणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप मे एम० पी० प्रिंटर्स (निकट मुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ मे श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित।

ओ३म्
आर्य मित्र
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४१/५७

ज्येष्ठ शुक्ल ४, रविवार, सवत् २०४४ वि० दिनाक ३१ मई १९८७

घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८५

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल–

विक्रमादित्य वसन्त'
वेद वारिधि

★

आचार्य रमेशचन्द्र एम ए

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौड

★

वर्ष	९०
अङ्क	२१

कलयुग और रामायण फिल्म पर प्रतिबन्ध लगे

इसके प्रदर्शन से बहुसँख्यक हिन्दुओ की धार्मिक भावनाओ पर आघात

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी का वक्तव्य

आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महामन्त्री श्री प मनमोहन तिवारी जो ने एक वक्तव्य देते हुए शासन का ध्यान बहुचर्चित फिल्म कलयुग और रामायण की ओर आकर्षित किया है।

इस फिल्म मे रामायण के आदश और आदरणीय पात्रो का उपहास ही नहीं किया गया है, बल्कि उनका ऐसा पतित चित्रण किया गया है कि प्रत्येक भारतीय की भावना पीडित होना स्वाभाविक है।

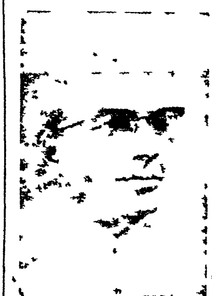
हनुमान, रामकथा का सर्वोत्तम समाज सेवी व्यक्तित्व है। भारतीय जनमानस मे एक आदश भावना हनुमान के प्रति है, परन्तु इस फिल्म मे हनुमान को विदेशी वस्त्रो मे दिखाया गया है, नग्न स्त्रियो के साथ उनका नृत्य दिखाया गया है उन्हे मादक और नशीले द्रव्यो का प्रयोग करने दिखाया गया है भग्व का स्त्री बनाकर नाचते दिखाया गया है और उनके लिए अपमानजनक शब्दो का प्रयोग किया गया जैसे हनुमान साला नशे मे धुन पडा है विदेशी जासूस है आदि आदि।

दिल्ली मे इस फिल्म का व्यापक विरोध हुआ। लखनऊ मे यह फिल्म तुलसी छवि गृह' मे प्रदर्शित की जा रही है। इसस हिन्दुओ की धार्मिक भावना को ठेस पहुची है, वह और अधिक भड़क सकती है और विरोध उग्र हो सकता है।

समाज विरोधी, धम विरोधी यह फिल्म आश्चय है कि ससर बोड से ही कैसे पास हो गयी। इसका मतलब यह है कि वहा भारतीय सस्कृति से परिचित लोगो का पूण अभाव है और देश की भावनाओ के साथ मखौल करने का एक षड्यन्त्र है। यह तो बहुसख्यक हिन्दुओ की धार्मिक सहिष्णुता है कि उसने विध्वसकारी उग्र रूप धारण नहीं किया, परन्तु यदि शासन मूक दशन बना रहा और भारतीय सस्कृति तथा हिन्दुओ की भावनाओ को न समझा तो स्थिति गम्भीर हो सकती है।

मैने इस फिल्म को स्वय देखा है, मै चाहता हू माननीय मुख्यमन्त्री एव माननीय गृहमन्त्री जी स्वय भी देखे और जिस निष्कष पर मै पहुचा हू, वह उससे अधिक उसका अनुभव करेंगे, अत समस्त उत्तरप्रदेश मे अविलम्ब प्रशासन को इस फिल्म के प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए।

श्री आर्य शतायु हो



श्री बलदेवसिह जी आय

श्री बलदेवसिह जी आय मन्त्री उत्तरप्रदेश शासन का जन्मोत्सव दिनाक १२ ५ ८७ को प्रात ८ बजे वृहद यज्ञ क साथ उनके निवास स्थान माल एवन्यू मे पूण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने श्री आय को बधाई दी। श्री तिवारी जी क साथ सभा के उपदेशक श्री लाम्ता प्रसाद जी एव श्री मनोहरलाल जी आय भी थे।

से आज मौन अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नही वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ— चैत्र शुक्ल ४ सम्वत् २०४४ रविवार ३१ मई १९८७, दयानन्दाब्द १६२
सृष्टि सवत् १९७२९४९०८७

संस्कृति को अवमानना अक्षम्य-अपराध

संस्कृति पर चोट देश द्रोहिता है

भारत में विदेशी शासन जहां कई दुर्गुण छोड़ गया है वही महांदास मनोवृत्ति के व्यक्तियों का समुदाय है जो योरुप और क्रिश्चियनिटी का भक्त है और भारत को अपने जन्म देश को विदेशी आंखों से देखता है यह मनोवृत्ति बढ़ती जाती है क्योंकि सम्प्रति देश के अधिकांश कर्णधारों का झुकाव भी उसी ओर है और जब राष्ट्र-भाषा का खुला अपमान शासन के द्वारा हो सकता है तो संस्कृति की अवमानना भी उसी क्षेत्र की सीमा में आता है।

फिल्म एवं चित्रपटों का युग है। महात्मा गांधी सम्बन्धी फिल्म एक विदेशी प्रतिष्ठान बनाता है उसी प्रकार कुछ देशी फिल्म प्रतिष्ठान भी कर रहे हैं। श्री मनोज कुमार बम्बई के प्रसिद्ध फिल्म निर्माता हैं उनकी नयी फिल्म छविगृहों में भारत के विभिन्न नगरों में प्रदर्शित हो रही हैं 'कलियुग और रामायण' जिसमें उन्होंने राम कथा के आदर्श पात्रों पर बड़े आक्षेप किये हैं तथा चरित्रचित्रण निकृष्ट—अश्लील और असभ्यता पूर्ण है जिससे प्रत्येक भारतीय के मन को पीड़ा पहुंचती और क्रोध आता है।

राम कथा महर्षि बाल्मीकि की उच्चकोटि की सांस्कृतिक देन है। धर्म-संस्कृति, सभ्यता व्यहार आदर्श और उन्नयन चरित्र चित्रण है, आञ्जनेय हनुमान इसके प्रमुख पात्र हैं जनसेवा के प्रहरी हैं, बाल्मीकि से लेकर तुलसी तक ने साधु हनुमान के चरित्र का उच्चकोटि का प्रदर्शन किया है। भारतीय जनमानस पर इसका प्रबल प्रभाव है—श्रद्धा है सम्मान है, फिल्म कलयुग और रामायण में इस पात्र का निकृष्ट प्रदर्शन है। हनुमान को विदेशी वेष में दिखाते है तथा भाषा इस प्रकार— कहीं नशे में धुत पड़ा होगा—गलियों में घूमता होगा पकड़ लाओ—नर्तकियों के साथ हनुमान का नृत्य—भैरव का स्वाँग बना के नचाना तथा मदिरा पान आदि— इसी प्रकार और इससे भी निकृष्ट प्रदर्शन हैं।

भारतीय जन मानस पर—हिन्दुओं पर इसका प्रभाव पीड़ा पहुंचाने वाला है तथा हमारे उच्चादर्शों पर सीधी चोट है। अगर इस्लाम धर्म की किसी ने इससे भी कम घटना का वर्णन किया होता तो तूफान हो जाता कर्नाटक में हो चुका है।

खेद है कि सेन्सर बोर्ड ने इसे पास कर दिया। जब देहली और अन्यत्र विरोध प्रारम्भ हुआ तो जनतामें जागृति आई और सब कहीं इसका विरोध हो रहा है। 'आर्यमित्र' भारतीय संस्कृति को अपमानित करने वाले निर्माता की भर्त्सना करता है और भारत की संस्कृति का उपहास करने वालों को देशद्रोही की संज्ञा देता है।

आर्य समाजों को इस फिल्म का विरोध करना चाहिये मनोज कुमार दंडित हो फिल्म के प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध लगे इस आशय के प्रस्ताव पारित करके केन्द्रीय सूचना प्रसारण मन्त्री को भेजना चाहिये। स्थानीय छविगृहों में जाकर प्रदर्शन बन्द करवाना चाहिये।

नवीन योरोपियन फैशन परस्ती ने मनोज कुमार का घृणित कदम उठाये हैं अगर अभी यह प्रवृत्ति न रुकी तो अन्य महापुरुषों और ऋषि मुनियों पर आक्षेपपूर्णफिल्में प्रदर्शित होगी संस्कृतिक अवमानना करने वाला देशद्रोही है। उसे दण्ड मिले—आर्यमित्र की आवाजके साथ समस्त आर्यजन अपनी आवाज मिला दें और भविष्य में ऐसा न हो—किसी का साहस न पड़े तथा विदेशी प्रभाव की ओर झुकाव वाली सरकार के भी कान खड़े हो जाय। (आचार्य रमेश चन्द्र एम० ए०)

सम्पादकीय टिप्पणी

अन्तर्कलह देश के लिए घातक

फेयर फेक्स या बोअर्स सौदे के विवरण अखबारों के पृष्ठों पर आते ही कुछ लोग बौखला गये और कांग्रेस पार्टी के एक घटक ने पूर्व वित्त व रक्षा मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के विरुद्ध एक मुहिम चालू कर दी हुई है। कोई उन्हें गद्दार कोई देशद्रोही कोई कुछ कोई कुछ कह कर बदनाम करने की चेष्टा कर रहे है। कांग्रेस संसदीय बोर्ड में उनके विरुद्ध अनेकों लांच्छन लगाये जाते रहे परन्तु कांग्रेस हाई कमान वह सब मौन सुनते रहे। इसके श्री बाद वी० पी० सिंह विरोधी तत्व और सबल हो गये और वे नित्य नये लांच्छन लगाने, श्री वी० पी०सिंह से मिलने वाले मन्त्रियों को बर्खास्त करने जैसी ऊल जलूल मांगे भी करने लगे हैं।

इलाहाबाद कांग्रेस ने तो उनके निष्कासन का भी प्रस्ताव पारित कर दिया है।

वित्त मन्त्री या रक्षा मन्त्री के रूप में श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने जो कुछ भी किया है। वह विशुद्ध राष्ट्रीयता से प्रेरित होकर ही किया है। उनका चरित्र बेदाग है उनके चरित्र पर उंगली नहीं उठायी जा सकती अगर कहीं किसी प्रक्रिया में कोई उनसे चूक हुयी हो उसे संभालना उनके मुखिया व अन्य सहयोगियों का काम था न कि उन्हें मन्त्रिमण्डल से हटाना व उनके विरुद्ध अनर्गल आरोप लगाना।

इस प्रकार के आरोपों से श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की छवि धूमिल नहीं और प्रखर ही हो रही है हां कांग्रेस का अन्तः कलह उभर कर सामने अवश्य आ रहा है और आरोप कर्त्ताओं के चरित्र पर जनता में प्रश्न चिन्ह लग रहा है। इससे जहां कांग्रेस विघटन की ओर जा रही है। राष्ट्रीय नेताओं की छवि धूमिल हो रही है। वहीं इसका लाभ अन्य किसी को मिलने के—बजाय केवल देशघातियों को ही मिलेगा। इसलिये श्री राजीव गांधी जो प्रधान मन्त्री व कांग्रेस अध्यक्ष दोनों ही हैं इस मुहिम को सख्ती से रोकें। लोगों को अब और अधिक आरोपबाजी बिल्कुल न करने दें। साथ ही उक्त काण्डों में जाँच के बाद जो दोषी हों वे कितने ही बड़े हों, कितने ही प्रिय हों, उन्हें दण्डित किया जाने में किञ्चित् संकोच न करें।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

विचार-विमर्श

ऋषि दयानन्द का जन्म-दिन : कब और क्यों?

—श्री आदित्य पाल सिंह आर्य
सहायक मंत्री (सिंचाई विभाग) एफ–५/५२ चार इमली भोपाल

गतवर्ष "वेद–संस्थान" के अध्यक्ष माननीय श्री अभय देव शर्मा जी ने "वेदवाणी" के जनवरी १९८६ के अंक में "ऋषि दयानन्द की जन्म-तिथि" विषयक मेरा लेख पढ़कर मुझे ४ फरवरी १९८६ को अपने एक पत्र मे लिखा था कि "आपने स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म-दिन निर्धारित किया है। मेरा विचार है कि इसे मनाने का उपक्रम वेद संस्थान करे। १२ सितम्बर १९८६ शुक्रवार को देसी तिथि से यह दिन पड़ेगा, अँग्रेजी तारीख से २ सितम्बर १९८६ मंगलवार आता है। कृपया परामर्श दें कि देसी तिथि से जन्म-दिन मनाया जाय या अँग्रेजी तारीख से (जो संभवतः सौर वर्ष की दृष्टि से अधिक समीचीन हो)।

इस पत्र का उत्तर मैंने उन्हें १५ मार्च १९८६ को देते हुए लिखा था कि "भारतीय परम्पराओ और स्वामी जी के व्यवहार में भारतीय तिथि के ही सर्वंव उपयोग को दृष्टिगत रखते हुए यह उचित होगा कि हम आर्यजन उनका जन्म-दिन भारतीय तिथि (भाद्रपद शुक्ल ९) के अनुसार ही मनाएँ। अतः इस वर्ष उनका जन्म दिन १२ सितम्बर १९८६ को मनाया जाना चाहिए।"

मेरे इस परामर्श के अनुसार ही गतवर्ष वेद संस्थान, नई दिल्ली मे साप्ताहिक "आय जगत्" के यशस्वी सम्पादक पं० क्षितीश जी वेदालंकार की अध्यक्षता मे तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के मुख्य आतिथ्य में ऋषि दयानन्द का जन्म-दिवस आर्य जगत् में पहली बार समारोह पूर्वक मनाया गया जिसका विस्तृत विवरण "वेद सविता" (दिसम्बर १९८६) एवं अन्य आर्य-पत्रो में प्रकाशित हुआ। "सार्वदेशिक" (२६अक्तूबर १९८६) साप्ताहिक पत्र के अनुसार इस अवसर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि "आज पहली बार मुझे एक ऐसी सभा में सम्मिलित होने का अवसर मिला है जिसमें महर्षि दयानन्द का जन्म-दिवस मनाया जा रहा है। उन्होने डा० फतेह सिंह जी को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द का जन्म-दिवस निश्चित करने में जो भी अनुसंधान किया गया है, उसकी रूपरेखा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजें जिससे हम धर्मार्थ सभा को देकर समूचे आर्य जगत् में और देश-विदेश में आज के दिन महर्षि का जन्म-दिवस मना सकें।"

उनके इस अनुरोध के परिपालन में मै एक लेख लिखने का विचार काफी दिनों से कर रहा था' परन्तु उसे लिख पाता, इससे पूर्व ही फरवरी, १९८७ के "सार्वदेशिक" साप्ताहिक में उन्हीं की ओर से ऋ० द० का जन्म-दिवस १२ फरवरी १९८७ (तदनुसार माघ शुक्ल १४, सं० २०४३) को मनाने की सूचना प्रकाशित हुई जबकि उन्हीं के अनुसार ऋ० द० का जन्म फाल्गुन कृष्ण १०, शनिवार संवत् १८८१ वि. (१२ फरवरी १८२५ ई०) को हुआ था। इस प्रकार आर्य जगत् के सम्मुख एक भ्रमपूर्ण स्थिति निर्मित हो गई जिसके निराकरण के लिए ही यह लेख लिखा जा रहा है।

इस विषय में निर्णय लेते समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की धर्मार्थ सभा के सम्मुख २३ जुलाई १९६० को जो विभिन्न जन्म-तिथियां आई थीं वे इस प्रकार थी :–

(अ) पं० भीमसेन शास्त्री (कोटा) फाल्गुन कृष्ण १०, शनिवार, संवत् १८८१ वि. (१२ फरवरी १८२५ ई०)।

(ब) पं० इन्द्र देव जी (पीलीभीत) : फाल्गुन शुक्ल २, शनिवार, संवत् १८८१ वि. (१९ फरवरी १८२५ ई०)।

(स) पं० अखिला नन्द शर्मा कविरत्न : भाद्रपद शुक्ल ९, गुरुवार, संवत् १८८१ वि.।

(द) श्री जगदीश सिंह गहलोत : १० फरवरी १८२५ ई०।

(य) पं० भगवत दत्त रिसर्चस्कालर : आश्विन कृष्ण ७, बुधवार, संवत् १८८१ वि· (१५ सितम्बर १८२४ ई०)।

इनमें से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को धर्मार्थ सभा ने पं० भीमसेन शास्त्री वाली तिथि को ही मान्यता प्रदान की और इसे ही सभा की अन्तरंग सभा ने २ अप्रैल १९६७ को स्वीकार कर लिया। अब १४ दिसम्बर १९८६ को दुबारा इसकी पुष्टि की गई है।

सार्वदेशिक सभा की इस मान्यता के पीछे ऋ० द० की आत्मकथा का यह उल्लेख है कि संवत् १८८१ के वर्ष में मेरा जन्म·········हुआ था। ··· ········ फिर माता-पिता ने मुझे बुलाके विवाह की तय्यारी कर दी। तब तक २१ इक्कीसवाँ वर्ष भी पूरा हो गया। जब मैने निश्चित जाना कि अब विवाह किये बिना कदाचित् न छोड़ेंगे, फिर गुप्चुप संवत् १९०३ के वर्ष में घर छोड़के सन्ध्या के समय भाग उठा। इसके अतिरिक्त पूना प्रवचन का यह वाक्य ध्यान में रखा गया कि "एक महिने के भीतर विवाह की तय्यारी हो गई।"

इन उल्लेखों से अनुमान लगाया गया कि संवत् समाप्ति से कुछ दिन पूर्व ही ऋ० द० का जन्म हुआ होगा ताकि जब उन्होंने घर छोड़ा तब २२वें वर्ष में संवत् १९०३ आ जाय। फिर विचार किया गया कि ऋषि का बचपन का नाम "मूलशंकर था इसलिए वे मूल नक्षत्रों में पैदा हुए होगे। इसलिए उस वर्ष का पंचांग बनाकर अथवा प्राप्त करके एक ऐसी तिथि खोज ली गई कि जिस दिन जन्म होने पर मूल नक्षत्र पड़ता हो। ऐसी तिथि १२ फरवरी १८२५ को पड़ रही थी, इसलिए १२ फरवरी वाली तिथि फाल्गुण कृष्ण १० को ही मान्यता प्रदान कर दी गई।

अब देखिए—घर छोड़कर ऋ० द० पहले दिन ४ कोस और दूसरे दिन १५ कोस चले और फिर साथ ले शहर में पहुंच गए। वहाँ कुछ दिन रहकर कोट–काँगड़ [अहमदाबाद के निकट] पहुंचे जहाँ से वे कार्तिकी [पूर्णिमा] के मेले में सिद्धपुर पहुंच गए। यहाँ वे पिता जी द्वारा पकड़े गए। इस प्रकार यह सारा विवरण ७-८ महीनों में खिचकर सर्वथा अस्वाभाविक हो जाता है। दूसरी ओर ऋषि की आत्मकथा में यह भी उल्लेख आता है कि इस प्रकार चौदहवें १४/वर्ष की अवस्था के आरम्भ तक यजुर्वेद की संहिता सम्पूर्ण और कुछ अन्य वेदों का भी पाठ पूरा हो गया था·········· जब शिवरात्रि आई तब १३ त्रयोदशी के दिन ·· ·········" जिससे फाल्गुण कृष्ण १० संवत् १८९४ वि. तक उनकी १३ वर्ष की आयु पूर्ण होकर वे १४ चौदहवें वर्ष में पदार्पण करते हैं और फाल्गुण कृष्ण १३ संवत् १८९४ वि. शुक्रवार [२३ फरवरी १८३८] को शिवरात्रि का व्रत रखने के लिए उसका महात्म्य सुनते हैं। क्रमशः

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का शताब्दी समारोह

रोहतक नगर मे गत १५-१६-१७ मई के मध्य आर्य प्रतिनिधि सभा रोहतक की शताब्दी विशाल रूप से मनाई गई जिसमें भारतवर्ष के उच्चकोटि के विद्वानो ने तथा आर्य समाज से सम्बन्धित व्यक्तियों ने भाग लिया। इस अवसर पर वेद सम्मेलन, स्वदेशी सम्मेलन व्यसन मुक्ति सम्मेलन, मातृ शक्ति सम्मेलन, व्यायाम सम्मेलन, तथा शिवसंकल्प आदि सम्मेलन हुए। जिनमें स्वामी आनन्द बोध, स्वामी सत्य प्रकाश, स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी ओमानन्द, स्वामी विद्यानन्द आदि ने अपने विचारों से जनता को लाभ पहुंचाया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं० इन्द्रराज और सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी भी उपस्थित हुये।

'आर्यमित्र' हरियाणा के आर्य नेताओं और आर्य जनों को इस सफल आयोजन के लिये धन्यवाद देता है।

श्री दत्तात्रेय वाब्ले का अभिनन्दन

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से सम्मानित होने पर श्री दत्तात्रेय श्री वाब्ले का अभिनन्दन समारोह आर्य समाज अजमेर के तत्वावधान में रविवार दिनांक ३ मई ८७ ई० को प्रात:काल आर्य समाज भवन केसरगंज में राजस्थान विधान सभा के माननीय उपाध्यक्ष श्री किशन मोटवानी की अध्यक्षता तथा दैनिक नवज्योति अजमेर-जयपुर के प्रधान सम्पादक एवं स्वतन्त्रता सेनानी कप्तान दुर्गा-प्रसाद चौधरी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

जिसमे श्री दत्तात्रेय जी आर्य का उनकी शिक्षा, साहित्य, तथा आर्य समाज क्षेत्र मे की गई सेवाओं पर विचार व्यक्त करते हुए हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

रासासिंह मन्त्री आर्य समाज, अजमेर

—आर्य वीर दल कुन्दरकी के तत्वावधान मे ७ जून से १० जून तक "मदन स्वरूप इन्टर कालेज हस्याना" मे शिविर लग रहा है। शिविर मे १० वर्ष से ३० वर्ष तक के युवक प्रशिक्षण ले सकेंगे। समापन १४ जून को होगा।

—भास्कर आर्य जिला संचालक, मुरादाबाद

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाजो के प्रधानो, मन्त्रियों एवं आर्य वीर दल के अधिकारी कार्य कर्त्ताओं की सेवा में निवेदन है कि अतरौली के एम० वी० इ० कालेज जिला अलीगढ़ में एक विशाल शिविर का आयोजन १९ जून से २५ जून सन ८७ तक का किया गया है। इस शिविर में भाग लेने वाले आर्य वीरों का प्रवेश प्रशिक्षण शुल्क केवल ५० रुपया होगा। भोजन, आवास, घी, दूध आदि की व्यवस्था नि:शुल्क होगी। प्रशिक्षण, सार्वदेशिक, प्रांतीय व जिला प्रतिनिधि सभा और आर्य वीर दल के योग्यतम शिक्षकों, अधिकारियो आर्य-नेताओ, महात्माओं और विद्वानो द्वारा शारीरिक, बौद्धिक धार्मिक दिया जायगा। शिविर में भाग लेने वाले आर्य वीर अपने नाम निम्न पते पर शुल्क सहित शीघ्र भेज दें। तथा अपने साथ गणवेश पहनने के वस्त्र, बर्तन, बिस्तर व आवश्यक लेखन सामग्री अवश्य लायें।

जयनारायण आर्य उपसंचालक उ. प्र., सराय ग्वाली जयगंज अलीगढ़

दयानन्द ब्राह्म विद्यालय हिसार में प्रवेश

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरियाणा) मे १ जुलाई से ३१ जुलाई तक नवीन छात्रों का प्रवेश होगा छात्रों को भोजन निवास, पुस्तक, शिक्षा तेल, साबुन आदि आवश्यक वस्तुयें नि:शुल्क दी जाती है।

—सत्यव्रत शास्त्री एम० ए० साहित्याचार्य

चरित्र निर्माण साइकिल यात्रा

नव युवकों मे चारित्रिक उत्थान, राष्ट्रीयता, एवं वैदिक संस्कारों के प्रचार हेतु आर्य वीर दल जनपद अलीगढ़ ने एक साइकिल यात्रा का आयोजन निश्चित किया है जिसमे ११ नवयुवक साइकिल से पूरे जनपद का भ्रमण करने २८ मई ८७ को निकलेंगे। इस यात्रा का समापन ७ जून ८७ को महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास पर होगा।

इसी क्रम मे दिनांक ११-६-८७ से २५-६-८७ तक के० एम० वी० इन्टर कालेज अतरौली मे प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

भूदेव आर्य संचालक आर्य वीर दल जनपद अलीगढ़।

सम्वेदना

(१)

आर्य समाज सराय तरीन स्यात नगर के वयोवृद्ध उत्साही कार्य कर्त्ता श्री म० प्यारेलाल जी का देहावसान हो गया। एवं उक्त आर्य समाज के नव युवक कार्यकर्त्ता श्री आर्यमित्र जी का अकस्मात हृदयगति बन्द हो जाने से देहान्त हो गया। मन्त्री

(२)

—आर्य समाज नगरिया दीक्षित बरेली के भूतपूर्व प्रधान एवं वायु सेना से मास्टर वारंट आफीसर के पद से सेवा मुक्त ६४ वर्षीय श्री श्याम सिंह सोम का दिनांक २३-४-८७ को निधन हो गया।

मन्त्री

(३)

—मोहमदी आर्य समाज के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद जी के पूज्य पिता जी के निधन पर मोहमदी आर्य समाज में हार्दिक दुःख प्रकट किया गया।

रामस्वरूप आर्य मन्त्री

(४)

—अलीगढ़ दिनांक ३-५-८७ को आर्य समाज सासनी के उपप्रधान श्री उमराव सिंह सरायगढ़ी की धर्मपत्नी श्रीमती दुलारी आयु ६५ वर्ष का दिनांक २ मई ८७ दिन शुक्रवार को निधन हो गया। समाज ने एक शोक सभा में दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं दुःखी परिवार के प्रति सद्भावना प्रकट की। मन्त्री

निर्वाचन

आर्य समाज सिलीगुड़ी
प्रधान श्री हरमन राम अग्रवाल
मन्त्री श्री सर्वेश्वर झा
कोषा० श्रीसुभाषचन्द्र नकी पुरिया

आर्य समाज बिलासपुर
प्रधान श्री श्रीकृष्ण बलदेव
मन्त्री श्री रामनारायण जी
कोषा० श्री साहबराम जी

स्त्री आर्य समाज ब्रह्मपुरी मेरठ
प्रधाना श्रीमती मायावती आर्या
मंत्राणी श्रीमती शकुन्तला आर्या
कोषाध्यक्षा श्रीमती सोमादेवी आर्या

"समस्या और समाधान"

– श्री महावीर सिंह 'मुमुक्षु' वैदिक धर्म प्रचारक एम० ए०
(दर्शन) एल० एल० बी०)

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज प्रारम्भ से उपलब्ध सामग्री के आधार पर सफलतापूर्वक निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है जिसका प्रबल प्रमाण यह है कि आर्य समाज के समकालीन तथा कथित संस्थाओं का आज कोई स्थान ही नहीं अपितु मात्र इतिहास की वस्तु बनकर रह गए हैं। इसका कारण स्पष्ट है कि जो प्रकृति नियम के विरुद्ध कार्य चलाना चाहेंगे तो वह समय आने पर शिथिल पड़ ही जायेगा और ऐसे कार्यों मे कभी भी स्थायित्व नहीं आ सकता उसमे सदैव परिवर्तन की अभिलाषा बनी ही रहती है क्योंकि सत्य को प्राप्त किये बिना हम अशांत रहते हैं और नित नई-नई युक्तियो और आविष्कारो के द्वारा हम अपनी भूख मिटाना चाहते हैं परन्तु यह असम्भव है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की अनेक योजनाओं को आज समाज स्वीकार कर चुका है और वर्तमान मे बुद्धिजीवी वर्ग इस बात को स्वीकार कर रहा है कि भविष्य मे भी शेष योजनाओ को स्वीकार करने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं हो सकता भले ही धार्मिक कट्टरता के नाम पर धर्म से उपेक्षित होकर, शिक्षा नीति के नाम पर चरित्रहीन युवक एवं युवतियो की उपलब्धि के रूप मे अथवा जातीयवाद भाषावाद के नाम पर खंडित भारत के नागरिक के रूप मे पश्चाताप करने के साथ-साथ शेष जीवनमें अनुभव हो। वर्तमान समाज की अवस्था के परिपेक्ष्य मे मैं अपने आर्य बन्धुओ से निवेदन करना चाहूगा कि यह तो निश्चित है कि आर्य समाज की नींव ऐसे शाश्वत सिद्धातो पर टिकी है जो अपरिवर्तनीय है परन्तु सम्मुख उपस्थित परिस्थितियों के समाधान करने का दायित्व तत्कालीन सदस्यों पर ही होता है अन्यथा आगे आने वाली पीढ़ी उनको दोष देती है। इस दृष्टि से आज आर्य समाज के सामने मुख्यत दो चुनौतिया स्पष्ट रूप से उभर कर आ रही है और इनका समाधान करना आर्य समाज का ही दायित्व है।

प्रथम है—आज से लगभग ३८ वर्ष पूर्व हमने धर्म निरपेक्षता के नाम पर अपने स्वतन्त्र भारत की नींव डाली थी वह आज हमारे लिए पूर्णरूप से कष्ट का कारण बन रही है। इसलिए नहीं कि हमारे इरादे के विरुद्ध सारा राष्ट्र अत्यधिक धार्मिक हो गया है वरन् दु ख इस बात का है कि धर्म निरपेक्ष राष्ट्र के नाम पर कट्टरपन्थी साम्प्रदायिक तत्व अपनी चाल चलाने मे लगे हैं। आज चारो ओर वर्गभेद साम्प्रदायिक विद्वेष तरह-तरह के रोज पैदा होने वाले भगवान व पथ धर्म के नाम को सर्वोत्तम साधन के रूप मे प्रयुक्त कर रहे हैं। फिर भी धर्म निरपेक्ष राष्ट्र का नारा बुलन्द किया जा रहा है। पूर्वकाल की तरह आज भी धर्म का विरोध धार्मिक कट्टरता के नाम पर किया जाना प्रारम्भ हो गया है। यह अवस्था चिन्ता का विषय बन गई है और लगता है इतिहास दोहराया जा रहा है क्योंकि पूर्व समय मे भी धर्म को अफीम और जहर की संज्ञा देकर समाज से बहिष्कृत करने की योजना बनी थी परन्तु क्या उसमे सफलता मिली थी ? इस दृष्टि से चाहे विश्व अथवा अपने देश को लें उत्तर नकारात्मक ही है। आज जो समस्त सरकारी मशीनरी इस दिशा मे प्रयत्नशील है कि नागरिको के मन से कैसे धार्मिक कट्टरता का भूत उतारा जाये) काश इसके विपरीत हमारे राष्ट्र के कर्णधार इस बात को समझ लें कि धर्म का भूख स्वाभाविक है जैसे अभाव की अवस्था मे पेट मे भूख लगती है तो खाने योग्य पदार्थ न मिलने पर घास के पत्ते ही खाने लगते हैं। ऐसा करने वाले कहते हैं यह सर्व पापी पेट के लिए करना पड़ा। ठीक यही अवस्था आत्मा की भूख को लेकर हमारी होती है। जब सही दिशा व ज्ञान नहीं मिलता तो अन्तत भूख मिटाने के लिये हानिकारक पदार्थों का सेवन सामान्य जनता करेगी। मैं समझता हू इसमे दोष ऐसे लोगों का अधिक है जो वास्तविकता को जानते हुए भी अन्य लोगो को सही मार्ग नहीं बताते। ऐसी दशा मे आर्य समाज को धर्म का सही स्वरूप जनता को प्रचार व प्रसार से बताना होगा धर्म के सच्चे स्वरूप को सबके समक्ष रखना होगा। क्योंकि आज भिन्न मतमतान्तरो के स्वार्थता से पूर्ण कार्यों एव योजनाओ को लेकर धर्म की निन्दा की जा रही है। आर्य समाज का तो कहना ही स्पष्ट और सरल सिद्धात है कि वे कर्तव्य कर्म जो सबके हित मे हो और सबको मान्य हो जिनके करने में ही सम्पूर्ण मानव जाति की भलाई है और यही धर्म हमें जोड़ता है न कि तोड़ता। इसे मानवता कहा गया है और मानव समाज से इसे निकाल देने पर बचेगा क्या ? ऐसी दशा मे आर्य समाज को वर्तमान उपस्थित चुनौती का मुकाबला करना होगा। आर्य समाज तो वर्षों से सावधान करता चला आ रहा है कि जिनमतमतान्तरो को आज हम धर्म समझते चले आ रहे हैं इनके प्रचार प्रसार से तो समाज मे अशांति ही बढ़ेगी जिससे बचने का आज भी एक मात्र साधन महर्षि के द्वारा निर्दिष्ट समान आचार संहिता बनाना ही है। यहाँ पर उल्लेखनीय है कि आर्य समाज ने इस दृष्टि से अपनी पहचान अलग से नहीं बनाई तो सम्भावित है कि जिस प्रकार जम्मू कश्मीर मे कट्टरता के नाम पर विद्यालयो का अधिग्रहण करने का निर्णय किया जा रहा है। उसी प्रकार आर्य समाज को भी उक्त नारो के अन्तगत दूसरो के साथ-साथ कुछ हानि उठानी पड़ सकती है।

दूसरी प्रमुख समस्या है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात नि सन्देह कुछ लोगो ने आर्य समाज का पल्ला पकड़कर राजनीति में सफलता प्राप्त की परन्तु ऐसे लोग दुर्भाग्य वश आर्य समाज को गति देना भूल गये। इस व्यवहार से भी आर्य समाज को धक्का लगा है और यह स्थिति धर्म निरपेक्ष राज्य मे सत्ता की अभिलाषा की दृष्टि से स्वाभाविक भी है परन्तु इससे कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ा परन्तु वर्तमान में एक अन्य भीषण समस्या यह उपस्थित हो रही है कि कुछ ऐसे लोग जो अपने साथ पूर्वनिपेष आर्य समाज के प्रचारक अथवा पंडित कहलवाने से तो एक ओर इस कारण से बचते हैं कि कहीं इससे दूसरे क्षेत्र पर प्रभाव न पड जावे और जनता उनको गगा गये तो गगादास व जमुना गये तो जमुनादास की नीति को न समझ ले वहीं दूसरी ओर कार्यकर्त्ताओं का अल्पस्वाध्याय का लाभ इन्हे मिल रहा है और हरदिल अजीजो के रूप मे यह आज समाज के मंच का प्रयोग कर रहे हैं।

यह बहुत ही भयावह स्थिति है जिस पर आर्यों को ध्यान देना होगा और सबको खुश करने की प्रवृत्ति को कम-से-कम आर्य समाज के मच से समाप्त करना चाहिये तथा वक्ताओं को दृढ़ता से महर्षि की मान्यताओ का ही प्रचार करना अभीष्ट है।



आर्य समाज में शास्त्रीय संगीत की उपेक्षा क्यों ?

महर्षि दयानन्द गन्धर्व भी थे

लेखक—विद्याङ्कुर 'अमलेश' प्रधानाचार्य शङ्कुर संगीत महाविद्यालय ८३८, गोंदनी चौक शाहाबाद (मूड़) बरेली

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती महर्षि तो थे ही गन्धर्व भी थे। गन्धर्व किसे कहते हैं इसके विषय में संगीत शास्त्र बताता है — गान्धर्व का गान करने वाले व्यक्ति को गन्धर्व कहते हैं। गान्धर्व क्या है इसके विषय में संगीत रत्नाकर में इस प्रकार लिखा है :—

श्लोक — रंजकः स्वर संदर्भो गीतमित्यभिधीयते।
गान्धर्वं गानमित्यस्य भेदद्वयमुदीरितम ।। (संगीतरत्नाकर)

गीत — स्वरों का वह समुदाय जिससे मन का रंजन हो, उसे गीत कहते हैं। गीत के दो भेद हैं :— (१) गांधर्व (२) गान।

गान्धर्व — जो संगीत गन्धर्व द्वारा गाया जाता था और जिसका उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति होता था उस वेदों के अपौरुषेय और अनादि संगीत को ही "गान्धर्व" कहा गया है। महर्षि दयानन्द साम संगीत के ज्ञाता थे उन्होंने मृत्यु समय साम गान किया था।

संगीत के वैदिक वाङ्मय का इतिहास बताता है कि प्राचीन काल में यज्ञ करते समय ब्रह्मा के निकट गान्धर्व का आसन होता था जो वेद मन्त्रों का सस्वर पाठ तथा साम गान किया करता था।

महर्षि के जीवन की कुछ घटनाओं से पता लगता है कि वे वर्तमान शास्त्रीय संगीत और संगीत दोनों के ज्ञाता थे। ऋषि दयानन्द को निमोनियाँ और विषपान द्वारा सिर और शरीर में निकले हुए फोड़ों से कष्ट था, उन्होंने अपने निर्वाण से पूर्व क्षौर कर्म कराया, शौच और स्नान किया, फिर इसके बाद बैठकर मधुर एवं उच्च स्वर में वेद मन्त्रों का गान किया जिसको सुनकर श्रोता चकित व स्तब्ध रह गये थे। दयानन्द ने क्रियात्मक रूप में प्रत्यक्ष दिखाया कि संगीत में वह शक्ति है कि मनुष्य अपने कष्टों का अनुभव नहीं करता न उसे मृत्यु से भय लगता है और न मृत्यु समय पीड़ा मालुम होती है, वह प्रसन्नता पूर्वक प्राण छोड़ता है। दयानन्द के निर्वाण के दृश्य की झांकी इस कवित्त में देखिये :—

कवित्त

मुखकंठ और शरीर छालों से पीड़ित था,
तिस पर भी शौच क्षौर कर्म स्नान किया।
प्रणव साम गान सुन प्रत्येक चकित था,
मुख की प्रभा देख भानु मुख छिपा लिया।
दिव्य ज्ञान ज्योति युक्त दीपक प्रकाशित था,
बुझते ही हृदयों का दीपक जला दिया।
'अमलेश' ओस—अश्रु मिस गगन रोता था,
दीपमालिका ने दिव्य दीप क्यों बुझा दिया।

महर्षि दयानन्द ने आदर्श दिखाया कि प्राण छोड़ने से पूर्व भी साम गाओ। परन्तु सामगान कितने व्यक्तियों ने सीखा ? सब लोगों को वेदों के मन्त्रों का सस्वर पाठ तक नहीं आता है। सस्वर पाठ करने वाले गिने चुने ही व्यक्ति हैं। महर्षि दयानन्द की प्रबल शिक्षा थी कि आर्य लोग मुख्य रूप से सामगान सीखें और गौण रूप से अन्य देशी संगीत गायन वादन और नृत्य भी सीखें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए डा० ताराशंकर जी राकेश सामवेदी ने सामगान की सभी शैलियों की खोज (रिसर्च) की और दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा के वेद सम्मेलन में तथा सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली द्वारा आयोजित यज्ञमें एक सप्ताह तक चतुर्दन्ती तुंबरू वीणा पर सामगान किया था और मैंने ताल वाद्य से संगत की थी। उन्होंने साम संगीत पर एक बृहत ग्रन्थ भी लिख रखा है जो धनाभाव के कारण प्रकाशित नहीं हो सका है आर्यों को उनसे सामगान और शास्त्रीय गान की शिक्षा लेनी चाहिए थी परन्तु अब तक किसी ने नहीं ली। कटिया टोला शाहजहाँ पुर स्थित संगीत विद्यालय में लड़कियाँ उनसे बी. ए., एम. ए., प्रभाकर आदि की परीक्षा के पाठ्य क्रम के अनुसार संगीत सीखने आती हैं वह भी आर्यों की नहीं। आर्यों ने उनके सामगान के रेकार्ड तक नहीं किये हैं। अब वे वृद्ध हो गये हैं और कटिया टोला (आर्य नगर) शाहजहाँ पुर में रहते हैं।

दयानन्द राग-रागिनी पद्धति के संगीत के भी ज्ञाता थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में संगीत सीखने का जो क्रम लिखा है वह शास्त्रीय संगीत का ज्ञाता ही लिख सकता है यथा :—

इस राज विद्या को दो वर्ष में सीखकर गान्धर्व वेद कि जिसको गानविद्या कहते हैं उसमें स्वर, राग, रागिणी, समय, ताल, ग्राम, तान, वादित्र नृत्य गीत आदि को यथावत् सीखें परन्तु मुख्य करके सामवेद का गान वादित्र वादन पूर्वक सीखें और नारद संहिता आदि जो आर्ष ग्रन्थ हैं उनको पढ़ें परन्तु भड़वे, वेश्या और विषयासक्त वैरागियों के गर्दभ शब्दवत व्यर्थ आलाप कभी न करें। (सत्यार्थ प्रकाश तृ० समुल्लास)।

पहले स्वरों ही की साधना की जाती है इसके बाद राग, रागिनी समय, ताल, तान, आदि को क्रम से सीखा जाता है। स्वामी जी को यह भी ज्ञान था कि पहले षड्ज स्वर की साधना की जाती है। कंठ में षड्ज स्वर शुद्ध रूप में सध जाने पर ७ शुद्ध और ५ विकृत स्वर सरलता से सध जाते हैं। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में स्वर व्यवस्था अध्याय में स्वामी जी का लेख इस प्रकार है — अब वेदार्थ के .... स्वरित कहते हैं। इसमें उदात्तादि स्वरों के उच्चारण की विधि बतायी है। इसके बाद लिखते :—

विशेष अर्थ के दिखाने वाले 'तरप' प्रत्यय के संयोग से वे उदात्त आदि सात स्वर होते हैं। अर्थात उदात्त, उदात्ततर, अनुदात्त' अनुदात्ततर, स्वरित, स्वरितोदात्त और एक श्रुति ।।

उक्त रीति से इन सातों स्वरों को ठीक-ठीक समझ लेना चाहिए।

अब षड्जादि स्वरों को लिखते हैं जो कि गान विद्या के भेद हैं — (स्वराः षड्ज ऋषभ०) अर्थात षड्ज, ऋषभ, गन्धार, मध्यम, पञ्चम, धैवत और निषाद। इनके लक्षण व्यवस्था सहित जो कि गन्धर्व वेद अर्थात गान विद्या के ग्रन्थों में प्रसिद्ध हैं, उनको देख लेना चाहिए। यहाँ ग्रन्थ बढ़ जाने के कारण नहीं लिखते। (ऋ० भा० भू० स्वर व्यवस्था विषय)।

कुछ विद्वान वेदों में तीन स्वर उदात्त, अनुदात्त, स्वरित मानते हैं, परन्तु महर्षि दयानन्द कहते हैं कि मूल स्वर उदात्त और अनुदात्त हैं।

क्रमशः

आर्य समाज का वर्तमान स्वरूप

—श्री भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर जयपुर

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने वैदिक सिद्धान्तो के आधार पर आर्य समाज तथा आर्य समासदो के लिये १० नियम निर्धारित किये हैं, जो इस प्रकार हैं :—

(१) सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। (२) ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है। (३) वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। (४) सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। (५) सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये। (६) ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। (७) सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये। (८) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। (९) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये। (१०) सब मनुष्यो को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।

महर्षि दयानन्द ने उक्त नियमों में संसार की सब विद्या [विज्ञान] का मूल कारण ईश्वर, उसके स्वरूप, गुण, कर्म का वर्णन किया है। वेद को सब विद्याओं का भण्डार एवं उसका पढ़ना आर्यों का परम कर्तव्य बताया है। सत्य का ग्रहण, धर्मानुसार कार्य करना, संसार का उपकार करना, अविद्या का नाश, सबकी उन्नति तथा नियमों का पालन करना आर्यों का परम कर्तव्य बताया है।

इन नियमों का पालन करने वाला ही वैदिक धर्मी आर्यसमाजी माना जा सकता है। संसार के प्राणिमात्र के कल्याण के लिये इस प्रकार के आध्यात्मिक सामाजिक एवं शारीरिक उन्नति करने वाले नियम अन्य किसी भी संस्था में नहीं हैं।

आर्य जगत् की सर्वोच्च संस्था—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज मे प्रविष्ट होने के लिये निम्नांकित उपनियम निर्धारित किया है :—

"जो व्यक्ति आर्य समाज में नाम लिखवाना चाहे और आर्य समाज के उद्देश्यों (१० नियमों) के अनुकूल आचरण स्वीकार करे। वह आर्य समाज में प्रविष्ट हो सकता है।"

ऐसे व्यक्ति को प्रारम्भ में आर्य सदस्य ही माना गया है, आर्य समासद् नहीं। आर्य समासद् ही आर्य समाज के निर्वाचन में मतदाता (वोटर) अन्तरंग सभासद् व अधिकारी हो सकता है, आर्य सदस्य नहीं।

निम्नांकित धारा का पालन करने वाला ही आर्य समासद् हो हो सकता है।

४ (क) "जिनका नाम आर्य समाज मे सदाचार पूर्वक" दो वर्ष तक अंकित रहा है और वह अपनी आयका शतांश मासिक व वार्षिक अथवा २५०) वार्षिक व अधिक धन समाज को देता हो और जिसकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्सगो मे कम से कम २५ प्रतिशत हो तो वह आर्य समासद् माना जा सकेगा।"

धारा १७ (क) के अनुसार आर्य समाज का प्रधानमंत्री अथवा आर्य समाज की किसी भी संस्था का प्रमुख अधिकारी अथवा उसकी प्रबन्धकारिणी समिति का अध्यक्ष, मंत्री अथवा प्रबन्धक वही व्यक्ति हो सकता है जो न्यूनातिन्यून ३ वर्ष तक निरन्तर आर्य समासद् रहा हो तथा धारा १७ (ग) के अनुसार जिनकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्संगों में न्यूनातिन्यून ३३ प्रतिशत रही हो।

धारा ४ (ख) के अनुसार सदाचार की परिभाषा यह है :—

"सन्ध्या आदि नित्य कर्म, शुद्ध वृत्ति, वैदिक संस्कार, पतिव्रत व पतिव्रत आदि सदाचार हैं। व्यभिचार, मद्यादिमादक द्रव्यो और मांसादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन, जुआ, चोरी, छल-कपट, रिश्वत आदि दुराचार हैं।"

उपरोक्त १० नियमों तथा उपनियमो के विपरीत आचरण करने वाले को आर्य समाज धारा ५ के अनुसार आर्य समासदी से पृथक् कर सकता है।

आर्य समासदों व आर्य समाज तथा प्रान्तीय सभा के मध्य विवाद उत्पन्न होने पर उसका निर्णय, आर्य समाज के उपनियम सं० ३६ तथा सार्वदेशिक सभा की नियमावली के उद्देश्य सं० ६ और सार्वदेशिक आर्य न्याय सभा के नियम सं० १ के अनुसार, आर्य न्याय सभा से कराना होगा।

आर्य समाज के उपनियम सं० ४५ के अनुसार "किसी भी आर्य समाज व प्रान्तीय सभा को आर्य समाज के नियमों उपनियमों को घटाने बढ़ाने अथवा संशोधन करने का अधिकार नहीं है धारा ४३ के अनुसार कोई भी आर्य समाज प्रतिनिधि सभा से पृथक् अपनी रजिस्ट्री नहीं करा सकता।

(उपरोक्त कुछ प्रमुख धाराएं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित नियमावली सन् १९८१ से उद्धृत की गई है, जिसमें सार्वदेशिक सभा, आर्य समाज तथा आर्य न्याय सभा के नियम भी सम्मिलित हैं।

मनुष्य मात्र के कल्याणार्थ परमात्मा की ओर से दिये गये वेदज्ञान के आधार पर महर्षि दयानन्द द्वारा सार रूप में निर्धारित आर्य समाज के यह नियम समासद् को सच्चा-ईश्वर भक्त, वैदिक धर्मी, निर्भीक, ओजस्वी सत्यवक्ता, उच्च चरित्रवान्, आदर्श पुरुष तथा उसके संगठन आर्य समाज को उक्त गुणों से युक्त महान् शक्तिशाली, सर्वसाधारण को आकर्षित कर वैदिक धर्म का अनुयायी एवं "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का नारा सफल बनाने के लिये अनुपम है।

परन्तु यह सत्यता प्रकट करते हुए अत्यन्त खेद कि आज बहुत से आर्य उक्त नियमों के विपरीत जा रहे हैं।

क्रमशः

सूर्य के पीछे चलें

श्रीमतीसन्तोष महाना ५६९ क/२८ स्नेह नगर लखनऊ–५

द मे एकसूक्ति आती है स्वस्ति ा मनुचरेम सूर्या चन्द्र मसा-, अर्थात सूय के पथ का अनुम् करें ।

मगर अब यह बात हम किसी कहेंगे तो लोग हमे पागल समझेगे कितने ही करोडो । सूय हम से दूर हैं हम कैसे के पीछे चल सकते है । वेद मे गहनअछिपा है, इस सूय के चलनेका अर्थ है जो गुणसूर्य मे गऐ है हम भी उन गुणों को ण करें ।

सूर्य मे गुण है अन्धकार रना, प्रकाश करना, एकसेक्रम्ब की विश्राम नहीं । बदले की आकाक्षा नहीं । वह सर्वशक्तिमान वह तेज वान है । जब सूर्य लता है तो कितना उजाला देता हैं फिर जब धूप तेज लती है सब घरो को रोशन देती है सूय किरणे अन्न फलोको ती है । सड़ाध दूर करती ध मिटा देती है। यह धूप कभी देखतीकि यह घर, यहबाग, यह अमीर का है या गरीब का । के लिए समान रुप से अपना श देती है । फलो को ती व रस सचार करती है, हम इसके विपरीत अमीरों वालों के साथ तो खूब अपना विनमा कुसमा रखने का करते है । मगर गरीबो की देख कर भी मुह मोड लेते है के साथ बात करना भी पसन्द करते । हमे अपने धन पर मान हो जाता है । हम यह समझते कि यह तो धन एक के पहिए की तरह है आज के पास धन सम्पति है तो कल के पास होगी । हमे बडे होने अभिमान नहीं होना चाहिए धन दौलत सुख सम्पति यौवन भी सदा साथ नहीं रहेगा हमे याद रखना चाहिये कि भग-ने हमे ससार में जन्म दिया है । करने के लिए धन यौवन पाकर अभिमान नहीं आना चाहिएकि सम्बन्धियो को भी भूल जायें। उपेक्षा करें जिन्होने पढ़ाया लिखाया धन कमाने योग्य बनाया उन्हे भूल जायें। उनकी उपेक्षा करें । निरभिमानी सूर्य अपने कार्यों से शिक्षा देता है कि अभिमान शत्रु है इसे स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण है—एक व्यक्ति ने सुन्दर कमरा बनवाया, बढ़िया कलई कर उस को बढ़िया ढग से सजाये । जब सज गया । कमरे को सजा हुआ देखकर अभिमान आ जाये और वह दियासलाई की एक सलाई जलाकर उस कमरे को अपने ही हाथो से जला डाले उसे महामूर्ख कहा जायेगा । ऐसे ही मानव रुपी मकान को जो अभिमान रुपी शत्रु से बचा नहीं पाता वह उसे नष्ट कर देता है । वह मूर्ख है हम देखें सूरज तो अपने इतने बडे उपकार पर अभिमान कभी नहीं करता । वर्षा होने पर यदि एक दिन सूय न निकले तो हर चीज मे सीला पन आता है अगले दिन सूर्य निकलने पर लोग अपने कपडे बिस्तर सुखाने लगते है ।

सब तरफ से सूर्य हमारी—गन्दगी को दूर करता है सफाई को लाता है। हम मे सूय से शिक्षा लेनी है कि हम अपने अन्दर की बुराइया ढूढ ढूढ कर दूर करने का प्रयत्न करें । अपने उज्ज्वल चरित्र से रोशनी फैलायें। निरन्तर कर्तव्य रत रहे । आलस्य प्रमाद सर्वथा त्याग दें ।

विद्वान महात्माओ ने कहा है कि बुराइयो से घृणा करो मनुष्य से नहीं । जैसे सूरज की किरणे गन्दगी बदबू नष्ट करती है, वैसे ही मनुष्य की बुराइयां नष्ट करने की प्रेरणा दो । अमीचन्द जो देखने भजन तो बहुत अच्छे गाते लिखते थे परन्तु बहुत ही शराबी व दुराचारी थे । परन्तु ऋषी दयानन्द के सत्सग मे आये ।

उन्होने एक ही वाक्य बोला कि अमीचन्द तुम तो हीरे हो मगर कीचड मे पडे हो । इस एक वाक्य ने उनकी काया पलट दी अँधेरा दूर हो गया प्रकाश की किरणे फूट पडी । घर आये तोड दी बोतले शराब की, जो पीने के लिए रखी थी, वेश्या को बाहिर निकाल कर अपनी पत्नी को घर लाए । साधारणतया हम दूसरें की बुराई को देखकर उसे घर घर जहा तक हमारी पहुच है फैलाते है उसके गुणो को नहीं देखते कि कितने है । दूसरे के अन्धकार हम तब दूर कर सकते है जब हम स्वय प्रकाश वाले हो । ऋषि की कृपा एक बात का इतना असर इस लिए पडा कि उनका अपना जीवन सधा हुआ था जीवन मे अच्छाईया ही अच्छाईया थी कोई भी बुराई नहीं थी ।

आइये हम भी सफल व सूय के समान अपने जीवन को प्रकाशवान, दूसरों के हितमें समर्पित भाव से तत्पर होने, बिना लोभ लालच के धर्म का आचरण करने के लिए । ताकि मानव जीवन सार्थक बन सके और वेद की उपरोक्त सूक्ति हमारे लिए प्रेरणा देने वाली है यह हमारे चरित्र से दूसरे लोग मान सके ।

गुरुकुल प्रभात आश्रम द्वारा भारत के विभिन्न स्थानो पर वेद प्रचार

दिनाक २६–३–८७ से ३१–तक ग्राम–बरोला जनपद मेरठ उ प्र मे सुप्रसिद्ध समाज सेवी स्व० श्री नरायण देव जी शास्त्री की स्मृति मे उनके सुपुत्रो द्वारा उनके परिवार मे ऋग्वेद पारायण महा–यज्ञ पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महराज के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमे पूज्य स्वामी जी के वैदिक एव आध्यात्मिक प्रवचन और ब्रह्मचारियों का सुमधुर वेदपाठ हुआ ।

दि० १०, ११, १२ अप्रैल १९८६ को दयानन्द वैदिक आश्रम वेस जि० सम्बलपुर उड़ीसा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ । जिसमे यजुर्वेद महायज्ञ हुआ जिसके स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती एव वेद पाठी गुरुकुल प्रभात आश्रम के स्नातक श्री बृहस्पति विद्यालंकार श्री शिवशकर निगमालकार एव श्री प्रेम प्रकाश निगमालकार थे । इस अवसर पर उडीसा के प्रसिद्ध आर्य सन्यासी स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती स्वामी ज्ञानानन्द जी सरस्वती एवं उपदेशक श्री विश्वमित्र जी भी उपस्थित थे । स्नातक मण्डल का वेदपाठ एवं उपदेश हृदयाकर्षक था ।

दि० १–४–८७ को जीवन निर्माण केन्द्र आरोग्याश्रम पौवली के उत्सव मे पूज्य स्वामी जी के सदुपदेश एव ब्रह्मचारी वाचस्पति के सुमधुर वेदपाठ का कार्यक्रम आकर्षक रहा ।

दि० २५–४–८७ को काको रोहतक (हरयाणा) मे श्री शिव शकर जी निगमालकार द्वारा एव दि० १–५–८७ ग्राम टीकरी मेरठ उ० प्र० तथा दि० ७–५–८७ को वाना भवन मुजफ्फर नगर उ०प्र० मे श्री प्रेमप्रकाश जी निगमालकार द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से विवाह सस्कार सम्पन्न हुये ।

दि० १५–५–८५ से १७–५–८७ तक आर्य समाज आयुध निर्माणी क्षेत्र मुरादनगर जि० गाजियाबाद उ० प्र० मे आश्रम के ब्रह्मचारी वाचस्पति शास्त्री एवं शैलेन्द्र कुमार शास्त्रीके सारगर्भित भाषण एवं मधुर वेद प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ ।

—प्रेम प्रकाश शास्त्री

हमारा कर्तव्य

आपत्ति के बादल मंडरा रहे हैं,
दे रहे हैं स्वाधीनता को चुनौती।
गिद्ध दृष्टि लगाये बैठे है देशद्रोही,
अवसर की प्रतीक्षा में।
अब स्वाधीनता का अपहरण कर,
वे मांगें फिरौती।
खण्डित करने के अभियान चल रहे हैं,
आस्तीन के सांप वे पल रहे है।
देश के दुश्मनों से,
संघर्ष करना होगा।
राणा प्रताप शिवा चन्द्रगुप्त बन,
स्वतन्त्रता की रक्षा करना होगा।
हिन्दी को राष्ट्र भाषा पद से,
हटाया जा रहा है।
संस्कृत के सांस्कृतिक बन्धन को,
मिटाया जा रहा है।
राम कृष्ण के अस्तित्व को,
झुठलाया जा रहा है।
प्राचीन इतिहास को,
भुलाया जा रहा है।
सांस्कृतिक प्रतीकों को,
रक्षा करना होगा।
हकीकतर य गुरुगोविन्दसिंह श्रद्धानन्द बन,
बलिदान देना होगा।

—डा० शकुनचन्द आर्य, लालगंज जि० रायबरेली

प्रभु प्रार्थना

हे प्रभु ओम् तुम ही सबका सहारा हो।
दुखितो को त्राण देते सबका दुलारा हो ॥
हम सब तुम्हारे है वो प्रभु तुम हमारे हो।
निर्बल की रक्षा करते, भक्तों को उबारे हो ॥
प्रभु तुम सर्वस्व हो, तुम ही अधारा हो।
तुझे छोड़ जाए कहां, तुमही सहारा हो।
दुष्टों को दण्डित करके, शिष्टो को तारे हो।
भक्तों को प्यार देते, प्रभु तुम न्यारे हो ॥
हम तुम्हारे पुत्र हैं, तुम पिता हमारे हो।
हम सब की रक्षा करना, प्रभु तुम प्यारे हो ॥
तुम दुख-विनाशक हो, तुम सर्वाधार हो।
'ब्रह्मानन्द' सेवक का, तुम प्राणाधार हो ॥

—ब्रह्मानन्द जिज्ञासु ठतरवह मुजफ्फरपुर (बिहार)

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर महानगर के तत्वावधान में 'महात्मा हंसराज दिवस' आर्य वैदिक जूनियर हाईस्कूल अर्मापुर में मनाया गया।

डी०ए०वी० संस्थान हिन्दी प्रयोग करें

डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली ने एक परिपत्र भेजकर समस्त डी०ए०वी० संस्थानों से अनुरोध किया है कि डी० ए० वी० संस्थाओं को खोले जाने का एक उद्देश्य भारतीय संस्कृति के प्रचार और इसके व्यवहार को बढ़ाना भी था। डी०ए०वी कालेज ट्रस्ट एवं प्रबन्धकर्तृ समिति को नियमावली के नियम संख्या-४४ (ग) के अनुसार समिति की साधारण सभा में प्रबन्धकर्तृ समिति यह भी विवरण देगी कि उसने वर्ष भर में हिन्दी, संस्कृत और वेदों की पढ़ाई के विषय में क्या कुछ किया है। समिति के नियम संख्या-५४ के अनुसार समिति का कार्यवृत्त हिन्दी में रिकार्ड किया जाना आवश्यक है अतः डी० ए० वी० संस्थाओं का यह राष्ट्रीय और नैतिक कर्तव्य है कि वे यथासम्भव अपने प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का ही प्रयोग करें। अंग्रेजी भाषा को पढ़ाना अपने आप में आवश्यक हो सकता है किन्तु समिति की संस्थाओ के प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का प्रयोग न होना अखरने वाली बात है जिसके कारण अनेक व्यक्तियों और संस्थाओं को हम पर उंगली उठाने का अवसर मिल जाता है। अतः हिन्दी भाषी क्षेत्रों तथा गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब सरीखे राज्यों में (जहां कि हिन्दी के प्रति जनता में उदार भावना है) यह आवश्यक है कि हमारी संस्थाएं इस बात के लिए पूरा प्रयत्न करे कि उनके प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का प्रयोग हो और विद्यार्थी भारतीय परम्परा के अनुसार अपने अध्यापकों आदि का नमस्ते से अभिवादन करें। उनमें धार्मिक भावना जागृत करने के लिए ही अपनी संस्थाओं में धर्म शिक्षकों को नियुक्तियां की गई हैं। अभिवादन नमस्ते से किया जावे। टाई का प्रयोग छोड़ा जावे।

हमारी संस्थाओं के बोर्ड, लेटरहेड, मोहरें आदि हिन्दी क्षेत्रो में हिन्दी में और अन्य राज्यों में द्विभाषी अथवा त्रिभाषी हो सकते हैं। परन्तु उनमें सबसे पहले हिन्दी का प्रयोग हो।

—दरबारीलाल संगठन सचिव

राम जन्म भूमि हिन्दुओं को सौंपी जाय

[१]

—दिनांक ७-५-८७को श्री नकवी का व्याख्यान आर्यसमाज स्टेशन रोड पर हुआ जिसमें उन्होंने बताया हिन्दू मुस्लिम सद्भावना के निमित्त यह आवश्यक है कि राम जन्म भूमि हिन्दुओं को सौंप दी जावे मुझे जो वोट क्लब पर गोली मारने की धमकी दी है। उससे मुझे डर नहीं कि मैं मरकर हिन्दू मुस्लिम एकता में बलिदान हो जाऊं।

[२]

—दहेज रहित योजना के अन्तर्गत एक सक्सेना परिवार का विवाह वैदिक रीति से आर्यसमाज स्टेशन रोड मुरादाबाद में ८-५-८७ को सम्पन्न कराया गया।

[३]

—आर्यसमाज गंज स्टेशन रोड मुरादाबाद की यह सार्वजनिक सभा सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित करती है और सरकार से मांग करती है कि राम जन्म भूमि अयोध्या जो राष्ट्रीय मान बिन्दु है की रक्षा की जाय और बाबरी मस्जिद के जैसे अराष्ट्रीय विवाद को समाप्त किया जाय तथा राष्ट्र को खण्डित करने वाली शक्तियों व असमाजवादी शक्तियों को सख्ती से कुचल दिया जाय। तथा अमर्गल वार्ताओं को रोका जाय।

ऋग्वेद भारत वर्ष ही नहीं
श के पुस्तकालय का सर्वप्रथम
है। वेद परमात्मा की वाणी
के साथ साथ मनुष्य की
ते करने का ज्ञान है और धर्म
धन कमाते हुए तथा उत्तम
करते हुए मोक्ष पाने का क्रिया
प्रशिक्षण प्राप्त करने का
र हैं। केनोपनिषद् २/५ के
सार मानव जीवन का परम
। मोक्ष प्राप्ति है। अन्तिम पद
मृत शब्द का अर्थ मृत्यु आदि
:खों से रहित होना (मोक्ष
) ही है।

ार्थः— वन्दनीयवराग्ने! आप
स्वरूप हो।

आपकी मैं स्तुति करता हूं। मनुष्यों के प्रति परमात्मा का उपदेश है—हे मनुष्यों! तुम इस प्रकार से 'स्तुति प्रार्थना सनादि करो, जैसे पिता व गुरु ने पुत्र वा शिष्य को शिक्षा ता है कि तुम पिता वा गुरु के त्य में इस प्रकार से मेरी स्तुति हे का वर्तमान करना। वैसे के पिता और परमगुरु ईश्वर मको कृपा से सब व्यवहार र विद्यादि पदार्थों का उपदेश ा है, जिससे हमको व्यवहार और परमार्थ—ज्ञान होने से अंत सुख हो। जैसे सबका आदि रण ईश्वर है, वैसे परम विद्या का भी आदि कारण ईश्वर है।

हे सर्व हितोपकारक! आप ोहितम्' सब जगत के हित रक हो। हे यज्ञ देव! सब मनु- पूज्यतम और ज्ञान यज्ञादि के ? कमनीयतम हो। 'ऋत्विजम्' ऋतु वसन्त आदि के रचक लि जिस समय जैसा सुखचाहिये सुख के सम्पादक आप ही हो। तारम्' सब जगत को समस्त और क्षेम को देने वाले हो र प्रलय समय में कारण में सब त का होम करने वाले हो। न धातमम्' रत्न अर्थात् रम- र पृथिव्यादिकों के धारण रचन ने वाले तथा अपने सेवकों के ् रत्नों के धारण करने वाले आप ही हो।

विश्व कल्याण का सर्वश्रेष्ठ उपाय

(श्री रघुवीर सरन आर्य, विश्व सेवक बहजोई, मुरादाबाद)

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्न धातमम्॥ (ऋग्वेद १–१–१–१)

सर्व शक्तिमन् परमात्मन्! इस लिये मैं आपकी बारम्बार स्तुति करता हूं। इसको आप स्वीकार कीजिये, जिससे हम लोग आप के कृपापात्र होके सदैव आनन्द में रहें॥

(महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत आर्याभि विनय से) इस मन्त्र में 'अग्नि' शब्द से परमेश्वर का ग्रहण होता है। 'पुरोहितः' सब देह धारियों की उत्पत्ति से प्रथम ही सब जगत् और स्वभक्त धर्मात्माओं के लिए सब पदार्थों की उत्पत्ति जिसने की है और विज्ञानादि दान से जो जीवादि सब संसार का धारण और पोषण करता है, इससे परमात्मा का नाम पुरोहित हैं।

यज्ञस्य देवम्......अग्निहोत्र से लेके अश्वमेघ पर्यन्त विविध क्रियाओ से जो सिद्ध होता है जो वायु और वृष्टि जल की शुद्धि द्वारा सब जगत को सुख देने वाला है उसका नाम यज्ञ है।

(ऋत्विजम्) जो सब ऋतुओं में पूजने योग्य है। जो सब जगत को रचने वाला और ज्ञानादि यज्ञ की सिद्धि का करने ाला है इससे ईश्वर का नाम ऋत्विज् है।

(होतारम्) जो सब जगत के जीवों को सब पदार्थों का देने वाला है। जो मोक्ष समय में मोक्ष को प्राप्त हुए जीवों का ग्रहण करने वाला है तथा जो वर्तमान और प्रलय में सब जगत का ग्रहण और धारण करने वाला है, इससे परमात्मा का होता नाम है।

(रत्न धातमम्) जिनमें रमण करना योग्य है, जो प्रकाशादि पृथिवी पर्यन्त रत्न यथा विज्ञान हीरादि जो रत्न और सुवर्णादि जो रत्न है, जिनके यथावत् उपयोग करने से ही आनन्द होता है, उन रत्नों का सब जीवो को दान के लिए जो धारण करता है वह रत्ना धा कहाता है और अतिशय से पूर्वोक्त रत्नों का धारण करने वाला है, इससे परमेश्वर का नाम 'रत्न धातम' है। (महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत वेदभाष्य के नमूने अंक से)

क्रियात्मक पक्ष

यज्ञ शब्द का शाब्दिक अर्थ है संगति करण अथवा उपासना अर्थात् ईश्वर के निकट बैठकर आत्मा को परमात्मा के साथ इस प्रकार जोड़ना जैसे नाला नदी के साथ मिलता है। आत्मा को परमात्मा के अनुरुप बनाना ही समर्पण भाव हैं। इसी को स्वर्ग अर्थात् स्व–अर्ग कहते हैं। दूसरा अर्थ है पूजा अथवा अपने आप को भीतर बाहर से पवित्र करना। यही साधना का प्रयोजन है।

तीसरा अर्थ है दान या आराधना अर्थात् संकट ग्रस्तों की सहायता एवं सत्प्रयोजनों में सहयोग देना,

अपनी इच्छा आकांक्षाओं को ईश्वर के अनुरुप बना लेना ही बलिदान है। इसमें व्यक्ति को परमार्थ में बदलना होता है।

यज्ञ कार्य में सात्विक सुगन्धित गुणकारी वस्तुओं को अग्नि में होम कर सूक्ष्म बनाया जाता है और उन्हें वायुभूत बनाकर समस्त संसार के उपयोग हेतु वितरित कर दिया जाता है।

जीवन को यज्ञमय बनाना, अपने को पवित्र करना और समूचे वातावरण को पवित्र बनाना यज्ञीय कर्मकाण्ड का सारभूत तत्व ज्ञान है। यह प्रक्रिया अपनाने पर व्यक्ति और समाज को सुखी समुन्नत बनाने का अवसर मिलता है।

पुरोहित का कार्य वेद का उपदेश देना और यजमान का कार्य उन्हें श्रद्धापूर्वक हृदय में धारण करना है। पुरोहित व्यक्ति में दोष दुर्गुण की न्यूनाधिक सम्भावना रहती है। इसलिए दिव्य तत्व अग्नि को पुरोहित कहा गया है। यह वाणी से उपदेश नहीं देता किन्तु अपनी क्रिया पद्धति से बहुत कुछ समझा देता है।

१– अग्नि जब तक जलती है वह गरम और प्रकाश युक्त रहती है। इस प्रकार हमें भी क्रियाशील रहते हुए ज्ञान वितरित करतेरहना चाहिये।

२– अग्नि का सिर सदैव ऊंचा रहता है। लपटे नीचे से ऊपर को उठती हैं। हमें भी उत्तम कार्यों द्वारा ऊपर उठने का प्रयास करते रहना चाहिये।

३– अग्नि में डाली जाने वाली वस्तु भी उसी के समतुल्य बन जाती है। हमें भी अपने सम्पर्क में आये छोटे लोगों को शुद्ध करने की कला आनी चाहिये। हमारी रीति नीति दूसरों को आत्मसात् कर लेने की होनी चाहिये।

४– अग्नि में जो कुछ भी डाला जाता है उस सबको वह अपने लिये बचाकर नहीं रखती है दूसरों को खर्च कर देती है। उसकी वृत्ति संग्रह की नहीं होती है। हमें भी कृपण और संग्रही न बनकर क्षमताओं व साधनों को गतिशील रखना चाहिये।

५– अग्नि का अन्त राख के रुप में होता है उसमें कुछ कोयला व राख बना रहता है। इसी प्रकार हमारे अस्तित्व का भी अन्त होना है। अतः हमें न तो अहंकार ही करना चाहिये और न ही पाप करना चाहिये।

यह पांच शिक्षायें ही जीवन के सच्चे रत्न हैं। ये पांचों ही देवोपम बना देते है।

गो घृत से किया यज्ञ वायु मण्डल का शोधन के साथ साथ 'प्राणजंन्य' की वृद्धि करता है जो वर्षा जल के साथ भूमि पर वनस्पतियों, अन्नों में प्रविष्ट होकर जीवनी शक्ति बढ़ाता है। जीवनी शक्ति की वृद्धि से विवेक बढ़ता है। विवेक से मानसिक तनाव समाप्त होकर ':वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना का विकास होता है। इस भावना का विकास होने पर मेरे तेरे की भावना समाप्त हो जाती है। इससे कलह समाप्त होकर स्थायी शान्ति प्राप्ति होती है। सहकार की भावना आती है। मनुष्य मोक्ष प्राप्त करने का अधिकारी बनता है जो प्रत्येक मनुष्य की मूल आवश्यकता है।

सम्पादक के पत्र

दूरदर्शन का अदूरदर्शी कार्यक्रम

दूर दर्शन (टेलीविजन) पर रात्रि मे साढ़े ग्यारह बजे 'वयस्क फिल्मों' के दिखाने का कार्यक्रम बनाया गया है। मेरे विचार से यह कार्यक्रम दूरदर्शन का अदूरदर्शी कार्यक्रम है। क्योंकि इस कार्यक्रम का दूरगामी कुप्रभाव समाज, परिवार व स्वास्थ्य पर निश्चित रूप से पड़ेगा। अन्ततोगत्वा राष्ट्रीय स्वास्थ्य का ह्रास अवश्यम्भावी है। रात में आधी रात के बाद तक फिल्म देखने से दूसरे दिन दर्शकों की कार्य क्षमता प्रभावित होगी। सारे दर्शक, चाहे जहाँ वे कार्य करते हों—खेतों में, कारखानों में, कार्यालयों मे—काम नहीं कर सकेंगे। इन फिल्मों में भी वही दृश्य दिखाए जायेंगे जिन्हें हमें नहीं देखना चाहिए। परिणाम स्वरूप हमारा मानसिक प्रदूषण उग्ररूप धारण करता जायगा। फिल्मों में मार-धाड़, अपहरण, बलात्कार, चुम्बन, छेड़खानी, अश्लीलता के अतिरिक्त वयस्कता के नाम पर और भी कुछ अधिक दर्शाया व सिखाया जायगा जिससे हमारा चरित्र कहाँ जायगा ? ईश्वर ही जाने। भारतीय संस्कृति, प्राचीन मानवीय मूल्यों की सुरक्षा का ढिंढोरा पीटने वाली भारत की सरकार भारतीय संस्कृति की रक्षा के नाम पर उसकी अस्मिता के साथ खिलवाड़ ही कर रही है, जो खेदजनक है। अब तो जो कुछ थोड़ा सा संकोच, पारिवारिक वातावरण में, नैतिकता के नाम पर अवशेष है, वयस्क फिल्मों के प्रदर्शन से वह भी समाप्त हो जायगा। अच्छा होता यदि दूरदर्शन पर मात्र नैतिकता, मानवता, चरित्र, राष्ट्रीयता तथा साम्प्रदायिक सौहार्द को बढ़ाने वाली फिल्में ही दिखाई जायं।

—राधेश्याम आर्य एडवोकेट
मन्त्री जिला सभा सुलतानपुर

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

(१)

महर्षि दयानन्द आर्य गुरुकुल कृष्णपुर फर्रुखाबाद में ७ जून से १६ जून तक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर लगाया जायेगा।

(२)

११ जून से २५ जून सन ८७ तक के० एम० बी० इण्टर कालिज अतरोली अलीगढ़ में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर लगेगा।

शिविर मे प्रशिक्षण, भोजन, आवास इत्यादि का शुल्क ५०) रुपया है। गत वर्षों में जो प्रशिक्षण ले चुके हैं। उनको द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था होगी। —जयनारायण आर्य शिविराध्यक्ष

गुरुकुल प्रभात आश्रम में उपनयन संस्कार सम्पन्न

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल मेरठ उ० प्र० में वैशाख पूर्णिमा तदनुसार वि० १३–५–८७ को बड़े समारोहपूर्वक नये ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। जिसमें गुरुकुल के आचार्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने ब्रह्मचारियों को विद्या, तप, त्याग, ब्रह्मचर्य एवं गुरुभक्ति का उपदेश दिया। इस अवसर पर उड़ीसा के प्रसिद्ध उपदेशक श्री विश्वमित्र जी भी उपस्थित थे। उद्बोधन देते हुए उन्होंने ब्रह्मचारियों को आन्तरिक गुणों से पल्लवित एवं पुष्पित होने को कहा। सभी ब्रह्मचारियों ने अपने आगमन काल में व्रतों को धारण करने का और अपने जीवन को वेदानुकूल बनाने का दृढ़ संकल्प लिया। —शिवशंकर प्रभाताश्रम

आवश्यकता

महिला अभ्यर्थी चाहिये—संस्कृत विभाग—प्रधानाचार्या (साहित्याचार्य) अध्यापिका (व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य), सहायक अध्यापिका (साहित्य शास्त्री) वेतन सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के (ख) वर्गीय विद्यालयों के अनुसार। आवेदन पत्र २५ दिन के अंदर अपेक्षित। अभ्यर्थी आवेदन पत्र में अपना प्रमाणित चित्र अवश्य लगायें। गुरुकुल विभाग—संस्कृत व्याकरण अध्यापिका (व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य) तबला (संगीत प्रभाकर), गृह विज्ञान (एम०एस०सी०) विज्ञान, गणित (बी०एम०सी०), सहायक अध्यापिका (इण्टर, बी० टी० सी०, भूगोल विषय को वरीयता)। संस्कृत व्याकरण अध्यापक अवकाश प्राप्त पुरुष भी रक्खे जा सकते हैं। प्रौढ़ अवस्था की महिला आश्रमाध्यक्षा (अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्या, वार्डन को प्रमुखता), अनुभवी आश्रम अध्यापिकायें (बच्चों की देखभाल के लिये) महिला चिकित्सक औनर्स। वेतन योग्यतानुसार।

अक्षयकुमारी शास्त्री, प्रबन्धक
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय
हाथरस—अलीगढ़

शिक्षा सम्बन्धी

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस

(जि० अलीगढ़) उ० प्र०

शिशु कक्षा से बी० ए० स्तर एवं आचार्य तक की निःशुल्क शिक्षा, गुरुकुल पद्धति पर निःशुल्क छात्रावास, सबका सीधा-सादा, एकसा रहन—सहन, कड़ा अनुशासन, नगर से दूर उत्तम वातावरण, सामान्य विषयों के अतिरिक्त धर्म, नैतिकता, संगीत, गृह कार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा, देशी घी, दूध, जलपान सहित भोजन शुल्क १२०-०० रु०मात्र।

प्रवेश प्रारम्भ। नियमावली मंगवायें।

—मुख्याधिष्ठात्री

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग,
दूरभाष 45993 ४५६६३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
ज्येष्ठ शुक्ल ४
रविवार, ३१ मई १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

देश में फैलता साम्प्रदायिक विद्वेष–नियोजित षड्यन्त्र

—मनमोहन तिवारी

आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने एक वक्तव्य मे कहा है कि इस समय उत्तरप्रदेश मे साम्प्रदायिक वातावरण विद्यमान है। दिल्ली व मेरठ मे दगे हो रहे हैं और इससे पूर्व गुजरात के कई स्थानो और अहमदाबाद मे हो चुके हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि किसी पूर्वनियोजित कार्यक्रम के अनुसार देश मे अन्यत्र भी उपद्रव हो सकते है। शासन से अनुरोध है कि साम्प्रदायिक उपद्रव फैलाने वाले व्यक्तियो को सख्ती से दमन किया जाय और उन तत्वो पर पूर्ण रोक लगायी जाय जो उपद्रव का वातावरण बनाते है। कुछ समय से मौलाना बुखारी–शहाबुद्दीन तथा हाजी मस्तान आदि साम्प्रदायिक वातावरण को दूषित कर रहे हैं तथा अल्पसख्यको को बहकाकर दगा उपद्रव करने के लिए भडकाते रहे है, अभी भी यह कार्यक्रम गतिशील है। मेरठ और अन्यत्र होने वाले दगो से यह प्रमाणित होता है कि पाकिस्तानी भावना और इशारे पर यह उपद्रव होते हैं और जिस प्रकार से घातक हथियारो मे सुरक्षा कर्मियो पर आक्रमण होते हैं उससे और स्पष्ट होता है कि आग्नेयास्त्र कुछ उपद्रवी तत्वो के पास पहले से ही पहुच जाते हैं अत शासन को ऐसे उपद्रवी तत्वो और आग्नेयास्त्रों के जखीरो पर आक्रमण करके इसे नष्ट करना चाहिये ताकि प्रदेश मे शान्ति सुरक्षा का वातावरण बने।

यह भी आवश्यक है तथाकथित साम्प्रदायिक नेताओ को उ० प्र० मे तथा अन्यत्र भाषण आदि से रोका जाय तथा कठोरता के साथ राष्ट्रसुरक्षा अधिनियम मे गिरफ्तार किया जाय। मेरठ जो राष्ट्रीय एकता का गढ रहा है, १८५७ की जनक्रान्ति के समय जहा के हिन्दू मुसलमान एक होकर ब्रिटिश साम्राज्यशाही के विरुद्ध बिगुल बजाने मे आगे रहे थे वहा जो दृश्य है वह खेदजनक है, इसमे मेरठ वासियो का हाथ नहीं है, बाहरी तत्वो का खुला हाथ है।

शासन दृढता से उपद्रवी तत्वो के गुप्त आग्नेयास्त्रो के भण्डारो पर छापा मारे और साम्प्रदायिकता फैलाने वाला कोई भी व्यक्ति हो उसके प्रति कठोर कार्यवाही की जाये तथा उसके काले कारनामो पर सरकार श्वेत पत्र प्रकाशित करे। यदि समय रहते सख्ती न बरती गयी, तो भारत के अन्य प्रान्त पजाब की भाति आतंकवादियो और पाकिस्तानी गुप्तचरो के अड्डे बन जायेंगे।

आवश्यक सूचना

उत्तरप्रदेशीय आय प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाजो को सूचित किया जा रहा है कि सभा कार्यालय से वार्षिक चित्र भेजे जा चुके है, जिन्हे अब तक प्राप्त न हुये हो, पत्र लिखकर मगालें।

२–नियमानुसार चित्रो की खाना पूरी करके सभा प्राप्तव्य दशांश, ध्रुवकोटि एव आर्यमित्र आदि के धन सहित २० जून तक भेजने की कृपा कीजिये।

मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

संस्कृत अनिवार्य हो

१० मई को संस्कृत रक्षा दिवस मनाकर उसकी रक्षार्थ निम्न लिखित संस्थाओ या आर्यसमाजो से सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव और प्राप्त हुये है–

आर्यसमाज काशीपुर नैनीताल, आ० स० चिरगाव झासी, वैदिक साधम आश्रम तपोवन देहरादून, आ० स० पिलखुवा गाजियाबाद, आ० स० शेरकोट बिजनौर, आ०स० राजा बाजार खड्डा बाजार देवरिया, आ०स० सीसामऊ कानपुर, जिला सभा देहरादून, आय केन्द्रीय सभा गाजियाबाद, आ०स० टाडा अफजल, मुरादाबाद, आ०स० चौक प्रयाग, आ० स० केराकत जौनपुर, श्री साङ्गवेद महाविद्यालय हनुमानगढ़ी आजमगढ, आय कन्या इण्टर कालेज सम्भल, आ०स० बिसवा सीतापुर, आ०स० जमानिया गाजीपुर, आ०स० सीतापुर, आ०स० बकेवर इटावा आ० स० खुटार शाहजहापुर, आ०स० देवबन्द, आ०स० हरिद्वार, आ० स० गगोह मुरादाबाद, आ०स० वैदिक आश्रम ऋषिकेश, जिला सभा गाजीपुर, आ० स० देवरामपुर कोटद्वार, आ० स० दिबियापुर इटावा, आ०स० प्रहलाद नगर मेरठ, आ० स० हरदोई आय गुरुकुल ऐरवा कटरा इटावा, संस्कृत पाठशाला कटरा बाजार गोण्डा, आ०स० बीसलपुर, आ०स० मेरठ शहर, जिला सभा कानपुर, आ० स० मेस्टन रोड कानपुर आ०स० जलाली अलीगढ, आ० स० हल्द्वानी नैनीताल, आय स० आर्यसमाज अमरोहा मुरादाबाद, आयसमाज सिलीगुडी।

नगर आर्यसमाज अजमेर

–आर्यसमाज मथुरा गोण्डा के कार्यकर्ता श्री मुरारीलाल के पुत्र का चूडाकर्म सस्कार १०–५–८७ को तथा श्री रामकुमार मिश्र की सुपुत्री का विवाह १२–५–८७ को श्री लक्ष्मी नारायण शास्त्री लोकहवा गोण्डा ने पूर्ण वैदिक रीति मे सम्पन्न कराया।

स्वत्वाधिकारणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप मे एस० पी० प्रिटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० स० २२४१/५७ घोषणा पत्र स० ७/२८–२–८५

ज्येष्ठ शुक्ल १०, रविवार, सवत २०४४ वि० दिनाक ७ जून १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल–

विक्रमादित्य वसन्त'

'वेद वारिधि'

★

आचाय रमेशचन्द्र एम. ए

★

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	९०
अङ्क	२२

चौधरी चरणसिंह जी दिवंगत



चौधरी चरणसिंह जी

दिल्ली २९ मई। भारत के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री चौधरी चरणसिंह का लम्बी बीमारी के पश्चात रात्रि २ २५ बजे राम-मनोहर लोहिया अस्पताल देहली मे निधन हो गया। वे ८७ वष के थे। अन्तिम समय मे उनकी पत्नी श्रीमती गायत्री देवी एव पुत्र श्री अजीतसिंह पास मे थे।

इस दु खद समाचार को सुनकर आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी एव० मन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी ने गहरा दु ख प्रकट किया।

श्री कैलाशनाथसिंह तथा श्री राजपाल आदि की याचिका उच्च न्यायालय इलाहाबाद द्वारा खारिज

आय प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के निर्वाचन के विरुद्ध उपरोक्त व्यक्तियो द्वारा सावदेशिक सभा तथा आय प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के वतमान अधिकारियो तथा रजिस्ट्रार सोसाइटीज लखनऊ के विरुद्ध दी गई याचिका उच्च न्यायालय इलाहाबाद द्वारा दिनाक २३–४–८७ को खारिज कर दी गई है। उच्च न्यायालय ने उनकी इस प्राथना को भी कि सभा का निर्वाचन उपरोक्त रजिस्ट्रार द्वारा कराया जाए, उस पर कोई भी विचार करना अस्वीकार कर दिया है।

अतएव उत्तर प्रदेश के आयसमाजो के पदाधिकारियो तथा आयजगत के अन्य महानुभावो को इस वास्तविकता से अवगत कराया जा रहा है ताकि विरोधियो द्वारा फैलाई जा ही भ्रान्तियो से वे सबको सचेत कर सकें।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आय प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५–मीराबाई माग, लखनऊ

नई शिक्षा नीति में सस्कृत को उचित स्थान रहेगा

साम्प्रदायिक दगो पर कठोरता से नियन्त्रण किया जायेगा

स्वामी आनन्द बोध जी प्रधान सावदेशिक सभा के नेतृत्व मे मिले प्रतिनिधि मण्डल को प्रधान मन्त्री का आश्वासन

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा एव सस्कृत रक्षा समिति के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती के नेतृत्व मे एक प्रतिनिधि मण्डल ने प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी से भेंट कर देश मे फैलते साम्प्रदायिक उपद्रवो के प्रति गहरी चिन्ता व्यक्त करके उस पर कठोरता से नियन्त्रण करने की माग की।

नई शिक्षा नीति से सस्कृत के निष्कासन पर अपना रोष प्रकट किया और उसके शिक्षा नीति मे उचित स्थान की माग की।

प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने स्वामी जी को नई शिक्षा पद्धति मे सँस्कृत को उसका उचित स्थान दिलाने और भडकते दगो पर कठोरता से नियन्त्रण करने का आश्वासन दिया। (दैनिक जागरण से साभार

ले आज मौन अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

दयानन्द—ज्येष्ठ शुक्ल १० सम्वत् २०४४ रविवार ७ जून १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

साम्प्रदायिक दंगे और शासन का दायित्व

आज कल देश में साम्प्रदायिक तत्व चारों ही ओर अपना खुला व्यापार करके भारत की अस्मिता को, भारत की राष्ट्रीयता को ही नहीं भारत को ही नष्ट करने पर तुले हुए से लगते हैं।

देश के किसी न किसी क्षेत्र में साम्प्रदायिक उपद्रवों का चलना सामान्य सी बात बन रही है। सरकार अपना प्रयत्न करके उसे समाप्त करने का प्रयत्न करती है कुछ दब जाते हैं फिर दूसरी जगह उससे और उग्र रूप मे वे भड़क उठते है।

अभी हाल में मेरठ और दिल्ली के दंगे पिछले दंगों को पीछे करके बहुत ही बीभत्स व कुत्सित रूप लेकर उभरे। निश्चय ही यह दंगे स्थानीय या साम्प्रदायिक समस्याओं के कारण नहीं हैं यह दंगे संपूर्ण देश को विखण्डित करने के कुत्सित षड्यन्त्र के सुनियोजित प्रारुप के एक अंश हैं। इन दंगों के पीछे विदेशी घुसपैठियों का विशेष हाथ है। हाजी मस्तान जैसे काले धंधे करने वाले कुख्यात तस्कर जनता में घूम घूम कर उन कुत्सित योजनाओं के प्रचार प्रसार में तत्पर हैं अभी हाल में उसने मौलाना हाशमी सहित अन्य १८ लोगों के साथ उत्तर प्रदेश के गोण्डा बस्ती बहराइच रायबरेली व प्रतापगढ़ में घूम घूम कर गुप्त बैठकें करके—देहात की भोली भाली जनता को बरगलाने का यत्न किया है। मेरठ में २ पाकिस्तानी नागरिकों की गिरफ्तारी की भी सूचना मिली है। निश्चय ही यह सब उस सन्देह की पुष्टि करता है। बाबरी मस्जिद ऐक्शन कमेटी वालों को शायद भारत प्यारा नहीं। उन्हें भारतीयता से कोई सम्बन्ध नहीं वे हर स्थिति में देश—में साम्प्रदायिक विद्वेष फैलाने के लिये कटिबद्ध हैं। मौलाना बुखारी, सैय्यद शहाबुद्दीन जहर ही उगलते रहते हैं।

आज देश की स्थिति सन् ४७ के विभाजन काल—जैसी ही हो रही है। देश का विभाजन इसी मुस्लिम हठवादिता के कारण हिन्दू-मुस्लिम की मानसिकता से विग्रह, अशान्ति, से बचने के लिए हमारे नेताओं ने दिल पर पत्थर रखकर स्वीकार किया था। चूंकि हमारे देश के नेताओं में यह साम्प्रदायिक बिलगाववादी भावना नहीं थी इस नाते—यहां रहने वाले हरदेश वासी को देश का पुत्र माना गया। कोई किसी प्रकार से अपने को दबा, पीड़ित या निबल अनुभव न करे इसलिए अल्प संख्यकों को विशेष संरक्षण भी दिया गया। परन्तु बिलगाववादी मनोवृत्ति वाले लोगों ने हमारी सहिष्णुता को सराहा नहीं हमें बेवकूफ समझा और अपनी पाप पूर्ण वृत्तियों का निरन्तर साम्प्रदायिक विद्वेष के रूपमें प्रचार करते रहे। प्यार से रहने वाले मनों में बिलगाव पैदा कराने के लिए—हर सम्भव प्रयत्नों में तल्लीन रहे।

हमारे देश की सभी राजनीतिक पार्टियों ने वोट की राजनीति के कारण उन गलत तत्वों को प्रश्रय दिया। सत्ता दल ने भी यह गलती नहीं सुधारी। फलतः आज देश पुनः विघटन के कगार पर आकर खड़ा हो गया है। इस दुःखद संघर्ष पूर्ण समय में मोहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान का इतिहास मस्तिष्क में गूंज जाता है जब भारतीय राजा पृथ्वीराज चौहान ने विदेशी आक्रान्ता मुहम्मद गोरी को २० बार परास्त करके क्षमा दान कर दिया था हर बार क्षमादान से उसके मनसूबे बढ़ते जाते रहे इक्कीसवीं बार वह विजयी हो गया था और पृथ्वीराज को गिरफ्तार करके उनकी आंखें निकलवा लीं उनकी पिछली की गयी दया का उपहास किया।

ठीक इसी प्रकार वे विदेशी आक्रान्ताओं के वंशज—विदेशियों की सांठ-गांठ से भारत को विखण्डित करने पर तुले हैं। हमारी धर्म निरपेक्षता की नीति का अनुचित प्रयोग कर रहे हैं। और सभी राजनीतिक पार्टियां वोट के लोभ में सत्य को पहचानने में भूलकर रही हैं। उस समय बड़ा ही तरस आता है जब कतिपय राजनीतिक नेता अज्ञान या स्वार्थवश सत्य को झुठलाने के लिए, दंगे, फसाद, उपद्रव आतंकवाद सबका दोष शासन पर मढ़ने का प्रयत्न करते हैं, ऐसी ही एक उपहासास्पद बात श्री सुब्रह्मण्यम् स्वामी जनतापार्टीके महामंत्रीनेआरोप सरकारपर लगा कर की, उन्होंने कहा कि यह इसलिये है कि राजीवगांधी व विश्वनाथ प्रतापसिंह—विवाद से जनता का ध्यान हटा रहे।

देश के राजनीतिक नेताओं को अब गम्भीरता से उभरती—इन समस्याओं से निपटने के लिए अपनी दलबाजी की उठा पटक को छोड़ कर राष्ट्रीय स्तरपर उनके समाधान—के लिए विचार दृढ़ करने चाहिए केवल जनता के वोट पाने के लिए उसे झूठ मूठ बरगलाने की मनोवृत्ति का सभी को त्याग कर देना चाहिये। सभी पार्टियां व नेता, अपने देश के लिये कर्तव्य पहचाने। पार्टी बन्दी के स्तर से ऊपर उठे।

यह साम्प्रदायिक दंगे विदेश—प्रेरित भारत के विखण्डित करने के षड्यन्त्र का एक छोटा अंश हैं या उस षड्यन्त्र द्वारा रिहर्सल है। अतः सम्पूर्ण देशवासी भारत की संप्रभुता, राष्ट्रीयता अस्मिता—की रक्षा के लिए एकजुट होने का संकल्प लें। देश में साम्प्रदायिक सद्भाव बिगाड़ने वालों को कानून के हवाले करें। उनकी मांगों को नकार दें। भारत में जो भारतीयता को नहीं रहने देना चाहते, जो भारत को नष्ट भ्रष्ट कर देना चाहते हैं उन्हें अपने पास न फटकने दें।

सरकार का भी धर्म है कि वह कठोरता से नियमों का पालन करें तुष्टी करण की नीति को शासन में कतई स्थान न दें। न्याय, सत्य, सद्भाव, प्रेम व दया का जन जनमें संचार कर भारत को सुखी सम्पन्न बनाने के लिये विघटनकारी—तत्वों को ढूंढ ढूंढ कर गिरफ्तार करें, धार्मिक या राजनीतिक लबादे ओढ़कर जो लोक सभा राज्य सभा या विधान सभाओं में घुस गये हैं, उन्हें भी अविलम्ब गिरफ्तार करके संविधान के अनुरूप देश द्रोहियों पर देशद्रोह का मुकदमा चला कर कठिन से कठिन दण्ड दें। जो विदेशी शक्तियां भारत को पद दलित करने के गुप्त षड्यन्त्र कर रही हैं उनका विश्व के सामने पर्दाफाश करें।

भारत की अस्मिता, सम्प्रभुता की संरक्षा के लिए जो भी सम्भव है सभी प्रयत्न किए जाने चाहिए। सम्पूर्ण राष्ट्र भक्त जनता देश की संरक्षा के लिए जब भी समय की पुकार हुई है अपना सर्वस्वार्पण करके उसकी रक्षा की है और आगे भी करेगी। इन कुत्सित विदेशी षड्यन्त्रों को कतई सफल न होने देगी। हम सब एक हैं। हमारा भारत देश है। हम इसकी सम्प्रभुता की रक्षा के लिए अपनी अन्तिम स्वास तक लड़ेंगे और उसकी रक्षा करेंगे। यह एक मत से प्रत्येक भारतीय का संकल्प है।

—मनमोहन तिवारी

अध्यात्म सुधा

दिव्य मस्तिष्क से अभिरक्षण

–विक्रमादित्य 'बसन्त' वेदवारिधि बी–६४ वसन्तिका
राजाजीपुरम् लखनऊ–१२६०१७

मानव जीवन की सर्व-श्रेष्ठता का आधार है, प्रभु प्रदत्त उसका विकसित मस्तिष्क, जो सकल दिव्यताओ का अक्षय कोष है। मानव मस्तिष्क में ज्ञान विज्ञान प्रज्ञान और संज्ञान की असंख्य सम्पदाएं अन्तर्निहित है और स्मृतियों का अनन्त भण्डार है। साधक जब तपस्या से अपने मस्तिष्क को सतत् शान्त, स्थिर और संयमित कर लेते है तो यह दिव्य कोष उनके प्राण अन्न और मन का सर्वतः अभिरक्षण करता है। प्राणों के वशी कार के लिए, मनोनिग्रह के लिए और अन्न से सत्व शोधन के लिए आत्मा मे पवित्र इच्छाएं होनी चाहिए जो केवल दृढ़ात्मा में उत्पन्न होती हैं। आत्मा की दृढ़ता के लिए जो शक्ति चाहिए, वह केवल उस सर्व शक्तिमान से प्राप्त होती है, जिसके निमित्त उपासना अनिवार्य है।

मन्त्र–तद् वा अथर्वणः शिरो देव कोषः समुब्जितः। तत् प्राणो अभिरक्षति शिरो अन्नमयो मनः ॥

[अथर्व० १०-२-२७]

ऋषिः नारायणः

देवता – पुरुष : ब्रह्म प्रकाशनम्

अन्वय – वै अथर्वणः तत् शिरः सम् + उब्जितः देव कोषः। तत् शिरः अभिरक्षति प्राणः अन्नम् अथो मनः ॥

शब्दार्थ– (वै अथर्वणः तत् शिरः) निश्चयात्मक रूप से अविचल, अकम्प, स्थिर, गम्भीर और शान्ति का वह मस्तिष्क (सम् + उब्जितः देव कोषः) सतत् संयमित दिव्यताओं का कोष है।

तत् शिरः अभिरक्षति प्राणः अन्नम् आथो मनः) वह मस्तिष्क प्राण, अन्न और मन का सर्वतः रक्षण करता है।

व्याख्या – मानव जीवन के दो नियन्त्रण केन्द्र है, एक मस्तिष्क और दूसरा हृदय। मस्तिष्क विचार केन्द्र है और हृदय भावना केन्द्र। बुद्धि का वास मस्तिष्क मे है और मन का हृदय में। जीवन रथ के ये दो अश्व है जो उसे चलायमान करते हैं।

चेतन जगत में चेतनामय जो अन्य थलचर नभचर और जलचर हैं, उन मे सर्व श्रेष्ठ जीव मानव की उत्कृष्टता उसके मस्तिष्क के कारण है। परमात्मा ने मनुष्य को कर्म करने की जो स्वतंत्रता प्रदान की है, उसका सदुपयोग अथवा दुरुपयोग अपने मस्तिष्क के माध्यम से करता है। जिसकी बुद्धि सद्-बुद्धि है, जिसकी मेधा सुमेधा है, जिसकी बुद्धि निश्चयात्मक अर्थात् प्रज्ञा है, जो ऋत से परिपूर्ण होकर ऋतम्भरा बनी हुई है, वह ही उमा बनकर उसे ब्रह्मलीन करती हैं अन्यथा पाप बुद्धि कुविचारों की जन्मदात्री बनकर उसे कर्मणा पतित करके शरीरावसान के उपरान्त पुनः भोग योनियों में पहुंचा देती है।

मानव का मस्तिष्क सकल दिव्यताओं का कोष है। इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ है, वह सब इस मस्तिष्क में सूक्ष्म रूप से विद्यमान है। जन्म जन्मान्तरों का सम्पूर्ण अभिलेख स्मृति कोषों में उपलब्ध रहता है जिसे योगात्मा साधना के माध्यम से जागरूक कर के अपने समस्त विगत जीवनों की पूर्ण शृंखला से अवगत कर लेता है। भले ही बाहर से यह लघुसर प्रतीत हो परन्तु वास्तविकता यह है कि मस्तिष्क एक अथाह, अनन्त और असीम विचार सिन्धु है। ज्ञान का संचय और विवेक का उदय इसमें ही होता है। प्रेषण और प्राप्त करने की दोनों क्षमताएं इसमे विद्यमान हैं। विचारों की तरङ्गों का यदि इसके द्वारा प्रेषण होता है, तो अन्य मस्तिष्कों द्वारा प्रसारित तरङ्गों को यह प्राप्त भी करता रहता है।

जिनकी वृत्ति संख्यात्मक होती है। जो भ्रांतियों भ्रमों और भयों से आच्छादित होते है, वे जीवन में अस्थिरता को प्राप्त करते हैं, उनमें सदैव कम्पन विद्यमान रहता है, वे विचलित और अशान्त रहते है अतएव दिव्यताओं के अनुपम कोष से अपना रक्षण नहीं कर पाते परन्तु जो आत्मना शुद्ध पवित्र निर्मल और पावक होते है, वे दृढ़ निश्चयी होते हैं। अशान्त और अस्थिर मानव ही असंयमित तथा विक्षिप्त बनकर इस दिव्य कोष के होते हुए भी उससे स्वयं को लाभान्वित नहीं कर पाते परन्तु जो साधनामय जीवन पद्धति को अपना कर दृढ़ता को संजोकर आत्मा में पवित्र इच्छाओं को उत्पन्न करते हैं, उनके मनों के शिव संकल्प जब मस्तिष्क में पहुंचते है तो सुविचारों की आधार शिला पर श्रेष्ठ कर्मों की धारा को प्रवाहित कर जीवन का सर्वत्र रक्षण करते हैं।

मानव जीवन में अभिरक्षण तीन वस्तुओं का चाहिए, अन्न का, मन का और प्राण का। आहार की शुद्धि से सत्व की शुद्धि होती है। सत्व की शुद्धि से स्मृति ध्रुव है और ध्रुव स्मृति ही हमारी ग्रंथियों को उन्मुक्त करती है, तीनों पाशों को काटती है और माया बन्धनों को तोड़ती है। जिस मानव का मस्तिष्क विवेकशील है वह सदा भक्ष्य और अभक्ष्य का विचार करके अपने सत्व का शोधन करेगा। यथा आहार तथा विचार, यथा विचार तथा आचार, यथा आचार तथा व्यवहार और यथा व्यवहार तथा संसार। बिना आहार शुद्धि के न तो यम नियम का पालन होता है और न ही आसन की स्थिरता। प्राणों का वशीकार जिस प्राणायाम के माध्यम से होना है, उसके लिए भी सुविचारों का होना अनिवार्य है। सुविचार रखने वाले योगियों ने तो भोग रत होकर सदैव अपनी प्राण शक्ति को क्षीण किया है। सुविचारी ही सदाचारी होकर प्राणायाम से प्राण शक्ति की अभिवृद्धि करता है। मन की निरुद्धता भी मस्तिष्क की की दिव्यता पर निर्भर करती है। मानव बहिर्मुखी अधिक होता है अन्तर्मुखी कम और मन तो एक विनिमय केन्द्र है जो भीतर से बाहर तथा बाहर से भीतर करने का कार्य करता है। जिस मस्तिष्क में ज्ञान चक्षु बन जाता है और विवेक उस चक्षु का प्रकाश तो देखने और सुनने के भद्र दृष्टि कोण से जो कुछ भीतर जाता है वह सब भद्र होता है।

क्या आप अपने जीवन को संचालित करने वाले इन तीन प्रमुख तत्वों का अभिरक्षण चाहते हैं? यदि हां तो व्रती बन कर उस परमात्मा से दृढ़ शक्ति को प्राप्त करें, पवित्र इच्छावान बन कर, मन को शिव संकल्पों से युक्त कर के दिव्यताओं के इस अक्षय कोष का संयमी बन कर लाभ उठाएं।



आर्य समाज में शास्त्रीय संगीत की उपेक्षा क्यों ?

महर्षि दयानन्द गन्धर्व भी थे

लेखक—विद्यासकूर 'अमलेश' प्रधानाचार्य शकूर संगीत महा-
विद्यालय ८३८, गोंवनी चौक शाहाबाद (मूड़) बरेली

[गताङ्क से आगे]

उदात्त और अनुदात्त के मिश्रण से स्वरित उत्पन्न होता है। इन तीनों के परस्पर मिश्रणसे अन्य चार स्वर उत्पन्न होते हैं। ये स्वर वेद मन्त्रों के नियमित पाठ और उनका अर्थ जानने के लिए हैं। किस स्वर का किस स्थान से किस प्रकार उच्चारण करना चाहिये यह भी स्पष्ट रूप से लिखा है।

गान विद्या के सात स्वर षड्ज, ऋषभ, गन्धार, मध्यम्, पंचम, धैवत, निषाद (सा, रे, ग म, प, ध, नि,) के विषय में ज्ञान हेतु गान विद्याके ग्रन्थों को पढ़ने को लिखा है, साथ ही यह भी लिखा है कि ग्रन्थ बढ़ जाने के कारण नहीं लिखते। इस पंक्ति से स्पष्ट है कि ऋषि गान विद्या के ग्रन्थ गान्धर्व वेद, नारदीय संहिता, संगीत रत्नाकर, भरत नाट्य शास्त्र, पिङ्गल सूत्र आदि का अध्ययन कर चुके थे और संगीत विषय का विस्तार से वर्णन कर सकते थे। पठन-पाठन विषय में वे लिखते हैं—

पातञ्जलि महाभाष्यकार ने भी कहा कि—स्वर और वर्णों के उच्चारण में विपरीत होने से शब्द दुष्ट कहाता है अर्थात वह मूल अर्थ को नहीं जनाता, तथा जैसे स्थान और प्रयत्न के बिना शब्द का उच्चारण प्रसन्नता कराने हारा नहीं होता, वैसे ही स्वर से विपरीत उच्चारण और गान विद्या भी सुन्दर नहीं होती। किन्तु गान का करने वाला षड्जादि स्वरों के उच्चारण को उलटा कर देवे, तो वह अपराध उसी का समझा जाता है। इसी प्रकार वेदादि ग्रन्थों में भी स्वर और वर्णों का उच्चारण यत्न से होना चाहिये, और जो उलटा उच्चारण किया जाता है वह (दुष्टशब्द:) दुःख देने वाला और झूठ समझा जाता है।

(ऋ० भा० भूमिका पठन-पाठन विषय)

इसके पढ़ने से ज्ञात होता है कि ऋषि दयानन्द षड्जादि स्वरों के उच्चारण का ढंग व प्रभाव जानते थे। शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता जानते हैं कि स्वरों का उल्टा उच्चारण करने से राग की हानि होती है अथवा राग बदल जाता है। ऋषिने इसी अध्यायमें स्वरों का प्रकृति पर प्रभाव पड़ने का वर्णन किया है—जो इन्द्र अर्थात् सूर्य की उत्तमता चाहे वह समस्त पद के स्थान में अन्तोदात्तउच्चारण करें और जो मेघ की वृद्धि चाहे वह आद्युदात्त उच्चारण करें। इसलिये स्वर का उच्चारण भी यथावत् करना चाहिए। ऋषि दयानन्द वेद मन्त्रों के पाठ और गान में स्वरों के उच्चारण का विशेष महत्व मानते थे। स्वरों का ठीक उच्चारण बिना गुरु के सिखाये नहीं आता और इसके लिए दीर्घकाल तक साधना भी करनी होती है। आर्य समाजों को चाहिये कि वे अपने वार्षिक उत्सव पर सस्वर वेद पाठी पण्डित को बुलाया करें और उनसे आर्यसमाज के सभासदों आदि को सन्ध्या और हवन के मन्त्रों का सस्वर पाठ सिखलावें। जो गायन सीख सकते हैं वे सामगायकों से साम गान सीखें।

महर्षि दयानन्दने संगीत विषय।।के वेद मन्त्रों का जो भाष्य किया है उससे ज्ञात होता है कि वे महान संगीतज्ञ थे। संगीत में चार प्रकार के वादित्र (वाद्य) होते हैं (१) तंत्र वाद्य [तत, वितत) वीणा, सितार, तानपूरा, वायलिन, सारंगी आदि (२) अवनद्ध वाद्य—मृदंग (पखावज) तबला, ढोलक आदि (३) घन—केवल ताल देने वाले वाद्य—झांझ, मजीरा, करताल आदि (४) सुषिर—फूंक (वायु) से बजने वाले वाद्य—तूणव, बीन, बांसुरी, तुरही, हर्मोनियम आदि। इन चारों भेदों को दयानन्द जानते थे, इसलिए उन्होंने एक मन्त्र के भाष्य में इन चारों प्रकार के वाद्यों के सीखने का वर्णन किया है।

मन्त्र—नर्मायपुंश्चलूं हसाय कारिंयादसे शाबल्यां ग्रामण्यं गणकमभिक्रोशकं तान्महसे वीणावादं पाणिघ्नं तूणवध्मं तान्नृत्तायानन्दाय तलवम्। यजु० अ० ३० मन्त्र २०।

पदार्थः—हे परमेश्वर वा राजन्। आप (नर्माय) क्रीड़ा के लिये प्रवृत्त हुई (पुंश्चलूम्) व्यभिचारिणी स्त्री को (हंसाय) हंसने को प्रवृत्त हुए (कारिम्) विक्षिप्त पागल को और (यादसे) जल-जन्तुओं के मारने को प्रवृत्त हुई (शाबल्याम्) कबरे मनुष्य की कन्या को दूर कीजिये (ग्रामण्यम्) ग्रामाधीश [गणकम्] ज्योतिषी और [अभिक्रोशकम्] सब ओर से बुलाने वाले जन [तान] इन सबको [महसे] सत्कार के अर्थ [वीणावादम्] वीणा बजाने [पाणिघ्नम्] हाथों से वादित्र बजाने और [तूणवध्मम्] तूणव नामक बाजे को बजाने वाले [तान] उन सबको [नृत्ताय] नाचने के लिए और [आनन्दाय] आनन्द के अर्थ [तलवम्] ताली आदि बजाने वाले को उत्पन्न व प्रसिद्ध कीजिये।

भावार्थः—मनुष्यों को चाहिए कि हंसी और व्यभिचारादि दोषों को छोड़ और गाने बजाने नाचने आदि की शिक्षा को प्राप्त होके आनन्दित होवें।

महर्षि दयानन्द ने मनुष्यों को आनन्दित होने के लिए गायन-वादन, नृत्य और ताल लगाने की उत्तम शिक्षा प्राप्त करना वेद का आदेश बताया है। ऋषि भद्दे नृत्य और विषय शक्ति बढ़ाने वाले अश्लील गायन को अच्छा नहीं समझते थे इसीलिये उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में इन्हें मना लिखा है। कुछ लोग नृत्य को बुरा बताते हैं और उसका विरोध करते हैं परन्तु ऋषि ने नृत्य को सीखने को भी लिखा है। ऋषि वेद की बात मानने को कहते हैं और वेद गायन, वादन, नृत्य, ताल लगाना सीखने को कहता है तब विरोध क्यों ?

अब कुछ लोग सोचेंगे कि आर्य समाज के कन्या विद्यालयों में जनता के समक्ष लड़कियों का नाच-गान प्रस्तुत करने में कोई बुराई नहीं है। परन्तु यह भूल है, ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि कन्याओं के गुरुकुल [विद्यालय] में ५ वर्ष का भी लड़का न जाये और लड़कों के गुरुकुल में ५ वर्ष की भी कन्या न जाये, यहां तक कि लड़के व लड़कियों के गुरुकुल एक दूसरे से ४ कोस [१३ किलो मीटर] दूर हों।

[शेष पृष्ठ ५ पर]

महर्षि दयानन्द गन्धर्व भी थे

[शेष पृष्ठ ४ से आगे]

इससे सिद्ध है कि लड़कियों के गान एवं नृत्य को लड़के व पुरुष न देखें और लड़कों के गान व नृत्य को लड़कियां व स्त्रियां न देखें क्योंकि इससे विषयासक्ति होती है तथा ब्रह्मचारियों और ब्रह्म—चारिणयों का ब्रह्मचर्यव्रत भंग हो सकता है। पुरुष पुरुषों में और स्त्रियां स्त्रियों में नाचें। श्रृंगार रस प्रधान गायन व नृत्य विवाहित स्त्री पुरुषों को किसी विशेष—अवसर पर उचित हो सकता है अर्थात दम्पति [पति-पत्नि] एक दूसरे के समक्ष एकांत में श्रृंगार रस पूर्ण नृत्य व गान करें तो कोई हानि नहीं। ब्रह्मचारी लड़कों लड़कियों को श्रृंगार रस छोड़ कर अन्य रसों से युक्त गायन, वादन व नृत्य सीखना और करना उचित है। गृहस्थ स्त्री-पुरुषों को भी यही उचित है।

नृत्य कौन सा सीखें—नृत्य कई प्रकार का होता है। कुछ लोक नृत्य ऐसे होते हैं कि जिनमें तलवार आदि चलाने के लिपटी आदि के पेंतरे होते हैं। समान गति से पैर व हाथ चलाना इनका मुख्य अंग होता है। कुछ नृत्य ऐसे हैं जिनमें मुद्राओं द्वारा भावों का प्रदर्शन किया जाता है। कत्थक तथा भरत नाट्यम इसी प्रकार के हैं। इसका भी एक पूरा शास्त्र है। कौन सा नृत्य किसको करना चाहिए तथा आर्यों को कौन-सा नृत्य करना चाहिये इस पर विद्वानों को विचार करके निर्णय करना चाहिए।

बारातों में लड़के-लड़कियों, स्त्री-पुरुषों का मद्यपान कर ट्विस्ट (भद्दे ढंग से कूदना व मटकना) करना आर्य संस्कृति और सभ्यता के विरुद्ध है। यह अच्छा नहीं, है, मैने इसके दुष्परिणाम देखे हैं। यह बन्द होना चाहिए।

प्रायः देखने में आता है कि विवाह से एक या दो दिन पहले घर की तथा आस पड़ोस की स्त्रियां मिल कर रात्रि जागरण करती हैं। पुरुषों को घर से बाहर कर दिया जाता है। वे रात्रि भर गायन, नृत्य और हास्य पूर्ण अभिनयों के द्वारा मनोरंजन करती व आनन्द लेती है। इससे सिद्ध है कि पुरानी प्रथानुसार पुरुषों को स्त्रियों का नृत्य नहीं देखना चाहिए।

महर्षि दयानन्द राग—रागनियों को भली भांति समझते थे। एक घटना से इसकी पुष्टि होती है तहसीलदार अमीचन्द ने महर्षि को मधुर स्वर में राग व ताल में निबद्ध संगीत सुनाया, महर्षि ने प्रसन्न होकर कहा—"अमीचन्द तुम हीरा हो परन्तु कीचड़में सने हो।" इस वाक्य को सुनकर अमीचन्दकी विचारधारा ने मोड़ लिया, वे श्रृंगार रस अश्लील गीतों को छोड़कर प्रभु भक्ति के गीत लिखने और गाने लगे। यदि वे शास्त्रीय संगीत न जानते होते तो कभी भी अमीचन्द के गायन की सराहना न करते, जैसा कि आज कल आर्य समाजों में देखने को मिलता है। यदि तबला वादक अपने बाजेको स्वर में मिलाने लगता है तो मन्त्री जी कहते हैं अजी ऐसे ही बजाओ। यदि भजनोपदेशक किसी राग का आलाप शुरू करे तो किसी की आवाज आ जाती है भजन शुरू करो आ...आ...छोड़ो। आर्य समाज में शास्त्रीय संगीत की उपेक्षा देखकर दुःख होता है। मुझे बहुत सी आर्य समाजों के वार्षिकोत्सवों पर भी जाने का अवसर प्राप्त हुआ है। अभी तक मुझे किसी भी आर्यसमाज में शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता नहीं मिले। मृदंग तो दूर रहा लोग तबला और ढोलक तक बजाना नहीं जानते हैं। विवश होकर जैसा वादक मिल जाता है वैसा ही उससे मिलकर गाना पड़ता है। मुझे तीन-चार भजनोपदेशक मिले जो कुछ राग—रागनियां जानते हैं। उन्हें भी जनता की रुचि के अनुसार ही भजन गाना पड़ते हैं। अन्य मतावलम्बियों के यहां केवल संगीत का ही आकर्षण हैं। मन्दिरों में सैकड़ों भजन मण्डलियां और कीर्तन मंडलियां भजन कीर्तन करती हैं। मजारों पर कव्वालों की टोलियां रात-रात भर कव्वालियां गाती हैं। चर्च में पादरी समवेत स्वर में प्रार्थना कराते हैं। स्त्री, पुरुष व बालक सब एक स्वर में गाते हैं, समा बंध जाता है। गुरुद्वारों में सिक्ख गायक व वादक वैतनिक व अवैतनिक दोनो प्रकार के रहते हैं। उनके भजन राग-रागनियों में निबद्ध होते हैं। यही कारण है कि इन स्थानों में जनता अधिक पहुंचती है। परन्तु आर्य समाजमें जाओ टूटे बाजे पर ही चाहे जैसा गा दो, आवाज जोर से निकले, संगीतकर्त्ताकी आवश्यकता नहीं। इसीलिये आर्यों के लड़के व लड़कियां जो भी संगीत के अच्छे ज्ञाता हो जाते हैं आर्यसमाज को छोड़ देते हैं। ऐसे कितने ही व्यक्तियों को मै जानता हूं।

मेरा सुझाव है कि जहां आर्य समाज ने वेद और दर्शन शास्त्रों आदि का प्रचार किया है वह शास्त्रीय संगीत और साम संगीत का भी प्रचार करें। प्रत्येक आर्य समाज में कम-से-कम एक भजन मण्डली तो अवश्य ही होनी चाहिये। प्रत्येक आर्य को गायन या वादन अवश्य सीखना चाहिये। मोक्ष प्राप्ति, आनन्द प्राप्ति और आर्य समाज के सत्सगो को रोचक बनाने हेतु गान्धर्व (सामगान) और देशी संगीत भी सीखना चाहिये। यह वेद की और महर्षि दयानन्द की आज्ञा है राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, लव और कुश मार्गी व देशी दोनों प्रकार का संगीत जानते थे। श्रीकृष्ण जी साम संगीत, गायन वादन तथा नृत्य तीनों में दक्ष थे। हनुमान, भरत और श्रीकृष्ण के शास्त्रार्थ संगीत के मत [शैलिया] इस समय भी प्रचलित है।

संस्कृत माध्यमिक पाठ्यक्रम में अनिवार्य हो

संस्कृत रक्षा हेतु निम्नलिखित संस्थाओं से और पारित प्रस्ताव प्राप्त हुए—

—जनार्दन प्रसाद रामचन्द्र कन्या जू० हाई स्कूल एवं बेबी एबर ग्रीन स्कूल भोंवतनगर मैनपुरी गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय सिराथू इलाहाबाद, केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर, गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम अलीगढ़, आर्य समाज सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम राजघाट मार्ग अलीगढ़, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा बलिया आर्य समाज मड़ियाहूं जौनपुर आर्य समाज मवाना मेरठ दयानन्द बाल मन्दिर शिकारपुर बुलंदशहर आर्य उपप्रतिनिधि सभा आगरा, आर्य समाज नानपारा बहराइच आर्य समाज मन्दिर चन्द्रपुर नैनीताल, आर्य समाज भटपुरा महावतपुर बिजनौर, आर्य केन्द्रीय सभा आगरा।

—आर्य समाज लहेरिया सराय (दरभंगा) के तत्वावधान में आयोजित वेद प्रचार समारोह में १५-५-८७ से १७-५-८७ तक डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी, पं० सत्यव्रत वानप्रस्थ, श्री सियाराम निर्भय, पं० अर्जुन प्रसाद शास्त्री एवं आर्य भजनोपदेशक श्री दयानन्द सत्यार्थी के उपदेश हुए।

निर्वाचन

आर्य समाज गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार

प्रधान श्री हरिसिंह साहित्याचार्य

मन्त्री श्री सुरेन्द्र कुमार विद्या भास्कर

कोषा० श्री डा० केशवप्रसाद उपाध्याय

बाल जगत

देवता और राक्षस

[श्री जगदीश शरण 'शीतल, प्रधान आर्य समाज चांदपुर बिजनौर]

नगर के समीप महात्मा जी के आश्रम में प्रतिदिन सत्संग होता है। बड़ी संख्या में स्त्री पुरुष इसमें भाग लेकर वैदिक ज्ञान की अमृत वर्षा का पान करते हैं। एक दिन महात्मा जी जैसे ही प्रवचन के लिये आसन पर विराजमान हुये एक श्रद्धालु भक्त ने खड़े होकर प्रार्थना की महाराज! आज तो आप यह बतलाने की कृपा करें कि देवता किसे कहते हैं और राक्षस कौन होते हैं? महात्मा जी ने श्रद्धालु भक्त की ओर शान्त भाव से देखा और कहा आपकी जिज्ञासा बड़ी ही सुन्दर और हितकारी है। संसार में मनुष्य तीन प्रकार के होते हैं। (१) उत्तम (२) मध्यम (३-) नीच

(१) उत्तम मनुष्य वे होते हैं जो अपनी हानि करके भी दूसरों का लाभ करते हैं

(२) मध्यम मनुष्य वे होते हैं जो अपनी हानि करके दूसरों के काम आते हैं।

(३) नीच मनुष्य वे होते हैं जो दूसरों की हानि करके भी अपने लाभ की बात सोचते हैं। परन्तु महाराज भर्तृहरि कहते हैं "संसार में एक चौथे प्रकार के मनुष्य भी होते हैं जो अपनालाभ हो या न हों परन्तु दूसरों की हानि अवश्य होनी चाहिये।"

अब इन्हें संक्षिप्त कर लें तो दो प्रकार के मनुष्य रह जाते हैं। एक उत्तम और दूसरे नीच। सत्यवादी न्यायकारी, दयालु, धर्मात्मा सबका उपकार करने वाले सतोगुणी उत्तम पुरुष ही देवता हैं। दूसरों को हानि पहुंचानेवाले स्वार्थी, अन्यायकारी, अत्याचारी, कामी, क्रोधी हिंसक तथा क्रूर तमोगुणी नीच पुरुष ही राक्षस हैं। अब हम इसी विषय को एक उदाहरण द्वारा और अधिक सरल करने का प्रयत्न करते हैं।

कल्पना कीजिये आप सब सब जन हमारे आश्रम में भोजन करने के लिए आमने सामने अपने-२ आसन पर बैठे हुए हैं। अनेक व्यंजन आपके सम्मुख है। जैसे ही आपने पहला कौर खाने के लिए उठाया उसी समय आपके हाथ के मुड़ने की शक्ति बंद हो जाय तो ऐसी दशा में आप सब क्या करोगे? उनमें से एक व्यक्ति ने खड़े होकर नम्र निवेदन किया कि महाराज जब हमारा हाथ मुड़कर हमारे मुख तक ही न पहुंचेगा तो ऐसी दशा में हम भोजन किस प्रकार कर सकते हैं?

महात्मा जी ने उत्तर दिया ऐसी बात नहीं। आप भोजन फिर भी कर सकते है। आपका हाथ अपने मुख में ही तो नहीं जा सकता परन्तु सामने वाले के मुख में तो जा सकता है। पहले आप उसे खिलाइये फिर वह आपको। देखिये कुछ ही समय में आप सब भोजन करके तृप्त हो जायेंगे। परन्तु यदि आप स्वयं ही खाने की चिन्ता करते रहें तो न आप खा सकेंगे और न ही दूसरा। इन दोनों विचारों में कितना आकाश और पाताल का अन्तर है। एक में परमार्थ और सहयोग की भावना है दूसरे में स्वार्थ तथा असहयोग की। इससे सिद्ध हुआ जो दूसरों के लिये जीता है वही देवता है और जो अपने लिये जीता है वही राक्षस है। एक भक्त ने फिर निवेदन किया महाराज हमने चित्रों में देखा भी है और सुना भी है, देवताओं के अनेक शिर तथा अनेक भुजायें होती हैं और राक्षसों के मुख भयंकर तथा शिर पर सींग होते हैं। क्या वास्तव में ये सब बातें सृष्टि नियम के विरुद्ध हैं। सृष्टि में जितने मनुष्य हैं सबके शरीर की एक जैसी रचना है। एक शिर, दो, आंख, दो कान, एक नाक, एक मुख, दो हाथ, दो पैर इत्यादि।

न ही देवताओं के अनेक शिर और अनेक भुजायें होती है और न राक्षसों के शिर पर सींग होते हैं। क्या वास्तव में ये सब बातें सत्य हैं? महात्मा जी बोले यह बात सत्य नहीं है क्योंकि ये सब बातें सृष्टि नियम के विरुद्ध हैं। सृष्टि में जितने भी मनुष्य है सबके शरीर की एक जैसी रचना है। एक शिर दो आँख, दो कान, एक नाक, एक मुख, दो हाथ, तथा दो पैरइत्यादि। न ही देवताओं के अनेक शिर और अनेक भुजाये होती है और न ही राक्षसों के शिर पर सींग होते हैं। यह तो चित्रकार की कल्पना है। जिस प्रकार वक्ता अपने मन के भावों को अपनी करनी के द्वारा व्यक्त करता है उसी प्रकार चित्रकार अपनी चित्रकारी के द्वारा अपनी बात को समझाने का प्रयत्न करता है। अनेक शिर और अनेक भुजाओं का अभिप्राय है देवता अर्थात उत्तम पुरुष मिलकर चलते, मिल कर बैठते, मिलकर बोलते, मिलकर सोचते तथा मिलकर काम करते हैं।

राक्षसों के भयंकर मुख तथा शिर पर सींग होने का अभिप्राय है नीच मनुष्य स्वार्थी, निर्दयी, क्रोधी, कामी, कुकर्मी, कुमार्गी, कुटिल, कपटी, क्रूर तथा हिंसक होते हैं और पशुवत आचरण करते हैं। सब भक्तों ने महात्मा जी को धन्यवाद देकर उनका आभार व्यक्त किया।

सुख शान्ति का मूलाधार धर्म ही है
धर्म के स्वरुप की पहचान करो

प्रथम लक्षण—धृति

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

आज देश में चारो ओर विग्रह अशान्ति आतंकवाद का विस्तार हो रहा है और इस सब के पीछे धर्म को ही आधार बनाया जाता है। क्यों कि वे धर्म के तथा कथित ठेकेदार नेता धर्म के वास्तविक स्वरुप को कतई नहीं जानते या अपने को सर्वाधिक धर्म का नेता कहलाने के प्रलोभन में धर्म के स्वरूप को बिगाड़कर सार्वजनीन कर्म को साम्प्रदायिक परिवेश में प्रस्तुत करके विग्रह व संघर्ष उत्पन्न कराते हैं। मत्थाटेक, दकियानूसी, ढोंग के आवरण से ढके धर्म को देखकर विचारशील, विवेकी युवकोंकेअंदरधर्म के प्रति अरुचिहोना स्वाभाविक है उस स्थितिमें धर्मको पाखण्ड कहा जाना भी स्वाभाविक है। परन्तु धर्म के सत्य स्वरुप को बिना जाने बिना माने सुख और शान्ति की कामना निरर्थक ही होगी।

इसी लिए महाराज मनुने धर्म के स्वरूप को पहचानने के लिए "धृतिः क्षमा दमो ऽस्तेयं शौच मिन्द्रिय निग्रहः धीर्विद्या सत्य मक्रोधो दशकम् धर्म लक्षणम्" श्लोक के माध्यम से, धैर्य, क्षमा मन निग्रह, चोरवृत्ति का त्याग, इन्द्रियों का अनुशासन, बुद्धि, वेदविद्या, सत्य व अक्रोध इन दश लक्षणों को समझने और जानने का निर्देशन दिया। जहां यह लक्षण विद्यमान हैं वहां धर्म है इन लक्षणों से विहीन अधर्म है इसलिए आज के आतंकपूर्ण परिवेश में हमें बड़ी ही गम्भीरता से इसे समझने का यत्न करना है।

प्रथम लक्षण धृतिः—

धैर्य, ग्रहण शीलता, दृढ़ता

धर्म के पथ पर चलने की साध के लिए सर्वप्रथम हमें धृति वान बनना है। (धृति) धैर्य हमारे जीवन का अंग होना चाहिए। ग्रहण शीलता, सत्यासत्य विवेचन करके सत्य ग्रहण करने एवं असत्य के त्याग का संकल्प होना चाहिये। विचारो की दृढ़ता परिपक्वता की नितान्त अपेक्षा है।

व्यक्ति जब धैर्य पूर्वक आयी समस्याओं को समझकर उन्हें सुलझाने का, यदि कहीं अपनी त्रुटि है तो उसे स्वीकारने का प्रयत्न करता है तब स्वार्थता पर उससे निजी तात्कालिक हानि होने का संशय उत्पन्न करके पथ विमुख करने की चेष्टा करती है, परन्तु दृढ़ निश्चयी दृढ़तापूर्वक सोचसमझ कर अपने कर्तव्य का जब निर्धारण कर लेता है तो स्वभावतः वह कदम परस्पर प्रीति, स्नेहकारी, वर्ग भेदनाशक साम्प्रदायिक सौहार्द्र संस्थापक सुख-शान्तिकारी बनता है।

(क्रमशः)

वेद-विवेचन

'तेजस्वी एवं दिग्विजयी हों,

श्री अमित प्रताप नारायण सिंह (देवरिया)

ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु, वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम ।
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्त्र,स्त्वयाऽध्यक्षेण पृतना जयेम ॥ (ऋ. १०-१२८-१)

मन्त्र का अर्थ है—हे अग्नि, मेरा तेज युद्धों में व्याप्त हो। तुझे प्रदीप्त करते हुए हम अपने शरीर को पुष्ट करें। चारों दिशाएं मुझे नमस्कार करें। तेरे नेतृत्व में हम शत्रु सेनाओं को जीतें।

इस मन्त्र में दो बातों पर ध्यान आकृष्ट किया गया है—१—यज्ञ के द्वारा अपने शरीर को पुष्ट और शक्ति सम्पन्न बनावे। प्रतिदिन यज्ञ करना स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभप्रद है। यज्ञ की वायु फेफड़ों को विशुद्ध करती है। इस वायु से शरीर के अनेक विकार दूर होते हैं। यज्ञ मनुष्य के भावों को शुद्ध करता है। भाव शुद्धि से अन्तःकरण शुद्ध होता है। अन्तःकरण की शुद्धि से विचार शुद्ध होते हैं। इस प्रकार यज्ञ शरीर शुद्ध करता है तथा शरीर-संरक्षण में अत्यन्त उपयोगी है।-२—युद्धों में विजय प्राप्त करना—परमात्मा के नेतृत्व में शत्रुओं से युद्ध करें और सर्वत्र विजय प्राप्त करें। यह युद्ध जीवन में निरन्तर चलता रहता है। यह युद्ध पाप और पुण्य का है, सद विचार और दुर्विचार का है, संयम और असंयम का है, अपने अन्दर के दुर्विचारों को जीतने का है, देश भक्तों और देशद्रोहियों का है। यह स्मरण रहे कि पापी और असंयमी व्यक्ति कभी इस युद्ध में विजयी नहीं हो सकते है।

संसार शक्ति का पूजक है। जहाँ शक्ति है, वहाँ अधिकार है, वहाँ शासन सूत्र है वहां गौरव है। सभी प्रतिष्ठा और सम्मान, गौरव चाहते है। परमात्माके दो स्वरूप है शान्त और घोर। शांतरूपको शिव कहते हैं और घोर रूप को रुद्र या शक्ति। वह पुण्यात्माओं और सज्जनों के लिए सुखकर है शिव है वही पापियों के लिये रुद्र है, भयंकर है।

यह शक्ति ही सामर्थ्य उत्साह और अहलाद का कारण है। शक्ति का सदुपयोग उन्नति का साधन है आर्यवीर शक्तिका सदुपयोगकरता है। वही पूर्णतयावीरऔर निर्भय होता है। निर्भयताकेपरिणाम स्वरुप वह सभीदिशाओ को जीत लेता है। अपनी विजय पताका सर्वत्र फैलता है और संसार को अपने गुणों से मन्त्रमुग्ध कर देता है।

मंत्र कहता है कि संघर्ष शील बने। आप शान्तिकामी बनें परन्तु आवश्यकता पड़ने पर युद्ध से मुंह न मोड़े। युद्ध के समय शरीर तथा मस्तिष्क को सम्पूर्ण शक्तियां कार्य करती है। जर्मनी तथा जापान ने भयंकर लड़ाई लड़ी है, फिर भी वे दुनियां के विकसित देशों की श्रेणी में है। कहा जाता था कि हिरोशिमा पर बमगिर गया और जापान नष्ट हो गया। परन्तु ऐसी बात नहीं है। युद्ध मनुष्य तथा देश को सावधान, वीर तथा जागरुक बनाता हैं। इजराइल छोटा सा देश है परन्तु वहाँ के निवासी वीर तथा योद्धा है। वैसे देश और निवासियों का कोई भी बाल बांका नहीं कर सकता। योगी कवि के शब्दोंमें यादकरो—

पग—पग काटे रोड़े पत्थर।
पल—पल महायुद्ध गर्जन स्वर॥
बस बिना सहारे इकले ही बढ़ना।
करते युद्ध निरन्तर॥
नहीं किसी पर तुम हो निर्भर।
आओ अपने घर से बाहर॥

मनुष्य को अपने व्यक्तिगत जीवन में भी विजय प्राप्त करने के लिए वीरता की आवश्यकता पड़ती हैं। संसार में वीर न होने के कारण हमें बहुत से दुःखों और बहुत सी समस्याओंका सामना करना पड़ता है। आप कहेंगे कि वीर कैसे बना जाय? वीर बनने का सबसे अच्छा उपाय है कि आप अपने सामने कोई लक्ष्य रखें और उसके लिए संघर्ष प्रारम्भ कर दें। ये आदर्श अनेक प्रकार के हो सकते है, उदाहरणार्थ—निर्दोष सिद्धान्त, उच्चादर्श, जनता की सेवा, जात—पांत, छुआछूत को मिटाना दहेज या ऐसी बुराइयों को दूर करना राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रचार, स्वतन्त्र ा की रक्षा, देश की एकता और अखण्डता बनाए रखना। यदि आप ऐसा करेंगे तो विजय चरण चूमेगी। आप का लक्ष्य—विज्ञान, साहित्य, समाज और राष्ट्र किसी के लिए हो सकता है।

बलिदान का अर्थ होता है किसी उच्च कार्य के लिए अपने को समर्पित कर देना यह एक महान कार्य है। यह कभी व्यर्थ नहीं जाता बलिदान की सदा विजय होती है। बीज जब अपने को मिट्टी में मिला देता हैं, नष्ट हो जाता है, उस समय उसके स्थान पर नये लहलहाते हुए पौधे उत्पन्न होते है। दीपक की बत्ती स्वयं को जलाकर भटकों को मार्ग दिखलाती है। आप संसार के दूसरे देशों के हितों की रक्षा करें "वसुधैव कुटुम्बकम्" का यह अर्थ कदापि नहीं है कि कोई जालिम हमारी भूमि की ओर गृध दृष्टि करे और हमारी एकता अखण्डता को भंग करें। हम उसे सहते रहे। दिनकर जी ने कहा है—

छीनता हो स्वत्व तेरा और तू त्याग तप से काम ले यह पाप है। पुण्य है उच्छिन्न कर देना उसे। बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ है।

स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन संघर्षों में विजयी होने का जीवन है। बलिदान का जीवन है। वैदिक धर्म के विचारों के स्थायी प्रचार के लिए उन्होंने आदर्श शिक्षणालय खोलने का निश्चय किया। वह विद्यालय अत्यन्त भयंकर जंगल में खोला गया था उनके मित्रों और सम्बन्धियों ने इसका विरोध किया। पर गुरुकुल खोलने के लिए २५ हजार रूपये इकठ्ठा करने और एकत्र न होने पर न लौटने का निश्चय करके मुन्शी राम निकल पड़े और उन्होंने वचन को पूरा किया।

किसी कवि ने कितना सत्य कहा है:— लड़ते जाओ, बढ़ते जाओ, रुकने का क्या यहां काम है। रुकना मृत्यु और बढ़ना ही जीवन का नाम है। जो लड़ना है वही राम है उसको मिलती सीता यहीं युद्ध की शिक्षा देती, कृष्ण कन्हैया की है गीता।

मित्रो! स्वतन्त्रता के बाद के युद्धों मे अकेले ही अनेक आर्य वीरों ने जो बहादुरी के कार्य किए उन्हे स्मरण कर श्रद्धा से हमारा मस्तक उनके प्रति झुक जाता है। सोमदत्त, रमेश बदलानी आदि सैकड़ों वीरों को वीरों का कहाँ तक उल्लेख किया जाय। पर रमेश बदलानी के मृत्यु के बाद जब राजस्थान सरकार ने उनकी मां को ५ हजार रुपये देना चाहा तब उस वीर माता ने धन लेने से इनकार कर दिया। "कहा रमेश भारत माता की रक्षा के लिए शहीद हुआ है। मैं यह धन लेकर क्या करुंगी? आप इस धन को ले जाइये और राष्ट्र के उन बेटों के कल्याण के लिए उपयोग में लाइए जो जन्मभूमि की रक्षा और स्वतन्त्रता को बचाने के लिए ही नहीं, शत्रुओं को कुचलने में लगे है।

बदलानी की तरह ही हमें देशभक्त बनना चाहिये, अंगारे के समान तेजस्वी बनना चाहिये पूज्य त्रिदेव जी के शब्दों में मै कहूंगा—

होवें हम तेजस्वी वीर
दिग्विजयी हों हम रणधीर।

हम सभी को यह अनुभव करना चाहिये कि हम आग हैं—दहकते हुये अंगारे हैं। हमारी आँखों में तेज है, हमारे मुख में अमृत हैं। हम सूर्य हैं—तेजो से युक्त हैं। हम अमर हैं। जलते हुए यज्ञ कुण्ड हैं। आहुति हैं।

शास्त्रार्थ महारथी विद्यावारिधि–
आचार्य सत्यमित्र जी शास्त्री

[श्री स्वामी हरिहरानन्द नेपाली]

गुरुकुल अयोध्या के प्रथम स्नातक तथा स्वामी त्यागानन्द जी के प्रथम शिष्य श्री सत्यमित्र जी शास्त्री आर्यजगत के महान विद्वान हैं। धाराप्रवाह संस्कृत बोलने में इनकी महती क्षमता है। मैने इनके अनेकों शास्त्रार्थ श्री करपात्री जी, श्री माधवाचार्य के साथ होते देखा। अब वह तथा अमर स्वामी जी, श्री पं० शान्तिप्रकाश, श्री ओमप्रकाश जी रह गये। इन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश में ९० वर्ष तक कार्य किया। व्याकरण दर्शन वेद के महान ज्ञाता हैं। और ग्रन्थों के पढ़ाने मे जी निष्णात हैं इनके प्रचार एवं व्याख्यान से हजारों पौराणिक आर्य-समाजी बने। श्री शास्त्री जी सीधे सरल चरित्रवान व्यक्ति हैं। मैने सम्पूर्णानन्द संस्कृत सम्मेलन मे इन्हें देखा और श्लोकबद्ध शास्त्रार्थ करते देखकर आर्य बन गया। श्री सत्यमित्र शास्त्री जैसा विद्वान चिरायु रहे। गुरुकुल अयोध्या निरन्तर बढ़े। शास्त्री जी ने अनेकों विधर्मियों को शुद्ध किया। आप स्वभाव से मिशनरी उपदेशक हैं। मैंने पूछा कोई ग्रन्थ लिखे। इन्होने कहा कौन छपावे।

सत्यार्थ प्रकाश भाष्य एव पाखण्डवाद की अन्त्येष्टि' इनका हस्त लिखित ग्रन्थ देखा उसे छपाने की व्यवस्था होनी चाहिए। अब भी प्रचार में कार्यरत हैं। ★

तपोवन म युवको का प्रशिक्षण ७ जून से

देहरादून २० मई। आर्यसमाज देहरादून की ओर से पुरोहित प्रशिक्षण–शिविर रविवार दिनाक ७ जून से १४ जून १९८७ तक वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नाला पानी, देहरादून मे लगाया जा रहा है जिसमें इस जनपद के वे सभी युवक और प्रौढ़ सज्जन भाग ले सकेंगे जिनका आहार–विहार आर्य–सम होगा। प्रशिक्षणार्थियों को एक सप्ताह तक पूरा समय शिविर के अनुशासन मे रहना होगा।

शिविर मे वेद मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण, संन्ध्या, हवन तथा संस्कारो का ज्ञान क्रियात्मक रूप में कराया जाएगा। प्रतिदिन कम से कम दो व्याख्यान अधिकारी विद्वानो द्वारा हुआ करेंगे और प्रश्नोत्तर सत्र भी होगा। जिन प्रवेशार्थियों को शिविर मे लिया जाएगा उनके भोजन, अल्पाहार आदि की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से निःशुल्क होगी।

—देवदत्त बाली प्रधान आर्य उप प्रतिनिधि सभा,
जिला देहरादून

बहराइच गाजीमियां दरगाह शरीफ मेले में आर्य समाज बहराइच द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार शिविर १६ से १८ मई ८७ तक लगाया गया

दरगाह शरीफ बहराइच में सलार मसूद गाजीमियां की दरगाह मेले में वैदिक धर्म का प्रचार शिविर दिनांक १६ मई से १८ मई ८७ तक आर्यसमाज बहराइच की ओर से लगाया गया। आर्य भजनोपदेशकों द्वारा वैदिक धर्म के सिद्धान्तों एवं मान्यताओं का प्रचार कार्य के साथ २ गाजीमियां की कहानी को ऐतिहासिक आधार पर जनता को बताया गया। 'गाजीमियां की पूजा और हिन्दू' नामक पुस्तक भी जनता को बेची व वितरित की गई।

—बरतसिंह मन्त्री आर्यसमाज बहराइच

शुद्धि आन्दोलन

ईसाई पादरियों का प्रलोभन विफल
मुण्डा जाति के ६०० से अधिक ईसाई हिन्दू धर्म में प्रविष्ट

श्री स्वामी धर्मानन्द जी के प्रयत्न और प्रेरणा पर राउरकेला से ७० कि०मी० दूर 'लगालता' ग्राम पंचायत में 'मधुपड़ा' ग्राम (जिला सुन्दरगढ़) में १०–११ मई को यजुर्वेद पारायण महायज्ञ के अवसर पर ६०० से अधिक मुण्डा जाति के लोगों ने ईसाई धर्म छोड़कर अपने प्राचीन हिन्दु (आर्य) धर्म को ग्रहण किया।

११ मई को मुण्डा समाज के प्रमुख एवं हजारो लोगों की उपस्थिति में श्री स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में श्री दिशिकेशन शास्त्री एवं श्री योगेन्द्र शास्त्री ने शुद्धि संस्कार कराया। आशीर्वाद प्रदान करते हुए श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने मुण्डा जाति की वीरता एवं स्वाधीनता संग्राम में अपूर्व योगदान का वर्णन किया।

इन लोगों को तैयार करने मे श्री पं० देशपाल जी एवं श्रीमन्त कुमार शास्त्री का विशेष सहयोग रहा।

दिशिकेशन शास्त्री
उप-कार्यालय मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्कल

वेद प्रचार

फतेहपुर के स्वामी मेधानन्द जी सरस्वती ने गांधीनगर, गुजरात मे पधारकर पौराणिक मन्दिर में (दत्त मन्दिर) एवम् आर्य-परिवारों में दि० ५–५–८७ से १०–५–८७ तक यज्ञ और वेद प्रवचन किये, जिस का प्रभाव धर्मप्रेमियों पर अच्छा पड़ा। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

—महेन्द्र गांधी, गांधीनगर, अहमदाबाद (गुजरात)

विचार-विमर्श

ऋषि दयानन्द का जन्म-दिन : कब और क्यों?

—श्री आदित्य पाल सिंह आर्य
सहायक मंत्री (सिंचाई विभाग) एफ—५/५२ चार इमली भोपाल

[गताङ्क से आगे]

तब क्या मध्यवर्ती इन्हीं तीन दिनों के लिए ऋ० द० ने चौदहवें वर्ष की अवस्था के आरम्भ तक शब्दों का प्रयोग किया हैं, यह विचारणीय हैं ? क्योंकि इस अवस्था में तो यह लिखना अधिक सटीक होता कि "तेरहवें वर्ष की अवस्था पूर्ण होने तक यजुर्वेद की संहिता सम्पूर्ण और कुछ अन्य वेदों का भी पाठ पूरा हो गया था।"

इस प्रकार यह काल्पनिक जन्म-तिथि सर्वथा अस्वाभाविक और त्रुटिपूर्ण सिद्ध हो जाती है। वैसे इसका कोई ऐतिहासिक आधार भी नहीं है।

दूसरी ओर भाद्रपद शुक्ल ९, संवत् १८८१ वि. (२ सितम्बर १८२४ ई०] की तिथि का ऐतिहासिक आधार है। देखिए—

[१] ऋ० द० ने २१ अगस्त १८७९ [भाद्रपद शुक्ल ४] के पत्र में मुंशी समर्थदान को बरेली से लिखा कि "हमारा शरीर बहुत दिनों से बीमार है, अति दुर्बल हो गया है। सो तुम जाकर अमरीका वालों से कहना कि और कुछ न समझें। हमारा शरीर दो दिन से कुछ अच्छा है। जो ऐसा ही रहेगा तो हम उनके पत्रों का उत्तर शीघ्र भेजेंगे और अपने जन्म से लेकर दिनचर्या अभी कुछ संक्षेप से देवनागरी और अंग्रेजी में करवाकर हम उनके पास भेज देंगे।"

छः दिन बाद ऋषि ने २७ अगस्त १८७९ [भाद्रपद शुक्ल ११ को अपने जन्म-दिन के दूसरे दिन क्योंकि भाद्रपद शुक्ल ९ एवं १० की तिथियाँ एक ही दिन २६ अगस्त को पड़ी थीं] को पुनः बरेली से ही मुंशी समर्थदान को लिखा कि" करनैल साहब ने हमको लिखा था कि आप अपना जन्म-चरित्र लिख दीजिए। प्रथम तो हमारा शरीर अच्छा नहीं रहा, इस कारण से नहीं भेज सके। अब दो-चार दिन से कुछ अच्छा है, सो आज तुम्हारे इस पत्र के साथ जन्म-चरित्र लिखकर भेजते हैं।"

इन उल्लेखों से सिद्ध होता है कि ऋषि दयानन्द की अपनी आत्म-कथा के सम्बन्ध में जो अवधारणा "दिनचर्या" के रूप में छः दिन पूर्व में थी, वह छः दिन बाद "जन्म-चरित्र" के रूप में इसलिए बदल गई क्योंकि वह उन्होंने अपने जन्म-दिन पर ही छः पृष्ठों में लिखकर दूसरे दिन भेजी थी। इससे ऋ० द० ने एक प्रकार से परोक्ष रूप से अपनी जन्म-तिथि का स्वयं ही निर्देश कर दिया है।

[२] पं० अखिलानन्द शर्मा कविरत्न के पिता पं० टीकाराम शर्मा ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त और शिष्य थे। हो सकता है कि ऋषि ने स्वयं ही किसी प्रसंग में अपनी जन्म-तिथि पं० टीकाराम शर्मा को बताई हो और अपने पिता से पं० अखिलानन्द शर्मा को विदित हुई हो जिसका उल्लेख उन्होंने अपने प्रसिद्ध "दयानन्द दिग्विजय" काव्यग्रन्थ में इस प्रकार किया है—

मासि भाद्रपदे पक्षे सिते वारे बृहस्पतेः।
नवम्यां मध्यमायाते भास्करेऽपि विहायसः॥
नक्षत्रेति शुभे योगेऽति प्रीतिवर्धने।
चन्द्रान्वयकुराकेन्द्र.बीजकालब्ध भावने॥
विक्रमादित्य नृपतेर्वत्सरे जगतां गुरुः।
विध्वंस जननीं कुक्षेरागतो जगतीतले॥

[३] पं० केशवराम विष्णुराम पण्ड्या ऋषि दयानन्द के समकालीन एक गुजराती भक्त सज्जन थे। उन्होंने ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र लिखा था जो आर्य समाज गणेशगंज, लखनऊ में रखा है। इसमें ऋ० द० की जन्म-तिथि भाद्रपद शुक्ल ९, गुरुवार संवत् १८८१ वि. ही दी हुई है। इसे ऋषि के पत्रों के अन्वेषक स्व० मामराज सिंह जी ने देखा था।

[४] ऋ० द० का अगला जन्म-दिन भाद्रपद शुक्ल ९, संवत् १८८२ वि. [२० सितम्बर १८२५] को मनाया गया था। इस अवसर पर ११६ रुपये का उपहार उनके पिता जी के पास मोरवी नगर के सेठ सुन्दरजी शिवजी ने टंकारा में भेजा था। इसका विवरण उनके कागजों में भाद्रपद शुक्ल १४ को लिखा गया है जिन्हें स्व० पं० श्रीकृष्ण शर्मा, आर्योपदेशक [राजकोट] ने देखा था। इससे भाद्रपद शुक्ल ९ की जन्म-तिथि की पुष्टि होती है। पं० श्रीकृष्ण शर्मा के अनुसार इस दिन बुधवार था जबकि गणना करने पर मंगलवार आता है। ऐसा इसलिए है कि उनके अनुसार ऋषि का जन्म ब्रह्म-मुहूर्त में ३-३० बजे हुआ था और तिथि सूर्योदय से सूर्योदय तक रहती है। अतः २१ सितम्बर १८२५ [बुधवार] को सूर्योदय तक भाद्रपद शुक्ल ९ की ही तिथि रही।

[५] ऋषि दयानन्द के निन्दक जैनी जियालाल ने भी अपनी पुस्तक में भाद्रपद शुक्ल ९, संवत् १८८१ वि. की यही तिथि उनके जन्म दिन के रूप में दी है। इसी प्रकार श्री टहलराम गिरधारी दास ने भी अपनी पुस्तक "विश्वासघात" में ऋ० द० की यही जन्म तिथि दी है और लिखा है कि "जन्मपत्र के अनुसार स्वामी दयानन्द का जन्म भाद्रपद शुक्ल ९, गुरुवार मध्यान्हः काल संवत् १८८१ वि. तदनुसार शाकः संवत् १७४६ अर्थात् ईसवी सन् १८२४ में हुआ था जिसे सब आर्यसमाजियों ने माना है।"

[६] ऋ० द० ने २७ जून १८८० को फर्रुखाबाद में "वेदविद्या" विषय पर अन्तिम व्याख्यान दिया। अपने भाषण के अन्त में उन्होंने वेदभाष्य के कार्य के शीघ्र सम्पादन के लिए प्रबन्ध करने को कहा। इस पर मुंशी हर नारायण ने निवेदन किया कि "अब स्वामी जी की अवस्था ५६ वर्ष की है। शरीर अनित्य है, इसलिए स्वामी जी ने जो ऋग्वेद और यजुर्वेद का भाष्यारम्भ किया है, उसको पूर्ण कराने हेतु तत्काल आर्थिक प्रबन्ध करना चाहिए।" फलस्वरूप १३५० रुपए जमा हो गए। अब यदि ऋषि का जन्म १२ फरवरी १८२५ को हुआ था तो जन्म तिथि से साढ़े चार माह बाद उनकी आयु ५५ वर्ष बताई जानी चाहिए थी, लेकिन ५६ वर्ष इसलिए बताई गई क्योंकि वह भाद्रपद शुक्ल ९, संवत् १८८१ वि. की दृष्टि से मात्र सवा दो माह ही कम थी। उल्लेखनीय है कि यह कथन ऋषि की उपस्थिति में हो किया गया था, अतः उपेक्षणीय नहीं है। इस प्रकार इस जन्म-दिन की ऐतिहासिकता प्रमाणित हो जाती है।

अब घटनाक्रम पर भी एक दृष्टिपात कर लिया जाय—

[शेष पृष्ठ १० पर]

आर्य समाज का वर्तमान स्वरूप

श्री भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर
प्रधान नगर आर्य समाज
१४३०, पं० शिवदीन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर

[गताङ्क से आगे]

आज आर्य समाज मे अनेक व्यक्ति उसके सिद्धान्त, सेवा, त्याग, बलिदान के लिए नहीं, उसकी सम्पत्ति, संस्थाओं के पदों पर अधिकार करने, अपने दोषों को छिपाने तथा स्वार्थसिद्धि के लिये प्रविष्ट हो गये हैं।

आर्य समाज का सदस्य लिखित में यह प्रतिज्ञा करता है कि "मैं अपनी आय का शतांश चन्दा देता रहूँगा", परन्तु बहुत से व्यक्ति इसका पालन नहीं करते।

आर्य जगत् के सर्वोच्च संगठन-सार्वदेशिक सभा का यह दायित्व है कि वह इस नियम का कड़ाई से पालन करावे। इससे जहां आर्य सभासदों, आर्य समाजों तथा प्रतिनिधि सभाओं में भ्रष्टाचरण समाप्त होकर चरित्र बल बढ़ेगा वहां आर्य समाज, प्रान्तीय सभा तथा सार्वदेशिक सभा की आय भी बढ़ेगी, जिससे वैदिक धर्म प्रचार व आर्य समाज का कार्य दस गुणा बढ़ सकेगा।

सार्वदेशिक सभा को चाहिये कि वह आर्य समाज तथा प्रतिनिधि सभा के नियमों में एकरूपता स्थापित कराने तथा आर्य समाजों व प्रतिनिधि सभाओं में चल रहे विवादों को आर्य न्याय सभा में निर्णय करावे, राजकीय न्यायालयों में चल रहे विवादों के कारण आर्य समाज का धन, समय एवं प्रतिष्ठा नष्ट हो रही है। आर्य समाज में सिद्धान्त चरित्र, अनुशासन तथा शक्तिहीनता का एक कारण यह भी है कि आर्य समाज के अनेक सभासद् राजनैतिक पार्टियों में भी हैं, वे अपने स्थान बनाने के लिए सिद्धान्त, आचार-विचार, कार्य तथा नीतियां आर्य समाज के सिद्धान्तों के विपरीत बना लेते हैं। उनसे इस विपरीत आचरण को इंगित कराते रहना होगा। आर्य समाज ने देश की स्वतंत्रता, हैदराबाद में धर्म रक्षा, पंजाब में हिन्दी रक्षा तथा देहली में गोरक्षा आदि अनेक आन्दोलनों में अपनी शक्ति का महान् परिचय दिया है पर अब देश में बढ़ रही भयंकर विनाशकारी प्रवृत्तियों के विरोध में पूर्व जैसे आन्दोलन, त्याग, बलिदान करने का उस पर विशेष दायित्व है। युवा शक्ति को आकृष्ट करने के लिए भी सतत प्रयत्न अपेक्षित है।

आर्य समाज के प्रत्येक सभासद् तथा आर्य नेताओं का विशेष दायित्व है कि वे आर्य समाज को उसके सिद्धान्तों व नियमों के आधार पर सुसंगठित व शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न करें। आज वैदिक सभ्यता, संस्कृति, तथा देश की स्वतंत्रता अखण्डता व एकता घोर संकट में है। इस महान् संकट से देश को आर्य समाज ही बचा सकता है। इसके लिये उसे जन समर्थन व जन शक्ति प्राप्ति करनी होगी और वह तभी प्राप्त हो सकेगी जब आर्य समाज जनता की समस्याओं व दुखदर्द को मिटाने में आगे बढ़े एवं नवयुवकों, विद्यार्थी, श्रमिकों आदि सर्वसाधारण में उनके हित के तथा साथ ही धर्म प्रचार के कार्यक्रम भी रखे। तभी हमारा आर्य जीवन, महर्षि दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थापना तथा महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम आदि महापुरुषों का बलिदान सार्थक हो सकेगा।

[पृष्ठ ६ का शेष]

[१] ऋषि की १३ वर्ष की आयु ६ सितम्बर १८३७ [भाद्रपद शुक्ल ६] को पूरी हो गई और चौदहवें वर्ष की अवस्था के आरम्भ तक अर्थात् भाद्रपद शुक्ल ६ से फाल्गुन कृष्ण १३ तक के साढ़े पांच महीनों में यजुर्वेद संहिता सम्पूर्ण और कुछ अन्य वेदों का पाठ पूरा हो गया था। फिर १३॥ वर्ष की अवस्था में शिवरात्रि का व्रत फाल्गुन कृष्ण १४ संवत् १८९४ वि. [२४ फरवरी १८३८ ई०] को रखा। इस प्रकार उनका पूर्वोक्त उल्लेख सार्थक हो जाता है।

[२] २१ वर्ष की अवस्था भाद्रपद शुक्ल ६, संवत् १९०२ वि॰ [११ सितम्बर १८४५ ई०] को पूरी हो गई। इससे पूर्व विवाह की तय्यारी एक माह से कभी जून–जुलाई १८४५ तक हो गई थी किन्तु "अज्ञात जीवनी" के अनुसार उन्होंने लड़की को देखकर इस प्रसंग को इस बार भी टलवा दिया था और यह विचार कर कि आगे भी विवाह के लिए आग्रह होगा हो, उन्होंने आश्विन माह के कृष्णपक्ष [सितम्बर १८४५ के उत्तरार्द्ध] में गृह त्याग कर दिया। गृह त्याग के ३–४ दिन बाद ही वे सायला पहुंच गए और लगभग एक माह तक वहीं रहे। बाद में कार्तिक मास के कृष्णपक्ष में कोठकांगड़ पहुंचे जहां उनको जान-पहचान वाला एक बैरागी मिला। यहां से वे कार्तिक पूर्णिमा पर सिद्धपुर में लगने वाले मेले में पहुंच गए जो १४ नवम्बर १८४५ [शुक्रवार] को था। उधर उस बैरागी से सूचना पाकर उनके पिता जी भी सिपाहियों सहित उन्हें पकड़ने के लिए सिद्धपुर के मेले में गृह त्याग से दो माह के भीतर ही पहुंच गए। इस प्रसंग में पूना–प्रवचन में जो कोठकांगड़ में तीन माह रहने का उल्लेख है, वह वस्तुतः व्यासाश्रम का है, ऐसा हमने अपने द्वारा सम्पादनाधीन ऋषि दयानन्द के "अपना जन्म-चरित्र" में सिद्ध किया है। विस्तारभय से उसका विवरण यहां दे पाना सम्भव नहीं है। इस प्रकार ऋ० दयानन्द ने गृह त्याग संवत् १९०२ वि. में किया था, १९०३ वि. में नहीं, जैसा कि स्वामी सत्यानन्द आदि ने स्वीकार किया है और आर्य समाज विधान सरणी, कलकत्ता में शिलालेख लगा है। इस विधि में २२ वर्ष जोड़ देने की वजह से ही संवत् १९०३ आ गया था, जबकि २२वें वर्ष में भी संवत् वही रहना था जो २१ वर्ष की आयु पूर्ण होने के दिन था। इस विधि से ऋषि के जीवन की अन्य घटनाओं की भी संगति बैठ जाती है जो उनकी आत्मकथा, पूना प्रवचन और अज्ञात जीवनी में वर्णित हैं। विस्तारभय से इनका भी विवरण देना यहां सम्भव नहीं है। पाठकगण हमारी पुस्तक की प्रतीक्षा करें।

इस प्रकार यह सुनिश्चित हो जाता है कि ऋषि दयानन्द का जन्म भाद्रपद शुक्ल ७, संवत् १८८१ वि. गुरुवार दिनांक २ सितम्बर १८२४ ई० को ही हुआ था। और संयोग ही है कि इस वर्ष पुनः इन दोनों [तिथि और तिथियों का संयोग आगामी २ सितम्बर १९८७ बुधवार [भाद्रपद शुक्ल ६, को हो रहा है। अतः आर्य जगत् इस बार धूम-धाम से ऋषि का जन्म दिवस वेद-दिवस के रूप में उक्त तिथि पर मनाए और इस दिन का शासकीय अवकाश घोषित कराए।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कन्हेड़ा तुगलकपुर (मुजफ्फर नगर) का वार्षिकोत्सव दिनांक २९ से ३१ मई तक मनाया गया।

—आर्य समाज कस्बा सोहन (ईट गांव) फतेहपुर का ५४ वां वार्षिकोत्सव २३ से २५ मई ८७ तक सम्पन्न हुआ।

षड् रिपु दमन

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् ।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र ॥

—ऋ० ७-१०४-२२

(चतुष्पदी)

त्याग उल्लू का चलन श्वान भेड़िये का चलन,
कोक का आचरण त्याग अरे मानव बन !
बाज की चाल को तज गीध के आचार को तज,
राक्षस वृत्ति मसल पत्थर बन इन्द्रात्मन् ।

(गीतिका)

पशुता को तज नर चाल रे मानवता को अपनाले ।
उल्लूका आचरण त्याग मत प्रकाश से दूर भाग रे ।
है मोह असुर विकराल रे ! इससे निज वृत्ति हटाले ।
क्रूर भेड़ियापन जीवन का हिंसा भाव त्याग दे मन का ।
तज प्रबल क्रोध की ज्वाला रे बढ़ता चल होश संभाल ।

★ ★ ★

बन न चिड़े का अनुगामी तू काम असुर प्रेरित कामी तू ।
है कुटिल काम का जाल रे इसमे मत फंस मतवाले ।

★ ★ ★

द्रोह त्याग दे श्वान न बन तू, मत मत्सर कर आजीवन तू ।
मत द्वेष घृणा को पाल रे ! तू मन में प्यार बसा ले ।

★ ★ ★

तू सुपर्ण व्यवहार त्याग दे अहंकार आधार त्याग दे ।
अन्तर से गर्व निकालरे इसने कितने घर घाले ।
तक न गीध बन तू पर धन को,रोक लोभ लोलुपता निज मनको ।
शत्रुघ्न पहन जय माल रे, पशुताओ पर जय पाले ।

★ ★ ★

अरे इन्द्रियों का बन स्वामी बन न इन्द्रियों का अनुगामी ।
षड् रिपुओं का जंजालरे कर दमन इन्द्र बल वाले ।

★ ★ ★

ढेला जैसे पत्थर द्वारा चूर चूर हो जाता सारा ।
यों असुर मसल सब डाल रे निज जीवन सफल बनाले रे ।

—रामनिवास विद्यार्थी सुन्दर सदन फजलपुर, सुन्दरनगर (मेरठ)

आर्य भूमि की गरिमा के संवाहक

इस आर्य भूमि की गरिमा के संवाहक,
प्रलयङ्कर बन, कम्पित अराति कर पाओ ।

क्यों भूल रहे हो वीर प्रसविनी जननी,
भारती श्रेष्ठतम निखिल विश्व है कहता ।
फिर भी कापुरुषों सा उच्छृङ्खल जीवन,
बन सिंह कुक्कुरो की बातें है सहता ।
अलगाववाद की ज्वालायें हैं बढ़ती,
बन वेग प्रबलतम शमित जिन्हें कर पाओ ।

चल रहा कुचक्रों का क्रम है यह घातक,
खोखली राष्ट्र की नींव हुई है जाती ।
था जहां बसेरा सोने की चिड़ियों का,
आतङ्कवाद की लहर वहां छवि पाती ।
तुम राम कृष्ण अर्जुन के वंशज समझो,
इस दैत्य राज्य को ध्वस्त करो ! हर्षाओ ।

बादल इस्लाम स्वप्न पाने को आकुलि,
कल्पना व्योम में रह रह क्यों मडराते ?
क्यो खण्ड खण्ड होती जाती पावन भू,
तुम वीरोचित जो कर्म, सभी बिसराते ।
कर रही निरंकुशता है नर्तन प्रतिपल,
सबलो होकर धर्मांकुश जहां लगाओ ।

नेताओ के चर्मों को धारण करके,
अग्रणी किन्तु क्यो कभी न वे हो पाते ?
सभ्यता, धर्म, संस्कृति उपहासित करके,
पंकिल जल से ही मुख प्रतिपल धो पाते ।
लोकाराधन क. भाव हुआ निर्वासित,
बन ज्योतिर्मय ! जन मन में वह विकसाओ ।

संगठन राष्ट्र की दृढ़ता का परिचायक,
आपस की प्राचीरो को यही गिराता ।
वैदिक पथ पर चलने वाला जो राही,
मानवता का जग को है सूत्र सिखाता ।
क्यो भटक रहे ? इतिहास उठाकर देखो,
शिव संकल्पों को आकृतिमय रच पाओ ।

—डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी, बरेली

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित आर्ष ग्रन्थ अति अल्प मूल्य पर उपलब्ध

महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा द्वारा इस वर्ष वेद प्रचार एवं प्रसार के अपने सघन कार्यक्रम के अन्तर्गत महर्षि के साहित्य का पूरा सैट, जिसका विक्रय मूल्य लगभग १०००) रु० है, मात्र ६००) रुपयों में उपलब्ध कराया जा रहा है। समस्त समाजें, स्कूल, गुरुकुल, कालेज, विश्वविद्यालय, पुस्तक विक्रेता तथा स्वाध्याय शील आर्यजन इस अपूर्व सुविधा का लाभ उठावें ।

—आर्य समाज भीकमपुर बैनी (बदायूं) का वार्षिकोत्सव दिनांक ८, ९, १० जून १९८७ को भव्य समारोहपूर्वक आयोजित है ।

मन्त्री—आर्यसमाज भीकमपुर बैनी

गुरुकुल-वृन्दावन समाचार

आयुर्वेद शिरोमणि परीक्षाएँ—२१ मई सन् ८७ से प्रारम्भ होंगी ।

नवीन शिक्षा—१ जुलाई सन् ८७ से ही नवीन बालकों का प्रवेश प्रारम्भ हो जावेगा । प्रवेश के लिए निम्न पते से ज्ञात करलें ।

मुख्याधिष्ठाता
कीर्तिपाल शर्मा
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, (मथुरा)

आर्यमित्र साप्ताहिक
[?]-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६१
पंजीकरण सं० एल. डब्लू/एन. पी. ७२
ज्येष्ठ शुक्ल १०
रविवार, ७ जून १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

१२९४६—श्री पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

हमारी डाक

[इसके अन्तर्गत प्रकाशित सामग्री से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।]

'आर्यमित्र' के पाठको को याद होगा कि गत कई वर्ष पहले आचार्य भगवान देव ने महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाने की घोषणा की थी। उस समय आर्य जगत् मे आचार्य जी को इस घोषणा की तीव्र प्रतिक्रिया हुई थी एवं उन्हें कटु आलोचना का शिकार होना पड़ा था। इस घोषणा के काफी समय बाद तक जब उनका फिल्म से सम्बन्धित कोई कदम हमें दृष्टिगत नहीं हुआ तो हमारी यह धारणा बनी कि शायद आर्यजगत द्वारा की गई प्रतिक्रिया एवं आलोचना से भगवानदेव जी की आंखों पर पड़ा अज्ञान का पर्दा हट गया है एतएव उन्होने फिल्म बनाने का विचार त्याग दिया होगा।

अभी हाल मे ही मुझे आचार्य जी द्वारा प्रकाशित व सम्पादित उनकी मासिक पत्रिका 'योग मन्दिर' का फरवरी अङ्क देखने को मिला। पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर ही आचार्य जी की घोषणा थी कि वे जल्दी ही महर्षि दयानन्द पर पूर्व घोषित फिल्म के दृश्य फिल्माने जा रहे हैं। पत्रिका में अन्यत्र आचार्य जी द्वारा स्वामी जी का स्वांग भरे एक भड़कदार चित्र भी देखने को मिला। यह सब देख मेरी आत्मा रो उठी। क्या हो गया है आचार्य जी को? पहले हो क्या वे कम निन्दनीय काम कर रहे हैं? योग के नाम पर भोग का प्रचार कर रहे हैं। उनकी पत्रिका के प्रत्येक अङ्क मे श्रीमती इन्दिरा गांधी व राजीव गांधी के बड़े बड़े आकर्षक चित्र होते हैं। कोई इनसे पूछे, भले आदमी! क्या ये दोनों भी योगी हैं? वास्तविक योगी तो इन महाशय की पत्रिका मे वर्णित तथा कथित योगीगणो व योगनियों मे कोई भी नहीं है। मगर कमाल देखिए, आचार्य जी उन्हें योगर्षि व ब्रह्मर्षि की उपाधियां बांट रहे हैं। लगता है जैसे इन्हें ये उपाधियां कहीं से थोक में प्राप्त हो गई हैं। आचार्य जी के एक महत्वपूर्ण काम से और आपका परिचय करवा दूं—ये भारत मे बैठे-बैठे ही पाकिस्तान स्थित सिन्ध की आजादी के लिए अभियान चला रहे हैं। कहते हैं—"सिन्ध मेरी जन्मभूमि है, उसकी मुक्ति मेरे जीवन का लक्ष्य है।" लगता है ये अपने योगबल द्वारा यहां से ही सिन्ध को स्वतन्त्र करा देंगे? आचार्य जी! खूब योग की उपाधियां बांटिए, योग विश्वविद्यालय खोलिए व सिन्ध को भी शौक से मुक्त कराइए, परन्तु आर्यसमाज पर दया कीजिए, दयानन्द पर तरस खाइए, स्वामी जी पर फिल्म मत बनाइए।

आर्य समाज के अधिकारियों को मेरा परामर्श है कि यदि उनके जी दिल में जरा भी ऋषि-भक्ति है, तो वे आचार्य भगवानदेव के इस कुकर्म के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करें। जैसे भी हो सके उन्हें स्वामी दयानन्द का स्वांग भरने से रोकें, भले ही इसके लिए आन्दोलन करना पड़े या जेलें भरनी पड़ें। यदि आप सोते रहे एवं आचार्य जी अपनी घृणित योजना में सफल हो गए ऋषि की आत्मा तुम्हे कभी क्षमा नहीं करेगी।

अभी समय है, जागिए! मेरी समय रहते आपको चेतावनी है।

—वीरेन्द्र कुमार आर्य सम्पादक-'आर्य पुनर्गठन', अजमेर (राज०)

अमृत वर्षा

आर्य्यावर्त

यह आर्य्यावर्त्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है क्योंकि यही सुवर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसीलिए सृष्टि की आदि में आर्य लोग इसी देश में आकर बसे। आर्य नाम उत्तम पुरुषों का है और आर्यों से भिन्न मनुष्यों का नाम दस्यु है। जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं। पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठी है परन्तु आर्य्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसके लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

श्रीमद्दयानन्द बाल सदन मोतीनगर लखनऊ द्वारा जीर्ण खण्डों के पुनर्निर्माण हेतु सहायता की अपील

श्रीमद्दयानन्द बाल सदन मोती नगर लखनऊ सन् १९१५ से अनाथ बालक-बालिकाओं की रक्षा में संलग्न है। इस अवधि में संस्था के माध्यम से अनेकों कन्यायें सुगृहिणी बनकर अपने परिवार बसा रही हैं। अनेकों बालक राष्ट्र के उपयोगी नागरिक बनकर सम्मानपूर्वक समाज में जीवन बिता रहे है।

इस समय पुराने भवन के कुछ भाग जीर्ण हो गये हैं। उनकी मरम्मत की नितान्त आवश्यकता है निश्चय किया गया है कि मरम्मत योग्य खण्डो मे लिन्टर डाला जाये जिसके लिए भवन निर्माण सामग्री की अत्यधिक आवश्यकता है, दानी महानुभावों से इस जीर्णोद्धार कार्य को अपने सबल कन्धों पर लेकर पूर्ण कराने की विनम्र अपील है।

—अर्जुनदेव महाता प्रधान

स्वत्वाधिकारणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८५

आषाढ कृष्ण ३ रविवार संवत २०४४ वि० दिनांक १४ जून १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल—

विक्रमादित्य 'बसन्त'
वेद वारिधि

आचार्य रमेशचन्द्र एम० ए०

★

आचार्य बलवन्त अवस्थी

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड

वर्ष	९०
अङ्क	२३

मेरठ में दंगा पीड़ित गरीब जनता की सहायता

प० इन्द्रराज जी सभा प्रधान द्वारा सराहनीय कार्य

मेरठ—आर्यसमाज द्वारा दुःखी-पीड़ित मानवता की रक्षा हेतु प० इन्द्रराज जी सभा प्रधान के नेतृत्व में सहायता-कार्य बड़ी मात्रा में किया जा रहा है। नगर की गली-कूचों में श्री इन्द्रराज जी शान्ति मार्च के अभियान का भी नेतृत्व कर परस्पर सद्भावना-यात्राएं चला रहे हैं।

धनी-मानी व्यक्तियों से धन-एकत्र करके सामान को जुटाना और गरीब त्रस्त जनता में वितरित करना उनका नित्य का कार्य है। आर्य समाज के कार्यकर्ता अपनी-अपनी आर्य समाजों द्वारा सम्मान के थैले भरकर दी गई रसीदों के आधार पर आवश्यक सामग्री वितरित कर रहे हैं।

प० इन्द्रराज जी अपनी जान जोखिम में डालकर भी अपने कर्त्तव्य का यथोचित पालन कर रहे हैं। इस राहत कार्य की सभी क्षेत्रों में चर्चा है।

धनी-मानी सज्जन इस राहत कार्य में प० इन्द्रराज जी का पूर्ण सहयोग करें।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

सार्वदेशिक प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती मेरठ की दुःखी जनता के मध्य

मेरठ—माननीय स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी महाराज मेरठ के दंगा ग्रस्त क्षेत्रों में दिनांक ७ जून को तीसरी बार पधारे। आपने जनता की आह भरी आवाज को श्री राजीव गांधी प्रधान मन्त्री भारत तक भी पहुंचाई है। अपने भ्रमण के समय श्री इन्द्रराज जी के सहायता कार्य का भी निरीक्षण कर सन्तोष व्यक्त किया और उनके द्वारा किये जा रहे कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

श्री स्वामी जी ने इस समय अपने वक्तव्य में सरकार से मांग की है कि—

हिन्दू हितों की रक्षार्थ उनके जान-माल की रक्षा की जाय तथा क्षेत्र से पी० ए० सी० न हटाई जाय। साथ ही जिनकी जान-माल की हानि हुई है उन्हें यथाशीघ्र आर्थिक सहायता पहुंचाई जाय। आपने न्यायिक जांच की मांग करके जिन जिन क्षेत्रों में अरबों की हानि हुई है उन्हें मुआवजा दिलाने की भी सरकार से मांग की है। साथ ही उन्होंने प्रधान मन्त्री भारत सरकार से अपील की है कि यदि सख्ती से इन दमनकारी तत्वों को नहीं दबाया गया तो सन ४७ से पूर्व की भांति भारत में अशांति व असुरक्षा फैलाकर विघटनकारी तत्व देश को विघटित करने में समर्थ होंगे और भारत सरकार को पलट कर पाक का झण्डा लहरायेंगे।

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ।।
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—ज्येष्ठ शुक्ल १० सम्वत् २०४४ रविवार १४ जून १९८७ दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:

वर्त्तमान समय में स्वदेश भारत जिन कंटकाकीर्ण परिस्थितियों से गुजर रहा है, उन पर गम्भीरता से विचार करना और अपना कर्त्तव्य निर्धारित करना प्रत्येक राष्ट्र प्रेमी के लिए अत्यावश्यक हो गया है। देश की अखण्डता और एकता तो खतरे में है ही, उसकी स्वाधीनता पर भी संकट के बादल मडरा रहे हैं। यह सर्व विदित है कि अनेक विदेशी शक्तियां चाहे बाहर से मैत्री के कितने ही आश्वासन दें, उनकी नीयत सर्वथा संदेह जनक है। चीन का अरुणाञ्चल प्रदेश मे विशाल सेना का जमाव करना, पाकिस्तान का अणुबम बनाने के कार्यक्रम को निरन्तर तत्परता से आगे बढ़ाना आधुनिक "शस्त्रो से सेना को सतत सुसज्जित करते जाना, अमरीका का पाकिस्तान को नवीनतम तकनीकी के युद्ध विमान देना और यहां तक कि सिंहलद्वीपकी भी लङ्का सरकार का तामिलों पर घोर अत्याचार करना, भारत के शान्ति प्रस्तावों को ठुकराना और मानवता के आधार पर 'रेडक्रास' के माध्यम से खाद्यान्न तथा चिकित्सा सामग्री भेजे जाने पर, नौकाओं को डुबाने की धमकी और सैन्य बल का प्रयोग करने के आदेश इस बात के स्पष्ट संकेत हैं कि जिन निकटवर्ती देशो से भारत ने सदैव मधुर संबंध बनाये रखने में विश्वास किया है, उन्होने भारत की शाति नीति को उसकी दुर्बलता समझ कर, उसका प्रत्युत्तर अपनी ऐसी गतिविधियों से दिया है जिनके कारण उनपर विश्वास नहीं किया जा सकता।

इन बाह्य स्थितियों के साथ-साथ भीतर की स्थितियां भी अत्यन्त भीषण भयात्मक है। पञ्जाब का आतङ्कवाद राष्ट्रपति शासन होने पर भी अभी नियन्त्रित नहीं हो पाया है। गोरखा लैण्ड की मांग पृथक रूपसे सिर उठाए हुए है। पूर्वाञ्चल प्रदेशो में हिंसक घटनाएं घटित हो रही हैं। मेरठ दिल्ली और गुजरात के साम्प्रदायिक दंगे भी इस बात के द्योतक हैं कि ३९ वर्ष की स्वाधीनता में भी राष्ट्रीयता की देशवासियो में जागृति नहीं हो पाई है। सेना का काम देश की रक्षा करना है विशेष रूप से बाह्य शत्रुओं पर, जब सेना को देश के भीतरी दङ्गों को नियन्त्रण करने के लिए लगाया जाए तो 'इस बात पर विचार करना होगा कि जब देश की सेना को बाहरके शत्रुओं से जूझना पड़े तो भीतरी दंगों को वह कैसे नियन्त्रित कर पायेगी जब पुलिस ऐसा करने में असमर्थ हो जाए ?

यह निर्विवाद है कि भीतरी शत्रुओं की अपेक्षा आन्तिरक शत्रु अधिक भयानक होते है। आज स्वदेश में सर्वत्र जातिवाद, प्रतिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद आदि का बोल बाला है। ३९ वर्ष की दीर्घ अवधि में अब तक हिन्दी को व्यवहारिक रूप मे राष्ट्रभाषा के रूप में न प्रयोग कर सकना, देशके दक्षिणी राज्यों द्वारा उसका विरोध करना, देश के नेताओं द्वारा अंग्रेजी को प्रमुख मान्यता देना, नवीन शिक्षा पद्धतिसे देश की समस्त भाषाओ की जननी देवभाषा संस्कृत को समाप्त कर देना और इन सबके फल स्वरूप स्थान स्थान पर देशवासियों का विरोध प्रदर्शन इस बात का स्पष्ट परिचायक है कि एक राष्ट्र के नागरिक अभी तक मन वाणी और कर्म से एक रूपा नहीं हो सके हैं।

देश के विघटन के लिए किए गए समस्त उपद्रवों को शान्त करने के लिए आज पुलिस और सेना के बल का प्रयोग किया जा रहा है। अंग्रेजी सरकार द्वारा जो लाठी और गोली का प्रयोग किया जाता था और जिसकी तीव्र निन्दा की जाती थी, आज उसकी सीमा कितनी व्यापक गई है, यह सबको विदित है। इन बाह्योपचारो से अस्थायी शांति तो हो सकती है पर चिर स्थायी शांति के लिए तो राष्ट्र वासियों के दृष्टि कोण को परिवर्तित करना होगा। आज इस राष्ट्र के कतिपय वासी जन इस राष्ट्र में रहते हुए भी यहां की धरती, नदियों तीर्थों और महामपुरुषों के साथ अपना सम्बन्ध न जोड़ कर विदेश के इन तत्वों से अपना सम्बन्ध जोड़ कर उनको अधिक प्रिय मानें और प्राथमिकता दें तो उनमे राष्ट्र भक्ति संजोने के लिए व्यवहारिक उपायो को प्रयोग में लाना पड़ेगा।

यह सर्व विदित है कि 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' जिसके हाथ में आज देश की सत्ता है, उसकी स्थापना श्री "ह्यूम" द्वारा आर्यसमाज की स्थापना के बहुत वर्षों बाद, आर्य समाज के बढ़ते हुए देश व्यापी प्रभाव को रोकने के उद्देश्य से की गई थी। यदि इस संस्था की स्थापना न की गई होती तो यह निश्चित था कि आज आर्यों के हाथ में देश का शासन होता। भाषा वाद के आधार पर देशके राज्यों का गठन कदापि न होता। शासन की सुविधा के दृष्टिकोण से पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण और मध्य, ऐसे पांच राज्य होते। संस्कृत सम्पर्क भाषा होती और वेद के आधार पर राष्ट्रवासियों का उचित मार्ग, प्रदर्शन होता और आज की विषम परिस्थितियों से देश बचा होता।

अब भी समय है कि हमारे देश के कर्णधार वेद के महत्व को समझें क्योंकि वेद ही परमात्मा का वह दिव्य काव्य है जो सम्प्रदाय व व जातिवाद और भाषावाद से सर्वथा परे है और 'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्' (ऋ १०।५३।६) के अनुसार जो मनुष्य को मनुष्य बनने की और दिव्यताओं से पूर्ण देव बनने की प्रेरणा देता है और राष्ट्रवासियों के हृदय मे वास्तविक राष्ट्रीयता को संजोता है। इस सत्य के समर्थन में यहां एक वेद मन्त्र प्रस्तुत किया जाता है यद्यपि वेद राष्ट्रीयता के मन्त्रों से भरा पड़ा है।

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं : नानाधर्माणं
पृथिवीं यथौकसम्। सहस्त्रं धारा द्रविणस्य
मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ।।

(ऋषि—अथर्वा देवता—भूमि) अ० १२।१।४५

अथर्व वेद के भूमि सूक्त का यह मन्त्र कहता है कि (विवाचसम्) विविध बोलियां बोलने वाले (नाना धर्माणम्) नाना धर्मों का पालन करने वाले (जनम्) जन समूह को (यथा ओकसम् पृथिवी। गृह के समान पृथिवी (ध्रुवा—इव धेनु:,अन् अप+स्फुरन्ती) निश्चला दुधारू गौ की भांति (मे) मुझ मानव प्रजा के लिए (द्रविणस्य सहस्त्रम् धारा दुहम्) ऐश्वर्य की असंख्य धारायें दुहे।

भारत की पावन भूमि हमारी माता है। अब इस पर वास करने वाले समस्त राष्ट्र वासी चाहे वे कोई भी भाषा बोलते हों, किसी भी मत मतान्तर से सम्बन्धित हों, यदि वे इसे एक बड़ा घर मान कर इसे पूजनीय मानें और असंख्य ऐश्वर्य वाली भूमि माता के सच्चे सुपुत्र और सुपत्रियां बनकर संकीर्ण दृष्टिकोण को त्याग कर विशाल आकांक्षायें अपनायें तो सकलवाद विवाद शांत हो सकते है और सम्पूर्ण राष्ट्र सुशक्त और सुदृढ़ हो सकता है।

आज राष्ट्र की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि "वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता: (यजु० ९।२३) अर्थात् हम राष्ट्रमें जागरूक होकर ही नेता बने और वेद की शिक्षाओं का पारिवारिक सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर इतना व्यापक प्रचार करें कि राष्ट्रवासियों के देखने सुनने और समझने के दृष्टिकोण सर्वथा बदल जायें और यह राष्ट्र एक सशक्त सूत्र में आबद्ध होकर पुन: विश्व का गुरु बन जाए।

'वसन्त'

बाल जगत

'अन्धविश्वासी मत बनो'

(श्री अमित प्रताप नारायण सिंह, ग्राम हाटा, पोस्ट नवीलो देवरिया)

ऋतस्य पथा प्रेत ।
सत्य के पथ पर चलो ।। (यजु०-७/४५)
ऋतं ःचे नमसा ।
मै नमन के साथ शिष्टतापूर्वक ।। ऋग्वेद (४/५/११)
शालीनता के साथ सत्य बोलता हूं ।

मित्रो, सत्यवादी बनों । सत से बढ़कर दूसरा धर्म नहीं । मन, वचन और कर्म से सत्य का आचरण करना चाहिए । तुम स्वयं सत्य बोल सकते हो पर बुद्धि द्वारा सत्य और असत्य की पहच न करके सत्य के अनुसार चलना और आचरण करना भी जीवन क सफलता के लिए आवश्यक है ।

सत्य, सत्य तो हम उसे कहते है, जो कानों से जैसा सुना उसको उसी तरह कहना, जो कुछ अपनी आंखो से देखा वर्णन कर देना । यही तो सत्य है । सत्य दृष्टि का प्रतिबिम्ब है । ज्ञान की प्रतिलिपि है । आत्मा की वाणी है और बुद्धि ईश्वर प्रदत्त आत्मा का दीपक । इस दीपक के प्रकाश को धुंधला न, होने देना, इस प्रकाश की परिधि से दूर न जाना । बुद्धि द्वारा सत्य की दीप्ति फैलाओ । बुद्धि के बिना मनुष्य अन्धविश्वास में फंस जाएगा । हमेशा बुद्धि सम्मत कार्य करो । संस्कृत के एक कवि ने बुद्धि की प्रशंसा करते हुए कहा है—

बुद्धिर्वर सदा लोके धनमान सुखैषिणाम ।
बुद्धिहीनः परं क्लेशं प्राप्नुवन्ति हिमानवाः ।।

अर्थात धन, यश और सुख की इच्छा करने वालों के लिये संसार में बुद्धि ही केवल श्रेष्ठ वस्तु है । बुद्धिहीन मनुष्य महान कष्ट उठाते हैं । इसीलिए गायत्री मन्त्र में कहा गया है , "धियो योनः-प्रचोद त्" वह जगदीश्वर हमारी बुद्धियों को उत्तम प्रेरणा करें । बुद्धि के बिना फैला हुआ अन्धविश्वास कैसे मनुष्यों को मार्ग भ्रष्ट करता है देखिए—

एक आदमी चोरी करता पकड़ा गया ौर न्यायाधीश ने उसकी नाक काटने की सजा दी । जब उसकी नाक काटी गई तब वह धूर्त नाचने, गाने और हंसने लगा । लोगों ने पूंछा, कि तू क्यों हंसता है ? उसने कहा, क्यों, क्या बात है ? उसने कहा कि मेरे सामने साक्षात चतुर्भुज नारायण खड़े है । लोगों ने कहा, हमको क्यों नही उनका दर्शन होता ? वह बोला, नाक की आड़ हो रही है । यदि नाक कटा डालो तो नारायण दीखने लगेंगे । उनमें से किसी मूर्ख ने सोचा कि भले ही नाक कट जाय, पर भगवान का दर्शन हो जाय तो इससे बढ़ कर सौभाग्य क्या हो सकता है । उसने कहा, मेरी भी नाक काटो और नारायण दिखलाओ । उसने उसकी नाक काट दी और कान में धीरे से कहा कि, अब नाक तो कट हो गयो है, नारायण क्या दीखेंगे तुम भी मेरी तरह नाचो, गाओ । वह भी वैसे ही कूदने लगा । इसी प्रकार एक के बाद दूसरे नाक कटवाते गये, और हंसने लगे । धीरे-धीरे उनकी संख्या हजारों की हो गई और उन्होने अपने सम्प्रदाय का नाम रखा 'नारायणदर्शी ।' जब वहां के राजा ने यह सुना तो उसने भी मुखिया को बुलाकर कहा, यदि तुम्हें नारायण दीखता है । तो हमें क्यो नहीं दीखता ? वह बोला, जब नाक कट जायेगी तो वह दीखने लगेगा । राजा भी उसके चक्कर मे आ गया । ज्योतिषीने कहा, महाराज दशमी के दिन प्रातः आठ बजे नाक कटवाने का मुहूर्त है । धन्य थे, ज्योतिषी महाराज भी कि उनके पत्रे मे नाक कटवाने का भी मुहूर्त निकल आया । यह सब बातें एक वृद्ध दीवान को न जंची । उस वृद्ध ने वर्तमान दीवान से कहा कि वे धूर्त है । तू मुझको राजा के पास ले चल । वहां उसने राजा से कहा, 'सुनिये, महाराज ! ऐसी शीघ्रता मे बिना सोचे-समझे काम नहीं करना चाहिए । राजा ने कहा, क्या ये हजारों मनुष्य झूठ बोल रहे है ? दीवान बोला, बुद्धि से परीक्षा किए बिना, सत्या-सत्य का निर्णय नहीं किया जा सकता । मै वृद्ध हूं । घर बैठा रहता हूं और जीवन भी थोड़े दिन का है । इसीलिए मै पहले कर लूं । राजा मान गया । उसके साथ दो हजार सैनिक भी कर दिए गए । उनके महन्त जिसकी सबसे पहले नाक कटी थी, से राजा ने कहा, आज हमारे दीवान जी को नारायण का दर्शन कराओ । उसने कहा अच्छा । "यथा समय पैना चाकू से नाक काटकर थालीमें डाल दी और दीवान जी की नाक से रूधिर की धार छूटने लगी । उनका मुख कष्ट से मलिन हो गया ।

अब उस महन्त ने उसके कान के पास जाकर मन्त्रोंपदेश किया 'महाराज' कटी हुई नाक अब वापस आने की नही, अतः ऐसा ही करो । जिससे लोग हसी न करें । दीवान जी अंगोछा ले, नाक की आड़ में लगा राजा के पास पहुंचे, राजा के कान के पास जाकर कहा—"कुछ भी नहीं दीखता ।" वृथा इस दुष्ट ने हजारों मनुष्यो की नाक कटाई । इसको पकड़वा कर कठिन दण्ड देना चाहिये । सुनकर राजा ने सब नकटो को आजीवन कारावास की सजा दे दी और उस तथा कथित महात्मा को गधे पर चढ़ा कर, दुर्दशा के साथ मरवा दिया ।

हमारा देश अन्धविश्वासों मे लिप्त है । आये दिन एक न एक अन्धविश्वासों की खोज होती आ रही है और सभी लकीर के फकीर बनते जा रहें हैं । अन्धविश्वास, अर्थात, असत्य, पर विश्वास करना और असत्य तो महापाप है । इसलिए अन्धविश्वासी लोग महापाप में फंसते जा रहे हैं । भला उनका कैसे उद्धार होगा । थोड़े से चमत्कारों के चक्कर में लोग फंस जाते हैं । आज कल इस देश में भगवानों, बाबाओं और ईश्वरों की भरमार हो गई है । सन्तोषी माता के नाम पर पूजायें चल रही है और बड़े-से-बड़े शिक्षित लोग भी उससे अपनी मनोकामनायें पूरी कराने की आशा कर रहे हैं । जयगुरु देव के नाम की धूम भी फैल रहे है, आनन्द मार्गी ने, जो एक जादू के खेल से अधिक नहीं अपना प्रभाव बड़े-बड़े मन्त्र मन्त्रियों, अधिकारियों, प्रोफेसरों, इन्जीनियरों और डाक्टरों पर भी डाल रखा है । साईं बाबा ने शहद और राख के खेल दिखाये । महेश योगीके नाम पर भोग का मार्ग प्रशस्त हुआ ।

हिन्दू समाज तो अन्धविश्वासों की खान है । हिन्दू समाज में जो श्राद्ध कर्म की परम्परा है, जिससे तो हिन्दू समाज में आर्थिक विपन्नता दिनों-दिन बढ़ती जा रही है । पुरोहित को श्राद्ध कर्म के अवसर पर चारपाई, तोशक, बिस्तर, लोटा, थाली, बटुला, बटुली, धन, दौलत, यहां तक की शराब की बोतलें भी दी जाती है । हालांकि मृतक को ये मिलना नहीं है । परन्तु इस कर्म को सम्पन्न करने में सम्बन्धित परिवार

(शेष पृष्ठ ४ पर)

हमारी डाक

बहुसंख्यक हिन्दू समाज को समाप्त करने के लिये नयी शिक्षानीति से संस्कृत को हटाकर उसके हितो पर कुठाराघात

मै आपके लोक प्रिय पत्र द्वारा सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहता हूं कि नयी शिक्षा नीति में जो हमारी सरकार ने बनायी उस में संस्कृत भाषा का अध्ययन शामिल नही किया गया है यह एक प्रकार से हिन्दू समाज के हितों पर कुठाराघात ही कहा जा सकता है। से तो हिन्दू हितो पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के इन ४० सालों मे ऐसा कौन सा कुठाराघात नहीं जो न किया गया हो किन्तु यह कुठाराघात सब से अधिक खतरनाक और भयंकर है। अतः इस पर सरकार पुर्नविचार कर संस्कृत को जो विश्व की सब से अधिक प्राचीन भाषा है और विश्व के भाषाओं की जननी है उसका अध्ययन नयी शिक्षानीति में अनिवार्य अंग बनाया जाये।

स्वतन्त्रता प्रप्ति के इनसालों के बाद भी आजतक इस देश में अंग्रेजों के शासन काल में ईसाईमतान्ध पादरी मैकाले ने यहां शिक्षा प्रणाली लागू कर पाठ्यक्रम दिया था आज वहीं लगभग चला आ रहा है। यहीं कारण है कि हम अंग्रेजो की दासता से मुक्त हो गये किन्तु अंग्रेजियत की दासता में दिन प्रति दिन जकड़ते जा रहे हैं जितना प्रभाव अंग्रेजीका उनके शासनकालमें था उससे अधिक अब हो रहा है।

हमारी सरकार ने जो अभी हाल ही में नयी शिक्षा नीति की घोषणा की है वह तो और भी अदूरदर्शितापूर्ण है और राष्ट्र के बहुसंख्यक हिन्दू समाज के हितों पर आज तक होने वाले सभी कुठाराघातों से अधिक भारी बज्रपात है। इस नीति के अनुसार अब संस्कृत की पढ़ाई जो थोड़ी बहुत हमारे स्कूलों मे होती थी उसकी अनिवार्यता समाप्त कर दी है और ऊसे कोई स्थान नहीं दिया गया है। यह हिन्दू समाज के साथ एक खिलवाड़ ही कही जा सकती है।

शायद जिन महानुभावो ने यह नीति बनायी है वे यह नहीं जानते कि संस्कृति जहां हमारे देश की ही नहीं अपितु संसार की प्राचीन भाषा है और क्योंकि हमारे वेद तथा अन्य अधिकांश ग्रन्थ भी जो हमारी संस्कृति, सभ्यता तथा अतीत के गौरव है और स्रोत हैं वे भी सब इसी भाषा में हैं। वहीं यह संस्कृति भाषा विश्व की लगभग सभी भाषाओं की जननी भी हैं क्योंकि इन भाषाओं में काफी शब्दों का निर्माण संस्कृत के आधार पर ही हुआ है। उदाहरणार्थ सस्कृत के शब्द "मातृ से ही अंग्रेजी का शब्द "मदर" तथा फारसी का "मादर" बनाया गया है, संस्कृत के ही एक शब्द "पितृ" से अंग्रेजी का "फादर" और फारसी का "पिदर" शब्द तथा संस्कृत के ही 'भ्रातृ, शब्द से ही अंग्रेजी का 'ब्रदर, तथा फारसी का 'बिरादर, शब्द लिए गये हैं। इसी प्रकार अनेकों शब्दो विश्व की भाषाओं में संस्कृत भाषा से ही हमारे देश की प्रादेशिक भाषाओं मे तो लगभग सभी में इसके शब्दों का काफी मात्रा में समावेश पाया जाता है और खास तौर पर साहित्य में सम्पन्न तमिल तेलुगु तथा बंगला भाषाओ में तो इसका बाहुल्य है। यहीं नहीं विश्व का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद तथा अन्य तीनों वेद तथा हमारे अन्य सभी धार्मिक प्रेरणा के स्रोत ग्रन्थ भी इसी भाषा में है जिन से हम अपनी संस्कृति, सभ्यता अतीत के गौरव की जानकारी प्राप्त करते हैं। हिन्दू समाज के जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी संस्कार, कथा इत्यादि भी संस्कृत भाषा के मन्त्रों तथा श्लोकों से ही होते हैं।

इस लिए यदि नयी शिक्षा नीति में संस्कृत का अध्ययन शामिल नहीं किया गया तो आगे आने वाली पीढ़ी में कोई भी संस्कृत जानने वाला विद्वान नहीं मिलेगा और हम अपनी धार्मिक प्रेरणा के तथा संस्कृति, सभ्यता और अतीत के गौरव के प्रेरणा स्रोतों का भी अध्ययन नहीं कर सकेगें और वर्तमान में जो हमारे यहां पाश्चात्य सभ्यता पनप रही है हमारा हिन्दू समाज अपनी संस्कृति से कट कर इसमें ही समाविष्ट हो जाये और सदा के लिये अपना अस्तित्व समाप्त कर बैठे। यह एक ऐसा घिनौना षड़यन्त्र है जिससे हिन्दू समाज के हितों पर यह एक ऐसी अन्तिम करारी चोट है जो इस समाज को अवश्य ही समाप्त करने में सफल हो जायेगी।

अब समय है जब कि देश का बहुसंख्यक हिन्दू समाज यदि अपने अस्तित्व को बचाना चाहता है तो वह एक आवाज से संगठित हो कर इसके विरुद्ध आवाज उठाये और सरकार को बाध्य कर दे कि वह संस्कृत के अध्ययन को नयी शिक्षा नीति मे अनिवार्य स्वरूप प्रदान करने के लिए विवश हो जाये। अभी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी इस सम्बन्ध में एक संस्कृत समिति का गठन किया हम सभी को उसका तन मन और धन से समर्थन करना चाहिये और यदि आवश्यकता हो तो इसके लिये देश व्यापी आन्दोलन किया जाए। और यदि बलिदान की आवश्यकता पड़े तो हम लोगों को बलिदान देने से भी पीछे नहीं रहना चाहिये और बलिदान देने की पद्धति भी हमें दक्षिण के लोगों की तरह ही अपनानी चाहिये जिस प्रकार हिन्दी के विरोध में या अपने भाषा के आधार पर प्रदेश के गठन के लिये सड़क के चौराहे पर खड़े होकर तेल छिड़क कर आत्मदाह करते हैं वही नीति अपनानी होगी यह सरकार तभी सुनती है। —विशन स्वरूप गोयल

'अंधविश्वासी मत बनो'

(शेष पृष्ठ ३ से आगे)

को दस बीस हजार रुपए निरर्थक खर्च कर देने पड़ते हैं। हिन्दू धर्म के ठेकेदारों, पंडितों, शंकराचार्यों का कोई सुधार करने की बात नहीं सूझती। इन रूढ़ियों, परम्पराओं तथा अन्धविश्वासों ने हिन्दुओं को रसातल में पहुंचा दिया और सबकी नकटों की हालत है। एक फंसता है, दूसरे को फंसाता है। ऐसा को वेद कहता है—

'अहमनृतात्सत्यमुपैमि', (यजु० १/१५)
मैं असत्य से बचकर सत्य के पथ पर जाता हूं।

चीन के एक संत 'कन्फ्यूशियस' ने उत्तम पुरुष कौन है, बताते हुए लिखा है, 'वह जो अपनी असफलता के लिए दूसरे को दोषी नहीं ठहराता। न वह अपने काम में असफल होने वालों को हंसी उड़ाता है। वह कि जो किसी को अन्धविश्वासों की कटौती पर नहीं कसता न अपने बने हुए विचारों के आधार पर। प्रत्येक व्यक्ति के नाम का मूल्यांकन वह उसके गुणों के अनुसार करता है। वह कि जो सत्य समझने की कोशिश करता है। स्वामी स्वामी विवेक के शब्दों में मैं कहूंगा—

बोलो सादर सच्ची बात।
मीठी प्यारी अच्छी बात॥

निर्वाचन	प्रधाना श्रीमती गायत्री देवी
महिला आर्य समाज औरंगाबाद—	मंत्री सुधा राणा
टिटौटा (बुलन्द शहर)	कोषा० कमलेश राघव

शिक्षा जगत

रणवीर रणन्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी के २३ वें दीक्षान्त समारोह में

मुख्य अतिथि डा० भवानीलाल भारतीय, अध्यक्ष–प्रोफेसर दयानन्द शोधपीठ, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ का भाषण

आदरणीय राजर्षि रणन्जय सिह जी, उत्तर प्रदेश के परिवहन मन्त्री राजकुमार सजयसिह जी, अवध विश्व–विद्यालय के कुलपति प्रो० अतुलचन्द्र बनर्जी, प्राचार्य महोदय अध्यापक गण स्नातक बधुओ देवियो तथा सज्जनो–

अमेठी के इस महाविद्यालय के दीक्षान्त समारोह मे उपस्थित होकर मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आर्यसमाज के मानचित्र मे अमेठी का महत्वपूर्ण स्थान है। यहा के स्वर्गीय नरेश राजा भगवान् बख्शसिह के काशी स्थित आनन्दबाग मे १८६९ मे स्वामी दयानन्द ने पौराणिक पण्डितो से अपना विश्व प्रसिद्ध शास्त्रार्थ किया था। उन्हीं के बडे पुत्र स्व० राजकुमार रणवीरसिह का यद्यपि अल्पायु मे ही स्वर्गवास हो गया था किन्तु उन्होने अपने सक्षिप्त जीवनकाल मे अलौकिक काव्य प्रतिभा तथा लेखन कौशल का परिचय दिया। वे महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज के नम्र अनुयाई तथा भक्त थे। उन्हीं के अनुज तथा इस कालेज के सस्थापक राजा रणन्जयसिह जी की सेवायें सर्वविदित हैं। अमेठी के महत्त्व का मेरी दृष्टि मे एक अन्य कारण भी है। इसी स्थान के समीपवर्ती जायस के रहने वाले प्रसिद्ध सूफी कवि तथा सन्त मलिक मोहम्मद जायसी भी थे। जिनकी समाधि राममगर मे आज भी विद्यमान है। जायसी के सम्बन्ध मे हिन्दी के मूर्धन्य आलोचक स्व० रामचन्द्र शुक्ल ने ठीक ही लिखा है "जायसी ने हिन्दुओं की बोली मे हिन्दू घरो मे प्रचलित प्रेम कथाओ को काव्य बद्ध किया है।" शुक्ल जी ने तो यहाँ तक लिखा है कि–उन्हे जिन-जिन मुसलमान घरो मे पदमावत की पोथी मिली उन उन मुसलमानो को धार्मिक कट्टरता तथा उन्माद से नितान्त अछूता पाया। ऐसे अमेठी जैसे विख्यात स्थान पर मैं स्वय को आपके बीच पाकर गौरव का अनुभव कर रहा हू। अभी हमने देखा कि पराकालीन तैत्तिरीयोपनिषद मे उल्लिखित दीक्षान्त उपदेश के आधार पर ही इस वर्ष के स्नातको का भी समावर्तन किया गया तथा उन्हें उपनिषद् वर्णित वाक्यों का पाठ करना पडा। इस दीक्षान्त उपदेश के अनेक मार्मिक स्थल हैं। इसमे जहाँ सत्यवद, धर्मचर तथा स्वाध्यायन्मा प्रमद कहा गया है वहाँ एक और महत्वपूर्ण वाक्य भी उल्लिखित हुआ है। वह है– स्वाध्याय प्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम्।

अर्थात् स्वाध्याय और प्रवचन मे हम कभी प्रमाद न करें। अध्ययन का क्रम केवल स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करके ही समाप्त नहीं हो जाता। अध्ययन और प्रवचन का क्रम आजीवन चलते रहना चाहिये जो कुछ ज्ञानोपार्जन हमने विद्यार्थीकाल मे किया है उसे हम अन्यों को देते रहें क्योंकि वितरण करने से विद्या का सदुपयोग ही होता है। इसी उपनिषदीय प्रवचन मे एक बात और कही गई है। आचार्य कहता है–

यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि
त्वयोपास्यानि नो इतराणि।

हमारे जो अनवद्य कर्म–श्रेष्ठ तथा अभिनन्दनीय कर्म है उन्हीं का तुम्हे सेवन करना चाहिए। अध्यापक के व्यक्तिगत तथा चरित्रगत दोष यदि कोई हो तो उन्हे छात्रो को ग्रहण नहीं करना चाहिये।

मुझे इस अवसर पर एक पुरानी बात याद आ रही है। ब्रिटिश शासन काल मे मिसमेयो नाम की एक अमेरिकन महिला पत्रकार भारत मे आई थीं और उसने यह सिद्ध करने के लिये कि भारतवासी स्वतन्त्रता के पात्र नहीं है, एक व्यग्यात्मक पुस्तक 'मदर इण्डिया नामक लिखी थी। लाला लाजपतराय ने इसका उत्तर देते हुये लिखा था कि–मिसमेयो का यह कथन नितान्त निर्मूल है कि अग्रेजो के आगमन से पूर्व भी हमारे यहा ग्राम स्तर से लेकर नगर स्तर तक तथा प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक सुचारू रुप से शिक्षा की व्यवस्था प्रचलित थी। नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला, उदन्तपुरी आदि के विश्व प्रसिद्ध शिक्षा सस्थान हमारे गौरव स्पद स्थल रहे हैं।

इसी प्रसग मे मै अग्रेजी शिक्षा पद्धति के प्रचलन का इतिहास भी आपके समक्ष प्रस्तुत करुगा। जब लार्ड मैकाले ने भारत मे पश्चात्य शिक्षा पद्धति का प्रचलन किया तो ऐसा करने मे उसका उद्देश्य स्पष्ट था। वह इस पद्धति के द्वारा एक ऐसी जमात पैदा करना चाहता था जो रुपरग, आकार प्रकार तथा आकृति प्रकृति मे भले ही भारतवासी हो किन्तु आचार व्यवहार मानसिक भावो तथा प्रवृत्तियो मे जो पूर्णतया अग्रेजो के तुल्य बन सकें। अपने शिक्षा विषयक ध्येय को स्पष्ट करते हुए मैकाले ने निस्सकोच कहा था कि–इस पद्धति द्वारा ऐसे लोग तैयार होगे जो शासक जाति तथा करोड़ो शासित भारतीयो के बीच मध्यस्थ का काम करेंगे और यह कौन नहीं जानता कि इसी "क्लर्क"(बाबू) वर्ग को उत्पन्न करने का श्रेय मैकाले की शिक्षा पद्धति को ही है। मै एक अन्य तथ्य भी आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हू। मैकाले ने समस्त पौरस्त्य ज्ञान, विद्या तथा चिन्तन को नितान्त हेय दृष्टि से देखा था उसने गर्व पूर्वक कहा था समस्त भारत, चीन, अरब तथा अन्य पौरस्त्य देशो का समग्र साहित्य इग्लैण्ड के एक प्राइमरी स्कूल के पुस्तकालय के एक शेल्फ मे रखी हुई पुस्तको की तुलना मे हेय नगण्य तथा तुच्छ है। आप अनुमान लगायें जो व्यक्ति न केवल भारत अपितु सभी प्राच्य देशो की सभ्यता और सस्कृति को निम्न दृष्टि से देखता हो भला वह हमारी शिक्षा पद्धति को कौन सी नवीन दिशा दे सकता था।

इसी प्रसग मे मै भारत की शिक्षापद्धति का ऐतिहासिक मूल्याकन करना चाहूगा। आधुनिक भारत के निर्माता राजा राममोहन राय यद्यपि सस्कृत के प्रौढ पण्डित थे किन्तु उन्होने तत्कालीन वायसराय लार्ड एमहर्स्ट को शिक्षा विषयक अपना प्रसिद्ध पत्र उस समय भेजा जब कि बगाल की सरकार कलकत्ता मे एक सस्कृत कालेज की स्थापना का विचार कर रही थी। राजा राममोहनराय ने इस पत्र मे सस्कृत विद्या को प्रचलित करने का घोर विरोध इस आधार पर किया कि ऐसा करने से भारत ज्ञान विज्ञान तथा तत्कालीन यूरोप मे प्रचलित नवीन कला कौसल की शिक्षा से वचित हो जाएगा। यदि इतना लिख कर ही राजा साहब अपनी लेखनी को विराम देते तब भी कुछ अधिक गलत बात नही थी क्योंकि विगत शताब्दी मे भारत को यूरोप मे प्रचलित नवीन विज्ञान कलाकौशल आदि की शिक्षा की अतीव आवश्यकता थी किन्तु राममोहनराय ने अपने इस पत्र मे सस्कृत शिक्षा के दोषो को गिनाते हुए यहा तक कह दिया कि सस्कृत व्याकरण न्याय, वेदान्त, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान की विविध विद्याओ को पढ़ाना नितान्त व्यर्थ तथा

[शेष पृष्ठ ६ पर]

शिक्षा जगत

[शेष पृष्ट ५ से आगे]

समय का अपव्यय है। ऐसा करके विद्यार्थी अपना समय नष्ट करेंगे तथा संसार की प्रगति की दौड़ में पीछे रह जायेंगे। मै यह समझने में असमर्थ हूं कि आधुनिक विज्ञान की शिक्षा का समर्थन करते समय राममोहनराय के लिये संस्कृत विद्या की निन्दा तथा उसकी अनुपयुक्तता सिद्ध करना क्यों आवश्यक हो गया था।

किन्तु महर्षि दयानन्द ने उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय शिक्षा में आमूलचूल क्रान्ति की। उन्हीं के द्वारा बताये गये सिद्धान्तो को डी. ए. वी. कालेज लाहौर की स्थापना करके क्रियान्वित किया गया। यह बात तो सोने में सुहागे के तुल्य ही थी आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द की स्मृति मे स्थापित डी० ए० वी० कालेज लाहौर को महात्मा हंसराज जैसा आदर्श प्रिंसपल मिला। महात्मा हंसराज ने अपना सम्पूर्ण जीवन ही दयानन्द के शिक्षा विषयक आदर्शों को क्रियान्वित करने में अर्पित कर दिया था। उन्हीं के एक मुसलमान शिष्य तथा पंजाब के विख्यात राजनीतिज्ञ ने महात्मा जी के निधन पर अपनी श्रद्धान्जली अर्पित करते हुए कहा था कि काश, इस्लामिया कालेज लाहौर को भी कोई हंसराज जैसा प्रिंसपल मिलता तो यह कालेज तरक्की की ऊंची से ऊंची मन्जिल तक पहुंच जाता यहा यह भी स्मरणीय है कि असहयोग के दिनो में जब कि महात्मा गांधी की प्रेरणा से राजकीय विद्यालयों का बहिष्कार किया गया तो स्वदेशी शिक्षा नीति को क्रियान्वित करने के लिए स्थान स्थान पर नेशनल कालेजो की स्थापना हुई किन्तु आप यह जानते हैं कि असहयोग के युग में स्थापित ये नेशनल कालेज चिरंजीवी नहीं हो सके जब कि डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाएं देश विदेश में शिक्षा के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। डी० ए० वी० की भांति आर्य समाज ने गुरुकुलो को भी जन्म दिया जहां शिक्षा के प्राचीन मूल्यों पर जोर दिया जाता है तथा आचार मूलक ज्ञान की व्यवस्था की गई है।

भारतीय मनीषियों ने शिक्षा तथा इसमें निहित तत्वों की समुचित विवेचना की है। स्वामी विवेकानन्द ने बौद्धिक तथा शारीरिक शिक्षा को समान महत्व देते हुए एक बार कहा था, हमारे नौजवानो को केवल गीता का पाठ करके ही संतुष्ट नहीं होना है अपितु अवसर आने पर फुटबाल के मैदान में अपने खेल के कौशल का प्रदर्शन करना है, इतना ही नहीं अपितु उन्होने शारीरिक शिक्षण के महत्व को बताते हुए फुटबाल के खेल को गीता के अध्ययन से भी अधिक महत्व दिया था। स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा विषयक अवधारणा इस प्रकार प्रकट हुई है। मानव के भीतर जो अनेक प्रकार की मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक शक्तियां सुप्तावस्था में हैं उन्हे जागरुक बनाना, विकसित करना तथा स्वयं के विकास में उनको प्रयुक्त करना ही सच्ची शिक्षा है। वे केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने को ही शिक्षा नहीं मानते।

शिक्षा के विचार को एक नया आयाम महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने उस समय दिया जब उन्होने साहित्य, संगीत कला तथा संस्कृति के रसात्मक और ललित तत्वों का समावेश शिक्षा के भीतर किया। शान्तिनिकेतन में विश्व भारती की स्थापना कर गुरुदेव ने शिक्षा की समग्र परिकल्पना को मूर्त रुप प्रदान किया। यहां गुरु और शिष्य क्लासरूम्स की अपेक्षा सघन लताओं और वृक्षों कीशीतल छाया के तले, निसर्ग के सहज वातावरण मे बैठ कर विद्या का आदान प्रदान करते हैं। गुरुदेव रवीन्द्र नाथ की दृष्टि में शिक्षा का आदर्श मानव एकता को चरितार्थ करना है, इसीलिये उन्होने अपनी विश्व भारती का उद्देश्य वाक्य उपनिषद् की उस प्रसिद्ध सूक्ति को रक्खा है जिसमें कहा गया है—

यत्र विश्वं भवत्येक नीडम्

महात्मा गांधी ने डा० जाकिर हुसैन के सहयोग से शिक्षा को रोजगार उन्मुख बनाने का प्रयास किया। उनकी धारणा के अनुसार यदि शिक्षा हमें आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी नहीं बनाती तथा हम में शारीरिक श्रम के प्रति आस्था नहीं जगाती तो केवल किताबों को पढ़ लेना या याद कर लेना बौद्धिक व्यायाम मात्र है। कहना अनपयुक्त नहीं होगा कि शिक्षा में श्रम के महत्व को स्वीकार कर तथा उसे आजीविका हेतु साधन जुटाने मे प्रयुक्त करना महात्मा गांधी की मौलिक देन थी उनके विचारों पर रूस के मनीषी लियोटाल्सराय तथा जान रस्किन की स्पष्ट छाप थी।

आज शिक्षा के क्षेत्र में जो अराजकता, उद्दण्डता तथा मूल्यहीनता हमें सर्वत्र दिखाई पड़ती है उसके लिये हमें अपनी जिम्मेवारी को समझना होगा। केवल विद्यार्थियों को कोसने तथा समस्त अव्यवस्था के लिये उन्हे ही उत्तरदायी ठहरानेकी प्रवृत्ति को छोड़ना पड़ेगा। देखना होगा कि शिक्षा में उत्पन्न गड़बड़ी के लिये शिक्षक वर्ग कितना उत्तरदायी है।

वस्तुतः शिक्षक का व्यवसाय अत्यन्त पवित्र तथा साधना की सीढ़ियों पर से गुजरने वाला है। इस व्यवसाय को स्वीकार करने वाले को इच्छित धन, मान, सम्मान तथा समाज मे प्रतिष्ठा भले ही प्राप्त न हो, किन्तु समाज के युवक वर्ग के निर्माण का दायित्व तो उसे लेना ही पड़ेगा और बदले में समाज का भी उत्तरदायित्व होगा कि वह शिक्षक को उचित सम्मान प्रतिष्ठा तथा जीविका के लिये समुचित साधन जुटाये। जैसा कि मेरे आदरणीय गुरु स्व० डा० देवराज उपाध्याय ने एक बार शिक्षक दिवस की अध्यक्षता करते हुए कहा था—भारत में शिक्षक को सर्वोच्च सम्मान तभी मिलेगा जब कि शिक्षक के रथ को देश का राष्ट्रपति हांकेगा। तो आइये, हम और आप मिलकर शिक्षक को पूर्ण आदर दें। समाज में उसे प्रतिष्ठित करें ताकि वह भी कर्तव्य पालन में पूर्ण तत्पर हो सके। आपने मुझे अपने विचार प्रकट करने का जो अवसर प्रदान किया, उसके लिए मैं आपका पुनः आभार व्यक्त करता हूं।

आर्य समाज बुलानाला वाराणसी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

काशी आर्य समाज बुलानाला का १०७ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १४ से १७ मई ८७ तक धूम धाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वानों ने भाग लेकर उत्सव को सफल बनाया।

चारों दिन नित्य प्रातः यज्ञ, भजन, प्रवचन, व शंका समाधान समाज मन्दिर में होते रहे। और सायंकाल टाउन हाल में विशाल जन सभायें होती रहीं जिनमें वैदिक धर्म की महत्ता, उपयोगिता पर विद्वानों के व्याख्यान होते रहे।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के आयोजन व सफलता का सम्पूर्ण श्रेय स्थानीय जनता कार्यकर्ताओं के साथ ही संयोजक श्री रामयशसिंह को विशेष रुप से है।

उड़ीसा में— अग्नि पीड़ितों की सहायता

अप्रैल के द्वितीय सप्ताह में ग्राम सरगड़ [बलागीर] में भयंकर अग्नि काण्ड में ६० घर जलकर राख हो गये। आर्य समाज सरगढ़ के प्रधान श्री राम भक्त जी ने पीड़ितों के भोजन की व्यवस्था की। अन्य प्रबन्ध होने तक ५०० आदमियों को भोजन कराते रहे। वस्त्रों की व्यवस्था भी की गई। श्री स्वामी धर्मानंद जी एवं मन्त्री श्री विशिकेशन शास्त्री ने पहुंचकर उन्हें धैर्य प्रदान किया।

ग्राम भवन के अग्नि पीड़ितों को आर्य समाज भुवनेश्वर की तरफ से सहायता दी गई।

राष्ट्र निर्माण

भ्रष्टाचार को मिटाओ अन्यथा वह हमें मिटा देगा

श्री ज्येष्ठवर्मन, एम एस १९ ६६०, चेम्बूर कॉलोनी बम्बई-४०००७४)

युगना न प्रजाना न दोष किन्तु नृपस्य हि
प्रसन्नो येन नृपतिस्तदाचरति वै जन
(शुक्रनीति, अध्याय ४ श्लोक ५६)

हमारे एक बहुत प्राचीन, राजनीति शास्त्र के आचार्य शुक्र महाराज ने कहा था कि, जिस प्रकार के आचरण से एक देश के शासक तृप्त हो जाते हैं, वहा की प्रजा उसी प्रकार के आचरण को अपनाती है, अर्थात् यदि किसी देश के शासक नेता सदाचारी और न्यायप्रिय हैं, तो उस देश की प्रजा भी स्वाभाविक रुप से सदाचारी और न्याय के मार्ग पर चलनेवाली हो जाती है, जहाँ इस प्रकार की सुप्रथा रहती है, वही दुनिया मे स्वर्ग है लेकिन कहीं यदि शासक वर्ग दुराचारी और अन्यायकारी हो, तो उस देश की प्रजा भी ऐसे ही दुष्ट स्वभाव की बन जायेगी, वहाँ सदाचारी लोगो का रहना कठिन होगा और वह देश दु ख-दारिद्रय से भरा, हुआ नरक बन जायेगा।

हमारे राजनैतिक नेताओ के चरित्र के बारे मे एक केन्द्रीय मंत्री श्रीमान् वसंत साठ कहते हैं कि, इन लोगो का एकमात्र लक्ष्य किसी भी प्रकार से सत्ता प्राप्त करना, एक बार सत्ता प्राप्त करने के बाद किसी भी मूल्य पर उसकी रक्षा करना, उस सत्ता के साथ जुड़े हुए सुखसुविधाओ का मजा लूटना, और दूसरो चुनाव की तैयारी करना है। सन् १९८२ मे, राज्य सभा से, देश मे बढ़ते हुए भ्रष्टाचार के बारे मे सदस्यो द्वारा चिंता व्यक्त की गई थी, लेकिन, उस अवसर पर, सरदार खुशवंत सिंह ने कहा था कि, जिस प्रकार एक वेश्या द्वारा पतिव्रता धर्म का उपदेश देना अर्थहीन है, उसी प्रकार राजनैतिक नेताओं का भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाना भी कोई अर्थ नही रखता, तात्पर्य यह है कि आज के वातावरण मे, ऐसा राजनैतिक कार्यकर्ता, जिसका जीवन बिलकुल स्वच्छ हो, मिलना बहुत कठिन है, और यदि ऐसा कोई व्यक्ति होगा भी, तो देश के राजनैतिक क्षेत्र मे उसका कोई भविष्य नहीं है।

यह एक कटुसत्य है कि आज हमारे देश का वातावरण इतना दूषित है कि यहाँ राजनैतिक कार्यकर्ता, पुलिस कर्मचारी और पातक करने वाले अपराधियो मे कोई अन्तर ही नहीं रहा, सन् १९२२ मे स्वर्गीय राजाजी ने अपनी डायरी मे लिखा था कि, स्वाधीन भारत मे चुनाव और भ्रष्टाचार अन्याय और अधिकार, पैसेवालो का मद और दप, तथा असमर्थ शासन, जनजीवन को नरक बना देंगे, इसके फलस्वरूप, लोग यही सोचने लगेंगे कि इस प्रकार की आजादी से गुलामी ही अच्छी थी, क्योंकि, स्वाधीन भारत की अपेक्षा पराधीन भारत मे न्याय व्यवस्था अच्छी थी और सरकारी अधिकारी अधिक योग्य एव प्रामाणिक थे, राजाजी की यह भविष्यवाणी आज सच सिद्ध हो गयी है, भ्रष्टाचार आज शिष्टाचार बन चुका है, इसके दुष्प्रभाव से आज आर्य समाज जैसी महान संस्थायें भी नहीं बची हैं।

फिर भी आज दुनिया मे केवल आर्य समाज ही ऐसी एक सस्था है जिसके पास, न केवल भारत को, अपितु सारे विश्व को नैतिक नेतृत्व और कल्याणकारी राज की व्यवस्था प्रदान करने की स्पष्ट, सुन्दर और वैज्ञानिक योजना है।

देश के आजाद होते ही यहाँ दो प्रकार की लहरें चलीं एक का नाम था धर्मनिरपेक्षावाद और दूसरे का नाम था आधुनीकरण। प्रारम्भ से ही इस देश मे धर्म के आधार तर्क और न्यायाचरण माने जाते थे, लेकिन मूर्खों ने रुढिवाद अन्धविश्वास और मत सम्प्रदायो को भी धर्म माना। अन्धविश्वास और नाना प्रकार की सामाजिक कुरीतियो को एक ओर से सरक्षण दिया गया और भारत की प्राचीन उज्वल आध्यात्मिक, एव सास्कृतिक परम्परा की दूसरी ओर से उपेक्षा भी की गई, इसका परिणाम यह हुआ कि देश क बुद्धिजीवी और उन्नत वर्ग के लोगो मे नास्तिकता और भोगवादी प्रवृत्ति फैल गई, इसी प्रकार पश्चिम के देशो का अन्धानुकरण को यहा आधुनिकता की सज्ञा दी गयी, इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि हमारे देश मे एक नयी अर्थ और काम प्रदान सास्कृति उत्पन्न हुइ, हर प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाओ की सामग्रियो के सग्रह को ही जीवन का लक्ष्य मानना और येन केन प्रकारेण उन सामग्रियो को संग्रह करना ही जीवन की सफलता मानना—ये इस सस्कृति के लक्षण हैं, इस कारण, देश मे एक प्रकार का बाजारी मनोवृत्ति का एक समाज का उदय, औद्योगीकरण को असतुलित रूप से बढ़ावा, और शोषित एव शोषक वर्ग का निर्माण होता गया। राजनैतिक लोग, अफसरशाही और व्यापारी शोषक वर्ग के साथ मिल गये। इन लोगों ने पुराने जमाने के राजा और राजवाडो के स्थान को ग्रहण कर लिया यद्यपि नाम के लिये आज देश मे प्रजातन्त्र है, तथापि, वास्तव मे यहाँ आज शासक और शासित—ये दो वर्ग कायम हो चुके हैं।

ये लोग देश के राजनैतिक वातावरण को अपने अनुकूल बना लेते हैं, और न्याय व्यवस्था मे भी हस्तक्षेप करते हैं। इसलिये बड़े बड़े अपराधी भी दंडित नहीं होते। देश मे आज कई कुप्रसिद्ध गुण्डे बदमाश, खूनी, चोर, डाकू, तस्कर व्यापारी, मुनाफाखोर, जमाखोर, टैक्सचोर आदि इनसे सरक्षण पाते हैं। इसलिये हिसा, आतक और अराजकता आदि की वृद्धि होती जा रही है। इसे कौन रोके ?

हमारे देश मे जो कानून कायदे और न्याय व्यवस्था है, वह 'विदेशी है और हमारे अनुकूल नहीं है। स्वाधीन भारत मे इनको जारी रखने का कोई औचित्य नहीं है। हमारी न्याय व्यवस्था वकीलो के जेब भरने का कार्य करती है। प्राय हमारे देश के न्यायालयो मे फैसले मिलते हैं, न्याय नहीं मिलता। ऐसी स्थिति मे दीन-दलितो का रोदन कौन सुनेगा ?

विश्व के अन्य लोकतान्त्रिक देशो मे और हमारे देश मे एक बहुत बड़ा अन्तर है। यहाँ, सरकारी नौकर करदाताओ के लिये जवाबदार नहीं होता और जनता के प्रतिनिधि मतदाताओ के लिये जवाबदार नहीं होते। सैद्धान्तिक दृष्टि से ऐसा नहीं होना चाहिये, लेकिन यह वास्तविकता है। दरबार और सिफारिश इस देश की राजनैतिक गतिविधियो का एक प्रधान अग बन गया है। इसकी 'लोकप्रियता' का गलत अर्थ लिया जाता है।

क्रमशः

आर्य समाज

१–यह आर्यसमाज का मन्दिर है–यहां भाग्यवान ही आते हैं।
यह दयानन्द की फुलवाड़ी–गुणवान ही खुश्बू पाते हैं।।
२–न छूतछात न जातपांत न ऊंच-नीच का भेद यहां।
है एक ही सब का परमपिता–सब भाई बहिन कहाते हैं।।
३–यह धरती सबकी माता है–जो अन्न सभी को देती है।
यह वायु अग्नि जल आकाश–पाँचों ही देव कहाते हैं।।
४–इन देवों का है परमदेव–जो सबका सृजनहार हुआ।
उसके ही आगे नतमस्तक–होने को हम सब आते हैं।।
५–यहां कोई अनाथ न होता है–न दीन हीन है कोई यहां।
वह अमर पिता जिन्दा है सदा–उसकी ही छाया पाते हैं।।
६–यहां विधवायें न होतीं कभी–जब सत्पति उनका जिन्दा है।
शारीरिक यह सम्बन्धी तो–बनते और जाते आते हैं।।
७–न नाप तोल न सीमा उसकी–कैसे शकल बनाये भला।
वह भीतर बाहर सबके है–उसमें ही सभी समाते हैं।।
८–न आना जाना उसका है–वह सभी जगह पहुंचा है हुआ।
कुछ सोच जरा अवतार कहां–क्या ऊपर नीचे आते हैं।।
९–न भूख उसे न प्यास उसे–भगवान को कोई चाह ही नहीं
सब प्राणी उससे पलते हैं–मालिक का दिया ही खाते हैं।
१०–भगवान को यदि खिलाना है–तो अग्नि में दो आहुति सदा
वह खाता नहीं लौटा देता–सुगन्ध उसी से पाते हैं।
११–आओ सब मिलकर जी भर के–हम गीत उसी के गायें सभी
सौभाग्य हमारा जाग उठे–वेदों की ऋचाएं गाते हैं।

–हरिवंशलाल मेहता वेद मनीषी–९-बी सिगारनगर, लखनऊ

— चेतावनी —

कर्म क्षेत्र के वीर सैनिको ?
जीवन में विश्राम न समझो।।

लगता है, उत्तर में हिमगिरि अग्नि ज्वाल से दहक उठा है
केशर-क्यारी का यह माली जानबूझ कर बहक उठा है।
मानसरोवर पर गीधों का मटमैला मन लहक उठा है
विद्रोही विष बल्लिरियों को रेशम की तुम दामन समझो।१।

भगतसिंह का आंगन अब भी बाधाएं शत झेल रहा है
रक्षक ही अब भक्षक बनकर खूनी होली खेल रहा है।
उग्रवाद अमृत के सर में जहर हलाहल मेल रहा है।
बिखरे आतङ्की पृष्ठों को लिपि का पूर्ण विराम न समझो।२।

अच्छा है, अभिनय करने को कुछ नूतन हैं पात्र सजाये
तालमेल से तान मिलाकर सुरजीते हैं वाद्य बजाये।
मन जीतेंगे जो श्वासों में विश्वासों के गीत गुंजाये
सूत्रधार की अभी भूमिका नाटक का परिणाम न समझो।३।

जग का जीत जताने कुछ तो वामी से भी निकल चुके है
प्रतिवेशी की ज़हरी गोली बड़े चाव से निगल चुके है।
फन फैला फुङ्कार मारकर विषधर विष को उगल चुके हैं
नीम वृक्ष पर चढ़े करेले को प्रिय मीठा आम न समझो।४।

सावधान हो, अभी समस्याओं के फैले जाल बहुत है
खण्डन खड्ग हाथ मे लेकर नाच रहे बैताल बहुत है।
राष्ट्रिय निष्ठा को डसने आस्तीन में व्याल बहुत हैं
वैर विरोधी बवण्डरों का सचमुच काम तमाम न समझो।५।

कुछ देवों के पहिन मुखौटे दैत्यों ने भी यज्ञ रचाया
स्वर्ण शाल को ओढ़ यहाँ पर मारीचों का दल है, छाया।
स्वतन्त्रता सीता को हरने रची जा रही यह सब माया
ये रावण के प्रबल पक्षधर, राम ? इन्हें अविराम न समझो।६।

–कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम० ए०
शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा) आगरा–६

आर्य समाज

आर्य समाज ! आर्य समाज ! देश सुधारक आर्य समाज !
देश–जाति की अनुपम सेवा करता आया आर्यसमाज !

सोता भारत देश जगाया !
कुरीतियों का दुर्ग ढहाया !
शिक्षा का प्रचार करवाया !
जन-जन का अज्ञान मिटाया !

ऋषिवर ने ही था बतलाया–'अच्छा होता सदा स्वराज !
देश जाति की अनुपम सेवा करता आया आर्य समाज !

स्वतन्त्रता की ज्योति जगाई !
देश–भक्ति की बात बताई !
कोई भाषा या प्रदेश हो,
भारतवासी भाई – भाई !

करो संगठन ! एक बनो सब ! 'कहता आया आर्य समाज !
देश–जाति की अनुपम सेवा करता आया आर्य समाज !

बिछुड़ों को तुम गले लगाओ !
उन्हें शुद्धि का पाठ पढ़ाओ !
फिर से उनको आर्य बनाओ !
ऋषिवर का सन्देश सुनाओ !

यह पावन सद्ज्ञान हिन्दुओं को बतलाता आर्य समाज !
देश जाति की अनुपम सेवा करता आया आर्य समाज !

अब भी नहीं शान्त बैठेगा;
अब बढ़ कर आगे आयेगा !
पावन राम–जन्म–भूमि को,
लेने को यह बढ़ जायेगा !

बिगुल बजा कर, जाति जगा कर, काम करेगा आर्य समाज !
देश–जाति की अनुपम सेवा करता आया आर्य समाज !

नहीं तटस्थ रहेगा बशंक;
आगे बढ़ कर लेगा भांग !
जागृति–युग में भारत भर के,
सारे आर्य उठे है जाग।

नहीं विधर्मी ले पावेगा पूजा स्थल, पूजा का साज !
सिंह–सदृश हुंकार उठेगा वीरों का यह आर्य समाज !!

–चन्द्रपालसिंह 'मयंक' एडवोकेट व नोटरी, कानपुर

सुख शांति का मूलाधार धर्म ही है धर्म के स्वरूप की पहचान करो

प्रथम लक्षण—धृति

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

(गतांक से आगे)

दृढ़ प्रतिज्ञ कभी पथ भ्रष्ट नहीं होता। उसे ईश्वर पर अदम्य विश्वास होता है अतः उसकी प्रति ज्ञायें ईश्वर की आज्ञाओं से पूर्ण सार्वजनीन सुखकारी होंगी।

ग्रहण शील व्यक्ति कभी कुतर्की नहीं होता, सत्य स्वीकारने में उसे संकोच नहीं होता। धैर्यवान कभी भी दुःख सुख को किसी भी घड़ी में, हानि लाभ में कभी भी धीरज नहीं खोता सदा उसके कारण को खोजकर उसका निदान ढूंढता है। इस प्रकार निश्चय ही हम यदि धर्म के प्रथम लक्षण धृतिको हृदयंगम करलेंगे तो हमारे सुख शान्ति का मार्ग प्रशस्त होगा।

धर्म का द्वितीय लक्षण——क्षमा

(आचार्य वेदव्रत अवस्थी, वेद मन्दिर हिन्द नगर लखनऊ)

गत अंक में धर्म के स्वरूप का विवेचन आरम्भ करते हुए भगवान् मनु द्वारा वर्णित धर्म के दश लक्षणों में प्रथम–लक्षण 'धृति' का संक्षिप्त चित्रण हो चु का है। इस अंक में उसके दूसरे लक्षण क्षमा को देखें——

क्षमा–सहन शीलता, अपराधी को माफी, निर्बल के प्रति दया की भावना, हर सुख व दुःख की स्थिति में समान अनुभूति करना–सुख में न इतराना दुःख में न घबराना——यह क्षमा के लक्षण हैं जिन जीवनों में यह लक्षण विद्यमान हों उन्हें धर्म के द्वितीय लक्षण से युक्त धर्म व्रती कहा जायेगा।

एक नीति कार ने कहा है कि:——

क्षमा बलमशक्तानाम्, शक्तानाम्भूषणं क्षमा।
क्षमा वशीकृति र्लोके, क्षमया किन्न साध्यते।

निर्बल के लिए क्षमा का गुण बल है। मै शरीर से निर्बल हूं, धन से निर्बल हूं। विद्या से निर्बल हूं। शरीर बल वाला मेरी उपेक्षा करता है कभी मेरी अवमानना भी कर देता है। मेरे पास धन की कमी से धन-वान् मेरी उपेक्षा करता है। अपने बराबर नहीं बैठने देता। मै विद्या में निर्बल हूं विद्या वाला मेरी सुनी अनसुनी कर देता मुझे झिड़क देता मुझे महत्व नहीं देता मेरी ग्राह्य बात पर भी ध्यान नहीं देता। ऐसी अवस्था में यदि उनसे किसी प्रकार का प्रतिरोध करने का प्रयत्न–करता हूं तो मुझे सफलता नहीं मिलती, उल्टे मुझे ही बुरा कहा जाता या मना किया जाता है। मै प्रतिरोध करने में अशक्त होने के नाते हताश व निराश, पथ विभ्रमित होने लगता हूँ। विपरीत इसके इस अवस्था को अपनी कमी मान कर उस अपमान व उपेक्षा की उपेक्षा करके उस कमी को दूर करने का व्रती बनता हूं। शरीर बल नहीं——व्यायाम आसन प्राणायाम आदि स्वास्थ्य के नियमों का पालन कर बल अर्जित करने की चेष्टा करता हूं। धनहीन हूं तो अनथक श्रम करके धन के अर्जन में अपनी शक्ति को समीचीन ढ़ंग से लगाता हूं। विद्या मे कम हूं तो विद्या का व्रत धंन ले सद्ग्रथों ज्ञान विज्ञान वर्धक ग्रन्थों को पढ़ने विद्वानों से जिज्ञासु बनकर संशय की निवृत्ति में चेष्टा रत होकर अपनी विद्या प्रतिभा को बढ़ाने में सतत जुट जाता हूं तो निश्चय ही वही मेरी कमी क्षमा की प्रवृत्ति, (इस क्षमा रूपी छड़ी का सहारा ले लेने से) हमारा सम्बल बन जाता है। और हम सबल होकर दूसरों को भी सहारा देने में सामर्थ्यवान् बन जाते हैं।

बलवान जब हर तरह से शक्ति मान होता हुआ अपने से–निर्बल के प्रति दया का भाव रखकर उनका सहयोगी बनता, उन्हें सहारा सम्बल देने का प्रयत्न करता है तो यह क्षमा गुण उनका भूषण कहा–जाता है।

क्षमा के गुण से बड़े बड़े आततायी भी वश में किये–जा सकते हैं। इतिहास के पृष्ठो मे डाकू बाल्मीकि डाकू– अंगुलिमाल के हृदय परिवर्तन के कथानक हम सभी ने पढ़े हैं। डाकू बाल्मीकि एक साधु के क्षमा पूर्ण (क्षमा शील निर्भय–निष्कपट, निर्लोभी निरहंकारी बन जाता है) व्यवहार से–पलट कर सन्त ही नहीं ऋषि बन गये। दुर्दान्त अंगुलिमाल–महात्मा बुद्ध के क्षमा धर्म से प्रभावित भिक्षु बन गया।

हमारे देश के अनेकश : पूर्वजों उत्तम राजा महाराजाओं सन्तों ऋषियों महर्षियों ने धर्म के इस द्वितीय लक्षण को सर्वात्मना अपने अन्दर धारण करके अपने सम्पूर्ण कर्तव्यों को सम्पूर्ति दी एवं राष्ट्र को सम्बोधित किया।

हमें देश के वर्तमान विग्रह पूर्ण वातावरण में धर्म के इस द्वितीय लक्षण को भली भ.ति समझ कर अंगीकार करना चाहिये और अशांति विग्रह को समाप्त कर शांत पवित्र आनन्द पूर्ण वातावरण के सृजन में संलग्न होना चाहिये। यह कर्तव्य आद्योपान्त ऊपर से नीचे, सभी के लिये चाहे शासक हो चाहे शासित हो चाहे ऊंचे पद पर हो चाहे छोटे काम में हो–सभी के समान रूप से स्वीकारने में ही देश का हित सन्निहित है।

——

निर्वाचन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद
प्रधान श्री विक्रमसिंह जी
मन्त्री श्री हरिश्चन्द्र आर्य
कोषा० श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य

आर्य समाज उदयपुर (राजस्थान)
प्रधान श्री जयसिंह मेहता विद्या-लंकार
मन्त्री श्री पन्नालाल अरोरा
कोषा० श्री ब्रह्मस्वरूप रस्तोगी

आर्य समाज पुरानी मण्डी सहारनपुर
प्रधान श्री प्रकाश चन्द्र
मन्त्री श्री बाबूराम
कोषा० श्री सोम प्रकाश शर्मा

आर्य समाज कस्बा सोहन (ईंट गांव) फतेहपुर
प्रधान श्री विष्णु लाल आर्य
मन्त्री श्री सुरेन्द्र प्रतापसिंह आर्य
कोषा० श्री शिव मोहन आर्य

आर्य समाज नया बाजार लश्कर
प्रधान श्री भारत भूषण त्यागी
मन्त्री श्री मदन मुरारी सक्सेना
कोषा० श्री अभिमन्युकुमार बुल्लर

आर्य समाज रानी मण्डी इलाहाबाद
प्रधान श्री जयदेव लाल आर्य
मन्त्री श्री कुंवर शेखर कुमार एडवोकेट
कोषा० श्री आर० डी० सिंह

सम्पादक के पत्र

आर्यों से ?

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना वेदों के प्रचार व प्रसार तथा वैदिक मान्यताओं की स्थापनार्थ किया था। स्वामी जी जब अपने गुरु का आशीर्वाद लेकर कर्म क्षेत्र में उतरे तो उस समय सारा परिस्थितियां स्वामी जी के प्रतिकूल थीं। स्वामी जी अकेले झंझावातों से संघर्ष करते हुए टक्कर लेते हुए युग की प्रबल धारा को मोड़ते रहे और इतिहास इस बात का साक्षी है कि स्वामी जी ने अपने अपराजेय व्यक्तित्व तथा अजेय साहस के बल पर अपना उद्देश्य प्राप्त किया और समय व इतिहास के पृष्ठों पर एक अमिट रेखा अंकित कर दी। स्वामी जी के आर्यसमाज ने अन्यान्य क्षेत्रों में अभूतपूर्व सफलताएं प्राप्त की, और धार्मिक व राष्ट्रीय पुनर्जागरण का बिगुल बजा कर स्वाधीनता का पथ प्रशस्त किया।

आज हमारे समाज, राष्ट्र तथा मानवता के समक्ष एक अभूतपूर्व संकट उपस्थित हो गया है। मानवता पतन व पराजय के पुलिनों पर खड़ी है। ऐसी विषम परिस्थिति में आर्यसमाज व आर्यसमाज के कार्य कर्ताओं का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। लेकिन दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि आज हम निश्चित रूप से कर्तव्य च्युत हो गये हैं। आज हम केवल कहने के लिए आर्य है, करने के लिए नहीं। आज दयानन्द के सैनिक भी समय की धारा के साथ बह रहे हैं, जब कि उन्हें समय की धारा को मोड़ने का दायित्व सौंपा गया था। आज हम देख रहे हैं कि महर्षि के सारे स्वप्न धू-धू कर जल रहे हैं और हम महर्षि के अनुयायी उसे और अधिक हवा दे रहे हैं आज हमें यह सोचना होगा कि कौन सी ऐसी बात थी जिससे कि अकेले महर्षि दयानन्द के उपदेशों ने सारे महिमण्डल पर क्रांति की ज्योति जला दी और आज आर्यसमाज के हजारों संन्यासी, उपदेशकों, भजनोपदेशकों का सारा उपदेश व्यर्थ जा रहा है? आज हमें अपना अन्तर टटोलना होगा। यदि महर्षि दयानन्द के प्रति हमारे हृदय में तनिक भी श्रद्धा व कृतज्ञता के भाव हैं, तो हमें अपनी कथनी व करनी का अन्तर मिटाना ही होगा। आज हमारे समक्ष भयंकर चुनौतियां मुंह बाए खड़ी हैं और हम गहरी निद्रा मे सो रहे है। आज हम मन्दिरों व विद्यालयों को अपने स्वार्थों से जोड़कर लड़ रहे हैं। और हम यह भूल ही गये है कि हमें क्या करना था।

आइए! महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के कार्यों को पूरा करने के लिए हम अपना सर्वस्व बलिदान करने का संकल्प लें।

—राधेश्याम आर्य मन्त्री जिला सभा सुल्तानपुर

आर्यसमाज ज्वालापुर में तपोयाग

आर्यसमाज ज्वालापुर में दिनांक २६ से २९ अप्रैल तक तपोयाग श्री चन्द्रभानु बरमानी के निवास स्थान पर श्री विक्रमादित्य 'बसन्त' के ब्रह्मत्व में प्रातः सायं दोनों समय हुआ। प्रवचन श्री बसन्तजी के साथ ही श्री रामप्रसाद जी उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी, श्री राजेन्द्र जी, श्री महावीर जी एवं स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती आदि विद्वानों के भी हुये।

२९-४-८७ का श्री बरमानी ने ऋषि लंगर (प्रीतिभोज) का भी आयोजन किया।

आर्यसमाज सीतापुर में वेद प्रचार

१३, १४ मई ८७ को आयसमाज मन्दिर सीतापुर मे सायं मह आर्यभिक्षु तथा अन्य वैदिक विद्वानो और भजनोपदेशको के वेदो हुये। तथा प्रातःकाल आर्य समाज के प्रधान श्री ओ३म्प्रकाश अग्र के पुत्र का नामकरणव मुण्डन संस्कार भी सम्पन्न हुए।

योग साहित्य

पूर्ण शारीरिक एवं मानसिक विकास एवं सर्वतोमुखी उन्नति के लिए नित्य स्वाध्याय योग्य प्राचीन योग साहित्य।

१—स्वामी केशवानन्दयोग पत्रिका (मासिक) वार्षिक शुल्क रु० २५/००
पुराने अंक भी उपलब्ध प्रति अंक ढाई रुपये।
२—दत्तात्रेय योग शास्त्र हिन्दी/अंग्रेजी व्याख्या सहित मूल्य रु० १५-००
३—योगबीज हिन्दी-अंग्रेजी व्याख्या सहित मूल्य रु० २५-००
४—अमनस्कयोग हिन्दी-अंग्रेजी व्याख्या सहित मूल्य रु० २५-००
५—योग चूड़ामणि हिन्दी व्याख्या सहित मूल्य रु० १८-००
६—राजयोग साधना और सिद्धान्त ले. डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी मूल्य चालीस रुपये
७—पातञ्जल योग शास्त्र एक अध्ययन ले. डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी मूल्य रु. ८०.००
८—योग और मानसिक स्वास्थ्य ले. डा०ब्रह्ममित्र अवस्थी मू० रु० २५-००
९—डिवाइन पाथ वाई होली सेन्ट्स (इङ्गलिश) मूल्य चालीस रुपये

डाक व्यय अलग वी०पी० के लिए आधा मूल्य पेशगी भेजें।

प्राप्ति स्थान— स्वामी केशवानन्द योग संस्थान प्रकाशन ८/३ रूप नगर दिल्ली—११०००७

आवश्यकता

कक्षा शिशु से अष्टम् पर्यन्त शिक्षा प्रदान कर रहे दयानन्द बाल मन्दिर शाहगंज में प्रधानाचार्य एवं सहायक अध्यापकों की आवश्यकता है, गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति एवं आर्यसमाज के सिद्धान्तों में निष्ठावान होना आवश्यक है। तथा अनुभवी भी होना आवश्यक है। विशेष जानकारी हेतु प्रबन्धक से सम्पर्क करें।

प्रबन्धक—विश्वेश्वरनाथ आर्य
दयानन्द बाल मन्दिर शाहगंज, जौनपुर

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण स० एस. डब्ल्यू/एन. पी. ७९
आषाढ़ कृष्ण ३
रविवार, १४ जून १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

देश की अखण्डता के लिए सुरक्षा पट्टी बनाई जाये : पँजाब को ५ साल के लिए सेना के हवाले किया जाये

संस्कृत राष्ट्रीय एकता की प्रतीक

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित शताब्दी समारोह १५ से १७ मई तक दयानन्द मठ रोहतक मे धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर वेद सम्मेलन, स्वदेशी सम्मेलन, युवा एव व्यसन मुक्ति सम्मेलन, मातृशक्ति सम्मेलन, राष्ट्रीय एकता सम्मेलन, व्यायाम सम्मेलन, शिव सकल्प सम्मेलन व अन्य कार्यक्रम आयोजित किये गये।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने अध्यक्षीय भाषण में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को सुदृढ़ करने के लिए पाकिस्तान सीमा के साथ साथ ५ किलोमीटर चौड़ी सुरक्षा पट्टी बनाई जाये तथा जम्मू व कश्मीर मे ४१ लाख भूतपूर्व सैनिको को लगाया जाये। उन्होने कहा कि पजाब को ५ साल के लिए सेना के हवाले किया जाये ताकि वहा स्थाई रूप से शान्ति स्थापित हो सके। स्वामी जी ने कहा कि, आज देश मे साम्प्रदायिकता उग्र रूप मे फैल रही है और अलगाववादी व विघटनकारी तत्वो के सक्रिय होने से देश की सुरक्षा व अखण्डता को गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया है। अत भारत सरकार को इस सम्बन्ध मे जागरूक रहकर तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए। उन्होने सभी आर्यजनों से अपील की कि उन्हे आर्य समाज की श्रेष्ठ परम्परा के अनुसार बड़े से बडा त्याग करने के लिए तैयार रहना है ताकि देश फिर से विदेशियो के कुचक्र मे न फस पाये।

संस्कृत को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बताते हुए स्वामी जी ने कहा कि इसे नयी शिक्षा नीति मे उचित स्थान दिया जाये। उन्होने कहा कि भाषाई आधार पर राज्यो का निर्माण एक भारी भूल थी। देश सर्वोपरि है और भाषा, जाति, धर्म आदि बाद मे आते है।

इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा, पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने कहा कि आज विदेशी शक्तियां देश मे हर कीमत पर गड़बड़ पैदा करना चाहती हैं और सरकार का यह दायित्व है कि देश की एकता, अखण्डता के विरुद्ध काम करने वाली शक्तियो को कुचल कर रख दिया जाय।

सासद एव पजाब के पूर्व मुख्य मन्त्री स० दरबारासिह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कोई भी व्यक्ति या धर्म राष्ट्र और सँविधान से ऊँचा नहीं है और किसी को भी राष्ट्र की अखण्डता से खिलवाड़ करने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

सम्मेलन मे राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री छोटूसिह आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी, श्री राम महर एडवोकेट (रोहतक) आदि आर्य नेताओ ने भी राष्ट्रीय एकता के सम्बन्ध मे अपने ओजस्वी विचार व्यक्त किए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि देश की सुरक्षा व एकता के गम्भीर खतरे को देखते हुए आज जनजागरण की महती आवश्यकता है और आर्यसमाज को इस दिशा मे अहम भूमिका निभानी है।

स्वदेशी सम्मेलन मे स्वामी विद्यानन्द जी ने कहा कि संस्कृत देश की आत्मा है। इसने कन्या कुमारी कच्छ से कटक तक सारे देश को एकता के सूत्र मे बांधा है। सस्कृत विश्व की भाषाओ की जननी है। सस्कृत के बिना सस्कृति रह ही नहीं सकती।

भव्य शोभा यात्रा

शताब्दी समारोह के प्रारम्भ मे प्रो० शेरसिंह के नेतृत्व मे एक विशाल शोभायात्रा रोहतक के प्रमुख मार्गों से होकर निकाली गई जिसमे स्वामी सत्यानन्द, स्वा० ओमानन्द, सर्वश्री सूर्यदेव, डा० धर्मपाल, राजेन्द्र दुर्गा, प्रियतमदास रसवत आदि आर्य नेता आगे आगे चल रहे थे। जुलूस मे हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, पजाब, राजस्थान आदि राज्यो की समाजो व शिक्षण संस्थाओ के अधिकारियो, सदस्यो ने भारी सख्या मे भाग लिया। विभिन्न प्रकार की वेश-भूषाओ में [illegible]र, स्कूटर, बैलगाड़ियो बुग्गियो आदि पर तथा पैदल, भजन, कीर्तन करते एव वैदिक धर्म की जय, आर्यसमाज अमर रहे आदि नारे लगाते [illegible] जुलूस का विभिन्न स्थानो पर स्थानीय लोगो ने स्वागत किया।

उल्लेखनीय है कि इस विशाल भव्य जुलूस का सचालन प्रादेशिक प्रतिनिधि [illegible] नई दिल्ली के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने अत्यन्त कुशलता

११ [illegible] मई तक प्रतिदिन वेद पारायण महायज्ञ श्रद्धापूर्वक हुआ जिसके ब्रह्मा स्वामी दीक्षानन्दजी सरस्वती थे। समारोह कार्यक्रमो मे पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने ध्वजा रोहण किया और ओम् ध्वज को भारतीय सस्कृति की आत्मा बताया और इसको ऊंचा रखने व इसकी आन व शान को बनाये रखने के लिए हर प्रकार का त्याग व सर्वस्व बलिदान करने का आह्वान किया।

स्वत्वाधिकारजी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ मे श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ | घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८५

आषाढ़ कृष्ण ११, रविवार, संवत् २०४४ वि० दिनांक २१ जून १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल—

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

★

प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए.

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

★

वर्ष	९०
अङ्क	२४

पी.ए.सी. भंग करने या उसमें वर्ग विशेष के लिए भर्ती में आरक्षण की मांग अदूरदर्शी

इससे साम्प्रदायिकता बढ़ेगी, विघटनवादी तत्व सबल होंगे सरकार इन मांगों को कठोरता से अस्वीकार कर दे

मेरठ में साम्प्रदायिक दंगे ने कोहराम मचा दिया। करोड़ो की सम्पत्ति जलकर नष्ट हो गयी। अनेकों निरीह जानें गयीं। यह सब कुछ हुआ कुछ उन अराजक, राष्ट्रद्रोही तत्वो के इशारे पर जो विदेशी धन पर भारत की राष्ट्रीयता को हिन्दू-मुस्लिम मानसिकता में बदल कर नष्ट कर देना चाहते हैं और भारत को पराधीन करने का स्वप्न देख रहे हैं। अब वे ही तत्व जब दंगों की जांच की व्यवस्था हो रही है अपना दूसरा मुहिम चालू करके हाशिमपुरा के विनाश का दोष पी० ए० सी० पर मढ़कर उसे व सरकार को बदनाम करके अपने साम्प्रदायिक वर्चस्व को स्थापित करना चाहते हैं। वे पी० ए० सी० को भंग करने या उसमें भर्ती में वर्ग विशेष के लिए आरक्षण की माग कर रहे हैं।

वे सरकार का मूल से ध्यान हटाकर एक वर्ग विशेष की ध्वनि की जाच पर जोर डालने का कुत्सित प्रयास कर रहे हैं। मेरठ में जो भी हुआ गलत हुआ। क्यों हुआ कैसे हुआ, इसकी जांच करके दोषी जनों को कठिन दण्ड दिया जाना चाहिए।

विधान परिषद् के सदस्य शिक्षक नेता श्री ओ३म्प्रकाश शर्मा ने स्पष्ट शब्दो मे कहा है कि इबादत घरों से खुलेआम झगड़े के लिए सड़कों पर निकल आने का आह्वान एक सम्प्रदाय विशेष के लोग करते रहे और पी० ए० सी० उन्हें अपनी हरकतो को बन्द करने की चेतावनी पर चेतावनी देती रही पर जब वे अराजक तत्व नहीं माने तो विवश उसे गोली चलानी पड़ी। निश्चय ही उसमें अनेक निरीह लोगों की जानें भी गयी होंगी। पी० ए०सी० ने यह तब किया जब उसके पास इसके अलावा कोई विकल्प था ही नहीं।

अब वे ही पंचमांगी तत्व जो दंगा भड़का कर अपने एयर कण्डीशन महलो में आराम कर रहे थे और विघटन कैसे किया जाये—योजनायें बना रहे थे अब पी० ए० सी० को समाप्त करने या उसमें वर्ग विशेष का आरक्षण की मांग कर रहे हैं और यह सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं कि पी०ए० सी० और सरकार की साजिश से दंगे हुये। कुछ पंचमांगी तो यह भी कहने लगे हैं कि यह साजिश मुसलमानों को मिटा देने की है।

ऐसी अनर्गल व विद्वेषात्मक बातों को कहने वालों को सरकार को अब और छूट नहीं देनी चाहिये। ना ही ऐसी गन्दी हरकतों के आगे उसे झुककर उनकी मांगें सुननी चाहिए। सरकार कठोरता से विघटनवादी तत्वों को सचेत करे कि यहां साम्प्रदायिकता, साम्प्रदायिक मांगें कभी भी स्वीकार नहीं की जायेंगी। और अराष्ट्रीय तत्वों को क्षमा नहीं किया जायेगा।

मेरठ के दंगे की सम्पूर्ण रूप में जांच करके दोषी व्यक्तियों को कठोरतम दण्ड दिया जाये।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

से आंख मीच अन्याय देख यह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

सम्वत् २०४४ रविवार २१ जून १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

ध्रुवस्तिष्ठाऽविचाचलिः

इस संसार में मानव जाति की वेदानुसार दो ही श्रेणियां हैं, एक आर्य और दूसरे अनार्य जिन्हें साधारण प्रचलित भाषा में हम सज्जन और दुर्जन कहते हैं। विश्व शांति के लिये भी दो ही नीतियां व्यवहार में लाई जाती हैं, एक उदार नीति और दूसरी कठोर नीति। इन नीतियों की अभिव्यक्ति भी जिन माध्यमों से होती है उन्हे भी स्नेह और दण्ड इन दो नामों से सम्बोधित किया जाता है। जो सज्जन होते हैं वे उदार नीति के समर्थक होते हैं और स्नेहमयी भाषा का मूल्याङ्कन करते हैं पर जो दुर्जन होते हैं वे केवल सशक्त कठोर नीति से ही सन्मार्गी बनते हैं और केवल शक्ति की ही भाषा समझते हैं।

भारतवर्ष के दक्षिण में स्थित एक छोटा सा राज्य है जो कभी आर्यावर्त्त में सिंहल द्वीप कहलाता था और जिसे अब श्री लङ्का के नाम से सम्बोधित किया जाता है, वहा इस समय घोर अशांति की स्थिति है और भीषण गृह युद्ध चल रहा है। इस राज्य में जहां बौद्ध मत के अनुयायी वास करते हैं, वहां भारत के तामिल प्रदेश के तामिल जन भी शताब्दियों से उस राज्य के वासी बने हुए हैं। श्री लङ्का की वर्त्तमान सरकार का इन तामिल जनो से एक दीर्घ काल से गृह युद्ध चल रहा है। श्री लङ्का सरकार की कठोर नीति के कारण तमिल जनों ने वहां अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिये आतङ्कवाद और हिंसा का आश्रय लिया है, वहां सरकार ने सैन्य बल से उनके आन्दोलन को कुचलने के लिये अपनी निर्मम कठोरता का प्रदर्शन किया है जिसके फल स्वरूप जाफना नगर की घेरा बन्दी और बम वर्षा के कारण अनगिनत निरीह तामिल जन मारे गये हैं और वहां से पलायन करने पर विवश हो गये हैं।

भारत सरकार जिसने सदैव अपनी उदार नीति का प्रदर्शन किया है, उसकी एक मात्र आकांक्षा यही है कि उसके समीपवर्त्ती पड़ोसी राज्य की इस भीषण समस्याको परस्पर प्रीति पूर्वक सौहार्दके वातावरण में बातचीत के माध्यम से सुलझाय। जाये और इसके निमित्त अपनी मध्यस्थता की सहमति भी प्रदान की और यह स्पष्ट घोषणा की कि उसका यह सद्प्रयास श्री लङ्का राज्य के आन्तरिक मामलों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही है अपितु एक पड़ोसी राज्य में शान्ति स्थापित करवाने का एक सद्प्रयास है। श्री लङ्का सरकार ने जब अपनी कठोरतम उग्रनीति का प्रदर्शन इस सीमा तक किया कि तामिल जनों के बहुसंख्यक प्रदेश की घेरा बन्दी, जिसके कारण खाद्य पदार्थों का घोर अभाव होने से वहां के निवासी क्षुधा पीड़ित होकर मृत्यु के ग्रास बन जायें तथा धार्मिक स्थानों पर भी बम वर्षा करके घायल जन साधारण की चिकित्सा की कोई समुचित व्यवस्था न होने देना और औषधियों को भी न भेजना, इन अमानवीय कृत्योंसे भारत सरकार का द्रवित होना स्वभाविक था परन्तु कठोरता की पराकाष्ठा का परिचय सम्पूर्ण विश्व को तब मिला जब भारत सरकार द्वारा रेडक्रास की सहायता योजना के अन्तर्गत खाद्य सामग्री तथा औषधियां ले जाने वाली नौकाएं जिसमें अनेक निष्पक्ष विश्व के गणमान्य पत्रकार भी थे, रोक लिया गया और डुबोने की धमकी दी गई। शान्ति प्रिय भारत सरकार जिसे युद्ध की कामना नहीं थी अपनी नौकाओं को लौटा लिया परन्तु मानवता के आधार पर अपने वायुयानों से इस सहायता सामग्री को तामिल जना के प्रदेश में उनके प्राण बचाने हेतु गिरा दिया जिसकी प्रशस्ति विश्व के अनेक सुलझे हुए राजनीतिज्ञों ने की है।

भारत सरकार के इस सशक्त रवैये ने श्री लङ्का सरकार को यह सोचने पर विवश कर दिया है कि उनका छोटा राज्य भारत जैसे सशक्त राष्ट्रसे सैनिक लोहा नहीं ले सकता अतएव एक ओर तो पाकिस्तान को चीन से सहायता प्राप्त करने का वह इच्छुक हो रहा है, दूसरी ओर भारत सरकार से सहायता सामग्री के विषय को लेकर भी वार्त्तालाप हो रहा है। यह घोषणा भी श्री लङ्का सरकार के राष्ट्रीय सुरक्षा मन्त्री द्वारा की गई है कि वहां की सेना जफाना नगर की अभी और आक्रमण नहीं करेगी और उसपर सेनाके द्वारा अधिकार करना वहां की सरकारी योजना के अन्तर्गत नहीं है। श्री लङ्का सरकार इसे व्यवहारिक रूप कब और कैसे देगी यह तो भविष्य की घटनायें ही बतलायेंगी पर इनसे एक बात उभर कर जो स्पष्ट हो गई है वह यह है कि भारत सरकार की दृढ़ नीति ने ही उसे झुकने पर विवश किया है।

भारत सरकार को अपनी इस दृढ़ नीति को बनाये रखना चाहिये और भविष्य में भी ऐसे ही सशक्त पग उठाने चाहिये ताकि हमारे इस पड़ोसी राज्य से भाग कर और तामिल शरणार्थी हमारे देश में न आयें और जो अभी तक आये हैं उनकी वापसी की भी शीघ्र व्यवस्था हो सके और उनका जो सामूहिक वध किया जा रहा है, उसकी रोकथाम की जा सके। इसी भांति दक्षिण सागर में जो भारतीय नाविक अपनी जीविका उपार्जन के निमित्त कार्य करते हैं, उन्हें श्री लङ्का की जल सेना द्वारा किसी भांति परेशान न किया जाए

सत्याचरण में ऐसी ही दृढ़ता के लिए वेद ने प्रेरित करते हुए कहा है।

"ध्रुव स्तिष्ठा ऽ विचाचलिः" (ऋ० १० ।१७३।१)

अर्थात् हमें ऐसा दृढ़ होकर खड़ा होना चाहिए कि हम न कभी डोलें और न ही हिलें।

नैतिक शिक्षा [धर्म शिक्षा] की पुस्तकों के सम्बन्ध में

समस्त आर्य शिक्षण संस्थाओ के सूचनार्थ:—नैतिक शिक्षा की पुस्तकों का (कक्षा १ से १२ तक) प्रकाशन आरम्भ है। अतः जिन शिक्षण संस्थाओं में उक्त पुस्तकें उपलब्ध न हों वे शीघ्र ही, प्रदेशीय विद्यार्य सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ से पुस्तक प्राप्ती हेतु अपना आर्डर अग्रिम भेजने की कृपा करे।

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

स्थान—के. एम. बी. इण्टर कालिज अतरौली

जनपद—अलीगढ़

२१ जून से ३० जून सन् १९८७ तक

प्रिय सज्जनो !

प्राचीनतम सत्य सनातन वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृत, वैदिक सभ्यता एवं राष्ट्र की रक्षार्थ— चरित्रवान युवकों को संगठित और प्रशिक्षित करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है ताकि वे शारीरिक, आत्मिक सामाजिक उन्नति कर सकें। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु उपरोक्त तिथियों एवम् स्थान पर शिविर आयोजित है। जिसमें सार्वदेशिक, प्रान्तीय और जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी-नेता-साधु-संन्यासी महात्मा बौद्धिक प्रशिक्षण देने हेतु पधारेंगे। जिसमें आम जनता भी सम्मिलित लाभ उठा सकेगी। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अधिकारी एवं योग्यतम शिक्षकों के द्वारा आर्य वीरों को धार्मिक, नित्य कर्म, शारीरिक प्रशिक्षण, आसन, प्राणायाम, व्यायाम, सैनिक शिक्षा, विविध खेल, लाठी भाला आदि शस्त्र संचालन एवं वैदिक सिद्धान्तों पर प्रशिक्षण दिया जायेगा।

१—शिविरार्थी (आर्य वीर) प्रतिदिन शिविर में ही आवास एवं भोजन आदि करेंगे।

२—प्रवेश शुल्क २५ रु० मात्र है।

३—खाकी नेकर, सफेद कमीज, काला अन्डरवीयर, सफेद बनियान, थाली, लोटा, कटोरी, पहिनने के वस्त्र, बिस्तर, नोट-बुक, पेन्सिल, साबुन एवं तेल आदि आवश्यक सामान साथ लाना होगा।

४—टोपी, बैज, सीटी, डोरी, लाठी तथा साहित्य शिविर स्थल पर क्रय करने की सुविधा होगी।

५—प्रवेश २१ जून दोपहर १२ बजे तक होगा।

६—उद्घाटन समारोह २१ जून, सायं ३ बजे से श्री रघुवीर शास्त्री, प्रधान जिला सभा की अध्यक्षता में श्री बाल दिवाकर जी हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा होगा।

७—शिविर में स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, स्वा० ओमानन्द जी, महात्मा नारायण स्वामी, आचार्य देवव्रत जी, श्री सुखदेव शास्त्री (बौद्धिकाध्यक्ष) श्री पं० बालकृष्ण जी (संचालक) पश्चिमोत्तर प्रदेश, सच्चिदानन्द शास्त्री (मन्त्री) सा० आ० प्र० स० देहली, श्री इन्द्रराज जी (प्रधान), श्री प्रेमचन्द शर्मा हाथरस(उपप्रधान), श्री मनमोहन तिवारी (मन्त्री), श्री जितेन्द्र (उप मन्त्री), प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं श्री विजयपालसिंह (मन्त्री) जिला सभा पधारेंगे।

८—समापन समारोह उत्सव ३० जून, सायं ३ बजे से होगा।

९—प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं पारितोषिक वितरण किया जायेगा।

१०—सभी सज्जनों से निवेदन है कि तन-मन-धन से सहयोग कर शिविर को सफल बनावें।

नोट—पूर्व तारीख ११ जून से १५ जून थी विशेष कारणों से परिवर्तित कर दी गई है।

जयनारायण आर्य शिविराध्यक्ष
सराय ग्वालो, जयगंज, अलीगढ़
उप संचालक आर्य वीर दल उत्तरप्रदेश

आचार्य धर्मानन्द शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के सदस्य मनोनीत

हैदराबाद के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य धर्मानन्द शास्त्री को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की 'शास्त्री परिषद्' का सदस्य मनोनीत किया गया है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन सम्पन्न

श्री प्रो० वेदव्यास जी प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन आर्य समाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग में दिनांक ३१ मई को प्रातः १०—३० बजे आरम्भ हुआ, जिसमें पंजाब, हरियाणा जम्मू-कश्मीर, उ० प्र० एवं अन्य प्रान्तों से लगभग ३०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अधिवेशन से पूर्व आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में 'आर्य जगत्' के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार का आध्यात्मिक विषय पर ओजस्वी प्रवचन हुआ।

इस वर्ष लगभग ४० प्रतिनिधियों ने अपने विचार रखे। सभी प्रतिनिधियों ने सभा के पिछले वर्ष के कार्यों की प्रशंसा की तथा भविष्य में वेद प्रचार व अन्य कार्यों को बढ़ाने के लिए विचार रखे।

वर्ष ८७—८८ के प्रधान पद के लिये श्री हीरालाल चावला ने प्रो० वेद व्यास जी का नाम प्रस्तुत किया जिसका कु० विद्यावती आनन्द व श्री रामचन्द रिवाड़िया ने अनुमोदन किया। सभी सदस्यों ने करतल ध्वनि से इसका समर्थन किया। श्री प्रधान जी को उनकी कार्य कारिणी बनाने का सम्पूर्ण अधिकार दिया गया जो सर्व सम्मति से पारित हुआ।

अधिवेशन में ३०० प्रतिनिधियों के अतिरिक्त प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री रामचन्द्र विकल सांसद, पं० शिवकुमार शास्त्री पूर्व सांसद, प्रान्तीय महिला सभा की मंत्री श्रीमती प्रकाश आर्या, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष श्री अनिल कुमार आर्य के अलावा अनेक विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया।

अधिवेशन की कार्यवाही सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में समाप्त हुई।

श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश आरम्भ

सहायता व मान्यता प्राप्त, देश का सुप्रसिद्ध शिक्षणालय आपका चिर परिचित श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ अरावली की सुन्दर पहाड़ियों में गम्भीरी नदी के तट पर एकान्त स्थल पर अवस्थित है। शिक्षा यहां सर्वथा निःशुल्क है। देश के विभिन्न प्रान्तों के बालक बिना किसी भेदभाव के यहां शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आश्रम प्रणाली यहां की एक उल्लेखनीय एवं अनुपम विशेषता लिये हुये है। वेद, वेदांग, संस्कृत, साहित्य, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद् आदि की पढ़ाई को प्रमुखता दी जाती है। पहली से आठवीं तक यहां संस्कृत विशेष के साथ अर्वाचीन सभी विषय पाठ्यक्रम में हैं। संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से आर्ष पद्धति पर आधारित प्राचीन व्याकरण व वेद निरुक्त प्रक्रिया से मध्यमा शास्त्री व आचार्य कक्षा तक की पढ़ाई व परीक्षा का समावेश है। विगत वर्षों से यहां का परीक्षा परिणाम अति ही उत्तम रह रहा है पढ़ाई १, जुलाई से आरम्भ होती है,नवीन बालकों का प्रवेश २० जून से आरम्भ होता है। आप भी अपने बालक के भविष्य निर्माण की दिशा में उसे गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश दिलाकर निश्चिन्त हो सकते हैं। प्रवेश सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए मुख्याधिष्ठाता श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ राजस्थान ३१२००१, इस पते से पत्र व्यवहार या सम्पर्क करें।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५५५१
पंजीकरण सं० एल. डब्ल्यू/एन. पी. ७९
आषाढ़ कृष्ण ११
रविवार, २१ जून १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

१२९४६—श्री पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

गुरुकुल प्रभात आश्रम में प्रवेश परीक्षा

गुरुकुल प्रभाताश्रम भोलाझाल (टीकरी) मेरठ उ० प्र० में वर्ष १९८७–८८ के शिक्षा सत्र के अन्तर्गत नये प्रवेशार्थियों के लिए एक प्रवेश परीक्षा दि० २५–६–८७ को मध्याह्न १२ बजे सम्पन्न होने जा रही है। पंचम कक्षोत्तीर्ण मेधावी एवं स्वस्थ बच्चे ही परीक्षा के लिए आवें। प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों का प्रवेश ही सुलभ्य है। परीक्षा केवल एक ही चरण में ली जावेगी, बाद में आने वालों के लिए कोई स्थान नहीं है। अतः अभिभावकों से अनुरोध है कि उपर्युक्त पात्रता को पूर्णतया समझकर दि० २५–६–८७ को प्रातः १० बजे तक बच्चों को साथ लेकर उपस्थित होने का कष्ट करें।

विवेकानन्द सरस्वती
आचार्य
गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी)
भोलाझाल (मेरठ)

प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण संस्था है। १ म० कक्षा से लेकर विद्यालंकार (बी० ए०) तक शिक्षा देने का प्रबन्ध है।

उच्च प्रशिक्षण शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, चित्रकला, साइन्स, संगीत, गृहविज्ञान, सांस्कृतिक गतिविधि संस्था की आधारभूत विशेषतायें हैं। विस्तृत खेल के मैदान आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ। निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिये छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एवं इण्टर उत्तीर्ण कन्यायें भी प्रथम तथा तृतीय वर्ष में दाखिल हो सकती हैं।

शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। ८ जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव १०) भेजकर नियमावली मंगा सकते हैं।

दमयन्ती कपूर आचार्या
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय
६०, राजपुर रोड, देहरादून

शुद्धि आन्दोलन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के शताब्दी समारोह के अवसर पर दिनांक १७–५–८७ को प्रातः स्वामी सर्वानन्द की अध्यक्षता में यज्ञ कार्य आरम्भ हुआ। इस अवसर पर स्वामी सेवानन्द जी महामन्त्री हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति (हरियाणा) संभालका के प्रयत्नों से दो यवन मटों के परिवार के १३ सदस्यों को उनकी स्वेच्छा से शुद्धि की गई। प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, स्वामी ओमानन्द, पण्डित चन्द्रस्वरूप व मांगेराम भजनोपदेशक ने भी शुद्धि में भाग लिया और स्वामी सर्वानन्द जी ने शुद्ध हुये व्यक्तियों को आशीर्वाद दिया।

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

आदरणीय महोदय,

दि० २६–४–८७ का आर्यमित्र देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। संस्कृत भाषा के लिए किये जा रहे प्रयासों के लिये सद्भावना सहित अभिनन्दनम्। 'आर्यमित्र के १२, पृष्ठों में से एक या दो पृष्ठ संस्कृत समाचारों के लिये यदि आप नियमित रूप से प्रदान करें तो 'प्रभातम् संस्कृत समाचार सेवा' के माध्यम से संस्कृत समाचार हम लिखित रूप में आपके पास नियमित भिजवा सकते हैं। नमूने के लिए हम पृथक : सामग्री भेज रहे हैं। परस्पर योगदान से ही संस्कृत को जनवाणी का रूप दिया जा सकता है। शुभम्

सदीय—
कृष्ण नारायण पाण्डेय
समन्वय कुटीरम् ई–१०५२ राजाजीपुरम्, लखनऊ–२२६०१७

'आर्यमित्र' १० मई १९८७ के अङ्क में आपका लेख 'नहि त्वा कश्चन प्रति' में आपने; आचार्य प्रेम भिक्षु जी ने जो आचार्य श्रीराम श जिस पत्र का जिक्र किया है कृपया आप उस पत्र को 'आर्यमित्र' के अगले अङ्क में अवश्य प्रकाशित करें जिससे आचार्य श्रीराम के गुरुडम से अवगत हो सके तथा उनके अनुयायियों को इसके बारे में जानकारी दे सकें। तपोभूमि' मासिक पत्रिका का पता भी लिखें।

आपका स्नेहाकांक्षी—
यतीश गोयल
२८, चौक बाजार, बुलन्दशहर

[टिप्पणी—पत्र अतिशय विस्तृत होने के कारण उसे छापना सम्भव नहीं है। यह खुला पत्र 'तपोभूमि' के नवम्बर ८६ के अंक में प्रकाशित हुआ है। इस पत्रिका का पता यह है— 'तपोभूमि'
(मासिक पत्रिका) सत्य प्रकाशन
वृन्दावन (मथुरा)
—सम्पादक

श्री ज्ञानेन्द्र शास्त्री अस्वस्थ

आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान् श्री ज्ञानेन्द्र शास्त्री (बरेली) विगत कई मास से अस्वस्थ चल रहे हैं। ईश्वर उन्हें शीघ्र स्वास्थ्य दे यही कामना है।

—सम्पादक मण्डल

'वैदिक विवाह

आर्य समाज मन्दिर मीरजापुर में गत ३ जून को रात्रि बाराबंकी निवासी श्री भगवानदत्त के चि० पुत्र श्री धरमपालसिंह का शुभ विवाह सीतापुर निवासी श्री छोटेसिंह की आयु० कु० पुष्पासिंह के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

स्वत्वाधिकारणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

घोषणा पत्र स० ७/२८-२-८५

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

सम्पादक मण्डल-

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

वर्ष	९०
अङ्क	२५

पूर्व नियोजित दंगा किसने करवाया?

पाकिस्तानी जासूसों या अन्य साम्प्रदायिक ताकतो ने

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का मेरठ साम्प्रदायिक दंगे पर प्रभावशाली वक्तव्य

विगत दिनो यह समाचार पढकर बडा आश्चर्य और दु ख हुआ कि विरोधो दलो के सांसदो ने इतने लम्बे चौड़े साम्प्रदायिक दगे को छोड दिया, जिसमे १८ मई की रात्रि से १९ मई ८७ की साय काल तक जब तक पुलिस और सेना नहीं पहुची थी, हापुड रोड, गोला कूआ, भूमियापुल, हाशिमपुरा, गुलमर्ग, खता रोड, तारापुरो आदि क्षेत्रो मे जगल का राज्य बना रहा, जिसके कारण करोडो रुपये की सम्पत्ति जलकर भस्म हो गई और भारी सख्या मे नरसहार हुआ। इन सासदो ने केवल मलियाना की घटना पर ही अपने आपको केन्द्रित कर दिया। यह भी बड़े आश्चर्य की बात है कि सरकार ने केवल मलियाना की न्यायिक जाच के आदेश दे दिये हैं।

आर्य जगत यह पूछना चाहता है कि यह पूर्व नियोजित दगा किसने करवाया ? पकड़े गए पाकिस्तानी जासूसो ने अथवा अन्य साम्प्रदायिक ताकतो ने ? क्या यह बात न्यायिक जांच की नहीं है ? इस समय ठीक जानकारी प्राप्त कर तुरन्त ठीक इलाज करने की आवश्यकता है। अन्यथा यह साम्प्रदायिक विष देहातो मे फैल जायगा और गृह युद्ध का रूप ले लेगा। केवल मलियाना की घटना को लेकर दुनिया भर मे शोर मचाना भी किसी गहरे षड्यन्त्र का भाग हो सकता है। प्रतीत होता है कि विरोधी दल भी असलियत से हटकर केवल अपने निहित राजनैतिक स्वार्थों की मात्र पूर्ति कर रहे हैं और सरकार किंकर्तव्य विमूढ होकर हतप्रभ है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती ने माननीय प्रधान मन्त्री जी से मिलकर नौचन्दी के अवसर पर हुए दगे, दिल्ली के दगे और इस समय मेरठ के सम्पूर्ण साम्प्रदायिक दगो की न्यायिक जाच की माग की है जिसमे मलियाना भी स्वयमेव आ जाता है। इसलिए मै भी उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष की हैसियत से इसी माग को दोहराते हुए सम्पूर्ण मामले की न्यायिक जांच की मांग करता हू।

इस अभूतपूर्व दगे मे भारी धन और जन की हानि हो चुकी है। हम मेरठवासियो को इस पर पश्चाताप होना चाहिये और भविष्य मे हम सब को मिल जुलकर भाई चारे से रहना चाहिए तथा साम्प्रदायिक और असामाजिक तत्वों को कानून के हवाले करना चाहिए जिन्होने हमारे नगर का पिछले कुछ दिनो से सुख और चैन छीना हुआ है और सारे देश की जनता को खतरे मे डाला हुआ है।

हमारी यह भी माग है कि जिन सस्थानों की भारी आर्थिक हानि हुई है उनको सरकार की ओर से भरपूर मुआवजा मिलना चाहिये ताकि मेरठ नगर शीघ्र सभल सके और उसमे बसे गरीब आदमी मेहनत मजदूरी करके अपना पेट पाल सके।

जो आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

आषाढ शुक्ल २ सम्वत् २०४४ रविवार २८ जून १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

साम्प्रदायिक दंगे फिर पी० ए० सी० पर आक्षेप—एक घिनौनी चाल

इधर हमारे देश में कुछ बहुत ही अधिक साम्प्रदायिक दंगे होने लग गये हैं। एक स्थान पर शासन उसे शान्त करने का उपक्रम करता है तो—दूसरे स्थान पर वह उससे उग्र रूप में भड़क उठता है। अभी हाल में ही मेरठ का दंगा मेरी समझ में मेरठ के इतिहास में सबसे भयावह हुआ जहां प्रायोजित ढंग से लूट-मार हुई करोड़ो की सम्पत्ति जलाकर खाक कर दी गई। अनेकों निरोह लोगों की जानें गई। हम पहले भी लिख चुके हैं कि यह दंगे किसी वर्ग के आपसी साम्प्रदायिक मत—वैमनस्य के कारण नहीं, यह पूर्व नियोजित हैं। विदेशो शक्तियों के धन व इशारे पर—हुये हैं।

इन दंगों के पोछे राजनीतिक लबादा—ओढ़े उन तत्वों का हाथ है जो पिछले काफी दिनों से अपने उत्तेजक भाषणों व्यवहारों व गुप्त बैठकों द्वारा एक वर्ग विशेष की मनोभावना को दूषित करने मे संलग्न रहे हैं और आज भी संलग्न हैं। उन्हें प्रश्रय मिल रहा है विदेशों से। तलाशी में बरामद—पाकिस्तानी व चीनी हथियारों से यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया है—यदि ऐसे तत्वों को जब उन्होंने कानपुर के हलीम मुस्लिम कालेजमें विघटनात्मक देश द्रोहात्मक भाषण दिये थे जब दिल्ली के बोट क्लब पर—भारत की राष्ट्रीयता से अपने को सर्वथा पृथक् होने की अनैतिक आवाज उठाई थी और बगावत का नारा दिया था, तभी तत्काल गिरफ्तार करके उन पर देश द्रोह का मुकदमा चला कर सख्त सजा दी जाती तो—मेरठ में जो भी कुछ हुआ वह कतई न होता। ये साम्प्रदायिक विघटनवादी तत्व अपने—नियोजित ढंग से आग सुलगाते एवं फिर उसमे घी डालकर प्रचण्ड कर देते हैं। देश तबाह होता है जन धन सब नष्ट होने लगता है शासन—जब अपने कर्तव्य के अनुरूप इस—बवण्डर को समाप्त करने व शान्त करके अमन चैन के प्रयत्न में लगता है वे ही तत्व अपने एयर कण्डीशनबंगलोंमें बैठकर—अपने कारनामों को शासन, पुलिस, पी० ए० सी० पर थोपने की योजना बनाने में संलग्न हो जाते हैं।

देश के प्रायः सभी राजनीतिक दल—इन बातों को जानते या समझते नहीं ऐसा नहीं है। अपना वोट बैंक नहीं टूटने देना चाहते—इसलिए उनकी सभी हरकतों को नजरन्दाज करके उनके स्वर में ही स्वर मिला बैठते हैं, शासनपर दोष मढ़ने का।

पिछले ऐसे ही कई दंगों में जब सिविल पुलिस के कण्ट्रोल से स्थिति बाहर हो गयी तब सरकार ने वहां पी०ए०सी० व अर्द्ध सैनिक दलों को भेज कर उन दंगों पर काबू पाया तब उन धूर्त तत्वों ने पी० ए० सी० के विरुद्ध झूठे अनर्गल आरोप लगाये। सरकार भी सबको खुश रखने की नीति से उनके कहे अनुसार किसी के तबादिले किये या उनके विरुद्ध जांच के आश्वासन दिये। इस सबसे पंच मांगियों का मनोबल निरन्तर बढ़ता गया।

मेरठ के प्रायोजित दंगे के बाद भी वैसी ही आवाज उठाई जाने लगी। ऐसे नाजुक, समय में—किसी भी कारण से हो—-प्रदेश सरकार ने कई प्रशासनिक अधिकारियों के स्थानान्तरण करके अच्छा नहीं किया उससे उन अराजक तत्वों की बातों को ही बल मिल रहा है कि शायद वे अधिकारी दोषी हैं। जैसा कि अभी हाल में पुलिस महानिदेशक श्री दयाशंकर भटनागर के स्थानान्तरणसे हुआ। यह सुनिश्चित है कि मुख्य मन्त्री श्री वीर बहादुर सिंह को उनकी कर्तव्य निष्ठा में कतई सन्देह नहीं है और उनके स्थानान्तरणसे मेरठ दंगे का दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। परन्तु गलत लोगों को गलत प्रचार का अवसर तो मिला ही। आज देश की बिगड़ती स्थिति को प्रत्येक राजनीतिक दल को बड़ी गम्भीरता से लेना चाहिये अपनी ओछी वोट इकट्ठे करने की राजनीति छोड़कर देश हित मे सोचना चाहिये अन्यथा देश नष्ट हो जायेगा। किसी के तुष्टीकरण की नीति घातक होती है। पाप पाप है, अपराध अपराध है उसके लिए जाति धर्म वर्ग का भेद नहीं किया जा सकता।

मेरठ में जो कुछ भी हुआ बिल्कुल गलत हुआ। उसकी निष्पक्ष जाच करके अपराधियों को कठिनतम दण्ड देना चाहिये। ऐसे अवसर पर कुछ तत्वों द्वारा पी० ए० सी० को भंग करने या उसमें वर्ग विशेष को आरक्षण देने की मांग धूर्ततापूर्ण, देश विघाती है यह मांग अराष्ट्रीय तत्वों की है। शासन को ऐसी मांगे कतई स्वीकार नहीं करनी चाहिए पी० ए० सी० ने पक्षपात रहित निष्ठा पूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन किया है। आज हाशिमपुरा या मलियान में एक वर्ग के लोगों के त्रस्त होने के दुःख से दुखी होने के मगरमच्छी आंसू बहाने वाले उनके हितैषी नहीं उनके और देश के शत्रु हैं।

वहां पी० ए० सी० के जाने पर जब पूजा घरों से निरन्तर सड़क पर निकल कर जंग करने का ऐलान किया जा रहा था पी० ए० सी० द्वारा निरन्तर उक्त गत विधियों को बन्द करने की चेतावनी दी जा रही थी तब भी उसपर ध्यान न देना शासन के—प्रति बगावत नहीं तो और क्या है उस स्थिति में बगावत करने वालों पर हर स्थिति में कण्ट्रोल करना पुलिस पी० ए० सी० सेना सभी का धर्म बनता है। पी० ए० सी० ने वही वहां किया जो उसका धर्म था।

पूजा घरों की तलाशी का विरोध करके श्रीमती मोहसिना किदवई केन्द्रीय मन्त्रीने अच्छा नहीं किया उनका उस समय का रवैया पूर्णतया पक्षपात पूर्ण था। उससे अराजक तत्वों को बल मिला है, यह उनके पद की गरिमा के प्रतिकूल है।

अब सैय्यद शहाबुद्दीन, मौलाना बुखारी, सेठ सुलेमान आदि मेरठ के दंगे का सारा दोष सरकार और पी० ए० सी० पर मढ़ने की—कुत्सित चाल चल रहे हैं और विभिन्न राजनीतिक दल वोट बैंक सम्हालने के लालच में उन्हें सहयोग दे रहे हैं यह दुर्भाग्यपूर्ण है। अब

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वैदिक [illegible]

यज्ञ का वैज्ञानिक महत्व एव अग्निहोत्र

(रामस्वरूप देली सि० शास्त्री आर्य समाज, शाहपुरा—भीलवाड़ा)

"यज्ञ" शब्द संस्कृत भाषा में "यज्" धातु से बन है जिसका अर्थ देवपूजा, संगतिकरण एवं दान देवशब्द भगवान की दिव्य शक्तियों के लिये प्रयोग मे आता है, पूजा शब्द सत्कार अर्थ में प्रयुक्त होता है। इन दिव्य शक्तियों को परिपुष्ट करना ही इनका सत्कार करना है, दूसरा शब्द है, संगतिकरण, एक तत्व को दूसरे तत्व से मिलाने का अथवा संयोग करने का नाम संगतिकरण है, एवं इस संगतिकरण का जो वियोगात्मक फल प्राप्त होता है, जिससे त्याग भावना जागृत होती है, उसे दान कहा जाता है।

योगिराज श्री कृष्णचन्द्र जी ने गीता द्वारा उपदेश दिया है कि परमपिता परमात्मा ने यज्ञ के साथ सृष्टि की उत्पत्ति की। सम्पूर्ण प्राणियो का आधार अन्न है। अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है एवं वर्षा यज्ञ से। अतः प्रत्येक मनुष्य को यज्ञ करना चाहिये यह यज्ञ इच्छित कामनाओं का देने वाला है। योगेश्वर श्री कृष्णचन्द्र जी वेदों के ज्ञाता थे, ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में परमपिता परमात्मा ने उपदेश दिया है कि, हे मनुष्यो तुम सब अग्नि की आराधना करों यज्ञ के द्वारा देवताओं को बढ़ाओ इस प्रकार वर्तने से तुम्हें रत्नों के भण्डार प्राप्त होंगे। इस प्रकार के यज्ञ परकमंत्र वेदों में अनेक हैं। वेद ज्ञान का अथाह समुद्र है।

परम पिता परमात्मा के द्वारा निरन्तर यज्ञ कार्य चल रहा है। सूर्य अपनी आकर्षण शक्ति द्वारा पृथ्वी से जल को आकाश में खींचता, वहीं जैसे समय पाकर वायु के संयोग से मेघ बनकर धरती पर बर्षता है जिससे अन्न एवं अनेक प्रकार की वनस्पतियां उत्पन्न होती हैं इस प्रकार प्राणी मात्र का जीवन चल रहा है, परमात्मा की ओर से इस प्रकार चक्र चलता आ रहा है।

निरुक्तकार मे यज्ञ को श्रेष्ठतम कम बतलाया है, इस प्रकार परोपकार के जितने भी कर्म है वे सब यज्ञ की श्रेणी में आते हैं तालाब कुंआ, बावड़ी, आदि बनाना धर्मशाला बनवाना, भूखों को अन्न देना, प्यासो को पानी पिलाना, निःस्वार्थ भाव से रोगियो की सेवा एव विद्या दान करना आदि अनेक कार्य जिससे दूसरो का उपकार हो वे सब कार्य यज्ञ की श्रेणी मे आते हैं।

अब आप इस दैनिक अग्निहोत्र को लीजिये इसको भी यज्ञ कहते हैं। इसके अतिरिक्त बड़े यज्ञ भी होते हैं अश्वमेध-राजसूयं यज्ञ, वाजपेय यज्ञ इत्यादि। परन्तु ये यज्ञ व्यय साध्य होते है। ऋषि महर्षियों ने इस दैनिक अग्नि होत्र की गणना महायज्ञों में की है। ये महायज्ञ ५ हैं—ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्व देवयज्ञ, अतिथि यज्ञ। इस प्रकार इन महायज्ञों का पालन प्रत्येक गृहस्थ को नित्य प्रति करना चाहिये इन महायज्ञों का जो फल प्राप्त होता है वह अश्वमेधादि यज्ञों के करने वालो को भी प्राप्त नहीं हो सकता। इन पंच महायज्ञों में से यहां केवल देव यज्ञ की ही चर्चा कर रहां हूं।

इस दैनिक अग्निहोत्र में तीन वस्तुओं की आवश्यकता है। समिधा, घृत हवि-इन तीनों वस्तुओं को वेद मंत्रो के द्वारा सूर्य लोक तक पहुंचाया जाता है। द्यौलोक एवं अन्तरिक्ष लोक में पहुंच कर वायु मण्डल को शुद्ध करती है। वर्षा जल को पवित्र करत है जिससे प्राणी मात्र का भला होता है। स्वयं (यज्ञ कर्ता) का भला तो इससे प्रत्यक्ष होता है। इस अग्नि होत्र में प्रक्षिप्य घृत एवं औषधियों के प्रभाव से शरीर निरोग एवं स्वस्थ रहता है। जीवन शक्ति बढ़ती है, बच्चो के शुभ संस्कार बनते हैं इस प्रक्रिया के द्वारा कई प्रकार के रोगों का भी निराकरण किया जा सकता है, विज्ञान का विद्यार्थी इस बात को भली प्रकार जानता है कि अग्नि में समर्पित हुई वस्तु नष्ट नहीं होती वरन् शतगुण एवं सहस्त्रगुण शक्ति बढ जाती है।

हम अपने दैनिक जीवन में भी इस धरती पर मल-मूत्र विसर्जित करते हैं जिससे भी वायु में दुर्गन्ध फैलती है वह भी कई प्रकार के रोगों का कारण बनती है, उसको दूर करने का एक मात्र उपाय अग्निहोत्र ही है। अतः हम सबको मिलकर [परिवार सहित] अग्नि होत्र करना चाहिये जिससे परिवार सुखी एवं समृद्धि शाली बनेगा। यह एक सस्ते से सस्ता निरोग रहने का नुस्खा है। इस भयंकर मंहगाई में भी ३ अथवा ४ रुपयों में काम चल जाता है। वैसे कई महानुभाव इससे भी अधिक पैसा बीड़ी-सिगरेट-चाय, पान आदि में खर्च कर देते हैं साथ ही साथ कैंसर जसो भयंकर बीमारी भी प्राप्त कर लेते हैं। इसमें समय भी अधिक नहीं लगता केवल छोटी २४ आहुतियां दैनिक अग्निहोत्र मे दी जाती है इस प्रकार हम सबको समय एवं पैसा का सदुपयोग करना चाहिये।

दैनिक अग्निहोत्र में प्रयोग आने वाली समिधाओं में पलाश आदि की ही उपयुक्त मानी गई है जो सर्व सुलभ भी है। हवन सामग्री ऋत्वनुकुल जैसाकि पर्व पद्धति में वर्णित है प्रयोग में लेनी चाहिये। घृत गाय का ही सर्वोत्तम है, अमृत है महोषधि एवं इच्छित फल प्रदाता है दैनिक अग्निहोत्र के लिये सुसस्कारित एवं उत्तम सामग्री प्रयोग में लेनी चाहिये।

महाकवि कालिदास ने रघुवंस महाकाव्य मे लिखा है कि महाराज रघु के राज्य मे कोई ऐसा घर न था जिसकी छत अग्निहोत्र के धुऐ से काली न हो। अर्थात् प्रत्येक घर में दैनिक अग्निहोत्र चलता था, इसी कारण उन दिनो मे अतिवृष्टि अनावृष्टि भूकम्प, तूफान, झंझावात आदि का भय न था। आज तो दैवी प्रकोपो की भरमार है आपको यह तो मालूम है कि ३ दिसम्बर, १९८४ को भारत मे विश्व का महानतम प्रकोप भोपाल नगर में हुआ जिसमें सरकारी आंकड़ो के अनुसार २५०० मनुष्य काल कराल के गाल मे समा गये लाखो जन अपाहिज हो गये यह सब विषैली गैस रिसने के कारण वायु में प्रदूषण बढ़ गया। जिसका यह भयंकर प्रतिफल हुआ। इस प्रकार के वायु प्रदूषण दूर करने का एक मात्र उपाय अग्निहोत्र ही हैं। जिन महानगरों में बड़े-बड़े कल एवं कारखाने हैं वहां वायु प्रदूषण अत्यधिक बढ़ता है सरकार करोड़ों रुपया वायु प्रदूषण दूर करने मे खर्च करती हैं परन्तु वैज्ञानिक वैदिक विद्वानो के साथ इस वर्ग पर अनुसंधान कार्य करे तो करोड़ों रुपयो का काम सहस्त्रो रुपयों में हो सकता है अतः इस पर शोध कार्य होना चाहिये।

पं० वीरसेन जी वेदश्रमी वेदसदन इन्दौर वालों ने "यज्ञ महाविज्ञान" पुस्तिका लिखकर इस विषय पर विस्तृत एवं गंभीर विचार दिये हैं। अन्त में इस छोटे से लेख की समाप्ति पर यह समझ कर कि जो ब्रह्माण्ड में है वही पिण्ड में हैं परम पिता परमात्मा की ओर से जो यज्ञ चक्र चलता आ रहा है उसको दिव्य शक्तियों को परिपुष्ट करने के लिये हमें पारिवारिक जीवन में यज्ञ के वैज्ञानिक महत्व को समझकर नित्य अग्निहोत्र करना चाहिये।

———

विद्रोह को साम्प्रदायिक दंगे कहना विनाशकारी होगा

(श्री शिव कुमार गोयल, पिलखुआ गाजियाबाद)

दिल्ली और मेरठ में मई में हुए सांप्रदायिक दंगों को साधारण दंगा नहीं कहा जा सकता। मेरठ में १९३८ से लेकर अब तक एक दर्जन से ज्यादा दंगे हो चुके है किन्तु इस बार का दंगा सबसे ज्यादा वीभत्स था तथा राष्ट्रद्रोही व विदेशी तत्वों द्वारा पूर्ण योजना के साथ किया गया विद्रोह का पूर्वाभ्यास था।

पहले दिन का यह भयावह दृश्य हृदय को दहला देने वाला तो था ही इसे देखकर यह भी स्पष्ट हो जाता है कि यह विद्रोह प्रशिक्षित ट्रेन्ड दंगाईयों द्वारा महीनों तक तैयार की गई पूरी योजना का दुष्परिणाम था।

लाउडस्पीकरों से जेहाद की घोषणा

मेरठ में एक माह पूर्व १४ अप्रैल को भी इसी लिसाड़ी गेट क्षेत्र में शुब्बेरात के दिन दंगा हुआ था किन्तु उसमे एक दर्जन लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा था। इस बार के दगे को हत्याओं, लूटपाट और आगजनी में प्रवीण लोगों द्वारा ट्रेनिंग देने के बाद भड़काया गया था।

इन दंगों के लिये रमजान का महीना ही चुना गया इसीलिये राजधानी दिल्ली तथा मेरठ में एक साथ दगा भड़काया गया।

जिस प्रकार दिल्ली में जामा मस्जिद से भड़काने वाले भाषण देकर लूटमार व आगजनी शुरू हुई उसी प्रकार मेरठ मे १९ मई की प्रातः मोहल्ला इमलियान, हाशिमपुरा व अन्य क्षेत्रो की मस्जिदों से लाउडस्पीकर पर इस्लाम की रक्षा के लिए सड़क पर आने, काफिरों की हत्या कर डालने, उनकी सम्पति जला डालने की घोषणाएं कर जुनूनी लोगों की भीड़ को आगजनी व हत्याओ के लिए उकसाया गया।

दंगे की शुरुआत

१९ मई की प्रातः ५ बजे मस्जिदो के उत्तेजक आदेश सुनते ही इस्लामाबाद, इमलियान, शाहवीर गेट आदि क्षेत्र के लगभग तीन हजार जुनूनी दंगाई हाथों में फरसे, बन्दूके, देशी कट्टे, जलती मशालें, पेट्रोल भरे कनस्तर, सीढ़ियां लिए "पाकिस्तान जिन्दाबाद" के नारे लगाते हुए हापुड़ बस स्टेड के पीछे गोलकुआं पहुंचे। उन्होने वहां के सूत बाजार की १९ दुकानो के शटर तोड़े, माल लूटा तथा दुकानों को आग दी।

दंगाइयों की भीड़ वहां से पिलोखड़ी रोड बस दी। वहां के श्याम नगर व लक्खीपुरा क्षेत्रों में स्थित कपड़ा बुनाई व छपाई के दो दर्जन से ज्यादा कारखानों को आग लगाई जाने लगी। कमला प्रिन्टर्स, लक्ष्मी टेक्स टाइलस, सिंघवाल टेक्स टाइलस, चन्द्रा टेक्सटाइलस आर० के० टेक्सटाइल्स, ढिल्लन टेक्सटाइल्स आदि पर पहुंचकर दरवाजे तोड़े गये और आग लगा दी गई।

इन कारखानो के चौकीदारों व उनके परिवार के स्त्री-पुरुषों व बच्चों को भी आततायियों ने आग में झोककर जिन्दा जला डाला।

हैण्डलूम वस्त्र व्यापारी संघ के प्रधान श्री ओमप्रकाश खन्ना तथा व्यापारी नेता श्री सतीशचन्द्र सिंहल हमें बताते हैं—"चौधरी नेपालसिंह एडवोकेट के कृषि फार्म पर स्थित ढिल्लन टेक्सटाइलस में ही उसके मैनेजर व चौकीदार सहित आठ लोगों को उन्मादियो ने जलाकर राख कर दिया। चौकीदार ओमी, उसकी पत्नी शांति तथा एक नन्हें-मुन्ने बच्चे को आग में झोंक दिया गया। प्रायः हर कारखाने के साथ-साथ उसके चौकीदारों व परिवारजनों को आततायियों ने नृशंस हत्या कर डाला।

अरबों की क्षति

हैंडलूम वस्त्र व्यापारी संघ ने पहले दिन की इस क्षति को ही लगभग ५० करोड़ आंका है। मेरठ का हैंडलूम व पावरलूम उद्योग सारे देश में प्रसिद्ध हैं। यहां लाखों लोग इस उद्योग से आजीविका चलाते हैं। मेरठ की बनी खादी, खेस, लोई, चादरे, छींट विदेशों तक को निर्यात की जाती हैं। आततायी दंगाइयों ने पूरा गणित लगाकर हिन्दुओं को इस उद्योग से अलग करने की साजिश के अन्तर्गत यह आग जनी की। वे आवेश में यह भूल गये कि इसका दुष्परिणाम हजारो मुस्लिम बुनकरों व अन्य मजदूरो को भी बेकारी के रूप में भोगना पड़ेगा।

इन दंगों के पीछे विदेशी तत्व सक्रिय थे यह तथ्य तब सामने आया जब आगजनी व हत्याओं की घटना के दौरान चार पाकिस्तानी नागरिक पुलिस ने रंगे हाथों पकड़े। पकड़े गये पाकिस्तानियों ने स्वीकार किया कि उन्हें पाकिस्तान में ट्रेनिंग दी गयी।

पहले ही दिन पचासों लोगों की हत्या कर दिये जाने तथा करोड़ों रुपयों की सम्पति जला डालने से जब स्थिति प्रशासन व पुलिस के नियंत्रण में नहीं रही तो अगले दिन पी० ए० सी० व सेना को बुलाना पड़ा। दंगाइयो ने फैक्ट्रियां व दुकानें जलाने के बाद धर्मस्थलों व मकानो की छतों पर मोर्चे लगाकर पुलिस, पी० ए० सी० व अन्य नागरिको पर गोलियों व बमों की बौछार शुरू कर दी। तेजाब की बोतलें फेंकी जाने लगी।

साम्प्रदायिकता विरोधी कमेटी के नेता तथा नानकचन्द कालेज के राजनीति विभाग के अध्यक्ष डा० हरपालसिंह के एक मात्र युवा पुत्र डा० प्रभात किसी मुस्लिम मरीज को जान बचाने कार से हापुड़ जा रहे थे। हापुड़ रोड पर दंगाइयों ने उनकी कार रोककर जला डाली डा० प्रभात को छुरी से घायल कर जलती कार पर डाल कर जला दिया गया। इस प्रकार हत्याओ, आगजनी व गोलीबारी का खुला ताण्डव चलता रहा। शास्त्री नगर के एक ब्लाक पर भी हमला कर कोठियों में आग लगाई गई।

राज्य के मुख्यमन्त्री श्री वीरबहादुरसिंह भागे-भागे अगले ही दिन मेरठ पहुंचे। उन्होंने स्वयं देखा कि दंगाई पुलिस व पी० ए० सी० पर मोर्चे लगाकर गोलियां बरसा रहे हैं. बम फेंक रहे हैं। अन्त में सेना को बुलाना पड़ा।

सेना के जवान तलाशी लेने हाशिमपुरा, इमलियान, गुदड़ी बाजार इस्लामाबाद आदि क्षेत्रों में पहुंचे तो उनपर भी हमले किये गये।

मलियाना की वास्तविकता

इन दिनों विपक्षी राजनीतिक दलों के संसद सदस्य मलियाना कांड के नाम पर पी० ए० सी० के अत्याचारों का प्रचार कर रहे हैं। मलियाना गोलीकांड में कुछ लोग मारे गये यह बात सत्य है किन्तु यह कांड क्यों हुआ इसकी पृष्ठभूमि में जाने का किसी ने भी कष्ट नहीं किया। इन विपक्षी सांसदों, जामा मस्जिद के इमाम मौलाना बुखारी तथा मियां शहाबुद्दीनने मलियाना कांड को तूल देकर पी०ए०सी० को दोषी ठहराना शुरू कर दिया। उस पर नरसंहार करने के आरोप लगाये जाने लगे।

मैं मलियाना कांड की सही जानकारी लेने मलियाना गया। वहां के अनेक हरिजन नेताओं तथा संभ्रान्तनागरिकों ने अनेक प्रमाण देकर बताया कि २३ मई को यदि पी० ए० सी० दंगाइयों की गोलियों से बचाव के लिए गोली नहीं चलाती तो पी० ए० सी० के तमाम जवान तथा गांव के सैकड़ों लोग वहीं ढेर कर दिये जाते। क्रमशः

राष्ट्र निर्माण

भ्रष्टाचार को मिटाओ अन्यथा वह हमें मिटा देगा

(श्री ज्येष्ठवर्मन, एम एस १९-६६०, चेम्बूर कॉलोनी ,बम्बई-४०००७४)

[गताङ्क से आगे]

गत वर्ष जून महीने मे, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने पत्रकारो के सामने यह स्वीकार किया कि भ्रष्टाचार के कारण, सरकारी कामकाज मे काफी शिथिलता आ चुकी है, क्या इसका फल सारे राज्य के लोगो पर नहीं पडेगा ?

आजकल किशोर बालिकायें और जवान औरतें यदि पुलिस स्टशन मे शिकायतें लेकर जाती हैं, वे पुलिस द्वारा बलात्कार की शिकार बन जाती हैं। कुछ वर्ष पूर्व, रोशन, राजू और सतीश नाम के तीन किशोर बच्चे दिल्ली से बम्बई की ओर रेल गाडी पर सवार हुए थे, कुछ दिन बाद रोशन और सतीश वापस लौटे पुलिस ने उनको गिरफ्तार करके जोर और जुल्म का इस्तेमाल करके उनसे स्वीकार कराया कि उन्होने राजू की हत्या की थी लेकिन कुछ दिन बाद राजू वापस लौट आया। दो वर्ष पूर्व कर्नाटक मे, एक जुवारी आदमी ने अपनी ही बीबी के सोने के आभूषणो को चोरी से बेच डाला और बदनामी से बचने के लिए पुलिस को चोरी होने की शिकायत की। पुलिस ने एक निर्दोष नव-विवाहित युवक को गिरफ्तार करके उसकी पत्नी के आभूषणो को मगवा लिया और उसे किसी सोनार के पास ले जाके पिघलाकर, इस प्रकार का रिपोर्ट बना लिया कि उस युवक ने ही चोरी करके, उस सोनार के पास जाकर उसे पिघलाकर कहीं बेचा था। बीच में पुलिस ने उस युवक को बेरहमी के साथ मार मारकर अधमरा सा कर दिया था। अयोग्य पुलिस द्वारा इस प्रकार अपनी कार्यक्षमता का प्रमाण देने के लिये, निरपराधियो को सताने के मामले इन दिनो बहुत सामने आ रहे है। चोर, डाकू, स्मगलर, अवैध दारु के धन्धेवाले चरस और गाजा बेचनेवाले गुंडे बदमाशो के साथ पुलिस का सीधा सम्बन्ध है। पोलिटीशियन और गुनाहगारो का भी इसी प्रकार सम्बन्ध स्थापित है। इनको पता है कौन कहाँ है। इस प्रकार के भ्रष्ट पुलिस और भ्रष्ट पोलिटीशियन किसी भी दिन सारे देश मे आतकवाद फैला सकते हैं, और प्रजातत्र का अन्त कर सकते है।

सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता श्री नानी पालखीवाला ठीक ही कहा करते हैं कि हमारे देश मे ऐसी कानून व्यवस्था है कि इसके कारण गुनाहगारो का जीवन सुखमय हो गया और न्यायप्रिय सज्जन लोगो का जीवन दु खमय हो गया है। यह भ्रष्टाचार की महिमा। यदि इसे समय रहते मिटाने का प्रयत्न नहीं किया गया, तो निश्चित वह हमे मिटा देगा।

कुछ अत्यल्पसख्या मे रहने वाले प्रमाणिक सरकारी अधिकारी और पोलिटीशियन इस बारे मे कुछ नहीं कर पायेंगे। ऐसे कितने ही मामले सामने आये है जिसमे प्रामाणिक और दक्ष सरकारी अधिकारी, न्यायाधीश, पुलिस आदि को भ्रष्ट मिनिस्टर्स और पोलटीशियन्स ने अपमानित और कार्य करना मुश्किल कर दिया है। जब तक जनता नहीं जागेगी तब तक कुछ नहीं होगा और जब-जब जनता जागी, तब उसे सफलता भी मिली। कुछ वर्ष पूर्व हमाराष्ट्र मे एक प्रामाणिक और कर्तव्यनिष्ठ जिलाधिकारी श्री अरुणकुमार भाटिया को इसलिये स्थानातरण कराया गया था कि वह राजनैतिक लोगो के दबाव मे आकर कोई गैरकानूनी कार्य करने से इन्कार करता था। इसी प्रकार एक दूसरे जिला परिषद के अधिकारी श्री सुबोध कुमार के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया गया था। श्री सुबोध कुमार ने दो वष पूव तत्कालीन महाराष्ट्र के मुख्यमत्री श्री वसतराव पाटील के शिफारिस लानेवाले ३६ अयोग्य उम्मीदवारो को जिला परिषद की सेवाओ मे नियुक्त करने से इन्कार किया था। उक्त दोनो प्रसगो पर जन आन्दोलन हुए और सरकार को अपना निणय बदलना पडा।

घूसखोरी या भ्रष्टाचार के विरुद्ध आज देश मे जो कानून जारी हैं वे अत्यन्त दोष पूण है। भारतीय सविधान, धारा३११(२) जिसके अन्तर्गत, भ्रष्ट और अयोग्य सरकारी कर्मचारियो को सजा देने की जो व्यवस्था है, उससे कोई भी नहीं डरता। आज दुनिया मे सरकारी नौकरी की इतनी भ्रष्टता अन्य किसी भी देश मे नहीं है जितनी भारत मे है। जब एक भ्रष्ट और अयोग्य अधिकारी को ट्रासफर या निलबित करने का आदेश आ जाता है तब तक वह इतना पैसा कमा लिया होता है कि नौकरी से जिन्दगी भर उसको इतना नहीं मिल सकत है। इसलिये कानून मे सशोधन होना आवश्यक है।

प्राचीन भारत मे इतना भ्रष्टाचार कभी नहीं था। क्योकि तब यहाँ की न्यायव्यवस्था बहुत अच्छी थी। मनुस्मृति कहती है—

ये कार्यिकेभ्यो धर्मंब गृह्णीयु पापचेतस

तेषा सर्वस्वमादाय राजा कुर्यात्प्रवासनम्

(अध्याय ७, श्लोक १२४)

अर्थात्, जो सरकारी नौकर कार्यार्थी लोगो से पैसे लेते हैं, उनकी सारी सम्पत्ति, न्यायपूर्वक अर्जित, और अन्याय पूर्वक अर्जित इस तरह दोनो प्रकार की सम्पत्ति को, जब्त करना चाहिये और उन भ्रष्ट अधिकारियो को देश से बाहर निकाल देना चाहिये। और—

कार्षापण दडयो यत्रान्य प्रकृतो जन

तत्र राजा भवेद् दडल. सहस्रमिति धारणा

(अध्याय ८ श्लोक ३३६)

अर्थात्, जहा एक अपराध के लिये एक सामान्य नागरिक को जो सजा मिलती है, वहाँ उसी अपराध को करने वाले राजा को उससे हजार गुना अधिक सजा मिलनी चाहिये।

आज हमारे देश मे सौ दो सौ रुपये चुरानेवाले थाने मे बन्द किये जाते हैं और लाखो करोडो की चोरी करनेवाले मौज के साथ घूमते हैं और मिनिस्टर भी बनते हैं। फिर भ्रष्टाचार क्यो नहीं बढेगा ? यदि मनुस्मृति के अनुसार कानून बनाये जायेंगे तो उसका प्रभाव अवश्य दिखेगा। कुछ इस्लामी देशो मे आज भी कठोर दण्ड के कारण अपराधो की घटनायें बहुत कम होती हैं। इससे भी हम सबक सीख सकते हैं। आज सरकार की ओर से राजनैतिक नेताओ और उन्नत पदाधिकारियो के पास कितनी वैध अवैध सम्पत्ति है, और उनके वर्तमान् स्थान पर आने के पूर्व उनकी आर्थिक स्थिति क्या थी इन बातों की जाच करवाया जाना चाहिये और इसे भ्रष्टाचार के लिये प्रमाण के रुप मे लिया जाना चाहिये। फिर तदनुसार उनके खिलाफ कठोर दण्ड क कदम उठाया जाना चाहिये।

[शेष पृष्ठ ८ पर]

बुखारी के कहने से पुलिस अफसरों के तबादले न करें

दिल्ली प्रदेश हिन्दुस्थान हिन्दू मन्च के महामन्त्री श्री किशन स्वरूप गोयल ने एक वक्तव्य में दिल्ली के प्रशासक उप राज्य पाल से यह मांग की है कि वह इमाम बुखारी के कहने पर दिल्ली पुलिस अफसरों के तबादले की प्रक्रिया न अपनायें क्योंकि ऐसा करने से जहां दिल्ली पुलिस का मनोबल गिरेगा वहीं दूसरी ओर मजहब के जनूनी इमाम बुखारी को देश में इस प्रकार के नियोजित ढंग से दंगे कराने को भी प्रोत्साहन मिलेगा। उसने अपने एक बयानमें यहां तक धमकी दी है कि यदि उसकी मांगें न मानी गईं और दिल्ली के पुलिस अफसरों के खिलाफ कार्यवाही न की गई और उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री को बर्खास्त न किया गया तो मुसलमानों के युवा वर्ग में व्याप्त रोष उग्ररूप धारण कर सकता है जो खतरनाक साबित हो सकता है।

बड़ी ही अजीब सी बात है कि दिल्ली प्रशासन ने अभी तक इस प्रकार के गद्दार व्यक्ति को जेल के सीखचों मे बन्द नहीं किया जबकि इन सभी दंगों की जड़ इमाम बुखारी का जामा मस्जिद की रैली में हजारों की संख्यामें शामिल मुसलमानोंके सामने दिया गया वह उत्तेजक और जहरीला भाषण ही जिम्मेवार है जिसमें उसने कहा था कि यहां का मुसलमान इस देश को अपना मादरे वतन नहीं मानता, यहां की सरकार को अपनी सरकार नहीं मानता और यहां की अदालतों को मुसलमानों के मामलों में कोई निर्णय देने के अधिकार को नहीं मानता और न ही वह इन अदालतों के फैसले को मानने के लिये बाध्य हैं। ऐसा जहरीला भाषण राज देशद्रोह है। यदि उसी दिन दिल्ली प्रशासन या केन्द्र सरकार ने इमाम बुखारी जैसे कट्टर पन्थी, शहाबुद्दीन तथा अन्य मुस्लिम लीगी मजहब के जनूनी लोगों को गिरफ्तार कर उन पर देशद्रोह का मुकदमा चला दिया होता तो न तो यह दंगे होते और न ही इमाम को जामा मस्जिद बन्द करने और इस तरह की बकवास करने का अवसर मिलता।

कार्यालय मन्त्री

साम्प्रदायिक दंगे फिर पी. ए. सी. पर आक्षेप एक घिनौनी चाल

(शेष पृष्ठ २ से आगे)

कि उन्हे ऐसा न करके देश हित मे निष्पक्ष सर्वांगीण जांच की ही मांग करनी चाहिये थी।

सरकार का धर्म प्रदेश व देश में पूर्ण शांति सौहार्द स्थापित करना होता है। न्याय सबको देना उसका धर्म बनता है। अत: केन्द्र व प्रदेश सरकार इस विषय को बहुत गम्भीरता से ले, मेरठ के दंगे की सम्पूर्ण रूप से निष्पक्ष जाँच कराके उसके मूल में देखें दंगा किसने भड़काया, क्यों भड़काया, भविष्य में न भड़का सके ऐसी दृढ़ व्यवस्था करे।

एक पक्षीय जांच की मांग—चाहे वह कितने ही बड़े नेता की हो—वह साम्प्रदायिक है। सरकार को अपने कर्तव्य का पालन करके दोषियों को ऐसा दण्ड देना चाहिये कि वे दुबारा ऐसी हरकतें करने की हिम्मत न कर सकें।

पी० ए० सी० के निष्ठापूर्ण कर्तव्यों के प्रति सन्देह की—कतई गुंजाइश नहीं है इसे सर्व साधारण में दृढ़ता से शासन स्पष्ट करे। उसे भंग करने या उसमें वर्ग विशेष को आरक्षण देने की मांग एक साम्प्रदायिक विघटनवादी कुत्सित चाल है इसे सरकार कतई स्वीकार न करें।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

आवश्यकता

श्री मद्दयानन्द अनाथालय यमुना ब्रिज आगरा संचालित द्वारा आर्य समाज आगरा नगर, फ्रीगंज महर्षि दयानन्द मार्ग, आगरा में निम्न पदों पर स्थान रिक्त हैं।

(१) प्रबन्धक (अधिष्ठाता) शिक्षा गुरुकुल, वैदिक सिद्धांतों से परिपूर्ण आयु सीमा ४० वर्ष से अधिक। आर्य वानप्रस्थी या रिटायर्ड आचार्य को वरीयता प्रदान की जावेगी, सुन्दर आवास व भोजन आदि की समुचित व्यवस्था मासिक वेतन सहित।

(२) लिपिक जो कैश बुक, लैजर ठीक प्रकार से लिख सके और कम-से-कम ५ वर्ष का अनुभव हो व वैदिक सिद्धांता से परिपूर्ण हो। आवास व भोजन के साथ वेतन योग्यता नुसार।

(३) महिला अधिष्ठाता जो कि कन्या आश्रम में बालिकाओं को सभी प्रकार की शिक्षा दे सके व सभी व्यवस्था देख सके, योग्यता—गुरुकुल स्नातिका। रिटायर्ड प्राचार्या, एवं वैदिक सिद्धान्तानुयायी होना आवश्यक है। आयु सीमा कम-से-कम ४० वर्ष। आवास एवं भोजन सहित वेतन योग्यता नुसार।

(४) एक चौकीदार जो वैदिक सिद्धांतों एवं आर्य विचार धारा पर चलने वाला हो। वेतन आवास व भोजन के अतिरिक्त योग्यता नुसार।

कृपया प्रार्थना-पत्र निम्न पते पर भेजें।

मन्त्री आर्य समाज आगरा नगर
महर्षि दयानन्द मार्ग, फ्रीगंज आगरा।

प्रभात आश्रम की ओर से मेला प्रचार

दिनांक ७ जून को गंगा दशहरा मेले पर भोला झाल मेरठ में गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ की ओर से वेद प्रचार कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सर्वप्रथम गुरुकुलके ब्रह्मचारियों द्वारा एक भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। तत्पश्चात् यज्ञ भजन तथा ब्र० वाचस्पति एवं राजेन्द्र द्वारा एक सुन्दर भक्ति रसपूर्ण भजन हुआ जिसे सुनकर श्रोता मुग्ध हो गये। श्री कर्णसिंह जी भजनोपदेशक के भजन के पश्चात् गुरुकुल के आचार्य वेद मर्मज्ञ तपोमूर्ति स्वामी विवेकानन्द जी महाराज का सवा घण्टे तक मार्मिक प्रवचन हुआ। इस वर्ष मेरठ में उपद्रव के कारण मेला पूर्ण रूप से प्रभावित था किन्तु आश्रम ने अपने प्रचार यज्ञ को नहीं छोड़ा।

संस्कृत माध्यमिक पाठ्यक्रम में अनिवार्य हो

संस्कृत रक्षा हेतु निम्न लिखित संस्थाओं से और पारित प्रस्ताव प्राप्त हुए—

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा बरेली, वेद संस्थान राजौरी गार्डन नई दिल्ली, आर्य समाज सराय तरीन हयात नगर (मुरादाबाद), आर्य समाज रानी मन्डी इलाहाबाद, आर्य समाज दयानन्द नगर—गाजियाबाद।

मानव धर्म के आधार

—श्री जगदीश शरण 'शीतल, चान्दपुर (बिजनौर)

दयालु, न्यायकारी परमपिता परमात्मा ने आपको आपके शुभ कर्मानुसार मानव तन तो प्रदान कर दिया। परन्तु अब सही अर्थों में मनुष्य बनने तथा इसको सफल और सार्थक करने के लिए जीवन में चार बातें धारण करो।

(१) मैत्री (२) करुणा (३) मुदिता (४) उदासीनता।

(१) किसी को अपना शत्रु न समझ कर सबसे मैत्री भाव रक्खो। एक समय विश्वा मित्र अपने साथियों सहित महर्षि वशिष्ट का वध करने के लिए उनके आश्रम के समीप इधर उधर छिप कर बैठ गये। रात्री का समय था संयोग वश उस समय वशिष्ठ तथा उनकी पत्नि में विश्वामित्र के ही विषय में चर्चा हो रही थी। उनकी पत्नि कह रही थी कि विश्वामित्र ने अकारण ही हमारे पुत्रों का वध करवा दिया और अब भी हाथ धो कर हमारे पीछे पड़े हैं। हमने उनका क्या बिगाड़ा है। वशिष्ट बोले भद्रे! तुम नहीं जानती, विश्वामित्र कितने त्यागी और तपस्वी हैं। परन्तु अधिक क्रोधी होने के कारण मै उन्हें ब्रह्म ऋषि नहीं कहता।

यदि वह अपना क्रोध त्याग दें तो उसी समय ब्रह्म ऋषि कहलाने के अधिकारी हो जायें। विश्वामित्र का यह सुनना था वह वशिष्ठ के चरणों में आकर गिर गये और अपने षड्यंत्र को रो २ कर कहने लगे। वशिष्ठ ने उनको उठाकर अपने गले लगा लिया और कहा, आज आपने अपने क्रोध पर विजय पाली। अब आप ब्रह्म ऋषि कहलाने के अधिकारी हो। यह है मित्र भाव रखने का परिणाम। मैत्री भाव रखने वाला व्यक्ति सब का प्रिय होता है। उसका कभी अहित नहीं होता।

(२) दीन दुखियों पर दया और यथा शक्ति तन मन धन से उनकी सहायता करना ही करुणा है। एक बार महर्षि दयानन्द भ्रमण के लिये जा रहे थे। मार्ग में क्या देखते है कि एक बैल गाड़ी दल दल में फंसी है। गाड़ी वाला बैलों को बुरी तरह मार रहा था। परन्तु दल दल से निकलना बैलों की सामर्थ से बाहर था। वह निः सहाय होकर थर थर कांप रहे थे। बैलों की यह दुर्दशा देख कर स्वामीजी बड़े दुखी हुए और तुरन्त दल दल में कूद पड़े। गाड़ी वाले से कहा-बैलों को जुए से निकाल दो। बैल जुए से निकल गये। स्वामीजी ने जुए को कंधे पर रक्खा और अकेले ही गाड़ी को खींचकर दलदल से बाहर कर दिया। इतने में स्वामीजी के कुछ भक्त उधर से आनिकलें।

स्वामीजी को कीचड़ में सना हुआ देखकर उनको बड़ा दुख हुआ। परन्तु स्वामीजी से सारी घटना सुनकर कहने लगे महाराज आपको स्वयं कार्य करने की क्या आवश्यकता थी हम कुछ व्यक्तियों को बुला कर यह कार्य करवा देते। स्वामीजी ने उत्तर दिया—महाशय जब तक आपके व्यक्ति आते उस समय तक इन बैलों पर मार पड़ती ही रहती। मुझे ऐसा ज्ञात हो रहा था कि जैसे यह मार मुझ पर ही पड़ रही हो यह है दीनो पर दया और उनकी सहायता।

(३) दुख सुख में समान रहना। उन्नत और प्रगतिशील व्यक्तियों से ईर्ष्या वह द्वेष न करके प्रसन्न होना ही मुदिता है। भगवान राम को राज्य तिलक की घोषणा होने पर न हर्ष था और न ही बनवास मिलने पर कोई दुख और अशान्ति। दोनों दशा में उनके मुख मंडल की मुद्रा में कोई अन्तर न होकर समभाव था। दूसरे जो उन्नत और प्रगतिशील व्यक्ति हैं उनको देख कर प्रसन्न होना चाहिये। जिससे आप भी वैसी ही प्रगति और उन्नति कर सकें। ईर्ष्या और द्वेष करने वाला मनुष्य किसी का कुछ न बिगाड़ कर स्वयं ही नष्ट हो जाता है।

(४) दुष्ट और बुरे व्यक्तियों से दूर रहना ही उदासीनता है। उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध तथा सम्पर्क न रख कर दूर रहने में ही लाभ है। कीचड़ में पत्थर मार कर अपने ही कपड़े गन्दे और मैले करोगे।

सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें ?

[सकंलन कर्त्ता—श्री लालता प्रसाद, उपदेशक आ० प्र० सभा, लखनऊ]

[१] सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने और विचारने से भूत, प्रेत, जिन राहु, केतु, शनैश्चर आदि ग्रहों के अन्ध विश्वास दूर हो जाते है। इन अन्धविश्वासों मे पौराणिक, जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई, मुसलमान, सब ही फंसे हुये हैं, और कष्ट उठाते है।

[२] सत्यार्थ प्रकाश को मन लगाकर पढ़ने से मजहबी, प्रसंकिर्णता दूर होकर तर्क में रुचि बढ़ेगी। [समुल्लास ७, ११]

[३] सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने से "स्वराज्य" मे प्रेम बढ़ेगा, स्वदेश भक्ति और राष्ट्रीयता एकता के भाव दृढ़ होगे। [समुल्लास ८]

[४] सत्यार्थ प्रकाश बताता है कि मानव मात्र कभी एक ही हैं।

[५] सत्यार्थ प्रकाश सिखाता है कि सब के साथ उत्तम व्यवहार ही धर्म का प्रथम अंग है।

[६] सत्यार्थ प्रकाश सत्य का प्रकाश करने की प्रेरणा देता है। मैंने एक बार एक मुसलिम विद्वान् मौलाना फजले अली साहब लखनवी से पूछा कि-हजरत आदम से लेकर हजरत मूसा तक ईश्वर की कौन सी किताब कानून के रूप में थी ? तो वह बहुत सोचकर बोले कि—हजरत आदम दस सहीफे अल्लाह से लाये थे जो कि 'सुरमा' जुबान में थे और अब लापता हो गये। वे कानून उस वक्त थे। मैने उन्हे बताया कि वे दस सहीफे हैं ऋग्वेद के दस मण्डल जो सुरमानी (सुवाणी) देववाणी में हैं और आर्यों के पास सुरक्षित है। वह मुसलिम—विद्वान् मौलाना फजले साहब प्रसन्न होकर बाले ठीक है। वेद ही इलहामी किताबें हैं, हमें उनकी कदर करनी चाहिये।

[७] ऋषि ने अपने देश के निवासियों तथा समस्त विश्व को सत्यार्थ प्रकाश के रूप मे वसीयत दी है—श्री श्यामा प्रसाद मुकर्जी

[८] मौलाना अलताफ हुसैन 'हाली' ने सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास पर लिखा है कि "मुसलमानो ने चौदहवां समुल्लास पढ़ा होता तो कभी ये घृणित आन्दोलन न करते।"

[१०[गुरुदेव रचित सत्यार्थ प्रकाश मेरे जीवन मे प्रकाश देने वाले सूर्य के समान है। ऋषि दयानन्द मेरे गुरु है। मैने ससार मे उन्ही को गुरु माना है। वे मेरे धर्म पिता है और आर्य समाज मेरी माता है।

—लाला लाजपत राय

छोटा नागपुर में आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापित

स्वामी श्रद्धानन्द पथ स्थित आर्यसमाज मन्दिर मे छोटा नागपुर के आर्यसमाजों के प्रतिनिधियो ने पं० जयमंगल शर्मा के सभापतित्व में सर्व सम्मति से छोटा नागपुर क्षेत्र में वैदिक धर्म का प्रचार करने एवं आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ़ बनाने के लिए सर्वसम्मति से छोटा नागपुर में आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना ३१ मई ८७ को की।

सम्प्रति इस सभा का कार्यालय आर्य समाज मन्दिर रांची में रखा गया है। सभा की नियमावली बनाने और इसका पंजीकरण कराने के साथ-साथ आगामी रथ यात्रा के अवसर पर जगन्नाथपुर मेले में प्रचार कैम्प लगाने का भी निर्णय किया गया। सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान—पं० जयमंगल शर्मा (रांची)
मन्त्री—श्री दयाराम पोद्दार (रांची)
कोषाध्यक्ष—श्री भोलाराम सैनी (रांची)

भ्रष्टाचार को मिटाओ अन्यथा वह हमें मिटा देगा

[पृष्ठ ५ का शेष]

हमारे देश मे मुख्यमन्त्रियो को, और प्रधानमन्त्रियो को कानून से ऊपर रखने के प्रयास किये जा रहे हैं। यह बिलकुल गलत है। देश मे कानून सर्वोपरि होना चाहिये और जिम्मेवारी की मात्रा के अनुसार, सजा की मात्रा मे भी वृद्धि होनी चाहिये, यही सही न्याय व्यवस्था है।

आज लोगो के सामने एक दूसरी समस्या यह है कि, उनकी अर्जियाँ, आवेदन पत्र, आदि का बर्षों तक सरकार से उत्तर नहीं मिलता। यदि कोई बडे आदमी की सिफारिश ले जाता है या सम्बन्धित अधिकारियो को खुश करता है तभी उसका काम हो पाता है। इसको भी रोकने की आवश्यकता है।

तीसरी बात यह है कि "यथा राजा तथा प्रजा" वाली बात को ध्यान मे रखते हुए, उन्नत पदो पर उन्हीं लोगो को बिठाया जाना चाहिये जिनका जीवन स्वच्छ सिद्ध हुआ है अथवा जिसको कोई कलक नहीं लगा हुआ है।

इस सुधार के साथ न्यायाधीश और पुलिस कर्मचारियो की सेवा-स्थिति को भी आकर्षक बनाने की बडी आवश्यकता है। क्योकि कानून कायदे की रक्षा का दायित्व इन्ही के हाथो मे है। उनको प्रामाणिकता और साहस के साथ काम करने के लिए उनकी आर्थिक स्थिति सुधार देना अत्यावश्यक है। फिर, चुनाव पद्धति मे सुधार भी कम महत्व का नहीं। गुनाहगारो को मतदान का हक और चुनाव लड़ने का भी हक नहीं होना चाहिए।

एक चौथा कदम, जिसकी परमावश्यकता है, वह नैतिक शिक्षा है आज के समाज मे नैतिक शिक्षा महत्वहीन सी बनादी गयी है। शिक्षणालयो मे मात्र प्रदर्शन हेतु बच्चो को नम्बर भी दिये जाते हैं। परन्तु नैतिक शिक्षा दी नहीं जाती।

प्राचीन भारत मे ऐसी नैतिक शिक्षा दी जाती थी कि यहाँ बताया जाता था कि मनुष्य जो कुछ शुभ और अशुभ कर्म, प्रकट मे अथवा गुप्त रुप से करता है, उसका फल उसको इस जन्म मे नहीं तो दूसरे जन्म मे अवश्य मिलेगा।

पन्चत्वय एव मात्राभ्य प्रत्य दुष्कृतिना नृणाम्

शरीर यातनार्थीयमन्यदुत्पद्यत ध्रु वम मनु० १२-१६

एतावृष्ट्वास्य जीवस्य गती स्वेनैवचेतसा

धर्मतो धर्मतश्चैव धर्मे दध्यात्सदा मन १२-२३

अर्थात्, चोरी, छल, कपट, शोषण, परपीडा आदि दुष्कर्मों के कारण, यदि कोई मनुष्य दुनिया के कानून की सजा से बच भी जाता है, वह परमात्मा की सजा से बच नहीं सकता। लेकिन धर्म निरपेक्षवाद के नाम से, देश के कर्णधारो ने इन ऊचे विचारो की शिक्षा देनेवाले शास्त्रो का अध्यन बन्द करवा दिया है। इस गलती को भी सुधारने की आवश्यकता है। साथ मे लोगो को सादा जीवन के महत्व को भी समझने और समझाने की आवश्यकता भी कम नहीं। आलीशान बगला बनाना, अत्याधुनिक मोटरगाडी तथा अन्य साधनो को प्राप्त करने मात्र से मनुष्य का महत्व नहीं बढ़ता है। मनुष्य का महत्व उसके आचार और विचार पर होता है।

अब मे एक प्रश्न और उठता है कि यह सब कौन करें ? इसका उत्तर यही है कि देश आज स्वतन्त्र है, और यहाँ लोकतन्त्र है। लोगो के अन्दर जागृति न होने के कारण और सुशिक्षा के अभाव के कारण इसका कोई लाभ दिखाई नहीं देता। वेद कहता है कि—

ता उभौचतुर पद सम्प्रसारयाव।।।

(यजुर्वेद २३-२०)

अर्थात् सरकार और जनता अथवा शासक और शासित, ये दोनो मिलकर राष्ट्र मे धर्म (अच्छी न्याय व्यवस्था) अर्थ (भौतिक उन्नति)। काम (न्याय सगत भोग) और मोक्ष [दारिद्रय अन्याय, अज्ञान, रागादि क्लेशो से छुटकारा] को प्राप्त करने का प्रयत्न करें। अर्थात् भ्रष्टाचार निर्मूलन का दायित्व केवल सरकार पर ही नहीं है। यह दायित्व जनता पर भी है और जनता किसी अवतार, पुरुष या मसीह की प्रतीक्षा न करके अपने दायित्व को स्वय निभावे, तो यह काय आसान होगा। आज तक दुनिया मे बिना कष्ट उठाये, बिना सघर्ष किये, बिना त्याग और बलिदान किये कोई भी क्रान्ति सफल नहीं हुई है। जनता इस बात को अच्छी प्रकार से समझ भ्रष्टाचार के इस महान असुर को समाप्त करने के लिये कटिबद्ध हो ?

—आर्य समाज भगवानपुर का ७ वां वार्षिकोत्सव दि० १०,११ व १२ मई १९८७ को उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमे प्रो राम प्रसाद विद्यालकार, डा० भारत भूषण तथा डा० महावीर प्रसाद गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय तथा स्वामी सत्यानन्द सरस्ती परिव्राजक, झज्जर आदि ने अपने वचना-मृत का पान कराया।

कैंसर उपचार हेतु नई विधि

नई दिल्ली [सोईई एमएफ एस]। सयुक्त राष्ट्र और आस्ट्रेलिया के सयुक्त दल ने खतरनाक रक्त कैंसर से बचाव के लिए उपचार विधि विकसित करने से सफलता प्राप्त कर ली है। विशेष प्रकार के ल्यूकेमिया से पीडित ३७ रोगो जिनका उपचार असाध्य समझा जाता था, मे से २७ का इस नवीन विधि से सफलतापूर्वक उपचार किया गया। यह विधि अत्यधिक नई है जिसका उपयोग शरीर के बाह्य क्षेत्रो मे किया जाता है।

सयुक्त राष्ट्र स्थित याले विश्व विद्यालय मे इस पर विशेष शोध किया गया था। विएनीआ के त्वचा रोग विज्ञान चिकित्सा विद्यालय मे इस प्रोजेक्ट पर गत दो वर्षों से प्रायोगिक स्तर पर कार्य किया जा रहा है।

यह विधि रोगी के शरीर पर बाहर से पराबैंगनी प्रकाश की लम्बी किरणें डालने तथा औषधीकरण और विकिरण के सयोजन पर आधारित है। इस मे रोग निरोधक गोलि या जो कि कमजोर रक्त कोशिकाओ और उनके निर्माण क्षेत्र मे प्रकाश के माध्यम से लगाकर सक्रिय की जाती हैं। इससे कुछ ही दिनो मे कमजोर रक्त कोशिकाए शरीर मे नष्ट हो जाती है और कैंसर से मुक्ति मिलने लगती है।

निर्वाचन

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बरली प्रधान श्री श्रीकृष्ण आर्य मत्री श्री विद्या सागर आर्य कोषा० श्री राम कुमार बीरेन्द्र

आर्य समाज लक्ष्मण चौक देहरादून प्रधान श्री जगदीश राय जी मत्री श्रीमती वीर बालाजी कोषा० श्री सत्यपाल अग्रवाल

सम्पादक के पत्र

राष्ट्रपिता और राष्ट्रपति शब्दों का विवेचन

(डा० भवानीलाल भारतीय –अध्यक्ष दयानन्द शोध पीठ चंडीगढ़)

१० मई के आर्य मित्र मे श्री बिशन स्वरुप गोयल का एक लेख उपर्युक्त विषय पर छपा है। ऐसा लगता है कि श्री गोयल शब्दो के रूढ़िगत प्रयोगों से बिलकुल अन–भिज्ञ है। केवल जन्म देने से ही कोई पिता नहीं कहलाता और न नारी के शौहर को ही पति कहा जाता है। 'पा' धातु से निर्मित यह शब्द पालन करने वाले के प्रतीक हैं। अतः राष्ट्र का पालक या रक्षक ही राष्ट्रपति कहलाता है। गोयलजी का यह कथन तो अत्यन्त हास्यास्पद है कि गांधीजी को यदि राष्ट्रपिता कहें तो राष्ट्र–पति राजेन्द्र प्रसाद को उनका दामाद कहना होगा। ऐसा लिखने वाले को भाषा के सामान्य औप-चारिक प्रयोगो का भी ज्ञान नहीं है। हम अपने से बड़े वयोवृद्धो को भी पिताजी कहते है। इससे वे हमारे जन्मदाता पिता नहीं हो जाते। अपने से बड़ी आयु की देवियो को हम माताजी कहते है, इससे वे हमारे जन्मदाता पिता की पत्नियां नहीं हो जातीं।

भाषा विज्ञान और शब्द शास्त्र एक गहन विषय है। शब्दो का प्रयोग ही उनका अर्थ निर्धारित करता है। इसलिये राष्ट्रपिता या राष्ट्रपति के प्रयोग से राष्ट्र का अपमान कैसे हो जाता है? सभा के अध्यक्ष को क्या सभापति नहीं कहा जाता नगरपालिका के सदस्य क्या नगर पिता नहीं कहलाते ? क्या वे नगरवासियों के जन्म दाता पिता होते हैं। यदि गोयलजी को राष्ट्रपिता या राष्ट्रपति पर आपत्ति है तो वे यह बतायें कि देश के नागरिक उसके पुत्र कैसे हो सकते हैं ? तथ्य यह है कि इस प्रकार के सभी प्रयोग औपचारिक और गौण होते है। इसी नियम के अनुसार शेख मुजीबुर्रहमान को बंग बंधु कहा गया। चित्तरंजन दास 'देशबंधु, कहलाये तथा मिस्टर जिन्ना को पाकिस्तान का बाबाए कौम कहा गया। यदि कस्तूरबा को राष्ट्रमाता कहा जाता था तो इन्दरा गांधी को भी इसी विशेषण से सम्बोधित किया जा सकता है। हमारा सम्पादकजी से निवेदन है कि 'आर्यमित्र' जैसे प्रबुद्ध आर्य समाजिक पत्र मे वे ऐसे संकीर्ण मनोवृत्ति के विचार न छापें जिन्हें महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कहने पर आपत्ति है। उन्हें यह तो शायद पता ही नहीं होगा कि लोकसभा के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व० अनन्त शयनम् आयंगर ने स्वामी दयानन्द को राष्ट्र का पितामह कहा था। यदि गोयलजी की संकीर्ण दृष्टि अपनायें तो इससे यह अर्थ निकलेगा कि गांधी का पिता दयानन्द था।

आर्य जगत से अपील

मेरा चंडीगढ़ से कारण वश गाजियाबाद जाना हुआ। सैर करते समय पूज्य अमर स्वामीजी के भी दर्शन वेद मन्दिर (कवि नगर) उनकी कुटिया में किए। अमर स्वामीजी, गले के कष्ट से पीड़ित हैं और उस दिन उनका एक्स रे होना था। शरीर में काफी दुर्बलता था। मै आर्य जगत और विशेषतया आर्य समाजों से अपील करता हूं कि इस रुग्ण अवस्था मे स्वामीजी की तन, मन और धन से विशेष सेवा होनी चाहिए। और उनको किसी प्रकार की कमी प्रतीत न हो। इन्द्रराज शर्मा प्रधान आर्य समाज सै–२२ चंडीगढ़

आर्य विद्या सभा की वार्षिक बैठक सम्पन्न

डी० ए०वी० संस्थाओं में संस्कृत, हिन्दी व धर्मशिक्षा पर बल

आर्य विद्या सभा अन्तर्गत डी० ए० वी० कालेज प्र ध तृ समिति नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन दिनांक ३० मई, १९८७ को सभा प्रधान श्री प्रो० वेदव्यास जी की अध्यक्षता मे आर्य समाज, मन्दिर मार्ग मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित सदस्यों को सम्बोधि त करते हुए डी० ए० वी० आन्दोलन कालेज समिति के संगठन सचिव श्री दरबारी लाल जी ने कहा डी ए.वी. का इतिहास बड़ा शानदार रहा है। इस आन्दोलन का आरम्भ आर्य समाज के सिद्धान्तो का प्रचार करने के लिए किया गया था। आपने कहा कि शिक्षा की व्यवस्था करना सरकार का दायित्व है। हम लोग डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाएँ केवल इसलिए चलाते है कि इनके माध्यम से वैदिक धर्मका प्रचार हो। आपने इस बात पर विशेष बल दिया कि प्रत्येक स्कूल व कालेज में छात्रों को अनिवार्यतः धर्मशिक्षा दी जाये। उन्होने कर–तल ध्वनि के बीच मे कहा कि उन द्वारा जारी किये गये उन दो परि-पत्रों का आर्य जगत मे बहुत स्वा-गत हुआ जिसमें उन्होने आर्य शिक्षण संस्थाओं मे हिन्दी का प्रयोग करने और नैकटाई का बहि ष्कार करने के लिये कहा था।

नैतिक शिक्षा संस्थान के आचार्य प्रो० रत्नसिंह जी ने अपना सुझाव दिया कि प्रिंसपलो और अध्यापको का भी एक विशेष शिविर लगवाया जाये जिसमें उन्हें वैदिक सिद्धान्तो की गहन शिक्षा दी जाये ताकि वे अपने शिष्यो पर धर्म की छाप लगा सकें।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री राम नाथ सहगल ने श्री दरबारी लाल जी द्वारा प्रका–शित दोनों परिपत्रों की काफी अधिक प्रशंसा की।

अन्त में सभा के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी ने कहा कि श्री दर-बारी लाल जी ने नैकटाई के विरोध में परिपत्र जारी करके मन की बात कही है। उन्होंने कहा कि मै तो यह भी चाहता हूं कि बन्द गले के कोट का प्रयोग किया जाए क्योंकि भारतीय वेशभूषा में इसका विशेष स्थान है।

सभा का सफल संचालन आर्य विद्या सभा के मन्त्री श्री तिलक राज गुप्ता ने किया और अपनी ओर से सभी प्रिंसिपलों अध्या-पको और अध्यापिकाओं का तथा विद्यार्थियो का धर्म शिक्षा और संस्कृत की परीक्षाओं को सफल बनाने में दिए गये सहयोग के लिये आभार प्रकट किया।

चौ० चरण को श्रद्धांजलि

निम्नलिखित आर्य समाजों ने भारत के भू० पू० प्रधान मन्त्री लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा कर्मठ आर्य समाजी नेता श्री चौ० चरण सिंह जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुये उनकी दिवं–गत आत्मा की शांति हेतु हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित की है–

१– आर्य समाज शाहगढ़ (अलीगढ़)

२– आर्य समाज गया

३– आर्य समाज आयुध निर्माणी (गाजियाबाद)

४– आर्य समाज (आगरा नगर)

समवेदना

निम्नलिखित आर्यों के दिवंगत होने के समाचार प्राप्त हुए है जिसके लिये सभा सम्वेदना प्रकट करती है–

१– आर्य समाज गया के प्रधान श्री प्रयाग नारायण जी

२– आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के भू० पू० उपदेशक तथा हैदरा–बाद सत्याग्रह सेननी श्री राम निवास जी "सिद्धान्त शास्त्री।"

३– स्त्री आर्य समाज कटरा प्रयाग की भू० पू० प्रधाना श्रीमती सम्मो देवी वान प्रस्थी

४– आर्य समाज माधोगंज, हर–दोई के प्रधान व स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री धर्म सिंह जी

प्रभु दिवंगत आत्माओं को शांति एवं परिवारिक जनों को धैर्यप्रदान करे।

बाल जगत

गाय के नाम से सुरक्षित है नीलगाय

(दुर्गा पाटनकर)

नीलगाय के नाम के साथ गाय, शब्द जुड़ा होने के कारण यह श्रद्धा और आदर का पात्र रही है। क्योंकि गाय हिन्दुओं का पवित्र पशु है। यह नीलगाय का भाग्य ही है कि वह भारत में अन्य शृंगधारियों और हिरणों की अपेक्षा अधिक सुरक्षित है। किन्तु फिर भी यह सत्य है कि नीलगाय गाय की निकट सम्बन्धी नहीं है हालांकि शृंगधारी परिवार की सदस्य अवश्य है। इसके अलावा यह इस महाद्वीप में पाए जाने वाले बड़े शृंगधारियों में से एक है।

अन्य शृंगधारियों के समान नीलगाय भी वृहद क्षेत्र में चरती है। जहां घास पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो ऐसी भूमि, झाड़ियों वाले और कृषि योग्य उपजाऊ मैदानों में चरना इसे अत्यधिक पसन्द है। नीलगाय मुख्यतः उत्तर-पूर्व के सूखे और पठारी क्षेत्र का पशु है। जंगल की अत्यधिक कटाई और घास मैदानों की कमी के कारण इसे अपने भोजन के लिये दूर-दूर तक जाना पड़ता है और यही कारण है कि इसका निवास क्षेत्र भी अब बढ़ता जा रहा है।

नीलगाय के मुख्य खाद्य पदार्थ हैं महुआ और बेर के फल और अन्य वृक्षों के फल, पत्तियां कोमल टहनियां और घास किन्तु गन्ने खाना इसे अत्यधिक पसन्द है। और यही कारण है कि नीलगाय के कारण गन्ने की खेती करने वाले किसानों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

पानी की कमी नीलगाय के लिए कोई परेशानी का विषय नहीं है। जिस क्षेत्र में यह निवास करती है उस क्षेत्र में आसपास कहीं पर्याप्त मात्रा में पानी मिला तो ठीक वर्ना कम मात्रा में पानी मिले तो भी इसे कोई फर्क नहीं पड़ता। यहां तक की गरमी के दिनों में दो-तीन दिन में एक बार पानी पीने से ही नीलगाय संतुष्ट हो जाती है। सूखे क्षत्रों में सुबह की ओस से कुछ पानी प्राप्त कर लेती है और कुछ रेशेदार व कांटेदार पौधों और वृक्षों की छाल से।

नर नीलगाय की चमड़ी का हलका स्लेटी रंग सूर्य की किरण पड़ते ही नीली आभा परावर्तित करने लगता है अतः इस नीली आभा के कारण भी इसे नीलगाय कहा जाता है। इसके सिर पर साढ़े आठ इंच लम्बे सींग होते हैं और नर की गरदन के नीचे दाढ़ी होती है। यही नर और मादा में अन्तर स्पष्ट करती है। पूर्ण विकसित नर नीलगाय का वजन २०० किलोग्राम के करीब होता है। मादा नीलगाय का रंग भूरा पीला होता है। नर की अपेक्षा मादा कुछ छोटी होती है जिससे नर और मादा में काफी समानता दिखाई देती है।

नीलगाय सामान्यतः छोटे समूह या झुंडों में निवास करते हैं। जिनमें प्रत्येक झुण्ड में इनकी संख्या दस-बारह के करीब होती है। परिपक्व और पर्याप्त आयु वाले नर अपना पृथक समूह अधिक पसन्द करते हैं। प्रजनन काल ही एक ऐसा समय होता है जब नर,-मादा के झुण्ड में शामिल होता है। जहां मादा के लिये नर अपने प्रतिद्वंदी को चुनौती देते हैं। कई मर्तबा लड़ाई की स्थिति भी निर्मित हो जाती है।

नीलगाय के निवास क्षेत्रों का पता इनके द्वारा त्यागे गए मल से लगता है क्योंकि ये एक निर्धारित स्थान पर ही मल त्याग करते हैं। इसके अलावा इनकी यह आदत झुण्ड में से इनके किसी साथी को अधिक समय तक अलग नहीं होने देती। इसकी दौड़ने की क्षमता भी अधिक होती है। इसकी लम्बी टांगें खुरदरी जमीन पर तेजी और फुर्ती से दौड़ लगाने में सक्षम है।

नीलगाय का शिकार करने वालों में मनुष्य के आलवा शेर, बाघ, तेन्दुए आदि है। शेर, बाघ और तेन्दुए आदि का नीलगाय प्रिय भोजन है। भेड़िये और लकड़बग्घे नीलगाय के बच्चे का उस समय शिकार करते हैं जब वह अकेला होता है। जंगली कुत्ते अक्सर नये नीलगाय के बच्चे का शिकार करते हैं।

नीलगाय के प्रति भावनात्मक लगाव अब घटने लगा है जिससे लगता है यह अधिक समय तक पहले के समान प्रचूर मात्रा में नहीं रह पायेंगी।

(सी० ई०-एम० एफ० एस० द्वारा प्रेषित)

पुस्तक परिचय

महर्षि दयानन्दके भक्त, प्रशंक और सत्संगी

लेखक—प्रो० भवानी लाल भारतीय सिद्धान्त वाचस्पति एम० ए० प्रो० (अध्यक्ष दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय बी-३ सेक्टर १४ चण्डीगढ़)

मूल्य— बीस रुपया पृष्ठ संख्या—१६८

डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा आर्य जगत के विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में महर्षि दयानन्द के अनेक भक्तों प्रशंसकों और सत्संगी शिष्यों के जीवन वृतान्त पढ़ने को प्राप्त हुए जिन से अनेक ऐसे महात्माओं के जीवन वृतान्तों के विषय में जानकारी हुई जो अतीत काल के विस्मृति सिन्धु में लुप्त प्राय हो गये थे। डा० भवानी लाल जी की उस के विषय में खोज अत्यन्त प्रशंसनीय और स्तुत्य है और इस में कोई संदेह नहीं कि इन महानुभावों की जीवन ज्योति आज भी आर्य समाज से सम्बन्धित व्यक्तियों के लिये ज्योति स्तम्भ बनकर, उन का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। उपरोक्त पुस्तक को पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ क्यों कि इस में ऐसे अनेक व्यक्तियों का विवरण संग्रहीत है जिन का स्वामी दयानन्द के साथ किसी न किसी रूप में सम्बन्ध स्थापित रहा है। भले ही आंशिक रूप में अनेक ऐसे व्यक्तियों के विचारों का स्वामी जी की विचार धारा से वैमत्य रहा हो परन्तु उनके व्यक्तित्व से वे आकृष्ट हुए और सन्मार्गी बने। इन व्यक्तियों के जीवन वृतान्तों से यह स्पष्ट प्रकट होता है कि स्वामी दयानन्द के अनुपमेय विराट व्यक्तित्व से उन्हें ऐसी सुप्रेरणा मिली कि उनके विचार करने दृष्टिकोण के तथा सुकर्म करने के साधन परिवर्तित हो गए।

पुस्तक में प्रकाशित विवरण जहां स्वामी दयानन्द की महानता के परिचायक हैं, वहां उनकी परिष्कृत विचार धारा अटूट, ब्रह्मनिष्ठा तथा वेद की विश्व व्याप्ति और विश्व के आर्य करण, मन्तव्यों को भी दर्शाती है।

इन विवरणों को प्रस्तुत करने में लेखक ने जिन ऐतहासिक तथ्यों को जुटाने में घोर श्रम किया है वह सर्वथा सराहनीय है। विशेष रूप से महाराज सर प्रताप सिंह जी का जीवन विवरण इसे दर्पण की भांति स्पष्ट दर्शन कराने में सहायक है क्यों कि उस समय की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति से इस उजागर होती है।

पुस्तक की छपाई सुन्दर है। बढ़िया कागज पर इसे मुद्रित किया गया है। महानुभावों के चित्रों अथवा रेखाचित्रों ने इसे और भी सुशोभित कर दिया है।

मुझे विश्वास है कि आर्य जगत में इस कृति का भरपूर स्वागत होगा और आर्यजन इसका क्रय करके, प्रकाशित जीवन विवरणों से प्रेरित हो कर लेखक के श्रम को सार्थक करेंगे। पुस्तक उन के उपरोक्त पते से प्राप्त की जा सकती।

आर्यों का कार्य हो पाया नहीं

स्वराज्य को सुराज्य में हम बदल पाये नहीं ।
याद रक्खो आर्यों का कार्य हो पाया नहीं ।।
सो रहे थे हम अविद्या के नशे में अब तलक ।
हाथ स्रोतों का पकड़ कर क्या उठाया था नहीं ।।
उपकार ऋषिवर का अभी तक भी समझ पाया नहीं ।
गुरुकुलों की दुर्दशा का ध्यान भी आया नहीं ।।
स्वप्न देखा था हमीं ने आर्यों के राज्य का ।
क्या आर्यों के राज्य का कुछ काम हो पाया अभी ।।
रा ट्रभाषा रो रही है धूल आंखों में लिये ।
अंग्रेजियत की भी गुलामी हम हटा पाये नहीं ।।
मातृ शक्ति के दुःखों से दवन करते थे ऋषि ।
नारी जाति का दवन क्यों रोक पाये हम नहीं ।।
नित्य मात सम गो मात अब तक भी बिलखती जा रही ।
हे आर्यों उसका दवन अब तक मिटा पाये नहीं ।।
मांस मदिरा से बढ़ी हैं आसुरी सब वृत्तियां ।
इनके हनन के वास्ते कोई कदम अब तक नहीं ।।
पाखण्ड गुरुडम की अंधेरी दिन प्रतिदिन बढ़ रही ।
इनको हटाने के लिये शास्त्रार्थ अब करते नहीं ।।
तुम ही बता दो आर्यों यह अब तुम्हे क्या हो गया ।
ऋषि से मिली इस वेदवाणी का पता क्या खो गया ।।

—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति ११/१२४ शास्त्री सदन,
पश्चिमी आजाद नगर, दिल्ली-५१

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

सभा का ६१ वां वार्षिक साधारण अधिवेशन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती की अध्यक्षता मे सोल्लास सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ जिसमे सर्व सम्मति से प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री, मन्त्री—श्री रामाज्ञा वैरागी तथा कोषाध्यक्ष—श्री द्वारका प्रसाद मौद निर्वाचित हुये ।

महाराष्ट्र आ. प्र. सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन दि० ३१-५-१९८७ को श्रीयुत दिनकरराव बाबाराव देशपांडेजी की अध्यक्षता में वैदिक सेवा आश्रम वाजेगांव नादेड में सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ । प्रधान—श्री दौलतराम बड्डा मन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र गुरुजी कोषा०-श्री दौलतराव गिरबलकर

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६१
पंजीकरण सं० एल डब्लू/एन. पी. ७६
आषाढ शुक्ल २
रविवार, २८ जून १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पूज्य स्वामी आनन्द बोध जी और प्रो० बलराज मधोक द्वारा मेरठ के क्षतिग्रस्त क्षत्रों का दौरा करने और विभिन्न जानकार लोगो के साथ ब.तचीत करने के बाद दिया गया वक्तव्य

मेरठ मे जो कुछ हुआ उसे साम्प्रदायिक कहना गलत है। यह एक विद्रोह था। मुसलमानों की ओर से सुनियोजित ढग से हिन्दुओं औ पुलिस कर्मियो पर अकस्मात आक्रमण शुरु किया गया तथा आक्रमण की घोषणा मस्जिदों से की गई और मुसलमानो को पुलिस के साथ लडने का लगातार आह्वान होता रहा।

इस विद्रोह मे मस्जिदो और उनके इमामों की विशेष भूमिका रही, वह भूमिका उसी प्रकार की थी, जिस प्रकार की भूमिका दिल्ली की ामा मस्जिद और फतेहपुरी मस्जिद और उनके इमामों ने दिल्ली मे अदा की।

हिन्दुओ के जान व माल की क्षति बहुत अधिक हुई है। जानकार लोगों के अनुमान के अनुसार हिन्दुओ की सम्पत्तिका नुकसान लगभग एक अरब रुपये का हुआ है। और बड़ी सख्या मे हिन्दू मर गये हैं। आक्रान्ताओं ने हिन्दू स्त्रियो के साथ भी काफी दुर्व्यवहार किया।

यह खेद का विषय है कि चन्द्रशेखर जैसे कुछ विरोधी नेताओं ने जानबूझ कर देश की जनता और सरकार का ध्यान मेरठ के हत्याकांड से हटाने के लिए मलियाना गाव की घटना तथा हाशिमपुरा की घटना को बढ़ा चढ़ाकर पेश किया है। ऐसा करके उन लोगो ने और कुछ समाचार पत्रो मे भी न केवल तथ्यो के विपरीत बात की है, अपितु मुस्लिम साम्प्रदायिकता को भी शह दी है। उनका यह कृत्य हिन्दू विरोधी भी है और राष्ट्र विरोधी भी।

मेरठ मे तबाही और अधिक होती यदि पी० ए० सी० ने अपने कर्तव्य का पालन न किया होता। वास्तव मे पी० ए०सी० को हाशिमपुरा इस्लामाबाद इत्यादि विद्रोहियो के अड्डो मे भेजा गया होता तो स्थिति इतनी न बिगडती।

मलियाना मे पी० ए० सी० पर मस्जिदो मे से गोलियां और बम बरसाये गये। इसलिए उसे आत्म रक्षा मे कार्यवाही करनी पडी।

मेरठ की स्थिति के लिये प्रशासन की लापरवाही और श्रीमती मोहसिना किदवई की भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

सभी हालात को देखने और जानकारी प्राप्त करने के बाद हमारा सुविचारित मत बना है कि इस विद्रोह की तह मे जाने की आवश्यकता है। हमारा यह विचार है कि पाकिस्तान के सम्भावित आक्रमण के समय इस प्रकार के विद्रोह व्यापक रूप मे किये जायेंगे, ताकि सेना का ध्यान ऐसे विद्रोहो को दबाने मे लग जाये और पाकिस्तान का काम आसान हो जाये। इसलिये इस विद्रोह को केवल क्षणिक घटना समझना गलत होगा। इसका सीधा सम्बन्ध हिन्दुस्तान की एकता को भग करने और अवशिष्ट हिन्दुस्तान को भी पाकिस्तान की तरह इस्लामी राज्य बनाने की पाकिस्तानी योजना से है।

हमारी माग है कि—

१—सारे काण्ड की न्यायिक जाच हो। केवल मलियाना की घटना की न्यायिक जाच करना गलत है। इस जाच का दायरा बढ़ाकर सारा मेरठ करना चाहिये।

२—गिरफ्तारी के मामले मे हिन्दुओ को भी मुसलमानो के बराबर की सख्या मे गिरफ्तार करना प्रशासन की साम्प्रदायिक प्रवृत्ति का द्योतक है। केवल दोषियो को ही पकडा जाना चाहिये।

३—मस्जिदो और अन्य धार्मिक स्थानो पर से लाउड स्पीकर सदा के लिए सारे देश से हटा देने चाहिये।

४—पीड़ित लोगो को तुरन्त क्षति पूर्ति दी जानी चाहिये।

५—सरकार को मुस्लिम राष्ट्रीयकरण की नीति बदलनी चाहिये और मौलाना बुखारी शहाबुद्दीन जैसे लोगो के विरुद्ध देशद्रोह का अभियोग चलाना चाहिये।

[illegible]ायज हथियारो को निकालने के लिये कड़ाई से मस्जिद और [illegible]म मोहल्लों मे तलाशिया करनी चाहिये।

७—पी० ए० सी० मेरठ से हटानी नहीं चाहिये। पुलिस की साम्प्रदायिकता के आधार पर पुनर्गठन की माग खतरनाक है। उसे पूरी तरह नकारा जाना चाहिये। ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये जिससे पुलिस का मनोबल टूटे। पुलिस का मनोबल गिराने से शासन का चलाना कठिन हो जायेगा।

८—देश मे अवैध रूप मे घुसे हुये पाकिस्तानियो की तलाश कराके उन के विरुद्ध कारंवाई की जानी चाहिये।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म् आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ — घोषणा पत्र सं० ७/२८–२–८५

आषाढ़ शुक्ल ९, रविवार, सवत् २०४४ वि० दिनांक ५ जुलाई १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल–

विक्रमादित्य 'बसन्त'
'वेद वारिधि'

★

प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए.

★

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

★

वर्ष	९०
अङ्क	२६

सार्वदेशिक सभा द्वारा दंगो की जॉच के लिए समिति गठित

नई दिल्ली १५ जून १९८७। हमने कठिन सघर्ष और राष्ट्रवीरो के बलिदानो के पश्चात् सन् १९४७ मे आजादी प्राप्त की थी। जिसकी हमे बहुत बडी कीमत चुकानी पडी। देश का बटवारा हुआ। लाखो निर्दोष लोग साम्प्रदायिक दगो मे मारे गए। हाल ही मे दिल्ली और मेरठ मे हुए दगो मे जो वीभत्स हत्याकाड, आग जनी और लूटमार हुई, उसने एक बार फिर देश के बटवारे के समय हुई बर्बादी की याद ताजा कर दी है।

मेरठ मे जिस प्रकार दगे हुए, उससे यह स्पष्ट है कि इसकी शुरुआत पचमागी तत्वो ने पाकिस्तान की साजिश से की। सबसे अधिक दुःख की बात तो यह है कि जब पुलिस ने विशेषकर प्रान्तीय सशस्त्र बल ने दगाइयो को सख्ती से दबाना शुरू किया तो सरकारी तन्त्र ने प्रशसा के बजाय उनकी भर्त्सना की, जिससे पुलिस का मनोबल गिरा है। परोक्ष रूप से अल्पसख्यक दगाइयो को इससे और प्रोत्साहन मिला है, जिसका परिणाम यह हुआ है कि मेरठ मे अभी तक पूरी तरह शान्ति स्थापित नहीं हुई है। हम यह मानते हैं कि देश की प्रजातान्त्रिक व्यवस्था मे विरोधी पार्टियो की प्रमुख भूमिका होती है, लेकिन वतमान परिस्थिति मे सर्वश्री चन्द्रशेखर, बहुगुणा, सुब्रह्मण्यम स्वामी, शहाबुद्दीन और जामा मस्जिद के इमाम जो भूमिका निभा रहे हैं। उसके लक्षण अच्छे नहीं है। उनकी इस प्रकार की कार्यवाहियो से हमारे प्रजातन्त्र की हत्या होगी और देश टुकडे-टुकड होकर बिखर जायगा। जनता को उनके इन विघटनकारी कार्यों को उद्घाटित करना चाहिए।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आतंकवादियो द्वारा दिल्ली में नर सहार

पुलिस अभी तक उन्हे पकडने मे असफल विशिष्ट जनो की सुरक्षा की कडी व्यवस्था

गत दिनाक १३–६–८७ की शाम दिल्ली के ग्रेटर कैलाश मुहल्ले मे आनन्द मोद का माहोल आतङ्कवादियो द्वारा १४ व्यक्तियो की निमम हत्या से शोक और भय के वातावरण मे बदल गया।

समाचार पत्रो के अनुसार ग्रेटर कैलाश के एक परिवार मे जन्मोत्सव का कायक्रम बडे ही आनन्दमय वातावरण मे चल रहा था कि अचानक आतङ्कवादियो की भयकर गोली वर्षा से ९ व्यक्ति घटना स्थल पर ही मर गये और वहा कोहराम मच गया। ग्रेटर कैलाश, अलखनन्दा व लाजपत नगर मे भय का वातावरण व्याप गया।

आतङ्कवादी गोलिया बरसाते हुये समारोह मे आये एक परिवार की विदेशी कार मे बैठे तीन व्यक्तियो सहित कार को भी ले गये और उच्छृङ्खलता से गोली वर्षा करते आतङ्क मचाते और गाडी मे बैठे तीनो व्यक्तियो की भी निर्मम हत्या करके गाडी बाद मे छोडकर भाग निकले। इस काड मे २९ अन्य व्यक्ति घायल भी हुये जिनमे २ की अस्पताल मे मृत्यु हो गयी। मृतको मे कई बच्चे स्त्रिया भी है।

पुलिस गतिविधिया सम्पूण राजधानी मे तीव्र कर दी गई हैं। अभी तक अपराधी पकडे नहीं जा सके। कार मे मिले एक कागज के हवाले से वे भिण्डरा वाला टाइगर्स फोरम के सदस्य १८–२० वर्षीय दिग्भ्रान्त युवक थे।

सम्पूर्ण राजधानी की सीमा सील कर दी गयी है विशिष्ट जनो की सुरक्षा व्यवस्था और कडी कर दी गयी है। इस प्रकार की भयकर घटनाओ का होना देश की गुप्तचर व्यवस्था की अकर्मण्यता का परिचायक है और उन पर नियन्त्रण न हो पाना पुलिस की अकर्मण्यता का द्योतक एव भय त्रास का सम्वर्धक है। प्रशासन सचेत होकर भविष्य मे ऐसी घटनायें न घटने पायें ऐसी सुदृढ़ व्यवस्था करे।

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ।।
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ— आषाढ शुक्ल ९ सम्वत २०४४ रविवार ५ जुलाई १९८७ दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की गिरफ्तारी— —कॉंग्रेस के लिए अशुभ लक्षण

भारत के भूतपूर्व वित्त एव प्रतिरक्षा मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को उनके—अपने पद की गरिमा की रक्षा, राष्ट्र भक्ति का पुरस्कार-उन्हे तरह-तरह से प्रताड़ित कर—देने की प्रक्रिया अन्तत कांग्रेस शासन को ले डूबेगी ।

श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह का राजनीतिक जीवन पूर्णत बेदाग है । उन्होने राष्ट्र भक्ति, प्रशासन को स्वच्छ व स्वस्थ बनाने के लिये अपने कर्तव्यो का पालन किया । उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री के रूप मे डाकू समाप्ति अभियान मे उनके भाई की निर्मम हत्या ने भी उन्हे पथ से विमुख नहीं किया था ।

वित्तमन्त्री के रूप मे फेयर फेक्स प्रकरण, प्रतिरक्षा मन्त्री के रूप मे बोफोर्स घोटाले की जाच उनकी राष्ट्र निष्ठा के प्रमाण हैं । उनके राजनीतिक स्वार्थी प्रतिद्वन्द्वी उनके कर्त्तव्य पालन मे अपनी हानि देखकर प्रच्छन्न रूप मे विभिन्न उपायो का सहारा लेकर उन्हे परेशान करने मे लगे—रहते हैं । इसी तारतम्य मे उनकी साजिश से उन्हे वित्त मन्त्री व प्रतिरक्षा—मन्त्री के पदो से हटना पडा ।

हमारे प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी के प्रति देश की जनता की निष्ठा-उनकी माता स्वर्गीया इन्दिरा गाधी एव नाना स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू से कम नहीं हैं परन्तु राजनीतिक प्रपचियो के प्रपच उनकी छवि गिरा रहे हैं ।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिह अब एक साधारण नागरिक कॉंग्रेस सदस्य व एक दृढ राष्ट्र भक्त के रूप मे ही हैं उनका पदीय वर्चस्व कोई नहीं है । लोकतन्त्र मे प्रत्येक को देश के हित मे अपने विचारो को प्रकट करने की पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए । परन्तु पता नहीं क्यो श्री विश्वनाथ प्रताप सिह के साथ ऐसा नहीं हो रहा । उन्हें अपनी बात कहने के अवसर नहीं दिये जाते । उत्तर प्रदेश शासन विशेष तौर से उनकी आवाज दबाने के लिए विभिन्न उपाय कर रही है । उनकी जन सभाओ को किसी न किसी बहाने न होने देने का प्रयत्न श्री विश्वनाथ प्रताप सिह की छवि को बिगाड नहीं रहा—उभार रहा है । छवि तो कांग्रेस शासन की, श्री वीर बहादुर सिंह की सरकार की धूमिल हो रही है ।

अभी गोरखपुर मे उनके साथ जो भी किया गया उसे तकनीकी दृष्टि से सही भले ही कहा जाये परन्तु था बिलकुल ही गलत । गोरखपुर नगर व जिलेका कोई हिस्सा संवेदनशील नहीं था । नाहीं श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के वहा भाषण देने से वहाँ कुछ गडबडी होती । परन्तु प्रदेश सरकार ने वहा अघोषित कर्फ्यू सा लगा दिया । बारातें भी समय मे अपने गतव्य स्थानो मे न पहुच सकीं विभिन्न प्रकार से नागरिक त्रस्त व परेशान हुये । श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को उनके ५० साथियो के साथ गिरफ्तार भी कर लिया । (गिरफ्तारी की बात सरकार स्वीकार नहीं करती ।) यह सब शायद श्री वीर बहादुरसिंह की सरकारने इसलिये किया कि उनके गृह जिला गोरखपुरमे वे पूर्ण प्रभावी हैं, प्रदेश शासन पर उनका पूर्ण वर्चस्व है यह श्री राजीव गाँधी को बताया जा सके । परन्तु यह सब ले देकर कांग्रेस के लिये विष का ही काम करेगा । इससे कांग्रेस बचेगी नहीं टूट जायेगी ।

अभी भी कुछ नहीं बिगडा है । प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी जो कांग्रेस अध्यक्ष भी हैं, इस विषय को कठोरता से देखें और श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के विरुद्ध मुहिम को सख्ती से रोकें । उन्हे अपनी बात कहने की पूर्ण स्वतन्त्रता मिले । उत्तम तो यह होगा कि शासन उन्हे पूर्ण सहयोग दें । जिससे केन्द्र को देश को स्वच्छ प्रशासन सुख शान्ति देने का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा । कांग्रेस की छवि बिगडने से बचेगी ।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के विगत इतिहास के आधार पर दृढ़ता से लिखने मे सकोच नहीं है कि वे देश विघाती—किसी भी कदम से कभी भी समझौता नहीं करेंगे । वे कॉंग्रेस और देश के लिये अपना समर्पित जीवन जियेंगे ।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

उत्तर प्रदेशीय आर्य विद्यालय सम्मेलन

प्रदेश के आर्य विद्यालयो प्रधानाचार्यों एव प्रबन्धको के आचलिक सम्मेलन निम्नलिखित स्थानो पर निर्धारित तिथियो मे होगे जिसमे सस्कृत एव उर्दू के शिक्षण के सम्बन्ध मे सरकार की नीति, विद्यालयो मे धर्म शिक्षा की व्यवस्था एव सास्कृतिक वातावरण के निर्माण आदि महत्वपूर्ण विषयो पर गम्भीरता से विचार होगा ।

सभी प्रधानाचार्य, प्रधानाचार्या एव प्रबन्धक अवश्य सम्मिलित होने की कृपा करें ।

अचल	स्थान	तिथि
पश्चिमाचल	आर्य समाज मन्दिर हरिद्वार	दि० १२ ७ ८७
मध्याचल	आर्य समाज मन्दिर गणेशगंज लखनऊ	१९-७-८७
पूर्वांचल	आर्य समाज मन्दिर बख्शीपुर गोरखपुर	२६-७-८७

माधवसिंह
मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
उ० प्र० लखनऊ

हा ! धर्मसिंह

धर्मसिंह थी धर्म राष्ट्र के, वीर सुसेवक ।
दयानन्द के शिष्य, हिन्द माता के सैनिक ।।
क्रूर काल के गाल माहि, अब वही समाये ।
स्मृतियाँ रह गई शेष, ऋषि भक्त कहाये ।।
शान्ति आत्मा को मिलें, दया हो करुणाकन्द की ।
है यह प्रभुवर कामना, कविवर ब्रह्मानन्द की ।।
—प० ब्रह्मानन्द आर्य प्रचारक सभा

अध्यात्म सुधा

वेद का मनन

[श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश]

ओं देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।।
[ऋ० मं० ७।सू० ३५।मं० १५]

पदार्थः— [ये] जो [यज्ञियानाम्—देवानाम्—यज्ञियाः] यजनीयो संगमनीयों-विद्वानों में-उत्कृष्ट संगमनीय विद्वान् है [मनोः] मनुष्य मात्र के [यजत्राः] आदरणीय है । [अमृताः] जीवन मुक्त जैसे हैं । [ऋतज्ञाः] सत्य के जानने वाले हैं । [ते] वे [नः] हमें [अद्य] आज [उरुगायम्] प्रशंसा के योग्य महान् यश को अथवा बहुत कीर्ति वाले विद्याबोध को [रासन्ताम्] प्रदान करें । और [यूयम्] ऐसे आप लोग [सदा] आज ही नहीं अपितु सदा [नः+ स्वस्तिभिः+पात] हमारी + कल्याणकारी उपदेशों के द्वारा + रक्षा करें ।

भावार्थ = संसार में व्यक्ति का उत्थान सच्चे विद्वानों की संगति से और पतन बुरे लोगो की कुसंगति से होता है । हम सदैव अच्छे मार्ग पर चलते रहें इसके लिए आवश्यक है कि हम सदैव अच्छे लोगों के सम्पर्क में रहें । वेद मन्त्र में उन विद्वानो का वर्णन है जिनके सम्पर्क से हमारा उद्धार हो सकता है । वेद मन्त्र में सर्व प्रथ । संगमनीय विद्वानों में भी जो सबसे उत्कृष्ट हैं उनकी संगति से ही उद्धार सम्भव है । देव वे हैं जो देते हैं । उत्कृष्ट देव वे है जो सर्वस्व देते हो रहते हैं । ऐसे उत्कृष्ट विद्वानों की सत्संगति से व्यक्ति में देव पूजा, संगतिकरण और दान की भावना उत्पन्न होती हैं । विद्वानों का सत्कार—परस्पर समन्वय और दान की भावना व्यक्ति के और समाज के जीवन को उत्कृष्ट करती है । वेद मन्त्र में आगे कहा गया है कि विद्वान् कैसे हों ? वे [अमृताः] अमर-यशस्वी और जीवन मुक्त जैसे हों । व्यक्ति प्रायः अपने आपको अनित्य मान कर भयभीत होता रहता है । व्यवहारिक जगत् में अभिनिवेश [न मरने की इच्छा] नामक दुःख में घिरा रहता है । जरा कष्ट आया कि भयभीत हुआ । भयभीत होने से सत्य के पथ से विचलित हो जाता है और सत्य से विचलित होने पर अपयश का भागी बनता है । सत्य और न्याय के पथ पर चलने के लिए भय रहित होना बहुत आवश्यक है । भर्तृहरि ने कितना सुन्दर कहा है:— निन्दन्तु नीति निपुणाः यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मी समा विशतु गच्छतु वा-यथेष्टम् । अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा—न्याय्यात्पथऽप्रविचलन्तिपदंम धीराः ।। नीति निपुण लोग जब स्तुति करते हैं तो व्यक्ति अत्यता प्रसन्न होकर पक्षपात युक्त हो जाता है और जब निन्दा करते हैं तो व्यक्ति भयभीत हो जाता है । लक्ष्मी जब आती है व्यक्ति पथभ्रष्ट हो जाता है । लक्ष्मी जब जाने लगती है तो व्यक्ति भविष्य की चिन्ता से भयभीत हो जाता है । व्यक्ति के सामने जब मृत्यु तुरन्त आती है या कालान्तर में आने की कल्पना करता है तो अत्यन्त भयभीत हो जाता है । इस भय की स्थिति से ऊपर उठने पर व्यक्ति न्याय पथ को कभी नहीं छोड़ता । यह भय से ऊपर उठने वाली स्थिति वेद के शब्दों में [अमृताः] अमर यश वाले जीवन मुक्त विद्वानो की संगति के बिना प्राप्त नहीं होती । इसलिये वेद मन्त्र में अमर यश वाले विद्वानों की संगति करने की प्रेरणा दी गई है । आगे वेद मन्त्र में कहा है कि कैसे विद्वानों की संगति हम लोग करें—[ऋतज्ञाः] जो परम ज्ञानी हों । वेदांत दर्शन कहता है 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती । गीता कहती है "नहि ज्ञानेनसदृशं पवित्रमिह विद्यते" संसार में ज्ञान से पवित्र कुछ भी नहीं है । ऐसे विद्वानों की सत्संगति कितना सौभाग्य का विषय हो सकता है जिन्होंने ज्ञानाग्नि के द्वारा अपने समस्त कर्माशयों को भस्मीभूत कर दिया है । ऐसे ज्ञानियों की संगति करने की प्रेरणा वेद मन्त्र कर रहा है ऐसे तीन प्रकार के विद्वानों की शुश्रूषा-पूर्वक संगति का फल क्या होगा ? वेद मन्त्र कहता है कि बदले में वे विद्वान लोग तत्काल हमें प्रशंसा के योग्य महान् यश अथवा कीर्ति वाले विद्या बोध को हमें प्रदान करेंगे । जिस अमर यश और अत्यन्त कीर्तिवाले विद्या बोध को सहज भाव से तत्काल प्राप्त कर हम लोग पाप मार्गों से बचकर अमर कीर्ति से युक्त हो जाएंगे । फिर हमारी प्रार्थना कितनी सशक्त हो जायेगी हम विनम्रता पूर्वक उन विद्वानों से निवेदन कर सकेंगे कि ये विद्वानो ! आप पग-पग २ सर्वंव अपने कल्याणकारी उपदेशों से हमारी रक्षा करें । हम अल्प अल्पज्ञ प्राणी आपके उपदेशामृत के पिपासु है । आपकी उपदेश सुधा से ही हमारा कल्याण होगा । भगवान् हम पर कृपा करें कि हम आप विद्वानो के द्वारा उन परम पावन वेद वाणी का उपदेश सर्वंव श्रवण करते रहें ।

जल सेनाध्यक्ष द्वारा लखनऊ में सिन्धु भवन का उद्‌घाटन

लखनऊ में सिन्धु समाज द्वारा निर्मित बहुमंजिले सिन्धु भवन का दिनांक १४-६-८७ को सायंकाल ५।। बजे भारत के जल सेनाध्यक्ष एडमिरल—श्री आर० एच० टहिल्यानी ने भवन के समाग.र मे निर्मित भारत माता के भव्य चित्र के नीचे दीपक जलाकर उद्‌घाटन किया ।

उद्‌घाटन समारोह का आरम्भ प्रातः ठीक ८ बजे से १० बजे तक बृहद् यज्ञ एवं वैदिक सत्संग से हुआ । यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेदव्रत अवस्थी सम्पादक आर्य मित्र थे ।

वैदिक सत्संग में आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के—उप प्रधान एवं सिन्धु भवन ट्रस्ट के संरक्षक श्री देवी दास आर्य कानपुर, वेद मनीषी श्री हरिवंश लाल मेहता लखनऊ, आचार्य वेद व्रत अवस्थी लखनऊ एवं सन्तकांवरामने अपने भाषणोंमें उपस्थित जनसमूहको राष्ट्रीयताकी धारा में ओतप्रोत होकर भारत की अखण्डता, सम्प्रभुता की संरक्षा के लिये एक सूत्र में संगठित होने का सन्देश दिया और यह भी कहा वेद ज्ञान मानव मात्र के लिये है किसी वर्ग या जाति विशेष के लिये नहीं । अज्ञानता के कारण लोग धर्म से परे हट रहे हैं एवं आपस में वैर विरोध करके स्वतंत्रता को खतरा उत्पन्न कर रहे हैं । अतः सभी वेद पढ़ें-पढ़ायें सुने सुनायें और धर्म की रक्षा का व्रत लें ।

—संजय अवस्थी सम्वाद प्रेषक

धर्मनिरपेक्षवाद और आर्य समाज

(श्री यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद, २४४०३२)

न जाने कब से और कैसे धर्म जैसा महान शब्द अपने मूल अर्थो से हट कर रूढ़ अर्थों में मत, मजहब, पंथ अथवा सम्प्रदाय के अर्थों मे प्रयुक्त होने लगा है। अन्य भाषाओ के पास लगता है कि धर्म का पर्याय है ही नहीं, तभी मत, मजहब, पंथ सम्प्रदाय अथवा रिलीजन के अर्थों मे धर्म का प्रयोग होने लगा है। आर्यसमाज का सुस्पष्ट कथन है कि मानव-मात्र का एक ही धर्म है, जिसे मानव धर्म कहा जाता है। आचार्य किशोरी दास वाजपेयी के शब्दो मे "धारयति मानवीयम् जगत् इति धर्मः 'अर्थात जो मानवीय जगत् की मानवताकी आधारशिला है, जिस पर मानवता टिकी हुई है, उसे धर्म कहते हैं। (संस्कृति का पांचवा अध्याय, पृष्ठ २८) पर आज धर्म का अर्थ मत मजहब लिया जाने लगा है। यथा हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म आदि आदि।

आज धर्म के सम्बन्ध में जो प्रचलित धारणा है, उसके सम्बन्ध मे सुप्रसिद्ध विचारक जी० टी० डब्ल्यू पैट्रिक अपनी पुस्तक इन्ट्रोडक्शन टू फिलोसोफी मे लिखते हैं कि –" अधिकांश व्यक्ति धर्म का नाम लेते ही मन्दिरो, मस्जिदों, गुरुद्वारों, गिरजाघरो, प्रार्थनाओं, शास्त्रों आदि का स्मरण करने लगते हैं, तथा पूजा-पाठ आदि धार्मिक कृत्यों को ही धर्मका स्वरूप मान लेते हैं, जबकि वे धर्म नहीं हैं। पर कितने ही व्यक्ति ऐसे हो सकते हैं, जिनका विश्वास इन चीजों-बहिरंग उपादानों पर न हो जब कि वे पूर्णतः धार्मिक हो सकते हैं। उनका आचरण धर्म को उसमें सन्निहित आदर्शों को स्वयं व्यक्त करता हो।, वैसे भी बाह्य चिह्नों को धर्म कहते ही नहीं। यथा लिंग धर्म कारणम्। आज विभिन्न पूजा पद्धतियो एवं पूजा स्थलों तथा पीरो, पैगम्बरों में विश्वास रखने का नाम ही धर्म समझा जा रहा है। किन्तु जैसा स्वामी समर्पणानन्द जी अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ काया कल्प के प्रारम्भ मे ही लिखते हैं कि– चाहे तुम कितनी भी लम्बी समाधि लगातेहो कितना भजन-कीर्तन करते हो, कितने घण्टे-घड़ियाल बजाते हो, और कितनी सामग्री भी फूंक देते हो, तो भी तुम धर्मात्मा नहीं हो। यदि तुम्हारे मन्दिर की आरती ने, तुम्हारी लम्बी सन्ध्याओं ने और तुम्हारी पांच नमाजों ने तुम्हारी आंखों को गरीबों का दुःख देखने के लिये, तुम्हारे कानों को उसकी दर्द-भरी आहें सुनने के लिये और तुम्हारे हाथों को उनके कष्ट निवारण के लिये विवश नहीं किया तो तुम आखे रखते हुये भी अंधे हो, कान रखते हुए भी बहरे हो, हाथ रखते हुए भी लूले हो।,,

प्रश्न उठता है कि ये सब धर्म नहीं तो फिर धर्म क्या है? सीधे-सादे शब्दो में मानवता ही धर्म है। धर्म मानवता की आधार-शिला हो, या मानवीय सद्गुण पर यह सुनिश्चित है कि धर्म मत, मजहब या सम्प्रदाय कदापि नहीं। क्यों नहीं? इसका उत्तर डा० सम्पूर्णानन्द के शब्दो मे-"संस्कृत में मजहब या रिलीजन के लिए कोई शब्द नहीं। दूसरी भाषाओं के पास धर्म के लिये कोई शब्द नहीं। बस धर्म को मजहब की जगह बरता जाने लगा।

द्रष्टव्य-वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून की रजतजयन्ती स्मारिका, १९७६, पृष्ठ २८, अपने इस लेख में डा० सम्पूर्णानन्द एक और अत्यन्त महत्वपूर्ण बात लिखते हैं। वह यह कि –"एक बात इससे भी बढ़कर विलक्षण है।

धर्मों में कहीं किसी उपासना विशेष का नाम आना तो दूर रहा, इतना भी नहीं कहा गया है कि उपासना करना धर्म का अंग है।,,

वस्तुतः जब हम मनु द्वारा बताये गये धर्म के दश लक्षणों को देखते हैं तो हमें डा० सम्पूर्णानन्द के उक्त कथन की यथार्थता का बोध होता है। क्योंकि उसमे धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् कहा है। यह ऐसे सद्गुण हैं कि जिन्हें किसी भी मत, मजहब सम्प्रदाय के मानने वाले को अपनाने में कभी भी कोई संकोच नहीं हो सकता।

मत-मजहब और धर्म में जो अन्तर है, वह भी जान लेना आवश्यक है। धर्म कभी तोड़ता नहीं सर्वदा जोड़ता ही है। जबकि मत मजहब एवं सम्प्रदाय जोड़ते नहीं सदा तोड़ते ही हैं। इस सम्बन्ध मे आचार्य विनोबा भावे एक बार कश्मीर में सैनिकों को सम्बोधित करने के लिये गये थे। वहां उन्होने देखा कि सेना मे खाना-पीना, खेलना, कूदना सब एक साथ चलता है, कोई भेद-भाव कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता। यहां तक कि वह मृत्यु जो मनुष्य का अन्तिम शत्रु है, उसके मुख में भी बिना हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि के भेद भाव के, एक साथ कन्धे से कन्धा मिलाये घुसे चले जाते हैं। विनोबा यह देख कर बहुत प्रसन्न हुए। किन्तु सायंकाल जब प्रार्थना की घन्टी बजी तो उन्होंने देखा कि सिख तो अपने गुरुद्वारे मे भागा चला जा रहा है, हिन्दु मन्दिर में, ईसाई गिरजाघर में और मुसलमान मस्जिद में। इस पर विनोबा जी बोले कि मुझे लगा कि ईश्वर एक विभाजक तत्व बनकर आन खड़ा हुआ है। सत्य है- "कोई शेख बन गया, कोई बन गया ब्राह्मण, हर शख्स आदमी था तेरी बन्दगी से पहले" हम पहले ही लिख चुके हैं कि बन्दगी, पूजा-पाठ अथवा प्रार्थना आदि धर्म है ही नहीं।

अल्लामा इकबाल ने कहा है कि– " मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना" किन्तु वास्तविकता यह है कि संसार में प्रायः सारा बैर-विरोध इसी तथाकथित धर्म के नाम पर ही हो रहा है। इस लिए आवश्यकता इस बात की है कि मतपन्थों के रगड़े-झगड़े त्याग कर धर्म की सीधी-सच्ची निष्कंटक राह पर आज का मानव चले।

अब प्रश्न रहा धर्मनिरपेक्षवाद का। इस सम्बन्ध मे भी हम डा० सम्पूर्णानन्द के उसी लेख का उद्धरण देना उचित समझते हैं। डा० साहब लिखते हैं कि–" और अब एक अनर्थ हो गया है। भारत धर्म निरपेक्ष राज्य कहा जाने लगा है मजहब-निरपक्षता समझ में आती है और अच्छी चीज है, परन्तु धर्म-निरपेक्षता का अर्थ हुआ सत्य-असत्य, हिंसा-अहिंसा को समान स्तर पर रखना। यह किसी को अभीष्ट नहीं, परन्तु शब्दों के साधु असाधु प्रयोग का जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। "वस्तुतः आंग्ल भाषा के सैक्यूलर शब्द का अर्थधर्म-निरपेक्ष है ही नहीं। उसका अर्थ तो मत अथवा पंथ निरपेक्ष है। शासन व्यवस्था में धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत का अर्थ यह है कि राज्य का किसी एक धर्म के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। अर्थात् वह अपने प्रशासन तथा देश की राजनीतिक व्यवस्था मे किसी एक-तथाकथित धर्म के सिद्धान्तों को न तो स्वीकार करेगा और न हीं उन से प्रभावित होगा। साथ ही किसी भी नागरिक के साथ, चाहे वह किसी भी मत का मानने वाला क्यों न हो, कोई भेद-भाव अथवा पक्षपात न करेगा। धर्म-निरपेक्षता का सीधा-सादा अर्थ तो यह है कि राज्य न तो किसी धर्म का समर्थक होगा, न विरोधी अपितु पूर्ण तटस्थ रहेगा। धर्म-निरपेक्ष राज्य की परिभाषा में वही राज्य आता है, जो देश की राजनीति को धार्मिक-विश्वासों से तटस्थ रह कर चला सके ताकि राज्य के निवासियों के धार्मिक विश्वासों एवं मान्यताओं के कारण वहां की राजनीति दूष

(शेष पृष्ठ ९ पर)



इतिहास विवेचन

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ० प्र०)

कुछ तथा कथित इतिहासज्ञो ने महाभारत हुआ ही नहीं, महाभारत हुआ तो था किन्तु रामायण से पहले, न कभी गाण्डीव रहा न पिनाक, ये तीन वक्तव्य देकर अपनी भारतीय इतिहास विषयक अज्ञानता का परिचय दिया था। जिसे मैने "रामायण महाभारत और लङ्का, रामायण इतिहास है कपोल-कल्पना नहीं, गाण्डीव भी था और पिनाक भी, रामायण पहले महाभारत बाद मे" इन चार लेखो के माध्यम से उनकी भ्रान्त धारणा को परिवर्तित कराने का यत्न किया था। उक्तमान्यता वाले सज्जनो ने कोई उत्तर नहीं दिया। इतिहास लिखने के पूर्व इतिहास क्या है इसे समझना अनिवार्य होता है। इतिहास किसे कहते हैं ? इन पंक्तियो मे हम इसे प्रस्तुत कर रहे हैं।

मैकाले की योजना की शिक्षा से शिक्षित कहलाने वाले इन तथा कथित इतिहासज्ञो को यह पता है कि मैकाले ने यह शिक्षा योजना इसलिये भारत मे प्रचलित करायी थी कि इससे शिक्षित होकर भारतीय केवल रक्त, रंग और नाम से ही भारतीय रह जाये किन्तु आचार-विचार से एकदम अभारतीय तथा अंग्रेजी सभ्यता के पुजारी बन जायें। यह जानकर भी उसी पद्धति को कार्यान्वित करने के लिये अंग्रेजो द्वारा तैयार किये गये कल्पित तथा मिथ्या इतिहास का स्वाधीनता के चालीस वर्ष बीत जाने पर आज भी प्रमाण मानते रहना बुद्धिमानी नहीं कही जा सकती। खेद की बात तो यह है कि विदेशियो और उनका अन्धानुकरण करने वाले भारतीय लेखको के लेखो से इधर-उधर हटकर खोज करना तो एक ओर रहा, यह लोग साधार। तर्कों से भी काम लेने को तैयार नहीं। उन तर्कों से भी—जो इनके अपने विचारो, मान्यताओ और धारणाओ के विषय मे उत्पन्न होते हैं। तर्कों के उत्पन्न होने पर उन तर्कयुक्त प्रश्नो के युक्तियुक्त तथा प्रामाणिक उत्तर ढूंढना ही अनुसंधान कहलाता है। जो व्यक्ति इस प्रकार से अनुसंधान के लिये तैयार न हो, वह वास्तविकता को कदापि नहीं जान सकता और बिना वास्तविकता को जाने इतिहासवेत्ता होने का विचार रखना नितान्त खोखला तथा दम्भ मात्र है। ऐसे व्यक्तियो द्वारा इतिहास विषयक वक्तव्य देना अनधिकार प्रयत्न तथा मनुष्य को दिग्भ्रान्त करने का पाप है।

उन दिनो जब इन तथाकथित इतिहास वेत्ताओ के वक्तव्य भारत के प्रमुख समाचार पत्रो मे प्रकाशित हो रहे थे, तब कई स्थानो पर "रामायण और महाभारत ऐतिहासिक ग्रन्थ हैं अथवा नहीं" इस विषय पर गोष्ठियाँ और सम्मेलन आयोजित किये गये।

इन आयोजनो मे भारतीय इतिहास की जानकारी रखने वालो को नहीं बुलाया गया। बुलाना तो एक ओर रहा—हम लोगो से सम्पर्क कर यह जानने का प्रयत्न भी नहीं किया गया कि इस विषय पर आप कोई जानकारी दे सकेंगे क्या ? अथवा इस विषय मे आप कुछ कहने की इच्छा रखते हैं क्या ?

भारतीय इतिहास को यूरोपीय लोगो, विशेषकर ब्रिटेन निवासियो ने क्यो विकृत किया ? इस विषय मे इतिहास विषयक सुप्रसिद्ध अनुसन्धानकर्त्ता तथा लेखक स्वर्गीय श्री पण्डित भगवद् दत्तजी के विचार पाठको की जानकारी के लिये हम नीचे प्रस्तुत कर रहे है।

"राथ, ह्विटने, वेबर, मैक्समूलर, मैक्डानल, कीथ और रैपसन आदि पाश्चात्य लेखको को यह महान् भय था कि यदि एक बार भी आर्य इतिहास सत्य स्वीकृत हो गया तो तौरेत, जबूर और इञ्जील का मत—जो वर्त्तमान यहूदी और ईसाइयो ने समझ रखा है—संसार से उठ जायेगा। संसार वेदो की ओर झुकेगा, भारतीय गौरव पराकाष्ठा को प्राप्त होगा और संसार भारत का अभूतपूर्व मान करने लगेगा। मनु आदि ऋषि सर्वोपरि माने जायेंगे, कथित आसुरी और पञ्चशिख आदि सांख्य प्रवक्ता, हिरण्यगर्भ आदि योग वक्ता स्कन्द इन्द्र, विष्णु, भारत चक्रवर्ती, मन्धाता, हैहय अर्जुन, जामदग्न्य राम, दशरथि राम और पार्थ अर्जुन आदि अतिमहारथ महासेनापति वर्त्तमान ऐतिहासिको के हृदय मे उज्ज्वलता प्राप्त करेंगे। संसार का अद्वितीय पुरुष श्री कृष्ण—जिसके पश्चात् उससे शतांश दिव्य-गुण रखने वाला एक पुरुष भी आज तक इस भूतल पर नहीं जन्मा—संसार का हृदय सम्राट् होगा अत इन जर्मन और अंग्रेज आदि लेखको ने भारतीय इतिहास पुराण-ग्रन्थो का महानिरादर किया। वैदिक ग्रन्थो से वे साक्षात् परे नहीं हट सके। पर उन्होने अधिकांश मिथ्या कल्पनायें कहकर उन्हे परे फेंक दिया और इतिहास आदि को उन्होने वैदिक ग्रन्थो के विपरीत बताकर अपनी कपोल-कल्पना आरम्भ की।

इन विचारों को व्यक्त करने वाले स्वनामधन्य श्री पं० भगवद् दत्त जी ने भारतीय इतिहास विषयक अपनी खोज प्रस्तुत करते हुए घोषणा की है कि "योरुप के लेखको को ज्ञान हो जाना चाहिए कि उन की कल्पनायें अब भारत मे मान्य नहीं होगी। उन्हे शिष्य बनकर भारतीय विद्वानो से पढना होगा और अपने उच्छृंखल तथा कल्पित भाषा मतो को तर्कयुक्त बनाना होगा। उन्हे ईसाई पक्षपात छोडकर सत्य की आराधना करनी होगी।" उन्होने लिखा है कि—इतिहास किसे कहते है ?

इतिहास पुरावृत्त ऋषिभि परिकीर्त्यते।"
आचार्य शौनक कृत बृहद् देवता ४।४६।

इतिहास अर्थात् पुरावृत्त (पुराना वृत्तान्त) ऋषियो द्वारा कीर्तित (वर्णित) है।

'इतिहैवमासीदिति य कथ्यते स इतिहास।'
आचार्य दुर्ग कृत निरुक्त भाष्यवृत्ति २।१०।

अर्थात् यह निश्चयपूर्वक इस प्रकार हुआ था, जो ऐसा कहा जाता है, वह इतिहास है।

'इतिहास पुरावृत्त।' अमर कोष नामलिंगानुशासनम् १।६।४।

इतिहास प्राचीन वृत्तान्त को कहते हैं।

[शेष पृष्ठ आठ पर]

पी० ए० सी० कमाण्डेण्ट त्रिपाठी का निलम्बन अनुचित

आर्य प्र० सभा उ० प्र० के प्रधान श्री इन्द्रराज जी का वक्तव्य

यह समाचार पढ़कर बड़ा आघात लगा कि पी०ए०सी० के कमान्डेण्ट श्री युत् आर० डी० त्रिपाठी को निलम्बित कर दिया गया है। यह स्पष्ट है कि पी० ए० सी० की भूमिका दगो मे सदैव गौरवशाली रही है और इस दंगे मे भी यदि पी० ए० सी० निष्पक्ष भूमिका न निभाती तो मेरठ जलकर स्वाहा हो जाता। दि० १८ और १९ मई की मध्य रात्रि मे दगाईयों का राज्य रहा और उन्होने हापुडरोड, गोलकुआ, पिलोखड़ी रोड, हाशिमपुरा, डेरी फार्म, शास्त्री नगर ब्लाक, गौतमपुरा, तारापुरी, खत्तारोड, भूमियापुल और शाहपीर आदि क्षेत्रों में, जितनी धन और जन की हानि हो सकती थी, वह की। बाद मे एक मात्र पी० ए० सी० ने ही उन दुर्दान्त दगाइयो पर काबू पाया। नगर को बचाने वाली पी० ए० सी० को धन्यवाद देने के बजाय श्री त्रिपाठी का निलम्बन बडा दुर्भाग्यपूर्ण है और पी० ए० सी० तथा मेरठ के नागरिको के मनोबल को गिराने वाला है। मैं पूछना चाहता हूं जब न्यायिक जांच का आदेश दे दिया गया तो फिर निलम्बन का क्या अर्थ? सारे नगर की गडबड़ी को छोड़कर केवल श्री त्रिपाठी को निलम्बित करने का पक्षपात क्यो ? दगाई केन्द्रित क्षेत्रों में तलाशी लेने पर विदेशी आधुनिकतम अनेकों हथियार मिलने पर तो कोई ठोस कार्यवाही सामने नहीं आई परन्तु ऐसे पक्षपात पूर्ण निलम्बनसे उन दगाईयो को प्रोत्साहन स्वत ही मिल रहा है। इस से पूर्व दगो मे भी जब २ पी० ए० सी० ने नगर की रक्षा की तब तब दगाइयो ने उस के विरुद्ध आवाज उठाई है और प्रशासन तुरन्त ऐसे प्रभाव के सामने झुक जाता है।

हमारी प्रबल माग है कि तुष्टीकरण की नीति को छोड़कर जन भावना का आदर करते हुवे पी० ए० सी० कमाण्डेण्ट श्री त्रिपाठी के निलम्बन को तुरन्त निरस्त किया जाये। साम्प्रदायिक उन्माद भड़काने वाले शेख अब्दुला बुखारी, हाजी मस्तान और शहाबुद्दीन जैसे लोगो की गतिविधियो पर अकुश लगाया जाये।

बडा ही आश्चर्य का विषय है कि प्रशासन की ओर से समस्त प्रतिबन्धो के बावजूद श्री० शहाबुद्दीन चुपके से मेरठ आये। दगाग्रस्त क्षेत्रो का दौरा किया और प्रशासन की ओर से चल रहे तलाशी अभियान की रोषपूर्ण शब्दो मे रोकने की माग की और उन की माग के सामने घुटने टेक दिये गये और तलाशियां बन्द कर दी गई प्रतिबन्ध तोड़ने की उन के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गई इस अभूतपूर्व दगे की कल्पना मात्र से इस के पीछे देश को तोड़ने का बहुत बड़ा षड्यन्त्र प्रतीत होता है। सरकार और प्रशासन को तुष्टिकरण की नीतिसे ऊपर उठकर यह जानना होगा कि इतनी बडी मात्रा मे ये हथियार कैसे और कहा से आये ? और दोषी व्यक्तियो को कठोर दण्ड देना होगा।

भारत-अहिंसा, सत्यअस्तेय का पर्याय है

१८-५-८७ को भारत विकास परिषद की महिला समिति के तत्वावधान मे एक सगोष्ठी मेरठ स्टेडियम के सभाकक्ष मे हुई। विषय था-भारतीयता क्या है? और वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे इसका क्या महत्व है। डा० विजय पाल गुप्ता जी ने सभा का सयोजन किया इस अवसर पर डा० विमलापुरी डा० के० सी० गुप्ता श्रीमती प्रभा रस्तोगी एव प्रो० शिवानन्द जी ने अपने विचार व्यक्त किये। वक्ताओं ने विषय व्यापक तथा गम्भीर बताया-उन्होने बताया विदेश जाने पर भारतीयता और भारतीय का आभास होता है।

अन्त मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष श्री इन्द्रराज जी ने विषय का समापन करते हुए बताया कि दो अरब वर्ष से सृष्टि क्रम अनादि प्रवाहवत चला आ रहा है। प्रथम समस्त ससार भारत ही था। बाद मे टुकड़े होते चले गये। भारत क्या है पहले इसको समझने की आवश्यकता है। जो भी भारत है उसकी चप्पा-२ भूमि से प्यार ही भारतीयता है। दूसरे शब्दो मे जो भावना- मातृभूमि पितृभूमि और पुण्यभूमि के रूप से सस्पर्श होती है वो भारतीयता है' भौगोलिकता से ऊपर उठकर यदि हम विचार करें तो अहिंसा ही भारत है। सत्य-अस्तेय ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि ही भारत है। आदि सृष्टिमे भारत का निर्माण होने के कारण भारत अत्यधिक विशाल है। हमे जातिवाद-वर्गवाद और प्रान्तवाद मे पडकर इसे छोटा नहीं बनाना है। आज के, वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे भारत को बचाने के लिये भारतीयता अर्थात भारत के साथ प्यार को विकसित करना है। तभी हम हिंसा व साम्प्रदायिक" पर विजय प्राप्त कर सकते है।

साम्प्रदायिक दंगा पूर्व नियोजित

सभा प्रधान जी का वक्तव्य

१८-५-८७की रात्रिसे निरकुश दगाईयों द्वारा मेरठमे हिंसा और अग्नि काण्ड का ताण्डव नृत्य, जिस के द्वारा कई सौ करोड़ रुपये की हानि तथा बहुत बडी सख्या मे जन हानि, जहा नगर प्रशासन की अकर्मण्यता और असफलता का द्योतक है, वहाँ हम जागरूक नागरिको के लिए लज्जा का विषय है। इस सब को देखते हुए तथा दिल्ली मे भड़कीहिंसा को देखते हुए यह एक बहुत बड़ा षड्यन्त्र प्रतीत होता है। १९-५-८७ को दिन मे भी और रात्रि मे भी अग्नि काड लूटपाट और गोली काण्ड एव पुलिस पर आक्रमण, साथ ही लाऊडस्पीकरो से उत्तेजक नारे और वक्तव्य इस षड्यन्त्र को और सम्पुष्ट करते है।

निरन्तर २४ घण्टे खुली सडको पर हत्याकाण्ड, लूटपाट, अग्निकाड हिंसा और बलात्कार आदि को प्रशासन असहाय हो कर देखता और रोकने मे असफल रहना, नागरिक सुरक्षा के लिए प्रश्न चिह्न बन गया है।

इस प्रकार का भयकर दगा प्रदेशीय और केन्द्रीय सरकार के लिए बहुत बड़ी चिन्ता का विषय है।

आर्य समाज की प्रबल माग है कि इस दगे की गहराई से जांच करवाई जाय और दगाईयों को कठोर दण्ड दिया जाए। जिनकी भारी आर्थिक हानि अथवा जन हानि हुई है उन को भरपूर मुआवजा दिया जाए। मेरठ मे इतनी जल्दी दगे का भड़कना तथा नगर के धार्मिक स्थलों मे बाहर से अधिक मात्रा मे आये हुए व्यक्तियो का दृष्टिगोचर होना इस बात का द्योतक है कि बाहर से मेरठ मे दगाइयो द्वारा बहुत बड़ी मात्रा मे हथियार और गोला बारूद एकत्र किया गया है। घर २ की तलाशी लेकर हथियारो और अनधिकृत गोला बारूद को जब्त करना तथा अपराधी दगाईयो को कठोर दण्ड देना ही मेरठ मे दगे पर काबु पाने का एक मात्र उपाय है। अन्यथा कुछ शान्ति के पश्चात् मेरठ को पुन यह दुर्दिन देखना पड़ सकता है।

विद्रोह को साम्प्रदायिक दंगे कहना विनाश कारी होगा

(श्री शिव कुमार गोयल, पिलखुआ गाजियाबाद)

(गताङ्क से आगे)

इंका के हरिजन विधायक श्री मानक चन्द आजाद ने बताया कि मै तथा मेरठ जनपद के अन्य विधायक सांसद श्री शांति त्यागी के नेतृत्व मे मलियाना जाकर पूरी घटना की जांच कर चुके हैं। पी० ए० सी० अवैध शस्त्रो की तलाशी लेनें यहां आयी थी। उस पर मस्जिद व मकानो की छतो से अंधाधुंध गोलियां चलाई गई/जवान घिर गये/तब खबर मिलने पर और टुकड़ी आई। उसने आत्मरक्षा में गोलियां चलाई तो हमलावर दंगाई मारे गये।

गांव के हरिजन बताते हैं कि मुरादाबाद बम फैक्ट्री के कर्मचारी सत्तार ने घर में बम इक्ट्ठे किये हुए थे। उसने गोलिया चलाई तो घर मे रखे बमों से विस्फोट हो गया। इन विस्फोटों से उसके परिवार के कई लोग मारे गये तथा मकान मे आग लग गयी।

गाव वाले बताते हैं कि यदि पी० ए० सी० न आती तो दगाई पूरेगाव में नर संहार कर डालते। किन्तु उनमें आक्रोश था कि पी. ए. सी. व नागरिकों पर गोलियां चलाने वाले एक भी व्यक्ति को गिरफ्तार नहीं किया गया जबकि निर्दोष १०३ लोगो को पकड़कर जेल मे डाल दिया गया।

प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जब ३० मई को मेरठ के दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने आये तो मलियाना की अनेक हरिजन महिलाओ ने उनसे कहा कि क्या वे गांव छोड़ जाएं? मजहबके जुनूनमे भरे मुसलमान अभी भी उन्हें जान से मार डालने की धमकिय दे रहे है।

यह ओछी राजनीति

कुछ राजनीतिक दलो के नेता हर दंगे की आग मे राजनीतिक रोटियां सेकने का प्रयास करते हैं। वे मुसलमानों का पक्ष लेकर, पी० ए० सी० को दोषी करार देकर अपने वोट बंक भरने को उत्सुक रहते हैं। जब १९ व २० मई को मेरठ जल रहा था तब इन नेताओ ने दंगा शुरू करने वालो की निन्दा क्यो नहीं की? उस समय मेरठ आने का कष्ट क्यों नहीं उठाया? विपक्षी दलो में केवल भाजपा अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा है कि केवल मलियाना कांड की नहीं पूरे मेरठ के दंगों की एक साथ जाच की जाये। मुसलमानों के वोटो के भूखे विपक्षी नेता यह जानते हैं कि यदि पूरे काण्ड की जांच हो गयी तो यह रहस्योद्घाटन होगा कि पाकिस्तान समर्थक तत्वों ने ही आगजनी हत्याएं शुरू की थी। ये राजनीतिक नेता पी० ए० सी० के खिलाफ बवंडर केवल मुस्लिम वोटों को प्रभावित करने के लिए मचा रहे है।

विदेशी एजेन्ट सक्रिय

मेरठ व दिल्ली के दंगों के पीछे निश्चय ही पाकिस्तान समर्थन अलगाववादी व राष्ट्रद्रोही तत्वो का हाथ है। तलाशी के दौरान मेरठ के अनेक मोहल्लो में मुसलमानों के घरों से भारी मात्रा में पाकिस्तान में बनी राइफलें, बम तथा पिस्तौलें पकड़ी गयी हैं। नाहिरअली नामक उद्योगपति के घर से पाकिस्तानी राइफलें बरामद हुई हैं। पाकिस्तान में छपा उत्तेजक साहित्य भी बरामद हुआ है। इससे भी यह साफ हो जाता है कि कुछ बाहरी तत्व यहां तक विदेशी शस्त्र पहुचाते रहे हैं।

समय की चेतावनी

दंगों के विश्लेषण से साफ जाहिर है कि विदेशी मदद से राष्ट्रद्रोही तत्व भारत मे गृहयुद्ध छेड़ने पर उतारु हैं। राष्ट्रद्रोही तत्वो के इरादे अब पूरी तरह बेनकाब होचुके है। वोटो कीराजनीतिके कारण ऐसे राष्ट्रद्रोही तत्वों का अब और अधिक तुष्टीकरन घातक होगा। सत्ताधारी और विपक्षीदलो के नेताओ को चाहिए कि वे उन शहीदो का स्मरण करें जिन्होंने अपना सर्वस्व होम कर देश को स्वाधीनता दिलाई है। नेता गण प्रेरित होकर उनकी स्मृति के आलोक मे निश्चय करें कि वे सस्ता स्वार्थ और दलीयहित से प्रेरित होकर राष्ट्रहितों की सीमा नहीं लाघेंगे। यदि देश के राजनीतिज्ञों ने अब भी राष्ट्रहितो को महत्व देकर राष्ट्रविरोधी तत्वों के विरुद्ध मुखर आवाज न उठाई तो देश की अखण्डता खतरे मे पड़ जायेगी और आने वाली पीढ़ियों इन राजनीतिज्ञों को कभी क्षमा नहीं करेंगी।

मलयाना गांव के हत्याकाण्ड की झूठी खबर की जिम्मेदारी किस पर

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्व देशिक आर्य प्रतिनिधि सभाने एक वक्तव्यमे कहा कि कुछ समाचार पत्रोने मलयाना गावमे पी० ए० सी० द्वारा ७० से १०० व्यक्तियो के मारे जाने का समाचार प्रकाशित किया था और सरकार ने मरने वालो की संख्या १५ बताई थी। लापता व्यक्तियों की संख्या १११ छापी गई थी। वास्तव मे श्री सलीम अख्तर सिद्दीकी और बसीर खां ने ही पी० ए० सी० के अत्याचारो के सम्बन्ध मे प्रेस में झूठा समाचार दिया था कि पी० ए० सी० के जवानो ने बिना किसी कारण से वहां दो घण्टे तक गोली चलाई और एक समुदायके लोगो को मारा गया। और मलयाना एक दूसरा बेरुत बन गया।

समाचार पत्रो के इस बयान पर कुछ राजनीतिक नेताओं मे जिनमे चन्द्रशेखर, शहाबुद्दीन आदि थे, ने भी उछाला कि मलयाना मे मुसलमानो का बड़ी संख्या मे नर सहार किया गया है। उन्होने प्रधान मन्त्री को भी वहा जाने पर मजबूर किया। इन सबने पी० ए० सी० के कमाण्डेन्ट आफीसर श्री आर० डी० त्रिपाठी के विरुद्ध जो कुछ कहा, उससे प्रदेश के मुख्य मन्त्री और गृहमन्त्री भी इस झूठी कहानी पर विश्वास कर गये और त्रिपाठी को सस्पेन्ड कर दिया दूसरे दिन उन्होने इसका प्रतिवाद भी कर दिया।

अब मलयाना गाँव के जिन १११ व्यक्तियो के मरजाने व लापता होने की घोषणा की गई थी उनमे से ८५ का पता लगा लिया गया है। बताया जाता है कि उनमे ८७ व्यक्ति अपने नजदीकी गांव कांजरी मे चले गये थे। दो व्यक्ति और हैं, जिन्हे पुलिस थाने मे ले गई थी। इनमे एक हुज्जा है जो ५४ वर्ष का है, उसे पुलिस थाने ले गई थी वह अब लौट आया है।

अब यह बात सिद्ध हो गई है कि मलयाना के कुछ मुसलमान लोगों ने पी० ए० सी० को बदनाम करने के लिए यह कहानी बनाई थी।

चाद खां नामक व्यक्ति के मारे जाने और उसके वारिस होने का दावा करके बसीर खॉं ने २० हजार रुपया सरकार से ऐंठ लिया था, वह जिन्दा वापस आ गया है। चांद खां ने वापस आकर बसीर खां से कुछ राशि मांगी तो बसीर खा ने मना कर दिया, इस पर चांद ने पुलिस मे आकर सारी बात कही।

मलयाना गांव के इस झूठे समाचार के आधार पर चन्द्रशेखर व शहाबुद्दीन तथा अन्य विरोधी दलो के नेताओ के बयानों से पाकिस्तान में हिन्दुओं का जो नर सहार हुआ है, उसकी जिम्मेदारी इन्ही लोगो पर जाती है। इसी प्रकार के गलत बयानो से देश का बड़ा अहित हो रहा है और दिल्ली मे पिछले दिनों हुए दंगे भी गलत बयानो के कारण ही हुए थे।

संस्कृत की अवहेलना न की है, न की जायेगी

मानव संसाधन मंत्री का शिष्ट मण्डल को आश्वासन

संस्कृत की न अवहेलना की है न की जायेगी और न ही संस्कृत के किसी अध्यापक को हटाया जाएगा। सन् १९६८ से जो शिक्षा नीति व्यवहार मे है, और उसमे संस्कृत को जो स्थान मिला हुआ है, उसमे सरकार ने कोई परिवर्तन नहीं किया है। नई शिक्षा नीति मे संस्कृत को उचित स्थान देने के लिए हम सारे देश मे विद्वानो से विचार विनिमय करके रचनात्मक पग उठाने के लिए कृतसंकल्प हैं। हम संस्कृत को जनता के जीवन के साथ जोड़ना चाहते हैं, क्योंकि भारतीय संस्कृति और भारत की सभी भाषाओ की प्रेरणा स्रोत संस्कृत ही है। ये शब्द १३ जून ८७ को मानवीय विकास एवं संसाधन मंत्री श्री नरसिंहाराव ने संस्कृत के विद्वानो के शिष्टमण्डल को कहे। स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के नेतृत्व मे इस शिष्टमण्डल मे आर्य समाज और सनातन धर्म सभा के प्रमुख नेताओ, दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत के प्राध्यापक तथा अन्य अनेक संस्कृत के विद्वान सम्मिलित थे। उन्होने यह भी कहा कि शासन किसी भी प्रकार का अपेक्षित परिवर्तन परिवर्धन आप लोगो के परामर्श से ही करेगा।

शिष्टमण्डल मे स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के अतिरिक्त श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम, डा० कमला रत्नम्, श्री विजयेन्द्र स्नातक, श्री क्षितीश वेदालंकार, गोस्वामी गिरधारीलाल, श्री विमल भारद्वाज, डा० आनन्द प्रकाश, प० रामगुरु शर्मा, श्री प्रेमलाल गुप्ता, डा० धर्मपाल डा० कृष्णलाल, चौधरी लक्ष्मीचन्द, श्री जगदीश प्रसाद वैदिक आदि सम्मिलित थे।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मंत्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सार्वदेशिक सभा द्वारा दंगो के जॉच के लिए समिति गठित

[प्रथम पृष्ठ का शेष]

हमे इस बात से भी बड़ी चिन्ता है कि हमारे ही देशवासियों मे से कुछ लोग उन विदेशी ताकतो से पैसा प्राप्त करते हैं जो हमारी जनता को जाति, धर्म और सम्प्रदाय के आधार पर बाटकर देश का विघटन करना चाहते हैं। इस सन्दर्भ मे नवगठित बहुजन समाज की गतिविधिया ध्यान देने योग्य हैं। आर्यसमाज एक सामाजिक संस्था है, जिसका राजनीति से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है और जो अपने देश और देशवासियो के प्रति वफादार रहा है। हमने एक समितिगठन करने का निश्चय किया है, जो देहलीऔर मेरठ मे हुए साम्प्रदायिक दंगो की जाच करके लगभग एक महीने मे अपनी रिपोर्ट दे देगी।

अगले महीने दिल्ली मे अखिल भारतीय स्तर पर एक सम्मेलन आयोजित करने का भी विचार है। हम सभी राजनैतिक पार्टियो के नेताओं को चेतावनी देना चाहते हैं कि हिन्दू जाति उनके ऐसे किसी भी कार्य को सहन नहीं करेंगी, जो केवल अल्पसंख्यक समुदाय को सन्तुष्ट करने की दृष्टि से किए जाएगे।

रामचन्द्र राव वन्देमातरम्
वरिष्ठ उप प्रधान

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती
प्रधान

सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली

इतिहास विवेचन

[पृष्ठ ५ का शेष]

'इति ह शब्द पारम्पर्योपदेशे अव्ययम्।
इति हास्ते अस्मिन्निति इतिहास।'
श्री सर्वानन्द कृत टीका सवस्व)

परम्परा से जो कहा जा रहा है कि ऐसा हुआ था, वह अव्यय है अर्थात् उसमे परिवर्तन योग्य कुछ भी नहीं है, इसलिये वह इतिहास है।

'इद भृगु महाप्राज्ञ धर्मयुक्त महायश।
इतिहास पुरावृत्त शरजार्थ महाफलम्।।'
महाभारत अनु० पर्व ६७१३।

इस श्लोक की द्वितीय पंक्ति मे इतिहास को पुरावृत्त (प्राचीन वृत्तान्त) कहा गया है।

पुराणम्–इतिवृत्त–आख्यायिका–उदाहरण–धर्मशास्त्र–
पुराण, इतिवृत्त, आख्यायिका अर्थशास्त्र चेति इतिहास।'
आचार्य विष्णु गुप्त कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र अ० ५) पुराण, इतिवृत्त, आख्यायिका उदाहरण, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र ये ६ इतिहास हैं।

वार्तं तिह्य पुरातनी। पुरातनी वार्ता इति ह इति निपात समुदाय। उपदेश पारम्पर्ये वर्तते इतिह इत्येव ऐतिह्यम्।
(हेमचन्द्र जैन कृत अभिधान चिन्तामणि)

पुरानी वार्ता ऐतिह्य है। पुरानी वार्ता निश्चयपूर्वक इस प्रकार था ऐसा वर्णन करती है। उपदेश परम्परा से यह चली आती है अत यह भी इस प्रकार की निश्चित वार्ता मे होने के कारण ऐतिह्य है।

ऐतिह्य शब्देनेतिहासपुराण गृह्यते।
भट्ट भास्कर ३१ वीं शती विक्रम)

ऐतिह्य शब्द से इतिहास पुराण का ग्रहण होता है।

प्रिय पाठकगण! जो व्यक्ति इतिहास की इन परिभाषाओ, व्याख्याओ और लक्षणो से अपरिचित हैं, वह भारतीय इतिहास के विषय मे प्रामाणिक विद्वान् नहीं कहला सकता। भारतीय इतिहास की वास्तविक जानकारी के लिए इतिहास विषयक उपरोक्त विवेचनाओ को हृदयगम करना अनिवार्य है।

नवीन आर्य समाज की स्थापना

आर्य समाज टाडा मुजफ्फर नगर के सहयोग से ग्राम अज्वड मे नवीन आर्य समाज की स्थापना की गयी और उसके प्रधान श्री शिव चरण लाल मंत्री जगपाल सिह कोषाध्यक्ष साहब सिह चुने गये।

आर्य समाज गोला गोकर्णनाथ

प्रधान डा० गिरधारी लाल शर्मा
मन्त्री श्री टीकम सिंह बीसल
कोषाध्यक्ष–श्री विजय कुमार राठी

शुभ विवाह

आर्य समाज महरामऊ उन्नाव के सदस्य एव आर्य वीर दल के मंत्री श्री सुरेश कुमार सिंह एडवोकेट का विवाह आयु० रानी सिंह आर्या के साथ २४–५–८७ को वैदिक रीति से श्री शिवदास शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया।

धर्म निरपेक्षवाद और आर्य समाज

(शेष पृष्ठ ४ से आगे)

शासन के कार्यों में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित न हो।

धर्म-निरपेक्ष राज्य अपने में कोई महान लक्ष्य नहीं अपितु परिस्थिति विशेष का एक समाधान मात्र है। यदि हमें कहने की छूट हो तो हम यही कहेंगे कि धर्म-निरपेक्षता का अर्थ अधर्म-सापेक्ष के अतिरिक्त और कुछ नहीं। फिर भी जहां तक हमारे देश के शासन और राजनीति का प्रश्न है, दोनों धर्म-निरपेक्षता की दुहाई देते हुए भी वस्तुतः धर्म-निरपेक्ष हैं नहीं। अन्यथा ये हिन्दू कोड बिल, मुस्लिम परसनल ला आदि धर्म विशेष के लिये क्यों हैं? ऐसे कानून क्यों नहीं बनते जो भारत की तमाम जनता पर एक समान लागू हों? यह अल्प संख्यक का आधार क्या धर्म-निरपेक्षता है, सम्प्रदाय-विशेष के प्रति तुष्टिकरण की नीति का अपनाया जाना भी क्या धर्म निरपेक्षता का प्रतिपादक है? इसाईमत के सर्वोच्च पोप के भारत में आने पर राष्ट्रीय अभिनन्दन का क्या अर्थ? अल्प-संख्यक आयोग की नियुक्ति किस लिए? चुनाव के समय वोटर की संख्या के अनुपात से सम्प्रदाय विशेष का प्रत्याशी क्यों चुनाजाता है? क्या यह सब धर्म-निरपेक्षता के द्योतक हैं?

इस तथाकथित धर्म-निरपेक्षता ने सब से अधिक हानि यदि किसी सम्प्रदाय को पहुंचाई है, तो वह हिन्दू मत ही है। द्वारिका पीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी का कथन है कि "सरकार चालीस साल से धर्म-निरपेक्षता की नीति अपनाये हुए है, जिसके परिणामस्वरूप एक धर्म मिटता जा रहा है।" द्रष्टव्य-अमर उजाला दिनांक २३-३-८७ धर्म-निरपेक्षता का प्रभाव किसी के ह्रास के रूप में क्यों परिलक्षित हो रहा है। जो भी हो, इस धर्म-निरपेक्षवाद ने देश को खोखला कर दिया है और स्थिति यह है कि-

हम कहीं हिन्दू कहीं मुसलमान
बन लड़ते रहे,
धर्म की चौपाल पर।
सारा वतन जलता रहा।
यह वतन हमारा न
जले, सरसब्ज रहे, आबाद रहे
ऐसी कोई नीति होनी चाहिये
अपने देश में।

गुरुकुल प्रभात आश्रम में "संस्कृत सुरक्षा दिवस"

गुरुकुल प्रभात आश्रम में दिनांक १९-५-८७ को 'संस्कृत सुरक्षा दिवस' मनाया गया तथा इस अवसर पर एक सभा का भी आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता भारतीय ज्ञान विज्ञान के मर्मज्ञ विद्वान एवं भारतीय संस्कृति सभ्यता के अनन्य भक्त गुरु-कुल के आचार्य श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने की। इस में स्थानीय लोगों के अतिरिक्त बाहर से पधारे विद्वानों ने भी उत्साह के साथ भाग लिया।

नई शिक्षानीति में संस्कृत की उपेक्षा से सभी लोग क्षुब्ध थे। अधिकांश वक्ताओं ने निर्भय पूर्वक यह प्रतिपादित किया कि यह सब एक नियत षड्यन्त्र के अन्तर्गत ही हो रहा है। वक्ताओं ने कहा कि आधुनिक भारतीय भाषाओं में संस्कृत को न रखकर जो शिक्षानीति निर्धारित की गयी है यह राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध होगी। सरकार उर्दू जैसी सम्प्रदाय विशेष की भाषा को तथा अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषा को प्रोत्साहन देकर भारतीय संस्कृति की आत्मा ऋषि-मुनियों, मनीषियों, महर्षियों और संसार के श्रेष्ठतम कवियों के सतत चिन्तन के आधारभूत संस्कृत की घोर उपेक्षा कर सच्चे भारतीयों के ही नहीं भारत मां के भी अन्त-स्तल पर क्रूरता के साथ भयङ्कर वज्र प्रहार कर रही है।

यह सब जानते हैं कि ईसाई तन्त्र ईसाइयत के प्रचार में संस्कृत को सबसे बड़ा बाधक समझता है। अतः उनके द्वारा सतत यह प्रयास होता रहा है कि भारतीय संस्कृति और संस्कृत का समूल उन्मूलन कर दिया जाये। देश को स्वतन्त्र हुये चालीस वर्ष बीत जाने पर भी भारतीयता का निरन्तर ह्रास इस बात का प्रमाण है।

तुष्टीकरण की नीति को देख-कर लगता है कि सरकार फूफ्कारते विषैले सांपों को ही दूध पिलाने पर उतारु है,

वक्ताओं ने भारतीय भाषाओं और संस्कृति के विनाश में दूसरा कारण यह पाया कि राष्ट्र भक्त लोग राजनीति में नहीं आ रहे है। पिछले दिनों यह बात सामने आयी कि मुस्लिम के नाम पर सभी मुसलमान नेता इकठ्ठे हो गये, चाहे वह किसी भी राजनैतिक दल का हो। इसी प्रकार सिखी के नाम पर सभी सिख इकठ्ठे हो गये, यहां तक कि कम्युनिष्ट विचार वाले भी पिछे नहीं रहे। ईसाई नेता खुल कर भले ही न आये, पर उन को पूर्ण रूपेण राज्याश्रय प्राप्त है और वे पूरी लगन से ईसायीकरण में लगे हैं। पर हिन्दुओं की बात को कहने के लिये संसद में कोई हिन्दू नेता नहीं है। हिन्दुओं के मतों से जीतने वाले जो लोग हैं वे तो हिन्दू का नाम लेना भी पाप समझते हैं। इस परिस्थिति में हिन्दुत्व को अर्थात् भारतीयता से सम्बन्ध रखने वाले सभी तत्वोंकी उपेक्षा स्वाभाविक सी बन गयी है। इस के लिये अब समय आगया है कि सभी राष्ट्रवादी तत्व आगे ायें।

कुछ वक्ताओं ने संस्कृत के महत्व पर प्रकाश डाला और इस की रक्षा के उपाय के रुप में सुझाव दिया कि संस्कृत को पारिवारिक भाषा के रुप में विकसित कर बोल चाल में लाया जायें। पत्र पत्रिकायें प्रकाशित की जायें और उस के द्वारा जन जागृति फैलायी जाये। प्रशासनिक परीक्षाओं में संस्कृत को अनिवार्य किया जाये। आकाशवाणी व दूरदर्शन की सेवाओं से अधिक संस्कृत को प्रचारित किया जाये। संस्कृत को मृत भाषा कहकर उपेक्षा की जा रही है लोगों में आस्था उत्पन्न कर इस की उपादेयता सिद्ध करना अनिवार्य है क्यों कि हमारा सब कुछ इसी में निहित है श्रीवत्स निगमालंकार ने संस्कृत के भाषा वैज्ञानिक स्वरुप का विश्लेषण करते हुए इस बातपर बल दिया कि संस्कृत ही समस्त भषाओं का उद्गम है। सभी भाषाओं की उन्नति संस्कृत के बिना नहीं हो सकती है।

अन्त में सभा के पूज्य अध्यक्ष महोदय ने अपने भाषण में इसबात पर बल दिया कि संस्कृत की रक्षा सच्चरित्रता से ही हो सकती है। आज संस्कृत के रक्षक ही भक्षक बन गये हैं। हम सच्चाई और निष्ठा के साथ अपनी आचार संहिता पर दृढ़ नहीं हैं। चारित्रिक पतन से दुर्बल बाहुओं से संस्कृत की रक्षा नहीं की जा सकती। अनुकरण की परम्परा से संस्कृत के विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और गुरुकुलों की आत्मा ही मर चुकी है। अतः चारित्रिक उत्थान के साथ संगठित होकर आगे आये। हम जहां हैं जैसे हैं वहां से उसी रुप में लग जायें।

—श्री वत्स शास्त्री निगमालंकार

किशोर सम्मेलन

आर्य समाज श्रृंगार नगर, लखनऊ में रविवार ७-६-८७ को किशोर सम्मेलन हुआ। इसमें व्यवहार भानु के पूर्वार्द्ध पर प्रश्नोत्तर हुए। भाग लेने वालों में छः वर्षीय बालक हिमांशु देव भी था। आर्य समाज श्रृंगार नगर की ओर से किशोरों को दयानन्द लघु ग्रन्थ संग्रह की प्रतियां उपहार स्वरूप दी गईं।

—सञ्जय अवस्थी सम्वाद दाता

आर्यसमाज मुरादनगर आयुधनिर्माणी के वार्षिकोत्सव पर सभा प्रधान श्रीयुत इन्द्रराज जी का उद्बोधन

१७ मई–आर्य समाज आयुधनिर्माणी के वार्षिकोत्सव पर सभा प्रधान के पहुचते ही अधिकारियों द्वारा उनका स्वागत किया गया प्रधान जी ने अपने भाषण में देश की वर्तमान परिस्थिति तथा राजनैतिक चल रहे द्वन्द्व के परिपेक्ष्य में आर्यसमाज को अपने अस्तित्व के अनुरुप दायित्व वहन करना है। वस्तुतः भारत एक विस्फोटक स्थिति मे है। इस पर नियन्त्रण आर्यसमाज के आधार पर सर्वाङ्ग स्पर्शी क्रान्तिकारी अभियान द्वारा ही सम्भव है।

उन्होने कहा राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा की उपेक्षा अत्यधिक दुर्भाग्य पूर्ण है। भारत के राष्ट्रीय अस्तित्व के मूल तत्व संस्कृतको संस्कृति का आधार बताते हुए उन्होने संस्कृत रक्षा आन्दोलन की ओर आर्य जाति का ध्यान आकृष्ट किया। संस्कृत रक्षा आन्दोलन के भावी स्वरूप की प्रतीक्षा तथा उसको सम्पूर्ण आस्था से क्रान्तिकारी संघर्षात्मक ढ़ंग से चलाने हेतु आर्य जनो को कटिबद्ध रहना है।

सभा प्रधान इन्द्रराज जी द्वारा चौधरी चरण जी को श्रद्धांजलि

यह जानकर कि चौधरी चरणसिह जी इस दुनियां में नहीं रहे आर्य जगत मे शोक छा गया। मेरठ में एक साधारण किसान परिवार मे जन्म लेकर चौधरी साहब ने जहां राष्ट्रीय नेतृत्व की उचाइयो को छूआ और प्रधान मन्त्री जैसे पद को गौरवान्वित किया वहीं चौधरी साहब आर्य समाज के भी कर्मठ कार्यकर्ता और नेता रहे।

उन्होंने अपने मुख्यमन्त्री काल और प्रधानमन्त्री काल में भी आर्य समाज का ध्यान रखा। एक संस्मरण बड़ा रोमाचक है।

उनके द्वारा मेडिकल कालेज में लाजपत राय कक्ष का शिलान्यास होना था। स्थानीय अधिकारियों ने उसमें १० मिन्ट के यज्ञ कराने का कार्यक्रम निश्चय किया मैं तैयार हो गया। चौधरी साहब आए और यज्ञवेदी पर बैठ गये। मैं ने मन्त्र पाठ बहुत तेजी से प्रारम्भ किया। उन्होने मुझे एक दम रोक दिया और मुझे कहा कि ऐसी भी क्या जल्दी–है? अब उन्होने पुस्तक हाथ में लेकर स्वयं धीरे–२ मन्त्रपाठ प्रारम्भ किया। मेरी मन्त्रपाठ की गति उनके साथ मिल गयी और यज्ञ १० मिनट के स्थान पर ३० मिनट में समाप्त हुआ। मैं उन की इस श्रद्धा और निष्ठा पर मुग्ध था। वे कई बार हमारे कई शताब्दी समारोहो में आए और अपने सारगर्भित भाषणो से हमारा मार्ग दर्शन किया। वे इमानदार, निष्ठावान, काम करने वाले, देश की– अर्थ व्यवस्था एवं कृषि आदि के मर्मज्ञ और दृढ़ पुरुष थे। ऐसे महान पुरुष के चरणों में आर्य जगत की ओर से मेरा शत शत प्रणाम।

इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

निर्वाचन

आर्य समाज आयुध निर्माणी पूर्वी क्षेत्र (गाजियाबाद)
प्रधान श्री मायाप्रकाश
मन्त्री श्री आनन्द स्वरूप
कोषा० श्री हरिनन्दन

–आर्यसमाज सहतवार [बलिया]
प्रधान–श्री म० केदारनाथ आर्य
मन्त्री–श्री वेदप्रकाश आर्य
कोषा० श्री शिवजी शर्मा

मलियाना में दंगा भड़काने के लिए लोग गायब किये गये

जिन्दाको मुर्दा बताकर मुआवजे लिए गये

श्री मुख्तार अब्बास नकवी का स्पष्ट कथन

भारतीय मुस्लिम युवा सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मुख्तार अब्बास नकवी ने एक बयान में कहा कि मलियाना में दंगा भड़काने के लिए कुछ लोगो को गायब किया गया था। उनमें से बहुतों को मुर्दा घोषि. करके सरकारी धनराशि भी हासिल कर ली गयी। यह कलई बहुत से गायब लोगों के वापस आ जाने से खुल गयी। उन्होंने कहा मैंने पहले भी कहा था कि कुछ दंगाई सैय्यद शहाबुद्दीन व जामा मस्जिद में शरण पा रहे हैं। आज भी वहां छापा मारकर बहुतो को पाया जा सकता है।

उन्होने यह भी कहा कि जनता पार्टी अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर ने कहा था कि मलियाना से ११२ लोगों को गायब कर मारकर नदी मे फेंक दिया गया है यदि यह गलत निकले तो वे राजनीति छोड़ देंगे। उनकी बात झूठ निकल गयी अतः नैतिकता कहती है अब वे पद त्याग कर दें।

(१८–६–८७ के समाचार पत्रों के आधार पर)

श्यामलाल अभियांत्रिकी महाविद्यालय उदगीर (महाराष्ट्र)

श्यामलाल स्मारक आर्य शिक्षण संस्था, उदगीर (महाराष्ट्र) द्वारा संचालित श्यामलाल अभियांत्रिकी महाविद्यालय (मराठवाडा विश्वविद्यालय औरंगाबाद से संलग्न) तथा श्यामलाल तन्त्र निकेतन (महाराष्ट्र शासन द्वारा मान्य) गत ४ वर्षों से सुचारु रुप से कार्यरत है।

विशुद्ध वैदिक विचारधारा को लेकर समस्त भारत मे तन्त्र शिक्षा के क्षेत्र में यह एक मात्र आर्य शिक्षण सस्था है।

वैदिक विचारों से प्रेरित परिवारो के छात्र, छात्रायें तथा अन्य भी इस इंजिनीयरिंग कॉलिज व पॉलिटेक्निक मे प्रवेश ले सकते हैं। पढ़ाये जाने वाले विषय इस प्रकार हैं।

(१) डिग्री कोर्स के विषय, कन्स्ट्रक्शन इंन्जीनिरिंग, प्रॉड्कशन इंन्जीनिरिंग एलक्ट्रानिक्स इंन्जीनिरिंग

डिप्लोमा के विषय कन्स्ट्रकशन टेक्नोलॉजी (Civil) प्राडक्शन (Mech)डेरी इन्जीनीयरिंग, फूड टेक्नोलॉजी

सभी आर्यों का परम् कर्त्तव्य है कि इस संस्था को अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करें ताकि उस से दक्ष प्राध्यापक वृंद, सुसज्ज कार्यशाला, बृहत् ग्रंथालय और सभी प्रकार की उचित साधन सामग्री और अधिक जुटाई जा सकें वैसे वर्तमान स्थिति सन्तोषजनक है।

बी० एस० रघुवंशी प्राचार्य

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के नये पदाधिकारी

दिनांक १७ मई १९८७ रविवार को आर्य उप प्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद के निर्वाचन में सर्वसम्मति से प्रधान– श्री विक्रमसिंह आर्य मोह०ठेर, सम्भल दूरभाष ४१७, मन्त्री–श्री हरिश्चन्द्र आर्य, काजी पगड़ी, अमरोहा दूरभाष ५५४, कोषाध्यक्ष–श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य, बाजार चौक, कांठ (मुरादाबाद), आय-व्यय निरीक्षक–श्री जगदीश शरण जी आर्य, कोट पूर्वी, सम्भल। –हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
आषाढ़ शुक्ल ६
रविवार, ५ जुलाई १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य पत्र

अमृत वर्षा

मनुष्य के जीवन का एक ध्येय होना चाहिए, एक केन्द्र, जहा पहुच कर वह अपना जीवन कुर्बान कर सके, अपनी धन-दौलत और बाल बच्चो को आसानी से छोड सके। एक स्थान होना चाहिए जहा पहुच कर गर्व से वह कह सके कि चाहे प्राण चले जाए, चाहे सब ओर से विनाश का ताण्डव घेर ले, पर वह उस स्थान से लौटेगा नहीं, पीछे नहीं हटेगा। ऐसे स्थान पर ही मनुष्य का वास्तविक चरित्र और उस का वास्तविक मोल मालूम होता है।

—महात्मा हसराज

आइये सुनें मलियाना के मुसलमान क्या कहते है

हमारी रक्षा हिन्दुओ ने की, रोटी पानी का प्रबन्ध हिन्दुओं ने किया

मेरठ के दगे मे साम्प्रदायिक अलम्बरदारो की वजह से बहुचर्चित मलियाना गाव के भुक्तभोगी मुसलमान कहते हैं कि दगा फसाद कराने वाले अपनी गोटी फेंककर पीछे हट गये बदमाश गन्दी हरकतवालो ने अपना नगा नाच मचाना आरम्भ किया। हमारे घर जलाये गये औरतो की अस्मत लूटने की कोशिशें हुयीं। हमे भूखा प्यासा मरने के लिए मजबूर किया गया। ऐसे मे हमारे मुहल्ले के ही हमारे हिन्दू भाइयो ने (जिनके साथ हमारे परिवार सदियो से भाईचारे के साथ रहते आए हैं) अपनी जान की बाजी लगाकर हमारी जानें बचायीं। हमारी बहू बेटियो की इज्जत बचायी। कर्फ्यू के दौरान खाने की चीजें मुहय्या करायीं। रोजे चल रहे थे उस समय हमारे रोजा (पूजा) का सारा इन्तजाम किया। रोजा अफ्तार हमने शकून से किया।

मलियाना की बडी मस्जिद के पास स्थित लुहार मुहल्ला दगे के दर्म्यान पूर्ण सुरक्षित रहा। वहा ७०-८० मुस्लिम घर हिन्दुओ के घरो से घिरे हुए हैं वहा किसी मुसलमान का एक पाई नुकसान नही हुआ। फिर भी इस मुहल्ले के एक मुस्लिम ने बिना किसी नुकसान के मुआवजा भी सरकार से ले लिया। बिना कारण उसके मुआवजा लेने से सबने दु ख प्रकट किया। एक बुजुर्ग मुसलमान ने तो कहा कि झूठे मुआवजा लेकर हमे बदनाम किया जा रहा है। यह बयान मलियाना गाव के ही मुस्लिम भाई बहन (जिन्होने अपने नाम बताये कुछ ने नहीं बताया) श्री हमीद, निजाम, बाबू, मजीद व श्रीमती असगरी, नजरुद्दीन व सलमुद्दीन आदि के है।

(१७ जून के समाचार पत्रो के आधार पर)

—आर्य समाज भोजपुर-खेडी का ७२ वा वार्षिकोत्सव ६ से ८ जून ८७ ई० तक सम्पन्न हुआ। समारोह मे श्री ज्ञानेश्वर जी भारती (पूर्व नाम मौहम्मद मुस्तकीम श्री दिनेशचन्द्र त्यागी, के प्रभावी व्याख्यान हुये तथा श्री ओ३म्प्रकाश जी वर्मा, श्री मामचन्द्र जी आर्य पथिक, श्री नरेशदत्त आर्य द्वारा सगीत स्वर मे श्रोताओ को आध्यात्मिक रसास्वादन कराया गया।

प० रामदत्त पाण्डेय दिवगत

अल्मोडा। आर्य समाज ताडीखेत के प्रधान प० रामदत्त पाण्डेय साहित्य रत्न का निधन ४ जून' १९८७ को हो गया उनकी दिवगत आत्मा की शाति एव परिजनो के धैर्य हेतु १५ जून १९८७ को स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी की अध्यक्षता मे प० प्रेमदेव शर्मा द्वारा शान्ति-यज्ञ सम्पन्न किया गया। —पूरन चन्द्र पाण्डेय

वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ मे श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० १२४१/२७ | घोषणा पत्र सं० ७/२८–२–८१

श्रावण कृष्ण १, रविवार, संवत् २०४४ वि० दिनांक १२ जुलाई १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल–

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

★

प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए.

★

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	९०
अङ्क	२७

बोफोर्स प्रकरण में—

प्रधान मन्त्री पर जेठमलानी के आरोप निराधार

—विश्वनाथ प्रतापसिंह

भारत के भूतपूर्व प्रतिरक्षा मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने बम्बई में पोद्दार कालेज में एक प्रश्नोत्तर कार्यक्रम में कहा कि बोफोर्स घोटाले में श्री रामजेठमलानी ने प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी पर बेबुनियाद आरोप लगाये हैं। उन्होंने श्री जेठमलानी को चुनौती दी कि वे उन आरोपों के लिए प्रमाण दें। उन्होंने कहा कि ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि सन्देह भी किया जाये कि बोफोर्स सौदे में प्रधान मन्त्री सम्मिलित हैं।

१३ अरब से अधिक काला धन विदेशों में जमा कराया गया

—विश्वनाथ प्रतापसिंह

भारत के भूतपूर्व प्रतिरक्षा मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने बम्बई में एक रैली में कहा कि भारत से १३०० करोड़ रुपये से भी ज्यादा काला धन इस समय विदेशों में छिपाकर रखा गया है। उन्होंने कहा कि यह स्विस बैंकों के अलावा बहामा जैसे अन्य देशों में भी है। इस प्रकार अपने देश का धन विदेशों में भेजकर विदेशों की अर्थ व्यवस्था सुदृढ़ होगी और भारत की अर्थ व्यवस्था क्षीण होगी। निश्चय ही ऐसा करने वाले देश के शत्रु हैं।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के मूल में अंग्रेजों द्वारा हमारी सम्पदा लूटकर अपने देश में ले जाने का कारण ही प्रमुख था।

उन्होंने यह भी कहा कि बोफोर्स सौदे में कमीशन के लेनदेन करने वालों पर भारत में आपराधिक मुकदमा चलाकर दण्डित किया जाना चाहिए।

दिल्ली नर संहार का एक अभियुक्त गिरफ्तार

गत १३ जून को दिल्ली के ग्रेटर कैलाश मुहल्ले में १४ निरीह व्यक्तियों की निर्मम हत्या करनेवाले आतंकवादियों में से एक परमजीतसिंह नामक आतङ्कवादी को पंजाब पुलिस ने पकड़ लिया है। उसके साथ ही अन्य २५ और आतङ्कवादी भी उसी दिन सुरक्षा बलों ने गिरफ्तार किये हैं।

चित्रकूट मेले में पानी के अभाव में ५५ व्यक्ति मरे

अमावस्या को कामद गिरि (चित्रकूट) की परिक्रमा के लिए गये सैकड़ों यात्री पानी के अभाव के कारण बहुत ही त्रस्त हुये। ५५ व्यक्ति तो पानी पानी कहते अपने प्राण भी गंवा बैठे यह सब दुर्व्यवस्था व जनहानि प्रशासन की लापरवाही के कारण ही हुई। इतनी चिलचिलाती धूप में पानी की परिक्रमा क्षेत्र में पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिये थी जिसके अभाव के कारण लोग प्यास के मारे तड़पड़ा कर मर गये।

दिल्ली में भयंकर अग्नि काण्ड

दिल्ली में कनाट प्लेस के एक बहुमंजिले भवन में २९ जून को बिजली के शार्ट सर्किट से भयंकर आग लग गयी जिसमें कई जानें गयीं सैकड़ों घायल हुये ६० घायलों को राममनोहर लोहिया अस्पताल में चिकित्सा के लिए भर्ती कराया गया।

यह भयंकर आग २९ जून के प्रातः पौने ग्यारह बजे लगी, तत्काल फायर ब्रिगेड दौड़ पड़े अन्य सभी साधनों से भी उसे शान्त करने का यत्न किया गया परन्तु आग को पूरी तरह शाम को लगभग ४ बजे शान्त किया जा सका। बचाव कार्य में सेना के हेली कोप्टरों की भी सहायता ली गयी।

है आज भीख अन्याय देख यह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥
—भारतभूषण मोहन 'नवनीत'

सम्पादकीय

वर्षांक—श्रावणकृष्ण १ सम्वत् २०४४ रविवार १२ जुलाई १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

ऋषिर् विप्रः पुर एता जनानाम्

हरियाणा में अभी जो विधान सभा के चुनाव हुए हैं, उनमे कांग्रेसी अभ्यार्थी जिस शोचनीय स्थिति मे पराजित हुए हैं, उससे यह सुस्पष्ट हो गया है कि दक्षिण तथा पूर्वी राज्यों की भाँति अब उत्तर राज्यों मे कांग्रेस की नींव डावा डोल हो रही है, क्योंकि जनता इस दल की नीतियो से सन्तुष्ट नहीं है। केन्द्र में इस राजनीतिक दल को तीन चौथाई बहुमत प्रदान कर भारतीय जनता की एकमेव कामना यही थी कि एक सुदृढ़ केन्द्रीय सरकार, देश की समस्त ज्वलन्त समस्याओं का निराकरण कर सके और राष्ट्र की सर्वाङ्गीण उन्नति हो सके परन्तु जिस प्रकार से देश अधोगति को प्राप्त हो रहा है, उससे देश की जनता राज्य सत्ता में परिवर्तन करने पर विवश हो गई है।

आर्य समाज यद्यपि एक धार्मिक संस्था है परन्तु उसके साथ यह भी सर्वथा सत्य है कि जहां तक राष्ट्रीयता का प्रश्न है, राष्ट्र प्रेम जन्म से ही इसकी घुट्टी में विद्यमान है। इसके प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती का यह उद्‌घोष कि विदेशी राज्य चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो और अपना राज्य कितना ही घटिया क्यों न हो, फिर भी स्वराज्य प्रत्येक स्थिति में श्रेयस्कर है, उसके अनुयाइयो को राष्ट्र प्रेम के लिए सदैव प्रेरित करता रहा है और करता रहेगा। अतएव आर्य समाज को एक ही महती कामना रही है कि हमारा स्वराज्य सुराज्य बने और इस निमित्त राष्ट्र के हित में आर्य समाज ने सदैव योगदान दिया है। इस सद्‌भावना से प्रेरित होकर यदि कोई आलोचना की जाती है तो उसका उद्देश्य मात्र एक यही होता है कि जिनके हाथ में सत्ता है, यदि वे अपनी त्रुटियो को देख पाने मे असमर्थ हैं, तो उन्हें उनका दर्शन कराया जाए ताकि वे उन का सुधार कर सकें।

अब देश को स्वाधीन हुए ३९ वर्ष हो चुके हैं परन्तु दिन प्रतिदिन गिरती हुई स्थिति, असंगठन और असुरक्षा को विकसित करने वाले विनाशकारी तत्त्व, नैतिकता का ह्रास, अपराधों की निरन्तर वृद्धि और सतत बढ़ती हुई महंगाई, ये सब तथ्य इस बात के द्योतक हैं कि देश का जो सुनिर्माण इन वर्षों में होना चाहिए था, वह नहीं हो पाया। संक्षेप मे हमारी असफलताएं इस प्रकार हैं—

(१) साम्प्रदायिकता का उन्मूलन न हो पाया है और न हीं निकट भविष्य मे ऐसा होने की कोई सम्भावना है। कुछ दिन पूर्व हुए मेरठ और दिल्ली के हिन्दू मुसलिम दंगे जिन्हें पूर्व नियोजित और अब तक हुए दङ्गों मे भीषण साम्प्रदायिक आतङ्क है, इस बात की ज्वलन्त साक्षी है कि एकता के हमारे समस्त प्रयास अभी तक सफल नहीं हुए हैं। गुजरात तथा अन्य प्रान्तों में भी यदा कदा ऐसे दंगे होते रहते हैं।

(२) भाषा के आधार पर राज्य बना कर भी हम पुनः समृद्धि सौहार्द से कोसों दूर हैं। पंजाब में उग्रवादियों द्वारा खालिस्तान की मांग को लेकर, आतङ्क का तांडव नृत्य जोर भी जारी है। राष्ट्रपति शासन स्थापित होने पर भी इस राज्य में प्रतिदिन नर संहार हो रहा है, शेक घुटने टेक रहे हैं। आतङ्कवादियों की प्रतिदिन अनुकम्पा हो रही है परन्तु भस्मासुर की भांति उनकी कहीं अन्त्येष्टि नहीं हो पा रही है। गोरखा लैंड की मांग को लेकर दार्जिलिङ्ग आदि नगरो में की जाने वाली हिंसा, इस श्रृंखला की नवीन कड़ी है।

(३) हम अपनी विदेश नीति में चाहे कितने ही उदार क्यों न रहें परन्तु आज स्थिति यह है कि न तो पाकिस्तान हमारा मित्र है, न ही चीन अमरीका और न ही श्री लङ्का। जो केवल शक्ति की ही भाषा समझते हैं, वे सदैव उदार नीति को दुर्बलता और कायरता ही समझते हैं।

(४) राष्ट्रीय चरित्र का सर्वथा ह्रास हुआ है। चाहे रेलवे, बस और सिनेमा का टिकट गृह हो, चाहे यातायात हो, एक पङ्क्ति में खड़ा होना इस देश वासियों ने अभी तक नहीं सीखा। सिनेमा गृहों मे प्रदर्शित चल चित्रों ने इस देश वासियो को केवल हिंसा और अश्लीलता के पाठ पढ़ाये हैं। फिल्मी गानों ने, जिनका प्रसारण सरकार नियन्त्रित दूरदर्शन पर भी होता है केवल कामोत्तेजना को बढ़ाया है। खान पान और पहरावा सब भ्रष्ट हो चुका है। प्रत्येक क्षेत्र में घूस का बोलबाला है। अनर्गल उपायों से धन अर्जित करना और विदेशी बैंको में जमा करना आज का सबसे बड़ा राष्ट्र द्रोह है और नव विवाहित वधुओं को दहेज के लोभ में जला कर मार डालना सबसे महान जघन्य अपराध है, जिसकी रोक थाम अभी तक नही की जा सकी है।

(५) दलित वर्ग का उद्धार निस्सन्देह उत्कृष्ट कार्य है, परन्तु राष्ट्र सचालन के महत्व पूर्ण कार्य की उपेक्षा करके, अयोग्य व्यक्तियों को गलत उपायों से कुर्सी पर बैठाना राष्ट्र के हित में नहीं है। नौकरियों मे भर्ती के समय आरक्षण प्रदान करना सर्वथा उचित है परन्तु उसके पश्चात पदोन्नति में भी, चाहे वह अभ्यार्थी परीक्षा मे असफल रहा हो, उसे विशेष रूप से पास करने वाले अङ्क देकर, अथवा अयोग्य व्यक्ति को भी, रिक्त स्थान की पूर्ति के लिये, उस आरक्षित पद पर बैठाना न तो न्यायोचित है और न ही राष्ट्रहित मे है। आज स्थिति यह है कि योग्य व्यक्तियों को दक्षता के लिये प्रोत्साहन नहीं है और अयोग्य व्यक्तियों के लिए कोई दण्ड नहीं है। इन परिस्थितियों मे जिन योग्य व्यक्तियों के प्रति अन्याय होता है, उनसे हम क्या आशा रख सकते हैं ?

(६) संविधान मे घोषित हिन्दी भाषा को आज तक राष्ट्र भाषा नहीं बनाया जा सका। संस्कृत जो सब भाषाओं की जननी है और जो देश को एक सूत्र मे बान्ध सकती है, नई शिक्षा नीति मे उसकी उपेक्षा करके अंग्रेजी को जो महत्त्व प्रदान किया गया है, वह क्या राष्ट्रहित में है ?

उपरोक्त त्रुटियों के अतिरिक्त अन्य अनेक ऐसी बातें हैं जिनसे

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अध्यात्म सुधा

अग्निहोत्र

श्रीमती शकुन्तला अवस्थी, वेद मन्दिर हिन्द नगर लखनऊ-५

पंच महायज्ञ हमारा नित्य कर्तव्य है। जो इन यज्ञों को नहीं करता उसका जीवन सफल नहीं होता ऐसा ऋषियों का मन्तव्य है।

इन पांच महायज्ञों में :-१ ब्रह्मयज्ञ-परमात्मा का ध्यान, चिन्तन मनन या सन्ध्या के रूप में हम करते हैं।

२-देवयज्ञ-हवन कुण्ड में समिधाओं का चयन करके घृत व हवन-सामग्री (हवन सामग्री से तात्पर्य-औषधि, वनस्पतियों, जड़ी बूटियों, से-बनी सामग्री मेवा मिष्ठान्नादि जो भी यज्ञ में आहुति हेतु निर्मित किये गये हों) को वेदमंत्रों के मधुर पाठ के साथ अग्न्याधान करके श्रद्धापूर्वक कुण्ड में आहुतियां दी जायें।

३-पितृ यज्ञ-जीवित माता पिता व अन्य बुजुर्गों की श्रद्धापूर्वक सेवा की जाये।

४-बलिवैश्वदेव यज्ञ-भोजनालय में नमक मिर्च रहित जो खाद्य सामग्री बने उसकी अग्नि में आहुतियां दी जायें एवं फिर सम्पूर्ण भोजन में से कुछ अंश अपाहिजों अशक्तों गाय, कुत्ता, बिल्ली कौवा आदि के लिए निकाल कर दे।

५-अतिथि यज्ञ-परमात्मा से प्रार्थना करें कि नित्य कोई न कोई विद्वान् आप्त पुरुष हमारे घर पर पधारें ताकि हम उनकी सेवा कर सकें। आये-विद्वान् को श्रद्धा से सम्मान करें भोजनादि से तृप्त करें। उनसे सादर उपदेश ग्रहण करें।

इन पांचों महायज्ञों में प्रकारान्तर से सब नहीं तो कई एक प्रत्येक व्यक्ति करता ही है जो इन्हें श्रद्धापूर्वक, विवेक पूर्वक करता है उसका-जीवन सफल होता है।

इन यज्ञों में देवयज्ञ जिसे सामान्य भाषा में अग्निहोत्र कहते हैं, हम किस प्रकार करें इसकी थोड़ी-सी चर्चा नितान्त अपेक्षित है। क्योंकि इसके करने में हम कई भूलें करते हैं फिर यह यज्ञ दकियानूसी प्रकार बनता जा रहा है। समाज में देवयज्ञ को आर्य समाजियों का यज्ञ माना जाने लगा है। और बहुत से किसी न किसी रूप में आर्य समाज से उनका उनके परिवार का सम्बन्ध जुड़ा होने के नाते इस यज्ञ का अपने घरों में आयोजन भी करते हैं, परन्तु वहां यज्ञ का मर्म नहो दकियानूसी भाव ही अधिक प्रबल होता है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने देवयज्ञ के मर्म को जानकर समझकर व तदनुरूप अपने जीवन यज्ञ को करने का व्रती बनाने के उद्देश्य से देवयज्ञ का प्रतिदिन प्रातः सायं प्रत्येक संस्कार, पूर्णिमा अमावस्या या विशेष पर्वों पर विशेष रूप से हमें करने का उपदेश दिया है।

प्रायः प्रत्येक आर्य परिवार में कहीं नित्य दोनों समय कहीं एक समय कहीं पर्व विशेष कहीं संस्कार विशेष पर इस यज्ञ का आयोजन होता अवश्य है। परन्तु यज्ञ को व्यवस्थित रूप में सब कोई नहीं करता। जिससे उसका-अभीप्सित फल उपलब्ध नहीं होता।

सद् गृहस्थ या सद्गृहिणी को परिवार के लिए भोजन की व्यवस्था करते समय निम्न बातों पर ध्यान रखना अनिवार्य होता है कि:-भोजन सुस्वादु हो, सुपाच्य हो। परिवार के हर सदस्य को उसकी आवश्यकता के अनुरूप (न कम न ज्यादा) उपलब्ध हो। बच्चे को भोजन देने में हमें ध्यान रखना पड़ता है कि वह उतना ही भोजन ले जितना उसे पच जाये ताकि हानि न हो। किसी की जठराग्नि खराब होने पर भोजन हमें उसको डाक्टर की आज्ञानुरूप देना होता है। यदि अस्वस्थ व्यक्ति या बालक को उसके परिमाण से अधिक उत्तम भोजन सामग्री दे दी जाये वह उसके शरीर के लिए हानिकर होगी। यदि स्वस्थ पुरुष को उसकी आवश्यकता से कम भोजन दिया जाये तो उसका शरीर टूटेगा-वह कमजोर हो जायेगा।

ठीक इसी प्रकार हमें देवयज्ञ में भी कुछ सावधानता की अपेक्षा विशेष होती है। उस सावधानता के बिना यज्ञ लाभ के बजाय हानि कर हो सकता है।

यज्ञकुण्ड निर्धारित आहुतियो के उपयुक्त बनाया जाये। यज्ञकुण्ड के माप के अनुसार समिधायें काटकर (सूखी साफ और सीधी रहनी चाहिए) रखी जायें। गीली समिधाओं से अग्नि प्रदीप्त नहीं होती धुंवा होकर हानि देता है, सूखी समिधा निरभिमानी होने का संकेत देती है। साफ और सीधी समिधायें जीवन में मनसा, वाचा, कर्मणा एक-सा पवित्र व्यवस्थित जीवन जीने का संकेत देती है।

छोटे कुण्ड में अधिक आहुतियां डालना हानि कर है। हवि जलेगी नहीं, उसका लाभ किसी को मिलेगा नहीं व्यर्थ जायेगा। बड़े यज्ञ के लिए बड़े कुण्ड व छोटे यज्ञ के लिए छोटे कुण्ड की व्यवस्था करनी चाहिए। अग्नि प्रदीप्त करने के पूर्व समिधाओं का चयन इस भांति सुन्दरता से किया जाये कि वह वेदी में खूबसूरत भी लगे और क्रासवेन्टि-लेशन हो ताकि शीघ्रता से अग्नि प्रदीप्त हो। आहुतियां डालते समय घृत व सामग्री का परिमाण निर्धारित रूप में रखकर मंत्रों को ओ३म् सहित श्रद्धापूर्वक मधुर रूप में बोलते या श्रवण करते हुए अग्नि के मध्य में डाले। यज्ञ कुण्ड से बाहर एक कण भी सामग्री का न गिरे ऐसा प्रयत्न करें। अपनी दृष्टि यज्ञकुण्ड पर ही रखे। व्यर्थ की कोई बात न करे नाहीं इधर उधर दृष्टि दौड़ाये।

सामग्री सूखी कभी न डाले-सूखी सामग्री जहां अग्नि से सुलगकर उड़कर कपड़े जला सकती है वहीं उससे खांसी (दमा) का रोग भी उत्पन्न हो सकता है। सामग्री में पर्याप्त मात्रा में घी मिलाना चाहिए। घी की कमी होने पर दूध इस प्रकार से डालकर मिला दे कि सामग्री-उड़े नहीं। ध्यान रहे अधिक दूध भी न डाले अन्यथा वह अग्नि की प्रदीप्ति में बाधक होगी।

कुण्ड में आहुतियां पड़ते समय समिधा चयन बहुत महत्व रखता है। प्रायः देखा जाता है कि कुछ लोग जाड़ों में समिधायें अधिक लगाना पसन्द करते हैं और गर्मियों में कम। क्योंकि जाड़े में उससे शरीर को गर्मी मिलती है और गर्मियों में गर्मी से कष्ट होता है। सच्चे याज्ञिक को जाड़ा गर्मी बरसात सभी ऋतुओं में यज्ञाग्नि से सुखानुभूति होती है। वह यज्ञ करते समय यज्ञ के महत्व का चिन्तन करता, यज्ञ की प्रदीप्त अग्नि की तरह अपने जीवन को प्रदीप्त करने का संकल्प लेता है उसका ध्यान यज्ञ की उठती ज्वाला पर होता है। गर्मी सर्दी का-आभास उसे होता ही नहीं। अतः किसी भी ऋतु में कम ज्यादा नहीं आवश्यकता के अनुरूप ही समिधायें लगानी चाहिए।

[शेष पृष्ठ ८ पर]

कथा कुञ्ज

अन्ध विश्वास से मुक्ति

[श्री देवन रायण भारद्वाज, एफ० ४२ मानसरोवर कालोनी, अलीगढ़]

रेल गाडी स्टेशन पर आकर ठहरी। दो यात्री एक साथ एक ही डिब्बे मे चढे और आमने सामने की सीटो पर बैठ गये। परस्पर परिचय से ज्ञात हुआ कि एक सज्जन का शुभ नाम श्री कर्मवीर है, और दूसरे का श्री भाग्याश्रय जी। दोनो बडी प्रसन्न मुद्रा मे अपनी यात्रा के लिए उद्यत थे। बहुत देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं, और दैनिक समाचार पत्र का अवलोकन भी चलता रहा। यकायक भाग्याश्रय जी ने समाचार पत्र एक ओर पटक दिया और एकदम उदासीन व शिथिल होकर बैठ गये। जब दूसरे साथी कर्मवीर का वार्ता को जारी रखने का प्रयास निष्फल जाता दिखाई दिया, तो उन्होने भाग्याश्रय जी की समस्या पूछने मे ही भलाई समझी।

भाग्याश्रय जी ने समाचार पत्र की एक पंक्ति पढकर सुना दी। 'यात्रा खतरनाक है जीवन को संकट होगा' राशि-भविष्य के छोटे से कालम के इन शब्दो ने भाग्याश्रय जी की सम्पूर्ण प्रसन्नता का हरण कर लिया। वे सोचने लगे कि अब तो अपने परिवार मे लौटना ही असम्भव है। कर्मवीर जी अपने साथी की अन्ध पौराणिकता को देखकर बडे दु खी हुये। उन्होंने उनको समझाया कि यह जो भविष्य की बातें लिखी जाती हैं—वे सर्वथा सत्य नहीं होती हैं। आप स्वयं ही सोच लीजिए कि ज्योतिषी जी ने सम्पूर्ण विश्व के समस्त मानव समुदाय को राशियो के क्रम से १२ भागो मे बाट दिया है। उन सभी के लिए १२ प्रकार का भविष्य निर्धारित कर दिया है। क्या यह सम्भव है? कदापि नहीं।

कर्मवीर जी ने अपनी वार्ता को आगे बढ़ाते हुए कहा कि वास्तव मे ज्योतिष विज्ञान को उत्तम सामग्री देता है। जो लोक अन्तरिक्ष लोक और आकाश मण्डल मे विद्यमान ग्रह उपग्रह तथा नक्षत्रो का पूरा विवरण इसी विज्ञान से प्राप्त होता है। इन ग्रहो की दूरी, स्थिति व आकर्षण क्षमता का इसी विज्ञान द्वारा पता चलता है। हमारे प्राचीन पूर्वज ऋषि जो अनुसन्धान कर गये हैं—वही आज के वैज्ञानिक अपने आविष्कारो द्वारा पुन स्थापित करते हैं। पर यह भाग्य, का भ्रम पैदा करने वाला फलित ज्योतिष बडा हानिकारक है।

भाई भाग्याश्रय जी—ये ज्योतिषी हमारे भोले भाइयो को भ्रम मे डालकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते रहते हैं। सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र, बृहस्पति, आदि ग्रह व नक्षत्रो का प्रभाव व भय दिखाकर ये अच्छी दक्षिणा प्राप्त करते हैं। कहा हमारे वैज्ञानिक हैं जो इन ग्रहो तक पहुँचकर अपने अजेय ईश्वर पुत्र होने का प्रमाण प्रस्तुत करना चाहते हैं, और कहा ये ज्योतिषी जो है जो इन जड पदार्थों से मानव को भयाक्रान्त करते हैं। यद्यपि प्रत्यक्ष रूप मे सूर्य आदि सृष्टि को प्रभावित अवश्य करते हैं; और जैसे धूप के होने से अधिक गर्मी का होना, अथवा ऋतुओ का परिवर्तन व दिन रात का आना जाना किन्तु ये ग्रह नक्षत्र किसी के भाग्य पर कोई प्रभाव डालते हो—यह नितान्त मिथ्या आडम्बर है।

एक बार एक विद्वान् ने कुछ ज्योतिषियों की परीक्षा ली। उसने अपने जन्म का दिनांक घन्टा—घडी व दिशा आदि सभी बातें लिखकर छः ज्योतिषाचार्यों को भेजी, और सबसे एक ही प्रश्न किया—कि बताया जाये मेरा विवाह कब होगा। कुछ ही दिन मे सभी ज्योतिषियो के उत्तर आये, किन्तु सभी ने भिन्न भिन्न तिथियां व वर्ष अंकित किये थे। जबकि वास्तविकता यह थी कि उस विद्वान का विवाह पहले ही हो चुका था, और उसके कई सन्तानें भी थीं। अब आप यह कहेगे कि इनकी बातें यदा कदा सत्य कैसे हो जाती हैं वह इसलिये कि ये लोग कभी स्पष्ट उत्तर नहीं देते हैं इनकी भाषा ही एक विशेष शैली की बन जाती है—जिसका आशय बहुधा सकारात्मक व नकारात्मक दोनो ही प्रकार समझा जा सकता है। किसी ज्योतिषी से पूछा गया कि अमुक गर्भवती महिला के क्या उत्पन्न होगा। उत्तर दिया "लडकी नहीं लडका।" वे सज्जन प्रसन्न होकर यह सोचते हुए चले गये कि लड़की नहीं लडका होगा। पर उत्पन्न हुई लड़की—वे ज्योतिषी जी के पास उपालम्भ के लिये जब उपस्थित हुए—तो उनका यही अधिकार पूर्वक उत्तर था कि मैंने तो पूर्व ही बतला दिया था कि लडकी होगी लडका नहीं। वाक्यांश "लड़की नहीं लडका" मे यदि अर्द्ध विराम लडकी के बाद लगता है तो लडकी मानी जायेगी, और यदि नहीं के बाद लगता है तो लडका माना जायेगा। इसलिये लडका लडकी दो ही उत्पन्न हो सकते हैं—और इनमे से जो भी उत्पन्न हो—वही ज्योतिषी जी का उत्तर समझो। यह सब सुनकर भाग्याश्रय के चेहरे पर कुछ चमक आई और उन्होंने कहा कि आपका कथन सही लगता है।

अब कर्मवीर जी को आगे कहने का अच्छा अवसर मिल गया। उन्होने बतलाया कि एक परिवार मे जब ज्योतिषी पहुचे, तो सभी सदस्यो ने अपने-अपने भविष्य का लेखा जोखा पूछ लिया। निर्धन तो नहीं किन्तु साधारण ही परिवार था। उन सदस्यों को कोई बडी चमत्कार पूर्ण बात बताई ही क्या जा सकती थी। परन्तु जब इन लोगो ने पाचवी कक्षा मे पढने वाले अपने पुत्र के विषय मे पूछा तो ज्योतिषी जी ने इस बालक का भाग्य इतना अच्छा बताया कि सम्पूर्ण परिवार प्रसन्न हो उठा। उन्होने बतलाया कि यह बालक इतना महान् बनेगा कि इसके चारो ओर मोटर कारें दौडती ही रहेगी। ज्योतिषी जी अपनी अच्छी दक्षिणा लेकर चले गये। किन्तु वह बालक बडा होकर बना ट्रैफिक का एक साधारण सिपाही। मोटरें कारें तो चारो ओर दौड़ती थीं—और उसके संकेत पर रुकती चलती थीं। किन्तु परिवार के गर्व की मूल वस्तु सहसा लुप्त हो गई।

श्री भाग्याश्रय जी के मुखारविन्दु पर पहले जो मुस्कान आई थी, वह बात सुनकर सहसा हसी का रूप धारण कर चुकी थी। उन्होने कर्मवीर जी का उक्त मन्तव्य स्वीकार तो किया किन्तु उसको और दृढ करने के लिये एक बहुत अच्छी बात पूछ दी। ज्योतिष का यह सब ढोंग मिथ्या है तो यह बडे बडे ग्रन्थ और इसको विज्ञान का रूप कैसे प्राप्त हो गया श्री कर्मवीर ने उनके इस प्रश्न को भी हल करने का यत्न किया। उन्होने कहा दो व्यक्तियो मे अभियोग चल रहा है। एक पक्ष का कोई व्यक्ति दूसरे पक्ष ने मार दिया। न्यायालय मे जो ये हत्या का अभियोग पर विवाद करने वाले दोनो पक्षो के वकील हैं—वे अपने अपने कागज तैयार करते हैं। पर वास्तव मे उनमे से एक पक्ष असत्य होता है। इसी प्रकार अपनी पीढ़ी दर पीढ़ी जीविका का साधन बनाये रखने के लिये, इस फलित ज्योतिष के बडे बड ग्रन्थ लिखे गये हैं। इनकी बताई बातें जो कभी कभी सत्य निकल जाती हैं—वह इस लिए नहीं कि जो फलित ज्योतिष के आकडे परिगणित करके बताई गई है—अपितु इसलिये कि अपने अनुभव अनुमान तथा सम मूलक वाक्यो द्वारा जो बताया गया है वह सत्य असत्य दोनो हो सकता है।

"किसी पशु मेले मे आप कोई पशु क्रय करने जाते हैं। अनुभव

(शेष पृष्ठ ६ पर)

स्वास्थ्य-सुधा

प्रदूषण के दानव को रोको

[श्री सतीशचन्द्र गुप्त, एडवोकेट डिवीजन डिप्टी वार्डन नागरिक सुरक्षा मुरादाबाद]

आज की परिस्थितियों का यदि हम गम्भीरता से परीक्षण करें तब हमको केवल लगेगा ही नहीं, वरन् शत प्रतिशत यह सत्य अनुभूत होगा कि वायु और जल में प्रतिदिन घुलते आ रहे प्रदूषण के विष ने आज भारत को ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व को उस चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है जहां से चारों ओर दृष्टि डालने पर विनाशकारी ध्वंस के अतिरिक्त कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता। वास्तविकता जानने के लिए इसकी पृष्ठभूमि को माईक्रोस्कोप के शीशे से देखना होगा। तब हमको दृष्टिगोचर होगा विष का बहुत बड़ा घोल जिसमें से निकल रहा है, वह सूक्ष्म कण जो सम्पूर्ण विश्व में धीमे विष का रूप धारण कर भारतीय जनमानस को विकृत व दुर्बल बना रहा है क्या कभी हमने विचार किया है कि यह विष किसने घोला, यह कहर किसने ढाया इसके कुपरिणाम या दुष्परिणाम भुगतेगा कौन ?

इस प्रश्न का उत्तर है कि इसके कुपरिणाम भुगतेंगे आज के मानव और उनके पश्चात आने वाली सन्तानें।

हम सब चाह रहे हैं प्रगति चिल्ला रहे हैं प्रगति और उस प्रगति की आड़ में, उस प्रगति की अन्धाधुन्ध दौड़ में हम वृक्षों का कटान कर रहे हैं। सत्य तो यह है कि वृक्षों का कटान हम नहीं कर रहे वरन् मानव समाज को जड़ें खोखली कर रहे हैं। जिन वृक्षों की कटाई करके हम वनस्पतियों को उजाड़ रहे हैं पवित्र नदियों में हम फैक्टरियों का गंदा पानी भर रहे हैं ये सब ऐसा पर्यावरणीय असन्तुलन उत्पन्न कर रहे हैं जिसे प्रकृति कभी क्षमा नहीं करेगी और उसके स्थान पर मानव समाज को मिलेगी भुखमरी तबाही, सूखा, बाढ़ आदि।

सम्पूर्ण संसार मे बस एक ही चीज दृष्टिगोचर हो रही है, एक ही शोर सुनाई दे रहा है कि प्रदूषण घोर प्रदूषण। दिन प्रतिदिन पर्यावरण से हम घुलते जा रहे हैं। इस विष का परिणाम क्या होगा यह हम सब जानते हैं।

जीव जगत के पांच तत्व है यथा अग्नि,जल,वायु,धरती,आकाश। इनमें से दो तत्व जल तथा वायु प्रदूषण से बुरी तरह सब जीव प्रभावित हो चुके हैं।

आज बिगड़ती हुई स्थिति मे पर्यावरण के बुरी तरह से प्रभावित प्रदूषण के कारण सम्पूर्ण संसार के देशों की राज्य सरकारें इस विनाश की स्थिति से बचाव की ओर संरक्षण की सोचती हैं। इस सन्दर्भ में यह कहना अति हितकर होगा कि भारत के मनीषियों ने इस देश के प्रवर्तकों ने हजारों वर्ष पूर्व इस प्रदूषण के खतरे को आंका था और तभी से इन्हें दूर करने की प्रक्रिया आरम्भ कर दी थी। वृक्ष जो भारत की आध्यात्मिकता का एक अंग है, और जो पर्यावरण सन्तुलन से भी सीधे सम्बन्धित है—उनको पूज्य मानकर एवम् अरण्या-रक्षण को आध्यात्मिकता से जोड़ देने पर पर्यावरण संरक्षण पर अधिक बल दिया था।

पर्यावरण शुद्ध बनाने के लिए 'वनों' एवम् वृक्षो का एक विशेष महत्व है। हमारे देश में वनो को मित्र, वृक्षों को आराध्यदेव एवम् नदियों को मां मानना हमारी संस्कृति का महान चिन्ह है परन्तु आज दुःख होता है कि प्रगति की दौड़ मे हम इस सीमा तक अंधे होते चले जा रहे हैं कि हमने काटो और जलाओ की प्रगति मे वन रूपी खोल उतार कर इस धरती को नंगा कर दिया है।

इतिहास के सर्वेक्षण से पता चलता है कि हम भारतवासी पिछले १३० वर्षों से वनों का प्रयोग अपने औद्योगिक विकास के रूप मे कर रहे हैं। परन्तु इस सबका प्रभाव यह हुआ कि विकास की मूल मे हम भले ही अंग्रेजों की पंक्ति मे आकर खड़े हो गये परन्तु प्राकृतिक संतुलन बिगड़ा, वर्षा का कोई नियम न रहा और कृषि प्रधान देश की जनता का पेट भरने के लिए दूसरे देशो का मुँह ताकने लगा। नदियों को प्रदूषण से मुक्त कराने की योजनायें जारी है। इस समय प्रदूषण से केन्द्रीय स्तर पर युद्ध लड़ा जा रहा है। इसके लिए प्रथम कड़ी यह है कि प्राचीनतम वैभवमय भारतीय संस्कृति मे वर्णित यज्ञ, हवन, अग्नि होत्र सम्पूर्ण देश के मोहल्ले—मोहल्ले, घर-घर मे बड़ी मात्रा मे सुगन्धित सामग्री के माध्यम से गऊ घी से सम्पन्न कराये जायें। वेदो मे इस प्रकार की व्यवस्था दी गयी है कि यज्ञ, हवन, अग्निहोत्र से प्रदूषण समाप्त होता है। दूसरी व्यवस्था यह की जाए कि जहा वन काटे जा रहे हैं वहां वृक्ष लगाने की व्यवस्था भी राजकीय स्तर पर वन विभाग के द्वारा राजमार्गों आदि पर की जाये उन पेड़ो मे यदि पीपल के वृक्ष को भी अनेको स्थानो पर अंकुरित करवाया जाये तो उसकी प्राणवायु जो २४ घण्टे दिन और रात एक समान होती है,उससे प्रदूषण का विष कम होता चला जायेगा।

मैं केन्द्रीय सरकार एवम् राज्य सरकारो को प्रदूषण के विरुद्ध छेड़ी गयी लड़ाई के लिये बधाई देता हू परन्तु इस लड़ाई मे विजय तभी सम्भव होगी जब हम मे से प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको सैनिक समझे और साथ ही इस बात का प्रयत्न किया जाये कि नया प्रदूषण कम से कम न हो तभी हम इस महान दानव से छुटकारा पा सकते हैं। मानव के स्वास्थ्य की रक्षा के उपरोक्त उपायों से ही की जा सकती है।

पाप की आंधी

न जाने इस चमन में किस लहर की यह बहार आई।
कली बनने से पहले फूल सहमी और मुरझाई ।।
जहां चारों तरफ छाई हुई हो अब घटा काली।
जहां हर शाख पर बैठा हो उल्लू कैसी हरियाली ।।
खिजां को कह रहे देखो बहार आई बहार आई ।।
चमन का रंग फीका है उदासी ही उदासी है।
न खुशबू है न रंगत है कली हर एक प्यासी है।
लगाकर आग गुलशन को बने खुद ही तमाशाई ।।
जहां इंसाफ का घुटता गला इंसाफ रोता हो।
जहां इंसानियत पर हाथ ही बस साफ होता हो ।।
तड़पती और रोती है कहीं छिप करके अच्छाई।
जहा पर औरतें मजबूर होकर बेचती इज्जत ।।
जहां नापाक फेलों से बढ़ाई जा रही दौलत।
गरीबो की खुशी हसरत गई हर एक दफनाई ।।
कहीं रिश्वत जमाखोरी कहीं कहीं पर चोर बाजारी।
कहीं पर कत्ल और आतिशगरी का काम है जारी ।।
हमारे फेल पर तो बेहयाई भी है शरमाई '
अगर होता यहां इस वक्त पर जिन्दा गांधी ।।
बड़ा बेचैन होता देखकर यह पाप की आंधी।
ये आजादी मिली कैसी जो बर्बादी के साथ आई।

—जगदीश शरण 'शीतल' प्रधान आर्यसमाज चांदपुर (बिजनौर)

सम्पादक के पत्र

कलियुग और रामायण फिल्म पर प्रतिबन्ध लगाया जाय

महोदय,

आर्य समाज बरवहा बाजार द्वारा यह प्रस्तावित किया गया कि कलियुग और रामायण फिल्म मे रामायण के आदर्श पात्रों का उपहास ही नहीं किया गया है बल्कि उनका ऐसा पतित चित्रण भी किया है कि प्रत्येक भारतीय की भावना को पीड़ित होना स्वाभाविक है। हनुमान राम कथा का समाजसेवी व्यक्तित्व है। भारतीय जनमानस में एक आदर्श भावना हनुमान के प्रति है। परन्तु इस फिल्म में हनुमान को विदेशी वस्त्रों मे नग्न स्त्रियों के साथ मादक एवं नशीले द्रव्यों का प्रयोग एवं भैरव की स्त्री बनाकर नाचते दिखाया गया है और उनके लिए अपमान जनक शब्दों का प्रयोग किया गया है।

दिल्ली मे इस फिल्म का व्यापक विरोध हुआ बहराइच में यह फिल्म चित्रशाला थियेटर मे प्रदर्शित की जा रही है। इससे हिन्दुओं की धार्मिक भावना को ठेस पहुंची है वह और अधिक भड़क सकती है और विरोध उग्र हो सकता है।

अतः प्रशासन से अनुरोध है कि अविलम्ब इस फिल्म के प्रदर्शन पर रोक लगायी जाये।

रामसुमिरन मौर्य आर्य
मन्त्री आर्यसमाज बरवहा बाजार बहराइच

नवीन रुग्ण वाहिका का उद्घाटन

आर्यसमाज सान्ताक्रूज १९७५ से रुग्णवाहिका द्वारा जन साधारण की सेवा कर रहा है। दिनांक १३–६–८७ को बम्बई के महापौर डा० रमेश य. प्रभु ने आर्यसमाज की नवी' रुग्णवाहिका का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर बम्बई की समस्त आर्यसमाजो के प्रधान एवं विशिष्ट आर्य बन्धुओ द्वारा श्री रमेश य० प्रभु का बम्बई महानगर के पौर बनने पर पुष्पमालाओं द्वारा स्वागत किया। वेद मन्त्रों के साथ सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। महापौर ने नारियल तोड़कर नवीन रुग्ण वाहिका का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर वेद वेदांग पुरस्कार विजेता आचार्य पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड का अभिनन्दन पत्र भी पढ़ा गया।

माननीय महापौर डा० रमेश य० प्रभु ने अपने भाषण में कहा– यह देश संकट की घड़ियों से गुजर रहा है। साम्प्रदायिक शक्तियां भारत की एकता को समाप्त करना चाहती हैं। यदि हम एक होकर नहीं चलेंगे तो यह असामाजिक तत्व देश के टुकड़े करके ही रहेंगे। हमें इनका मुकाबला करने के लिए तैयार होना चाहिये।

आर्य समाज के प्रधान श्री देवेन्द्रकुमार कपूर एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओंकारनाथ आर्य ने आगन्तुकों का स्वागत एवं धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया।

चौ० चरणसिंह जी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हुआ



चौ० चरणसिंह जी

श्री धर्मपाल जी अन्तरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने बताया कि भारत के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री चौधरी चरणसिंह के पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। अन्तिम संस्कार श्री प्रेमपाल शास्त्री, धर्मपाल शास्त्री जागर नगर, श्री लक्ष्मी चन्द्र जी दीवानहाल देहली सहित ८ विद्वानों ने सम्पन्न कराया।

गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारी गण अन्त्येष्टि पूर्व तक वेद पाठ करते रहे।

संस्कार में १५० किलो देशी घी, ३ क्विंटल हवन सामग्री एवं १० क्विंटल लकड़ी प्रयुक्त हुयी। शव को राष्ट्र प ाका और ओ३म् पताकाओं से सजाया गया था।

तीसरे दिन वृहत् शान्ति यज्ञ के साथ उन्हें श्रद्धांजलियां भेंट की गयीं।

चौधरी साहब जन्मना आर्य थे अन्त तक दृढ़ आर्य रहे। उनका अन्तिम संस्कार उन्हीं की इच्छानुसार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया।

आर्य वीर राष्ट्र उत्थान में आगे आयें

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर फर्रुखाबाद में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर के दीक्षान्त समारोह मे उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल के प्रान्तीय सरसंचालक डा० बालकृष्ण आर्य 'विकल' दिल्ली ने कहा– 'आज देश में चारों ओर तूफानी बादल छाये हुए हैं, कुछ असामाजिक तत्व हमारे राष्ट्र और संस्कृति को मिटाने में लगे हैं। ऐसी भीषण स्थिति में आर्य वीर दल आगे आयें और राष्ट्रद्रोहियों को सबक सिखाये। देश रक्षा के हेतु हर कुर्बानी के लिए हमारे आर्य वीर तैयार हैं।

प्रवेश सूचना

ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर ब्रजघाट गाजियाबाद में वेदोपदेशक विद्यालय सुचारुरूप से चल रहा है। इसमें सौम्य, शिष्ट, अनुशासनप्रिय प्रतिभा शाली तथा आजीवन वैदिक धर्म प्रचार करने के इच्छुक कम से कम १०वीं कक्षा उत्तीर्ण १५ से २२ वर्ष तक की आयु के युवक प्रवेश के लिए आमन्त्रित हैं।

—स्वामी वेदानन्द

ओ३म् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि

वेद कुन्दन लाल आर्य
५४९/१९२ अर्जुन नगर—आलम बाग लखनऊ—५

आदरणीय पाठक वृन्द—आर्य मित्र के ५ अप्रेल ८७ के अंक में "ओ३म् कर तल कर पृष्ठे" शीर्षक के अन्तर्गत कुछ निवेदन किया था-वह अंश सन्ध्या के दूसरे मन्त्र इन्द्रिय स्पर्श के अन्तर्गत है ! सन्ध्या (ब्रह्मयज्ञ) आधार है श्रेष्ठ तम कर्म देवयज्ञ का । यदि ब्रह्मयज्ञ सफल नहीं तो देव यज्ञ (हवन) भी सफल नहीं होगा । देव से ब्रह्म बड़ा है-बृहत है—यह गुण भक्त में भी आना चाहिये । सन्ध्या सम्यक् ध्यान को ही कहा जाता है केवल मन्त्र पाठ को नहीं । महर्षि दयानन्द जी महाराज कृत सन्ध्या विधि एक आदर्श विधि है-ज्यू ज्यू हम इनपर मनन करते हैं त्यू त्यू सिर श्रद्धा से महर्षि के चरणो मे झुक जाता है । कितनी सुन्दर सरल विधि है यह ।

आत्मा को दुःखों कष्टों-जन्म मरण के बन्धन से छुड़ा कर परमात्मा की अमृत मय गोद में बिठाना ही सन्ध्या का लक्ष्य है । इसके लिए यह भी आवश्यक है कि हम आत्मा और परमात्मा को जाने । परमात्मा बिना शरीर के सृष्टि रचता है-परन्तु आत्मा बिना शरीर के कुछ नहीं कर सकता मनुष्य के कल्याण के लिये ही परमात्मा इसे शरीर धारण कराता है । इस के द्वारा ही मनुष्य अपना हानि और लाभ कर सकता है—शरीर ठीक नहीं तो वह कुछ नहीं कर सकता । शरीर के साथ ही इन्द्रियों एवं मन को वश में करना जरूरी है—इन के बिना साधना नहीं होसकती । यह छत पर चढ़ने (स्वर्ग प्राप्ति) को सीढ़ी है ।

इस सन्ध्या को भी हम तीन भागों मे बांट सकते हैं- आरम्भ से लेकर अघमर्षण मन्त्र तक बाहय शरीर—मनसा परिक्रमा के मन्त्रो से मन एवं उपस्थान मन्त्रो से आत्मा शुद्ध और पवित्र की जा सकती है । शरीर को पवित्र एवं शुद्ध करने के लिए ही मेरे प्यारे ऋषि ने सन्ध्या में दूसरे एवं तीसरे मन्त्र का विधान रखा । यह दोनो मन्त्र इस रूप में किसी वेद मे नहीं मिलते-परन्तु इन का महत्व किसी भी वेद मन्त्र से कम नहीं है और भी स्पष्ट कहा जावे तो यह दोनो मन्त्र ही सन्ध्या के आधार स्तम्भ है । शान्ति-सुख चाहते हो सोलह कला सम्पूर्ण होना अनिवार्य है । सोलह कला सम्पूर्ण बनने के लिये ही ऋषि ने यह दूसरा मन्त्र रखा । ॐ वाक् वाक् से लेकर कर पृष्ठे तक गिनो यह ही सोलह कलायें हैं । इन का मनन ही तुमको सीधे सरल मार्ग का यात्री बना देगा । राजा वही अच्छा है-जिस की प्रजा सुखी है प्रजा को सुखी रखने के लिये राजा अपने राज्य के हर कोने का निरीक्षण करता है और जो त्रुटि दिखाई देती है—उसको दूर कर ही अपने राज्य को आदर्श बनाता है । भक्त भी अपने शरीर रूपी राज्य का प्रति दिन दोनों समय निरीक्षण करता और अपने कर्मों के चार्ट को पढ़ता है- देखता है-मै ने यह पाप क्यों किया-कैसे किया कब किया-यह ही इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र का महत्व है । अपने ही कर्मों के चार्ट को बराबर पढ़कर अपनी बुराईयों को दूर करने एवं इनकी जगह अमृत भरने का सत्य उपाय है सन्ध्या का तीसरा मन्त्र-इसी पर आज हमें कुछ विचार करना है ।

यहां पर स्पष्ट करना भी आवश्यक प्रतीत होता है कि कुछ लोग कुछ समय तक सन्ध्या कर फिर छोड़ देते है और कहते है इस सन्ध्या करने से कुछ लाभ नहीं । फिर उन का स्वभाव अधिक बोलने और दूसरों के नुक्स निकालने का हो जाता है । यह इस लिये हो जाता है-कि जब मनुष्य का मन सन्ध्या मे लगने लगता है तो उसके सर्व प्रथम अपने ही पाप सामने दिखाई देने लगते है जिन्हे देखकर वह घबरा जाता है और साधना के मार्ग से मुंह मोड़ लेता है । फिर वह अपने पापों को देख कर दूसरो की त्रुटियो को ही देखता है-उसका मन चचल होता है दूसरी तरफ प्रभु का भक्त अपनी त्रुटिय को देख कर मनन कर उनका सुधार करता है—उसका मन शान्त होता है-वह सदा अपने ही अन्दर देखता है-उसे सुख मिलता है-वह कम बोलता है ।

मार्जन का अर्थ प्रायः यह ही समझा जाता है कि बायें हाथ की हथेली पर जल ले कर दाहिने हाथ की अंगुलियो से अपने अंगों पर मन्त्र पढ़ कर जल छिड़कना या छीटें देना और यही हम जल्दी जल्दी से करते भी हैं । परन्तु महर्षि के दृष्टिकोण देखें तो कुछ और ही सामने दिखाई देता है । यह मार्ग ही मार्जन है-इस मार्ग को पहले साफ करो फिर आगे बढ़ो । अपने ही रास्ते मे कांटे फैलाना मार्जन नहीं है । मार्जन का सीधा सा अर्थ है माजना-इस विधि को आज शहर का पढ़ा लिखा-सूटेड बूटेड-अपने आपको सभ्य कहने वाला व्यक्ति बिल्कुल भूल ही गया है । वह केवल जल्दी से झूठे बर्तन को पानी मे खलबला कर ही पोछ लेता है । उसे अपनी भूल तब मालूम होती है—जब दूसरा व्यक्ति उसे वही बर्तन (प्लेट) दिखाकर कहता है—तू ने खाक साफ किया-झूठन तो इस मे लगी हुई है ।

मांजने की प्रक्रिया अब भी ग्रामीण क्षेत्रो में प्रचलित है—जो आदर्श और महान भी है । मांजने वाला व्यक्ति या देवियां झूठे बर्तन को लेकर अपने हाथ से उस के अन्दर की झूठन को बाहिर निकाल कर फैंक देती है-फिर मिट्टी-बालू या राख से उस बर्तन को अन्दर बाहर से रगड़ कर मांजती हैं जब वह अन्दर बाहिर से मल रहित हो जाता है तब उसे अपने हाथ या कपड़े से बार बार झाड़ा जाता है—तब चमकता हुआ साफ बर्तन हमारे सामने होता है । मांजने के लिए बर्तन के अन्दर की झूठन को बाहिर निकाल फैंकना आवश्यक है-तब उसे अन्दर बाहेर से साफ कर उसे दूसरी वस्तु भरने योग्य बनाया जाता है । ठीक इसी प्रकार अपने इन अंगों की बुराइयों को निकाल कर बाहेर फेंकना फिर तप स्वाध्याय—संयम-सत्संग-सेवा की साधना से इन को बारबार रगड़ कर शुद्ध कर लेना ही मार्जन है ।

इसी मन्त्र में एक और महत्व पूर्ण विचारणीय शब्द है 'पुनातु' साधारणतया हम लोग पुनातु का अर्थ पवित्र करना या करें ही करते हैं परन्तु कैसे पवित्र करेः इसी विधि का नाम ही वस्तुतः पुनातु है । इसे और स्पष्ट करने के लिये हम दो उदाहरण सामने रखते है-(१) पंजाब हरयाणा मेरठ आदि क्षेत्रों में मातायें प्रातः काल दही बिलोती मथती हैं । खूब मथानी से मथ कर उस में जल डालती हैं मक्खन ऊपर से निकाल लेती है फिर बाकी लस्सी (मट्ठा) को किसी दूसरे बर्तन के मुख पर कपड़ा बान्ध कर छान लेती हैं । इस प्रकार कपड़े के ऊपर जो झड़ (छिट्टी) रह जाता है-और छान कर नीचे निर्मल गुण दायक लस्सी । इस कपड़े को जिस के द्वारा लस्सी छानी जाती है पोना कहा जाता है ठण्डाई रगड़ कर जिस कपड़े से छानी जाती है-उसे पोना छन्ना ही कहा जाता हैं ।

[क्रमशः]

(३)

सुख शान्ति का मूलाधार धर्म ही है

धर्म के स्वरूप की पहचान करें

धर्म का तृतीय लक्षण—दम

(—आचार्य देवव्रत अवस्थी वेद मन्दिर हिन्द नगर लखनऊ—५)

दम—मन का वशीकरण, मन पर आत्मा का शासन

अध्यात्म की चर्चा करने वाले हर व्यक्ति मन को वश में करने का सन्देश देते रहते हैं। बिना किसी विरोध के प्रत्येक विचारक—मन के इधर उधर भटकते रहने की चर्चा करते एवं उसको वश में करके ही जीवन की सफलता प्राप्त की जा सकती है—ऐसा कहते हैं। वेद ने मनको सारथी कहा है और उसे शुभ संकल्पों से संयुक्त करके सुसारथी बनाने का आदेश दिया है। उसे इस उदाहरण से ही और स्पष्ट करें—मान लें कोई कार का मालिक नशे में धुत या गफलत से कार में बैठा हो—उसकासारथी ड्राइवर अपनी इच्छानुसार जहाँ चाहें ले जाये, जो चाहे उसके साथ व्यवहार करे, वह कुछ भी नहीं कर सकता विपरीत इसके जो सजग सचेत मालिक कार में है उसका ड्राइवर अपने मालिक के इशारे के अनुसार ही कार ले जाता है। ऐसे ही शरीर रूपी रथ पर आत्मा मालिक के रूप में बैठकर अपने स्वत्व की पहचान कर सारथी मन को इन्द्रिय रूपी घोड़ों को सुमार्ग पर ले चलने को आदेश करता है। नशे में धुत गफलत में अपने स्वत्व की अनभिज्ञता के कारण वह उसकी गिरफ्त में रहने को विवश हो जाता है और फिर मन इन्द्रियों को उसकी वासनाओं में लिप्त करके आत्मा का हनन करता है। इसी लिए कहा है कि—मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः—मन ही मनुष्य को उत्थान की ओर ले जाता है और मन ही पतन की ओर। मन के ही प्रभाव से व्यक्ति झंझावों में फंसता है और मन से ही मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।

भगवान् कृष्ण से मन को वश में करने का उपदेश सुनकर अर्जुन ने प्रश्न किया कि:—

चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथी बलवद् दृढम्
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्

मान्यवर ! मन को निगृहीत करना वैसे ही असम्भव है जैसे वायु को पकड़ना।

भगवान् कृष्ण ने मुस्कुराते हुये समाधान किया कि:—

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहंचलम्
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।

हे अर्जुन ! इसमें सन्देह नहीं कि मन का वशी—करण बड़ा कठिन है। परन्तु ध्यान रहे असम्भव—नहीं है। अभ्यास और वैराग्य से उसे वश में किया जा सकता है।

अभ्यास—प्रयत्न— जब तक आत्मा का मनपर शासन न स्थापित हो जाये, वशी करण न हो जाये धैर्य पूर्वक उसके वश के प्रयत्न में लगा रहे, अपने को पहचाने, अपने अधिकार को जाने, अपनी शक्ति को जाने और मन को वश में करने का लक्ष्य दृढ़ता से बना ले। कठिनाइयों, आपदाओं से घबराये नहीं पथ पर दृढ़ रहने का प्रयत्न करे।

वैराग्य—आसक्ति से उपराम ले,—रागद्वेष को तिलांजलि दे दें हर सुख—दुःख में समान चेता होकर—पथपर अग्रसर होता रहे। पथ भ्रमित न हो।

अभ्यास धर्म का पहला लक्षण धृति है और वैराग्य धर्म का दूसरा लक्षण क्षमा है जो व्यक्ति धृति और क्षमा के लक्षण अपने अन्दर पूर्ण रूपेण उतार लेता है निश्चय ही इनकी सहायता से मनपर वह अपना अधिकार—कर लेने में समर्थ हो जाता है—मनपर अधिकार कर लेने वाले को परमात्मा की इस सकल सृष्टि में सबके सुख में अपना सुख और सबके दुख में अपना दुख दृष्टिगत होता है। और फिर वह सबके सुख सम्वर्धन के लिए अपने को परमात्मा की वैदिक आज्ञाओं के अनुरूप समर्पित कर देता है और धर्म के तृतीय लक्षण दम को अपने अन्दर धारण करके धर्म की रक्षा हेतु सन्नद्ध हो जाता है।

अग्निहोत्र

[पृष्ठ ३ का शेष]

समिधायें लगाने में इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि अग्नि मन्द न पड़ने पाये। अग्नि में पड़ने वाली आहुति अति शीघ्र पूर्णतया जलकर सूक्ष्म बनकर जन-जन को हितकारिणी बन जाये। जितनी ही अग्नि तीव्र होगी उतनी ही हवि तीव्रता से जलेगी और उसकी शक्ति द्विगुणित हो—फैलेगी)। यदि समिधायें ठीक से न लगायी गयीं तो अग्निमन्द पड़ेगी—हवि ठीक से जलेगी नहीं जैसे मन्दाग्नि में सुस्वादु भोजन ने लाभ नहीं किया वैसे ही मन्द अग्नि की आहुति अधजली होकर, निरर्थक चली जायेगी। समिधायें फेंकनी नहीं चाहिए। जलती अग्नि में भी उनका व्यवस्थित चयन करना चाहिए। ताकि वे जलती हुई सम्पूर्ण हवि को ठीक से जला दें। तरतीब से और आवश्यकतानुरूप समिधा चयन करने से धुंआं उठेगा ही नहीं और उससे हमारे जीवन के हर पल को व्यवस्थित रखने का उपदेश मिलेगा।

कई लोग अग्नि मन्द पड़ने पर उसे नीचे से खोदकर तीव्र करते हैं यह प्रक्रिया भी त्याज्य है। इससे अधजली हवि नीचे चली जायेगी वह ठीक से जल न सकेगी व्यर्थ जायेगी अग्नि को छेड़ना चाहिए ही नहीं। आवश्यकता भी नहीं उसकी होगी यदि समिधायें पर्याप्त, व्यवस्थित रूप से चयन की जाती रहेंगी।

आहुतियां डालते समय, समिधा लगाते समय, मन्त्र पाठ करते समय हमारा ध्यान यज्ञाग्नि से उठती ज्वाला पर ही केन्द्रित रहना चाहिए और अपने जीवन को नित्यशः दिव्य गुणों से प्रदीप्त करते रहने का संकल्प लेना चाहिए, यज्ञ के समय अन्य बातें नहीं करनी चाहिए।

जैसे सद्गृहस्थ के घर की भोजन व्यवस्था से सभी स्वस्थ निरोग रहते हैं वैसे ही सच्चे रूप में देवयज्ञ कर्ताओं के जीवन पवित्र, यज्ञमय, समाज के लिए समर्पित हो जाते हैं। और वे समाज के लिए पूजनीय अनुकरणीय बन जाते हैं। हमारे इस हर भाँति व्यवस्थित रूप से करने से निश्चय ही देवयज्ञ के प्रति अन्य दर्शकों की भी श्रद्धा बढ़ेगी और वे भी उसे जीवन में अपनाने के व्रती बनेंगे। फिर घर-घर में वेद मंत्रों की ध्वनियां गूंजेंगी। यज्ञाग्नि से हर घर पवित्र होगा। वायु प्रदूषण नष्ट होगा। समय से वृष्टि होगी सभी ऋतुयें व्यवस्थित होंगी। अन्न धान्य भरपूर होगा। सारी वसुन्धरा पुष्पित पल्लवित सुख समृद्धि से पूर्ण होगी।

अन्ध विश्वास से मुक्ति

(शेष पृष्ठ ४ से आगे)

पूर्वजो ने गाय-बैल भैंस घोड़ा बकरी आदि की उपयोगिता की दृष्टि से उनके लक्षण कल्पित कर रखो है। इसी प्रकार शरीर की बनावट के आधार पर मनुष्यो के लक्ष्य भी कल्पित करने का यत्न किया गया है। हस्तरेखा मस्तक आदि को देख कर कई अशो तक मनुष्य के स्वभाव का पता लगाया जा सकता है—जैसे बड़ा सिर और छोटे पैरवाला अधिक बुद्धिमान् मनुष्य हो—आदि-आदि। पर इन ज्योतिष या हस्तरेखा आदि से किसी के भाग्य का उद्घाटन करना भयकर धोखा है। अब आप कहेंगे कि बडे बडे पढ़ लिखे विद्वान राज्याधिकारी गण कभी कभी ज्योतिषियो के पीछे क्यो पड रहते हैं। वे इसलिये कि बाल्यकाल के सस्कार अन्त तक अपना प्रभाव दिखाते हैं और अच्छे संस्कार एवं शिक्षा के अभाव मे प्राप्त नहीं होते तो बड़े होकर भी पुराने सस्कारो का ही सहारा लिया जाता है।

धन्यवाद है महर्षि दयानन्द को जो उन्होने आर्य समाज की स्थापना की, जो नित्य नीर क्षीर विवेक की बाते बताता रहता है। चौराहे पर लगे हुए मेजर्स मे नाविया बैल भी मजे से ज्योतिषी बन जाता हैं। किसी छोटे बच्चे को बाहर उठाकर प्रश्नोत्तर जारी हो जाते हैं। यह सब इनको अभ्यास तथा निश्चित बातें रटा कर किया जाता है। लेकिन इन सब बातो से ज्योतिषी जी तो अपनी आजीविका कमा लेते हैं किन्तु अपने शिकार को शंका ग्रस्त कर जाते हैं।

अभी तक आप समाचार पत्र मे अपने लिये खतरे की बात पढ़कर डर गये—या माना आज आपके लिए धन सम्पत्ति प्राप्ति का योग लिखा होता—किन्तु मिलता नहीं, तब भी आशा लगाकर निराशा की बात होती। इसी प्रकार मनुष्य इन भ्रान्त धारणाओ से प्रेरित होकर कष्ट पाते हैं। काशी से आये एक प्रसिद्ध ज्योतिषी ने किसी नगर मे डेरा डाला। तभी निर्धन व धनी लोगो की अपना भविष्य जानने के लिए भीड़ लग गई। एक करोड़ पति जो कभी कोठी से बाहर नहीं दिखाई देते थे। वे भी एक दिन ज्योतिषी के शिविर मे पहुच गये। लोगों ने ज्योतिषी जी को सेठ जी की बड़ाई व प्रशसा करते हुए सारी स्थिति कह डाली—वे सब जान चुके थे। सेठ जी का पहला ही प्रश्न था कि ज्योतिषी जी हमारा भी कुछ भविष्य बताइये। नाम धाम पूछ कर अगुलियो पर गणना करने का ज्योतिषी जी ने कुछ अभिनय किया और बताया कि सेठ जी आपके पास तो इतनी सम्पत्ति है कि आपकी सात पीढ़िया बैठ बैठ खा सकती हैं। यह सुनकर सेठ जी बेहोश हो गये। हवा व पानी के छींटे देकर जब सेठ जी को होश मे लाया गया तो ज्योतिषी जी ने पूछा कि मेरे उत्तर से बेहोश होने की कोई बात तो थी नहीं—आप कैसे बेहोश हो गये। सेठ जी ने कहा कि सात पीढ़ी के सुख की बात तो आपने बतला दी पर मुझे अपनी आठवीं पीढ़ी की चिन्ता हो गई कि उसका क्या होगा। फलित ज्योतिष का यह हाल है। इस पर विश्वास किया कि जीवन मे रस होते हुए भी नीरसता आ जाती है। बात कल्पित और मनोरंजन जनक होते हुए भी इस फलित ज्योतिष की निस्सारता को प्रकट करती है।

श्री आचार्य [illegible] समाचार पत्र उठाते हुये कहा कि अब भविष्य मे राशि फल आदि पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी। यदि पढ़ भी लिया गया तो भी कभी आशा निराशा की धूप छाव का प्रभाव नहीं होगा। सन्मार्ग दर्शन हेतु कर्मवीर जी आपका धन्यवाद। बस एक बात और बता दीजिये कि यह ज्ञान आपने कैसे और कहा से प्राप्त कर लिया। कर्मवीर जी ने छूटते ही कहा कि आर्य समाज के सत्सग मे आप नियमित रूप से आया करो आपको सदा सम्यक् व सामयिक ज्ञान मिलता रहेगा। मैने भी इसी प्रकार यह ज्ञान प्राप्त किया है। कर्मवीर जी [illegible] सहित [illegible] कह कर विदा ली।

आर्य वीर दल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय अखण्डता सम्मेलन

पिलखुवा— यहा आर्य वीर दल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एकता अखण्डता सम्मेलन मे मुख्य अतिथि तेतूराम काम्बोज (प्रलयकर सम्पादक) ने अपने भाषण मे युवा शक्ति का देशद्रोही शक्तियो को कुचलने के लिये सगठित होने का आह्वान किया। मेरठ के दंगे के लिये पाक परस्त इमाम व शाहबुद्दीन को दोषी ठहराया।

आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर हस जी ने कहा कि किसी भी मस्जिद, मन्दिर, गुरुद्वारे से राष्ट्र विरोधी प्रसारण होते ही उस स्थल के इमाम, पुजारी पादरी या ग्रन्थी को तुरन्त गिरफ्तार कर लेना चाहिये। स्वामी व्रतानन्द आचार्य धर्मपाल शास्त्री आदि ने भी राष्ट्रीय एकता अखण्डता पर अपने विचार व्यक्त किये।

आर्य वीर दल के मन्त्री श्री दिनेश गुप्ता ने दल की गतिविधियो पर प्रकाश डाला। वीर रस के राष्ट्रीय कवि श्री कृष्ण मित्र जी ने भी ओजपूर्ण कविता प्रस्तुत की।

आर्य समाज आगरा नगर द्वारा शोकाजलि

आर्य समाज आगरा नगर की शोक सभा मे चौधरी चरणसिंह के निधन को राष्ट्रीय अपूरणीय क्षति मानते हुये ईश्वर से प्रार्थना की गयी कि शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य और दिवगत आत्मा को शांति एव सदगति प्रदान करें।

ऋषिर् विप्र पुर एता जनानाम्

(शेष पृष्ठ २ से आगे)

हमारा राष्ट्र क्षत विक्षत हो रहा है परन्तु एक लघु अग्रलेख मे उनकी चर्चा करना सम्भव नहीं है। जब भीष्म पितामह मृत्यु शैय्या पर पड़े थे और युधिष्ठिर उनका आशीर्वाद लेने गए थे तो अच्छे राज्यके लक्षण बताते हुए उन्होने कहा था कि जिस राज्य मे व्यक्ति निर्भीक होकर विचरण करते हो, उन्हे अपनी सम्पत्ति और प्राण जाने का भय न हो और जिस राज्य मे नागरिक भय रहित होकर वास कर सकें, वही सुराज्य है। आज परस्पर प्रेम है, न सौहार्द, न हीं एक दूसरे के लिए त्याग। सर्वत्र अनिश्चित भयपूर्ण स्थिति, मानसिक तनाव और केवल समस्याएं ही समस्याए। आज आवश्यकता है राष्ट्र की समस्याओ पर राष्ट्र नायको को गम्भीरता पूर्वक विचार करने की, गलत नीतियो को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना कर, उनमे आसक्त होने के स्थान पर, उनका परित्याग करने की।

वेद कहता है—"ऋषिर्विप्र पुर एता जनानाम'

(ऋग् ९।९६।६) अर्थात्

तत्वदर्शी विशिष्ट और प्रकृष्ट बुद्धिमान तथा विद्वान पुरुष ही मनुष्यों के नेता हों, अतएव जब तक राष्ट्र पुरुष दलो को दल दल से ऊपर उठ कर राष्ट्र [illegible] नहीं देंगे और उसे गम्भीरता पूर्वक लागू नहीं [illegible] कल्याण नहीं होगा। क्या हमारे राष्ट्र नायक वेद [illegible] इस सत्य का साक्षात्कार करेंगे?

—वसन्त

बाल जगत

हमारा शिव संकल्प

हम बनेंगे चरित्रवान गुणवान विद्वान
बनायेंगे सबको शिक्षित साक्षर ज्ञानवान
करेंगे स्थान स्थान पर ज्ञान का प्रसार
दूर करेंगे अविद्या का अन्धकार
नये उत्साह से नया अभियान चलायेंगे
भारत को पुनः महान बनायेंगे।

ऊंच नीच की भावना मिटायेंगे
जन जन में समानता लायेंगे
निराशों में नयी आशा जगायेंगे
पीड़ितों में नया उत्साह उपजायेंगे
जीजान से जुट जायेंगे
भारत को पुनः महान बनायेंगे

स्वदेशी भावना घर घर पहुंचायेंगे
स्वदेशी वस्तुओं का महत्व समझायेंगे
राष्ट्रभाषा हिन्दी को शिखर पर पहुंचायेंगे
देवभाषा संस्कृत को प्रतिष्ठा दिलायेंगे
भारतीय संस्कृति का फिर से बिगुल बजायेंगे
भारत को पुनः महान बनायेंगे।

ऋषि दयानन्द का संदेश मानवमात्र तक पहुंचायेंगे
महात्मा गांधी का रचनात्मक कार्यक्रम अपनायेंगे
भारत मां के कष्टों को मिटायेंगे
देशद्रोहियों को मजा चखायेंगे
राष्ट्रवाद की तीव्र धारा बहायेंगे
भारत को पुनः महान बनायेंगे।

—डा० शकुनचन्द आर्य लालगंज, रायबरेली



सम्पादक के नाम पत्र

"शठे शाठ्यं समाचरेत्"

मेरठ नगर में संकीर्ण एवं धर्मान्ध आततायियों ने सुनियोजित साम्प्रदायिकता की अग्नि प्रदीप्त कर विपुल जन-धन हानि की, उस पर राष्ट्रप्रेमी जनता सोचने पर विवश है। इन राष्ट्र द्रोहियों ने मेरठ व दिल्ली में जो कुछ किया वह असह्य एवं मानवता विरोधी अक्षम्य अपराध है। ऐसे अपराधियों को कठोरतम दण्ड देना शासन का धर्म है। 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' सूक्ति अनुसार अपराधी को दण्ड देना ही चाहिये, क्योंकि यदि अपराधी को दण्ड न मिले तो वह अपराधी प्रवृत्ति की ओर अनुचित अग्रसर होता रहता है।

इसके अतिरिक्त परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से अपराधी को प्रोत्साहित करना भी भीषणतम अपराध मानकर ऐसे अपराधी को तदनुकूल दण्ड देना भी जनहित में है। मेरठ में साम्प्रदायिक तत्व जब निर्दोष जनता का वध, अग्निकांड, लूटमार आदि कर रहे थे, साथ ही सुरक्षा दल पर भी प्रहार कर रहे थे, उस समय प्रशासन को असहाय होकर दुष्टों को देखते ही गोली मारने का आदेश देना पड़ा। इस आदेश पर केन्द्रीय मन्त्री मोहसिना किदवई द्वारा आपत्ति करना व मुख्य मन्त्री से तू-तू मैं मैं करना स्वतः इस तथ्य को सिद्ध करता है कि श्रीमती किदवई अपराधियों को प्रोत्साहन दे रही है।

दि० २९ मई को जनतासांसद शाहबुद्दीन द्वारा अवैध रूप से मेरठ में प्रवेश कर प्रशासन से तलाशी बन्द करने को कहना निन्दनीय एवं राष्ट्र द्रोहात्मक कार्य है। शासन को चाहिये कि इस प्रकार के व्यक्तियों को पकड़कर कठोरतम दण्ड देकर शान्ति प्रिय जनता को साम्प्रदायिक अग्नि से भयमुक्त करे।

बढ़ते हुए साम्प्रदायिक विष के उन्मूलन हेतु यह भी अति आवश्यक है कि शीघ्रही समान नागरिक संहिता सभी भारतीय नागरिकों पर लागू हो।

भूप राम दि० शास्त्री कितनापुर दौलतपुर (पीलीभीत)

हम आर्य बनने में गर्व अनुभव करें

श्री मांगे राम आर्य, प्रधान आर्य समाज अहमद नगर (महाराष्ट्र)

आर्य " शब्द की परिभाषा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी कृति आर्योद्देश्यरत्न माला क्र० सं० ४० में इस प्रकार लिखी है:- आर्य जो श्रेष्ठ-स्वभाव धर्मात्मा, परोपकारी, सत्यविद्या गुण युक्त और आर्यावर्त देश में सब दिन से रहने वाले हैं, उन को "आर्य" कहते हैं। इसी प्रकार सं ४२ में दस्यु (अनार्य) अर्थात अनाड़ी, आर्यों के स्वभाव और निवास से पृथक् डाकू, चोर हिंसक जो कि दुष्ट मनुष्य है, वह दस्यु कहता है। जैसे 'आर्य श्रेष्ठ' और 'दस्यु' दुष्ट मनुष्य को कहते हैं, वैसे ही मैं भी मानता हूं। स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश क्र० सं० २९।

"हिन्दू" शब्द हमारी वैदिक संस्कृति का नहीं है। यह अरबी फारसी का है जिसके अर्थ काला काफिर और चोरादि होते हैं, जो दस्यु अनार्य शब्द का पर्यायवाची है, 'आर्य' शब्द का नहीं।

महर्षि यास्कजी ने कहा है कि "आर्यो ब्राह्मणकुमारयोः"। पाणिनि सूत्र राजा भागीरथ के समय ब्रह्मचारी और ब्राह्मण का नाम "आर्य,, था ऐसी व्यवस्था होते हुए हमारे देश का नाम, आर्य स्थान 'आर्यखण्ड, होना चाहिये सो उसे छोड़ न जाने "हिन्दुस्थान,, यह नाम कहां से निकला ? हिन्दू शब्द का अर्थ काला, काफिर, चोर इत्यादि और हिन्दुस्थान कहने से काले, काफिर, चोर लोगों की जगह अथवा देश, ऐसा अर्थ होता है, तो भाई इस प्रकार का बुरा नाम क्यो ग्रहण करते हो ? और आर्य अर्थात् श्रेष्ठ अथवा अभिजात इत्यादि। और आर्यावर्त कहने से ऐसों का देश अर्थात आर्यावर्त का अर्थ श्रेष्ठों का देश, ऐसा होता है। सो भाई ऐसे श्रेष्ठ नाम को तुम क्यों स्वीकार नहीं करते? क्या तुम अपना मूल का नाम भी भूल गये? हरे ! हम लोगो की यह स्थिति देखकर किस के हृदय को क्लेश न होगा, सब ही को होगा। अस्तु सज्जन जन! अब हिन्दू इस नाम का त्याग करो और आर्य तथा आर्यावर्त इन नामोंका अभिमान धरो। गुण भ्रष्ट हम लोग हुए तो हुए परन्तु नाम भ्रष्ट तो हमें न होना चाहिये एसी आप सबो से मेरी प्रार्थना है। (उपदेश मंजरी व्याख्यान न० ९ स्वामी दयानन्द सरस्वती)।

इस ऊपर लिखे व्याख्यान से हिन्दू शब्द के लिये महर्षि के खेद (दुख) का पता चलता है इतना होते हुए भी अब तक जो आर्य समाजी अपने लेखों में 'आर्य' (हिन्दू) लिखते हैं और 'आर्य' व 'आर्यवर्त' को ओझलकर के हिन्दू तथा हिन्दुत्व का दम भरते हैं, वह महर्षि की प्रार्थना और मान्यता के विरुद्ध आचरण करते हैं। ऋषि सिद्धान्तों को छिपाकर जो विद्वान पत्रकार और लेखक अपने निज विचारो से ऐसा करते हैं वह गहरी भूल पर हैं और वैदिक सिद्धान्तों का हनन भी करते हैं। कोष्ठ में सदा समानार्थक ही शब्द लिखा जाता हैं। हिन्दू शब्द का एकमात्र समानार्थक शब्द दस्यु (अनार्य) है जिसको आप हिन्दू (अनार्य) या दस्यु (हिन्दू) लिख सकते हैं। क्या कोई वैदिक विद्वान आर्य (अनार्य) और आर्य (दस्यु) लिखने को स्वीकार करेगा ? कदापि नहीं। क्योकि यह अनुचित है। इन दोनों शब्दों के अर्थ भिन्न २ हैं, सो आर्य (हिन्दू) लिखना सार्थक नहीं, भ्रम मूलक है और त्यागने योग्य है। इस लिये मेरा सभी आर्य समाजी विद्वानों, लेखकों और पत्रकारों से नम्र निवेदन है कि वह महान देव दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों को दृढ़ता पूर्वक अपनायें और अपने लेखों और उपदेशों में हिन्दू शब्द का खण्डन और आर्य शब्द का मण्डन कर इसे सर्वत्र क्रिया मे लायें, जिस से वैदिक संस्कृति की रक्षा होवे। परमेश्वर आर्यों को आर्यत्व ग्रहण करने की शक्ति और सद्बुद्धि प्रदान करें जिससे वे अपने धर्म, संस्कृति और सभ्यता का प्रचार प्रसार करने में सफल होवें। आर्यनेता असत्य को छोड़ सत्य को धारण करें, यहीं वेद का उपदेश है और गुरु दयानन्द का सन्देश है जो हमारे लिये शिरोधार्य है इस में शंका को अवकाश नहीं।

पटना में सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी का भव्य स्वागत

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पूज्य प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के ३०-४-८७ को पटना पधारने पर सैकड़ों की संख्या में आबालवृद्ध नरनारियों ने उनका शानदार स्वागत किया, प्रचुर पुष्पमालाओं को उनके गले में डालते हुये जय-जयकारसे पटनाकी धरतीको गुंजायमान किया। वे राजकीय सम्मान तथा सुरक्षा के साथ राज्य अतिथिशाला में विश्रामार्थ गये, आपके साथ आनेवालों में सभामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, उपमन्त्री श्री पृथ्वीराज शास्त्री तथा आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री छोटू सिंह एडवोकेट भी थे, सार्वदेशिक के धर्माधिकारी आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री पहले ही पटना आ गये थे।

सांय ४ बजे आर्यप्रतिनिधि सभा बिहार, पटना के प्रशस्त तथा सुसज्जित पंडाल में स्वामी जी का नागरिक अभिनन्दन समारोह सम्पन्न हुआ। इसकी अध्यक्षता सभा प्रधान श्री भूपनरायण शास्त्री ने की। आर्यकन्या विद्यालय नयाटोला पटना की छात्राओं ने मधुर संगीत द्वारा स्वागतगान प्रस्तुत किया विभिन्न आर्यसमाजों तथा संस्थाओं की ओर से स्वामीजी को माल्यार्पण किया गया। अभिनन्दन-पत्र सभामन्त्री श्री रामाज्ञा बैरागी ने पढ़ा, तदुपरांत राष्ट्रीय एकता संबन्धी स्वामी जी के सारगर्भित भाषण के पश्चात आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, श्री छोटूसिंह तथा रामलखन सिंह यादव विधायक ने अपने विचार प्रकट किए। स्वामीजी ने कहा कि आर्यसमाज स्थापना काल से ही राष्ट्रीय एकता का प्रबल पक्षधर रहा है, वह भविष्य में भी इसके लिये बड़ा से बड़ा बलिदान करने को तैयार है, शान्तिपाठ के पश्चात् सभा समाप्त की गयी।

आर्यमित्र साप्ताहिक
आर्यप्रतिनिधि-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४१६६१
पंजीकरण सं० एल. डब्लू/एन. पी. ७६
श्रावण कृष्ण १
रविवार, १२ जुलाई १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

आपने ५-४-८७ के 'आर्यमित्र' में सम्पादकीय लेख में वर्तमान आर्यसमाज का चित्रण किया है—ठीक वही परिस्थिति आज आर्यसमाज की है। पूरब की कुछ समाजों पर आर०एस०एस० वालों का कब्जा है रामायण की आरती और पाठ भी देखा है उन्हें आर्य,समाज से कोई दिलचस्पी नहीं है। के० बी० लाल त्रिपाठी आर्य, देहरादून

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के तत्वावधान में प्रभावशाली प्रचार योजना मास जौलाई ८७

ग्राम-ग्राम में राष्ट्रीय एकता—रक्षा चरित्र निर्माण एवं मद्य निषेध पुरोगमों के अन्तर्गत क्रान्ति का उद्घोष सुयोग्य उपदेशक ब्र०कृष्ण देव की व० रामलाल आर्य मण्डली सहित ब्र० प्रभात आर्य द्वारा पदयात्रा कार्यक्रम।

१—कड़ापुर पो० मानक चूड़ी मुरादाबाद			४–५ जौलाई
२—चक	,,	,,	६ ,,
३—मझेड़ा अस्यार पो० खास	,,		७–८ ,,
४—फतेहपुर विश्नोई पो० ,,	,,		९–१० ,,
५—मौढा पो० पाकबड़ा	,,		११–१२ ,,
६—काजीपुरा पो० खास	,,		१३–१४ ,,
७—अगवानपुर	,,	,,	१५–१६ ,,
८—ससावा पो० अगवानपुर	,,		१७–१८ ,,
९—महेन्द्री पो० सवरपुर	,,		१९–२० ,,
१०—समन्पुर	,,	,,	२१–२२ ,,
११—रतनपुर पो० चकफेरी	,,		२३–२४ ,,
१२—शेरपुर	,,		२५ ,,
१३—सलेमपुर पो० मढ़ी	,,		२६–२७ ,,
१४—जोधी हजरत पो० कोठ	,,		२८–२९ ,,
१५—चूटरखेड़ा	,,	,,	३०–३१ ,,

आर्यसमाजों के अधिकारियों कार्यकर्ताओं से प्रार्थना है कि वैदिक धर्म प्रचार की समुचित व्यवस्था करें दिनांक २६-७-८७ रविवार को मध्याह्न १ बजे आर्यसमाज सलेमपुर में क्षेत्रीय बैठक एवं कार्य समीक्षा होगी।

विक्रमसिंह आर्य	चन्दनसिंह आर्य	हरिश्चन्द्र आर्य
प्रधान	संयोजक	मन्त्री

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद—अमरोहा

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज नत्थूपुर मधुबन आजमगढ़ का ५० वां वार्षिकोत्सव श्री अभयमुनि वानप्रस्थ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। उत्सव का सम्पूर्ण व्यय तथा व्याख्यान निर्माण के लिए श्री ... पं० ... आर्य ... और ... आर्य ... ने भेंट स्वरूप प्रदान किये।

एल० पी० प्रिंटर्स (लिबर्टी प्रिंटर्स लिमिटेड) चारबाग लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्
आर्य मित्र
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ | घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८१

श्रावण कृष्ण ९, रविवार, संवत् २०४४ वि० दिनांक १९ जुलाई १९८७

दिल दहला देने वाला काण्ड

पंजाब में उग्रवादियों के हाथों निरीह, निर्दोष और निहत्थे बस यात्रियों की हत्या का सिलसिला ७ अक्तूबर १९८३ को शुरू हुआ था, जब सरदार दरबारासिंह की वजारत के दौरान ढिलवां में एक ही सम्प्रदाय के चार यात्रियों को बस से उतार कर हत्या कर दी गई। इस हत्या कांड से न केवल पंजाब बल्कि सारा देश हिलकर रह गया और सरदार दरबारासिंह ने मुख्यमन्त्री पद से त्यागपत्र दे दिया।

उसके बाद यात्रियों को बसो से उतार कर और कुछ बसों के अन्दर चढ़कर बसों में ही उग्रवादियों ने समय-समय पर अपनी गोलियों का निशाना बनाना शुरू कर दिया। ढिलवां कांड के पन्द्रह दिन बाद ही नौशहरा पन्नुआं कांड हो गया जिसमें फिर एक ही सम्प्रदाय के ६ व्यक्ति मारे गये।

उसके बाद १२ सितम्बर १९८४ को जिला गुरदासपुर में बटाला के निकट सेखवां मे एक बस से उतार कर ८ यात्री मार दिए गए। इन तीनों कांडों में पहला ढिलवां कांड जहां सरदार दरबारासिंह के समय में हुआ, वहां नौशहरा पन्नुआं कांड राज्यपाल श्री बी० डी० पांडे के समय में और सेखवां बस कांड राज्यपाल श्री के. टी. सतारावाला के समय मे हुआ।

सबसे भयावह किस्म के बस हत्याकांड श्री सुरजीतसिंह बरनाला के समय मे हुए, जब पहले २५ जुलाई १९८६ को मुक्तसर के पास एक ही समुदाय के १५ व्यक्तियों की हत्या कर दी गई और उसके बाद ३० नवम्बर १९८६ को खुड्डा बस कांड में तीन महिलाओं समेत २४ बस यात्रियो की स्टेनगनो और रिवाल्वरों से गोलियां मार-मार कर हत्या कर दी गई।

परन्तु जो कुछ ६ जुलाई की रात को पटियाला के पास लालरू ग्राम में हुआ है और जिस ढंग से जीप और फियेट कार पर सवार उग्रवादियों ने अंधाधुंध फार्यरिंग करके कम से कम ४० व्यक्तियों की हत्या करके २७ अन्य को घायल कर दिया है। यह निश्चित ही अब तक का सबसे बड़ा, भयानक और दिल दहला देने वाला कांड है। मृतकों में अबोध बच्चे और महिलायें भी शामिल हैं। घायल होने वालों में भी ११ महिलाएं और ३ बच्चे शामिल हैं।

रात को लगभग ११ बजे यह खबर आई थी कि पटियाला के लालरू गांव के पास एक फियेट कार पर सवार ६ उग्रवादियों ने हरियाणा रोडवेज की चण्डीगढ़ से ऋषिकेश जा रही एक बस पर अंधाधुंध फायरिंग की जिसमें कम से कम आठ यात्री गम्भीर रूप से घायल हो गये हैं। मगर रात को दो बजकर पांच मिनट पर हमें रात को ड्यूटी वाले एडीटर ने घर पर फोन करके रुआंसो और कांपती हुई आवाज में बताया कि टेलीप्रिंटर पर ३७ आदमियों के मारे जाने और २८ के घायल होने की खबर आ गई है। उनकी रुआंसी और कांपती हुई आवाज ने स्वाभाविक रूप से हमारा दिल दहलाकर रख दिया।

समाचारों के अनुसार इस अभागी बस को उग्रवादियों ने रात को ९.४५ बजे ओवरटेक किया, ड्राइवर को बस से नीचे उतार कर कुछ उग्रवादी बस में घुस गए और अन्दर ही फायरिंग शुरू कर दी जिससे अधिकांश यात्री बस के अन्दर ही दम तोड़ गए। बस को दो किलोमीटर गांव की तरफ भी ले गए वहां यात्रियों को बस से नीचे उतारकर और अंधाधुंध फायरिंग करके उनकी हत्या की। स्पष्ट है कि ९.४५ पर ओवरटेक की गई यह बस रात के लगभग ९ बजे चण्डीगढ़ से रवाना हुई होगी। पुलिस घटना स्थल पर लगभग डेढ़ घंटे बाद पहुंची। अगर ड्राइवर न बच पाता तो यह खबर शायद उसे और भी देर से मिल पाती।

६ जुलाई को पंजाब के राज्यपाल श्री सिद्धार्थशंकर रे और पुलिस चीफ श्री रिबैरो ने जालंधर में पत्रकारों को सम्बोधित किया। उस मीटिंग में मैं भी मौजूद था। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया कि राष्ट्रपति राज के दौरान जिस प्रकार पुलिस कारंवाई में तेजी आई है और उसके फलस्वरूप कई उग्रवादी पकड़े गए हैं, कई दुर्दान्त उग्रवादी मारे गये हैं। भारी मात्रा में हथियार बरामद हुए हैं और पुलिस उनके छिपने के ठिकानों तक पहुंच रही है। उससे उनमें जबरदस्त बोखलाहट बढ़ रही है और हमें इस प्रकार की सूचना मिली है कि वे दो-चार दिन में ही खुड्डा कांड जैसा या उससे भी बड़ा कोई कांड कर सकते हैं और किसी धार्मिक स्थान पर भी उनका कोई भयावह वार हो सकत। है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सदस्यता शुल्क
आजीवन सदस्य २५१)
वार्षिक २५)
छमाही १३)
विदेश मे १५ पौंड

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक मण्डल—
विश्वम्भरसिंह 'बसन्त', प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए., आचार्य देवव्रत अवस्थी 'देव वारिधि'

वर्ष ९०
अंक २८

जो मां भीख अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ— श्रावणकृष्ण ९ सम्वत २०४४ रविवार १९ जुलाई १९८७ दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

हमारा राष्ट्र धर्म

आज देश अस्थिरता की भयानक अग्नि मे धधक रहा है। चारों ही ओर विघटनवादी अलगाववादी, आतंकवादी—शक्तियां अपना मुंह फैला रही हैं। जितना ही अनेकता मे एकता का नारा लगाया जाता है उतना ही एकता मे अनेकता बढ़ रही हैं।

सभी विचारशील लोग इस अस्थिरता विच्छिन्नता की स्थिति के प्रति चिन्तित हैं परन्तु इनकी परिसमाप्ति का मार्ग ढूंढने मे असमर्थता ही दृष्टिगत होती है। इसका मूल कारण यह है कि आज हर समस्या के समाधान के लिये राजनीति का कलेवर लेकर चलनेवाले लोग ही अधिकारी माने जाते हैं। और ये राजनीति के अन्दर आने वाले लोग धर्म को अस्पृश्य, त्याज्य मानकर चलते हैं। कारण वे धर्म के सच्चे स्वरूप को जानते नहीं या जानना नहीं चाहते। क्योंकि जानने के बाद मानना अनिवार्य होगा, मानने पर स्वार्थवाद पर अंकुश लगेगा। बस आज ढोंग ढकोसले को धर्म मान लिया गया है इसीलिये वे राजनीतिज्ञ भी अपने घरो के संस्कारो मे पूजा-अर्चा का दकियानूसी कर्तव्य निर्वाह अवश्य करते हैं वहां धर्म के स्वरूप को समझ कर अपनाते की नहीं। रोटीन (परिपाटी) पूरी करनेकी मात्र विधि वे पूर्ण करते हैं।

परन्तु बिना धर्म को अंगीकार किये एकता असम्भव है। धर्म ही एकता का सूत्र है। धर्म से ही ईर्ष्या द्वेष, छल कपट नष्ट होता और परस्पर प्रीति का सम्वर्धन होता है। ईश्वर पर असीम आस्था रख कर वह धार्मिक व्यक्ति परमात्मा की बनाई सृष्टि को सुखी शान्त आनन्दित बनाने के लिये व्रती होता है।

धर्म वर्ग भेद, सम्प्रदाय भेद या जन्म गत जाति भेद नहीं बनाता। धर्म का वास्तविक स्वरूप कर्तव्य बोध है। प्रत्येक व्यक्ति के जहां जिस प्रकार के जो कर्तव्य हैं उन कर्तव्यो का निष्ठा लगन और तल्लीनता से पालन धर्म है। विपरीत—कर्तव्यो के पालन मे आलस्य प्रमाद या उनके विपरीत आचरण अधर्म है। यह धर्म की परिभाषा बिना स्वीकार किये सुख और शांति का मार्ग प्रशस्त हो नहीं हो सकता।

आज राष्ट्र की एकता के लिये इसी आचरण की आवश्यकता है। सभी का धर्म बनता है—वे चाहे किसी राजनीतिक दल के सदस्य हो चाहे किसी वर्ग विशेष या सम्प्रदाय विशेष या जन्म गत जाति मे उत्पन्न हुये हो वे अपनी अलग पहचान स्थापित करने की प्रवृत्ति का परित्याग करें। अपने दलीय स्तर से ऊपर उठने का प्रयास करें। मानव मात्र के प्रति एकसा व्यवहार [कर्तव्य] करने की प्रवृत्ति उपजायें उस पर ही बल दें। ससार का उपकार करना अपना धर्म बनावें। अपने लिये नहीं राष्ट्र के लिए जियें। सबके सुख मे अपना सुख देखें। इस प्रकार राष्ट्र को—अनेक बोली, अनेक वेष व अनेक पूजा शैलियों के साथ रहते हुए भी हम सुखी समृद्ध बनाने मे समर्थ बन जायेंगे।

राजनीतिक पार्टियो का धर्म बनता हैं कि अनेक अल्पमत, बहुमत, सम्प्रदाय विशेष, वर्ग विशेष जाति विशेष के लिये आन्दोलन न उठाकर मानव मात्र को एकता के सूत्र मे बांधने का आन्दोलन करें। किसी के लिये सुविधा विशेष अधिकार विशेष की माग एकता मे सदैव बाधक रहती है।

राष्ट्र की सम्पूर्ण जनता के लिये एक—संविधान, एक नियम, एक कानून बनाने पर बल दें। किसी को भी झूठे धर्म के नाम पर किसी भी विशेष प्रकार की उनकी अलग पहचान रखने की छूट राष्ट्रीय स्तर पर कतई नहीं रहनी चाहिये। विभिन्न शैलियों मे पूजा पद्धति की सबको छूट रहनी चाहिए किसी भी पूजा पद्धति के माध्यम से विलगाववादी झलक नहीं पनपने देनी चाहिये। राष्ट्रीय एकता के लिए हमे मनसा, वाचा, कर्मणा संकल्पित होना चाहिये और—हमारा नारा होना चाहिये —

हे ईश सब सुखी हों कोई न हो दुखारी,
सब हों निरोग भगवान् धन धान्य के भण्डारी।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों,
दुखिया न कोई होवे सृष्टी मे प्राण धारी।

—मनमोहन तिवारी

अति आवश्यक सूचना

अलीगढ़ जनपद के समस्त आर्य समाजो, गुरुकुलो एव वैदिक आश्रम की सम्पत्तिकी सुरक्षा एव सुव्यवस्था हेतु आर्यप्रतिनिधिसभा उ प्र ने श्री डा० रघुवीर शास्त्री ३१-३२ मोहन नगर अलीगढ़ को मुख्तार खास नियुक्त किया है। उपरोक्त कार्यों के निमित्त जो पूर्व मुख्तार नामे श्री सत्यपाल पथनन्दा अमर भवन—हुसपुर अलीगढ़ एव श्री कृष्णचन्द्र राजौरिया एडवोकेट निरजन पुरी अलीगढ़ के नाम लिख गये थे वह सभी निरस्त किये जाते हैं।

भवदीय
मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

वर्धापन संस्कार

दिनाक ४-७-८७ को आचार्य वेदव्रत अवस्थी सम्पादक "आर्यमित्र" की पौत्री कु० निधि सुपुत्री श्री सुशील अवस्थी (दैनिक जागरण लखनऊ) का चौथा जन्म दिवस, उनके निवास स्थान हिन्द नगर मे समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रात. ८ बजे से १० बजे तक वर्धापन सस्कार और वेदोपदेश हुए। दोपहर ३ से ५ बजे तक महिला सगीत हुआ और रात्रि ८ से १२ तक प्रीतिभोज हुआ जिसमें नगर के लगभग ३०० गणमान्य व्यक्तियो ने भाग लिया।

—सम्वाददाता

अध्यात्म सुधा

पानी में मीन प्यासी

—आचार्य मुंशीराम शर्मा, 'सोम' कानपुर

अपां मध्ये तस्थिवांसं तृष्णा विदज्जरितारम् ।
मृडासुक्षत्र मृडय/ऋ० ७/८९/४

पानी में पड़ा या खड़ा कोई भी व्यक्ति प्यासा नहीं रह सकता। पिपासा शान्त करने के लिये इसके पास पानी विद्यमान है। मंत्र कहता है कि, प्राणी जलों के बीच स्थित होता हुआ भी प्यासा मर रहा है। इसका तात्पर्य यही है कि वह है तो जल के अन्दर, परन्तु इसे जल की उपस्थिति का ज्ञान नहीं है। जल में रहते हुए भी वह जल की अनुभूति से शून्य है। हम सबकी प्राय: यही स्थिति है। आनन्दमय प्रभु की गोद में हम सब बैठे हुए हैं, पर उसे अनुभव नहीं करते। हमारी प्रवृत्ति बाहर की ओर है, अपनी ओर नहीं है और जब अपनी ही ओर नहीं है, तब जिसकी गोद मे हम बैठे हैं, उसकी ओर कैसे होगी। यह है स्वानुभूति से रार्थक्य और प्रपञ्च के साथ ऐक्य। प्रपञ्च में तो तृष्णा ही तृष्णा है, पिपासा की शान्ति नहीं। बुभुक्षा है, भूख-शान्ति का उपादान नहीं। खाते जाना ही खाते जाने की अभिलाषा को बढ़ावा देता है जिसका कहीं भी अन्त नहीं है। अन्त है केवल अपनी ओर देखने मे। प्रपञ्च से परित्याग ही इसकी एकमात्र औषधि है।

ऋषि, मुनि, वीतराग, तपस्वी इसीलिए अरण्य मे रहते थे। अरण्य का अर्थ है न रमण करने के योग्य, असुन्दर चकाचौंध से पृथक्, इन्द्रियो को जो आकर्षित न करे। इन्द्रियो की वृत्तियो में भूख-प्यास सर्व साधारण है। भूख रूखा-सूखा खाने से भी मिट सकती है, पर जब स्वादिष्ट से स्वादिष्ट आहार पाने की अभिलाषा जागृत हो जाय तो फिर भूख मिटती नहीं, मिटा देती है। यह भोक्ता को उसके 'स्व' से हटाकर अपने 'स्व' मे लीन कर लेती है। इससे 'स्वत्व' का लोप और पर स्वामित्व का वर्धन होता है। मानव स्वतंत्र न रहकर परतंत्र हो जाता है। पश्चिम की भौतिकतामयी वैज्ञानिक आविष्कारो की चकाचौंध ने इसे सर्वाधिक बढ़ावा दिया है। खेती-सिंचाई उर्वरक-यंत्र आदि के नवीन उपकरण, कम्प्यूटर, टेलीविजन सबके सब मानसिक सुविधायें देकर मानव के हाथो और पैरों को निकम्मा बना रहे हैं। श्रमजीवी का श्रम उससे छीना जा रहा है। पूंजीपतियो की पूंजी भी जो भले ही बढ़ती दिखाई दे, एक दिन क्षीण हो जायगी। धर्महीन विज्ञान सबको निगल जायगा। जिन मारक मिसाइलो और घातक आणवीय अस्त्रों का निर्माण उसने किया है, वे प्रयोक्तव्य तथा प्रयोक्ता दोनों को प्रलयाग्नि में भस्म कर देंगे—

पिपासा और पिपासा का परिणाम दोनो ही मानव क्या प्राणी-मात्र के लिये परिताप प्रद है। प्यास पानी पी लेने से बुझ जाती है। योग दर्शनकार महर्षि पतञ्जलि इसको शान्त करने का एक उपाय और बतलाते हैं। उनका सूत्र है—'कण्ठकूपे क्षुत्पिपासा निवृत्ति' यदि कण्ठकूप मे संयम कर सकें, धारणा ध्यान समाधि द्वारा चित्त को एकाग्र कर सकें, तो प्यास ही नहीं क्षुधा को भी दूर कर सकेंगे। यह है बाहर से हटकर, प्रपञ्च से सिमिट कर, बहुल से दूर होकर एकत्व की ओर भीतर की ओर आना। भीतर से भीतर, निकट से निकट आपका स्वत्व है और स्वत्व में ही परमत्व है, श्रेष्ठत्व तथा प्रेष्ठत्व है। उससे बढ़कर न कोई शुभ है और न कोई प्रिय! यह प्रियत्व या स्वत्व ही नेदिष्ठ है, सबसे निकटतम है। पर निकटतम होते हुए भी अनुभूतिगम्य नहीं हो पाता, क्योंकि हम उसके दूर-दूर से दूर विषयों में दौड़ लगाते फिरते हैं, अपने आपको छोड़ देते हैं और परिणामतः दुःख ही दुःख उठाते हैं, परिताप ही परिताप हाथ लगता है।

"परिणामताप संस्कार दुःखैः गुणवृत्ति विरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः।

योग दर्शन का यह सूत्र चित्त की बाह्योन्मुख वृत्तियों में दुःख ही दुःख है—ऐसा कहता है। इस बाह्योन्मुखता में एक अन्तःशान्त धारा भी है। वह प्रवाहिता है, सर्व हृदयवेद्य भी है, पर हमारी दृष्टि उधर नहीं जाती। नदियाँ बह रही हैं और जब तक बहती हुई समुद्र को नहीं प्राप्त कर लेतीं, तब तक अशान्त ही रहती हैं। समुद्र में पहुंचते ही वे शान्त हो जाती हैं। गीता कहती है—

आपूर्यमाणमचल प्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत् कामा: यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न काम कामी ॥

समुद्र आपूर्यमाण है, अचल-प्रतिष्ठ है। प्रवाह में बहती हुई नदियाँ जब उसे प्राप्त कर लेती हैं तो वे भी अचल-प्रतिष्ठ हो जाती हैं। इसी प्रकार कामनाओं के प्रवाह में बहता हुआ मानव जब निष्काम आनन्दनिधि को प्राप्त कर लेता है, तो वह भी शान्त एवं सानन्द हो जाता है।

आनन्द का वह सागर सबको प्राप्त है। यह सबको रस पिला भी रहा है। यदि न पिलाता तो यह लेख कैसे लिखा जाता? शरीर यंत्र का निर्माण किसने किया है? मातृगर्भ में बैठा कौन नवमास तक इसे पालित-पोषित संवर्धित करता हुआ बाहर निकालता है? कौन मां के स्तनों में दूध भर देता है? भौतिक द्वन्द्व में भी कौन निर्बल को बचा लेता है? भीषण से भीषण हिंसकों को किसने पछाड़ दिया किसकी दी हुई पवनात्मक प्राणशक्ति से हम सांस ले रहे हैं? किसकी दी हुई सूर्य-ऊर्जा से हम प्राणवन्त हैं? किसकी शक्ति से धरती माता अन्न-फल-मेवा आदि उत्पन्न करती है? यह वही रस सिन्धु है, आनन्द का आगार और सारस्वतस्रोत है जो निखिल ब्रह्माण्ड को बनाकर इसकी समग्र समृद्धि को जीवों के लिये उन्मुक्त हाथों से लुटा रहा है। वही दाता हम सबका इष्टदेव है, जीवन-यात्रा का अन्तिम गन्तव्य है और हमारी कामनाओं का लक्ष्य है। हम उसको भूल जाते हैं, पर वह तो हमें पल भर के लिये भी नहीं भुलाता। संकटो से निकाल कर विघ्न-बाधा-विहीन स्थिति में वही पहुंचाता है। हम शरीर द्वारा हाथ-पैर मारते हुए, प्राणअपान द्वारा शरीर और मनको साधते हुए, उसी का ध्यान करें उसी का स्मरण करें, उसे कभी न भूलें, तो वह भी कृपा करेगा और पिता जैसा प्यार देकर हमें रससिक्त कर देगा।

पानी में रहते हुऐ भी हम प्यासे हैं। रस में डूबकर भी हम नीरस हैं। आनन्द की गोद मे बैठे हुए भी हम निरानन्द हैं। इसका कारण है स्वरूप की विस्मृति और परत्व की प्रियता। जब हम स्व में स्थित हो जावेंगे तो परत्व की सत्ता ही समाप्त हो जायगी। फिर सर्वत्र स्व ही स्व दिखाई देगा। जिसे हम अभी स्वार्थ समझते हैं, वह मिथ्या है। धन लोलुपता, पद-प्रियता, भोगाकांक्षा आदि किसी मे स्वत्व नहीं है। इसी कारण उनमें से कोई भी मेरा सच्चा सखा या साथी नहीं बन पाता। थोड़े दिनों की झलक दिखाकर सबके सब आंखो के आगे से तिरोहित हो जाते हैं। अब तक का इतिहास इसका साक्षी है। अतः जो स्व है, वास्तव में स्व है, उसी को अपनाना चाहिये।

बाहर सत्व तो है, पर स्वत्व नहीं। सत्व से पुरुष को इसीलिये योगदर्शनकार ने अलग रखा है। 'सत्व' प्राकृत है तो पुरुष का स्वत्व चिन्मय है। दोनों असंकीर्ण हैं, एक दूसरे से भिन्न हैं। हम दोनों को एक समझे बैठे हैं, इसी हेतु भोगो को भोगने में लगे हैं और दुखी हो रहे हैं। यह सच्चा स्वार्थ नहीं पूर्णत: परार्थ है। जब हम इस अन्तर को समझेंगे, तब पर को छोड़कर स्व में समासीन होंगे। स्व का यह ज्ञान हमें प्रातिभ, श्रावण, वेदन आदि विभूतियो से सम्पन्न कर देगा। फिर इन विभूतियों को भी छोड़कर हम स्व में प्रतिष्ठित हो आनन्द भागी बनेंगे। पानी में तृप्तमीन हो जावेंगे।

ओ३म् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि

—वैद्य कुन्दन लाल आर्य
५४६/१६२ अर्जुन नगर—आलम बाग लखनऊ—५

[गतांक से आगे]

(२) हलवाई का भी एक पात्र होता है—जिसके द्वारा वह आग पर चढ़ी हुई कढ़ाई के खौलते हुए गर्म घी या तेल से पकवान—मिठाई—पकौड़ी आदि निकाल कर अलग रखता है— उस पात्र को भी हम पोना या पोनी ही कहते हैं। इसमें छेद होते हैं—गर्म घी या तेल उन छिद्रों में छन जाता है और खाने योग्य पदार्थ अलग कर दिया जाता है। पुनातु का सीधा सा अर्थ हुआ पुन्ना या छानना। अपने शिर आदि अंगों की समस्त, बुराईयों को अलग कर उनमें सुन्दर प्रभु भक्ति रस छानकर भरना ही पुनातु है। तभी अभोष्टये और पीतये को प्राप्ति होगी। इस रहस्य को दृष्टि मे रखकर प्रत्येक अंग पर जल छिड़को—पाठ करो—"अभिक्ष—वन्तुनः।" प्रभु मेरे आंगन में बरसो—खूब बरसो—चारों ओर से बरसो भर दो मेरे आंगन को अपनी अमृत की वर्षा से। सन्ध्या करने वाले जिज्ञासु-जरा सोच—अमृत कैसे बरसेगा तेरे आंगन में। यदि आंगन पर छत-परदा ढक्कन या आवरण होगा—तो तेरा आंगन सूखा ही रह जावेगा। चाहता है तेरा आंगन अमृत वर्षा से भर जाये—तो तुझे इन पर्दों आवरणों—छतों को हटाना ही पड़ेगा। तब तुझे इस बरसात का आनन्द मिलेगा और तू मस्त होकर गायेगा "बरस-बरस रस भीनी"—"मैं इक बूंद जल का प्यासा हूं चातक। अमृत की करो वर्षा हरो ताप मोरा"। बरसो—प्रभु—खूब बरसो॥

अब हम समझ गये—आवरणों को हटाना ही मार्जन है और उस मे शुद्धता—पवित्रता—सत्यता भरना ही पुनातु है। अब इस प्रकार भर जावेगा—तब सब पाप—दु.ख—कष्ट स्वयंमेव छूट जावेंगे—प्रत्येक अंग निर्मल हो जावेगा।

प्यारे साधक—आओ—अब मन्त्र की ओर चले—मार्जन मन्त्र है—ओं भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। ओं स्वः पुनातु कण्ठे। ओं महः पुनातु हृदये। ओ जनः पुनातु नाभ्याम्। ओ तपः पुनातु पादयोः। ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र॥ अर्थ—सत् स्वरूप या प्राण स्वरूप प्रभु शिर में पवित्रता करे। चित् स्वरूप या ज्ञान स्वरूप प्रभु नेत्रों ज्ञानेन्द्रियों में पवित्रता करे। सुख स्वरूप और सुख दाता प्रभु कण्ठ मे पवित्रता करे। महान् प्रभु हृदय में पवित्रता करें। सबको उत्पन्न करने वाला प्रभु नाभि-जनन शक्ति के केन्द्र—में पवित्रता करें। दुष्टो को सन्तापकारी 'प्रभु' पैरों में पवित्रता करे। सत्य स्वरूप प्रभु फिर शिर में पवित्रता करें। आकाश की तरह व्यापक महान् प्रभु सब अंगों में पवित्रता करें॥

व्याख्या—वस्तुतः इस मन्त्र मे कहे गये अंग ही बड़े महत्व पूर्ण हैं। यदि इनमें से एक भी अंग विकृत हो जावे—तो जीवन कष्टमय हो जाता है और यदि यह सब अंग सुचारु रूप से कार्य करें तो यह जीवन ही स्वर्ग बन जाता है। इस मन्त्र में सर्व प्रथम अंग है 'शिर' मनुष्य के शरीर में शिर सबसे ऊपर होता है। यहां ही मन और बुद्धि का वास है। यहां शिर में ही ज्ञान का केन्द्र है—शरीर की प्रत्येक क्रिया का संचालन यहां से ही होता है—अर्थात् शिर—सारे शरीर के अंगों और गति का कन्ट्रोलर है। शिर के ठीक रहने पर ही मनुष्य सीधा उठ बैठ सकता है—शिर के विकृत होते ही मनुष्य नीचे की ओर लुढ़क जाता है—वह सीधा नहीं उठ बैठ सकता। शिर—मन में उठने वाले विचार ही हमारी जीवन यात्रा को सुखमय या दुःखमय बना देते हैं। अतः भक्त भगवान् से सर्व प्रथम यह ही प्रार्थना करता है। प्रभु तू मेरा जन्म दाता—जीवन दाता है—मेरे इस कन्ट्रोल रूम शिर को अपनी पवित्रता से भर दो—कन्ट्रोल रूम के ठीक रहने पर ही मेरी जीवन यात्रा सुखमय होगी। इसके बाद नम्बर आता है, आँखों का—भक्त प्रभु से कहता है—प्रभु तू ज्ञान स्वरूप है और दुःख दूर करने वाला है। मेरे शरीर की दस इन्द्रियां ही मुझे परेशान करती हैं। यह बड़ी जल्दी रिश्वत ले लेती है। कुमार्ग गामी बन जाती हैं और नेत्र ही दसों इन्द्रियों का प्रतिनिधित्व करता है—अतः शिर के बाद कहा—मेरे नेत्रों में पवित्रता भर दो। मैं देखता रहूं—जागता रहूं—कहीं कोई वासना रूपी चोर न घुसने पाये। इन नेत्रों में शक्ति दो कि मैं संसार में चारों ओर प्रभु की सत्ता को देख सकूं। त्रुटि हो जाने पर यह आंख नीची हो जावेगी—साथ ही शिर भी नीचे झुक जावेगा. प्रभु इस दशा में मेरी रक्षा करो। जब ज्ञान शिर और ज्योति नेत्र निर्मल हुए तो कण्ठ अपने आप पवित्रता से भर जावेगा जो जानेगा—देखेगा—समझेगा—वही तो कण्ठ से निकलेगा। प्रभु कृपा करो—कण्ठ से भी तेरी ही पवित्रता दृष्टि गोचर हो—मेरे कण्ठ को अपनी मिठास से भर दो—सुरीला बना दो—ताकि तेरी ही महिमा का गान गा सकूं। मै क्या गाऊंगा—क्या प्रकट करूंगा—भाव, प्रेमरस, आकर्षण का केन्द्र तो हृदय है, प्रभु उसे भी पवित्र कर दो। हृदय शब्द तीन अक्षरों (हृ+द+य) से मिलकर बना है। (हृ) लेना (द) देना (य) इसी नियम या क्रम को कन्ट्रोल करना चलाते जाना। हृदय शरीर से अशुद्ध रक्त लेता है और शुद्ध रक्त शरीर को देता है और यही काम निरन्तर करता रहता है। आरम्भ से लेकर अन्त तक यह अपना नियम जरा भी भंग नहीं करता। प्रभु अपनी कृपा से हृदय की गति को आरम्भ करता है और जब प्रभु इसकी गति को बन्द करता है—तो संसार की कोई शक्ति इसको फिर चला नहीं सकती है। यह सदा गन्दगी लेकर शुद्धता (जीवन) देता है। यह ही व्यवहार भाव-प्रेम आकर्षण का केन्द्र है। इसको शुद्ध पवित्र बनाये रखने के लिए बड़े परिश्रम की आवश्यकता है। प्रभु तू महान् है—तेरी ही कृपा से मेरा यह हृदय भी पवित्र रह सकता है—इसी में तेरा भी निवास है—तू मेरे हृदय को भी महान् बना दें। फिर मैं चारों तरफ तुझे ही तुझे देखूंगा। भक्त लोग इसी हृदय प्रदेश में ध्यान लगा प्रभु का दर्शन करते हैं—इसी भाव से प्रभावित होकर कुछ मत वालों ने कहा—"खुदा चौथे आसमान पर है।" गिन लीजिये शिर से लेकर हृदय तक चौथा नम्बर हो आता है। "जाके हृदय सांच है—ताके हृदय आप"—आगे प्रार्थना है प्रभु मेरी नाभि—जठराग्नि एवं प्रजनन शक्ति भी पवित्रता से भर दें ताकि मैं इस हृदय की पवित्रता को संसार में आगे बढ़ा सकूं। इस कार्य के लिये मुझे प्रयत्न शील होना पड़ेगा—तपस्वी बनकर तप करना होगा। इसीलिये इसके बाद भक्त मांगता है—प्रभु तू तपस्वी है—मेरे पांवों को भी पवित्र कर दे। मेरी चाल पवित्र हो—मैं सत्संग का प्रेमी बनूं—कुसंग की ओर कभी न जाऊं। पांवों को तपस्वी कहा—पांव की बाहिरी बनावट को देखें—आगे की तरफ अंगुलियां—पीछे की तरफ एड़ी। मनुष्य चलता है तो भूमि पर पांव का अगला भाग पंजा और पिछला भाग एड़ी तो जमीन पर लगी रहती है, और पांव के मध्य का भाग ऊपर उठा रहता है—यह भूमि को नहीं छूता यदि पांव का तलुवा बिल्कुल सपाट होता है—एड़ी से अंगुलियों तक बिल्कुल एक लेबिल का होता है तो मनुष्य तेज चलने दौड़ने में अनेक प्रकार के कष्ट अनुभव करता है।

[शेष पृष्ठ ६ पर]

मनुर्भव-मनुष्य बनो

(श्रीमती सन्तोष महाजन ५६६ क/ २८ स्नेह नगर लखनऊ ५)

मनुष्य कौन ? है जो विचारकर कर्म करे। अंधा धुन्ध कर्म न करे। कर्म करने से पहिले भली प्रकार विचार ले कि मेरे इस कर्म का क्या फल होगा, इसका क्या प्रभाव होगा। मनुष्य का कर्त्तव्य है धर्म पर चलना। मनुष्य यदि धर्म को अपने से छोड़ देता है तो दानव अर्थात राक्षस बन जाता है। जिस प्रकार अग्नि का धर्म है जलाना। यदि अग्नि से जलाने का गुण समाप्त हो जावे तो राख बन जाती है, पैरों तले रौंदी जाती है। फिर एक हवा का झोंका आता है तो उस राख को उड़ा ले जाता है। कुछ समय के पश्चात उस अग्नि का नामों निशान समाप्त हो जाता है। यही हाल उस मनुष्य का है जो अपने धर्म को छोड़ देता है तो धर्म उसे भी छोड़ देता है।

कभी हम ने इन प्राकृतिक रचनाओं को जो भगवान की ही रचना है देखा है, सोचा है ? इनके अपने कर्त्तव्य अपरिवर्तनीय हैं। परन्तु हम किधर जा रहे हैं, कौन सा रास्ता ग्रहण कर रहे हैं, मानवता का या दानवता का ?

वैसे तो हम दूसरों को बड़े बड़े उपदेश करते हैं, बड़े बड़े यज्ञ करते हैं, सदैव सत्संगों में भाग लेते हैं रामायण का पाठ करते हैं, राम लक्ष्मण के प्रेम के गीत गाते हैं, और भी बड़े बड़े नेक काम करते हैं। मगर मोहके जालमें ऐसे जकड़ जाते हैं कि यह सब नेक काम भूल जाते हैं और अपने ही घर में अपने ही भाईयों से विद्रोह कर बैठते हैं। मुकदमें बाजी करते कचेहरी के चक्कर लगाते हैं उस समय मोह के नशे में इतने घिरे होते हैं कि फिर कुछ सोचते ही नहीं दुष्ट से दुष्ट काम करने को तैयार हो जाते हैं।

अरे ऐसा करने से धन किसी को मिला है। जो भगवान ने तुम्हारे भाग्य में लिखा है वह हर हालत में तुम्हें मिलेगा, फिर ऐसे दुष्ट काम क्यों करता है। ऐसे काम कभी तुम्हें शान्ति नहीं देगें। अरे मनुष्य तुम इन गन्दी बातों को छोड़ दो। बड़े कहते हैं ऐसी कमाई का धन पुत्रों के लिए क्यों इकट्ठा करते हो ? यदि पूत सपूत तो क्यों धन संचय। यदि पूत कपूत तो क्यो धन संचय ? यदि पुत्र कपूत है तो धन क्यों इकट्ठा करता है वह सब गंवा देगा। यदि पुत्र सपूत है तो वह अपने आप इकट्ठा कर लेगा। आओ। हम हम शुभ कार्य करें वहां अपने विचार भी पवित्र करें अर्थात मानवता के रास्ते पर चलें। वैसे आर्यसमाज के सत्संगों में आने वाले सब जानते हैं धर्म क्या है, अधर्म क्या है ? धर्म के दस लक्षणों में से-एक दया है। दया के ऊपर तुलसी दास जी ने एक दोहा लिखा है—

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये जब तक घट में प्राण।

दया तो दुखी लोगों को देख कर आ ही जाती है। हम दया अनाथों असहायों पर कर ही देते हैं, उसपर जिसको जिस वस्तु की आवश्यकता होती है। मगर हम ने यह कभी नहीं सोचा कि हमें और भी किसी पर दया करनी है अर्थात अपने आप पर। मुझे याद है कि एक समय था जब मैं अपने परिवार के साथ तपोवन आया करती थी तो उन दिनों महात्मा आनन्द भिक्षु जी यज्ञ कराया करते थे। यज्ञ में कुछ बहिनें ऐसी आया करती थीं, जो घरेलू बातें यज्ञ में करने लगती थी। यज्ञ करते हुए महात्मा जी कहा करते थे! मेरी बहिनों दया करो। कुछ अपने ऊपर कुछ मेरे ऊपर। अपना कीमती समय निकाल कर यहां सत्संग में आती हैं और अपना समय व्यर्थ बातों में खो देती हैं। हमें अपने पर भी दया करनी है अपने आप को शुभ कामों में लगाये रखना चाहिये।

समय का सदुपयोग करें। पता नहीं कौन सा समय हमारा अन्तिम समय हो। जो भी धन दौलत बल प्रभु ने दिया है उसका सदुपयोग करें। हम सही रास्ते पर चलकर जीवन का सुधार करें, यह बड़ा अनमोल समय है इसे व्यर्थ मत खोवें।

प्रभु हमें शक्ति प्रदान करें? कि हम इस मानव जीवन को वेदानुकूल चला कर धर्ममय बना लें और सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र को "मनुर्भव जनया दैव्यम् जनम्" के वेदादेश के अनुरूप चलने की प्रेरणा देने में समर्थ हों। स्वयं मनुष्य बनें और दूसरो को मनुष्य बनानेकी प्रेरणा दें।

श्री अभय मुनि जी का नागरिक अभिनन्दन

दिनांक ११-६-८७ को आर्य समाज भवन नागौर में आर्य जगत के परम श्रद्धेय धर्मोपदेशक पं० अभय मुनि जी वानप्रस्थ पूर्वनाम पं० भगवती प्रसाद जी "अभय" का ८५ वां जन्म दिवस हीरक जयन्ती समारोह के रूपमें सोल्लास मनाया गया। इस समारोह के अन्तर्गत प्रातः ८ बजे से १० बजे तक उनके निवास स्थान पर पारिवारिक यज्ञ, एवं सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। रात्रि में आर्य समाज मन्दिर नागौर के प्रांगण में श्री ओमप्रकाश जी झंवर महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मुख्य आतिथ्य में तथा श्री० जे० एन० कल्ला अतिरिक्त जिलाधीश, नागौर की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें श्री अभय मुनि जी को अभिनन्दन पत्र एवं शाल भेंट कर सम्मानित किया गया।

आर्य समाज आगरा नगर द्वारा मेरठ के दंगे की निन्दा

मेरठ और दिल्ली में हुए साम्प्रदायिक दंगों पर चिन्ता व्यक्त करते हुये आर्य समाज आगरा नगरके सदस्योंने कहा कि "कथित दंगे सुनिश्चित थे।" इसमें दिल्ली की जामा मसजिद के शाही इमाम बुखारी उनके बेटे ने पहले से आदम और होवा सेना बनाकर और जनता पार्टी सांसद एवं आल इण्डिया मुस्लिम मजलिस-ए-मुशावरात के कार्यकारी अध्यक्ष सैयद शहाबुद्दीन ने अपने भड़कीले प्रवचनों से तथा केन्द्रीय मन्त्री श्रीमती मोहसिना किदवई के पुलिस के सख्ती के कार्यों में हस्तक्षेप से सहिष्णु शांति प्रिय निहत्थे हिन्दुओं पर बमों व गोलीबारी के कारण अपार जन और धन की हानि हुई है। आर्य समाज के सदस्यो ने इसकी घोर निन्दा की।

निर्वाचन

आर्य समाज सरदार पटेल मार्ग, सहारनपुर
प्रधान श्री ठा० करमसिंह जी
मन्त्री श्री बाबूराम शर्मा जी
कोषा० श्री अनिल कुमार जी

आर्य समाज मोहाना, जिला० बुलन्द शहर
प्रधान श्री उदयवीरसिंह
मन्त्री श्री ज्योति स्वरूप
कोषा० श्री शिशुपालसिंह

आर्य समाज अनारकली नई दिल्ली
प्रधान श्री शांतिलाल सूरी
मन्त्री श्री रामनाथ सहगल

आर्य समाज सान्ताक्रुज [बम्बई]
प्रधान श्री ओंकारनाथ जी आर्य
मन्त्री श्री विमल स्वरूप सूद
कोषा० श्री कस्तूरी लाल भवान

धार्मिक

(४)

सुख शान्ति का मूलाधार धर्म ही है

धर्म के स्वरूप की पहचान करें
धर्म का चतुर्थ लक्षण—अस्तेय

(—आचार्य देवव्रत अवस्थी वेद मन्दिर, हिन्द नगर, लखनऊ-५)

अस्तेय—चोरी न करना । चोर प्रवृत्ति का सर्वथा त्याग ।

ससार का प्रत्येक व्यक्ति चोरी को पाप कहता है । सामान्य अर्थों मे किसी दूसरे की वस्तु को बिना पूछे लेना, छिपा कर उठा लेना चोरी कहा जाता है । ऐसे कृत्य करने वाला व्यक्ति भी सामान्य लोगो के सामने अपने को सही सिद्ध करने के लिये उस कार्य की निन्दा ही करता है । परन्तु वह अपने स्वभाव के कारण, अपनी कुवासना के कारण इस काम को करता ही रहता है, परिणाम का भय कि पकड़े जाने पर सजा मिलेगी वह छिपा कर बहुत ही सावधानी से इस कुकृत्य को करने की चेष्टा करता है ।

सृष्टि की रचना करके परमात्मा ने सकल व्यवस्था को—व्यवस्थित रखने मे सहायक बन कर अपने जीवन को सफल बनाने व सुखी आनन्दित रहने के लिए उसने हमे मानव का जीवन दिया और वेद ज्ञान द्वारा हमे बताया कि यह जीवन तुम्हे कर्म करने के लिये दिया है । कर्म शुभ अशुभ दो प्रकार के होते हैं । मानव का धर्म (शुभ) सुकर्म करने का ही है । अत जीवन मे प्रमाद न करना, आलस्य न करना, एक सेकेण्ड का भी समय व्यर्थ मे न खोना आदि ।

यदि तुमने एसा किया तो तुम स्तय करोगे, चोरी करोगे । और तुम्हारे जाने का समय आ जायेगा अपने कर्तव्य पूरे न कर पाओगे ।—कर्मो-उन्नति न कर पाओगे । परम पद मोक्ष की प्राप्ति के पथ के पथिक बन पाओगे । इसलिये अपनी बुद्धि, विवेक को शुद्ध रख कर देखो—सूर्य अपने कार्य मे एक सेकेण्ड की भी ढील नहीं देता । चन्द्रमा की कलायें क्रियायें व्यवस्थित रूप मे चलती हैं । वायु एक सेकेण्ड को भी बन्द हो जाये तो सारी सृष्टि का ही सहार हो जाये । जैसे ये जड देवता अपने कर्तव्य मे, धम मे चोरी नहीं करते उससे—पीछे नहीं हटते वैसे ही इनसे प्रबल प्रेरणा लेकर मानवतनधारी प्राणी का दानवत्व की वासनाओ को छोड़कर मानव बनकर देवत्व की दिशा मे कदम बढ़ाना चाहिए ।

हमे अपने जीवन के अन्दर कितना समय मिला है इसकी जानकारी नहीं है, मेरे माता पिता, भाई बहन, मित्र, पत्नी—पुत्रादि किसी को भी नहीं है । वह जानकारी केवल जगज्जननी माँ, परम पिता परमेश्वर—की ही है । उसने मानव जीवन देकर मुझे मेरे वेद निर्दिष्ट कर्तव्यो को निर्बाध रूप से करते रहने का आदेश दिया है । उसमे—आलस्य प्रमाद, अहकार सभी हमारे लिए घातक बनते है । हमे स्तेयी (चोर) बनाते हैं ।

आज हमारी कुछ ऐसी ही स्तेयी (चोर) की सी ही—अवस्था बन रही है । घरो मे, किसी भी समारोह के आयोजन मे विलम्ब क अन देखा करते—ऐसा विलम्ब होना स्वाभाविक है— ऐसा कह कर हम स्तेय करते हैं ।

सभा सोसायटी मे व्याख्यान देते समय सयोजको द्वारा प्रदत्त समय से अधिक बोल कर या बोलने की चेष्टा करके हम स्तेय करते है सभाओ में विलम्ब से पहुचने की आदत-डाल कर हम स्तेय करते हैं

आलस्य प्रमाद मे जुआ, ताश बेकार की गप्पबाजी मे (रिक्रियेशन के नाम पर—विश्राम के नाम पर) हम प्रभु द्वारा प्रदत्त अमूल्य समय को बर्बाद करके स्तेय का पाप करते हैं । सूर्य की तरह वायु क तरह हम प्राप्त अपने जीवनके एक एक क्षण का सदुपयोग करें । जि आश्रम में हैं, जिस कार्य मे हैं, उसके जो कर्तव्य हैं जो ड्यूटी है उ धम मान कर व्यवस्थित रूप मे सम्पूर्ति देने का प्रयत्न करें ।

कर्तव्य का बोध करके उसकी सम्पूर्ति की निष्ठा व उसके पाल मे तल्लीनता, क्रियाशीलता ही अस्तेय है ।

हम धर्म के इस चतुर्थ लक्षण को अपना कर विश्व मे सुख शांति सम्वर्धन मे योगदायी बन सकते है । और धर्म के वास्तविक रूप क दूसरो को बताने मे समर्थ हो सकते है ।

शास्त्रार्थ महारथी अमरस्वामी जी अस्वस्थ

शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी जी महाराज इधर काफी अस्वस्थ चल रहे हैं । वे अपने आश्रम की कुटियामे ही रोग से सघर्ष कर रहे— और अपने वेद प्रचार उद्योग मे सतत प्रयत्नशील हैं । अप्रतिम साहस की प्रतिमूर्ति झलकते हैं । शैया से अब उठ नहीं पाते ।

डाक्टरो ने उन्हे गले का कैंसर बताया है । वे कुछ भी खा सकने मे असमर्थ हैं । केवल पेय ही ले सकते हैं । ऐसे समय मे आर्यजगत का दायित्व है कि उनके स्वास्थ्य रक्षण हेतु सभी प्रकार की व्यवस्था अपने सबल कन्धो पर उठायें । आर्थिक कठिनाई उनके स्वास्थ्य प्रबन्ध मे बाधक न हो । उनकी आन्तरिक इच्छा है कि उनको लिखित पुस्तक निर्णय के तट" पर का प्रथम व तृतीय भाग उनके जीवन काल मे ही प्रकाशित हो जाये । धनाभाव उसमे बाधक है । आर्यजन ६०) अग्रिम भेजकर अपनी प्रतिया सुरक्षित करालें और उनके प्रकाशन में योगदायी बनें ।

—सम्पादक मण्डल

फिरका परस्त मुस्लिम नेताओं ने कहा! "हम भारत के दंगों के समय अरब देशों से मदद लेंगे"

भारत द्वारा अभी हाल मे श्री लङ्का के जाफना क्षेत्र मे मानवीय आधार पर तमिलो को पहुचाई गयी राहत को मुद्दा बना कर कुछ विल गाववादी फिरका परस्त मुस्लिम नेताओ ने—विभिन्न गुप्त बैठको मे इस आशय के प्रस्ताव रखने की चेष्टा की कि—भारत मे साम्प्रदायिक दंगे के समय अरब देशो से इसी प्रकार सहायता की माँग की जाये । अभी हाल के मेरठ के दगो के सम्बन्ध मे पर्चे छाप कर उन्हे हज यात्रियो के माध्यम से अरब—देशो को पहुचाया जाये ।

विश्वस्त सूत्रो से पता लगा है कि अभी तक सभी मुस्लिम नेताओ मे मतैक्य न होने के कारण यह प्रस्ताव पारित नहीं हो सका है रन्तुप प्राय— उनके साआरी हैं

दिल दहला देने वाला काण्ड

[पृष्ठ १ का शेष]

बेशक उनकी यह बात हम सब ने सुनी मगर किसी को भी यह ास नहीं था कि आज ही रात इतना वीभत्स कांड हो जायेगा। म से कम मैंने तो यही समझा था कि केवल एक आशंका की ही भिव्यक्ति उन्होंने की है। वैसे भी श्री रे और श्री रिबैरो रह-रह र यह बात कहते रहे हैं कि उग्रवाद और आतंकवाद का यह नौना खेल एक दिन में समाप्त होने वाला नहीं है बल्कि जैसे-जैसे ग्रवादी पुलिस के जाल में फंसेंगे उनकी हताशा और भी बढ़ेगी और छ भी भयावह कर गुजरने की कोशिश वे करेंगे और जिस ढंग से छले कुछ दिनों से कई-कई लोगों की इकट्ठी हत्यायें उग्रवादी कर हे हैं, इससे स्पष्ट है कि श्री रे और श्री रिबैरो की आशंकाएं निर्मूल हीं हैं।

अब हम इन खूनी घटनाओं पर विचार करते हैं तो पता चलता है क एक तरफ निरीह, निर्दोष और निहत्थे लोग हैं और दूसरी तरफ ाधुनिकतम हथियारों से लैस प्रशिक्षित उग्रवादी हैं जो मिनटों और केन्डों में ही यह खूनी खेल खेल जाते हैं, बेचारी जनता जिस तरह ाज तक खामोशी से उनका यह जुल्म और सितम सहती रही है उसी रह से यह सदमा भी सहना पड़ेगा।

इस मामले में सर्वाधिक खेदजनक बात यह है कि कुछ द्धिजीवी, राजनीतिज्ञ और धार्मिक लोग एक ओर तो यह कहते हैं क निर्दोषों की हत्यायें करने वाले सिख नहीं हैं क्योंकि सिख धर्म नर्दोषों का खून बहाने की इजाजत नहीं देता। दूसरी ओर जब वे ोग मारे जाते हैं जिनके सिरों पर कई-कई कत्ल हैं और जिनसे भारी ात्रा में हथियार पकड़े जाते हैं तो यही लोग यह शोर मचाना शुरू र देते हैं कि पुलिस झूठे मुकाबलों में निर्दोषों को मार रही है।

६ जुलाई को भी पञ्जाब के सिख वकीलों का एक ि ष्टमण्डल ाष्ट्रपति से मिला और उनसे जाली मुठभेड़ों को आड़ े ि ८ युवकों ी हत्यायें रोकने का अनुरोध किया। इन लोगों क ्त दोहरी ूमिका से उग्रवाद को बल भी मिलता है और समुदाय की छवि भी ससे खराब होती है।

६ जुलाई की मीटिंग में भी जब एक पत्रकार ने श्री रे और श्री रबैरो से जंगबन्दी का एलान करने की बात कही तो उन्होंने कहा कि ागर आज ही हत्याओं का यह क्रम बन्द हो जाए तो बाकी का काम वतः ही बन्द हो जावेगा।

श्री रिबैरो ने यह भी कहा कि झूठे मुकाबले का यह शोर उस ामय मचना शुरू हुआ जब बरनाला राज में डेरा बाबा नामक ेक्टर मे सीमा पार करते हुये दस युवक मारे गए। उन्होंने बताया क हमने सीमा पर एक स्थान और समय निश्चित कर रखा था कि ुख्य धारा मे शामिल होने के इच्छुक वहां आ जाएं मगर पाकिस्तान े आने वाले ये युवक रात को तीन बजे उस स्थान से दाखिल हुए वहां ारिया का बहाव बहुत तेज था और मेंड के क्षेत्र में 'हाथी घास' ूर-दूर तक फैली हुई थी। पुलिस को यह सूचना थी कि जल्दी ही ुछ प्रशिक्षित उग्रवादी भारतीय सीमा में घुसने वाले हैं। अतः चौकसी के लिये बी० एस० एफ० तैनात थी। जब 'हाथी घास' में बी० एस० एफ० को हिलजुल महसूस हुई तो उसने गोली चला दी और ये लोग मारे गये। अगर सही समय पर, सही स्थान पर और सही ढंग से ये लोग आते तो मारे नहीं जाते।

जब श्री रिबैरो से पूछा गया कि इन युवकों को पकड़ा क्यों नहीं गया तो उन्होंने कहा कि अगर बी० एस० एफ०वाले उस हाथी घास में जाते तो वे मारे जाते। उन्होंने यह भी कहा कि जब मैंने चार्ज लिया तब जालंधर की कचहरी में उग्रवादी सिपाहियों को मार कर अपने साथियों को छुड़ा कर ले गये मगर किसी ने भी उन निर्दोषों की हत्या पर दुःख व्यक्त नहीं किया। क्या उनका दोष यही था कि पुलिस की वर्दी उन्होंने पहन रखी थी ?

श्री रे ने कहा कि जितने भी लोग मारे गए हैं, वे वही हैं जिनसे हथियार वगैरह बरामद हुए हैं, ऐसा कोई आदमी नहीं मरा है जिससे कोई हथियार न मिला हो उन्होंने कहा कि श्री गब्बर सिंह भी इसी कोशिश में मारे गए थे कि उग्रवादियों को पकड़ा जाएं मगर उग्रवादियो ने अंदर से ही फायरिंग शुरू कर दी और जो बम फैक्ट्री वहां से मिली उससे ऐसे २५ बम बन सकते थे जैसे बम का विस्फोट जालंधर में हुआ। श्री रे ने कहा कि फिर भी अगर किसी निर्दोष को तंग करने का केस हमारे नोटिस में लाया जाए तो कार्रवाई हम उस पर करेंगे और अमृतसर में हमने की भी है।

श्री रे ने यह भी बताया कि पिछले दिनों अलग-अलग जगहों पर पकड़े गए सात युवकों ने अलग-अलग पूछतांछ में ट्रेनिंग के जो स्थान और ट्रेनिंग देने वालों के जो नाम बताए वे एक जैसे थे। इससे यह ही निष्कर्ष निकलता है कि अगर उन्होंने सच बोला है तो इनका तार एक ही जगह से हिल रहा है और अगर झूठ बोला है तो भी एक योजना के तहत ही सारा काम हो रहा है।

जहाँ पंजाब पुलिस इस समय उग्रवाद से लड़ाई लड़ रही है वहां वे अकाली जो सत्ता से हट गए हैं, वे अकाली जो सत्ता के सपने ले रहे हैं और वे अकाली जो सुलह-सफाई की बातें कर रहे हैं उन्हें चाहिए कि वे अपने अंतर्मन में झांक कर देखें कि अपने कामों और बयानों से कितनी क्षति वे इस प्रदेश को पहुंचा रहे हैं।

इसके साथ ही हम श्री रे और श्री रिबैरो से भी यह कहेंगे कि जब वह आने वाले दिनों को पंजाब के लिए कठिन मानते ही हैं तो हरियाणा और हिमाचल की यहां आने-जाने वाली बसों की सुरक्षा का प्रबन्ध भी सम्बन्धित सरकारों से मिलकर उन्हें करना चाहिए और उनमें गार्डों आदि की भरपूर व्यवस्था करनी चाहिए या रात की बसें बंद करवा देनी चाहिये। श्री रे और श्री रिबैरो के अनुसार उग्रवाद के विरुद्ध यह एक लम्बी लड़ाई है अतः एक लम्बी लड़ाई के रूप में ही इसे लड़ा जाना चाहिए—सारे पंजाब के लिए एक जैसे और दीर्घकालिक सुरक्षा प्रबन्ध किए जाने चाहिए और आजकल की तरह रह-रह कर ढील उनमें नहीं दी जानी चाहिए आवश्यकता हो तो और अधिक फोर्स केन्द्र से उन्हें मंगानी चाहिए ताकि कम से कम भविष्य में तो ऐसे दुःखदायी कांडों की पुनरावृत्ति को रोका जा सके। इसके साथ ही हम पंजाब और पड़ोसी प्रदेशों की जनता से कहेंगे कि वह धैर्य से काम लें और कोई ऐसा काम न करें जिससे स्थिति बिगड़े और उग्रवादियों के इरादे पूरे होने में सहायता मिले।

—श्री विजय जी सम्पादक 'पंजाब केसरी' हिन्दी दैनिक—नई दिल्ली

ओ३म् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि

[पृष्ठ ५ का शेष]

यदि पांव कीच में से उठा रहता है—तो बाल सुन्दर होती है—दौड़ने में भी कोई कष्ट नहीं होता। ठीक इसी भान्ति तपस्वी साधक इस संसार में रहते हुए भी थोड़ा उठा रहता है—अर्थात् प्रत्येक समय प्रभु की ओर ध्यान लगाये रहता है। कमल की तरह रहता तो संसार रूपी जल में है—परन्तु सदा जल से ऊपर ही रहता है। संसार की चकाचौंध में रहता हुआ भी अपने आपको अलग ही समझता है—उसका मन प्रेम से गाता है—

रहता हूं दुनियां में—मगर दुनिया दार नहीं हूं।
गुजरता हूं बाजार से लेकिन खरीदार नहीं हूं॥

प्रभु मुझे भी इस तपस्वी की भावना से ओत प्रोत कर दो॥

पांव की तरफ ध्यान आते ही साधक फिर सोचता है—प्रभु सत्य स्वरूप है—वही जीवन दाता है—सारे विश्व का नियंत्रक है। मेरे शरीर को भी नियन्त्रित करने वाला मेरा शिर, कण्ट्रोलर है। जब कण्ट्रोल रूम पवित्र होगा—शेष अंग स्वयमेव पवित्र हो जावेंगे। हम तुमसे प्रभु फिर प्रार्थना करते हैं—मेरे शिर को पवित्रता से भर दो। जब मैं इन पवित्र भावनाओं से पूर्ण हो जाऊंगा—तो मुझे अपने चारों तरफ भी आकाश में पवित्रता ही दिखाई देगी—मेरा सारा वातावरण पवित्र हो जावेगा—अपने चारों ओर प्यारे प्रभु की लीलाही दृष्टि गोचर होगी—

जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है।
कि हर शै में जलवा तेरा हूबहू है॥

इस सुन्दर मन्त्र के अन्दर अंगों के क्रम और शिर का दूसरी बार उल्लेख बड़ा महत्व पूर्ण है। किसी डाक्टर वैद्य के आते ही एक रोगी आता है और उससे कहता है "डाक्टर साहिब—मेरे शिर में दर्द है—डाक्टर ने उसे शिर दर्द कम करने की एक गोली दे दी। रोगी ने गोली खाई और थोड़ी देर बाद फिर आकर बोला—डाक्टर साहिब शिर की पीड़ा तो कम हो गई—परन्तु आखों मे कुछ विकार आ गया है। उसे फिर आंख के कष्ट की दवा दी गई—रोगी फिर वापस आकर कहता है, आंख तो ठीक हुई परन्तु गले मे कष्ट अधिक हो गया है—गला रुक गया है, जब गला ठीक करने की दवा दी गई तो दिल कहने लगा—रोगी घबराने लगा—दिल को तुरन्त सम्भाला गया—तो पेट मे भारीपन—गैस ने परेशान कर दिया और जब पेट को साफ किया गया—तो पांव लड़खड़ाने लगे। जल्दी से रोगी को दूसरी दवा दी गई—रोगी झट बोल पड़ा—डाक्टर साहिब पांव तो ठीक है—पर शिर मे फिर दर्द शुरु हो गई। अब चिकित्सक की समझ में आया—एक रोग का दवा कर अनेक रोग पैदा किये। अच्छा तो यह था कि रोग के मूल कारण को ढूंढकर उसे ही नष्ट कर दिया जाता—तो रोगी स्वस्थ हो जाता और कोई दूसरा कष्ट भी पैदा न होता॥

यह कहने का तात्पर्य यह है कि "मनएव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः"—मनके जीते जीत है—मनके हारे हार। शिर मनका केन्द्र है—अतः कुविचार आते ही उनको बाहिर फेंक दो—मनको सम्भाल लो—फिर आवे कोई कष्ट नहीं—'अपना मन चंगा तो कठौती में गंगा"। इसीलिये दोबारा शिर का वर्णन किया गया—अपने मन को शुद्ध निर्मल रखो—वही तुम्हें भक्ति मार्ग का यात्री बनाकर स्वर्ग में ले जावेगा—और तुम जगत् जननी मां की गोद में बैठकर अमृत पानकर सकोगे। फिर तुम कबीर के शब्दों में धीरे-धीरे परन्तु मधुर, स्वर से बोलोगे—

कबीरा मन निर्मल भया—जैसे गंगा नीर।
पाछे पाछे हर फिरे—कहत कबीर कबीर॥

आर्य समाज का इतिहास (सातवां भाग)

"आर्य समाज का इतिहास" का छठा भाग प्रकाशित हो गया है। और अब सातवें भाग की पाण्डुलिपि तैयार की जा रही है। इस सातवें (अन्तिम) भाग में अन्य विषयों के साथ-साथ निम्नलिखित का भी समावेश होगा—

(१) आर्य समाजों या आर्य नर-नारियों द्वारा संचालित विविध मठों, आश्रमों, साधना केन्द्रों, शोध संस्थानों, धर्मार्थ चिकित्सालयों तथा जनसेवा के लिए स्थापित संस्थाओं का परिचय। उनके कार्यकलाप का विवरण।

(२) आर्य युवक सभाओं युवा परिषदों एवं कुमार सभाओं का परिचय तथा उनके कार्यकलाप का विवरण।

(३) विविध प्रदेशों में स्थापित आर्य वीर दलों का इतिहास तथा उनका सेवा कार्य।

(४) आर्य संन्यासियों, प्रचारकों, विद्वानों, साहित्यकारों, भजनोपदेशकों, दानियों, कर्मठ कार्यकर्ताओं और आर्य समाज की विविध प्रकार की संस्थाओं के संस्थापकों, संचालकों तथा पदाधिकारियों का परिचय एवं उनके कार्य का विवरण।

(५) भारत के सुदूर व दुर्गम क्षेत्रों (पूर्वाञ्चल, उड़ीसा, झारखण्ड, केरल, तमिलनाडु, पार्वत्य प्रदेश आदि) में वैदिक धर्म के प्रचार का प्रयत्न एवं उनकी सफलता।

(६) विविध आर्य प्रतिनिधि सभाओं के गत ४० वर्षों (सन् १९४० के पश्चात् के काल) के कार्य का विवरण।

उपर्युक्त विषयों पर समुचित जानकारी भेजकर आर्य समाज के इस विस्तृत इतिहास को पूर्ण व निर्दोष बनाने में सहायता करें। साथ ही, अब तक प्रकाशित छह भागों में जो जो त्रुटियां रह गई हों या जो जानकारी देने से रह गई हो, उनसे भी अवगत कराने की कृपा करें।

हमारी इच्छा है कि आर्य समाज के विविध प्रकार के नेताओं व कार्यकर्ताओं के परिचय के साथ उनके चित्र भी दिये जा सकें। पर चित्रों के प्रकाशन में जो व्यय होता है, वह १०० रुपये प्रति चित्र के लगभग बैठता है। विश्वास है आर्य नर-नारी इस व्यय को वहन करने में भी संकोच नहीं करेंगे।

—सत्यकेतु विद्यालंकार
आर्य स्वाध्याय केन्द्र
ए-१/३२ सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली

लखनऊ में गुरुकुल की स्थापना

लखनऊ स्थित श्रीमद्दयानन्द बाल सदन मोतीनगर के अन्तर्गत ६ जुलाई, १९८७ को श्री मद्दयानन्द गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना की गयी है। जिसमें देश के असहाय बालकों को गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से शिक्षा प्रदान की जायेगी। इसके साथ ही ब्रह्मचारियों का वैदिक संस्कृति के अनुकूल जीवन बनाने का प्रयास किया जायेगा।

हमें पूर्ण विश्वास है कि समस्त देश प्रेमी उदार-दानी महानुभाव अपना अनन्य सहयोग देकर अपनी संस्था को अभ्युन्नत करेंगे ताकि संस्था राष्ट्र को चरित्रवान् वैदिक विद्वान्, सुसभ्य नागरिक समर्पित करने में समर्थ हो सकें।

आचार्य वेद व्रत अवस्थी
कुलपति

अर्जुन देव माहना
प्रधान

आर्य जगत

शुभ विवाह

(१)

—आर्य समाज पुरवा-उन्नाव के भूतपूर्व मन्त्री एवं वर्तमान वरिष्ठ उप प्रधान डा० श्री बाबू लाल आर्य के सुपुत्र चि० चन्द्र प्रकाश आर्य का शुभ विवाह संस्कार हुसेनगंज लखनऊ निवासी श्री चिरंजी लाल की सुपुत्री आयु० सर्वेश कुमारी के साथ पूर्ण वैदिक रीति से दिनांक ७-६-८७ ई० को आचार्य शिवदास शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

(२)

—डा० ओमप्रकाश शर्मा ने अपनी पुत्री अलका शर्मा एम० ए० का विवाह कैप्टन ज्ञानेश कुमारजी के साथ ओम सदन बुलंद शहर में सम्पन्न कराया विवाह वैदिक पद्धति से श्री इन्द्रजीत जी शास्त्री ने कराया।

(३)

दिनांक १०-६-८७ को श्रीपुर निवासी श्री इन्द्रासन सिंह आर्य के द्वितीय सुपुत्र श्री जयप्रकाश आर्य का विवाह वैदिक विधि से जिला गोपालगंज के अन्तर्गत रधुआ ग्राम में रामचन्द्र सिंह क्रांतिकारी द्वारा सम्पन्न हुआ।

———

दिनांक १२-६-८७ को श्रीपुर निवासी श्री मंगलसिंह आर्य के द्वितीय सुपुत्र श्री लालबाबू आर्य का विवाह वैदिक विधिसे जिला पं० चम्पारन [बेतिया] के अन्तर्गत धुमनगर ग्राम में श्री रामचन्द्र सिंह क्रांतिकारी द्वारा सम्पन्न हुआ।

(४)

—आर्य समाज विष्णुगढ़ [फर्रुखाबाद] के सौजन्य से निम्नलिखित वैदिक विवाह संस्कार सम्पन्न हुये जिससे समाज को यथा शक्ति दान प्राप्त हुआ। श्री मंगूलाल सुपुत्री धनदेवी सत्यार्थ भूषण का ५-६-८७ विसुनगढ़ श्री राधाकृष्ण की सुपुत्री शकुन्तला सत्यार्थ भूषण रसुआ १२-६-८७ श्री सुल्तानसिंह की सुपुत्री रमादेवी कुशलपुर १०-६-८७श्री रामनरेश की सुपुत्री राजेश्वरीदेवी बहादुरपुर१८-६-८७।

श्रीपातीराम की सुपुत्री सरलादेवी सत्यार्थ भूषण [बहिन उपमन्त्री गिरीश चन्द्र आर्य बहादुरपुर २२-६-८७ पौरोहित्य प्रधान बालक राम आर्य पथिक एवं श्री वृषभानुदेव पुस्तकाध्यक्ष द्वारा हुआ।

उत्सव सम्पन्न

दिनांक १९, २०। २१ जून १९८७ को आर्य समाज गोठना का वार्षिकोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

(२)

आर्य समाज भीकमपुर जैनी जनपद बदायूं का सातवां विशाल आर्य सम्मेलन दिनांक ८, ९, १० जून ८७ को बड़ी धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। शोभा यात्रा दिनांक ८ जून को अपार जन समूह के साथ निकट के ग्रामों में भी निकाली गई।

—दयाशंकर आर्य प्रचार मन्त्री

शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद)के पावन प्रांगण में दिनांक ७ जून से १९ जून ८७ तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का अति हर्षोल्लास के साथ समायोजन किया गया।

शिविर काल में श्री ब्र० म सुरेन्द्र सिंह श्रीआर्य "आजाद" द्वारा आर्य वीरों को अनुशासित रहने की शिक्षा तथा योगासन प्राणायाम एवं शारीरिक व्यायाम आदि का शिक्षण प्रदान किया गया।

श्रीयुत बाल दिवाकर जी हंस (प्रधान सञ्चालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल) दिल्ली तथा श्री डा० बाल कृष्ण जी आर्य प्रांतीय सञ्चालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल, बिन्दकी (फतेहपुर) के आशीर्वादात्मक सुमधुर वचनों द्वारा शिविर का समापन किया गया। कुलपति

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर

पोस्ट मंझना बन-फर्रुखाबाद (उ० प्र०) २०७५०४

विष्णुदेव पौद्दार दिवंगत

आगरा निवासी महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त तथा वैदिक सिद्धांतों के प्रति दृढ़ आस्था रखने वाले श्री विष्णुदेव जी पौद्दार ने आर्य-साहित्य के प्रकाशन के लिये नब्बे हजार रुपये आर्य साहित्य-प्रचार ट्रस्ट, ४५५ खारी-बावली, दिल्ली-६ को मई ८७ के अन्तिम सप्ताह में दान दिये थे।

श्री पौद्दार जी का एक सप्ताह के पश्चात दि० ६ जून ८७ को आकस्मिक निधन हो गया।

हम परम-पिता-परमात्मा को साक्षी मानकर दिवंगत आत्मा की श्रेष्ठ भावनाओं के अनुरूप ही आर्य साहित्य का प्रकाशन करते रहेंगे, यह प्रतिज्ञा करते हैं।

—आर्यजन एवं ट्रस्ट परिवार

४५५, खारी बावली दिल्ली-६

आर्य समाज द्वारा "मेधावी"

आर्य समाज पिथौरागढ़ द्वारा उत्तर प्रदेश इन्टर परीक्षा-१९८७ की गुणांक सूची के निम्नांकित छात्र-छात्राओं को पुरस्कार सहित मेधावी-प्रमाणपत्र भेजे गये—

१—सिद्धार्थ पाण्डे, एस० के० पी० इन्टर कालेज इलाहाबाद।
२—अमित अग्रवाल, राजकीय इन्टर कालेज बिजनौर।
३—विश्वेश चन्द्र श्रीवास्तव, डी०ए०वी० इन्टर कालेज आजमगढ़।
४—मनीष माहेश्वरी, सहारनपुर।
५—कु० अंबनि, एस० के० इन्टर कालेज हापुड़ [गाजियाबाद]।
६—कु० सीमा त्यागी, मेरठ।

—गुरुकुलानन्द सरस्वती कब्बाहारी

आर्य समाज पिथौरागढ़ [उ० प्र०]

पं० ज्ञानेन्द्र शास्त्री, स्वास्थ्य-यज्ञ

आर्य समाज मन्दिर पिथौरागढ़ में रविवार २१ जून ११८७ को पं० ज्ञानेन्द्र शास्त्री, जो बरेली में अस्वस्थ चल रहे हैं, हेतु 'स्वास्थ्य-यज्ञ" सम्पन्न किया गया। पं०ज्ञानेन्द्रजी प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् हैं तथा पं० लक्ष्मण कुमार जी शास्त्री (प्रधान—आर्य समाज सीसामऊ कानपुर) के समधी हैं। स्वामी गुरुकुलानन्द कब्बाहारी ने स्वास्थ्य—लाभ हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

—लक्ष्मीचन्द्र मित्तल मन्त्री

आर्य समाज पिथौरागढ़ (उ० प्र०)

घासीराम प्रकाशन विभाग, पुस्तक विक्री की सूची

नाम पुस्तक	मूल्य	नाम पुस्तक	मूल्य
सत्यार्थ प्रकाश अजिल्द	१०-००	कुर्बानी कुरान के विरुद्ध	१.००
" " उर्दू	१२-००	ऋग्वेद रहस्य	५-४०
" " अंग्रेजी	४०-००	आर्यसमाज और अस्पृश्यता	
ऋग्वेद भाष्य भूमिका	१२-००	निवारण	००-५०
मृत्यु और परलोक	४-००	जैनमत दर्पण	००-२०
आत्म दर्शन	१०-००	लघु सत्यार्थप्रकाश भाग २	००-४०
कर्तव्य दर्पण	४-००	" " भाग ३	००-४०
मांसाहार घोर पाप	१-५०	मेहरे बाबा मत दर्पण	००-१०
गो करुणा निधि	००-३०	इस्लाम और आ०स० उर्दू	२-००
नित्य कर्म विधि	१६-००	आजीवन स्वस्थ रहने की	
आर्य पर्व पद्धति	९-००	कला	१०-००
शराब बन्दी आवश्यक		धर्मसूत्र	१०-००
क्यों है ?	००-२५	कलम नहीं बेचेंगे	४०-००
क्रान्ति	६-००	इस्लाम में नारी	१-००
वेद और कुरान	६-००	उपनिषद ऐतरेयोपनिषद	
(तुलनात्मक अध्ययन)		कठोपनिषद	२-५०
इस्लाम क्यो छोड़ा	२-००	प्रश्नोपनिषद	१-५०
यज्ञ पर्व सुधा	२-५०	तैत्तिरीयोपनिषद	२-५०
श्रीमद भगवतगीता	८-००	केनोपनिषद	१-५०
देव यज्ञ	००-६०	मुण्डकोपनिषद	२-००
कायाकल्प	५-००	पूजा किसकी	००-५०
सत्यार्थप्रकाश उपदेशामृत	४-००	ढोल की पोल	००-६०
शान्ति सुधा	१-५०	जानिये आर्यसमाज क्या है	००-२०
वेदार्थ कल्पद्रुम	६०-००	वैदिक प्रश्नोत्तरी	००-२०
आर्यन मेनिफैस्टो	६-००	अपने को पहचान	५-००
राष्ट्र सुरक्षा और वेद	००-१५	परम धाम के पथिक	५-००
वेद ज्ञान पीयूष	१२-००	योग यात्रिक	३-५०
हिन्दू राज्य	२०-००	आराध्यदेव ध्यान तेरी	
आर्य प्रतिनिधि सभा का		ओर (भजनावली)	३-००
इतिहास हीरक जयन्ती	२-५०	सुगृहस्थ आनन्दप्रस्थ	२-००

'धर्म शिक्षा' विक्री हेतु पुस्तकों की सूची

नैतिक शिक्षा भाग १	१-५०	नैतिक शिक्षा भाग ७	३-००
नैतिक शिक्षा भाग २	२-००	धर्म शिक्षा भाग ८	३-००
नैतिक शिक्षा भाग ३	२-००	" " " ९	४-००
नैतिक शिक्षा भाग ४	२-००	" " " १०	३-००
नैतिक शिक्षा भाग ५	३-००	" " " ११	४-००
नैतिक शिक्षा भाग ६	३-००	" " " १२	३-५०

नोट—धर्म शिक्षा की पुस्तको पर १५ -/- कमीशन दिया जायगा अन्य पुस्तकों पर कमीशन नहीं दिया जायगा, पुस्तकें मंगाने हेतु अपना पता रेलवे स्टेशन पोस्ट आफिस का पता साफ-साफ लिखें तथा आधा धन अग्रिम भेजने की कृपा करें, पुस्तकें मंगाने पर रेल भाड़ा बिल्टी व्यय का समस्त खर्च क्रेता को देना होगा।

व्यवस्थापक

घासीराम प्रकाशन विभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क १५ जून १९८७ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८६ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

२५६८, २९३२, ३६५८, ४४६२, ४९४३, ४९५६, ५२६६, ६१५१, ८१५० ८५१७, ८६१४, ८७८३, ८७८७, ८८७९, ८९५७, ९१४९, ९१७१, ९१८०, ९१८२, ९४५८, ९४६४, ९४६५, १०१७८, १०१८०, ११२०९, ११२१०, ११६२४, १२६३७, १२२०९, १२२१३, १२२१४, १२६७६, १२६७९, १२६८०, १२६८३, १२९१२, १२९१३, १२९१८, १३१२२, १३१२८, १३१२९, १३४७९, १३४८२, १३४८३, १३४८५, १३४८६, १३८८३, १३८८४, १३८८५, १३८८६, १३८८८, १३८८९, १३८९०, १३८९१, १३८९२, १३८९३, १३८९५, १३८९६, १३८९७, १३८९८, १३८९९, १३९००, १३९०१, १३९०२, १३९०३, १३९०४, १३९०५, १३९०६, १३९०७, १३९०८, १३९०९, १३९१०, १३९११, १३९१२, १३९१३, १३९१४, १३९१५, १३९१६, १३९१७।

विनीत—

व्यवस्थापक

ईसाई महिला द्वारा वैदिक धर्म में प्रवेश

आर्यसमाज जामनगर (गुजरात) द्वारा दिनांक ७-६-८७ को एक ईसाई महिला को वैदिक विधि के अनुसार शुद्धि करके उनकी अपनी ही इच्छा से पुनः उनके मूल आर्य धर्म में दीक्षित किया गया।

आर्यमित्र साप्ताहिक
आर्यप्रतिनिधि-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६१
पंजीकरण सं० एल. डब्लू/एन. पी. ७६
श्रावण कृष्ण ६
रविवार, १९ जुलाई १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

हमारे पाठक क्या कहते हैं?

'आर्यमित्र' में तथा वर्तमान में आर्य समाज में जिन विचारों की गिरावट थी उन आर्य राष्ट्रवादी विचारों को आपने उभारा है, आर्य समाज जहां बलिदान मे आगे रहा आजादी के संघर्ष में अग्रणी रहा है वहा नेतृत्व के क्षेत्र में पिछड़ गया था। स्वामी श्रद्धानन्द के बाद आर्य राजनीति का प्रभावी नेता नहीं रहा। इसीलिए सारे आन्दोलन का श्रेय कांग्रेस के नेताओं को चला गया। गांधी की रामराज्य की कल्पनाओं तथा दयानन्द तथा आर्यसमाज की वैदिक साम्राज्य की आशाओं का स्वप्न हजारों कोस दूर हो गया 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' तथा आर्य राष्ट्र की मन्द ध्वनि आर्यमित्र के मुख से आपने ध्वनित करने की हिम्मत की है। महर्षि दयानन्द की आर्यो के सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य, बात को जो आर्यसमाज के हिम्मत हीन आर्यों ने दबा दिया था उसे फिर से आपने रखा हैं प्रभु की इच्छाओं को, सत कार्य को न्याय को, अभाव असमानता और अन्याय को दुतकारने का प्रयत्न किया है हम चाहते हैं आप इस विचार के लोगों की जानकारी लें और आर्यसमाज में एक उच्चस्तरीय मंच बनाकर जनमत तैयार करें। आर्य समाज की गिरावट का एक यह भी कारण है कि तात्कालिक जन आवश्यकताओ पर आन्दोलित न हों हम आशा करते हैं कि आप कार्य को आगे बढ़ायेंगे। धन्यवाद!

आपका—
हरदेवसिंह शास्त्री
हकीमपुर, भुनसटी, मथुरा

अमृत वर्षा

संस्कृत विद्या और आर्यावर्त

जितनी विद्या भूगोल में फैली है, वह सब आर्यावर्त्त देश से मिश्रवालों, उनसे यूनानी, उनसे रोम और उनसे यूरोप देश में, उनसे अमेरिका आदि देशों में फैली है। अब तक जितना प्रचार संस्कृत विद्या का आर्य्यावर्त्त देश में है उतना अन्य किसी देश मे नहीं। जो लोग कहते हैं कि जर्मनी देश में संस्कृत मोक्षमूलर साहब [illegible] उतना [illegible] नहीं पढ़ा, यह बात कहने मात्र की है क्योंकि 'यस्मिन्देशे द्रुमो नास्ति तत्रैरण्डोऽपि द्रुमायते' अर्थात् जिस देश में कोई वृक्ष नहीं होता, उस देश में एरंड ही को बड़ा वृक्ष मान लेते हैं। वैसे ही यूरोप [illegible] संस्कृत [illegible] का प्रचार न होने से जर्मन लोगो और मोक्षमूलर [illegible] सा पढ़ा वहीं उस देश के लिए अधिक है। परन्तु आर्य्यावर्त्त देश की ओर देखें तो उनकी बहुत न्यून गणना है क्योंकि मैंने जर्मनी देश निवासी के एक 'प्रिंसिपल' के पत्र से जाना कि जर्मनी देश मे संस्कृत चिट्ठी का अर्थ करने वाले भी बहुत कम हैं और मोक्षमूलर साहब के संस्कृत साहित्य और थोड़ी सी वेद की व्याख्या देखकर मुझको विदित होता है कि मोक्षमूलर ने [illegible] आर्यावर्त्तीय लोगों की की हुई टीका देखकर कुछ कुछ यथा तथा लिखा है जैसा कि 'युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि' इस मन्त्र का अर्थ घोड़ा किया है। इससे तो सायणाचार्य ने सूर्य अर्थ किया है सो अच्छा है। परन्तु इसका ठीक अर्थ परमात्मा है, ऐसा मेरी बनाई 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में देख लीजिये। इसमें इस मन्त्र का यथार्थ अर्थ किया है। इतने से जान लीजिए कि जर्मनी देश और मोक्षमूलर में संस्कृत विद्या का कितना पांडित्य है।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

वार्षिक चित्र भेजिये

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्बन्धित समस्त आर्य समाजों, जिला उपसभाओं से अनुरोध है कि वर्ष ८६ के वार्षिक चित्र भर कर ३१ जोलाई ८७ तक सभा प्राप्तव्य धन सहित भेजने की कृपा करें।

जिन समाजों को चित्र न मिले हों, पत्र लिखकर कार्यालय से मंगा लें।

भवदीय—
मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

—नेपाल के वयोवृद्ध भजनोपदेशक श्री सुबंश राय जी की अकस्मात मृत्यु की खबर सुनकर मैं हताश हो गया। मैंने उनके साथ नेपाल के तराई क्षेत्रों में घूम-घूम कर प्रचार किया है। वे बड़े ही लगनशील एवं स्वामी दयानन्द के सन्देश को घर-घर गांव-गांव में पहुंचाने वाले थे। जिस समय नेपाल में आर्यसमाज पर प्रतिबन्ध था उस समय में भी उनका प्रचार चलता रहा। प्रभु उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—रामचन्द्रसिंह क्रान्तिकारी, नेपाल

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७

मेरठ दंगा पीड़ितो के सहायतार्थ लगभग ५० हजार रु० का सभा प्रधानजी द्वारा व्यय

सहायता कार्य लगातार चल रहा है आर्य जगत के दानियो से आर्थिक सहायता की अपील

मेरठ नगर में अब तक हुए साम्प्रदायिक दगो मे इधर जो सबसे भीषण हिंसा उत्पात हुआ है, उसके फलस्वरूप जहा अपार धन सम्पदा का नाश हुआ है, वहीं सैकड़ो व्यक्तियो की निमम हत्या तथा मकानो और दुकानों के जलाये जाने से हजारो व्यक्ति बेघरबार और बेरोजगार भी हो गये हैं। ऐसे असहाय व्यक्तियों की सहायतार्थ आर्य समाज के अतिरिक्त किसी भी अन्य धार्मिक और सामाजिक संस्था ने किसी भी प्रकार का कोई योगदान नहीं किया।

आर्यसमाज मेरठ के कार्यकर्त्ताओ ने आर्य प्रतिनिधि सभा के सभा प्रधान जी के नेतृत्व मे इस सहायता कार्य को हाथ मे लिया और दीन असहाय व्यक्तियो के लिए खान-पान के सारे साधन जुटाए। अभी तक १६६ आटे की बोरिया (एक बोरी की २००) लागत से ३३,२० रु० का व्यय) तथा इसके अतिरिक्त चावल, दाल, आलू, साबुन इत्यादि अन्य आवश्यक वस्तुओ पर आर्यसमाज मेरठ शहर के माध्यम से लगभग ५० ००० रुपये का व्यय हो चुका है।

चूंकि मेरठ नगर मे अभी पूर्ण शान्ति स्थापित नहीं हुई और साम्प्रदायिक हिंसा के शिकार परिवार अभी भी जीवन मे अव्यवस्थित हैं, अतएव ऐसा निश्चय किया गया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा मे साम्प्रदायिक हिंसा से पीड़ित व्यक्तियो की सहायता के निमित्त 'साम्प्रदायिक दंगा पीड़ित सहायता कोष' खोला जाए और इसमे प्राप्त राशि से जहा जहा जब-जब आवश्यकता पड़े, पीड़ितों की सहायता अनवरत रूप से की जाय।

अतएव आर्यजगत के समस्त सहृदय महानुभावो से हमारा अनुरोध है कि वे इस सहायता-कोष मे जी खोलकर दान दें। दान मनी आर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा क्रास चैक द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के पते से कृपया भेजें। दानदाताओ के नाम तथा दान की राशि आर्यमित्र मे प्रकाशित की जाएगी।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

हमारे नव निर्वाचित राष्ट्रपति

भारत महासंघ के ८वें राष्ट्रपति के रूप मे महामहिम श्री आर० वेंकटरामन को भारी बहुमत से चुनकर राष्ट्र की सम्प्रभुता की रक्षा का गुरुतर भार राष्ट्रवासियो ने सौंपा है। श्री रामन अतिशय चिन्तनशील विचारक व विद्वान हैं वे अपने पद के भार का निष्ठापूर्वक वहन करने मे सक्षम हो, संविधान के प्रबल संरक्षक बनने मे समर्थ हो यही प्रभु से कामना है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की ओर से हमारी हार्दिक शुभ कामनायें।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लख

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वार्षिक निर्वाचन अतिशीघ्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वार्षिक साधारण अधिवेशन एवं निर्वाचन कतिपय लोगो द्वारा हाईकोर्ट मे याचिका देने के कारण अभी तक नहीं हो सका है। हाईकोर्ट ने याचिका अस्वीकार कर दी है।

अब सभा के वृहदाधिवेशन व वार्षिक निर्वाचन की शीघ्र ही तिथिया सुनिश्चित हो रही हैं।

जिन समाजो ने अपने प्रतिनिधि विवरण अभी तक न भेजे हो वे अविलम्ब भेजने की कृपा करें।

तिथियो की सूचना अतिशीघ्र प्रकाशित की जायेगी।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	११)
विदेश में	१५ पौंड

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी
सम्पादक मण्डल—
'विक्रमादित्य वसन्त', प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए., आचार्य देवव्रत शास्त्री 'वेद वारिधि'

वर्ष ६०
अंक २६

है [illegible] अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

—[illegible] सम्वत् २०४४ रविवार २६ जुलाई १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

आतंकवाद की पराकाष्ठा

इसे कुचलने के लिये दृढ़ कदम की अपेक्षा

हमारे देश में आतंकवाद सुरसा की तरह बढ़ता ही चला जा रहा है शासन जितना ही उस पर नियन्त्रण करने के उपाय ढूंढ़ता है उतना ही वह भयंकरता को पकड़ता जा रहा है। आज देश के प्रायः सभी सीमावर्ती क्षेत्रों में किसी न किसी बहाने को लेकर आतंकवादी तत्त्व सक्रिय हैं। मूल रूप में उन सबके पीछे राजनीति के खिलाड़ियों का ही हाथ येन केनापि प्रकारेण है।

पञ्जाब पिछले कई वर्षों से आतंकवाद से पीड़ित है। वहां २-४ हत्यायें सामान्य सी बात बन गयी है इसी आतंकवादी शृंखला में अभी गत ६ व ७ जुलाई के २४ घण्टों में विभिन्न स्थानों लालडू व हिसार में सबसे भयंकर लोम हर्षक निर्मम हत्या काण्ड हुआ जिसमें आतंकवादियों ने बसों में बैठे ७६ बस यात्रियों स्त्रियों बच्चों व पुरुषों को गोलियों से निर्ममता से भून कर मार डाला। ३२ यात्री अस्पताल में गम्भीर अवस्था में भर्ती हैं। अपराधी हत्या करके निर्द्वन्द्वता से भाग गये पकड़ नहीं जा सके। प्रशासन सजग हुआ। चौकसी बढ़ गई परन्तु दूसरे दिन पुनः उन्होंने ७ अन्य व्यक्तियों की हत्यायें कर दीं व भागने में सफल रहे। फिर ८ जुलाई को एक भूतपूर्व मन्त्री सहित ८ की हत्यायें कर दीं। और भाग गये।

पञ्जाब के इस आतंकवाद की समाप्ति के लिये स्व० इन्दिरा गांधी ने अपना बलिदान भी दे दिया परन्तु उस पर अभी तक विजय नहीं प्राप्त की जा सकी। मैं इसे राजनीतिक हल ढूंढने की सरकारी भूल मानता हूं। राजनीतिक हल ढूंढने की प्रक्रियायें मन्दगति से चल रही हैं। आतंकवादी अपनी गतिविधियों में पूर्ण सक्रिय हैं। निर्द्वन्द्व हैं। हत्यायें करते हैं भाग जाते हैं। प्रशासन उन्हें पकड़ नहीं पाता। पुलिस महानिदेशक श्री रिबैरो ने बिल्कुल ही ठीक कहा है कि आतंकवाद ने बड़ी गहराई से पैर जमाये हैं। दृढ़ता से उन्हें उखाड़ना होगा।

सरकार निश्चय ही इस पर विचार रती होगी कि क्या कारण है इतनी चौकसी के बाद भी वह आतंकवादियों के हौसले पस्त करने में सफल क्यों नहीं है। वास्तव में कागजी चौकसी या भाषण बाजी [illegible] का समाधान नहीं इसके लिये कठोरता की अपेक्षा है।

आज केन्द्र सरकार के लिए यह एक प्रकार से चुनौती है कि वह आतंकवाद से देश को कैसे मुक्त करें। प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने बिल्कुल ठीक घोषणा की है कि बिना आतंकवाद को पूर्णतया समाप्त किये किसी भी प्रकार की वार्ता नहीं की जायेगी। उन्हें अपने इस कथन का सख्ती से पालन करना है।

[illegible] की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन रविवार दिनांक २-८-८७ को प्रातः १०-३० बजे नारायणस्वामी भवन [illegible] कार्यालय में होगा। विचारणीय विषयों की सूची [illegible] तथा सदस्यों को [illegible] दी गई है। [illegible] मनमोहन तिवारी [illegible]
[illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा, [illegible]

मैं इससे पूर्व [illegible] [illegible] कि किसी भी [illegible] होती है। सभी नागरिकों के लिये सभी प्रदेशों के लिये एक नियम एक आचार संहिता, एक व्यवस्था अनिवार्य होती है। किसी भी धर्म विशेष के लिए किसी विशेष प्रकार की छूट या प्रति अन्ध, उदार या अनुदार दृष्टि कोण नहीं होना चाहिए सरकार के लिए देश के सम्पूर्ण नागरिक एक ही नियम व व्यवस्था में चलने वाले होने चाहिए नियम विरुद्ध आचरण करने वालों के प्रति कठोरता से दण्ड व्यवस्था की जानी चाहिये। धर्म जाति वर्ग के नाम पर किसी भी प्रकार की छूट अन्ततः हानिकर ही होगी।

पञ्जाब में पवित्र स्वर्ण मन्दिर आतंकवाद का केन्द्र बनकर अपवित्र हो गया है। वहां उसके परिसर में आतंकवादी पापी कुचाली पूर्ण आश्रय पाते हैं। पन्थ के प्रमुख ग्रन्थी आतंकवादियों से भय खाते हैं या फिर उन्हीं के अंग हैं। इसलिये वे अकाल तख्त से उनकी निन्दा नहीं करते। उन्हें वहां शरण दी जाती है।

स्व० इन्दिरा जी ने अपना बलिदान अवश्य दे दिया था परन्तु उस पवित्र धर्म स्थल की अपवित्रता समाप्त कर दी थी वहां से एक एक आतंकवादी निकाल बाहर किये गये थे। परन्तु आज फिर राजनीतिक हल ढूंढते ढूंढते स्वर्ण मन्दिर सहित अनेकों गुरुद्वारों की स्थिति वैसी ही हो गई है। वे पापियों देशद्रोहियों के अड्डे बन गये हैं। वहां अराजकतत्व निश्चिन्तता से आश्रय लेते देशघाती योजनायें बनाते व उनका कार्यान्वयन करते हैं।

पञ्जाब की पुलिस बेदाग नहीं है उसमें बहुत से बहुरे-आतंकवादियों के पूर्ण सहायक हैं इसलिये स्पष्ट सरकारी योजनायें आतंकवादियों तक पहले ही पहुंच जाती हैं। वे अपनी योजना पूरी कर लेते हैं सरकार उन्हें गिरफ्तार करने में असमर्थ रहती है।

अनेकों बार उनकी अभद्र कार्यवाहियों के प्रतिशोध स्वरूप अन्य स्थानों पर दूसरे वर्ग के निरपराध लोग मारे जाते, सम्पत्ति जलाई जाती नष्ट की जाती है। यह सब राष्ट्र की भयंकर क्षति है। प्रति-शोधात्मक कार्यवाहियां वैसी ही बुरी हैं जैसी आतंकवादी कार्यवाहियां। इसलिये सामान्य नागरिक का धर्म बनता है कि ऐसी उत्तेजना मूलक कार्यवाहियों, जिनके पीछे राष्ट्र को ध्वस्त करना ही है, के समय विवेक का प्रयोग करें कोई भी ऐसी कार्यवाही न करें—जिससे जन धन की हानि हो और देश की स्वतन्त्रता सुख शान्ति खतरे में पड़े।

मेरी दृढ़ राय बनती जा रही है कि पंजाब समस्या का एक मात्र उपाय है कि पंजाब को कुछ समय के लिये पूर्णतया सेना के सुपुर्द कर दिया जावे, उसकी सभी सीमाओं को सख्ती से बन्द कर दिया जावे। सर्वप्रथम वहां के सभी धर्म स्थलों की सख्ती से तलाशी ली जावे और आतंकवादियों को गिरफ्तार किया जावे फिर ऐसी व्यवस्था की जावे कि अराजकतत्व पुनः उन पवित्र स्थलों में पनाह न पा सकें। प्रदेश के अन्य सम्बन्धित इलाकों की भी सख्ती से तलाशी ली जावे। [illegible]

(शेष पृष्ठ ५ पर)

वेद विद्या विहीन होने से असहाय अबलाओं के दो दृश्य

(श्री सोती वीरेन्द्र चन्द्र कमला कुटीर ५६५ सुभाष नगर इलाहाबाद)

[१] पत्नी और नीलाम

इंगलैंड में आठवीं शताब्दी के पूर्व एक, अजीब एवं अविश्वसनीय-सी परन्तु सत्य, प्रथा प्रचलित थी। वह यह कि पत्नी से सबंध विच्छेद करने के लिये तलाक देने के बजाय उसे बीच बाजार मे नीलाम कर सबसे अधिक बोली बोलने वाले के हाथ बेच दिया जाता था। अंग्रेजी के एक दैनिक समाचार पत्र के दिनांक १६ सितम्बर, १९८४ के रविवार अंक में एक लघु लेख के द्वारा इस तथ्य का रहस्योद्घाटन किया गया है। उसके अनुसार इंगलैंड में ऐंग्लो सक्सेन जाति मे सदियों तक यह आम आस्था थी कि पति अपनी पत्नी को वैध रूप से खुले आम नीलाम मे बेच सकता था।

इसी घटना को लेकर सुविख्यात अंगरेजी उपन्यासकार थामस हार्डी ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास, "द मेयर आफ केस्टर ब्रिज" की विषय-वस्तु का आधार बनाया था। इसपर उस समय बहुत हाय-हुल्ला हुआ था। परन्तु इस सबंध मे अनेक अभिलेख प्रस्तुत किए गए जिनसे स्पष्ट होता था कि इस तरह के रिवाज का वहा आम चलन था। नीलाम द्वारा पत्नी की बिक्री के संबंध मे अनेक आखो देखी घटनाएं थीं। इसके प्रमाण स्वरूप एसेक्स के एक समाचार पत्र के सन् १८२४ के एक अंक से एक पत्नी के बेचे जाने के संबंध में यह उद्धरण दिया गया है।

"विगत शनिवार को एक निर्धन किन्तु निष्ठावान एवं परिश्रमी श्रमिक ओंगर स्थान के बाजार मे अपनी धर्म पत्नी को लाया और उसे बेचने के लिये खड़ा कर दिया। उसे दस शिलिंग मे क्रय कर लिया गया। क्रय करने वाले ने इस धन राशि को तुरन्त भुगतान कर दिया और सौदे मे उस निर्बल:दुर्बल स्त्री को पा लिया। तत्पश्चात् सुरापान द्वारा आनन्दित होकर ये दोनों उस नगर से अकर्मण्य एवं अशिष्ट व्यक्तियो की बीच पुकारें करती हुई भीड़ के बीच से चले गये जो कि इस अशोभनीय दृश्य को वहा देखने के लिये एकत्रित हुई थी।"

कहा गया है कि इस सम्बन्ध में प्रक्रिया यह थी कि पति अपनी पत्नी को चटक-मटक के साथ किसी पेंट या पूरे बाजार के दिन उसके गले मे चारों ओर एक फीता डाल कर लाता। वहाँ उसे एक पशु के छल्ले से बांध दिया जाता और बाजार के चौराहे पर बेचने के लिये खड़ी कर दिया जाता था। पति अपनी ऊंची आवाज से बोली बोलने वालो का आवाहन करता था। बोली बोलने की शुरुआत पास में खड़े हुए आदमी द्वारा नाम-मात्र की बोली बोल कर होती थी। फिर पति एवं बोली बोलने वाले व्यक्ति, अत्यन्त विनयपूर्ण वाणी मे सौदा करने लगते थे। जब सबसे अधिक बोली लग जाती तब बिक्री हेतु एक बिल तैयार कर सौदे को अंतिम रूप देने की औपचारिकता पूरी कर ली जाती थी। इसके उपरान्त मोल लेने वाला व्यक्ति बड़े गर्व के साथ उस स्त्री का पल्ला पकड़कर उस बाजार मे घुमाता और फिर अपने घर ले जाता। विधि अधिकारी एव मैजिस्ट्रेट इस प्रथा पर अपनी भौं चढ़ाते रह जाते थे। वह उसे रोकने का प्रयास करते थे परन्तु असफल रहते थे।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भारत पर जब इंगलैण्ड का राज्य था तब अंग्रेज भारतको स्वतन्त्रता प्राप्त करने के अनुपयुक्त समझते थे और भारत को सभ्य बनाने के लिए अपना "व्हाइट मेन्स बर्डन"-का उत्तर-दयित्व बताते थे।

अतएव स्त्रियों के संबंध में वेदों में, जो भारतीय संस्कृति के आदि स्त्रोत हैं, क्या भाव प्रतिपादित किये गए हैं इस संदर्भ में यहा संक्षेप में वर्णन कर देना अभीष्ट है।

अथर्ववेद निम्नलिखित ऋचा में स्त्रियों को शुद्ध, पवित्र एवं पूज्यनीया उद्घोषित करता है।

शुद्धाःपूता योषितो यज्ञिया इमाः ब्राह्मणां

अथर्ववेद ११/१/१७ तथा २७

इस सम्बन्ध में यजुर्वेद की दिव्य वाणी भी दृष्टव्य हैं:

इड रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योते दिते सरस्वति महि विश्रुति। एता ते अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृत ब्रूतात ॥

यजुर्वेद ८/४३

स्त्री को सम्बोधित करके कहा गया है कि हे स्त्री! तू स्तुति योग्य, उत्तमवाणी युक्ता, रमणीया, कमनीय, चन्द्र के समान, आह्लाद देने वाली, श्रेष्ठ शील से प्रकाशमान अर्थात् ज्योति के समान अज्ञानान्धकार को अपने दिव्यगुणो के प्रकाश से दूर करने वाली, दीनता एवं हीनता के भावो से रहित, परम्परा से प्राप्त उत्तम ज्ञान से युक्त विदुषी, महान उदार भावों से पूर्ण, विविध गुणो से प्रसिद्ध अथवा विविध विद्याओ का जिनसे श्रवण किया हुआ है तथा विविध विद्याओं मे प्रवीण ये तेरे नाम हैं। तिरस्कार करने के अयोग्य है जिसकी हिंसा करना कभी योग्य नहीं है। उत्तम गुणों के लिए मुझको उपदेश दिया करें।

दाम्पत्य सूत्र में बंधने वाले दम्पत्ति को वेद साम्राज्ञी संज्ञा देता है।

सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वां भव।

ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी उत देवृषु ॥

उपरोक्त विशेषण अत्यंत सम्मान सूचक हैं एवं नारी के संबंध में भारतीय आदर्श के द्योतक हैं। नारीत्व की निष्ठा और एकाग्र अर्पण से युक्त साध्वीपन भारतीय संस्कृति का एक मूलाधार है।

[२) स्त्री और सेना

प्राचीन काल में इंगलैण्ड पर पहले रोमन राजा राज्य करते थे। तदुपरांत सन् १०६६ में फ्रांस के उत्तरी भाग--नारमैंडी के नार्मन नरेश का इंगलैंड के तत्कालीन शासक हेराल्ड को युद्ध मे हरा कर राज्य हो गया। ग्यारहवीं शताब्दी मे इंगलैण्ड पर विजय पाने वाला प्रख्यात नार्मन सम्राट विलियम द कान्करर, नार्मंडी के ड्यूक राबर्ट से एक साधारण मोची की लड़की की अवैध संतान था। ड्यूक राबर्ट के कोई बच्चा न था। अतएव मरते समय उसने अपना ड्यूक का खिताब विलियम को प्रदान कर दिया था। ड्यूक बनने के बाद विलियम अपने बाहुबलसे इंगलैण्डका राजा बन बैठा। विलियम, जो "द कान्करर", की उपाधि से विभूषित किया जाता है, ने नैतिकता को नितान्त उपेक्षा कर अपने सैनिको के लिए क्या व्यवस्था कर रखी थी इसकी झलक नीचे उद्धृत विवरण से मिलती है--

"ग्यारहवीं सदी के इंगलैंड मे "बास्टर्ड" यानी अवैध संतान होना बहुत ज्यादा बुरी बात नहीं मानी जाती थी। अंगरेजी के बास्टर्ड शब्द की व्युत्पत्ति फ्रेंच "बास्त"से मानी जाती है, जिसका अर्थ होता है--घोड़े की काठी। बास्टर्ड का अर्थ हुआ 'काठी का बेटा।"

"विलियम जब इंगलैंड पर विजय प्राप्त कर रहा था तो उसके

(शेष पृष्ठ ६ पर)

महिला मण्डल

सावन गीतों में—

आर्य नारी – गौरव

[डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी, प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज, बरेली]

आर्य नारी अपनी चरित्र निष्ठा मर्यादा, एवं तेजस्विता के कारण विश्व मे अतुलनीय है। उसके शौर्य, पराक्रम चरित्र एवं वैदुष्य की गाथा विश्व में सुप्रसिद्ध है। कवि उसको मर्यादा की प्रशंसा करते-करते नहीं थकते—

"विश्व का इतिहास जिसका जोड़ प्रस्तुत कर न पाया,
श्रेष्ठ हिन्दू-राष्ट्र मे जो ज्योति बनकर जगमगाया
पूत जौहर यज्ञ जिससे, हिन्दुओ ने प्राण पाये,
विश्व जिसको देखता है आज भी आखें उठाये
पद्मिनी के उस महाप्रस्थान की सौगन्ध ओ मां
हम बढ़ेंगे राष्ट्र के सम्मान की सौगन्ध, ओ मां।।"

भारतीय नारी ने घोर यन्त्रणाओं और विषमताओ का सामना करते हुये भी अपने चरित्र पर आंच नहीं आने दी। श्रावण के गीतो मे भी उसके शौर्य की गाथायें संचित हैं। "तम्बुआ में दे लई आग" नामक गीत आज भी नारियां झूले पर गाती हैं।

हरदोई के ठाकुर योगेन्द्र प्रतापसिंह की रियासत लखनऊ के नवाबो के आधीन थी। उनकी बेटी सुखदा के सौन्दर्य की प्रशंसा सुन कर लखनऊ नवाबो के सूबेदार ने ठाकुर साहब के पास सन्देश भिजवाया कि वे अपनी बेटी का डोला सूबेदार के लिए भेज दें, अन्यथा उनकी रियासत जब्त हो जायेगी। सन्देश सुनकर ठाकुर साहब स्तम्भित रह गए। समीप मे खड़ी बेटी सुखदा ने जब पिता से उद्विग्नता का कारण पूछा, तो पिता ने सब कुछ स्पष्ट बताते हुए कहा कि चाहे कुछ हो जावे, मैं नवाब की इच्छानुसार पाप नहीं कर सकता। किन्तु बेटी सुखदा ने प्रतिवाद करते हुए कहा—"मुझे हर स्थिति मे सूबेदार के पास जाना है।" ठाकुर साहब ने तब अपनी बुद्धिमती कन्या का डोला सूबेदार के समीप भिजवाया, जिससे उसकी प्रसन्नता का पारावार न रहा।

बेटी सुखदा ने स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था सूबेदार के लिए करवाई। साथ-साथ भोजन करने के बाद शराब की बोतलें उसे पिलाईं। जब सूबेदार नशे मे धुत्त हो गया, तो छिपी हुई दीपशलाका से उसके कपड़ों एवं अन्य वस्त्रों में आग लगा दी। तम्बू मे से उठती ज्वालायें देखकर, जब अनुचरगण बुझाने पहुंचे तो दोनों को ही तम्बू सहित भस्म पाया गया। इसी कारण 'तम्बुआ में दै लई आग।', नामक लोक गीत भारतीय नारी की विलक्षण बुद्धि एवं पराक्रम को आज भी याद दिलाता है। चरित्र के महत्व को वेद शास्त्रों मे सर्वत्र प्रतिष्ठा मिली है। "सत्यं ब्रूयात्" "मनुर्भव", "मन्त्र श्रुत्यं चरामसि" "आचारः परमोधर्मः" आदि सुवाक्य—आचार-गरिमा के ही सूचक हैं जिसे आर्य नारी भलीभांति जानती है। पर पुरुष की कुदृष्टि को वह अपमान समझकर नहीं सह पाती। इसी कारण काव्य मे उल्लिखित है—

'ज्वालाओं में कूद पड़ी हंसते-हंसते हिन्दू नारी,
अग्नि शिखायें उसे लगीं गंगा-जमुनी लहरें प्यारी'
इसी प्रकार 'निबुआ तले डोला रख दे मुसाफिर,
कि आई सावन की बहार रे।'
'अब की बरस फिर से भइया को बाबुल,
सावन में लेओ बिलाय रे'

आदि लोक गीत भारतीय नारी के पतिव्रत, एवं कर्त्तव्यपरायणता के सूचक हैं। अपने घर की मान-मर्यादा रखकर वधू सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त करती है। नारी जहां इतनी महान है, वहां हो यदि उसकी वह महानता कालुष्य और क्षुद्रताओं से आवृत्त हो जाते है तब नारी ही नारी की शत्रु बनकर अपने परिवेश को अशान्ति से भर देती है। कुत्र बुद्धि से समन्वित होकर, वह छिद्रान्वेषण प्रारम्भ कर देती है, किन्तु स्वयं की सीमाओ को नहीं देखती। ऐसी नारी यदि दुर्भाग्यवश अधिकार प्राप्त कर ले, तब वह निरंकुशवाद को प्रश्रय देकर अपने स्वयं समान घर को नारकीय बना देती है। जब उसकी दुर्नीतियां सफल नहीं हो पातीं, तब वह समाज से अपनी विवशता की शिकायत कर कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाती। सद्व्यवहार, मानवता, सरलता एवं विश्वास आदि जो चरित्र के अन्तर्गत आते हैं, जिन्हें आकार देना प्रत्येक आर्य नारी का कर्तव्य है।

वैदिक धर्म मे नारी और पुरुष दोनों का ही समान महत्व है। पुरुष को यदि आचार्य बनने का अधिकार है, तो 'नारी' भी आचार्या बन सकती है। किन्तु मुसलमानों मे नारी 'इमाम' नहीं बन सकती, न ही ईसाइयो मे वह बपतिस्मा करा सकती। आर्य संस्कृति में नारी 'दुर्गा' (शक्ति) का प्रतीक है—

'भद्रा वधूर्भवति वस्तुपेशाः' ऋ० १०-२७-१२

अर्थात्—सुलक्षण तथा महागुणवती वधू अपने गृहस्थाश्रम को कीर्तिमय बना देती है। पश्चिमीय सभ्यता से आक्रान्त 'नारी' अपने अस्तित्व को भूलकर पारिवारिक और सामाजिक अशान्ति उत्पन्न कर रही है। उसे परनिन्दा अन्याय पक्षपातादि दोष छोड़कर, स्वयं को पहचानना चाहिये।' मात्र सीता-सावित्री की स्तुति और सरस्वती आदि की जड़ पूजा से कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता। उसे स्वयं के जीवन पथ को प्रशस्त बनाकर प्रेरणाप्रद बनने का प्रयास करना चाहिये। चारित्रिक महानता को हृदयंगम कर ही वह महान है। नारी गौरव के सभी लोक गीत प्रेरणा देते हैं कि नारी हर परिस्थिति में अपनी गरिमा मण्डित मर्यादा बनाये रहे।

चौ० चरणसिंह को श्रद्धांजलि

अलीगढ़ दिनांक ३१-५-८७ आर्यसमाज सासनी द्वार के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग में कर्मठ आर्यसमाजी, कुशल राजनीतिज्ञ, निर्धन किसानों के सच्चे सहयोगी, अ० भा० लोकदल अध्यक्ष, भूतपूर्व प्रधान मन्त्री भारत सरकार चौधरी चरणसिंह के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया गया। और मौन धारण कर शोक श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

डा० राजबहादुर आर्य दिवंगत

दिनांक ५-७-८७ को श्री डा० गिरधारीलाल शर्मा की अध्यक्षता में एक शोक सभा आर्यसमाज मन्दिर गोला में आर्यसमाज के भूतपूर्व कर्मठ आर्यसभासद तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारक श्री डा० राज बहादुर आर्य के आकस्मिक निधन पर सम्पन्न हुई। जिसमें मौन रहकर दिवंगतात्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

वेद विद्या विहीन होने से असहाय अबलाओं के दो दृश्य

(शेष पृष्ठ ३ से आगे)

सिपाहियों को एक-एक तंबू में एक एक औरत भी दी जाती थी। इन औरतों को अलग से बिस्तर नहीं दिया जाता था और उन्हें घोड़े की जीन या काठी सोने के लिए मिलती थी। इन औरतों के बच्चे ही "बास्टर्ड" कहलाते थे और अक्सर इन्हें भी पता नहीं रहता था कि उनके बच्चे का बाप कौन है।" ये दृश्य हैं उन्नत देश इंगलैंड की उन्नत संस्कृति के।

इस संबंध में भारत में स्त्रियों की स्थिति का आभास देना असंगत न होगा।

भारतीय संस्कृति में रणभूमि एक पवित्र स्थान समझा जाता था। वहां सेना के लिए स्त्रियों का उपरोक्त प्रकार का संसर्ग नितान्त निषेध था

वेदोक्त आदर्श के अनुसार स्त्रियो के लिये केवल पतिव्रता होना ही पर्याप्त नहीं अपितु उन्हें अपने पति की अनुव्रता होना चाहिए। वेद का आदेश है :

पत्युरनुव्रता भूत्वा । संनहयस्व मृतायकम्

अथर्वेद १४/१/४२

अनुव्रता से अभिप्राय है कि स्त्रियों को अपने पति के समस्त शुभ कार्यों में एवं उनके व्यवसाय में सब प्रकार पूर्ण सहायता देनी चाहिए।

अतः प्राचीन काल में भारत में वीर योद्धाओं की वीर अर्द्धांगनियां उनके साथ रणक्षेत्र में युद्ध में अपना योगदान देने जाती थीं—

स होत्र स्म पुरा नारी समनं वाव गच्छति।

वेधा ऋतस्य वीरिणीन्द्र पत्नी महीयते ॥

विश्वस्मादिन्द्र उत्तर :

ऋग्वेद १०।८६।१०

इस प्रकार मंत्रमे इन्द्र अर्थात शूरवीर सेनापति की पत्नी के लिये भी वीर भावयुक्त होने और समनं अर्थात समर भूमि या युद्ध में पति के साथ जाने का आदेश है।

इसका प्रमाण रामायण में भी मिलता है। राजा दशरथ के साथ रानी कैकेयी रणभूमि में गईं थीं। राजा दशरथ के रथ के पहिए के फंस जाने पर कैकेयी ने ही हाथ लगाकर उसे निकाला था।

राणा सागा के शूरवीर भाई पृथ्वीराज की वीर पत्नी ताराबाई ने अफगानों के साथ लड़ाई में अपने पति का छाया की तरह साथ दिया था।

भारत मे स्त्रिया अपने पति अथवा पुत्र को युद्ध में भेजते समय स्वयं उनको वस्त्र भूषण पहनाती थीं एवं उनका तिलक कर विदा करती थीं। मुहम्मद गोरी के आक्रमणके समय संयुक्ताने पृथ्वीराजको खुद अपने हाथ से वसंतीबाना और कवच पहनाया था।

वीरांगनायें, जिन्हें अपने राज्य की रक्षा के लिए युद्ध करना पड़ा, स्वयं अस्त्र उठाती थीं। चित्तौड़ की रानी कर्म देवी एवं राजमाता जवाहिरबाई, होल्कर वंश की महारानी अहल्याबाई, गुरहि की रानी दुर्गावती एवं झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के उल्लेखनीय उदाहरण उपस्थित हैं।

शिवाजी युद्ध में प्राप्त परास्त शत्रु की नारियोंको मातृत्व भावना की दृष्टि से देखते थे। तत्कालीन इतिहासकार खफी खां ने लिखा है कि युद्ध में विजयी होने पर शिवाजी के कुछ सरदार स्त्री को पकड़ लाए और उनके सामने पेश किया। इस पर शिवाजी ने उनकी अत्यंत भर्त्संना की और आदेश दिया उसे ससम्मान वहीं छोड़ कर आएं जहां से लाए थे।

आतंकवाद की पराकाष्ठा

(शेष पृष्ठ २ आगे)

आतंकवादियों पर देशद्रोह का मुकदमा विशेष अदालत में चलाया जाये और उन्हें कठिनतम दण्ड दिया जाये। इन सब कामोंमें पंजाब पुलिसका विश्वास कतई करने योग्य नहीं है। उसे उनकी पुलिस लाइनों मे सुरक्षित विश्राम करने को कहा जाये और तत्परता से यह सब करने के लिये पी० ए० सी० व सी० आर० पी० आदि बलों का सहारा लिया जाये। मैं तो समझता हूं कि यदि पंजाब के सम्पूर्ण क्षेत्र को सीमावर्ती राज्योंमें हिमांचल प्रदेश हरियाणा व देहली में विलीन-करके पंजाब नाम ही हटा दिया जाये तो और उत्तम होगा।

केन्द्र सरकार का दायित्व है कि वह दृढ़ता से कहे कि किसी भी वर्गको किसी भी सम्प्रदाय को किसी भी मजहब को मनमानी करने की छूट नहीं दी जायेगी। सभी धर्म स्थलों, पूजा घरों की पवित्रता की रक्षा सरकार का धर्म है अतः किसी भी मन्दिर मस्जि. गिरजाघर व गुरुद्वारों मे आतंक फैलाने वालो को शरण नहीं दी जा सकती। जो भी धर्मके नामपर विलगाववादी बातें करेगा उसे क्षमा नहीं दिया जायेगा कठिन दण्ड दिया जायेगा।

निश्चय ही यदि सरकार अब भी जैसा कि प्रधान मन्त्री ने घोषणा की है, राष्ट्रीयहित में कठोर कदम उठा लें तो समस्या—का निदान किया जा सकता है और देश के किसी भी स्थान पर उठती आतंकवादी विलगाववादी विद्वेष फैलाने वाली प्रवृत्तियों को आसानी से कुचला जा सकता है। इस शांति—कठोर अनुशासन स्थापित करके राष्ट्र की स्वतन्त्रता की रक्षा सुख शांति समृद्धि का दायित्व सरकार निर्वाह करने में समर्थ होगी।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

अवसानी ग्राम में आर्य समाज का गठन

दिनांक १४-४-८७ को श्री बी० के० शास्त्री मन्त्री चम्पारण जिला आर्य सभा की अध्यक्षता में अवसानी [बगहा] ग्राम में आ० स० का गठन हुआ जिसमें प्रधान श्री पृथ्वीनाथ तिवारी, मन्त्री डा० जयप्रकाश सिंह, कोषाध्यक्ष श्री हरिशंकर शाह निर्वाचित हुए।

वैदिक धर्म प्रचार

—चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्वावधान में दिनांक १४ जून से १८ जून तक वाल्मीकि नगर में १९ से २३ जून तक रामगढ़वा में २४ जून से२८ जून तक वीतपुर [नेपाल]में वैदिक धर्मका प्रचार धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें पं० रामकृष्ण शास्त्री [कलकत्ता] श्री शिवधर जी आर्य [पटना] श्री ध्रुव प्रसाद जी [चम्पारण] श्री रामचन्द्र जी "क्रांतिकारी" [नेपाल] आदि महोपदेशक पधारे।

वैदिक विवाह सम्पन्न

२३-६-८७ को आर्य समाज मोतिहारी के प्रधान डा० एस० पी० सिंह के आयु. पुत्री की शादी वैदिक रीत्यानुसार बहुत धूम-धामके साथ सम्पन्न हुई। वैवाहिक सम्पूर्ण कृत्य—पं० गंगाधर शास्त्री [पटना] एवं बी० के० शास्त्री [रक्सौल] ने सम्पन्न कराया। वैदिक विवाह को देखकर सम्पूर्ण बाराती प्रसन्न थे। विवाह के समय बाजार के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित होकर वर-वधू को आशीर्वाद भी दिये।

आर्यमित्र

ऋतु बसन्त विक्रमादित्य विकसित पलाश सा ।
'अरुण वर्ण शोभायमान, अलि क्यों निराश सा ?
अरुण-श्याम, गुंजार-शौर्य, विति अविति विरोधी ।
कब प्रशान्त के साथ खड़ा रह सकता क्रोधी ।१।
कहो वेद के व्रती अवस्थित तुम संज्ञा मे ।
मेरा भी प्यारा 'रमेश' रमता प्रज्ञा मे ।
आर्य मित्र में रहे सदा आर्यत्व विव्यता ।
उपक्षयकारी हटे वस्तुता की अरम्यता ।२।
तुम मनमोहन पढ़ो वेद जीवन में ढालो ।
पूज्य पिता की मर्यादा को सजग सभालो ।
हरिशंकर की पावन संस्मृति रहे जगाती ।
वीरों के बलिदान तुम्हारी अनुपम थाती ।३।
हम आये हैं यहाँ वेद का ध्वज फहराने ।
भूमण्डल को सुभग सूक्त संज्ञान सुनाने ।
दम्भ-दर्प से दूर मञ्जु मानवता मानी ।
ऐक्य भाव के सूत्रधार वैमल्य विधानी ।४।
दे सत्यार्थ प्रकाश हटा दें जड़ता तम की ।
दें झांकी खुल दिव्य द्वार फिर निगमागम की ।
उठे चेतना, आत्म ज्योति से जगमग जग हो ।
भोगवाद मे देवयजन का पूजित पग हो ।५।
पशु से नर, नर से द्विज, द्विज से ऋषि बन जावें ।
कर आर्यत्व-विकास, परम पद को हम पावें ।
आर्य बन्धुओ, निज गुरुतम दायित्व निभाओ ।
होगा निश्चित सिद्ध जिसे तुम मन मे लाओ ।६।
आये थे ऋषि दयानन्द पाखण्ड मिटाने ।
सद्गुण, संस्कृति, सदाचार का पाठ पढ़ाने ।
हो व्रत दीक्षित बनें सभी उनके अनुयायी ।
जहाँ पड़े पग वहीं यजन-ध्वनि पड़े सुनाई ।७।
सब का श्रद्धा भाव करे सबको आकर्षित ।
सत्य निष्ठ, सब यज्ञ परायण, प्रभु प्रति अर्पित ।
विभव, अभ्युदय शिखर, लोकहितकर हो लक्षित ।
निःश्रेयस भी परम लक्ष्य हो कभी न विस्मृत ।८।

—मुंशीराम शर्मा 'सोम', कानपुर

इनके कर्म इन्हें ले डूबे

आज खून से लथपथ धरती, चीख-चीख कर करे पुकार !
मासूमो के चिथड़े उड़ गए, इतना भीषण नरसंहार !!
बेशुमार घर उजड़ चुके हैं, बेशुमार बुझ गए चिराग !
सुनते-सुनते कान पक गए, वह आहें यह चीख पुकार !!
इस गुरुओं की पावन धरती, इस पर गांधी जी अवतारे !
इस भारत का हाल देखकर, हैरत में है सब संसार !!
इन्हें भेड़िया कहने में ही, होता है संकोच मुझे तो !
इनके कर्म इन्हें ले डूबे, हत्यारों पर रब की मार !!

—विजय निर्बाध

गुरुकुल सिरसागंज के प्राण एवम् मुख्याधिष्ठता
स्व० महात्मा देव स्वामी जी महाराज
को उनके १० वें बलिदान दिवस २७-७-८७ पर समर्पित

श्रद्धांजलि

[रचयिता—कुं० लाखनसिंह 'सौमित्र' आर्यसमाज, मैनपुरी]

गुरुकुल को देकर प्राण-दान नर-कुल को धन्य महान किया।
देवेन्द्र, 'देव स्वामी' महान्-ऋषि, पर जीवन बलिदान किया ।।

शैशव से रहकर रागहीन, वैराग्य आग में ज्ञान जगा,
ऋषि-आदर्शों के अनुरागी, तपसी त्यागी का ध्यान जगा ।
तपते-तपते तपसी जीवन दिखा, विवेक निष्णात हुआ ।
जागते-जागते ही जग को अज्ञात निशा मे प्रात हुआ ।।

गुरु 'ब्रह्मदत्त' के शिष्य बने व्याकरण-भानु का तेज लिये,
गुरु 'ब्रह्मानन्द' शरण मे आ, दर्शन साहित्य सहेज लिये ।
आजन्म ब्रह्मचारी रहकर, जग प्रेय-मार्ग को त्याग दिया,
जन मङ्गल का पावन व्रत ले श्रुति-श्रेय मार्ग का राग लिया ।।

ऋषि 'दयानन्द का दिव्य स्वप्न; अनवरत जगाये अन्तर में,
अज्ञान अविद्या-तम हरकर, आलोक रश्मि भर घर-घर में ।
ऋषि शिक्षा के अनुरूप आप, शुचि आर्य ज्ञानके दानी बन,
जीवन का तिलतिल होम दिया ऋषि परपम्परा के मानी बन

तप, स्वाध्याय, निष्काम-दान ही जीवन के आदर्श रहे,
आर्यों का गौरव शिखर सदा, धरती का भारतवर्ष रहे ।
तुम इसी लक्ष्य की वेदी पर जीवन का कण-कण चढ़ा गये,
'गुरुकुल', 'गो', 'ज्ञान' महत्ता को निज आचरणों से बढ़ा गये ।।

तप, त्याग तुम्हारा उदाहरण 'गुरुकुल साक्षात् गवाही है ।
पद-चिन्ह पड़े रह गये यहाँ आगे जा पहुंचा राही है ।
बलिदानो से सींचे बिरवे, इक दिन निश्चय हरियायेंगे ।
जीवन के जलधर बरसेंगे, अमृत के बादल छायेंगे ।।

वेद प्रचार सप्ताह की सूचना

दि० ८ अगस्त से १६ अगस्त ८७ ई० तक इस वर्ष पड़ने वाले वेद प्रचार सप्ताह में सुयोग्य–महोपदेशक, उपदेशक और भजनोपदेशकों की सेवायें प्राप्त करने हेतु सभा के निम्न कार्यरत विद्वानों से सम्पर्क स्थापित करने हेतु लिखें—

१- श्री केशव देव शास्त्री महोपदेशक।
२- श्री शिवकुमार शास्त्री ,,
३- श्री विश्वम्भर दत्त शास्त्री उपदेशक
४- श्री ओतनारायण शास्त्री ,,
५- श्री महावीर जी शास्त्री ,,
६- श्री लालता प्रसाद आर्य ,,
७- श्री स्वामी सुकर्मानन्द ,,
८- श्री विजय पाल सिंह ,,
९- श्री ब्रह्मानन्द आर्य प्रचारक
१०- श्री नेम प्रकाश आर्य ,,
११- श्री युगलकिशोर ,,
१२- श्री महाराज सिंह ,,
१३- श्री धर्म राज सिंह ,,
१४- श्री उदय प्रकाश ,,
१५- श्री राम चन्द्र शर्मा ,,
१६- श्री जगत वीर सनेही ,,
१७- श्री शिवदेव बेधड़क ,,
१८- श्री सीताराम शर्मा ,,
१९- श्री सीताराम आर्य ,,
२०- श्री तेजपाल सिंह आर्य ,,

केशवदेव शास्त्री अधिष्ठाता उपदेश वि० आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

प्रशिक्षण शिविर समापन समारोह

डिबाई में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर जनपद बुलन्द शहर स्तर का ११ जून से २२ जून तक मथुरिया विद्यालय में ६० आर्य वीरों को नैतिक, शारीरिक, धार्मिक प्रशिक्षण, आसन व्यायाम, वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा के साथ सफलता से सम्पन्न हुआ।

एक आकर्षक रैली लगभग ५० ग्रामों में श्री धर्मेन्द्रसिंह आर्य अध्यक्ष जिला आर्य वीर दल बुलन्द शहर के नेतृत्व में वैदिक धर्म प्रचार करने हेतु भी निकाली गई। श्री बाल दिवाकर हंस अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने ग्रामीण क्षेत्रों में आर्य रैली का निरीक्षण किया।

आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया का रजत जयन्ती समारोह सम्पन्न

राजस्थान के प्रसिद्ध आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया का रजत जयन्ती समारोह २४ मई ८७ से ३१ मई ८७ तक बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ। महायज्ञ की पूर्णाहुति दिनांक ३१-५-८७ को बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुई। वेद सम्मेलन, राष्ट्रीय रक्षा सम्मेलन, आर्य युवक सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन आदि हुए।

सम्पादक के पत्र

त्रिभाषा-सूत्र कैसा हो ?

(१)

भारत की [हिन्दी, असमिया, बंगला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, सिन्धी, तमिल, तेलगू, उर्दू, संस्कृत और कोंकड़ी] भाषाओं तथा विश्व की अन्य भाषाओं के मूल में प्राचीनतम भाषा संस्कृत के ज्ञान से सभी भाषायें एक-दूसरे के समीप आती हैं। निम्नलिखित त्रिभाषा सूत्र पर सभी मनीषियों को विचार करना चाहिये—

१— [हिन्दी+संस्कृत] एक भाषा के रूप में,
२— अंग्रेजी अथवा अन्य भाषा,
३— भारत की शेष भाषाओं में कोई एक'

उक्त सूत्र कक्षा ६ से १२ तक लागू किया जाय। स्नातक स्तर पर हिन्दी एवं संस्कृत अलग-अलग पढ़ने की सुविधा हो!

(२)

—'आर्यमित्र २८ जून' १९८७ में "साम्प्रदायिक दंगे, फिर पी. ए. सी. पर आक्षेप—एक घिनौनी-चाल!" आपका सम्पादकीय लेख सभी की आंखें खोलने वाला है।

काश! सभी जन मानव धर्म को समझते हुए, सम्प्रदाय-निरपेक्षता की भावना समझ सकें!

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती कन्दाहारी
व्यवस्थापक आर्य समाज पिथौरागढ़ [उत्तर प्रदेश]

—आर्य समाज गौराडांड (प्रतापगढ़) की स्थापना १९ मार्च १९८५ ई० को हुई थी। जो बाद में शिथिल पड़ गई। गत माह १२, १३, १४ और १५ जून ८७ को ४ बजे दिन तक उस गाँव में प्रचार किया गया। जनता में फिर उत्साह बढ़ा। लोगों में सत्यार्थ प्रकाश ८ संस्कार विधि ८ आर्य पर्व पद्धति ४ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका की बिक्री हुई।

गायत्री महिमा

ऋषि मुनि और तपस्वियों की आज्ञा है

[संकलनकर्ता—श्री लालताप्रसाद, उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०]

१—आयुर्वेद के महर्षि चरक का आदेश है कि ब्रह्मचर्य पूर्वक जो व्यक्ति गायत्री की उपासना करता है और ताजे आंवलों का रस सेवन करता है, वह निरोग और दीर्घजीवी होता है।
२—गायत्री आत्मोन्नति में उपयोगी है। (महात्मा गांधी)
३—गायत्री से ब्रह्म की प्राप्ति होती है। (स्वामी विवेकानन्द)
४—गायत्री सद्बुद्धि का मन्त्र है। (शंकराचार्य)
५—गायत्री आत्मा को प्रकाश देती है। (तिलक)
६—गायत्री भौतिक भय दूर करती है। (मालवीय जी)
७—गायत्री मोक्ष का मूल कारण है। (शृंगी ऋषि)
८—गायत्री से त्रिलोक की विजय होती है। (उपनिषद)
९—गायत्री वर देने वाली और पवित्र करने वाली है। (अथर्व वेद)
१०—गायत्री और ब्रह्म में भिन्नता नहीं। (व्यासमुनि)
११—गायत्री आवागमन से छुड़ाने वाली है। (विश्वामित्र)
१२—गायत्री पाप वृत्ति का नाश करने वाली है। (याज्ञवल्क्य ऋषि)
१३—गायत्री ब्रह्म का साक्षात् कराती है। (भारद्वाज ऋषि)
१४—गायत्री उपासना से दीर्घजीवी होता है। (महर्षि चरक)
१५—गायत्री से कुमार्गी भी पवित्र हो जाता है। (वशिष्ठ ऋषि)
१६—गायत्री सर्वश्रेष्ठ महामन्त्र तथा गुरु मन्त्र है। इसका जप सब करते आये हैं। [महर्षि दयानन्द]
१७—गायत्री से बड़ी शक्ति मिलती है। [रामकृष्ण परमहंस]
१८—गायत्री वेदों का प्राण है। [यजु० १३-५४]
१९—गायत्री जपने वाला सब दुःखों से छूट जाता है। [अत्रि ऋषि]
२०—गायत्री वेदों की माता है और विश्व का कल्याण करने वाली है। [पद्म पुराण]
२१—गायत्री सार्वभौम प्रार्थना है। [राष्ट्रपति राधाकृष्णन]
२२—गायत्री जपने से पाप वृत्ति नष्ट हो जाती है। [मनु० २-७०]
२३—गायत्री शक्ति का स्रोत है। [नारद जी]
२४—गायत्री कामधेनु है। इससे सब कुछ प्राप्त हो सकता है। [महादेव जी]
२५—प्रतिदिन संन्ध्या-उपासना करते समय गायत्री जाप अवश्य करें। [मनु० २-१०]
२६—दोनों समय जो संन्ध्या करता है, उसे अवश्यमेव वेद के स्वाध्याय का फल मिलता है। [मनु० २-७८]
२७—अमरीका में सर्व धर्म सम्मेलन के अवसर पर गायत्री को सर्व उत्तम प्रार्थना माना गया। [पं० अयोध्याप्रसाद जी कलकत्ता]
२८—एकाक्षर ओ३म् परब्रह्म है, प्राणायाम ही परमतप है, गायत्री से बढ़कर और कुछ नहीं, मौन से सत्य बढ़कर है।[मनु० २६-३-११]
२९—"स्तुति करते समय हम वेद ज्ञान की,
प्रेरक पालक पावन करती मनुज मात्र को,
आयु, बल, सन्तति, पशु, गौरव धन देवे विद्या दान को,
मोक्ष पद पावन ज्ञान प्रदाता मिलाये प्रिय भगवान् को।
[अथर्व वेद काण्ड १९ सूक्त ७१ मन्त्र १]
३०—गायत्री वेदों का सार है। तीन मात्रा वाले ओंकार पूर्वक तीन महाव्याहृति और तीन पाद वाली सावित्री गायत्री को ब्रह्म का मुख द्वार समझना चाहिये। [मनु० २-८१-४-६]

विचार करो आर्य जनों

आज देश में सभी ओर है,
[illegible] भ्रष्टाचार !
सदाचार का लोप हो गया;
दिशि-दिशि पैर पसार—
भ्रष्टाचार फूलता जाता !
लेता है अंगड़ाई !
जाने कैसी दुखद घड़ी यह,
पुण्य-भूमि मे आई ?
क्रूर सर्प हिंसा का करता,
रह-रह कर फूत्कार !
मानव ही यम बनकर करता
मानव का संहार !
हत्यारे हैं निडर घूमते !
हिंसा करते बढ़ कर !
आठ आठ आँसू मानवता
रोती विवश यहां पर !
हैं निर्दोष जा रहे मारे;
नहीं किसी को चिन्ता !
भय से मूढ़ देखती रहती,
आज देश की जनता !
कब तक ऐसा हाल रहेगा ?
विचार करो हे आर्य जनों
दानव-दल का नाश करने
उठो संगठित हो आर्य जनो !

—चन्द्रपालसिंह 'मयंक', कानपुर

आर्यसमाज की जय हो

आलस्य है शत्रु हमारा, इसको मार भगायेंगे।
रण संग्राम में आकर पग पीछे नहीं हटायेंगे।
यम नियम संन्ध्या यज्ञोपासन सबको सिखलायेंगे।
सम्स्तुति करेंगे हम पूर्ण अपने वीर दयानन्द महान की।
मानवता की प्रतिभा को सबप्रथम जिसने थी आंकी
जन्म से मृत्यु पर्यन्त की पूर्ण इस आर्यत्व की झांकी
कीर्ति नहीं उस आर्यत्व की झांकी की हम जाने देंगे
जन्म हमारा चाहे हो सहस्रों बार इसकी रक्षा स्वयं करेंगे
यश इस आर्य भू का नहीं मिटेगा प्राणों की बाजी हम देंगे
होगी 'रमेश' विजय हमारी शत्रु नहीं कुछ कर पायेंगे

—रमेश चन्द्र गुप्त बरवहा बाजार बहराइच

निर्वाचन—

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी
प्रधान—श्री कमलाकान्त
मन्त्री—श्री रामगोपाल आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री बुद्धदेव आर्य

आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग
प्रधान—श्री सोहन जी पाण्डेय
मन्त्री—श्री लालबहादुर शास्त्री
कोषा०—श्री देवराज भवन

लखनऊ में संस्कृत प्रशिक्षण शिविर

जिज्ञासु सरलतम संस्कृत प्रचार समिति उत्तर प्रदेश लखनऊ-शाखा अखिल भारतीय संस्कृत परिषद्, हजरतगंज की ओर से बिना रटे त्रैमासिक निःशुल्क संस्कृत शिक्षण का आयोजन संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान पं० श्री ब्रह्मानन्द शास्त्री व्याकरण, दर्शन, वेद तथा निरुक्ताचार्य (दक्षिणवासी) के आचार्यत्व में वैदिक इन्टर कालेज, गणेशगंज, लखनऊ-प्रातः ६-०० बजे से ७-३० बजे तक अखिल भारतीय संस्कृत-परिषद्, महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ-सायंकाल ६-०० बजे से ७-३० बजे तक नियत समय है। जिसमे बिना रटे सरलतम विधि से ३ महीने में संस्कृत बोलने व लिखने का अभ्यास हो जायेगा।

श्रावणी उत्सव

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि केन्द्रीय आर्य समाज मन्दिर महर्षि दयानन्द मार्ग अचल रोड अलीगढ़ का वार्षिक श्रावणी उत्सव ९ अगस्त से बड़ी धूम-धाम से महात्मा नारायणस्वामी क्रांतिकारी के संरक्षण में मनाया जायेगा तथा उत्सव में मुख्य अतिथि श्री इन्द्राराज जी प्रधान सभा होंगे एवंउद्घाटन भाषण पं०मनमोहन जी तिवारी मंत्री सभा द्वारा सम्पन्न होगा। आर्य वीर दल का प्रदर्शन एवं ब्रह्मचारी पूरन चन्द्र द्वारा शस्त्र प्रदर्शन होगा। श्रावणी उत्सव के संयोजक,डा०सोमदेव आर्य होंगे।

सम्भल में वेद प्रचार योग शिविर

सभा के विद्वान् उपदेशक डा० महावीर शास्त्री जी आर्य समाज सम्भल में प्रतिदिन प्रात यज्ञ के पश्चात् योगासन, प्राणायाम, प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा रोगो से बचकर स्वास्थ्य रहने के लिए योग साधन कराते योग प्रदर्शन कर रहे हैं।

–१८ से २१ जून तक 'प्रकाश कोल्ड स्टोरेज जमुई-चुनार-मीरजापुर मण्डल आर्य वीर दल मीरजापुर द्वारा प्रशिक्षण शिविर श्री देवम सिंह शिविराध्यक्ष अधिष्ठाता आर्य वीर दल उ० प्र० की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन श्री अवध बिहारी जी संचालक पूर्वी उ० प्र० आर्य वीर दल, दीक्षान्त भाषण श्री पं० सत्यदेव शास्त्री ने किया। श्री पं० काशीनाथ शास्त्री को अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

–देवम सिंह अधिष्ठाता।

सम्पादक के नाम पत्र:–

यह सुन-पढ़कर दुख-महादुख-हो रहा है कि जिन कर्तव्य परायण वीर लोगों ने निर्दोष स्त्री बच्चों को बर्बरता से जिंदा आग में जलाने वाले राक्षस प्रकृति के महादुष्टों के लोमहर्षक अत्याचारों से पीड़ित जनता की रक्षा की उनको ही कुर्सी व वोट के लालच में कुछ सांप्रदायिक राजनेताओं की प्रेरणा व आग्रह से दण्डित और अपमानित किया जा रहा है। क्या इससे यह न समझा जावेगा कि कर्तव्य परायण व वफादार लोगो (जनसेवकों) की कदर करने वाले शासनाधिकारी नहीं रहे हैं और सांप्रदायिक संस्थाओं से सम्पर्क, संबंध न रखने की चुनाव घोषणा के बावजूद मुस्लिमलीग जैसी घोर सांप्रदायिक संस्थाओं के तथाकथित नेताओं की संतुष्टि के लिये आम जनता के हितों को ताक में रखकर अपराधियों को पीड़ित और निर्दोषों को अपराधी समझ कर प्रताड़ित किया जा रहा है। अतः कहना पड़ता है कि "जालियों को लोग मजलूम बतलाने लगे। उठ गया इन्साफ दुनिया से अदालत हो चुकी।। पीठ ठोकी जा रही हो जब लुटेरों की जनाब।

इस तरह बस दूर आपस की अदावत हो चुकी।।" ऐसा न हो कि आज के वफादार अन्याय से तंग आकर कल बेवफा व विद्रोही हो जावें। अतःशासन को सावधान करते हुए कहते हैं कि न्याय को न छोड़ें। न्याय से ही शासन का भवन है। "हकूमत को फिदा मर्दानगी की कदर लाजिम है।

गोरखपुर में महिला प्रशिक्षण शिविर

जलालपुर–दि० २-६-८७ से १०-६-८७ तक महिला आर्य समाज गोरखपुर जलालपुर द्वारा पातंजलि योग का प्रशिक्षण आचार्य अमृतलाल शर्मा गुरुकुल होशंगाबाद एवं पंचमहायज्ञ का प्रशिक्षण पं० अभय शरण एवं सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम दस समुल्लासों का प्रशिक्षण श्री जे० पी० विद्यार्थी ने बीस शिवरार्थी बहिनों को दिया। शिविर प्रशिक्षण की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए महिला उम्मीदवारों में प्रथम–कु० प्रतिभा गायकवाड़ द्वितीय–कु० अर्चना पवार, तृतीय स्थान–कु० वन्दना पवार ने लिया।

समापन समारोह की अध्यक्षता श्रीमती चन्द्रावती ने की। शिविरार्थियों को प्रमाण-पत्र के साथ पारितोषिक वितरण भी किये गये।

–पद्मा गायकवाड़ शिविर संयोजिका

आर्य समाज गुमानपुरा कोटा, (राजस्थान)

१–प्रधान : श्री शान्तता प्रसाद जी अग्रवाल
२–मन्त्री : श्री महेश चन्द्र जी सिद्धान्ती (भृंगी)
३–कोषाध्यक्ष : श्री रामेश्वर प्रसाद जी विजय

मन्त्री–आर्य समाज गुमानपुरा, कोटा।

आर्य समाज मन्दिर पिथौरागढ़ में विवाह

पिथौरागढ़ : आर्य समाज मन्दिर–कच्चाहारी आश्रम में २८ जून को पुष्पा–नारायणसिंह तथा २९ जून, १९८७ को गंगा-शंकर सिंह के विवाह संस्कार स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी द्वारा संयोजित किये गये। अब कुमाऊँ मण्डल में नैनीताल, हल्द्वानी, भवाली, ताड़ीखेत, बागेश्वर व अल्मोड़ा के साथ पिथौरागढ़ में भी १६ संस्कारों के सम्पन्न कराने की व्यवस्था हो गई है।

पाठ्यक्रम में संस्कृत अनिवार्य की जाये

स्त्री आर्य समाज तथा आर्य समाज साकेत की सम्मिलित सभा ने भारत सरकार की नई शिक्षा नीति के विरोध में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया।

"नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा को शामिल नहीं किया गया है यह हिन्दु समाज के हितों पर महान् कुठारा घात है। सरकार को नई नीति पर गम्भीरता के साथ पुनः विचार करना चाहिए क्योंकि संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन तथा अनेक भाषाओं की जननी है। इसका हमारी संस्कृति एवं सभ्यता से घनिष्ठ सम्बन्ध है। वेद, रामायण, महाभारत, गीता आदि महान् ग्रन्थ संस्कृत भाषा में ही लिखे हुए हैं। बहुसंख्यक हिन्दु समाज के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त समस्त संस्कार संस्कृत भाषा के ही मन्त्रों द्वारा सम्पन्न होते हैं अतः संस्कृत भाषा को पाठ्यक्रम में रखा अनिवार्य है।"

प्रताप चन्द मन्त्री आर्य समाज साकेत ने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसका समर्थन भारत की सुप्रसिद्ध कवियत्री श्रीमती पद्मावती शर्मा ने अपनी ओजस्वी वाणी में प्रभावशाली ढंग से किया। संस्कृत भाषा सर्वाधिक समर्थ एवं देश को एक सूत्र में बांधने वाली कड़ी है।

आश्रम-सेवा के लिए आह्वान

गृहस्थ से विरक्त (समाज से नहीं), स्वस्थ काम, सुशील दफ्तर के साधारण काम काज अथवा हिसाब-किताब में दक्ष, पेंशनर, जो उपयोगी व्यस्त जीवन व्यतीत करना चाहते हों, सम्पर्क करें।

शुद्ध सात्विक व श्रम-वातावरण में निःशुल्क निवासादि उपलब्ध। सम्पर्क सूत्र : मन्त्री, वेद-संस्थान, सी–२२, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली दूरभाष : ५०२३१६, ५३०२२०।

करौरा [बुलन्दशहर] शुद्धि

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा [रजि०] बुलन्द शहर द्वारा आयोजित जिला आर्य सम्मेलन के अवसर पर आदर्श वैदिक इण्टर कालेज 'करौरा' मे दि० २५ जून ८७ को शुद्धि सम्मेलन का आयोजन हाथरस के ब्लाक प्रमु श्री ठा० विक्रमसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमे स्वेच्छा से अटेरना निवासी श्री 'नूर मोहम्मद' ने वैदिक धर्म स्वीकार किया और उनका नाम यज्ञ वेदी पर विधिवत यज्ञोपवीत लेकर 'महावीरसिंह' रखा गया। शुद्धि संस्कार श्री पं०चन्द्रपाल शास्त्री एवं आचार्य धर्मेन्द्र शास्त्री ने सम्पन्न कराया। जिले भर के हजारों आर्यजन उपस्थित थे।

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क १५ जून १९८७ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८६ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

२५६८, २९३२, ३६५८, ४४६२,४९४३,४९५६,५२६६,६१५१,८१५० ८५९७, ८६१४, ८७८३, ८७८७, ८८७९, ८९५७, ९१४९, ९१७१, ९१८०, ९१८२, ९४५८, ९४६४, ९४६५, १०१७८, १०१८०,११२०९, ११२१०, ११६२४, १२६३७, १२२०९, १२२१३, १२२१४, १२६७६, १२६७९, १२६८०, १२६८३, १२९१२, १२९१३, १२९१८, १३१२२, १३१२८, १३१२९, १३४७९, १३४८२, १३४८३, १३४८५, १३४८६, १३८८३, १३८८४, १३८८५, १३८८६, १३८८८, १३८८९, १३८९०, १३८९१, १३८९२, १३८९३, १३८९५, १३८९६, १३८९७, १३८९८, १३८९९, १३९००, १३९०१, १३९०२, १३९०३, १३९०४, १३९०५, १३९०६, १३९०७, १३९०८, १३९०९, १३९१०, १३९११, १३९१२, १३९१३, १३९१४, १३९१५, १३९१६, १३९१७।

विनीत–



प्राचार्य नत्थीसिंह दिवंगत

दयानन्द इण्टर कालेज जाकुमई, जिला—मैनपुरी के अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य श्री नत्थीसिंह का निधन १ जुलाई १९८७ को निधन हो गया। वह लगभग ६५ वर्ष के थे। उनका शान्ति यज्ञ १३ जुलाई १९८७ को उनके निवास ग्राम नगला बंधा में हुआ जिसमें जनपद के आर्य जनों ने अपने दिवंगत कार्यकर्ता के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

—ध्रुवपालसिंह 'अटल' मुख्य निरीक्षक, सभा

योग साहित्य

पूर्ण शारीरिक एवं मानसिक विकास एवं सर्वतोमुखी उन्नति के लिए नित्य स्वाध्याय योग्य प्राचीन योग साहित्य।

१—स्वामी केशवानन्दयोग पत्रिका (मासिक) वार्षिक शुल्क रु० २५/००
पुराने अंक भी उपलब्ध प्रति अढ़ाई रुपये।

२—दत्तात्रेय योग शास्त्र हिन्दी/अंग्रेजी व्याख्या सहित मूल्य रु० १५.००

३—योग बीज हिन्दी/अंग्रेजी व्याख्या सहित मूल्य रु० २५-००

४—अमनस्कयोग हिन्दी/अंग्रेजी व्याख्या सहित मूल्य रु० २५-००

५—योग चूड़ामणि हिन्दी व्याख्या सहित मूल्य रु० १८-००

६—राजयोग साधना और सिद्धान्त ले० डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी मूल्य चालीस रुपये

७—पातञ्जल योग शास्त्र एक अध्ययन ले० ब्रह्ममित्र अवस्थी मूल्य रु० ८०-००

८—योग और मानसिक स्वास्थ्य ले० ब्रह्ममित्र अवस्थी मू० रु० २५-००

९—डिवाइन पाथ वाई होली सेन्ट्स (इंगलिश) मूल्य चालीस रुपये

डाक व्यय अलग वी०पी० के लिए आधा मूल्य पेशगी भेजें।

प्राप्ति स्थान— स्वामी केशवानन्द योग संस्थान प्रकाशन ८/३ रूप नगर दिल्ली—११०००७

पांच कैसेट केवल सौ रुपये में

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि हम उत्कृष्ट कोटि के भजनों के ५ नये कैसेट बनाने जा रहे हैं जिनका मूल्य प्रति कैसेट ३० रुपये रहेगा। किन्तु हम लागत से भी कम मूल्य पर ये कैसेट आपको देना चाहते हैं। हम केवल उन्हीं प्रथम ५०० लोगों को यह ६० रुपये (५०+१० डाक व्यय) की छूट दे सकेंगे जो हमें १०० रुपये अग्रिम रूप से २५ जुलाई १९८७ तक भेज देंगे। इस स्वर्णिम अवसर को न गंवायें तथा आर्यसमाज के प्रचार प्रसार में हमे अपना पूर्ण सहयोग दें। हम इन पांच कैसेटों को आपको दो बार मे देंगे प्रथम दो कैसेट जन्माष्टमी तथा तीन दीपावली तक आपको मिलेंगे। पांचो कैसेट एक घण्टे के होंगे।

विशेष—दस कैसेट के रुपये भेजने वालों को एक कैसेट फ्री भेंट किया जायेगा।

प्रस्तुतकर्ता— **संसार साहित्य मण्डल**

१४१—मुलुण्ड कालोनी, बम्बई—४०००८२
दूरभाष:—५६१७१३७

वेद-प्रचार-सप्ताह

श्रावण शुक्ल १५ रविवार से भाद्रपद कृष्ण ८ सोमवार

९ अगस्त से १७ अगस्त १९८७ तक

श्रावण पर्व, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, बलिदान स्मृति एवं स्वाधीनता दिवस समारोह पूर्वक मनाकर वैदिक धर्म का सन्देश जन-जन तक पहुंचाइये

ओ३म् नमस्ते !

इस वर्ष 'वेद-प्रचार सप्ताह' दिनांक ९ अगस्त से १७ अगस्त १९८७ दिन रविवार से सोमवार तक मनाया जायेगा। सप्ताह का कार्यक्रम निम्न प्रकार है—

आर्यसमाजों को चाहिये कि वे अभी से इस सप्ताह को सफल बनाने के भरसक प्रयत्न करें। इस कार्य में स्थानीय महिला आर्यसमाज, आर्य कुमार सभा, आर्य वीर दल, तथा आर्य शिक्षा संस्थाओं आदि का पूर्ण सहयोग प्राप्त करना चाहिये। जहां आर्य कुमार सभायें तथा आर्य वीर दल न हों, वहां वह स्थापित किये जाने चाहिए। वेद प्रचार सप्ताह पूरे श्रावण मास चलाये जायें, जिससे विद्वानों का अधिक लाभ उठाया जा स ।

श्रावणी का महत्व

आर्यसमाज के प्रवर्तक, वैदिक विज्ञान के अद्वितीय विद्वान् वैदिक धर्म के महान् प्रचारक, मानवता को मतान्धता, एवं अन्ध-विश्वासों के अन्ध कूप से निकाल कर बुद्धिवाद एवं मानववाद के शुद्ध वातावरण में श्वास लेने की पुनीत प्रेरणा के प्रदाता, आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक स्वतन्त्रता के महान् व्यक्तित्व को समझने और श्रद्धा समन्वित हो ऋषि के चरण चिन्हों पर चलने की चेतना देना, इस पर्व का महान् उद्देश्य है।

वेद प्रचार निधि

इतने बड़े उत्तरप्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार कार्य को व्यवस्थित करने के लिए सवा लाख रुपया प्रति वर्ष चाहिये। प्रान्त में लगभग दो हजार आर्यसमाजें हैं। यदि इनका प्रत्येक सदस्य एक एक रुपया वेद प्रचार के लिए इस श्रावणी पर्व पर सभा को दान करना अपना कर्तव्य समझे, तो वेद प्रचार की समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है। वेद प्रचार के लिए जो धन संग्रहीत किया जाय, उसे सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

१७ अगस्त १९८७ भाद्रपद कृष्णाष्टमी, आर्य राजनीति के धुरन्धर विद्वान् योग विद्या के प्रबल ज्ञाता पतनोन्मुख भारत के महान् त्राता तथा भारत के निर्माता आचार्य अंगिरस घोर के शिष्य महात्मा कृष्ण का शुभ जन्म दिवस है। इस महापुरुष के नाम पर आज भी जो पाखण्ड लीला हो रही है, उसके समूल नाश का दायित्व आर्यसमाज पर ही विशेष रूप से है। श्रीकृष्ण की महत्ता के लिए उनकी वैदिक शिक्षाओं का प्रसार किया जाना चाहिये।

प्रातः ७॥ बजे से आर्य मन्दिरों में 'आर्य पर्व पद्धति' के अनुसार विशेष यज्ञ किया जाय। रात्रि को आर्यसमाज मन्दिरों में अथवा सार्वजनिक स्थानों में योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन पर व्याख्यान तथा उनके गीता ज्ञान और कर्मयोग का विवेचन किया जाय।

कार्यक्रम ९ अगस्त से १७ अगस्त १९८७ तक

प्रति दिन प्रातः सूर्योदय वेला में दैनिक सत्संग का आयोजन किया जाय, और इस सत्संग को यथासम्भव प्रतिदिन निरन्तर चालू रखने की प्रतिज्ञा भी करनी चाहिये।

मध्याह्न—वैदिक साहित्य विक्रय तथा आर्यसमाज के नवीन सभासद बनाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाय।

रात्रि—मन्दिरों में वेद कथा का विशेष आयोजन हो। वेदों के आधार पर विश्व-बन्धुत्व, मानववाद, साम्यवाद, समाजवाद एवं राष्ट्रवाद आदि विषयों पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया जाय।

शारीरिक व्यायाम, प्रदर्शन एवं वाक् संघर्ष-इस सप्ताह में आर्य वीर दल एवं आर्य कुमार सभाओं को शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन तथा वक्तृत्वकला विकसित करने की दृष्टि से भी विशेष आयोजन करने चाहिए।

श्रावणी कार्यक्रम

पारिवारिक यज्ञ—श्रावणी [रक्षा बन्धन] के दिन प्रत्येक आर्य परिवार में प्रातः पारिवारिक यज्ञ करें। प्रातः ७॥ बजे से समस्त आर्य नर-नारी, युवक तथा बालक-बालिकायें आर्य मन्दिर में उपस्थित होकर दुरितानि एवं भद्रार्थे—वेद की पावन ऋचाओं का पाठ किया जावे।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेद कथा का भी विशेष आयोजन होना चाहिये।

हैदराबाद सत्याग्रह धर्मयुद्ध एवं वैदिक धर्म के समस्त बलिदानियों की पुण्य स्मृति मनाकर उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जावे।

स्वतन्त्रता दिवस

महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा अन्य आर्यजनों के प्रयत्न से भारत स्वतन्त्र हुआ। १५ अगस्त को स्वाधीनता दिवस मनाकर भारत की स्वाधीनता की रक्षा की प्रतिज्ञा लीजिए—आर्यसमाज ने देश की स्वाधीनता के संग्रामों में सर्वाधिक बलिदान किया है। देश में प्रजातन्त्र के समुचित विकास, भ्रष्टाचार निवारण, पंचमांगी तत्व निरोधादि कार्यों में आर्यसमाज को पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

टिप्पणी—[१] सप्ताह के आरम्भ में आर्य मन्दिरों पर नया आर्यध्वज लगाना चाहिए।

[२] इस सप्ताह को अधिक महत्वपूर्ण व सार्थक बनाने के लिए हमारा आग्रह है कि प्रत्येक आर्यसमाज एक सूची उन महानुभावों की तैयार करें, जिनका आर्यसमाज से अथवा उसके अधीनस्थ संस्थाओं से शिक्षणालय आदि में सम्बन्ध रहा हो, और इस समय आर्यसमाज के सभासद् नहीं हैं, ऐसी सूची की एक प्रतिलिपि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के कार्यालय को भेजी जावे।

निवेदक—

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण न० एस डब्लू/एन पी, ७६
श्रावण शुक्ल १
रविवार, २६ जुलाई १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मेरठ वार्षिक अधिवेशन स्थगित

मेरठ नगर की शांति व्यवस्था अस्तव्यस्त चल रही है। साम्प्रदायिक उपद्रवों का विस्फोट यदा कदा होता ही रहता है। ऐसी स्थिति में नगर के लोग बाहर जाने में हिचकते हैं और बाहर के लोग नगर में आना निर्विघ्न नहीं समझते।

अतः उप प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन को अनिश्चित काल के लिए स्थगित किया जाता है। माधवसिंह
प्रधान—आर्य उप प्रतिनिधि सभा, (मेरठ)

वार्षिक चित्र भेजिये

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्बन्धित समस्त आर्य समाजों, जिला उपसभाओं से अनुरोध है कि वर्ष ८६ के वार्षिक चित्र भर कर ३१ जोलाई ८७ तक सभा प्रत्यांश धन सहित भेजने की कृपा करें।

जिन समाजों को चित्र न मिले हों, पत्र लिखकर कार्यालय से मंगा लें।

भवदीय—
मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

धर्म शिक्षा पुस्तकों के सम्बन्ध में—

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा द्वारा प्रकाशित धर्म शिक्षा भाग १ से १२तक की पुस्तके सभा कार्यालय में उपलब्ध हैं, पुस्तक प्राप्ति हेतु कार्यालय से सम्पर्क करे अथवा अपने आर्डर के साथ पूरा पता रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखें।

नोट—धर्म शिक्षा की पुस्तकों पर कमीशन दिया जायगा। रेल भाड़ा एवमन्यव्यय क्रेता को देना होगा।

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ

निर्वाचन—

आर्योपप्रतिनिधि सभा बिजनौर—गढ़वाल का वार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मति से प्रधान—श्री जयनारायण अवन पत्रकार
मन्त्री—श्री सुरेन्द्रसिंह राजपूत
कोषाध्यक्ष—श्री प्रयागदत्त शर्मा
निर्वाचित हुए।

सूचना

श्री रामचन्द्र शर्मा 'संगीत विशारद' मधुर गायक को जो आर्यसमाजें अपने उत्सव आदि पर बुलाना चाहे निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें—
श्री रामचन्द्र शर्मा 'संगीत विशारद'
स्थान पो०—रुस्तमपुर न्यावली
वाया सम्भल (मुरादाबाद)
(उ० प्र०)

विद्यालय भवन प्रवेश

आर्यसमाज बिसौली (बदायूं) के अन्तर्गत चलने वाले लाला देवी आर्य बाल विद्यालय का नवनिर्मित भवन प्रवेश समारोह उत्साह के साथ वैदिक यज्ञोपरान्त एक सन्यासी द्वारा सम्पन्न हुआ, सन्यासी जी ने बाल विद्यालय हेतु पांच हजार रुपये देने की घोषणा की। श्री वेद प्रकाश मन्त्री आर्यसमाज द्वारा धन्यवाद देने के उपरान्त मिष्ठान्न वितरण और जलपान के पश्चात सभा विसर्जित हुई।

आर्यमित्र में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एन० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ | घोषणा पत्र सं० ७/२८-१-८१

श्रावण शुक्ल ७, रविवार, संवत् २०४४ वि० दिनांक २ अगस्त १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

★

प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए.

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष ९०

अङ्क ३०

स्वागत ! नव राष्ट्रपति मा०रामास्वामी वेंकटरामन जी महोदय

२५ जुलाई को मध्यान्ह में भारतीय संसद भवन के विशाल केन्द्रीय कक्ष में श्री रामास्वामी वेंकट रामन ने भारत के नव निर्वाचित राष्ट्रपति के रूप मे भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश माम० श्री रघुनन्दन स्वरूप पाठक द्वारा शपथ ग्रहण की और भारत को आगामी पांच वर्षों तक दिशानिर्देश देने का कार्यभार स्वीकार किया । आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, मा०वेंकटरामन जी का सादर अभिनन्दन करती है और आशा करती है कि उनका कार्यकाल भारत के लिए एक स्वर्णिम काल होगा । मा० वेंकट रामन अर्थशास्त्र के योग्य विद्वान विधि विशेषज्ञ हैं और श्रमिक क्षेत्र से उनका सामाजिक जीवन प्रारम्भ हुआ है अतः देश के श्रमिक चाहे वे खेतो मे काम करते हों, कारखानों में काम करते हों, उनका हित वेंकट रामन जी के हाथों सुरक्षित रहेगा ।

निवर्तमान राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी ने भी राष्ट्र को विभिन्न संकटपूर्ण परिस्थितियों में दिशा निर्देश दिया । वह सिद्धान्त प्रिय व्यक्ति हैं । गुरुओ के आदर्श का अनुकरण करते हैं ।

अतः आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ज्ञानी जी को साधुवाद देती है और प्रभु से प्रार्थना करती है कि वह सदैव स्वस्थ रहे दीर्घायु प्राप्त करें तथा राष्ट्र को सहयोगी परामर्श देते रहें ।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

मेरठ दंगा पीड़ितों के सहायतार्थ कोष-स्थापना

विगत ६ महीनों से मेरठ में सुनियोजित रूप से साम्प्रदायिक उपद्रव हो रहे हैं । दो दिन की शांति और फिर बम विस्फोट, ऐसी स्थिति में मेरठ की जनता बहुत ही पीड़ित है, दुःखी है और कितनों के घर आग और मृत्यु की विभीषिका में नष्ट हो चुके हैं । व्यवसाय नष्ट है । श्रमिक और दैनिक मजदूरी के लोग कर्फ्यू की अवधि मे भूखों मरने लगते हैं कितनों को चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध नहीं हैं । इस सारी स्थिति में सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी अपने प्रयासभर पूर्ण रूप से सहायता का प्रबन्ध कर रहे हैं और ५०,००० रु० से ऊपर की धनराशि सेवा सहायता में व्यय हो चुकी है ।

मेरठ की वर्तमान स्थिति में वहां की जनता को अधिक सहानुभूति सेवा, सहायता, चिकित्सा और अन्न वस्त्र की प्राथमिक आवश्यकता है । अतः निश्चय किया गया है कि एक सहायता कोष स्थापित किया जाये जिसके आर्य बन्धुओं, उदार महानुभावों तथा आर्यसमाजों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हो । इस सहायता का वितरण दुःखी मानव मात्र के लिए होगा ।

आर्यसमाज गणेशगंज ने इस कार्य हेतु १००१) रु० दान दिया है और कोष की स्थापना का प्रारम्भ किया है । आशा है कि अन्य महानुभाव तथा संस्थाएं इस कोष में धन देकर इस कोष की वृद्धि करेंगी । इसका सेवा क्षेत्र समस्त प्रदेश और आवश्यकता पड़ने पर प्रदेश से बाहर भी हो सकता है ।

महानुभाव धनादेश, चेक अथवा नगद धन निम्न पते पर प्रेषित करें । आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सभा मन्त्री की इस अपील पर देश की आर्य जनता पूर्ण सहयोग प्रदान करेगी ।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री—आर्यसमाज गणेशगंज, लखनऊ

से आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ।।

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

आवश्यक सूचना

सभा की अन्तरङ्ग सभा का साधारण अधिवेशन रविवार दिनांक २-८-८७ को प्रातः १०-३० बजे नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ में होगा । विचारणीय विषयों की सूची सब पदाधिकारियों तथा सदस्यों को डाक से भेज दी गई है ।　　मनमोहन तिवारी

मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

सम्पादकीय

लखनऊ— श्रावण शुक्ल ७ सम्वत् २०४४ रविवार २ अगस्त १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

अग्नि परीक्षा

वर्तमान में हमारे देश की राजनैतिक स्थिति अनिश्चितता के दौर से गुजर रही है । कांग्रेस देश की प्राचीनतम एवं महानतम राजनैतिक संस्था है । इसका अतीत बलिदानों एवं त्याग के उच्च आदर्शों से भरा हुआ है । सदियों से पददलित, विदेशी आक्रान्ताओं से आक्रान्त, अपनी प्रिय मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने का गौरव इस संस्था को प्राप्त है । इसी के झण्डे के नीचे हमारे महामान्य पूर्वपुरुषों ने संगठित होकर तथा एक अजेय शक्ति के रूप में खड़े होकर आसेतु—हिमाचल फैले हुए क्रूर ब्रिटिश शासन का अन्त कर दिया था । आज कहां हैं उन पूर्व पुरुषों की आत्माएं, म० गांधी, सरदार पटेल, जवाहर लाल नेहरू, पुरुषोत्तमदास टंडन, सुभाषचन्द्र बोस जिनके दर्शन मात्र के लिये भारतीय जनमानस सड़कों पर उमड़ पड़ता था, एक आदेश मात्र पर अपने जीवन का सर्वस्व बलिदान करने को तैयार हो जाता था । उस समय की राजनीति में एकता, समता, समानता और बन्धुता का आदर्श देदीप्यमान हो रहा था । आरोपों—प्रत्यारोपों तथा आपसी कलह को कोई स्थान नहीं था । हो सकता है, उस समय भी आपसी मतभेद रहे हों, पर वे कभी अखबार की सुर्खियों में नहीं देखे गये । व्यवहार में मृदुता और शालीनता सदैव बनी रही । राष्ट्र की समस्याओं को मिलजुल कर सुलझाना उनका ध्येय था तभी तो वे अजेय शक्ति के रूप में संगठित हो सके, ऐसे शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य से लोहा ले सके, जन जन के प्यारे बन सके ।

मेरे देश के अग्रणी नेताओ !

वेद भगवान के शब्दों में "वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः" तुम राष्ट्र के सजग प्रहरी हो । पुरोहित—हो, राष्ट्र को आगे ले जाने वाले हो आज देश, चुनौतियों के घेरे में खड़ा हुआ है । आतंकवाद का ही संकट क्या कम था, देश की सम्पत्ति को विदेशों में भेजकर देश को आर्थिक दृष्टि से खोखला बना देने का संकट और उभर कर सामने आ गया । सामरिक दृष्टि से हमें चारों ओर से घेरने का प्रयास हो रहा है ऐसे समय में हमें आज अधिक सुसंगठित तथा सशक्त बनकर चुनौतियों का सामना करना है । आरोपों प्रत्यारोपों की नीति को छोड़कर केन्द्रीय नेतृत्व को तथा राजीव गांधी के हाथों को मजबूत करना पड़ेगा । केन्द्रीय नेतृत्व को भी निष्कासन, बहिष्कार और प्रताड़ना की नीति त्यागकर प्रेम और मिलन की गंगा बहानी होगी तभी देश को अस्थिर बनाने वाली चुनौतियों का सामना किया जा सकता है ।

देश के राजनैतिक क्षितिज पर इधर जो घटनाएं उभर कर आ रही हैं—वे बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण हैं । श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह, श्री मो० आरिफ खान, श्री विद्याचरण शुक्ल तथा श्री अरुण नेहरू को कांग्रेस से निष्कासित कर दिया गया है और कई स्थानों पर इन लोगों के साथ दुर्व्यवहार किये जाने की भी खबरें आई हैं जो चाटुकारों का ही कार्य है किसी उच्च नेता का संकेत नहीं हो सकता । ये सभी कांग्रेस के ही तो अंग हैं कांग्रेस के लिए इनका त्याग और बलिदान रहा है इनका राज-नीतिक जीवन कांग्रेस से संयुक्त है और निश्चित है कि भावी राजनीतिक जीवन में दृढ़ता तथा देश को सही निर्देश देने में राष्ट्रीय महासभा का ही हाथ रहेगा—ऐसा हमारा विश्वास है । आज स्वतन्त्र भारत की सर्वाधिक 'अग्नि-परीक्षा' की घड़ी हमारे सम्मुख है । एक सशक्त राष्ट्र पुरुष के रूप में खड़े होकर ही हम इस परीक्षा में सफल हो सकते हैं । "दल" की नीतियां तो पहिले ही निर्धारित हो चुकी हैं और वह हैं देश में समाजवादी लोकतांत्रिक आधार पर जन-जन का पूर्ण विकास । इन नीतियों से किसी भी सच्चे देशभक्त का विरोध हो ही नहीं सकता है क्योंकि देश के वृहतहित के प्रश्न पर सब एक साथ हैं ।

आर्थिक अपराधों में जो भी लिप्त है चाहे उसने जनशोषण करके धन एकत्र किया हो अथवा भारतीय धन को विदेशों मे अनियमित रूप से एकत्र कर कहीं जमा किया हो या सुरक्षा आयुधों की खरीद आदि में दलाल बनकर पैसा खाया हो या करवञ्चना की हो वह सब देश के प्रथम श्रेणी के शत्रु हैं । उनके विरुद्ध न्यायिक कार्यवाही करके दण्ड दिया जाये भले ही वह सामान्य व्यक्ति हो, किसी वर्ग विशेष अथवा संस्था विशेष से सम्बन्धित हो अथवा किसी उच्च नेता का मित्र होने का ढोंग दिखा रहा हो । हमारे युवा प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने आर्थिक अपराधों में लिप्त कहे जाने वाले उन सभी व्यक्तियों के विरुद्ध जांच के आदेश दे दिये हैं । यह उनका सराहनीय और निष्पक्ष कार्य है। कुछ लोग इसी बात को उछाल कर दल को छोड़ रहे हैं यह अशोभनीय है इससे संगठन की शक्ति क्षीण होने के साथ ही राष्ट्र की शक्ति भी क्षीण होगी । भारत के प्रधान मन्त्री चाहते हैं कि सभी देश भक्त एक स्वर से राष्ट्र हित में कार्य करें । स्वयं श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह ने जो एक सिद्धान्तप्रिय व्यक्ति हैं, किसी को भी पार्टी न छोड़ने का परामर्श दिया है ।

आर्यसमाज सदैव से राष्ट्र की एकता और अखण्डता का पोषक रहा है । आज भी वह अपने दायित्व से विमुख नहीं है और देश की वर्तमान स्थिति में आर्य समाज राष्ट्र नौका में एक कुशल नाविक की भूमिका का निर्वाह कर रहा है क्योंकि आर्यसमाज देश की सबसे बड़ी संस्था है जिसे सत्ता का मोह नहीं है और देश के उत्थान में जिसका मार्ग दर्शन स्वार्थ रहित है ।

अतः समस्त आर्य बन्धुओं को विघटनकारी तत्वों से संघर्ष लेना है और राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाना है क्योंकि आर्यसमाज ने 'राष्ट्रे जागृयाम' की शपथ ली है ।

मनमोहन तिवारी

अध्यात्म सुधा

सर्वाधार—ओम् नाम

[श्री यशपाल आर्य बंधु, आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद]

परम पिता परमात्मा के अनन्त नाम हैं। यह इसलिए कि उसके गुण, कर्म और स्वभाव भी अनन्त हैं। और उन अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव के द्योतक नाम भी अनन्त ही हैं। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के सौ नामों की व्याख्या करने के उपरान्त लिखा कि—'इनसे भिन्न परमात्मा के असंख्य नाम हैं क्योंकि जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव हैं, वैसे उसके अनन्त नाम भी हैं। उनमें से प्रत्येक गुण, कर्म, स्वभाव का एक एक नाम है। इससे ये मेरे लिखे नाम समुद्र के सामने बिन्दुवत् हैं क्योंकि वेदादि शास्त्रों में परमात्मा के असंख्य गुण, कर्म, स्वभाव व्याख्यात किये हैं।' ऋग्वेद में एक ऋचा आती है-'सहस्रधा महिमानः सहस्रं यावद् ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक्' (ऋ० १०-११४-८) इस में कहा गया है कि उस ईश्वर की सहस्रों महिमाएं हैं। उस अनन्त महिमाशाली ब्रह्म के उतने ही नाम हैं। जितनी वाक् की शक्तियां हैं।

ईश्वर के प्रत्येक नाम का अर्थ वही एक परमात्मा है जो सच्चिदानन्द आदि लक्षणों वाला है और जिसका वर्णन सभी वेदादि सत्य शास्त्र कर रहे हैं। प्रत्येक नाम उसी एक ब्रह्म का ही वाचक है और वही ब्रह्म ही प्रत्येक नाम का वाच्य है। इन नामों का शाब्दिक अर्थ पृथक्-पृथक् प्रतीयमान होने पर भी तात्पर्यार्थ वही एक अद्वितीय आदि-मूल परब्रह्म ही है। ये अनन्त नाम उसी एक ही के विशेषण हैं और वह अकेला इन सब नामों का विशेष्य है। ध्यान रहे कि विशेषणों के बाहुल्य से बहुत सारे नहीं हो जाते। एक ही विशेष्य में बहुत सारे विशेषण समाये रहते हैं। वेद में आया है कि 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' एक ही ईश्वर को मेधावी विद्वान् जन बहुत से नामों से पुकारते हैं। एक अन्य ऋचा बतलाती है कि—'यो देवानां नामधा एक एव' ऋ० १०–८२–३ अर्थात् वेदों के जितने नाम हैं, वे सब उसी एक ईश्वर में घटित होते हैं। क्योंकि 'सुपर्णं विप्राः' कवयो वचोभिरेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति' ऋ० १०-११४–५ अर्थात् अनेक कवि उस एक सुपर्ण का अपनी वाक् शक्ति से नाना रूपों मे वर्णन करते हैं। तात्पर्य यह कि ईश्वर के नाम अनेक होते हुए भी ईश्वर स्वयं एक और केवल एक ही है।

ईश्वर के अनन्त नाम होने पर भी उसका कोई अपना एक निज अथवा मुख्य नाम होना चाहिये। ऐसा नाम कि जिसमें उसके सारे नामों का सार समा जावे। वेदादि सत्य शास्त्रों तथा उपनिषदों तथा योग दर्शन मे उस नाम का भी वर्णन मिलता है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के मन्त्र संख्या १५ और १७ में तथा अध्याय २ के मन्त्र संख्या १३ में वह नाम 'ओम्' बताया गया है। यथा—ओम् खं ब्रह्म' तथा 'ओं प्रतिष्ठ' आदि। योग दर्शन १-२८ में प्रणव को ईश्वर का वाचक बताया है। यह प्रणव ओम् का ही प्रतीक है। कठोपनिषद् मे आया है कि—सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्तेपदं संग्रहेण ब्रवीमि ओम् इत्येतत्'। अर्थात् सारे वेद जिस पद का प्रतिपादन करते हैं, सारे तप साध्य रूप मे जिस पद का वर्णन करते हैं, जिस पद की इच्छा से तपी जन ब्रह्मचर्य धारण करते हैं, उस पद को मैं संक्षेप मे कहता हूं, वह पद 'ओ३म्' है। परमात्मा के जितने नाम हैं, 'ओ३म्' उन सब से उत्तम, प्रधान तथा श्रेष्ठ नाम है। यह बात नहीं कि अन्य नाम उत्तम या श्रेष्ठ नहीं किन्तु वे सर्व श्रेष्ठ अथवा सर्वोत्तम नहीं। सर्व श्रेष्ठ और सर्वोत्तम नाम तो 'ओम्' ही है।

यद्यपि तुलसी ने राम नाम के लिए कहा है कि—'राम सभी नामन्ह ते अधिका' तथापि यह बात राम नाम के लिए न होकर ओ३म् नाम पर ही घटती है। ओ३म् के अन्दर ही ऐसी विशेषता है कि वह अन्य सभी नामों से भारी पड़ता है। ओ३म् नाम इसलिए प्रधान तथा सर्वोत्तम हैं क्योंकि इससे केवल ईश्वर का ही बोध होता है, जबकि अग्नि, इन्द्र आदि से प्रकरणानुसार ईश्वर और सांसारिक नामों का भी बोध होता है। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द का कथन है कि 'ओ३म्' यह तो केवल परमात्मा का ही नाम है और अग्नि आदि नामों से परमेश्वर के ग्रहण में प्रकरण और विशेषण नियमकारक है।' तथा 'जो ईश्वर का ओंकार नाम है, तो पिता-पुत्र के सम्बन्ध के समान है और यह नाम ईश्वर को छोड़ के दूसरे अर्थ का वाची नहीं हो सकता। ईश्वर के जितने नाम हैं, उनमें ओंकार सबसे उत्तम है।'

'ओ३म्' के महत्व के विषय में ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथ में भी बड़ा सुन्दर वर्णन मिलता है। उसके अनुसार वेदों को तपाया गया। उन तपाये हुओं से तीन शुक्र उत्पन्न हुए ऋग्वेद से भूः, यजुर्वेद से भुवः और सामवेद से स्वः। फिर उन

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रभु का प्यारा ओम् नाम

प्रभु का प्यारा ओम् नाम,
वही सबका सहारा है ॥
दुख सुख में न घबराना,
वही (प्रभु) सबका अधारा है ॥

ओम् में तन्मय हो कर्म कर,
कभी किसी का अहित न कर।
ओम् को दिल मे बसा कर,
ओम् ही पालन हारा है ॥

सब जीव एक समान,
हर जीव पर दया कर।
तभी कृपा ओम् की होगी,
ओम् ही खेवन हारा है ॥

स्वधर्म स्वजाति की रक्षा में,
कभी भी आलस्य न कर,
'ब्रह्मानन्द ओम् गुणगान कर,
वही भक्तों को उद्धारा है ॥

ओम् ही कर्त्ता धर्त्ता है,
ओम् ही सबसे महान है।
चलते फिरते ओम् जपाकर,
ओम् ही सर्वस्व हमारा है।
प्रभु का प्यारा ओम् नाम।
वही सबका सहारा है ॥

—ब्रह्मानन्द जिज्ञासु अतरबद्व, मुजफ्फरपुर

सिद्धान्त विमर्श

सत्यार्थ प्रकाश में सृष्टि-विज्ञान की समीक्षा

(स्वामी मोक्षानन्द 'सरस्वती' "वैदिक प्रवक्ता" बाजना, मथुरा उ. प्र.)

आधुनिक युग में यदि किसी ऐसे सन्त का इतिहास लिखा जायेगा कि जिसने सृष्टिगत् प्रत्येक विषय पर वैज्ञानिक लेखनी से सर्वांगीण चतुर्मुखी रचनात्मक दिग्दर्शन दिया हो एवं अपने साहित्यिक सृजन से विश्व को सर्वाधिक विकासमान पथ की ओर आकृष्ट करके क्रान्तिकारी अतीत की ओर उन्मुखी होने के लिए विवश किया हो तो ऐसे महानतम युग पुरुष के रुप मे युग प्रवंतक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज को यशावली स्वाभाविक रूप से विश्व मानस पटल पर स्वयंमेव साक्षात् प्रकट हो जायेगी। इस साक्षात् दिव्यसत्यको समझनेके लिए उस परन्त्रता काल की बेड़ियों में जकड़े भारत एवं क्रूर-भयंकरतम संकीर्णताओं, एवं अज्ञानताओं पाखण्डों के प्रेरक सांप्रदायिक एवं तत्कालीन प्रबलतम रूप में प्रचालित मजहबी, पन्थों एवं मतों का अध्ययन करना आवश्यक है। इन सबको प्रबल चुनौतियों को,भूमिसात करते हुए कितने सुदृढ़तम रूप में विश्व को दिव्य सन्देश यही एक विचारणीय ऐतहासिक सत्य को जन्म देता है। एवं महर्षि दयानन्द को अधुनिक युग महोता युग प्रवंतक की सर्वोपरि ऐतिहासिक यशावली में रखेगा।

इस विश्व में एक धर्म एवं ईश्वर के नाम पर असंख्य मत, मजहब, पन्थ एवं सम्प्रदाय प्रचलित थे। सभी अपने-अपने को ईश्वरीय सिद्ध करने की धृष्टता करते हुए विश्व मानव पटल पर बुरी तरह छाये हुए थे। सभी की सीमा संकीर्ण अवैज्ञानिक मान्यताओं में जकड़ी हुई थी। निर्णायक सत्यान्वेशी शास्त्राथ-परम्परा का सर्वथा लोप हो चुका था। पूरा विश्व जीवन के वास्तविक पथ से सर्वथा अनभिज्ञ एवं विमुख हो चुका था। मांसाहार, शराब भोग-विलास को मजहबी एवं पंथाई पुस्तकों से जोड़कर मानवता को पतन के अन्धकूप में डाला जा रहा था। ऐसे विषम परिस्थितयों में महर्षि दयानन्द अवतरित हुए उन्होंने इस युग में निर्णायक सत्यान्वेक शास्त्रार्थ परम्परा को पुनर्जीवित किया एवं मानव जीवन की वास्तविक दिशा का दिग्दर्शन दिया। मत-मजहबियों को प्रबलतम वैदिक नाद से परास्त करके वैदिकता की ईश्वरीय अनादि धारा की ओर चिन्तन करने को बाध्य किया।

महर्षि दयानन्द ने युग की उन ज्वलन्त समस्याओं को ही विशेष प्रश्नगत् किया कि जिससे "विश्व" जीवन के वास्ताविक मूल्यों से भटका हुआ था। पुनर्जीवित अपनी शास्त्रार्थ परम्परा से उन्हीं प्रमुख जीवन-मूल प्रश्नों को ही जोड़ा। यथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा वेद परम्परानुरुप कृति-'सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास के उदाहरण प्रस्तुत हैं। इस अष्टम समुल्लास में प्रमुख रुप से निम्न जीवन मूल्यों का दिग्दर्शन कराया गया है–

(१) यह विश्व एवं जगत् क्या है ?

'जगत् एवं विश्व'-शब्दों का शाब्दिक अर्थ-उत्पन्न होकर पुनः अपने उन्ही जनक पदार्थों में तत्वों में बदल जाना अथवा रुपान्तरित हो जाना कि जिनके योग से इस प्रकट स्थूल जगत की रचना हुयी होती है। इससे सिद्ध होता है कि वर्तमान जगत् की रचना करने वाली सामग्री (उपादान कारण-प्रकृति तत्व) सृष्टि पूर्व अवश्य अपनी स्वाभाविक मूल सत्ता के रुप में वर्तमान रही होगी जैसा कि प्रत्येक रचना से पूर्व कच्चा माल उपलब्ध रहता है। बढ़ाई 'लकड़ी" को काट-छाटकर तख्त, मेज, कुर्सी आदि बनाता हैं किन्तु 'लकड़ी' को नहीं बनाता। यदि लकड़ी रुपी कच्चा माल (उपादान कारण) पहले से उपलब्ध न होते तो बढ़ई मेज, कुर्सी आदि सामान नहीं बना पाता। ठीक इसी प्रकार प्रकृति के मूल में लकड़ी उत्पन्न करने वाले बीज न होते तो लकड़ी भी न बनती। वृक्षों के बीज प्रकृति में और वृक्षों से 'लकड़ी'-से मेज, कुर्सी, तख्त आदि बनना किन्तु कालान्तर में यहां लकड़ी के सामान अपने उसी जनक प्रकृति तत्व में (सड़-गल, टूट फूट) पुनः रुपान्तरित मिट्टी हो जाते है। ठीक इसी प्रकार "विश्व व जगत (उत्पत्ति एवं लय (प्रलयादि) चक्र में चलता ही रहता है। अर्थात् इसकी रचना एवं प्रलय का आदि एवं अन्त नहीं है। विश्व की सृष्टि एवं लय का चक्र प्रवाह से अनादि है। इसीलिये इस सृष्टि को जगत् एवं विश्व के शाब्दिक रुपों में पुकारा जाता है (उपादान–कारण समीक्षा)।

(२) विश्व की रचना का कारण:–

कुछ अविवेकी मूढ़जनों का कथन है कि यादि ईश्वर जगत् न बनाता तो स्वयं ही ईश्वर निश्चिन्त रहता और असंख्य जीव–आत्माओं को जन्म मरण चक्र में पड़कर दुख न भोगना पड़ता। विचारणीय तथ्य तो यह कि प्रलय अवस्था में क्या सुख दुख की अनुभूति हो सकती है ? वह काल तो मूढ़वत् अचेतन अवस्था का कारावास (सुषप्ति व दुर्यावस्था) ही है। जीवात्मा का स्वभाव तो परतन्त्रता से छूट कर स्वतन्त्रता की ओर चलने का ही होता है। पूर्व सृष्टि के अनुसार कुछ आत्माओं को मौलिक (स्वतन्त्रता) मोक्ष का अधिकार इस वर्तमान सृष्टि से मिलने जा रहा है। एवं कुछ को विशेष पारितोषक (स्वर्ग) का अधिकार मिलना हो और अर्जीनियों के विचारों से ईश्वर सहमत, हो जाय एवं सृष्टि न करता तब ईश्वरीय न्यायकारी सत्ता पर दोष आ जाता अथवा नहीं ? जब कि ईश्वर स्वाभाव से माता–पिता आचार्य तुल्य सखा, बन्धु, पालक रक्षक एवं न्यायाधीश है। वह आत्माओं के मिलने वाले मोक्ष एवं स्वर्ग से वंचित किन आलस्य-प्रमाद ईर्ष्या-द्वेषादि से करेगा। यदि इसी प्रकार कुछ अनाधिकार चेष्टी आत्माओं को दण्ड इसी सृष्टि में मिलने का योग होवे और ईश्वर सृष्टि न करे तब द्वे.द्वण्ड.द्वे. वंचित आत्मायें दण्ड न पाने की दशा में ईश्वर न्यायकारी रह सकेगा ? चूंकि दण्ड का अर्थ बदला देना-लेना नहीं है वरन् केवल पाप की–अपराध की वृत्ति, दोष दूर करना मात्र है। अतः ईश्वर सृष्टि चक्र को अनादि रुप में अपनी स्वाभाविक दशा में न्याय, पालन आदि के कारणों अर्थात् आत्माओं के मौलिक स्वतंत्रता मोक्ष रुपी लक्ष्य प्राप्त करने हेतु सृष्टि–कर्ता है। ईश्वर की स्वाभाविक सत्ता तभी सार्थक एवं प्रकट हो सकती है कि जब वह अपने स्वभाव से ही आत्माओं के लिए सृष्टि धारण एवं पालन न्याय आदि व्यवस्था एवं प्रलय करता है क्योंकि सृष्टि के अभाव में किंचित न्याय आदि व्यवस्था का दोष ईश्वरीय सत्ता की दुर्बलता है। जगत् रचना का कारण आत्माओं के मौलिक लक्ष्य एवं स्वतंत्रता (मोक्ष) हित साधन है (साधारण कारण समीक्षा)।

(क्रमशः)

विचार-विमर्श

देश में बढ़ते सांप्रदायिक दंगे या गृहयुद्ध के संकेत

एक विवेचन

—श्री बिशन स्वरूप गोयल नई दिल्ली

इन दिनों देश में साम्प्रदायिक दंगे बुरी तरह से भड़क रहे हैं जिनमें हजारों बेगुनाह लोगों की जानें और करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट होती जा रही है। अभी तक तो ये दंगे दिल्ली और मेरठ तक ही सीमित थे किन्तु अब ये देश के अन्य भागों अलीगढ़, मुरादाबाद, तथा गुजरात एवं बड़ौदा आदि में फैलते जा रहे हैं। उधर पंजाब में राष्ट्राध्यक्ष शासन लागू हो जाने के बाद भी उग्रवादी अपनी गतिविधियों में संलग्न हैं और गोरखालैण्ड वाले भी उग्रवाद का रूप धारण कर रहे हैं। इन सबसे ऐसा लगता है कि जैसे ये दंगे साम्प्रदायिक न होकर इनसे देश में गृहयुद्ध की स्थिति पैदा कर अस्थिरता का वातावरण निर्मित किया जा रहा हो और यह सब कुछ सोची समझी साजिश हो।

आखिर इन दंगों के पीछे कौन-सी मनोवृत्ति काम कर रही है उसे हम सभी को खोजना होगा। वैसे तो यह दायित्व सरकार का है किन्तु जनता का योगदान भी इसमें अति आवश्यक है। जब तक हम उस मनोवृत्ति को खोजकर उसे पूरी तरह से समाप्त नहीं करेंगे तब तक ये दंगे इसी प्रकार भड़कते रहेंगे और देश के बेगुनाह लोग इसी तरह मारे जाते रहेंगे और करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट होती रहेगी। सरकार की शक्ति भी इन दंगों को रोकने में ही लगती रहेगी जो देश के विकास कार्यों में लगनी चाहिये। यदि इस स्थिति ने गृहयुद्ध का स्थान ले लिया तो पड़ोसी देश जो हमारे देश पर नजर लगायें बैठे हैं उसका अवश्य ही लाभ उठायेंगे। ऐसी स्थिति में वे हमारे देश पर आक्रमण भी कर सकते हैं और वे ही इन दंगों को गृहयुद्ध का रूप देने का प्रयास कर रहे हैं।

हमारी सरकार इन दंगों को रोकने और समाप्त करने में गत ४० सालों से अभी तक असफल है। इसका भी यही कारण है कि सरकार ने इन दंगों के पीछे कौन-सी मनोवृत्ति काम कर रही है इसे खोजने की चिन्ता ही नहीं की और न ही उस मनोवृत्ति को समाप्त करने का प्रयास किया इसके विपरीत ऐसी नीतियां अपनायीं जिनसे इन दंगों के पीछे काम करने वाली मनोवृत्ति को अधिक प्रोत्साहन ही मिला है। आओ हम इन दंगों के पीछे काम करने वाली मनोवृत्ति को खोजने का प्रयास करें ताकि उसे समाप्त किया जा सके और सरकार तथा जनता चैन की सांस ले सके।

वास्तव में इन दंगों के पीछे जो मनोवृत्ति काम कर रही है वह अलगाववादी अथवा पृथकतावादी है। इस मनोवृत्ति को बढ़ावा मिलने के तीन मुख्य कारण हैं।

१—हमारी धर्मनिरपेक्ष सरकार की अल्पसंख्यक समुदायों विशेषतः मुस्लिम सम्प्रदाय के प्रति अपनायी जाने वाली तुष्टीकरण की नीतियां।

२—हमारे देश के संविधान में अलगाववादी तथा पृथकतावादी तत्वों को अल्पमत के नाम पर प्रोत्साहन देने वाले प्रावधानों या मुद्दों को शामिल करना।

३—इस्लाम मजहब की पुस्तक कुरआन और कठमुल्लाओं की नेतागीरी की दुकानदारी।

हम सभी इस बात को जानते हैं कि १९४७ का बंटवारा स्पष्टतः सीधा मुस्लिम और हिन्दू का बंटवारा था क्योंकि मुसलमान न केवल हमारे साथ अपितु किसी भी गैर मुस्लिम के साथ बराबरी के आधार पर नहीं रह सकता और न ही वह मिलकर चल सकता है। इसी कारण उसने हमारे देश में अपनी जनसंख्या के अनुपात से अपने अलग हिस्से की मांग कर एक अलग देश, मुस्लिम देश बनाने की मांग कर दी और अंग्रेज शासकों ने उनकी पीठ थपथपा दी। बस भारत का बटवारा इस दो राष्ट्र सिद्धान्त पर हो गया। यदि मुसलमान हमारे साथ मिलकर रहना चाहते तो अलग देश मांगने का प्रश्न ही नहीं उठता और न ही देश का विभाजन होता। जब १९४६ में पाकिस्तान बनने के पक्ष और विपक्ष में मुसलमानों की राय लेने के लिये मतदान कराया गया उस समय कुछ उँगलियों पर गिने जाने वाले मुसलमानों को छोड़कर शेष सभी मुसलमानों ने पाकिस्तान बनाने के पक्ष में ही अपने मत दिये थे।

इसलिये जब यह निश्चित हो गया कि यहां के मुसलमान हमसे अलग होकर अपना अलग मुस्लिम देश बनाकर रहना चाहते हैं तो देश का बंटवारा हो गया जिसमें देश के २२ प्रतिशत मुसलमानों को इस देश की भूमि का ३० प्रतिशत के लगभग भाग काटकर दे दिया गया। जिन्नाह ने इस मिले अपने हिस्से को पाकिस्तान नाम देकर इसे इस्लामी राज्य घोषित कर दिया। उसी समय डा० अम्बेडकर ने पण्डित नेहरू और गांधीजी से कहा था कि यहां के सभी मुसलमानों ने अपना हिस्सा ले ही लिया है तो आबादी का तबादला कर लिया जाय और यहां के सभी मुसलमानों को पाकिस्तान भेज दिया जाय क्योंकि ये लोग हमारे साथ मिलकर रहना नहीं चाहते। उन्होंने यह भी कहा कि पाकिस्तान क्योंकि इस्लामी राज्य बन गया है इसलिए वहां के सभी हिन्दुओं को यहां हिन्दुस्थान में बुला लिया जाए क्योंकि वहां उनका भविष्य सुरक्षित नहीं रह सकता यह हमारा इतिहास बताता है। किन्तु उन्होंने डा० अम्बेडकर की बात को अनसुनी कर उस पर कोई अमल नहीं किया। न तो यहां से सारे मुसलमान ही पाकिस्तान भेजे और न ही वहां से सभी हिन्दुओं को यहां बुलाया। यही वह नींव थी जिसके कारण देश में निरन्तर साम्प्रदायिक दंगे भड़कते चले आ रहे हैं।

उस समय देश के २२ प्रतिशत मुसलमानों में से केवल १५ प्रतिशत मुसलमान ही पाकिस्तान भेजे गये शेष ७ प्रतिशत यहीं रहे जो अब बढ़कर लगभग १० या ११ प्रतिशत हो गये हैं। उन्हें यहां कई रूप में विशेष सुविधायें प्राप्त हैं परन्तु पाकिस्तान में जो हिन्दू अब न के बराबर ही हैं और जो शेष बचे हैं उन्हें भी समाप्त ही कर दिया जाएगा। वहां पर रहने वाला हिन्दू दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता है उसे वोट देने का अधिकार नहीं है, सरकारी नौकरी नहीं कर सकता।

जब १९४७ का बंटवारा स्पष्ट रूप से हिन्दू और मुसलमान का बंटवारा था तो पाकिस्तान देने के बाद शेष बचा खण्डित हिन्दुस्तान हिन्दुओं का ही हिस्सा था जब जिन्नाह ने अपने हिस्से पाकिस्तान को इस्लामी राज्य घोषित कर दिया था तो इसे भी उसी समय "हिन्दू राज्य" घोषित कर देना चाहिये था और "जैसे को तैसे" की नीति अपनानी चाहिये थी। यदि उस समय ऐसा किया गया होता तो आज जो देश में ये साम्प्रदायिक दंगे हो रहे हैं।

(क्रमशः)

धार्मिक

(५)

सुख शान्ति का मूलाधार धर्म ही है

धर्म के स्वरूप की पहचान करें
धर्म का पचम लक्षण– शौच

शौच–पवित्रता, भीतरी बाहरी पवित्रता, शारीरिक मानसिक पवित्रता ।

पवित्रता की निन्दा कोई नहीं करता स्वय वह पवित्र–हो या न हो । निश्चय ही जब उसकी निन्दा नहीं की जाती तो–वही ग्राह्य है ।

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मन सत्येन शुध्यति
विद्यातपोभ्या भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति

नीति के इस श्लोक के अनुसार शरीरशुद्धि के लिए जल अपेक्षित है, स्नान करके शरीर के मल की सफाई की जाती है । मन को शुद्ध करने के लिये सत्य की अपेक्षा होती है । असत्य व्यवहार असत्याचरण से मन अपवित्र, कलुषित–रहता है, वह धर्म से गिराता है । सत्य का सकल्प लेने से सारे मिथ्याचार नष्ट हो जाते हैं । मन सुदिशा पर चलने–लगता है । मानव जीवन की पवित्रता के लिए विद्या । वेद ज्ञान, विद्वानो सद्ग्रन्थो का सत्सग स्वाध्याय और उसको [तप] दृढ़ता से स्वीकारने का सकल्प, मार्ग में आने वाली रुकावटो को लाघता हुआ आगे बढ़ते जाने का प्रयत्न ही सहायक बनते हैं । वेद ज्ञान के बिना बुद्धि विकसित नहीं हो सकती ।

आज वेद को भूलने के कारण ही–बुद्धि कुबुद्धि बनकर (अशौच) अपवित्र मलिन होकर बड़े-बड़े धार्मिक राजनीतिक नेताओ को भी धर्म के विरुद्ध–अधर्म के प्रसार मे प्रेरित करती है ।

वेद ज्ञान के अभाव मे ही धर्म के सच्चे स्वरूप को बिना समझे अशौच के कारण, कुबुद्धि के कारण वे अधर्म का सहारा लेते और धर्म की निन्दा करते हैं । राष्ट्र को धर्म निरपेक्ष [धर्म रहित] बनाने का स्वाग रचते और अराजकता का जाने अनजाने में बीज बोते हैं ।

महाराज मनु द्वारा वर्णित धर्म के दस लक्षणो मे से इस पचम लक्षण शौच को स्वीकार करके हम अधर्म से परे हटकर–धर्म मार्ग के पथिक बन सकते हैं ।

हमे अपने शरीर को साफ सुथरा, नियमित, व्यवस्थित–आहार विहार की शुद्धता के द्वारा स्वस्थ बलिष्ठ रखने का उपक्रम करना चाहिये ।

मन की अन्तर की बुराइयो को, कलुष को साफ करने–के लिए विद्वानों की सगति करनी चाहिए, सद्ग्रन्थो का–ही स्वाध्याय करना चाहिए । अहँकार से परे हटकर विनम्रता की प्रतिमूर्ति बनकर जिज्ञासु भावना से श्रवण और फिर निदिध्यासन द्वारा अन्त करण की शुद्धि करना चाहिये ।

इस प्रकार बाह्य आभ्यन्तर शुचिता को धारण करके हम धर्म के सच्चे स्वरूप को स्वय पहचान करके उस पर चल सकेंगे और दूसरो को उसे बताने, उस पर चलाने मे समर्थ होकर–विश्व मे धर्म की स्थापना करके सुख शांति-समृद्धि बिखेरने में समर्थ हो सकेंगे ।

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द जैसा आदित्य ब्रह्मचारी, महान् योगी, सत्य का धुरन्धर विद्वान्, त्यागी, तपस्वी तथा [illegible] अनुपम महापुरुष आज तक ससार मे पैदा ही नहीं हुआ । ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त जितने महर्षि या महापुरुष इस ससार मे आये उनको वैदिक धर्म का प्रचार या प्रसार करने मे कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई । क्योंकि उस समय सम्पूर्ण विश्व मे वैदिक धर्म का ही प्रचार था । परन्तु महर्षि दयानन्द जिस समय ससार मे आये उस समय विश्व भर मे अगणित मत मतान्तरों का जाल बिछा हुआ था और वैदिक धर्म प्राय: लुप्त सा ही हो गया था । इन सब मत मतान्तरो का वेद द्वारा सत्यता के आधार पर युक्ति पूर्वक खण्डन करना और वैदिक धर्म तथा आर्य जाति को फिरसे जीवित करना अकेले महर्षि दयानन्द का ही काम था । अब सोचिये और विचारिये कि महर्षि ने इन मत मतान्तरो के कितने ग्रन्थ पढ़े होंगे जिनके द्वारा उन्होने उनके पाखण्ड की पोल खोली और वैदिक ज्ञान के प्रकाश से सारे विश्व को प्रकाशित किया । इससे पहले ससार मे इतने मत मतान्तरो के अनुयाइयो से टक्कर लेने का किसी महर्षि या महापुरुष को सौभाग्य ही प्राप्त नहीं हुआ ।

—श्री जगदीश शरण "शीतल" चांदपुर

वैदिक विवाह सम्पन्न

[१]

आर्य कुमार सभा गोण्डा के कार्यालय मन्त्री चि० बलवीर श्रीवास्तव का शुभ पाणिग्रहण सस्कार आयु० सन्तोष श्रीवास्तव पुत्री श्री अवल कुमार श्रीवास्तव निवासी बाराबकी के साथ पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार श्री प्रताप कुमार एव श्री बद्रीप्रसाद आर्य के पौरोहित्य मे दिनाक ५-७-८७ को सम्पन्न हुआ ।

[२]

बलिया जनपद के स्वर्गीय आर्य सन्यासी स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के दामाद श्री ईश्वर चन्द्र श्रीवास्तव (अध्यापक टाउन डिग्री कालेज बलिया) की कन्या गायत्री कुमारी का शुभ विवाह गत १० जून ८७ को वैदिक रीत्यानुसार बलिया जनपद के ग्राम सवन के प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री दयाशंकर लाल के सुपुत्र श्री आशा प्रसाद के साथ समारोह सम्पन्न हुआ । उक्त सस्कार बलिया जिला आर्य सभा के प्रधान व आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतरग सदस्य श्री सुदर्शनसिह आर्य द्वारा सम्पन्न हुआ ।

पश्चिम उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल का प्रान्तीय शिविर सम्पन्न

अतरौली, अलीगढ़ में २० जून ८७ से ३० जून ८७ तक पश्चिम उ० प्र० आर्य वीर दल का शिविर ३० जून को सम्पन्न हुआ । दीक्षान्त में सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक प० बाल दिवाकर जी हस (दिल्ली) उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय सचालक माननीय डा० बाल कृष्ण जी आर्य विकल [सिकन्द्राबाद] ने भाग लिया । श्री विकल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में युवकों को राष्ट्रहित में जागरूक रहने की अपील की ।

प्रधान सचालक हस जी ने आर्य वीरों को आशीर्वाद दिया तथा उप प्रधान सचालक श्री आचार्य डा० देवव्रत जी ने भी आर्य वीरों को सदेश दिया । शिविर में १७० शिक्षार्थी आर्य वीरों ने भाग लिया ।

दक्षिण भारत में आर्य समाज के बढ़ते कदम

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती तथा पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् का तूफानी दौरा

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने २७ जून, १९८७ से लगातार ४ जुलाई ८७ तक दक्षिण भारत का तूफानी दौरा किया। आपके साथ सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् भी थे।

आर्य समाज मद्रास के प्रधान श्री जयदेव जी व आर्य शिक्षण संस्थाओं के महामंत्री श्री रवि मल्होत्रा व अनेक आर्य बंधुओं ने हार्दिक स्वागत किया। श्री स्वामी जी एवं श्री वन्दे मातरम् जी ने मद्रास म आर्य समाज के तत्वावधान में संचालित शिक्षण संस्थाओं का निरीक्षण किया। स्वामी जी ने वहां अनेकों कार्यकर्ताओं से भेंट की व उन्हें आर्य समाज के कार्यों को और आगे बढ़ाने की प्रेरणा की।

२७ जून को श्री स्वामी जी व वन्देमातरम् जी मदुराई विमान से चलकर उतरे वहां स्वामी जी का स्वागत सारे तामिलनाडु से वैदिक धर्म की शिक्षा प्राप्त करने ४ दिवसीय शिविर में भाग लेने आए आर्य बंधुओं ने ओ३म् ध्वज को फहराते हुए किया। इस शिविर का संचालन दक्षिण भारतीय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संयोजक श्री एम० नारायण स्वामी वानप्रस्थ द्वारा किया गया था। मदुराई समाज के प्रधान जी व मंत्री तथा प्रो० सुमति नन्दन जी, श्री पाण्डुरंगराव मंत्री आर्य समाज सेन्ट्रल मद्रास के ब्रह्मचारी राजगोपाल का पूर्ण सहयोग प्राप्त था।

सायंकाल की सार्वजनिक सभा में श्रद्धेय स्वामी जी ने देश की वर्तमान परिस्थितियों पर विशेष प्रकाश डाला। हिन्दू समाज किस प्रकार घोर संकटों में ग्रस्त है इसकी चर्चा करते हुए स्वामी जी ने हिन्दुओं से अपील की कि वे आर्य समाज के झण्डे के नीचे संगठित होकर ही अपनी रक्षा कर सकते हैं।

देश में अलगाववादी व देश द्रोही शक्तियां पूरे जोर से सिर उठा रही हैं, अतः आज हिन्दुओं के संगठन की परम आवश्यकता है। आर्य समाज ने हिन्दुओं की हर संकट में जान हथेली पर रखकर सेवाएं की हैं। श्री वन्देमातरम् जी ने कहा कि, "धर्म निरपेक्षवाद का सहारा लेकर सरकार अल्पसंख्यकों को सिरपर चढ़ारही है। चाहिए यह था कि देश में ऐसा वातावरण बनाया जाता कि सभी धर्मों के लोग अन्य धर्मवालों से बुद्धि पूर्वक धर्म चर्चा करके ऐसे समाज का निर्माण करते जो सत्यान्वेषक और मानवतावादी होता। सच्ची राष्ट्रीयता पैदा करने का यही एक मात्र श्रेष्ठ मार्ग था जिसे महर्षि दयानन्द ने अपनाया था आज भी आर्य समाज उसी श्रेष्ठ मार्ग का अनुकरण व प्रचार करता है"। सभा को मदुराई के भूतपूर्व मेयर श्री बालकृष्ण, हैदराबाद के भू० पू० मेयर श्री बी० किशनलाल ने भी संबोधित किया।

मदुराई से श्री स्वामी जी पालयोली गए वहां शुद्ध हुए हरिजनों ने स्वामी जी का हार्दिक अभिनन्दन किया। वहां से श्री स्वामी जी मीनाक्षीपुरम पहुंचे जहां उन्होंने सार्वदेशिक सभा द्वारा संचालित शिक्षा संस्थाओं एवं निर्माणाधीन आर्य समाज मंदिर व यज्ञशाला का निरीक्षण किया। विद्यार्थियों और अध्यापकों ने श्री स्वामी जी का अभिनन्दन किया तथा हिन्दू जाति के अस्तित्व को ही समाप्त करने वाले घोर षड्यंत्रों से हिन्दुओं को बचाने पर स्वामी जी का हार्दिक धन्यवाद किया। आर्य समाज मीनाक्षीपुरम के श्री अनन्तराम सेलम एवं रामचन्द्र वेदर तथा अन्य सदस्यों ने श्री स्वामी जी का हार्दिक स्वागत किया। वहां से श्री स्वामी जी तिरुनावल्ली ग्राम गए वहां श्री स्वामी जी ने दयानन्द वैदिक गुरुकुल की आधारशिला रखी। गुरुकल के लिए एक भूपति श्री बी० रामचन्द्रन ने भूमि प्रदान की है। इसके साथ ही वहां एक महर्षि दयानन्द कलोनी का भी विकास किया जायगा। श्री स्वामी जी ने भारतीय विद्या भवन के संस्कृत परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए। इस अवसर पर श्री लक्ष्मणन् एवं श्री बी० रामचन्द्रम ने समारोह को सम्बोधित किया।

मद्रास लौटकर स्वामी जी ने एक जौलाई ८७ को डी० ए० वी० हाई स्कूल के छात्रों और अध्यापकों द्वारा अयोजित विशेष यज्ञ समारोह में भाग लिया था। स्वामी जी ने विद्यार्थियों और अध्यापकों को वैदिक संस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न कराने के लिए प्रेरणात्मक उद्बोधन दिया। २ जुलाई को स्वामी जी ने हैदराबाद लौटकर विनायक भवन में कार्यकर्ताओं की एक बड़ी सभा को सम्बोधित किया जिसकी अध्यक्षता हैदराबाद सभा के प्रधान श्री रामचन्द्र राव कल्याणी ने की।

वैदिक विवाह सम्पन्न

आर्य समाज छवि नाथ खेड़ा पोस्ट-मोहम्मदपुर जनपद-उन्नाव के मन्त्री श्री राम शंकर यादव की सुपुत्री आयु० कु० कमलेश का पाणि ग्रहण संस्कार बोधापुर निवासी श्री सीता राम यादव के सुपुत्र चिरंजीवी बाल गोविन्द यादव के साथ दिनांक ५-६-८७ ई० को सम्पन्न हुआ आचार्य शिवदास शास्त्री ने पूर्ण वैदिक रीति से विवाह संस्कार कराया।

"ईसाईयों के गढ़ जशपुर क्षेत्र में शुद्धि चक्र"

दिनांक २३ मई से २५ मई ८७ तक मध्य-प्रदेश के देवगढ़ (सरगुजा) एवं लैलूंगा (रायगढ़) में वेद परायण महायज्ञ एवं शुद्धि यज्ञ का आयोजन समारोह के साथ माता कौशल्या देवी प्रधाना आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य-प्रदेश की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इन दोनों स्थानों पर ६५० से अधिक उराव जाति के आदिवासी जो ईसाइयत को ग्रहण कर चुके थे। वे पुनः हिन्दु (आर्य) धर्म में दीक्षित हुए। इन समारोहों से प्रभावित होकर और हजारों ईसाई भी तैयार हो गये।

इस कार्यक्रम का आयोजन श्री स्वामी धर्मानन्द जी प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रेरणा एवं प्रयत्न से हुआ। इस अवसर श्री स्वामी जी के साथ श्री विशिकेशन शास्त्री श्री पं० देशपाण्डे जी, श्री सेवकराम जो आदि विद्वान् भी उपस्थित रहे। पत्थल गांव क्षेत्र के आर्य बन्धुओं का सहयोग एवं प्रयत्न इस कार्य में अति प्रशंसनीय रहा।

सर्वाधार–'ओम्' नाम

[पृष्ठ ३ का शेष]

तीनों को तपाया गया, उन तपाये हुओं से तीन वर्ण उत्पन्न हुए, अकार, उकार, और मकार, इन तीनों को इकट्ठा किया गया, तब 'ओ३म्' यह शब्द बना। ओ३म् नाम इसलिए भी सर्वोत्तम है कि इस एक नाम में ईश्वर के सभी नामों के अर्थों का बोध हो जाता है। इसमें महर्षि का निम्न वाक्य प्रमाण है। 'जो अकार, उकार, मकार के योग से 'ओ३म्' यह अक्षर सिद्ध हुआ है, तो यह परमेश्वर के सब नामों में उत्तम नाम है, जिसमें सब नामों के अर्थ आ जाते हैं।' (पंचमहायज्ञ विधि) इसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश में भी महर्षि लिखते हैं कि–'ओ३म् यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है क्योंकि इसमें जो अ, उ, और म् तीन अक्षर मिलकर एक 'ओ३म्' समुदाय हुआ है इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं, जैसे अकार से विराट अग्नि और विश्वादि, उकार से हिरण्यगर्भ वायु और तैजसादि और मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्य शास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर ही के हैं।'

'ओ३म्' नाम ऐसा सर्वोत्कृष्ट है कि इससे परमेश्वर के सभी गुणों का समावेश हुआ है। महर्षि कृत उपदेश मंजरी में स्पष्ट उल्लेख है कि–'ओ३म्' यह ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट नाम है क्योंकि इसमें उसके सब गुणों का समावेश है।' ईश्वर का इस ओ३म् नाम जैसा पूर्ण तथा उत्तम नाम अन्य कोई नहीं। इस ओ३म् नाम के साथ किसी अन्य विशेषण लगाने की आवश्यकता ही नहीं रहती क्योंकि इस एक नाम में ईश्वर के सभी विशेषण समाविष्ट हैं। छन्दोपनिषद १–१–१–३ में कहा गया है कि प्रणवोपासक को परमानन्द की प्राप्ति होती है क्योंकि 'स एव रसानां रसतमः' यह प्रणव रसों का भी रस है। वेद में ओ३म् को अक्षर कहा गया है क्योंकि वह अविनाशी है। संसार की समस्त वस्तुयें नाशवान्, अल्प एवं अपूर्ण हैं, केवल ओ३म् पद ही पूर्ण है, परम है और अपरिवर्तनशील तथा अविनाशी है। इससे परे और अधिक अन्य कोई पद नहीं।

ईश्वर के जितने भी नाम हैं, ओ३म् उन सब में सरल और सुवाच्य है। अ, उ तथा म् तीनों का उच्चारण अनपढ़ और महामूर्ख तो क्या तुतले और गूंगे तक भी सरलता से कर सकते हैं। जबकि अन्य नामों का शुद्ध उच्चारण भी विभिन्न भाषा-भाषियों से कठिन होता है। छोटे तुतलाते बच्चे राम कृष्ण आदि तथाकथित नामों का उच्चारण शुद्ध रूप से नहीं कर सकते। जबकि बहुत से ऐसे व्यक्ति भी हैं जो कि 'शिव' और 'शंकर' के स्थान पर 'सिव' और 'संकर' ही उच्चारण कर पाते हैं। अंग्रेज और फ्रेंच भाषा-भाषी लोग खुदा का उच्चारण नहीं कर सकते क्योंकि उनकी भाषा में 'ख' है ही नहीं। पर ये सब 'ओ३म्' का उच्चारण अति सरलता से कर सकते हैं।

वेद मन्त्र बोलने से पूर्व जिस नाम के उच्चारण का शास्त्रों में विधान है, वह ओंकार के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। ओंकारः पूर्वमुच्चार्यस्ततो वेदमधीयते। अर्थात् ओंकार के उच्चारण के पश्चात् ही वेद मन्त्र के पाठ का विधान है। इसीसे जाना जाता है कि ओंकार ही परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है। इस नाम की महत्ता एवं महिमा को देखकर ही कठोपनिषद् ने कहा कि–'एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम्। एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।' (२-१७) अर्थात् इस ओ३म् नाम का आलम्बन ही श्रेष्ठ है, यही आलम्बन उत्कृष्ट है। इस आलम्बन को जान के ही ब्रह्मलोक की महिमा को प्राप्त किया जाता है।

वस्तुतः ओ३म् नाम निर्बलों का बल है, असहायों का सहारा है, अनाथों का नाथ है, निराश्रितों का आश्रय है। भवसिंधु पार करने की अद्भुत अनोखी नौका है। भवबंधन काटने का दिव्य अस्त्र है। इसी एक नाम के सहारे भवसिंधु पार किया जा सकता है, किन्तु शर्त यह है कि इसका जप अर्थ पूर्वक किया जाय और अपने जीवन को भी तदनुकूल ढालने का प्रयत्न किया जाय।

यह विष–वमन

यह विष–वमन देश में होता,
बड़ा भयानक है भाई!
दुष्प्रभाव इसका हम सबको
दिन–दिन देता दिखलाई!
कितने विधर्मियों के नेता
धन विदेश से हैं पाते।
इसीलिये तो यहां देश में
दुष्ट अमंगल चिल्लाते।
बीज फूट का बोते हैं वे,
घृणा–वैर हैं फैलाते।
जनता को वे खून–खराबे
की बातें हैं बतलाते।
इन पर रोक लगानी होगी,
बात बढ़ चुकी है भाई!
यह विष–वमन देश में होता,
बड़ा भयानक है भाई!
क्या बहरे शासन को यह सब,
नहीं सुनाई पड़ता है?
आंखें रहते भी क्या अंधा;
नहीं दिखाई पड़ता है?
दिन–दिन हालत बिगड़ रही है;
जनता का दुःख बढ़ता है!
शान्ति–व्यवस्था के दुश्मन को
शासन क्यों न पकड़ता है?
उनकी हिम्मत बढ़ती जाती;
गड़बड़ करते जाते हैं!
खुद ही झगड़ा करवा देते,
खुद ही शोर, मचाते हैं!
मातृभूमि को 'डाइन' कहते,
उनको शर्म नहीं आती!
ऊल–जलूल बका करने में
जीभ न उनकी जल जाती!
उन पर रोक नहीं लगाती है;
हिम्मत है बढ़ती जाती।
भय तो जैसे उन्हें न बिल्कुल;
शान्ति – व्यवस्था डर जाती!
उनको क्यों न पकड़ता शासन,
जो जनता को भड़काते?
उल्टा–पुल्टा भाषण देकर
जो दंगे हैं करवाते?
अब विष दन्त तोड़ने होंगे,
नहीं किसी को डस पावें!
मातृ भूमि में यहां अराजकता
न और वे फैलावें!

—जगपालसिंह 'मयंक' कानपुर

यात्रा विवरण

राष्ट्र व धर्म-रक्षा अभियान दल की उत्तराखण्ड–यात्रा

स्वामी देवमुनि परिव्राजक अध्यक्ष–वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

४ मई, १९८७ को चन्दौसी–हरिद्वार सवारी गाड़ी से नजीबाबाद से प्रस्थान कर हमारा दल हरिद्वार पहुंचा। हरिद्वार आर्य समाज मन्दिर के प्रबन्धक श्री देवेन्द्र जी शास्त्री ने हमारे दल का समुचित आतिथ्य किया। सायंकाल आर्य समाज की प्रधाना श्री माता सन्तोष रंगन भी आकर हमें मिली।

५ मई, को प्रातः ८ बजे हम लोग हरिद्वार बस अड्डे पहुंचे तो "गढ़वाल मोटर आनर्स यूनियन की बस संख्या १०८६ देव प्रयाग जाने को तैयार खड़ी थी। बस में सवार हुए तो देखा कि ड्राइवर की सीट के पीछे और समस्त यात्रियों की दृष्टि के समक्ष महर्षि दयानन्द का चित्र लगा है और उसके बराबर में गायत्री मन्त्र लिखा है। हमारे दल के सदस्य रामचन्द्र शर्मा भजनोपदेशक ने बताया कि ड्राइवर चढ़ने की खिड़की पर लिखा है, कि "पहले दयानन्द की जय बोलो, पीछे खिड़की खोलो। "हमने देखा कि ड्राइवर पार्वत्य व्यक्ति है तथा बस भी उसी क्षेत्र के निवासी की है। इससे हमें प्रसन्नता तो हुयी ही साथ ही हमारा मनोबल भी बढ़ा क्योंकि अभी तक हमने यही सुन रक्खा था कि उधर आर्य समाजी कोई नहीं है।

मध्यान्ह। बजकर तीस मिनट पर हमारी बस देव प्रयाग पहुंची हम लोगो ने काली कमलीवाले की धर्मशाला में बसेरा किया और तुरन्त ही पुस्तकें लेकर वितरण के लिये निकल पड़े। पर साहित्य बाँटते तथा लोगों से बात लाप द्वारा सम्पर्क कर अपनी रात्री की सभा सूचना देते हुए घूमे। ९ से ११ बजे तक रात्री को काली कमली वाले की धर्म शाला में ही सभा हुई।

अगली प्रातः श्री भगवत दयाल जी कोठीवाल मिलने आये। आप देवप्रयाग में कालिज प्रवक्ता है। उन्होने हमसे कुछ पुस्तकें ली। 'हिन्दू नहीं आर्य, वर्ण जन्म से नहीं अपितु गुणकर्म से, आर्य समाज क्या है? शराबबन्दी क्यों? तथा महान् हिन्दू जाति विनाश के कगार पर" आदि पुस्तकें वितरणार्थ हमारे साथ थीं। सत्यार्थ प्रकाश का भी एक बड़ा पुलन्दा हमारे पास था। अन्य पुस्तकों के साथ जब सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति मै उन्हे देने लगा तो कोठीवाल जी बोले "सत्यार्थ प्रकाश तो मेरे पास है। मैंने उनसे उसे ध्यानपूर्वक पढ़ने की मांग की उन्होंने वचन दिया।

सवा ८ बजे हम जामणीखाल के लिये रवाना हुए। ११ बजे जामणीखाल पहुंचे। सहारनपुर जनपद निवासी श्री मास्टर सुरेश जी आर्य जामणीखाल बस अड्डे के पास ही रहते हैं गत लगभग एक वर्ष से मेरा उनसे पत्र-व्यवहार चल रहा था और वितरण करने को पुस्तकें भी उनको निरन्तर भेजी जा रही थी। उनके पत्र-व्यवहार द्वारा मार्ग का निश्चय करके ही कार्यक्रम बनाया था। उन्हें हमारे पहुंचने की पूर्व सूचना थी, साक्षात्कार इसके पहले कभी नहीं हुआ था। हमारे पहुंचने के समय वह बस अड्डे पर ही मिले और हमें अपने साथ ले गये। मध्यान्तर जामणीखाल के बेसिक विद्यालय के सामने मैदान में सभा हुयी। यद्यपि ग्राम की आबादी स्वल्प ही है किन्तु उस छोटी सी आबादी में उपस्थिति आशा से अधिक थी।

रात्री को जरौला ग्राम में सभा हुयी। जामणीखाल की सभा समाप्त करते ही हम लोग जरौला के लिये चल पड़े। आधा किलोमीटर सड़क पर चलने के पश्चात् शेष मार्ग पर निरन्तर नीचे और नीचे गहरी तथा तंग घाटी में बसे जरौला ग्राम पहुंचे। रात्री को वहां सभा हुयी।

जरौला में जिनके श्रीगृह पर हम लोग ठहरे थे, वह ठाकुर श्री बलबीर सिंह जी बड़ी ही आध्यात्मिक प्रवृत्ति के युवक हैं। जब तक सभा चली, वह कर्तव्यपरायण स्वयं सेवक की भांति खड़े ही रहे। प्रातःकाल जामणीखाल को चलते समय अन्य पुस्तको के साथ एक प्रति सत्यार्थ प्रकाश की भी उन्हें भेंट की।

उस दिन ७ मई थी, जामणीखाल आकर मध्यान्ह भोजनोपरान्त विश्राम किया और लगभग ४ बजे सभा प्रारम्भ हुई किन्तु कुछ मिनट बाद ही वर्षा के कारण सभा समाप्त हो गयी।

८ मई को भी प्रातः से ही वर्षा होती रही। मध्यान्तर फिर सभा हुयी। ९ और १० मई को भाषण नहीं हो सके। हां, अपरान्ह ९ मई को हिण्डोलाखाल, जामणीखाल से ८ किलोमीटर दूर सार्वजनक सभा में प्रचार तथा साहित्य वितरण हुआ और इसी प्रकार जामणीखाल से तीन किलोमीटर दूर रोडधार में १० मई को सार्वजनिक सभा में भाषण तथा साहित्य वितरण हुआ। कालिजो के प्रधानाचार्यों को अन्य साहित्य के साथ-साथ दो-दो प्रतियाँ सत्यार्थ प्रकाश की कालिजों के पुस्तकालयों के लिये भेंट की गयी।

६ मई से १० मई तक मास्टर श्री सुरेश आर्य ने श्रद्धा से सम्पूर्ण व्यवस्था की मास्टर सुरेश जी का भक्त एक निर्धन युवक सोहन सिंह है, खोखे में छोटी-सी चाय की दुकान उसने अभी कुछ दिन पहले आरम्भ की है। पितृविहीनावस्था मे माता तथा छोटे भाई-बहनों का पालन कर रहा है। हम लोगों की चाय की व्यवस्था वही करता था, मास्टरजी से उसने चाय का दायित्व अपने ऊपर ले लिया था। और अति श्रद्धा से आतिथ्य करता था। मास्टर सुरेश जी वहां मांस और शराब के विरुद्ध भी प्रचार करते हैं। धर्म-प्रचार तो उन्होने अपने कार्यक्रम का अनिवार्य अंग बना रखा है। उनके इन सुधार कार्यों और धर्म प्रचार के कारण लोग उन्हें "गुरुजी" कहकर पुकारते है।

११ मई को प्रातःकाल जब हमारा दल टिहरी जाने को तैयार हो रहा था तो मास्टरजी कमरे में आये और भावुकतापूर्ण मुखाकृति बनाते हुए बोले, "मै रिवाज पूरा कर रहा हूं।"

११ मई को प्रातः ८ बजे हमारा दल टिहरी के लिये चल दिया। १० बजे हम लोग टिहरी पहुंचे। केवल २० किलोमीटर की दुर्गम्य यात्रा बस ने दो घन्टे में पूरी की। श्री महावीर प्रसाद गैरोला एडवोकेट बस अड्डे के निकट ही "रीवर-व्यू" होटल में हमारे लिये कमरे पहले ही सुरक्षित कराये हुए थे। उत्तम अतिथ्य किया।

ठीक पांच बजे आर्य समाज मन्दिर में सभा हुयी। सभा में नगर के प्रतिष्ठित, शिक्षित राजकीय अधिकारी आदि उपस्थित थे। दो घन्टे कार्यक्रम चला। वर्षा के कारण सभा नहीं हो सकी। वर्षाधिक्य से आगे के सारे यात्रा कार्यक्रम को स्थगित करने का निश्चय किया। और हम वापसी के लिए बस स्टेशन पहुंच गये और ९ बजे चलकर लगभग १ बजे हम हरिद्वार बस अड्डे पर पहुंच गये तथा हरिद्वार से ट्रेन द्वारा सायंकाल ६ बजे नजीबाबाद आ गये।

कार्यक्रम स्थगन की सभी स्थानों को सूचना दे दी गयी अब वर्षा-कालोपरान्त अक्तूबर मास में आने का कार्यक्रम निश्चित कर दिया गया है। आर्य समाज के उस क्षेत्र में प्रचार से भारत की यह सीमायें निश्चित रूपेण सुरक्षित होगी।

हमारी इस यात्रा से उस क्षेत्र के लोगों में सत्यार्थ प्रकाश के प्रति रुचि उत्पन्न हुई है। जामणीखाल से मास्टर सुरेश आर्य ने उन सभी पुस्तकों की पांच-पांच प्रतियाँ भेजने का मांग पत्र भेजा जो हम वहां वितरित कर आये थे। साथ ही सत्यार्थ प्रकाश की भी पांच प्रतियां मांगी।



कर्म मार्ग ही श्रेष्ठ है

[श्री प्रताप चन्द मन्त्री आर्य समाज साकेत (मेरठ)]

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।
एवं त्वयि न चेतो अस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥
[यजु० ४०/२]

अर्थात तू इस संसार में शुभ कर्म करता हुआ सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर।

केवल शुष्क ज्ञान या निरीह शुभ संकल्पों से मनुष्य अपने जीवन को सफल नहीं बना सकता। उसकी वास्तविकता की परीक्षा कर्म की कसौटी पर ही हो सकती है इसी सिद्धांत का प्रतिपादन नीचे के पद्य में किया गया है—

नैव चिन्तन मात्रेण कार्यं सिध्यति किंचन ।
श्रेष्ठत्वं कर्म मार्गस्य श्रुतौ तस्माद्विधीयते ॥

केवल सोचने मात्र से ही कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है इसलिए ऊपर दी हुई श्रुति में मनुष्य के लिए कर्म मार्ग के श्रेष्ठत्व का विधान किया गया है।

हम अपने कर्म शील जीवन के महत्व को समझें और दीनता के भाव को दूर रखते हुए सर्वदा उन्नति पथ पर अग्रसर रहें। मनुष्य अपने मनुष्यत्व की महत्ता का अनुभव नहीं करता है। उसकी महत्ता के मूल में उसकी यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है जिसके कारण वह सदा अपनी वर्तमान स्थिति से ऊपर उठना चाहता है। उसकी इस स्वाभाविक प्रगतिशीलता के क्षेत्र का विस्तार अनन्त है। सर्व शक्तिमान परमेश्वर ने उसमें ऐसी योग्यता और शक्ति दी है जिससे वह सर्वदा सर्वांगीण उन्नति करता हुआ महत्व एवं परमपद को प्राप्त कर सकता है।

मनुष्य जीवन ईश्वर की महान अनुकम्पा का प्रत्यक्ष प्रमाण बनकर मानव प्राणी को उपलब्ध हुआ है। यह अद्भुत अनुपम और असाधारण है। यह दिव्य और महान है। इसके अन्तराल मे जो सम्भावनायें एवं सिद्धियां भरी पड़ी हैं उन्हें देखते हुए रत्नाकर कहने में संकोच नहीं होना चाहिए। प्रगति का इतिहास साक्षी है कि जिसने भी इस जीवन सम्पदा का सुनियोजित उपयोग किया है वे एतिहासिक महामानवों की पंक्ति में जा खड़े हुए।

मनुष्य जीवन में जिसने भी तत्परता और सजगता अपना कर अभीष्ट दिशा में साहसिक प्रगति की है वे अधिकतम सर्वांगीण उन्नति कर गये।

अभीष्ट की प्राप्ति के लिए जीवन का श्रेष्ठतम सदुपयोग करने की व्यवस्था बनानी चाहिए।

अतः मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वह सतत इसका अनुभव करें कि मनुष्यत्व के नाते ईश्वर की सृष्टि में उसका पद अति महान है।

वह आत्म गौरव को अनुभव करता हुआ आत्म प्रगति और आत्म कल्याण के अनन्त विस्तृत मार्ग की ओर बढ़ता रहे।

इन्हीं भावनाओं को श्रुति ने मधुर शब्दों में गाया है —

असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥
मृत्योर्माऽमृतं गमय ॥।
हों असत से दूर हम प्रभु, सत्य का वरदान दो ।
क्षीणा हों द्रुम तिमिर सघन, दिव्य ज्योति वितान दो ॥
प्रकृति पाशों से छुड़ा, आनन्द सुधा का पान दो ।
मृत्यु बन्धन से छुड़ा, अमृत्व का वरदान दो ॥

सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें ?

संकलन कर्ता श्री लालता प्रसाद उपदेशक सभा ।

१—ईश्वर के स्वरूप को जानने के लिये (समुल्लास १)
२—सन्तानों को सुशिक्षित करने के लिये । [समुल्लास २]
३—अन्ध विश्वास और पाखण्ड को चुनौती देने के लिये । [समु०११]
४—गुण, कर्म स्वभाव अनुसार वर्ण व्यवस्था की स्थापना के लिये । [समु० ५)
५—गृहस्थ आश्रम की गरिमा को जानने के लिये । [समु० ४]
६—आश्रम व्यवस्था—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास को—समझने के लिये । पंचम [समु० ५]
७—राज धर्म को जानने के लिये । [समु० ६]
८—ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना की उचित विधि जानने के लिये । [समु० ७, ११]
९—ईश्वर, जीव, और प्रकृति के भेद को जानने के लिये । [समु० ८]
१०—जगत की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलयको समझने के लिये ।-समु.८,९
११—बन्ध और मोक्ष को समझने के लिये । [समु० १९, ९]
१२—भारतीय संस्कृति को समझने के लिये । [समु० ५, ७, ११]
१३—सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय से, वेद, बाइबिल, कुरान एवं हिन्दू जाति के समस्त ग्रन्थों का ज्ञान हो जाता है ।
१४—सत्यार्थ प्रकाश के स्वमन्तव्य प्रकाश से ऋषि के ग्रन्थों सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञान हो जाता है ।

सत्यार्थ प्रकाश का चमत्कार

एक विद्वान ने सत्यार्थ प्रकाश पर कुछ पंक्तियां लिखी हैं वह "आर्यमित्र" के पाठकों की सेवा में उपस्थित है।

पोल खुलते ही पुराणों का महात्म्य घट गया।
बुद्ध की बुद्धि बंध गई, मद जैन मत का घट गया ॥
दम घुटा तौरेत का, दिल बाइबिल का फट गया।
जो असा इंजील का छल बल बखूरीकट गया ॥
सामने कुरान के ले वेद चारों अड़ गये।
मार मन्त्रों की पड़ी पर आयतों के झड़ गए ॥
डूब कर बहरे खयालत में, गपोड़े सब सड़ गए।
कुल हदीसों के हवाले भी भंवर में पड़ गए ॥

श्री महात्मा अमर स्वामी जी महाराज मोहन नगर अस्पताल में

महात्मा जी के गले में भयंकर रोग हो गया है। कोई खाद्य पदार्थ गले से नीचे नहीं उतरता है पेय पदार्थ भी कठिनाई से उतरता है।

शय्या से उठ नहीं सकते हैं। स्वामी जी महाराज का साहस प्रशंसा के योग्य है पर दुर्बलता दिन-दिन बढ़ती जा रही है। आर्यों की शुभ कामनाएं चाहिए।

संग्रामसिंह आर्य वेद मन्दिर गाजियाबाद

सम्पादक के पत्र

(१)

'कलयुग और रामायण' की घटना अभी शांत ही नहीं पड़ी थी। किन्तु दूसरी घटना ने मुझे पुनः प्रतिकर्षित किया है सो कुछ इस प्रकार है कि गत १७ जून को मैं दूरदर्शन पर 'चित्रहार' कार्यक्रम देख रहा था उसी कार्यक्रम में 'परिवार' फिल्म के एक चित्र को देखकर मुझे काफी दुःख हुआ क्योंकि उस फिल्म के दृश्यों में एक हिन्दू देव मन्दिर में देव मूर्ति के समक्ष अभिनेत्री को अर्ध नग्न, प्रायः नग्न अवस्था में नृत्य करते हुये दिखाया गया था। इसको देखकर हमें ऐसा लगा कि अब फिल्म वाले बहुसंख्यक हिन्दुओं को सुषुप्त जानकर उनकी धार्मिक भावनाओं को तिरस्कार पूर्ण दृष्टि से देखकर अपमानित करने में जीजान से तत्पर हैं। सेंसर भी आंख मूंदकर पास करने में आगे है।

इसके परिप्रेक्ष्य में हमें यह कहना है कि सेंसर को तुरन्त इस दृश्य को कटवा देना चाहिये। और दूरदर्शन को भी सार्वजनिक कार्यक्रम में ऐसे अश्लील दृश्य न दिखाने चाहिये। आपका ही—

रमेशचन्द्र गुप्त
सदस्य आर्यसमाज अरदहा बाजार
जिला—बहराइच (उ० प्र०)

(२)

रविवार को दूरदर्शन पर दिखाया जाने वाला धारावाहिक 'रामायण' जनमानस द्वारा विशेष उत्सुकता से देखा जा रहा है, सराहनीय है। प्रायः रविवार छुट्टी का दिन होने से लगभग सभी धार्मिक संस्थाएं उसी दिन प्रातः ही अपने सत्संग, भारतीय जनमानस एवं युवा वर्ग को आध्यात्मिक भोजन देने के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति के अनमोल रत्न गीता, रामायण, वेद, उपनिषद आदि की जानकारी के लिए आयोजित करते आ रहे हैं। उक्त धारावाहिक का समय तथा उक्त सत्संगों का समय दशाब्दियों से चला आ रहा है एक ही होने से सभी जनमानस दोनों का लाभ नहीं ले पाते।

अतः निदेशक दूरदर्शन नई दिल्ली से अनुरोध है कि 'रामायण' धारावाहिक का समय रविवार प्रातः ८ से ११ बजे को छोड़कर कोई अन्य उपयुक्त समय रखा जाय। ऐसा होने से भारत के करोड़ों सत्संग प्रेमी आपके आभारी होंगे।

कृष्णदेव मदान मन्त्री
आर्यसमाज नेपियर टाउन, जबलपुर (म०प्र०)

दहेज रहित वैदिक विवाह

स्थानीय आर्यसमाज में श्री राधेश्याम प्रवक्ता राजकीय दीक्षा विद्यालय भीमताल का दहेज रहित शुभ विवाह इण्टर शिक्षित कु० शकुन्तला देवी के साथ पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार श्री सुमित्र आर्य के पौरोहित्य में सम्पन्न कराया गया। स्वतन्त्रता सेनानी श्री रघुबंशलाल अवस्थी ने सद्यः विवाहित युगल जोड़ी को आशीर्वाद देते हुए, उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों से अपेक्षा की कि वे अपने-अपने स्तर पर ऐसे दहेज रहित आदर्श विवाहों को प्रोत्साहन दें।

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्यदेवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥ ऋ. १·१-१-१

पद्यार्थ—जो वन्दनीय ईश्वर,जो ज्योति स्वरूप ईश्वर, जो दिव्य अंग नायक है अग्नि रूप ईश्वर जो सर्ग पूर्व हित का आधान करने वाला प्यारा परम हितैषी हितकर अनूप ईश्वर यज्ञों का वह प्रकाशक वह देव सृष्टिकर्ता ज्ञानादि सब मखों का कमनीय स्तूप ईश्वर ऋत्विज है सत्य याजक ऋतु आदि का प्रणेता सब काल में यथोचित सुखप्रद प्रभूत ईश्वर होता महानदाता आह्वान कर ग्रहीता वह योग क्षेम दाता सुख शान्ति रूप ईश्वर रत्नादि धारता वह रमणीयता विधाता अपने उपासकों का कमनीय भूप ईश्वर मैं उस परमपिता की स्तुति कर रहा भगत दुख कूप से उबारे। वह सुख स्वरूप ईश्वर स्वीकार कर विनय मम आनन्द मग्न कर दे मुझको अभय करे वह आधारभूत ईश्वर।

—रामनिवास विद्यार्थी
सुन्दर सदन, फफलपुर, सुन्दर नगर
द्वारा बिनौली (मेरठ)

श्रावणी पर्व

आर्यसमाज पिलखुवा (गाजियाबाद) का वेद प्रचार सप्ताह (श्रावणी पर्व) दिनांक १० अगस्त १९८७ से १६ अगस्त १९८७ तक मनाया जायेगा। जिसमें आर्यजगत के जाने माने विद्वान डा०निष्पन्न विद्यालंकार एम०ए० पी०एच०डी० तथा पं० सत्यपाल पथिक आर्य कवि एवं भजनोपदेशक आदि विद्वान भाग ले रहे हैं।

गुरुकुल वृन्दावन में प्रवेश

१ जुलाई सन् १९८७ से प्रारम्भ निःशुल्क बी० ए० स्तर तक शिक्षा सादा भोजन, नियमित दिनचर्या, उत्तम भोजन और देख-भाल के लिए प्रारम्भिक भोजन शुल्क १००-०० मास में कक्षा १ से ८ तक के बालकों का प्रवेश गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में दिलावें।

—मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 459 3 ४५६६३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
श्रावण शुक्ल ८
रविवार, २ अगस्त १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य पत्र

3835—श्रीसम्पादक जी
गुरुकुल पत्रिका
गुरुकुल कांगडी (सहारनपुर)

शुद्धि सँस्कार

उत्तर बिहार आर्य सभा के सँगठन मन्त्री श्री नवलकिशोर शास्त्री ने बेगुसराय मे नरगीश खातुन की शुद्धि कर उनका नाम कुमारी निवेदिता आर्या रखा तथा उनका विवाह संस्कार श्री जगदीश चौधरी के साथ सम्पन्न कराया।

"वेद रहस्य"

श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्वों के उपलक्ष मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का उपहार ग्रन्थ 'वेद रहस्य' जो ४१६ पृष्ठ का प्लास्टिक कवर वाला है, डाक महसूल में वृद्धि होने के उपरान्त भी एक प्रति १७/-सत्रह को वी० पी० द्वारा और एक से अधिक प्रतियों के मगाने पर २० -/- प्रतिशत की छूट धन अग्रिम डाक व्यय पृथक रेल भाड़ा के साथ भेजा जाना सुनिश्चित किया गया है। वेद प्रेमी सज्जन स्वाध्याय अथवा वेद प्रचारार्थ वितरण हेतु आर्डर भेज अवसर का लाभ उठावें।

रामसिंह आर्य, १७ गाँधी नगर, आगरा—३

शोक समवेदना

नगर शाहगंज के सम्भ्रान्त नागरिकों, व्यवसायी वर्ग, प्रबुद्ध जनों आर्य जनों तथा सर्वसाधारण जनो की एक शोक सभा मे श्री पन्नालाल सेठ के आकस्मिक एव दुखद मृत्यु पर अपना हार्दिक शोक व्यक्त करते हुए परमपिता परमेश्वर से उनके परिवार को शान्ति की प्रार्थना की गयी तथा एक प्रस्ताव द्वारा स्थानीय आर्य समाज के प्राण श्री पन्नालाल आर्य को कस्टम विभाग के अधिकारियो द्वारा छापा डालने तथा साथ-साथ इलाहाबाद ले जाकर नैनी जेल मे रखने एवं नैनी जेल मे ही उनकी मृत्यु तथा मृत्यु के बाद २६ घण्टे बाद परिवार वालो को प्रशासन द्वारा मरण की सूचना देने आदि की जानकारी एवं कारणों की जाँच अवकाश प्राप्त जज द्वारा कराने तथा तत्सम्बन्धी अधिकारियों के साथ उचित कार्यवाही करने के लिए प्रशासन से माँग की गयी।

इनका दाह-संस्कार वाराणसी के मणिकर्णिका घाट पर वैदिक रीत्यानुसार किया गया।

धर्म शिक्षा पुस्तको के सम्बन्ध में—

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा द्वारा प्रकाशित धर्म शिक्षा भाग १ से १२तक की पुस्तकें सभा कार्यालय में उपलब्ध हैं, पुस्तक प्राप्ति हेतु कार्यालय से सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ पूरा पता रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखें।

नोट—धर्म शिक्षा की पुस्तकों पर कमीशन दिया जायगा। रेल भाड़ा एवं डाकव्यय क्रेता को देना होगा।

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए नवचालकीय आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एच० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ | घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८१

श्रावण शुक्ल १५, रविवार, संवत् २०४४ वि० दिनांक ९ अगस्त १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल

विक्रमादित्य 'वसन्त'
वेद वारिधि'

★

प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए.

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष ९०

अंक ३१

श्रावणी पर्व और हम

यह पर्व हम आर्यों का प्राचीनतम एवं पवित्रतम वैदिक पर्व है। हमने व्यष्टि एवं समष्टि दोनों ही रूपों में वेदमाता की शपथ लेकर संसार को आर्य बनाने का संकल्प लिया है। सृष्टि के आदिकाल में उस ज्योतियों के ज्योतिस्वरूप, ज्ञान-विज्ञान के अथाह सागर, परमकारुणिक प्रभु ने अपनी दिव्य दिव्य वाणी का ऋषियों के पावन हृदय में 'आविर्भाव' किया था। जिसने युगों युगों तक इस धरित्री पर निवास करने वाले मानवों को सुख और शान्ति का सन्देश दिया है जिसकी जीवन पद्धति को अपनाकर आज से लाखों वर्ष पूर्व मानव ने 'विश्वं भवत्येक नीडम्' का काल्पनिक नहीं वास्तविक उपयोग किया था, उसी विश्वम्भ कल्याणमयी, कालजयी वेदवाणी का प्रचार और प्रसार करने का यह पावन पर्व है।

आर्य बन्धुओं !

समय की गति के अनुकूल कभी-कभी आसुरी शक्तियां प्रबल हो जाया करती हैं। ऐसे समय में वेद की मर्यादाओं को भूल जाने के कारण मानवता अन्धकार और अज्ञान में डूब जाती है। उस समय हमारे सामने 'कः वेदान् उद्धरिष्यति' का प्रश्न साकार बन जाता है और हम किसी ज्योति की खोज में 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रार्थना करते हैं। ऐसे समय में प्रभु की अपार कृपा से कोई न कोई युग पुरुष अवतीर्ण हुआ है और वेदों का पुनरुद्धार हुआ है क्योंकि यह उस परमदेव का शाश्वत ज्ञान है, शाश्वत बहने वाली प्रेम की गंगा है जिसमें निमज्जन करके समस्त मानवता ने अपने कलुष कल्मषों को धोया है, समता, समानता, एकता और बन्धुता के बन्धन को जोड़ा है अपने ऐहिलौकिक, पारलौकिक दोनों जीवनों को पवित्र किया है 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का संसार को मूलमन्त्र दिया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा इस अवसर पर अपने समस्त आर्य बन्धुओं का आह्वान करती है कि इस पावन अवसर पर 'स्वाध्यायान्मा प्रमद' का व्रत लें और महर्षि के स्वप्न को पूरा करने हेतु प्राणपण से जुट जायें। सभा इस अवसर पर एक वृहत् कार्यक्रम की रूपरेखा 'आर्य-मित्र' में प्रकाशित कर चुकी है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है प्रदेश की सभी आर्य समाजें आर्य संस्थायें और आर्य बन्धु इस पावन पर्व को बहुत उत्साह के साथ मनायेंगे।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश

कोलम्बो में श्री राजीव गांधी की हत्या का कुत्सित प्रयास

आर्य जगत को यह जानकर बहुत दु:ख है कि श्री लंका की जातीय समस्या के समाधान हेतु कोलम्बो गये हुए हमारे युवा प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी पर श्री लंका के एक नौसैनिक ने प्राणघातक हमला कर दिया। प्रभु की असीम अनुकम्पा है कि हमारे प्रधान मन्त्री बाल-बाल बच गये। प्रधान मन्त्री की सुरक्षा का भार श्री लंका शासन का था, हमें दु:ख है कि श्रीलंका शासन अपने इस दायित्व में पूर्णतया असफल रहा है। यह एक गम्भीर राजनैतिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय अमानवीय कृत्य है। हमारा देश सदैव से अपने पड़ोसी देशों से मधुर सम्बन्धों का इच्छुक है। श्री गांधी इस विशाल देश के प्रतिनिधि के रूप में वहां की जातीय समस्या के शान्तिपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर करने गये थे उन पर किया गया हमला हमारे देश का अपमान है इसकी जितनी भी भर्त्सना की जाये कम है।

आर्य प्रतिनिधि सभा श्री राजीव गांधी के श्री लंका से सकुशल लौट आने पर सन्तोष व्यक्त करती है एवं उनके दीर्घ जीवन की कामना करती है।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

[illegible] है पानी में।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—[illegible] मोहन [illegible]

सम्पादकीय

लखनऊ–श्रावण शुक्ल १५ सम्वत २०४४ रविवार ९ अगस्त १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

सोमराज्ञी ओषधि–वेदः

स्वामी दयानन्द सरस्वती की सर्व महान् उपलब्धि और देन यही है कि मानव जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान केवल ईश्वरीय ज्ञान वेद ही है। विश्व भी तब तक अमर शांति के स्वर नहीं गूंज सकते जब तक मानव जीवन में आसुरी वृत्तियां विद्यमान हैं। मानवों का आर्यकरण ही संसार में सुख शांति की धाराएं प्रवाहित कर सकता है और ऐसी क्षमताशीलताएं केवल वेद में ही निहित हैं क्योंकि परमात्मा की यह सत्य विद्या ही जातिवाद, इतिहास, भूगोल, पक्षपात आदि से परे है।

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य विश्व का उपकार करना है। मानवों की शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक उन्नति करने का एकमेव आधार वेद है इसलिये आर्य समाज, वेद को केन्द्रित करके ही वाणी और लेखनी से उसका प्रचार करता है।

यह नितान्त सत्य है कि वेद प्रचार के अभाव में, ईश्वरीय ज्ञान की अनभिज्ञता से तथा अन्य भ्रम जनक स्वार्थ परिपूर्ण भावनाओं को उत्तेजित करने वाले साहित्य ने आज के मनुष्य को सर्वथा स्वार्थी निर्मम छली कपटी द्वेषी और हिंसक बना दिया है। विश्व में निरन्तर विकसित होने वाला आतंकवाद इसका जीता जागता प्रमाण है। प्रतिदिन नई समस्याएं जन्म लेती हैं और उनका जितना उपचार निराकरण करने के लिये किया जाता है, रोग उतना ही बढ़ता जाता है। अभी केन्द्रीय सरकार के सेवारत डाक्टरों ने जो ९ दिवसीय देश-व्यापी हड़ताल की, उससे पीड़ित रोगियों को जो व्यथा झेलनी पड़ी वह कितनी अमानवीय थी। इसके मूल में केवल स्वार्थ पूर्ण व्यावसायिक लोभ वृत्ति थी। देश के नागरिक भली भांति जानते हैं कि आज के अधिकांश डाक्टर भौतिक रूप से सुसम्पन्न हैं। सरकार ने उनके वेतनमान पर्याप्त मात्रा में बढ़ा रखे हैं परन्तु लोभ की कोई सीमा नहीं होती। दुखियों की विवशता से अनुचित लाभ उठाना क्या मानवता है और डाक्टरी प्रतिज्ञा के अनुकूल है? वैदिक युग में तो वैद्य जब किसी ओषधि वृक्ष के समीपस्थ होकर उसके फल फूल छाल पत्ते जड़ आदि लेते थे तो यह प्रार्थना करते थे कि वे उसे मानव कल्याणार्थ ले रहे हैं। अपने विद्यार्थी जीवन में मैंने ऐसे चिकित्सक देखे हैं जो प्रतिदिन एक आना अथवा दो आने [उस समय की प्रचलित मुद्रा] लेकर रोगियों को ओषधि देते थे और अधिकांश रोगियों को केवल एक दिन की ही ओषधि से आराम आ जाता था। आज तो स्थिति यह है कि पैसे के लोभ में रोगों को बढ़ाया जाता है और फिर रोग विशेषज्ञों के पास रोगी को भेजकर उसमें भी कमीशन प्राप्त की जाती है।

[illegible]

[illegible] अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में आज जिस कूटनीति का बोल बाला है, वही [illegible]चारों, [illegible]चारों [illegible] दुराचारों [illegible]ी जननी है। [illegible] [illegible]मात्र [illegible]कित्सा [illegible] क्यों[illegible] वेदवा[illegible] ही [illegible] [illegible] प्रतीक[illegible] निम्न[illegible]त मन्त्र [illegible]तुत है–

[illegible] विदत्तिनो मा वि[illegible]ष्ट स[illegible]यन्त [illegible]राधय[illegible]।
[illegible] अन्यो अन्यस्मै वल्गु [illegible] सध्रीचीन[illegible] स [illegible] संज्ञानं कृणोमि॥

[illegible] की गई है–

(१) [ज्यायस्वन्त] महान् बनो,
(२) [चित्तिन] विवेकशील बनो
(३) [मा वियौष्ट] एक दूसरे से कदापि पृथक न होओ
(४) [सराधयन्त] अपने संकल्पों और प्रयत्नों से लक्ष्य सिद्धि में सफलता प्राप्त करो।
(५) [सधुरा] धुरे से युक्त रहो, संगठित रहो।
(६) [चरन्त] चलते रहो, बढ़ते रहो।
(७) [अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त] परस्पर प्रीतिपूर्वक व्यवहार करो।
(८) [एत] एक दूसरे के समीपस्थ आओ।
(९) [सध्रीचीनान्] एक लक्ष्य और उसकी प्राप्ति के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहो।
(१०) [संमनसः] एक मन होकर अधिकाधिक सामंजस्य लाओ।

परमात्मा के मनुष्य को दिए गए उपरोक्त दस आदेश वास्तव में आनन्दप्रद ओषधि का कार्य करते हैं। क्योंकि मन्त्र में प्रयुक्त 'कृणोमि' शब्द यह बतलाता है कि प्रभु ने मनुष्यों को इसी निमित्त योग्य किया है, बनाया है। मानवों की यदि यह कामना हो कि विश्व की सर्वांगीण उन्नति हो तो उन्हें इस सोमराज्ञी ओषधि का पान करना ही होगा। प्रत्येक वर्ष श्रावणी के पावन पर्व पर समस्त आर्य समाज वेद प्रचार का विशेष आयोजन करती है जो लगभग एक सप्ताह तक चला करता है। यदि इन वेद प्रचार सप्ताहों में केवल वेदों की ही कथा की जाए [अन्य मानव कृत ग्रन्थों की नहीं] और ऐसा साहित्य प्रकाशित करके वितरित किया जाए तो निस्सन्देह हम अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होंगे।

यहाँ यह भी व्यक्त करना आवश्यक प्रतीत होता है कि वर्ष में केवल एक सप्ताह का वेद प्रचार औपचारिकता वश करना ही पर्याप्त नहीं है वरन् युग की जो सबसे बड़ी आवश्यकता है, वह है वेद प्रचार की धारा को [illegible] से तीव्रतम करने की। दैनिक समाचार पत्र, आकर्षक साप्ताहिक पत्र, पाक्षिक और मासिक पत्रिकाएं, रोचक कथा साहित्य, आकर्षक चल चित्र, सुमधुर संगीत के रिकार्ड कैसेट इन सब आधुनिक साधनों से जब तक हम वेद की ओषधि को घर-घर प्रत्येक मनुष्य के पास नहीं पहुंचाएंगे, विश्व का कल्याण नहीं होगा। संसार का उपकार केवल जयनादों और विजय घोषों के गुंजाने से नहीं होता, उसके लिए तपस्वी समर्पित जीवनों की कर्मशीलता अपेक्षित है।

क्या स्वामी दयानन्द महाराज को अपना पथ प्रदर्शक, युग प्रवर्तक, आप्त पुरुष मानने वाले उनके अनुयायी इस सत्य को स्वीकार कर इस ओषधि का स्वयं पान कर, विश्व के सम्मुख इस सोमराज्ञी ओषधि को प्रस्तुत करेंगे?

—वसन्त

अध्यात्म सुधा

सुविचारो महौषधम्

श्री देवेन्द्र कुमार आर्यसमाज नगीना (बिजनौर)

वेद के शिव संकल्प सूक्तों में मन के संकल्पों को पवित्र एवं पावन बनाने का भव्य निवेदन है।

संसार दीर्घ रोगस्य सुविचारो महौषधम् ।
कोऽहम् कस्य च संसारो विवेकेन विलीयते ।।

संसार के दीर्घ कालीन रोग की एक मात्र औषधि सुविचार ही है। कहा है 'क्रतुमय पुरुष.' मनुष्य अपने विचारों से ही बनता और पतित होता है। गीतम गीता में कहा गया है—

विचारा हि मनुष्याणाम् प्रतिमाना परन्तप् ।
विचारो यादृशः यस्य मर्त्यो भवति तादृशः ।।

विचार ही मनुष्य के प्रतिनिधि हैं, जैसे विचार होते हैं वैसे ही पुरुष का निर्माण होता है।

अंग्रेज जब भारत में आये थे तो साथ लेकर क्या आये थे? सेनायें, अस्त्र शस्त्र मूल में तो वे भारत पर शासन करने का विचार लेकर आये थे।

भारत को मूलतः नष्ट करने के लिए चतुर अंग्रेज जाति ने भारतीयों को विचार शक्ति पर आक्रमण करना प्रारम्भ किया। वेदों को गड़रियों के गीत बताया तथा हमारे पूर्वजों एवं ऋषियों को असभ्य एवं जंगली बताया। जिसका भारतीयों पर दूरगामी प्रभाव पड़ा। अमेरिका के एक प्रसिद्ध विद्वान् वाल्तेयर ने भारतीय विचारों पर यह कहकर आक्रमण किया—'भारतवर्ष के लोग बहुत सोते हैं बहुत वेग से यह दौड़ना नहीं चाहते। तेज दौड़ने की अपेक्षा धीरे-धीरे चलना पसन्द करते हैं। खड़े रहने की बजाय बैठना पसन्द करते हैं बैठने की बजाय लेटना पसन्द करते है। लेटने की बजाय सो जाना अधिक पसन्द करते हैं और सो जाने के स्थान पर मर जाना अधिक पसन्द करते हैं।

इस प्रकार के वैचारिक आक्रमणों ने हमारे देशवासियों की भावनाओं को विकृत बनाने में एवं उनके आत्म गौरव एवं आत्म बोध को [illegible] करने में पर्याप्त कार्य किया है। आज देश में सब कुछ है परन्तु [illegible] शान्ति नहीं है फलतः चारों ओर दुःख का शोर एवं अशान्ति है। किसी ने सत्य कहा है—

असली सी लाचकी है फूलों में और फलों में।
करते हैं नृत्य अब तक मयूर जंगलों में।
अब तक वही कड़क है बिजली की बादलों में।
पस्ती सी आ गई है बस दिल के वलवलों में।

आज हम किसी से पूछते हैं कि भाई कैसे हो—तो उत्तर मिलता है [illegible] तरह दिन काट रहा हूं। प्रत्येक व्यक्ति के मुख से ऐसे ही [illegible] शब्द सुनने को मिलेंगे जो विचारों की शिथिलता एवं जीवन के प्रति निराशा की अभिव्यक्ति करते हैं।

महान् दयानन्द

महर्षि दयानन्द सरस्वती की वेद साध

वेद के पारदर्शी विद्वान, भारतीय संस्कृति के गौरवरूप महर्षि दयानन्द एक ऐसा वातावरण तैयार करना चाहते थे जिससे समस्त भू मण्डल में सदा सर्वत्र सतोगुण की प्रधानता बनी रहे। कहीं भी, कभी भी वैमनस्य न हो। ऋतुएँ समय पर हों, सभी को पूर्ण स्वास्थ्य लाभ हो। ऋद्धि सिद्धि घर-घर में जागृत रहे प्रत्येक देश अपनी प्राकृतिक मर्यादाओं में सुव्यवस्थित रह कर स्वतन्त्रता और सम्पन्नता का आनन्द लेता रहे। इसी भाव को लेकर अपने पूज्य आचार्य पं० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री ने एक गीत में कहा था—

प्रभो वेद वीणा बजे विश्व भर में, सुनें मन्त्र झंकार प्रत्येक घर-घर में।
उगे व्योम में वेद का दिव्य भानु, सुधा सी बरसने लगे सप्त स्वर में।।
बंधे विश्व बन्धुत्व की शृंखला में, करें रक्त रंजित न धरती समर में।
सभी राष्ट्र होवें स्वराज्याधिकारी, बली निर्बलों को न जकड़े स्वकर में।

समस्त विश्व के प्रति महर्षि दयानन्द की इस मंगल कामना का आधार है वेद का शुद्ध ज्ञान जो स्वामी जी को अपने पूज्य गुरु विरजानन्द जी से प्राप्त हुआ था।

वे चाहते थे कि हम जीवन के सभी क्षेत्रों में अग्रणी बनकर पूर्ण जीवन का आनन्द लें। ब्रह्मचर्य के द्वारा जीवन को परम तपस्वी बनायें।

नव युग का निर्माण करने वाले तथा सबको नई दिशा प्रदान करने वाले ऋषि का देदीप्यमान व्यक्तित्व सब के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया था। स्वराज्य सुराज्य से अधिक अच्छा है इसलिए स्वराज्य प्राप्ति के लिए सर्वस्व बलिदान करने की भावना जागृत की।

—प्रतापचन्द्र मन्त्री आर्यसमाज साकेत

मनुष्य एक मननशील प्राणी है विचार जहां मन को प्रभावित करते हैं बल्कि शरीर पर अपना प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहते हैं पवित्र विचार स्वास्थ्य एवं निरोगता के जनक हैं तो गन्दे विचार हमारे शरीर में रोगों एवं विषों के उत्पादन में सहायक होते हैं।

वैचारिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप ही आज हम विज्ञान के क्षेत्र में इतनी भारी प्रगति देख रहे हैं। बड़े-बड़े आविष्कारों ने प्रथम विचार के रूप में ही आकार ग्रहण किया। आज साकार हुए यही विचार मानव को स्तम्भित कर रहे हैं। फ्रान्स की राज्य क्रान्ति, रूस के जार का तख्ता पलटना अमेरिका की स्वाधीनता, भारत की स्वतन्त्रता तथा अन्य अनेक ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक घटनाओं के मूल में विचार ही हैं। विचार की शक्ति यूरेनियम के रेडियेशन से भी तीव्र होती है। सैकड़ों तालों एवं लोहे की दीवारों में भी इसे बन्द किया जा सकता है।

कार्ल मार्क्स, दयानन्द एवं गांधी के विचार अपनी चुम्बकत्व शक्ति के रूप में आज भी वातावरण में विद्यमान हैं यद्यपि वे पुरुष सशरीर हमारे मध्य नहीं है परन्तु उनके मार्ग पर चलने वाले आज अनेक व्यक्ति विद्यमान हैं। आज भी ये लोग हजारों एवं लाखों व्यक्तियों के प्रेरणा दायक हैं यह विचार शक्ति का ही तो परिणाम है।

अतः हमारा कर्तव्य है कि श्रावणी के पावन पर्व पर वेद के पठन-पाठन से विचार की शक्ति को पहिचानें तथा आत्म निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण में लग जायें।

वेद-विवेचन

श्रवण और श्रावण का प्रेरक

श्रावणी पर्व

डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज, बरेली—२४३००५

श्रावणी के पावन पर्व पर आर्य समाजो द्वारा वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया जाता है जिसका एक मात्र उद्देश्य यह होता है कि हम साधारण जन मानस को ईश्वरीय ज्ञान से सुप्रेरित करें ताकि मनुष्य वेद के महत्व को पहचानें और वेद को ही धर्म का मूल मानकर उसके आदेशानुसार व्यक्तिगत पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवनो को समुन्नत कर सके। विदुषी लेखिका ने अपने इस लघु लेख मे इस ओर पाठको का ध्यान आकर्षित किया है आशा है आर्य जन इन सुप्रेरणाओं से लाभान्वित होगे। —सम्पादक

प्रतिवर्ष श्रावणी मास आता है और चला जाता है किन्तु इसकी प्रेरणा को हम समझ कर भी नहीं समझते। बाहरी आडम्बरों के आयोजन मे ही साधारण जन कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। वस्तुत श्रावणी मास, चातुर्मास्य, यज्ञ उपाकरण पद्धति, वेदों का पारायण आदि अनेक सन्देश लेकर आता है। ऋषिमनीषी, अपने शिष्यो को विशाल उपाकर्म पद्धति द्वारा अनेक वैदिक शिक्षायें देते थे। श्रावणी, मास की प्रासंगिकता आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे भी निर्विवाद है। घोर भौतिकवादी युग मे हिंसा, आतंक अन्याय, साम्प्रदायिकता, पाखण्ड, भेद भावना, व अन्य दुर्वृत्तियां पुन सिर उठाकर मानवता को बन्दिनी बनाने का षडयन्त्र रच रही हैं।

वायु प्रदूषण एव जल प्रदूषण के साथ साथ दुर्विचारों का प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है जिससे जनमानस घुटन और सत्रास का जीवन व्यतीत कर रहा है। ऐसे कुसमय मे श्रावणी मास की प्रेरणा मानव मात्र के लिए ग्राह्य है। मन्त्रानुसार, जब राष्ट्र पर सकेत के मेघ घिर रहे हो, सर्वत्र अशान्ति और अत्याचार हो, तो वीरो की भूमिका महत्वपूर्ण होती है—

'ओ धृतव्रता क्षत्रिया यज्ञ निष्कृतो बृहद्दिवा अध्वराणामभिश्रिय।
अग्निहोतारीततसापो अद्रुह अपो असृजन्ननुवृत्रतूर्ये ॥ऋ० १०—६६—८

अर्थात्—राष्ट्र व जाति पर सकट की घड़िया हों, घर मे आततायी छिपे हो, अपने ही लोग स्वार्थ के वशीभूत हो, सभ्यता व सस्कृति का गला घोट रहे हो, साधारण जनता का गला घोट रहे हो, लोभ के वशीभूत होकर, देश द्रोहिता करें, पापियो को दण्ड न मिलता हो, ऐसे समय मे शूरवीरों की आवश्यकता है जो दृढ़ सकल्प वाले एव सिद्धान्त प्रिय हो, जो प्रलोभन के जाल में न फस सके, असफलता मे हार न मानने वाले हो पीडितो की रक्षा मे प्रवीण, न्यायकारी नीतिनिपुण, दृढ़ प्रतिज्ञ एव उदारमना हो वे ही वीर राष्ट्र, समाज, एव परिवार का कल्याण कर सकते हैं।

आर्यसमाज श्रावणी पर्व को वेद प्रचार सप्ताह के रूप मे मनाता है। किन्तु आज जन-जागरण अभियान की आवश्यकता है। आचार को जीवन मे व्यावहारिक रूप देने से ही अनैतिकता, भ्रष्टाचार भेद नीति, साम्प्रदायिकता व अन्य दुष्प्रवृत्तियां दूर हो सकती हैं। वैचारिक क्रांति के द्वारा पुन धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राष्ट्रीय और राजनैतिक आदि सभी क्षत्रो मे नूतन आकांक्षायें और सम्भावनायें उत्पन्न होती हैं।

आर्यसमाज के सम्मुख 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् विश्व को आर्य बनायें, का लक्ष्य है जिसे बुद्धिपूर्वक सत्कर्म एवम् सफल बनाया जा सकता है। [illegible] इस [illegible] का मुख्य उद्देश्य है।'

आर्यों का [illegible] जीवन वैदिक आदर्शों के अनुकूल सर्वथा प्रेममय होना चाहिये। परिवारों मे आर्यत्व का प्रसार जागृति उत्पन्न कर सकता है।

[illegible] मे ही योगिराज श्रीकृष्ण जी का जन्मदिवस भी मनाया जाता है। कृष्ण जन्माष्टमी की प्रेरणा है कि देवासुर संग्राम मे देवताओ की विजय निरालस होकर ही सम्भव है। देव दयानन्द ने सत्याचरण व सत्याग्रह के लिए अपना बलिदान किया था। भवर में डोलने वाली राष्ट्र की नौका को वीरोचित और अथक जन ही बचा सकते हैं।

'रक्षा बन्धन' का आयोजन भी श्रावणी मास में ही होता है, जो प्रतिज्ञा निर्वहन का स्मारक है। जिसमें आज महिलायें व बहन, रक्षा सूत्र बाधकर वीर भाइयो को प्रतिज्ञा निर्वाह का स्मरण करायें और उन्हें सार्थक मानव, भाई और दायित्वपूर्ण नागरिक बनने को प्रेरित करें, इसी में उनके रक्षा सूत्र की सार्थकता है। आर्य भाई भी प्रतिज्ञा-निर्वाह को उद्यत हो, जिससे भाई-बहिन के पवित्र प्रेम का आदर्श स्थापित हो सकता है।

श्रावणी मास के शुक्ल पक्ष मे गोसवर्धन भी आरम्भ हो जाता है। तथा इस याज्ञिक मास में दूध और दही का अभाव नहीं रहता है, जैसा कि पुरुष सूक्त मे बताया गया है—

'वसन्तोऽस्य आसीदाज्य ग्रीष्म इध्म शरद् हवि।' (ऋग्वेद)

इस मास मे वर्षा से वनस्पतिया उत्पन्न होती हैं, जो उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। पूरी जीवन यात्रा ही चरम लक्ष्य के लिये है, किन्तु सत्य को विस्मृत कर मिथ्याभासो के जाल मे फसकर यह मानवाकृति पल भर मे ओझल हो जाती है। हमे नहीं भूलना चाहिये कि मानव जीवन श्रावणी मास के समान उपलब्धियों की प्राप्ति का केन्द्र है, तथा सार्थक उपलब्धियो के लिए, मानव को निरन्तर साधना रत रहना चाहिये—

उठो ! श्रावणी आगई है जगाने।

अनाचार दुर्नीतियां और हिंसा,
बनी व्यालरूपा मनुज डस रही हैं।
रहे बन्दिनी शौर्य रूपा सुरक्षा,
भवन देख जिससे, उसे कस रही हैं।
उठो राम और कृष्ण के वंशजो अब,
पुन आगई, बात बीती जगाने।

सत्यार्थ प्रकाश में सृष्टि-विज्ञान की समीक्षा

[स्वामी मोक्षानन्द "सरस्वती" वैदिक–प्रवक्ता, मथुरा]

[गतांक से आगे]

(३) जगत् कर्त्ता की आवश्यकता क्यों ?

कुछ अनीश्वर वादी कहते हैं कि यह ,सृष्टि तो स्वभाव से स्वयमेव उत्पन्न एवं स्थित व प्रलय क्रियाचक्र में चलती रहती है । इसमें ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है । इन अनीश्वरवादियों को जड़ पदार्थों के स्वभाव व सत्ता का बोध नहीं है । स्वभाव से उत्पत्ति मानने पर प्रलय आदि किंचित परिवर्तन सम्भव नहीं है । ठीक इसी प्रकार स्वभाव से प्रलय आदि परिवर्तन माना जाये तो उत्पत्ति सर्वथा ही असंभव है । क्योंकि जड़ तत्वों में ज्ञान, क्रिया, प्रयोजन आदि गुण तो सर्वथा है ही नही । उत्पत्ति, स्थिरता, प्रलय आदि क्रियायें नैमित्तिक है 'स्वाभाविक नहीं है' । कोई पदार्थ अपने जनक तत्वों के स्वभावओं से परिचित नही देखा गया । ज्ञान ही सृजन काल मे अपने जनक तत्वों की मात्रात्मक एवं गुणात्मक विवेचना करने व चुनाव करते भी नही देखा जाता है । अर्थात् प्रत्येक मौलिक संरचना में आने वाला तत्व अपने आप में ज्ञान, प्रयत्न, क्रिया एवं प्रयोजन शून्य होने से रचना सम्बन्धी संकल्प विकल्पों से सर्वथा अपंग एवं असमर्थ है । प्रत्येक संरचना में ज्ञान, प्रयोजन, बल एवं प्रयत्न आदि उपादेयो एवं रचना क्रम में आने वाले पदार्थों का गुणात्मक एवं मात्मक विवेचनात्मक चुनाव आदि चेतन सत्ता का स्वभाव व गुण है जड़ पदार्थो का नही । इसी सृष्टि से जगत की व्यापकता विविध असंख्य रचनायें देखने पर ज्ञात होता है कि यह सृष्टि अवश्य ही किसी सर्व–व्यापक, सर्व–विज्ञान सम्पन्न चेतन (ईश्वरीय) सत्ता की ही कृति है स्वाभाविक नहीं है । यदि जड़ तत्वों में स्वयं सृजन शक्ति होती तो वह अपने उपभोक्ता की इच्छानुसार विभिन्न भोग उत्पन्न करके देते गये होते । उस दशा में अनीश्वरवादी को हाथ पैर भी न हिलाने पड़ते प्रकृति तत्व सब भोजन आदि उन्ही की इच्छानुसार बनाकर ही देते । कभी-कभी प्रकृति एवं उसके उपभोक्ता अनीश्वरवादियों में इच्छाओं का भयकर टकराव भी होता । उस समय जड़ प्रकृति तत्वोंको ही विजय होती चेतन, शक्तिशाली अनीश्वर-वादी-जड़ सत्ता से पिटता मिटता होता । यह सब दृश्य रोग, हानि, वियोग, अतिवृष्टि अनावृष्टि, सूखा, तूफान आदि किस की देन है ? यह दण्ड है अथवा पारितोषक है । क्या इन सब आपदाओं को नास्तिक जड़ सृष्टि की ही देन मानते है-स्वयं स्वेच्छा से स्वीकारते है ? सबल चेतन अनीश्वरवादी पर जड़ प्रकृति की दुर्बलही नहीं बल्कि मृत्तिका-त्रस-रेणु की विजय सर्वदा असम्भव पर सम्भव की अविवेकीवत् मान्यता का आरोपण करना ही है जबकि प्रकृति का कोई त्रसरेणु बिना उस सर्व व्यापी सर्वशक्ति-मान सत्ता के गतिवान नहीं हो सकता क्योंकि प्रकृति में अपनी स्वयं कोई गति एवं चेतना नही होती-वह केवल जड़ ही है । साथ ही उसका कोई कार्य निष्प्रयो-जित नही हुआ करता है । उसके प्रकृति में होने वाले उथल-पुथल अथवा जीवात्माओं की अपेक्षाकृत भोग व्यवस्था (दण्ड व पारितो-षक) चक्रवत् चला करते है अतः सिद्ध होता है कि ईश्वर ही इस और उस सभी का नियामक एवं नियंता है । उसके बिना संसार में कोई गति व न्याय आदि व्यव-स्था सम्भव नही है (निमित्त कारण समीक्षा)

(४) ईश्वर एवं प्रकृति के अतिरिक्त जीवात्मा की सत्ता:–

संसार में पदार्थ-निर्माण्वाद में होता है । उससे पूर्व आवश्यकता रुपी अभाव का जन्म होता है । अर्थात् आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है । किन्तु प्रश्न उठता है कि अभाव जड़ तत्वों का विषय है या चेतन–सत्ता का क्योंकि संसार मे भोग एवं भोक्ता दो ही कोटि दृष्टिगोचर होती है । यदि एक पक्ष है तो दूसरे पक्ष का बोध अवश्य उसे देखकर दृष्टिगोचर होता है । अब निर्णय करना है कि इसमें भोग एवं भोक्ता कौन है ? सामान्य परीक्षण से ज्ञात होता है कि भोक्ता अपने भोग की अपेक्षा सबल चेतन एवं ज्ञान-वान परीक्षक होता है । जब कि भोग दुर्बल, ज्ञान शून्य केवल जड़ ही होता है । भोक्ता अपने भोग की अपेक्षा सबल होने से उसका स्वभाव से स्वामी बन जाता है । चूंकि कोई जड़ जन्य वस्तु स्वयं अपनी ही भोक्ता नहीं होती एवं न ही प्रकृति-पदार्थ की अपनी कोई अभाव रूपी आवश्यकता ही होती है–एवं न ही उसमें भोग-इच्छा शक्ति । उदाहरणार्थ–मकान-मकान का स्वामी एवं भोक्ता नहीं होता । मेज-मेज की भोग रूपी आवश्यकता की पूरक नहीं है । न ही रोटी-रोटी की भोक्ता होती है । कुल मिला-कर कहा जा सकता है कि प्रकृति जन्य जड़ वस्तुओं की उत्पन्नशील उपादेयता, प्रयोजन, भोग सम्बन्धी आवश्यकता स्वयं अपने लिए नहीं होती । इसलिये जड़ प्रकृति भी अपनी भोग साधन नहीं है । भोग प्रयोजन आवश्यकता रूपी अभाव चेतन, ज्ञानवान सत्ता की ही उपा-देयतायें हैं जड़ की नहीं ! ईश्वर पूर्ण अक्षर ब्रह्म होने से इन अभावों से सर्वथा रहित है । अतः सृष्टि में प्रकृति एवं ईश्वर के अतिरिक्त कोई चेतन ज्ञानवान तीसरी सत्ता अवश्य ही है । इसी को देहधारी 'जीवात्मा' रूपी भोक्ता कहते हैं । इससे सिद्ध होता है कि ईश्वर एवं प्रकृति के अतिरिक्त एक तीसरी सत्ता जीवात्मा इस संसार में हैं जो स्वभाव से भोक्ता एवं अविनाशी चेतन-सत्ता है । इस तीसरी सत्ता जीवात्मा के अभाव में सृष्टि सर्वथा असम्भव है । चूंकि ईश्वर सर्व-शक्तिमान, अधिकारी, अशरीरी, पूर्णब्रह्म, पवित्र है । अतः उस सर्वव्यापक सत्ता ईश्वर में न्यून से न्यून अभाव एवं विकार आदि का होना सर्वथा असम्भव है । जन्म मरण चक्र को विभिन्न शरीर एवं योनियों मे धारण करने वाला यह जीवात्मा अपने शरीरस्थ अभावों की पूर्ति प्रकृति से करने वाला ही भोक्ता तीसरी 'आत्मा' नामक सत्ता है ।

(५) सृष्टि के कारण:–

जगत सृजन में केवल तीन ही कारण होते हैं ।

१–निमित्त कारण २–उपादान कारण ३–साधारण कारण (अ) निमित्त कारण–वह है जिसकी चेतन प्रेरणा व बनाने के बिना कुछ बन ही न सके । जो रचना प्रक्रिया से सदैव स्वतंत्र ही रहे । उसे बनाने वाला कोई न हो । एवं न स्वयं बने । उसके सृजक अवयव हो ही नहीं अथवा अपने स्वभाव से अविनाशी ही हो । उक्त स्वतंत्र अविनाशी सत्ता के रूप में अन्य सृजक तत्वों से प्रकारान्तर ही रचना करे (ब) उपादान कारण–वह होता है कि जिसके बिना कुछ रचना ही न की जा सके । एवं अपने कर्ता के रचना चक्र के साथ-साथ अन्य रूपों में रूपान्तरित (लयादि) अथवा अवस्थान्तरित भी होता रहे । इसे प्रकृति परमाणु कहते हैं । ससार बनाने की यही सामिग्री है ।

(स) साधारण कारण–जो बनाने में साधारण भूमिका रखे । उपभोक्ता कोटि में होवें । जिसके अभाव मे सृष्टि सर्वथा ही असम्भव हो ।

(६) सृष्टि विज्ञान का क्रमिक प्रारूप ।

पूर्व जगत के प्रलय उपरान्त प्रकृति अपने मूल स्वरूप में सर्वत्र विद्युतकण की तरह अदृश्य रूप में आच्छादित रहती है ।

[क्रमश

विचार-विमर्श

देश में बढ़ते साम्प्रदायिक दंगे या गृहयुद्ध के संकेत

एक विवेचन

[लेखक—श्री विष्णु स्वरूप गोयल दिल्ली]

[गतांक से आगे]

और देश की एकता को चुनौती दी जा रही है उसका सामना नहीं करना पड़ता। आज यह जो विस्फोटक स्थिति पैदा हो गयी है जैसा ज्वालामुखी सामने आकर खड़ा हो गया है। यह कतई न पनप सकता। उस समय के चोटी के नेताओं में विशेष रूप से पण्डित नेहरू ने जिन्हें गांधीजी का पूर्ण समर्थन प्राप्त था इस शेष बचे खण्डित हिन्दुस्तान को हिन्दू राज्य घोषित करने के स्थान पर एक मिली जुली सभ्यता और संस्कृति का देश बनाने के लिये इसे धर्मनिरपेक्ष तथाकथित सेक्यूलर राज्य घोषित कर दिया जबकि सेक्यूलर शब्द का अर्थ धर्मनिरपेक्षता नहीं है।

सेक्यूलर शब्द की आवश्यकता यूरोप के देशों में उस समय पड़ी थी जब वहां मजहबी राज्य थे और जिस मजहब का राज्य होता था उस मजहब के लोग दूसरे मजहब के लोगों के प्रति अन्याय, अमानवीय व्यवहार तथा यातनायें देते थे। उस समय इस सैक्यूलर शब्द का आविष्कार हुआ था जिसके अनुसार किसी भी मजहब के साथ अन्याय और अत्याचार को रोका जा सके और सभी को समान अधिकार मिल सकें। किन्तु यहां तो किसी मजहब विशेष का राज्य नहीं था यहां इसकी आवश्यकता ही नहीं थी।

बाद में सरकार ने इस धर्म निरपेक्ष या सैक्यूलर शब्द की आड़ में अल्पसंख्यक समुदायों की तुष्टीकरण की नीतियां अपना कर उन्हें अनाप-शनाप सुविधायें उपलब्ध करानी शुरू कर दी और उनकी उचित तथा अनुचित मांगों को भी मानना आरम्भ कर दिया इन अल्पसंख्यकों में भी विशेष रूप से मुसलमानों को अधिक सुविधायें उपलब्ध करायी गयीं।

हिन्दू समाज के अभिन्न अंगों हरिजन, अनुसूचित जातियों, आदिम जन जातियों, वनवासियों आदि को पिछड़ा होने की आड़ लेकर आरक्षण तथा सरकारी आर्थिक सुविधायें प्रदान की गयीं फलतः वे लोग अपनी हिन्दू समाज से अलग पहिचान बनाते हैं। इसके बाद जैन तथा बौद्ध मतों को भी हिन्दू समाज से अलग काट दिया गया हिन्दू संगठित न रह सके हिन्दू समाज दलों, संगठनों आदि की भिन्न विचार धाराओं में बांटकर पूरी तरह बिखर गया। आज हिन्दू संगठित न होने के कारण ही उसकी कोई छोटी से छोटी उचित मांग भी नहीं सुनी जाती और न ही उसे पूरा किया जाता है किन्तु अन्य समुदायों की अनुचित बात भी ठीक मानकर पूरी की जाती है। यह बात सर्व मान्य रही है कि जब-जब और जहां-जहां हिन्दू कमजोर हुआ है वही भाग इस देश से कटकर अलग हो गया है और देश निरन्तर छोटा होता चला जा रहा है आज पुनः यही स्थिति पैदा की जा रही है कि इसका एक बार पुनः बँटवारा हो।

नवम्बर, १९४९ में जो हमारी संविधान सभा ने देश को संविधान प्रदान किया उसमें अल्प बल के नाम पर पृथकतावादी तत्वों को प्रोत्साहन देने वाले प्रावधानों का समावेश कर दिया गया है कारण परस्पर समुदायों में मतभेद बढ़ते चले गये और इन मतभेदों ने अब अलगाववादी रूप धारण कर लिया।

कहने को तो हमारे संविधान में हिन्दी को राष्ट्र या राजभाषा का स्थान प्रदान किया गया है किन्तु आज तक उसे हमारी सरकार द्वारा राजकाज की भाषा का स्थान नहीं दिया गया और उसके स्थान पर विदेशी भाषा अंग्रेजी को ही आज तक राजकाज की भाषा के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। जिसके कारण आज उत्तर और दक्षिण के लोगों में हिन्दी और अंग्रेजी के प्रश्न को लेकर टकराव और अलगाव बढ़ता जा रहा है। जबकि चाहिये यह था कि १९४७ में ही हिन्दी को राजकाज की भाषा बना दिया जाता और हिन्दी सीखने के लिये कुछ अवधि निश्चित कर दी जाती कि इतने समय तक सभी कर्मचारी हिन्दी सीख लें और देश की अन्य सभी प्रादेशिक भाषाओं की लिपि भी देवनागरी कर दी जाती तो दक्षिण के लोगों में हिन्दी के प्रति लगाव पैदा हो जाता और सभी लोग हिन्दी तथा अन्य भाषाओं को अब तक सरलता से सीख जाते और जो उत्तर और दक्षिण के लोगों में आर्य भाषा के नाम पर जो टकराव होता रहता है वह भी नहीं होता।

हमारे संविधान में दो शब्द ऐसे खतरनाक शामिल कर दिये गये जिनसे इस पृथकतावाद को बहुत बड़ा प्रोत्साहन मिला है। वे शब्द हैं, अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक ये दोनों शब्द संविधान में जोड़ देने से आज अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के टकराव की खाई इतनी चौड़ी हो गयी है कि जिसे पाटना आज असम्भव सा हो गया है जबकि यह देश धर्मनिरपेक्ष है तो फिर यहां किसी को अल्पसंख्यक या बहुसंख्यक कहना कहां तक उचित हो सकता है धर्मनिरपेक्ष राज्य में तो सभी समान माने जाने चाहिये किन्तु हमारे संविधान ने इन दो शब्दों को जोड़कर इस अलगाववाद की जड़ मजबूत कर दी हैं कि इन दोनों में परस्पर टकराव और अलगाववादी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इसके अलावा एक अल्पसंख्यक आयोग का गठन करके उस खाई को और अधिक चौड़ा बना दिया गया जबकि अल्पसंख्यक आयोग के स्थान पर मानव अधिकार आयोग का गठन होना चाहिये था।

हमारे संविधान में कुछ विशेष वर्गों या समुदायों को ही पिछड़ा माना और उनका विकास करने के लिये उन्हें आरक्षण तथा सरकारी आर्थिक सुविधायें देने का भी प्रावधान कर दिया जिससे वे आज तक अपनी अलग पहिचान बनाये हुए हैं जबकि वे हिन्दू समाज के ही अभिन्न अंग हैं किन्तु वे अपने को आज हिन्दू से अलग बनाये हुए है ताकि उनको सुविधायें उन्हें निरन्तर मिलती रहें। यदि इन सुविधाओं और आरक्षण का आधार वर्ग विशेष का समुदाय विशेष न होकर सभी समुदायों के पिछड़े लोगों को आरक्षण तथा सरकारी सुविधाओं का आधार आर्थिक होता तो वे सभी समुदाय अपने को हिन्दू समाज से अलग न रखकर परस्पर सहयोग से सभी के साथ मिलकर देश की मुख्यधारा में शामिल हो जाते और सभी का विकास भी होता तथा पृथकवादिता भी समाप्त हो जाती।

संविधान ने इस देश को संघ गण राज्य बनाने के लिये देश को भाषाओं के आधार पर लगभग २० प्रदेशों या टुकड़ों में बांटकर बिखेर दिया गया जिसके कारण आज विभिन्न प्रदेशों में अपने हितों को लेकर टकराव होता है और अलगाववादी मनोवृत्ति को पनपने में बहुत बड़ा प्रोत्साहन मिलता है।

[क्रमशः]

आर्य समाज क्या है ?

(लेखक : श्री ज्येष्ठ वसंत, बम्बई)

कुछ दिन पूर्व भारत सरकार के एक भूतपूर्व रक्षामंत्री श्रीमान् विश्वनाथ प्रताप सिंह ने किसी आर्य समाज के मंच से कुछ विवादास्पद राजनैतिक विषयों पर अपना विचार व्यक्त किया और उन्होंने उसके तुरन्त बाद ही अपनी गलती को स्वीकार करते हुए यह भी कहा कि "मुझे इस धार्मिक मंच से राजनैतिक विषयो पर नहीं बोलना चाहिए था। अर्थात् उनकी दृष्टि में आर्य समाज एक धार्मिक संस्था है और धार्मिक सस्था का क्या अर्थ है ? प्रायः अधिकांश लोग जहां साधु महात्मा लोग धर्म का उपदेश देते हैं, और जहां पूजा, धर्मग्रन्थों का पाठ, प्रार्थना और कुछ धार्मिक सस्कारो के भी कार्यक्रम होते हैं, उसी को धार्मिक स्थान कहते हैं और प्रायः उपदेश तथा पाठ के विषय वेदान्त यानि जीव और ईश्वर, पाप और पुण्य, इहलोक और परलोक आदि होते हैं। सांसारिक व्यावहारिक अथवा राजनैतिक चर्चा का यहां परहेज है। देश मे एक बहुत बड़ा वर्ग जिसमें शिक्षित और अशिक्षित दोनों प्रकार के लोग शामिल हैं, आर्य समाज को ऐसी ही एक धार्मिक संस्था मानता है। आर्य प्रतिनिधि सभा, बम्बई के मन्त्री के रूप में मैंने कई बार यहां के कुछ गणमान्य व्यक्तियों को आर्य समाज के कार्यक्रमों पर आने के लिए निमन्त्रण देने गया था। उनमें से एक थीं महाराष्ट्र की सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध क्रान्तिकारी महिला साहित्यकार। उन्होंने मेरे से कहा कि मैं किसी भी धार्मिक सस्थाओ के कार्यक्रमो मे नहीं जाती। एक दूसरे व्यक्ति, बम्बई हाईकोर्ट के एक न्यायाधीश थे। उन्होंने कहा कि मुझे धार्मिक संस्थाओं से चिढ़ है।

इस प्रकार के विचार हमें इसलिए सुनने को मिलते हैं कि अच्छे से अच्छे पढ़े लिखे लोग भी आज आर्य समाज को एक धार्मिक सम्प्रदाय विशेष ही समझते हैं। इसके साथ कुछ लोग ऐसे भी हैं जो आर्य समाज को एक समाज सुधारक संस्था के रूप में भी मानते हैं। क्योंकि आर्य समाज के मन्दिरों में सस्ते में अन्तर्जातीय विवाह, विधवा विवाह, शुद्धि आदि के कार्यक्रम होते देखे जाते हैं। इसमे कोई सदेह नहीं कि आर्य समाजों मे उपर्युक्त प्रकार के कार्यक्रम होते रहते हैं और कुछ समाजों मे इससे अधिक कुछ भी नहीं होता। लेकिन यह आर्य समाज की सही तस्वीर नहीं है। आर्य समाज के कार्यक्रम इतने सीमित नहीं हैं। आर्य समाज की सही तस्वीर इससे भिन्न है। इसके कार्यक्रम अधिक व्यापक हैं। इसके आदर्श और सिद्धान्तों की जड़ बहुत गहराई मे है। धर्म और समाज सुधार के बारे मे आर्य समाज का दृष्टिकोण अधिक उदार, विशाल तर्कसंगत और वैज्ञानिक है। वास्तव में आर्य समाज समग्र मानव जाति के सम्यक सुधार और सर्वांगीण उन्नति के लिए कार्य करने वाली संस्था है और ऐसी महान् संस्था इस समय विश्व में इसको छोड़कर दूसरी कोई भी नहीं है। यह वाक्य मैं प्रारम्भ में जिन परिस्थितियों में और जिन उद्देश्यों को लेकर, जिन लोगों ने आर्य समाज की स्थापना की थी उनकी ओर देखकर लिख रहा हूं। और इन पंक्तियों को लिखते समय मैं आर्य समाज की वर्तमान स्थिति से अनभिज्ञ भी नहीं हूं।

२० अक्टूबर १८७४ को स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज ने सर्वप्रथम बम्बई में पदार्पण किया था। उसके बाद लगभग एक महीने तक यहां उनके प्रवचन, उपदेश, शास्त्रार्थ आदि कार्यक्रम चलते रहे, उनके प्रवचनादि में वेदो की अपौरुषेयता, नित्यता एव परिपूर्णता, ईश्वर की मान्यता, आर्षग्रन्थों का महत्व वैदिक धर्म तथा आर्य संस्कृति का गौरव, परोपकार, व्यावहारिक अध्यात्मवाद और वैज्ञानिक मनोधर्म मुख्य रूप से प्रतिपादित विषय थे। अनार्षग्रन्थ, अन्धश्रद्धा रूढ़िवाद, जातिवाद, भाग्यवाद भोगवाद, अनीश्वरवाद, अनेकेश्वरवाद, अवतारवाद, पलायनवाद, मूर्तिपूजा, गुरुडम इत्यादि का स्वामीजी महाराज ने जोरदार खण्डन किया। उन्होने लोगों से विशेषरूप से विद्वानों और धर्माचार्यों से अनुरोध किया और उनको समझाया कि वे अपने स्वार्थ, पक्षपात, संकीर्णता और परस्पर विरोधी मत-सम्प्रदायों के चक्कर से ऊपर उठें और समस्त मानव समाज की एकता और उन्नति के लिए कार्य करें। उन्होंने लोगों को यह भी समझाया कि आर्य जाति के पतन के कारण स्वार्थ और वेद मार्ग से हटना तथा आपस के झगड़े थे। स्वामी जी महाराज की अद्वितीय विद्वता सरलता, नम्रता, सूक्ष्म बुद्धि, अदम्य साहस, ईश्वर पर अटूट विश्वास, मानव मात्र के कल्याण की भावना और मानव जाति पर उनका प्रेम एवं विश्वास, इन सारी बातों का लोगों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। बहुत जल्दी ही उनकी ख्याति सर्वत्र फैल गयी और एक सम्यक् क्रान्ति की पृष्ठ भूमि तैयार हो गयी। फिर भी यह क्रान्ति इतनी जल्दी फैल नहीं सकती थी। क्योंकि भारतीय हिन्दू समाज महन्तो और धर्माचार्यों के प्रभाव के अन्दर बुरी तरह फंस चुका था और रूढ़िवाद, अन्धविश्वास, अज्ञान, दारिद्रय तथा पराधीनता के कारण उत्पन्न दीनहीनता की भावना यहां के लोगों के अन्दर बहुत गहराई तक पहुंच चुकी थी। ऐसी परिस्थिति में क्रान्ति अथवा परिवर्तन एक रात में सम्भव नहीं था। यह ठीक भी नहीं क्योंकि इसकी प्रतिक्रिया के रूप में अशान्ति और क्लेश भी फैल सकते हैं। इसके साथ लोगों के अपने-अपने स्वार्थ, सामाजिक बन्धन आदि भी इस परिवर्तन में अड़चन पैदा करते थे। इसलिए लोगों को यह क्रान्ति यह परिवर्तन एक लंबा कार्यक्रम बनता दिखायी दिया। इसलिए उन्होंने संगठन की आवश्यकता का अनुभव किया, और संस्था निर्माण करने की बात सोची।

फिर नवम्बर मास के तीसरे सप्ताह में, साठ व्यक्तियों ने स्वामीजी महाराज से आग्रह किया कि आप अपने कार्यक्रमों को स्थायी रूप देने के लिए कोई संस्था स्थापित करें। उस अवसर पर स्वामीजी महाराज ने उन लोगों से जो शब्द कहे थे वे बहुत महत्वपूर्ण हैं—

यदि संस्था से पुरुषार्थ द्वारा परोपकार कर सको, तब तो मेरा कोई विरोध नहीं, मनाही नहीं है। किन्तु यदि यथोचित व्यवस्था न रखोगे तो आगे गड़बड़ाध्याय हो जायेगा। मैं तो मात्र जैसा अन्यों को उपदेश करता हूं, वैसा ही आप लोगों को भी करूंगा। इतना लक्ष्य में रखना कि मेरा कोई स्वतन्त्र मत नहीं है, और मैं सर्वज्ञ भी नहीं हूं। यदि मेरी भी कोई गलती आगे पायी जाय तो युक्तिपूर्वक परीक्षा करके उसे भी सुधार लेना। नहीं तो आगे यह भी एक मत हो जायेगा। भारत में जितने भी मतमतान्तर प्रचलित हैं वेद शास्त्ररूपी समुद्र में मिला देने पर नदी के समान सब में पुनः धर्म एक हो जायेगा। इसी से धार्मिक व व्यावहारिक सुधारणा हो जायेगी।

इस पर, स्वामीजी के जीवन और विचारो पर गम्भीर अध्ययन करने वाले केनरा विश्वविद्यालय [आस्ट्रेलिया] के प्रोफेसर जोर्डन साहब लिखते हैं कि इन बातों से स्पष्ट है कि स्वामी दयानन्द के मन में अपने विचारों के प्रचार

[क्रमशः]

दुष्यन्त तो हो

भारत में फिर महाभारत का दुष्यन्त तो हो ।
तुलसी, कबीर, नानक जैसा एक सन्त तो हो ।
है कसम तुम्हे राणा, शिव, लक्ष्मी झांसी की,
जैसे भी हो आतंक वाद का अन्त तो हो ।।
धिक्कार तुम्हे जिस मां का दूध पिया तुमने,
उसमे अमृत के बदले क्यो विष घोल दिया ।
इससे क्या ज्यादा घृणित कार्य कोई होगा,
कुछ डालर के बदले ममता को तोल दिया ।।
गर याद नहीं इतिहास दोबारा दोहरा लो,
एक राजा था जय चन्द तुम्हारे जैसा ही ।
दिल्ली पाने की आशा में जो ठगा गया,
हो सकता है फिर हाल तुम्हारा वैसा ही ।।
मां तो बलिदान हुई लेकिन एक अंग नहीं काटा,
सीने पर लाखों बार सहे फिर भी भू-भाग नहीं बांटा
है जिन्हें प्यार भारत मां से तो फिर सौगन्ध यही लेंगे,
दे देंगे जान मगर तुमको अब खालिस्तान नहीं देंगे ।।
इतिहास तुम्हें गाली देगा ललकारेगा,
घर का भेदी कह करके हर एक पुकारेगा ।
यूं तो धरती पर रावण सा भी कन्त हुआ,
युग के संग पर दुशासन का भी अन्त हुआ ।।
तुम चाहोगे अगर हिंसा से कुछ मनवाना,
हम सत्य अहिंसा के मत समझो पालक हैं ।
बहकाने मे तुम शकुनी के मत आ जाना,
हैं परशुराम हम अपने ही कुलघातक हैं ।।
तुम अगर प्यार से मागोगे इतना सुनलो,
अस्थी क्या हम हस्ती तक दान करा देंगे ।
तुम खालिस्तान की खातिर एक बिलखते हो,
हम पूरा हिन्दुस्तान तुम्हें दिलवा देंगे ।।
है शौक तुम्हें लड़ने का गर पूरा कर लो,
निर्बल पर लेकिन थोड़ा तो उपकार करो ।
यह राम, कृष्ण, अर्जुन वीरो की भूमि है,
हो वीर अगर आकर के सम्मुख वार करो ।।
सौगन्ध तुम्हें है भारत वंश की सन्तान,
कब तक तुम से ये अत्याचार सहन होगा ।
कह दो कातिल से अब कोई गर कत्ल हुआ,
लंका जैसा फिर खालिस्तान दहन होगा ।।

—हरीश शर्मा सिविल लाईन, बिजनौर

गजल

जिन्दगी के जंगलों में कुछ नहीं रहा,
जंगलो की जिन्दगी में कुछ नहीं रहा ।
जिन्दगी को काटते लोग हैं कुछ इस तरह,
जगलों को काटते लोग हैं कुछ जिस तरह ।
कोई भी पक्षी नहीं जंगल की किसी डाल पर,
जिन्दगी का रंग नहीं जिन्दगी के गाल पर ।
आकाश के नीचे हैं दोनों, दोनों के नीचे जमीं,
एक जड़ से उखड़ गया औ एक की जड़ कट गई ।

—शिशिर कुमार 'सिंह'

प्राण प्यारा वेद

जिसे ब्रह्मचारी सुसंयम्य जानें, गृहस्थी गृहों मे गहें, मुख्य मानें ।
वनों में बसे वानप्रस्थी बखानें, सुशिक्षा सुधा से स्व संन्यास जानें ।
चतुराश्रमों का अनूठा सहारा, बने वेद ही प्राण प्यारा हमारा ।१।
विजा वर्णसी ब्राह्मणों का यही है, रसा राजसी भी उसी में रही है ।
वही वैश्य वैभव की भी मही है, वही शूद्र की सत्य सेवा सही है ।
वही विश्व वर्णाश्रमा वारिधारा, बने वेद ही प्राण प्यारा हमारा ।२।
जहाँ भी रहें, वेद का गान गावें, पढ़ें वा पढ़ावें, सुनें वा सुनावें ।
सुधी को सुकर्मण्यता में लगावें, बनें विश्व को आर्य सच्चा बनावें ।
यही आर्य आदर्श व्रत पूर्ण धारा, बने वेद ही प्राण प्यारा हमारा ।३
मरें वेद की ज्योति मे लौ लगाते, ऋचा, मंत्र वा साम का गानगाते ।
सदादेश सारा सभी को सुनाते, करें प्रार्थना मृत्यु का मान पाते ।
'प्रभो! मानवी योनि में जो उतारा, बने वेद ही प्राणप्यारा हमारा ।४
कहीं जन्म लें, वेद के काम आवें, तभी जन्म साफल्य का लाभ पावें ।
द यं व्यंज हो 'सूर्य' अज्ञान भ्यावें, उसी से मनस्वी बनें, मोक्ष पावें ।
वही कृत्यु मंदाकिनी का किनारा, बने वेद ही प्राण प्यारा हमारा ।५

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए०, डी-लिट, अजमेर

आर्यमित्र का विशेषांक

दिनांक २३-८-८७ का 'आर्यमित्र' साम्प्रदायिक हिंसा–मेरठ' विशेषांक रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। मेरठ में साम्प्रदायिक दंगे सुनियोजित ढंग से अराष्ट्रीय तत्वों ने कैसे कराए ? जान-माल की क्या क्षति हुई ? कितने लोग बेघर बार हुए ? मेरठ में अभी तक शांति स्थापित क्यों नहीं हो रही ? ऐसी विषम स्थिति कब तक चलेगी ? आर्यसमाज ने दंगा पीड़ितो की रात दिन सेवा शिविर लगाकर ५० सहस्र से अधिक रुपए व्यय कर जो सहायता कार्य किया और जो अभी भी चल रहा है, उसका संक्षिप्त विवरण आदि इन सब तथ्यों का समावेश इस विशेषांक में रहेगा। कृपया प्रतीक्षा करें ? —सम्पादक मण्डल

बाल जगत

हम स्वस्ति मार्ग पर चलें

कुमारी कमला (आर्य समाज बसोरा)

स्वस्तिपन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सङ्गमेमहि ॥

नभ मण्डल में सूर्यचन्द्र पावन प्रकाश फैलावें ।
ज्ञानवान संसर्ग अनति कल्याण मार्ग पर जावें ॥

प्रस्तुत वेद मन्त्र कितना शिक्षाप्रद है। इस मन्त्र में परमात्मा से बड़ी सुन्दर प्रार्थना की गयी है। मन्त्रार्थ जानते ही मन एकदम प्रफुल्लित हो उठता है। इसका अर्थ थोड़ी सी संस्कृत जानने वाला भी बड़ी ही सरलता से निकाल सकता है। मन्त्र में कहा गया है—

हे परमात्मा हम कल्याणकारी पथ पर चलने वाले बनें। जैसे सूर्य और चन्द्रमा सुपथगामी हैं वैसे ही बनें जिससे हमारा कल्याण हो हम इस कल्याणकारी पथ पर पुनः पुनः बार-बार चलें। जिससे हम अपने जीवन को सुचारु रूप से सुगति दे सकें। सूर्य-चन्द्र के पथानुगामी बनकर हम इस संसार के लोगों के सामने एक आदर्श उपस्थित कर सकें। अब प्रश्न यह उठता है कि हम सूर्य और चन्द्र की भांति ही चलने वाला क्यों बनें। सूर्य का पहला गुण है मर्यादा सूर्य हमेशा ही अपने एक निश्चित समय पर उदय होता है निश्चित समय पर ही अस्त होता है। समय से न एक मिनट इधर होता है और न ही उधर होता है।

'उदेति सविता ताम्र एवास्तमेति च'

अर्थात् सूर्य उदय होने पर भी लाल होता है और अस्त होने पर भी लाल होता है। लाली तेज का द्योतक है। सूर्य उदय होने पर तथा अस्त के समय भी एक समान रहता है। सूर्य के गुणों को धारण करने वाले को सूर्यवंशी कहते हैं। हमारे इतिहास में सूर्य के गुणों को धारण करने वाले बहुत से महापुरुष मिलते हैं। जिनमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम का नाम अग्रणी है। गुरु वशिष्ठ राम के बारे में कितनी सुन्दर बात कहते हैं वाल्मीकि रामायण में एक स्थान पर आया है कि—

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च ।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकार विभ्रम ॥

अर्थात् राज्याभिषेक के लिये बुलाए हुए और वन के लिए विदा किये हुए रामचन्द्र के मुख पर मैंने कोई अन्तर नहीं देखा। यह था भी राम का आदर्श। इन्हीं आदर्शों के कारण ही भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम राम कहलाये। इसी प्रकार चन्द्रमा भी हजारों गुणों से परिपूर्ण है। चन्द्रमा का वैदिक नाम सोम भी है। सोम के माने अमृत होता है। चन्द्रमा हमेशा ही रात्रि में हम सभी पर अमृत वर्षा करता है। चन्द्रमा में अपरिमित शीतलता है। चन्द्रमा की शीतलता को धारण करने वाले हम बनें। सूर्य और चन्द्र के कार्यकलापों को ही देखकर एक श्रेष्ठ पुरुष यह प्रतिज्ञा करता हुआ कहता है कि हे परमात्मा—

मेरा पथ सूरज का पथ हो, मेरा पथ चन्दा का पथ हो।
जग को ज्योति देने के हित, अपना यह जीवन हो ॥

सूचना

बच्चे हमारे राष्ट्र के उदीयमना नक्षत्र हैं। समाज और राष्ट्र की भावी आशाएं इन्हीं पर निर्भर हैं। इनमें भावनात्मक विकास एवं सांस्कृतिक लेख पढ़ने की अभिरुचि को जागृत करने के उद्देश्य से "आर्यमित्र" आगामी मास से "बालजगत" शीर्षक के अन्तर्गत प्रतिमास एक लेखमाला का प्रकाशन करने जा रहा है जिसमें १८ वर्ष तक की आयु वर्ग के बच्चों द्वारा लिखित लेख ही प्रकाशित किए जायेंगे। लेख सुन्दर अक्षरों में, पृष्ठ के एक ओर लिखा हुआ अथवा टाइप किया हुआ, अधिकतम १००० शब्दों का होना चाहिए। विषय एवं भाषा बच्चों की रुचि तथा स्तर की होनी चाहिए।

जिन बच्चों के लिए लेख उपयुक्त एवं प्रकाशनीय होंगे उन्हें "मित्र", में प्रकाशित किया जायेगा और उनके लेखक बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप "आर्यमित्र" निःशुल्क रूप में वर्ष भर भेजा जायेगा।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

श्रावणी पर्व पर उपदेशक भजनोपदेशक आदि

१—श्री पं० केशवदेव शास्त्री—महोपदेशक सभा—आर्य समाज—जौनपुर
९ अगस्त से १६ अगस्त—८७ तक

२—„ डा० विजयपाल सिंह „ „ — „ भरथना इटावा
११ अगस्त से १७ अगस्त—८७ तक

३—„ ओतनारायण शास्त्री—उपदेशक „ „ कोपागंज (आजमगढ़)
९ अगस्त से १६ अगस्त—८७ तक

४— „ सुकर्मानन्द — „ „ हाथरस (अलीगढ़)
„ „

५— „ गजराज सिंह—भजनोपदेशक सभा „ कोटद्वार (गढ़वाल)
— „ „ „

६— „ धर्मराज सिंह — „ „ धामपुर कालोनी
„ „

७— „ ब्रह्मानन्द — „ „ लखीमपुर खीरी
„ „

८— „ ओमलाल—ढोलकवादक „ कोपागन्ज (आजमगढ़)
„ „

९— „ उदयप्रकाश—भजनोपदेशक „ „ आजमगढ़
९ अगस्त से ८ सितम्बर, ८७ तक

१०— „ रामचन्द्र शर्मा — „ „ हाथरस (अलीगढ़)
९ अगस्त से १६ अगस्त तक

११—„ शिवदेव बेधड़क „ „ अमेठी (सुल्तानपुर)
„ „

१२—„ जगतवीर सनेही „ „ कोपागंज (आजमगढ़)
„ „

१३—„ नेमप्रकाश „ „ भरथना (इटावा)
११ अगस्त से १७ अगस्त तक

१४—„ युगुल किशोर „ „ सीसामऊ मेस्टन रोड कानपुर
९ अगस्त से १६ अगस्त तक

१५—„ महावीर शास्त्री—उपदेशक „ हसनपुर (मुरादाबाद)
९ अगस्त से १६ अगस्त तक

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

सत्यवीर का असत्य आचरण

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि—

१—आर्य समाज मन्दिर मैनपुरी व उसके द्वारा संचालित दयानन्द इण्टर कालेज मैनपुरी की एक मात्र स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० है जिसके माननीय प्रधान श्री इन्द्रराज जी व मन्त्री स्वयं अधोहस्ताक्षरी हैं।

२—सत्यवीर पुत्र लटूरी, झिन्गूपुरा [इटावा] को इस सभा के सर्व सम्मत निश्चय दि० २७-७-८५ द्वारा आर्य जगत से निकाला जा चुका है उसका उक्त आर्य समाज व कालिज से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। वह एक अनैतिक, असामाजिक, अराजक व स्वार्थी व्यक्ति है।

३—उक्त सत्यवीर द्वारा इस सभा के मान० प्रधान व अधोहस्ताक्षरी आदि ११ आर्यजनों के विरुद्ध जो असत्य क्रिमिनल केस सं० ४६४/८५ स्पे० जुडीशियल मजिस्ट्रेट मैनपुरी के न्यायालय में किया गया था उसकी कार्यवाहियां, क्रि० मि० रिट सं० ६११०/८७ के अन्तर्गत, मान० उच्च न्यायालय द्वारा स्थगित की जा चुकी हैं।

४—इसी प्रकार उक्त सत्यवीर द्वारा इस सभा के मान० प्रधान व अधोहस्ताक्षरी आदि के विरुद्ध 'निषेधाज्ञा' पाने हेतु जो असत्य वाद सं० ७५४/८५, मुन्सिफ मैनपुरी के न्यायालय मे किया गया था उसमें वह 'निषेधाज्ञा' तो दूर रही 'यथास्थिति' का सामान्य आदेश भी प्राप्त नहीं कर सका है।

५—इस सभा का अब कोई भी प्रकरण किसी भी न्यायालय आदि मे विचाराधीन नहीं है उसकी वर्तमान अन्त० सभा सर्वथा निर्विवाद है।

६—इस सभा द्वारा निष्कासित कैलाशनाथ सिंह के अवैध सहयोग न्यायालयों के उक्त प्रकरणों के असत्य आधार तथा अराजक व स्वार्थी तत्वों की गुण्डागर्दी के अनैतिक बल पर उक्त सत्यवीर द्वारा उक्त आर्य समाज व कालिज पर छलपूर्वक जो हस्तक्षेप प्रदर्शन करके उसकी सम्पत्ति का दुरुपयोग किया जा रहा है वह सर्वथा अवैधानिक और दण्डनीय अपराध है।

७—सारांश—उक्त सत्यवीर का चालचलन, लेनदेन, रहन-सहन, खान-पान तथा आचार-विचार आदि लेशमात्र भी आर्योचित न होने के कारण वह कदापि विश्वसनीय नहीं है।

चेतावनी

अतः उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य मे आर्यजनो और जन-साधारण को पूर्व की भांति पुनः सचेत किया जाता है कि—

वे उक्त सत्यवीर के छल-कपट पूर्ण व्यवहार से सर्वथा सावधान रहकर उसके द्वारा किये जा रहे उक्त अवैध हस्तक्षेप प्रदर्शन से भ्रमित न हों। अन्यथा उसके उक्त प्रकार के व्यवहार मे होने वाली किसी भी प्रकार की हानि के लिए यह सभा लेशमात्र भी उत्तरदायी न होगी।

अनुरोध

१—आर्यजनो से—

यतः उक्त सत्यवीर का आचरण आर्योचित नहीं है और उसके इस आचरण से पवित्र आर्य समाज की गौरवमयी गरिमा अत्यधिक दुष्प्रभावित हो रही है।

साम्प्रदायिक उन्माद में पीड़ित मानवता की सहायता पहुंचाने में आर्य समाज कभी पीछे नहीं रहा

आइए ! पीड़ितों की मदद कीजिए। इस पुण्यकार्य में धन की सहायता भेजकर यश के भागी बनिए।

मेरठ के दंगा पीड़ितों के सहायतार्थ सभा प्रधान श्री इन्द्रराज की मार्मिक अपील पर जनता तथा संस्थाओं ने मुक्तहस्त होकर इस पुण्य-कार्य में धनराशि भेजना प्रारम्भ कर दिया है। दानदाताओं की सूची क्रमशः आर्य मित्र में प्रकाशित की जा रही है। सभा दानी महानुभावों तथा संस्थाओं का आभार प्रकट करती है।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

१—आर्यसमाज, गणेशगंज लखनऊ	१००१ रुपया	
२—आर्य समाज बागपतगेट के सौजन्य से—		
मेरठ के पटेल नगर निवासियों द्वारा एकत्र	५०००	,,
३—श्री मनोहर लाल सर्राफ प्रधान आ० स० मेरठ शहर	१५००	,,
४—श्री राजेलाल सर्राफ एण्ड सन्स चैरिटेबिल ट्रस्ट मेरठ	१५००	,,
५—श्री महेन्द्र प्रकाश सर्राफ मेरठ	१०००	,,
६—सप्रा चैरिटेबिल ट्रस्ट, मेरठ	११००	,,
७—स्त्री आर्य समाज लाल कुर्ती मेरठ	१२३१	,,
८—आर्य समाज बापर नगर मेरठ	३११३	,,
९—दौलतराम दीवान चैरिटेबिल ट्रस्ट मेरठ	१०००	,,
१०—पंजाबी आर्य सभा बाघरनगर मेरठ	७७३	,,

[क्रमशः]

अतः आर्य समाज की उक्त गरिमा की रक्षार्थ म० दयानन्द के आर्यवीरों से अनुरोध है कि— °

वे एक जुट होकर उक्त सत्यवीर का सार्वजनिक बहिष्कार करके संगठन की पवित्रता,एकता और उसके अनुशासन की मर्यादा की रक्षा करने में सफल सहयोग करें।

२—प्रशासन से—

यतः उक्त सत्यवीर के उक्त अवैधानिक कृत्य दण्डनीय अपराध हैं।

अतः सार्वजनिक हितों की रक्षार्थ मैनपुरी-जनपद प्रशासन से अनुरोध है कि—

वह उक्त सत्यवीर के विरुद्ध तत्काल अभियोग संस्थित कराकर सार्वजनिक हितों की रक्षा करें।

मनमोहन तिवारी, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०

सत्यवीर की अपील खारिज

इस सभा द्वारा निष्कासित सत्यवीर [करहल] ने, मुन्सिफ मैनपुरी द्वारा अपने [सत्यवीर के] विरुद्ध निर्गत निषेधाज्ञा के विरुद्ध इस सभा के प्रति एक प्र० अपील सं० ६१/८४ माननीय जिला जज मैनपुरी के न्यायालय में संस्थित की थी जिसे माननीय न्यायालय ने दिनांक १८-७-८७ को खारिज कर दिया है।

उक्त सत्यवीर ने इसी अपील से सम्बन्धित, कुछ निष्ठावान आर्य-जनों द्वारा न्यायालयी अवज्ञा के मिथ्या आरोप का एक प्रार्थना पत्र प्रकीर्ण सं० २४५/८४ उक्त न्यायालय में दिया था। माननीय न्यायालय ने उक्त प्रार्थना पत्र भी उक्त दिनांक को खारिज कर दिया है।

भूपपाल सिंह 'अटल' मुख्य निरीक्षक, सभा।

चौ० चरणसिंह के स[illegible] पर कृषि विज्ञान अनुसंधान केन्द्र खोला जाये

आर्यसमाज के नेता और महानगर परिषद् के भूतपूर्व सदस्य डा० प्रशान्त वेदालंकार ने लोकदल (अ) के अध्यक्ष श्री अजीतसिंह को पत्र लिखकर यह मांग की है कि वे स्व० चरणसिंह को राजघाट, शान्तिवन विजयघाट और शक्तिस्थल आदि के समान उनकी समाधि न बनायें। वे अपनी समाधि के लिए इतनी भूमि खाली छोड़ने के पक्ष में कभी न रहते। चौधरी चरणसिंह एशियाड के लिए स्टेडियम व पंचसितारा होटलों के निर्माण के विरुद्ध थे।

यदि वे और उनका दल—समाधि के लिए प्राप्त भूमि का उपयोग भारतीय विशेष रूप से ग्रामीण अर्थ शास्त्र अथवा कृषि में विशेषता प्राप्त करने के लिए एक बड़े संस्थान की स्थापना में कर सके तो यह चौधरी चरणसिंह के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

डा० प्रशान्त ने लिखा है कि भारतीय अर्थशास्त्र एवं कृषि विज्ञान पर चौधरी चरणसिंह के मौलिक विचार थे, जो किसी भी विश्वविद्यालय में नहीं पढ़ाये जाते। प्रस्तावित संस्थान में उनकी विचारधारा पर अनुसंधान कार्य हो सकता है।

डा० प्रशान्त ने यह भी लिखा है कि यदि चौधरी चरणसिंह की समाधि के लिए प्राप्त भूमि पर अध्ययन संस्थान खोला जा सके तो यह एक आदर्श होगा जो कि देश के लिए उपयोगी रहेगा। देश की हजारों एकड़ भूमि इन समाधि स्थलों पर न लगकर राष्ट्र-निर्माण के कार्यों में लगेगी, इससे महापुरुषों का नाम भी अमर होगा।

पंजाब के निर्मम हत्याकाँड की भर्त्सना

आर्यसमाज अजमेर के पदाधिकारियों ने पंजाब तथा हरियाणा में आतंकवादियों द्वारा किये गये निर्मम बस यात्री हत्याकांड की कड़े शब्दों में भर्त्सना की है तथा भारत सरकार एवं सम्बन्धित राज्य सरकारों से इस नरमेध को सदा के लिए रोकने, राष्ट्र के जन-धन की रक्षा करने तथा देशद्रोही एवं मानवता विरोधी आतंकवादियों के खिलाफ कठोरतम कार्यवाही करने की मांग की है। साथ ही पंजाब को सेना के हवाले सौंपने तथा कश्मीर से कच्छ तक सीमा पर सुरक्षा पट्टी बनाने एवं पीड़ित क्षेत्रों को भी समुचित मुआवजा दिये जाने की मांग की है।

आर्यसमाज अजमेर ने निर्दोष दिवंगत बस यात्रियों के परिजनों के प्रति संवेदना भी व्यक्त की है, अजमेर बन्द के समय आर्यसमाज अजमेर के अन्तर्गत संचालित समस्त शिक्षण संस्थायें भी राष्ट्रीय रोष और आक्रोश तथा शोक में सम्मिलित होने के लिये बन्द रहीं।

समवेदना

निम्नलिखित आर्यों के दिवंगत होने के समाचार प्राप्त हुए हैं जिस के लिए सभा समवेदना व्यक्त करती है—

१—श्री राजदेव पाण्डेय मन्त्री आर्य समाज बांसगांव [गोरखपुर] के पूज्यनीय चाचा जी।

२—श्री राम अवतार शास्त्री मन्त्री आर्य समाज रसूलपुर पो० बजुरौल [गोरखपुर] के बड़े बाबू जी।

दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा प्रियजनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना है। —सभा मन्त्री

भीषण अग्नि काण्ड

सहारनपुर जिले के गनेशपुर ग्राम में दिनांक ३०—६—८७ को दोपहर में तेज आंधी के कारण भीषण अग्नि कांड हो गया। इस अग्नि कांड से १३५ परिवार प्रभावित हुए। सरकार ने भरपूर सहायता पहुंचाई है। आर्यसमाज गनेशपुर के सभी कार्यकर्ता एवं ग्राम पंचायत के लोग आर्यसमाज के संयोजन में सहायता कार्य में अनथक भाव से लगे हैं।

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क १५जुलाई १९८७ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८६ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

५११, ६२९, ९११, ७४८, ७४९, १३४८, २४५२, २९५९, २९६६, ४४७८, ४५३७, ४९७३, ४९८२, ५२७७, ५५३७, ६४७६, ८२९८, ८८८७, ८९७०, ९२०१, १०१८३, १०१८५, ११६५०, ११६५२, ११९४५, ११९४७, ११९४८, १२२५१, १२२६७, १२२७८, १२९३८, १२९४१, १२९४३, १२९४४, १३१३६, १३१३९, १३१७३, १३४८८, १३४९०, १३४९६, १३४९९, १३५००, १३५०९, १३५१०, १३५११, १३९१९, १३९२०, १३९२१, १३९२२, १३९२३, १३९२४, १३९२५, १३९२६, १३९२७, १३९२८, १३९२९, १३९३०, १३९३१, १३९३२, १३९३९, १३९४०, १३९४१, १३९४२, १३९४३, १३९४४, १३९४५, १३९४६, १३९४७।

विनीत—

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६१
पंजीकरण सं० एल डब्लू/एन. पी. ७६
श्रावण शुक्ल १५
रविवार, ९ अगस्त १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का ... पत्र

3835-श्रीसम्पादक जी
गुरुकुल पत्रिका
गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)

स्वाध्याय करो

सब मनुष्यों को उचित है कि अपने ज्ञान और विद्या को बढ़ाते हुए एक ब्रह्म ही की उपासना करते रहें। उसके साथ वेदादि शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना भी बराबर करते जायें। प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से ठीक-ठीक परीक्षा करके जैसा तुम अपने आत्मा में ज्ञान से जानते हो, वैसा ही बोलो और उसी को मानो। उसके साथ पढ़ना-पढ़ाना भी कभी न छोड़ो। विद्या ग्रहण के लिए ब्रह्मचर्य आश्रम को पूर्ण करके सब कर्म में निश्चित रहो। वेदादि शास्त्रों से और अग्नि आदि पदार्थों से धर्म, अर्थ काम और मोक्ष को सिद्ध करो।

ऋत सेले के प्रजाति पर्यन्त धर्म के जो बारह लक्षण होते हैं, उन सबके साथ स्वाध्याय जो पढ़ना और प्रवचन जो पढ़ाने का उपदेश किया है सो इसलिये है कि पूर्वोक्त जो धर्म के लक्षण हैं, वे तब प्राप्त हो सकते हैं कि जब मनुष्य लोग सत्य विद्या को पढ़ें, और तभी सदा सुख में रहेंगे क्योंकि सब गुणों में विद्या ही उत्तम गुण है। इसलिये सब धर्म लक्षणों के साथ स्वाध्याय और प्रवचन का ग्रहण किया है। सो इनका त्याग कभी न करना चाहिये। हे मनुष्य लोगो! तुम सब दिन सत्य वचन ही बोलो। धर्म और ईश्वर की प्राप्ति के लिये नित्य विद्या ग्रहण करो, अर्थात् विद्या का जो पढ़ना-पढ़ाना है, यही सबसे उत्तम है।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

गुरुकुल ... द्वारा ... प्रचार

गुरुकुल ... ज्वालापुर ... ग्राम मेरठ उ० प्र० में दि० १-७-८७ गुरुकुल के ... ब्रह्मचारी ... के भतीजे का नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। गुरुकुल के आचार्य श्री स्वामी विवेकानन्द जी ने संस्कारों की महत्ता और उसकी उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए बच्चे के उज्ज्वल भविष्य निर्माण के लिए माता-पिता एवं बन्धु बान्धवों को प्रेरित किया। संस्कार गुरुकुल के स्नातक श्री प्रेम प्रकाश शास्त्री विद्यालंकार द्वारा सम्पन्न हुआ।

दि० ५-७-८७ को मोदी नगर में गुरुकुल के ही स्नातक श्री प्रेम प्रकाश शास्त्री विद्यालंकार एवं शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थी ब्र० ... द्वारा एक विवाह संस्कार सम्पन्न कराया गया। दोनों पक्षों के आये हुये अभ्यागतों ने संस्कार की प्रशंसा की और भविष्य में वैदिक रीति से ही सारे कर्म काण्ड कराने के लिए संकल्प लिया।

आर्य समाज प्रतापगढ़ का निर्वाचन
प्रधान—श्री अजीत कुमार कपूर
मन्त्री—श्री गौरी शंकर
कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्रप्रसाद श्रीवा०

धर्म शिक्षा पुस्तकों के सम्बन्ध में—

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा द्वारा प्रकाशित धर्म शिक्षा भाग १ से १२तक की पुस्तकें सभा कार्यालय में उपलब्ध हैं, पुस्तक प्राप्ति हेतु कार्यालय से सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ पूरा पता रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखें।

नोट—धर्म शिक्षा की पुस्तकों पर कमीशन दिया जायगा। रेल भाड़ा एवं डाकव्यय क्रेता को देना होगा।

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए नवभारतीय आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एम० पी० प्रिंटर्स (निकट दुर्गा सिनेमा) चारबाग लखनऊ में श्रीविश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है।।
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्तर प्रदेश का

वार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन का कार्यक्रम

सभा से चित्र भेजने की तिथि	१५–८–८७ तक
चित्र वापस सभा में आने की तिथि	१५–९–८७ तक
सभा में चित्र जांचना	१६–९–८७ से २५–९–८७ तक
सूची का प्रकाशन	४–१०–८७
आपत्ति प्राप्त करने की अन्तिम तिथि	१५–१०–८७
आपत्तियों की सुनवाई एवं समाधान	१६-१०-८७ से २०-१०-८७ तक
शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	२७–१०–८७
सभा का वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	१४ व १५ नवम्बर ८७

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दिनांक २ अगस्त १९८७ को सभा भवन लखनऊ में सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में हुई और उसमें वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

सम्पादकीय

लखनऊ–भाद्रपद कृष्ण७ सम्वत् २०४४ रविवार १६ अगस्त १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

आइये शपथ लें

१५ अगस्त का पुनीत पर्व प्रतिवर्ष हमारे लिए नयी उमंग व उल्लास को लेकर आता और हमें अपने कर्त्तव्यों का बोध करवा कर चला जाता है। परन्तु हम अपने कर्त्तव्यों का कितना पालन करते कितना नहीं करते यह हमारे विश्लेषण का विषय है।

पराधीन भारत में हमने अपेक्षा की थी कि हम स्वतंत्र होंगे—हमारा अपना शासन होगा, अनुशासनबद्ध हमारा जीवन होगा। सदियों से कुचला गया, रौंदा गया व लूटा गया हमारा राष्ट्र स्वतंत्र होकर समृद्ध होगा। सुखी होगा। अपने प्राचीन विश्व गुरु के पुनीत पद पर पुनः प्रतिष्ठित होगा। इस सबके लिए ही हमारे—पूर्वजों ने स्वाधीनता संग्राम में कूदकर यातनायें सही थीं।

स्वाधीनता प्राप्ति के ४० वर्ष व्यतीत हो गये। इस बीच—हमने काफी प्रगति की। काफी विकास हुआ, विश्व के प्रगतिशील देशों की अग्रिम पंक्ति में हमारा नाम है। आर्थिक समृद्धि भी काफी हुयी है। हम खाद्यान्नादि विषयों में आत्म-निर्भर हो गये हैं। हमने वैज्ञानिक प्रगति भी खूब की है, अभी उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर बढ़ रहे हैं। परन्तु चरित्र की दृष्टि से राष्ट्रीयता की दृष्टि से हम कमजोर हो रहे हैं। हमारा, नैतिक—चारित्रिक ह्रास हो रहा है। हम पश्चिम का हर रूप में अनुसरण करने की चेष्टा करते हुए ही अपनी समृद्धि को ढूढ़ने में रत हैं। आज अंग्रेजियत हमारे रग-रग में समाती जा रही है, हमें अंग्रेजी वेष, अंग्रेजी भाषा व अंग्रेजी व्यवहार ही रसता है। अंग्रेजों की कुटिल चाल कि भारतीयों को ऐसा मानसिक रूप से पराधीन बना दे कि वे अपने देश की संस्कृति सभ्यता को अपना कर समृद्ध होने की कल्पना ही न करें सदैव पश्चिमाभिमुख रहें—ही सफल सी हो रही है, आज हम अंग्रेजियत से अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

जिसे अपने राष्ट्र पर अपनी राष्ट्र भाषा पर अपने राष्ट्रीय चरित्र पर गर्व नहीं होता वह मरे हुए के समान ही होता है। यह सब कुछ हमारे लिए चिन्तनीय है। आज हम राजनीति के अखाड़े बाज बनते हैं परन्तु देश के लिए कम अपने लिए अधिक। हम सामाजिक राष्ट्रीय उत्थान के लम्बे-चौड़े भाषण तो करते हैं परन्तु उत्थान में व्यवधान परोक्ष रूप में पहुंचाने में लज्जा अनुभव नहीं करते। आज राजनीति में वाचालता, झूठ, फरेब स्वार्थ का इतना अधिक प्रवेश हो गया है कि अब हमें कुछ भी कहने या करने में संकोच नहीं होता।

अभी हाल में ही लखनऊ में कांग्रेस सेवादल का एक सम्मेलन हुआ जिसमें सांसद श्री तारीक अनवर ने श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के लिए कुत्ता शब्द का प्रयोग करके उनकी निन्दा का असांसदीय (सांसद के व्यवहार के विपरीत) ढंग से प्रयास किया। इससे जहां श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की छवि पर कोई आंच नहीं आयी वहीं कांग्रेसी सांसद होने के नाते श्री तारिक अनवर के इस अनुचित भाषण से कांग्रेस की छवि निश्चय ही धूमिल हुयी—और उनकी मानसिक कमजोरी का दर्शन हुआ।

श्री मुलायमसिंह यादव जो कि राजनीति के कुशल खिलाड़ी हैं। उन्होंने श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को सुझाव दिया कि वे ९० विधायक तोड़ लें तो वे(श्री मुलायमसिंह)उन्हें सरकार बनाने में सहयोग करेंगे। इस सुझाव में राष्ट्रीयता नहीं मात्र सत्ता मोह झलकता है। ऐसे भाषणों या बयानों से विरोधी पक्ष की साख बनती नहीं गिरती ही है।

आज देश में सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय बोफोर्स सौदे में दलाली व गलत रूप से देश की सम्पदा को विदेशों में छुपाने की जांच का है। इस विषय में सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों का ही बाह्य दर्शन जहां राष्ट्र के सामने सत्य के खुलासा करने का है। वहीं आन्तरिक चिन्तन पक्ष-पातपूर्ण है। दोनों ही पक्ष इस मसले को राष्ट्रीय समृद्धि की भावना से कम अपनी समृद्धि की भावना से अधिक ले रहे हैं। लोक सभा व राज्य सभा में जिस प्रकार दोनों ही पक्ष अपना रवैया अपना रहे हैं वह राष्ट्र के लिए शोचनीय है। संसद में उनका चिन्तन अपनी-अपनी पार्टी का स्तर जन सामान्य की दृष्टि में उठाना मात्र है। उन सबके रवैये से यही दृष्टिगत होता है कि वे इस सौदे में राष्ट्रीय क्षति का आकलन करके देश को समृद्ध करने को प्रयत्नशील नहीं वे एक दूसरे पर दोषा-रोपण करके मात्र अखबारों की सुर्खियों में आना चाहते हैं ताकि संसद व विधान सभाओं में पहुंचने का उनका रास्ता आसान हो जाये। और जो अराष्ट्रीय देशद्रोही काम करने वाले हैं वे भी बेलाग बच जायें।

हमारा राष्ट्रीय चरित्र तो यह कहता है कि यदि किसी ने जाने या अनजाने में बोफोर्स सौदे या अन्य किसी भी प्रकरण मे भूल की है उससे राष्ट्र की क्षति हुई है या होने की सम्भावना है वह निःसंकोच स्वीकार करके भविष्य में वैसा न करने का संकल्प ले जो देश का धन विदेशों में भेज दिया है उसे स्वतः वापस मंगाकर देश की समृद्धि में लगायें।

[शेष पृष्ठ १० पर]

वेद-विवेचन

यते महि स्वराज्ये

[श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' वेदवारिधि, बी-६४ राजाजीपुरम्,लखनऊ]

[भारत मे प्रति वर्ष १५ अगस्त को स्वाधीनता दिवस मान कर एक राष्ट्रीय पर्व के रूप में समारोहपूर्वक मनाया जाता है। जब देश अंग्रेजों के आधिपत्य से मुक्त हुआ तो स्वराज्य आया परन्तु ४० वर्षों की दीर्घ अवधि में भी हम इसे सुराज्य नहीं बना सके और आज तो स्थिति इतनी विषम है कि देश की अखण्डता खतरे में है, स्वराज्य पर विश्व की महान शक्तियां गिद्ध दृष्टि लगाये बैठी हैं, ऐसे निराशात्मक स्वर गुंजाये जा रहे हैं। इन प्रतिकूल परिस्थितियों में स्वराज्य के लिए हम कैसे प्रयत्न करें, इसका दिग्दर्शन वेदानुसार इस लेख में कराया जा रहा है क्योंकि स्वराज्य की सुरक्षा इस समय हमारे लिये सबसे बड़ा प्रश्न है।]

आज स्वराज्य देश मे अपनों के राज्य का पर्यायवाची शब्द बनकर रह गया है। देश के समस्त राजनैतिक बारम्बार घोषणायें करते हैं कि हमने 'स्वराज्य' बड़ी कठिनता से प्राप्त किया। आज जो हम 'स्वराज्य' में रह रहे हैं, उसका श्रेय उन महान देशप्रेमी जनों को है जिन्होंने अपने जीवनों को स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर हंसते-हंसते बलिदान कर दिया। आज उनके त्याग और तप की केवल चर्चा होती है। स्वाधीन होते ही सत्ताधारियों ने 'धर्म निरपेक्षता' की दुहाई देकर देशवासियों को नितान्त स्वार्थी, छली, कपटी, लोभी, क्रूर, निर्मम, हिंसक और द्रोही बना दिया जिसके फल स्वरूप आज देश के अधिकांश व्यक्ति येन केन प्रकारेण नोचने खसोटने में लगे हैं। शहीदों ने नींव के पत्थर बनकर 'स्वराज्य' के जिस महल को खड़ा किया था, उसके वासी जब उसे क्षत विक्षत करने में लगे हों, तो वह कब तक स्थिर रह सकता है। स्वर्गीय रफीक अहमद किदवई ने इस सत्य का साक्षात्कार करते हुए कहा था–

"हर शाख पर उल्लू बैठा है, अंजामे गुलिस्तान क्या होगा?

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का सूक्त ८० वेद का स्वराज्य सूक्त कहलाता है★। इसके १६ मन्त्रों मे प्रत्येक मन्त्र के अन्त मे ये शब्द आते हैं–'अर्चन्ननु स्वराज्यम्'। यदि वेद के इस सूक्त को देश के जन साधारण तक पहुंचाया जाता तो यह निश्चित था कि वे स्वराज्य की अर्चना के पाठ पढ़ते और तब वैदिक धर्म उनके कर्म में प्रतिलक्षित होता और वे धर्म के वास्तविक स्वरूप से अवगत होते।

हमारे देश के कर्णधारों ने इस तथ्य को विस्मृत कर दिया है कि व्यक्तियों से ही परिवार समाज और राष्ट्र बनते हैं–और 'स्वराज्य वहीं से प्रारम्भ होता है। जब तक व्यक्ति का यह 'स्वराज्य' सुराज्य नहीं बनेगा, बाहर के स्वराज्य कभी सुराज्य नहीं बनेंगे। प्रत्येक मानव शरीर में आत्मा ही वास्तविक राजा है। जब तक शरीरस्थ इन्द्रियां और मन सुनियन्त्रित नहीं होंगे, आत्म राज्य कुराज्य बना रहेगा और ऐसे व्यक्ति जिन समुदायों में सम्मिलित होंगे वहां सदैव दुर्व्यवस्था ही रहेगी।

अतएव स्वराज्य की सुरक्षा का शुभारम्भ देशवासियों को वेदानुसार अपने व्यक्तिगत जीवनों से करना होगा। वेद कहता है–

आ यद् वामीय चक्षसा मित्र वयं च सूरयः।
व्यचिष्ठे बहु पाय्ये यतेमहि स्वराज्ये॥ –ऋ० ५-६६-६

अर्थात् स्वराज्य के लिये मित्र दृष्टि रखने वाले व्यक्ति और ज्ञानी योग्य होते हैं। संघर्ष करने वाले संकुचित दृष्टिकोण रखने वाले और अज्ञानी नहीं। ज्ञानी सुविचारों का संवर्धन करते हैं और अज्ञानी कुविचारों और कुप्रयत्नों से स्वराज्य का सर्वनाश करते हैं। ज्ञानी ही अग्रणी होकर अपनी गतिशीलता का परिचय देते हुए साधारण जनों का पथ-प्रदर्शन करते हैं। वेदानुसार 'यदजः प्रथमं सम्बभूव स ह तत् स्वराज्यमियाय' (अथर्व० १०–७–३१) अर्थात् स्वराज्य की सुरक्षा वही कर सकता है, जो अग्रभाग मे अग्रसर होकर संचालन करे और हलचल मचा दे।

स्वराज्य की रक्षा के लिए उसके शत्रुओं का संहार अत्यावश्यक है। बाह्य शत्रुओं की अपेक्षा भीतर के शत्रु अधिक भयानक होते हैं। व्यक्तिगत 'स्वराज्य' के यदि षड्रिपु यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष और अहंकार उसे अधिक हानि पहुंचाते हैं तो गृहों, समाजों और राष्ट्रों के आन्तरिक शत्रु उनका अधिक अहित करते हैं। शत्रु चाहे बाह्य हों अथवा भीतरी, उनके विनाश के लिये अपेक्षित है दक्षता जिसके लिये वेदवाणी कहती है–

स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे, युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः। (ऋ० १–३९–२)

अर्थात् शत्रुओं का संहार शस्त्रों और अस्त्रों से होता है। शत्रुओं की अपेक्षा अधिक बलवान होने पर तथा कार्यक्रम सुदृढ़ता से ही विजय की प्राप्ति होती है।

आज वह समय आ गया है कि हमारे देश के नेता वेद में व्यक्त स्वराज्य के महत्व को समझते हुए ऐसी सुपावन शिक्षायें जिनसे वेद ओतप्रोत हैं, देशवासियों तक पहुंचायें और वेद को ही उनका धर्म घोषित करें। वेद तो स्वराज्य की अर्चना करने वालों को प्रेरित करते हुए कहता है–'त्वं राष्ट्राणि रक्षसि' (अ० १९–३०–३) तू राष्ट्रों का रक्षक है। यदि हम स्वराष्ट्र को ही रक्षित न कर सकें तो अन्य राष्ट्रों की किस भांति रक्षा करेंगे?

★ पूर्ण सूक्त की व्याख्या लेखक की 'स्वराज्य की अर्चना नामक पुस्तक में की गई है, जो वेद संस्थान द्वारा प्रकाशित है।

श्री देवीदास आर्य को आतंकवादियों के धमकी भरे पत्र

कानपुर–सुप्रसिद्ध आर्य समाजी नेता तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के उपाध्यक्ष तथा केन्द्रीय आर्य सभा के अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य को आतंकवादियों ने गत सप्ताह एक एक करके दो पत्र भेजे हैं जिनमें उनको गोली से उड़ाने धमकी दी गई है। फोन द्वारा भी धमकी दी गई कि उनके मकान को बम से उड़ा दिया जायेगा क्योंकि वह खालिस्तान व सिखों के विरोधी हैं। पत्रों में यह भी लिखा गया है कि वह हिन्दू नेता बनते हैं। अब यह नेता गीरी चलने नहीं दी जायेगी। उनका भी वही हाल होगा जो हरियाणा के बस यात्रियों का किया गया। श्री देवीदास आर्य ने इन पत्रों के सम्बन्ध में कहा कि वे आर्य हैं आर्य धमकियों से डरा नहीं करते। अपने पवित्र पथ पर बढ़ते रहते हैं। वे भी निर्भय हो अपना सेवा कार्य करते रहेंगे।

–मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा कानपुर

'राजनैतिक समस्याएं' देश के पहरेदारों से

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ० प्र०)

सन् १९८५ मे मौलाना ओवेदुल्ला खा आजमी के भाषण कैसेट समूचे भारत मे और भारत के प्रत्येक नगर के उस मोहल्ले और उस क्षेत्र मे जहा मुस्लिम आबादी है, बहुत दिनो तक बजाया जाता रहा। उस कैसेट मे उक्त मौलाना का जो भाषण है, उसमें उन्होने भारतीय न्यायालय और वह भी सर्वोच्च न्यायालय का अपमान उसके निर्णय को "जूते की नोक पर रखेंगे' कहकर किया है। मौलाना ने अपने उस भाषण में यह भी कहा कि "कुरान को चैलेन्ज देने वाला होशियार रहे, या उसे मुसलमान होना पड़ेगा या उसके बाप को या उसकी औलाद को।"

हमारी जानकारी मे जब यह कैसेट आया तो हमने "कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध करो" शीर्षक से एक लेख विविध पत्रो मे भेजकर मौलाना की मजहब-ए इस्लाम की दावत स्वीकार कर ली। उस लेख मे हमने लिखा था कि कोई व्यक्ति तथा कोई वर्ग किसी पुस्तक को बलात् दूसरे लोगो से न तो ईश्वरीय ग्रन्थ के रूप मे मनवा सकता है और न किसी को उसका मान ही करने को बाध्य कर सकता है, जब तक उसे मान के योग्य और ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध न कर दें। "हमारे इस लेख के उत्तर मे होना यह चाहिए था कि जिन मुसलमान बन्धुओ ने इसे पढ़ा था या तो वे स्वय या मौलाना ओबेदुल्ला खा को बुलाकर हमसे शास्त्रार्थ कराते और जब कुरान ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध हो जाती तो इस सिद्धान्त के अनुसार कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।" न केवल हम ही अपितु अनेको व्यक्ति कुरान को ईश्वरीय पुस्तक मानकर उसका सम्मान करने को तैयार हो जाते उस कुरान को ईश्वरीय पुस्तक मान लेने वालो के बाप और औलाद तो मुसलमान होते या न होते किन्तु वह स्वय तो हो ही जाते। परन्तु खेद है कि हमारे इस निमन्त्रण का उत्तर शास्त्रार्थ के लिए स्वीकृति मे न दिया जाकर सैकड़ो पत्रो द्वारा धमकियो मे दिया गया।

जिन लोगों को यह पूर्ण विश्वास है कि कुरान ईश्वरीय पुस्तक है और जो कोई उसे चैलेन्ज करेगा। अन्ततोगत्वा उसे मुसलमान होना पड़ेगा तब चूकना ठीक नहीं अपितु कुरान को ईश्वरीय पुस्तक सिद्ध करके खुदा की कुरबत (निकटता) प्राप्त करनी चाहिए और अनेक मेरे जैसे भटके हुए कुरान, हजरत मोहम्मद की पैगम्बरी और इस्लाम से मुनकिर काफिरो को हजरत मोहम्मद की उम्मत और दीने इलाही मजहबे इस्लाम मे लाने का सबाब हासिल करना चाहिए। ऐसा न करके धमकियो पर उतर आना ओबेदुल्ला खा और उनके अनुयायियो तथा समर्थकों की सैद्धान्तिक निर्बलता है और यह सिद्ध करता है कि उन्हें स्वय ही कुरान के ईश्वरीय होने का विश्वास नहीं अपितु केवल अपनी मान्यताओ के पक्षपात के कारण वह धमकियां देते हैं।

इसके लिए मेरा मुसलमान बन्धुओं से यह निवेदन है कि वह अपने इन मजहबी प्रवक्ताओ को यह कहे कि वह इस प्रकार की सार्वजनिक घोषणाए न किया करें और अपनी मान्यताओ को अपने तक ही सीमित रखें। घोषणायें और चैलेन्ज करेंगे तो उन घोषणा ों को सिद्ध करना पड़ेगा और अपने चैलेन्ज के उत्तर में मिलने वाली दावत को सच्चे दिल से स्वीकार कर शास्त्रार्थ के लिए तैयार होकर अपनी घोषणा को सत्य सिद्ध करना पड़ेगा धमकियां देना समझदार और शिष्ट लोगों का कार्य नहीं है, यह तो बर्बर और जगली लोगों का कार्य है।

हम लोग वेद को ईश्वरीय ज्ञान का ग्रन्थ मानते हैं तो प्रत्येक समय उसे सिद्ध करने के लिए तैयार रहते हैं और अत्यन्त स्पष्ट शब्दों मे यह घोषणा करते हैं—

नगाडा धर्म का बजता है,
आये जिसका जी चाहे।
सदाकत वेद अकदस आजमाये
जिसका जी चाहे।।

सर्वंव ही आर्य जनो ने शास्त्रार्थ के लिए खुले मच पर अन्य मतावलम्बियो का आह्वान किया है। हमारी तो महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दों मे स्पष्ट घोषणा है कि "मनुष्य का जन्म हो सत्यासत्य के निर्णय के लिए है। यह घोषणा नितान्त आधुनिक भी नहीं है अपितु उपनिषदो मे इस प्रकार के शास्त्रार्थों का स्पष्ट वर्णन है। मण्डन मिश्र तथा आचार्य शकर के शास्त्रार्थ तो इतिहास प्रसिद्ध है ही, इसके अतिरिक्त भी आचार्य शकर ने अनेकानेक शास्त्रार्थ जैनो और बौद्धो से किए थे।

हम आर्य समाजी लोग तो बिना तर्क की कसौटी पर कसे हुए कुछ भी मानने को तैयार नहीं होते। यहां तक कि जिस वेद को हम ईश्वरीय और स्वत. प्रमाण ग्रन्थ मानते हैं, उसके लिए भी हमारी मान्यता तर्कपूर्वक खोज करने की है "यस्तर्केण वेदानुसन्धत्ते।" परन्तु अब तो विज्ञान का युग है। आजकल कोई भी शिक्षित व्यक्ति किसी बात को भी विज्ञान की कसौटी पर कसे बिना मानने को तैयार नहीं। मुसलमानो मे भी बहुत बड़ी सख्या ऐसे लोगों की है किन्तु मुस्लिम समाज के के वातावरण में वह अपने विचारों को प्रकट करते हुए घबराते हैं। सत्यता यह है कि विचार और तर्क करने को वहीं रोका जाता है, जहां मान्यता भ्रान्त तथा मिथ्या होती है। सत्य पक्ष वाले तर्क पूर्वक विचार करने को प्रतिबन्धित नहीं करते अपितु सराहते तथा प्रोत्साहित करते हैं।

मुसलमानों की तो दशा यह है कि दूसरो को तो मौलाना ओबेदुल्ला की भांति चैलेन्ज करें और स्वय दूसरों की सद्भावना पूर्ण अपील पर भी सलमनसाहत के साथ विचार करने को तैयार न होकर धमकियों पर उतर आये पिछले दिनों हमने एक लघु पुस्तिका "मुसलमान बन्धुओं विचार करो, अयोध्या मे राम जन्म मन्दिर या मस्जिद" शीर्षक से प्रकाशित की, जिसे पढ़कर किसी मुसलमान की मजहबी कढ़ी मे उबाल आया और उसने एक पत्र हमे लिख मारा किन्तु अपना नाम पता न देकर अपने आप को "बाबरी मस्जिद का एक सिपाही लिखा।

हमने उस पत्र का चित्र प्रतिलिपि कराकर एक पत्र के साथ प्रधानमन्त्री को भेजा। सर्वश्री राष्ट्रपति महोदय, लोकसभा अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री को भी प्रधानमन्त्री को लिखे पत्र की प्रतिलिपि के साथ उसकी प्रतियां भेजी। साथ ही वह पत्र प्रेस को भी भेज दिया गया। बिजनौर के साप्ताहिक "प्रसाद के फूल" मे वह छपा तो किसी दीनदार ने उस पत्र के प्रधान सम्पादक और उनके पुत्र को भी गोली मार देने की धमकी से भरा पत्र भेजा। इसका अर्थ यह है कि वह चाहे जो कहे और करें किन्तु हम अपील भी करें और शासन तथा देशवासियो को इस प्रकार की गतिविधियो से भी अवगत न कराये। हम अपनी सरकार और समाज को स्पष्ट शब्दो मे कह देना चाहते हैं। वह सावधान हो और अपनी जागरूकता का परिचय दें, नहीं तो निकट भविष्य मे ही भारत को भयकर दुर्दिन देखने पड़ेंगे।

मुसलमानों मे भी पर्याप्त सख्या में ईमानदार और विचारक लोग हैं किन्तु मुस्लिम समाज के घोर साम्प्रदायिकता से भरे वातावरण मे वह लोग मुंह खोलने का साहस नहीं कर पाते। यदि करें तो उनको भी धमकियां तथा मौत का भय प्रस्तुत कर दिया है।

अभी पिछले दिनो नजीबाबाद के एम० सुहेल "शाद" का एक पत्र १० नम्बर के बिजनौर टाइम्स मे "पाकिस्तान के खिलाफ उठाना, सख्त कदम" शीर्षक से प्रकाशित हुआ तो नजीबाबाद के ही एक वकील ने उन्हें बुरा भला कहा और धमकियां दी। इससे स्पष्ट है कि वकील साहब "गिरोह के सदस्य हैं। यह तथ्य है कि नजीबाबाद मे पचमागियो का एक सगठित गिरोह है, जो पाकिस्तान के विरुद्ध और भारत के हित मे एक शब्द भी सुनने को तैयार नहीं। शासन को इस विषय मे सावधान रहना चाहिए। साथ ही इस नगर की देशभक्त जनता भी सचेत रहे।

●

देश दर्शन

संकट की घड़ी में हमारा कर्त्तव्य

लेखक—डा० शकुनचन्द आर्य
स्थान—पो० लालगंज जिला रायबरेली उत्तर प्रदेश

निस्सन्देह इस समय अपना देश संकट की अवस्था से गुजर रहा है। अनेक भारत विरोधी शक्तियां इसे बाहर एवं अन्दर से तोड़ने एवं मरोड़ने, नष्ट करने, अपमानित करने तथा नीचा दिखाने का हरसंभव प्रयास कर रही हैं। संसार में हमारे सच्चे साथी बहुत ही कम है। विश्व के सबसे शक्तिशाली एवं सम्पन्न राष्ट्र अमरीका को हमारी प्रगति फूटी आँखों नहीं सुहाती। इसलिए वह हमारे परम्परागत शत्रु पाकिस्तान को भारी मात्रा में सैनिक सामान उपलब्ध कराकर हमारे मुकाबिले खड़ा कर रहा है, उसकी नीति के कारण ही बंगलादेश के साथ हमारे सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण नहीं है, नेपाल हमारा सहोदर भाई होते हुए भी हमें सन्देह की दृष्टि से देखता है, चीन जिससे हमारा सीमा-विवाद सन् १९५२ से चल रहा है तथा जिसने १९६२ में भारत पर आक्रमण कर आक्साईचीन आदि हमारे बड़े-भूभाग पर अधिकार कर लिया, से मैत्रीपूर्ण हाथ बढ़ा रहा है।

विश्व की दूसरी महान् शक्ति सोवियत रूस, भारत के साथ मैत्री सम्बन्ध रखता है परन्तु जिस प्रकार की उसने सन् १९६२ के चीनी आक्रमण के समय भारत का साथ न देकर तटस्थता की नीति का पालन किया था तथा १९६५ ई० में ताशकन्द समझौता कराकर कच्छ में भारत द्वारा विजित भूभाग को पाकिस्तान को वापस करने के लिए विवश किया था ऐसा सोचना अनुचित न होगा कि उसकी नीति भी भारत को महान राष्ट्र न बनने देने की है।

देश की आंतरिक स्थिति भी चिंतनीय है। खालिस्तान, गोरखालैंड, झारखण्ड आदि आन्दोलन हमारी एकता एवं अखण्डता को चुनौती दे रहे हैं। देश के पाकपरस्त तत्व सैयद शहाबुद्दीन, मौलाना बुखारी तथा अन्य मुस्लिम लीगी नेताओं के नेतृत्व में देश के संविधान को खुली चुनौती दे रहे हैं, राष्ट्रीय पर्वों के बहिष्कार की धमकी दे चुके हैं, न्यायालयों एवं संविधान के समतावादी आदर्शों की अवमानना कर रहे हैं, सड़कों पर निपटने की धमकी दे रहे हैं तथा रामजन्म-भूमि विवाद के परिप्रेक्ष्य में देश के पचासी प्रतिशत हिन्दुओं की भावनाओं को आघात पहुंचाने वाले एवं उत्तेजित विचार व्यक्त कर रहे हैं। उनके उपरोक्त राष्ट्रद्रोही एवं पृथकतावादी कार्यों में अरब देशों से अरबों रुपयों की आ रही धनराशि विशेष सहायता पहुंचा रही है। आश्चर्य का विषय तो यह है कि हमारी सरकार उपरोक्त राष्ट्र विरोधी तत्वो के विरुद्ध दमनात्मक कार्यवाही करने के बजाय तुष्टीकरण की नीति अपना रही है जिससे उनके हौसले बुलन्द होते जा रहे हैं तथा दुस्साहस बढ़ता जा रहा है।

उपरोक्त पाकपरस्त तत्वों के अतिरिक्त देश में एक ईसाई लाबी है जो कि अमरीका आदि पश्चिम के ईसाई देशों के इशारे पर विदेशी ईसाई मिशनरियों के माध्यम से देश में अराष्ट्रीयता के बीज बोरही है। उनकी गतिविधियों का ही परिणाम है कि देश का वनवासी क्षेत्र राष्ट्र विरोधी शक्तियों का केन्द्र बन चुका है, जहाँ मिजोरम, मेघालय, नागालैण्ड आदि ईसाई बहुल राज्य बन चुके हैं जिनमे अल्पसंख्यक हिन्दुओं का जीना कठिन हो रहा है। दुख का विषय तो है कि हमारा सरकार देश की राष्ट्रवादी शक्तियों की उपरोक्त विदेशी ईसाई मिशनरियो को देश से निकालने की मांग की ओर ध्यान न देकर उल्टे पोप को राजकीय सम्मान प्रदान कर तथा उनके द्वारा संचालित शिक्षा संस्थाओं तथा अस्पतालो के कार्यों की झूठी प्रशंसा कर उन्हें सर पर चढ़ा रही है।

इनके अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार द्वारा पंजाब में धर्म पर आधारित अकाली सरकार का समर्थन, पंजाब में आतंकवादियों द्वारा हजारों निर्दोष हिन्दुओं तथा भारत माता के प्रति समर्पित नागरिकों की हत्याएं तथा सरकार द्वारा उन्हें रोकने में विफलता, जम्मू-कश्मीर में हिन्दुओं की दुर्दशा तथा पाकपरस्त तत्वों का बोलबाला, राष्ट्रभाषा हिन्दी का सुनियोजित ढंग से विरोध एवं उसे राष्ट्रभाषा पद से वंचित रखने का प्रयास, नई शिक्षानीति में प्राचीनकाल से देश को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में आबद्ध रखने वाली संस्कृत भाषा की घोर उपेक्षा एवं त्रिभाषा सूत्र में उसे स्थान न मिलना तथा इसी नीति के अन्तर्गत चालीस जिलों का मुस्लिम तुष्टीकरण की दृष्टि से उल्लेख देश की राष्ट्रवादी शक्तियों के लिए चिंता के विषय हैं तथा उन्हें खुली चुनौती देने वाले हैं।

उपरोक्त स्थिति इस बात का प्रमाण है कि इस समय देश की स्थिति अच्छी नहीं है, उसकी एकता, सुरक्षा एवं अखण्डता खतरे में है। दुख का विषय तो यह है कि हमारी जनता द्वारा चुनी गई सरकार उपरोक्त स्थिति पर कड़ाई के साथ नियंत्रण के बजाय वोटो की दृष्टि से विचार करती है। ऐसी दशा में आवश्यकता है कि उपरोक्त स्थिति से निपटने के लिए जनमत जाग्रत किया जाय, लोगो को तैयार किया, संगठित किया जाय, स्वामी दयानन्द सरस्वती के राष्ट्रीय एवं स्वदेशी विचारों को जन जन तथा घर घर तक पहुचाया जाये ताकि वैसा ही वातावरण तैयार हो सके तथा वैसी ही पीढ़ी का निर्माण किया जा सके जिसने १९४७ के पूर्व महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराया था तथा वर्तमान स्थिति में देशद्रोही तत्वों का सफलतापूर्वक मुकाबिला कर तथा उनका समूल उन्मूलन कर देश को सांस्कृतिक एवं भाषाई समेत सभी दासताओ से मुक्त कर सके। इस हेतु निम्नांकित कार्यक्रम के क्रियान्वयन की ओर विशेष ध्यान दिया जाये :—

स्वास्थ्य रक्षा

उपरोक्त महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए नितांत आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ एवं बलशाली बने क्योकि स्वस्थ शरीर मे स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। आयुर्वेद के मतानुसार निरोगी व्यक्ति ही धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। इस हेतु उचित है कि लोगों को संयमित जीवन बिताने तथा यथासभव ब्रह्मचर्य धारण करनेके लिए प्रेरित किया जाये। इसी से स्वामी दयानन्द सरस्वती, बौद्धमत के प्रवंतक महात्मा बुद्ध तथा जैनमत के अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी ने धार्मिक सिद्धान्तों एवं प्रवचनों में ब्रह्मचर्य पर विशेष जोर दिया।

[शेष पृष्ठ १० पर]

(गतांक से आगे)

करने वाले अपने अनुयायियों की कोई संस्था स्थापित करने का विचार बिल्कुल नहीं था। क्योंकि वे समझते थे कि अपना सुधार लोगों को स्वयं ही करना होगा। अपनी उन्नति या अवनति लोगों के अपने ही हाथों में है। फिर भी अपने सुधार और उन्नति चाहने वाले लोग सुसंगठित होकर कार्य करें तो वह अधिक प्रभावशाली होगा और सारे समाज पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। प्रोफेसर साहब आगे लिखते हैं कि स्वामी दयानन्द का लक्ष्य केवल आर्य समाज की स्थापना तक ही सीमित नहीं था। वे इससे भी आगे सोचते थे। इसी प्रकार आर्यों का भी अन्तिम लक्ष्य केवल अपने आर्य समाज तक ही सीमित न रहकर इससे भी अधिक व्यापक होना चाहिए। क्योंकि स्वामी दयानन्द के सामने जो सम्पूर्ण मानव समाज का सम्यक् सुधार का लक्ष्य था, सभी लोगों के सहयोग के बिना उसे पूरा करना सम्भव नहीं था। अर्थात् स्वामी दयानन्द ने यह स्वीकार किया था कि संस्था अवश्य एक उत्तम साधन हो सकता है लेकिन इसका प्रयोजन, इसका लक्ष्य इससे भी अधिक व्यापक है, अधिक महान है। अन्धश्रद्धा, गुटबाजी, स्वार्थ तथा किसी भी प्रकार के संकीर्ण विचारों के लिए इस संस्था में स्थान नहीं। इस संस्था मे उन्हीं लोगों का स्वागत किया जाता है जो सत्य के खोजी हैं, ज्ञान के पिपासु है और अपनी उन्नति के साथ सारे मानव समाज की उन्नति के लिए भी थोड़ा परिश्रम करना चाहते हैं। वे लोग कौन थे जिन्होने स्वामीजी से संस्था स्थापित करने के लिए आग्रह किया था, उन्होने स्वामी जी को क्यों बम्बई आने के लिए निमन्त्रित किया था, और आर्य समाज की स्थापना बम्बई में ही क्यो हो सकी थी— यदि इन बातों का भी लोगो को कुछ ज्ञान हो जाय, तो यह बात और भी अधिक

आर्य समाज क्या है?

लेखक : श्रेष्ठ वर्मन, बम्बई

वास्तव में, बम्बई में आर्य समाज की स्थापना होने से बहुत पहले ही महाराष्ट्र में सामाजिक राजनैतिक और धार्मिक क्रान्ति की नींव पड़ चुकी थी। बाल-शास्त्री जाम्भेकर [सन् १८१२-१८४६] ऐसे एक मराठा ब्राह्मण समाज सुधारक थे जिन्होंने सबसे पहले यहां स्त्री शिक्षा और विधवा पुर्नविवाह का समर्थन, जात-पांत का विरोध और शुद्धि का कार्य प्रारम्भ किया था। जाम्भेकरजी बम्बई दर्पण नामक एक पत्रिका निकालते थे और वे उसके माध्यम से अपने क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार करते थे। उनके सहयोगी विष्णुशास्त्री बापट ने सन् १८३७ में "पुर्नविवाह प्रकरण" नाम की एक पत्रिका लिखी जिसमें उन्होंने विधवाओं के साथ होने वाले अन्याय और उनकी दयनीय स्थिति का वर्णन करके उनके पुर्नविवाह का समर्थन किया था। जाम्भेकर जी के एक दूसरे साथी भाऊ महाजन [१८१५ – १८९०] "प्रभाकर" नाम की एक पत्रिका चलाते थे। सन् १८४२ में दो ब्राह्मण युवक जो ईसाई हो चुके थे उनकी शुद्धि करके पुनः हिन्दू धर्म में लाने का समाचार उसमें छपा था। सन् १८३९ में हरि केशव जी पठारे का लिखा हुआ (ऐन ऐसे आन प्रमोशन आफ फीमेल एजूकेशन) एडनबर्ग में प्रकाशित हुआ था। इन लोगों के अतिरिक्त विष्णुबुआ ब्रह्मचारी (१८२५-१८७१) भी महाराष्ट्र के एक सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी समाज सुधारक, क्रान्किारी धार्मिक नेता और राजनैतिक चिंतक थे। आप अंग्रेजी पढ़े लिखे थे और जापान की यात्रा में भी हो आये थे। उनको भारतीय संस्कृति पर बड़ा अभिमान था। उनको पूर्ण विश्वास था कि भारतीय संस्कृति पाश्चात्य संस्कृति से उत्तम है। ब्रह्मचारीजी वेदों को सत्यविद्याओं का पुस्तक मानते थे और चाहते थे कि हमारा वर्तमान सामाजिक व्यवस्था और जीवन पद्धति वेदों के अनुसार हो। उन्होने कहा था कि वेदों में जातिवाद और अस्पृश्यता का समर्थन नहीं है। उन्होंने ईसाई मिशनरियों के साथ शास्त्रार्थ भी किया था और लेखन एवं भाषण द्वारा ईसाई धर्म का घोर विरोध किया था जिस समय योरप में कार्ल मार्क्स अपना क्रान्तिकारी ग्रन्थ (डस कैपिटल) लिख रहा था उसी समय भारत में विष्णु बुआ ब्रह्मचारी जी ने "सुखदायक राज्य प्रकरणी निबन्ध" (थीसिस आन वेल्फेयर स्टेट) लिखा जिसमे उतने ही क्रान्तिकारी मौलिक समाजवादी राजनैतिक विचार व्यक्त किए गए थे।

रावसाहब दादोबा पांडुरंग तरखडकर (१८१४-१८८२) वह महानुभाव थे जिन्होंने बम्बई में आर्य समाज की स्थापना और उसके लिए नियमावली बनाने में बहुत बड़ा सहयोग दिया था। महाराष्ट्र में आप एक मानवतावादी समाज सुधारक माने जाते हैं। स्वामी दयानन्द से मिलने से बहुत पहले ही उन्होंने समाज सुधारक का कार्य अपने हाथ में लिया था। सन् १८४४ में उन्होंने बम्बई में परमहंस सभा की स्थापना की थी। आप एक विचारवादी थे और एकेश्वरवाद, एक धर्म और एक जाति का प्रचार करते थे। जातीयता के विरुद्ध इन्होंने काफी लड़ाई लड़ी थी। तरखडकरजी ने अपना नाम जगद्वासी आर्य लिखा था और इसी नाम से "धर्म विवेचन" नाम की किताब भी लिखी थी।

लोकहितवादी गोपालराव हरिदेशमुख भी जो बाद में स्वामी दयानन्द के भक्त बने और अन्त तक एक प्रमुख आर्य समाजी कार्यकर्ता के रूप में रहे, महाराष्ट्र के एक सुप्रसिद्ध समाजसुधारक और क्रान्तिकारी लेखक थे। सन् १८४८-४९ में उन्होंने मराठी में "शतपत्रे" नामक एक पुस्तक लिखा था। इस पुस्तक में लोकहितवादी ने अंधविश्वास, कट्टरपंथ अपने समय के ब्राह्मणों की मूर्खता तथा हिन्दू समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों की आलोचना की थी। आप एक पक्के विचारवादी विद्वान थे। आप भाग्यवाद को नहीं मानते थे। आप स्त्री शिक्षा और विधवा पुर्नविवाह के समर्थक थे।

महात्मा ज्योतिबा फुले (१८२७-१८९०) यहां के एक अन्य बड़े समाज सुधारक थे। सन् १८४८ में महात्मा फुले ने अस्पृश्यों के बच्चों के लिए स्कूल खोला था। सन् १८५१ में इन्होंने पुणे में कन्याओं के लिए भी एक पाठशाला खोली थी। जब वहां पढ़ाने वाली कोई अध्यापिका नहीं मिली, महात्मा जी ने अपनी पत्नी को पढ़ाया और उस पाठशाला में अध्यापन कार्य के लिए नियुक्त किया। सन् १८६३ में उन्होंने एक अनाथालय भी खोला था और अपने घर के आंगन में ही उन्होंने अछूतों के लिए कुआं खोदकर पीने के पानी का प्रबन्ध किया। सन् १८६० में आपने एक सारस्वत ब्राह्मण विधवा का पुर्नविवाह भी कराया था। आपने बहुपत्नीत्व, बाल-विवाह का विरोध किया था। महात्माजी की विशेषता यह थी कि आप अपने समय के एक प्रमुख विचारवादी और समानतावादी थे। किन्तु वेद-शास्त्र, संस्कृत ब्राह्मणत्व और आर्यत्व इन सबसे आपको बहुत चिढ़ थी। लेकिन स्वामी दयानन्द के साथ मतभेद होते हुए भी इन्होंने महादेव रानाडे के साथ पुणे में स्वामी दयानन्द के सम्मान में आयोजित एक शोभायात्रा में भाग लिया था। महादेव गोविन्द रानाडे भी महाराष्ट्र के एक सुप्रसिद्ध समाज सुधारक थे।

(क्रमशः)

विचार-विमर्श

देश में बढ़ते सांप्रदायिक दंगे या गृहयुद्ध के संकेत

एक विवेचन

—श्री विशन स्वरूप गोयल नई दिल्ली

हमारे संविधान मे कुछ समुदायो के निजी कानून बनाकर भी अलगाववादी प्रावधान कर दिये गये जिनके कारण परस्पर वैमनस्य बढ़ा है। हिन्दुओ के लिये "हिन्दू कोड बिल" बना दिया गया जिसमे व्यवस्था की गयी कि कोई भी हिन्दू अपना दूसरा विवाह नही कर सकता यदि वह करता है तो वह दण्डनीय अपराध होगा। किन्तु इसके विपरीत मुसलमानों के लिये उनकी शरीयत और कुरआन के आधार पर मुसलमानो के लिये "मुस्लिम परसनल ला" बना दिया गया जिसके अन्तर्गत उन्हें बार-बार विवाह करने का अधिकार दे दिया गया। इसी तरह पजाब के परिवारों मे उनकी प्रथा के अनुसार एक बाप की सन्तान मे से एक केशधारी बनाया जाता है। उस केशधारी लड़के को तो तीन फुट की तलवार लेकर चलने का पूरा अधिकार है किन्तु उसके सहजधारी या गैर-केशधारी भाई को ६ इच का चाकू रखने का भी हक नहीं वह दण्डनीय अपराध है। इस प्रकार के निजी कानूनो ने भी देश की एकता को तोडने मे कम भूमिका नहीं निभाई है। जबकि धर्म निरपेक्ष राज्य मे सभी के लिये "समान सिविल कोड" बनना चाहिये जिससे अलगाववाद को समाप्त किया जा सके।

अलगाववादी मनोवृत्ति को सबसे अधिक बढ़ावा दने वाली संविधान की अस्थायी धारा ३७० काश्मीर राज्य को विशेष दर्जा देने के लिये संविधान मे जोड़ दी गयी थी लेकिन वह कुछ थोड़े समय के लिये ही जोड़ी गयी थी किन्तु वह आज ३७ साल के बाद भी उसी तरह विद्यमान है और अस्थायी के स्थान पर स्थायी बनती जा रही है क्योंकि अभी कश्मीर के चुनावो के बाद बने मुख्यमन्त्री फारूक अब्दुल्लाह ने सबसे पहले यही घोषणा की है कि धारा ३७० को समाप्त नहीं किया जाएगा। जबकि देश की एकता को बचाने के लिये इस धारा का समाप्त होना अत्यन्त जरूरी है। इसी धारा से प्रेरित होकर खालिस्तान तथा गोरखालैण्ड की माग बढ़ रही है और काश्मीर घाटी आज छोटा पाकिस्तान बन चुकी है क्योंकि इस धारा मे एक ऐसी बात जोड दी गयी है जो इस देश मे अलगाववादी तत्वो को पूरी तरह प्रोत्साहन दे रही है वह है कि कोई भी गैर कश्मीरी चाहे वह देश का राष्ट्राध्यक्ष हो या प्रधान मन्त्री कश्मीर मे एक इच भूमि खरीद कर नहीं बस सकता। इस कारण वहां मुस्लिम बहुमत बढ़ता जा रहा है और काश्मीर घाटी के माध्यम से ही उग्रवादियो को प्रशिक्षण तथा पाकिस्तान आदि देशो से शस्त्र आदि सप्लाई किये जा रहे हैं यहीं तक नहीं पाकिस्तान काश्मीर घाटी के माध्यम से ही मुसलमानो को देश रखा कर यहाँ उग्रवादी बनाकर भेज रहा है जो यहा आकर तोड़-फोड़ और मार-काटकर देश मे अस्थिरता लाने का प्रयास कर रहे हैं। इस धारा को यदि तुरन्त समाप्त न किया गया तो देश की एकता को नहीं बचाया जा सकता।

३—इस्लाम मजहब की पुस्तक कुरआन

क्या हममें से किसी ने कभी यह विचार किया है कि हमारे देश मे निरन्तर केवल मुस्लिम-हिन्दू दंगे ही क्यो होते हैं जबकि यहाँ अन्य सम्प्रदाय जैसे ईसाई या पारसी आदि भी रहते हैं किन्तु कभी ईसाई हिन्दू दंगे या पारसी—हिन्दू दंगे यहा क्यो नहीं होते। इसका एक मात्र कारण इस्लाम मजहब की पुस्तक कुरआन ही है। जो किसी भी गैर-मुस्लिम के लिये केवल दो ही विकल्प प्रस्तुत करती है १—या तो वह अल्लाह और कुरआन पर ईमान लाकर मुसलमान बन जाये २—या फिर अगर वह ऐसा नहीं करता तो उसका कत्ल कर दिया जाये। कुरआन मे ३० पारे, ११४ सूरे और लगभग ६००० से अधिक आयतें हैं जिनमे से अधिकांश आयतो मे कहा गया है कि अल्लाह और कुरआन पर ईमान लाने वाला अर्थात् मुसलमान? जो लोग अल्लाह या कुरआन पर ईमान नहीं लाते तो वे काफिर है और काफिरो को उस समय तक मारते रहो जब तक वे मुसलमान बनने को तैयार न हो अन्यथा उन्हें समाप्त कर दो। कुरआन के उसी फरमान के आधार पर हम सब जानते हैं कि अबोध बालक हकीकत को हमारे देश मे मुस्लिम शासन काल मे इसलिये कत्ल कर दिया गया था क्योंकि उसने मुसलमान बनने से इनकार कर दिया था और इसी तरह गुरु गोविन्द सिंह जी के दो साहेबजादो को भी जिन्दा दीवार मे इसलिये चुनवा दिया गया था क्योंकि उन्होने भी इस्लाम स्वीकार करने से इनकार कर दिया था। हमारे देश के मुस्लिम शासन काल के इतिहास मे ऐसे अनेको उदाहरण मौजूद हैं। कहा जाता है कि औरगजेब प्रतिदिन सवा मन जनेऊ पहनने वाले हिन्दुओ को तलवार के बल पर मुसलमान बनाकर ही खाना खाता था यही स्थिति बन्दा बैरागी और गुरु तेगबहादुर आदि के साथ हुई। जो लोग मुसलमान नहीं बनते थे उन्हे इतनी कठोर मानवीय यातना दी जाती थी जिन्हे सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। कुरआन का एक यह भी फरमान है कि हे मुसलमानो अगर तुम जन्नत मे जाना चाहते हो तो सारी दुनिया को मुसलमान बनाकर इस्लामी हकूमत के नीचे लाओ तभी तुम्हे जन्नत मे ऐसी हूरे मिलगी जिन्हे अभी तक किसी ने हाथ भी नहीं लगाया होगा। फिर कौन मुसलमान ऐसी हूरे हासिल नहीं करना चाहेगा इसीलिये जहा मुसलमान मुकाबला करने की स्थिति मे होता है वहीं दंगे, मार—काट, लूट-पाट तथा आगजनी आदि करता है। इसलिये इन सब दंगो की जड ही केवल कुरआन है इसलिये एक बार लन्दन मे जिन्नाह ने भी यह स्वीकारोक्ति की थी कि जब तक दुनिया मे कुरआन और उसके मानने वाले रहेगे तब तक दुनिया मे अमन या शान्ति स्थापित नहीं हो सकती यही बात एक अंग्रेज विद्वान ग्लैडस्टोन ने भी सन् १८८६ मे कही थी।

इसके अतिरिक्त कुरआन न तो सब मुसलमान पढ़ते हैं और समझते है किन्तु कुछ कठमुल्ले इमाम बुखारी या शहाबुद्दीन जैसे कुरआन का नाम लेकर "इस्लाम खतरे मे है" का नारा देकर मुसलमानो को भड़का कर ये दंगे कराते रहते है जिससे इनकी नेतागीरी की दुकान चलती रहती है और मुस्लिम हितो के संरक्षण के नाम पर मुस्लिम जगत से बहुत बड़ी मात्रा मे इन्हे धन प्राप्त होता रहता है। यही कारण है कि इन दिनो मेरठ मे होने वाले दंगो मे इमाम और शहाबुद्दीन जैसे लोग ऐसा पता लगा है कि प्रतिबन्ध के कारण बुरके पहन कर वहा गये और वहा जाकर बार-बार दंगे कराये। यही लोग आज देश में गृहयुद्ध जैसी स्थिति पैदा कर इस देश को समाप्त करने का स्वप्न देखने लगे है वे चाहते है देश के अन्दर गृहयुद्ध आरम्भ हो जाए और पाकिस्तान उसी समय हम पर हमला करदे ताकि देश की सेनाओ को दो मोर्चों पर लगाकर कमजोर किया जा सके और देश सारा मुस्लिम हकूमत के अन्तर्गत आ जाए।

यह बात सर्वमान्य है कि यह देश हिन्दुओ का है और हिन्दू समाज का यह दायित्व है कि वह इसकी रक्षा करे। समय आ गया है कि आज जो देश की एकता को तोडने की चुनौती दी जा रही है उसका मुकाबला करने के लिये हिन्दू संगठित होकर सड़को पर आगे बढ़ें और एकता विलगाववाद का मुकाबला करें। यदि हिन्दू समाज अब भी न चेता तो हिन्दू समाज का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा और फिर यहा न कोई राम रहेगा न गोपाल।

साम्प्रदायिक उन्माद में पीड़ित मानवता की सहायता पहुंचाने में आर्य समाज कभी पीछे नहीं रहा।

आइए ! पीड़ितों की मदद कीजिए। इस पुण्यकार्य में धन की सहायता भेजकर यश के भागी बनिए।

मेरठ के दंगा पीड़ितों के सहायतार्थ सभा प्रधान श्री इन्द्रराज की मार्मिक अपील पर जनता तथा संस्थाओं ने मुक्तहस्त होकर इस पुण्य-कार्य में धनराशि भेजना प्रारम्भ कर दिया है। दानदाताओं की सूची क्रमशः आर्य मित्र में प्रकाशित की जा रही है। सभा दानी महानुभावों तथा संस्थाओं का आभार प्रकट करती है।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

(गतांक से आगे)

१–सप्रा चैरिटेबल ट्रस्ट मेरठ	५००)
२–भगनवती धर्मपत्नी श्री कृष्ण चन्द जी	१००)
३–जे० पी० गोयल मेरठ	१०१)
४–डा० जयप्रकाश गोयल मेरठ	१०)
५–शिव शक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट मेरठ	५००)
६–स्त्री आ० स० साकेत ,,	५००)
७–आ०स० दयानन्द पथ सदर ,,	५००)
८–रामेश्वर दयाल शर्मा सदर ,,	२००)
९–शान्तिप्रकाश जी मित्तल सदर ,,	१००)
१०–फिल्म इलेक्ट्रानिक्स सदर ,,	२००)
११–अखिलेश राजवंशी "	२५१)
१२–पथिक भिक्षु जी	१९०)
१३–आ०स० सूर्य कुण्ड रोड मेरठ	५००)
१४–कुमारानी कपूर प्रधानाचार्या	२५)
१५–सरदार सुरेन्द्रसिंह रेखी	१०१)
१६–वि०स० विनोद सम्पादक दैनिक प्रभात मेरठ	५००)
१७–श्रीमती मधु वैश्य लालकुर्ती मेरठ	२५०)
१८– " अनिता विनोद प्रहलाद वाटिका मेरठ	२५०)
१९–विद्यासागर बजाज मेरठ	२००)
२०–कुन्दनलाल जी मेरठ	१००)
२१–सुमित्रा देवी मलिक	१००)
२२–गुप्त दान	५)
२३–हरिकृष्ण मेरठ	५०)
२४–कुसुमा आर्या	२००)
२५–पूर्णचन्द्र आर्य आगरा	१०१)
२६–आ० स० ब्रह्मपुरी मेरठ	६३०)
२७–प्रेम मक्कड़	५०)
२८–आ०स० प्रहलाद नगर मेरठ	१००)
२९–भरतसिंह उपमन्त्री आ०स० मेरठ	१०१)
३०–विक्रमसिंह प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद	२००)
३१–आ० स० छपरौली मेरठ	५००)
३२–माधवसिंह प्रधान जिला सभा मेरठ	१९०)
३३–ओम प्रकाश जौहरी मेरठ	१५०)
३४–वीरेन्द्र कुमार गुप्त बेबर	५)
३५–छोटेलाल गुप्त बेबर	११)
३६–पुष्पा देवी स्वतन्त्रता सेनानी बेबर	११)
३७–सूबेदार आर्य, प्रधान जिला सभा मैनपुरी	५०)
३८–मीरा सभा मेरठ	५००)
३९–पी०पी० मोहर्न मेरठ	१००)
४०–आ०स० लालकुर्ती मेरठ	४००)
४१–प्रकाशवती रस्तोगी मेरठ	५००)
४२–सुदर्शन बधवा	५१)
४३–महाशय रघुवीरशरण सर्राफ	५०)
४४–प्रेमनाथ गुलाठी मेरठ	५१)
४५–लक्ष्मी ट्रेडिंग कम्पनी मेरठ	९५०)
४६–अशर्फीलाल चुन्नीलाल मोदीनगर मेरठ	३८०)
४७–भगवती धर्म	४५)
४८–रामदेई मेरठ	१००)
४९–मेलादेवी ,,	१०)
५०–गुप्त दान	१०)
५१–प्रेमवती जी मेरठ	१०)
५२–मनीषा ,,	११)
५३–शान्ता बक्शी ,,	५)
५४–शान्ति महता "	१०)
५५–मोतीराम साहनी	५०)
५६–पीतमसिंह बोधट मेरठ	२१)

१–आटा एकत्रित कंप्ट से	६ बोरी
२–चावल एकत्रित	३ क्विन्टल
३–आर्यसमाज सरधना आटा	५ बोरी
४–ग्राम टौकरी से आटा	१० बोरी
५–चीनी	२ क्विंटल
६–आलू	४ क्विंटल
७–दालें	१ क्विंटल
८–चाय	१ क्विंटल
९–द्वारा हरविन्दरसिंह-आटा	१ क्विंटल
१०–एकत्रित नगर से आटा	१ बोरी

सूचना

ग्राहकों से विनम्र निवेदन है कि 'आर्यमित्र' का शुल्क भेजते एवं पता बदलवाने को लिखते समय अपना ग्राहक नंबर अवश्य लिखा करें। नये ग्राहक अपना शुल्क भेजते समय 'नया ग्राहक' लिखने का कष्ट करें ताकि धन के जमाखर्च व पता बदलने तथा डिस्पैच में असुविधा न हो।

साथ ही निवेदन है कि जो समाजें आर्यमित्र का शुल्क सभा के दशांश के साथ भेजती हैं वे अपने पत्राजात के साथ आर्यमित्र के लिए शुल्क एवं ग्राहक नम्बर की सूचक स्लिप भी अवश्य भेजें।

व्यवस्थापक–
आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ

गुरुकुल वृन्दावन में प्रवेश

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में जुलाई से शिक्षा सत्र प्रारम्भ हो गया है। इस संस्था में निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है यह संस्था भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार ९० वर्ष से कर रही है। यहां देश-विदेश के छात्र भी अध्ययन करते रहे। यहां का सुन्दर रमणीक स्थान शुद्ध वातावरण, उत्तम देख-भाल, नियमित दिनचर्या, सादा भोजन, अनुशासन कक्षा १ से ८ तक के छात्रों का प्रवेश शीघ्र करायें स्थान सीमित है। यहां प्रारम्भ से बी०ए० स्तर तक की शिक्षा निःशुल्क दी जाती है।

–मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

सम्पादक के पत्र

(१)

सम्पूर्ण भारतवर्ष में गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने हेतु केन्द्रीय कानून बनाए जाने हेतु विगत कई वर्षों से सत्याग्रह व आन्दोलन चल रहे हैं। यद्यपि देश के अनेक प्रान्तों में राज्य सरकारों ने कानून बनाए हैं परन्तु उनका पालन भी नहीं हो पा रहा है। भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा ने इसे भी नहीं छोड़ा है, फलतः नित्य-प्रति सहस्रों गोवंश का कत्ल हो रहा है। भारत गणराज्य के सर्वोच्च व्यक्ति के अनुभवी संकेत से भी सरकार के कानों पर जूं नहीं रेंगी है। काश! प्रधानमंत्री राष्ट्रपति विवादों का एक यह भी मुद्दा होता।

संसद में यदा-कदा इस विषय पर हुए प्रश्न नक्कारखाने में तूती की आवाज परिलक्षित होती रही है। अपने जीवन के अनेक वर्षों के अनुभव के पश्चात अखिल भारत कृषि गोसेवा संघ के कार्याध्यक्ष श्री राधाकृष्ण बजाज ने सम्पूर्ण भारतवर्ष का भ्रमण कर इस देश की जनता को जागृत करने का कार्य विगत १३ मई ८७ से बिहार प्रदेश से प्रारम्भ किया है।

माननीय महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी ने ५ जुलाई ८७ को जोधपुर से १६० किमी० दूर सुमेरपुर कस्बे में भगवान महावीर अस्पताल का उद्घाटन करते हुये कहा कि हमारा राष्ट्र दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और इसकी असली मालिक इस की जनता है। श्री बजाज जी ने गो रक्षा हेतु जनमानस जागृत करने की महात्मा बुद्ध की तपस्थली गया जिले से यात्रा इस संकल्प के साथ प्रारम्भ की कि देश की जनता गोमाता की रक्षा करने हेतु सरकार पर दबाव डाले।

श्री बजाज ने जहां एक ओर यह जन-जागृति अभियान प्रारम्भ किया है वहीं दूसरी ओर स्वयं उन्होंने अपने जीवन को गोदुग्ध सेवन के ही संकल्प से आधारित किया है। यहां तक कि उन्होंने विगत लगभग दो वर्षों से अन्न का भी त्याग कर दिया है और जबतक गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध नहीं लग जायगा तब तक अन्न ग्रहण नहीं करेंगे।

गोवंश की रक्षा में ही मानव की रक्षा है। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही गो की महत्ता को बताते हुए अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा कि एक गाय की पीढ़ी से लगभग ४ लाख७६ हजार व्यक्ति तृप्त होते हैं जबकि गोहत्या से मात्र ८० मनुष्य तृप्त होंगे।

भारतवर्ष सत्य, अहिंसा और प्रेम का संदेशवाहक रहा है। आज सारे विश्व मे अशांति का कारण हिंसावृत्ति है। गोरक्षा मे कृतघ्नता की अपेक्षा कृतज्ञता निहित है। अतएव श्री बजाज जी ने जिस तपोमय जीवन के साथ शुभ संकल्प को लेकर अभियान प्रारम्भ किया है उससे आशा है इस देश की जनता प्रेरणा लेकर आर्थिक समृद्धि व सांस्कृतिक प्रतीक रूपी गाय के रक्षार्थ केन्द्रीय कानून बनवाने हेतु तत्पर होगी।

श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री, इलाहाबाद

(२)

अराष्ट्रीय तत्वों को मताधिकार से वंचित किया जाये। जो भारत को अपना घर नहीं मानते उन्हें भारत की समस्याओं पर बोलने का अधिकार न रहे।

भारत के प्रत्येक निवासी के लिए भारत के सभी कानून मानने को बाध्य होना चाहिए।

राष्ट्र भाषा हिन्दी को सभी को अपने दैनिक जीवन में व्यवहार करके उसकी प्रतिष्ठा करानी चाहिए।

कमल किशोर गुप्त, सावितगंज इटावा

आर्य विद्यालय प्रबन्धक एवं प्रधानाचार्य सम्मेलन

प्रदेशीय विद्यार्य सभा के निर्णयानुसार दिनांक १२, १९ व २६ जुलाई १९८७ को क्रमशः आर्य समाज हरद्वार, गणेशगंज (लखनऊ) एवं गोरखपुर में आर्य विद्यालयों के पश्चिमीय, मध्यांचल एवं पूर्वान्चल के प्रबन्धकों एवं प्रधानाचार्यों के सम्मेलन हुए। हरद्वार एवं लखनऊ के सम्मेलनों के आयोजन चौ० माधवसिंह, मंत्री विद्यार्यसभा के द्वारा श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। गोरखपुर के सम्मेलन का संयोजन विद्यार्यसभा के अधिष्ठाता श्री विद्यारत्न जी ने किया। अध्यक्षता श्री शिवनारायण स्वागताध्यक्ष चौ० रामलखनचन्द्र, अध्यक्ष डी० ए० वी० संस्थान गोरखपुर ने की।

तीनों सम्मेलनों में नई शिक्षा नीति में संस्कृत की उपेक्षा, आर्य विद्यालयों में अल्पसंख्यक वर्ग के के प्रधानाचार्यों की नियुक्ति तथा उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग द्वारा बलात् उर्दू थोपे जाने पर भारी क्षोभ व्यक्त किया गया। सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि केन्द्रीय सरकार से अनुरोध किया जाये कि वह संस्कृत को माध्यमिक पाठ्यक्रम में यथापूर्व स्थान दें और उसे ऐच्छिक विषयों एवं प्रादेशिक भाषाओं की सूची में यथापूर्व रखा जाये क्योंकि संस्कृत विश्व की समस्त अनुभाषाओं की जननी है, राष्ट्रीय एकता का सुदृढ़ आधार है तथा संस्कार प्रभावित भारतीय संस्कृति की प्राण है।

उत्तर प्रदेशीय सरकार से यह भी सबल अनुरोध किया जाये कि वह उर्दू भाषा को त्रिभाषा फार्मूला के अन्तर्गत किसी विद्यालय पर बलात् थोपने का प्रयास न करें क्योंकि उर्दू किसी भी प्रदेश की मान्यभाषा नहीं है। सम्मेलन में यह भी निश्चय किया गया कि आर्यविद्यालयों को निर्देश दिये जायें कि व अपने यहाँ उर्दू भाषा को त्रिभाषा फार्मूला के अन्तर्गत लागू न करें और यदि सरकार इसको बलात् थोपने का प्रयास करे तो उच्च न्यायालय में याचिका दायर कर निषेधाज्ञा प्राप्त कर लें।

माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा आयोग से सबल अनुरोध किया जाये कि वे अराजकीय विद्यालयों में आवश्यक चयन करते समय यह अवश्य ध्यान में रखें कि सम्बन्धित संस्था के उद्देश्यों की पूर्ति मे वह साधक हो न कि बाधक। आर्यविद्यालयों में अल्पसंख्यक वर्ग के जिन व्यक्तियों का चयन व नियुक्तियां की गई हैं उनको अन्यत्र भेजने की व्यवस्था की जावे।

सम्मेलन में यह भी निश्चय किया गया कि यदि इन निर्णयों के विरुद्ध आन्दोलन की भी आवश्यकता पड़े तो चलाने में हिचका न जाये किन्तु राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों में इसे अंतिम शस्त्र के रूप में ही प्रयोग में लाया जाये।

माधव सिंह, मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा

शोक समवेदना

निम्नलिखित आर्यों के दिवंगत होने के समाचार प्राप्त हुए हैं जिसके लिए सभा समवेदना प्रकट करती है और परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्माओं कर शांति एवं सद्गति के लिए प्रार्थना करती है।

(१) आर्यसमाज मिर्जापुर के अन्तरंग सदस्य प्रोफेसर राजाराम यादव भूतपूर्व विधायक के पिता श्री बलिकरन सिंह यादव।

(२) आर्य समाज महावीरगंज लखनऊ के अग्रणी सभासद श्री जगदीश चन्द्र शर्मा।

(३) आर्य जगत के वयोवृद्ध सुप्रसिद्ध विद्वान आर्यसन्यासी श्री स्वामी शम्भूदयानन्द सरस्वती जिनका पूर्वनाम प्रो० रघुनन्दन प्रसाद जौहरी था और जो बरेली के निवासी थे।

लन्दन में संस्कृत शिक्षा अनिवार्य है

जयपुर से प्रकाशित पाक्षिक पत्र 'लोक शिक्षक' के १५ जुलाई १९८७ के अंक में एक लेख छपा है जिसका शीर्षक है भारत मे संस्कृत भाषा को वैकल्पिक विषय रक्खा जाता है जबकि लन्दन मे यह अनिवार्य विषय है—इसके लेखक हैं श्री नारायण भगत ।

इसके कुछ महत्वपूर्ण अंश इस प्रकार हैं । लन्दन मे एक विद्यालय केन्सिंगटन क्षेत्र मे क्वीन्स गेट पर स्थित है इसका नाम है सेन्ट जेम्स इण्डिपेन्डेन्ट स्कूल फार बायज एण्ड गर्ल्स है इसके मुख्याध्यापक श्री निकोलस डेबनहेम हैं । इसमें ९०० विद्यार्थी हैं जिसमे ९९ % अंग्रेज ही हैं इनमें आधी बालिकायें हैं पर सह शिक्षा नहीं है । बालिकाओ की कक्षायें पृथक लगती हैं । यहाँ संस्कृत भाषा पर सर्वाधिक ध्यान दिया जाता है । सब विषयों को पढ़ाने वाले शिक्षक को संस्कृत भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य है । संस्कृत का ज्ञान हुए बिना किसी भी शिक्षक को स्थान नहीं दिया जाता है । बाल्यकाल से ही महर्षि पाणिनि विरचित व्याकरण लघुसिद्धान्त—कौमुदी आदि का गहन अभ्यास करवाया जाता है । १८ वर्ष की आयु तक अनिवार्य रूप से संस्कृत पढ़ना पड़ता है ।

भारत के जगन्नाथपुरी के गोवर्द्धन पीठ के ब्रह्मलीन जगद्गुरु शंकराचार्य श्री भारती कृष्ण तीर्थ विरचित 'वैदिक गणित' भी यहाँ पढ़ाया जाता है । यहाँ पर सात्विक व शाकाहारी भोजन ही दिया जाता है जिससे विद्यार्थी भावी जीवन में शाकाहारी रहकर वैदिक संस्कृति के अनुसार अपना जीवन यापन कर सके । संस्था मे बालकों के रहन-सहन व मंत्र पाठों को सुनकर ऐसा लगता है कि हम लन्दन मे नहीं भारत के किसी प्राचीन गुरुकुल में हैं ।

डरबन में वे वेस्टवील विश्वविद्यालय का प्रतीक 'सत्यमेव जयते' है वहाँ भी संस्कृत पढ़ाई जाती है विद्यालय मे छात्र व अध्यापक कहते हैं कि संस्कृत द्वारा ही संस्कृति की रक्षा की जा सकती है ऐसी हमारी श्रद्धा है । भारत से संस्कृत के पंडित नहीं मिलते है अतः उन्होंने जर्मनी के संस्कृत के प्रोफेसरों को नियुक्त किया है ।

विश्व विद्यालय के उप कुलपति ने बताया कि उनकी ऐसी इच्छा रहती है कि इस विश्व विद्यालय में ऐसे प्रोफेसर हों जो संस्कृत भाषा अच्छी तरह पढ़ा सकने के अतिरिक्त वैदिक कर्मकाण्ड भी अच्छी तरह करा सकें ।

—संकलनकर्ता प्रतापचन्द मन्त्री आर्य समाज साकेत मेरठ

हाई स्कूल की मैरिट में लखनऊ को लता जैन का तीसरा स्थान

हाई स्कूल बोर्ड परीक्षा में लड़कियो की मैरिट सूची मे कु० लता जैन ने लखनऊ मण्डल में प्रथम स्थान तथा पूरे प्रदेश में तीसरा स्थान प्राप्त किया है । कु० लता जैन सिटी मोन्टेसरी स्कूल की छात्रा है । कु० अर्जिता गुप्ता कु० ज्योति अरोरा ने लड़कियों की मेरिट सूची में चौथा स्थान प्राप्त किया है । लड़कों की मैरिट सूची मे प्रकाश चन्द्र श्रीवास्तव व ऋषि अग्रवाल ने पन्द्रहवां स्थान प्राप्त किया है । इस प्रकार लखनऊ मण्डल मैरिट में आने वाले छात्र/छात्राओं की संख्या अब १८ हो गयी है । ज्ञातव्य हो कि ये सभी १८ छात्र/छात्रायें सिटी मोन्टेसरी स्कूल लखनऊ के हैं इनमें से १३ सामान्य मैरिट सूची में, दो छात्र लड़कों की मैरिट सूची में तथा तीन छात्रायें लड़कियों की मैरिट सूची मे आयी हैं ।

संकट की घड़ी में हमारा कर्त्तव्य

[पृष्ठ ५ का शेष]

इस [illegible] आवश्यकता है कि स्थान-स्थान पर व्यायामशालाएं, क्रीड़ा-केन्द्र एवं [illegible] मन्दिरों की स्थापना की जाये जहाँ देश के बच्चे युवक प्रातःकाल एवं सायंकाल एकत्र होकर व्यायाम एवं आसन करे तथा विविध भारतीय खेल खेलें । इससे वे शारीरिक रूप मे हृष्ट एवं पुष्ट तो होंगे ही, साथ ही साथ उनमे अनुशासन एकता एवं मिल-जुलकर कार्य करने की भावना भी विकसित होगी जिसकी आज सबसे अधिक जरूरत है । इस अवसर पर लोगों को अच्छे स्वास्थ्य एवं ब्रह्मचर्य के महत्व से परिचित कराया जाये तथा उनके सामने प्रेरणादायक, देशभक्ति से परिपूर्ण एवं शिक्षाप्रद विचार रखे जाये ।

नैतिकता एवं चरित्रनिर्माण पर विशेष जोर

दुख का विषय है कि इस समय हमारा नैतिक पतन तेजी से हो रहा है । हम उन महान आदर्शों को भूलते जा रहे हैं जिनके कारण हम हजारों वर्षों से यवन अफगान तथा मुगल आक्रमणकारियो का सफलतापूर्वक सामना करते हुए अपने अस्तित्व की रक्षा करने मे सफल रहें । आवश्यकता है कि हम वेद की शिक्षाओं का तथा अन्य सांस्कृतिक ग्रन्थों के महान विचारों तथा आदर्श महापुरुषों के चरित्रों को जन-जन तक पहुंचाकर नैतिकता एवं चरित्रनिर्माण की प्रक्रिया को पुर्नस्थापित करने का प्रयास करे ताकि इस देश में भारतीय संस्कृति एवं भारतीय धर्मों के रक्षक राम, कृष्ण, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, महाराणाप्रताप, वीर शिवाजी, स्वामी दयानन्द, गुरुगोविन्द सिंह तथा बन्दावैरागी आदि ऐसे महापुरुषो का जन्म हो सके । एकता स्थापित करने में सहायक राष्ट्र एवं आर्यभाषा हिन्दी सांस्कृतिक भाषा संस्कृत तथा स्वदेशी भावना के प्रचार-प्रसार तथा देश की एकता को सुदृढ़ करने में सक्षम सांस्कृतिक एकता के मूल तत्वों तथा देश के गौरवशाली इतिहास से प्रत्येक देशवासी को परिचित कराया जाये । सभी देशभक्त तत्व एकता के सूत्र में आबद्ध होकर सरकार पर इस बात का दबाव डाले कि वह शासन, प्रशासन, शिक्षा आदि के क्षेत्र में केवल देशभक्त लोगों को स्थान दे । जनता को भी चाहिये कि चुनावों के अवसरों पर उन्हीं को जिताने का प्रयास करे जो कि भारत माता के सच्चे भक्त तथा भारतीय संस्कृति के पूजक हो ।

हाई स्कूल मैरिट सूची में लखनऊ के पांच और छात्र

हाई स्कूल बोर्ड परीक्षा की मैरिट सूची में लखनऊ के पांच और छात्रों ने स्थान प्राप्त किया है । ये सभी छात्र भी सिटी मोन्टेसरी स्कूल के ही हैं । लड़कियों की मैरिट सूची में विद्यालय की राजेन्द्र नगर शाखा की छात्रा कु० लता जैन ने तीसरा स्थान तथा क्रमशः राजेन्द्र नगर एवं आर० डी० एस० ओ० शाखाओं की छात्रा कु० अर्जिता गुप्ता एवं कु० ज्योति अरोरा ने चौथा स्थान प्राप्त किया है । लड़कों की मैरिट सूची में राजेन्द्र नगर शाखा प्रकाशचन्द्र श्रीवास्तव तथा ऋषि अग्रवाल ने पन्द्रहवां स्थान प्राप्त प्राप्त किया है । ज्ञातव्य हो कि इसी विद्यालय के १३ छात्र सामान्य मैरिट सूची में पहिले ही स्थान प्राप्त कर चुके हैं । इस प्रकार सिटी मोन्टेसरी स्कूल के कुल १८ छात्र उ० प्र० की मैरिट सूची में अब हो गये हैं यह अभूतपूर्व एवं आश्चर्यजनक उपलब्धि है ।

इसके साथ ही सिटी मोन्टेसरी स्कूल का हाईस्कूल परीक्षा—फल भी शत—प्रतिशत प्रथम श्रेणी का रहा है । इस स्कूल के कुल १३९ छात्र बोर्ड परीक्षा में सम्मिलित हुए जो कि प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं ।

सम्पादकीय

[पृष्ठ २ का शेष]

जैसा प्रारम्भ की पंक्तियों में लिखा है कि पूर्व कर्तव्यों के विश्लेषण व आगे का पथ-सृजन के लिए आते हैं-आइये, आज गणतन्त्र दिवस के पुनीत पर्व पर हम सब देशवासी अपने-अपने जीवन दर्शन का विश्लेषण करें हम में जो अनैतिकता, अराष्ट्रीयता, अपने देश, भाषा संस्कृति के प्रति उपेक्षा विदेशी भाषा संस्कृति व सभ्यता के प्रति लगाव आ गया है उसे त्यागने का संकल्प लें। अपने देश अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए सर्वात्मना समर्पित होकर अपने नैतिक चरित्र, राष्ट्रीय चरित्र को ऊंचा उठाकर सम्पूर्ण राष्ट्र को सुखी समृद्ध बनाने में समर्थ हों।

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के सभा कार्यालय से समस्त समाजों को वार्षिक चित्रों के फार्म भेजे जा चुके हैं और उनको भरकर सभा कार्यालय में पहुंचने की अन्तिम तिथि १५-९-८७ है। जिन समाजों को डाक-वितरण विलम्ब के कारण चित्र न प्राप्त हो सके वह सभा से शीघ्र सम्पर्क करके प्राप्त करलें। —मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

श्रीमद्दयानन्द वैदिक मिशन रामगढ़ के गुरुकुल में प्रवेश

छोटा नागपुर जशपुर आदि ईसाई बहुल इलाके में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए सलग्न श्री मद्दयानन्द वैदिक मिशन रामगढ़ द्वारा संचालित गुरुकुल वैदिक विद्यालय में शुद्ध हुये ईसाइयों के बालकों का आधुनिक शिक्षा के साथ प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा से भी दीक्षित किया जा रहा है। आदिवासी, हरिजन, या अन्य सभी अपने बालकों को प्रवेश कराकर लाभ उठायें।

—आचार्य विश्वश्रवा: जी १०३ बजरिया मोतीलाल बरेली के श्री रामदत्त व्याकरणाचार्य एवं श्री गणेशदत्त जी व्याकरणाचार्य से मिलना चाहते हैं। श्री रामदत्त जी महाविद्यालय ज्वालापुर में अध्यापक रहे हैं एवं श्रीगणेशदत्त जी ने हापुड़ के निकट गुरुकुल की स्थापना की थी।

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क १५जुलाई १९८७ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८६ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

५११, ६२९, ६३१, ७४८, ७४९, १३४८, २४५२, २९५९, २९६६, ४४७८, ४५३७, ४९७३, ४९८२, ५२७७, ५५३७, ६४७६, ८२९८, ८८८७, ८९७०, ९२०१, १०१८३, १०१८५, ११६५०, ११६५२, ११९४५, ११९४७, ११९४८, १२२५१, १२२६७, १२२७८, १२९३८, १२९४१, १२९४३, १२९४४, १३१३६, १३१३९, १३१७३, १३४८८, १३४९०, १३४९६, १३४९९, १३५००, १३५०९, १३५१०, १३५११, १३९१९, १३९२०, १३९२१, १३९२२, १३९२३, १३९२४, १३९२५, १३९२६, १३९२७, १३९२८, १३९२९, १३९३०, १३९३१, १३९३२, १३९३९, १३९४०, १३९४१, १३९४२, १३९४३, १३९४४, १३९४५, १३९४६, १३९४७।

विनीत—
व्यवस्थापक

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१/५७ | घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८३

भाद्रपद कृष्ण १४, रविवार, सवत् २०४४ वि० दिनांक २३ अगस्त १९८७

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल

विक्रमादित्य 'बसन्त'

'वेद वारिधि'

★

प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

वर्ष	९०
अङ्क	३३

साम्प्रदायिक-एकता-अंक

अब कोई गुलशन न उजड़े · · · · · ·

★ ★ ★

मेरठ ! जिसे १८५७ मे, पराधीनता की बेड़ियो मे जकड़ी हुई भारत माँ की स्वतन्त्रता का प्रथम बिगुल बजाने का श्रेय प्राप्त है, मेरठ ! ! जिसकी धरती पर रहने वाले जनमानस ने, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या ईसाई, सैनिको के कन्धे से कन्धा भिड़ाकर मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने का अग्रणीय एव स्पृहणीय नेतृत्व किया था, वही मेरठ प्रशासन की अकुशलता एव कतिपय राजनीतिज्ञों के अदूरदर्शितापूर्ण हस्तक्षेप के कारण साम्प्रदायिकता की आग मे धू-धू करके जल उठा। मानवता चीत्कार कर उठी। निरीह निर्दोष प्राणियो की जघन्य हत्या, धू-धू करती हुई करोड़ो की सम्पत्ति, बिलखती रोती, चीखती अबलाओ के करुण, क्रन्दन ने हमारे सामने एक प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। ऐ मानवता ! तू किस बर्बर युग मे पहुच रही है? स्वतन्त्रता के इतने वर्षों बाद भी हम जाति-पाति, ऊंच-नीच, हिन्दू मुस्लिम भेद की पराकाष्ठा पर हैं। आसेतु हिमाचल फैले हुए समस्त भारतीयो मे हम बन्धुता और प्रेम का आदर्श स्थापित नहीं कर सके। कैसा दुर्भाग्य है मेरे देश का! मेरे देशवासियों का! ! जिनकी रगो मे एक ही पूर्वजो का खून बह रहा है, जिस धरती पर एक साथ पलकर जो बड़े हुए उसी धरती को, उसी मा के वक्षस्थल को हमने अपने ही भाइयो के खून से लाल कर दिया। मेरठ की साम्प्रदायिक उन्माद से भरी हुई हृदय विदारक घटनाओ का विवरण हमारे यशस्वी प्रधान जी की लेखनी से आर्यमित्र में पढिए और सोचिए आज आपका क्या कर्त्तव्य है, क्या धर्म है।

मानवता का पोषक आर्यसमाज पीड़ितो की सेवा मे कभी पीछे नहीं रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी पीड़ितो की सेवा मे अहर्निश लगे हुये हैं न उन्हे तन का होश है न मन का। सर पर कफन बाध ऋषि का यह सिपाही पीड़ितो की आवाज सुनते ही गलियो मे, कूचो मे अकेला दौड़ पड़ता है न प्राणो का मोह है न किसी का इन्तजार है उनका तो एक ही ध्येय है "कामये दुख तप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्' हजारो लाखो रुपयो का अन्न, वस्त्र, औषधि धन उनके नेतृत्व मे आर्यसमाज वितरित कर चुका है हर आर्यसमाज शरण स्थली बनी हुई है, हर आर्य का घर पीड़ितो के लिये खुला हुआ है। "अब कोई गुलशन न उजड़े अब वतन आबाद है", यह हमारी, उनकी, समाज की पुकार है। [illegible] पीड़ित मानवता की सेवा मे अन्न वस्त्र धन [illegible] पुण्य के भागी बनिए। आर्यसमाज के हाथों को मजबूत कीजिए !

से आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ-भाद्रपद कृष्ण१५सम्वत २०४४ रविवार २३ अगस्त १९८७ दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

राष्ट्र की एकता
विघटन का षड्यन्त्र

भारतवर्ष एक महान देश है और अतीत मे सम्पूर्ण आर्यावर्त्त अथवा भारतवर्ष वैदिक राष्ट्र के रूप मे एक महती शक्तिस्थली के रूप मे रहा है जहा से सम्पूर्ण विश्व को मानवता का सन्देश प्रेषित किया जाता था। कालान्तर मे परिवर्तन हुए और इसकी सांस्कृतिक एकता पर विदेशियो के प्रहार होने लगे। प्रत्येक विदेशी जो इस देश मे आया उसने यह समझा कि जब इस देश की एकता को खण्डित किया जायेगा तभी यहा हमारे पैर जम सकते हैं। अरब और ईरानियो ने यही किया परन्तु सबसे ज्यादा देश को खण्डित करने का प्रयास अंग्रेज जाति ने किया क्योंकि १८५७ की जनक्रान्ति से यहाँ के हिन्दू और मुसलमानो ने एक चट्टान बनकर ब्रिटिश शासन को उखाडने का प्रयास किया था। अग्रेज जमे परन्तु उन्होंने भारत मे साम्प्रदायिकता, जातीयता और धार्मिक उन्माद की भावनाओ को कूटनीतिक प्रभाव से बल प्रदान किया तथा उसकी जडें गहरी करने का प्रयास किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिनका कार्यकाल सामाजिक क्षेत्र मे १८६५ से १८८३ तक विशेष रूप से रहा उन्होंने अंग्रेजो की कूटनीति को समझा और विघटित होते देश को वैदिक आदर्श और समाजवाद के सन्देश से एकता प्रदान करने का प्रयास किया। आर्य समाज राष्ट्रीय एकता और चेतना का प्रतीक बनकर सामने आया जिसने विदेशी शासन, विदेशी कूटनीति और विदेशी विघटनकारी प्रवृत्ति का समवेत स्वर से विरोध किया।

अंग्रेजो ने अपने समय मे साम्प्रदायिक उन्माद को अत्यधिक बल दिया और इतनी साम्प्रदायिक उन्माद को चरम सीमा प्रदान की कि जब अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर अंग्रेजो का सूर्य डूबने लगा, उपनिवेशो से उन्हे अपना विस्तर समेटना पडा उन्होंने भारत को विभाजित किया और राष्ट्र के दोनो छोरो पर पाकिस्तान के रूप मे मुस्लिम राज्य स्थापित किया जिनकी विभीषिका आज भी राष्ट्र को निश्चिन्त नही होने देती है और जहा से साम्प्रदायिकता के उन्माद, पूर्व मे बागला देश से मिजोरम और आसाम मे बढते हैं तो पश्चिम मे पाकिस्तान से साम्प्रदायिकता के उन्माद बढाए जाते है और जिनका परोक्ष तथा अपरोक्ष प्रभाव भारत के सारे मुसलमानो पर पडता है।

खेद के साथ लिखना पड रहा है कि नेहरू से लेकर राजीव तक किसी भी प्रधानमन्त्री ने जिस सही दृष्टिकोण से साम्प्रदायिक उन्माद का मुकाबला करना चाहिए था वह न करके मुसलमानों को अल्पसंख्यक की सुविधाए देकर उनको अलग विशेष पहचान बनाने मे सहायक से हो गये इसी नाते विगत चालीस वर्ष मे भारत एक राष्ट्र पुरुष के रूप मे एक महान् राष्ट्र बनकर उदय नहीं हो सका बल्कि कभी काश्मीर कभी श्रीनगर, अलीगढ, अहमदाबाद दिल्ली और मेरठ मे साम्प्रदायिक धर्मान्धता की लपटें उठती रहीं बुझती रहीं सुलगती रहीं। अभी भी साम्प्रदायिक नेता उन्हे खत्म करने के बजाय आज भी राजनैतिक नेताओ के संकेत पर साम्प्रदायिकता की चिन्गारी को हवा देते हुए उसे तेज लपटो मे बदलने का प्रयास कर रहे हैं और ऊपरी रूप से इस रोग की जितनी दवा की गई उतना ही यह रोग अन्दरूनी रूप से प्रबल होता जा रहा है। इसका भयानक सान्निपातिक स्वरूप विगत कई महीनो से मेरठ मे देखने को मिल रहा है और मेरठ के इस साम्प्रदायिक उपद्रव की डोर दिल्ली के साम्प्रदायिक नेताओ के हाथो रहती हैं और २/४ दिन मेरठ मे शान्ति होती है और फिर कहीं बम फट जाता है उपद्रव प्रारम्भ हो जाते है।

उपद्रव चाहे साम्प्रदायिक हो चाहे राजनैतिक हो, चाहे सामाजिक हो सभी हानिकार है। मानव को क्लेश पहुचाते है और सामाजिक संगठनो को कमजोर करते हैं अत आर्यमित्र बडे ही कडे शब्दो मे समस्त प्रकार की अशान्ति समस्त प्रकार के उपद्रव और उन समस्त परिस्थितियो का जो जन जीवन के शान्तिमय जीवन मे व्यवधायिका होती हैं खुलकर विरोध करता है। हमारे राष्ट्र का कल्याण तभी हो सकता है जब साम्प्रदायिकता को निर्दयता के साथ कुचला जाये और राजनैतिक दल अपने भविष्य के मतदाता की ओर ध्यान न दें अपितु सत्ता पर रहें चाहे चले जायें पर साम्प्रदायिकता के विष को सदा-सदा के लिए दृढता आमूल नष्ट कर दें। इस दृढता से जब काम करेंगे तभी देश साम्प्रदायिकता से मुक्त हो सकता है।

आर्यमित्र आर्य समाज का एक मुख पत्र है राष्ट्र की एकता अखण्डता हमारा ध्येय है और मेरठ मे या देश के किसी भी भाग मे जहाँ साम्प्रदायिक तत्व उभरते है आर्यमित्र उनका सक्रिय विरोध करता है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश का
वार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन का कार्यक्रम

सभा से चित्र भेजने की तिथि	१५-८-८७ तक
चित्र वापस सभा मे आने की तिथि	१५-९-८७ तक
सभा मे चित्र जाचना	१६-९-८७ से २५-९-८७ तक
सूची का प्रकाशन	४-१०-८७
आपत्ति प्राप्त करने की अन्तिम तिथि	१५-१०-८७
आपत्तियो की सुनवाई एव समाधान	१६-१०-८७ से २०-१० ८७ तक
शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	२७-१०-८७
सभा का वृहदधिवेशन एव निर्वाचन	१४ व १५ नवम्बर ८७

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरग सभा दिनाक २ अग १९८७ को सभा भवन लखनऊ मे सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता मे हुई और उसमे वृहदधिवेशन एव वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

मेरठ का साम्प्रदायिक दंगा—पूर्व नियोजित

[श्री पंडित इन्द्रराज प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०]

प्रशासन के गलत निर्णयों से तथा कतिपय राजनीतिज्ञों के अनुचित हस्तक्षेप के कारण मेरठ मे साम्प्रदायिक संघर्ष ने भयावह रूप धारण कर लिया। गड़बड़ी की शुरुआत १४ अप्रैल १९८७ से हुई है। १४ अप्रैल का प्रारम्भ हुए दंगे में जो नौचन्दी मेले के अवसर पर मुसलमानों के ही दो समुदायों मे पटाखे दागने की प्रतिस्पर्धा को लेकर हुआ था, जिसमें विभिन्न सम्प्रदायों के २ व्यक्ति मरे। उसी समय नगर मे एक साथ कई जगह लूटपाट, छुरेबाजी, और आगजनी की घटनाएं हुई तथा कर्फ्यू लगा दिया गया। नौचन्दी बन्द गई। प्रशासन ने तुरन्त नौचन्दी मेले की समाप्ति की घोषणा कर दी अन्यथा जन-धन की अपार हानि होती।

यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि उसी तारीख (१४ अप्रैल) को अयोध्या एवं १६ अप्रैल को कासगंज मे दंगा होना—एक समुदाय द्वारा अपने घरो में अस्त्र आदि एकत्र कर रख लेना, बच्चों, औरतों को बाहर भेज देना राजीव गांधी की रैली में १६/५ को खाली बसों का लाना वापिसी में उसमें बाहरी आदमी और हथियारों से भरी हुई बसों का आना (रैली के कारण पुलिस द्वारा बसो की कोई चेकिंग नहीं की गई) नगर में प्रतिबन्ध के बावजूद श्री बुखारी और श्री शहाबुद्दीन का कई बार छिप-२ कर मेरठ आना, गुप्त सभाएं करना विषैले भाषण देना आदि से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि यह दंगा पूर्व नियोजित था।

प्रशासन विशेषकर सी० आई० डी० विभाग अनभिज्ञ बना रहा, पी० ए० सी० हटा दी गई यद्यपि नौचन्दी दुर्घटना के बाद दुबारा दंगा हो जाने की बात आकाश में गूंज रही थी, हर जुबान पर थी, फिर भी समस्त पी० ए० सी० हटा दी गई। मुस्लिम दंगाइयो ने यह मौका अच्छा देखकर १८-७-८७ की रात्रि से ही संगठित रूप में हजारो की संख्या में समूहों में हथियारो से लैस होकर जलाने की सामग्री के साथ पिलोखेड़ी रोड, हापुड़रोड, गोलाकुआं, हाशिमपुरा, जाकिर कालोनी में हिन्दुओं का कत्लेआम शुरू कर दिया। हिन्दुओं की बड़ी २ कपड़े की फैक्टरियां जलाकर राख कर दीं जो हिन्दू मिला उसे पकड़कर आग में झोंक दिया १९ मई को शाम तक यह भयानक वीभत्स सामूहिक कत्लेआम, आगजनी, लूटमार चलती रही न इन्हें कोई रोकने वाला था, न आग बुझाने वाला कोई दमकल था—ऐसा मालूम होता था प्रशासन कुम्भकर्णीय निद्रा मे चादर ताने सो रहा था। अधिकृत सूचना के अनुसार सौ व्यक्ति मारे गये करोड़ों की सम्पत्ति जलकर राख हो गई। अनधिकृत सूचना कहीं बहुत अधिक की है।

इस विनाश लीला को करने के बाद मलियाना में दंगाइयों ने उपद्रव करना प्रारम्भ किया जिस पर पी० ए० सी० ने सख्ती से कार्यवाही की तो पी० ए० सी० को तथा भारत सरकार को बदनाम करने का षडयन्त्र किया गया और १११ मृत व्यक्तियों की सूची प्रशासन को दी गयी और उनके आश्रितों को हजारों रुपयों का मुआवजा दिलाया गया। जबकि तथ्य यह निकला यह सभी व्यक्ति नियोजित ढंग से छिपाये गये थे, जो बाद में वापस आ गये। एक व्यक्ति ने अपने आपको (मृत व्यक्ति का वारिस बताकर २० हजार रुपया मुआवजा ले लिया) लेकिन जब वह व्यक्ति जीवित निकला और उसने उससे २० हजार रुपया मांगा तो भेद प्रकट हुआ। इस षडयन्त्र को कुछ राजनीतिज्ञों ने सहयोग दिया और अखबारों में पी० ए० सी० को बदनाम करने के वक्तव्य जारी किए।

इस मलियाना काण्ड के बहाने से भारत को दुनियां में बदनाम करने का षडयन्त्र रचा गया और कुछ अदूरदर्शी राजनैतिक नेता उसे हवा दे रहे हैं।

आर्य समाज द्वारा राहत कार्य

धीरे-धीरे स्थिति सामान्य होती जा रही थी कि जगन्नाथ स्वामी की रथ यात्रा पारम्परिक रूप से २८-६-८७ को निकलनी थी परन्तु प्रशासन ने अपनी स्वीकृति नहीं दी जबकि नमाज पढ़ने के लिए ४ घंटे का कर्फ्यू खोल दिया गया परिणाम स्वरूप रथयात्रा जबर्दस्ती निकालने की कोशिश हुई इस पर भयंकर लाठीचार्ज हुआ जिसमे कई लोग घायल हुए कई आर्य समाजी भी इस चपेट मे आ गये। प्रशासन की इस कार्यवाही के विरोध स्वरूप शहर मे समस्त दुकानें (एक समुदाय को छोड़कर) बन्द हो गईं। एक संघर्ष समिति बनाई गई जिसमें मेरा नाम प्रमुख रखा गया समिति ने सत्याग्रह करने का निश्चय किया और हजारो की संख्या में हिन्दू गिरफ्तारी देने हेतु तैयार होने लगे पहिले जत्थे में लगभग १५० सत्याग्रहियों ने गिरफ्तारी दी। अन्ततः प्रशासन को झुकना पड़ा और उसे रथयात्रा निकालने की अनुमति देनी पड़ी कर्फ्यू हटा दिया गया और २/७ को रथयात्रा बड़े शानदार ढंग से निकाली गई। इस सम्बन्ध में आर्य समाज के सहयोग के लिये सभी जनता विशेषकर सनातन धर्मी जनता ने आर्य समाज की भूरि २ प्रशंसा की है।

मैं जैसे ही इस कर्त्तव्य को पूर्ण करके अपने घर आ रहा था तो भीड़ जमा देखी अधिकारियों व सैनिक बलों से मार्ग घिरा था। मालूम हुआ कि जगह २ बम विस्फोट हो चुके है तथा नगर के पास के इलाको में जैसे सरायतनगर, हरीनगर, मौ० कर्मअली, ट्रांसपोर्टनगर, आदि स्थानों पर बम, गोलीवर्षा, आगजनी, लूटमार, कई घण्टों से हो रही है पर प्रशासन हतप्रभ है बड़ी कठिनाई से सेना की सहायता से स्थिति पर काबू पाया गया है। तलाशियों के दौरान मुसलमानों के घरों से हथियारों का बड़ा जखीरा पेट्रोल से भरे हुए ड्रम तथा अन्य घातक अस्त्र मिले है। तलाशियो का मुसलमानो द्वारा बड़ा प्रतिरोध किया गया है और ऐसा अनुमान है कि तलाशी के बावजूद हथियार बड़ी मात्रा में इधर-उधर छिपाकर रखे हुए हैं।

इसी बीच एक हास्यास्पद स्थिति हमारे जनतापार्टी के नेता श्री चन्द्रशेखर साहब ने उत्पन्न कर दी। किसी १ मुसलमान लड़के के यह कह देने पर कि पी० ए० सी० के जवान मुसलमानों को ट्रक में भरकर गंगा-नहर ले गये। सबको गोली मारकर नहर में फेंक दिया (मुझे मुसलमान लड़का) को भी गोली मारी पर मैं बच गया—श्री चन्द्रशेखर ने अखबारों में वक्तव्य दे दिया पी० ए० सी० को भंग कराने का ऐलान कर दिया। प्रशासन को बुरा-भला कहा और इस असत्य घटना की जांच किए बिना ही भारत की छवि को दुनियां में धूमिल बनाकर रख दिया। यह है हमारी जनतापार्टी का नेतृत्व ?

प्रशासन, ने जैसी कि उसकी नीति है जन धन की इतनी व्यापक

[शेष पृष्ठ ४ पर]

मेरठ का साम्प्रदायिक दंगा–पूर्व नियोजित

[पृष्ठ ३ का शेष]

क्षति होने के पश्चात् एक दंगा आयोग गठित किया जिसमें मैंने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से, श्री स्वराज्य चन्द्र एवं श्री मानसिंह वर्मा ने केन्द्रीय आर्य समिति की ओर से प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसमें हमने प्रत्यक्षदर्शी घटनाओं के आधार पर आयोग को बतलाया कि दंगे पूर्व नियोजित थे लाउडस्पीकरों पर मस्जिदों से ऐलान किए गये, मुसलमानों ? इस्लाम खतरे में है बाहर निकल आओ काफिरों को कत्ल कर दो इनकी सुबह न होने पाये। पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाए गये। तलाशी मे पाकिस्तान मार्के की बन्दूकें मिली हैं इन सबसे यह स्पष्ट है कि इन दंगों के पीछे विदेशी शक्तियां काम कर रही हैं। देश की एकता अखण्डता को चुनौती दी जा रही है। एकता और बन्धुत्व का आदर्श समाप्त कर दिया गया है आर्य संस्कृति विनाश के कगार पर खड़ी है। हम आर्यों को जगना और जगाना होगा। आर्य जगत अपने नेता स्वामी आनन्दबोध के पीछे है उनके निर्देशन में सारा आर्य जगत अपनी संस्कृति की रक्षा करने में प्राणपण से संलग्न है।

मेरठ मे स्थिति धीरे-२ शान्त हो रही थी। १५/७ से सभी शिक्षण संस्थाएं खोल दी गई थीं। हमारी सभी शिक्षण संस्थाओं में सत्रारम्भ कर दिया गया था, किन्तु मैं जैसे ही गाजियाबाद आ० स० के मन्त्री श्री विजय भूषण जी को खतरों के बीच से निकाल कर बस अड्डे छोड़ कर आया ही था कि खबर मिली कि गुदड़ी बाजार में भयंकर बम विस्फोट हो गया है। इस बम विस्फोट के सम्बन्ध में पांच प्रकार के वर्णन किए जाते हैं–

(१) दो युवक मोटर साईकिल पर आये बम फेंककर चले गये।
(२) एक लड़का भागता हुआ आया बम फेंककर चला गया।
(३) एक व्यक्ति थैला लिए आया उसने दूकानदार से कहा थैला रखा है। मैं अभी आता हूं उसके जाने के थोड़ी देर बाद थैले में रखा बम फट गया।
(४) एक लड़के ने छत के ऊपर से बम दूकान में फेंक दिया।
(५) वह कूड़े कबाड़ से खरीदा हुआ गोला था। जब दूकानदार ने ५ किलो के बांट पर रखकर उस पर हथौड़ा चलाया तो बम फट गया। उसे खरीदने बेंचने वाले तथा १ अन्य की मृत्यु हो गई।

प्रशासन ने नं० ५ पर बल दिया परन्तु प्रतिक्रिया स्वरूप १ व्यक्ति की हत्या हो गई और फिर शहर में तनाव पूर्ण स्थिति व्याप्त हो गई। मैं उसी दिन सार्वदेशिक सभा से जांच के लिए आये हुए डॉ० आनन्द प्रकाश जी को दंगा आयोग में प्रस्तुत प्रतिवेदनों की फोटो स्टेट कापियां देकर और आर्य समाज द्वारा राहत कार्यों का निरीक्षण करके १७-७-८७ को लखनऊ के लिए सभा कार्यालय चला गया।। वहाँ १८/७ को टी. वी. पर पता चला। कि मेरठ में गुदड़ी बाजार में रहने वाले हिन्दू लड़भूजों तथा फूल वालों पर मुसलमानों ने भयंकर आक्रमण कर दिया है। यह भी एक पूर्व नियोजित आक्रमण प्रातः ६ बजे जान-बूझकर इसलिए रखा गया कि पुलिसकर्मी उस समय शौच आदि नित्य क्रियाओं से निपटने चले जाते हैं। उस सामूहिक आक्रमण में गरीब हिन्दू एक पक्के मकान के अन्दर जा छिपे इसलिए जानें बच गईं परन्तु उनके घर जलाकर राख कर दिये गये। मैं २०-७-८७ को लखनऊ से आ गया। २१-७-८७ को पुनः गुदड़ी बाजार में बम फेंके गये। इस सम्बन्ध में कुछ असामाजिक तत्वों को पकड़ा गया, तलाशियां भी गईं।

२३-७-८७ को समस्त शहर में पुनः अनिश्चित कालीन कर्फ्यू लगा दिया गया। कुछ कबाड़िए हरिद्वार से गंगाजल लाकर औघड़नाथ मंदिर पर जल चढ़ाते हैं एक कबाड़िए की मृत्यु पर कहा जाता है ऋषिकेश से दिल्ली जाती हुई एक बस पर आठ व्यक्तियों की हत्या कर दी गई। यह बस कांड इस साम्प्रदायिक दंगे को उग्रवाद की ओर मोड़ रहा है तथा गृहयुद्ध का संकेत दे रहा है। अब प्रशासन ने दंगाइयों को देखते ही गोली मारने का आदेश दे दिया है काश ? यह आदेश पहिले दे दिए गये होते। कबाड़ियों पर किए गये हमलों से मेरठ के आस पास के इलाकों की ग्रामीण जनता द्वारा उत्तेजित होकर कई स्थानों पर हत्याएं करने के भी समाचार मिले हैं जो अफसोस जनक हैं।

२६-७-८७ को ब्रह्मपुरी में मुस्लिम दंगाइयों ने होमगार्डों को गली में खींच लिया उनके साथ मारपीट की और उनकी लाठियां छीन लीं। होमगार्डों के शोर मचाने पर जब पुलिस दल दौड़कर उन्हें छुड़ाने आया तो उस पर जबर्दस्त पथराव किया गया अतिरिक्त बल पहुंचने पर ही स्थिति काबू में आ सकी। सदर में ६७ कबाड़ियों को पकड़कर पीटा गया किसी तरह वे अपराधी पकड़े जावें जिन्होने बस में कुछ मुसलमानों को मारा था इनमें २६ व्यक्ति पकड़े गये थे। २८/७ को एस० एस० पी० मेरठ ने घोषणा की कि २२ तारीख को बस में मारे जाने वाले लोगों के सिलसिले में ४ अपराधी पकड़े गये हैं और उन्होने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है ४ के नाम और बताए हैं जिनकी तलाश हो रही है। प्रशासन ने अपराधियों को पकड़वाने वालों को पुरस्कार दिए जाने की घोषणा की है और उनके नाम गुप्त रखने का आश्वासन दिया है इस प्रकार मेरठ और आस पास का इलाका एक बहुत ही तनावपूर्ण स्थिति में गुजर रहा है यद्यपि ऊपरी शान्ति दिखाई दे रही है परन्तु कोई नहीं कह सकता कि किस वक्त क्या हो जाय। हिन्दू जनता को बहुत जागरूक और संगठित होकर रहना होगा अन्यथा उनके देश में ही उन्हें समाप्त करने का भयंकर षड्यन्त्र सामने स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

सम्पादकीय

[पृष्ठ २ का शेष]

यह अङ्क साम्प्रदायिक एकता का अङ्क है जिसके द्वारा हम पाठकों के लिए वह सामग्री प्रस्तुत कर रहे हैं जिससे उन्हें ज्ञात हो सके कि मेरठ में जन-जीवन की कितनी हानि हुई कितने निरीह कालकवलित हुए कितनी सम्पत्ति नष्ट हुई साथ ही एक पंक्ति और लिख रहे हैं कि आ० प्र० नि० सभा और उसके प्रधान वहाँ की भयाकुल जनता के बीच सराहनीय सेवा के कार्य में अहर्निश लगे हुए हैं। हम "सर्वे सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः" की भावना के प्रबल योग से मेरठ में पूर्णतया साम्प्रदायिक एकता स्थापित कराने में सतत यत्नशील हैं।

हमारा सबका दायित्व है हम पूर्ण निष्ठा व नेकनीयती से मेरठ मे साम्प्रदायिक एकता स्थापित कराने में यत्नशील होकर सम्पूर्ण देश को साम्प्रदायिक एकता और अखण्डता की कड़ी में आबद्ध कराने में सक्षम बनें।

मनमोहन तिवारी

गृह मन्त्री उत्तरप्रदेश से मेरठवासियों की अपील व कुछ सुझाव

१–१९ जुलाई ८७ को गुदड़ी बाजार में कई घण्टे तक मुस्लिम दंगाइयों ने हिन्दुओं के ५० से भी अधिक मकानों व दुकानों को लूटा व आग लगायी। गुदड़ी बाजार शहर कोतवाली के बिल्कुल करीब है। इसके कारणों की जांच की जाय क्या इसमें प्रशासनिक अधिकारियों का कोई हाथ तो नहीं? क्या यह केवल उनकी अकर्मण्यता का प्रतीक है। यह आम भावना है कि जब से मेरठ में श्री फारूकी ए०डी० एम० (सिटी) के पद पर नियुक्त किये गये हैं वह बराबर मुसलमानों की उनकी गलत कार्यवाहियों के लिये संरक्षण दे रहे हैं और उनको खुलेआम दंगा करने पर प्रोत्साहित कर रहे है।

२–१९ जौलाई ८७ को गुदड़ी बाजार मे हुए ताण्डव नृत्य में जिन लोगों के मकान व दुकान फुंके और जो निकट के स्कूल मे संरक्षण लिये हुए हैं उनके खाने-पीने व रक्षा के प्रशासन ने क्या प्रबन्ध किये हैं।

३–प्रशासन को यह भलीभांति ज्ञात था कि यहां पर १५ जौलाई से मुसलमान पुनः हिन्दुओं के साथ मारपीट व आगजनी करने की कार्यवाही कर रहे हैं और यह भी उनको ज्ञात था कि यह गुदड़ी बाजार से शुरू होगा फिर भी प्रशासन ने इस सम्बन्ध में पूरी लापरवाही की जिससे यह प्रतीत होता है कि प्रशासन मे कुछ अधिकारी यह चाहते हैं कि इस प्रकार के दंगे पुनः हों।

४–कल के पूर्व नियोजित अग्नि कांड का नेतृत्व महानगर के इंकाई मन्त्री मसूद अफर कर रहे थे जिनको पुलिस ने इसी आरोप के साथ गिरफ्तार किया परन्तु उनको छोड़ दिया गया इसी प्रकार और भी प्रभावित व्यक्ति गिरफ्तार किये गये जिनको बाद में प्रशासन ने छोड़ दिया जिसके बारे में कोई जांच भी नहीं की गई जिससे दंगाइयों का मनोबल और बढ़ गया और उन्होने खुलकर लूटपाट व आगजनी की। जिलाधीश महोदय का बयान इस सम्बन्ध में बहुत ही अशोभनीय है।

५–इस सम्बन्ध में यह भी उल्लेखनीय है कि सन् १९४७ से अब तक जितने भी साम्प्रदायिक दंगे मेरठ में हुए उनमें से एक भी दंगा किसी भी हिन्दू मोहल्ले से शुरू नहीं हुआ और न ही किसी हिन्दू ने शुरू किया यह तमाम दंगे सदैव ही मुस्लिम मोहल्ले से शुरू हुए और वहां के मुसलमानों ने शुरू किये यह मुस्लिम मोहल्ले काफी बदनाम हैं और प्रशासन को इनके बारे में पूरी जानकारी है परन्तु फिर भी इन मोहल्लों की इस प्रकार की हरकतों पर प्रशासन कोई नजर नहीं रखता इसी वर्ष लगभग तीन माह के भीतर मेरठ नगर के इन्हीं मोहल्लों के लोगों में चार मरतबा हिंसा व आगजनी खुलकर हुई है जो प्रशासन के लिये बहुत ही शर्म की बात है और जिसके कारण न सिर्फ मेरठ बल्कि सम्पूर्ण भारतवर्ष की दुनिया के देशों में बदनामी हुई इस सम्बन्ध में भी पूरी जांच की आवश्यकता है और जब तक इस प्रकार की हिंसा व आगजनी की घटनाओ को करने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही नहीं की जायेगी इस तरह की घटनायें नहीं दबाई जा सकतीं।

६–मेरठ की जनता प्रशासन में विश्वास खो बैठी है साथ ही यह बिल्कुल सही बात है कि इन व्यापक दंगों में राजनैतिक दलों का पूरा हाथ है जिसमें कांग्रेस (ई) की स्थानीय कथित नेता व हमारी सांसद श्रीमती मोहसिना किदवई भी दूर नहीं हैं और इन लोगों का खुला संरक्षण इन दंगाइयों को प्राप्त है इस सम्बन्ध में ठोस कार्यवाही की सख्त जरूरत है।

७–१७ जौलाई को गुदड़ी में दंगे के समय उपस्थित सेक्टर मजिस्ट्रेट सेक्टर औफिसर के घटना स्थल से भागने पर उनके विरुद्ध कार्यवाही की जानी चाहिये।

८–दंगाइयों के गैर जमानती वारण्ट व घरों की कुरकी होनीचाहिए तथा आतंकवादी कानून के तहत सख्त कार्यवाही की जानी चाहिए।

९–हिन्दुओं के समस्त नुकसान को गुदड़ी, कर्मगढ़ी, कैंथावाखान, रायजादमान के मुसलमानो से वहीं की वसूली की जानी चाहिये।

१०–१५ जौलाई को बजाजा में बम विस्फोट के बाद जनसमूह के बीच जिलाधिकारी द्वारा की गई घोषणा कि–शहर में पी०ए०सी० लगाई जायेगी, पर अमल होना चाहिए।

११–१३ व १४ जौलाई के दिन मिट्टी के तेल के दो-दो सौं लीटर ड्रम गुदड़ी में गये थे वे किसके यहा गये थे और उनका किस प्रकार वितरण हुआ इसकी जाच की जानी चाहिये जिसका प्रयोग हिन्दुओं के मकान व दुकान फूंकने मे किया गया।

१२–१५ जौलाई को बजाजा बम बिस्फोट के आघात के बाद सुरक्षा व्यवस्था में काफी कमी का कारण बताना चाहिये।

१३–छत्ता अनन्तराम की पुलिस चौकी के सब इन्सपेक्टर श्री अशोक राणा को निलम्बित करना चाहिए।

१४–मध्यप्रदेश की पुलिस को मेरठ से हटाया जाना चाहिए उसके स्थान पर पी० ए० सी० लगाना चाहिए क्योंकि एम०पी० पुलिस दंगाइयों को रोकने में अयोग्य साबित हो रही है तथा वे दंगाइयो को देखते ही भाग जाते हैं छुप जाते हैं।

१५–सुरक्षा बलों को दंगाइयों को देखते ही गोली मारने के आदेश दिये जाने चाहिए।

१६–सेक्टर मजिस्ट्रेटों को उपलब्ध गाड़ियों का प्रयोग उनकी बीबी व बच्चों के लिए किया जा रहा है यह दुरुपयोग बन्द होना चाहिए।

१७–१५ जौलाई को बजाजा में बिस्फोट को गम्भीरता से क्यो नहीं लिया गया उसके पश्चात् व्यापक तलाशियां क्यों नहीं ली गई इस की जांच होनी चाहिए।

–प्रतापचन्द्र मेरठ

मेरठ में दंगा-एक सुनियोजित षड्यन्त्र

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

इधर कई मास से मेरठ में साम्प्रदायिक आग की विभीषिका फैली हुई है। काफी कुछ प्रशासकीय प्रयत्नों के बाद अभी भी वह यदा कदा ज्वालामुखी सदृश यत्र तत्र फूट पड़ती है। बम बिस्फोट छुट-पुट मार-धाड़ की घटनायें सामान्य सी बन गई हैं। प्रशासन सतर्क है। परन्तु पूर्ण नियंत्रण अभी तक नहीं कर सका है।

मेरठ में आज एक सुनियोजित षड्यन्त्र के प्रसार मे अरब देशों का पेट्रोडालर और तस्करो का अपार कालाधन देश मे घुसे पंचमांगी तत्वों के माध्यम से अपना काम कर रहा है। ये पंचमांगी तत्व राजनैतिक कलेवर ओढ़कर बिभिन्न राजनीतिक पार्टियों में अपना स्थान बनाकर कुछेक विधान सभाओं और संसद में सदस्यता प्राप्त करके बड़ी ही तल्लीनता से भारत की सम्प्रभुता नहीं रहेगी स्वतन्त्रता को नष्ट करके भारत में एक दूसरा पाकिस्तान बनाने की अपनी कुत्सित चाल चल रहे हैं। ये तत्व राजनीति का सहारा लेकर बड़े-बड़े मन्चों के माध्यम से अपनी विषैली आग सुलगाते रहते हैं अपनी चालबाजी से इस्लाम खतरे में है, मुसलमानों का अस्तित्व भारत में खत्म किया जा रहा है आदि स्लोगन्स देकर देश की सामान्य मुस्लिम जनता की कमजोर नसों को कुरेदते हैं, उन्हें उकसाते हैं।

ऐसी ही पूर्वायोजित योजनानुसार मेरठ में बिगत कुछ मास पूर्व दंगा भड़काया गया। बड़े ही सुनियोजित ढंग से लोग नमाज अदा करने के नाम पर मस्जिदों में इकट्ठे हुए उन पंचमांगी नेताओं से दिशा प्राप्त करके लूट-पाट और आगजनी आरम्भ कर दी। चूंकि ऐसी प्रारम्भिक योजना का किसी को भी अहसास नहीं था इसलिए अपार धन-जन की हानि पहले ही दंगे में हुई। दंगा जब भड़का फिर निश्चय ही दूसरे पक्ष ने भी अपना प्रतिरोध किया ही होगा। और राष्ट्र की विपुल हानि होने लगी। प्रशासन ने इसे दबाने के लिए पुलिस को निर्देश दिया पुलिस की क्षमता के बाहर होने पर यह काम पी० ए० सी० व अर्द्ध सैनिक बलों को सौंपा गया। दंगा कुछ दबा। चूंकि सुनियोजित षड्यन्त्र था इसलिए तत्काल उन पंचमांगी नेताओं ने दंगा पर नियंत्रण करने वाले पी० ए० सी० बलपर ज्यादती का लाञ्छन लगाना आरम्भ किया। उसे समाप्त करने की आवाज उठानी आरम्भ की। लोगों को मस्जिदों व अपने बंगलों मे छिपाकर ११२ लोगो को मार कर नदी में बहा देने का नाटक रचा।

वोट के पीछे दीवाने राजनीतिज्ञों ने भी उनकी ही हां में हां मिलानी आरम्भ की। श्री शहाबुद्दीन, मौलाना बुखारी ने ही नहीं श्री चन्द्रशेखर जैसे राष्ट्रीय नेता ने भी ११२ लोगों को मारकर नदी में बहा देने के समाचार की पुष्टि की और यहां तक कहा कि यदि समाचार गलत हो तो वे राजनीति से सन्यास ले लेंगे। समाचार तो गलत सिद्ध हो गयापर वे अपने आसन पर निःसंकोच विराजमान हैं।

मस्जिदों की तलाशी में विभिन्न आधुनिकतम हथियार बरामद किये गये परन्तु केन्द्रीय मंत्री श्रीमती मोहसिना किदवई तक ने आकर तलाशी के लिए अपनी नाराजी जाहिर की। श्री शहाबुद्दीन का मेरठ में आना निषिद्ध था परन्तु उन्होंने वहां आकर पी०ए०सी० को फटकारा विभिन्न राजनीतिक नेताओं के दबाव से तलाशियां रोक दी गयीं। पता नहीं किस दबाव में आज्ञा न पालने के अपराध में भी श्री शहाबुद्दीन को गिरफ्तार नहीं किया गया।

अपने कर्त्तव्य का निष्ठा से निर्वाह करने वाले पी.ए.सी. कमांडेन्ट श्री त्रिपाठी को निलम्बित करने तक की बात उठ गयी। पी०ए०सी० को ज्यादती करने वाली कहकर उसे हटाने, उसे भंग करने उसमें मुसलमानों के लिए सीटें रिजर्व करने जैसी साम्प्रदायिक व घिनौनी मांगें की जाने लगीं। इन सबके पीछे उन्हीं पंचमांगी राजनीतिज्ञों का हाथ है जिन्होंने यह दंगे करवा कर भारत को नष्ट करने का स्वप्न देखा है।

यह किसी से भी छिपा नहीं है कि मेरठ में मस्जिदों से खुलासा जेहाद का एलान लाउडस्पीकरों से किया गया। पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाए गये। १४ अप्रैल को सुबेरात के दिन लिसाड़ी क्षेत्र में १०-१२ जानें जाने के बाद १९ मार्च को प्रातः उत्तेजक भाषणों से पुनः दंगा भड़का। हिन्दुओं की दुकानें लूटी गयीं जलाई गयीं। करोड़ों की राष्ट्रीय सम्पत्ति खाक कर दी गयी। इमलियान व हाशिमपुरा एवं अन्य मस्जिदों से भी इस्लाम की रक्षा के लिए सड़कों पर आ जाने काफिरों की हत्या कर डालने उनकी सम्पत्ति जला डालने की कुत्सित आवाजें बार-बार आनें लगीं और उसने फिर कहर ढा दिया। हजारों दंगाई सड़कों पर सशस्त्र आ गये और बाजार के बाजार लूट लिए जला डाले। हिन्दुओं की करोड़ों की सम्पत्ति स्वाहा कर दी। अनेकों माताओं की गोदी सूनी हो गयीं, अनेकों ललनाओं का सिंदूर पुछ गया, अनेकों बच्चे अनाथ हो गए प्रशासन की सख्ती से जब दंगा कुछ दबा तो हाशिमपुरा व इमलियान में मुसलमान लूट गये, मार डाले गए का सुनियोजित ड्रामा किया गया, वहां के झूठे नाटक को सत्य का जामा पहनाकर प्रधानमन्त्री तक को वहां जाने को विवश किया गया। प्रधानमन्त्री के दंगा क्षेत्र में भ्रमण के समय दूर दर्शन पर चिल्ला चिल्लाकर एक युवक को यह कहते हुए मैंने सुना कि प्रधान मन्त्री जी आप केवल वहीं न जायें जहां कहा जा रहा है बल्कि आप वह सब भी देखें जहां का आपको कुछ भी नहीं बताया गया है। वहां पर सब स्वाहा हो गया है। प्रधानमन्त्री ने कहा अवश्य सब देखने का प्रयत्न करूंगा परन्तु समय कम है।

उन पंचमांगी सांसदों, राजनीतिज्ञों ने इमलियान व हाशिमपुरा की न्यायिक जांच की मांग की। उन ११२ लोगों के नाम पर सरकार से लाखों रुपये वसूले। धीरे-धीरे प्रायः वे सभी लोग अपने-अपने घरों को लौट आये जब सौदेबाजी का धन उन्हें नहीं मिला तब उन्हीं में से एक ने पुलिस में इसकी रिपोर्ट लिखाई फिर झूठ का पर्दा फाश हुआ सचाई खुलीयद्यपि ११२ व्यक्तियों के मारे जाने की बात को झूठ और उनके जामा मस्जिद या श्री शहाबुद्दीन की कोठी में छिपाये जाने का आरोप भारतीय युवा मुस्लिम सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मुख्तार अब्बास नकवी ने कई बार लगाया परन्तु उधर ध्यान तब दिया ही नहीं गया।

वोट के भूखे राजनीतिज्ञ आज भी ऐसे ही स्वांग उन पंचमांगी तत्वों से दबकर कर रहे हैं। अभी जनता पार्टी के नेता श्री सुब्रह्मण्यम् स्वामी ने इसी संदर्भ में हाशिमपुरा की घटना की न्यायिक जांच की मांग को लेकर अनशन करने का स्वांग रचा था। वोट की भूख कहां ले जायेगी पता नहीं। मेरी समझ में नहीं आता, कि आखिर इन राजनीतिज्ञों को मेरठ का वह इलाका याद क्यों नहीं आता जहां हिन्दुओं की करोड़ों की सम्पत्ति जलाकर राख कर दी गयी अनेकों निर्मम हत्यायें कर दी गयीं। सारे मेरठ के दंगे की न्यायिक जांच की आवाज वे सब क्यों नहीं उठाते केवल इसीलिए न कि मुसलमानों के वोट उनकी झोली से कहीं निकल न जाये।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

बाल जगत

स्कूलो तथा कालेजो में अध्ययनरत

छात्र छात्राओ एव समस्त बच्चो के लिए शुभसूचना

बच्चे हमारे राष्ट्र के उदीयमान नागरिक हैं। समाज और राष्ट्र की भावी आशायें इन्हीं पर निर्भर हैं। इनमें भावात्मक एकता एव सॉस्कृतिक लेख पढने की अभिरुचि को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से "आयमित्र' आगामी मास से "बालजगत' शीर्षक के अन्तर्गत प्रतिमास एक लेखमाला का प्रकाशन करने जा रहा है जिसमे १८ वर्ष तक की आयुवर्ग के बच्चो द्वारा लिखित लेख ही प्रकाशित किए जायेंगे। लेख सुन्दर अक्षरो मे पृष्ठ के एक ओर लिखा हुआ अथवा टाइप किया हुआ अधिकतम १००० शब्दो का होना चाहिए। विषय एव भाषा बच्चो की रुचि तथा स्तर की होनी चाहिए।

जिन बच्चो के लेख उपयुक्त होंगे उन्हे "आर्यमित्र" मे प्रकाशित किया जायेगा और उनके लेखक बच्चो को प्रोत्साहन स्वरूप "आर्यमित्र" नि शुल्क रूप में उन्हे वष भर भेजा जायेगा।

मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

मेरठ मे दगा एक सुनियोजित षड्यन्त्र

यह मेरठ का दगा केवल मेरठ का ही नहीं यह एक सुनियोजित देशघाती षड्यन्त्र का रिहर्संलमात्र है। इसको समय रहते सरकार व विपक्षी दलो को वोट की राजनीति से ऊपर उठकर निदान ढूढ़ना होगा। उस मूल को खोजना होगा जहाँ इसकी जड़ें सींची जा रही हैं। जहा से भारत की स्वतन्त्रता सम्प्रभुता पर सकट खडा किया जा रहा है।

सरकार देश मे जहाँ भी वर्ग भेद बिलगाववादी बातें की जायें वहाँ उन्हे दृढता से कुचल दे वोट की राजनीति आडे न आने दी जाये। सदिग्ध पूजा स्थलो की व्यक्तियो की दृढता से तलाशी ली जाये। बिलगाव वादी उकसाने वाले भाषणो की छूट न दी जाये। हाजी मस्तान जैसे तस्कर की गुप्त योजना पर कडी नजर रखी जाये उसकी जगह जगह पर अपार धन बाँटकर देश द्रोही प्रवृत्ति उकसाने की योजना को जडमूल से नष्ट किया जाये।

आज आवश्यकता है हम सब देश के नागरिक राष्ट्र की सप्रभुता की रक्षा के लिए बिना किसी भेद भाव के एकजुट होकर इन बिलगाववादी पचमागी राष्ट्रद्रोही तत्वो से मुकाबला लेने के लिए कृतसकल्प हो और देश को टूटने से बचाने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए दृढप्रतिज्ञ हो।

(पृष्ठ ६ का शेष)

राजर्षि रणञ्जय सिंह सम्मान समारोह

महामनीषी कवि कालिदास ने "सोहम् आजन्म शुद्धानाम् रघूणाम् अन्वय वक्ष्ये"—कहकर जिस गौरवशाली परम्परा का गुणगान किया है,



राजर्षि रणजय सिंह उसी से जुडे हुए हैं। आपके व्यक्तित्व और कृतित्व का व्यजक राजर्षि से उपयुक्त और कोई अभिधान सम्भव नहीं है। अमेठी का राजवश लौकिक ऐश्वय मे जितना समृद्ध रहा है, दैवी सपदा मे उतना ही समृद्ध है। राजर्षि के पूज्य पिता ऋषिकल्प महापुरुष थे। उनके उत्सग मे राजर्षि रणजय सिंह की शिक्षा-दीक्षा सम्पन्न हुई जिसने आपके जीवन विधा को एक नई दिशा, नई गति और नई राह प्रदान की। राजर्षि ने शैशव काल मे ब्रह्मचयनिष्ठ रहकर प्राचीन तथा आधुनिक अनेक विषयो की शिक्षा सुयोग्यतम गुरुजनो से प्राप्त की। महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रेरणादायक उपदेश एव अपने अग्रज राजकुमार रणवीर सिंह की कारयित्री भावभूमि की छत्र छाया मे राजर्षि ने अपना जीवन सधान किया है। महामना मालवीय जी की प्रेरणा से भारतीय सस्कृति और भारतीय अस्मिता की दीक्षा प्राप्त की। राजर्षि अपनी योग्यता के बल पर सन् १९२६ मे वायसराय की नेशनल असेम्बली के सदस्य चुने गये लेकिन सन् १९३० के आन्दोलन मे सदस्यता छोड दी आपके राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ सम्बद्ध हो जाने के कारण आपकी रियासत ब्रिटिश सरकार द्वारा अधिग्रहीत कर ली गई। देश स्वतन्त्र होने पर आप विधान परिषद एव विधानसभा के सदस्य चुने गये। आपने विधान सभा मे गोवध बन्दी का विधयक पारित कराकर भारतीय सस्कृति की बहुत बडी रक्षा की है। सन् १९६२ मे आप लोकसभा के सदस्य चुने गये और ससद मे हिन्दीनिष्ठ सदस्य के रूप मे प्रतिष्ठित हुए। आपका तप पूत जीवन ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आदश के साचे मे ढला है। आप हिन्दी के सफल कवि एव लेखक भी हैं। आपकी इन अविस्मरणीय सेवाओ के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने आपको श्रावणी पूर्णिमा (रक्षा बन्धन) पर अपनी सर्वोच्च मानद उपाधि (साहित्य वाचस्पति) से अलकृत किया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० इस सम्मान के लिए राजर्षि रणञ्जय सिंह को बधाई देती है और उनके दीर्घ जीवन की कामना करती है।

मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री

सँवेदन शून्य मानव

संवेदन से वंचित होकर,
मानव–मानव क्या बन सकता ?
यद्यपि वरदान सृजन का यह,
फिर भी विभ्रान्त हुआ जाता ।
क्षमतायें अपनी विस्मृत कर,
पशुता की ओर बढ़ा जाता ।
मिट्टी का सूखा ढेला बन,
क्या निज का हित कुछ कर सकता ?
यह चन्द्र लोक तक भी पहुंचा,
पर हृदय देश का ज्ञान नहीं ।
क्या सुधा और क्या गरल यहां,
अब तक इसको पहचान नहीं ।
बिखराव वेग के झंझा में,
कब उपवन है अब रह सकता ?
आदिम प्रवृत्तियों का ताण्डव,
अविराम यहां पर है चलता ।
मानवता की जो धवल कीर्ति,
पंकिल जिसको करके हंसता ।
जो अमर बेल बन चूस रहा,
क्या हरीतिमा है बन सकता ?
यद्यपि नगण्य सी लगती है,
यह व्याधि खोखला कर देगी ।
दुर्भावों को आवृत करके ।
बस रंग रुपहला भर देगी ।
जो मनुजोचित है वही यहां,
नेता पथ दर्शक बन सकता ।
जो परपीड़ा को अद्भुत बन,
चुपचाप देखता है रहता ।
वचनों में भी होकर दरिद्र,
केवल हृदयों को है दहता ।
चाहे पद, धन, में ऊंचा हो,
कृमि कीटों सा होकर चलता ।

–डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी, प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज, बरेली

जीवन का लक्ष्य

वह जीवन ही क्या जीवन है जिस जीवन मे उल्लास नहीं ।
वह उपवन ही क्या उपवन है जिस उपवन मे मधुमास नहीं ।।
नर होकर भी मन में तेरे जब रहती घोर निराशा है ।
इस कंटकमय जीवन पथ पर फिर चलने की क्या आशा है ।
बुद्धि तो है पर मनन नहीं या अपने पर विश्वास नहीं ।।
वैसे तो कीट पतंगे भी जीते हैं जीवन भार लिये ।
पर तू तो जग में आया है कुछ ऊंचे ही उद्गार लिये ।
वह हृदय नहीं जिसमें मिलता कुछ परहित का आभास नहीं ।।
वर्षा की चोटें सह सहकर है पर्वत फिर भी दृढ़ रहते ।
सागर की चंचल धारा में जलपोत निरन्तर ही बहते ।
जलपोत नहीं है तूफां में जब रहने का अभ्यास नहीं ।।
वह जीवन है संघर्षों का इस जीवन मे विश्राम नहीं ।
हंस हंसकर आगे बढ़ना है यहां रोने का कुछ काम नहीं ।
वह मानव क्या दुख में जिसके हो अधरों पर मधुहास नहीं ।।

–जगदीश शरण शीतल प्रधान आर्यसमाज चांदपुर

जरूरत है एक सुदामा के सखा की

आजकल के नेता,
भूल गये हैं नेतृत्व,
का कर्त्तव्य,
आदर्श, आचरण, व्यवहार,
को छोड़,
बढ़ रहे हैं कदम उनके
निधि नारी की ओर
भ्रमित भीड़
दिशाविहीन अनुयायी ।
एक दिन
अनुयायियों में से ही
भीड़ चीरकर
लोगों की पीर हरने
आयेगा फिर
एक पैगम्बर
अत्याचार, आतंक
और एक कंस का वध करने
द्रोपदी की लाज बचाने
अर्जुन में पौरुष जगाने
दुर्योधन, शिशुपाल, जरासिन्धु से
मुक्ति दिलाने
फिर से भारत का गौरव जगाने
आयेगा एक नेता
सुदामा का सखा
गरीबों का मसीहा
कृष्ण की तरह
इस धरती पर ।

–ब्रज किशोर रस्तोगी ३१, मुर्तजा हुसेन रोड, लखनऊ-३

पन्द्रह अगस्त मनाते रहे

आपत्ति के बादल छा रहे हैं
चतुर्दिक अरिदल मड़रा रहे हैं
हमारे स्वाभिमान को ठेस पहुंचा रहे हैं
हमारे सम्मान को घटा रहे हैं ।
हम उनसे सावधान हो जायें
ऐसे ठोस कदम उठायें
ताकि हमारा गणराज्य अमर रहे
हम प्रति वर्ष पन्द्रह अगस्त मनाते रहे ।
कुछ आस्तीन के सांप गड़बड़ कर रहे हैं
देश में अराजकता उत्पन्न कर रहे हैं
भावात्मक एकता में बाधक बन रहे हैं
विघटन की राजनीति को हवा दे रहे हैं ।
हम उनसे सतर्क हो जाये
पर न किंचित घबड़ाये
उनके षडयन्त्रों को विफल बनाते रहे
हम उत्साह के साथ पन्द्रह अगस्त मनाते रहे ।

–डा० शकुनचन्द्र आर्य लालगंज (रायबरेली)

सूचना

ग्राहकों से विनम्र निवेदन है कि 'आर्यमित्र' का शुल्क भेजते एवं पता बदलवाने को लिखते समय अपना ग्राहक नंबर अवश्य लिखा करें । नये ग्राहक अपना शुल्क भेजते समय 'नया ग्राहक' लिखने का कष्ट करें ताकि धन के जमाखर्च व पता बदलने तथा डिस्पैच में असुविधा न हो ।

साथ ही निवेदन है कि जो समाजें आर्यमित्र का शुल्क सभा के दशांश के साथ भेजती हैं वे अपने पत्राचार के साथ आर्यमित्र के लिए शुल्क एवं ग्राहक नम्बर की सूचक स्लिप भी अवश्य भेजें ।

व्यवस्थापक–
आर्यमित्र साप्ताहिक

उनका अहिंसा में विश्वास ही नहीं

[श्री प्रभातकुमार, ८ न्याय मार्ग, इलाहाबाद]

२८ जून के 'आर्यमित्र' में मेरठ के हृदय विदारक दंगे का समाचार पढ़ा। मेरठ में सन् १९३९ से लगातार दंगे होते रहे हैं। किन्तु इस वर्ष का दंगा सुनियोजित षड्यन्त्र का परिणाम था। मुसलमानों में संगठन है धार्मिक उन्माद है जिसे उर्दू पत्र निरन्तर प्रोत्साहित करते हैं और कांग्रेसी शासन आंख मूंदकर उस विषाक्त प्रोपेगण्डा की उपेक्षा करता है दुःख इस बात का है कि हिन्दू भीषण इस्लामी षड्यन्त्र का प्रतिकार करने के लिए कुछ भी नहीं करते उनमें राजनैतिक चेतना नहीं है आज से ६५—७० वर्ष पूर्व ख्वाजा हसन निजामी ने हिंदुओं को मुसलमान बनाने की स्कीम बनायी थी जिसके द्वारा सभी हथकण्डों से हिन्दुओं को मुसलमान बनाना था। स्वामी सत्यदेव परिव्राजक ने 'संगठन का बिगुल' नामक पुस्तक लिखकर उस विनाशकारी स्कीम के विरुद्ध हिन्दुओ को सचेत किया था पर निष्फल। आर्यसमाज के महोपदेशक पं० शिवशर्मा जी ने भी उस स्कीम के विरुद्ध पुस्तक लिखी थी। कहने को हम बीसवीं शताब्दी में है, किन्तु मुसलमान अभी भी हजरत मोहम्मद के जीवन के प्रारम्भिक युद्धकालीन जैसे कार्यों को फिर दुहरा रहे हैं। मुसलमान धार्मिक रूप से हिंसा मे विश्वास रखते हैं। असहयोग के समय में प्रारम्भ मे मोलाना शौकत अली और मोहम्मद अली महात्मा गांधी के साथ रहे पर शीघ्र ही उन्होने महात्मा जी का साथ इस कारण छोड़ दिया क्योकि वे अहिंसा मे विश्वास नहीं कर सकते थे। चूंकि इस्लाम मे हिंसा व हत्या करना बिलकुल जायज है। जस्टिस रघुबरदयाल की रिपोर्ट में कहा गया था कि दंगे उन्हीं स्थानों पर होते हैं जहां मुसलमान बहुत होते हैं जस्टिस यम०पी० सक्सेना की रिपोर्ट मे बताया गया कि मुरादाबाद के दंगों के लिए पी० ए० सी० दोषी नहीं थी। आज के वोट परस्त राजनैतिक नेता मुसलमानों के वोट पाने के लिए उनके जघन्य कार्यों पर पर्दा डालने का प्रयत्न करते है और हिंदुओ पर हुये अत्याचारो को अनदेखा करते हैं। स्थिति यह है कि विश्व हिंदू परिषद का कोई व्यक्ति मेरठ नहीं गया केवल आर्यसमाज के नेता वहां गये। इस्लाम के गम्भीर षडयन्त्र को विफल करने के लिए आर्यसमाज ही एकमात्र संस्था है। यह प्रसन्नता की बात है कि मेरठ के दंगों की जाँच कराने के लिए सार्वदेशिक सभा ने जांच समिति का गठन किया है।

—बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक १२—७—८७ को सभा प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में निश्चय किया गया कि छोटानागपुर तथा संथाल परगना के वनवासी बहुल क्षेत्र में अराष्ट्रीय गतिविधि को रोकने के लिए सघन अभियान चलाया जाय। युवकों में जागृति, राष्ट्रीयता तथा वीरता भरने के लिए आर्यवीर दल का शिविर शीघ्र लगाया जाय तथा नवजागरण के लिए आर्य महासम्मेलन का विशाल आयोजन हो, बैठक के पूर्व आर्य बन्धुओं तथा पंजाब एवं हरियाणा के सामूहिक नर-संहार पर शोक प्रकट किया गया।

—चम्पारण जिला एवं नेपाल तराई क्षेत्र में पं० ध्रुव जी आर्य एवं श्री रामचन्द्रसिंह क्रान्तिकारी आर्यसमाज के प्रचार में संलग्न हैं। १७ एवं १८ जुलाई को श्री रामलखनसिंह आर्य गढ़ लोहियार थाना हरसिद्धि में गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

डा० सुब्रह्मण्यम् स्वामी का अनशन

राजनीति से प्रेरित एक साम्प्रदायिक ढोंग

श्री सुब्रह्मण्यम् स्वामी ने बोट क्लब [देहली] पर आमरण अनशन किया। यह अनशन हाशिमपुर. के हत्याकाण्ड की न्यायिक जाँच कराने के लिये किया गया। कुछ राजनैतिक मुस्लिम नेताओं ने भी इस अनशन का समर्थन किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा कि डा० स्वामी को इससे पहले मेरठ और दिल्ली में हुए सामूहिक हत्याकाण्ड, लूटमार, और आगजनी पर भी सरकार से न्यायिक जांच की मांग उठानी चाहिए थी। पंजाब में वर्षों से चल रहे नर संहार ने भी डा० स्वामी की आत्मा को इसके खिलाफ आवाज उठाने के लिए क्यों प्रेरित नहीं किया? हाशिमपुरा कांड से पूर्व मलियाना गांव की घटना के सम्बन्ध में भी जनता पार्टी के नेता श्री चन्द्रशेखर और शहाबुद्दीन ने झूठे आरोप लगाकर संसार भर में भारत की छवि को धूमिल किया था। इन नेताओं को मलियाना गांव का तिनका तो नजर आ गया, लेकिन मेरठ मे हुए हिन्दुओं के दिल दहलाने वाले हत्याकांड, उनके मकानो और दुकानों के भीषण अग्निकांड का शहतीर नजर नहीं आया? तब भी इन्होंने मलियाना गांव में १११ मुसलमानों के मारे जाने का झूठा प्रचार किया था। कुछ दिनों बाद जब मरे हुए १११ में से ८५ लोग (शायदकब्रसे उठकर) अपने घरों को वापिस आ गये तो इन नेताओं के झूठ की कलई खुल गई।

अब इसी प्रकार दूसरा गलत प्रचार करके डा० स्वामी मुसलमानों की साम्प्रदायिक भावनाओं को भड़का रहे हैं। उनका गलत तरीके से समर्थन करके उनकी वाहवाही लूटना चाहते हैं। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे नेता अपने राजनैतिक स्वार्थों से अंधे होकर पेड़ की जिस डाल पर बैठे हैं उसी को काट रहे हैं।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने डा० स्वामी से पूछा है कि क्या वह अपने शैशवकाल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय कार्यकर्त्ता रहे थे? क्या उन्हें अपनी पुरानी जीवन गाथा याद नहीं रही? यदि यह सत्य है तो अब वे एक नया पाखण्ड खड़ा करके, देश में फैल रहे साम्प्रदायिक जहर को और प्रोत्साहन देकर शान्ति-प्रिय हिन्दू समाज को क्यों एक और मुसीबत में डालना चाहते हैं। —सभा मन्त्री

आर्यसमाज 'अनारकली' का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी ९ नवम्बर १९८७ से १५ नवम्बर ८७ तक बड़े समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। मेरी दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, स्त्री आर्यसमाजों, अन्य आर्य संस्थाओं तथा दिल्ली की आर्य जनता से अनुरोध है कि इन तिथियों को अभी से अंकित कर लेवें और उक्त तिथियों में वे अपने यहां कोई अन्य कार्यक्रम न रखकर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मुख्य इस आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर समारोह में पधार कर कृतार्थ करें।

—राजनाथ सहगल मन्त्री

नवीन शिक्षा नीति के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम से संस्कृत भाषा का निष्कासन

भारतीयता और संस्कृति पर असह्य कुठाराघात

सम्पूर्ण विश्व में भारत राष्ट्र, भारतीय संस्कृति और भारतीय वाङ्मय का अपना एक अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान है। सम्पूर्ण सुधीजन इस तथ्य को एकमत होकर स्वीकार करते है। कि इसका श्रेय एक मात्र संस्कृत भाषा को है। इस प्रकार—

संस्कृत-भाषा भारत राष्ट्र की आत्मा है।

इसके साथ ही यह तथ्य भी सर्वमान्य है कि संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। इसे विश्व की बहुसंख्य भाषाओं की जननी के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। इसके सुसमृद्ध वाङ्मय को मानव को संस्कृति के साथ विश्व के विभिन्न ज्ञान-विज्ञान के आविर्भूत होने का गौरव प्राप्त है। इस भाषा का विशाल वाङ्मय मानव संस्कृति एवं संचित ज्ञान का अक्षय भण्डार है। इसके विविध विषयो पर विश्व के मनीषी निरन्तर शोध कार्यो मे संलग्न रहकर गौरव का अनुभव करते है।

संस्कृत भाषा में आज भी शताधिक पत्र और पत्रिकायें प्रकाशित हो रही हैं। तथा नित्य नूतन साहित्य की संरचना भी हो रही है। लाखों ही नहीं अपितु असंख्य आबालवृद्ध जन संस्कृत भाषा के अध्ययनाध्यापन में संलग्न हैं। कम्प्यूटर के प्रयोजनार्थ वैज्ञानिक वर्ग ने संस्कृत भाषा को ही सर्वश्रेष्ठ उपयोगी भाषा स्वीकार किया है। संस्कृत भाषा से ही संस्कृति, मानवता, जीवन धारण करने की कलाओं और सम्पूर्ण ज्ञानराशि का संरक्षण संभव है। विशेषकर मानवता और संस्कृति की शिक्षा इस युग में सर्वाधिक आवश्यक है और वह संस्कृत भाषा के संरक्षण से ही संभव है। भारत के सभी प्रान्तों में संस्कृत भाषा को ससम्मान स्थान प्राप्त है और इसका कहीं किसी प्रकार का विरोध भी नहीं है।

फिर भी अत्यन्त क्लेश एवं दुर्भाग्य का विषय है कि सभी विशिष्टताओ की ओर अनदेखी करते हुए भारतीय संविधान की ८ वीं अनुसूची के ३५ वें अनुच्छेद में निहित भारतीय भाषाओं में विशिष्ट स्थान प्राप्त संस्कृत भाषा को आज इस नवीन शिक्षा नीति के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम से सर्वथा ही निष्कासित कर भावी भारतीय पीढ़ी को संस्कृताध्ययन से पूर्णतः वंचित किया जा रहा है। यह निश्चय ही हमारे मौलिक अधिकार के हनन के साथ एक भयानक राष्ट्रघाती कुचक्र है जिसका हमारे भारतीय जन-जानस एवं राष्ट्र की एकता, अखण्डता समृद्धि और चारित्रिक विकास पर विपरीत विनाशकारी प्रभाव पड़ना अवश्यम्भावी है।

अतः केन्द्रीय सरकार से अनुरोध है कि वह ऐसा प्रभावशाली कदम उठावें जिससे नवीन शिक्षा नीति के अन्तर्गत माध्यमिक कक्षाओं के लिए प्रस्तावित राष्ट्रीय पाठ्य-क्रम में संस्कृत भाषा को वांछित महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो सके और इसके साथ ही साथ भारत, भारती भारतीयता और संस्कृति को संरक्षण प्रदान किया जा सके।

निवेदक—डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री
प्राध्यापक—स्नातकोत्तर संस्कृत
विभाग, रणवीर सिंह स्वातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी

आर्यमहिला महाविद्यालय की स्थापना

टाण्डा (फैजाबाद)-पुण्य सलिला, पतितपावनी, सरयू नदी के तटवर्ती प्रदेश की शस्यश्यामला भूमि पर स्थित हथकरघा उद्योग के प्रमुख केन्द्र एवं मुस्लिम बाहुल्य उपनगरी टाण्डा (फैजाबाद) में आर्य सिद्धान्तों तथा नैतिक शिक्षा के प्रचार व प्रसार को दृष्टि में रखते हुए शिक्षा के क्षेत्र में सुविख्यात विदुषी, अनुभवी, कर्मठ कार्यकर्त्री प्रसिद्ध समाज सेविका तथा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित श्रीमती गुणवती ग्रोवर के संरक्षण में एक 'आर्य महिला महाविद्यालय की स्थापना की गई है। इस संस्था का उद्देश्य ग्रामीण इलाके को निर्धन, होनहार, अध्ययनशील, उच्च शिक्षा से वञ्चित महिलाओ को शिक्षित करना ओर उनमें आर्यसंस्कारों की भावना जाग्रत करना है ताकि वे भविष्य में सद्-गृहणी एवं धर्म परायणा बनकर अपने देश और समाज का नाम उज्वल कर सकें।

ऐसे समय में जबकि देश सामाजिक एवं नैतिक पतन की ओर अग्रसर हो रहा हो, आर्य संस्थाओं का विशेष महत्व बढ़ जाता है ऐसे पवित्र एवं महत्वपूर्ण कार्य के लिए सभी आर्य बन्धुओं से तन, मन, धन द्वारा सहयोग की अपेक्षा की जाती है।

आर्य कन्या आयुर्वेद महाविद्यालय बड़ौदा का रजतजयन्ती महोत्सव

आर्यकन्या महाविद्यालय के प्रांगण मे १० बजे 'आर्य कन्या आयुर्वेद महाविद्यालय" का २५ वां वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह का उद्घाटन गुजरात सरकार के स्वास्थ्य मन्त्री श्री बल्लभ भाई पटेल ने किया सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने समारोह की अध्यक्षता की। आर्य कुमार सभ बड़ौदा के प्रधान राजा मधुसूदन लाल पित्ती गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मंगल सेन चोपड़ा, श्री जयन्ती भाई पटेल भू०पू० मेयर बड़ौदा, श्री नवीन भाई ओझा आदि अनेक सम्भ्रान्त नागरिकों ने इस समारोह में भाग लिया।

अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए श्री आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि यदि सरकार आयुर्वेद को पूर्ण रूप से सहायता करे तो इसके माध्यम से गरीब जनता को सस्ता इलाज व सस्ती औषधियां और अरोग्यता के सुलभ साधन सरलता से उपलब्ध हो सकते हैं। यह आयुर्वेद महाविद्यालय देश भर में कन्याओं के लिए एकमात्र विद्यालय है।

स्वास्थ्य मन्त्री श्री बल्लभभाई पटेल ने संस्था की प्रशंसा करते हुए कहा कि गुजरात सरकार इसकी हर संभव सहायता करेगी।

वनस्पति उद्यान का उद्घाटन आयुर्वेद विश्व विद्यालय के कुलपति श्री वी० आर० मेहता ने किया। श्रद्धेय स्वामी आनन्दबोध सरस्वती व माननीय श्री मंगलसेन चोपड़ा ने वृक्षारोपण भी किया।

निर्वाचन

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा उन्नाव

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा उन्नाव श्री रविशंकर शर्मा-प्रधान श्री आचार्य शिवदास शास्त्री-मन्त्री श्री बाबूलाल बजाज-कोषाध्यक्ष।

महर्षि दयानन्द वैदिक संस्थान महरामऊ (उन्नाव)

श्रीआचार्य शिवदास शास्त्री-अध्यक्ष
श्री शिवमंगल शास्त्री-मन्त्री
श्री शिवराम सिंह-कोषाध्यक्ष

आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत

श्री रामानन्द जी सिगला-प्रधान,
श्री कुल भूषण जी-मन्त्री
श्री राज कुमार लोहे वाले-कोषाध्यक्ष,

स्त्री आर्य समाज साकेत मेरठ

श्रीमती सुशीला सिंह-प्रधान,
श्रीमती सरोज आर्या-मन्त्राणी
श्रीमती कमला शर्मा-कोषाध्यक्षा।

आर्य समाज थापर नगर मेरठ

१-श्रीयुत सरदारी लाल जी धवन प्रधान,
श्री वीरेन्द्र जी शर्मा मन्त्री
५-वेदप्रकाश जी सोनी-कोषाध्यक्ष,

स्त्री आर्यसमाज ब्रह्मपुरी मेरठ

७-सुश्री मायावती आर्या-प्रधान
८-सुश्री शकुन्तलाआर्या-मंत्राणी
९-सुश्री सोनादेवी आर्या-कोषाध्यक्ष,

नगर महिला आर्यसमाज गाजियाबाद

प्रधाना श्रीमती शारदा आर्या मन्त्राणी सुश्री वीरवती कोषाध्यक्ष सुश्रीशकुन्तला देवी

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५९९१
पंजीकरण सं० एल डब्लू/एन पी ७९
भाद्रपद कृष्ण १४
रविवार, २३ अगस्त १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

रामायण सीरियल के प्रसारण का समय बदलने का अनुरोध

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के प्रधान श्री ओंकारनाथ आर्य ने केन्द्रीय सूचना प्रसारण मन्त्री को एक पत्र प्रेषित कर कहा है कि गत कुछ सप्ताहो से रविवार को प्रात ९-३० बजे से धारावाहिक रामायण का सीरियल दूरदर्शन पर दिखाया जा रहा है। रामायण मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन की गाथा है, जो बहुत ही प्रभावशाली और शिक्षाप्रद है। इसे समस्त देशवासी बच्चे, वृद्ध और युवा वर्ग के लोग बड़ी रुचि लेकर देखते है। ऐसा सीरियल दूर दर्शन पर चलाने के लिए मै सभा की ओर से आपका धन्यवाद करता हू साथ ही यह भी लिखा है कि प्रति रविवार को प्रत्येक धर्मस्थान सनातन धर्म मन्दिरों, आर्य समाज मन्दिरो मे प्रात काल ७ से ११ बजे तक सत्सग आयोजित किये जाते हैं, जिनमे हमारे भाई बहन युवा वर्ग के लोग उपस्थित होकर अपना अपना सत्सग करते हैं।

आपके रामायण के प्रसारण का समय प्रात ९-३० बजे से है, जिससे सत्सग मे भाग लेने वाले बहन भाई और खास कर युवावर्ग आपके इस सीरियल को देखने से वंचित हो जाते हैं। हमारा आपसे अनुरोध है कि इस सीरियल का समय बदलने का कष्ट करें।

अत मेरी बम्बई की समस्त आर्यसमाजो की ओर से मांग है कि आप इस रामायण सीरियल का समय प्रात ९-३० के स्थान पर ११ बजे के बाद या रात्रि को १० बजे से पूर्व किसी समय रखने की कृपा करें।

निर्वाचन—

स्त्री आर्य समाज कासगंज एटा
प्रधाना श्रीमती ओमवती देवी
मन्त्राणी ,, रामेश्वरी देवी
कोषा० ,, गायत्री देवी

तपोवन शिक्षा समिति देहरादून
प्रधान श्री देवदत्त बाली
मन्त्री श्री देवेन्द्र नाथ राहनवाल प्राध्यापक
कोषा० श्री अमरनाथ अरोरा

आर्य समाज रामपुरा कोटा
प्रधान श्री सोमश्वर जी मुलियाम
मन्त्री श्री भगवती प्रसाद श्याम
कोषा० कल्याणमल मित्तल

धर्म शिक्षा पुस्तको के सम्बन्ध में—

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयो एव पुस्तक विक्रेताओ को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा द्वारा प्रकाशित धर्म शिक्षा भाग १ से १२तक की पुस्तकें सभा कार्यालय मे उपलब्ध हैं, पुस्तक प्राप्ति हेतु कार्यालय से सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ पूरा पता रेलवे स्टेशन साफ-साफ लिखें।

नोट—धर्म शिक्षा की पुस्तको पर कमीशन दिया जायगा। रेल भाड़ा एवं अन्यव्यय क्रेता को देना होगा।

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारामुद्रित एव प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० नं० २२४१/५७ | घोषणा पत्र सं०

भाद्रपद शुक्ल ६, रविवार, सवत् २०४४ वि० दिनांक ३० अगस्त १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

★

प्रो० रमेशचन्द्र एम ए

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	९०
अङ्क	३४

डा० शंकरदयाल शर्मा उपराष्ट्रपति निर्वाचित

विपक्षी एव सत्ताधारी दल के सयुक्त प्रत्याशी डा० शकरदयाल शर्मा भारत के नव उपराष्ट्रपति घोषित किये गये है। कृतित्व एव व्यक्तित्व के महाधनी डा० शर्मा का जीवन भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के साथ ही समाज सेवा के अनेक क्षेत्रो से जुडा रहा है। समस्याओ से घिरे हुए इस देश को आज आपसे बहुत आशायें हैं। उपराष्ट्रपति के गौरवशाली पद पर आपको आसीन देखकर हमे बडी प्रसन्नता है। प्रदेशीय आर्य जनता एव 'आर्यमित्र' परिवार की ओर से आपको बहुत बहुत बधाई एव शुभकामनाएं।'

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

पहले कांग्रेस की सरकार थी अब सरकार की कॉंग्रेस

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के भूतपूर्व प्रधान राजर्षि रणञ्जयसिह, ने देश की वर्तमान राजनैतिक स्थिति पर दुख प्रकट करते हुए कहा—आज देश मे जब एकता की जरूरत थी तब चाटुकारो ने न जाने कौन सी चाल चली कि मतभेद हो गए। अमेठी के पूर्व राजा रणञ्जयसिह ने कहा मुझे नही पता राजा विश्वनाथ प्रतापसिह और राजीव गाधी मे क्या मतभेद है। लेकिन अगर मतभेद दूर हो जाए तो बहुत अच्छा होगा। मै चाहता हू कि देश मे कोई ऐसी ताकत हो जो देश की एकता हेतु मतभेदो को दूर करा सके।

अमेठी राजमहल के अपने छोटे से कमरे मे राजर्षि रणञ्जयसिह बेहद सादगी के साथ लोगो से मिलते है। ८७ साल की उम्र मे भी उन्हे तमाम बातें ब्योरेवार याद है। सुनने मे जरूर उन्हे थोडी दिक्कत होती है। अमेठी मे शिक्षा, और विकास का शुरूआती काम करने के लिए मशहूर राजा रणञ्जय सिह की वजह से अमेठी को सजयगाधी और राजीव गाधी का निर्वाचन क्षेत्र होने का मौका मिला। आज भी अमेठी की जनता मे राजा के प्रति बेहद आदर और सम्मान है। उन्होने बताया कि मै १९०५ से देश की दशा देख रहा हू। मैने हमेशा चाटुकारो का विरोध किया है और शिष्टता सभ्यता और सज्जनता को प्राथमिकता दी है।' मै मानता हू कि सत्य के ग्रहण के लिए त्याग करने को तैयार रहना चाहिए। हम तो आगे बढ रहे है मगर देश पीछे जा रहा है। दल मे आज अनेक गुटबन्दियां है इनकी आपसी लडाई से जनता का और देश का नुकसान हो रहा है। आज सबसे बडा अनकरा काग्रेस मे है। इसकी वजह है कि इसानियत पैदा नहीं हुई और देश हित प्राथमिक नहीं रहा।' उन्होने बताया कि—

१९५२–५७ मे काग्रेस से विधान परिषद का सदस्य रहा। बाद मे काग्रेस की ही तरफ से मैने लोकसभा का चुनाव लडा और ६७ तक सासद रहा। लोक सभा मे काग्रेस के साथ काम करता रहा। लेकिन जब सविधान मे सशोधन किया गया कि अग्रेजी देश की भाषा तब तक बनी रहे जब तक पूरे देश मे हिन्दी राजभाषा बतौर न मान ली जाए। इस सशोधन का विरोध हिन्दी के प्रसिद्ध महारथी सेठ गोविन्ददास और मैने किया। पार्टी ने सशोधक विधेयक का पक्ष जारी करने के लिए 'ह्विप' जारी किया लेकिन मैने उसका समर्थन नहीं किया।' काग्रेस मे पहले हमेशा अन्दरूनी लोकतन्त्र था। लेकिन आज लोकतन्त्र के लोप होते जाने की कोई चिंता नहीं कर रहा है। पहले ढेरो स्थानीय सस्थाएं थीं। लोकतन्त्र तरीके से वे काम करती थीं। आज वे बन्द पडी है। जो बची हैं वहा चुनाव एक लम्बे अर्से से नहीं कराये गये हैं। जनता को अपना प्रतिनिधि चुनने का भी मौका नही है।'

ऐसा मुझे लगता है कि राजीव को पुराने अनुभवी लोगो का साथ नहीं मिला। उन्हे जोशीले नौजवान मिले। इन्दिरा गाधी की अचानक हत्या हो जाने पर उन पर देश का बोझ आ गया। उन्होने नेकनीयती से काम जरूर किया पर अनुभव उनके पास कम ही रहा। इसी कारण शायद वे जो चाहते हैं वह नहीं हो पा रहा है। (जनसत्ता से साभार)

ले आंख मींच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ॥
—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्तर प्रदेश का

वार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन का कार्यक्रम

चित्र वापस सभा में आने की तिथि	१५-९-८७ तक
सभा में चित्र जांचना	१६-९-८७ से २५-९-८७ तक
सूची का प्रकाशन	४-१०-८७
आपत्ति प्राप्त करने की अन्तिम तिथि	१५-१०-८७
आपत्तियों की सुनवाई एवं समाधान	१६-१०-८७ से २०-१० ८७ तक
शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	२७-१०-८७
सभा का वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	१४ व १५ नवम्बर ८७

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दिनांक २ अगस्त १९८७ को सभा भवन लखनऊ में सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में हुई और उसमें वृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

सम्पादकीय

लखनऊ—भाद्रपद शुक्ल ६ सम्वत् २०४४ रविवार ३० अगस्त १९८७, दयानन्दाब्द १६३
सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

दिशि राष्ट्रे जागृहि 'उत्तिष्ठ, विचरा जनम्'

प्रत्येक वर्ष समस्त आर्य समाजों द्वारा योगीराज कृष्ण का जन्मोत्सव समारोह पूर्वक मनाया जाता है। वैदिक विद्वान वेदप्रचार सप्ताह के इस अन्तिम दिवस पर योगीराज कृष्ण के महान जीवन की विभिन्न घटनाओं का उल्लेख करते हैं और उनके पौराणिक भक्तों द्वारा अज्ञानता के कारण जो मिथ्या आरोप लगाए जाते हैं, उनका निराकरण करते हैं। किसी भी महामानव को यदि हम केवल अपनी मौखिक श्रद्धांजलियां अर्पित करने तक सीमित रखें तो यह पर्याप्त नहीं है और उससे कुछ भी लाभ होने वाला नहीं है। आवश्यकता है उन गुणों को धारण करने की जो उस महान आत्मा में थे। यही वास्तविक अनुकरण है जिसे उनके प्रति श्रद्धावान् मानवों को अपनाना चाहिए।

योगीराज कृष्ण का जीवन जन्म से मरण पर्यन्त तक का घोर संघर्षमय रहा है। १४ वर्ष की अल्पायु में उन्होंने पापी कंस का वध किया। यहाँ से उनके सार्वजनिक जीवन का शुभारम्भ होता है। उस समय भारत की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। देश में छोटे-छोटे २,३४० राज्य थे जिनमें परस्पर युद्ध चला करते थे। दुराचार और अराजकता का सर्वत्र बोल बाला था। गऊएं चुराकर ले जाना, घोड़े खोलकर ले जाना, कन्याओं का अपहरण कर उनसे बलात् विवाह करना आदि अनेक जघन्य अपराध प्रतिदिन होते थे। योगीराज कृष्ण ने अपनी सूझ बूझ, कुशल राजनीति और वीरता से २३४० राज्यों को केवल ९ राज्यों में गठित कर दिया। हस्तिनापुर में केन्द्रीय शासन था जिसके आधीन आठ माण्डलिक राज्य थे। उस समय सिंहलद्वीप, ब्रह्मप्रदेश, आज का पाकिस्तान, अपगनस्थान (अफगानिस्तान) काबुल, कन्धार, त्रिविष्टुप (तिब्बत) आदि समस्त प्रदेश भारत में सम्मिलित थे।

कृष्ण की इस महान दक्षता का आधार था, उनका वेद प्रतिपादित योग। कृष्ण के जो तथा कथित भक्त उनका स्वांग बनाकर रास-लीलाएं कराते हैं, उन्हें छान्दोग्योपनिषद का अध्ययन करना चाहिए। कृष्ण प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में उठते थे, परमात्मा का ध्यान करते थे। नित्य संध्या तथा हवन करते थे। उनके चारित्रिक बल के कारण ही उन्हें 'हृषीकेष' और 'अच्युत' कहा जाता है। इन्द्रियों पर उन्हें स्वामित्व था। एक-२ इन्द्रिय पर संयम था इसलिए वे हृषीकेष थे। ब्रह्म का आचरण अपनाने से, जितेन्द्रियता के कारण वे 'अच्युत' कहलाए।

आज भारत की वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्र को ऐसे ही योगी राज कृष्ण की आवश्यकता है। लिखने की आवश्यकता नहीं कि ४० वर्षों की स्वाधीनता में हम एक भी समस्या का समाधान नहीं कर पाए। अनावृष्टि और अतिवृष्टि जैसे प्राकृतिक प्रकोपों से आज भी हम व्यथित हो रहे हैं। दुर्भिक्ष से हाहाकार मचा हुआ है। प्रदेशों की संख्या में भाषा के आधार पर वृद्धि होने पर भी नित्य नये राज्यों की मांग हो रही है। खालिस्तान और गोरखालैंड के नाम पर निरीह नागरिकों की हत्याएं हो रही हैं। दुराचार और अराजकता अपनी पराकाष्ठा पर हैं। तप और त्याग का कोई नाम लेवा नहीं रह गया है।

कृष्ण जन्मोत्सव पर जब राजनीतिक नेताओं के व्याख्यान कराए जाते हैं और वे उनके गुणगान तथा प्रशस्तियों का अम्बार लगा देते हैं तो मैं यह विचार करने पर विवश हो जाता हूं कि माहात्म्य का बखान थालियों में मुद्राएं (कागजी नोट) तो एकत्रित करवा सकता है परन्तु देश की समस्याएं कदापि नहीं सुलझा सकता। यदि कृष्ण की कथा ठीक ढंग से की जाए तो देश का पतन नहीं हो सकता।

देश के सर्वाङ्गीण अभ्युदय के लिए जिनके हाथों में देश की सत्ता है, वे कृष्ण के जीवन के इस उज्वल पक्ष को देखें। जब महाभारत का विनाशी युद्ध समाप्त हो गया तो युधिष्ठिर ने कृष्ण से कहा कि महाभारत में विजय पांडवों की नहीं हुई है अपितु यह उनकी विजय है अतएव सम्राट् रूप में अपने अभिषेक करने की अनुमति दें परन्तु कृष्ण ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। उन्होंने कहा कि राक्षसों के सिर का ताज देवताओं के सिर पर सुशोभित करता हूं क्योंकि यह ही मेरा वेदोक्त धर्म है और निर्माता जब स्वयं उसे ओढ़ ले तो वह पतित हो जाता है।

आज लोकसभा, राज्यसभा तथा राज्यों की विधान सभाओं के लिये, लोकेषणा के वशीभूत होकर जो घिनौने प्रदर्शन और प्रचार होते है, उसके मूल में कृष्ण के भव्य जीवन की एक भी झलक दृष्टिगत नहीं होती। बिना आत्म स्वरूप के दर्शन किए और उस पर मुग्ध हुए कोई भी हृषीकेष नहीं हो सकता और जब तक जितेन्द्रियता नहीं आती, व्यक्ति दृढ़ निश्चयी होकर कोई भी ऐसा सुकर्म नहीं कर सकता जो परिवार, समाज तथा राष्ट्र के लिए योग क्षेमकारी हो।

[शेष पृष्ठ ६ पर]

संस्कृत का प्रश्न

अभयदेव शर्मा, एम. ए. पी–एच–डी
अध्यक्ष, वेद-संस्थान (संस्कृत विभागाध्यक्ष) राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

संस्कृत का देश की शिक्षा के पाठ्यक्रम में जो स्थान होना चाहिए वह एक भावुक मुद्दा बना हुआ है क्योंकि यह भाषा किसी भी वर्ग-विशेष की मातृ-भाषा न होने पर भी; आधुनिक दैनन्दिन, लौकिक व्यवहार में अपनी अनिवार्यता का बलात् बोध न कराने वाली होते हुए भी, नागरिकों के एक काफी बड़े अंश के द्वारा पाठ्यक्रम में स्थान पाने योग्य मानी जाती रही है। संस्कृत इस देश की प्राचीन संस्कृति को "हम" तक पहुंचाने वाली भाषा है–"हम", अर्थात् तथाकथित हिन्दुओं तक। अन्यथा संस्कृत नागरिकों के उन वर्गों के लिए एक भावुक मुद्दा नहीं है जो स्वय को तथाकथित हिन्दू नहीं मानते, जैसे यहूदी, ईसाई, पारसी, मुसलमान। काफी सीमा तक जैन और बौद्ध भी ऐसे वर्गों में स्वयं को परिगणित करते है। गिरिजन, हरिजन जैसे समाज के तथाकथित पिछड़े वर्गों का भी संस्कृत से कोई लगाव नहीं है। ऐसी स्थिति में संस्कृत के पक्षपातियों का समुदाय तथाकथित मध्यम-वर्गीय हिन्दू ही बच रहता है।

इस मध्यमवर्ग को भी संस्कृत से कोई खास वास्ता नहीं पड़ता। यज्ञोपवीत, विवाह, अन्त्येष्टि, जैसे कुछ तथाकथित संस्कारों को सम्पन्न कराने के लिए पण्डित चाहिए जो दक्षिणा लेकर ये और ऐसे नाना कर्मकाण्डीय कृत्य करा ही देता है। अतः मध्यमवर्गीय हिन्दू का संस्कृत से लगाव भावुकता मात्र है, नैष्ठिक नहीं। इस कारण वह अपनी सन्तान को अंग्रेजी पढ़ाना अनिवार्य और बेहतर समझता है ताकि इस भाषा और इस भाषा के द्वारा प्राप्य संस्कारों से सन्नद्ध होकर वह प्रभूत धनोपार्जन और सम्मान्य हैसियत की उपलब्धि कर सके। इनके अलावा और चाहिए भी क्या। देश की नागर सभ्यता में संस्कृत किसे चाहिए हां, जो छोटे कस्बों और ग्रामों में रह रहे हैं और जो देश की माटी से भावनात्मक स्तर पर जुड़े हुए हैं, जो नागर सभ्यता की चकाचौंध से अपरिचित, अतः अप्रभावित हैं उनके लिए इस देश की मातृभाषाएं महत्वपूर्ण है और मातृभाषाओं की जननी अथवा जननी-कल्पा होने के कारण संस्कृत का आदर उनके मन में है।

२–संस्कृत के प्रश्न का सम्बन्ध धार्मिक सम्प्रदायों, भाषिक समुदायों से जिस प्रकार जुड़ा हुआ है, और दैनन्दिन लौकिक व्यवहार में इस अ–मातृभाषा का जो स्थान वस्तुतः है उसे दृष्टि में रखकर संभवतः वास्तविक धरातल पर बेहतर विचारशक्य हो सकेगा और फिर ऐसे विचार में से "संस्कृत को 'बचाने" के लिये कुछ कारगर उपाय निर्धारित करना भी संभव हो पाएगा। अन्यथा निष्ठा और कठोर वास्तविकता के आगे भावुकता सदा मात खाएगी।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि संस्कृत को बचाना है, हर कीमत पर बचाना है। इस बचाने का कोई प्रयोजन हो ही, यह जरूरी नहीं। पतंजलि के "निष्कारण वेदाध्ययन" के समान, संस्कृत का भी "निष्कारण अध्ययन" किया जाना चाहिए। निष्कारण वेदाध्ययन के लिए निष्कारण संस्कृताध्ययन अपेक्षित है। "वेदाध्ययन" से मेरा जो अभिप्राय है वह आगे निवेदित होगा। यहाँ, प्रचलित अभिप्राय भी यदि ग्रहण किया जाये तो भी यह असन्दिग्ध है कि बिना संस्कृताध्ययन के वेद, उपनिषद, "गीता", "भागवत", "रामायण", वेदान्तादि दर्शन-सूत्र, कुछ नहीं "बचने" वाला है; ये सब अजायबघर की चीजें बनकर रह जाएंगी। यह स्थिति मात्र काल्पनिक आशंका नहीं है, एक वास्तविक विभीषिका बनकर नागर सभ्यता में रहकर सांस्कृतिक समझदारों के सामने अपना अपना विकराल मुंह बाए धमका रही है। जिस "हिन्दु" समुदाय का भावुक सम्बन्ध संस्कृत से है उसे यदि अपने अस्तित्व की रक्षा अभीष्ट है तो सब कामों से ऊपर, संस्कृत के निष्कारण अध्यापन को अ–विलम्ब सर्वाधिक महत्व देना ही होगा, नान्यः पन्था विद्यते। प्रत्येक मन्दिर, धर्मस्थान को संस्कृत पाठशाला बना दिया जाना चाहिए। धार्मिक प्रवचन एक कान से सुनकर दूसरे कान से बहे चले जा रहे हैं। पहले कोई एक शंकर, एक कबीर, एक तुलसी, एक दयानन्द, एक गांधी काफी हुआ करते थे समाज को झंझोड़ने और सही-सीधी राह बताने के लिए। आज गली गली में धर्मोपदेश, कीर्तन, सत्संग हो रहे है पर मानव बद से बदतर होता जा रहा है। गत ४० वर्षों में हम अपने देश में नेतृत्व का, अवमूल्यन होते होते उसका, लगभग विलोप अपनी आंखों देख रहे हैं। देश की बागडोर गुण्डा-कोटि के पिण्डारियों के हाथ में पड़ चुकी है। राजनीति, अर्थनीति, प्रशासक और "भाण्डधूर्तनिशाचर"– इनके गठबन्धन के आगे जनता–जनार्दन लाचार है। राज करने का दायित्व भोली जनता ने जिसे भी एक बार सौंप दिया वह उसी क्षण से ऐसी दुनीति मचाता है कि अगले पांच वर्षों बाद, पुनरीक्षण के क्षण मे भी, प्रायः गद्दी से हटाए नहीं हट पाता है। अतः बन्द हो जाएं ये सारे धार्मिक प्रवचन तो कोई हानि नहीं क्योंकि इस देश के संस्कार ही ऐसे हैं कि यहां तो बच्चा बच्चा पर–उपदेश कुशल है। मन्दिरों, धर्म स्थानों में उपदेशों के बजाय संस्कृत कक्षाएं चलाई जानी चाहिए और व्यायाम (आसन प्राणायाम) किए-कराए जाने चाहिए। प्राचीन ऋषि-मुनि, साधु-सन्त बहुत उपदेश दे गए। वे पोथियों के रूप में मौजूद है। उनका स्वाध्याय करना बेहतर है बजाय आज के धर्मोपदेश देने की लत से। अस्तु।

३–संस्कृत से हिन्दु-संस्कृति बचेगी, वेद, गीता, आदि बचेंगे, यह तो सकारण अध्ययन का पक्ष हुआ। इसके पक्षधर सब नहीं हैं, जैसा कि आरम्भ में निवेदन किया गया है। ईसाई, मुसलमान संस्कृत क्यों पढ़ें, जैन, बौद्ध, गिरिजन, हरिजन, इन्हें संस्कृत से क्या मतलब? और यहीं "निष्कारण" संस्कृताध्ययन की बात आती है। स्थिति को बेहतर समझने के लिए उर्दू भाषा को साथ मे ले लिया जाए। जैसे कुछ भारतीय समुदायों को संस्कृत से लगाव नहीं है वैसे बहुत से हिन्दू उर्दू के प्रति वैमनस्य रखते हैं क्योंकि यह उनको भ्रान्तिवश विधर्मियों की और अतः विदेश की भाषा प्रतीत होती है। ईसाई, मुसलमान अपने धर्म का मूल उत्स विदेश में देखते हैं और इस कारण उन्हें संस्कृत से लगाव नहीं है। जैन, बौद्ध धार्मिक कारण से संस्कृत से लगाव नहीं रखते। गिरिजन, हरिजन के लिए संस्कृत एक उत्पीड़क वर्ग की चीज है।

पर नहीं, यह मेरे–तेरे का नजरिया गलत है। कश्मीर से कन्या-कुमारी तक, अरुणांचल से जैसलमेर तक यह समूचा भूभाग एक देश है। इसके निवासी, सब मिलकर एक भारतीय समुदाय है। देश और उसका जन, दोनों मिलकर एक "भारत" राष्ट्र है। इस द्विक की प्रत्येक वस्तु पूज्य है ग्राह्य है, सरक्षणीय है। किसी ग्रामीण बोली में चार-पांच भी अच्छे भक्ति-भजन है तो वह बोली राष्ट्र की सम्पत्ति है; उसे मरने नहीं देना है क्योंकि कौन जाने कब किस सन्त का, किस चिन्तक का कौन सा शब्द किसी के घट बैठ जाए और उसका जीवन पलटा खा जाए। डाकू से ऋषि, पामर से सन्त बनाने में पता नहीं कब किसकी वाणी का जादू प्रकट हो जाए। क्रमशः

सिद्धान्त-विमर्श

सत्यार्थ प्रकाश में सृष्टि-विज्ञान की समीक्षा

[स्वामी मोक्षानन्द "सरस्वती" वैदिक-प्रवक्ता, मथुरा]

[गताङ्क से आगे]

ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार जब उसमे सृजन उपयोगिता आ जाती है एव रचना काल आता है तब ईश्वर प्रकृति परमाणुओ मे सृजनात्मक गति देता है परमाणुओ मे ईश्वरीय गति से हलचल होने लगती है। जिससे प्रकृति मे आकाश (रिक्त स्थान) प्रकट होता है। आकाश रूपी पोल प्रकट होते ही उसमे वायु तत्व उत्पन्न होता है। ठीक इसी क्रम मे वायु परमाणु सघष से अग्नि पुन जल एव पृथ्वी उत्पन्न होती है। इसी क्रम को "तैत्तिरीय उपनिषद" वैज्ञानिक सरचना निम्न प्रकार प्रस्तुत करती ही है –

(क) नित्याया सत्वरजस्तमसां साम्यावस्थाया प्रकृतेरुत्पन्नाना परमसूक्ष्माणा पृथक् पृथग्वतमानाना तत्व परमाणूना प्रथम सयोग-विशेषादवस्थान्तरस्य स्थूलाकार प्राप्ति सृष्टिरुच्यते ।।

अनादि नित्यस्वरूप तत्व, रजस, एव तमोगुण की एकावस्थारूप प्रकृति से उत्पन्न जो परम सूक्ष्म पृथक् पृथक् तत्वावयव विद्यमान है उन्हीं का प्रथम ही जो सयोग प्रारम्भ है, इस सयोग विशेषो से अवस्थान्तर विभिन्न तात्विक अवस्था को सूक्ष्म से स्थूल एव स्थूलान्तरित होते-होते यह विभिन्नता उत्पन्न हुयी।

(ख) तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाश सम्भूत । आकाशाद्वायु । वायोरग्नि । अग्नेराप । अद्भ्य पृथिवी । पृथिव्या औषधय औषधिभ्योऽन्नम् । अन्नाद्रेत । रेतस पुरुष सत्ता एव पुरुषोऽन्नरसमय ।।

उस परमेश्वर एव प्रकृति से आकाश प्रकट होता है आकाश के पश्चात् वायु । वायु के पश्चात् अग्नि । अग्नि के पश्चात् जल । जल के पश्चात् पृथिवी । पृथिवी से औषधि । औषधियो से अन्न । रज-वीर्य । रज-वीर्य के द्वारा पुरुष अर्थात् शरीर उत्पन्न होते हैं। चूंकि ईश्वर (निमित्त-कारण), जीवात्मा (साधारण निमित्त व भोक्ता), प्रकृति (उपादान कारण ससार बनाने की सामिग्री) अनादि है अत यह सृष्टि प्रवाह रूप से अनादि है। सृजन, वृद्धि, स्थिरता, ह्रास, एव लय (प्रलय) के चक्र मे प्रवाहित रहती है इसी कारण इसे विश्व, जगत, शब्दो से उद्‌बोधित किया जाता है सृष्टि के उपरान्त प्रलय एव पुन सृष्टि-प्रलय इसी प्रवाह मे सदैव चक्र चलता रहता है। यहाँ इस सृष्टि का क्रमिक विज्ञान है।

(७) ईश्वरीय सत्ता का स्वरूप –

यदि ईश्वर प्रकृति अवयवो के योग से बना व उत्पन्न हुआ होता तो जिन अवयवो से उत्पन्न हुआ था उन विकारयुक्त-स्वभावी अवयवो की उत्पत्ति, वृद्धि, स्थिरता, ह्रास एव लय (विनाश) रूपी विकार ईश्वर मे अवश्य होगे। उक्त दशा मे ईश्वर अविनाशी, सवशक्तिमान, सवव्यापकत्व, गुणो से सवथा शून्य हो जायगा क्योकि उपादान कारण जड प्रकृति अवयवो के गुण, कम, स्वभाव प्रत्येक साकार पदाथ मे पाये जाते है। क्योकि–"कारण गुण पूवक काय गुणो दृष्ट (वैशेषिक-सूत्र) अत ईश्वर कहते ही उसे है जो अनादि, अनन्त, अखण्ड, सर्वाधार, सव-व्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर-अमर, नित्य-पवित्र एव एकरस स्वभाव से रहता है, क्योकि उपनिषदकार कहते हैं कि–आवावन्ते च यन्नास्ति वतमाने अस्तिततथा (माण्डूक्योपनिषद) ।।

अर्थात् जो (सृष्टि पूर्व) प्रथम न हो, अन्त मे न रहे, वर्तमान में भी नहीं। जब सृष्टि पूर्व ब्रह्म था–तो वह अब क्यों नहीं ? प्रलय उपरान्त क्यो नहीं रहेगा ? यदि काल भेद से ईश्वरीय सत्तात्मक गुण व स्वभाव विभाजित हो जायेगा तो वह अखण्ड, अविनाशी न रहेगा। (अवयवी) साकार होने से विकारी होकर नष्ट हो जायेगा। अत ईश्वर निराकार निरयवी ही है ? महर्षि दयानन्द महाराज ने "सत्याथ प्रकाश" के पृष्ठ–१४४ पर साकार ईश्वरत्व पर वैज्ञानिक प्रहार करते हुए–निराकार ईश्वरत्व का प्रतिपादन किया है–'जो साकार अर्थात् शरीरयुक्त है वह ईश्वर ही नहीं' क्योकि परिमित शक्तियुक्त, देश, काल वस्तुओ म परिछिन्न, क्षुधा, तृषा, छेदन, भेदन, शीतोष्ण, ज्वर, पीड़ादि सहित होवेगा। उसमें जीव के बिना ईश्वर के गुण कभी नहीं घट सकते। जैसे तुम और हम साकार अर्थात् शरीरधारी हैं। इससे (शरीर से) त्रसरेणु अणु परमाणु और प्रकृति को अपने वश में नहीं कर सकते। नही उन सूक्ष्म पदार्थों को पकड कर स्थूल बना सकते हैं। वैसे ही स्थूल देहधारी परमेश्वर भी सूक्ष्म प्रकृति से स्थूल जगत नहीं बना सकता। अत ईश्वर भौतिक इन्द्रिय गोलक, हस्त, पादादि अवयवो से रहित है। परन्तु उसकी स्वाभाविक अनन्त शक्ति, बल, पराक्रम है–उनसे ही सब काम करता है। जो जीव-जड प्रकृति से ऐसे काम नहीं हो सकते। जब वह प्रकृति से सूक्ष्म और उनमें व्यापक है तभी तो प्रकृति सत्ता को नियत्रित एव गति देकर उन्हीं से स्थूलाकार जगत रचता है और सर्वव्यापक होने से धारण एव प्रलयादि व्यवस्था करता है। यह सब काम ईश्वर के निराकार होने से ही सम्भव है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज पापो की जड-ईश्वर को साकार व मूर्ति के रूप मे मानना एव पूजा करना मानते थे। उनका उपदेश था कि "जो ईश्वर को मूर्ति के रूप मे एक देशीय मानकर पूजता है वह न ईश्वर को जानता है व मानता है न ही ईश्वरीय व्यवस्था को समझता है। मूर्ति पूजा ईश्वर का उपहास एव अपमान करना है। ईश्वर को साकार मूर्ति मानकर पूजने वाला सर्व-व्यापक ईश्वर को न समझता है–न ही उसकी सर्वव्यापक सत्तासामर्थ्य दण्ड, न्यायादि व्यवस्था को स्वीकार करता है। बल्कि ईश्वर को एक देशीय मूर्ति एव मन्दिरो मे मानकर अन्यत्र असख्य पाप करता रहता है। ईश्वर को सवव्यापक सर्वान्तर्यामी निराकार मानकर आत्मस्थ ध्यानावस्थित हो जो उपासना करता है वही ईश्वरीय व्यवस्था को सवव्यापक मानकर अर्थात् ईश्वर को सर्वज्ञ मानने व जानने से पाप करने का ईश्वर रहित स्थानमपाने से पाप करने से बचता है। क्योकि निराकार वादी ईश्वर को सवत्र ही अनुभव करता है अत दण्ड एव न्यायादि व्यवस्थापक के समक्ष छिपकर व बचकर पाप करने के स्थान का सर्वथा ही अभाव जानता है। अत वह कहीं भी पाप नहीं कर सकता। क्योकि ईश्वर सवव्यापी है। जो साकार वादी है वह जड़ पूजन करते-करते पूणतया नास्तिक अर्थात् अपने ही उपास्य साकार ईश्वरो को सत्ता एव उनके स्वत्व हरण करते देखे जाते है। मन्दिरो मे मूर्तियो की चोरी कौन करता है ? इन मूर्तियो–ईश्वरो के सिर नाक, कान, हाथ, पैर आदि तोड़कर आभूषणो को चोरी करने वाले व कराने वाले मूर्तिपूजक, पुजारी, महन्त ही तो है।

क्रमश.

लोहे से लोहा कटता है, जहर जहर मारा करता है।

कई वर्ष हो गये, समस्या अब तक नहीं सुलझ पाई है,
और आपसी सम्बन्धों के बीच बड़ी गहरी खाई है।

नित हत्यायें निर्दोषों की, कभी यात्रियों के बध हो.।
घायल हो गम्भीर रूप से, पड़े अस्पतालों में रोते ॥

शोक-प्रदर्शन-लोक-रीति का पालन, करने को आते हैं।
मन्त्री मुख्य प्रदेशों, के अरु राज्यपाल ‹ खने जाते हैं ॥

संवेदना-औपचारिकता, सह-अनुभूति दिखाते गहरी।
स्नेह-भावना, भरते-भरते घाव, शिथिल हो जाती बहरी ॥

इधर विरोधी दल के हाथों, सोने की चिड़िया आती है।
करने की हड़ताल, बन्द की, शीघ्र घोषणा की जाती है ॥

शिक्षण होता ठप्प, छात्र भी आन्दोलनकारी हो जाते।
लक्ष्यहीन हो, त्याग अध्ययन भटके, दिशाविहीन हो जाते ॥

महिलायें, बच्चे असुरक्षित, यातायात बन्द हो जाता।
करें विपक्ष विरोध, किन्तु जनता के हाथों में क्या आता?

सत्ताधारी और विपक्षी, दोनों क्षोभ प्रदर्शन करते।
मौखिक संवेदना दिखाने के माध्यम से धीरज धरते ॥

दोनों ही आतङ्कवादियों की निन्दा व भर्त्सना करते।
घायल,कायर, उन्हें बता पीड़ित की कितनी पीड़ा हरते ॥

बच्चे हो अनाथ, पत्नी विधवा सुहाग निज खो पाती है।
और पुलिसकर्मी कितनों को,प्राप्त वीर-गति हो जाती है ॥

कहती है सरकार, पुलिस की गश्त चुस्त, भारी कर दी है,
और अनिश्चित करफ्यू की गोदी में सुखद-शान्ति भर दी है ॥

रखो सन्तुलन तथा नियन्त्रण, धैर्य धरो, साहस मत छोड़ो।
प्राण भले हो जायें, लेकिन कर्तव्यों से मुख मोड़ो ॥

सक्रिय सतत पुलिस कर्मी है, फ्लेग मार्च सेना के द्वारा।
छुटपुट घटना कहीं छुरेबाजी कर छिप जाता हत्यारा ॥

अन्धकार का लाभ उठाकर, घोषित अपराधी भग जाते,
और बाद में नाकेबन्दी करते, आरक्षी जग जाते ॥

लगनशील हैं तथा समर्पित, सहज समीक्षा करने वाले।
किन्तु सुरक्षा कड़ी व्यवस्था, हत्यारों के रही हवाले ॥

उच्च-स्तर की बैठक होती, पर आतंकवाद बढ़ती पर।
ज्यों कि सूर्य के रथ के आगे शैल धूल का हो चढ़ती पर ॥

कहते हैं आतंकवाद निश्चित होगा समाप्त अरु निष्क्रिय।
सब मिलकर सहयोग प्रशासन और पुलिस को दें यदि सक्रिय ॥

प्रबल घोषणा पुरस्कार की, होती सिर पर अपराधी के।
बूंदा बांदी हो जाने से जैसे, शान्ति बाद आंधी के ॥

अपने को पहिचान

देह मुक्त तो हुयी हृदय का बन्धन भी खोलो।
भूलो गरिमा की सरिता मे फिर अन्तर धो लो ॥

० ० ०

जन के स्वर ने किया आज महलो को चकना चूर।
पलट दिये शासन विधान आचार प्रथायें क्रूर।
पूंजोपति की लुटी तिजोरी करने नव निर्माण।
प्रजातन्त्र शिशु बढ़ा साथ ले कोटि कृषक मजदूर।
आगे बढ़ना उचित मगर पीछे का रखना ध्यान।
चिर संचित हीरे मोती क्या खो दोगे बोलो ।१।
देश देश मे लगी आज है अहंकार की आग।
घर-घर मे पल रहा स्वार्थ भर रही वासना राग।
द्वार-द्वार पर घृणा पल्लवित है असत्य व्योपार-
भातिकता की देख तोप बारूद भरी जन जाग।
अणुबम देख अरे उद्जन बम मुँह बाये घड़ियाल।
उर की आखें खोल मनुज मत प्रलय बीज बोलो ।२।
कभी तुम्हीं ने तिमिर बीच धरणी पर किया प्रकाश।
भू पर डोले संत तुम्हारे त्यागे माया पाश।
सत्य अहिंसा की धारा का किया सभी ने पान-
धैर्य, क्षमा, तप, शान्ति, दया, ममता श्रद्धा विश्वास।
विमल प्रेम की बेलि तुम्हारी आज गई है सूख।
ले कर मे दायित्व दीप,प्रिय,अपना बल तोलो ।३।

—रमेश चन्द्र वर्मा

पद-यात्रा अरु शान्ति मार्च से हिंसक नहीं रुका करता है।
विनय भाव से, मृदु स्वभाव से, दानव नहीं झुका करता है ॥

सभी जानते पाकिस्तानी बहका, भड़का, शस्त्र दिलाते।
किन्तु हमारे भोले नेता उनसे बढ़-बढ़ हाथ मिलाते ॥

दिखलाकर सद्भाव-शान्ति, ये अन्धे के आगे रोते हैं।
धूर्त-छली-कपटी के आगे रा अपन नयना खोते हैं ॥

खालिस्तान बनाने के लालच मे बहके, भूले-भटके।
करते हैं हलाल अपने को, रुचिकर नहीं इन्हे अब झटके ।

गुरु के पावन गुरुद्वारों मे हथियारो की होड़ लगी है।
जहाँ विदेशी हथियारों की संचयिका बेजोड़ लगी है ॥

पूजा के पावन धामों मे अब तो अस्त्र-शस्त्र ढलते हैं।
गुरु-ग्रंथ ज्ञानी-वाचक के साये में गुण्डे पलते है ॥

हिंसा नहीं रुकेगी तब तक, बात न यदि कुछ की जायेगी।
नौ मन तेल नहीं होगा तो राधा नहो नाच पायेगी ॥

ठण्डी भट्टी में डालो तो सीसा नहीं पिघल सकता है।
है लोकोक्ति कि सीधी अंगुलि द्वारा घी न निकल सकता है ॥

भैंस उसी की होती जो लाठी से संहारा करता है।
लोहे से लोहा कटता है, जहर जहर मारा करता है ॥

—डा० राजेन्द्र वर्मा, प्राध्यापक जा०दे०बजाज कन्या महाविद्यालय, कोट

सुख शान्ति का मूलाधार धर्म ही है
धर्म के स्वरूप की पहचान करें
धर्म का षष्ठ लक्षण–इन्द्रिय निग्रह

[आचार्य देवव्रत अवस्थी वेद मन्दिर हिन्द नगर, लखनऊ]

इन्द्रिय निग्रह–इन्द्रियों का उनकी वासनाओं से परे हटाना।

योगीराज कृष्ण ने 'इन्द्रियाणा हयान्याहुः' इन्द्रियों को घोड़ा कहा है। जैसे घोड़ा बिना कोचवान् के कहीं नहीं जाता अपने स्थान पर बंधा रहता है वैसे ही इन्द्रियां अपनी वासना में बिना कोचवान् के लिप्त नहीं होती।

शरीर में इन्द्रियाँ घोड़े है तो मन सारथी है। कोचवान् है। धर्म के तृतीय लक्षण की व्याख्या करते हुए मन पर आत्मा के पूर्ण अधिकार को धर्म का लक्षण बताया गया है। जिस–व्यक्ति का अपने मन पर एकाधिकार है उसकी इन्द्रियां वासना के प्रवाह में नहीं बहतीं। उनका प्रवाह उत्तरोन्मुख होता है।

नेत्र का धर्म देखना है। अज्ञानता से यह दर्शन वासना बन जाता है। प्रभु की सृष्टि के अन्दर सौन्दर्य दर्शन में यदि कुभावना पनपी वह अधर्म या वासना बनकर हमें नष्ट कर देती है। विपरीत जग के सौन्दर्य को देख कर उसमें प्रभु के सौन्दर्य–की अनुभूति कर जग की सुन्दरता को अक्षुण्ण रखने की प्रवृत्ति पनपाती है। यह नेत्र की वासना नहीं रहती उसका धर्म बन जाता है। वह व्यक्ति को सुदिशा ही देती है।

कान का धर्म श्रवण है। गन्दे, अश्लील उत्तेजक–गानों आवाजों को सुनने का मन करते रहना वासना कहाती हैं उसके विरुद्ध दिशा में प्रवचन वेद प्रवचन, सदुपदेश श्रवण की वृत्ति कान का धर्म कहाती है।

जिह्वा [रसना–वाणी] के दो धर्म हैं––रसना स्वाद की अनुभूति कराती है। वाणी श्रोताओं को कुछ सुनाती है। स्वाद पूर्ति में ही लगना, वाणी से अनर्गल प्रलाप वाणी जिह्वा की वासना कही जायेगी। स्वाद की अनुभूति में स्वास्थ्य वर्धन लक्ष्य रख कर खाना बोलने में परोपकारी, प्रेम सौहार्द स्नेह प्रसारक सम्वाद बोलना जिह्वा के धर्म कहे जायेंगे।

इसी प्रकार सभी इन्द्रियों के अपने धर्म हैं और उनके दुरुपयोग का प्रवृत्ति वासना का रूप बनती है।

धर्म के लक्षणों को स्वीकार करने का व्रती धृति क्षमा, दम अस्तेय शौच इन लक्षणों को अन्तर्सात् करके धर्म के इस छठे लक्षण को आत्मसात् करने में पूर्ण सफल होता है। तब वह इन्द्रियों का दास नहीं बन सकता। इन्द्रियां उसकी दास होती है। इन्द्रियों का सारथी मन आत्मा के अनुकूल ही इन्द्रियों को दिशा देने–को विवश होता है।

इन्द्रिय निग्रही धर्म विरुद्ध आचरण कभी नहीं करेगा। उसके जीवन की हर प्रक्रिया से धर्म की लक्षणा दर्शित होगी ऐसे ही व्यक्ति आज के अधममयपरिवेश को बदल कर धर्ममय बनाने में समर्थ होंगे और विश्व को सुख शान्ति से पूर्ण बनाने में सफल होंगे।

सम्पादकीय

[पृष्ठ का २ शेष]

आर्य समाज का एकमेव आधार वेद है जो सत्य विद्याओं से परिपूरित है। आर्य समाज अन्ध विश्वासों को नहीं मानता। तर्क की कसौटी पर खरा उतरने वाले सत्य को ग्रहण करता है इसलिये आर्य समाज के सदस्य ज्ञानमार्गी बनकर सत्य असत्य का विचार करते हैं। अन्धानुकरण उन्हें प्रिय नहीं होता। अतएव उनकी श्रद्धांजलियां यदि 'स्वमादित्य ! महां असि' (अ० १३/२/२९) हे आदित्य ! अदिति पुत्र तू महान् है। "महांस्ते महतो महिमा (अ० १३/२/२९) तुम महान की महिमा महान है, केवल इन शब्दों तक सीमित रहें तो यह केवल जन प्रवाह में अपने को प्रवाहित करना होगा। आर्यो ने सदैव विश्व को बदला है और आज भी उन्हें वेद के आधार पर इसे बदलना है। वेद कहता है–"मा सुस्रो" (अ० १२/३/२२) अर्थात् तू प्रवाह में मत प्रवाहित हो। 'विशि, राष्ट्रे जागृहि' (अ० १३/१/९) राष्ट्र में प्रजा के मध्य जागरूक रह। "उत्तिष्ठ, विचारा जनम्" (अ० २०/१२७/११) जनता में विचर "दुर्गा अति याहि" (अ० १३/१/४३) कठिनाइयों को पारकर "विमृधोनुदस्व" (अ० १३/१/२७) हिंसकों को निकाल फेंक।

वेद के इन आदेशों को जन साधारण तक वही आर्य पहुंचाएगा जो कृष्ण के जीवन वृत्त के अनुकूल अपने जीवन का निर्माण करेगा और वेद के शब्दों में आत्म विश्वास के इन उद्घोषों को अपनी वाणी के साथ करनी से भी गुंजाएगा–

"अहमस्मि सहमान, उत्तरो नाम भूम्याम। अभीषाडस्मि, विश्वाषाट्" (अ० १२/१/५४) अर्थात् पृथिवी पर मैं यशस्वी हूं क्योंकि मैं सहमान् हूं। मैं हूं सर्व–जेता, विश्व विजेता।"

आर्यो ! उठो ! सम्भलो ! वेद के इस आदेश का पालन कर स्वामी दयानन्द के दिव्य स्वप्न को साकार कर दो–

"लोकां अभि सर्वान् जयेम" (अ० १२/३/१५) हम समस्त लोको को सर्व : विजय करें अर्थात् विश्व का आर्यकरण करें।

–वसन्त

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई का निर्वाचन सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई का निर्वाचन विगत मास दिनांक २८ जून १९८७ को आर्य समाज माटुंगा भीमाड़ी स्ट्रीट बम्बई के प्रांगण में सोल्लास सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्व सम्मति से आगामी दो वर्षों के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान श्री ओंकार नाथ जी आर्य, मन्त्री श्री धर्म वीर जी गुलाटी कोषाध्यक्ष श्री कस्तूरी लालजी मदान।

दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रथम

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय ११९ गौतम नगर नई दिल्ली ४९ के मेधावी स्नातक श्री धर्मेन्द्र कुमार आत्मज श्री रामभाऊजी आर्य निमखेड़ बाजार जि० अमरावती (महाराष्ट्र) निवासी ने दिल्ली विश्व विद्यालय की स्नातकोत्तर एम० ए० (संस्कृत) परीक्षा में सर्वोच्च ७७ -/- अंक लेकर इस विद्यालय के साथ-साथ दिल्ली विश्वविद्यालय को भी गौरवान्वित किया।

–आचार्य हरिदेव प्राचार्य

संतोष ही परम् सुख है

श्रीमती सन्तोष महाना ५६६ ब /२८ स्नेह नगर लखनऊ

सुख जिसे हम समझते है वह सुख नहीं है। हम समझते है कि खूब पैसा, कार, कोठी, बढ़िया-बढ़िया फर्नीचर, खूब सजा हुआ घर, हीरे मोती नौकर आदि हो जाने से हम सुखी होते है। नहीं, यह तो तृष्णा को बढ़ा देते है। मनुष्य के पास जब साईकिल होती है तो वह मनुष्य मोटर साईकिल की इच्छा रखता है जब उसके पास मोटर साईकिल हो जाता है तो वह कार की कामना करता है फिर हवाई जहाज की तरफ देखता है। ऐसे ही बढ़ती हुई इच्छा तृष्णा है जो मनुष्य को दुःखी करती रहती है। इसी अपने जीवन में ही खाने पीने मौज करने तक ही यह इच्छा नही रहती, यह फिर और आगे बढ़कर पुत्रों पौत्रों तक चली जाती है। याद रखें यदि हम पुत्रों पौत्रो के लिए जायदाद बनाने की कामना रखते है तो बच्चो को निठल्ला बनाते हैं। उन बच्चों पर अन्याय करते है। बिना परिश्रम की कमाई से मनुष्य में अनेकों दुर्बलतायें आती हैं और विकास करने की योग्यता नष्ट हो जाती है इसलिए बच्चों की उन्नति में हमें बाधा नहीं डालनी चाहिए।

अपने सम्बन्ध मे जो मनुष्य हर समय सोचता है वह स्वार्थी होता है। इसी स्वार्थ को त्याग देने ही से सन्तोष मिलता है। धैर्य, सहन, भक्ति, त्याग, उदारता, यह चार गुण सन्तोषी पुरुष के पास अपने आप आ जाते हैं। इन गुणों को धारण करने का प्रयत्न करें। इस ससार में स्थिर चित्त रहने के लिए सन्तोष को ही धारण करें। ठीक है आप के पास बहुत धन है अगर ध्यान लगाकर अपने मन में सोचें, कि यह धन आपको कभी सुखी नहीं करेगा। क्या बीमारी, मृत्यु, कपूत बेटा, परिवार कलह आदि दुःखो को यह धन सम्पत्ति से बचा सकेंगे। कभी नहीं, यह तो हमें नरक के घोर अन्धकार में डुबा देंगे। चिन्ताएं उन्हें घरे रहेंगी। चिन्ता चिता के समान होती है।

जिनको आज सन्तोष है, कल की चिन्ता नहीं, दुःख उन्हें नहीं आयेगा सुख का मूल तो सन्तोष है। सन्तोषी मनुष्य को यदि किसी अभाव के कारण दुःख होता भी है तो अपने कर्मों का फल मान कर वह शान्त रहता है। धैर्य से वह कर्मों में प्रवृत्त रहकर अधिकृत कर्मों का फल भोगता रहता है। यह सन्तोष ही सुःख है यह बहुत बड़ी दौलत है। यह सन्तोष धन बड़े भाग्यवान के पास होती है। असन्तोष ही मनुष्य को दुःखी बनाता है।

असन्तोष होने से मनुष्य में बुराई और बढ़ती है। दूसरों के पास अधिक धन वैभव आदि देखकर कुढ़न पैदा होती है। वह ईर्ष्या उसे अन्दर ही अन्दर जला डालती है। आप दूसरों की उन्नति देखकर जलते क्यों हैं। आप भी प्रयत्न करें, खूब धन एकत्र करके सम्पन्न बनें। साथ में सन्तोष धारण करके महान बनें। सन्तोष धन सबसे श्रेष्ठ धन है। मनुष्य को स्वस्थ रखने के लिए यह औषधि है। रूखी सूखी रोटी खाई हुई सन्तोष से दूध जैसी लगती है असन्तुष्ट व्यक्ति का स्वास्थ्य कभी अच्छा नहीं रहता और न ही जीवन मे उसे चैन शान्ति मिलेगी। न ही वह जीवन में प्रभु को पा सकेगा। वह कैसे प्रभु में ध्यान देगा। क्योंकि कामनायें तो अनेक होती है एक से एक बढ़ती रहती हैं। इन कामनाओं को मारे बिना कभी सुख नहीं मिलता। यदि संसार में ज्ञान को प्राप्त कर परमात्मा को पाना है तो पहले सन्तोषी बनना पड़ेगा। इसी में मनुष्य के सारे सुख समाये हुए हैं।

हा! स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश

दिनांक ७-५-८७ के "सर्वहितकारी" एवं २८-६-८७ के "सार्वदेशिक साप्ताहिक" में पूज्य स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश महाराज के शरीर त्याग का समाचार जानकर बहुत दुःख हुआ। स्वामी जी आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वानों मे से एक थे। वे न केवल वेद व्याकरण एव निरुक्त आदि अनेक शास्त्रो के उच्चकोटि के विद्वान थे अपितु एक सच्चे व पहुंचे हुए उपासक योगाभ्यासी भी थे। उन्होंने सारा जीवन आर्य समाज के लिए सुयोग्य विद्वान तैयार करने मे लगा दिया। वे श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के सर्वप्रथम स्नातक थे। स्नातक बनने के बाद वे श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर, गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर आदि संस्थाओं मे उच्च पदों पर रहते हुए लगातार कई-कई वर्षों तक महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्य प्रणाली का पूर्ण सहृदयता एवं विद्वत्ता से अध्यापन करते रहे। उन्होने आत्मानन्द जीवन ज्योति, सच्चे गुरु और पारखी स्वस्थवृत्तम्, अक्षमात्मारणुर्वा गीताविवेकः, तत्वबोध, सामायिक समाधान, नामरूपकल्पिका, विमुर्वा नामसिद्धिसाधकः आदि ग्रन्थ रचकर सत्साहित्य की भी सेवा की है। वे गुरुकुल झज्जर से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र "सुधारक" के कई वर्षों तक सम्पादक रहे। स्वामी जी के जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि उन्होने २० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्यप्रणाली के प्रचार-प्रसार के लिए श्री मद्दयानन्दर्षि विद्यापीठ की स्थापना में अपना सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान किया। इस विद्यापीठ के माध्यम से हजारो छात्र छात्राएं शास्त्री, आचार्य परीक्षा उत्तीर्णकर प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत हैं। आज इस विद्यापीठ से अनेक गुरुकुल सम्बद्ध है तथा यह विद्यापीठ महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध है। इस महत्त्वपूर्ण कार्य को करके स्वामीजी ने महर्षि स्वामी दयानन्द की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को साकार रूप दिया जिसके लिए आर्य जगत सदा उनका ऋणी रहेगा। मै अपना परम सौभाग्य मानता हूं कि मुझे ऐसे उच्चकोटि के गुरु से दो अक्षर सीखने का अवसर मिला। किन्तु साथ ही मेरा दुर्भाग्य भी रहा कि मै उनके अन्तिम दर्शन तक नहीं कर सका, ईश्वर का विधान प्रबल है, जैसा वह चाहता है वह वैसा ही होता है। गुरुवर के चरणों में अपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहना चाहता हूं कि आज उनका अभाव न केवल आर्य समाज की अपूरणीय क्षति है अपितु सारे संस्कृत जगत की बहुत बड़ी हानि है। हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि तभी दे सकते हैं जब हम अपने और दूसरों के अधिक से अधिक बच्चों व बच्चियों को उपदेशक विद्यालयो एवं गुरुकुलों में भेजकर उन्हें विद्वान बनायेंगे तथा संस्कृत के प्रचार प्रसार म अपने जीवन को लगा देंगे। स्वामीजी के सैकड़ो शिष्य वैदिक धर्म और संस्कृत-संस्कृति के प्रचार में लगे हुए ह। स्वामीजी जीवन के अन्तिम तीन वर्ष गुरुकुल गौतम नगर में रहे।

प्रकाशचन्द्र वेदालङ्कार व्याख्याता केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ जयपुर—१

आओ आज हम प्रभु से प्रार्थना करें कि हमे भी सन्तोष धन दे। हम ईर्ष्या और द्वेष की वृत्तियों को छोड़ देवें। जो हमें प्रभु ने धन दौलत वैभव आदि दिया है उसी में सन्तोष करें अपने जीवन को उज्ज्वल बनाकर ऊंचा करें अपने जीवन की पवित्रता से अन्यों के जीवन भी पवित्र करें।

आर्य समाज क्या है?

लेखक : जेष्ठ वर्मन बम्बई

[गतांक से आगे]

यद्यपि वेदों के अपौरुषेयत्व के सम्बन्ध में स्वामीजी के साथ आप सहमत नहीं थे तथापि आप स्वामी दयानन्द के बड़े प्रशंसक थे। स्वामीजी के पुणे में दिये गये १५ भाषणों को प्रथम बार छपवाने का श्रेय इनको ही जाता है। इन सब लोगों के अतिरिक्त प्रार्थना समाज का भी प्रारम्भिक सहयोग उल्लेखनीय है। सन् १८६४ में बाबू केशवचन्द्र सेन बम्बई आये थे और अपने विचारों का प्रचार भी किया था पुनः सन् १८६७ में उन्होने बम्बई आकर उन्होने यहां प्रार्थना समाज की स्थापना भी की थी। इसमें मुख्य रूप में अंग्रेजी पढ़े लिखे मराठा ब्राह्मण सदस्य बने थे। अन्धविश्वास, रूढ़िवाद, जातिवाद बालविवाह आदि को दूर करने और स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह आदि के प्रचार में प्रार्थना समाज का भी योगदान पर्याप्त मात्रा में था।

इस प्रकार महाराष्ट्र के उपर्युक्त अनेक समाज सुधारक धार्मिक नेता और चिंतनशील महानुभाव एवं उनकी संस्थाओं ने भावी आर्य समाज के लिए एक काफी अच्छी पृष्ठभूमि का निर्माण किया था। यह श्रेय मराठा ब्राह्मण वर्ग को जाता है। इस बीच में एक दूसरी महत्वपूर्ण घटना घटी थी जिसके कारण एक दूसरा वर्ग, याने धनी गुजराती व्यापारी वर्ग भी धार्मिक क्रांति का मशाल हाथ में लिए सामने आया। उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

सन् १८६०, अक्टूबर २१ को गुजराती समाचार पत्र "सत्य प्रकाश" में वैष्णवों के वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय के विरुद्ध एक जबरदस्त लेख छपा था। उसके लेखक करसनदास मूलजी नामक एक सम्पन्न गुजराती व्यापारी थे। वे स्वयं ही वल्लभ सम्प्रदाय के ही थे और "सत्य प्रकाश" समाचार पत्र उनका ही था मूलजी एलफिन्स्टन इन्स्टीट्यूट के अंग्रेजी पढ़े लिखे विचारशील व्यक्ति थे। अपने धर्माचार्यो के दुराचार और पाखण्ड को उन्होंने बारीकी से देखा और परिशीलन किया और साहस के साथ उन धर्माचार्यों का भांडा फोड़ा। इससे रुष्ट होकर वल्लभाचार्य गोसाई जदुनाथजी, वृजरतनजी महाराज ने मूलजी पर मुकदमा चलाया। इस मुकदमे मे सभी पढ़े लिखे लोगों ने रुचि ली और समाचार पत्रों में भी इसके समाचार काफी आते रहे। इस मुकदमें की बहस बम्बई के बड़े कोर्ट में जो उस समय भारत का सुप्रीम कोर्ट भी था, बारह दिन तक चली इससे वल्लभाचार्यो का दुश्चरित्र प्रकाश मे आया। धार्मिक श्रद्धालुओ के दिलो मे इस कारण बड़ा धक्का भी लगा। कई लोगों के मन मे धर्म के प्रति घृणा भी उत्पन्न हुई मुकदमे में दो बातें सिद्ध हुई : एक बात यह थी कि वल्लभाचार्यों का यह पुष्टिमार्ग एक नया पन्थ है और वह वास्तव मे कोई मानने योग्य प्रामाणिक धर्म नहीं है। दूसरी बात यह सिद्ध हुई कि जो जो व्यभिचारादि के आरोप वल्लभाचार्यों पर लगाये गये थे वे सब सत्य सिद्ध हुए। इस कारण करसनदास मूलजी की जीत हुई। सन् १८६२ में यह फैसला सुनाया गया था और इसकी रिपोर्ट गवर्नमेंट गजट मे भी छप गयी थी। इस जीत के बाद मूलजी चुप नहीं रहे। उधर ईसाई मिशनरियों ने इस मुकदमें से लाभ उठाकर हिन्दू धर्म की खूब निन्दा करना प्रारम्भ किया था। मूलजी और उनके साथियों को यह बात अच्छी नहीं लगी। अतः सच्चे धर्म और उस धर्म के मूल स्रोत वेद को जानने की जिज्ञासा इनके अन्दर प्रबल होती गई। अपने अध्ययन और परिश्रम के परिणाम स्वरूप आपने "वेद धर्म" नाम का एक पुस्तक भी लिखा। उस पुस्तक में आपने कहा है कि हिन्दू धर्म को वास्तव मे आर्य धर्म कहना चाहिए उनके अनुसार आर्य धर्म का मूल और शुद्ध स्वरूप वेदों मे ही है।

करसनदास मूलजी की मृत्यु के बाद उनके साथियों ने उनके कार्य को आगे बढ़ाया। इन्हीं लोगो ने बम्बई में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए वेद सभा की स्थापना की थी। उनमें लक्ष्मीदास खीमजी और ठाकरसी मूलजी मुख्य थे।

इन महानुभावो ने, जिनका ऊपर नाम लिखा गया है, और कुछ अन्य महानुभावों ने भी जिनका यहां विस्तार भय से नाम नहीं लिया गया है, सबों ने बड़े साहस के साथ, बहुत कष्ट उठाकर त्याग और बलिदान से अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार, मानव समाज की बड़ी सेवा की है। उनकी सेवाओ को हम भूल नहीं सकते लेकिन इनके कार्यक्रम सुव्यवस्थित और योजनाबद्ध रूप से न होने के कारण, विद्वत्ता और तपस्या की दृष्टि से भी उनके अन्दर कुछ कमियां रह जाने के कारण वे अपने-अपने गुटों से आगे बढ़ न सके। उन लोगो को ऐसे एक सर्वमान्य सर्वश्रेष्ठ नेता या सेनापति की भी आवश्यकता थी जो इन कमियों को दूर करके सभी सुधारवादी उदात्त विचारों को लेकर सुसंगठित और योजनाबद्ध रूप से युगों तक चलते रहने वाले एक व्यापक कार्यक्रम को दुनिया के सामने रखें। उदारवादियो ने स्वामी दयानन्द में ऐसी योग्यता देखी और उनके नेतृत्व को स्वीकार किया। लेकिन उन लोगों ने स्वामी दयानन्द के महान् व्यक्तित्व को देखकर भी, उन्हें योग्य और समर्थ जानकर भी उनके नेतृत्व को स्वीकार नहीं किया जिनके अन्दर सुधारवादी और क्रान्तिकारी विचार होने के बावजूद भी कुछ दुरभिमान, कुछ संकीर्णता, कुछ भय और कुछ मोह का भी वास था।

सन् १८६७ नवम्बर १७ को स्वामी दयानन्द का काशी में शास्त्रार्थ निश्चित हुआ था। इस शास्त्रार्थ की सूचना समाचार पत्रों द्वारा देश भर में जा चुकी थी। अतः देश के कोने कोने से विद्वान लोग वहां पहुंच गये थे। उन लोगों में बम्बई की वेद सभा के दो कार्यकर्त्ता भी थे। वे थे वेद सभा के संस्थापक लक्ष्मीदास खीमजी के भाई धरमसी खीमजी और पं० जयकृष्णदास जीवनदास व्यास। शास्त्रार्थ का विषय था वेदो मे मूर्तिपूजा है या नहीं! एक ओर अकेले स्वामी दयानन्द और दूसरी ओर स्वामी विशुद्धानन्द, प० बालशास्त्री और माधवाचार्य प्रभृति काशी के प्रसिद्ध २७ पंडित शास्त्रार्थ का आयोजन किया था काशी नरेश ने स्वयं स्वामी दयानन्द ने इस शास्त्रार्थ के लिए निवेदन किया था। शास्त्रार्थ का स्थान था आनन्दबाग। विरोधी पक्ष के पडितो ने बार बार विषयान्तर किया स्वामी दयानन्द पर प्रहार करते रहे और स्वामीजी बड़ी दक्षता के साथ उनको उत्तर देते रहे और उनको शास्त्रार्थ के मुख्य विषय की ओर खींच कर लाते थे। लेकिन वे पंडित लोग वेदो में मूर्तिपूजा का कोई भी प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर सके। फिर एक पंडित ने किसी हस्तलेख को पढ़कर सुनाया। स्वामी दयानन्द उससे परिचित नहीं थे वे उसे अपने हाथ मे लेकर ध्यान से पढ़ने लगे। इतने में, पंडितों ने अचानक एक साथ शास्त्रार्थ की समाप्ति की घोषणा की और स्वामी दयानन्द को हारा घोषित कर उठकर चल दिये। पडितो का यह षड्यन्त्र था। और समाचार पत्रो में कई दिनों तक काशी के पंडितों की इस धूर्तता की चर्चा होती रही।

(क्रमशः)

"सत्यार्थ प्रकाश की महिमा"

संकलन कर्ता, श्री लालता प्रसाद, उपदेशक, सभा

महर्षि स्वामी दयानन्द जी के सभी ग्रन्थ राष्ट्र भाषा हिन्दी में हैं जिससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि वे राष्ट्र भाषा के कट्टर पुजारी थे उनका महत्वपूर्ण ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" है। एक बार विरोधी भी इस ग्रन्थ को पढ़ ले तो वह ऋषि का भक्त बन जाता है। इस ग्रन्थ के सामने विरोधी टिक नहीं सकते। सबसे प्रथम बनारस की नगरी में राजा जयकृष्ण जी के कहने से लिखना प्रारम्भ किया। २२ जून १८७४ ई० को ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश लिखकर समाप्त कर दिया। सबसे प्रथम स्टार प्रेस बनारस में छपा। सत्यार्थ प्रकाश में १४ समुल्लास हैं। प्रथम समुल्लास में ईश्वर नाम की व्याख्या और मंगलाचरण का वर्णन है। द्वितीय में शिक्षा, भूतप्रेतादि निषेध और जन्म पत्री समीक्षा तृतीय में पठन, पाठन स्त्री शूद्र वेदाधिकार चतुर्थ में विवाह काल तथा गृहस्थाश्रम का पूर्ण वर्णन पंचम मे वान प्रस्थ और सन्यास, षष्ठ में राजधर्म सप्तम में ईश्वरीयज्ञान वेदोत्पत्ति वेद विषयक विचार। अष्टम मे सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति प्रलय, नवम में विद्याऽविद्या बन्ध मोक्ष का वर्णन दशम् में आचाराऽनाचार भक्ष्याभक्ष्य का वर्णन, एकादश में अवतार मूर्तिपूजा, तीर्थ सम्प्रदायो की आलोचना है। द्वादश में बौद्ध, जैन, चारवाक् नास्तिकों का वर्णन है। त्रयोदश में बाइबिल की आलोचना और और चतुर्दश मे कुरान की आलोचना है।

यह ग्रन्थ वैदिक धर्म का निचोड़ है ऐसा निष्पक्ष ग्रन्थ आजतक किसी भाषा में नहीं लिखा गया है। पौराणिक पंडितो ने इस पर लेखनी उठाई पर सबको मुंह की खानी पड़ी पंडित ज्वाला प्रसाद मिश्र मुरादाबादी ने "दयानन्द तिमिर भास्कर' लिखा जिसका मुंहतोड़ उत्तर पंडित तुलसीराम स्वामी ने 'भास्कर प्रकाश" के द्वारा दिया। पं० कालूराम शास्त्री ने "आर्य समाज की मौत" लिखी। जिसका करारा उत्तर पंडित मनसाराम वैदिक तोप ने उर्दू में "पौराणिक पोप पर वैदिक तोप" द्वारा दिया जो मेरे पास है १०२६ पृष्ठों की है। उसका हिन्दी अनुवाद पौराणिक पोल प्रकाश में २ भागा में है।

पादरी ठाकुरदास ने तेरहवें समुल्लास का उत्तर दिया जिसका करारा उत्तर प० भोजदत्त आर्य मुसाफिर आगरा द्वारा "बाइबिल का जमाना" उर्दू में दिया गया यह पुस्तक भी मेरे पास है। चौदहवें समुल्लास पर मौलाना सिनाउल्लाह ने "हक् प्रकाश" लिखा उसका दनदान शिकन उत्तर पं० चमूपति ने चौदहवीं का चांद, चार सौ पृष्ठ की पुस्तक मे उत्तर दिया। उसका कोई उत्तर मुसलिम जगत आज तक न दे सका। सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए सिंध सरकार भोपाल सरकार ने आज्ञा निकाली पर आर्य समाज के आगे उनको घुटने टेकने पड़े। सत्यार्थ प्रकाश निम्न भाषाओं मे प्रकाशित हो चुका है। बंगाली, उर्दू, अंग्रेजी, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, उड़िया, कनाड़ी, तमिल,, तेलगू, मलयालम, मराठी, गुजराती, फ्रेंच, जर्मनी, पश्तो, बर्मी और नेपाली चाई भाषाओं में इस अमर ग्रन्थ का अनुवाद हो चुका है। बड़े-बड़े दिग्गज विद्वानों ने "सत्यार्थ प्रकाश" को एक महान् तथा उपयोगी ग्रन्थ बतलाया हैं। श्री उत्तम चन्दजी शरर पानीपत ने १२ लाइनें सत्यार्थ प्रकाश पर लिखी हैं वह निम्न लिखित है ध्यान् से पढ़ें:—

(क) "पढ़ के सत्यार्थ में खण्डन को न घबड़ायें जनाब।
रद् बातिल से अयां और सदाकत होगी ॥
फूल और कांटे हैं दोनों ही चमन की जीनत।
इन्हीं कांटों से ही फूलों की हिफाजत होगी ॥

(ख) आईना चेहरा का हर दाग दिखा देता है।
उसकी फितरत का तकाजा है यह शिकवा कैसा ॥
आप भी सत्यार्थ की तनकीद से नाराज न हो।
अपने चेहरे को ही धो डालिये गुस्सा कैसा" ॥

(ग) "जिसकी तालीम ने बिसमिल के जगाये अरमां।
जिसको स्वराज्य स्वदेशी की पताका कहिए ॥
ऐसे सत्यार्थ को जो शख्स बुरा कहता है।
उसको गद्दार न कहिए तो भला क्या कहिए ॥

सम्पादक के पत्र

आप क्यों परेशान होते हैं?

२ अगस्त के आर्यमित्र मे आर्यसमाज नरवहाबाजार (बहराइच) के सदस्य श्री रमेशचन्द्र गुप्त का सम्पादक के नाम पत्र पढ़ा। श्री गुप्त को इस बात का बड़ा दु:ख है कि २७ जून को दूरदर्शन में प्रदर्शित चित्रहार में परिवार नामक फिल्म का एक ऐसा दृश्य दिखाया गया था, जिसमे एक हिन्दू देवमन्दिर मे मूर्ति के समक्ष एक अभिनेत्री प्रायः नग्न दशा में नृत्य करती है। मुझे आयसमाजी बन्धु की इस मनस्थिति को देखकर तो अवश्य दु:ख हुआ, किन्तु वे व्यर्थ में ही इसको लेकर परेशान हो रहे है। जब बहुसंख्यक मूर्तिपूजको को ऐसे दृश्य देखकर पीड़ा नहीं होती तो हम व्यर्थ ही मे उनके लिये क्यो चिंता करें। और प्रमुख बात तो यह है कि देवमूर्तियो के आगे नग्न नृत्य दिखाने के लिए दूरदर्शन की हम क्यों निन्दा करें। क्या दक्षिण भारत के सैकड़ों मंदिरो मे देव मूर्तियों के आगे वेश्यातुल्य देवदासियाँ श्रृंगारी हाव भाव दिखाकर अश्लील नृत्य नहीं करतीं! क्या बहुसख्यक मूर्तिपूजको ने कभी देवदासी प्रथा का भी विरोध किया है! क्या कर्नाटक मे येलम्मा नामक देवी के मंदिर में ग्रामीण बालाओं को देवदासी बनकर चिरकाल तक दुराचार पूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले धर्म व्यवसायि यो के खिलाफ भी कभी मूर्तिपूजकों ने आवाज उठाई है।

और सच तो यह है, कि बहुसंख्यक हिन्दुओं की भावनाओं को चोट पहुंचने की जो आशका हमारे मित्र को है, तो मै उन्हें बता दूं कि हिन्दुओं के बहुमान्य पौराणिक धर्म मे तो नाचने गाने को धार्मिक स्वीकृति प्राप्त है। इनके देवताओं के राजा इन्द्र के दरबार मे रम्भा, मेनका, उर्वशी आदि अप्सरायें नाचती और गाती है। इनके मान्य देवता शिव स्वयं ताण्डव नृत्य करते हैं। देवी पार्वती नृत्य करती है। महर्षि का सम्मान पाने वाले नारद मुनि भी नाचते और गाते है। अधिक क्या, इनके धर्म मे तो गंधर्व, किन्नर, अप्सरा, विद्याधर आदि नाचने वालो की विभिन्न योनिया ही कल्पित की गई हैं। यहाँ तक कि इनके प्रमुख आराध्य विष्णु भी मोहिनी का रूप धारण कर नाचते हैं और असुरों को ही नहीं मुग्ध करते, अपितु परम् इन्द्रियजयी शंकर के मन में भी विकार उत्पन्न करते हैं। इनके मान्य देवताओ के राजा इन्द्र का आदेश पाकर अप्सरायें अपने अश्लील भाव भंगिमा युक्त नृत्यों से विश्वामित्र जैसे संयमी ऋषियो की भी तपस्या भंग कर देती हैं।

जिस धर्म के मान्य देवी देवताओं को ही जब नृत्य गीत आदि से परहेज न हो तो हमारे आर्य भ्राता दूरदर्शन पर दिखाये गये ऐसे दृश्य से क्यों व्यर्थ में परेशान होते हैं।

भवानी लाल भारतीय चंडीगढ़

आर्य जगत

लखनऊ में वेद प्रचार सप्ताह के विविध आयोजन

—आर्यसमाज गणेशगंज में ९ से १६ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम से मनाया गया। श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर पर्वों की वैज्ञानिक महत्ता पर आचार्य सुधीन्द्र शास्त्री एवं डा० ऋषि देव वेदालंकार एवं आचार्य वीरेन्द्र मुनि के प्रवचन हुये।

—वेद प्रचार समिति आलमबाग लखनऊ के तत्वावधान में आलम बाग की चारों समाजों आदर्शनगर, चन्द्रनगर, शृंगारनगर एवं मानक नगर का संयुक्त वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। जिसमें श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार गोरखपुर एवं श्री सत्यप्रकाश आर्य भजनोपदेशक के प्रवचन व भजनोपदेश हुये।

रक्षा बन्धन, स्वाधीनता दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर सम्बन्धित पर्वों के महत्व पर विशेष प्रकाश डाला गया।

—आर्यसमाज कैसरबाग में भी वेद प्रचार सप्ताह का सफल आयोजन किया गया और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर विशेष महत्वपूर्ण उपदेश हुये।

—आर्यसमाज लालबाग एवं स्त्री आर्यसमाज लालबाग द्वारा संयुक्त वेद प्रचार सप्ताह नारायणस्वामी भवन की भव्य यज्ञशाला में ससमारोह मनाया गया।

—आर्यसमाज सदर लखनऊ में वेद प्रचार सप्ताह ससमारोह मनाया गया प्रतिदिन श्री पं० इन्द्रदेव शास्त्री के वेद प्रवचन हुए। जन्माष्टमी पर श्री हरवंशलाल मेहता का भाषण हुआ।

षड्यन्त्र का शिकार : भारत का इतिहास

'अंग्रेजों भारत छोड़ो' की ४५ वीं वर्षगांठ ९ अगस्त १९८७ को मनायी गयी। अंग्रेज यह जानते थे, कि एक दिन—अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा लगेगा। अतः अंग्रेजों ने अपने शासन के आसन को स्थिर करने हेतु भारत के आर्यजनों को विदेशी आक्रान्ता तथा द्रविड़, कोल, भील, सन्थाल आदि को आदिवासी के रूप में दस्यु या दास सिद्ध करने का षडयन्त्र रचा।

अंग्रेजों के षडयन्त्र का शिकार—'भारत का इतिहास' बच्चों में भारत की एकता–अखण्डता–सम्पन्नता में दरार डालने का संस्कार डालता है।

वास्तव में आर्यजनों का आदिदेश होने के कारण ही भारत का प्राचीनतम नाम 'आर्यावर्त्त' है तथा वेद में आये 'आर्य' (सज्जन) और 'दस्यु' (दुर्जन) शब्द गुणवाचक हैं, जातिवाचक नहीं। विभिन्न जलवायु स्थानादि के कारण गुण–कर्म–स्वभाव पर आधारित–द्रविड़, कोल, भील, संथाल आदि आर्यजनों के ही वंशज हैं। इतिहास के गलत प्रकरणों के संशोधन में देर करना अच्छा नहीं है।

—स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती फलाहारी आ०स० पिथौरागढ़

श्रावणी उपाकर्म तथा संस्कृत दिवस

आर्यसमाज अल्मोड़ा में रविवार, दिनांक ९-८-८७ को श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबन्धन) तथा संस्कृत दिवस आयोजित किया गया। आचार्य जयदत्त शास्त्री ने यज्ञोपवीत के तीन तारों का महत्व और उपयोगिता के साथ-साथ ऋषि तर्पण तथा श्रावणी उपाकर्म के पर्व पर विस्तृत प्रकाश डाला।

यज्ञ और भजनोपदेश के अनन्तर संस्कृत दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित भाषण प्रतियोगिता में–(१) कु० ललिता लोहनी, एडम्स बा० इ० का० अल्मोड़ा, (२) कु० रुचि टमटा, एडम्स बा० इ०का० अल्मोड़ा, (३) कु० दीक्षा तिवारी, केन्द्रीय विद्यालय, अल्मोड़ा, (४) कु० रंजना ग्रोवर, „ „ „ (५) श्री नरेशचन्द्र पाण्डेय, राजकीय इण्टर का० अल्मोड़ा, (६) श्री सुधीर जोशी, चिल्ड्रन एकेडमी, अल्मोड़ा, (७) श्री मंजुल उप्रेती, राजकीय इ० का० अल्मोड़ा ने भाग लिया। प्रतियोगियों को पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र के साथ सम्मानित किया गया।

नयी शिक्षा–पद्धति में संस्कृत भाषा का अध्ययन राष्ट्रीय एकता के लिए अनिवार्य होना चाहिए। यह प्रतियोगिता का विषय था,

आर्य वीर दल सम्बन्धी विशेष सूचना

उ०प्र०के समस्त आर्य वीर दल शाखाओं तथा आर्यसमाज मन्त्रियों को सूचित किया जाता है कि आर्य वीर दल का शिविर तथा सम्मेलन आयोजन करने से पूर्व अपने केन्द्र से प्रान्तीय सञ्चालक की स्वीकृति लेकर ही कार्यक्रम करें। —आर्यप्रकाश आर्य प्रान्तीय मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल उ० प्र०

कर्मकाण्ड प्रशिक्षण शिविर

श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद में उत्तरप्रदेश तथा बिहार से ६ महीनों में मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण तथा कर्मकाण्ड की दीक्षा के लिए १० व्यक्तियों के लिए स्थान है। व्यक्ति को हाई स्कूल पास तथा उच्चारण का ठीक होना आवश्यक है एतदर्थ स्थानीय व्यक्तियों में किसी प्रधानाचार्य तथा आर्य समाज के मन्त्री की संस्तुति होनी चाहिये। अच्छा हो कि आर्यसमाज ऐसे व्यक्ति का चुनाव स्वतः करें। और उसका व्यय भार वहन करें।

प्रवेश नियम में आचार व्यवहार की प्रधानता के साथ शिवरार्थी को मात्र भोजन के १००) सौ रुपये मासिक देय होंगे। पुस्तकें दीक्षार्थी को लानी होंगी। वसुमित्र चतुर्वेदी कुलपति
श्री नि.शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय
अयोध्या, फैजाबाद

बृहद् पारायण यज्ञ

श्री आर०बी० सक्सेना सहायक अभियन्ता उत्तर रेलवे हरदोई एवं उनकी पत्नी श्रीमती सुधा विद्यावाचस्पति ने अपने निवास पर ११ से १३ फरवरी तक चतुर्वेद शतक पारायणयज्ञ कराया। जिसमे ज्वालापुर वानप्रस्थ आश्रम से पधारे विद्वानों के अतिरिक्त श्रीमती रश्मि प्रभा, श्री पं० ब्रह्मानन्द आर्य एवं श्री सीताराम आर्य के भी भजन व उपदेश हुये।

अन्नप्राशन संस्कार

दिनांक १९-७-८७ को ग्राम मुनीरापुर पो० मल्लावां जिला हरदोई के ड्राइवर श्री हरपालसिंह जी पी० ए० सी० के पुत्र का अन्नप्राशन संस्कार वैदिक रीति से किया गया तथा भजन एवं उपदेश भी हुये।

—सीताराम आर्य भजनोपदेशक सभा

कानपुर वेश्यालय में बेंची गयी युवती बरामद

सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता तथा केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने थाना मूलगंज पुलिस की सहायता से मूलगंज वेश्यालय में बेची गयी २० वर्षीय युवती चन्दा को बरामद कर लिया। ज्ञातव्य है कि उक्त युवती को एक माह पूर्व दिनेश नामक बुरदा फरोश नौकरी का लालच देकर नेपाल से कानपुर लाया था। यहां पर उसने चन्दा को तीन हजार रुपये में वेश्यालय में बेंच दिया और फरार हो गया। वेश्यालय के संचालक उसे मार पीटकर शरीर व्यापार करने को बाध्य करने लगे जिसके लिये वह तैयार नहीं थी। किसी ने श्री आर्य को इसकी सूचना गुप्त रूप से दी। श्री आर्य ने जांच करने के पश्चात उक्त ठेके पर छापा मारा और चन्दा को बरामद कर लिया। परन्तु अभियुक्त मौका पाकर भाग निकले जिनकी तलाश जारी है। श्री आर्य ने उक्त युवती को उसके परिवार तक पहुंचा दिया।

नाथद्वारा मन्दिर में हरिजनों के प्रवेश पर कोई पाबन्दी नहीं

विश्व हिन्दू परिषद का एक प्रतिनिधि मण्डल इसके प्रन्यासी श्रीमंत राजमाता विजयाराजे सिन्धिया तथा संयुक्त महामन्त्री श्री आचार्य गिरिराज किशोर जी के नेतृत्व में दिनांक १७ जुलाई ८७ को नाथद्वारा इस बात की सच्चाई मालूम करने के लिए गया कि पिछले दिनों जो समाचार पत्रों में खबरें छपी हैं, वह कहाँ तक ठीक है। क्या वास्तव में नाथद्वारा मन्दिर में हरिजनों के प्रवेश पर कोई पाबन्दी लगी हुई है।

नाथद्वारा पहुंचने पर वे मन्दिर के पुजारियों से मिले और उनसे इस बारे में पूछताछ की। मन्दिर के पुजारियों ने उन्हें बताया कि प्रत्येक व्यक्ति मन्दिर में प्रवेश कर सकता है। यहां किसी के भी आने पर प्रतिबन्ध नहीं है, सभी बिना भेदभाव आते हैं।

ईसाई परिवार की शुद्धि

श्री राजेश्वरीप्रसाद केशरी आर्य मन्त्री बक्सर के प्रयत्न से एक ईसाई परिवार जिसके मुखिया का नाम साइमन जोसफ पिता दमरी जोसफ था जो तीन पुस्त से ईसाई बने हुए थे उन्हें २८-६-८७ रविवार को उनके घर आकर पं० शिवधर मिश्र के पौरोहित्य में वैदिक सिद्धान्त की दीक्षा दी गई तथा उन्हें शुद्ध कर लिया गया। अब उनका नाम शिवमुनी प्रसाद आर्य तथा पत्नी का नाम तारा देवी आर्या एवं बड़ी लड़की का नाम ममता कुमारी तथा गायत्री कुमारी आर्य रखा गया।

—राजेश्वरी प्रसाद केसरी आर्य

प्रज्ञाचक्षु श्री अयोध्याप्रसाद आर्य दिवंगत

आर्यजगत में यह समाचार बड़े दुःख के साथ पढ़ा जायेगा कि आर्य समाज फैजाबाद के प्रसिद्ध भजनोपदेशक प्रज्ञाचक्षु श्री महाशय अयोध्या प्रसाद जी आर्य का देहान्त हो गया है। इनकी आयु ८० वर्ष की थी वे जीवन भर हार्मोनियम पर भजनोपदेश द्वारा आर्यसमाज का प्रचार करते रहे और महर्षि दयानन्द का सन्देश जन-जन तक पहुंचाते रहे। आर्यसमाज फैजाबाद द्वारा उनको आजीवन सहयोग मिलता रहा। उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुई।

केशवदेव शास्त्री
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, लखनऊ

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस

आर्यजगत् के सुप्रतिष्ठित महात्मा, श्री दयानन्द जी ने अपील की है कि आर्यत्व के वर्तमान में प्रतिपादक, वेदोद्धारक, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का १६४ वां जन्मदिन बुधवार २ सितम्बर को आत्म-निरीक्षण और व्रतग्रहण दिवस के रूप में मनाया जाए। आधुनिक शोध से दयानन्द जन्म भाद्रपद शुक्ला ६ को हुआ सिद्ध हो चुका है। इस दिन सामवेद का पारायण किया जाए। इसी वेद के अन्तिम अध्याय (२७ मन्त्र) से सायम् अग्निहोत्र के साथ आहुतियां दी जाएं। संध्या, यज्ञ, स्वाध्याय, कोई सेवा, संस्कृत और वेद का अध्ययन, जैसा कोई व्रत ग्रहण किया जाए। श्रद्धांजलि सभाएं की जाएं।

मुख्य समारोह दिल्ली के वेद संस्थान में २ सितम्बर को सायं ६-३० से ६ बजे तक होगा जिसमें 'दयानन्द-जैसा मैने समझा' विषय पर भोपाल के प्रसिद्ध विद्वान श्री आदित्यपालसिंह आर्य का भाषण होगा और उनके द्वारा संपादित, दयानन्द की आत्मकथा परक अभिव्यक्तियों का संकलन 'अपना जन्म चरित्र' का लोकार्पण होगा।

जनपदीय आर्य सम्मेलन, ठाकुरद्वारा

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के तत्वावधान में जनपदीय आर्य सम्मेलन एवं आर्यसमाज ठाकुरद्वारा का वार्षिकोत्सव दि० १५ से १८ अक्टूबर १९८७ तक बड़े समारोह से मनाया जा रहा है जिसमें आर्यजगत के उच्चकोटि के विद्वान, संन्यासी एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। —हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री जिला सभा

अन्तरंग सभा की बैठक

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक ३०-८-८७ रविवार को मध्यान्ह १ बजे आर्यसमाज मन्दिर अमरोहा में होगी। —हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री

वेद प्रचार सप्ताह

आर्यसमाज मन्दिर पिलखुवा (गाजियाबाद) में श्रावणी पर्व वेद प्रचार सप्ताह दिनांक १० अगस्त से १६ अगस्त १९८७ तक ससमारोह मनाया गया जिसमे विशेष आगन्तुक विद्वान् सर्वश्री डा० निरूपण विद्यालंकार एम. ए. पी-एच० डी० भूतपूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग मेरठ कालेज मेरठ एवं आचार्य गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार, पं० सत्यपाल पथिक भजनोपदेशक अमृतसर, स्वामी हितेश्वरानन्द, मुकीमपुर के अमृतमय उपदेश हुये।

श्यामलाल अभियांत्रिकी महाविद्यालय

श्यामलाल स्मारक आर्य शिक्षण संस्था, उदगीर (महाराष्ट्र) द्वारा संचालित श्यामलाल अभियांत्रिकी महाविद्यालय (मराठवाडा विश्व विद्यालय औरंगाबाद से संलग्न) तथा श्यामलाल तन्त्र निकेतन (महाराष्ट्र शासन द्वारा मान्य) में विशुद्ध वैदिक विचारधारा को लेकर तन्त्र शिक्षा प्रदान की जाती है। वैदिक विचारों से प्रेरित परिवार अपने छात्र-छात्रायें तथा अन्य भी इस इन्जीनियरिंग कालेज व पालिटेकनिक में प्रवेश लें। इस सन्दर्भ में आप व्यक्तिगत सम्पर्क ३१ अगस्त ८७ तक कालेज कार्यालय, उदगीर में स्थापित करें।

—बी० एस० रघुवंशी प्राचार्य

आर्यसमाज-भवन, ५ मीराबाई मार्ग,
दूरभाष 45993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल. डब्ल्यु/एन पं ०९
भाद्रपद शुक्ल ६
रविवार, ३० अगस्त १९८९ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

श्री रामनारायण मिश्र का बिजली के करेण्ट लगने से दुखद देहावसान

श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के साढू– इलाहाबाद निवासी श्री रामनारायण मिश्र एवं उनकी पुत्री सुश्री शोभा मिश्र का बिजली के तार से करेण्ट लग जाने से दुःखद निधन हो गया।

बिजली विभाग की अकर्मण्यता का ही यह दुष्परिणाम है। अंधड़ व तूफान में तार टूटने पर भी बिजली विभाग ने उसे तत्काल ठीक कराना अपना दायित्व नहीं समझा। उसे ठीक कराने के लिए जाने कितनी ही लिखा पढ़ी की जा चुकी थी। आश्चर्य है दो प्राणियों की जान ले लेने के तत्काल बाद ही उसे ठीक करा दिया गया।

उत्तरप्रदेश की आर्य जनता एवं आर्यमित्र परिवार की ओर से शोक संतप्त परिवार के प्रति सम्वेदना ही हम प्रकट कर सकते हैं। ईश्वर दिवंगत आत्माओं को शान्ति एवं सद्गति तथा दुःखी परिजनों को धैर्य प्रदान करें।

इन्द्रराज
प्रधान–आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

धर्म शिक्षा पुस्तकों के सम्बन्ध में–

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश द्वारा प्रकाशित पुस्तकें सभा कार्यालय में उपलब्ध हैं। पुस्तकें प्राप्ति हेतु कार्यालय से सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम से भेजें। रेलवे स्टेशन एवं पूरा पता साफ-साफ लिखें। पुस्तकों का मूल्य निम्न प्रकार है–

धर्म	शिक्षा	भाग	१	१.००
"	"	"	२	१.५५
"	"	"	३	२.७०
"	"	"	४	२-७५
"	"	"	५	३-६०
"	"	"	६	४-७५
"	"	"	७	४-१५
"	"	"	८	८-००
"	"	"	९	४-००
"	"	"	१०	३-००
"	"	"	११	४-००
धर्म	शिक्षा	भाग	१२	३-५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एस० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्रीविश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारामुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ — घोषणा पत्र सं. ७।२८-२-८५

भाद्रपद शुक्ल १४, रविवार, संवत् २०४४ वि०, दिनांक ६ सितम्बर १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

★

प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए.

★

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	११)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	६०
अङ्क	३५

राष्ट्रीय एकता का एकमात्र उपाय

वेद-पथ का अनुसरण

एकता संस्थापन हेतु आर्य जनों का संकल्प

आज सम्पूर्ण राष्ट्र मे अशान्ति विग्रह विभेद फैल रहा है। कहीं जातिगत, कहीं दलगत, कहीं सम्प्रदायगत विद्वेष–विषधर राष्ट्रीय एकता की आत्मा को डस रहा है।

राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिए सरकार ने एक राष्ट्रीय एकतासमिति का गठन किया है। सभी राजनेता व धर्मगुरु भी अपने वक्तव्य प्रसारित करते है। गोष्ठियो मे भी विचाराभिव्यक्ति होती है। ऐसे समय में आर्यों का विशेष दायित्व हो जाता है कि वे जनमानस को राष्ट्रीय एकता के सूत्र मे आबद्ध होने का मूल मन्त्र सिखायें।

भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम में आर्य वीरों की अनथक बलिदानी गाथायें हमे प्रेरणा दे रही हैं कि हम राष्ट्र के ऊपर आये इन विभेदक, देशघातक घनघोर बादलों को नष्ट करने के लिए कृत संकल्प हो। राष्ट्रीय एकता संस्थापित कराने के लिए अपना सर्वस्वार्पण करने के व्रती बनें। धर्म के बिना एकता असम्भव है। धर्म सहिष्णुता, प्रेम सद्भाव सिखाता है। धर्म सभी भेद मिटाता है।

आओ आज हम जन-जन मे धर्म के सच्चे स्वरूप की पहचान कराने के लिए परमात्मा की अमर वाणी वेद का सन्देश घर-घर पहुंचायें। वेद की आज्ञानुकूल राष्ट्रीय एकता स्थापित कराने के लिए प्रयत्नशील हों।

ओ३म् संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवाभाग यथापूर्वे संजानाना उपासते ॥

यह वैदिक उद्घोष हमारा सम्बल है।

शिक्षक-दिवस

सूर्य की उगती हुई किरणों के साथ ५ सितम्बर का सुहावना दिवस आज हमारे राष्ट्र मे शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। अज्ञान विनाशक गुरुवर्य के चरणों मे शतशः नमन् करते हुए आज हम उस महान् दार्शनिक डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन की स्मृति मे तमस् से ज्योतिः की ओर बढ़ने की प्रेरणा लेते हैं। विद्यालयों में पढ़ने वाले मेरे उदीयमान छात्र/छात्राओ ?

आज कितने हर्ष का दिन है तुम अपने विद्यालय की पावन भूमि पर ज्ञान का प्रकाश देने वाले अपने गुरुजनो का स्वागत कर रहे हो। जिस प्रकार एक कलाकार अपने हृदय और मस्तिष्क के समन्वय से एक सुन्दर कलाकृति का सृजन करता है उसी प्रकार शिक्षक अपने ज्ञान और आदर्श के समन्वय से नई पीढ़ी के चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण करता है। इसीलिए हमारी आर्य संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है। आज के इस पावन दिवस पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० आप सबका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए आपके ज्योतिर्मय भविष्य की कामना करती है।

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश का
वार्षिक बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन का कार्यक्रम

चित्र वापस सभा में आने की तिथि	१५–९–८७ तक
सभा में चित्र जांचना	१६–९–८७ से २५–९–८७ तक
सूची का प्रकाशन	४–१०–८७
आपत्ति प्राप्त करने की अन्तिम तिथि	१५–१०–८७
आपत्तियों की सुनवाई एवं समाधान	१६–१०–८७ से २०–१० ८७ तक
शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	२७–१०–८७
सभा का बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	१४ व १५ नवम्बर ८७

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दिनांक २ अगस्त १९८७ को सभा भवन लखनऊ में सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में हुई और उसमें बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ .

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

ले ओढ़ नीच अन्याय देख यह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ–भाद्रपद शुक्ल १४ सम्वत् २०४४ रविवार ६ सितम्बर १९८७, दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

धर्म के बिना राष्ट्रीय एकता असम्भव

आज सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिए सभी चिन्तित से नजर आते हैं। सरकार भी राष्ट्रीय एकता समिति का गठन करके राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने का स्वप्न देख रही है परन्तु राष्ट्रीय एकता स्थापित करने की जितनी ही चिंतना की जा की जा रही है, जितना ही मार्ग खोजा जा रहा है उतना ही भटकाव पैदा हो रहा है। देश में विग्रह विभेद बढ़ता जा रहा है। सहिष्णुता के स्थान पर असहिष्णुता शान्ति के स्थान पर उपद्रव, अशान्ति मानवता के स्थान पर दानवता का तांडव बढ़ रहा है। शासक पक्ष और प्रतिपक्ष के सभी नेता अपने भाषणों में इस समस्या के समाधान के लिए व्यग्र दिखाई देते हैं चिन्तित होते हैं। अपनी मानसिकता के अनुरूप सुझाव भी देते हैं परन्तु वह मानसिकता, वह सुझाव एकता के स्थान पर विग्रह विभेद को ही प्रश्रय देते हैं। आज धर्म को राजनीति से हटाने का प्रबल आन्दोलन सा चल रहा है। साम्प्रदायिकता को उन आन्दोलनों से बल मिल रहा है। आज देश में जातिवाद और साम्राज्यवाद खूब पनप रहा है। संसद व विधान सभाओं में पहुंचने के लिए सभी पार्टियां जातिवाद सम्प्रदायवाद के समीकरण में ही अपने उम्मीदवारों का चयन करती हैं। बड़ी ही बेतकल्लुफी से जायजा लेते व देते हैं कि अमुक हमारा उम्मीदवार अमुक स्थान से इसलिए जीतेगा कि वह अमुक जाति या सम्प्रदाय विशेष का है वहां उक्त जाति या सम्प्रदाय विशेष के [लोगों] वोटरों की संख्या है, उनके वोट अपनी जाति या समुदाय के उम्मीदवार को ही मिलेंगे आदि। मन्त्रिमण्डलों के चयन में भी जातीय समीकरण ध्यान मे रखने की आवश्यक..। महसूस की जाती है खुले रूप में अपने जातीय प्रतिनिधित्व की मांग की जाती है। और उस पर ध्यान देकर प्रतिनिधित्व दिया भी जाता है। इस कल्पना के आधार पर कि इस प्रकार जातीय प्रतिनिधित्व के आधार पर राष्ट्रीय एकता में सहायता मिलेगी। परन्तु यह सब मात्र विडम्बना है। इस सब चिन्तना में धर्म का अभाव है धर्म के बिना चिंतन शुद्ध पवित्र, नैतिक होना सम्भव ही नहीं है।

प्रत्येक प्राणी का हित चिंतन, सबकी उन्नति में अपनी उन्नति का दर्शन, देश की सम्प्रभुता, सम्पन्नता की रक्षा व सम्वर्धन की दृढ़ता से कामना और प्रयत्न, प्रेम सौहार्द्र प्रसारण का संकल्प और प्रयत्न यह धर्म है। इस धर्म के पालने या मानने में कोई जातीय या साम्प्रदायिक वैमनस्य हो ही नहीं सकता।

स्वाधीनता आन्दोलन के प्रणेताओं में जातीय भेद साम्प्रदायिक भेद कभी आड़े नहीं आया वहां सभी का चिन्तन अपनी जाति अपने सम्प्रदाय से परे हटकर देश को सुखी समृद्ध बनाने के लिए स्वाधीन कराने के संग्राम से जुड़ा था। सबने अपना धर्म देश को स्वतन्त्र कराना बनाया था। बड़े गर्व से सभी एक स्वर मे गाते थे –

देश धर्म पर बलि-बलि जायें, एक साथ सब मिलकर गायें।
प्यारा भारत देश हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ॥

स्वाधीनता के बाद हमारे राष्ट्र नायकों ने महात्मा गांधी के राम राज्य की कल्पना की गुहार करते हुए, राष्ट्र निर्माण की किरण पश्चिम मे ढूंढ़नी आरम्भ की जहां धर्म का महत्व नहीं, जहां भारत को सदैव पराधीन रखने की योजना बनायी गई थी जहां निश्चय किया गया था कि वे ऐसी शिक्षा संस्कृति का प्रसार कर देंगे कि भारतीय देखने में भारतीय होंगे परन्तु मानसिक रूप में पूर्ण पराधीन होंगे अंग्रेजियत से शासित होंगे। हमारे शासकों ने धर्म के रहस्य की अज्ञानता के कारण देश को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित करने की महान भूल की। उन्होंने विभिन्न पूजा शैलियों को धर्म मान लिया। पूजा शैलियों मे कोई एक दूसरे का विरोधी न हो यह उन नेताओं का धर्म का चिन्तन बन गया था। पूजा शैलियां समयानुसार परिवर्तित होती रहती हैं परन्तु धर्म अपरिवर्तनीय है वह शाश्वत है वह किसी काल में बदला नहीं जा सकता। विश्व के किसी भी मतमतान्तर में धर्म के वास्तविक स्वरूप को स्वार्थवश नजरअन्दाज भले ही किया गया हो—नकारा किसी ने भी नहीं है। महाराज मनु ने हमारे कर्तव्य [धर्म] के चिन्ह दस लक्षणों का (धृति) धैर्य, (क्षमा) सहिष्णुता (दम) मन को आवारागर्दी से रोकना (अस्तेय) चोरी आलस्य प्रमाद का परित्याग–(शौच) विचार व व्यवहार में पवित्रता (इन्द्रिय निग्रह) इन्द्रियों को विषय वासनाओं से हटाकर सार्वजनीन कल्याणकारी मार्ग पर चलने का प्रयत्न

(शेष पृष्ठ १० पर)

एक भ्रामक लेख का उत्तर

वेद-विवेचन

मांसाहार-अभक्ष्य और वेदविरुद्ध

[स्नातिका प्रियम्वदा शास्त्री, पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी]

गत १७ मई के साप्ताहिक "आर्य सन्देश" पत्रिका अंक २७ में प्रकाशित श्री पं० मनोहर विद्यालंकार जी का "वेदनिर्दिष्ट वैयक्तिक जीवन के नित्यकृत्य" विषयक लेख पढ़कर किसी भी पाठक के मन में स्पष्टतया यह विचार बन जाता है कि मांस मनुष्य का भोजन है और वह वेद समर्थित है। खेद की बात है कि यह भ्रामक लेख डा० प्रशान्त कुमार वेदालंकार जैसे आर्य विद्वान के सम्पादकत्व में छपे "स्मृति और विचार" ग्रन्थ में भी छप चुका है। मनुष्य के लिए मांस जैसे अभक्ष्य पदार्थ के सेवन का वेद द्वारा समर्थन वेद-स्वाध्यायी डा० मनोहर विद्यालंकार जैसे व्यक्ति करें यह निश्चित रूप से हम सबके लिए दुर्भाग्य का विषय है। ऐसा प्रतीत होता है कि माननीय पण्डितजी वार्धक्य जन्य बहक के घेरे में आकर कुछ का कुछ लिख गये हैं, जो नितान्त अनुचित है। एतादृश सत्यता से हीन लेखों का आर्य पत्र-पत्रिकाओं में छापने से वेद विषय में अनास्था उत्पन्न होती है अतः लेखक के साथ सम्पादक जनों को भी अपने उत्तरदायित्व का वहन करते हुए भ्रामक लेखों को कदापि प्रकाशित नहीं करना चाहिए।

अब प्रस्तुत हैं आपत्ति जनक इस लेख के कुछ नमूने—

मांस को वेद ने न खाने का विधान किया है न निषेध किया है इससे प्रतीत होता है कि वेद दृष्टि मे मांस भक्षण न तो लाभप्रद है और न ही इसमें कोई पाप है, क्योंकि मांस भक्षण के लिए कहीं दण्ड का विधान भी नहीं किया गया है।

इस भ्रान्ति-पूर्ण मिथ्या प्रलाप के विषय में मै क्या कहूं ? वेदों में जब "गां मा हिंसीः यजु० १३·४३, इममूर्णायुं मा हिंसीः यजु० १३·५० माहिंसीरेकशफं पशुम् यजु० १३·४८, द्विपादव चतुष्पात् पाहि १४·८, पशून पाहि यजु० १·१, मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे यजु० ३६·१८, "जैसे सैकड़ों स्थल विद्यमान है तो वेद में मांसभक्षण-निषेध भी स्वतः सिद्ध नहीं हो जाता है क्या? यदि विद्यालंकार जी साक्षात् मांस भक्षण निषेधक वाक्यों के अभाव में वेदों पर यह आरोप लगा रहे हों तो इस विषय में भी वेद स्पष्ट कहता है—

१—य आमं मांसमदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः।

गर्भान् खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि ॥ अथ० ८·६·२३

जो कच्चे मांस को पौरुषेयम् पुरुष द्वारा बनाये गये अर्थात् पके मांस को या अण्डों को खाते हैं उन दुष्टों का नाश कर दिया जाये।

२—यः पौरुषेयेण क्रविषा समंक्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः।

यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसाऽपि वृश्च ॥

[ऋ० १०-८७-१६]

जो राक्षस अश्वादि पशुओं का मांस खाता है उसका सिर कुचल देना चाहिए।

३—ब्रह्मद्विषे क्रव्यादे घोरचक्षसे द्वेषो धत्तमनवायंकिमीदिने।

[ऋ० ६।१०४।२]

धर्मात्मा जन मांसभक्षक से पूर्णतया अप्रीति रखें।

पाठक देखें कि मांस भक्षण वेद की दृष्टि में कितना बड़ा पाप है कि जो गर्भांश-अण्डे के रूप में या कच्चे पक्के जिस किसी रूप में मांस खाते हैं ऐसे दुष्टों को सीधे नष्ट करने का आदेश वेद दे रहा है। इससे बढ़कर दूसरा दण्ड क्या हो सकता है किन्तु ऐसे मन्त्रों के रहते हुए भी श्री मान् पण्डित जी फरमाते हैं कि मांस भक्षण के लिए वेद में कोई दण्ड का विधान ही नहीं है।

अब प्रश्न यह होता है कि मनुष्य का भोजन वस्तुतः क्या होना चाहिए तो इस विषय मे स्पष्ट वैदिक आज्ञा है—

अजीजन ओषधीर्भोजनाय कम् (ऋ० ५-८३-१०)

अर्थात् मनुष्यों के भोजनार्थ औषधियां उत्पन्न की गई है। ओषधयः फलपाकान्ताः [चरक० सं० १/७२] के अनुसार चावल, जौ, गेंहू, चना आदि औषधि के अन्तर्गत आते हो हैं।

इस प्रकार मांस भक्षण निषेध की स्पष्ट वैदिक आज्ञाओं के रहते किसी का भी मांस भक्षण प्रतिपादन करना दुःसाहसपूर्ण वेदों पर मिथ्यारोप है। एक और भी बात है कि शब्दार्थ की यौगिक प्रक्रिया के रहते वेद में कहीं पर भी भक्ष्यपदार्थों के साथ मांस शब्द को देखकर एकदम बिदक उठना घोर अज्ञानता-मूलक ही कहा जायेगा। "मनु अवबोधने" धातु से व्युत्पन्न मांस शब्द बुद्धिवर्धक पदार्थों की ओर संकेत कर रहा है। जिस प्रकार दुग्ध बुद्धिवर्धक है उसी प्रकार अन्य बुद्धिवर्धक पदार्थ अतिथि को दिये जायें यह—"एतद्वा उ स्वादीयो यदधिगवं क्षीरं वा मांसं वा तदेव नाश्नीयात् [अ० ९·६-३·९] मन्त्र में कहा गया है यदि ऐसा अर्थ न किया जाय तो वेद हास्यास्पद बन जायेंगे कि एक ओर बुद्धिवर्धक सात्विक दुग्ध देने का विधान वेद अतिथि के लिए करता है तो दूसरी ओर वहीं पर मांस जैसे बुद्धिनाशक पदार्थ का।

इस विषय के विस्तार के लिए गत वर्ष नवम्बर मास की "वेद-वाणी" में प्रकाशित "एकं वेदस्य असमाधेयस्थलम्" का हिन्दी अनुवाद भी देख लेना उचित होगा। जिसमें महामहोपाध्याय आचार्य विश्वश्रवा जी ने बड़ी प्रबल युक्तियों से एवं महर्षि यास्क के—"मांसं माननं वा मानसं वा मनोऽस्मिन् सीदतीति वा (निरु० ४·३) इस त्रिविधि निर्वचन के आधार पर यह सिद्ध किया है कि त्रिविधार्थक तीन ही मांस शब्द हैं। अतिथि प्रकरण के इस उपर्युक्त आक्षेपस्थल में मांस शब्द का कौन सा अर्थ लिया जाये इसका निर्धारण इसी प्रकरण में पठित क्षीरमुपसिच्य, सर्पिरूपसिच्य, मधूपसिच्य, मांसमुपसिच्य, उदकमुपसिच्य आदि वाक्य ही कर देते हैं। यहाँ तरल पदार्थों के साथ मांस शब्द पढ़ा गया है सो स्पष्ट प्रमाणित हो रहा है कि इस प्रकरण में मांस शब्द से घृत, दुग्ध, जलादि के समान कोई मनः प्रिय तरल पदार्थ ही लेना वेद का अभीष्ट है। इस प्रकार प्रकृत मन्त्र के प्रकरणाविरुद्ध निर्विवादास्पद अर्थ के होने पर उसे मांसभक्षणपरक कुत्सित अर्थ की ओर घसीटना निन्दनीय है।

मांस पोषक इस लेख में पण्डितजी लिखते हैं—"कि प्रायः निरामिषभोजी "वर्जयेन मधुमांसञ्च" [मनु० २.१७७] मनु के विधान को मांस विरोधी दर्शाते हैं लेकिन उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि यह श्लोक ब्रह्मचारियों के कर्त्तव्यों और नियमों के प्रसंग का है, गृहस्थियों के प्रसंग का नहीं।"

क्या मजे की बात है। पण्डित जी यहां किस प्रकार सबकी आंखों में धूल झोक रहे हैं यह पाठक देखें। मनु महाराज ने ब्रह्मचारी प्रकरण से अतिरिक्त अनेकत्र बड़े प्रबल शब्दों में मांस भक्षण का खण्डन किया है—

(शेष अगले अंक में)

सिद्धान्त-विमर्श

सत्यार्थ प्रकाश में सृष्टि-विज्ञान की समीक्षा

[स्वामी मोक्षानन्द "सरस्वती" वैदिक–प्रवक्ता, मथुरा]

[गतांक से आगे]

यह पाप करते-करते अपने उपास्य ईश्वरों (मूर्तियों) को भी तोड़ते-फोड़ते एवं चोरी करके बेचते देखे एवं पकड़कर दण्ड पाते देखे जाते हैं। यह नास्तिक जड़ों-मूर्तियो को पूजते-पूजते अपनी बुद्धि को भी जड़ बना डालते हैं। विदेशियो ने इसीलिए इनके मन्दिरों में एकत्र असंख्य सम्पदा-मूर्तियों एवं मन्दिरो को ध्वस्त एवं पुजारी वर्ग को मारकर लूटा था। महर्षि दयानन्द महाराज का कथन है कि जो वर्ग सत्य सिद्धान्तों एवं विज्ञान का विरोधी होता है वह अपने साथ-साथ अपने शुभचिन्तकों, इष्ट परिवार एवं बन्धुजनों का अपनी मूर्खता से विनाश करा डालता है। ऐसा अनर्थ इन मूर्ति पूजक धृष्ट अज्ञानी, सत्य सिद्धान्त विरोधियों ने मूर्ति पूजा के कारण सर्वनाश इस महान आर्यावर्त राष्ट्र का कराया।

(८) आत्मा का कर्म-फल-भोग चक्र:–

महर्षि दयानन्द जी असंख्य आत्माओं को विभिन्न योनियों में जन्म का कारण प्रारब्धीय एवं पूर्व सृष्टि में उन्हीं के कर्मानुसार ईश्वरीय व्यवस्था ही मानते हैं। वे "सत्यार्थ प्रकाश" के पृष्ठ–१५१वें में लिखते हैं कि–"जो कर्म के बिना ईश्वर जन्म दे तो वह पक्षपाती हो जाता है इसलिए ईश्वर कभी भी बिना जीवात्मा के कर्म किये और उनके प्रकारों को जाने विभिन्न योनियों में जन्म नहीं दे सकता ईश्वर सबका पिता है वह कभी अन्याय एवं पक्षपात नहीं कर सकता।' मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट,–पतंग आदि में न्यूनाधिक सुख-दुख आदि सब इन्हीं आत्माओं के अपने–२ कर्मफल ही हैं।" इसका आशय यह है कि जो आत्माएं सार्वजनिक, सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक जीवन में एक निष्ठ ईश्वरीय व्यवस्थानुरूप आचरण करते हैं वे दण्ड पाने से अर्थात् दुख पाने से बच जाते हैं एवं जो आत्माएं ईश्वरादेश पर चलकर अन्यों को भी ईश्वर के आदेश के अनुसार चलाकर ईश्वरीय व्यवस्था में अपना योगदान देते हैं वे दण्ड से तो बच ही जाते हैं, साथ ही ईश्वरीय पारितोषिक स्वर्ग (विशेष सुख) भी साथ में प्राप्त करते हैं।

(९) वर्णाश्रम व्यवस्था एवं आर्य–अनार्य समीक्षा:–

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एव आर्य अनार्य सब गुण, कर्म, स्वभाव वाची उद्‌बोधन है। इस देश का नाम आर्यावर्त इसलिए है कि इस देश से ही आर्य लोग विदेशों में गये एवं आर्यत्व अर्थात् धर्मोपदेश का प्रचार एवं प्रसार किया। "आर्य का आशय उत्तम गुण, कर्म, स्वाभावी, श्रेष्ठ विद्वान, देवता होता है। साथ ही इसके विपरीत राक्षस, पिशाच, असुर, दस्यु, मूर्ख एवं अविद्वान "अनार्य" कोटि में आते हैं। लेकिन यह गुण कर्म स्वभाव से ही निर्णायक होते हैं जन्म से नहीं।

(१०) भारतीय इतिहास में आर्य अनार्य के अनैतिहासिक षड्यन्त्र प्रतिवाद

विश्व में ऐतिहासिक साक्ष्यों के द्वारा इस देश को आर्यो का निवास मूल आर्यावर्त के रूप में सिद्ध करने वाले सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ही थे। उनका साक्ष्याधार वैदिक साहित्य एवं आर्यों की संस्कृति का अंग वर्णाश्रम व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था एवं सोलह संस्कारों का प्रचलन एक मात्र भारत में ही होना है। आर्यो की देव वाणी संस्कृत भाषा एवं उसका साहित्य आदि का विश्व में अन्यत्र सर्वथा अप्राप्त होना है। महर्षि दयानन्द ने प्रबलतम सिंहनाद करते हुए विदेशियों को जो अपने को तो आर्य सिद्ध कर रहे थे एवं भारतीयों में आर्य, अनार्य (देशी-विदेशी) का घातक संघर्ष-जनक भेद डाल रहे थे का मुंहतोड़ प्रतिवाद किया (ताकि भारतीयों में फूट न पड़े) वे लिखते हैं कि– "ऐसा किसी संस्कृत ग्रन्थ में लिखा ही नहीं है कि आर्य लोग ईरान अथवा अन्य किसी देश से आये एवं यहाँ के जंगली (द्राविण, कोल भील आदि) मूल निवासियों को मार करके एवं विजयी बनकर यहां के शासक बने। यह कल्पित एवं निराधार विदेशियों का लिखा इतिहास मान्य कैसे हो सकता है? जबकि वैदिक साहित्य में तो स्पष्ट लिखा है कि–

१–आर्यवाचो म्लेच्छवाच: सर्वेते दस्यव: स्मृता ॥

२–म्लेच्छदेशास्त्वत: पर: ॥

अर्थात् जो आर्यावर्त देश से भिन्न देश हैं वे दस्युदेश, म्लेच्छ देश कहाते हैं। दुर्भाग्य से भारतीय इतिहास के पृष्ठों में (अंग्रेजों के जूठन चाटने वालों ने) हम आर्यों को विदेशी सिद्ध करने वाला कल्पित इतिहास पढ़ाया जाना ही उचित मान रखा है। आज भी भ्रष्ट विदेशीपन का फूट डालने वाला इतिहास भारतीयों में पढ़ाया जा रहा है। परिणामत: दक्षिण भारत में हिन्दी विरोध, भगवान राम एवं कृष्ण आदि महापुरुषों का अपमान, रावण विजय पर्व मनाया जाना, रामायण विरुद्ध "कीमायण" का लेखन होना–परिणाम में समक्ष आ रहा है। दक्षिण भारतीय लोग भी आर्यों की ही संतान है–इस सत्य को इस विदेशी इतिहास ने सर्वथा भुला दिया। इसी का परिणाम–दक्षिण भारतीय लोग उत्तर भारत के आर्यों को विदेशी मानकर अपने ही अनुजों के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं। वे अपनों को आर्य न मानकर अनार्य (द्राविण, भील, कोल, सन्थाल) की सन्तान मान रहे हैं। साथ ही रावण को इसी वंश का जन्मा मानकर अपना अपना महापुरुष मान रहे हैं तथा राम को विदेशी शत्रु। ये सब वर्तमान में पढ़ाया जाने वाला पाश्चात्य जनों का लिखा इतिहास का ही परिणाम है। भारतीयों को उनका ही इतिहास देशी, विदेशी रूप में विभाजित करके परस्पर फूट विद्रोह एवं संघर्ष जनक के रूप में फंसाकर पृथकतावाद की ओर ले जा रहा है। इसी भविष्यत पृथकतावादी संघर्ष जनक दुष्परिणाम को देखते हुए युगदृष्टा महर्षि दयानन्द जी महाराज ने इस इतिहास का प्रबलतम प्रतिवाद किया था। दुर्भाग्य से उस युगदृष्टा की भविष्य वाणी, दिग्दर्शन की अवहेलना करके धृष्ट इतिहास वेत्ताओं (जिन्होंने निराधार काल्पनिक अंग्रेजी इतिहास को सत्य समझा) एवं अंग्रेजों के पिछलग्गू भारतीय नेताओं ने भारत को दुर्गति के कारागार पर पहुंचा दिया। यदि आज भी सामयिक दृष्टि से इस इतिहास को भारतीयों के मध्य पढ़ाया जाना बन्द न किया गया तो भारत की अखण्डता सुरक्षित न रह सकेगी।

(११) आधुनिक विज्ञान के सूत्रधार–महर्षि दयानन्द :–

महर्षि दयानन्द ने प्रचलित विज्ञान के क्षेत्र में खगोल शास्त्र ज्योतिष शास्त्र, गणित शास्त्र, भूगर्भीय, रसायन विज्ञान आदि की भ्रामक मान्यताओं का सप्रमाण प्रतिवाद करके सिद्धान्तत: क्रियात्मक दिग्दर्शन दिया।

[क्रमशः]

विचार-विमर्श

यज्ञों में एकरूपता आवश्यक है

[डा० काशीनाथ शास्त्री, गोंदिया महाराष्ट्र]

आर्य समाज के यज्ञों में भिन्नता सर्वत्र पायी जाती है। यहां तक कि यदि एक नगर में कई आर्य समाजें हैं तो उनकी भी यज्ञ-पद्धति में भिन्नता है। किन्हीं भी दो आर्य समाजों की यज्ञ पद्धति एक समान नहीं है। यदि ध्यान पूर्वक देखा जाय तो कुछ न कुछ भिन्नता सब में मिलेगी।

यज्ञ के मन्त्रों के आदि में कहां पर ओ३म् का प्रयोग करना और कहां पर न करना यह विद्वानों में विवाद का विषय बना हुआ है। अतएव सर्वप्रथम हमें ओ३म् के प्रयोग पर ही विचार करना है। इस विषय में अधिकांश विद्वानों ने निम्नलिखित मत प्रकट किये हैं :—

(१) जहां जैसा है वहां वैसा करना चाहिए अर्थात् महर्षि दयानन्द ने जहां पर ओ३म् लगाया है वहां पर लगाना चाहिए। जहां पर नहीं लगाया है वहां पर नहीं लगाना चाहिए। उदाहरणार्थ—ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना और स्वस्तिवाचन एवं शान्तिकरण के मन्त्रों के बोलने से पूर्व केवल प्रथम मन्त्र के आदि में ओ३म् लगावें। शेष मन्त्रों के आदि में ओ३म् लगाकर मन्त्रों का उच्चारण न करें। इसी प्रकार ब्रह्म यज्ञ [संध्या] में भी करना चाहिए। जैसे—अघमर्षण मन्त्र तीन हैं। तीनों मन्त्रों के साथ आदि में ओ३म् लगाने की आवश्यकता नहीं है अपितु केवल प्रथम मन्त्र के साथ ओ३म् लगाकर मन्त्रोच्चारण करें। मनसा परिक्रमा तथा उपस्थान मंत्रों के भी प्रथम मन्त्र के आदि मे ओ३म् लगाकर उच्चारण करें।

(२) यदि वेद पारायण करने वाला किसी कारण से बीच में रुक जाय, या अन्य कर्म करने लगे और कुछ मन्त्र से भिन्न वचन बोलने लगे तो पुनः मन्त्र का पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व ओ३म् का उच्चारण अवश्य करें।

(३) मन्त्र पाठ के बाद में आपने मन्त्र से भिन्न अथवा इदं न मम या अन्य कुछ वाक्य भी बोला हो तो पुनः मन्त्रोच्चारण से पूर्व ओ३म् का उच्चारण अवश्य करें। क्योंकि मन्त्र से भिन्न जो कुछ भी बोला जाता है उससे मन्त्र पाठ का क्रम भंग हो जाता है।

सम्भवतः ये निष्कर्ष आर्य विद्वानों ने महर्षि की संस्कार विधि के के आधार पर निकाले हैं। किन्तु खेद का विषय है कि आर्य विद्वानों के ये निष्कर्ष संस्कार विधि से मेल नहीं खाते उदाहरणार्थ :—

(१) संस्कार विधि के संस्करणों में स्वस्तिवाचन और शांतिकरण के प्रथम मन्त्र के भी आदि में ओ३म् नहीं लगा। सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित 'यज्ञ पद्धति प्रकाश' में भी इन मन्त्रों के प्रथम मन्त्र के आदि में ओ३म् नहीं लगा। [देखिये 'यज्ञ पद्धति प्रकाश' का द्वितीय प्रामाणिक संस्करण पृष्ठ ९ व १४]।

(२) गर्भाधान संस्कार में मात को ६ आहुति देने के पश्चात जिन ९ मन्त्रों से आज्याहुति देनी है उनमें से प्रथम मन्त्र 'ओं विष्णुर्योनिं कल्पयतु......।' के आदि में ओ३म् लगा है किन्तु शेष ८ मन्त्रों के आदि में ओम् नहीं लगा जबकि प्रत्येक मन्त्र के अन्त में स्वाहा है, अतएव पूर्वोक्त निष्कर्षानुसार प्रत्येक मन्त्र का उच्चारण ओम् के साथ होना चाहिए। इसी प्रकार सीमन्तोन्नयन संस्कार के अनेक मन्त्रों के आदि में ओम् नहीं है जबकि उन मन्त्रों के साथ स्वाहा बोलकर आहुति दी जाती है। अन्त्येष्टि संस्कार के भी जिन १२१ प्रमुख मन्त्रों के साथ स्वाहा बोलकर आहुतियां दी जानी चाहिए उनमें भी ओम् नहीं लगा।

(३) ब्रह्म यज्ञ (संध्या) के उपस्थान मन्त्रों के प्रथम मंत्र के आदि में [संस्कार विधि में] ओम् नहीं लगा तथा संस्कार विधि के पंचमहायज्ञ विधि में लिखित उपस्थान मन्त्रों की संख्या एवं क्रम में भी भेद है।

उपरोक्त सभी विसंगतियों के परिप्रेक्ष्य में हमारे विचार से प्रत्येक मन्त्र के प्रारम्भ में ओम् का उच्चारण करने में कोई सैद्धान्तिक हानि नहीं प्रतीत होती क्योंकि प्रत्येक मन्त्र के उच्चारण की समाप्ति पर कुछ न कुछ विराम या रुकावट हो ही जाती है। भले ही ऋषि दयानन्द की संस्कार विधि में अनेक यज्ञ मन्त्रों के अन्त मे स्वाहा लगा होने पर भी मन्त्र के प्रारम्भ में ओम् न लगा हो, परन्तु ऋषि का मंतव्य यही ज्ञात होता है कि प्रत्येक मन्त्र के प्रारम्भ में ओम् बोला जाय। मन्त्रों के पाठ के तारतम्य या प्रवाह में प्रत्येक मंत्र के प्रारम्भ में ओम् का उच्चारण सुविधाजनक भी है। विसंगतियों पर हम क्रमशः अन्य लेखों में संक्षिप्त प्रकाश डालेंगे।

हमारा उद्देश्य ऋषि दयानन्द की संध्या और यज्ञादि की पद्धतियों मे विसंगतियां ढूंढ़ निकालना नहीं है और न हमारे विचारों से सहमति ही आवश्यक है जो हमने सुझाव के रूप में ऊपर दिये हैं। हम केवल यह चाहते हैं कि एक बार सार्वदेशिक सभा के विद्वान परोपकारिणी सभा के विद्वान और उन उन संस्थानों के आर्य विद्वान जो ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रति से मिलान करके संध्या और यज्ञ की पद्धति प्रकाशित करने का दावा करते हैं, परस्पर में विचार-विमर्श करके संध्या और यज्ञ पद्धति पर पुनः निर्णय लें और एक ऐसी पद्धति पुस्तक तैयार करें जो सर्वमान्य हो। साथ ही उसमें ऐसे सरल और स्पष्ट निर्देश हों कि उस पद्धति के अनुसार संध्या और यज्ञादि के करने में कहीं भी कोई विसंगति न हो सके अपितु सर्वत्र एकरूपता रहे जैसे कि ईसाईयों और मुसलमानो की प्रार्थना या नमाज में सारे संसार में एकरूपता है। यदि सभी सम्बन्धित आर्य विद्वानों का एक स्थल पर एकत्रित होना और सर्वसम्मति से कोई निर्णय लेना सम्भव न हो तो सार्वदेशिक धर्मार्य सभा ही पुनः एक पद्धति सरल व स्पष्ट निर्देशों सहित तैयार करें। तदनन्तर अन्यत्र जहां कहीं भी संध्या और यज्ञ पद्धति हो उसी के अनुसार हो।

आर्य समाज

आर्य वीर दल उ० प्र० के अधिष्ठाता श्री देवन सिंह के बच्चों का उपनयन संस्कार श्रावणी को पं० सत्यदेव जी शास्त्री ने पढ़ाया जिसमें जनपद के सम्भ्रान्त आर्य पुरुष, जिला सभा के प्रधान, प्रमुख समाज के पुरोहित अधिकारी, हांसीपुर कालेज के अधिकारी आदि उपस्थित थे। श्री देवन सिंह ने १०१ रुपया आर्य समाज बगहा, १०१ रु० हांसीपुर कालेज, ५१ रु० वेदूवीर मेला प्रचार समिति तथा प्रत्येक उपस्थित आर्य समाज को पचीस-पचीस रुपये दान दिया।

माननीय प्रधान मन्त्री से विनम्र निवेदन

नायक मेरे सादर नमन स्वीकार कीजिए।
चलकर कहां पहुंचे हैं कुछ विचार कीजिए ॥
मैने सुना इक्कीसवीं सदी मे जा रहे।
तैयारियों की सूची अभी से सजा रहे ॥

लेकर के साथ चलेंगे क्या इतनी विषमता।
भारत में मुखर आज जो पाश्चात्य सभ्यता।
नैतिक पतन की ओर लगातार बढ़ रहे।
शासन की दृष्टि में प्रगति की सीढ़ी चढ़ रहे।

चालीस साल हो रहे हिन्दी उदास है।
अपनी धरा पर ही यहां हिन्दू हतास है।
बगाल, तमिलनाड, आन्ध्र, केरला, पंजाब।
हिन्दी विरोधी आज भी है इसका कुछ जवाब ॥

आसाम, नागालैण्ड, मिजोरम में आज भी।
अपनी स्वराष्ट्र भाषा ही पहुंची नहीं अभी।
तकनीकी आर्थिक विकास शान राष्ट्र की।
अलगाव व आतंक ही पहचान राष्ट्र की ॥

मुरझाये भरे सावन आज कितने ही उपवन।
शिक्षा की रौशनी अभी पहुंची नहीं आंगन।
तन ढकने के लिए तरस रहे यहां कितने।
होटल मे प्लेट धो रहे हैं लाड़ले कितने ॥

उनमे भी बात पूछिए इक्कीसवीं सदी की।
हर वर्ष जो है नाप रहे बाढ़ नदी की।
कुर्सी के पीछे नाग विषैले हैं पल रहे।
विघटन व राष्ट्र द्रोही तत्व फूल फल रहे ॥

स्वाधीन राष्ट्र का भला यह कैसा सवेरा।
छाया हुआ अभी यहां घनघोर अंधेरा।
भगवान राम कृष्ण की यह प्यारी जन्मभूमि।
ऋषियो की शुचि तपस्थली वीरों की कर्मभूमि ॥

सन्देश देता वेद जहां विश्वशान्ति का।
वातावरण बना हुआ है आज भ्रान्ति का।
अतएव मेरी प्रार्थना पर ध्यान दीजिए।
हे माननीय! बात मेरी मान लीजिए ॥

संसद को रंगमंच न अभिनय का बनायें।
सद्विचार बुद्धि जीवियों के अपनायें।
नागों को और अधिक दिन न दूध पिलायें।
स्वार्थों के सृजन में न राष्ट्र धर्म भुलायें ॥

शिक्षा की नई नीति में सुधार कीजिए।
यों संस्कृत का न तिरस्कार कीजिए।
राणा प्रताप, शिवा को सम्मान दीजिए।
भूषण को पाठ्यक्रम में स्थान दीजिए ॥

महान् दयानन्द

विश्व का महान दयानन्द।
भारत की शान दयानन्द।
भारत सुधारक दयानन्द।
आर्यों का उद्धारक दयानन्द ॥
दलितों का मसीहा दयानन्द।
धर्महित कष्ट सहा दयानन्द।
सत्य का प्रकाशक दयानन्द।
असत्य का निवारक दयानन्द ॥
प्रबल वेद प्रचारक दयानन्द।
आर्य धर्म प्रसारक दयानन्द।
एकेश्वर उपासक दयानन्द।
निराकार समर्थक दयानन्द ॥
साकार विरोधक दयानन्द।
या (साकार अवरोधक दयानन्द)
आडम्बर निरोधक दयानन्द।
सत्य मार्ग दिखाया दयानन्द ॥
वेद पाठ सिखाया दयानन्द।
नारी शुभचिन्तक दयानन्द।
भारत हितचिंतक दयानन्द।
सत्य अहिंसक प्रभु भक्त दयानन्द ॥
हिन्दी, हिन्द, वेद भक्त दयानन्द।
'जिज्ञासु' का पथ प्रदर्शक दयानन्द।
आर्यों का मार्गदर्शक दयानन्द ॥

—ब्रह्मानन्द जिज्ञासु अतरवह, मुजफ्फरनगर

मिटते जा रहे हैं

हो रहा सर्वत्र परिवर्तन,
सबको प्रभावित कर रहा परिवर्तन।
प्राचीनता का हो रहा विसर्जन,
नवीनता का हो रहा दर्शन।
हमारे आदर्श मिट रहे हैं,
उसके स्थान पर दूषित विचार आ रहे हैं।
नैतिकता का होरहा अवमूल्यन,
बाह्य वैभव का हो रहा प्रदर्शन।
पता नहीं हम किधर जारहे हैं,
प्रगति के नाम पर मिटते जा रहे हैं।

—डा० शकुनचन्द आर्य लालगंज (रायबरेली)

भारत में साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए।
भारत अखण्ड एक हो इस भाव के लिए।
सीमाओं की सुरक्षा आन बान के लिए।
हिन्दी व हिन्दू राष्ट्र के उत्थान के लिए ॥
सर्वस्व होम करने का संकल्प चाहिए।
प्रियदर्शिनी सा कोई विकल्प चाहिए।
अब लौह कवच नहीं 'लौह पुरुष' चाहिए।
इक्कीसवीं सदी नहीं युग पुरुष चाहिए ॥

—शिवकुमारसिंह, 'रैकवार' धुरकी कैसरगंज, (बराइच)

संस्कृत का प्रश्न

श्री अभयदेव शर्मा एम० ए०, पी० एच डी०
अध्यक्ष वेद संस्थान (संस्कृत विभागाध्यक्ष - राजकीय महाविद्यालय
अजमेर

[गतांक से आगे]

फिर संस्कृत तो सहस्रों वर्षों से इस देश की मनीषा को स्वर देती रही है। जन इसे बोलता रहा है। जन का मन इसमें सोचता रहा है। इसे मरने कैसे दिया जा सकता है।

अतः न उर्दू को लात लगानी है, न संस्कृत को कोने में पड़े रहने देना है। गुलाम दस्तगीर संस्कृत से इसलिए नहीं चिपटे हुए हैं कि वह इस्लाम की भाषा है। लन्दन के दो स्कूलों के बच्चे-बच्ची इसलिए संस्कृत अनिवार्यतः नहीं पढ़ रहे कि उससे उन्हें अजीविका मिलेगी अमेरिका के कम्प्यूटर इंजीनियर संस्कृत पर इसलिए मुग्ध नहीं हैं कि यह कालिदास के "शाकुन्तल" की मुग्ध मधुर वाणी है। ये सब "निष्कारण" इस अन्तर - राष्ट्रीय भाषा के प्रति आकृष्ट हैं क्योंकि संस्कृत किसी देश विशेष की, काल विशेष की, समुदाय विशेष की प्रयोजन विशेष की भाषा नहीं है। यह तो मात्र संयोग है कि सिमटते-सिमटते वह भारत में कुछ "अधिको विशेषः" बच रही है। पर यदि यह भारत से भी सिमट चुककर अफगानिस्तान में बच रहती तो भी इसकी अन्तर राष्ट्रीय महत्ता वह की वही रहनेवाली थी जो अन्यथा आज है। क्यों ? इसलिए, कि संस्कृत मानव की प्राचीनतम, आज भी उपलब्ध वाक् है। इस पुरखिन, बुढ़िया वाक् से मानव मात्र कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में जुड़ा हुआ है। यह "पुराणी युवतिः" है। इसका ओम्" "अमीन" बना नए-पुराने टेस्टामेण्ट में, "कुरआन" में मौजूद है, जैन बौद्ध जपवाक्यों में धरा हुआ है। इसका "मनु" "नूह" की नौका में है, इसका "मनुष्य" "मैन" में है इसका "ब्रह्मा" "इब्राहीम, अब्राहम" में है, इसकी "मातृ" "माता, मदर" मे है। मनुष्यजाति का जो एक समान मूल उत्स है उसकी प्रतिनिधि भाषा होने से संस्कृत सबकी भाषा थी, है, रहेगी।

(४) अतः "संस्कृत को लोकप्रिय कैसे बनाया जाय", इस जिज्ञासा का समाधान कुछ निम्नलिखित दिशाओं में खोजना चाहिए, बजाय सरकार से मुष्टा-मुष्टि करने के।

(१) संस्कृत को हिन्दुओं की, हिन्दुओं के धार्मिक कर्मकाण्ड की भाषा के रूप में प्रस्तुत करना तुरन्त बन्द किया जाय। भाषा भाषा है, वह तो हर किसी विषय की वाहिका बन सकती है चाहे मन्दिर हो या मदिरालय। संस्कृत का देश-कालातीत जो अन्तर्राष्ट्रीय सार्वमानवीय पक्ष है उसे ही उजागर किया जाना चाहिए ताकि सब धार्मिकादि समुदाय, अपने-अपने समुदाय के प्रति अपनी निष्ठा को शिथिल करने की कीमत पर संस्कृत के प्रति आकृष्ट होने की सीमा को अनुभव न करें। आज मानव कराह रहा है। उसके मर्मों पर कारगर मरहम अध्यात्म ही है, ध्यान दें अध्यात्म, न कि कर्मकाण्डपरक, तथाकथित धर्म-समुदाय और इस अध्यात्म को प्राचीनतम, श्रेष्ठ माध्यम है संस्कृत जिस अध्यात्म का पुट पाने के लिए आधुनिक भौतिक विज्ञानशाखायें तक उत्सुक हो रही हैं। संस्कृत-रूप बिन्दु पर प्राचीन संसार के सब आध्यात्मिक सिद्ध जन समन्वित हो जाते हैं, बौद्ध रहस्यवाद और औपनिषद तत्वज्ञान, सूफी रहस्य और जैन विज्ञान कणादि का परमाणु सांख्य की प्रकृति, भौतिक विज्ञान का "पार्टिकल"–सब जिस एक वाचिक बिन्दु पर मिलकर "एक" हो जाते हैं (अत्र विश्वं भवत्येक नीडम्) वह बिन्दु संस्कृत है। संस्कृत की इस महानता को खूब-खूब उजागर किया जाना चाहिए। संस्कृत भाषा और उसके वाङ्गमय की समीक्षा इस "अन्तर-राष्ट्रीय" दृष्टिकोण से करने के लिए ढेरों लेख और ग्रन्थ प्रकट होने चाहिए। अखिल मानवता का केन्द्र बिन्दु संस्कृत है, इस घोषणा से सारा भूमण्डल संस्कृत को अपनी भाषा समझने लगेगा। यही है "संस्कृत को विश्व भाषा बनाना", यह नहीं कि संस्कृत पुनः मनुष्य-मात्र की बोलचाल की या माता की भाषा बनकर ही "विश्वभाषा" बन पाएगी, वेद संस्थान के तो तीन उद्देश्यों में से द्वितीय उद्देश्य ही है "संस्कृत को विश्व भाषा बनाना"। अस्तु।

(२) संस्कृत को अपनी-अपनी पारिवारिक संस्कृति का अँग बनाना। हर परिवार में सदस्यों को संस्कृत का ज्ञान होना ही चाहिए जैसे समाज में आये दिन नये-नये फैशन प्रचलित होते रहते है, वैसे संस्कृत का ज्ञान पढ़े-लिखे सुसंस्कृत सुसभ्य जन की एक साधारण पहचान बन जानी चाहिए। "संस्कृत स्वयशिक्षक"-कोटि की पुस्तकों से यह काम आरम्भ होना चाहिए। अशंकालिक, अल्पदिवसीय "रिफ्रैशर" पाठ्यक्रम चलें। अनोपचारिक परीक्षायें दिलवाई जायें।

(३) और, सबसे मुख्य बात यह है कि संस्कृत जाननेवाले में स्वगौरव का भाव होना चाहिए। संस्कृत पढ़ने वाले बच्चे से यदि पूछा जाय कि तुम क्या विषय पढ़ते हो वह गौरव के साथ, सबसे पहले संस्कृत का उल्लेख कर पाए, पीछे अन्य विषयों के नाम गिनाए, समाज में यह स्थिति लाने का लक्ष्य रखा जाना चाहिए।

(४) संस्कृत की साहित्यिक शैली को पढ़ाने के बजाय, बोल-चाल की संस्कृत को सीखने सिखाने की नीयत रहनी चाहिए। साहित्य तो बाद की चीज है। भाषा तो होती वह है जो बोली जाय। त्रुटि करना अशुद्ध बोलना, यह तो स्वाभाविक है। गलतियां करना विद्यार्थी का जन्मसिद्ध अधिकार है। पर मंशा गलतियों को दूर करने की रहे। अध्यापक के सामने गलतियां करना बेहतर है, बजाय बाद में गैरों के समने करने के। संस्कृत के पढ़ने वाले, पण्डितों की टोकाटाकी से घबराकर भाग जाते हैं, क्योंकि पण्डित "किताबी" सस्कृत पढ़ाता और बोलता है, न कि बोल-चाल की। अतः बोल-चाल की संस्कृत सिखाने के लिए अल्पदिवसीय कैम्पों की बाढ़ आनी चाहिए। आजकल तो भाषा सीखने के बड़े वैज्ञानिक तरीके इजाद हो रहे हैं। जर्मनी फ्रांस, रूस, जापान जाने वाले लोग ३-४ मास का कोर्स करके उन देशों में सारा वाग्व्यवहार करने लगते है पर पण्डित आज भी बारह वर्षों में, और वह भी, व्याकरण पढ़ाता है। कोरे व्याकरण से वाग्व्यवहार नहीं सीखा जा सकता। बोलने की झिझक जाती है बोलने से। और बोलने के लिए साथ बोलने वाला चाहिये, ऐसा जिसके आगे गलत बोलने पर झेंपना न पड़े, वरन् गलतियां धड़ाधड़ दूर होती जाएं आज तो संस्कृत विद्यालयों से निकले अधिकतर शास्त्री, आचार्य भी शुद्ध धाराप्रवाह संस्कृत नहीं बोल पाते, अंग्रेजी ढंग के महाविद्यालयों के संस्कृत प्राध्यापकों की तो बात ही दूर है।

(५) उपर्युक्त दिशाओं की दिशा में सोचना स्वस्थ और विधायक सकारात्मक चिन्तन होगा। घिसे-पिटे पुराने ढंगों से संस्कृत की व्याप्ति दुष्कर है, गुरुकुलों, पाठशालाओं में रामः रामौ रामाः भले ही होता रहे। नकारात्मक चिन्तन छोड़ना होगा, जिसका सर्वप्रमुख स्वर होता है सरकार यह करे, सरकार वह करे। क्यों करे ? सरकार संस्कृत वालों के लिए ही है क्या और भी तो ढेरों प्राचीन भाषाएं हैं। फारसी अरबी, लैटिन, ग्रीक–ये भी क्यों न पढ़ाई जायें मुसलमान उर्दू के साथ अरबी फारसी पढ़े, ईसाई अंग्रेजी के साथ ग्रीक लैटिन पढ़ें, जैन प्राकृत पढ़ें, बौद्ध पाली पढ़ें, हिन्दू संस्कृत पढ़ें–क्या यह भाषिक वर्ग विभाजन

[शेष पृष्ठ ८ पर]

फीजी की मूल समस्या और उसका समाधान

लेखक डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी प्रधान सम्पादक स्वामी केशवानन्द योगपत्रिका

समस्त विश्व में समय के निर्धारण के लिए निर्धारित मध्याह्न रेखा अर्थात् ग्रीनविच लाइन के आधार पर फीजी विश्व की पूर्व रेखा पर स्थित सूर्योदय का देश है। फीजी देश ३६० द्वीपों का समूह है, अतः इसे केवल फीजी न कहकर फीजी द्वीप समूह कहना बहुत उचित है। इसकी स्थिति भूखण्ड के दक्षिणी गोलार्द्ध में न्यूजीलैण्ड से उत्तर एवं आस्ट्रेलिया से पूर्व में है। जैसा कि इसके फीजी द्वीप समूह नाम से ही स्पष्ट है इस देश की स्थल सीमा किसी भी अन्य देश की स्थल सीमा को स्पर्श नहीं करती है।

तीन सौ साठ द्वीपों में बंटे हुए इस छोटे से देश में अनेक द्वीप ऐसे भी हैं जहां एक भी व्यक्ति स्थाई रूप से निवास नहीं करता। वहां खेती के काम से नौका द्वारा लोग प्रातः काल जाते हैं और अपना कार्य पूरा करके सायंकाल तक अपने घर लौट आते हैं। इस देश की अधिकांश आबादी केवल दो मुख्य द्वीपों में बसी हुई है, जिन्हें वीतीलेवू और वनुआलेवू कहा जाता है इनमें भी वीतीलेवु मुख्य है सुदीर्घ लम्बाई में फैले हुए इस द्वीप में ही देश की राजधानी सुवा और देश का प्रधान अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा नांदी स्थित है। विगत कुछ वर्षों से सुवा में स्थित हवाई अड्डे का विस्तार करके इसे भी अन्तर्राष्ट्रीय यातायात के लिए खोल दिया गया है।

यातायात के साधन के रूप में यहाँ कार बसें और वायुयान का ही प्रयोग होता है। वर्ष १९८० में जब मैंने फीजी की यात्रा की थी साइकिल मोटर साइकिल तथा स्कूटरों की संख्या नहीं के बराबर थी प्रायः प्रत्येक उच्च मध्यम वर्गीय परिवार के पास कार, मैटाडोर, अथवा वैन अवश्य है। वायुयान से यात्रा भी बहुत मंहगी, अथवा मध्यम वर्गीय परिवार की पहुंच से नहीं है। आन्तरिक उड़ानों में प्रयाग किये जाने वाले विमान प्रायः बहुत छोटे होते हैं, सात से पन्द्रह बीस सीटों वाले ही। जिन्हें केवल एक चालक चलाता है। उसके साथ कोई और सहायक अथवा परिचारक परिचारिका नहीं होते। सह चालक की सीट का यात्रियों के बैठने के लिए उपयोग होता है। मैंने प्रायः सहचालक की सीट का उपयोग किया है।

इस द्वीप समूह की जनसंख्या आठ लाख के लगभग है। जिसमें उनचास प्रतिशत भारतीय एवं छियालीस प्रतिशत काईबोती मूल के हैं। शेष पांच प्रतिशत जनसंख्या में अन्य विदेशी आते हैं जिनमें चीन हिन्द चीन न्यूजीलैण्ड अथवा आस्ट्रेलिया आदि के लोग हैं।

इस द्वीप समूह में तीन भाषाओं का प्रयोग मुख्य रूप से होता है हिन्दी काईबोती और इंग्लिश। शिक्षा कार्य रेडियो प्रसारण और अन्य सरकारी कार्य प्रायः तीनों भाषाओं में समान रूप से होते हैं, यद्यपि सम्पर्क भाषा के रूप में इंग्लिश का प्रयोग अब निरन्तर बढ़ता जा रहा है। इसके पीछे परस्पर सीधा सम्पर्क बन सकने की भावना कारण है।

समुद्र से चारों ओर से घिरा होने के कारण यहां का जलवायु समशीतोष्ण है, वर्षा प्रायः साल भर होती रहती है। यदि कभी दस पन्द्रह दिन वर्षा न हो तो लोग सूखा पड़ने की कल्पना करने लगते हैं, क्योंकि सम्पूर्ण कृषि इस वर्षा पर ही निर्भर है।

यहां की मुख्य कृषि उपज गन्ना और धान है यद्यपि कुछ दूरदर्शी कृषकों ने व्यापारिक दृष्टि से कृषि करना प्रारम्भ कर दिया है। ये कृषक तीन चार और पांच महीने के बाद होने वाले तरबूज आदि फलों अथवा सब्जियों की आवश्यकता का अनुमान करके ऐसे समय उन फलों अथवा सब्जियों को बोते या पौध लगाते हैं जिससे उस समय उनकी फसल तैयार हो जब उनकी मांग अधिक हो। उदाहरण के रूप में २५ दिसम्बर बड़े दिन अथवा पहली जनवरी को नव वर्ष पर उपहारों का आदान प्रदान करने में तरबूज की खपत अधिक होगी यह अनुमान करके दो महीने पूर्व बोकर उस समय तरबूज का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में कर लेते हैं, उन्हें सीधे स्वयं बाजार में पहुंचाते हैं, अथवा आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड देशों को निर्यात करते हैं, और इस प्रकार पर्याप्त धन अर्जित कर लेते हैं।

पर्यटन उद्योग यहाँ का मुख्य उद्योग है, और यही इस देश की विदेशी मुद्रा की आवश्यकता को पूरा करता है। अत्यन्त रमणीक होने के कारण पूरे साल यहाँ विदेशी पर्यटक आते रहते हैं।

यह द्वीप समूह समुद्र के गर्भ से कब बाहर आया अथवा इस द्वीप समूह पर मानव के प्रथम चरण कब पड़े इसका प्रामाणिक इतिहास प्राप्त नहीं है। किन्तु लोगों की धारणा है कि लगभग सात सौ वर्ष पूर्व कुछ अंग्रेज साहसिक यात्रियों ने इस रमणीक द्वीप को देखा था उन्होंने इसे आबाद करने के उद्देश्य से अफ्रीका की नीग्रो जाति के लोगों को यहाँ लाकर उनके माध्यम से यहां खेती करने का प्रयत्न किया था। किन्तु इस जाति के स्वभाव से आलसी होने और उनमें कुछ सीखने की प्रवृत्ति न होने के कारण उन्हें इसमें सफलता नहीं मिल सकी और कालान्तर में वे इन लोगों को यहीं छोड़कर वापस चले गये।

[पृष्ठ ७ का शेष]

संस्कृत का प्रश्न

कराने पर तुले हैं, नहीं, सरकार तात्कालिक उपयोगिता को देखेगी। उसे बहुमत के वोट चाहिए। कोई सरकार 'हाराकीरी' नहीं करेगी। कितने ही आन्दोलन कीजिए, कितना ही शोर मचाइये, कितना ही गिड़गिड़ाइये, कितनी ही दुहाई दीजिये, इक्कीसवीं शती में प्रवेशेच्छुक भारत सरकार कम्प्यूटरों की चिंता करे या संस्कृत की, जनसंख्या रोकने की जोड़ तोड़ करे या संस्कृत की। दूरगामी फलों के आकर्षण परीक्षण के लिए सरकार में फुर्सत किसे है?

फिर आखिर मासूम बच्चों पर कितनी भाषायें लादना चहेंगे?

हिन्दी पढ़ें अंग्रेजी पढ़े, राजनीतिक सौदेबाजी के कारण एक और आधुनिक भाषा पढ़ें। पुरानी भाषा भी पढ़े—जिसे न मास्टर बोले न चेला। लोक तो व्यावहारिकता पर चलता है। आज के माहौल में तो केवल एक भाषा अनिवार्य बनकर रह गई है—अतः सब माता पिताओं अभिभावकों, विद्यार्थियों का झुकाव उसकी ओर है। सच्चाई तो यह है कि विद्यार्थी को अंग्रेजी के अलावा, हिन्दी, कन्नड़ सब फालतू बोझ प्रतीत हो रही है क्योंकि उनकी अनिवार्यता लोक के व्यवहार में सतत घटती जा रही है। "व्यावहारिकता" युगधर्म है। इसमें संस्कृत फिट नहीं हो पा रही है।

(६) संस्कृत बचेगी अवश्य। हम नहीं तो वैदेशिक, भारत नहीं तो अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी: संस्कृत को बचानेवाले तो हैं। भारत सरकार यदि संस्कृत को नहीं बचा सकती तो उसका यह अक्षम्य पाप इस देश को बहुत-बहुत काल तक दुष्फल चखाएगा। उसका दुर्भाग्य। पर सरकार देश नहीं है अतः सरकार पर आपका बस नहीं चल पा रहा तो कोई बात नहीं। जनता का दरबार तो मौजूद है।

आर्य समाज क्या ?

(लेखक : श्री ज्येष्ठ वर्मन, बम्बई)

[गतांक से आगे]

लेकिन वहां कई निष्पक्षपाती लोग भी उपस्थित थे और वे स्वामी दयानन्द से बहुत प्रभावित हुए। अंग्रेजी समाचार पत्र हिन्दू पेट्रियट के संवाददाता ने जनवरी १७, १८७० के अंक में इस बारे में लिखा था कि स्वामी दयानन्द को सुनने के बाद हमें विश्वास हुआ है कि भारत का स्वर्ण युग अभी समाप्त नहीं हुआ है।

धरमसी जोमजी और पंडित जयकृष्ण जीवनदास व्यास ने स्वामी दयानन्द की अद्वितीय, विद्वता, और व्यक्तित्व को प्रत्यक्ष देखा और उनसे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने समझा कि वल्लभाचार्यों के विरुद्ध अपनी लड़ाई में स्वामी दयानन्द से बहुत सहायता मिलेगी और अपनी वेद सभा के कार्यक्रमों को भी विशेष गति मिलेगी। इसलिए उन्होंने स्वामी दयानन्द को बम्बई आने के लिए निमंत्रित किया। इस घटना के पांच साल बाद स्वामीजी महाराज ने बम्बई आने के लिए समय निकाला। उनके यहां आने के एक मास पूर्व गुजराती पत्रिका "आर्य मित्र" में काशी शास्त्रार्थ का सार भी छपा था। इसके लेखक थे सेवकलाल करसनदास जी।

स्वामीजी महाराज के बम्बई आने पर उनका स्वागत करने वाले और उनका आतिथ्य आदि सेवा करने वाले मुख्य रूप से वेद सभा के ही कार्यकर्ता थे। इन लोगों ने पत्र छपवाकर स्वामीजी की बम्बई आने की सूचना यहां की जनता को दे दी थी। और निवेदन भी किया गया था कि धर्म जिज्ञासु, वेद शास्त्रों के सम्बन्ध में चर्चा करने के इच्छुक महानुभाव स्वामीजी महाराज से मिलें। स्वामीजी महाराज को बालकेश्वर में प्रणामी सम्प्रदाय के देवागर कुबेर के मठ में, जो उस समय एक प्रशांत वातावरण में था ठहराया गया था। वहां नित्य लोग आते रहे, स्वामीजी से चर्चा भी करते रहे, और उपदेश भी ग्रहण करते रहे। जब इस तरह आने वालों की संख्या बहुत बढ़ गई, तब स्वामीजी के प्रवचनादि का प्रबन्ध धोबी तालाब में स्थित फ्रेमजी कावसजी इन्स्टीट्यूट में किया गया। यह संस्था आज भी वहां है और उसमें काफी बड़ा एक पुस्तकालय भी है। इसी स्थान पर वल्लभ सम्प्रदाय के पंडितों से स्वामी दयानन्द के कई शास्त्रार्थ हुए और हर बार स्पष्ट रूप से स्वामीजी महाराज की ही जीत हुई थी। वल्लभाचार्यों के द्वारा स्वामीजी के साथ शास्त्रार्थ के लिए भेजे गये पण्डितों में पं० गट्टुलाल, पं० कमलनयनाचार्य और पं० रामलाल मुख्य थे। उनमें से कमलनयनाचार्य बिना शास्त्रार्थ के ही सभागृह से भाग गये थे। पं० रामलाल वेदों में मूर्तिपूजा सिद्ध करने आये थे, लेकिन हार स्वीकार करके चले गये थे। इन्हीं दिनों में राव साहब दादोबा पांडुरंग तरखडकर की अध्यक्षता में साठ व्यक्तियों की एक समिति बनाई गई थी और इस समिति की ओर से स्वामीजी महाराज से संस्था स्थापित करने के लिए आग्रह किया गया था। लेकिन बीच में स्वामीजी महाराज अहमदाबाद चले गये और बम्बई में उस समिति के सदस्यों को जाति बहिष्कार आदि की धमकियां मिलने लगीं। इस कारण उनका उत्साह ठंडा हो गया। लेकिन जब स्वामीजी अहमदाबाद से लौटकर फिर बम्बई आये, तब उनका उत्साह फिर से बढ़ गया और १७ फरवरी १८७५ को स्वामीजी के समक्ष सौ व्यक्तियों की एक बैठक हुई और उसमें संस्था की स्थापना करने की मांग दुबारा उठाई गई। संस्था के नाम और नियम इत्यादि पिछले बार ही निश्चित हो चुके थे। फिर ७ अप्रैल १८७५ को एक बैठक हुई उसमें आर्य समाज की स्थापना की घोषणा की गई और उसी दिन नियमानुसार पदाधिकारियों का चुनाव भी हो गया। यहां के सुप्रसिद्ध वकील गिरधरलाल दयालदास कोठारी समाज के प्रथम अध्यक्ष और पानाचन्द आनन्दजी पारेख प्रथम मंत्री चुने गये थे। स्वामीजी महाराज का नाम अध्यक्ष के लिए सूचित किया गया, लेकिन स्वामी जी ने दृढ़तापूर्वक इन्कार किया। उन्होंने केवल एक साधारण सदस्य के रूप में ही रहना स्वीकार किया और उनका नाम सदस्यों की सूची में वर्णमाला के क्रम से ही रखा गया।

इन सारे विवरणों से स्पष्ट है कि संस्था के रूप में आर्यसमाज की कल्पना स्वामी दयानन्द अकेले की नहीं थी। हिन्दू पेट्रियट ने जिस स्वर्ण युग का उल्लेख किया था, वास्तव में वह वैदिक आर्यों का युग था, जिसके स्वप्न उन्नीसवीं सदी में कई लोग देखा करते थे। बम्बई के वेद सभा के लोग भी ऐसे ही स्वप्न देखनेवालों में से थे लेकिन उस युग की स्पष्ट कल्पना और असंदिग्ध चित्र को जनता के सामने प्रस्तुत करने वाले केवल आर्य विश्व के स्वप्नदृष्टा स्वामी दयानन्द ही थे। इसीलिए उन लोगों ने स्वामीजी महाराज को को अपना नेता माना। और उस स्वप्न को साक्षात्कार करने के उद्देश्य से एक उत्तम साधन के रूप में उन लोगों ने सब मिलकर स्वामीजी के मार्ग दर्शन में आर्य समाज की स्थापना की थी। संस्था स्थापित करने का विचार स्वामीजी के मन में पहले कभी नहीं आया था—ऐसी कोई बात नहीं है। काशी शास्त्रार्थ के बाद कई लोग स्वामीजी के साथ चलने को तैयार हुए थे। लेकिन सामाजिक बहिष्कार, और धर्म बहिष्कार के डर से वे भी पीछे हट गये। यदि इन लोगों के पीछे भी कोई संस्था खड़ी होती तो शायद उनका साहस बढ़ जाता। इस सच्चाई का अनुभव स्वामीजी को अवश्य हुआ होगा और आपको अपने गुरु विरजानन्द महाराज ने किस प्रकार एक सार्वभौम सभा की योजना बनाई थी, वह भी याद थी। इसके अतिरिक्त कलकत्ता में रहते हुए स्वामीजी ने बाबू केशव चन्द्र सेन के संगठन कार्य को भी निकट से देखा ही था। उससे क्या लाभ होता है, यह भी उनको मालूम हुआ था। इसलिए स्वामी जी को आर्य समाज के रूप में संस्था कायम करने के सुझाव को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं दिखाई पड़ी थी। परन्तु जिस आर्य समाज की स्थापना उनके हाथों से होनी थी वह वास्तव में एक क्रान्तिकारी सद्विचाररूपी सागर के मंथन से उत्पन्न अमूल्य रत्न था और इस मंथन कार्य में बहुत सारे महानुभावों का योगदान था। लेकिन उनको यह भी मालूम था कि साधन भले ही कितना भी उत्तम हो, अयोग्य व्यक्तियों से उसका कोई लाभ भी नहीं होगा, फिर दुरुपयोग का भी भय रहता है इसलिए उन्होंने लोगों को सावधान भी किया था। पहिले योग्य आर्य कार्यकर्ता और विद्वान तैयार हों फिर संस्था की बात हो।

स्वामी दयानन्द जहां कहीं जाते थे वहां के जाने माने विद्वानों से अवश्य मिलते थे। और बिना पूर्वाग्रह और दुराग्रह के उन लोगों से विचार विमर्श करते थे। आप जब कलकत्ता में रहे वहां के कई बड़े प्रसिद्ध इतिहासकार, वैज्ञानिक क्रान्तिकारी समाजसुधारकों से मिले थे और जब आप बम्बई में रहे संस्कृत के बड़े पण्डित और प्रार्थना समाज के कार्यकर्ता राम कृष्ण भंडारकर, विष्णु, परशुराम शास्त्री प्रभृति लोगों से मिले थे।

[क्रमशः]

(पृष्ठ २ का शेष)

सम्पादकीय

धर्म के बिना राष्ट्रीय एकता असम्भव

(धी) विवेक पूर्वापर की चिन्तन शक्ति (विद्या) ज्ञान विज्ञान का विस्तार (सत्यम्) जीवन के हर चरण में सत्याचरण (अक्रोध) क्रोध रहित हो प्राणिमात्र के प्रति प्रेम स्नेह और सद्व्यवहार का उद्बोधन दिया है—कभी भी किसी भी सम्प्रदाय ने इनमें से किसी एक का भी विरोध नहीं किया है। विपरीत इसके हर सम्प्रदाय के निर्माण में धर्म के किसी न किसी लक्षण को आधार बनाया गया है।

दुर्भाग्य-पाश्चात्य संस्कृति के प्रवाह में प्रवाहित हमारे नेता धर्म को बिना जाने उसके प्रति घृणा दर्शाते हैं। धर्म को सम्प्रदायवादी व बिलगाववादी मानते है और धर्म पर जोर देने वाले धार्मिक संगठनों के प्रति वे कभी-कभी साम्प्रदायिकता के आरोप लगाने लगते हैं अंग्रेजियत प्रभाव के कारण धर्म के मर्म को अज्ञानता के कारण आज राजनेताओं की कथनी व करनी मे दूर का भी रिश्ता नहीं बचा है। आज के नेता प्रातः कुछ व शाम को कुछ कहने में संकोच नहीं करते। एक व्यक्ति को सबेरे निष्ठावान चरित्रवान पवित्रात्मा कहते हैं तो शाम को महादुष्ट दुराचारी कहकर उसकी पोल खोलने का आह्वान करते हैं। उनका लक्ष्य मात्र सत्ता प्राप्ति या सत्ता में बने रहना रहता है। धर्म विहीनता के कारण ही आज के राजनीतिज्ञों क लक्ष्य मे निजी हित प्रथम पार्टी हित द्वितीय देश हित सबसे पीछे होता है। कितनी लज्जा की बात है कि आज हमारे निर्वाचित जनप्रतिनिधियों को शासकीय पदों पर पहुंचने पर अपने ही निर्वाचकों से जीवन का खतरा उत्पन्न हो जाता है। कड़ी से कड़ी सुरक्षा व्यवस्था उनके लिए की जाती है। परन्तु उनके जीवन का खतरा बढ़ता ही जाता है। आखिर ऐसा क्यों—आखिर इसी देश के राजा महाराजा विक्रमादित्य हुए हैं इसी देश में प्रधानमन्त्री (महामात्य) चाणक्य हुए हैं। विक्रमादित्य अपने राज्य मे बिना सुरक्षा व्यवस्था के अकेले ही घूम-घूम कर जन समस्याओं को देखते उनका त्वरित निदान करते थे। जनता उन्हे भगवान स्वरूप पूजती थी। चाणक्य जंगल में खेत में एक पर्ण कुटी बनाकर बिना किसी सुरक्षा व्यवस्था के रहते थे और देश की पूर्ण सुरक्षा व्यवस्था के लिए सचेत रहते थे। उन्हें सुरक्षा की आवश्यकता इसलिए नहीं थी कि उन्होंने अपने जीवन को धर्मानुसार जनता जनार्दन के लिए समर्पित कर दिया था वे अपने लिए नहीं जनता के लिए जीते थे उनका संकल्प हर तरह से धर्म की रक्षा करना था जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र सुखी समृद्ध व एक रहे। इसलिए उनके जीने की परवाह जनता करती थी उनकी सुरक्षा के लिए जनता तन मन धन न्यौछावर करती थी।

आज हमारे देश में ऐसा क्यों नहीं है, क्यों भय, क्यों एक दूसरे के प्रति आक्रोश बढ़ रहा है, इसके चिंतन में केवल एक ही उत्तर मिलता है कि आज देश के शासक व नागरिक सभी अपने-अपने धर्म से बहुत दूर हो रहे हैं। शासक या नेता धर्म की गलत व्याख्या प्रस्तुत करता है तो जनता (धी) विवेक का प्रयोग बिना किए ही उसे सच मान व समझकर उसी अनुरूप धर्म का विरोध करके राष्ट्रीय एकता को विखण्डित करने में सहायक हो जाती है। राष्ट्र की रक्षा के लिए हमें अपने पूर्वजों की भांति ही अपना राष्ट्र धर्म सुनिश्चित करना होगा हमें वही धर्म अपनाना होगा जिसमें सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति दिखाई पड़े हमें पश्चिमीय चकाचौंध से परे हटकर भारतीय संस्कृति भारतीय दर्शन को देखना समझना और अपनाना होगा।

अभी भी समय है—शासन चेते, प्रतिपक्ष चेते, देश का हर नागरिक चेते और राष्ट्रीय एकता के लिए अपने-अपने धर्म को जाने और स्वीकारे। धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझकर उसके अनुरूप अपना जीवन निर्मित करके सौंप दे राष्ट्र के लिए। निश्चय ही धर्म को स्वीकारने वाला देशद्रोही नहीं हो सकता, धार्मिक व्यक्ति असहिष्णु नहीं हो सकता वह बिलगाववाद स्वप्न में भी नहीं स्वीकार सकता। धर्ममय जीवन बनाने व्यक्ति की पूजा की शैली कोई भी हो वह देश का होगा, देश उसका होगा। वह देश व जाति (मानवजाति) प्राणिजगत् पशु पक्षी कीट पतंग सभी की संरक्षा के लिए अपना सर्वस्वार्पण करने में संकोच नहीं करेगा। और वह अपने पवित्र जीवन से राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में पूर्ण समर्थ होगा।

ईश्वर देश के सभी राजनीतिक नेताओं, धर्माचार्यों, सम्प्रदाय प्रमुखों को वह शक्ति और सामर्थ्य दे कि वे धर्म के वास्तविक स्वरूप को सर्वात्मना स्वीकार करके राष्ट्रीय एकता की स्थापना मे सहायक बनें ताकि देश में रामराज्य स्थापित करने की कल्पना साकार हो सके।

—आचार्य देवव्रत अवस्थी

पीलीभीत में यज्ञ से वृष्टि

५ जुलाई, प्रातः वर्षा होने पर जन साधारण और विशेषतः किसान वर्ग ने विशेष प्रसन्नता अनुभव की। पिछले कई दिनों से तीव्र गरमी और लू के चलने से जन सामान्य बहुत कष्ट में रहा। गन्ने की खड़ी फसल सूखने लगी। धान रोपाई का काम बहुत कम आरम्भ हो पाया। जो धान रोपा गया उसके सूखने का खतरा उत्पन्न हो गया। मक्का की बुआई और पशुओं के लिए चारा की बुआई अभी तक आरम्भ ही नहीं हुई। इस वर्षा से जहां जनता को गरमी से राहत मिली है, वहां किसान को भी आशा बंधी है।

पता चला है कि श्री धर्मवीर विद्यालंकार ने अपने फार्म ग्राम सिण्डारा जिला पीलीभीत में २-७-८७ से ४-७-८७ तक वृष्टि यज्ञ किया। उन्होंने जून भर वृष्टि न होते देख फसल की राष्ट्रीय क्षति का विचार कर, वृष्टि यज्ञ हेतु उसके अनुरूप होम करने का शाकल्य औषधियां, वनस्पतियां, समिधाएं तथा शुद्ध गोघृत का संग्रह किया। २-७-८७ को प्रातः उन्होंने अपनी पत्नी श्रीमती पुष्पा विद्यालंकृता के साथ यज्ञ आरम्भ किया। उसी दिन मध्याह्नोत्तर गर्म वायु पछवा के स्थान पर ठण्डी पुरवाई बहने लगी।

३-७-८७ को मध्याह्नोत्तर बादल घिरने लगे। वहां से लगभग ४० कि०मी० उत्तर में—हिमालय की उपत्यका में टनकपुर में हल्की वर्षा हुई।

४-७-८७ को प्रातः यज्ञ की पूर्णाहुति दी गई। घने बादल छा गये थे। उस रात्रि दो बजे से अगले दिन ५-७-८७ की प्रातः ६ बजे तक अच्छी वर्षा हुई। यह वर्षा उनके फार्म के चारों ओर ३०/४० कि०मी० के क्षेत्र में हुई। श्री विद्यालंकार का कहना है कि वृष्टि यज्ञ से वर्षा कराना वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार है कोई जादू टोना नहीं है।

"यज्ञात् भवति पर्जन्यः, पर्जन्यादन्नसंभवः।

हैदराबाद आर्य समाज सत्याग्रहियों के लिए पेंशन सुविधाएं

पिछले कई मासों से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती और गैर सरकारी सलाहकार समिति के सदस्य पेंशन के लिए आवेदन पत्रों को भारत सरकार के गृह-मन्त्रालय के स्वाधीनता सेनानी सम्मान प्रभाग के अधिकारियों के साथ पत्र व्यवहार द्वारा एवं सम्पर्क स्थापित कर यथाशीघ्र इस मामले को निपटाने के लिए भरसक प्रयत्न करते रहे हैं। अब तक इस मामले में सरकार का लिखित निर्णय समिति को प्राप्त नहीं होता आवेदकों को निश्चित सूचना जो कि सरकारी स्तर पर जारी होती है, आवेदकों को बताना मुश्किल है।

गृह मन्त्रालय का पिछले मामलों को देखते हुए यह निर्णय अभी बदस्तूर कायम है कि इस आर्यसमाज सत्याग्रह (१९३८–३९) के सिल सिले में जो व्यक्ति ५ मास से अधिक कारावास का दण्ड भुगत चुके हैं, उनको अथवा उनके जीवित न रहने की दशा में उनकी विधवाओं को पेंशन दी जा सकती है।

पिछले मास समिति के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध सरस्वती श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव और श्री सोमनाथ मरवाह ने गृह मन्त्रालय के संयुक्त सचिव श्री एस० एस० शर्मा से भेंट की और पेंशन देने के मामलों में हो रही देरी की ओर उनका ध्यान खींचा। अनधिकृत सूचनाओ के वर्तमान नियमों की परिधि में आने वाले कुछ लोगों को पेंशन जारी हो गई है और शेष मामलों पर भी कार्रवाई चालू है।

वर्तमान स्थिति यह है कि ३० जून १९८६ तक, सभा मे जिन सज्जनो के आवेदन प्राप्त हो गये थे, उन पर कार्रवाई करने के लिए स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग को कहा गया है। उसके अनुसार पिछले सप्ताह और अब भी स्वतन्त्रता सेनानी प्रभाग के ४–५ अधिकारी प्रति दिन सभा कार्यालय में आ रहे हैं सभा मे प्राप्त (३० जून १९८६) आवेदन पत्रों की भी आवश्यक जांच पड़ताल कर रहे हैं।

महाव्रत स्नातक
अवैतनिक प्रेस एवं जनसम्पर्क सलाहकार

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव सम्पन्न

आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर महानगर के तत्वावधान में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव कानपुर नगर को समस्त आर्य समाजों की ओर से आर्यसमाज ग्वालटोली मे रविवार दिनांक १६ अगस्त १९८७ को सायं ७ से ९ बजे तक आयोजित हुआ। श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' लखनऊ एवं श्रीमती सरला चौधरी, श्रीमती डा० आशा रानी राय तथा श्री सुरेन्द्र खन्ना कानपुर ने भगवान श्रीकृष्ण के वास्तविक जीवन की झांकी प्रस्तुत की। इससे पूर्व १३ अगस्त से १६ अगस्त तक नित्य प्रातः पारिवारिक सत्संग एवं सायं आर्यसमाज ग्वालटोली मे श्री विक्रमादित्य 'वसन्त' वेदवारिधि के प्रवचन होते रहे।

—डा० हरपालसिंह मन्त्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर

योग शिविर

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला नैनीताल में ६ सितम्बर से १२ सितम्बर तक वेद प्रचार मण्डल रामजस रोड दिल्ली द्वारा योग शिविर लगाये जाने की सूचना मिली है। शिविर में प्रवेश शुल्क ५०) रु० रखा गया है।

आर्यजगत के लिए एक चुनौती दान की अपील

आर्यसमाज ठियोग हिमांचल के पहाड़ी क्षेत्र में सबसे ऊंचे क्षेत्र पर स्थित है जिसकी ऊंचाई लगभग ९००० फुट होगी। सभी को ज्ञात है कि यह स्थान परम्परागत पौराणिकों का गढ़ है जहां पर वैदिक कार्यार्थ किसी प्रकार की सहायता प्राप्त नहीं हो सकती। समाज ने मन्दिर एवं यज्ञशाला के लिए जमीन खरीद रखी है, जिस पर स्थानीय पौराणिक लोगों ने मुकदमा चला रखा था जिसका फैसला परमपिता परमात्मा की कृपा से हमारे हक में हो गया है। इस पौराणिक क्षेत्र में कुरीतियों की समाप्ति तथा वैदिक शिक्षा के संचालनार्थ परमावश्यक है कि यहां पर आर्यसमाज मन्दिर एवं यज्ञशाला का निर्माण हो। एतदर्थ रु० १,५०,००० व्यय होने का पूर्वानुमान है जिसके लिए आर्य दानी सज्जनों से जिनके दिल में समाज के प्रति सच्ची तड़प है, कर बद्ध अपील है कि इस पुनीत कार्य हेतु दिल खोलकर दान दें तथा इस चुनौती को स्वीकार करें। बैंक ड्राफ्ट या दान राशि यु० को० बैंक ठियोग के नाम या मन्त्री आर्यसमाज के नाम भेजकर कृतार्थ करें।

डा० एस०एस० बनोल्टा
मन्त्री आर्यसमाज ठियोग १७१२०१
जिला शिमला (हि० प्र०)

मेरठ दंगा पीड़ितों के सहायतार्थ दान

दिनांक ६ अगस्त १९८७ ई० को आर्यसमाज मवाना के प्रधान श्री दयाप्रकाश जी सर्राफ की स्वर्गीया धर्मपत्नी श्रीमती जसवन्ती देवी के शान्ति यज्ञ मे श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने शोकाकुल परिवार को शान्ति प्रदान करते हुए मेरठ के दंगा पीड़ितों की सहायता की अपील की। इस पर निम्नलिखित धन दान स्वरूप दिया गया।

१०००) आर्यसमाज मवाना
५०१) श्री दयाप्रकाश जी सर्राफ प्रधान आर्यसमाज मवाना
१०१) महिला आर्यसमाज मवाना

सभा दानी महानुभावों का आभार प्रकट करती है।

—मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

अमर स्वामी जी महाराज कैंसर रोग से पीड़ित

प्रसिद्ध आर्य संन्यासी अमरस्वामी जी महाराज कैंसर रोग से पीड़ित होकर इस समय चौधरी नर्सिंग होम (गाजियाबाद) में चिकित्सा हेतु प्रविष्ट हैं। उनकी आवाज बन्द हो गई है। परन्तु उनमें अदम्य साहस है उन्होंने अन्तिम इच्छा लिखकर बतायी कि "मैंने प्राचीन शास्त्रार्थों को छपाने का संकल्प लिया है मैं चाहता हूं उसे अपनी आंखों से देखता जाऊं' श्री लाजपतराय अग्रवाल इस ग्रन्थ को छपा रहे है, उन्होने बताया इस ग्रन्थ को पूरा होने में २५ हजार रुपये का खर्च अभी और है। यह ग्रन्थ लगभग ३ हिस्से छप चुका है। हम सभी का परम कर्तव्य है कि इस कार्य में हम भरपूर सहयोग दें, जिससे स्वामी जी महाराज की अन्तिम इच्छा को पूरा किया जा सके। यह ग्रन्थ मात्र ६०) प्रति भाग से बुक किया जा रहा है, बाद मे १२५) मूल्य होगा। जो भी सज्जन स्वामी जी को आर्थिक सहायता भेजें वह "वेद मन्दिर विवेकानन्दनगर—गाजियाबाद" के पते पर भेजें। तथा ग्रन्थ सम्बन्धी सम्पर्क निम्न पते पर करें।

—अमरस्वामी प्रकाशन विभाग
१०५८, विवेकानन्द नगर (गाजियाबाद) उ०प्र०

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६३
पंजीकरण सं० एल. डब्ल्यू/एन पी ७६
भाद्रपद शुक्ल १४
६ सितम्बर रविवार, १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

धर्म शिक्षा पुस्तकों के सम्बन्ध में—

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित पुस्तकें सभा कार्यालय में उपलब्ध हैं। पुस्तकें प्राप्ति हेतु कार्यालय से सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम से भेजें। रेलवे स्टेशन ... पता साफ-साफ लिखें। पुस्तकों का मूल्य निम्न प्रकार है—

धर्म	शिक्षा	भाग	१	१.००
,,	,,	,,	२	१.५५
,,	,,	,,	३	२ ७०
,,	,,	,,	४	२-७५
,,	,,	,,	५	३-६०
,,	,,	,,	६	४-७५
,,	,,	,,	७	४-१५
,,	,,	,,	८	८-००
,,	,,	,,	९	४-००
,,	,,	,,	१०	३-००
,,	,,	,,	११	४-००
धर्म	शिक्षा	भाग	१२	३-५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ

'गुरुकुल प्रभात आश्रम' की प्रभा

यह जानकर समस्त आर्यजगत को महान हर्ष होगा कि गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी (मेरठ) के प्रखर प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी ब्र० यशपाल आर्य ने वर्ष १९८७ में सम्पन्न मध्यमा तृतीय खण्ड की परीक्षा में सम्पूर्ण महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया है। इससे गुरुकुल एवं आर्यजगत का यश बढ़ा है। ब्रह्मचारी जी के इसी प्रकार के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रभु से भूरिशः प्रार्थना है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ब्र० यशपाल को बधाई देती है और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

—सभा मन्त्री

उत्सव

आर्यसमाज माण्डे बास में वेद प्रचार सप्ताह दिनांक ९ से १७ अगस्त १९८७ तक मनाया गया।

वेद प्रचार

मवाना आर्य समाज में ९ अगस्त से १६ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। यज्ञ, भजन तथा प्रवचन, वेदोपदेश, श्रीकृष्ण के चरित्र की विशेषताओं पर श्री पं० ओ३म्प्रकाश शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी ... निवासी तथा भजनोपदेशक पं० हरस्वरूप जी ने प्रकाश डाला ... प्रातः यज्ञ तथा वेदोपदेश तथा रात्रि में भजन व वेदोपदेश ... म प्राप्त किया।

—मन्त्री आर्यसमाज मवाना (मेरठ)

जिला आर्य सम्मेलन ठाकुरद्वारा

१५ से १८ अक्टूबर ८७ बृहदयज्ञ शुक्र, शनि, रवि

कार्यक्रम एक दृष्टि में

बृहदयज्ञ—आर्य सम्मेलन, राष्ट्रीय एकता सम्मेलन, महिला सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन १५ अक्टूबर ८७ को विशाल जुलूस।

सादर निमन्त्रण।

—हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री उपसभा, मुरादाबाद

यदि आप चाहते हैं—

कथा-संस्कार-वार्षिकोत्सव

का कार्यक्रम सफल हो
तब आज ही लिखें—

सुयोग्य उपदेशक प्रचारकों
के लिए

हरिश्चन्द्र आर्य मन्त्री
आर्य उप प्रतिनिधि सभा
मुरादाबाद
प्रचार कार्यालय—अमरोहा
दूरभाष—५५४

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ | घोषणा पत्र सं. ७।२८-२-८५

आश्विन कृष्ण ६, रविवार, संवत् २०४४ वि०, दिनांक १३ सितम्बर १९८७

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

★

प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए.

★

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	८०
अङ्क	३६

पंजाब से हिन्दुओं का फिर पलायन

यदि सरकार ने ठोस कदम न उठाये तो परिणाम भयंकर होंगे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का प्रधान मन्त्री को पत्र

पंजाब की स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़ती ही जा रही है। गुप्त रूप से, हिन्दुओ को वहां से बाहर निकालने का षड्यन्त्र जारी है। प्राप्त सूचना के अनुसार अजनाला से ३०० हिन्दू परिवार अपना गांव छोड़ कर सुरक्षित स्थानों पर चले गये हैं। धारीवाल तहसील के अन्तर्गत फानपुरा गांव के भी अनेक परिवार पानीपत (हरियाणा) आ चुके हैं। अन्य गांवों से भी हिन्दू परिवार इसी प्रकार अपना घर-द्वार छोड़ कर सुरक्षा की तलाश में अन्यत्र चले गये हैं। सारे पंजाब में आतंकवाद की छाया गहरी होती जा रही है।

राष्ट्रपति शासन पर टिप्पणी करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान, स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने एक वक्तव्य में बताया कि अब स्थिति इतनी भयानक हो चुकी है कि भारत सरकार के गृह मन्त्री श्री बूटासिंह के परिवार के व्यक्ति भी मौत के घाट उतार दिये गये है। सीमान्त क्षेत्रों में भी स्थिति सरकार के हाथ से निकलती जा रही है।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने एक विशेष पत्र प्रधान मन्त्री, श्री राजीव गाधी को लिखकर मांग की है कि पंजाब को तुरन्त सेना के हवाले किया जाये। अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर सुरक्षा पट्टी बनाने का प्रस्ताव संसद में स्वीकार हो चुका है। अतः पाकिस्तान की सीमा के साथ जैसलमेर से पंजाब और कश्मीर तक सुरक्षा पट्टी बनाई जावे और आतङ्कवादियों से उसी भाषा में बात की जावे, जिसे वे समझते हैं। स्वामी आनन्द बोध जी ने प्रधान मन्त्री को याद दिलाया कि गत वर्ष १६ जुलाई को आर्य समाज का एक शिष्टमण्डल उनसे मिला था और एक ज्ञापन दिया था जिसमें सुरक्षा पट्टी के बनाने की मांग की गयी थी। स्वामी जी ने बताया कि प्रधान मन्त्री ने इस समय हमारी मांगों से पूर्ण सहमति प्रकट करते हुए पंजाब के मामले को जल्दी ही हल करने का आश्वासन दिया था। स्वामी जी ने कहा कि अब पंजाब सर्वनाश के कगार पर खड़ा है। भारत की जनता मूकदर्शक बनकर वहां हो रहे जघन्य नर-संहार को किस प्रकार सहन कर सकती है ?

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने बताया कि "हम जल्दी ही देश भर के हिन्दू नेताओं की एक सर्वदलीय सभा बुलाकर इस मामले पर विचार करेंगे।" स्वामी जी ने प्रधान मन्त्री को यह भी लिखा है कि पंजाब की इस समय बिगड़ी हुई स्थिति सरकार की दुरंगी और अस्थिर नीति का ही परिणाम है और इसी से आज देश में अनेक विवाद खड़े हो रहे हैं।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश,

आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्तर प्रदेश का

वार्षिक बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन का कार्यक्रम

चित्र सभा में आने की तिथि	१५–९–८७ तक
सभा में चित्र जांचना	१६–९–८७ से २५–९–८७ तक
सूची का प्रकाशन	४–१०–८७
आपत्ति प्राप्त करने की अन्तिम तिथि	१५–१०–८७
आपत्तियों की सुनवाई एवं समाधान	१६–१०–८७ से २०–१० ८७ तक
शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	२७–१०–८७
सभा का बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	१४ व १५ नवम्बर ८७

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दिनांक ९ अगस्त १९८७ को सभा भवन लखनऊ में सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में हुई और उसमें बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ–आश्विन कृष्ण ६ सम्वत् २०४४ रविवार १३ सितम्बर १९८७, दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

जय हिन्दी–जय नागरी

प्रति वर्ष हम १४ सितम्बर को 'हिन्दी-दिवस' के रूप में मनाते है क्योंकि आज ही के दिन हमारे संविधान निर्माताओं ने देवनागरी लिपि में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया था। राष्ट्र के प्रेमी, राष्ट्र को समर्पित, अपनी प्रिय राष्ट्र भाषा और जनभाषा के प्रति कितने जागरूक हैं–आज इसके विश्लेषण का दिन है। जिस भाषा ने हमारे अन्दर राष्ट्रीय स्तर पर नवचेतना का संचार किया। जिस भाषा के लिए भारतेन्दु ने कहा था–'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल' वही राष्ट्रभाषा आजादी के इतने वर्षों बाद भी अपने सम्माननीय पद को सम्मानपूर्वक क्यों नहीं प्राप्त कर रही है। 'एक राष्ट्र' और 'एक राष्ट्र भाषा' का गुणगान करने वाले हमारे राष्ट्रनायक, चिन्तक, मनीषी, विद्वान् साहित्यिक इसे सर्वात्मना स्वीकार करने के बाद भी विदेशी भाषा अंग्रेजी के मोहपाश में इतने आबद्ध क्यों है? हमारे द्वारा अपनी प्रिय राष्ट्रभाषा के लिए अभी कितना कुछ किया जाना शेष है–आज हमें इन्हीं सब पर विचार करना है।

गहन दासता के युग में हमारे नेताओं ने स्वातन्त्र्य आन्दोलन के साथ ही राष्ट्रवाणी की भी चिन्तना की थी। राष्ट्रपिता ने आजादी के पूर्व ही कहा था–'स्वराज्य मिलते ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करा दिया जायेगा, अंग्रेजी हटा दी जायेगी'। आजादी मिली, संविधान ने अपनी धारा ३५१ में संघ को यह दायित्व सौंपा कि वह हिन्दी का विकास करे। नई वैज्ञानिक शब्दावली से इसके भण्डार की पूर्ति करे। समय-समय पर इसकी समीक्षा होती रहे कि इस प्रगति में हम कितना आगे बढ़े हैं। किन्तु खेद के साथ हमें कहना पड़ रहा है कि–हमारी मानसिक दासता के कारण हमें विदेशी भाषा अंग्रेजी का वर्चस्व ही सर्वत्र दिखाई दे रहा है। आज हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में जो गिरावट दिखाई दे रही है उसका एक कारण अपनी भाषा के प्रति प्रेम और समर्पण का अभाव है। आर्यसमाज भारतीय जीवन में संस्कृति भाषा और धर्म के समन्वय पर विश्वास करता है उसके विचार में हिन्दी इस देश की जनभाषा ही नहीं, अपितु समस्त भारतीयों को एकसूत्र में पिरोने वाली सम्पर्क भाषा भी है इसीलिए इसके आदि प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने, जो संस्कृत के धुरन्धर विद्वान थे, अपने वेदादि गहन विषयों के भाष्य एवं अन्य ग्रन्थ हिन्दी में ही लिखे। यह उनके लोकोत्तर चरित्र एवं राष्ट्रीय ऐक्य का परिचायक है। उनका विश्वास था किसी देश की आत्मा वहां की संस्कृति है और उसका मूलाधार एकभाषा है जिस के माध्यम से राष्ट्र में निवास करने वाला समाज अपने विभिन्न चरित्रों संवेदनात्मक भावों को पूर्णतया प्रकट करने तथा आत्मसात करने में सक्षम होता है। एक समय था जब संस्कृत विश्व की आदि भाषा थी और इसने हमारे आर्यावर्त देश को ही नहीं अपितु समस्त विश्व को एक सूत्र में आबद्ध करने 'विश्वं भवत्येकनीडम्' का श्रेय लिया था। आज का भाषावैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करता है। काला-

[illegible]

परिभ्रमित होती हुई, खड़ी बोली के रूप में, जनमानसमोहिनी, हमारी प्रिय हिन्दी हमारे सामने है। इसे यह सुन्दर सलोना वैज्ञानिक रूप देने का श्रेय हमारे अनेकों, चिन्तकों, मनीषियों और साहित्यिक महारथियों को है जिनमें आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का नाम गरिमा से लिया जा सकता है।

यह तो निश्चित ही है कि अन्ततोगत्वा हिन्दी को आसेतु हिमाचल राष्ट्रभाषा के रूप में अभिषिक्त होना ही है क्योंकि यही भाषा समस्त राष्ट्र की सम्पर्क एवं समादृत भाषा है। इसमें किसी भी प्रदेशीय भाषा के असीमित शब्द भण्डार को आत्मसात् करने की अपूर्व क्षमता है। इसकी लिपि पूर्ण वैज्ञानिक है और उसमें इतना सामर्थ्य है कि वह भारत के सभी प्रदेशीय भाषाओं के शब्दों को मूर्तरूप दे सके।

आर्यसमाज ने सदैव हिन्दी का प्रबल समर्थन किया है। वह उसे राष्ट्रीय जीवन की आत्मा मानता है। उसे राष्ट्रभाषा के गौरवान्वित पद पर आसीन कराने का उसने व्रत लिया हुआ है। इसके लिए उसे समय-समय पर सत्याग्रह एवं आन्दोलनों का भी आश्रय लेना पड़ा है। आज भी आर्यसमाज 'हिन्दी' के जनजागरण अभियान में प्राणपण से जुटा हुआ है और अपने मान्य नेता स्वामी आनन्द बोधजी को विश्वास दिलाता है कि उनके इंगितमात्र पर अपनी प्रिय भाषा के लिए प्रत्येक बलिदान देने को तैयार रहेगा।

"जय हिन्दी–जय नागरी"

—मनमोहन तिवारी

अध्यात्म सुधा

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म

श्री रमेश मुनि वान प्रस्थी, वैदिक शोध संस्थान आर्य समाज
आदर्श नगर जयपुर, [राजस्थान]

स्वामी दयानन्द जी ने ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनो को मुख्य बताकर त्रैतवाद का सिद्धान्त जो वेदों द्वारा प्रतिपादित है, उसका प्रचार एवं प्रसार किया। आज विश्व में अद्वैतवाद, द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद विशिष्टाद्वैतवाद आदि अनेक वाद चल रहे हैं जो सिद्धान्ततः वेद विरुद्ध है। आर्य समाज केवल वैदिक सिद्धान्त त्रैतवाद को मानता है। जैसा कि ऋग्वेद १/१६४/२० मे स्पष्ट प्रतिपादित है–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ।।

सुन्दर पंखो वाले समान आयु वाले दो मित्र समान रूप से वृक्ष का आलिंगन कर रहे है। उनमें से एक स्वादिष्ट पिप्पल का आस्वादन कर रहा है। दूसरा भोग न करता हुआ भी आनन्द प्राप्त करता है। इसमें वृक्ष प्रकृति है तथा पिप्पल उसके योग्य पदार्थ है। आस्वादन करने वाला पक्षी जीव है तथा भोग न करने वाला दूसरा पक्षी ईश्वर है। इस प्रकार ईश्वर, जीव व प्रकृति तीनो अनादि है।

संसार में ईश्वर एवं जीव के साथ-साथ प्रकृति भी बहुत महत्वपूर्ण है जिसका यज्ञ से बहुत घनिष्ट संबंध है। प्रकृति में पाच तत्व होते है जिन्हें महाभूत कहते है। ये पंचतत्व इस प्रकार हैं। (१) अग्नि (२) वायु (३) आकाश (४) जल (५) पृथ्वी।

ये पंचतत्व अपने स्वरूप के अनुसार तीन गुणो में विभक्त है। गुणत्रय निम्नलिखित है:–

(१) सात्विक (२) राजसिक (३) तामसिक।

अग्नि सात्विक पदार्थ है। इसमें राजसिक एवं तामसिक तत्व बिल्कुल नहीं है। अग्नि सदैव ऊर्ध्वगामी है इसकी लपटें कभी भी नीचे नहीं जाती हैं वायु राजसिक तत्व हैं। वायु कभी ऊपर कभी नीचे, कभी अगल, कभी बगल चलता है, इसलिए वह पूर्णतः राजसिक है। पानी सदैव अधोगामी है, इसलिए गुण के अनुसार वह पूर्णतः तामसिक है। पृथ्वी भी घोर तामसिक है। एक ढेला ऊपर फेंकिए तो वह तुरन्त नीचे गिरता है।

अब यह सिद्धान्त प्रतिपादित हुआ कि सात्विक वस्तु की उपासना करने से मनुष्य में सात्विक तत्वो का उदय होता है और तामसिक तत्वों की पूजा करने से, तामसिक वृत्तियों का उदय होता है। मूर्ति-पूजा पृथ्वी तत्व की पूजा है, इसलिए इससे सात्विक भावनाओं का उदय होना कदापि सम्भव नहीं है। इस प्रकार अग्नि की उपासना करना यानी यज्ञ करना एक सात्विक कार्य है और इससे मनुष्य में सात्विक भावनाओं का उदय होता है और यह एक वैदिक तथ्य है।

यज्ञ क्रिया मुख्य रूप से अग्नि से सम्पादित होती है. अग्नि को वेद में एक देवता कहा है जो देखने में तो हरेक वस्तु को जला देता है, लेकिन वास्तव में वह वस्तु नष्ट नहीं होती है। अग्नि एक सात्विक तत्व है और सात्विक तत्व ऊर्ध्वगामी एवं सदैव परोपकार करने वाला होता है अग्नि में यह खास गुण है कि वह वस्तु को परमाणु में बिखरा देता है। उदाहरणतया एक चावल जला तो वह वास्तव में वह चावल नष्ट नहीं हुआ। बल्कि वह परमाणुओं मे विभक्त हो गया एक चावल के अग्नि के द्वारा विभक्त किये हुए परमाणुओं को हम अगर किसी विधि से जमा करें, तो वह एक गैलन के डिब्बे में आ जायेंगे। हमारे वेद ज्ञान के साथ-साथ, विज्ञान के भी भण्डार हैं जिनमें करोड़ों मोती पड़े हैं। जैसे-जैसे वैज्ञानिक परीक्षण करते हैं, वैसे उनको एक-एक मोती मिलता जाता है। जैसे आइन्स्टाइन को सापेक्षवाद का मोती मिला इसी प्रकार वैज्ञानिक लाखों करोड़ों वर्ष तक खोजते रहेंगे और एक-एक करके मोती पाते रहेंगे।

अग्नि में जो भी वस्तु जलेगी वह नष्ट नहीं होगी सिर्फ उसका स्वरूप बदल जावेगा। जैसे लकड़ी, कोयला, तेल, पेट्रोल, गेहूं, चना, जौ, इत्यादि जो भी वस्तुएं जलती हैं वह सूक्ष्म रूप से वायु मण्डल में व्याप्त रहती हैं। ये सूक्ष्म परमाणु वर्षा के साथ पृथ्वी पर बरस जाते हैं। जहां-जहां पर उनका आकर्षण क्षेत्र होता है वहां-वहां चले जाते हैं। जैसे मिट्टी का तेल तेल, के परमाणुओ को आकर्षित कर लेता है। गेहूं के परमाणु जब मिट्टी पर बरस जाते है तो गेहूं का बीज उनको आकर्षित करके फिर गेहूं की शकल में बदल देता है। इसी प्रकार दूसरे अन्न, तिलहन, दलहन, फल शाक, सब्जी के बारे में समझ लीजिए। आजकल जो भौतिकवादी यह कहते हैं कि विश्व में एक दिन कोयला समाप्त हो जायेगा या पेट्रोल समाप्त हो जायेगा बिलकुल गलत कहते हैं। ऐसा न तो ब्रह्माण्ड में आजतक हुआ है और न होगा, न कभी कोयला खत्म होगा, और न पेट्रोल खत्म होगा।

अग्नि किसी वस्तु को नष्ट तो करती ही नहीं बल्कि वह उसकी शक्ति को सैकड़ों गुना बढ़ा देती है। इसको समझने के लिए हम एक उदाहरण का सहारा लेंगे। जैसे एक सूखी लाल मिर्च है उसको एक व्यक्ति रोटी के साथ खाता है तो उसका चरपराहट यानी तीखापन उसको ही अनुभव होता है उसके पास अगर कोई दूसरा व्यक्ति बैठा है तो उसको इसका कोई स्वाद नहीं आवेगा। लेकिन अगर हम उसी मिर्च को अग्नि मे डाल दें तो वहां अगर सौ आदमी भी बैठे होंगे तो उन सबको उस एक मिर्ची की चरपराहट यानी तीखेपन का स्वाद आ जायेगा। बल्कि यह तीखापन इतना कड़वा होगा कि वहां से सबको भागना पड़ेगा इस प्रकार एक मिर्ची की शक्ति अग्नि में डालने से सैकड़ो गुना बढ़ गई जो मिर्ची सिर्फ एक आदमी के मुंह तीखा कर रही थी उसने सौ आदमियों का मुँह तीखा कर दिया। इसलिए यज्ञ में डाला गया पदार्थ दस बीस गुना नहीं हजारो गुना बढ़ जाता है। इसलिए वेदों में स्थल-स्थल पर निर्देश है कि हे मनुष्य तू यज्ञ कर जिससे मुझे अन्न, वनस्पति, पशु, प्रजा, धन व श्री और समृद्धि की प्राप्ति हो।

इस संदर्भ में यह भी बताना अप्रासंगिक नहीं है कि सतयुग में घर-घर कोई व्यक्ति बगैर यज्ञ या हवन किये भोजन नहीं करता था बल्कि हमारे वेद ने तो यहां तक कहा है कि जो व्यक्ति बगैर यज्ञ किये अन्न ग्रहण करता है वह पाप को ही खाता है। इससे ज्यादा यज्ञ की महिमा कोई क्या बता सकता है जो हमें वेद भगवान ने बताई है।

आज नास्तिक व्यक्ति कुछ पाश्चात्य व्यक्तियो के बहकाने में आकर यदा कदा अखबारों में निकलवाते है कि मनुष्य को तो घी या अन्न खाने को नहीं है जब कि यज्ञों में इतने हजार या लाख का घी व सामग्री फूंकी गयी है। यह पढ़कर मुझे बड़ा दुःख होता है और उन भारतीय भाईयों की बुद्धि पर तरस आता है जो कि वेद विरुद्ध बात करते हैं।

सिद्धान्त विमर्श

सत्यार्थ प्रकाश में सृष्टि-विज्ञान की समीक्षा

[स्वामी मोक्षानन्द "सरस्वती" वैदिक-प्रवक्ता, मथुरा]

[गतांक से आगे]

महर्षि दयानन्द के सौ वर्षों बाद आज जब उन्हीं का वैज्ञानिक परीक्षण हुआ तब लोग उस दिव्य महर्षि के प्रति श्रद्धा एवं नमन सहित आश्चर्य अनुभव करते हैं क्योंकि महर्षि दयानन्द के काल में वायुयान, प्रक्षेपास्त्र, दूरभाष, दूर संचार संयन्त्र आदि का निर्माण नहीं हुआ था। उस काल मे रसायन विज्ञान लुप्त हो चुका था। ऐसे घोर अज्ञानी युग मे महर्षि ने भारतीय आर्यों की वैदिक संस्कृति की सर्वोपरि उत्कृष्टता विश्व मे सिद्ध की। भारत को वेद एवं उसके संस्कृत साहित्य के माध्यम से विज्ञान सूत्रदाता का गौरव प्रथम स्थान में दिलाया। उनकी वैज्ञा. निकता समझने के लिए उनकी कृतियां 'सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' आदि ग्रन्थों मे पढ़ना चाहिए। उदाहरणार्थ-महर्षि दयानन्द ने जब अपने इन अमर कृतियो में वेदों की ऋचाओं एवं अन्य वैदिक साहित्यों के वैज्ञानिक साक्ष्यानुसार वायुयान, पुष्पक विमान आदि का प्रकरण लिखा तब लोग उपहास करते थे। एवं वायुयान निर्माण एवं उसके सम्बन्ध में लिखे गये प्रकरण को उड़न परियों की गप्पें कहा करते थे। वैदिक ऋषियों (विज्ञान अनुसन्धानकर्त्ता) को पागल, अफीमची, जंगली कहा करते थे क्योंकि भारत में आज के ही समान अंग्रेजी शिक्षा का उन्माद (नशा) उन तत्कालीन तथाकथित उच्च शिक्षित भारतीयों के जीवन मे बुरी तरह समाया हुआ था। दुर्भाग्य से महर्षि दयानन्द का अल्पकालिक दिग्दर्शन के बाद ही निर्वाण हो गया। लेकिन महर्षि दयानन्द के आर्य शिष्यों ने सन् १८९२ ई० मे बम्बई मे 'श्री जस्टिस गोविन्द राना डे' की अध्यक्षता में सौभाग्य से अपने दिव्य युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द निर्देशित विमान प्रकरण को साकार कर दिखाया। मानव रहित प्रक्षेपास्त्र विधि से विमान का प्रक्षेपण करके सफलतापूर्वक उसी स्थान पर विमान को केवल सौर ऊर्जा संयन्त्र से संयुक्त करके ही उड़ाया गया था। पेट्रोल, डीजल, आदि किसी भी प्रकार के ईंधन का इसमें प्रयोग नहीं किया गया था सौर ऊर्जा विज्ञान भी भारतीयों की ही देन है। इस सौर ऊर्जा संयन्त्र प्रकरण को महर्षि याज्ञवल्क्य लिखित 'वृहद विमान शास्त्र' नामक ग्रंथ मे पढ़ा जा सकता है। इस आश्चर्य जनक सफल वैज्ञानिक विमान प्रक्षेपण से विदेशियों में हलचल मच गयी। विदेशियों में भारत एवं भारतीय साहित्य के प्रति अचानक रुझान आने लगा। ब्रिटिश दासत्वपाश मे बंधे भारतीयों के दुर्भाग्य पर आश्चर्य व्यक्त करने लगे एवं महर्षि दयानन्द द्वारा पुनरुद्धारित वेदो और उसके वैदिक संस्कृत साहित्य के विरुद्ध फैली भ्रान्तियों से छुटकारा मिला। तदुपरान्त सन् १९०२ में विदेशियों ने वायुयान का आविष्कार किया-अर्थात् भारतीयों के ठीक १० वर्षों बाद वायुयान निर्माण विदेशो मे किया गया। जबकि महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थों 'सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में विमान प्रकरण का उल्लेख सन् १८८१ में किया था। अर्थात् २१ वर्ष पूर्व ही महर्षि दया. नन्द ने विमान निर्माण प्रकरण लिखा था। जबकि इससे पूर्व विदेशों में सर्वत्र वायुयान, प्रक्षेपास्त्र आदि को काल्पनिक मानते थे। कुल मिलाकर प्रबलतम शब्दों मे कहा जा सकता है कि आधुनिक विमान के सूत्रधार एवं प्रणेता महर्षि दयानन्द ही थे।

बाल जगत

स्कूलों तथा कालेजों में अध्ययनरत

छात्र छात्राओं एवं समस्त बच्चों के लिए शुभसूचना

बच्चे हमारे राष्ट्र के उदीयमान नागरिक हैं। समाज और राष्ट्र की भावी आशायें इन्हीं पर निर्भर हैं। इनमें भावात्मक एकता एवं सांस्कृतिक लेख पढ़ने की अभिरुचि को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से "आर्यमित्र" "बाल जगत" शीर्षक के अन्तर्गत प्रति मास एक लेखमाला का प्रकाशन करने जा रहा है जिसमे १८ वर्ष तक की आयुवर्ग के बच्चों द्वारा लिखित लेख ही प्रकाशित किए जायेंगे। लेख सुन्दर अक्षरों में पृष्ठ के एक ओर लिखा हुआ अथवा टाइप किया हुआ, अधिकतम १००० शब्दों का होना चाहिए। विषय एवं भाषा बच्चों की रुचि तथा स्तर की होनी चाहिए।

जिन बच्चों के लेख उपयुक्त होंगे उन्हें "आर्यमित्र" मे प्रकाशित किया जायेगा और उनके लेखक बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप "आर्यमित्र" निःशुल्क रूप में उन्हें वर्ष भर भेजा जायेगा।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

श्री विश्वनाथप्रतापसिंह राजर्षि उपाधि से विभूषित

भूतपूर्व वित्त एवं प्रतिरक्षा मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को काशी के वैदिक ब्राह्मण एवं संस्कृत के विद्वानों ने गत ३० अगस्त को एक विशेष समारोह में राजर्षि की सम्मानित उपाधि से अलंकृत किया और उनसे कहा कि वे राष्ट्र की अभ्युन्नति के लिए अपना राष्ट्र व्यापी अभियान निरन्तर चालू रखें। श्री सिंह ने भारत माता की सेवा के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने का संकल्प लिया।

समारोह में श्री सिंह की उपस्थिति को काशी के पण्डितों ने सन् ५० की भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद की यात्रा के अनुरूप बताया जब विद्वानों ने उन्हें अपना आशीर्वाद प्रदान किया था।

नम्र निवेदन

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला-फर्रुखाबाद के प्रधान महात्मा सच्चिदानन्द वानप्रस्थी को, कुछ तथाकथित आर्यजनों ने, मेरे आचरण के सम्बन्ध में, भ्रमित करने का असफल प्रयास किया है।

मेरा उक्त आर्यजनों से नम्र निवेदन है यदि उनको मेरे आर्योचित आचरण के विपरीत कुछ भी तथ्यपूर्ण परिवाद हो तो वह इस सम्बन्ध में मान० मन्त्री जी, सभा को प्रमाण सहित लिखने की कृपा करें।

सादर- कुं० ध्रुवपालसिंह अदब'
मुख्य निरीक्षक सभा

एक भ्रामक लेख का उत्तर

वेद-विवेचन

मांसाहार-अभक्ष्य और वेदविरुद्ध

[स्नातिका प्रियम्वदा शास्त्रिणी, पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी]

(गतांक से आगे)

"नाकृत्वा प्राणिनां हिंसां मांसमुत्पद्यते क्वचित् ।
न च प्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसं विवर्जयेत् ।।
समुत्पत्तिंच मांसस्य वधबन्धौ च देहिनाम् ।
प्रसमीक्ष्य निवर्तेत सर्वमांसस्य भक्षणात् ।।
अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी ।
संस्कर्ताचोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः ।।
स्वमांसं परमांसेन योवर्धयितुमिच्छति ।
अनभ्यर्च्य पितॄन देवांस्ततोऽन्यो नास्त्यपुण्यकृत् ।।
(मनु० ५, ४८, ४९, ५१, ५२)

मनुष्य के लिए मॉस भक्षण निषेध के मनु महाराज के ये सामान्य नियम है जिन्हें उन्होंने ब्रह्मचारी प्रकरण में भी विशेष बल देने के लिये रख दिया तो इससे यह कैसे सिद्ध हो गया कि मांस खाना ब्रह्मचारी के लिए वर्जित है अन्यों के लिए नहीं ? यदि इस विषय मे विद्यालंकार जी की बात मान ली जाय तो मनु महाराज के मांसभक्षण–निषेध–परक अनेकानेक वचन व्यर्थ होने के साथ-साथ ब्रह्मचारी को छोड़कर अन्य आश्रमियों के लिए जुआ खेलना, मिथ्या भाषण, पर निन्दा आदि दुर्गुण भी समर्थित हो जायेंगे क्योंकि ब्रह्मचारी प्रकरण मे ही – द्यूतञ्च जनवादञ्च परिवादं तथानृतम्" (मनु० २·१७९) भी कहा है। सो पण्डित जी के मत में तो ब्रह्मचारी को जुआ नहीं खेलना चाहिए किन्तु गृहस्थी, वानप्रस्थी, संन्यासी आदि के लिए खुली छूट है। भले ही ऋग्वेद का द्यूत क्रीडा निषेध परक १०·३४ सूक्त व्यर्थ हो जाये तो इससे क्या ?

इसी लेख में पण्डित जी स्नानादि नित्य क्रियाओं का उपहास करते हुए ननुस्मृति के विषय में लिखते है–"कि बड़ी विचित्र बात है कि वेद की तरह मनु ने भी प्रातः काल उठने का तो जिक्र किया है, संध्या करने और जप का भी जिक्र है किन्तु स्नान की कोई चर्चा नहीं है।

क्या कहूं ? जिस "वर्जयेन्मधुमांसंच" श्लोक को विद्यालंकार जी महाराज उद्धृत कर रहे हैं इससे पूर्व निर्दिष्ट "नित्य स्नात्वा शुचिः कुर्यात्" (मनु २·१७६) श्लोक जिसका कुल्लूभट्ट ने भी "प्रत्यहं स्नात्वा" अर्थ ही किया है उन्हें नहीं दिखाई दिया। इसके अतिरिक्त स्नान के लिए स्पष्ट विधान करने वाले ननुस्मृति के अन्य श्लोक भी पण्डित जी पचा गये। इसे क्या कहा जाय कि जैसे मध्य काल में वेद कोई पढ़ता नहीं था अतः वेद के विषय में कोई भी प्रलाप जो तथाकथित पण्डित जन कर देते थे वह सब साधारण जनता मानती थी उसी प्रकार पण्डित जी मानते हैं कि मनुस्मृति उनके अतिरिक्त किसी ने देखी ही नहीं होगी अतः वे जो कुछ कह देंगे वह सत्यवचन महाराज ! कह कर ठीक मान लिया जायेगा। यहां पाठक देखें मनुस्मृति के वे श्लोक जहां स्पष्ट नित्य एवं नियमित स्नान का विधान है–

१–मैत्रं प्रसाधनं स्नानं दन्तधावनमञ्जनम् ।
पूर्वाह्ण एव कुर्वीत देवतानाञ्च पूजनम् ।। ४·१५२ ।।
२–न स्नानमाचरेद् भुक्त्वा नातुरो न महानिशि ।
न वासोभिः सहाजस्रं नाविज्ञाते जलाशये ।। ४·१२९ ।।

श्री पण्डित जी को इतने प्रमाणों के रहते एक शुचिता के लिए मनुस्मृति में "कृत्वावश्यकं कृत्वा कृतशौचः समाहितः "एक ही प्रमाण मिला उसमें भी उनको दोष दीखा। मैं कहती हूं कि इस श्लोक में जिस स्नान शब्द के लिए पण्डित जी इतने व्याकुल हो रहे हैं वह भी तो 'ईशुचिर् पूतीभावे" धातु की ही भांति व्यापक पवित्रता अर्थ वाले "ष्णाशौचे" धातु से ही निष्पन्न होता है सो वस्तुतः स्नान एवं शौच दोनों शब्द समानार्थक ही हैं। यही कारण है कि जहां यम नियमादि में वर्णित शौच शब्द की प्राचीन ग्रन्थों में त्रिविध शुद्धि परक व्याख्या हमें उपलब्ध होती है वहीं मनसा, वाचा, कर्मणा शुद्ध ब्रह्मचारी में 'स्नातक' शब्द का प्रयोग भी उपलब्ध होता है जिसका उच्चारण हम आज भी करते ही हैं। इन दोनों शब्दों में आजकल जो अर्थ भेद उपलब्ध होता है उसमें एक मात्र हेतु यही है कि कुछ काल पश्चात् स्नान शब्द तो बाह्य सर्वांग शुद्धि मात्र में रूढ़ हो गया पर शौच शब्द अपने पुराने व्यापकार्थ में ही प्रसिद्ध रहा। इस शब्द स्वभाव विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शौच जैसे अतिव्यापक शब्द के रहते तत्त् स्थलों में स्नान शब्द का अभाव हमे कदापि नहीं खटकना चाहिए। शौच शब्द के बाह्य शुद्धि परक अर्थ में पूरे शरीर की ही शुद्धि अभिप्रेत है अकारण केवल हाथ–मुंह धोकर शुद्धि मानना तो आलस्य का ही सूचक होगा। इस प्रकार लेखक का कुछ देश विशेषों को छोड़कर सर्व साधारण के लिए भी स्नान को अनियमित ठहरा देना कहां तक सुसंगत है पाठक स्वयं सोंचे।

एक स्थल पर वैयक्तिक कृत्य बताते हुए पण्डित जी एक नई सूझ देते हैं–"कि वेद रचना काल में ये वस्तुएं होती ही नहीं थीं।" इस विषय में मै पूछती हूं कि लेखक महोदय वेदों का कौन सा काल मानते हैं पाश्चात्य या पौरस्त्य ! प्रथम मत में तो यह कथन असंगत है ही पर द्वितीय आर्यमत मे भी वेदों का और सृष्टि का कर्त्ता एक ही होने से इसकी असारता स्पष्ट है। सृष्टि का कोई भी पदार्थ चाहे उत्पन्न होकर नष्ट हो चुका है, दृश्यमान है या भविष्य के गर्भ में है उस सर्वज्ञ प्रभु के ज्ञान में सब वर्तमान है ही। वेद में सिद्धान्त हैं तो सृष्टि में उनका प्रयोगात्मक रूप, अन्तर केवल इतना ही है। वेदों में उन्हीं वस्तुओं का वर्णन आया है जो वेदोत्पत्ति काल में वर्तमान थीं यह धारणा बनाने पर तो चोर, लुटेरे, जुआरी और अथर्ववेद में चर्चित अनेक रोग भी उत्पत्ति कालिक मनुष्यों में विद्यमान थे यह मानने को बाध्य होना पड़ेगा अतः "भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्ववेदात् प्रसिध्यति" (मनु० १२·९७) के अनुसार त्रिकालिक ज्ञान के अक्षय भण्डार वेदों के लिए किसी का कुछ कहना कोरा अनर्गल प्रलाप ही सिद्ध होगा।

कहां तक गिनाया जाये ऐसा लगता है कि यह सम्पूर्ण लेख ही जैसे वेदद्वेषी, पक्षपाती, पाश्चात्य लेखकों के खेमें में बैठकर लिखा गया है तभी तो पवित्र वैदिक संस्कृति सभ्यता का उपहास पदे-पदे किया गया है। तद्यथा–वेदों में चूंकि स्नान की चर्चा अति न्यून हुई है इस कारण स्नान साप्ताहिक, पाक्षिक अथवा मासिक भी किया जा सकता है यह स्वेच्छाचरण सिखाते हुए लेखक मुस्लिम सभ्यता का ही तो समर्थन प्रच्छन्न रूप से कर रहे हैं। इसी प्रकार सन्ध्या की चर्चा के प्रसंग में–"अपनी रुचि या परम्परा के अनुसार प्राणायाम जप सन्ध्या, ध्यान, गान, याग यज्ञ कुछ भी ऐसा कृत्य करने का विधान है जिससे मानसिक समता या शान्ति बनी रहे "कहा गया यह कथन भी भारतीयों को कम विभ्रान्त करने वाला नहीं। सच तो यह है कि वेद के विषय में ऐसी मन गढ़न्त बातों से परिपूर्ण यह लेख अपनी मनोहरता विज्ञप्त न करके बुद्धिहरता को व्यक्त करने लगा है। अपनों द्वारा किये गये इस प्रहार से वेदमाता भी कहीं न तिलमिला उठे और हम ईश्वरीय दण्ड के भागी न बन जायें अतः शुद्ध वैदिक दृष्टिकोण ही हमें समाज को प्रस्तुत करना चाहिए।

मृतक श्राद्ध और पितृपक्ष

(श्री जगदीश शरण 'शीतल' प्रधान आर्य समाज चान्दपुर)

पौराणिक मतानुसार श्राद्ध और तर्पण मृतक व्यक्तिके लिये सोलह दिन अर्थात् भादों सुदि पूर्णमासी से क्वार बदि अमावस तक किये जाते हैं जिसे ये पितृपक्ष कहते हैं। विचारणीय हो जाता है कि क्या इन सभी व्यक्तियों की मृत्यु इसी मास में हुई थी परन्तु ऐसा न होकर इन सारे व्यक्तियों की मृत्यु पृथक पृथक मास में हुई थी। फिर उसी मास उसी तिथि तथा उसी दिन यह क्रिया सम्पन्न न करके इसी मास तथा इसी पक्ष में क्यों की जाती है? भोजन की बात भी असंगत तथा सृष्टि नियम के विरुद्ध है। भोजन तो पंडित जी करें और पहुंच जाय उस मृत व्यक्ति को जिसका हमें यह भी पता नहीं कि वह अपने कर्मानुसार किस योनि में है और कहां है? कर्मानुसार वह व्यक्ति पशु-पक्षी तथा और नाना प्रकार की योनियों में जन्म ले सकता है। फिर उस व्यक्ति को उसी प्रकार का भोजन मिलना चाहिये जिसे खाकर वह तृप्त हो। अब यह मान कर चलिये कि मृत व्यक्ति दूसरे जन्म में भी मनुष्य ही बना है। परन्तु इस पितृ पक्ष में कभी भी वह अपने घर वालों से यह नहीं कहता कि आज मेरा भोजन आप लोग मत बनाना क्योंकि आज मुझे मेरा भोजन पिछले जन्म वालों के यहां से आ गया है। जिसे खाकर मैं तृप्त हो गया हूं। दूसरा तर्क यह है कि कोई व्यक्ति परदेश गया है यदि पंडित जी स्वयं भोजन करके उसको उस व्यक्ति तक पहुंचा दें और वह व्यक्ति परदेश से आने पर अपने घर वालों से कह दे कि आपका भेजा हुआ भोजन मुझे मिल गया तो पंडित जी की बात सच्ची। परन्तु यह बात कदापि कदापि सम्भव नहीं। भोजन जड़ पदार्थ है। उसकी कोई सामर्थ्य नहीं जो स्वयं वह किसी के पास पहुंच जाय। उसे तो जो भी खायेगा वही तृप्त होगा दूसरा नहीं। जब यहां का भोजन जो व्यक्ति जीवित है और उसके स्थान का भी पता है परन्तु उस तक नहीं पहुंच सकता तो फिर मृत व्यक्ति जो अपने कर्मानुसार किस योनि में है और कहाँ है इसका पता नहीं उस तक किस प्रकार पहुंच सकता है। भगवान कर्मानुसार जब जीव को दूसरा जन्म देते हैं तो जीव को पिछले जन्म का कुछ भी ज्ञान नहीं रहता। यदि ज्ञान रहे तो यह संसार चल ही नहीं सकता। अतः मृतक श्राद्ध सृष्टि नियम के विरुद्ध अवैदिक तथा मूर्खतापूर्ण पाखण्ड है।

वैदिक धर्मानुसार जीवित माता-पिता, बाबा दादी वृद्ध जन आचार्य, विद्वान तथा संन्यासी ही पितर हैं। इनकी श्रद्धा पूर्वक सेवा करना ही तर्पण है। मृत व्यक्तियों की सेवा और सत्कार किसी प्रकार हो नहीं सकती। अतः पितर मृतक नहीं जीवित ही होते हैं: मृत व्यक्तियों के उत्तम गुण, कर्म तथा विचारों को ही अपने जीवन में अपनाया जा सकता है अन्यथा और कुछ नहीं। प्राचीन कालमें संन्यासी, महात्माओं तथा वानप्रस्थियों के आश्रम जो पर्वतों के समीप होते थे वर्षा के कारण नगरों से उनका सम्पर्क टूट जाता था। ऐसी दशा में उनके भोजन आदि का प्रबन्ध ठीक न होकर उनके वहां रहने में असुविधा होती थी। इसी कारण वह वर्षा ऋतु में नगरों के समीप आकर चार मास व्यतीत करते थे। गृहस्थी लोग इनके ठहरने तथा भोजन आदि का उचित प्रबन्ध करके अपनी सेवा सत्कार से इन्हें तृप्त करते थे।

इस वर्षा ऋतु में क्या व्यापारी क्या कृषक सभी को अपने-अपने कार्य से अवकाश मिलता था, अतः यह संन्यासी इन चार महीनों में जेठ सुदि १ से क्वार बदि अमावस तक चारों वेदों का पारायण करते थे। सभी गृहस्थी इनके पास आकर वैदिक ज्ञान का अमृत पान तथा वेद मर्यादानुसार आचरण करके अपने जीवन को सार्थक करते थे। भादों का महीना समाप्त होनेपर वर्षा का वेग भी कम होने लगता है। अतः यह संन्यासी गण अब अपने अपने आश्रमों को वापस जाते हैं। क्वार बदि १ से असोज बदि अमावस तक प्रत्येक घर में इनको उत्तम उत्तम खाद्य पदार्थों से तृप्त करके इनका विशेष आतिथ्य सत्कार किया जाता था। इसी कारण यह पितृपक्ष कहलाता है। अतएव आतिथ्य-सत्कार जीवित पितरों का ही किया जाता था परन्तु पौराणिकवाद ने इस प्राचीन वैदिक पद्धति को नष्ट करके अपने स्वार्थ के लिये यह नवीन अवैदिक पद्धति प्रचलित कर दी जिसे आर्यों को बन्द करना और करवाना चाहिए।

हा ! अमर स्वामी जी

गाजियाबाद ६ सितम्बर। अत्यन्त वेदना के साथ हम यह समाचार प्रकाशित करते हैं कि आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी शास्त्रार्थ महारथी पू० श्री अमर स्वामी जी महाराज का ९३ वर्ष की आयु में गाजियाबाद में निधन हो गया। वे पिछले कुछ समय से कैंसर रोग से पीड़ित थे।

पू० स्वामी जी के निधन से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। सत्य के विवेचन में ऋषि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित शास्त्रार्थ परम्परा से जुड़ा हुआ उनका जीवन वैदिक आदर्शों के प्रचार एवं प्रसार के लिए सदा समर्पित रहा। वे आर्य समाज के प्राण थे। उनका कृतित्व एवं व्यक्तित्व महान् था। वैदिक साहित्य को उनकी देन हमें अनन्त काल तक प्रेरणा देती रहेगी। आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यमित्र परिवार उनके निधन पर अपना हार्दिक शोक प्रकट करता है और परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता है।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

दीवातीराम चालक-अन्त्येष्टि कर्म

पिथौरागढ़। स्वर्गीय दीवातीराम (चालक-कुष्ठ कार्यालय) का अन्त्येष्टि कर्म १४ अगस्त १९८७ को कालीनदी-तट पर झूलाघाट में मुख्यचिकित्साधिकारी डा.जे.एल. चित्तौड़िया, उपमुख्यचिकित्साधिकारी डा. ए. एन. सिंह, जिला कुष्ठ अधिकारी डा. कच्चाहारी, प्रधान लिपिक ए. के. तिवारी, स्टेनो भवानीराम आर्य वरिष्ठलिपिक अम्बा-दत्त भट्ट आदि सहित जनसमूह की उपस्थिति में सम्पन्न किया गया। १५ अगस्त को चौथे दिन आर्य समाज मन्दिर में दिवंगत आत्मा की शांति तथा परिजनों के धैर्य हेतु शांति यज्ञ में परमात्मा से प्रार्थना गई।

गुरुकुलानन्द सरस्वती कच्चाहारी
आर्य समाज पिथौरागढ़ उत्तर प्रदेश

पिथौरागढ़ में वेदप्रचार अष्टाह्न

पिथौरागढ़। रक्षाबन्धन ९ अगस्त से जन्माष्टमी १६ अगस्त १९८७ तक आर्य समाज द्वारा राष्ट्रीय एकता–अखण्डता–सम्पन्नता हेतु राकेश जी सलूजा, डा० सांवलसिंह (मनोविज्ञानाध्यक्ष), शारदा शिशु वाटिका गम्भीरसिंह जी चौहान (उपप्रधान-आर्य समाज) आदि के स्थलों में वेद प्रचार सत्संग आयोजित किये गए। सत्संग हेतु स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी से सम्पर्क करें।

लक्ष्मीचन्द्र मित्तल मन्त्री
आर्य समाज पिथौरागढ़ उ० प्र०

आर्य समाज क्या है ?

लेखक : ज्येष्ठ वर्मन बम्बई

[गतांक से आगे]

यही नहीं पाश्चात्य विद्वान बोम बूहलर, जान विलसन, मोनियर विलियम्स प्रभृति लोगों से भी स्वामी दयानन्द ने मिलकर विचारों का आदान-प्रदान किया था। इस प्रकार के बड़े तपस्वी साहसी सुधारक और उदार हृदयी विद्वान दुनिया में दूसरा मिलना बहुत कठिन है। इसलिए स्वामीजी महाराज को अन्य साधारण समाज सुधारक और धार्मिक नेताओं की पंक्ति मे बिठाना उनके व्यक्तित्व के साथ अन्याय है। इसी प्रकार उनको केवल आर्य समाज के प्रवर्त्तक के रूप में प्रस्तुत करना भी उचित नहीं है और आर्य समाज को एक धार्मिक संस्था वह भी संकीर्ण अर्थ में, मानना भी उतना ही गलत है।

बम्बई में आर्य समाज की स्थापना करने के बाद, स्वामी दयानन्द के महत्वपूर्ण प्रचार कार्य क्रम पंजाब और राजस्थान में हुए। पंजाब मे उनको बम्बई से भी अधिक अनुकूल वातावरण मिला था। पढ़े लिखे हिन्दुओ ने स्वामी जी के विचारों को बहुत जल्दी स्वीकार किया। इसलिए वहां आर्य समाज का प्रचार बहुत तेजी से हुआ और अधिक व्यापक भी। उसके बाद राजस्थान में स्वामी जी के कार्यक्रमों मे कुछ परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। वहां उन्होंने क्षत्रिय राजाओ के साथ अधिक समय बिताया था। क्योंकि उन लोगों से स्वामीजी को विशेष आशा थी। यदि ये लोग सुधर जाते तो सारे आर्यावर्त के सुधरने में देर नहीं लगती। उदयपुर में स्वामी जी छः महीनों तक रहे थे उन दिनों में, उन्होंने महाराणा और उसके परिवार के लोगों को विशेष रूप से राज धर्म का उपदेश दिया था। महाराणा सज्जनसिंह से स्वामीजी ने सरकार के कामकाज में अरबी के बदले देवनागरी को लाने का निवेदन किया था—जिसे महाराणा ने स्वीकार किया था, महाराणा ने सरकारी पाठशालाओं में स्वामी जी की सलाह के अनुसार पाठ्यक्रमों में परिवर्त्तन भी करवाया था। इन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य जो स्वामीजी ने किया था वह है राजनियम पर महाराणा को उनका लिखा हुआ पत्र उसमें इक्कावन नियम लिखे गये है। नियम दस में स्वामीजी कहते हैं कि स्वराज्य और परराज्य का जो चिकीर्षित और अच्छे बुरे काम होते हैं उनको दूत द्वारा यथावत जानकर दुष्ट कार्यकर्त्ताओं को दण्ड और उत्तम कार्य करने वालो का सत्कार यथायोग्य कीजिए जिससे उत्तम कार्य बढ़ें और दुष्टकर्म घट जायें। नियम २७ मे स्वामीजी ने कहा है कि अपराध मे प्रजा से राजपुरुषो पर अधिक दण्ड होना चाहिए क्योंकि बकरी के प्रमाद रोकने से सिंह का प्रमाद रोकने से अधिक प्रयत्न होना उचित है। नियम ४० कहता है कि राज्य का कार्य एक पर निर्भर न रखें। किन्तु राजपुरुष और प्रजा पुरुष की अनुमति के अनुकूल प्रचलित करें। नियम ४४ के अनुसार कोई भी अपने आत्मा व शरीर को राजा वा अधिकारी न समझें किन्तु राजनीति ही को राज और राज्याधिकारिणी मानें। ये सारी ऐसी बातें हैं कि प्लैटो प्रोफेसर लहास्की और लार्ड डायसे जैसे विश्वविख्यात राजनीति शास्त्र और कानून के पंडितों को भी सीखने जैसी हैं।

उन दिनों में अंग्रेज सरकार ने नमक और शक्कर पर कर लागू किया था। स्वामीजी ने इसका विरोध किया था और कहा था कि इसके बदले सरकार शराब पर चारगुना अधिक कर लागू करे। स्वामी दयानन्द ने यह भी देखा कि अंग्रेजों की कानून व्यवस्था में चोरी जुआ और मिलावट जैसे अपराध करने वालों के साथ सख्ती के साथ व्यवहार नही होता है इसलिए अपराधों की वृद्धि होती है। उन्होने कहा कि जैसे मनुस्मृति मे इस प्रकार के अपराधियो के हाथ काटने, गर्म लोहे की शलाका से जलाने और मृत्यु दण्ड बताये गये है, उनको लागू करने से ही ये अपराध घटेंगे कुछ इस्लामी देश इस बात के लिए अच्छे उदाहरण है आपने यह भी कहा था कि अंग्रेजों के ये न्यायालय और उनके न्याय देने की तरीके समय और पैसे बरबाद करनेवाले हैं और गरीबों पर यह एक बड़ा बोझ है।

ये सारी बातें किसी एक साधारण समाज सुधारक या धार्मिक नेता की नहीं हो सकती महाभारत का एक श्लोक कहता है—

> सर्वा विद्या राजधर्मेषु, युक्ताः
> सर्वे लोकाः राजधर्मे प्रविष्टाः।
> सर्वे धर्मा राजधर्मप्रधानाः ॥
> (शांतिपर्व अध्याय ६३)

अर्थात् राजधर्म मे सब धर्म आ जाते हैं और राजधर्म सब धर्मों में प्रधान धर्म है। इसलिए स्वामी जी महाराज चाहते थे कि देश का राजधर्म पहिले सुधर जाए, जिससे अन्य सुधार कार्य सरल हो सकें।

स्वामीजी महाराज यह भी जानते थे कि राजा याने सरकार ही काल का कारण होता है। अच्छी सरकार के ही कारण देश में सुवृष्टि और सुखसमृद्धि बढ़ती है, और दुष्ट सरकार के कारण ही दुष्काल, दुःख दारिद्रय, हिंसा आदि फैलती है। इसलिए स्वामी जी समझते थे कि राजाओं को सुधारना आवश्यक था। राजनीति के सुधार से ही उनकी सम्यक क्रांति सम्भव थी। धूर्त दुराचारी लोगों के हाथों में सरकार जाने देना बहुत बड़ी गलती है। यह शिक्षा स्वामी दयानन्द की थी और इस शिक्षा का पालन करना उनके उत्तराधिकारी आर्यसमाज का कर्त्तव्य है इन्हीं सारी बातों के आधार पर मैंने प्रारम्भ में ही कहा था कि आर्य समाज एक सम्यक् क्रान्तिकारी सुधारक संस्था है और उसका लक्ष्य है समस्त मानव जाति की सर्वांगीण उन्नति इस कार्यक्रम का श्रीगणेश आर्य समाज की स्थापना द्वारा—आर्यावर्त से होता है। लेकिन यह भी एक कटु सत्य है कि दुनिया के सामने आज आर्य समाज का यह चित्र नही है। इसके बदले कुछ गलत चित्र ही सामने आ रहा है इसका कारण स्वयं आजकल के तथाकथित आर्य समाज के कार्यकर्त्ता और प्रचारक मण्डली है जो अल्पश्रुत, अर्धशिक्षित, स्वार्थी, अवसरवादी, पदलोलुप और आचारहीन व्यक्तियो से भरा है। ऐसे लोगों से आर्य समाज को बचाये रखने के लिए ही बम्बई में कुछ नियम बनाये गए थे। आर्य समाज के २८ नियमों में से नियम ८ कहता है—

इस समाज में सत्पुरुष, सद्नीति, सदाचारी जनों के हितकारक समाजस्थ किये जायेंगे। लेकिन सर्वेगुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति इस कहावत के अनुसार आर्यो ने सम्पन्न लोगों के सब दोषों की ओर आंखें बन्द कर लीं, उनका सम्मान करना और उनको प्रधान बनाना अथवा समाज के कार्यक्रमो में मुख्य अतिथि आदि बनाना शुरू किया और इन लोगों ने अपने अनुकूल बोलनेवाले पंडित आदि लोगो को समाज मे जमा किया। इसके दुष्परिणामो से कोई भी आर्य आज अनभिज्ञ नहीं है।

नियम १२ कहता है कि प्रत्येक सभासद को न्यायपूर्वक पुरुषार्थ से जितना धन प्राप्त हो उसमें से आर्य समाज, आर्य विद्यालय तथा आर्य पत्र इन तीनों के प्रचार के लिए प्रीतिपूर्वक शतांश देवे। अधिक देने से अधिक धर्मफल ..... ॥

[क्रमशः]

दंगा पीड़ित कोष में दानदाताओं की सूची

पिछले दान का योग	रु० २८११४)
५७–शिव शक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट मेरठ	१०००)
५८–मनु सप्रा जी मेरठ	१०१)
५९–ईश्वरदास जी सप्रा मेरठ	४०१)
६०–आर्यसमाज थापर नगर, मेरठ	६६०)
६१–दयावती सक्सेना मेरठ	५१)
६२–स्त्री आर्यसमाज दयानन्द पथ सदर मेरठ	५००)
६३–प्रेमलता जी बगिया बेगम बाग मेरठ	५०)
६४–दयाप्रकाश जी सर्राफ मवाना (मेरठ) [पूर्व प्रकाशित]	५००)
६५–बाबूराम जी रस्तोगी मवाना (मेरठ)	१०१)
६६–सत्यप्रकाश जी मवाना (मेरठ)	५००)
६७–महिला आर्यसमाज मवाना (मेरठ) [पूर्व प्रकाशित]	१००)
६८–आ० स० मवाना (मेरठ) [पूर्व प्रकाशित]	१०००)
६९–दिनेशचन्द्र जी मवाना (मेरठ)	१०१)
७०–बन्नूलाल जी गुदड़ी बाजार मेरठ (स्वयं दंगा पीड़ित)	११)
७१–कान्तिप्रसाद जी ,, ,, ,, (,,)	११)
७२–बाबूलाल जी ,, ,, ,, (,,)	११)
७३–सुभाषचन्द्र ,, ,, ,, (,,)	११)
७४–मोहनकुमार जी ,, ,, ,, (,,)	११)
७५–अमरनाथ जी शर्मा कंकरखेड़ा मेरठ	११)
७६–आर्यसमाज कंकरखेड़ा मेरठ	१३५)
७७–बलराज जी ककरखेड़ा ,,	११)
७८–रमेशचन्द्र जी गुप्त ,, ,,	१०१)
७९–डा० राजाराम जी ,, ,,	११)
८०–रामलाल जी बिगास ककर खेड़ा मेरठ	११)
८१–श्याम बिहारी जी ,, ,,	२५)
८२–भारत बन्धु रस्तोगी ,, ,,	२१)
८३–ओमप्रकाश जी ,, ,,	५१)
८४–लक्ष्मणसिंह जी ,, ,,	११)
८५–कैप्टन टी०सी० सेतिया ,, ,,	२१)
८६–आर० एस० बिमल ,, ,,	११,
८७–सावित्री जी गुप्ता ,, ,,	१०)
८८–श्यामवती जी ,, ,,	११)
८९–निर्मल जी ,, ,,	११)
९०–डा० ओ० पी० गोयल मेरठ	१०)
९१–पुरुषोत्तमलाल जी मेरठ	११)
९२–मेरठ युवा ट्रक आपरेटर एसोसियेशन मेरठ	२२५)
९३–देवेन्द्र जैन प्रबन्धक मेनका सिनेमा मेरठ	१००)
९४–खन्ना स्पोर्टस इण्डस्ट्रीज प्रा० लि० मेरठ	१०००)
९५–भारत भारती प्रकाशन मेरठ	२५०)
९६–ललित मोहन जी थापर नगर मेरठ	५०१)
योग	रु० ३५८४३)

१–आर्यसमाज कस्बा मुरादनगर मेरठ–	१ बोरी आटा
२– " आयुध निर्माणी पूर्वी क्षेत्र मेरठ द्वारा मायाप्रकाश जी	१ बोरी आटा
३–आर्यसमाज गाजियाबाद	६ बोरी आटा

(नोट–श्री दयाप्रकाश सर्राफ प्रधान आ० स० मवाना ने अपनी स्वर्गीया धर्मपत्नी श्रीमती जसवन्ती देवी की पुण्य स्मृति मे ५०१) रु० गुरुकुल प्रभात आश्रम को दान दिया।)

इन्द्रराज
सभा प्रधान

सभा दानी महानुभावो का आभार प्रकट करती है।

–सभा मन्त्री

देश के विभिन्न अंचलों में वेदप्रचार सप्ताह

श्रावणी उपाकर्म, स्वाधीनता दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सोल्लास सम्पन्न होने के समाचार प्राप्त हो रहे हैं।

निम्नलिखित समाजो से अब और सूचनाएं प्राप्त हुयीं–

१–आर्यसमाज चाँदपुर बिजनौर
२–आर्यसमाज जवाहरनगर लालकुर्ती मेरठ
३–आर्यसमाज कासिमपुर (गढाईपुर) काजिमाबाद अलीगढ़
४–आर्यसमाज कासगंज एटा एवं महिला आर्य समाज माथुर.म वाले गली पचौरा कासगंज एटा
५–आर्यसमाज वृन्दावन मथुरा
६–आर्यसमाज पिलखुआ गाजियाबाद
७–आर्यसमाज मेरापुर फर्रुखाबाद
८–आर्यसमाज शान्ताक्रुज बम्बई
९–आर्यसमाज लालगंज रायबरेली
१०–जिला आ०उप०प्र०सभा चम्पारण द्वारा ग्राम जगीरहा त्रिवनी
११–आर्यसमाज खैर अलीगढ़
१२–आर्यसमाज देहरादून एवं न्यू फारेस्ट देहरादून, राजेन्द्र नगर देहरादून
१३–आर्यसमाज मिलक रामपुर
१४–आर्यसमाज ऋषिकेश
१५–आर्यसमाज हिण्डोन सिटी
१६–आर्यसमाज केराकत जौन र
१७–आर्यसमाज नामनेर आगरा
१८–आर्यसमाज मथुरा

शोक समाचार

–श्री वीरपालसिंह हरपालपुर उपप्रधान आर्यसमाज कर्णपुरवल फर्रुखाबाद की पत्नी का देहावसान हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार २२–८–८७ को वैदिक रीति से कराया गया। –कृष्णपालसिंह मन्त्री

–आर्यसमाज कायमगंज फर्रुखाबाद ने लक्ष्मी यदुनन्दन महाविद्यालय की संस्थापिका श्रीमती लक्ष्मीदेवी चतुर्वेदी के निधन पर शोक सभा मे श्रीमती चतुर्वेदी एवं महाविद्यालय परिवार के प्रति सम्वेदना व्यक्त की। –श्रद्धानन्द मन्त्री

–आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के महान सन्त पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज का ता० ३०–५–८७ ,को प्रातः काल, ८५ वर्ष की आयु मे देहावसान हो गया, ता० ३–८–८७ को उनकी कुटि में शांति यज्ञ हुआ और उन्हें श्रद्धांजलियां अर्पित की गईं।

–महेन्द्र मुनि मन्त्री

मारिशस के भूतपूर्व मन्त्री एवं मारिशस के आर्य नेता भारत यात्रा पर

मारीशस सरकार के भूतपूर्व मन्त्री एवं प्रसिद्ध आर्य नेता श्री राम-नाथ जी जीधा भारत यात्रा पर आए हैं। ये मारिशस की एक शिरोमणि सभा 'आर्य सभा' के कोषाध्यक्ष हैं तथा डी०ए०वी० ईस्टर्न कालेज मारिशस के मैनेजर हैं। अब वह कालेज डी०ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्र गुप्त रोड, नई दिल्ली से सम्बन्धित हो गया है। भारत पधारने पर डी० ए० वी० मैनेजिंग कमेटी के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा आर्यसमाज के सदस्यों द्वारा उनका पुष्पमालाओं से भव्य स्वागत किया गया। मैनेजिंग कमेटी के कार्यालय के गेस्ट हाउस में ही उनके रहने का प्रबन्ध किया गया है। वे भारत मे एक महीना ठहरेंगे और भारत की डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं का जैसे कि डी० ए० वी० कालेज चण्डीगढ़, महाराजा हरिसिंह कृषि विद्यालय, नागबनी, जम्मू, (तवी) तथा दिल्ली की डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं का निरीक्षण करेंगे। इसके अतिरिक्त वे अन्य धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं को विशेष रूप से देखेंगे। —डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी

चित्र गुप्त रोड, नई दिल्ली

कोटा में आर्यवीरांगना दल की स्थापना

कोटा में आर्य वीर दल की स्थापना के पश्चात् दल द्वारा स्थापित व्यायामशालाओं में बालिकाओं की बढ़ती हुई रुचि तथा संख्या को देखते हुए श्रावणी पर्व पर आर्य वीरांगना दल की अलग से स्थापना का निर्णय लिया गया। दिनांक १० अगस्त ८७ को सायं ६ बजे आर्य समाज विज्ञान नगर के प्रांगण में उसका उद्घाटन श्री कृष्णगोपाल आर्य संचालक आर्य वीर दल कोटा द्वारा ध्वजारोहण के साथ किया गया।

—कोटा—श्रावणी (रक्षा बन्धन) पर्व के अवसर पर आर्य वीर दल कोटा द्वारा रंग बाड़ी पर एक वन भोजन का आयोजन किया गया जिसमें कोटा क्षेत्र के लगभग ६० आर्य वीरों ने भाग लिया।

यज्ञशाला का उद्घाटन

आर्यसमाज ग्राम कांधरपुर जिला बरेली में दिनांक २८—६—८७ को आर्यसमाज की यज्ञशाला का उद्घाटन माननीय राज्य मन्त्री श्री चेत-राम गंगवार उत्तरप्रदेश शासन द्वारा सम्पन्न हुआ।

—सोबरनसिंह मन्त्री

केदारसिंह स्वास्थ्य लाभ यज्ञ

पिथौरागढ़—आर्यसमाज नैनीताल के नवयुवक मूक समाज सेवी मन्त्री केदारसिंह जी के पेट का आपरेशन हुआ है। उत्तराखण्ड केसरी श्री बांकेलाल जी कंसल की देख-भाल में मन्त्री जी का उपचार हो रहा है। आर्यसमाज मन्दिर पिथौरागढ़ में २० अगस्त १९८७ को सम्पन्न 'केदारसिंह स्वास्थ्य लाभ यज्ञ' में स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी द्वारा परमात्मा से प्रार्थना की गई।

राष्ट्रपति जयवर्धन-दीर्घायु कामना

पिथौरागढ़—श्रीलंका में १८ अगस्त १९८७ को राष्ट्रपति जयवर्धन पर प्राणघातक आक्रमण किया गया। वह बाल-बाल बचे। २१ अगस्त को आर्यसमाज मन्दिर में सम्पन्न यज्ञ में स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी द्वारा राष्ट्रपति जयवर्धन के दीर्घायु व स्वास्थ्य हेतु परमात्मा से प्रार्थना की गई।

पं० सेवाराम आर्य अस्पताल में

नई दिल्ली २० अगस्त। रघुपुरा आगरा निवासी पं० सेवाराम आर्य कैंसर का इलाज कराने स्थानीय सैनिक अस्पताल (सर्जिकल वार्ड) में दाखिल हैं। ७२ वर्षीय पं० सेवाराम आर्य वर्षों तक आर्य समाज दीवान हाल की ग्राम प्रचार मण्डली के साथ दिल्ली, हरियाणा तथा उत्तरप्रदेश के क्षेत्रों में वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे हैं।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

आर्यमित्र के भू. पू. सहसम्पादक श्री रमेश चन्द्र शास्त्री विद्याभास्कर दिवंगत

श्री रमेशचन्द्र शास्त्री का देहावसान दिनांक २४ अगस्त को मूलचन्द अस्पताल देहली में हो गया। वे कुछ समय से फालिज के आक्रमण से बीमार थे। श्री शास्त्री जी अलीगढ़ जिले के मोरमा गांव के निवासी थे। आप गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक थे। स्नातक होने के बाद लाहौर डी० ए० वी० स्कूल में अध्यापन कार्य किया उसके बाद विभाजन के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश में सहायक सम्पादक के रूप में आर्यमित्र का कुछ काल तक कार्य करते रहे।

उन्होंने अपने जीवन काल मे महाविद्यालय ज्वालापुर के उपमन्त्री, मन्त्री एवं मुख्य अधिष्ठाता के पदों पर रहकर गुरुकुल की सेवा की। आर्यसमाज लोदी रोड दिल्ली के सदस्य थे और अधिकारी भी। कुछ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय को भी सुचारुरूप से चलाया। चार वर्ष पहले उनकी पत्नी का भी देहावसान हो चुका था। उनकी स्मृति में आपने सार्वदेशिक सभा को २१ हजार रुपये स्थिरनिधि के रूप में प्रदान किया जिसके ब्याज से संस्कृत के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दी जाया करेगी। उनके इस असामयिक निधन पर प्रभु से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें और उनके पारिवारिक जनों तथा मित्रो को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। आर्यमित्र परिवार उनके इस असामयिक निधन पर बहुत दुःख प्रकट करता है तथा परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा को शान्ति के लिए प्रार्थना करता है।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

चौ० लज्जाराम का निधन

आर्यजगत को यह जानकर बड़ा दुख होगा कि एक कर्मठ, वयोवृद्ध आर्य, चौ० लज्जाराम ग्रा० इस्माईलपुर (बिजनौर) का गत १३ जुलाई को आकस्मिक निधन हो गया। चौधरी साहब अपने जीवन के प्रारम्भिक काल से ही एक उत्साही नवयुवक रहे। उन्होने मुस्लिम परिवार की कन्या से अन्तर्जातीय विवाह किया एवं शुद्धि आन्दोलन में सदा समर्पित रहे और आर्यसमाज को मुक्तहस्त से दान देते रहे। परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति एवं सद्गति तथा उनके पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करने की शक्ति दें।

—स्वामी कर्मानन्द

आर्य वीर दल की स्थापना

आर्यसमाज ग्राम व पोस्ट मीनापुर के अन्तर्गत संचालित 'महर्षि दयानन्द व्यायामशाला' के सदस्यों से आर्य वीर दल की स्थापना विद्यार्थी ओम् प्रकाश आर्य की अध्यक्षता में दिनांक ३—८—८७ को की गई है। डा० चन्द्रप्रकाश आर्य व्यायामशाला प्रबन्धक की देखरेख में आर्य वीर दल का कार्यक्रम संचालित होता है।

—देवीप्रसाद आर्य वानप्रस्थी, प्रधान

महात्मा प्रभुआश्रित जन्म शताब्दी–श्री गुरुविरजानन्द स्मारक करतारपुर मे

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट तथा श्री गुरु विरजानन्द वदिक संस्कृत महा विद्यालय करतारपुर अपना वार्षिकोत्सव 'महात्मा प्रभु आश्रित जी की जन्म शताब्दी' के रूप मे २० से २७ सितम्बर ८७ तक सोल्लास मना रहा है जिसके अध्यक्ष महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी तपोवन देहरादून होगे। भोजन एव आवास का प्रबन्ध ट्रस्ट की ओर से होगा कृपया बिस्तर साथ अवश्य लाए।

–चतुर्भुज मित्तल
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय
करतारपुर जिला जालन्धर (पजाब)

दर्शनाचार्य प० उदयवीर जी शास्त्री को पक्षाघात

सुविख्यात आर्य विद्वान एव अमरशहीद सरदार भगतसिंह के गुरु साख्ययोगाचार्य प० उदयवीर जी शास्त्री को जवाहरलाल नेहरू अस्पताल अजमेर मे पक्षाघात के कारण भर्ती कराया गया है। माननीय शास्त्री जी की आयु इस समय ९३ वर्ष की है। उनके दौहित्र उनकी सेवा कर रहे हैं। रुग्णता का समाचार मिलते ही स्थानीय परोपकारिणी सभा के सदस्य उनकी कुशलक्षेम पूछने पहुचे।

–धर्मवीर सम्पादक 'परोपकारी', अजमेर

आर्यसमाज मन्दिर निर्माणार्थ आर्यसमाज बांसबेंड़िया की अपील

बाँसबेड़िया मे गत ५० वर्षो से आर्य समाज वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करते हुए हिन्दू धर्म एव संस्कृति की रक्षा करता चला आ रहा है। ईश्वर की कृपा से वहा के लोगो ने अथक परिश्रम करके मन्दिर निर्माण हेतु मिल लाईन मे स्थान प्राप्त किया लेकिन अर्थाभाव के कारण इसके निर्माण मे बाधक है। अत दानी महानुभावो से सविनय अनुरोध है कि इस पवित्र कार्य मे अपना पूर्ण सहयोग देकर 'आर्यसमाज मन्दिर' के निर्माण मे सहयोग करें।

यशरोशन आर्य (प्रधान)   चौ० दाशरथी आर्य (मन्त्री)
समाज कार्यालय–२३२ नया लेन, बासबेडिया, पो० बासबेडिया,
जिला–हुगली

फीजी आर्य प्रतिनिधि सभा के सरक्षक श्री परमेश्वर का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी के भूतपूर्व प्रधान और सभा के वर्तमान सरक्षक श्री रामभीर परमेश्वर का ८७ वर्ष की आयु मे १० जुलाई को राजधानी सूवा मे देहान्त हो गया। वे फीजी आर्यसमाज आन्दोलन की शुरुआत से ही शिक्षा के क्षेत्र मे जुडे रहे। वहा १९०४मे आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। सभा ने १९८२ मे उनकी सेवाओ के उपलक्ष्य मे आर्य रत्न की उपाधि से उनको विभूषित किया था। फीजी की सरकार ने उनको एम० बी० ई० और जस्टिस आफ पीस की भी उपाधि दी।

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी ने उनके निधन पर हार्दिक सवेदना प्रकट की है।

–ब्रह्मदत्त स्नातक अवै० प्रेस एव जनसम्पर्क सलाहकार

स्वर्गीय श्री पूर्णचन्द्र गुप्त

–आचार्य देवव्रत अवस्थी

दैनिक जागरण के सस्थापक स्व० श्री पूर्णचन्द्र गुप्त को इस ससार से विदा हुये लगभग एक वर्ष व्यतीत हो गया। १५ सितम्बर उनकी प्रथम पुण्य तिथि है।

स्व० पूर्णचन्द्र जी गुप्त स्वतन्त्रता सग्राम के वरिष्ठतम सेनानी थे। उन्होने स्वराज्य आन्दोलन मे काफी समय तक भूमिगत रहकर क्रान्तिकारी साहित्य का प्रकाशन व वितरण करके जन क्रान्ति मे अनुपमेय योगदान किया। वे स्वय लिखते, कम्पोज करते और स्वय मशीन चलाकर उसे छाप कर वितरित कराते थे। अनेको बार पुलिस की काली निगाहो मे बचने के लिए वे स्थान परिवर्तन भी करते थे और कई कई दिन उन्हे भूखा भी रहना पडा, परन्तु उनके कार्य मे व्यवधान कभी नहीं आया।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद वे अपनी ओजस्वी लेखनी से भारतीय, संस्कृति भारतीय सभ्यता और राष्ट्रभाषा हिन्दी को उसके गरिमामय पद पर प्रतिष्ठापना के लिए दृढ़ता से लिखते रहते थे। राष्ट्रभाषा के प्रति अनन्य श्रद्धा का उदाहरण कालपी मे अपने कतिपय घनिष्ठतम स्वतन्त्रता सग्राम साथियो के साथ मिलकर हिन्दी भवन की स्थापना है।

वे सर्वात्मना महर्षि दयानन्द के भक्त थे। पच महायज्ञ उनके दैनिक जीवन के अग थे। उनके परिवार मे वैदिक धर्म के प्रति पूर्ण आस्था है। भारतीय जीवन की झाकी उनके परिवार मे देखी जा सकती है।

पत्रकारिता की उज्ज्वलता के लिए वे सदैव सशक्त आवाज उठाते रहे। वे कहा करते थे कि सच्चा पत्रकार अपनी कलम नहीं बेचता। हिन्दी पत्रकारिता व पत्रो के सम्वर्द्धन के लिए वह प्रयत्नशील रहते थे। बात सन् १९५० की है जब उन्होने मुझसे प्रश्न किया था कि बताओ हिन्दी पत्रो की प्रगति मे कौन कौन सी बाधायें हैं। मेरे चुप रहने मे उन्होने स्वय ही कहा था कि इसमे सबसे बडी बाधा हिन्दी समाचार पत्र मांग कर पढने की दुष्प्रवृत्ति है। मुझे तो कलम पकड कर उन्होने लिखना सिखाया था मै उनके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकता।

आज वे नहीं है परन्तु उनका दिशा निर्देशन सदैव हमारा सम्बल रहेगा उनकी निर्भीक लेखनी का अनुसरण हमे पत्रकारिता के वास्तविक स्वरूप को स्थापित रखने मे परमसहायक रहेगी उनकी प्रथम पुण्य तिथि पर हमारा शतश नमन् और श्रद्धाजलिया समर्पित हैं।

★ ★ ★

स्वामी विद्यानन्द जी का सम्मान

प्रसिद्ध विद्वान् आर्य सन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को उनकी वेद मीमासा पुस्तक के लेखन उपलक्ष्य मे श्री घूडमल आर्य पुरस्कार समिति आर्यसमाज हिण्डौन राज० द्वारा सम्मानित किया गया–सम्मान स्वरूप शाल अभिनन्दन पत्र एव पन्द्रह सौ एक रुपये की राशि उन्हे प्रदान की गयी। समारोह की अध्यक्षता डा० ओ३म् प्रकाश वेदालकार ने की।

शुभ विवाह

–श्री धर्मपालसिंह कोषाध्यक्ष आर्यसमाज कर्णपुर बस्त फर्रुखाबाद की पुत्री का विवाह १२–६–८७ को श्री हरीशकरसिंह चौहान के पुत्र श्री शिवप्रतापसिह के साथ पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

–आर्यसमाज कोड़ा जहानाबाद फतेहपुर मे श्रावणी पर्व पर श्री सतोष कुमार ओमर एव आयु० रामीदेवी का विवाह सुसम्पन्न हुआ।

–बाबूलाल आर्य मन्त्री

हिन्दी कैसे आपाएगी ?

हर अधिकारी अंग्रेज बना,
हिन्दी को है दासी कहता।
युग ही बन गया मुलम्मे का,
डिस्को का डान्स यहा चलता।
निज भाषा पर अभिमान नहीं,
हिन्दी कैसे आपाएगी ?

चिंतन अंग्रेजी भाषा मे,
हिन्दी मे बात किया करते।
भावी सन्तति के स्वप्न सभी,
पश्चिम के रगो से रगते।
विज्ञापन की सीमा पाकर,
हिन्दी कैसे आपाएगी ?

रोमन लिपि मे लेखन इसका,
हिन्दी का चायक कहलाता।
राष्ट्रीय पर्व त्योहारो पर,
नेता से पढवाया जाता।
जब सस्कार से हो वचित,
हिन्दी कैसे आ पाएगी ?

शासन दुःशासन बन करके,
है चीर हरण करता जाता।
निष्क्रिय हो रहा युधिष्ठिर है,
बस गान विवशता के गाता।
अंग्रेजी का शासन जब तक,
हिन्दी कैसे आपाएगी ?

मन्त्रोच्चारो का नाम नहीं,
हौलीवुड स्वर गूजा करते।
जब-जब होते है जन्म दिवस,
केको के कटने पर मनते।
अन्धानुकरण जब तक होगा,
हिन्दी कैसे आपाएगी ?

—डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी, प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगज, बरेली

सूचना

आर्यसमाज मन्दिर मैनपुरी के समस्त किरायेदार बन्धुओ को पुन सूचित किया जाता है कि वे उक्त आर्य समाज के इस सभा द्वारा नियुक्त संयोजक के अतिरिक्त अन्य किसी को भी किराया न देवें।

इस सम्बन्ध मे यदि वे कोई पहिले भूल कर चुके हो तो वे आज से इस प्रकार की भूल न करें यदि वे ऐसा करेंगे तो उनकी पुरानी भूल पर यह सभा उदारता पूर्वक विचार करके उनके हित मे निर्णय देने का प्रयास करेगी।

स्मरण रहे कि सत्यवीर पुत्र लटूरी झिम्पूपुरा (इटावा) का उक्त आर्यसमाज से कोई सम्बध नहीं है। उन्हे आर्यसमाज से निकाला जा चुका है।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री सभा

मारिशस में पुनः जगन्नाथ सरकार

मारीशस के संसदीय चुनाव मे प्रधान मन्त्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ के त्रिदलीय गठबन्धन को पुन बहुमत प्राप्त हो गया है और अब उनका मौरीशस के प्रधान मन्त्री पद पर सुशोभित होना निश्चितप्राय है। श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ वैदिक विचारो से ओतप्रोत हैं और आर्यसमाज के प्रति निष्ठावान हैं। उनके नेतृत्व मे मौरीशस की जनता सुख और शान्ति के प्रगति पथ पर निरन्तर बढती रहेगी—ऐसा हमारा विश्वास है। भारत और मौरिशस की जनता के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध अटूट हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० उनके इस गौरवान्वित पद पर चुने जाने पर बधाई देती है और उनके यशस्वी जीवन की कामना करती है।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

डा० भवानीलाल भारतीय षष्टि पूर्त्ति स्मारिका

आर्यसमाज के प्रसिद्ध साहित्यकार, शोध विद्वान् और सुपरिचित लेखक डा० भवानीलाल भारतीय जून १९८८ मे अपने जीवनकाल के ६० वर्ष पूरे कर रहे है। इस अवसर पर 'डा० भवानीलाल भारतीय षष्टि पूर्त्ति स्मारिका' का प्रकाशन किया जा रहा है। डा० भारतीय दयानन्द जीवनी साहित्य के अनथक अध्येता तथा प्रामाणिक कृतिकार हैं। उन्होने ऋषि दयानन्द, आर्य समाज तथा आर्य साहित्यकारो से सम्बन्धित लगभग ४ दर्जन ग्रन्थो का लेखन और सम्पादन किया है। आर्यसमाज के पत्र-पत्रिकाओ मे वे निरन्तर लिखते रहते हैं। इस स्मारिका के लिए आर्यजगत् के लेखको, सम्पादको, गवेषको, पत्रकारो, पाठकों तथा आर्य महानुभावो से निवेदन है कि अपना लेख, सन्देश, शुभ कामनायें तथा सहयोग देकर श्री भारतीय जी का अभिनन्दन करें।

निवेदक—
डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री
डा० भवानीलाल भारतीय षष्टि पूर्त्ति स्मारिका
आर्यसमाज अमेठी—२२७४०५ (सुल्तानपुर) उ० प्र०

संशोधन

पाठकगण ! कृपया 'आर्यमित्र' दि० १६-८-८७ को निम्न सशोधन पूर्वक पढने का कष्ट करें—

१—पृष्ठ—१ मे, नीचे '१५०' के स्थान पर '१००' यात्री तथा 'जुलाई' के स्थान पर 'अगस्त'।

२—पृष्ठ के द्वितीय स्तंभ के क्र० स० ३७ मे केवल 'सूबेदार आर्य मैनपुरी'।

टिप्पणी—आर्योपसभा जिला मैनपुरी के विगत कथित निर्वाचन की जाच, श्री उमेश जी स्नातक (इटावा) के पास, विचाराधीन है।)

मनमोहन तिवारी
मन्त्री सभा

सेवक चाहिए

आर्यसमाज आदर्शनगर लखनऊ के लिए एक सेवक की आवश्यकता है निवास की पूर्ण सुविधा युक्त व्यवस्था मन्दिर मे होगी। आर्य विचारों एव सन्ध्या हवन आदि जानने वाले को प्रमुखता दी जावेगी। प्रार्थना-पत्र १५ अक्टूबर ८७ तक अपने पूर्ण विवरण नाम, पता, आयु एव अनुभव सहित भेजें वेतन की कम से कम माग का सकेत करें।

मन्त्री—आर्यसमाज आदर्श नगर, लखनऊ

दूरभाष 45993   ४५६६३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू एन पी ७९
आश्विन कृष्ण ६
१३ सितम्बर रविवार १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

3835—श्रीसम्पादक जी
गुरुकुल पत्रिका
गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)

धर्म शिक्षा पुस्तको के सम्बन्ध में—

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयो एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश द्वारा प्रकाशित पुस्तकें सभा कार्यालय मे उपलब्ध है। पुस्तके प्राप्ति हेतु कार्यालय से सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम से भेजें। रेलवे स्टेशन एवं पूरा पता साफ-साफ लिखें। पुस्तको का मूल्य निम्न प्रकार है—

धर्म शिक्षा भाग १	१ ००
,, ,, ,, २	१ ५५
३	२ ७०
४	२-७५
५	३-६०
६	४-७५
७	४-१५
९	४-००
१०	३-००
,, ,, ,, ११	४-००
धर्म शिक्षा भाग १२	३-५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ

उपसभा मुरादाबाद द्वारा प्रचार

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के अन्तर्गत कार्यरत क्र० कृषक क्षत्र मण्डली श्री रामलाल जी आर्य मण्डली ने मसेवी चक कढ़ापुर नन्हेड़ा अल्मार, देवीपुरा रघुनाथपुर, काजीपुरा, अनवानपुर, सलावा, खानपुर, सबलीपुर समन्वपुर महेन्द्री रुस्तमपुर शेरपुर मोढी ढाडा मुजफ्फरपुर खूटखेड़ा आदि स्थानो पर मास जोलाई १९८७ मे प्रचार किया।

१—लगभग १०० व्यक्तियो को यज्ञोपवीत दिया।
२—६ नई आर्यसमाजो की स्थापना की गयी।
३—४ स्थानो पर आर्यसमाजो का पुनर्जीवन हुआ।
४—लगभग २०० व्यक्तियो से नशा त्याग का संकल्प करना।
५—सस्ता साहित्य वितरण किया।

आर्य २०२३)   व्यय १५४६)

हरिश्चन्द्र आर्य
मन्त्री
आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद—अमरोहा

वार्षिकोत्सव व निर्वाचन

आर्य ।मुजफ्फरनगर का वार्षिकोत्सव दिनांक १२ से १४ जून तक ससमारोह सम्पन्न हुआ।

१५ जून को वार्षिक निर्वाचन हुआ— प्रधान—श्री नबाबसिंह
मन्त्री—श्री हुकुमसिंह,   कोषाध्यक्ष—श्री तेजपालसिंह

—आर्यसमाज भूमा मुजफ्फरनगर के भूतपूर्व प्रधान स्वतन्त्रतासंग्राम सेनानी चौ० धूमसिंह का १८—७—८७ को निधन हो गया। एस० डी० एम० और तहसीलदार आनसठ सहित सैकडो नागरिको ने शव यात्रा मे भाग लिया।

—आर्यसमाज अब्दुल्लाहपुर पो० कुडरीखेड़ा (सहारनपुर)
प्रधान—श्री डा० महावीर प्रसाद   मन्त्री—श्री साधूराम
कोषाध्यक्ष—श्री राममूर्तिसिंह चुने गये।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स० २२४१।५७ घोषणा पत्र स ७।२८-२-८५

आश्विन कृष्ण १३, रविवार, सवत् २०४४ वि०, दिनांक २० सितम्बर १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल

विक्रमादित्य वसन्त 'वेद वारिधि'

★

प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए

★

आचाय वेदव्रत अवस्थी

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

★

वर्ष ९०

अङ्क ३७

राष्ट्र जिनकी जन्म शती मना रहा है—

हिमालय का बेटा-हिमालय सा ऊँचा

राष्ट्र के सजग प्रहरी, अद्भुत प्रतिमा के धनी, राजनीति के निष्णात पण्डित, आर्यसमाज के अनन्य भक्त भारतरत्न स्व० प० गोविन्द बल्लभ पन्त को आज सारा राष्ट्र श्रद्धावनत होकर स्मरण कर रहा है। १० सितम्बर से प्रारम्भ होने वाली उनकी जन्म शताब्दी पर उनके अद्भुत व्यक्तित्व एव कृतित्व पर देश विदेश के अनेको चिन्तको, मनीषियो, राजनीतिज्ञो और महान् पुरुषो ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए राष्ट्र के प्रति की गई उनकी सेवाओ की सराहना की है। इस अवसर पर अल्मोडा तथा नैनीताल मे आयोजित श्रद्धाजलि समारोह का उद्घाटन करते हुए भारत के उपराष्ट्रपति मा० डा० शकरदयाल शर्मा ने कहा—"वे भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम के अप्रतिम सेनानी थे। स्वातन्त्र्योत्तर राजनीति तथा देश के प्रशासन मे उनकी अद्भुत क्षमता ने राष्ट्र के सम्मान को हिमालय के समान ऊचा उठाया था।"


स्व० गोविन्द बल्लभ पन्त

आय प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री प० इन्द्रराज ने उनके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व एव आर्य समाज के प्रति की गई उनकी सेवाओ का स्मरण करते हुए कहा—वे "योग कमसु कौशलम्" की साक्षात् प्रतिमा थे। उनमे चाणक्य की कूटनीति, बुद्ध की करुणा, और हिमालय जैसी अडिगता थी, उन्होने काश्मीर की चोटी से ललकारा था—'भारत राष्ट्र एक है, अखण्ड है, काश्मीर उसका अभिन्न अग है—मरी मा का मुकट हे" ससार की कोई शक्ति अब इस राष्ट्र को विभाजित नहीं कर सकती" श्री प्रधान जी ने आगे कहा—"आयसमाज से उन्हे असीमित स्नेह था—वे आर्यसमाज को मानव-कल्याणकारिणी ईश्वरवरदायिनी महान् राष्ट्रीय एव धार्मिक सस्था मानते थे, अपने व्यस्त राजनैतिक जीवन मे भी आर्यसमाज ने जब कभी, जहा कहीं भी, उन्हे पुकारा, उन्होने तुरन्त अपना क्रियात्मक सहयोग एव आशीर्वाद प्रदान किया। आयसमाज नैनीताल के कर्मठ कार्यकर्ता श्री बाकेलाल कसल जब नैनीताल मे आर्यसमाज भवन के लिए भूमि तथा धन की याचना करने उनके पास पहुचे, तो उन्होने तुरन्त उसे स्वीकार कर लिया। आज मल्लीताल का विशाल आर्यसमाज मन्दिर उनकी निष्ठा और प्रम का ज्वलन्त प्रतिमान है। वे आयसमाज नैनीताल के सस्थापक सदस्य थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा एव प्रदेश की आर्य जनता उनके प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करती हुई उनके यशस्वी पुत्र श्री कृष्णचन्द्र पन्त, जिनके ऊपर आज राष्ट्र रक्षा का भार है, के यशस्वी एव दीर्घ जीवन की कामना करती है।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

ले ओस मोच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ।।

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ-आश्विन कृष्ण १३ सम्वत २०४४ रविवार २० सितम्बर १९८७ दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि सवत् १९७२९४९०८७

कण्वेषु शीभम् प्रयात

इस समय पूरा देश दो प्राकृतिक प्रकोपो से ग्रस्त है। जहा एक ओर अति वृष्टि से नदियो मे बाढ आ जाने के कारण असम, बिहार आदि प्रदेशो के प्रभावित क्षेत्रो को जनता असहनीय कष्टो को भोग रही है, वहा दूसरी ओर अनावृष्टि के कारण देश के अधिकाश राज्यो मे भयकर सूखे की स्थिति उत्पन्न हो जाने से हाहाकार मचा हुआ है। इन दोनो विषम स्थितियो से निपटने के लिए जहा राज्य सरकारें अपने साधनो का प्रयोग कर रही हैं, वहा केन्द्रीय सरकार की ओर से अन्न और धन प्रदान करके कर्त्तव्य निर्वाह किया जा रहा है। प्रधान मन्त्री और मुख्य मन्त्री से लेकर अन्य केन्द्रीय और राज्य मन्त्री इन क्षेत्रो का सरकारी दौरा थल और नभ से कर रहे हैं। जाच समिति भी गठित की जा सकी है और उसकी सस्तुति प्राप्त होने पर केन्द्र द्वारा अधिक सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया गया है।

इस सन्दर्भ मे दो बातें विचारणीय है। प्रथम यह कि यह प्राकृतिक प्रकोप प्रत्येक वर्ष न्यूनाधिक अवस्था मे देशवासियो को झलने पडते हैं और ४० वर्षों की स्वाधीनता मे इनकी रोकथाम के लिए जितने भी उपाय किए गये है वे सर्वथा अपर्याप्त है। यदि सूखाग्रस्त क्षेत्रो की स्थिति इतनी शोचनीय हो जाए कि कहीं कहीं पीने के लिये जल भी दुलभ हो जाए तो इससे अधिक लज्जा की बात क्या हो सकती है। बाढ ग्रस्त क्षेत्रो की जनता के जान माल की जो क्षति होती है, उसकी पूर्ति कहा तक सम्भव हो पाती है? यह निर्विवाद है कि यदि ४० वर्षों के दीर्घकाल को छोडकर हमने इस कृषि प्रधान देश के ग्राम-ग्राम मे जल कूप लगाए होते, विद्युत की आपूर्ति से उन्हे निरन्तर चलायमान बनाया होता तो सूखे की यह भीषण समस्या कदापि न होती। इसी भाति प्रत्येक वर्ष जिन नदियो मे वर्षा ऋतु मे बाढ आती है, उनके बाढ ग्रस्त क्षेत्रों मे रोकथाम के पर्याप्त उपाय किए होते, नदियो के तट पर बसे ग्रामो को अन्य सुरक्षित स्थानो पर स्थानान्तरित किया होता तो वहाँ के वासियो को प्रत्येक वर्ष होने वाली इन पीडाओ से मुक्ति हो जाती।

चूंकि कार्यों की केवल आलोचना करना ही पर्याप्त नहीं होता अतएव यह आवश्यक हो जाता है कि रोग की पहचान करके ऐसी औषधि दी जाए कि उसका निदान हो जाए। असफलताओ का वर्णन मात्र करने से ही सफलता उपलब्ध नहीं होती। हमारे जन प्रतिनिधियो की अदूरदर्शिता और असफलता का मूल है पाश्चात्य जगत का अन्धानुकरण तथा वेद की अनभिज्ञता। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आज देश वासियो में राष्ट्र के लिए जो जागरूकता होनी चाहिए और अपने दुखी बन्धुओ के लिए जो हार्दिक करुणा होनी चाहिए उसका नितान्त अभाव है। प्यास लगने पर कूप खोदना बुद्धिमत्ता नहीं कही जा सकती। सकट पडने पर सहायता शिविर लगाना तो अनिवार्य है पर उस समय सहायतार्थ अपीलें करना और साधनो के अभावो का रोना तो अशोभनीय ही कहा जाएगा। पजाब से आतकवाद के कारण आए हुए शरणार्थियो तथा साम्प्रदायिक उपद्रवो के शिकार व्यक्तियो के लिये आर्य प्रतिनिधि सभाओ द्वारा निकाली गई अपीलो के आधार पर अल्प मात्रा मे प्राप्त सहयोग ही इस बात को दर्शाता है कि आज वैदिक शिक्षाओ के अभाव मे इस देश का मानव अपने मानव धर्म से बहुत दूर चला गया है।

वैदिक स्वर्णिम युग मे देश का राजा प्रजा के सुख को सर्वोच्च प्राथमिकता देता था और व्यक्तिगत रूप मे समस्त कष्टो को सहन कर के प्रजा को सुखी बनाकर आनन्द विभोर होता था। दुर्भिक्ष पडने पर साधु और महात्मा भी स्वय स्वेच्छा से भूखे रहकर अपना अन्न अन्यो को प्रदान कर आनन्दित होते थे। इन सबके अनुपम त्याग मे वेद की शिक्षाए प्रतिलक्षित होती थीं। वेद के कितने सुन्दर शब्दो मे ऐसी परिस्थितियो मे मानवो का कर्त्तव्य निर्देश करते हुए कहा है—

प्रयात शमिमाशुभि सन्ति कण्वेषु वो दुव । तत्रोषु मादयाध्वै ।
(ऋ० १-३७-१४)

अर्थात् (व दुव) तुम्हारी सेवाए (तत्र उ सन्ति) वहा ही हैं, वहा होनी चाहिए [जहाँ] (कण्वेषु) अभाव ग्रस्तो दोनो दुखियो और असहायो मे [और इसके लिये] (शीभम् आशुभि प्रयात) शीघ्र आशुगति से प्रयाण करो, पहुचो। जो ऐसा करेंगे वे ही (सु+मादयाध्वै) सुष्ठु रूप मे, सम्यक आनन्द प्राप्त करेंगे।

आज एक ओर हमारे पीडित देशवासी सिसक रहे हैं, कराह रहे हैं, पुकार रहे हैं और दूसरी ओर भौतिक रूप से सम्पन्न धनिक वर्ग स्वादिष्ठ व्यजन उदरस्थ कर रहे हैं, सैर सपाटा, मनोरजन, विलास, व्यसन मे जीवन का आनन्द खोज रहे हैं, जबकि वेदानुसार सच्चा

(शेष पृष्ठ ९ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश का
वार्षिक बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन का कार्यक्रम

सभा में चिट्ठ आवना	१६-९-८७ से २५-९-८७ तक
सूची का प्रकाशन	४-१०-८७
आपत्ति प्राप्त करने की अन्तिम तिथि	१५-१०-८७
आपत्तियो की सुनवाई एव समाधान	१६-१०-८७ से २०-१० ८७ तक
शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	२७-१०-८७
सभा का बृहदधिवेशन एव निर्वाचन	१४ व १५ नवम्बर ८७

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरग सभा दिनाक २ अगस्त १९८७ को सभा भवन लखनऊ में सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में हुई और उसमें बृहदधिवेशन एव वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

स्वास्थ्य-सुधा

चिकित्सा विज्ञान-कुछ विचारणीय तथ्य

—आचार्य वेदभूषण प्राधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद-२७

ज्ञान अनन्त है। सब कुछ जान लेने पर अनजाना बहुत कुछ रह जाता है। चिन्तन से ज्ञान विज्ञान की परतें खुलती ही चली जाती हैं चिंतन से ज्ञान खुलता चला जाता है। इसीलिए वेदरूपी ज्ञान को मन्त्रों में बांधा गया है। मन्त्रःकस्मात्—मननात्। मनन और चिन्तन से ज्ञान प्रकट होता है चिन्तन का ही दूसरा नाम मन्त्र है।

इस सृष्टि में सबसे अधिक आश्चर्य की बात है—जड़ और चेतन का अद्भुत संयोजन। शास्त्रों में चली आ रही एक उक्ति ज्ञान-विज्ञान का सर्वश्रेष्ठ महासूत्र है। वह उक्ति है—"यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे" हम इसे उल्टा कहेंगे कि—यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे। क्योंकि—ब्रह्माण्ड पहले बनता है फिर पिण्ड का निर्माण बाद में होता है।

क्या जैसा पिण्ड है वैसा ही ब्रह्माण्ड है, यह बात सत्य है। वास्तव में जिसने इस सत्य को जान लिया वह बहुत कुछ जान जाता है।

जितना हम गहराई में उतरते चले जायेंगे उतना-उतना यह उक्ति साकार होती नजर आती है तथा ज्ञान विज्ञान के अनेक रहस्य खुलते चले जाते हैं। वेदों में एक शब्द अनेक स्थलों पर आता है। वह शब्द है "अश्विनौ"। जैसे रथ में दो घोड़े जोड़े जाते हैं युग्म अथवा युगल। वैसे ही इस सृष्टि में मुख्य रूप से सारा चक्र ही युग्म रूप से संयुक्त दृष्टिगोचर होता है। इसे ही अश्वि या द्विवचन में अश्विनौ कहा जाता है।

जैसे आंख और प्रकाश की जोड़ी है। कान और शब्द की जोड़ी है। नाक और गन्ध की जोड़ी है। मस्तिष्क या बुद्धि की जोड़ी ज्ञान है।

ये युग्म तोड़ दिए जाएं तो संसार निरर्थक हो जायेगा। आंखें तो ठीक हों पर प्रकाश न हो। या प्रकाश हो और आंख न हो तो दोनों ही स्थितियां निरर्थक ही कही जाएंगी। सार्थकता तो तब है जब आंख भी होगी और प्रकाश भी होगा। ऐसे युग्म ही "अश्विनौ" कहाते हैं इनका परस्पर गहरा और सूक्ष्म संबंध है।

आंख और प्रकाश ये अग्नि तत्व के दो तट हैं। आंख स्थूल रूप है प्रकाश सूक्ष्म रूप है। प्रकाश और आंख के मध्य में एक सूक्ष्म गहरा संबंध है ये दोनों तत्व जिस सूक्ष्म सूत्र से बंधे है वह अत्यन्त सूक्ष्म महतत्त्व है। प्रकृतेः महान्! सूक्ष्म परमाणु से महान उत्पन्न होता है। उत्पन्न होना या उत्पत्ति केवल एक प्रयोग है। क्योंकि संसार मे कुछ भी उत्पन्न नहीं होता है। उत्पन्न करने की क्षमता न आत्मा में है व परमात्मा में यहां जिसे हम उत्पत्ति या नाश कहते हैं वह सब रूपान्तरण मात्र है।

यह सृष्टि केवल सर्वथा केवल परमाणु का रूपान्तरण मात्र है। मूल प्रकृति अक्षर है। क्षर रहित—अविनाशी है। जो कुछ भी बनता है बिगड़ता प्रतीत होता है यह दोनों ही रूपान्तरण मात्र हैं। बिना युग्म के जोड़े के सृष्टि प्रलय रूप में बदल जाती है। जैसे युग्म बनता है सृष्टि आरम्भ हो जाती है। इन युग्मों के भी दो रूप हैं। एक सूक्ष्म दूसरा स्थूल।

स्थूल सूक्ष्म का रूपान्तरण मात्र है। सूक्ष्म से स्थूल बनता है और स्थूल से ही सूक्ष्म हो जाता है। आत्मा और प्रकृति का संयोग स्थूल है और आत्मा परमात्मा का संयोग सूक्ष्मतम है। इस प्रकार जीवन स्थूल है और मोक्ष सूक्ष्म है।

स्थूल और सूक्ष्म के भी तीन रूप हैं। उत्तम, मध्यम और अधम इस प्रकार यह सब जो कुछ दीख रहा है वह नौ-नौ विभागों में विभक्त है। एक दो और तीन इनका मेल ही नौ है। नौ ही रूप हैं इस स्थूल के और नौ ही रूप हैं सूक्ष्म के। इस प्रकार १८ उपभेद हैं "परिकंच जगत्यां जगत्"। जो कुछ भी हमें दीखता है या जाना जाता है।

यह सारा विश्लेषण हमें सूक्ष्म की ओर ले जाता है। हम इस सूक्ष्मता में न जाकर कुछ स्थूल की ओर जाते हैं।

मानवीय संसार में भी युग्म ही कार्य करता है। जैसे रेडियो है या टेलीविजन। एक ओर से प्रसारण और दूसरी ओर ग्रहण। ग्रहण और प्रसारण की प्रक्रिया भी एक ही मूल के दो रूप हैं। इन दोनों रूपों के पीछे एक दृश्य या अदृश्य चेतन सत्ता कार्य करती है। रेडियो स्टेशन से वार्ता ब्राडकास्ट की जाती है, प्रसारित की जाती है। उसके छोटे रूप रेडियो सेट प्रसारण को ग्रहण करते हैं। प्रसारण और ग्रहण प्रधान दो यन्त्र हैं। कहने को दो हैं युग्म हैं किन्तु सूक्ष्मता से देखें तो ये भी एक में ही युग्मत्व लिए हुए हैं। जो रेडियो स्टेशन प्रसारण करता है वह भी चेतन सत्ता से ग्रहण कर फिर उसे प्रसारित करता है। अर्थात् ग्रहण और प्रसारण दोनों प्रक्रियायें रेडियो स्टेशन में भी और वही ग्रहण और प्रसारण रेडियो सेट में भी। किन्तु रेडियो स्टेशन की प्रसारण क्षमता प्रबल है और ग्रहण क्षमता न्यून। रेडियो में ग्रहण शक्ति प्रधान है और प्रसारण भी गौण। इसी क्षमता को वैदिक भाषा में "होता" कहते हैं। होतृत्व शक्ति हु—दानादनयो अर्थात् आदान और प्रदान इसी आदान प्रदान को यज्ञ भी कहा जाता है।

इस सृष्टि में ठीक ऐसे ही युग्म है ब्रह्माण्ड और पिण्ड। ब्रह्माण्ड परमात्मा से ग्रहण कर पिण्ड के लिए शक्ति प्रसारित करता है। पिण्ड उसे ग्रहण करता है। ब्रह्माण्ड पिण्ड का यह व्यापार ही सृष्टि है।

ज्ञान विज्ञान ने अब इस सूक्ष्म तकनीक का स्पर्श किया है। धरती पर बैठे-बैठे जैसे वह आकाशीय उपग्रहों का संचालन निर्देशन, संशोधन करने में समर्थ है ठीक ऐसा ही संबंध ब्रह्माण्ड और पिण्ड में भी है।

विचार करते-करते हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि—ब्रह्माण्डीय शक्तियां ही हमारे पिण्ड का संचालन करती हैं। ब्रह्माण्ड की विकृति से पिण्ड में विकृतियां उपजती है। आजकल का चिकित्सा विज्ञानी केवल पिण्ड तक ही दृष्टि दौड़ाता है। उसे अब पिण्ड से अधिक ब्रह्माण्ड के शरीर की ओर ध्यान देना होगा।

स्थल रूप से देखने पर ज्ञात होता है कि—एक ब्रह्माण्ड में चार घोड़े जुते हैं। अश्व शब्द का अर्थ है ऐंजिन। फिर चाहे घोड़ा हो या धातु से निर्मित घोड़ा या ऐंजिन।

यह ब्रह्माण्ड चार इन्जनों से युक्त यान है। एक ऐंजिन है सूर्य जो इसमें सबसे मुख्य है अपने-अपने सौर मण्डल में। दूसरा ऐंजिन है वायु। तीसरा ऐंजिन है पृथ्वी चौथा ऐंजिन है समुद्र या पानी। इन चारों एंजिनों के सहारे हमारा सौर मण्डल आकाश में गतिशील है।

इसी प्रकार हमारे पिण्ड में या देह में भी चार एंजिन हैं। जिसमें सबसे मुख्य यन्त्र है मस्तिष्क। बुद्धियन्त्र। हमारे पिण्ड में यह सबसे ऊपर है ठीक सूर्य के ही समान।

[शेष पृष्ठ ११ पर]

फीजी की मूल समस्या और उसका समाधान

(डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी, प्रधान सम्पादक स्वामी केशवानन्द योग पत्रिका दिल्ली)

(गतांक से आगे)

लगभग दो वर्ष पूर्व कुछ अंग्रेज पुनः इस धरती पर पहुंचे। इन्हीं दिनों गुयाना आदि दक्षिण अमरीकी देशों में भी नीग्रो अवाई तथा भारतीय लोगों को मजदूर के रूप में ले जाकर वहां खेती करने के प्रयत्न किये जा रहे थे। और उन लोगों का यह अनुभव बन चुका था कि इस कार्य के लिए भारतीय मजदूर सबसे अधिक उपयुक्त है, वे परिश्रमी तो है ही, सीखने की प्रवृत्ति भी इनमे है और खेती करने की कला ये वंश परम्परा से जानते हैं। इस अनुभव के आधार पर भारतीय मजदूरों की मांग लगातार बढ़ रही थी। इधर भारत में अंग्रेजों का राज्य था ही, अतः भारतीय मजदूरों की भरती में उन्हें कोई दिक्कत नहीं थी। फलतः भारत के पांच वर्ष के मजदूरी के समझौते पर भारतीय मजदूरों को फीजी द्वीप में पहुंचाया गया। इस समझौते के अनुसार परिवार के प्रत्येक सदस्य जिसमें सात-साल से अधिक आयु के बच्चे भी सम्मिलित थे, को उनकी आयु और क्षमता के अनुसार निश्चित दर पर मजदूरी देने की व्यवस्था थी। साथ ही उससे कम आयु के बच्चो के पालन के लिए उनकी संख्या के अनुसार एक निश्चित दर से दैनिक भत्ता भी उनके माता पिता को दिया जाना निश्चित था। इसके अतिरिक्त प्रत्येक मजदूर को भारतीय बन्दरगाह से वहां तक ले जाने तथा पांच वर्ष बाद उन्हें भारत तक पहुंचाने की शर्त भी निहित थी। इस एग्रीमेट मे यह भी निर्धारित था कि यदि कोई मजदूर परिवार पांच वर्ष बाद भारत नहीं लौटना चाहता तो उन्हें वहा बसने के लिए मकान और जीविकोपार्जन के लिए अपेक्षित मात्रा मे भूमि बिना मूल्य दी जाएगी के इस समझौते के अनुसार जाने वाले मजदूर को एग्रीमेंट मजदूर (लेबर) तथा इस प्रथा को एग्रीमेट प्रथा कहा गया जिसका अपभ्रंश रूप गिरमिटिया प्रथा नाम से अधिक जाना जाता है।

इस एग्रीमेट में भारत से जाने वाले मजदूर प्रायः वही थे जिनके पास भारत मे अपनी कृषि भूमि नहीं थी, स्थाई रूप से मजदूरी का प्रबन्ध नहीं था। अतः इन लोगों ने एग्रीमेट के पांच साल पूरे होने के बाद लौटने के स्थान पर समझौते की शर्त के अनुसार वहीं पट्टे पर भूमि लेकर बस जाना अधिक उचित समझा। वहां इन लोगों को जो भूमि दी गई वह प्रायः जंगल के रूप में थी। प्रायः सभी भूमि ऐसी ही दी गयी जिस पर पहले कभी खेती करने का प्रयत्न नहीं किया गया था। किन्तु अपने परिश्रमी स्वभाव के कारण और कृषि सम्बन्धी अपने अनुभव के आधार पर इन लोगो ने जो भी भूमि प्राप्त की उसे थोड़े ही समय में उत्तम कृषि योग्य भूमि मे परिणत कर लिया। क्योंकि इन लोगो को पट्टे पर भूमि देने के प्रसंग में भूमि की सीमा सम्बन्धी कोई प्रतिबन्ध नहीं था, अतः इन लोगों ने प्रतिवर्ष नई भूमि बढ़ाते हुए धीरे-धीरे फीजी की अधिकांश कृषि योग्य भूमि को अपने हाथ मे ले लिया और अच्छे किसान के रूप में पर्याप्त भू सम्पत्ति अर्जित कर ली, भले ही वह नियमानुसार तीस वर्षों के लिए ही क्यों न हो। और क्योंकि वहां के पुराने निवासी काई बीती लोगों की खेती में प्रायः दिलचस्पी नहीं थी, अतः तीस वर्ष बाद पुनः पट्टे के नवीनीकरण में अधिक बाधाओं का अनुभव प्रायः नहीं किया। इस प्रकार भारतीय मूल के ये लोग फीजी को अपनी मातृभूमि मानकर उसकी समृद्धि में ही अपनी समृद्धि समझते रहे।

इस प्रकार अंग्रेजों के प्रयास और भारतीय मूल के लोगों के परिश्रम से फीजी द्वीप समूह की कृषि सम्पत्ति की समृद्धि होने पर भारत चीन आदि देशों से व्यापारी लोग भी धीरे-धीरे वहां पहुंचने लगे। इन प्रवासी भारतीयों में जहां मजदूर के रूप में गये भारतीय अधिकांश पूर्वी उत्तर प्रदेश और उससे सटे हुए पश्चिमी बिहार के थे, वहीं व्यापार के लिए जाने वाले लोगों में प्रायः दक्षिण भारत के थे और उसमें भी गुजराती लोग अधिक थे।

काल की गति से ब्रिटिश साम्राज्य भी जब अस्तगत होने लगा तो आज से सत्रह वर्ष पूर्व वहां की अंग्रेज सरकार ने भी अपने पांव समेट लेने का निश्चय कर लिया और वर्ष १९७० के अक्टूबर महीने में बिना किसी प्रकार का संघर्ष किये फीजी देश को भी औपनिवेशिक स्वाधीनता प्राप्त हो गयी।

फीजी को स्वाधीनता प्रदान करते समय अंग्रेजों ने वहां प्रजातन्त्र की स्थापना की वहां के संविधान का निर्माण सर्वसम्मति से कराया। इस संविधान के अनुसार जब फीजी में प्रथम निर्वाचन सम्पन्न हुआ तो स्वाभाविक रूप से भारतीय मूल के लोगों को बहुमत प्राप्त हुआ किन्तु अलग-अलग समूहों में विभाजित होने के कारण वे एक ऐसा नेता चुनने मे समर्थ न हो सके, जिसे प्रधान मन्त्री बनाया जा सकता फलतः दूसरे मास ही पुनः निर्वाचन कराया गया इस बार वे बहुमत में न आ सके और काई बीती मूल के श्री रातुसर कामिसेसेमारा के नेतृत्व में प्रथम सरकार का गठन हुआ।

एक बात स्मरणीय है कि भारतीय मूल के फीजी निवासियों को विशेष लगाव कृषि एवं व्यापार में ही रहा है एवं ९० प्रतिशत से अधिक कृषि एवं व्यवसाय उनके अधिकार में है, पुलिस और सेना के क्षेत्र में इनकी दिलचस्पी प्रायः नहीं रही है जबकि काईबीती मूल के लोग भारतीयों की अपेक्षा शरीर से अधिक हट्टे-कट्टे हैं और उनकी रुचि पुलिस और सेना की नौकरियों की ओर प्रारम्भ से अधिक रही है और उस क्षेत्र में लगभग उनका ही एकाधिकार है।

इसी प्रकार तकनीकी क्षेत्र में आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड के लोग छाये हुए हैं। फीजी के प्रवास काल में मुझे फीजी में स्थित धान या चीनी मिलों मे भ्रमण करने का अवसर तो नहीं मिला, किन्तु फीजी के अन्दर विमान यात्रा के अनेक अवसर मिले इसमें मुझे एक भी काई बीती अथवा भारतीय मूल का विमान चालक कभी भी नहीं मिला।

फीजी में भारतीय मूल के लोगों में धर्म की दृष्टि से देखा जाए तो हिन्दू और मुसलमान दोनों हैं यद्यपि मुसलमानों की संख्या नगण्य ही है। ईसाई धर्म प्रचारकों ने फीजी में पर्याप्त कार्य किया है किन्तु वैदिक मिशनरियो के (आर्यसमाज के विद्वान प्रचारकों के) कारण उन्हें भारतीय मूल के लोगों में विशेष सफलता नहीं मिली। फलतः उन्होंने अपने कार्य क्षेत्र को काई बीती मूल के लोगो में ही अधिक विस्तृत किया। इस धर्म प्रचार के बीच इन लोगों ने काई बीती लोगों के बीच भारतीय मूल के लोगों के प्रति वैमनस्य के बीज खूब बोये और वैमनस्य को निरन्तर पुष्ट किया।

वर्ष उन्नीस सौ अस्सी के सितम्बर अक्टूबर में फीजी प्रवास के समय मेरे एक आतिथेय, जो तीन दिन निरन्तर मेरे साथ रहे थे, मुझे अपने एक मित्र से मिलाने के लिए बिना किसी पूर्व कार्यक्रम के उनके निवास पर ले गये।

[क्रमशः]

आर्य समाज क्या है ?

[लेखक : श्री ज्येष्ठ वर्मन बम्बई]

[गतांक से आगे[

इस नियम की व्यख्या कहती है कि इन नियमों के बिना आर्य समाजादि की स्थिर व्यवस्था और उन्नति नहीं हो सकती। बारम्बार सभासदों से ज्यादा लेने से अच्छा नहीं और धनाढ्य लोगों पर अत्यन्त भार होने से उनकी अरुचि हो सकती है। आर्यों ने इस बात की भी अपेक्षा की है और बम्बई में धनाढ्य लोगों के यहां चन्दा मांगने वालों की हमेशा लाइन लगी रहती है। इन चंदा मांगने वालों ने आर्य समाज को बहुत बड़ी हानि पहुंचाई है। जहां आर्य समाज का प्रचार ठीक तरह से होता हो वहां स्थानीय लोग ही यदि शतांश देवें तो बाहर जाकर चंदा मांगने की कोई आवश्यकता नहीं होती। लेकिन ऐसा नहीं होता है। अधकच्चे प्रचारक, कार्यकर्ता आर्य समाज के प्रचार कार्य में अनुचित उत्साह दिखाते हैं और नेता बनने के चक्कर में जल्दीबाजी में आर्य समाज या उसके नाम से गुरुकुल, गोशाला, पत्र-पत्रिका आदि चलाने लगते हैं। फिर रोज पैसे के लिए चंदा मांगते फिरते है ऐसे ही लोग धूर्त धनाढ्य लोगों को अनुचित महत्व देते हैं। इस प्रकार थोड़ा सा दान देकर ये दुष्ट प्रतिष्ठित हो जाते हैं समाज पर हावी हो जाते हैं और चंदा इकट्ठा करने वाले चौधरी बन जाते हैं। जो सबसे अधिक चंदा लाता है वह सबसे बड़ा चौधरी माना जाता है फिर उत्सवादि के आयोजन करके पैसे भी बरबाद करते हैं और परस्पर "अहो रूपं अहो स्वरं" की बातें कहकर संतुष्ट रह जाते हैं। इनसे समाज का प्रचार ठीक तरह से नहीं होता है लेकिन समाजों में इन्हीं लोगों के कारण विवाद उत्पन्न होते हैं ऐसी संस्थायें अधिक दिन नहीं चल सकती क्योंकि वहां केवल किराये के प्रचारक और स्वार्थी मतलबी लोग ही जमा होंगे। यही कारण है कि आजकल कई समाजों में आज के केवल संस्कार कराने के कैम्प खोले गये हैं और नाममात्र के प्रचार कार्य हो रहे हैं। आजकल यहां एक समाज में केवल शादी का आफीडाविट करने के नाम से रु० १०० लिए जाते हैं और उसमें रु० ४५ स्टैम्प पेपर और वकील के पैसे, शेष पैसे फार्म भरवाने वाले के जेब में अन्य एक समाज ने तो वीसा के लिए विदेशी महिला नागरिकों के साथ झूठी शादियां भी कराना प्रारम्भ कर दिया है। इसमें समाज का ही सदस्य वकील रुपये चार सौ पांच सौ झूठे अफीडाविट के लिए लेता है। दुष्ट तत्व किस प्रकार समाज में भ्रष्टाचार फैलाते हैं, यह इस बात का प्रमाण भी है, और आर्य समाज के लिए खतरे की घंटी भी है। क्योंकि वास्तव में आर्य समाज की छवि आर्यों के व्यवहार से बनती है, पण्डितों को बुलाकर भाषण दिलाने से नहीं।

नियम कहता है कि जो जन इन कार्यों की उन्नति और प्रचार के लिए जितना प्रयत्न करें उसका यथायोग्य सत्कार, उत्साह बढ़ाने के लिए होना चाहिए।

इसकी व्याख्या बताती है कि वह जन सत्कार की इच्छा किंवा दंभादि से कोई काम न करे किंतु इसको अपना ही समझें.. लेकिन इन बातों की ओर कौन देखता है ? बम्बई में आज कल ऐसे कार्यक्रम यदि होते भी हों उनमें मुख्य रूप से चौधरीपन, बाह्याडम्बर, व्यक्तिगत प्रसिद्धि की भूख, अहंकार की भावना आदि ही विशेषकर दिखाई देती है। इससे भी आर्य समाज का गौरव घट रहा है।

इन सारे कारणों से आर्य समाज की छवि बिगड़ रही है। सब जगह "गड़बड़ाध्याय" होता दिखाई देता है। जिन महान उद्देश्यों को साथ लेकर आर्य समाज की स्थापना की गई थी वे उद्देश्य शायद आज लोगों के सामने नहीं है। इन दोषों के लिए स्वयं आर्य लोग ही जिम्मेवार हैं और सच्चे आर्य लोग ही आर्य समाज को इन दोषों से मुक्त कर सकते हैं।

[समाप्त]

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद द्वारा मेरठ के दंगों पर पारित प्रस्ताव

लोभ हर्षक विनाश लीला से प्रशासन रक्षा करने में असमर्थ

मेरठ नगर और बाहरी क्षेत्रों में नृशंस हत्याओं, आगजनी, लूटपाट का जो तांडव नृत्य, वैदेशिक दुरभिसंधियों एवं साम्प्रदायिकता के के आधार पर हुआ आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद की यह बैठक उस दुष्कृत्य की घोर निन्दा करती है तथा राष्ट्र के लिए एक गंभीर खतरा अनुभव करती है। मेरठ में जो उपद्रव हुए, यदि प्रशासन ने बिना किसी दबाव के सतर्क रहकर पूरी खोजबीन करके पक्षपात रहित प्रभावी कार्यक्रम बनाकर भविष्य में उसे रोकने का समुचित प्रबन्ध किया होता तो मेरठ को वर्तमान विनाशलीला से बचाया जा सकता था।

शहरी विकास मंत्री श्रीमती मोहसिना किदवई मेरठ के उपद्रवों पर सर्वथा पर्दा डालकर सरकार पर सख्त कार्यवाही न करने का दबाव डालती रहीं हैं। निम्नलिखित तथ्यों को इसी संदर्भ में देखना चाहिये।

बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के नेता यामीन खाँ के साथ सर्किट हाउस के एक कमरे में एकान्त में गुप्त वार्ता, हाजी मस्तान के प्रमुख सहयोगी अब्दुल रहमान अंतुले से बम्बई में टेलीफोन पर वार्ता। मेरठ के पूरे दंगे की न्यायिक जांच न करके केवल मलियाना एवं हाशिमपुरा की जांच की ओर प्रशासन का ध्यान केन्द्रित करना। इस सभा की सम्मति में १४ अप्रैल तथा १८, १९ मई, ८७ को प्रारम्भ हुए मेरठ के सम्पूर्ण दंगों की न्यायिक जांच उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश की अध्यक्षता में गठित जांच अधिकरण द्वारा कराई जानी चाहिए जिससे वस्तु स्थिति का वास्तविक ज्ञान और उपद्रवकारियों का ज्ञान हो सके।

पी० ए० सी० के जवानों और पुलिस के सिपाहियों पर अकारण दोषारोपण कर उनका मनोबल गिराना साम्प्रदायिक तत्वों का एक षड्यन्त्र है। असलियत यह है कि यदि पी० ए० सी० न होती तो पूरा मेरठ जलकर खाक हो जाता। केवल पी० ए० सी० के जवानों और पुलिस अधिकारियों पर दंगे की जिम्मेवारी थोपकर उन्हें साम्प्रदायिक साबित करने का प्रयास करते रहेंगे तो हमारे फोर्स और जवानों का मनोबल टूट जायेगा और वह संघर्षपूर्ण भूमिका का निर्वाह न कर सकेंगे। इस सदन की सम्मति में यह मांग सर्वथा न्यायोचित है कि जब तक उपद्रव और उपद्रवी तत्वों का समूलोच्छेदन न हो जाये तब तक मेरठ सेना के हवाले कर दिया जाये।

हरिश्चन्द्र आर्य, मन्त्री जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद

विद्वज्जनों से विनम्र निवेदन—

रचनाएं भेजने से पूर्व इन नियमों का पालन अवश्य करें

१—रचनाएं कोरे कागज पर एक चौथाई हाशिया छोड़कर एक ओर ही लिखी जाएं। पोस्टकार्डों, अन्तर्देशीय पत्रों और पुराने कागजों पर नहीं।

२—पर्वों या अन्य सामयिक विषयों सम्बन्धी रचनाएं, इस प्रकार भेजे कि कम से कम एक मास पूर्व हमें मिल जायें। क्योंकि दो सप्ताह पूर्व प्रकाशनार्थ सामग्री प्रेस में भेज दी जाती है और विलम्ब से प्राप्त रचनाओं को छापना सम्भव नहीं हो पाता।

३-जिन रचनाओं को आर्यमित्र में छापने के लिए भेजें, उन्हें अन्यत्र न भेजें। अन्यत्र प्रकाशित हो जाने पर जब वे आर्यमित्र में भी छाप दी जाती हैं, तो 'उनसे साभार' शब्दों का प्रयोग न किए जाने से पाठकों को साहित्यिक चोरी का आभास होता है जबकि वास्तविकता कुछ और होती है।

४—स्वीकृत रचनाओं की स्वीकृति प्राप्ति के १५ दिनों के भीतर भेज दी जाती है और उनका प्रकाशन सुविधानुसार किया जाता है अतएव उनके प्रकाशन की प्रतीक्षा करें। अस्वीकृत रचनाएं डाक टिकट लगा लिफाफा प्राप्त होने पर ही लौटाना सम्भव होगा।

—सम्पादक मण्डल

ऋष्यंक विशेषांक

आर्यमित्र का १८-१०-८७ का अङ्क 'ऋष्यंक' विशेषांक के रूप में ऋषि निर्वाण के पावन पर्व पर प्रकाशित किया जा रहा है। **५२ पृष्ठ का यह विशेषांक सीमित संख्या में प्रकाशित होगा।** अतएव अतिरिक्त प्रतियों के लिये पूर्वारक्षण आवश्यक है। इस अङ्क का मूल्य ३) रु० होगा परन्तु वार्षिक ग्राहकों को यथापूर्व एक प्रति निःशुल्क भेजी जाएगी।

विद्वानों तथा विदुषियों से विनम्र निवेदन है कि वे कृपया अपनी मौलिक रचनाएं तुरन्त प्रेषित कर दें।

३०-९-८७ के पश्चात प्राप्त रचनाएं विशेषांक में सम्मिलित न की जा सकेंगी।

—सम्पादक मण्डल

शुद्धि समारोह

आर्यसमाज फखरपुर द्वारा आयोजित शुद्धि समारोह के अवसर पर स्थान जनकपुर बहुरहा से फखरपुर बहराइच में दि० ५-७-८७ को शुद्धि सम्मेलन का आयोजन विश्व हिन्दू परिषद शाखा के वरिष्ठ धर्माचार्य श्री प्रेमदास महन्त जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमे स्वेच्छा से अलीपुर हसैना के निवासी अमीर अली की पुत्री महरुन्निसा ने वैदिक धर्म स्वीकार किया और उनका नाम यज्ञ वेदी पर विधिवत प्रेमा कुमारी रखा गया। शुद्धि संस्कार श्री पं० कृष्णदेव आर्य त्यागी जी एवं कृष्णानन्द शुक्ल जी ने सम्पन्न कराया। क्षेत्र फखरपुर के सैकड़ों आर्य जन उपस्थित रहे।

आचार्य राजकुमार रत्नप्रिय को मातृ शोक!

पिथौरागढ़। आचार्य राज कुमार रत्नप्रिय (सम्पादक—कास्मो इण्डिया ११०/१३ नेहरूनगर—कानपुर) की माता शकुन्तला देवी का देहान्त २१ अगस्त १९८७ को हो गया। आर्य समाज मन्दिर में २८ अगस्त को सम्पन्न शान्ति यज्ञ में स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती ने दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं परिजनों के धैर्य हेतु परमात्मा से प्रार्थना की।

आर्यसमाज सेवक सम्मानित

आर्यसमाज नया बांस दिल्ली में वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर श्री आशानन्द जी भजनीक ने समाज के सेवक श्री अंगद जी की सेवा से प्रभावित होकर उन्हें ५००)रु०तथा एक शाल भेंट किया। पं०ब्रह्मानन्द जी ने २००) रु० तथा श्री प्रेमचन्द जी गोयल ने १००) रुपया अपने कर्मचारी को देकर सम्मानित किया। —मन्त्री

रामपालसिंह आर्य की विदाई

मैनपुरीमें सेवारत मार्केटिंग इन्सपेक्टर श्रीरामपाल सिंह के मैनपुरी से अलीगढ़ स्थानान्तरण होने पर आर्य समाज मैनपुरी ने दिनांक १६-८-८७ को उन्हें भावभीनी विदाई दी। श्री सिंह चलते-फिरते निष्ठावान आर्य हैं। अपने मैनपुरी के कार्यकाल में उन्होंने आर्य समाज मैनपुरी को भारी सहयोग दिया। एतदर्थ आर्य समाज मैनपुरी उनका सदैव आभारी रहेगा।

कु॰ ध्रुवपालसिह 'अटल'
मुख्य निरीक्षक, सभा।

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क १५अगस्त १९८७ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८६ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

५६६, ९५३, १६०७, २१४५, २४३९, ३०५०, ३७८०, ४९९३, ५००१, ५१८०, ५२६५, ५३०९, ६१९३, ६२०१, ६४९७, ६७७३, ६७८१, ६८३८, ८३८८, ८४२४, ८६४०, ९४९२, ९५००, ९५०१, ९५०६, ९६९९, ९९३७, ९९४३, ११००५, ११०१०, ११०१३, ११२३५, ११२५२, ११६७७, ११६९३, ११७०१, ११९७१, ११९७३, ११९७८, ३२३२८, १२३४४, १२३४७, १२३६५, १२३७६, १२७०४, १२७०९, १२७१०, १२७१२, १२७१७, १२७१९, १२७२१, १२९४९, १२९५६, १३१८०, १३१८७, १३१८८, १३५०९, १३५१०, १३५११, १३५३०, १३५३१, १३५४४, १३५५६, १३५५७, १३५६३, १३५६५, १३५७०, १३५७२, १३५७४, १३५७६, १३५८७, १३९४८, १३९५०, १३९५१, १३९५२, १३९५३, १३९५४, १३९५५, १३९५६, १३९५७, १३९५८, १३९५९, १३९६०, १३९६१, १३९६२, १३९६३, १३९६४, १३९६५, १३९६६, १३९६७, १३९६८, १३९६९, १३९७०, १३९७४, १३९७५, १३९७९।

विनीत—
व्यवस्थापक

सुख शांति का मूलाधार धर्म ही है धर्म के स्वरूप की पहिचान करें

धर्म का सप्तम लक्षण–धी

–आचार्य देवव्रत अवस्थी, वेद मन्दिर, हिन्द नगर लखनऊ।

धी–बुद्धि, सामान्य बुद्धि से परे धारणवती बुद्धि।

संसार में जितने भी प्राणी हैं परमात्मा ने उनके पूर्व-कर्मानुसार उन्हें योनि देकर उस योनिके भोग को भोगने की स्वाभाविक प्रवृत्ति उसे प्रदान कर दी है। उसमें विकास या–ह्रास नहीं होता। इसलिये गाय का बछड़ा पैदा होते ही पानी में यदि गिर जाये तो तैर कर बाहर निकल जाता है उसे तैरने का ज्ञान नहीं कराना पड़ता।

परन्तु मनुष्य का बच्चा पैदा होने के बाद काफी समय तक करवट भी नहीं ले सकता। उसकी शारीरिक वृद्धि के साथ ही बुद्धि भी विकसित होती जाती है। यदि किसी की आयु के अनुरूप बुद्धि में विकास न आया तो उसे मन्द बुद्धि या क्षीण बुद्धि बालक कहा जाता है।

परमात्मा ने हमें हमारे अनेक जन्मों के सुकर्मों के बाद और संचित कर्मों का भोग योनियों में जो भोग्य है–उसका भोग भोगने के बाद मानव का पवित्र जीवन प्रदान किया और हमारे निर्माण का दायित्व हमारे माता पिता गुरु जनों को सौंपा। शरीर का सम्पूर्ण विकास माता के गर्भ में हो जाता है। सम्पूर्ण निर्माण के बाद जब कुछ शरीर निर्माण शेष नहीं रहता तब उस शरीर को पुष्ट परिपुष्ट उसकी बुद्धि को प्रांजल, ग्रहण शीला, कुशाग्र बनाने का भार वह माता पिता और गुरु पर छोड़ता है।

परिष्कृत बुद्धि वाले ही दूसरे की बुद्धि को परिष्कृत कर सकते हैं। अनपढ़ माता पिता अपने परम प्रिय पुत्र को अक्षर का ज्ञान भी नहीं करा सकते। प्रभु ने हमारे अन्दर उसी धारणवती 'धी' बुद्धि का आधान किया है और वेद ज्ञान द्वारा उसे प्रांजल विकसित करने का सन्देश दिया है। हमें अज्ञानी से ज्ञानी और ज्ञानी से विज्ञानी बनने की प्रतिभा प्रदान की है। वेद के ज्ञान के अनुकूल विकासोन्मुख विज्ञान सृष्टि के लिये सुखकारी होता है क्योंकि वेद ज्ञान किसी व्यक्ति वर्ग सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं मानव मात्र के लिए है। वेद विमुख भौतिकवाद के चक्र में फंसकर विकसित विज्ञान विनाशोन्मुख होता है। विज्ञान की परिष्कृति से जहाँ मनुष्य ने चन्द्रमा में पहुंच कर उसका अध्ययन आरम्भ किया वहीं अणुबम परमाणु बम, उद्जनों बमों का आविष्कार करके भयावह स्थिति भी संसार में उत्पन्न कर दी।

यदि मानव जीवन में प्राप्त धारणावती बुद्धि को वेद ज्ञान से परिपूर्ण करके विज्ञान प्राप्त करने का यत्न किया जाये विश्व के सुख का मार्ग प्रशस्त होगा। धर्म का संचार होगा। शांति सौहार्द–स्वतः प्रस्फुटित होगा।

आज की विषम परिस्थिति में जब-देखने में विज्ञान खूब प्रगति कर रहा है–वहीं विग्रह–अशांति भय भी खूब फैल रहा है। विचारकों का विचारणीय विषय है कि मानव की धारणा वती बुद्धि को वेद की ओर प्रेरित करने के लिए क्या कुछ किया जाए।

निश्चय ही ऐसे अवसर पर हमें महाराज मनु का–धर्म का यह सातवां लक्षण हमें स्व को समझने अन्य को समझने के एक मात्र साधन वेद ज्ञान से अपनी बुद्धि का परिष्कृत करने के लिए हमें सहायक बनेगा और हम वेदानुकूल ज्ञान विज्ञान को अपनी बुद्धि [धी] से प्राप्त करके सम्पूर्ण सृष्टि को सभी प्रकार से सुखी समृद्ध बनाने के लिए व्रती बन सकेंगे और धर्म की संस्थापना में समर्थ होंगे।

उत्तर बिहार आर्य सभा, मुजफ्फरपुर के तत्वावधान में

आचार्य रामानन्द शास्त्री (महोपदेशक) के सम्मानार्थ अभिनन्दन समारोह

–दिनांक ७ सितम्बर १९८७

–आर्य समाज, घिरनीपोखर, मुजफ्फरपुर—

महोदय,

आचार्य रामानन्द शास्त्री पिछले ५५ वर्षों से आर्य समाज की सेवायें करते आ रहे हैं। आपने गुरुकुल शिक्षा को प्रश्रय दिया है, दर्जनों पुस्तकें लिखी हैं, कई महत्वपूर्ण शास्त्रार्थ किए हैं, अनेकों सम्मेलनों का सभापतित्व किया, तथा इन सबसे बढ़कर आत्मीय विचारों से अनेकानेक लोगों को प्रभावित किया है।

आप आचार्य जी से जुड़े रहे हैं, इनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को नजदीक से देखा-जाना है। इनके जीवन की अनेकानेक विशेषताओं से आप परिचित हैं। इस सम्बन्ध में अपने संसमरण लिखकर यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें अथवा आचार्य जी के प्रिय सिद्धांत पर एक सुन्दर सा लेख दें।

आचार्य जी के ७४ वें जन्म दिन ७ सितम्बर १९८७ को उनका अभिनन्दन किया जाएगा। आपसे अनुरोध है कि ५ अगस्त तक अपने संस्मरण अथवा लेख निम्न पते पर अवश्य भेज दें ताकि अभिनन्दन ग्रन्थ समय से छप सकें। विनीत

पन्नालाल आर्य
स्वागताध्यक्ष

ओम प्रकाश ब्रह्मचारी
स्वागत मन्त्री

आचार्य रामानन्द शास्त्री
अभिनन्दन समारोह
आर्य समाज, घिरनीपोखर मुजफ्फरपुर—८४२००१

दयानन्द विद्यालय का रजत जयन्ती समारोह

आर्य समाज नया शहर इटावा के द्वारा संचालित दयानन्द मान्टेसरी स्कूल का रजत जयन्ती समारोह दिनांक ३०, ३१ अक्टूबर व १ नवम्बर १९८७ को बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है जिसमें आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान पधार रहे हैं। बाहर से आने वाले आर्यजनों के निवास और भोजन की निःशुल्क व्यवस्था है। सम्पूर्ण आर्य जगत सादर आमन्त्रित हैं।

कु० ध्रुवपाल सिंह 'अटल'
मुख्य निरीक्षक, सभा।

श्री रामप्रसाद ऐडवोकेट, प्रतापगढ़ दिवंगत

प्रतापगढ़ निवासी श्री रामप्रसाद ऐडवोकेट का ७४ वर्ष की आयु में ४।६।८७ को निधन हो गया। वे आर्य समाज के पू० पूर्व प्रधान थे। उनका कई सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से घनिष्ठ सम्बन्ध था। उनका पूरा परिवार आर्यसमाज के लिये समर्पित था। परमात्मा उनकी दिवंगत आत्मा को शांति एवं परिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

महान् दयानन्द

आर्य समाज लखनऊ की स्थापना के संस्मरण

श्री विश्वकिशोर मेहता, हैदर कैनाल कालोनी, लखनऊ

स्वामी दयानन्द जी ने सर्वप्रथम चिरगांव बम्बई में चैत शुक्ल पञ्चमी विक्रमी सम्वत १९३२ तदनुसार १० अप्रैल १८७५ को आर्य समाज की स्थापना की थी उसके बाद अनेक स्थानों पर समाज की स्थापना की। स्वयं गुजराती होने पर तथा संस्कृत के पूर्ण पण्डित होने पर भी उन्होंने भारत को एक राष्ट्र भाषा प्रदान की और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी से भी पूर्व उस विशुद्ध आर्य भाषा को जन्म दिया जो आज हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति हो रही है। जो स्वरूप आर्यभाषा का उन्होंने निश्चित किया था वही आज हमने अपनाया है। स्वामी जी ने भारत के प्रसिद्ध नगरों में जाने का आयोजन किया और प्रथम बार सन् १८७२ में वे लखनऊ पधारे। आप घसियारी मण्डी में ठाकुर गजाधर सिंह की कोठी में ठहरे और वहीं पर आपने धर्मोपदेश करना प्रारम्भ किया इस प्रथम आगमन के समय स्वामी जी के विचारों में आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य नहीं था और वे आठ नौ दिवस रहकर चले गये। इसके उपरान्त सन् १८७६ के सितम्बर मास में विजय दशमी के अवसर पर पुनः लखनऊ पधारे। इस बार वे हुसैनाबाद तालाब के समीप सरदार बिक्रम सिंह जी महाराज कपूरथला की कोठी में ठहरे इस अवसर पर कतिपय प्रतिष्ठित व्यक्ति जो बाद में आर्य समाज के मन्त्री भी रहे, उनके सम्पर्क में आये। श्री केशवराम विष्णु लाल पाण्डेय पर स्वामी जी के मनोहर उपदेशों का पूर्ण प्रभाव पड़ा उस समय भी स्वामी जी का अधिकांश समय वेद भाष्य करने में ही व्यतीत होता था इस प्रकार कतिपय कार्यकर्त्ताओं को स्वामी जी के साथ-साक्षात् सम्पर्क स्थापित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था इस दूसरी यात्रा में स्वामी जी का व्याख्यान यहियागंज में बाबू कन्हैया लाल जी रेलवे एकांउटेण्ट और सआदतगंज में लाला राधाकिशन कन्हैया लाल के मन्दिर में भी हुआ।

तीसरी बार स्वामी जी का आगमन तीन वर्ष उपरान्त १८ सितम्बर १८७९ को हुआ इस बार स्वामी जी को यहां आमन्त्रित करने वालों में प्रमुख रूप से श्री रामाधार जी बाजपेई, बाबू चन्दन गोपाल जी, बाबू हरनाम प्रसाद जी, श्री केशवराम विष्णु लाल पाण्डेय पं० अयोध्या प्रसाद मिश्र, बाबू सूरज दयाल आदि थे। इस बार स्वामी जी का निवास गोमती के किनारे मोती महल की कोठी में हुआ उन दिनों स्वामी जी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। उनको छः मास पूर्व रुड़की मे कोई विषैली औषधि दी गई थी जिसकी चिकित्सा के लिए वे गाय के बिना घृत निकाले मट्ठे का सेवन करते थे परन्तु इस रुग्णावस्था में भी उनके कार्यक्रम में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ी। इस बार आपके व्याख्यान गणेशगंज में तथा चौक में भी हुए इसी अवसर पर स्वामी जी ने स्वयं यहां आर्य समाज स्थापित करने का प्रस्ताव किया। उपस्थित व्यक्तियों ने निवेदन किया कि अभी हम लोगों ने इस पर पूर्ण विचार नहीं किया परन्तु अगली बार जब आप दर्शन देंगे तो हम लोग अवश्य ही समाज की स्थापना करेंगे स्वामी जी चौथी बार पुनः ५ मई १८८० को लखनऊ पधारे और नाका हिंडोला के पास राना शंकरबख्श की वाटिका में निवास किया तथा नवाब अमीनुद्दौला के इमामबाड़े के चबूतरे पर आपके व्याख्यान नित्य होते रहे और इसी चबूतरे पर ही वैशाख कृष्णा अमावस्या

रविवार सम्वत् १९३७ तदनुसार ९ मई सन् १८८० को श्री स्वामी जी ने समाज की स्थापना की इसके २५ सभासद बने और निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान श्री पं० इन्द्र नारायण मसालदान

मन्त्री श्री पं० रामदुलारे बाजपेई

कोषाध्यक्ष श्री पं० अयोध्या प्रसाद जी

आर्य समाज ने अपने कार्य संचालनार्थ वही नियम निश्चित किये जो लाहौर आर्य समाज के नियम थे और उन्हीं नियमों के अनुसार आर्य समाज का कार्य प्रारम्भ किया गया।

पुस्तक-परिचय

यज्ञ महाविज्ञान

लेखक—वेद विज्ञानाचार्य पं० वीरसेन जी वेदश्रमी, प्रकाशक—वेद-सदन महारानी पथ इन्दौर, मूल्य पैंतिस रुपये, पृष्ठ—१७०—यज्ञ विज्ञान सम्बन्धी १७ लेखों का संग्रह, उत्तम कागज, उत्तम मुद्रण—आकर्षक कवर पृष्ठ।

यज्ञ शास्त्र पारङ्गत—वेद विज्ञानाचार्य वेदश्रमी पं० वीरसेन जी आर्य जगत के सुप्रसिद्ध व्यक्ति हैं तथा यज्ञ सम्बन्धी उनका अध्ययन क्रियात्मक अनुष्ठान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समन्वय करते हुए यज्ञ शास्त्र सम्बन्धी साहित्य अपने में अप्रतिम है—पूर्ण है और भारत के यज्ञ-विज्ञान के इतिहास में स्वर्णिम है। वेदश्रमी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन यज्ञ—विधान सम्बन्धी शोध में व्यतीत किया। यज्ञ—विधान के फलों को भी जनता को दिखाया अवर्षण में वर्षा करायी—उपद्रवों में शान्ति संचारित की इतना ही नहीं अपने साहित्य का प्रकाशन भी किया—गृह की सम्पत्ति, चिकित्सा का व्यवसाय सब कुछ यज्ञ की लगन मे समर्पित किया। वेद विज्ञान एवं यज्ञ विधान के निष्णात विद्वान द्वारा समालोच्य ग्रन्थ जनता को भेंट है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में वेदश्रमी जी लिखते हैं—'यज्ञ विज्ञान की यह पुस्तक यज्ञ प्रभु को ही समर्पित है' समस्त ब्रह्माण्ड का क्रियाकलाप विज्ञान मय कुशलता से सृष्टि के आदि से प्रलय पर्यन्त चलता रहता है तथा सृष्टि-क्रम यज्ञ का विशेष रूप से अपना महत्व रखता है एवं संचालक तथा निष्पादक के रूप में यज्ञ संतुलक और कन्ट्रोलर का कार्य करता है—पुस्तक मे लेखो के प्रमुख विषय हैं :—यज्ञ विधान से विश्व-शान्ति, यज्ञों में अनुसंधान, यज्ञों का दार्शनिक एवं वैज्ञानिक महत्व, यज्ञों का लोक व्यावहारिक—फल प्रदायक एवं जीवनोपयोगी महत्त्व, पर्यावरण एवं यज्ञ, स्वास्थ्य एवं समाज कल्याण में अग्निहोत्र की देन, यज्ञों से ऋतु, सुधार—वृष्टि विज्ञान, भौतिक कोप शमन, कृषि उत्पादन में वृद्धि, तथा यज्ञो के निष्पादन की सांगोपांग विधि—इससे सम्बन्धित अन्य विषय भी हैं।

संक्षेप में इतना कहना पर्याप्त है कि वेदश्रमी जी ने जीवन भर जिस साधना से यज्ञ—विज्ञान दर्शन में जो उपलब्धि प्राप्त की है उसका सार इस ग्रन्थ में है, आर्य जगत में पुस्तक का आदर अपेक्षित है, समस्त आर्यजन इसका अध्ययन करें। आर्य पुस्तकालय मंगायें और वैज्ञानिकों—प्रकृति विषय पर शोध कर्त्ताओं को भी अध्ययन करना चाहिए।

पं० वेदश्रमी जी इस रचना हेतु धन्यवाद के—अभिनन्दन के पात्र हैं तथा उनकी रचना का उचित समादर होगा।

—प्रो० रमेशचन्द्र एम०ए०

राष्ट्र निर्माण

राष्ट्रोन्नति के सुनहरे साधन

१– समस्त विद्यालयों में धर्म शिक्षा चालू की जाये।
२– वेदों का पठन-पाठन अनिवार्य किया जाये।
३– विश्व बन्धुत्व का शंख नाद किया जाये।
४– मानव मात्र की रक्षा के बोध से मानव मात्र को बोधित किया जाये।
५– भारत को पुनः विश्व के गुरु पद पर अलंकृत किया जाये।
६– भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाये।
७– भारत के संविधान को और राष्ट्रीय ध्वज को जो लोग जलाने का एलान कर चुके हैं उन्हें मौत की सजा दी जाये।
८– वैदिक संस्कृति की रक्षा की जाये।
९– संस्कृत का पठन-पाठन सभी विद्यालयों में अनिवार्य किया जाये।
१०– राष्ट्र भाषा हिन्दी मे ही हम अपने कार्यों को करें।
११– महर्षियों की प्राचीन प्रणाली को अपनाएं, घर-घर में यज्ञ रचाएं।
१२– यज्ञ मय जीवन बनाकर अक्षय सुखों को प्राप्त करें।
१३– शराब के सर्वनाश बचें।
१४– प्रतिपल देश धर्म की रक्षा हित सजग रहें।
१५– भारत माता की रक्षा के लिये अपना तन-मन और धन सर्वस्व निछावर करने की प्रबल प्रतिज्ञा करें।
१६– गौ–हत्यारो को मौत की सजा दें।
१७– गर्भ हत्या जैसे महा पाप को बन्द करें।
१८– संयम, सदाचार, ब्रह्मचर्य, व्रत, के पालन का पाठ पढ़ें और बढ़ायें।
१९– आकाशवाणी और दूरदर्शन से चरित्र विनाशक तथा मार काट के कार्यक्रम का प्रचार बन्द किया जाये।
२०– महापुरुषों महात्माओं और महर्षियो के समान जीवन बनाएं।

वेपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी,
स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी,

मन्त्री, वेद विश्व विद्यालय निर्माण समिति,
नई दिल्ली—५

स्वामी मुक्तानन्द जी दयानन्द स्मारक कर्णवास के अध्यक्ष मनोनीत

ध्यानयोगी स्वामी मुक्तानन्द जी सरस्वती को महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास का अध्यक्ष, नियुक्त किया गया है। २८ अगस्त १९८७ को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी महराज के नेतृत्व में दिल्ली, आर्य प्रतिनिधि सभा को प्रचार वाहन द्वारा एक शिष्ट मण्डल कर्णवास पहुंचा।

जहां स्वामी मुक्तानन्द जी महराज को सम्मान पूर्वक महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास में अध्यक्ष पद पर आसीन कराया गया।

डा० धर्मपाल महामन्त्री

सम्पादकीय
(पृष्ठ २ का शेष)

आनन्द, आत्मानन्द, परमानन्द तो कष्टों की सुसेवा में अन्तर्निहित है। कोरे पूजा पाठ स्तुति गान अर्चना आराधना से उसकी प्राप्ति नहीं हो सकती।

जब आर्यसमाजों में वेद प्रचार को प्रमुखता दी जाती थी, तो ऐसे दुर्भिक्षों में, भूकम्प और बाढ़ पीड़ित प्रदेशों में अपने-अपने साधनों को लेकर सेवा शिविर लगाए जाते थे जो हमारी वैदिक शिक्षाओं के व्यवहारिक स्वरूप का प्रदर्शन करते थे। आज भी स्वामी दयानन्द के अनुयायी पंजाब के आतङ्कवाद पीड़ितों के शिकार निरीह व्यक्तियों की सेवा में अविराम लगे हुए हैं। उनसे ही ये दुर्भिक्ष और बाढ़ पीड़ित जन सेवा की आशा लगाये बैठे हैं। क्या आर्य जन वेद की इन पावन शिक्षाओं को व्यवहारिक रूप देने के लिये, और अधिक सचेत और सक्रिय होंगे? आज सबसे बड़ी आवश्यकता है पारस्परिक वाद विवादों को प्रीतिपूर्वक सत्य और धर्म के आधार पर सुलझाना और न्यायालयों में होने वाले व्यर्थ के आर्थिक व्ययों को इन मानवीय सेवाओं में लगाना। वैदिक धर्म की जय मानवता की सेवा से ही सजीव होगी किसी अन्य आधार से नहीं।

—वसन्त

मेरठ दंगा पीड़ितों के सहायतार्थ दान सूची
(क्रमशः)

१–श्री श्रवण कुमार इस्लाम नगर, बदायूं		७१–०० रु.
२–श्री राजेन्द्र चौधरी	,,	२१–००रु.
३–श्री रमेश चन्द्र ठेकेदार	,,	२१–००रु.
४–श्री हरिकिशन वर्मा	,,	२१–००रु.
५–श्री डा० बद्री प्रसाद	,,	११–००रु.
६–श्री वीरेन्द्र कुमार	,,	१०–००रु.
७–श्री राम स्वरूप	,,	७–००रु.
८–श्री महेश दालवाले	,,	११–००रु.
९– श्री महावीर प्रसाद गुप्ता		२५१–००रु.

सभा दानी महानुभावों का आभार प्रकट करती है।

मनमोहन तिवारी मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ

मारिशस में वैदिक विवाह सम्पन्न

श्री भवानीलाल भारतीय अध्यक्ष दयानन्द शोध पीठ चण्डीगढ़ के द्वितीय पुत्र श्री भुवनमोहन माथुर (श्रम कल्याण अधिकारी, एच. पी. काटन टेक्सटाइलमिल हिसार) का विवाह मारिशस देश निवासी श्री प्रेम जीवन की सुपुत्री सौ. सुनयना के साथ दिनांक १६ अगस्त को मारिशस मे पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

आर्य जगत

वेद प्रचार सप्ताह का सफल आयोजन

दिनांक १ से १६ अगस्त तक निम्नलिखित आर्य समाजो से ससमारोह वेद प्रचार सप्ताह (श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्णजन्माष्टमी) महोत्सव मनाने के और समाचार प्राप्त हुये हैं :–

१. आर्य समाज टांडा फैजाबाद ।
२. आर्य रक्षा समिति आर्य समाज जौनपुर ।
३. आर्य समाज गोरखपुर जबलपुर ।
४. आर्य समाज सासनीद्वार हाथरस ।
५. ‍ार्य समाज बहजोई मुरादाबाद ।
६. आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग फ्रीगंज (आगरा)
७. आर्य समाज कासगंज एटा
८. आर्य समाज इटारसी होशंगाबाद
९. आर्य समाज काशीपुर (नैनीताल)
१०. आर्य समाज गोरखपुर
११. आर्य समाज फतेहाबाद (आगरा)
१२. आर्य समाज देवरा सतना ।
१३. आर्य समाज बलिया ।
१४. आर्य समाज सिलीगुड़ी ।
१५. आर्य समाज तिलहर शाहजहांपुर ।
१६. आर्य समाज रामपुर धुन्सी खीरी ।
१७: आर्य समाज खुरजा ।
१८. आर्य सलाज नयाबांस देहली ।
१९. आर्य समाज छपरोली मेरठ ।
आर्य समाज कृष्णा नगर मथुरा ।

आदर्श शिक्षक का सम्मान

देवबन्द क्षेत्र में आर्य समाज के प्रचार मे सतत् प्रयत्नशील संस्कृत संस्कृति और राष्ट्रीयता के आदर्श शिक्षक श्री पं० विश्वम्भर देव शास्त्री को, उनके कालेज हरपत राय ऐंग्लो वैदिक इन्टर कालेज की प्रबन्ध समिति ने एक समारोह में सम्मान स्वरूप एक शाल और प्रशस्ति पत्र दिया ।

झण्डाधारी जी द्वारा १ करोड़ के दान की घोषणा

महर्षि दयानन्द वेद विश्व विद्यालय दिल्ली में वेद विज्ञान भवन, ८४ खम्भों की संगमरमर की स्वर्ण कलश यज्ञशाला वैदिक पुस्तकालय, धर्मशाला, चिकित्सालय, छात्रावास, दयानन्द सेवाश्रम एवं गोशाला आदि के निर्माण के लिए श्री धर्मवीर झण्डाधारी ने धर्मवीर ग्रंथमाला के ग्रन्थों की बिक्री विभाग से एक करोड़ रुपये के सात्विक–दान की घोषणा की है ।

–आचार्य विश्वश्रवा जी १०३ बजरिया मोतीलाल बरेली के श्री रामदत्त व्याकरणाचार्य एवं श्री गणेश दत्त जी व्याकरणाचार्य से मिलना चाहते हैं । श्री रामदत्त जी महाविद्यालय ज्वालापुर में अध्यापक रहे हैं एवं श्री राजेश दत्त जी ने हापुड़ के निकट–गुरुकुल की स्थापना की थी ।

निर्वाचन

आर्य समाज बिलसी बदायूं
संरक्षक–श्री पं० धर्मपाल विद्यालंकार ।
प्रधान–श्री स्वराज्य चन्द मालपाणि
मन्त्री–श्री गिरीश चन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष–श्री धर्मवीर आर्य

आर्य समाज मोंठ, झांसी
प्रधान–श्री मदन मोहन सिलौरिया एडवोकेट ।
मन्त्री–श्री भगवान दास पाठक
कोषाध्यक्ष–श्री देशकुमार नागरिया

आर्य समाज भवाली नैनीताल
प्रधान–मेजर केशर सिंह
मन्त्री–श्री शंकर देव आर्य
कोषाध्यक्ष–श्री नारायण सिंह

आर्य समाज वृन्दावन
प्रधान–डा० रमेश दत्त शर्मा
मन्त्री–श्री राजीव कुमार गोस्वामी
कोषाध्यक्ष–श्री रवि कुमार शर्मा

आर्य समाज देहरादून
प्रधान–श्री यशपाल आर्य
मन्त्री–श्री देवी दत्त बाली
कोषाध्यक्ष–श्री प्रेमचन्द मित्तल

आर्य समाज बगहा–मीरजापुर
प्रधान–श्री सरोज कुमार सिंह
मन्त्री–श्री ज्वाला प्रसाद सिंह
कोषाध्यक्ष–श्री देवन सिंह

आर्य समाज छिउलहा फतेहपुर
प्रधान–श्री रघुनन्दन प्रसाद गुप्त
मन्त्री–श्री चन्द्रभानु सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष–श्री हरिश्चन्द्र अग्रवाल

आर्य समाज नैनीताल
प्रधान–श्री गुरुदेव विद्यालंकार
मन्त्री–श्री केदार सिंह
कोषाध्यक्ष–श्री धर्मी रामजी

श्री ब्रह्मदत्त स्नातक का नवीन पता

श्री ब्रह्मदत्त स्नातक एम. ए. शास्त्री
पता सी. ४ बी./३३२ बी.
जनकपुरी नई दिल्ली ११००५८ है

महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ

डी० ए० वी० एलमनी डायरेक्ट्री

दो वर्षों से जिसकी प्रतीक्षा थी वह अमूल्य संदर्भ ग्रंथ छप गया है । इसमें डी० ए० वी० संस्थाओं के संस्थापकों, संचालकों और उसके लिए त्याग और दान करने वाली विभूतियों तथा डी० ए० वी० संस्थाओं के उन प्रतिभावान विद्यार्थियों के जो अब विभिन्न उच्च पदों पर और उद्योगों आदि में कार्यरत हैं जीवन परिचय छपे हैं ।

एक हजार पृष्ठों के दो भागों मे सचित्र, सुन्दर, बढ़िया कागज पर अंग्रेजी में छपे उत्तम, सजिल्द ग्रंथ का मूल्य केवल १५० रुपये मात्र है । यह ऐसा ग्रंथ है जिसकी प्रतियां प्रत्येक आर्य समाज में, शिक्षण संस्था में और निजी एवं सार्वजनिक पुस्तकालय में रखी जानी आवश्यक हैं ।

इसे डी० ए० वी० कालेज, प्रबन्धकर्तृ समिति के कार्यालय, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली से प्राप्त किया जा सकता है ।

डाक से मँगाने वालों को डाक व्यय तथा पैंकिंग चार्जेज सहित २०० रुपये मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट अथवा चैक डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली के नाम से भेजना चाहिए ।

दरबारी लाल (संगठनसचिव)

गढ़ मुक्तेश्वर में गंगा मेला पर प्रचार

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला गाजियाबाद एवं मेरठ की ओर से गंगा मेला गढ़मुक्तेश्वर सन्तर नं० ७ तिथि कार्तिक-शुक्ल ११ सं० २०४४ तदनुसार रविवार दिनांक १ नवम्बर ८७ से कार्तिक पूर्णिमा सं० २०४४ तदनुसार बृहस्पतिवार ५ नवम्बर ८७ तक वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी, नेता और भजनोपदेशक पधारेंगे। शिविर में एक आर्य नगर बसाने की भी योजना है। इस अवसर पर विविध सम्मेलनों का आयोजन होगा साथ ही एक आर्य भोजनालय की भी व्यवस्था रहेगी।

माधव सिंह	इन्द्र राज	अमर सिंह	विजय भूषण
प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री
ओ३म् प्रकाश जौहरी			माया प्रकाश
कोषाध्यक्ष			कोषाध्यक्ष
आर्य उप प्रतिनिधि सभा			आर्य उप प्रतिनिधि सभा
जिला मेरठ			जिला गाजियाबाद

स्वामी समर्पणानन्द जी के ९२वाँ जन्मदिन पर सातवीं शोध-गोष्ठी का सफल आयोजन

पूज्य स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती (भू० पू० पं० बुद्धदेव विद्यालंकार) जी का ९२ वाँ जन्म दिन १ अगस्त को पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में समारोह मनाया गया और उसी तारतम्य में आयोजित होने वाली शोध गोष्ठी को मेरठ की असामान्य स्थिति के कारण दिनान्तरित करके दि० २२-८-८७ को आयोजित किया गया। यह "वैदिक संहिताओं में नैतिक तत्व" विषयक शोध गोष्ठी भी स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोला झाल, मेरठ में वेदों के अद्वितीय विद्वान्, पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी के तत्वावधान में महान् समारोह के साथ सम्पन्न हुई। इस गोष्ठी में आमन्त्रित विद्वानों के अतिरिक्त स्थानीय संस्कृत विद्वान तथा ग्रामीण क्षेत्र एवं नगर से बड़ी संख्या में प्रबुद्ध वेद जिज्ञासुजन पधारे।

स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान के निर्देशक डा० निरूपण जी विद्यालंकार ने गोष्ठी का संयोजन करते हुए गोष्ठी के विषय के महत्व एवं शोध संस्थान के महान् उद्देश्यों से लोगों को अवगत कराया।

सर्वप्रथम श्री सोमदेव शतांशु दर्शन निष्णात प्रभात आश्रम के स्नातक ने "वैदिक संहिताओं में वर्णित नैतिकता पर आक्षेपों की यथार्थता" विषयक अपना शोध पत्र पढ़ा जिसमें उन्होंने ऋग्वेद एवं अथर्व वेद के अनेक मन्त्रों का, जिनकी गलत व्याख्या करके पाश्चात्य विद्वान वैदिक संस्कृति सभ्यता पर कीचड़ उछालने का प्रयास करते है, उन मन्त्रों के यथार्थ स्वरूप पर प्रकाश डाला।

डा० सत्यपाल नारंग, रीडर संस्कृत विभाग वि० विद्यालय ने अपने शोध निबन्ध में वैदिक नीति तत्व, कानून के रूप में किस तरह परिणत हुए, इस विषय को विस्तार से विवेचित किया।

वेदों के मर्मज्ञ विद्वान डा० फतह सिंह (निर्देशक वेद संस्थान, दिल्ली एवं भू० पू० निर्देशक-राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि वेद का प्रत्येक मन्त्र हमें नैतिकता का उपदेश देता है। उन्होंने अथर्व वेद के "सत्यमुग्रं ऋतं बृहत, दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति" मन्त्र का विवेचन करते हुए कहा—उग्र सत्य, बृहत, ऋत, दीक्षा, तप, ब्रह्म एवं यज्ञ ही नैतिकता के मूल आधार हैं।

अन्त में शोध संस्थान के अध्यक्ष तपोनिष्ठ, वेदों के मर्मज्ञ, पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, जबकि पाश्चात्य विद्वान एवं तदनुकरणशील पौरस्त्य विद्वान वैदिक संस्कृति सभ्यता पर अनेक जुगुप्सित आक्षेप करते हैं······वेद गड़रियों के गीत कहे जाते हैं·········वेदों से विभिन्न प्रकार के अनाचार सिद्ध किये जाते है, इस परिस्थिति में वैदिक संहिताओं में नैतिक तत्व जैसे विषय पर गोष्ठी का आयोजन अत्यन्त ही उपादेय एवं महत्वपूर्ण है। उन्होंने सशक्त शब्दों में यह प्रतिपादित किया कि यदि हम विश्व को नैतिक बनाना चाहते हैं तो वैदिक ज्ञान के प्रचार प्रसार के व्यतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं। वेदों को पाश्चात्य राजनीति के कुचक्र से मुक्त कर उनके वास्तविक स्वरूप को जन-जन तक पहुंचा कर ही विश्व में सुख शान्ति के साम्राज्य की स्थापना की जा सकती है। इस क्षेत्र में "स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान" के योगदान एवं उपादेयता से उन्होंने लोगों को अवगत कराया।

अन्त में गोष्ठी के संयोजक डा० निरूपण जी विद्यालंकार ने सभी वक्ता विद्वानों एवं वक्ताओं को धन्यवाद प्रदान किया एवं शान्ति पाठ पुरःसर गोष्ठी सम्पन्न हुई।

इन्द्रराज, मन्त्री,गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी (मेरठ)।

ईसाई परिवार द्वारा वैदिक धर्म स्वीकार

दिनांक ३०-८-८७ को ग्राम सागलपुर मझौआ पो० भोजीपुरा जिला बरेली में एक ईसाई परिवार ने श्री हरीश कुमार आर्य प्रचार मन्त्री आर्य समाज बभोरा की प्रेरणा से स्वेच्छा पूर्वक ईसाई धर्म त्याग कर वैदिक धर्म, स्वीकार कर लिया है। परिवार में श्री राजकुमार पुत्र स्व० किलारेन्स प्रसाद एवं अशोक कुमार, दिलीप कुमार, महेन्द्र कुमार, (भाई) कु० माधुरी (बहिन) श्रीमती ज्ञानवती (मां) श्रीमती उर्मिला देवी पत्नी श्री राजकुमार, श्रीमती मीना देवी पत्नी श्री अशोक कुमार आदि बालिग सदस्यों के अतिरिक्त चार बच्चों ने वैदिक धर्म स्वीकारा।

चिकित्सा विज्ञान—कुछ विचारणीय तथ्य

[पृष्ठ ३ का शेष]

दूसरे पिण्ड का एंजिन है हृदय। इसका संचालन वायु से होता है। तीसरा यन्त्र है यकृत या लिव्हर जिसका संचालन मिट्टी से अर्थात् अन्न से होता है। चौथा एंजिन है गुर्दा वृक्क या किडनी इसका संचालन जल से होता है।

विचार करने से स्पष्ट होता है कि—मस्तिष्क का संचालन सौर शक्ति से सूर्य से होता है। दोनों में सूक्ष्म तरंगों का सम्बन्ध है। इनका उचित समन्वय ही स्वास्थ्य का मूल आधार है।

जब-जब इनका संतुलन बिगड़ता है तब हम अस्वस्थ होते हैं। इन चारों पिण्ड के एन्जिनों का सीधा गहरा सम्बन्ध ब्रह्माण्ड के चारों एन्जिनों से है। जब तक हमारे चिकित्सक दोनों केन्द्रों के रहस्य को नहीं जान लेंगे तब तक वे हमारी आयु की रक्षा नहीं कर पाएंगे।

हमारी प्राचीन यज्ञ चिकित्सा पद्धति इन दोनों केन्द्रों को एक ही क्रिया से सबल बनाने में समर्थ थी। आजकल का चिकित्सा विज्ञान अभी पंगु व एकांगी है। क्या चिकित्सा विज्ञानी इस दिशा में गहराई से सोचेंगे?

इस रहस्य को जान लेने व इसमें दक्षता प्राप्त कर लेने से वे दूर बैठे-बैठे भी रोगी के शरीर को वैसे ही स्वस्थ व अनुशासित कर सकेंगे जैसे कि—जमीन पर बैठकर भूवैज्ञानिक उपग्रहों को नियन्त्रित कर रहे हैं। आशा है चिकित्सा विज्ञानी इस दिशा में गंभीरता से सोचेंगे।

स्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45903 ४५६६३
पंजीकरण स० एल डबल्यू एन पी ७६
आश्विन कृष्ण १३
२० सितम्बर रविवार, १९८१ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

१२९४६—श्री पुस्तकाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

धर्म शिक्षा पुस्तको के सम्बन्ध मे—

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयो एव पुस्तक विक्रेताओ को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्याय सभा उत्तरप्रदेश द्वारा प्रकाशित पुस्तकें सभा कार्यालय मे उपलब्ध हैं। पुस्तके प्राप्ति हेतु कार्यालय से सम्पर्क करे अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम ... रेलवे स्टेशन एव पूरा पता साफ-साफ लिखें। ... निम्न प्रकार हे—

धर्म शिक्षा भाग १	१ ००
,, ,, ,, २	१ ५५
,, ,, ,, ३	२ ७०
,, ,, ,, ४	२-७५
,, ,, ,, ५	३-६०
,, ,, ,, ६	४-७५
,, ,, ,, ७	४-१५
,, ,, ,, ८	-००
,, ,, ,, ९	४-००
,, ,, ,, १०	३-००
,, ,, ,, ११	४- ०
धर्म शिक्षा भाग १२	३-५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ

मेरे देश के अमर सपूतो

लगता है पिण्डी बढकर पीकिंग से हाथ मिलायेगी।
लगता है ये चीनी चालें ढाका को पिटवायेंगी।
लगता है सीमा पर अबके दो—दो आंधी आयेंगी।
लगता है यह दुनियाँ हमसे अनहोनी करवायेगी।।

उत्तर गरजो दक्षिण बरसो पूरब—पश्चिम छाओ रे।
मेरे देश के अमर सपूतो उमड—घुमड कर आओ रे।।

ढोती है दुर्गन्ध हवाए एटम के उच्छ्वासो को।
घूम रही नादान आंधिया अर्थी ले विश्वासो की।
कब कैसा रग बदले जालिम मौसम का विश्वास नहीं।
कब दे प्रलय द्वार पर दस्तक कुछ भी तो आभास नहीं।।

पख काट दो तूफानो के पीछे उन्हे धकेलो रे।
नारो की गुडियाए फेंको तलवारो से खेलो रे।
अब न जवानी को भरमाओ प्रेम शान्ति के गानो से
करने दो दो हाथ उसे खुलकर जालिम तूफानो से।।

... सरगम पर अब भैरव राग बजाओ रे।
मेरे देश के अमर सपूतो उमड—घुमड कर आओ रे।

घर के चारो ओर तनी है सगीनें शैतानो की।
भीतर गुपचुप सरगर्मी है जयचन्द की सन्तानो की।
सावधान ! घर जले न अपना घर के अशुभ चिरागो से।
सम्भल के रहना दिल्ली वालो ! आस्तीन के नागो से।

धरती के मन मे पीडा दम घुटा—घुटा आकाश का।
चौराहे पर खडा कारवा थका—थका इतिहास का।
ठोकर से भूगोल बदल दो नक्शे बदलो भालो से।
सदियो का इतिहास बदल दो सौ—सौ नई मिसालो से।।

दिल्ली की चौखट पर पिण्डी, पीकिंग को झुकवाओ रे।
मेरे देश के अमर सपूतो उमड-घुमड कर आओ रे।।

अनगिन सुखद सुहाग उजाड जिसकी इक नादानी ने।
लाल बहादुर छीन लिया है रे जिसकी शैतानी ने।
कभी चीन से, कभी रूस से जाकर हाथ मिलाता है।
सबकी चौखट पर जा-जाकर पापी माथ झुकाता है।।

लगते हैं आसार कि उससे पुन युद्ध लडना होगा।
लगते है आसार आग के पथ पर फिर बढ़ना होगा।
आ ही गई घडी यदि सिर पर अबकी बार दनादन की।
नक्शे पर से पोछ डालना नकली रेख विभाजन की।।

यह दिल्ली पर नजर धरे तुम पिण्डी खाक बनाओ रे।
मेरे देश के अमर सपूतो उमड़—घुमड कर आओ रे।।

—बलबीरसिंह 'करुण' ६७ केशवनगर, अलवर (राज०)

एम० पी० प्रिंटर्स (निकट पुष्पराज सिनेमा) चारबाग, लखनऊ मे श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स० २२४१।५७ घोषणा पत्र स ७१२८-२-८५

आश्विन शुक्ल ४ रविवार सम्वत २०४४ वि० दिनाक २७ सितम्बर १९८७

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल

विक्रमादित्य वसन्त'
वेद वारिधि

★

प्रो० रमशाचन्द्र एम. ए

★

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

★

वर्ष	९०
अङ्क	३८

प्रमुख ग्रंथियों द्वारा उग्रवाद का समर्थन

खुला देश द्रोह

स्वर्णमन्दिर परिसर पुनः देशद्रोहियो का शरण स्थल

सरकार अविलम्ब मन्दिर की रक्षार्थ कार्यवाही करे

आजकल अमृतसर का पवित्र स्वण मन्दिर पुन आतकवादियो देशद्रोहियो का शरण स्थल बन गया है जहा से पवित्र गुरुवाणी का प्रसार होना चाहिए गुरुओ का देश भक्ति मानव जाति धम की रक्षा का सन्देश प्रसारित होना चाहिए वहा प्रमुख ग्रन्थी देश विघाता अराष्ट्रीय आतकवादियो के खुले समथन की घोषणा कर रहे है। पवित्र स्वण मन्दिर को अराजकता देशघाती कायवाहिया सचालित करने क अड्डा नहीं रहने देना चाहिए।

स्वण मन्दिर सम्पूण भारतीय जनता का पवित्र मन्दिर है। उसकी पवित्रता की रक्षा करना प्रत्येक भारतीय का परम धम है।

इन देशद्रोही प्रमुख ग्रन्थियो को सरकार तत्काल गिरफ्तार करे। उन पर खुली अदालत मे मुकदमा चलाकर कठिन दण्ड दे और स्वण मन्दिर को उन आतकवादियो से मुक्त कराकर ऐसी व्यवस्था करे कि भविष्य मे उसकी पवित्रता मे आच न आये। अराजक आतकवादी देशद्रोही तत्व दुबारा वहा प्रश्रय न पा सकें।

पद्म भूषण महादवी वर्मा का महाप्रयाण

हिन्दी का सुविख्यात कवियित्री प्रयाग महिला विद्यापीठ की सस्थापिका ज्ञानपीठ के भारत भारती सम्मान से सम्मानित महीयसी महादेवी वर्मा का १० सितम्बर को ६ दिन की गहन बेहोशी के बाद हृदयगति रुक जाने से ८० वष की अवस्था मे इलाहाबाद मे देहावसान हो गया। व छायावादी कवियो की शृखला मे चौथी और अन्तिम कडी थी। छायावाद के शेष स्तम्भ प्रसाद निराला पन्त पहले ही जा चुके थे। अब महादेवी जी के जाने के बाद उस युग का भी अन्त हो गया।

श्रीमती महादेवी वर्मा ने ५० वर्षों से अधिक समय तक हिन्दी भाषा नारी जाति के उत्थान के लिए अपनी लेखनी के माध्यम से मा भारती की अनथक सेवा करके अपनी जीवन लीला समाप्त की।

उनका अन्तिम सस्कार पूण राजकीय सम्मान से इलाहाबाद मे सम्पन्न किया गया जिसमे मुख्य मन्त्री सहित अनेक राज नेता, लेखक विद्वानो ने भाग लेकर अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अपित की। भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति एव प्रधान मन्त्री सहित अनेको राजनेताओ व लेखको विद्वानो के सम्वेदना सन्देश प्राप्त हुए।

प्रदेश की आय जनता की ओर से उस महान आत्मा के प्रति हमारा श्रद्धापूवक नमन एव श्रद्धाजलिया समपण।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आय प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ५ मीराबाई माग, लखनऊ

आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश का
वार्षिक बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन का कार्यक्रम

सूची का प्रकाशन	४-१०-८७
आपत्ति प्राप्त करने की अन्तिम तिथि	१५-१०-८७
आपत्तियों की सुनवाई एवं समाधान	१६-१०-८७ से २०-१० ८७ तक
शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	२७-१०-८७
सभा का बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	१४ व १५ नवम्बर ८७

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दिनांक २ अगस्त १९८७ को सभा भवन लखनऊ में सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में हुई और उसमें बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ.

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ-आश्विन शुक्ल ४ सम्वत् २०४४ रविवार २७ सितम्बर १९८७, दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

प्रमुख ग्रन्थियों का बयान-खुला देशद्रोह

सिख पन्थ के तथाकथित ४ प्रमुख ग्रन्थियों ने अपनी एक घोषणा में उग्रवादियों की सम्पूर्ण कार्यवाही को सही बताया है और कहा है कि सिख गुलामी की जिन्दगी जी रहे हैं उन्हें आजाद होना है। उनका यह वक्तव्य अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है और खुला देशद्रोह है। भले ही उन्होंने खुलासा खालिस्तान का नाम नहीं लिया परन्तु प्रच्छन्न रूप में उन्होंने देश को विखण्डित करके खालिस्तान की ही मांग की है।

सिख पन्थ के आदि गुरु—गुरुनानक देव, गुरु अर्जुन देव, गुरु गोविन्द सिंह आदि के मन्तव्यों को गुरुवाणी मानकर गुरुग्रन्थ साहब में अंकित उनकी वाणी का दूसरों मे प्रचार करके उन्हें पवित्र बनाने का व्रत लेने वाले ये ग्रन्थी ही अब उनकी वाणी का अनादर उनकी वाणी की अवहेलना करेंगे तो बाकी का क्या होगा। समस्त गुरुओं ने एक ओंकार की उपासना करके राम और कृष्ण के चरित्र को अपनाकर मातृभूमि मातृशक्ति भारतीय संस्कृति सभ्यता और धर्म की रक्षा करने का आह्वान किया था उनके आह्वान पर ही जीवनबलिदानी वीरो ने अपना घरेलू सुख ऐश्वर्य त्याग कर सिख (शिष्य) बनकर अपने जीवन को राष्ट्र के लिए सौंप दिया था। विलासिता से दूर केश रखकर सफाई हेतु कंघी की मात्र आवश्यकता समझी कड़ा पहना संकल्प के रूप में कच्छा बांधा संयमित जीवन बिताने की भावना लेकर और कृपाण धारी थी दुष्टता के विनाश के लिए। देश की और आवश्यकता को देखते हुए कालान्तर मे प्रत्येक परिवार का प्रथम पुत्र देश के इस बलिदानी जत्थे में सम्मिलित होने का संकल्प लेता और सिख बन जाता था। स्वर्ण मन्दिर की स्थापना-देश जाति व धर्म की रक्षा का पवित्र व्रत लेने, व्रतियों को बलिदानी जीवन जीने का अमृत घूंट पिलाने के लिए की गयी थी। समय-समय पर अकाल तख्त से उनके लिए दिशा निर्देशन देकर उन्हें सदैव सचेष्ट रहने का आह्वान किया जाता था। उन्हीं निर्देशों के अनुरूप अनेकों वीरों ने देश जाति धर्म की रक्षार्थ अपनी आहुति देकर भारत माता की सेवा की और अमर हो गये।

उसी पवित्र स्वर्ण मन्दिर का आज अराजकता देश द्रोह का अड्डा बना दिया गया है। वहां भाई-भाई का खून पीने की योजनायें बनती हैं देश का विखण्डन करने की योजनायें बनायी जाती हैं। पृथकतावादी खालिस्तानी झण्डे फहराये जाते हैं और शासन यह सब भली भाँति जानकर भी उसे नजरन्दाज कर रहा है। आखिर यह हताशा क्यों? स्वर्ण मन्दिर को अपवित्र करते क्यों देखा जा रहा है। पहले ग्रन्थी मौन रहकर अपना पूर्ण योगदान उग्रपन्थियों को देते रहे। इसी स्तम्भ में हमने कई बार इस बात को स्पष्ट तौर से लिखा है कि ग्रन्थी उग्रवादियों से मिले हैं उनका उन्हें प्रश्रय है या वे उनसे दबते है। हमारा वह संदेह अब स्पष्ट हो गया। वे उनसे मिले हैं सारी देशघाती योजनायें उनके प्रश्रय से बनायी जाती हैं। इसलिए सरकार को इन देशद्रोही ग्रन्थियों को तत्काल गिरफ्तार कर लेना चाहिए और उनपर विशेष खुली अदालत में देशद्रोह का मुकदमा चलाकर दण्डित किया जाना चाहिए।

पुलिस महानिदेशक श्री रिबैरो यह ठीक ही कहते है कि उग्रवादियों की संख्या थोड़ी ही है चार पांच छोटे घटकों में ही कुछ सौ है परन्तु उनकी जड़ें गहरी है। यह ठीक है कि वे थोड़े ही है परन्तु यह अति चिन्तनीय इसलिए है कि वे सिख परम्परा की सर्वोच्च गद्दी पर बैठे प्रमुख ग्रन्थियों से आशीर्वाद व सहयोग प्राप्त हैं। इसीलिए पवित्र स्वर्ण मन्दिर पवित्र मन्दिर न रहकर देश द्रोहियो का किला बन गया है। वहां अब नरहत्यायें करने वाले जन धन नष्ट करने वाले आतंक फैलाकर सुरक्षा पाते हैं। स्वच्छन्द विहरते हैं।

सिखो मे अब अनेक घटक—अकाली निरंकारी नामधारी निहंग आदि हैं। सभी इन उग्रवादियों के साथ नहीं है। सभी वर्गों के सिख सारे देश मे फैले हुए हैं सभी वर्गों में देश भक्तों की संख्या अधिक है फिर भी ये खुलासा उनका प्रतिरोध क्यों नहीं करते। उनके विरुद्ध सबल आवाज क्यों नहीं उठाते। स्वर्ण मन्दिर से दुष्टों के निकाले जाने का आन्दोलन क्यों नहीं करते। शायद एक पहचान (केश पगड़ी आदि सबकी एक सी है) के कारण वे संकोच कर जाते हैं अपनी आवाज बन्द रखते हैं। परन्तु यह गुरुओं की परम्परा के सर्वथा विरुद्ध है। सरकार भी अपने स्तर पर उग्रवादियों के हौसले पस्त करने का प्रयत्न तो करती है परन्तु स्वर्ण मन्दिर को लड़ाई का किला बनाये जाने पर कोई प्रतिरोध नहीं कर पा रही है।

इसी स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए हमारी पूर्व प्रधान मन्त्री अमर शहीद श्रीमती इन्दिरा गांधी ने स्वर्ण मन्दिर पर सेना की सहायता से अधिकार किया था। अनेकों उग्रवादी मारे गये अनेकों पकड़े गये थे जाने कितने अवैध आधुनिकतम शस्त्रास्त्र सरकार के कब्जे में भले ही इसी कारण उन्हें अपना बलिदान भी देना पड़ा था। परन्तु देश सदैव उनके इस पवित्र कार्य के लिए उनका हृदय से आभारी रहेगा।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" महर्षि का स्वप्न

आर्य समाज के कार्य को कैसे गति दी जावे?

[भोलानाथ दिलावरी–प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर]

आर्य समाज की नींव आज से ११२ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द ने रखी थी इस दृष्टि से कि लोप हुए वैदिक धर्म–आर्य धर्म को पुनः स्थापित कर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" रूपी वेदाज्ञा, को मूर्त रूप दिया जावे। महर्षि ने अनुभव किया कि "आर्य-सन्तान" अपनी चेतना खो बैठी है। अपने को आर्य न जान हिन्दू कहलाना प्रारम्भ कर दिया है। और नाना प्रकार के मत-मतान्तरों के झाड़-जंगल में बुरी तरह उलझ कर रह गई हैं। सर्व प्रथम इन्हें चेतना दी जावे–आर्य सनातन धर्म का ज्ञान कराया जावे। इसी महान् कार्य में वह अपनी मुक्ति का ध्यान छोड़, अपना सर्वस्व त्याग प्राणपन से जुट गए। स्वयं विष पी–हमें वेद ज्ञान-आर्यत्व का अमृत पिलाते-पिलाते जीवनोत्सर्ग–"प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो" कहते-कहते कर दिया।

महर्षि, हिन्दु–आर्य सन्तानों को मुसलमान ईसाई बनते देख अत्यन्त दुखी रहते थे। इस बात का संकेत उनकी निम्न एक घटना से स्पष्ट हो जाता है।

महर्षि श्री मोहनलाल पंड्या के यहाँ ठहरे हुए थे। आधी रात का समय था। श्री पंड्या जी ने देखा कि स्वामीजी बेचैनी से कमरे में इधर से उधर आ जा रहे हैं। यह देख उनसे न रहा गया। पूछ ही लिया। "स्वामीजी आपको क्या कष्ट है? कोई वेदना है? उन्होंने उत्तर में कहा "भाई मुझे कोई शारीरिक कष्ट नहीं अपितु मानसिक पीड़ा जो मुझे बेचैन कर रही है वह यह है कि आर्य सन्तान–हिन्दुओं को मुसलमान–ईसाई लूट–खसूट रहे हैं विधर्मी बना रहे हैं। हिन्दू अपने मूल वेद सनातन धर्म को भूल गए हैं। इन्हें कैसे बचा पाऊं। यह घटना आर्य समाज की स्थापना के बहुत पूर्व की है।

आर्य बन्धुओं! जानते हो, इसी वेदना के शमनार्थ ही महर्षि ने आर्य समाज को जन्म दिया था।

सब ने देखा कि गत ११२ वर्ष के कार्य काल में "आर्य समाज" ने मानवो मे आर्य चेतना लाने मे कितना अद्भुत कार्य किया। शिक्षा के क्षेत्र में तो अन्य किसी संस्था ने भी इतना कार्य न किया होगा।

इसके अतिरिक्त सामाजिक कुरीतियों, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार विधर्मी हुए आर्यों को वापिस आर्य धारा में लाने में तो माना कमाल ही कर दिखाया। इस प्रकार आर्यों में नया जीवन लाने में कोई कसर न उठा रखी।

"आर्य समाज" अब कोई साधारण संस्था नहीं है। बड़ी विशाल समृद्ध हो चुकी है। राष्ट्र भर में, तो स्थान-स्थान पर इसकी शाखाएं विद्यमान है। बाहर विदेशों में भी हैं। डी. ए. वी. एवं अन्य कार्य स्कूल-कालेज हजारों की संख्या में देश–देशान्तरों में शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। एक सौ के करीब "गुरुकुल" भी कार्य कर रहे हैं। करीब-करीब सब प्रान्तों में आर्य प्रादेशिक सभाएं भी हैं।

अब केवल इसकी गति में तेजी एवं कार्य पद्धति में सुधार लाने की जरूरत है। बदले हालात में कार्यक्षेत्र का आकलन करना होगा। सुधरे नये-नये तरीको से आर्य–धर्म-संस्कृति का सारे संसार में प्रचार प्रसार करना होगा। नया जीवन–आत्म चेतना लानी होगी।

आर्यो उठो! मत भूलो कि तुम महर्षि की मानस सन्तान हो। वह अकेला था–अब तुम करीब दो करोड़ हो। तुम्हारी शक्तिशाली भुजाएं आर्य–संस्थाओं के रूप में विद्यमान है। ऋषि-ऋण उतारना है। आलस्य-प्रमाद को दूर भगा दो ' महर्षि के लक्ष्य "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को प्राप्त करने हेतु कटिबद्ध हो जाओ। प्रथम भारत को सच्चे अर्थों में "आर्यावर्त" बनाना है। तुम में बढ़ने की क्षमता है। महर्षि का वरदान तुम्हारे साथ है। तुम में विद्वानो धर्मानुरागियों, वीरों की कमी नहीं। अतः आओ, प्रण ले ऋषि मिशन की पूर्ती में जुट जावें।

इस पवित्र कार्य में हमारी शिक्षण संस्थाएं जिनमें हर वर्ष लाखों बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं बड़ा महत्व पूर्ण योगदान दे सकी हैं। बच्चों में आर्यत्व कूट-कूट कर भर सकती है। इसी सम्बन्ध में मैंने अपने विचार आर्य बुद्धिजीवियों को गोष्ठी में भेजे थे, जो देहली में २० से २३ अप्रैल ८७ को हुई थी। उसमे क्या निर्णय लिए गए, मुझे कोई जानकारी नहीं।

अब इस लेख में विशेष रूप से इस बात को ओर अपने विचार केन्द्रित कर रहा हूं कि आर्यत्व के महत्वपूर्ण कार्य के, प्रचार प्रसार में आर्य समाजों के संगठन कैसे अद्भुत कार्य कर सकते है।

उपदेशकों का अभाव कोई बाधक नहीं।

आर्य समाज के गत ११२ वर्ष के इतिहास पर दृष्टि-पात करें तो इसमें हम देखेंगे कि इसमें उपदेशकों की भूमिका ही प्रमुख रही है। परन्तु वर्तमान में इनकी अत्यन्त कमी हो गई और आगे पूर्ती होने की कोई आशा भी नहीं। ऐसी अवस्था में प्रचार प्रसार कार्य कैसे हो? बात है भी सत्य। अतः हमें इसका बदल ढूंढना ही होगा।

यह एक तथ्य है कि कैसी भी जटिल–दुष्कर समस्या मार्ग में बाधक बन जावे तो यदि हम उसके समाधान के लिए दृढ़ संकल्प होंगे, तो कोई न कोई, समाधान मिल ही जावेगा। और हो सकता है कि वह पहिले से भी उत्तम सिद्ध हो। महर्षि की ओर तनिक देखो, अकेले ही–वह कुछ कर गए जो आज हम करोड़ों की संख्या में होने पर भी नहीं कर पा रहे। कारण स्पष्ट है। हमें आलस्य, प्रमाद ने घेर लिया है। अपने इस दोष पर पर्दा डालने के लिए कोई न कोई बहाना बना रहे हैं। सच्ची दृढ़ लगन हो तो एक मार्ग बन्द होने पर, अन्य विकल्प मिल ही जाया करता है। सो मेरे समक्ष अब यह कोई समस्या या रुकावट नहीं रही। वरन् मुझे उपदेशक एक बोझल प्रभाव–हीन प्रतीत होने लग गए हैं। मिलते भी नहीं। जो हैं वह बोझल और कार्य भी नहीं करते। अतः इन्हें भूल जाना चाहिए।

इस आधुनिक युग में नए नए आविष्कार हो गए हैं जिनमें प्रचार-प्रसार का कार्य बड़ी सफलता से लिया जा सकता है। इस कार्य में हम व्यापक रूप से, दूर समोप सब जगह छा सकते हैं। यात्रा आदि के खर्चे से बच सकते हैं। जनता में आकर्षक भी सिद्ध हो सकते हैं। जबकि उपदेशक अपना जादू खो बैठा है। आधुनिक साधन द्वारा हम चाहें तो २–३ वर्षों के अल्पकाल में ही योजनाबद्ध कार्य–पद्धति से वह कार्य कर सकते हैं जो पूर्व में १०० वर्षों में भी सम्भव न था।

यह साधन है क्या? वर्तमान युग का आविष्कार है, इसे वीडियो टी० वी० प्रणाली कहा जाता है। इसके द्वारा कैसटों पर प्रसिद्ध-प्रसिद्ध विद्वानों के व्याख्यान फिलमाए जा सकते हैं। आर्य-महापुरुषों की जीवन-झाँकियाँ, नाटक एवं वैदिक धर्म सम्बन्धी अन्य रोचक प्रभावी कार्यक्रम तैयार करवाए जा सकते हैं और बहुत कम खर्च पर, व्यापक रूप से, हर स्थान पर आसानी से भेजे जा सकते हैं। इस प्रकार प्रत्येक आर्य समाज में, जलसों में, स्कूलों, कालेजों में बड़ी आसानी से दिखाया

(शेष पृष्ठ ११ पर)

"वेद और पुराण"

(श्रीमती सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या १०, केलाबाग 'सावित्री सदन' बरेली)

प्रत्येक बात को कहने के तीन प्रकार हैं–वस्तु कथन, रूपक कथन तथा अतिशयोक्ति कथन। वस्तु कथन के द्वारा वक्ता किसी वस्तु के वास्तविक स्वरूप का ही बोध कराता है जिसे इतिवृत्तात्मक शैली भी कहते हैं। यह शैली प्रायः वैज्ञानिक, दार्शनिक एवं इतिहास लेखकों की होती हैं। रूपक कथन एक आलङ्कारिक ढंग है जिससे सत्य का उद्घाटन विचित्रता से होता है। यह उद्घाटन वाग्वैचित्र्य, श्रवण वैचित्र्य एवं अर्थ वैचित्र्य के लिए होता है। रूपक कथन में उपमेय और उपमान में अभेद स्थापित होने पर भी भेद स्पष्ट रहता है क्योंकि उसमे दो वस्तु अलंकार्य और अलंकारक पृथक् पृथक् होती है। अतः उसमें अधिक कठिनता का अनुभव नहीं होता परन्तु अतिशयोक्ति कथन मे दो वस्तुओं के स्थान में एक अलङ्कारक उपमान का ही कथन वैचित्र्य विशेष के लिए किया जाता है जिसमें कभी-कभी ऐसा अर्थ संशय हो जाता है कि मूल वस्तु अलंकारों के घोर आवरण में आवृत्त हो जाती हैं और केवल गौण अलङ्कारक उपमान ही प्रत्यक्ष परिलक्षित होता है। साहित्यिक कवियों की शैली रूपकातिशयोक्ति कथन द्वारा अभिव्यक्त होती है।

उपरि लिखित भूमिका यह स्पष्ट कर देगी कि वैदिक काल से पौराणिक काल तक यह आकाश पाताल का अन्तर क्यों हो गया है? चारों वेद क्रमशः ऋग्वेद ज्ञानकाण्ड, यजुर्वेद कर्मकांड, सामवेद उपासना काण्ड और अथर्ववेद विज्ञानकांड कहलाता है। वेदों में दो ही शैलियां प्रमुख हैं–वस्तु कथन तथा रूपक कथन। वेदों में वर्णित आलङ्कारिक कथाओं का पुराणो में आश्चर्यजनक रूपान्तरण अतिशयोक्ति कथन के कारण ही हुआ। यद्यपि दोनों में विषय भेद भी पर्याप्त है। आज पुराणों की कथायें वेदों के पावन तथ्योपदेश के समक्ष गल्प मात्र ही प्रतीत होती है। पुराणों के अतिशयोक्ति कथन के द्वारा वेद मन्त्रों के रहस्यों की मौलिकता नष्ट हो जाती है किन्तु जहां जहां पुराणों में वेदातिरिक्त विषय है वे भौगोलिक दृष्टिसे सत्य प्रतीत होते हैं। पुराणों के पांच लक्षण कहे गये हैं।

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च–।
वंशानुचरितश्चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

कुछ विद्वानों के मत में दश लक्षण भी बताये गये हैं।

"सर्गोऽस्याथ विसर्गश्च वृति रक्षान्तराणि च वंशो वंशानुचरितं संस्था हेतु रपाश्रयः॥" किन्तु इसका अन्तर्भाव पांच लक्षणों में ही हो जाता है। उक्त लक्षण बताते हैं कि पुराणों में सृष्टि, सृष्टि का विस्तार मन्वन्तर, राजाओं के वंश, वंशानुचरित्रों का वर्णन ही प्रधान है। इन विषयों के वर्णन में पुराण हमें ऐतिहासिक तथ्यों के समझने में अधिकाधिक सहायता देते हैं किन्तु जहां वेद मन्त्रों के आधार पर सम्बन्धित विषयों का वर्णन है वहां पुराण रूपकातिशयोक्ति द्वारा मौलिक अर्थ को छिपाकर पाठकों को केवल आलङ्कारिक इन्द्रजाल में फंसा देते हैं। वेद का मन्त्र है—

"इदं विष्णुः विचक्रमेत्रेधा निदधेपदम्। समूढमस्य पांसुरे "तात्पर्य स्पष्ट है व्यापक सूर्य अपने तीन पदों के द्वारा पृथ्वी द्युलोक अन्तरिक्ष के अंधकार को नष्ट कर देता है। पुराणों में अपनी नवीन आलङ्कारिक योजना में इस प्रकार वर्णन किया कि बलि के साम्राज्य को विष्णु भगवान् ने वामन रूप धारणकर तीन पदों द्वारा छल लिया। इसविचित्र कथा योजना मे बलि रूपी अंधकार, वामन रूप विष्णु, सूर्य, पृथ्वी अन्तरिक्ष, द्युलोक रूपी तीन पद सभी खो गये केवल बलि, वामन और तीन पदों की कथा शेष रह गयी। इस स्थिति मे कौन सा सुबुद्धजन इस वाग्जाल से निकलकर उस मूल सत्यपर पहुंच सकता है। इसी प्रकार अथर्ववेद के "वाराहेण पृथिवी संविदाना का विस्तृत स्वरूप वाराह पुराण में वराहावतार के रूप में वर्णित है।

"सुकूर्मो नाम एतद्रूपं कृत्वा प्रजापतिः प्रजाः असृजत्" यह उपनिषद का सारगर्भित वाक्य सृष्टि प्रकरण में कूर्मावतार रूप मे पुराणों में बहुशः वर्णित है। "तस्य अवनेनिजानस्य मत्स्यः। पाणीआपेदे" वाक्य भी मत्स्य पुराण का रूप धारण कर लेता है।

ऋग्वेद का वागाम्भृणी" नामक देवीसूक्त सूक्त पारमार्थिक रूपेण दिव्य गुणमयी परमात्म शांति का व्याख्यान है। आधिभौतिक दृष्टि से राष्ट्रीय संघटन शक्ति दुर्गा का बोधक है। दुर्गा की मूर्ति से ही इसका राष्ट्रीय स्वरूप झलकता है। देवी का एक सिर एक प्रमुख केन्द्रीय संचालक शक्ति का प्रतीक है।

समस्त राष्ट्र का प्रशासकीय मस्तिष्क एक है। अष्ट भुजाएं राष्ट्र को चलाने वाली वर्ण चतुष्टय—'ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र की आठ भुजाएं हैं किन्तु देवी के पैर दो ही हैं। मिलिट्री के हजारों जवान एक सेनापति के आदेश से परेड करते हुए लेफ्ट-राइट। दो पद चाप ध्वनि ही सुनाते हैं। देवी के दो पैरों का यही रहस्य है। यह था देवी सूक्त का मर्म। पौराणिक पंडितों ने दुर्गा "सप्तशती" लिखकर इस राष्ट्रीय संघटन शक्ति के स्थान पर नव दुर्गा की ऐसी विचित्र कल्पना कर डाली जिसका वास्तविक तथ्यसे दूर तक का सम्बन्ध नहीं दीखता।

'दुर्गा सप्तशती' का पाठ पारायण व्रत कथा तक सीमित रह गया। जनता के समक्ष देवी का रहस्योद्घाटन किसी पंडित ने नहीं किया। स्पष्टीकरणार्थ कुछ वेद मन्त्र नीचे दिये जाते हैं—

श्लोक १– अहं रुद्रेभिः वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुतविश्वदेवैः
० अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा॥

अर्थ– (अहम्) मै (रुद्रेभिः वसुभिः चरामि) रुद्रों और वसुओं के साथ विचरती हूं। (अहम्) मैं (आदित्यैरुतविश्वदेवैः) आदित्यों और सभी दिव्य शक्तियों के साथ रहती हूं। (अहम्) मैं (मित्रावरुणोभा) मित्र और वरुण दोनों को (बिभर्मि) धारण करती हूं। (अहम्) (इन्द्राग्नी) मैं इन्द्र और अग्नि को (अहम्) मै ही (अश्विनोभा) दोनों अश्विननक्षत्रों को धारण करती हूं।

(ऋग्वेद मंडल दस सूक्त १२५ मन्त्र ६)

श्लोक २–

अहं राष्ट्री संगमनीवसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्राम्–भूर्यावेशयन्तीम्।

अर्थ–(अहम्) मै (वसूनां संगमनी) वसुओं का, धनों का

(शेष पृष्ठ ७ पर)

फीजी की मूल समस्या और उसका समाधान

लेखक डा० ब्रह्म मित्र अवस्थी, प्रधान सम्पादक स्वामी केशवानन्द योग पत्रिका

[गतांक से आगे]

वे सज्जन काई बीती जातीय भाइयों के मुखिया एवं एक बड़े भूस्वामी थे। क्योंकि उसी सप्ताह फीजी स्वाधीनता की दसवी वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सुवा में मुख्य कार्यक्रम प्रारम्भ होना था, अतः वे सज्जन अपने निवास से पन्द्रह दिनों के लिए सुवा आ चुके थे। उनके अभाव मे उनके परिवार के किसी अन्य व्यक्ति से मेरी भेंट कराई गयी। मेरे आतिथेय ने जब मेरा परिचय देते हुए उन सज्जन को बताया कि मै भारत का एक विद्वान प्रोफेसर हूं तो उस व्यक्ति के मुँह से अनायास एक वाक्य फूट पड़ा 'ओ! वेरी डेन्जर्स कन्ट्री' अर्थात् वह (भारत) बहुत भयानक देश है। मैने इस अनायास निकले हुए वाक्य का जो समाधान किया और बाद मे जो मेरी बात-चीत हुई, वह यहां प्रासंगिक है किन्तु उस काई बीती के मुख से अनायास निकला हुआ यह वाक्य और उसके पीछे कारण विचारणीय है। उन लोगो की इस भावना के पीछे मुख्य कारण ईसाई पादरियो का प्रचार है, और इसे पुष्टि मिली, भारतीय मुख्यतः गुजराती व्यापारी भाइयो की शोषण प्रवृत्ति से। यद्यपि व्यापारिक प्रतिष्ठानो कृषि फार्मो अथवा जीवन के अन्य क्षेत्रों मे दोनो ही जातियो के लोग साथ मिलकर रहते और कार्य करते है। सरकारी विद्यालयो मे ही नहीं आर्य समाज के द्वारा अथवा भारतीय मूल के लोगों की अन्य सामाजिक संस्थानों द्वारा संचालित विद्यालयो म भी दोनो जाति के लोगो के बालक बड़े प्रेम के साथ-साथ अध्ययन करते है उनका ध्यान केवल शिक्षा के स्तर पर ही रहता है। दोनो ही जाति के लोग अंग्रेजी हिन्दी और काईबीती भाषाएं समान रूप से पढ़ते और समझते है, यह दूसरी बात है कि भारतीय मूल के लोग हिन्दी भाषा का और वे लोग काईबीती भाषा का व्यवहार निजी जीवन मे मुख्य रूप से करते है।

इस प्रकार सामाजिक जीवन में अथवा कार्यक्षेत्र मे भारतीय मूल के लोगो और फीजी के प्राचीन निवासी काईबीती लोगों के बीच अब तक कोई प्रतिद्वन्दिता नही रही है। कृषि और व्यापार पर यदि भारतीय मूल के लोगो का एकाधिकार रहा है तो पुलिस और सेना की छोटी और बड़ी सभी प्रकार की नौकरियो पर तथा भू सम्पत्ति पर मूलतः काई बीती लोगो का एकाधिकार है। शिक्षा क्षेत्र में भी भारतीय मूल के लोग ही प्रभावी है तकनीकी क्षेत्र में न्यूजीलेंड अथवा आस्ट्रेलिया से आये लोग। इस प्रकार इन लोगो में परस्पर प्रतिद्वन्दिता की स्थिति प्राय. नहीं है, दोनों ही जातियों का कार्य क्षेत्र बंटा हुआ है। इनके बीच वैमनस्य के दो ही कारण प्रतीत हुए एक ईसाई मिशनरियों द्वारा दोनों जातियो के बीच वैमनस्य के बीज बोना, और भारतीय मूल के व्यापारियो द्वारा अधिक लाभ लेने की भावना से लूट की प्रवृत्ति। यही मूल कारण है जिसके फलस्वरूप विगत कई शताब्दियों से दोनों जाति के लोगों के बीच अलगाव की भावना निरन्तर पनपती चली आ रही है। और इसी का परिणाम है कि इस वर्ष मई के प्रथम सप्ताह मे सम्पन्न निर्वाचन के बाद जब बावन्द्रा की सरकार बनी तो काईबीती लोगो के अन्तर्गत चिंता की आग सुलगने लगी। और क्योंकि पुलिस सहित सम्पूर्ण सैन्यबल पर उनका ही अधिकार है इसलिए सेना के बल पर सत्ता को अपने अधिकार में ले लेने में किसी प्रकार की भी असुविधा उन्हें नहीं हुई।

वैधानिक निर्वाचित सरकार के अकस्मात् अपदस्थ कर दिये जाने पर कई प्रश्न एक साथ उपस्थित होते हैं :—

१— आज के जागृति के युग में भी जनमत की उपेक्षा और उसका तिरस्कार करके केवल शारीरिक शक्ति के बल पर क्या सत्ता पर अधिकार करना उचित है।

२—क्या सेना के बल पर ग्रहण की गयी, राजसत्ता देशवासियों के लिए सम्पूर्ण रूप से सुखशान्ति दे सकती है।

३—क्या किसी भी जाति को केवल जाति विशेष का होने के कारण ही किसी देश विशेष की राजसत्ता को अपने हाथ में रखने का औचित्य है ?

४—क्या इस प्रकार की जातीय संकीर्णता को केन्द्र में रखकर आज अपना भी कल्याण किया जा सकता है, जबकि सम्पूर्ण विश्व विज्ञान के प्रसार के कारण छोटा होता जा रहा है। बड़े-बड़े सम्पन्न देश भी एक अथवा दूसरे प्रसंग में, दूसरों पर आश्रित होते जा रहे हैं।

५—जिस फीजी की वर्तमान समृद्धि के लिए भारतीय मूल के वहां के निवासियों ने अपना खून पसीना एक किया है और उस देश के स्थायी नागरिक है उन्हें द्वितीय श्रेणी का नागरिक बना देना मनुष्यता की सीमा मे आ सकेगा ? अथवा क्या इससे उस देश की समृद्धि बढ़ सकेगी। अथवा क्या इस स्थिति में सुलगने वाली विद्वेषाग्नि काईबीती लोगो का भी कल्याण कर सकेगी। उपर्युक्त भयानक समस्या के समाधान के लिए तात्कालिक और दीर्घकालीन उपाय करने की आवश्यकता है।

इन उपायों मे कुछ उपाय निम्नलिखित हो सकते हैं :—

१—तत्काल प्रजातन्त्र के प्रेमी सभी देश संयुक्त रूप से, अधिक अच्छा हो राष्ट्रसंघ के तत्वाधान मे, ब्रिटेन की महारानी, जो फीजी देश की वैधानिक शासनाध्यक्ष हैं, पर तथा फीजी के सैनिक शासकों पर सब प्रकार से दबाव डालकर वैधानिक रूप से निर्वाचित सरकार को प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न करें, यह दायित्व पड़ोसी के नाते न्यूजीलेण्ड एवं आस्ट्रेलिया की सरकार का है एवं ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्धों के कारणों से भारत सरकार का भी हैं।

२—फीजी के सेना और पुलिस में भारतीय लोगों को भी उनकी संख्या के अनुपात से प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए, और भारतीय मूल के लोगों को इस क्षेत्र में भी पूरी रुचि लेनी चाहिए जिससे भविष्य में पुनः इस प्रकार की घटना की पुनरावृत्ति न हो सके।

३—बहुमत के द्वारा निर्वाचित सरकार को चाहिए कि वह सभी फीजी नागरिको को समान रूप से संरक्षण दे। यदि कोई पुराने नियम उदाहरणार्थ भू स्वामित्व सम्बन्धी नियम, जो वर्तमान में काईबीती लोगो के पक्ष मे है, समान नागरिकता के सिद्धान्त के प्रतिकूल पड़ते है, तो उनमें परिवर्तन केवल बहुमत के आधार पर नहीं बल्कि सौहार्द पूर्वक जनमत तैयार करके धीरे-धीरे करना चाहिए, तत्काल नहीं।

४—स्थाई समाधान के लिए भारत के अथवा भारतीय मूल के सांस्कृतिक मिशनरियों को आगे बढ़ाना चाहिए उन्हें अपने सेवा एवं सांस्कृतिक प्रचार के कार्य काईबीती लोगो में भी निष्ठा के साथ करने चाहिए एवं प्रेम के द्वारा उन लोगों के सन्देह को दूर करना चाहिए कि "भारतीय मूल के लोग बहुत खतरनाक हैं"। क्योंकि इस प्रकार के विद्वेष के साथ अनजाने ही भारत का नाम जुड़ा है, इसलिए भारत सरकार और भारत की सांस्कृतिक संस्थाओं का यह दायित्व है कि वे अपने कार्यकर्त्ता अपनी सेवक मंडलियां उस देश में भेजें जो इस विद्वेषमूलक भ्रम को दूर करने में सक्षम हो।

५—क्योंकि उपर्युक्त विद्वेषमूलक भ्रम को विस्तार देने में भारतीय मूल के व्यापारियो की शोषक प्रवृत्ति भी कारण है अतः उन व्यापारियों को चाहिए कि वे इस प्रवृत्ति का त्याग कर उचित अल्प लाभ के साथ व्यापार का संचालन करें।

६—निर्वाचित सरकार को चाहिए कि वह जहां भू स्वामित्व के नियमों में संशोधन पर विचार कर रही है वहां व्यापारिक वर्ग की शोषण प्रवृत्ति को समाप्त करने के लिए भी ध्यान दे और ऐसे नियम बनाये जिससे व्यापार के माध्यम से किया जाने वाला शोषण समाप्त किया जा सके।

इन बहुमुखी तात्कालिक अथवा दीर्घकालीन उपायों को अपना कर दोनो जातियो के लोगों के बीच प्रेम और विश्वास की जड़ जमाना ही फीजी की समस्या का स्थाई समाधान है।

(समाप्त)

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु आवश्यक सूचना

समस्त आर्यसमाजों, जिला उपसभाओं एवं शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० की शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं कवि सम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमें विभिन्न वाद-विवाद प्रतियोगिताएं तथा सम्मेलनों के अंश सम्मिलित हैं तथा विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की वी० डी० ओ० (फिल्म) कैसेट प्रतिनिधि सभा के कार्यालय ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ में बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

जो सज्जन अथवा संस्थाएं इन्हें प्राप्त करना चाहती हैं वह श्री विश्वम्भर दयाल गुप्ता, व्यवस्थापक 'आर्यमित्र', ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आर्डर देकर प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसेट १०००) में। मूल्य ३०) रु० प्रति कैसेट के हिसाब से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिनकी संख्या ३० है तथा कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) ५) रु० प्रति फोटो के हिसाब से उपलब्ध है।

शताब्दी पर पधारे हुए संन्यासियों, विद्वानों एवं उपदेशकों, प्रचारकों के महत्वपूर्ण उपदेश तथा कवि सम्मेलन (सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कैसेट मूल्य १००) रु० में उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया एवं पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें भी १७, १८, १९, २० अक्टूबर के एक-एक दिन के अलग से रिकार्डिंग कैसेट अलग से मिल सकते हैं। बड़ी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध की जा सकती है।

आर्यसमाज के कार्यक्रम तथा सभा की शताब्दी-स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओं को ऐसे चित्र एवं कैसेट प्रचार कार्य में बहुत सहायक होंगे।

अतः कृपालु पाठक शीघ्र आर्डर भेजकर लाभ उठावें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

'आर्यमित्र' के प्रबन्ध सम्पादक

'आर्यमित्र' परिवार को यह सूचित करते हुए हमें बड़ा हर्ष है कि 'आर्यमित्र' के प्रबन्ध सम्पादक पद पर श्री इन्द्रदेव पाठक एम० ए० (गोल्डमेडलिस्ट), साहित्याचार्य, साहित्यरत्न, दर्शनवाचस्पति की सेवाएं उपलब्ध हो गई हैं।

आप वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से संस्कृत साहित्य में आचार्य तथा लखनऊ विश्वविद्यालय से एम०ए० हैं। गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक हैं एवं गवर्नमेन्ट कालेज में कुशल प्राध्यापक (प्रवक्ता) भी रहे हैं।

हमें आशा है, आपके प्रबन्ध सम्पादन में "आर्यमित्र" सतत प्रगतिशील रहेगा।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री सभा

विद्वज्जनों से विनम्र निवेदन—

रचनाएं भेजने से पूर्व इन नियमों का पालन अवश्य करें

१—रचनाएं कोरे कागज पर एक चौथाई हाशिया छोड़कर एक ओर ही लिखी जाएं। पोस्टकार्डों, अन्तर्देशीय पत्रों और पुराने कागजों पर नहीं।

२—पर्वों या अन्य सामयिक विषयों सम्बन्धी रचनाएं, इस प्रकार भेजें कि कम से कम एक मास पूर्व हमें मिल जायें। क्योंकि दो सप्ताह पूर्व प्रकाशनार्थ सामग्री प्रेस में भेज दी जाती है और विलम्ब से प्राप्त रचनाओं को छापना सम्भव नहीं हो पाता।

३-जिन रचनाओं को आर्यमित्र में छापने के लिए भेजें, उन्हें अन्यत्र न भेजें। अन्यत्र प्रकाशित हो जाने पर जब वे आर्यमित्र में भी छाप दी जाती हैं, तो 'उनसे साभार' शब्दों का प्रयोग न किए जाने से पाठकों को साहित्यिक चोरी का आभास होता है जबकि वास्तविकता कुछ और होती है।

४—स्वीकृत रचनाओं की स्वीकृति प्राप्ति के १५ दिनों के भीतर भेज दी जाती है और उनका प्रकाशन सुविधानुसार किया जाता है अतएव उनके प्रकाशन की प्रतीक्षा करें। अस्वीकृत रचनाएं डाक टिकट लगा लिफाफा प्राप्त होने पर ही लौटाना सम्भव होगा।

—सम्पादक मण्डल

"वेद और पुराण"

(शेष पृष्ठ ४ आगे)

वसुदेवों का, देश के निवासियों का संगठन करने वाले (राष्ट्री) राष्ट्र की शक्ति हूं।

(यज्ञियानाम्) यज्ञ योग्य भावों की, यज्ञिय पदार्थों की तथा व्यक्तियों की (प्रथमा) प्रमुख (चिकितुषी) विचार करने वाली हूं। (तांमा) उस मुझको (भूरिस्थात्राम्) बहुत स्थिर (भूर्या-वेशयन्ती) बहुत शक्तिशाली एवं अनेकों में प्रविष्ट राष्ट्र शक्ति को (देवाः) दिव्य शक्तियां तथा ज्ञानी जन [प्रसत्रा] अनेक कार्यों तथा स्थानों मे (व्यदधुः) धारण कर रहे है।

(ऋग्वेद मं० १० सू० १२५ मन्त्र ३)

[३] अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा ३।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ॥
[ऋग्वेद मंडल १० सूक्त १२५ मन्त्र ६]

अर्थ—

[अहम्] मैं [रुद्राय] क्षात्र धर्म युक्त तेजस्वी जन के लिए [धनुरातनोमि] धनुष का विस्तार करती हूं। [ब्रह्मद्विषे] ज्ञान के द्रोही [शरवे] हिंसाप्रिय शत्रु के लिए (३) आश्चर्य है। [हन्तवे] मारने के लिए [अहम्] मैं [जनाय] अपने प्रिय जन के लिए [समदम्] उत्साहित [कृणोमि] करती हूं। [अहम्] मैं [द्यावापृथिवी] द्युलोक तथा पृथ्वीलोक मे [आविवेश] व्यापक हूं।

उपर्युक्त मन्त्रों पर विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि यह ऋग्वेद के दशम मंडल का १२५ वां वागाम्भृणी सूक्त राष्ट्र की संघटन शक्ति [दुर्गा] के विषय मे हो लिखा गया है। इसी के स्वरूप का काल्पनिक चित्र अष्ट भुजा दुर्गा की मूर्ति में अंकित है।

अतिशयोक्ति के अतिरिक्त वेद और पुराण मे अन्तर कर देने वाला एक अन्य कारण भी है। वेद मन्त्रो के यौगिक अर्थ रखने वाले शब्दों को पुराणों मे रूढ़ि शब्दो का रूप दिया गया। वेद के प्रत्येक शब्द की सिद्धि किसी धातु से अवश्य हो जाती है। इसी-लिये चारों वेद देश, काल, समाज विशेष के लिए नहीं लिखे गये, वे तो सार्वभौम शाश्वत और चिरन्तन है। पुराणों के आधार पर ही वेदों में देश, द्वीप, नदियों तथा राजा महाराजाओं का वर्णन बताया जाता है किन्तु यह सर्वथा भ्रान्तिपूर्ण है। वेदो का प्रत्येक यौगिक विशेषणा-त्मक शब्द पुराण काल तक रूढ़ि बन गया। वही रूढ़ि शब्द इन ग्रन्थों में भौगोलिक ऐतिहासिक (देश, द्वीप, नदी पर्वत इतिहासादि) रूप मे प्रयुक्त हुए। पुराणों के अध्ययन से विश्व के इतिहास और भूगोल को समझने में सहायता मिल सकती है। किन्तु वेद तो सार्वभौम सार्व-कालिक तथा देश काल निरपेक्ष विषयों के ही प्रकाशक हैं। पुराण-मारव्यानम् के आधार पर पुराण देश, काल समाज विशेष में घटित व्याख्यानों के संकलन हैं। पुराण वाक्य वेद की वास्तविक महत्ता के परिचायक अवश्य हैं किन्तु वेद वाक्य तुल्य निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण नहीं हैं। वेदार्थ परिज्ञान एवं व्याख्यान के लिए पुराणों का स्वाध्याय आवश्यक है जैसा कि महर्षि व्यास ने स्पष्ट स्वीकार किया है।

"इतिहास पुराणाभ्यां वेदंसमुपबृंहयेत्।
बिभेत्यल्पश्रुतात् वेदो मामयं प्रहरिष्यति ॥"

अर्थात् इतिहास और पुराणों के स्वाध्याय से वेदार्थ की व्याख्या करो" किन्तु उन्हें भय है कि अल्प श्रुत व्यक्ति अज्ञानता वश पुराणों के आधार पर वेदों का अनर्गल अर्थ करके वैदिक ज्ञान पर प्रहार न कर दें। अतः वेद और पुराणों के समय, विषय, भाषा शैली आदि में पर्याप्त अन्तर देखते हुए विशेष ज्ञानवान् ही इतिहास और पुराण से वेद स्वाध्याय में लाभ उठा सकता है। वेद परमपिता परमात्मा का निश्वास है अपौरुषेय हैं। "यस्य निःश्वसितं वेदाः।" पुराण मानव प्रणीत होने से ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से उपा-देय हैं किन्तु परतः प्रमाण हैं वेदानुकूल रहने तक ही इनकी प्रामा-णिकता है।

सूचना

पूर्वांचल, पश्चिमांचल आदि सभी संयोजकों से निवेदन है कि संक्षेप में ८५-८६ ई० की सम्मिलित अपने कार्य की रिपोर्ट ३०-९-८७ ई० तक अवश्य अधिष्ठाता उपदेश विभाग के नाम सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें जिससे छपने वाली वार्षिक रिपोर्टमें उसे प्रकाशित कराया जा सके। सभा मन्त्री

सम्पादकीय

[शेष पृष्ठ २ से आगे]

आज स्वर्ण मन्दिर की स्थिति पूर्व जैसी ही फिर हो गयी है। उग्र-वादियों की वह अजेय शरण स्थली या दुर्ग बन गया है। पहले भी लिख चुका हूं कि स्वर्ण मन्दिर हमारे देश जाति धर्म के रक्षकों का एक केन्द्र था वह न केवल सिख का था न केवल हिन्दू का था। वह हर देश जाति धर्म के रक्षक का था वहां से देश जाति धर्म की रक्षा के संकल्प लिये जाते थे। सभी श्रद्धा से उस मन्दिर में जाते थे और नत मस्तक होते थे अपने पूर्वजों के कृतित्व पर। आज से दस पन्द्रह साल पहले तक सिख अपने को अलग नहीं मानता था। वह अपने को विशुद्ध भारतीय आर्य [हिन्दू] ही मानता था। परन्तु आज वह अपने को अलग-स्वतंत्र पहचान वाला बन रहा है। कोई-कोई तो भारत को अपना देश ही मानने से इन्कार कर रहा है इसी-लिए वह हर संभव देश को तबाह करने में लग रहा है।

अतः भारत सरकार का धर्म है कि वह अविलम्ब सैन्य-कार्यवाही करके स्वर्ण मन्दिर को दुष्ट दानवों से मुक्त कराये और फिर कभी भी अराजक तत्व उसमें प्रश्रय न पा सकें ऐसी व्यवस्था करायें। यह अच्छा ही हुआ कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति ने ग्रन्थियों के आह्वान को अनधिकार चेष्टा कहकर उसकी-निन्दा की है। सम्पूर्ण सिखों का धर्म है कि वे खुले दिल से गुरुओं के संदेश का स्मरण करके उग्रवादियों विघटन कारियों के मन्तव्यों के विरुद्ध एक आवाज से घोषणा करें कि हम सब देशवासी एक हैं। भारत हमारा देश है। इसकी रक्षा मानव जाति की रक्षा भारतीय संस्कृति शिक्षा और सभ्यता की पूर्ण रक्षा हमारा धर्म है। हम विघटनकारियों का नेतृत्व कभी नहीं स्वीकार सकते। इस घोषणा के साथ ही वे उग्रवादियों को कहीं प्रश्रय न दें उनके हौसले पस्त करके आत्म समर्पण को विवश करें।

निश्चय ही आज सम्पूर्ण देश की जनता विशेष तौर से सम्पूर्ण देश भक्त सिख भाई बहनों का-अपने पूर्वजों की मान मर्यादा की रक्षा के लिए धूर्त लम्पटों, विदेशों से संरक्षण प्राप्त आतंकवादियों से किसी भी प्रकार का समझौता न करने का संकल्प उनकी गलत कारगुजारियों पर अंकुश लगायेगा।

साथ ही शासन पक्ष और प्रतिपक्ष सभी एक जुट होकर बिना निज या पार्टी या वोट हित का ख्याल किये देश की संप्रभुता की रक्षा के लिए सभी अराजक तत्वों के समूल नाश का संकल्प लें। सम्पूर्ण शक्ति से ऐसे तत्वों का मुकाबला करके उन्हें पराजत करके देश में सुख शांति सहिष्णुता एकता का प्रसार करके राष्ट्र को सुदृढ़ बनाये।

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

पुस्तक-परिचय

राष्ट्रीयता के सजग प्रहरी—भारतीयता के प्रबल समर्थक, विचारशील लेखक एव दिशा-बोधक—श्री बिशन स्वरूप गोयल

आर्यमित्र के पाठक एवं सामान्य जन श्री बिशन स्वरूप जी—गोयल से परिचित है, उनके लेख राष्ट्रीयता का उचित बोध कराते हैं और समयानुकूल देशवासियो के लिये तर्क संगत मार्ग प्रदर्शक होते हैं, आर्य मित्र में तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओ में उनके लेख प्रकाशित हुआ करते हैं, वैदिक आदर्शों पर आधारित जिस संस्कृति ने इस देश में जन्म लिया—विकसित हुई और जिसे समूल नष्ट करने का प्रयास विदेशी अंग्रेजों से लेकर योरूपीय विचारो के समर्थक वर्तमान शासक नेहरू से लेकर राजीव तक—किया जा रहा है उस अकल्याणमय ी भावना के प्रति गोयलजी भारतीयों को सावधान करते है तथा स्वतन्त्रता के बाद भारतीय शासको ने जो अज्ञान नीतियो को अपनाया उससे देश में जो आतंकवाद और विघटनवाद फैला उसके प्रति जनता को समझाने का प्रयास करते हैं तथा सच्ची भारतीयता क्या है उसका दिग्दर्शन कराते हैं। सम्प्रति उनकी दो पुस्तको का परिचय यहाँ प्रस्तुत है :—

चेतावनी

सो पृष्ठों की पुस्तक है—मूल्य दस रु० । इसमें १९४७ मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से यहां के सत्ताधारी नेता—नेहरू स लेकर राजीव तक—जो गलत नीतियां निर्धारित की गयी हैं उसका विस्तृत वर्णन है तथा युवा शक्ति को अपनी शक्ति किधर लगाना चाहिये उसका परामर्श है। इन विषयों पर प्रकाश डाला गया है, देश के विभाजन के बाद—महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू की नीतियाँ राजीव के नाम खुला पत्र हिन्दू राष्ट्र ही धर्म-निरपेक्ष राज्य हो सकता है, वर्तमान प्रधान मन्त्री राजीव देश को दासता की जंजीरों में जकड़ देंगे यदि अभी सावधान न हुए—ईसाइयों और मुसलमानों का षड्यन्त्र, देश की पतित अवस्था का चित्रण तथा युवा शक्ति को परामर्श, वर्णित विषयों से स्पष्ट है विचार दिशा—लेखक ने ओजस्विता के साथ अपने पक्ष को प्रस्तुत किया है।

क्या हमने कभी सोचा है

सौ पृष्ठों की पुस्तक है—मूल्य है दस रु०। वर्णित विषय है—धर्म मजहब मे अन्तर—ईश्वर और भगवान में क्या अन्तर है—नेता और शासक में क्या अन्तर है—न्याय पालिका और कार्य पालिका की चक्की में पिसते संविधान के पुनः—परिवर्तन पर विचार तथा हिन्दुओं चेतो विषयों से ही विचार का आभास होता है—लेखक ने तर्क पूर्ण रीति से देश की वर्तमान दशा पर विचार किया है, आज के आतंकवाद और विघटनवाद के कारणों पर प्रकाश डाला है तथा सुधार हो इस पर तर्क पूर्ण रूप से विचार प्रस्तुत है।

श्री गोयल जी देश की वर्तमान स्थिति पर दुःखी हैं—हिन्दुओं के पतन के मूल कारण पर विचार करते हैं तथा उसी भावना और मनोबल से राष्ट्र को जगाना चाहते हैं जिस ओज एवं प्रतिमा से स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द जी ने देश को जगाया था। श्री बलराज जी मधोक की विचार धारा का समर्थन है और हिन्दू राष्ट्र जिसकी वर्तमान में छत्रपति शिवाजी ने नींव रखी थी उसके समर्थक हैं। मुसलमान भी उस राष्ट्र मे सुखी होगे। कांग्रेसी विचार धारा ने देश को दुर्बल किया है—खोखला किया है। सम्प्रदायिक दंगे कराये हैं और देश में विभाजन से लेकर आज तक हिन्दू पीड़ा तथा यातनाओं को झेल रहा है। दुर्बल हिन्दू कैसे शक्तिशाली हो, भारत-कैसे भारत बने—पर विचार किया गया है।

श्री गोयल जी ओजस्वी भाषा में प्रबल विचारों को देने में सक्षम हैं, भारत को युवा शक्ति उससे लाभान्वित होंगी—गोयल जी की रचनायें पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं—लेखक बधाई के पात्र हैं। पुस्तकें इस पते पर प्राप्त की जा सकती हैं:—श्री बिशन स्वरूप जी गोयल—वैचारिक विकल्प प्रकाशन—३३१४—बैंक—स्ट्रीट करोल—बाग दिल्ली—११०००५।

—प्रो० रमेश चन्द्र एम०

सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ में आर्य समाज

सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ के लोहाघाट में ८ व ९ अगस्त १९८७ ई० को पं० जोवानन्द शर्मा ने वैदिक धर्म का प्रचार किया था। इस जनपद में ३१ अक्टूबर' १९८२ ई० को उत्तराखण्ड केसरी बांकेलाल जी कंसल के संयोजन में प्रथम आर्य समाज की स्थापना छनीलाल जी खण्डेलवाल के घर पर की गई थी। घर-घर चलने बाला साप्ताहिक सत्संग १८ दिसम्बर' १९८३ तक नियमित, फिर यदा-कदा चलता हुआ ३० सितम्बर' १९८४ को विराम पा गया। ६ जुलाई' १९८६ से १२ जुलाई' १९८७ तक साप्ताहिक सत्संगों के साथ पुंसवन संस्कार ३, सीमन्तोन्नयन ३, नामकरण ६, उपनयन—वेदारम्भ २, विवाह ४ और संन्यास १ सम्पन्न कराये गये। आर्यमित्र साप्ताहिक के ८ ग्राहक बनाने के साथ प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को पुरस्कार सहित मेधावी के प्रमाण पत्र दिये गये। हाई स्कूल व इन्टर परीक्षा उत्तर प्रदेश—१९८७ ई० की श्रेष्ठता सूची में आये सभी छात्र-छात्राओं को पुरस्कार व मेधावी के प्रमाण-पत्र भेजे गये।

वैचारिक क्रांति हेतु २ वेद भाष्य सैट, १६४ सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ७२ पंचयज्ञ प्रकाश व अन्य साहित्य प्रसारित किये गये। आर्य समाज मन्दिर के अभाव में प्रचार कार्य में गति नहीं आ पा रही है। सम्प्रति यहाँ फच्चाहारी आश्रम ही आर्य समाज मन्दिर के रूप में है। मन्दिर निर्माण हेतु बैंक ड्राफ्ट या चैक ["आर्य समाज—पिथौरागढ़" के नाम] भेजकर दानदाता पुण्य कमा सकते हैं।

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती [फच्चाहारी]
व्यवस्थापक आर्य समाज पिथौरागढ़ उ० प्र०

मैजिक लैंटर्न से वेद प्रचार

आर्य समाज के कर्मठ, उत्साही नवयुवक श्री धन कुमार आर्य वि० वा० ने मैजिक लंटर्न द्वारा आर्य समाज का प्रचार करना शुरू कर दिया है। उनका पता पं० धन कुमार आर्य ग्राम पो० निरपुड़ा जिला मेरठ है। विशेषता इस प्रकार है।

४—भारतवर्ष की भक्त, वीर, और विदुषी महिलाओं के जीवन चरित्र।

५—भारत के बलिदानी, सेवक एवं वीर बच्चों के चित्र पर्दे पर दिखाकर बच्चों को शिक्षा देना।

६—भारतवर्ष के क्रान्तिकारियों की प्रेरणा दायक झांकी प्रस्तुत की जाती है।

साथ ही भजनों के द्वारा उपदेश भी किया जाता है। आर्य जगत लाभ उठावे।

मेरठ समाचार

दिनांक ९-८-८७ को प्रातः ७.३० बजे से ९.३० बजे तक आर्य समाज मेरठ शहर में श्रावणी का पर्व मनाया गया। आज यजमान थे श्री राधेलाल जी सर्राफ श्री ओंप्रकाश जी जौहरी, श्री अशोक कुमार जी एवं श्री भरतसिंह जी। यज्ञ में ही उपस्थित समस्त भाइयों ने नये यज्ञोपवीत धारण किये। सामूहिक वेदमन्त्रों के पाठ से सबने देश, धर्म और जाति की रक्षा का व्रत लिया तथा प्राणों की आहुति देकर भी देश और धर्म की रक्षा का प्रण किया।

देश और धर्म पर बलिदान होने वाले वीरों का पवित्र स्मरण किया गया तथा उनके पद चिन्हों पर चलने का संकल्प लिया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने लगभग ४ महीनों से साम्प्रदायिक दंगो और कर्फ्यू के पश्चात् आर्य समाज मन्दिर में आने वाले समस्त बन्धुओं का स्वागत किया। उन्होंने अपने प्रवचन मे कहा कि संसार के आदि से ही मानव जाति वेदों का अध्ययन कर उसको जीवन के हर क्षेत्र में उतारती रही। परिणाम स्वरूप संसार में सुख शान्ति और आनन्द रहा। समय आया कि हम लोग वेद के ज्ञान से दूर हुए और फिर संसार में अन्धविश्वास भाग्यवाद, जातिवाद और वर्गवाद फैला। लोग साम्प्रदायिकता की आग में जलने लगे। भोगवाद सर्वोपरि हो गया। आज उसी का ही परिणाम हम लोग पंजाब में आतंकवाद और उग्रवाद के रूप मे और मेरठ में साम्प्रदायिक दंगे के रूप में भोग रहे हैं। विदेशी शक्तियां भारत को कमजोर करने के लिए ये खूनी नाटक करवा रही हैं। अब समय आ गया है कि हम इन षड्यन्त्रों को बेनकाब करें और परस्पर मिल कर रहें ताकि मेरठ की जितनी आर्थिक और विश्वास की हानि हुई है उसको पूरा कर दें।

अन्त में श्री इन्द्रराज जी ने सुब्रह्मण्यम स्वामी के आमरण अनशन की तीखी आलोचना की जो कि अपनी असफल राजनीति को मेरठ के नागरिकों पर बरबस थोपने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसे नेताओं का बहिष्कार होना चाहिए ताकि मेरठ वासी मिलजुल कर प्रसन्नता से रह सकें।

अन्त में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ :–

प्रस्ताव

यह सभा दिल्ली में सुब्रह्मण्यम स्वामी द्वारा केवल हाशिमपुरा मेरठ की जांच को लेकर आमरण अनशन की घोर निन्दा करती है इन दलबदलने वाले नेताओं के द्वारा अपनी सस्ती राजनीति को सफल बनाने के लिए इस प्रकार के प्रयास निन्दनीय हैं। मेरठ के जागरुक हिन्दू और मुस्लिम भाई अपना भला बुरा स्वयं जानते हैं। इस प्रकार के नेताओं ने ही अपनी सस्ती राजनीति को मेरठ पर थोपने के लिए ही मेरठ की दुर्दशा की है।

सरकार की ओर से दंगा जांच आयोग नियुक्त किया गया है जिसकी रिपोर्ट शीघ्र प्रकाशित होगी। इसलिए इस प्रकार के नागरिकों को गुमराह करने वाले अनशनों का कोई महत्व नहीं है। इससे स्पष्ट है कि ये लोग इस अनशन के द्वारा किन्हीं निहित स्वार्थों की पूर्ति करना चाहते हैं।

यह सभा सरकार से माँग करती है कि इस प्रकार के अनशनों को राजनैतिक स्टन्ट मानकर कोई महत्व न दिया जाय इस सभा का यह भी मत है कि सरकार द्वारा इन चार महीनों मे हुए सम्पूर्ण दंगे की जाँच करवाई जाय जिसमें पिलोखड़ी, हाशिमपुरा, मलियाना और गुदड़ी आदि सब क्षेत्र आ जाते हैं। उस जांच से दंगा करवाने वाले बेनकाब होंगे। यह सभा मांग करती है कि ऐसे अपराधियों को कठोर दण्ड दिया जाये ताकि भविष्य में कभी साम्प्रदायिक दंगा न हो।

मनमोहन तिवारी, सभा मन्त्री

आभार सहित–

मेरे प्रिय साढू भाई श्री रामनारायण मिश्र एवं उनकी सुपुत्री सुश्री शोभा मिश्रा के इलाहाबाद में आकस्मिक निधन हो जाने पर मुझे, मेरे अनेकों शुभचिंतकों तथा इष्ट मित्रों ने शोक संवेदनायें भेजी हैं।

मै उन सबके प्रति अपना हृदय से आभार प्रकट करता हूं–

—मनमोहन तिवारी

सामवेद पारायण यज्ञ पर वर्षा

ग्राम-सुनहड़ा, जनपद-मेरठ मे सामवेद पारायण यज्ञ २६-८-८७ से २९-८-८७ तक चला। इस यज्ञ के ब्रह्मा थे प्रभात आश्रम के आचार्य योगिराज स्वामी विवेकानन्दजी महाराज तथा इसी गुरुकुल के ब्रह्मचारी वेदपाठी थे। यजमान श्री सूरत सिंह जी को बीसियों दिन पूर्व घोषणा थी कि पूज्य श्री स्वामी जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ होगा और सुप्रतीक्षित वृष्टि भी होगी। अत्यन्त महद् सुखद आश्चर्य के साथ जनता ने देखा कि यज्ञ प्रारम्भ होने के पश्चात् दूसरे दिन २७ को रात्रि दस बजे वृष्टि प्रारम्भ हुई और २८ को प्रातः २॥ बजे, पुनः ८ बजे दिन में भी भारी वर्षा हुई। चतुर्दिक प्रसन्नता का वातावरण छा गया एवं जनता के हृदय में श्रद्धा एवं उत्साह की तरंगें उठने लगी इसे दैवयोग कहें या संयोग, उसी दिन दूर-२ तक अन्य स्थानों पर भी भारी वृष्टि हुई। लोगों को शान्ति मिली और यजमान की अभिलाषा पूर्ण हुई।

आर्य समाज श्रृंगार नगर मे हिन्दी दिवस

दिनांक १३-९-८७ को आर्य समाज श्रृंगार नगर लखनऊ के भव्य सभागार में हिन्दी दिवस समारोह सम्पन्न हुआ। श्री अर्जुन देव महाना श्री कृष्ण बलदेव महाना आचार्य वेदव्रत अवस्थी ने हिन्दी की महत्तीयता पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी को एकता का सूत्र बताया। उपस्थित जन समूह ने हिन्दी को अपने जीवन में सर्वात्मना अपनाकर उसके राष्ट्र भाषा पद पर सही रूप में आसीन कराने का संकल्प लिया।

ऋष्यंक विशेषांक

आर्यमित्र का १८-१०-८७ का अङ्क 'ऋष्यंक' विशेषांक के रूप में ऋषि निर्वाण के पावन पर्व पर प्रकाशित किया जा रहा है। **५२ पृष्ठ का यह विशेषांक सीमित संख्या में प्रकाशित होगा।** अतएव अतिरिक्त प्रतियों के लिये पूर्वारक्षण आवश्यक है। इस अङ्क का मूल्य ३) रु० होगा परन्तु वार्षिक ग्राहकों को यथापूर्व एक प्रति निःशुल्क भेजी जाएगी।

विद्वानों तथा विदुषियों से विनम्र निवेदन है कि वे कृपया अपनी मौलिक रचनाएं तुरन्त प्रेषित कर दें।

३०-९-८७ के पश्चात प्राप्त रचनाएं विशेषांक मे सम्मिलित न की जा सकेंगी। —सम्पादक मण्डल

सूचना

मुझे काशी विश्वनाथ एक्सप्रेस ट्रेन के A/C I_I कोच में दिल्ली से आते हुए अलीगढ़ के पास एक पर्स मिला है जिसमें ५००) रु० रखे हुए हैं तथा २ पास भी है। पास में किन्हीं श्री आर० के० शर्मा का नाम अंकित है। सम्बन्धित सज्जन विवरण देकर उसे मुझसे प्राप्त करलें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०
५, मीराबाई म ', लखनऊ
फोन–४५९९३

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क १५अगस्त १९८७ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते है इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे है। १ जनवरी १९८६ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

५६६, ९५३, १६०७, २१४५, २४३९, ३०५०, ३७८०, ४९९३, ५००१, ५१८०, ५२६५, ५३०९, ६१९३, ६२०१, ६४९७, ६७७३, ६७८१, ६८३८, ८३८८, ८४२४, ८६४०, ९४९२, ९५००, ९५०१, ९५०६, ९६९९, ९९३', ९९४३, ११००५, ११०१०, ११०१३, ११२३५, ११२५२, ११६७७, ११६९३, ११७०१, ११९७१, ११९७३, ११९७८, ३२३२८, १२३४४, १२३४७, १२३६५, १२३७६, १२७०४, १२७०९, १२७१०, १२७१२, १२७१७, १२७१९, १२७२१, १२९४९, १२९५६, १३१८०, १३१८७, १३१८८, १३५०९, १३५१०, १३५११, १३५३०, १३५३१, १३५४४, १३५५६, १३५५७, १३५६३, १३५६५, १३५७०, १३५७२, १३५७४, १३५७६, १३५८७, १३९४८, १३९५०, १३९५१, १३९५२, १३९५३, १३९५४, १३९५५, १३९५६, १३९५७, १३९५८, १३९५९, १३९६०, १३९६१, १३९६२, १३९६३, १३९६४, १३९६५, १३९६६, १३९६७, १३९६८, १३९६९, १३९७०, १३९७४, १३९७५, १३९७९।

विनीत—
व्यवस्थापक

(पृष्ठ ३ का शेष)

जा सकता है। मजे की बात यह है कि इन्हें देखने के लिए बाल-वृद्ध स्त्री-पुरुष स्वयमेव खिचे चले जाते हैं। जितनी प्रभावी सूचना होगी, उतनी अधिक देखने वालो की उपस्थिति होगी।

योजना का कार्यरूप—

उपरोक्त उद्देश्य प्राप्ति अर्थ योजना का प्रारूप क्या हो ? संक्षेप से मोटे रूप से मेरे निम्न सुझाव हैं।

१. यह एक महान् एवं दूर रस कार्य है। इसका कार्य क्षेत्र बड़ा विस्तृत है। इसे स्थाई रूप भी देना है। अतः इस कार्य को सब प्रादेशिक आर्य सभाएं एवं सर्वदेशिक सभा, मिलकर करें तो इसे पूरा बल मिलेगा।

२. इस विशेष कार्य के लिए अलग संस्था का निर्माण करना होगा। इसमें उच्च कोटि के मूर्धन्य आर्य विद्वान, शिक्षा शास्त्री, लेखक, कवि, कलाकार, चित्रपट अनुभवी–विशेषज्ञ लेने होंगे।

३. धन, अनुमानतः इस कार्य के लिए २०-२५ लाख की राशी तो होनी ही चाहिए। इसके लिए सब सभाएं एक-एक लाख रुपया दें। ताकि कार्य शीघ्रतिशीघ्र प्रारम्भ किया जा सके। साथ ही इस नई संस्था की ओर से २०/- ५०/- और १००/ रु० की रसीदें छाप कर सब सभाओं एव आर्य सज्जनो को दी जावें। ताकि धन में भी कमी न आने पाये। इस कार्य में हमारी केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर से पूरी शक्ति के साथ हाथ बटाएगी। एक लाख तो कर ही देगी।

आर्य समाज का विशेष प्रभाव, सर्व साधारण जनता पर डालने के लिए वीडियो कैसटो द्वारा भरे जाने वाले प्रोग्रामो में कुछ-कुछ समय के अन्तर पर निम्न नारे (उद्घोष) भी भरे जावें। इनका भी भारी प्रभाव पड़ेगा।

नारों नारे (उद्घोषो) की सूची:-

१. वेद ईश्वरीय ज्ञान है। आदि काल में हम आर्यो पर प्रगट हुआ था। यही कारण है कि हम आर्यो ने ही संसार भर के मनुष्यों को सभ्य बनाया। हर प्रकार का ज्ञान दिया।

२. आर्य समाज मानवता का अभिन्न अंग है, कोई अन्य मत-मतान्तर नहीं।

३. वेद-प्रचार सब आर्यो का परम धर्म है।

४. वैदिक धर्म ही सच्चा सनातन धर्म है।

५. मनु महाराज, भगवान् रामचन्द्रजी, और श्रीकृष्णचन्द्र जी आर्य थे। हिन्दु नही थे। हम सब उनकी सन्तान होने के नाते आर्य हैं।

६. आर्य संस्कृति-धर्म की रक्षा करना ही आर्य समाज का परम लक्ष्य है। अतः इसके सदस्य बनिए।

७. आर्य समाज मानवता की रक्षक संस्था है। इसके सदस्य बनिए।

८. हम आर्यों ने ही आदि मनुष्य को सभ्य बनाया था। आग जलानी सिखाई। भोजन खाना सिखाया। भाषा सिखाई। गणित विद्या एक से नौ गिनना और शून्य का महत्व सिखाया। अलजबरा, ज्योमट्री सिखाई। चिकित्सा का ज्ञान दिया।

९. हम आर्यों का आदिकाल से अविच्छिन्न चक्रवर्ती राज्य महाभारत काल तक सारे संसार पर रहा। हमें इसे फिर से प्राप्त करना है।

१०. हमारी आर्य संस्कृति की आयु करीब २ अरब वर्ष है 'जबकि मुसलमानो की करीब १४००, ईसाइयो की करीब २००० वर्ष और यहूदियों की ४-५ हजार वर्ष है।

११. संस्कृत भाषा संसार भर की भाषाओं की जननी है। इसका आदि नाम देवभाषा है कारण कि यह ईश्वर प्रदत्त है। यही कारण है कि हर दृष्टि से यह सम्पूर्ण एवं सर्वथा भूल रहित है।

१२. आर्यसमाज सच्ची आर्य संस्कृति का पोषक है। इसका सच्चा ज्ञान प्रत्येक मनुष्य को कराना चाहता है। आओ इसके सहायक बनें।

१३. मानव मात्र की सेवा एवं रक्षा आर्यसमाज का परम धर्म है। इस लक्ष्य को बल देने के लिए इसके सदस्य बनिये।

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—आश्विन शुक्ल १२ सम्वत् २०४४ रविवार ४ अक्टूबर १९८७, दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८७

साबरमती का सन्त — —

धन्य है गुजरात की यह पावनभूमि जिसने १९ वीं शताब्दी में दो युगपुरुषों को जन्म दिया "ऋषिवर दयानन्द" और 'राष्ट्रपिता म० गांधी"। ऋषि ने जहां समस्त विश्व में फैले हुए पाखण्डवाद, अज्ञान और धर्म के नाम पर चलने वाली अनेकों कुरीतियों को मिटाकर सत्य सनातन वैदिक धर्म के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग किया वहीं म० गांधी ने पराधीनता की शृंखला में जकड़ी हुई मानवता को साम्राज्य वाद के क्रूर चंगुल से छुड़ाकर समता, समानता और बन्धुता के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया। इतिहास की ये दो घटनायें मानवीय सभ्यता के उत्कर्ष मे अविस्मरणीय ही नहीं अपितु स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य हैं। ज्ञान का अगाध भण्डार, वेदों का प्रकाण्ड पण्डित, दया का लहलहाता हुआ सागर, मेरा प्यारा दयानन्द, जहां विश्व के समस्त मानवों को अज्ञान की कालकोठरी से निकालकर उस परमदेव की दिव्य आभा, वैदिक ज्योति में प्रदीप्त करना चाहता था वहीं मेरे राष्ट्र का नायक सत्य और अहिंसा का पुजारी बापू—उपनिवेशवादी शोषण की शृंखला में पिसती, कसती और तड़पती हुई मानव जाति को राजनीति के एक नवीनतम प्रयोग द्वारा मुक्त कराना चाहता था। दोनों सफल हुए हैं, बहुत सफल ··लेकिन हा! दोनों का ही उत्सर्ग हुआ और वह भी अपनों के ही हाथों "जमाना बड़े गौर से सुन रहा था तुम्हीं सो गये दास्तां कहते कहते" पर कौन कहता है बापू मर गये हे शान्ति दूत! अहिंसा और करुणा की मूर्ति, युगावतार हे मौनव्रती "तुम मरे नहीं तुम मौन हुए ··· ··· ···"।

आज सारा राष्ट्र बड़ी श्रद्धा से उनका जन्म दिवस मना रहा है। वे कभी-कभी मौन हो जाया करते थे, आत्मचिन्तना किया करते थे समस्याओं के समाधान के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे। तो आइये! आज इस पावन दिवस पर हम उनके अनुगामी, स्वराज्यवासी भारतवासी अपनी आत्मा में झाक कर देखें हम पहुंच कहां रहे हैं? उन्होने कहा था—किसी राष्ट्र का मिट जाना उतना खतरनाक नहीं, जितना उसका पथभ्रष्ट होकर बिगड़ जाना। उन्होंने कहा था—आजादी मिलते ही हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा बन जायेगी। उन्होंने कहा था-राष्ट्र के पतन का मुख्य कारण शराब है। आज हम अपनी अन्तरात्मा में झांककर देखें क्या यह सब लक्ष्य हमने प्राप्त कर लिए हैं। वेद कहता है "यस्वोरनुस्वराज्यम्" "अर्चन्नु स्वराज्यम्" स्वराज्य को सु-राज्य से कल्याणकारी बना दो "अहमिन्द्रो न पराजिग्ये" तुम सामर्थ्यवान हो तुम्हें कोई पराजित नहीं कर सकता। क्या हम आर्यावर्तवासियों ने वेद की इस वाणी का अनुपालन किया है! क्या हमारे राष्ट्र नेताओं को याद है? बापू ने कहा था "हे दीन दुखी टूटी फूटी हरिजन कुटिया में बसने वाले नम्रता के सागर! आज तुम्हारा सर्वत्र यह दीनमय अस्तित्व क्यों दिखाई दे रहा है। जिस वेद ने "समानीव आकूतिः" का उद्घोष किया था वहीं आज तुम दूर-२ क्यो हो! यज्ञ की वेदी पर बैठकर पवित्र मन्त्रोच्चार के साथ आहुति डालते हुए तुम्हारे हाथों में कम्पन क्यों है?

"आज हमारा समाज विशृंखल होता जा रहा है। नई-नई समस्याएं मुंह फैलाए खड़ी हैं। हत्या और आतंकवाद ने सारे राष्ट्र की अस्मिता को चुनौती दे रखी है। समाधान ढूंढे नहीं मिल रहा है। कभी राष्ट्रपति का शासन तो कभी शासन का राष्ट्रपति ··· ··· ······ हालत यही है। आज प्यारे बापू की पद यात्रा ··· ··· ··· याद आ रही है जिसने कभी नोआखाली में उमड़ती हुई बर्बरता और दानवता को मानवता में बदल दिया था। काश! हमारे राष्ट्रनायक संगीन और शक्ति का सहारा न लेकर ममता और प्रेम से भरी हुई पदयात्राओं, शान्तियात्राओं पर निकल पड़ें। आतंक और हिंसा से भड़कते हुए शोलों को हृदय से लगाकर शीतल करें और उन्हें बताएं यह सारा देश तुम्हारा है, हम तुम्हारे हैं, क्या दक्षिण क्या उत्तर क्या पूर्व क्या पश्चिम सारा राष्ट्र एक है। इस धराधाम भारती भू पर बहने वाली हर नदी तुम्हारी गंगा है। हो सकता है इसमें कुछ आत्माहुतियां देनी पड़ें पर निष्कर्ष शुभ ही होगा क्योंकि साध्य और साधन दोनों ही पवित्र हैं।

बापू इसी पवित्रता में विश्वास रखते थे वे आत्मिक शक्ति द्वारा हृदय परिवर्तन के सदैव पक्षधर रहे। वे युगद्रष्टा एवं विचारक थे उनका विश्वास था हिंसा से हिंसा को नहीं मिटाया जा सकता है। हमें विरासत में इन दोनों महापुरुषों से वह सब कुछ मिला है जिससे हम केवल इस देश को ही नहीं विश्व को शान्ति का नीड बना सकते हैं। प्रभु हमें शक्ति दे कि हम बापू के बताए मार्ग से जो "स्वराज्य" प्राप्त हुआ है उसे ऋषि दयानन्द के बताए माग का अनुसरण करके 'सुराज्य' में बदल दें।

—मनमोहन तिवारी

आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्तर प्रदेश का

वार्षिक बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन का कार्यक्रम

आपत्ति प्राप्त करने की अन्तिम तिथि	१५—१०—८७
आपत्तियों की सुनवाई एवं समाधान	१६—१०—८७ से २०—१० ८७ तक
शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	२७—१०—८७
सभा का बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	१४ व १५ नवम्बर ८७

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दिनांक २ अगस्त १९८७ को सभा भवन लखनऊ में सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में हुई और उसमें बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

सूक्तिमाला

मानव जो सरल स्वभावी है,
पीड़ा औरो की सुनता है।
उपकार न उनका कर पाता,
तो स्वयं दुखी वह बनता है ।।

राजा दुर्बल का बल होता,
रोना बालक का बल होना।
चोरों का बल झूंठ बोलना,
तो मौन मूर्ख का बल होता ।।

घुल मिले दुग्ध से पानी को,
बस हंस पृथक कर सकता है।
दो हृदय एक हो स्नेह जुड़े,
दुर्जन दरार कर सकता है ।।

सम्पति सम तुल्य बुलबुले के,
विद्युत सी आती जाती है।
विधि दान भोग जो कर लेता,
उसकी चेरी बन जाती है ।।

गुण ग्रहण हेतु कुछ यत्न करो,
आडम्बर साथ नहीं देता।
घंटा बांधे गौ दुग्ध हीन,
कोई तो मोल नहीं लेता ।।

बार बार सहयोग मिलन से,
जन बन्धु-बन्धु बन जाता है,
क्रम मिलन छिन्न हो जाने से,
बन्धुत्व स्नेह मिट जाता है।

नित्य अकारण पर गृह जाते,
जन मूर्ख वही कहलाते है।
वे कृष्ण पक्ष के शशि समान,
लघु से लघु तर हो जाते हैं।

मूर्खत्व नित्य कष्टदायक है,
बल यौवन भी दुःख दायक है।
किन्तु अन्य के घर का निवास,
बढ़ करके पीड़ा दायक है ।।

योग्यता हीन जन मलिन हृदय,
सुनकर उपदेश न अपनाते।
मृदु मलय पवन को पाकर भी,
क्यो बांस न चन्दन बन जाते ।।

मेरे द्वेषी जन जियें सदा,
सद् बुद्धि उन्हीं से पायी है।
मेरे दोषों का घोष किया,
चेतना तभी तो आई है ।।

मानव कुलीन विद्वान धीर,
तृष्णा से बन्धन पाता है।
ज्यों सिंह बंधे जंजीरों से,
त्यों वे महान बंध जाता है ।।

पूर्व जन्म औ विगत काल के,
कर्मों का फल भाग्य शेष है।
सौभाग्य, भाग्य दुर्भाग्य सभी,
निज कर्मों के वश विशेष हैं ।।

बनजारा यह अलख जगाता

बनजारा यह अलख जगाता हाथ उठाकर चौराहे पर,
अब है काम तुम्हारा बन्धु घर मे सावधान रहने का,

शोध-शोध कर देखा कितना, परखी कितनी बार कसौटी,
रूप बदल कर वही पुरानी टोली आ सत्ता मे लौटी
वही कदम है, वही रीत है, नहीं निशाने मे कुछ अन्तर,
वही तड़प है जन मानस मे वही आग बरसाता अम्बर।

मेरे शब्द बाण की वर्षा भेद रही लाखो दिल पापी—
किन्तु मुझे अभ्यास हो गया मुंह पर साफ-साफ कहने का—
अब है काम तुम्हारा बन्धु ! घर में सावधान रहने का ।।

छीन रहे हैं शक्तिशाली अब भी दीनों की रोटी,
उड़ा रहे हैं पाखण्डी जन, न्याय सत्य की बोटी बोटी,
जन जन का मानस पीड़ित है सज्जन भटक रहे राहों मे—
घोर अभावों की दुविधा में जीवन बीत रहा आहों में।

निर्माणों का पंथ प्रशस्त कर पुनरपि नई क्रान्ति लाने मे,
लेश मात्र भी हमे नहीं गम शोणित की नदियां बहने का,
अब है काम तुम्हारा बन्धु !, घर में सावधान रहने का ।।

घर-घर लूट मची है अब तो सड़को पर कंकाल पड़े हैं,
चबा रही खेतो को बाढ़ें रक्षक-भक्षक बने खड़े हैं;
कितनी असहाय द्रोपदियाँ लज्जा लुटा रही हैं पथ मे,
और अकिंचन सीता कितनी बैठी हैं रावण के रथ में।

जनता का पुरुषार्थ जगाना होगा रौद्र स्वरूप दिखा कर,
अतिशय घोर पाप है अत्याचारों के सहने का,
अब है काम तुम्हारा बन्धु ! घर मे सावधान रहने का।

लोकतन्त्र के पदचिन्हों पर लौट रही है तानाशाही,
निर्धन की छाती पर बैठी पूंजी देवी की मनचाही,
अनाचार, अत्याचारो की नगर-नगर बारात सजी है।
और लुटेरों की निष्कंटक डगर-डगर में बीन बजी है।

किधर चला आजादी का रथ किधर भटकता है गांधी युग,
खतरा अभी बना है सर पर प्रजातन्त्र के गढ़ ढहने का,
अब है काम तुम्हारा बन्धु ! घर में सावधान रहने का ।।

—विदग्ध रस्तोगी, पुस्तक भारती (शेरकोट) बिजनौर

रवि उदय लाल हो अस्तलाल,
संध्या प्रभात अरुणाई है।
सम्पद आपद में सम रस हो,
तो यही सही तरुणाई है।

जल पत्थर तोड़े, वज्र लोह,
असमर्थ भले ये हो जायें।
दुर्जन इनसे भी बढ़कर हैं,
हर कहीं ध्वंस ये फैलायें ।।

—देवनारायण भारद्वाज एफ-४२, मानसरोवर कालोनी, अलीगढ़

सुख शांति का मूलाधार धर्म ही है धर्म के स्वरूप की पहिचान करें

धर्म का अष्टम लक्षण–विद्या

–आचार्य देवव्रत अवस्थी, वेद मन्दिर, हिन्द नगर लखनऊ।

सा विद्या या विमुक्तये। विद्या वह है जिसके द्वारा–मुक्ति [मोक्ष] का मार्ग प्रशस्त हो। ऐहिलौकिक पारलौकिक सुखों से जो परिपूर्ण करायें।

'विद्या ददाति विनयं, विनयाद्याति पात्रताम्'

विद्या से विनम्रता आती है विनम्रता से ग्राह्यता–पात्रता आती है। व्यक्ति प्राप्ति के योग्य बनता है।

आज शिक्षा का प्रचार तो प्रचुर मात्रा में है। दूरस्थ देहातों में भी तमाम ग्रेजुयेट पोस्ट ग्रेजुयेट अनेकों की संख्या में हैं। पी० एच–डी०, डी-लिट् भी अनगिनत संख्या में उपलब्ध हैं। परन्तु आज तो अविद्या का नग्न तांडव हो रहा है। विग्रह, लड़ाई, मारकाट साम्प्रदायिक वैमनस्य बढ़ाने वाले अनेकों ऊंची डिग्री धारी भी है। ऐसे वातावरण में एक विचारक के लिए 'विद्या' के लिए एक प्रश्न चिन्ह–खड़ा हो जाता है।

निश्चय ही आज भौतिकीय शिक्षा प्रचुर मात्रा में है परन्तु उसी अनुपात में वेद की शिक्षा का अभाव बढ़ता जा रहा है। आज अंग्रेजियत के नशे में सराबोर जीवन हमें वैदिक साहित्य से कोसों दूर भगा रहा है। आज हम किसी बात को सही मानने के लिए भौतिकवादी पश्चिमीय देशों की ओर ही ताकते हैं। वैदिक साहित्य को झांक कर देखना नहीं चाहते यदि कुछ विचारक वह ज्ञान देना भी चाहते हैं तो हम उस बात को दकियानूसी कहकर तब तक नहीं मानते जब तक पश्चिम से कोई उसी बात को अपनी ओर से न कहे।

वेद कहता है 'दुरितानि परासुव' भद्रं आसुव' सम्पूर्ण बुराइयों को छोड़ दो, दूर करो, अच्छाइयां ही एक एक कर ग्रहण करने के व्रती बनो। परन्तु अच्छाई के पाने में तप और साधना करनी होती है। बुराई बिना श्रम के स्वयं आ विराजती है। आज हम प्रमादी बन गए हैं इस नाते तप साधना हमें नहीं भाती हम दुःखों को अशान्ति को निमंत्रित करते जाते हैं।

उत्तम विद्यार्थी अपनी कक्षा के प्रत्येक विषय को निष्ठा पूर्वक पढ़ता है। तदर्थ श्रम, तप, करता है। परीक्षा में सभी प्रश्नों का यथोचित उत्तर–लिखकर अधिक नम्बरों से पास होता है और प्रशंसनीय बनता है। उसी का साथी श्रम नहीं करता। विषय को पढ़ने की चेष्टा नहीं करता उसका ध्यान इधर उधर की बातों में ही रहता है वह बुराइयों से भरपूर हो जाता है और परीक्षामें अनुत्तीर्ण हो जाता है और निन्दनीय बनता है।

विद्यावान् निरहंकारी हो जाता है ज्यों-ज्यों विद्या बढ़ती जाती है उसकी जिज्ञासुवृत्ति उसे और प्रबल रूप में विनम्र बनाती जाती है। जिज्ञासु सम्पूर्ण विषयों को पढ़ता हुआ उन्हें अपने में आत्मसात् कर लेता है और अहंकार रूपी पाप को बड़ी तीक्ष्ण दृष्टि से देखता हुआ उसे अपने पास–ठहरने नहीं देता। वह आप्त पुरुष, सन्त प्रज्ञावान्, साधु बन जाता है। उसकी विद्या स्वयं को तो पवित्र करती ही है दूसरे को भी परम पवित्र करना अपना धर्म बना–लेती है।

आज के विग्रह पूर्ण समय में आवश्यकता है कि हम सचेत हों, स्वयं वेद विद्योन्मुख होकर अपने जीवन में धर्म के आठवें लक्षण विद्या को पूर्ण रूपेण उतार कर धर्म की संस्थापना में योगदायी बनें।

वेद वेदांग पुरस्कार एवं वेदोपदेशक पुरस्कार १९८८

आर्य समाज सान्ताक्रूज द्वारा आगामी जनवरी मास १९८८ में निम्न दो पुरस्कारों से आर्य विद्वानों को सम्मानित किया जायेगा—

१. वेद वेदांग पुरस्कार

जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त वेद वेदांगों का अनुसंधान एवं ग्रन्थ लिखे—उन्हें वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कार राशि २१०००/- होगी।

२. वेदोपदेशक पुरस्कार

वेद-वेदांग के अनुसंधान कर्ताओं के अतिरिक्त जिस विद्वान ने उपदेशक, भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्ता के रूप में ही आर्य समाज की जीवन पर्यन्त सेवा की है। इस पुरस्कार की राशि ११०००/–होगी।

उपरोक्त पुरस्कार राशि के अतिरिक्त पुरस्कृत किए जाने वाले विद्वान को अभिनन्दन पत्र, एवं रजत ट्राफी से भी सम्मानित किया जाएगा।

उपरोक्त पुरस्कार हेतु आर्य समाज सान्ताक्रूज बम्बई—५४ योग्य विद्वानों के प्रस्ताव को आमन्त्रित करती हैं। जो आर्य पुरुष किसी विद्वान के नाम उपरोक्त पुरस्कार हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं–वे विद्वानों का जीवन परिचय, कार्य, एवं उनके लिखे ग्रन्थों की सूची आदि सहित विस्तृत पत्र दिनांक ३०-९-८७ तक भेजने की कृपा करें।

जो विद्वान अपने नाम का स्वयं प्रस्ताव करेंगे वे अनर्ह माने जाएंगे।

कैप्टिन देवरत्न आर्य, उपप्रधान संयोजक—वेद प्रचार समिति आर्य समाज सान्ताक्रूज बम्बई—५४।

स्वामी अमर स्वामी जी की स्मृति में शोक सभायें

–आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर के मंत्री श्री विजयपाल शास्त्री ने–लिखा है कि उनके निधन से आर्य जगत को अपूरणीय क्षति हुई है।

–आर्य समाज श्रृंगार नगर लखनऊ में दिनांक १०-१-८७ को अपने दैनिक सत्संग में श्रद्धेय स्वामी जी के प्रति शोक सभा करके श्रद्धांजलियां दी गयीं।

महात्मा अमर स्वामी जी की स्मृति में

आर्य समाज [अनारकली] मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में शोक सभा

आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी, शास्त्रार्थ महारथी, अमर स्वामी जी महाराज की स्मृतिमें एक विशाल शोक सभा का आयोजन शुक्रवार ११ सितम्बर को सायं ५ बजे आर्य समाज [अनारकली] मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में स्वामी सत्य प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में किया गया जिसमें स्वामी जी के समर्पित जीवन पर प्रकाश डाला गया और भावभीनी श्रद्धांजलियां दी गयीं।

दरबारी लाल संगठन सचिव

स्वास्थ्य-सुधा

प्राणायाम से रोग निवृत्ति

[श्री स्वामी योगानन्द मु० हाथीखाना, म० एन २७० पोलीभीत]

आज कल वैज्ञानिक युग है– रोगियो की चिकित्सा इन्जक्शनों, कैपसूलो द्वारा होता है। ऐसी स्थिति मे प्राणायाम से रोग निवृत्ति का उपाय लिखना उपहास्य समझा जावेगा। अग्रेजी शिक्षित मानव उपेक्षा की दृष्टि से देखता है, पर हमारा दृढ़ विश्वास है कि प्राणायाम रोग निवृत्ति का अचूक साधन है। मानव को उसके करने की विधि आ जानी चाहिए।

मानव को प्रभु ने पाच महान शक्तिया प्रदान की हैं–जिनको हम प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान कहते हैं, इनके सहायक पाच उप प्राण नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनजय हैं–प्राण सबका सम्राट है–सभी प्राणो को नियुक्तकर अलग-२ कार्यभार सौंपता है–जिस प्राण मे शिथिलता आ जाती है वहीं रोग की उत्पत्ति का कारण है।

समान वायु की शिथिलता से जो रोग उत्पन्न होते हैं

१–अपच का रोग (जिसे मन्दाग्नि कहते हैं) २–कोष्ठबद्धता (कब्ज रहने लगता है) ३–यकृत (जिगर) ठीक काम नहीं करता, ४–सग्रहणी (दस्त आने लगते हैं), ५–शरीर का मोटा होना–पेट बाहर निकलना, पेट मे दर्द, ६–उपान्त्र प्रदाह–छोटी बड़ी आंतो के बीच में एक नली होती है जिसकी लम्बाई दो या तीन इन्च होती है जब इस नली मे कोई कड़ी चीज फस जाती है तभी पेट मे दर्द पैदा हो जाता है–उसी को उपान्त्र प्रदाह रोग कहते हैं।

अपान वायु की शिथिलता से–

१–अर्श का रोग (बवासीर) २–उदावत (काब का बाहर निकलना) ३–बहुमूत्र का रोग, ४–मूत्र रुक जाना, ५–अड कोषो की वृद्धि, ६–आत का बढ़ना, ७–गैस का रोग होना (जो अपान के म कारित होने पर उत्पन्न होता है) ८–स्वप्न दोष–प्रमेह रोग उत्पन्न होते हैं।

प्राण वायु की शिथिलता से–

१–हृदय धड़कने लगता है, २–हृदय सम्बन्धी रोग, ३–रक्त मे तेजी अथवा कमी जिसको ब्लड प्रशर का रोग कहा जाता है।

उदान वायु की शिथिलता से–

गले सम्बन्धी रोग उत्पन्न होते है जसे गले का फूलना, २–कैन्सर का रोग, ३–शरीर मे भारी पन अनुभव होना।

व्यान वायु की शिथिलता से–

१–जब व्यान वायु शरीर की नस नाड़ियो मे घूमना बन्द कर देता है, शरीर का वही अग बेकार हो जाता है, जिसे फालिज मार जाना कहा जाता है, २–पैरो मे सुन्नता होने लगती है–चलना दूभर हो जाता है।

वेद ने कहा है–'प्राणन क्रिया' जिसका प्राण बलवान है, वही मनुष्य स्वस्थ है, प्राण बलवान बनाने के लिए प्राणायाम करना आवश्यक है इसी से प्रतिदिन शरीर का कायाकल्प होता है–वृद्धावस्था तक मानव क्रियाशील बना रहता है, जिस प्रकार आग को हवा के झोंके प्रचण्ड कर देते हैं–उसी प्रकार प्राणायाम सभी प्राणो को प्रचण्ड कर देता है। साधक का शरीर चमक उठता है–रोग उत्पन्न नहीं होते। ★

संस्कृत दिवस

दि० ९–८–८७ रविवार को साय ५ से ७ बजे तक केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ की ओर से आर्यसमाज थापरनगर मेरठ मे सस्कृत दिवस मनाया गया। अध्यक्षता श्री कर्णसिह अध्यक्ष सस्कृत विभाग मेरठ कालेज मेरठ ने की। सयोजक थे श्री प०इन्द्रराज प्रधान आय प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश एव मन्त्री केन्द्रीय समिति। नई शिक्षा नीति मे सस्कृत को स्थान न दिए जाने पर प्रत्येक वक्ता ने दुःख व्यक्त किया। सस्कृत को नई शिक्षा नीति मे वरीयता देने की वक्ताओ ने माग की। वक्ताओ मे (१) श्रीयुत वागीश्वर शास्त्री, (२) डा० सत्यपाल जी (३) डा० बृहस्पति, (४) डा० गजशदत्त जी, (५) श्रीयुत रुद्रदत्त जी शास्त्री।

अन्त मे श्री इन्द्रराज जी ने निम्नलिखित प्रस्ताव रखा जो सव सम्मति से पारित हुआ।

सस्कृत भाषा ससार की समस्त भाषाओ की जननी है। सस्कृत भारतीय सभ्यता, सस्कृति,वैदिक साहित्य, लौकिक साहित्य, आध्यात्मिक साहित्य, समस्त ज्ञान और विज्ञान का आधार है। भारत देश को सगठित रखने वाली एक सशक्त कड़ी है। परन्तु खेद का विषय है कि नई शिक्षा नीति मे सस्कृत को स्थान नहीं दिया गया। आज देश विषम परिस्थितियो में से गुजर रहा है। विदेशी शक्तियां भारत को विघटित करने पर संलग्न हैं। ऐसे समय मे सस्कृत भाषा ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो सारे देश की एकता और अखण्डता के लिए वरदान है एव नैतिक मूल्यो का उत्थान करने वाली है।

अत यह सभा केन्द्रीय सरकार से माग करती है कि सस्कृत भाषा को नई शिक्षा नीति मे वरीयता दी जाए। विश्वविद्यालयो मे वैज्ञानिक और युक्तियुक्त वेदभाष्यो को पढाया जाए। सस्कृत सस्थानो को अधिक से अधिक अनुदान दिया जाए ताकि सस्कृत का अधिक से अधिक प्रचार और प्रसार हो। भारत के नागरिको से भी अनुरोध है कि भारत देश को महान बनाने और ससार मे शान्ति स्थापित करने के लिए सस्कृत के पठन पाठन का व्रत धारण करें।

इन्द्रराज
मन्त्री
केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ

शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी जी की स्मृति में सभा कार्यालय में शोक सभा

शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी जी गत कुछ दिनो से कैंसर रोग से पीड़ित थे, उनका देहावसान दिनाक ४–९–८७ को उनके आश्रम गाजियाबाद मे हो गया।

आय प्रतिनिधि सभा एव आर्यमित्र कार्यालय के सभी कार्यकर्त्ताओ की ओर से दिनाक ९–९–८७ को नारायण स्वामी भवन मे एक शोक सभा आयोजित की गई। जिसमे श्री चन्द्रकिरण शर्मा कोषाध्यक्ष सभा, प० केशवदेव शास्त्री महोपदेशक सभा, श्री विश्वम्भरदयालु गुप्त प्रकाशक 'आर्यमित्र' आचार्य देवव्रत अवस्थी सम्पादक 'आर्यमित्र' ने स्वामी जी के जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डाला और श्रद्धांजलिया अर्पित कीं। सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के लखनऊ से बाहर होने के कारण उनकी लिखित श्रद्धांजलि पढ़ी गयी। सभा विसर्जन के अनन्तर उस दिन के शेष काल के लिए सभा व मित्र कार्यालय बन्द कर दिये गये।

धर्मराज के दरबार में

(श्री बिहारी सिंह पुस्तकाध्यक्ष, आर्य समाज बटपुरा महाबनपुर)

द्वारपाल–धर्मराज की जय। महाराज भारत से कुछ व्यक्ति धर्म की गुहार लेकर आये हैं।

धर्मराज–हैं! भारत से और धर्म की गुहार? बुलाओ, उन्हें,

(द्वारपाल का जाना और भारतीयों का आगमन)

भारतवासी–दुहाई है महाराज, दुहाई है

धर्म०–क्या, दुहाई, भारत तो धरती का स्वर्ग है। वहां तो देवगण भी उत्पन्न होने की कामना करते है। और तुम……।

भारतीय–करते होंगे कभी। किन्तु आज तो भारत नर्क बना है।

धर्म०–भारत और नर्क? विश्वास नहीं होता। भारत ही तो केवल ऐसा देश है जहां आर्य वेद वाणी मनुसंघ का जय नाद करते हैं। क्या आर्य समाज के छठे, सातवें और नवें नियम कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथा योग्य बरतना और सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना आदि तुम्हारी कठिनाइयों को दूर नहीं कर पा रहे हैं?

भारतीय–महाराज, भारत में आज कल धर्म निरपेक्ष सरकार है।

धर्म०–यह तो और भी अच्छा है। सोने में सुगन्ध है। सब अपने-अपने धर्म का पालन करें, सरकार धर्म-निरपेक्ष रहे तो इससे बड़ी सुविधा और क्या हो सकती है?

भारतीय–परन्तु ऐसा हो तो नहीं हो पा रहा। धर्म-पालन तो दूर, रोजी-रोटी और जान के लाले पड़े हुए हैं।

धर्म०–अच्छा, अपनी पृथक-पृथक कठिनाई सुनाओ। हां, देवी, तुम अत्यन्त दुःखी एवं उदास हो। बोलो तुम्हें क्या कहना है?

महिला–महाराज, भारत, ईरान और मंगोल के लुटेरों ने अपनी क्रूर कटार के बल पर भारत में यवन-साम्राज्य की स्थापना की। इनके अत्याचारों से प्रताड़ित होकर हमारे पूर्वजों को इस्लाम कबूल करना पड़ा। सन् १९४७में भारत का विभाजन हुआ। इस्लामी शासन में आस्था रखनेवाले मुल्ला पाकिस्तान चले गये और हम भारत में रह गये। सोचा था, कुछ राहत मिलेगी किन्तु हाय, हम पर वही अत्याचार जारी हैं।

धर्म०–देवी मैं यह क्या सुन रहा हूं? भारत में और महिलाओं, पर अत्याचार? भारत में तो 'नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: का नियम प्रभावी है। वहां स्त्री-पुरुष का समान अधिकार है। फिर नारी पर अत्याचार, यह कैसे? क्या सरकार ने तुम्हारे लिए कोई विधि-विधान नहीं बनाया है?

महिला–बनाया है, किन्तु केवल हिन्दू महिलाओं के लिए। हिन्दू महिलाओं को प्रत्येक प्रकार की सुविधा है। हिन्दू-पुरुष केवल एक ही पत्नी रख सकता है। परन्तु मुसलमान चार-चार बीवियां रख सकता है।

धर्म०–देवी, क्या सरकार की नीति भी दोहरी है? ऐसा क्यों?

महिला–महाराज, भारत सरकार धर्म निरपेक्षता के जाल में फंसी है। मुल्लाओं के अनुसार मुस्लिम महिला को समानता का दर्जा देना उनके मजहब में हस्तक्षेप है। इस्लाम में बीवियां पुरुषों के लिए खेतियां हैं रोजे की रात उनके लिए हलाल है। यही नहीं केवल तीन बार तलाक कहने से औरत का रिश्ता मर्द से खत्म।

धर्म०–देवी, तुमने अभी तक अपने एक ही रूप को देखा है कि नारी अबला है। लक्ष्मीबाई, चांद बीबी, बेगम महल, जीजाबाई के देश की देवी इतनी असहाय! तुम्हारी हुंकार से संसार कांप उठता था। जरा साहस तो करो। यदि सरकार तुम्हारे लिए ऐसा कानून नहीं बनाती है और साठ वर्षीय मुल्ला सोलह वर्षीय हसीनाओं को कैद करने से बाज नहीं आते हैं, तो क्यों नहीं भारत के मनुसंघ के सच्चे धर्म में दीक्षा ले लेती हो?

नव युवक–महाराज, हमारे मोहल्ले के समस्त घर और दुकानें अग्नि की भेंट चढ़ा दीं गईं। वीभत्स हत्या काड और बलात्कार में अबोध शिशुओं तथा महिलाओं को क्रूर यातनायें देकर मौत के घाट उतार दिया।

धर्म०–हत्या कांड के अपराध का धर्म राज से क्या सम्बन्ध? किसी थाने में पुकार करो।

नव०–थाने में! महाराज निरन्तर २४ घण्टे खुली सड़कों पर हिंसा और बलात्कार का नंगा नाच होता रहा। लाउड स्पीकरों से मजहबी उन्मादियों के भाषण जहर उगलते रहे। प्रशासन असहाय होकर मूक दर्शक बना रहा। पी० ए० सी० के पहुंचने पर मस्जिदों की प्राचीरों से उल्टे उन पर अन्धा धुन्ध गोलियां चलाई गयीं।

धर्म०–तुम क्या कह रहे हो? क्या भारत के सभी राजनेताओं की बुद्धि पर परदा पड़ा है? क्या किसीको सत्य कहने का साहस नहीं।

नव०–महाराज, राज नेता तो दंगो की आंच में अपनी राजनैतिक रोटियां ही सेकते हैं। वे अल्पसंख्यक का पक्ष लेकर उल्टा पी०ए० सी० को दोषी ठहरा कर अपने वोट-बैंक भरने की तैयारी में जुटे हैं। निर्दोष नागरिकों पर गोलियां चलाने वाले निर्बाध हो जाते हैं और निर्दोषों को जेल में ठूंस दिया जाता है।

दूसरा नव०–महाराज, स्थिति १९४७ से पूर्व से भी अधिक भयंकर है। वही नारे, वही हवा और वही मार्ग है जिस पर चलकर मां के टुकड़े हुए थे राष्ट्रीय ध्वज की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। संविधान और न्याय पालिका से खिलवाड़ किया जा रहा है।

धर्म०–और तुम मूक होकर बलि के बकरे बन रहे हो। कैसे जवान हो तुम? क्या गीता के "अन्याय को सहन करना और भी बड़ा अधर्म है।" सिद्धांत को भूल गये। गीता का संदेश ही हिन्दुत्व का प्राण है और हिन्दुत्व के बिना भारत का कोई अस्तित्व नहीं है। क्या दयानन्द का सत्य धर्म भी तुम्हें प्रिय नहीं है उनकी नीति का प्रतिपादक "आर्य-मित्र" पढ़ो। देखो क्या लिखा है–तुम्हारा ईमान सिकन्दर न खरीद सका, अकबर की कूटनीति उसे न डिगा सकी, औरंगजेब की क्रूर कृपाण उसे न कंपा सकी फिर आज धर्म निरपेक्षता की थोथी विचार धारा से वह कैसे डगमगा रहा है? हम सब मनुष्य हैं और मनुसंघ ही वेद का धर्म है। तुम्हारा ईमान बिक रहा है आग लग रही है, मां रो रही है और तुम सो रहे हो। भारत की पावन भूमि हमारी माता है

(शेष पृष्ठ ७ पर)

महात्मा अमर स्वामी जी का पार्थिव शरीर अग्नि को समर्पित

आर्य जगत में शोक व्याप्त

[श्री रामनाथ सहगल, मन्त्री आर्य प्रादेशिकप्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली]

आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी महात्मा अमर स्वामी जी का ४ सितम्बर १९८७ को सायं ५ बजकर २ मिनट पर चौधरी नर्सिंग होम गाजियाबाद में निधन हो गया। निधन के समय उनके पास प्रो० रत्नसिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमती दया कुमारी तथा परिवार के अन्य सदस्य उपस्थित थे। स्वामी जी कैंसर रोग से पीड़ित थे। गत ४ मास से उनकी दशा बहुत खराब चल रही थी। एक मास पूर्व ऐसी स्थिति आ गई कि गले से पानी उतरना भी बन्द हो गया। तत्काल नरेन्द्र मोहन अस्पताल, मोहन नगर मे उनको भर्ती कराया और पेट मे नली लगा दी गई जिसके द्वारा पेट में पानी व दूध तथा रस पहुंचाया जाने लगा परन्तु स्थिति प्रतिदिन बिगड़ती गई। ३ सितम्बर को उन्हें १०५ डिग्री बुखार हो गया। नगरके योग्यतम डाक्टरों को बुलाकर उपचार कराया गया। ४ सितम्बर को मध्यान्तर ४ बजे के लगभग उनका कष्ट बढ़ गया। श्वास लेने में कष्ट होने लगा। डाक्टर को तुरन्त बुलाया गया। डाक्टर के परामर्श पर आक्सीजन के लिए पौने पांच बजे स्वामी जी को स्थानीय नर्सिंग होम मे दाखिल कराया गया और स्वामी जी के अनन्य भक्त सुन्दर लाल चावला तथा डाक्टर जगदीश चन्द्र को बुलाने के लिए एक व्यक्ति को भेज दिया गया। आक्सीजन देना शुरू ही किया था कि ५ बजकर दो मिनट पर उनका प्राणान्त हो गया। स्वामी जी के मृतक शरीर को उनके आश्रम मे लाकर रखा गया।

स्वामी जी के निधन का समाचार सुनते ही गाजियाबाद की आर्य जनता में शोक छा गया। सायं ६ बजे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री के नाते मुझे दूरभाष पर प्रो० रत्नसिंह ने स्वामी जी के निधन का समाचार दिया। मेरे परामर्श पर निश्चय हुआ कि अगले दिन पूर्वाह्न ११बजे हिण्डन नदी श्मशान घाट, गाजियाबाद पर स्वामी जी का अन्त्येष्टि संस्कार किया जाए। ५ सितम्बर प्रातः १० बजे वेद मन्दिर से स्वामी जी की शवयात्रा प्रारम्भ हुई। स्वामी जी के शव को ओ३म् ध्वज में लपेट कर एक गाड़ी मे रखा गया। शव यात्रा में हजारों व्यक्ति वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पीछे-पीछे चल रहे थे। आर्य समाज मन्दिर गाजियाबाद में शव यात्रा की प्रतीक्षा करने वाले आर्य जनों के अश्रुपूर्ण नेत्रों से स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पितकी गई और सब शव यात्रामें सम्मिलित हो गये। यह यात्रा जिसका संचालन सार्वदेशिक आर्यवीर दलके सेनापति श्री बाल दिवाकर हंस कर रहे थे, नगर के मुख्य बाजारों से गुजरती हुई लगभग १२ बजे हिण्डन नदी पर पहुंची, जहां दिल्ली से आए हुए सैकड़ों आर्य नर नारी भी सम्मिलित हो गये। स्वामी जी के पार्थिव शरीर को वैदिक मन्त्रोचार के मध्य अग्नि को समर्पित कर दिया गया। ३२ किलो घी और २ मन हवन सामग्री के साथ वेद मन्त्रों से आहुति दी गई। आर्य गुरुकुल, गौतम नगर, नई दिल्ली के २० ब्रह्मचारियों तथा दिल्ली व गाजियाबाद के ६ आर्य पुरोहितोंने वेद मन्त्रों का पाठ किया। संस्कार के समय उपस्थित सहस्रों आर्य नर नारी सजल नेत्रों से स्वामी जी के भौतिक शरीर को अग्नि के माध्यम से पञ्च तत्वो मे मिलता देख रहे थे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी, स्वामी सत्य प्रकाश जी सरस्वती, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ता प्रधान श्री दरबारी लाल जी, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाहा के साथ ही अनेक आर्य विद्वान व नेता पं० शिवकुमार शास्त्री, आचार्य वैद्यनाथ जी, श्री देशराज बहल, श्री मुलखराज भल्ला, उप प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, कु० विद्यावती आनन्द, मन्त्री डी० ए० वी० कालेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली, उड़ीसा प्रांत आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य प्रियव्रत दास जी, पं० क्षितीश वेदालङ्कार जी सम्पादक आर्य जगत नई दिल्ली, श्री राम चन्द्र विकल, संसद सदस्य, श्री क्षेमचन्द्र सुमन, श्री सरदारी लाल वर्मा, नई दिल्ली, श्री शांति लाल जी सूरी, प्रधान आर्य समाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, श्री मदन· लाल सेखड़ी, उपसंगठन सचिव, डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, चौधरी अमर सिंह, आचार्य विजय पाल शास्त्री तथा डी० ए० वी० संस्थाओं के कई प्राचार्य भी उपस्थित हुए।

स्वामी जी महाराज के निधन पर शोक प्रकट करते हुए डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के संगठन सचिव व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ता प्रधान श्री दरबारी लाल जी ने कहा कि स्वामी जी महाराज जैसा शास्त्रार्थ मे निपुण विद्वान तार्किक सन्यासी अब आर्य जगत मे कोई नहीं रहा। स्वामी जी महाराज का गत ७० वर्षों से आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बन्ध रहा है। उनके निधन से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री होने के नाते मैने अपने शोक सन्देश मे कहा कि गत ४ महीनो मे स्वामी जी से रुग्णावस्था मे कई बार उनके आश्रम व अस्पताल में जाकर उनसे मिला। भारी शारीरिक कष्ट होने पर भी मैंने उनके चेहरे पर कभी दुःख की अभिव्यक्ति नहीं देखी। स्वामी जी के निधन से आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को गहरा आघात पहुंचा है।

धर्मराज के दरबार में

(शेष ६ से आगे)

और वीर नागरिक ही मानवता की रक्षा करते हैं। अतः उठो आर्यो ! वीर नागरिक बनकर धरती पर छा जाओ।

करो वैदिक धर्म की रक्षा मानवता की लाज बचाओ ।।

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः

इसी क्षण जीवन-धारा को बदल दो। यही जीवन है, यही सत्य है और यही धर्म है।

भारतवासी-(एक स्वर से) महाराज जी अब आपने हमारी आंखें खोल दीं।

धर्म राज की..................जय।
वैदिक धर्म की..................जय।
भारत माता की..................जय।
भारत उनका—जो भारत के।

(पटाक्षेप)

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु आवश्यक सूचना

समस्त आर्यसमाजो, जिला उपसभाओ एव शिक्षण सस्थाओ को [सू]चित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० की शताब्दी [स]मारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रकार के सास्कृतिक, शंका [समाधान] एव कवि सम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी [स]मारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमे विभिन्न वाद-विवाद प्रतियोगि[त]ाए तथा सम्मेलनो के अश सम्मिलित हैं तथा विशेष रूप से सम्पूर्ण [श]ताब्दी समारोह की वी० डी० ओ० (फिल्म) कैसेट प्रतिनिधि सभा के [क]ार्यालय ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ मे बिक्री हेतु उपलब्ध है।

जो सज्जन अथवा सस्थाए इन्हे प्राप्त करना चाहती हैं वह श्री [व्रज]कुमार दयाल गुप्ता, व्यवस्थापक 'आर्यमित्र', ५ मीराबाई मार्ग [ल]खनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आर्डर देकर प्राप्त कर सकते है। मूल्य सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसेट १०००) मे। मूल्य २०) रु० प्रति कैसेट के हिसाब से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिनकी सख्या ३० है तथा कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) ५) रु० प्रति फोटो के हिसाब से उपलब्ध हैं।

शताब्दी पर पधारे हुए सन्यासियो, विद्वानो एव उपदेशको, प्रचारकों के महत्वपूर्ण उपदेश तथा कवि सम्मेलन (सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कैसेट मूल्य १००) रु० मे उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त जिन शिक्षण सस्थाओ ने समारोह मे भाग लिया एव पुरस्कार प्राप्त किए उन्हे भी १७, १८, १९, २० अक्टूबर के एक एक दिन के अलग से रिकार्डिंग कैसेट अलग से मिल सकते हैं। बडी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध की जा सकती है।

आर्यसमाज के कार्यक्रम तथा सभा की शताब्दी—स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य सस्थाओ को ऐसे चित्र एव कैसेट प्रचार कार्य मे बहुत सहायक होगे।

अत कृपालु पाठक शीघ्र आर्डर भजकर लाभ उठावें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

यशस्वी पत्रकार विजयकुमार चोपड़ा एवं साहित्यकार क्षेमचन्द्र 'सुमन' सम्मानित

चण्डीगढ़ १३ सितम्बर। अखिल भारतीय साहित्यकार मण्डल द्वारा अपने द्वितीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यजगत के प्रख्यात साहित्यकार एव मनीषी आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' को "साहित्यकार शिरोमणि" तथा पत्रकारिता के क्षेत्र मे की गई अमूल्य एव सराहनीय सेवाओ के लिए 'हिन्द समाचार पत्र समूह' के यशस्वी सम्पादक एव पत्रकार सर्वश्री विजयकुमार चोपड़ा, के० नरेन्द्र तथा नरेन्द्र मोहन को पत्रकार शिरोमणि' की उपाधि से अलकृत किये जाने पर सम्पूर्ण आर्य जगत एव आर्यमित्र परिवार उन्हे शतश सहस्रश बधाइयां देता और उनके यशस्वी मगलमय जीवन की कामना करता है।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्यसमाज अमरोहा का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अमरोहा का वार्षिकोत्सव दिनाक ११, १२, १३ अक्तूबर ८७ को मनाया जाना सुनिश्चित है जिसमे अनेक सम्मेलनो तथा आकर्षक कार्यक्रमो का आयोजन किया गया है।

बाल जगत

वीर शिरोमणि देश भक्त मंगल पांडे

[श्री कृष्ण दत्त १-८-७००/६ पद्मा नगर, हैदराबाद]

वीरवर मंगल पांडे का जन्म १९ जुलाई १८२७ को हुआ था। इनके पिता दिवाकर पांडे उत्तर प्रदेश में फैजाबाद जिले के 'सुरहरपुर' नामक ग्राम में रहते थे। इनकी माता अभयरानी धार्मिक वृत्ति की महिला थी। उन्होंने रामायण और महाभारत की वीरता की कथाएं सुनाकर बचपन से ही मंगल पांडे में वीरता और साहस के भाव उत्पन्न किये थे। दिवाकर पांडे शिक्षित और अपने ग्राम तथा बिरादरी में सम्मानित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। छः वर्ष की आयु में मंगल पांडे का यज्ञोपवीत करके उन्हे ग्राम की पाठशाला मे शरीक कर दिया गया। मंगल पांडे को बचपन से ही व्यायाम और खेल-कूद का शौक था। उन्हें आनुवंशिक रूप से ऊँचा कद और भव्य तथा गठीला शरीर प्राप्त हुआ था। व्यायाम और खेल-कूद के कारण यौवनावस्था तक पहुंचते-पहुंचते उनका शरीर सुडौल, आकर्षक और बलवान् बन गया।

यौवनावस्था की देहरी पर ही थे कि मंगल पांडे के ग्राम से एक सैनिक पल्टन गुजरी। यह पल्टन ग्राम के पास कुछ समय के लिए रुकी भी थी। अन्य युवकों के साथ मंगल पांडे ने भी बड़ी उत्सुकता के साथ सैनिकों को मार्च करते हुए देखा। सेना में भरती होकर सिपाही बनने की उनमें इच्छा उत्पन्न हुई। उस पल्टन के अधिकारी की नजर भी इस लम्बे, तगड़े और तेजस्वी युवक पर पड़ी। किसी तरह मंगल पांडे ने उस अधिकारी से बातचीत की और सेना में भरती होने की अपनी इच्छा भी प्रकट की। उस अधिकारी ने भी मंगल पांडे को सेना में भरती होने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया। इस तरह मंगल पांडे सेना में भरती हो गये।

इस अवधि में भारत मे दो बड़ी घटनाएं हो गयीं। पहली यह कि अंग्रेजो ने अवध के नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से उतार दिया और कैदी बनाकर कलकत्ता भेज दिया। सेना के अवध निवासी सिपाही अंग्रेजों के इस अन्यायपूर्ण व्यवहार से बहुत क्रोधित हो गये। उनमें अंग्रेजों के प्रति घृणा व क्षोभ की भावना फैल गयी। प्रजा में भी इस घटना से अशान्ति फैल गयी।

दूसरी घटना इस प्रकार है—कलकत्ता के पास डमडम नामक स्थान पर अंग्रेजों ने बन्दूकों के कारतूस बनाने का कारखाना कायम किया था। इन कारतूसों पर गाय और सुअर की चर्बी लगायी जाती थी और सिपाहियों को दांतों से तोड़कर बन्दूक मे कारतूस को भरना पड़ता था। प्रारम्भ में यह बात सिपाहियो को मालूम न थी। किसी तरह यह बात भारतीय सैनिको में फैल गयी। हिन्दू और मुसलमान सैनिक इस बात से बहुत क्रोधित हो गये।

बैरकपुर छावनी के परेड मैदान मे सेना की सभी टुकड़ियां खड़ी हुई थीं। १९वीं रेजिमेंट में नवीन कारतूस बँटने वाले थे। किसी सिपाही ने कारतूसों को छुआ तक नहीं। अंग्रेज अधिकारियों ने चुपचाप हार मान ली। कारतूसों को बांटने का काम रोक दिया गया। उन्हें वापस ले जाया गया, क्योंकि उस समय बंगाल में गोरे सिपाहियों की एक भी रेजीमेंट नहीं थी।

२९ मार्च १८५७ को मंगल पाडेको पता चला कि वर्मा ने गोरे की एक रेजीमेंट बैरकपुर पहुंच गयी है। भारतीय सैनिकों को निःशस्त्र किया जाने वाला है और आज्ञा का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कड़ी अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाने वाली है। जैसे ही पाडे को अंग्रेज अधिकारियों की नियत का पता चला उनके धैर्य का बाँध टूट गया। उस स्वाभिमानी देशभक्त ने एक हाथ में अपनी बन्दूक संभाली और दूसरे हाथ में नंगी तलवार ले ली और अपने बैरक से निकल पड़े। तब तक गोरे सैनिकों ने १९वीं रेजिमेंट को निःशस्त्र करके छावनी मे बाहर निकाल दिया था।

मंगल पांडे ने अपने देश वासियों के इस घोर अपमान को देखा तो वे 'मारो इन फिरंगियों को" की गर्जना करते हुए परेड मैदान में पहुंचे। मेजर जनरल ह्यूसन यह दृश्य देखकर परेड मैदान में आगे बढ़ा और ललकार कर कहा, "पकड़ो इस कुत्ते को" परन्तु एक भी भारतीय सैनिक आगे नहीं बढ़ा। इतने मे मंगल पांडे की बन्दूक से गोली चली और ह्यूसन के आर पार हो गयी। मेजर ह्यूसन ढेर हो गया। यह दृश्य देखकर ले० बेक ने अपने घोड़े को पांडे की ओर बढ़ाया। मंगल पांडे की बन्दूक से पुनः एक गोली सनसनाती हुई निकली और ले० बेक का घोड़ा ढेर हो गया। बेक ने अपने रिवाल्वर से पांडे पर वार किया। पर निशाना चूक गया। उसने तलवार से मंगल पाडे पर वार करना चाहा। पर उससे पहले ही वह मंगल पांडे की गोली से ढेर हो गया। जब कर्नल ह्वीलर को दो गोरे अधिकारियों के मारे जाने का समाचार मिला, वे घटना-स्थल पर आये और भारतीय सैनिकों को आदेश दिया—"मंगल पांडे को गिरफ्तार कर लो।" भारतीय सैनिकों ने उस आदेश का पालन करने से इन्कार कर दिया। स्थिति को समझकर कर्नल ह्वीलर वहां से तेजी से खिसक गये और जनरल हियर्स से सलाह की। गोरे सैनिको को लेकर ३५वीं रेजीमेट सहित मंगल पाडे को घेर लिया गया।

मंगल पाडे ने देखा कि अब कुछ नही हो सकता। उन्होने तत्काल निर्णय किया कि विदेशियों के हाथों से मरने का पाप न होने पाये। परेड मैदान पर खड़े सभी सिपाहियो ने अचानक ठांय, ठांय, ठांय की आवाज सुनी और आंख झपकते ही वीरवर पांडे का शरीर धराशायी हो गया। मंगल पांडे मात्र घायल हो गये थे। उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया। आवश्यक औषधोपचार के बाद फौजी अदालत में उन पर मुकदमा चलाया गया। अपने संक्षिप्त से वक्तव्य में मंगल पांडे ने कहा, "मेरी किसी भी अंग्रेज अधिकारी से कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं थी। मैंने जो कुछ किया, वह देश, धर्म और स्वतंत्रता की रक्षा के लिये किया। धर्म और देश अपमानित होते हुए देखने की अपेक्षा मैने मर जाना श्रेयस्कर समझा।" फौजी अदालत ने मंगल पांडे को फांसी की सजा सुनायी।

बैरकपुर के भारतीय जल्लादों ने वीरवर मंगल पांडे को फांसी देने से इन्कार कर दिया था। अतः कलकत्ता से खास जल्लाद को बुलाकर मंगल पांडे को फांसी दी गयी।

फांसी के दिन प्रातःकाल नित्य कर्म से निवृत्त होकर उन्होने गायत्री मन्त्र का जाप किया। फासी के समय तैयार होकर वे फासी के तख्ते की ओर बढ़ते चले गये। उनके चेहरे पर उदासी, खिन्नता या आतंक जैसे भाव नहीं थे। चेहरे पर मुस्कुराहट थी। फांसी के फंदे के पास पहुंचे। जल्लाद ने चेहरे को काले कपड़े से ढक दिया, किन्तु फांसी का फंदा मंगल पांडे ने अपने हाथों से गले मे इस तरह डाल लिया, जैसे कोई फूल की माला पहन रहा है। अन्त में "भारत मां की जय" के जयघोष के साथ फांसी पर झूल गये। वह देशभक्त, वीर शिरोमणि, स्वाभिमानी ८ अप्रैल १८५७ को हमेशा के लिए इस नश्वर जगत् से मुक्त हो गया। मंगल पांडे के बलिदान ने १८५७ के भारतीय स्वाधीनता संग्राम को नवजीवन, नवप्रेरणा और नवशक्ति प्रदान की। जनता और और भारतीय सैनिकों में दृढ़ संकल्प का निर्माण हुआ। आचार्य भगवान देव के शब्दों में,—"मंगल पांडे ने १८५७ की क्रान्ति की वेदी पर अपना सर्वप्रथम बलिदान देकर भारत के इतिहास में अमरतापा से यश प्राप्त कर लिया।"

शास्त्रार्थ की खुली चुनौती

यीशु मसीह पर ईमान लाने से मुक्ति न होगी—बल्कि कर्मानुसार मुक्ति मिलेगी !

(श्री लालता प्रसाद उपदेशक सभा)

★ ★ ★

आज कल ईसाई पादरी भारतवर्ष में ईसाई मत का प्रचार कर रहे हैं उनका यह प्रचार भोले-भाले अनपढ़ ग्रामीण तथा पिछड़ी जाति के लोगों में होता है और उनको धन आदि का लोभ देकर ईसाई बनाया जाता है। ईसाई पादरी उन भोले-भाले लोगों से कहते हैं कि ईसामसीह खुदा का इकलौता बेटा था उस पर ईमान लाओ तो स्वर्ग में जाओगे। तुम्हारे सब पाप क्षमा कर दिये जायेंगे। ईसा मसीह पवित्रात्मा थे। वह कुंवारी मरियम के गर्भ से पैदा हुए थे। वह बीमारों को चंगा करते थे और मुर्दों को जिन्दा करते थे। बायबिल के स्वाध्याय से पता चलता है कि उपरोक्त बातों के बिलकुल उल्टा बाइबिल में लिखा है।—ईसा पर ईमान लाने से मुक्ति न होगी बल्कि कर्मानुसार मुक्ति मिलेगी। प्रमाण निम्नलिखित हैं—

१—"वह हर एक को उसके कर्मों के अनुसार बदला देगा।" रोमियों पर्व २ आ० ६)।

२—"परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करेगा।" (रोमियों पर्व २ आ० ११-१२)।

३—"तुम धोखे में न पड़ो ईश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता क्यों कि मनुष्य जो बोयेगा वही काटेगा। (गु० पर्व० ६ आ० ७ से १० तक)।

४—"कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है।" (याकूब की पु० पर्व २ आ० १८ से २० तक)।

५—"तू अपने बातों के ही कारण निर्दोष और अपनी बातों के ही कारण दोषी ठहराया जावेगा।" (मती पर्व १२ आ० ३६—३७)।

६—"हे कुमर्म करने वालों मेरे पास से चले जाओ।" (मती पर्व १२ आ० से २३)।

७—"परमेश्वर हर एक को उसके कर्मों के अनुसार फल देगा। (मती पर्व १६ आ० २७)।

८—"हर एक को कर्मानुसार फल मिलेगा।" पर्व २ आ० २३)।

९—"देख मैं शीघ्र आने वाला हूं और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है।" पर्व २२ आ० १२]।

१०—"इस विषय में अन्य आयतें निम्न लिखित हैं।

[याकूब, पर्व २ आ० १७-१९-२०। कुरिन्थियों पर्व ११ आ०१५] [मती, पर्व ७ आ० २१] [१ पतरस, पर्व ३ आयत १२]

इस प्रकार की बहुत सी आयतें हैं जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यीशु मसीह पर ईमान लाने से मुक्ति नहीं मिलती वरन् शुभ कर्म करने से मुक्ति मिलती है। इसलिये ईसा मसीह पर ईमान लाने की आवश्यकता नहीं। जरा वेद के इस मन्त्र को देखिए जो शुभ कर्म करने का उपदेश करता है—

ओं न किल्बिषमत्र न धारो, अस्ति न यन्मित्रैः सम समान् एति ॥
अनूनं पात्रं निहितं न एतत्, पक्तारं पक्वा पुनरा विशाति ॥"
[अथर्व वेद, कांड १२ सूक्त ३ मन्त्र ४८]

मन्त्र का भावार्थ यह है कि ईश्वर की न्याय व्यवस्था दोष रहित है। जिसमें किसी की सिफारिश नहीं चल सकती। ईश्वर ने प्रत्येक जीव के साथ मन रूपी पात्र लगाया है। उसमें हर अच्छे बुरे कर्मों का संस्कार सुरक्षित है। उसके अनुसार फल देना ईश्वरीय नियम है। जैसा कोई बीज बोता है, वैसा फल काटता है। ईश्वर की इस न्याय व्यवस्था में रत्ती भर भेद नहीं आता।

आर्य समाज (हरदोई) का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हरदोई का वार्षिकोत्सव दिनांक ३०-९-८७ से २-१०-८७ तक आर्य कन्या इण्टर कालेज हरदोई के भव्य प्रांगण में आयोजित किया गया है। जिसमें राष्ट्र भाषा, संस्कृत धर्म रक्षा, मद्यनिषेध एवं दहेज विरोधी सम्मेलन महिला सम्मेलन एवं दयानन्द वाक् प्रतियोगिता आदि विविध कार्यक्रम होंगे।

वेद प्रचार सप्ताह मनाये जाने के निम्न लिखित स्थानों से और सूचनायें मिली है।

१—आर्य समाज उदयपुर [राजस्थान]
२—आर्य समाज रुड़की
३—आर्य समाज पंचपुरी गढ़वाल द्वारा कालेजों व ग्रामों में।

झण्डाधारी की अपील

श्री धर्म वीर आर्य झण्डाधारी ने नत्थूपुर आजमगढ़ में यज्ञशाला निर्माण हेतु दो लाख रुपये दानकी घोषणा की है। उसकी पूर्ति के लिए धर्मवीर प्रकाशन माला आर्य जगत से उसके प्रकाशन खरीदने का सहयोग चाहता है।

आर्य समाज के भावी कार्यक्रम पर विचार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आचार्य दत्तात्रेय आर्य के संयोजकत्व में गठित उपसमिति ने आर्य समाज की भावी रूपरेखा के सम्बन्ध में एक विस्तृत रिपोर्ट सभा को दी है जिस पर विचार करने के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने दिनांक १९-९-८७ को आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली में सार्वदेशिक तथा प्रादेशिक सभाओं के पदाधिकारियों, प्रमुख विद्वानों एवं आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं की एक विशेष बैठक बुलाई।

इस बैठक में देश विदेश की वर्तमान परिस्थितियों एवं राष्ट्र के समक्ष उपस्थित गम्भीर समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में, आर्य समाज जैसी महान धार्मिक एवं राष्ट्रीय सस्था के भावी कार्यक्रम को अन्तिम रूप देने के लिए कुछ निर्णय लिए गए हैं।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

आर्य जगत

ग्राम प्रचार योजाना

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद लखनऊ की ग्राम प्रचार योजना के अन्तर्गत आर्यसमाज शृगारनगर लखनऊ के सौजन्य से भोला खेड़ा, कनौसी आदि ग्रामो के निकटवर्ती क्षेत्र मे दिनाक ३० सितम्बर से ४ अक्टूबर ८७ तक बृहत् वेद प्रचार का आयोजन, स्थान–बाल निकेतन स्कूल भोला खेड़ा, लखनऊ मे किया गया है।

—वेदपाल निष्ठावन मन्त्री

नगर आर्यसमाज लखनऊ मे शोक सभा

नगर आर्यसमाज रकाबगज लखनऊ मे हिन्दी प्रेमी छायावादी कवियत्री सुश्री महादेवी वर्मा एव शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया तथा दिवगत आत्माओ की सद्गति हेतु परमात्मा से प्रार्थना की गई।

नगर आर्यसमाज लखनऊ में हिन्दी दिवस

नगर आर्यसमाज लखनऊ मे हिन्दी दिवस का कार्यक्रम बड़े हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया जिसमे आचार्य धर्मानन्द जी शास्त्री ने कहा हमारा रहन-सहन, बोल-चाल तथा पहनावा सब कुछ हिन्दी होना चाहिए। सभी उपस्थित आर्य जनो ने घरो तथा कार्यालयो मे हिन्दी भाषा के प्रयोग करने का सकल्प भी लिया।

—चन्द्रभूषण, नगर आर्यसमाज, लखनऊ

वेद प्रचार

आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर मे वेद प्रचार सप्ताह रविवार ६ सितम्बर से रविवार १६ सितम्बर १९८७ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। श्रावणी पर्व–रक्षा बन्धन, सस्कृत दिवस, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस आदि भी ससमारोह मनाये गये।

–(१) फीरोजाबाद आर्यसमाज मे वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया। साहित्य का विक्रय किया गया।

(२) डी० ए० वी० इन्टर कालेज फीरोजाबाद की प्रबन्ध समिति के निर्वाचन मे–अध्यक्ष–श्री ओकार दत्त जी आर्य, स० प्रबन्धक–श्री डा० सन्तोषकुमार जी शर्मा, कोषाध्यक्ष–श्री रामरत्न जी शर्मा निर्वाचित हुये। —ओकार दत्त आर्य मन्त्री आर्यसमाज फीरोजाबाद

सम्पूर्ण मास भर वेद प्रचार

६ अगस्त से ३१ अगस्त ८७ तक प्रति दिन आर्य समाज बिसवा सीतापुर की ओर से आर्यसमाज से अनभिज्ञ परिवारो मे साय ५ से ७ बजे तक सामूहिक यज्ञ हुए एव आर्य विद्वान माननीय रामेश्वरदयाल आर्य 'प्रवक्ता' के वेदो पर आधारित प्रवचन हुए।

आर्यसमाज कोटा में वेद सप्ताह

कोटा–आर्यसमाज रामपुरा कोटा मे वेद प्रचार सप्ताह बड़े धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ।

अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न

इटारसी आर्यसमाज मे एक अन्तर्जातीय विवाह श्री गुलाबसिह और सुश्री कुसुम बाई का उनके माता पिता की सहमति से समारोह के साथ पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। —मन्त्री

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं. ७।२८-२-८५

कार्तिक कृष्ण ५, रविवार, संवत् २०४४ वि०, दिनांक ११ अक्टूबर १९८७

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल

विक्रमादित्य 'वसन्त'

'वेद वारिधि'

★

प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए.

★

आचार्य देवव्रत अवस्थी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०

साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	१५१)
वार्षिक	१५)
छमाही	११)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	६०
अङ्क	४०

हा हन्त !

पराकाष्ठा - - - - अन्धविश्वास की ! सड़ीगली मान्यताओं की ! !

सतियों के देश में - - सती के अपमान की ??? — —

और वह जल गई, जलती हुई चिता में पति के मृत शरीर के साथ—क्यों ?

इसलिए नहीं कि वह जलना चाहती थी, इसलिए नहीं कि कोई स्वर्गीय आत्मा उसे बुला रही थी, इसलिए नहीं कि उसकी चिता पर हर बरस मेले लगेंगे ··· ··· वह इसलिए जली कि जिस समाज मे उसे अब वैधव्य की धधकती अग्नि मे तिल तिलकर जलते जीना होगा, उससे यह जल जाना उसने ज्यादा अच्छा समझा । अब लोग उसे घृणा भरी दृष्टि से देखेंगे तो नहीं, अब समाज उसके सुहाग का सिन्दूर पोंछकर, हाथ की चूड़ियाँ तोड़कर, कोने मे बिठाकर दुत्कारेगा तो नहीं । और "अब तो उसकी राख माथे पर लगाई जायेगी, उसका जयजयकार होगा" ··· ··· ।

और··· ··· ४ सितम्बर को, राजस्थान के देवराला गांव मे जलती हुई चिता मे बैठकर १८ वर्ष की भोली भाली रूपकुंवरि ने सड़े गले हिन्दू समाज के जर्जर शरीर को झकझोर कर रख दिया, उसकी तड़पती आत्मा ने अट्टहास करते हुए चीखते हुए पुकारा-"मेरे प्यारे समाज और धर्म के ठेकेदारो! -"मैं जली नहीं हूं, जलाई गई हूं' धर्म के नाम पर, पातिव्रत्य के नाम पर । जरा मुझे बताओ तो सही—"मुझ निर्दोषिनी पर यह अत्याचार किस धर्म शास्त्र में कहां लिखा है, किस मसीहा ने कहा है··· ··· ··· ··· ?

उत्तरप्रदेश की आर्य (हिन्दू) जनता इस क्रूरतम घृणिततम, अमानवीयतम, अवैदिक कुप्रथा का घोर तम विरोध करती है । जिस पवित्र वेदवाणी ने "सत्येन पन्थाः विततो देवयानाः" "जया पत्ये मधुमतीम्" कहकर सत्यपथगामिनी, सत्यविज्ञानुरागिणी, महनीया, पूज्यनीया, सर्वगुणसम्पन्ना विदुषी स्त्री को 'सती' बताया है वहां मध्ययुगीन वाममार्गी कुप्रथाओं ने, विदेशियों के आक्रमण के समय, अपनी लज्जा को बचाने हेतु विवश होकर जौहर करके मर जाने वाली वीरांगनाओं के मात्र अन्धानुकरण ने, बीसवीं शताब्दी के इस अन्तिम दशक मे फिर उसी बर्बर, अमानवीय प्रथा की याद दिला दी जब पति के साथ, हमारे देश में, स्त्रियों को जलकर मरजाने के लिए बाध्य किया जाता था । सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द और राजा राममोहन राय ने इस कलंकित प्रथा का घोर विरोध किया था और इसे रोकने के लिए कानून का संरक्षण दिलवाया था । जौहर करने वाली वीरांगनाओं के उस कृत्य का आर्यसमाज ने कभी समर्थन नहीं किया । आपद्धर्म ही क्यों न हो, वेद के शब्दों में परिस्थितियों से जूझते रहना वीरों/वीरांगनाओं का कर्त्तव्य है । आत्महनन् पाप है, घोर पाप? "अन्धंतमः प्रविशन्ति ये के च आत्महनो जनाः" ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश इस वेदविरुद्ध, समाजविरुद्ध वीभत्सतम काण्ड की घोर भर्त्सना करती हुई शासन से अपराधियों को कठोरतम दण्ड देने तथा देश की युवा पीढ़ी को इस कुप्रथा के विरुद्ध अभियान छेड़ने का आह्वान करती है ।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

ले आंख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—कार्तिक कृष्ण ५ सम्वत् २०४४ रविवार ११ अक्टूबर १९८७, दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८७

शालीनतां न परित्यजेत्

खेद है कि आज जहां नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है वहीं व्यवहार और प्रयोग मे प्रायः ऊंचे पदो पर प्रतिष्ठित व्यक्ति भी शालीनता एव वाक् परिमिता का परित्याग कर रहे हैं विचार विहीनता के साथ केवल अपने अधिकारी या स्वामी को प्रसन्न करने के लिए असंगत भाषा और मर्यादा रहित शब्दों का प्रयोग साधारण बात है, दैनिक जीवन और व्यवहार मे यह दृष्टिगोचर होता है।

कांग्रेस प्रधान श्री राजीव गांधी ने कांग्रेस के कार्य को सुचारुता से सम्पादन हेतु पांच महामन्त्रियों की नियुक्ति की उनमें एक सज्जन श्री के०एन०सिंह जी भी हैं जो सांसद हैं, आशा थी कि श्री सिंह कांग्रेस को जनसम्पर्क के निकट लाने में कोई सराहनीय प्रयास करेंगे परन्तु उन्होंने प्रदेश के वरिष्ठ प्रतिष्ठित व्यक्ति राष्ट्रसेवी हिन्दी उन्नायक और आर्य समाज के वरिष्ठ नेता राजर्षि रणञ्जयसिंह जी के ऊपर शालीनता विहीन शब्दों की बौछार कर दी तथा उन्हें अंग्रेजों का एजेण्ट और छिपे शब्दो में देश के साथ द्रोह करने वाला कहा इतना ही नहीं महात्मा गांधी के हत्या काण्ड से भी सम्बन्ध जोड़ा इससे अधिक राजर्षि के प्रति और क्या कहा जा सकता है, क्या इससे कांग्रेस की छवि बनी या श्री के० एन० सिंह की गरिमा में चार चांद लगे। अपितु यह भाषित हुआ कि कांग्रेस के महामन्त्री पद को विभूषित करने वाला व्यक्ति विचारों में कितना उथला है यह प्रकट होता है।

उत्तर प्रदेश में जो दो राज्य हैं अमेठी और कालाकांकर जहां राष्ट्र सेवकों—सामाजिक कार्यकर्ताओं और बड़ी राष्ट्रीय विभूतियों जैसे मदन मोहन मालवीय और मोतीलाल नेहरू तक को सुविधा मिली। अमेठी का राज्य देशभक्ति समाज सेवा शिक्षा प्रसार में अग्रणी रहा और ब्रिटिश शासन का कोप भाजन रहा। सम्प्रति राजर्षि रणञ्जयसिंह जी अमेठी के राजा है। वयोवृद्ध हैं नब्बे के निकट पहुंच रहे हैं तथा सारे प्रदेश में अपनी राष्ट्र सेवा—साहित्य प्रोत्साहन एव शिक्षा क्षेत्र में प्रसार के लिए प्रतिष्ठित हैं। आर्यसमाज के सेवक और महर्षि दयानन्द सर-स्वती के सच्चे सैनिक के रूप में आर्यसमाज के उद्देश्यों को मूर्तरूप देते रहे। अमेठी में डिग्री कालेज राजर्षि की देन है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के दो बार प्रधान रहे और संसद सदस्य होते समय सेठ गोविन्ददास के सदैव दाहिने हाथ रहे। जहां सेवा की जनता के दुःखों के निवारण की पुकार हुई राजर्षि सदैव आगे रहे।

अमेठी राज-भवन में राष्ट्रीय नेताओं, प्रधान मन्त्रियों, उच्चकोटि के विद्वानों का स्वागत हुआ। राजर्षि के हाथों उन्हें मधुपर्क प्राप्त हुआ यही कारण है कि अमेठी की जनता विशेष रूप से और उत्तरप्रदेश की सामान्य रूप से राजर्षि का आदर करती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्तर प्रदेश का

वार्षिक बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन का कार्यक्रम

आपत्ति प्राप्त करने की अन्तिम तिथि	१५–१०–८७
आपत्तियों की सुनवाई एवं समाधान	१६–१०–८७ से २०–१० ८७ तक
शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	२७–१०–८७
सभा का बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	१४ व १५ नवम्बर ८७

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दिनांक २ अगस्त १९८७ को सभा भवन लखनऊ में सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में हुई और उसमें बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ.

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

सभा मन्त्री का पूर्वाञ्चल में व्यापक जन सम्पर्क

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के मन्त्री, श्री मनमोहन तिवारी ४ व ५ अक्टूबर १९८७ को प्रदेश के पूर्वाञ्चल भाग में स्थित समस्त आर्यजनों से सम्पर्क कर रहे हैं। वे ४ अक्टूबर को प्रातः १० बजे "आर्यसमाज मन्दिर—गांधीनगर, बस्ती" में जनपद की समस्त आर्य समाजों के एकत्रित कार्यकर्त्ताओं से मिलेंगे तथा सायंकाल ५ बजे "आर्यसमाज मन्दिर देवरिया—मालवीय रोड पर" जिले की समस्त आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करेंगे।

५ अक्टूबर को प्रातः ८ बजे आ० स० मन्दिर बक्शीपुर (गोरख-पुर) में जनपद के समस्त आर्यजन एकत्रित होंगे तथा सायंकाल ५ बजे वे मऊनाथभंजन (आजमगढ़) में आर्य कार्यकर्त्ताओं के सम्मेलन में भाग लेंगे। मार्ग मे बढ़हलगंज, कोपागंज, आदि आर्यसमाजो के कार्यकर्त्ताओ से भी सम्पर्क करेंगे। विस्तृत जानकारी के लिए डा० विनयप्रताप संयोजक पूर्वी प्रचार विभाग आ० स० बक्शीपुर (गोरखपुर) से सम्पर्क करें।

राजनीति में विचार वैषम्य रहता है इसका तात्पर्य नहीं कि कीचड़ उछाला जाय जो के० एन०सिंह के उद्गारो से राजर्षि पर कोई प्रभाव नहीं जनता उनका आदर करती है, अपितु यह प्रतीत होता है कि जिस कांग्रेस मन्त्री पद पर आचार्य कृपलानी जैसे मनीषी विराजमान रहे वहां आज विचार विवेक रहित व्यक्ति बैठे हैं इसे सम्भव है श्री राजीव जी भी पसन्द नहीं करेंगे कि शालीनता को छोड़कर केवल उन्हें खुशामद से गुमराह किया जाय।

—प्रो० रमेश चन्द्र अवस्थी एम० ए०

गंभीर स्थिति

[श्री प्रभात कुमार—न्याय मार्ग, इलाहाबाद]

आज से ५०–६० वर्ष पूर्व आर्य समाज के भजनीक प्राय. एक गीत गाते थे जिसकी ये दो पक्तिया थी।

आवेंगे खत अरब से, जिनमे लिखा यह होगा।
गुरुकुल का ब्रह्मचारी, हलचल मचा रहा है।

इन पक्तियो से यह आशा प्रकट की जाती थी कि गुरुकुल के स्नातक देश-देशान्तर मे वैदिक धर्म का प्रचार करेंगे, किन्तु यह आशा फलीभूत नही हुई। अब स्थिति यह है कि खाड़ी देश के समृद्ध देश भारत के हिन्दुओ को मुसलमान बनाने मे अत्यन्त प्रयत्नशील हैं जिसका परिणाम दृष्टिगोचर हो रहा है। स्थान-स्थान पर हरिजन या पिछड़ी जाति के हिन्दू वर्ग को मुसलमान बनाया जाता है। परिस्थिति अत्यन्त गभीर है आर्य समाज जो हिन्दू जाति का रक्षक है वह स्वय साधनहीन होने के कारण मुसलमानो के प्रयत्नो का सरलता पूर्वक निवारण करने मे असमर्थ-सा है। आज मुस्लिम विद्वान इस्लाम को शान्ति का सदेश-वाहक बताते हैं कुरान के ऊपर उनके विद्वान नयी नयी टीका कर रहे है, देवबन्द मे कुरान के अध्ययन के लिए विदेशो से विद्यार्थी व विद्वान आते है। ससार के सभी देशो मे मुसलमान हैं और उनकी सख्या मे वृद्धि हो रही है। उनके बढ़ते प्रभाव को रोकने का कोई उचित उपाय नहीं किया जा रहा है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे कुरान की जो समीक्षा की वो एक प्रकार से सकेत-मात्र थी उससे इस्लाम जगत मे खलबली मच गई थी। आवश्यकता है कि सार्वदेशिक सभा आर्य समाज के उन विद्वानो की एक समिति का गठन करे जो वैदिक धर्म और कुरान के पंडित हो, वे मिलकर कुरान की समीक्षात्मक एक बृहद् ग्रथ की रचना करें जो अग्रेजी और अरबी भाषा मे प्रकाशित हो। एक विद्वान ने (दी एज ऑफ रीजन) नामक पुस्तक ईसाईमत के खण्डन मे लिखी थी जिससे सारे यूरोप मे तहलका मच गया था ईसाईमत और इस्लाम दोनो बाइबिल व कुरान पर आधारित हैं। ज्ञान और साइस के प्रसार से पढ़े लिखो का दृष्टिकोण बदल गया है यह दूसरी बात है कि इस्लाम अंध-विश्वास पर आधारित है और तर्क उसमे कुफ्र है फिर भी अनेक विद्वान मुसलमान आर्य समाज मे दीक्षित हो चुके हैं वैदिक सिद्धान्त ज्ञान विज्ञान तर्क, सगत है कोई कारण नहीं तुलनात्मक दृष्टि से हम उसे श्रेष्ठ न सिद्ध कर सकें और हृदय परिवर्तित न कर सके तो भी प्रयत्न करना हमारा कर्तव्य है। मैने एक पटना के भूतपूर्व इमाम जिसका नाम मुझे याद नहीं आ रहा है और जो अब आर्य समाज के प्रसिद्ध उपदेशक हैं उनसे मैने कहा था कि कुरान के ऊपर एक पुस्तक लिखें उन्होने कहा था कि वे कुछ और व्यक्तियो की सहायता से कुरान की समीक्षा विषयक पुस्तक लिख सकते हैं किन्तु इसमे सहायता की आवश्यकता है। यह कार्य अत्यन्त आवश्यक है यदि ऐसी पुस्तक से शिक्षित लोगो को यह बताया जा सके कि कुरान मे वर्णित बातें आज ज्ञान-विज्ञान के सिद्धान्तो के बिल्कुल विपरीत हैं तो कोई कारण नहीं कि उनके कुरान विषयक विचार परिवर्तित न हो सकें।

मुसलमानो मे अहमदिया कादियानी सम्प्रदाय के सस्थापक ने १८९९ मे कुरान पर आधारित अपना ग्रथ लिखा था जिससे खास तौर पर यह बताया गया था कि मुहम्मद साहब के बाद भी कुरान के ही अनुसार और पैगम्बर होगे और स्वय कादियानी दूसरे पैगम्बर हैं। उस पुस्तक के प्रकाशित हुये अभी सौ वर्ष पूरे नहीं हुए हैं पर ससार के अनेको देशो मे कादियानी हैं जिनकी सख्या एक करोड से अधिक है। आर्य समाज की स्थापना को सौ वर्ष से अधिक हो चुके हैं और अभी हम एक करोड की सख्या मे नहीं हैं। आर्य समाज के नेताओ को गभीरता से विचारना चाहिए कि क्या हमारी प्रगति सतोषजनक है और हम स्वय सोचें कि हम महर्षि के बताये सिद्धान्तो पर कहा तक आचरण कर रहे हैं हम कितना वेदो का स्वाध्याय करते हैं। हम जिन मन्त्रो का पाठ करते हैं उनको जानते हैं या नहीं। क्या कारण है आज हमे समाज मे वह प्रतिष्ठा व सम्मान मिला है जैसा कि आज से ५० वर्ष पूर्व जनता मे उसका सम्मान होता था। समय की पुकार है कि हम आर्य समाज की प्रगति के लिए ठोस प्रयत्न करें जिससे क्या वह वास्तव मे देश की सामाजिक, राजनैतिक एव धार्मिक उन्नति के लिए एक वास्तविक शक्ति सिद्ध हो।

वृष्टि यज्ञ से वर्षा

गत ५ अगस्त से १२ अगस्त तक सुखद वर्षा हेतु मण्डी समिति प्रागण मे आर्य समाज खण्डवा की ओर से वृष्टि महायज्ञ का आयोजन किया गया। इसमे ८ से १० इन्च तक वर्षा हुई। यज्ञ के ब्रह्मा पडित राजगुरु शर्मा ने कहा कि भारतीय सस्कृति मे सबसे पहले व्यक्ति का चरित्र श्रेष्ठ होना चाहिए। उसकी कथनी, करनी मे अन्तर नहीं होना चाहिए।

इस यज्ञ मे ३५ यजमान बैठे। १२ तारीख को यज्ञ के समापन के बाद पंडित राजगुरु का नागरिक अभिनन्दन किया गया।

तपोवन में वृहद् यज्ञ एवं साधना-शिविर

वैदिक साधन आश्रम, पोवन देहरादून का अर्द्धवार्षिक बृहद् यज्ञ एव साधना-शिविर ५ अक्टूबर से ११ अक्टूबर १९८७ तक आयोजित किया जाएगा।

सप्ताह–भर आचार्य शिवाकान्त उपाध्याय जी के वेद प्रवचन होगे यजुर्वेद यज्ञ की ब्रह्मा डा० श्रीमती ब्रह्मवती नारग विद्यालकृता एम० ए०, पी० एच–डी० होगी। पूरा आयोजन महात्मा दयानन्द जी वान-प्रस्थ के सरक्षकत्व मे होगा। देवदत्त बाली

मन्त्री, वैदिक साधन आश्रम

विशाल शोभा यात्रा

आर्य समाज खासपुरा डा० खास जनपद बिजनौर के प्रांगण मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष मे विशाल यज्ञ कराया गया यज्ञ मे चार व्यक्तियो ने यज्ञोपवीत भी लिया। १६–८–८७ के साय ४ बजे से नगर कीर्तन निकाला गया जिसमे भारी जनसमूह ने भाग लिया।

विजयादशमी शोभा यात्रा

किशन नगर आन्ध्र प्रदेश की आर्यसमाजो की एक विशाल शोभा यात्रा (जलूस) शुक्रवार दिनाक २ अक्टूबर १९८७ को आर्य समाज कृष्णगज से दिन के ३-०० बजे निकल कर आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग (सुलतान बाजार) होते हुए नरेन्द्र मैदान (राज मोहल्ला) पहुच कर आम सभा मे परिवर्तित होगा। जहा विद्वानो के प्रवचन होगे।

भारत भूमि हमारी माँ है, हम सब प्यार से रहें

[स्वतंत्रता दिवस पर सभा प्रधान पं० इन्द्रराज जी का उद्बोधन]

(१) हरिशंकर आर्य विद्यासदन आनन्दपुरी में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। यज्ञ के उपरान्त आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान ने ध्वजारोहण किया तथा बच्चों को आशीर्वाद दिया। श्री स्वराज्यचन्द्र जी प्रबन्धक ने धन्यवाद किया।

(२) गोदावरी देवी आर्य विद्यासदन मुफ्तीवाड़ा में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। श्री मनोहर लाल जी सर्राफ प्रधान ने ध्वजारोहण किया। श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, श्री राधेलाल जी सर्राफ एवं प्रबन्धक श्री स्वराज्यचन्द्र जी उपस्थित थे।

(३) युवा मञ्च प्रह्लाद नगर की ओर से रामलीला मैदान में प्रह्लाद नगर में स्वतंत्रता दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमें क्षेत्रीय नागरिकों ने अधिक संख्या में भाग लिया। श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने ध्वजारोहण किया। तदुपरान्त श्री इन्द्रराज जी ने स्वतन्त्रता दिवस की मुबारिक बाद देते हुए जनता से अनुरोध किया कि वे निर्भय बनें। आतंकवाद और उग्रवाद का मुकाबला करें। विदेशी शक्तियों के इशारों पर जो अपने नगर में साम्प्रदायिक दंगा हुआ यह बहुत ही दुर्भाग्य पूर्ण था। इससे हिन्दू-मुसलमान, श्रमिक, व्यापारी को बहुत ही हानि हुई है। जब हमें इसी देश में रहना है। जन्म भी इसी देश मे लेना है और इसी देश की धरती में समाना है तो परस्पर झगड़ा कैसा ? भारत हमारी मातृभूमि है इसके प्रति अटूट प्यार का हमें व्रत लेना होगा। आज के दिन हम सब शपथ लें कि हम अपने प्राणों की बलि देकर भी अपने देश की रक्षा करेंगे। इसके टुकड़े नहीं होने देंगे। संयोजक अधिकारी वर्ग ने सभा प्रधान का धन्यवाद किया।

(४) आर्य विद्या सदन थापर नगर में स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया। श्री इन्द्रराज जी प्रधान ने अपने आशीर्वाद में छोटे बच्चों को बताया किस प्रकार से हम लोग गुलाम थे। अब हमें आजादी मिली है तो तुम छोटे बच्चों को ही बड़े होकर इस आजादी की रक्षा करनी है। परस्पर मिलकर ही हम अपनी आजादी की रक्षा कर सकते हैं।

(५) आर्य कन्या इण्टर कालेज मेरठ शहर में स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया। श्री मनोहर लाल जी प्रधान ने ध्वजारोहण के पश्चात् बच्चों में बोलते हुए बताया कि जबसे हम आजाद हुए हैं तब से हमने बहुत उन्नति की है। इस उन्नति को जारी रखने का काम बच्चों का है हमें आशा है कि ये बच्चे बड़े होकर स्वतन्त्रता की रक्षा करेंगे।

श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि इस छोटी आयु में ही हमें जातिवाद, सम्प्रदायवाद और रूढ़ीवाद से ऊपर उठने के संस्कार डालने चाहिए। उन्होंने बच्चों को बताया कि अंग्रेज लोग हमें बन्द करते थे। हम पर गोली चलाते थे और हमारे देश का धन इंगलैण्ड में पहुंचाते थे। हम लोगों ने स्वामी दयानन्द के बताए रास्ते पर चलकर महात्मा गाँधी जी के नेतृत्व में अंग्रेजों को मार भगाया। परन्तु आज बड़े दुःख की बात है कि अपने ही देश के लोग देश का धन स्विसबैंकों में पहुंचाते हैं। साम्प्रदायिक हिंसक वृत्तियों का शिकार होकर भाई-भाई आपस में एक दूसरे का रक्त बहाते हैं। इससे भारत कमजोर होता है। आज के दिन हमें संकल्प लेना है कि हम कभी नहीं लड़ेंगे। मिलकर रहेंगे। अपने देश की स्वतन्त्रता, अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा अपना खून बहाकर भी करेंगे।

श्री स्वराज्य चन्द्र जी प्रबन्धक ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि आज स्वतन्त्रता दिवस भय-आतंक के साए में मनाया जा रहा है। हमें लाउड स्पीकर लगाने की भी स्वीकृति प्रदान नहीं की गई। यदि शिक्षण संस्थाओं में लाउड स्पीकर लगाने की स्वीकृति दी गई होती तो सारा नगर राष्ट्रीय गानों से गूंज उठता। बच्चों को आज के दिन संकल्प लेना चाहिए कि वे अपने पवित्र आचरण से भारत को महान बनायेंगे।

कर्म काण्ड प्रशिक्षण शिविर

ज्ञानपुर (वाराणसी) विश्व-भारती अनुसंधान परिषद् में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के सहयोग से २१ दिवसीय 'कर्म कांड प्रशिक्षण शिविर (१९ अगस्त से ८ सितम्बर) की व्याख्यान माला का शुभारम्भ गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी के व्याख्यान से हुआ। डा० द्विवेदी ने व्याख्यान माला के निर्धारित विभिन्न विषयों और आमंत्रित वक्ताओं का परिचय देते हुए कहा कि यही १६ संस्कारों के माध्यम से ही व्यक्तित्व का पूर्ण विकास सम्भव है।

इसी व्याख्यान माला में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने "कर्मकाण्ड की महत्ता विषय पर अपने रोचक सारगर्भित व्याख्यान में कहा कि विभिन्न संस्कार और पर्वोत्सव आर्य संस्कृति के मेरुदण्ड हैं, इन्हीं के कारण दासता की लम्बी अवधि में अनेक झंझावातों और प्रहारों को झेलकर भी हमारा धर्म और हमारी संस्कृति जीवित रह सकी है।

आपने कहा कि विविध संस्कारों में विधिवत् दीक्षित होकर हमारा बालक आर्य संस्कृति का गौरव पुनः स्थापित कर सकता है।

अत. आज बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि गाँव-गाँव शहर-शहर ऐसे कर्मकाण्ड शिविर आयोजित किए जाएं।

डा० भारतेन्दु द्विवेदी ने गायत्री आदि दैनिक हवन-यज्ञ मंत्रों का परिचय देकर इनके महत्व के प्रभाव को निरूपित किया।

डा० विभु राम मिश्र ने "विभिन्न संस्कारों के आध्यात्मिक और लौकिक पक्ष का विवरण आज के सन्दर्भ में सिद्ध किया।

डा० राधा मोहन ने यज्ञ की उपयोगिता आज के सन्दर्भ में सिद्ध की उन्होंने कहा चरित्र संकट के इस वर्तमान युग में पवित्र कर्म अनुष्ठान से बढ़कर कोई यज्ञ या हवन नहीं है। श्रीमती सविता द्विवेदी ने 'विवाह संस्कार' के महत्व का निरूपण करते हुए बताया कि पूरी दुनियां में हिन्दू विवाह सर्वश्रेष्ठ विवाह अपनी गौरवमयी संस्कृति के कारण माना जाता है।

डा० चन्द्र विजय चतुर्वेदी ने "यज्ञ का वैज्ञानिक महत्व" विषय पर बोलते हुए कहा कि कर्मकाण्ड संस्कार यज्ञ आदि का वैज्ञानिक ढंग से परीक्षण करके ही इनके प्रति लुप्तप्राय संस्कृति पुनः जागृत की जा सकती है।

प्रो० अरुण प्रकाश श्रीवास्तव ने शैक्षणिक संस्कारों के महत्व, श्री डा० अर्जुन राम यादव ने "संस्कार और संस्कृति पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

कविता

सम्बन्धों को न बिसारें

धर्म न देता कहीं बढ़ावा कटुता को है भाई,
संस्कारों से शून्य न करती संस्कृति जीवनदायी।
सच तो है यह मानवता का हित करती जो जग मे,
जाति अमर वह कभी न मरती, जीती है हर युग में।
इसी जाति के होकर भी तुम हिंसा को अपनाते,
निर्मम हो निर्दोष जनो का खुलकर खून बहाते।
कहते खुद को राष्ट्र भक्त हो, दम्भ ज्ञान का भरते,
मांग स्वदेश-विभाजन की तुम बड़े गर्व स करते।
खेल विदेशी हाथों में तुम स्वाभिमान ले डूबे,
रख विवेक को ताख, रहे हो बांध बड़े मन सूबे।
अपने इन काले कर्मों पर कुछ तो अब शरमाओ,
नाम धर्म का लेकर ताण्डव और न अधिक रचाओ।
गुरु-वाणी को नहीं भुलाओ, 'पथ' नहीं बिसराओ,
विघटनकारी बन जननी का पावन पय न लजाओ।
इस धरती पर जन्मे सारे प्राणी एक सरीखे,
रक्त किसी का लाल भला क्या हरा किसी का दीखे?
पंचतत्व से निर्मित हैं सब, सबमे अंश बराबर,
सुख दुख की अनुभूति एक सी, रंच नहीं है अन्तर।
अन्तर मे अपने तुम सोचो कुछ तो हाय! विचारो,
बहकावे में आकर निज सम्बन्धो को न बिसारो।
तुम्हीं बताओ सार्थक कितना खालिस्तानी नारा,
भारत मा के तुम सपूत अब सारा देश तुम्हारा।

—डा० गणेशदत्त सारस्वत

पता—सारस्वत–सदन, सिविल लाइन्स, सीतापुर (उ० प्र०)

आवश्यक सूचना

दयानन्द सभा के सभी अवैतनिक उपदेशकों को सूचित किया जाता है कि सभा की वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित होने जा रही है अतः आप से निवेदन है कि वर्ष ८५–८६ की सम्मिलित संक्षिप्त अपने कार्यकी रिपोर्ट ३–११–८७ ई० तक कार्यालय अधिष्ठाता उपदेश विभाग के नाम प्रेषित करने का कष्ट करें; जिससे उसे प्रकाशित कराया जा सके। अन्यथा छपने से रह जावेगी।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

महिलाओं व युवकों का सामूहिक यज्ञोपवीत

आर्य समाज टाण्डा अफजल मुरादाबाद के तत्वावधान में नौमी मेला में वेद प्रचार का प्रभावी आयोजन किया गया। वहाँ पांचों यज्ञ कराये गये। पांच नवयुवकों व दो महिलाओं के यज्ञोपवीत हुए।

शोक समाचार

क्षेत्रीय आर्य परिषद् हरिद्वार में क्षेत्र के प्रमुख समाज–सेवी श्री राम भरोसे लाल वर्मा संरक्षक आर्य समाज बी० एच० एल० रानीपुर के दिनांक २५–८–८७ को असामयिक निधन पर एक शोक सभा में हार्दिक सम्वेदना प्रकट की गयी।

गुँजाएं वेद संदेश

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ. प्र.)

वेद पढ़ें हम तथा पढ़ाएं,
वेदों का हम करें प्रचार।
वेदों के पथ पर चलने को
उन्नत जिससे हो संसार।

ऋषि-मुनियों के निर्देशों का,
जीवन में करके अनुपालन।
आर्य बनें हम तथा बनाएं–
आर्य जगति के सारे जन।

मानवता के पद चिन्हों पर,
चले निरन्तर वसुन्धरा।
मानवता के शुभ तत्वो से,
पुण्य बने यह विश्व धरा।

दानवता के तत्व सभी जो,
विस्तृत है भू पर अविराम।
क्षत विक्षत हो इस धरती से,
बने धरित्री ललित ललाम।

ज्ञान-प्रदीप जले उर-उर में,
स्वर्ग सदृश हो सतत स्वदेश।
वैदिक धर्म ध्वजा लहराएं,
गुंजाएं आर्य यही संदेश।

—————

वेदानन्दो हा ! दिवंगतः

संस्कृत के उच्चकोटि के विद्वान श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ के प्रस्तोता स्वामी वेदानन्द जी वेदवागीश के अचानक निधन से सुरभारती का अनन्य उपासक हमारे बीच से उठ गया। स्वामी जी महाराज संस्कृत के उच्चकोटि के विद्वान लेखक, एवं वक्ता थे। उनके अचानक निधन से गुरुकुल प्रभात आश्रम परिवार को महान कष्ट हुआ। उनकी पुण्य स्मृति में एक शोक सभा का आयोजन गुरुकुल के आचार्य पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में हुआ। ब्रह्मचारियों ने उस दिवंगत आत्मा के प्रति भाव भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

स्वामी जी महाराज जहाँ सरस्वती–सेवक थे वहां उज्ज्वल आदर्शों के प्रति भी अगाध आदर रखते थे। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक द्वारा आयोजित परीक्षाओं मे गुरुकुलीय छात्रों द्वारा हुई अनुकरण की प्रवृत्ति को देखकर उनकी आत्मा चीत्कार कर उठी और वहा उस केन्द्र पर प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों को अनुकरण न करते हुए देखकर वे अति प्रसन्न हुए तथा ब्रह्मचारियों को शुभ आशीर्वाद प्रदान किया। इतना ही नहीं, इस सम्बन्ध में उन्होंने गुरुकुल प्रभात आश्रम के आचार्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज को एक पत्र भी लिखा। उनका पत्र सत्यमार्ग पर चलने वालों को आज भी प्रोत्साहन दे रहा है। दु:ख है कि क्या हम लोग उसका पालन कर सकेंगें।

मन्त्री गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु आवश्यक सूचना

समस्त आर्यसमाजों, जिला उपसभाओं एवं शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० को शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं कवि सम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमें विभिन्न वाद-विवाद प्रतियोगिताएं तथा सम्मेलनों के अंश सम्मिलित हैं तथा विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की वी० डी० ओ० (फिल्म) कैसेट प्रतिनिधि सभा के कार्यालय ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ में बिक्री हेतु उपलब्ध है।

जो सज्जन अथवा संस्थाएं इन्हें प्राप्त करना चाहती हैं वह श्री विश्वम्भर दयाल गुप्ता, व्यवस्थापक 'आर्यमित्र', ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आर्डर देकर प्राप्त कर सकते है। मूल्य सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसेट १०००) में। मूल्य २०) रु० प्रति कैसेट के हिसाब से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिनकी संख्या ३० है तथा कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) ५) रु० प्रति फोटो के हिसाब से उपलब्ध है।

शताब्दी पर पधारे हुए संन्यासियो, विद्वानों एवं उपदेशको, प्रचारकों के महत्वपूर्ण उपदेश तथा कवि सम्मेलन (सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कैसेट मूल्य १००) रु० मे उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया एवं पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें भी १७, १८, १९, २० अक्टूबर के एक-एक दिन के अलग से रिकार्डिंग कैसेट अलग से मिल सकते हैं। बड़ी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध की जा सकती है।

आर्यसमाज के कार्यक्रम तथा सभा की शताब्दी–स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओं को ऐसे चित्र एव कैसेट प्रचार कार्य मे बहुत सहायक होंगे।

अतः कृपालु पाठक शीघ्र आर्डर भेजकर लाभ उठावें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

पुस्तक-परिचय

पुस्तक का नाम– – – –"परमाणु दर्शनम्"
लेखक– – – – – पंडित जगदीश आचार्य,
प्रकाशक – – – – श्रीमती गायत्री देवी, अध्यक्षा
बालार्क संस्कृत अनुसन्धानाश्रम
वेद मन्दिर, महसी बाजार, बहराइच
मुद्रक – श्री सुरेन्द्र कुमार कपूर रामलाल कपूर ट्रस्ट सोनीपत
पृष्ठ संख्या–७२ मूल्य–१० रुपये

इस भौतिक सृष्टि का मूलतत्व "परमाणु" है जो प्रलयावस्था में गतिहीन, निश्चेष्ट एवं निष्क्रिय पड़ा रहता है। यह सृष्टि की प्रकृत (मूल) अवस्था है। "वेद" इसे "तम आसीत्तमसागूढमग्रे… … … … अर्थात् अन्धकार से भी न जानने योग्य ऐसा गूढतम अन्धकार, कह कर, सृष्टि के इस प्रकृत रूप का वर्णन करता है। किन्तु एक समय ऐसा आता है, जिसका ज्ञान परमात्मा को होता है, जो स्वयं इस मूल से भिन्न नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वरूप, अविच्छिन्नाविच्छिन्न ज्ञानवान् अणु है, और जिसकी महनीय एवं कमनीय कृपा के कारण ही जगत अपने इस मूलरूप छोड़कर, उसके असंख्यात असंख्य परमाणु गतिशील होकर, एक दूसरे से मिलते हुए इस महान दृश्यमान जगत की रचना कर देते हैं। इस रचना के मूल में अवश्य निराकार सत्ता की व्यापकता और उसके नियम सर्वत्र कार्य करते हुए दिखाई दे रहे हैं। आत्मा अभौतिक है किन्तु जब वह द्व्यणुकाद्युत्पत्तिक्रम से निर्मित पंचमहाभूतमयी सृष्टि के आवरण में बद्ध हो जाता है तो पञ्चेन्द्रिय विषयी भोगों का उसे अनुभव होने लगता है किन्तु ब्रह्मानन्द भोग के लिए दोनों (आत्मा+परमात्मा) का अभौतिकी होने के कारण पंचतत्वमयी सृष्टि अथवा पंचेन्द्रिय विषयी शरीर का होना हेतु नहीं है।

विद्वान लेखक ने "परमाणु दर्शन" में परमाणु के स्वरूप की विवेचना करने के साथ ही उसके नियन्ता और अभौतिक आत्मा के समन्वय पर दार्शनिक दृष्टिकोण से गहन प्रकाश डाला है। लेखक ने प्राचीन आचार्यों की शैली में ही योनिज अयोनिज दोनों प्रकार की सृष्टियों का वर्णन करते हुए परमाणु जन्य प्रत्येक पदार्थ की सुन्दर दार्शनिक व्याख्या की है जो पठनीय एवं अनुशीलनीय है। पुस्तक की भाषा संस्कृत, विशुद्ध प्राच्य परम्परा के आचार्यों जैसी सूत्रमयी एवं अतिप्रभावोत्पादिनी एवं प्राञ्जलमयी है। दर्शन विषय के अनुरागी इसे सोत्कण्ठ अध्ययन करेंगे–ऐसा मेरा विश्वास है।

–वसन्त

खालिस्तान नहीं होगा

हिन्दुस्तान अखण्ड हमारा खण्डित हिन्दुस्तान नहीं होगा।
एक धर्म ईमान हमारा खण्ड खण्ड ईमान नहीं होगा।
उग्रवाद की खूनी राहों में कोई इन्सान नहीं होगा।
खाली स्थान भले हो जाये खालिस्तान नहीं होगा॥
पाकिस्तानी नापाक इरादों की तस्वीर न बनने पाएगी।
खुल्लम खुल्ला विद्रोही की तकदीर न जगने पाएगी।
अंग्रेजियत गुलामी हिंसा की ये हवा न चलने पाएगी।
विध्वंसक विलासिता की रानी अब नहीं थिरकने पाएगी॥
अपनी हिन्दी माता की ये बिन्दी नहीं बिगड़ने पाएगी।
देश भक्ति से भरी हुई ये हिन्दी नहीं उजड़ने पाएगी।
यह भारत है हर बच्चे मे आत्मा भगत की आएगी।
वीर हकीकत बन अपने प्राणों की बलि दे जाएगी॥
राणा प्रताप की हल्दी घाटी का हर्गिज अपमान नहीं होगा।
मान और जयचन्दों का अब यहां निशान नहीं होगा।
पृथ्वीराज की भूलों का फिर से दोहरान नहीं होगा।
अब छद्माचारों से इतिहासो का उत्थान नहीं होगा॥
गुरुओं का गुरुबानी का अवसान नहीं होने देंगे।
कुरबानी की उस वाणी का सम्मान नहीं खोने देंगे।
अपनी भारत माता का अपमान नहीं होने देंगे।
हम मानव हैं मानवता को शैतान नहीं होने देंगे॥
हिन्दुस्तान अमर है मेरा मुर्दा हिन्दुस्तान नहीं होगा।
खाली स्थान भले हो जाये खालिस्तान नहीं होगा।
हिन्दुस्तान अखण्ड हमारा खण्डित हिन्दुस्तान नहीं होगा।
एक धर्म ईमान हमारा खण्ड खण्ड ईमान नहीं होगा॥

–डा० रतनलाल 'रतनेश' संयोजक अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी संसद, जयपुर

सुख शांति का मूलाधार धर्म ही है
धर्म के स्वरूप को पहचान करें

धर्म का नवम लक्षण—सत्य

—आचार्य देवव्रत अवस्थी वेद मन्दिर हिन्द नगर लखनऊ।

सत्य–सच्चाई वह सचाई जिसम झूठ का लेश न हो। परमात्मा की सत्ता का स्वीकारना।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कहते थे सत्य ही परमेश्वर है। मुझे यह अटपटा लगता था। इच्छा थी कि उनका दर्शन करू। साक्षात्कार करके उनसे पूछू सत्य ही–परमेश्वर है यह एकदेशीय बात है सब देशी नही। परन्तु मुझ दर्शनो का सौभाग्य नहीं मिला। उनके इस वाक्य पर समय समय पर चिन्तन अवश्य करने का प्रयत्न करता रहा। मैंने उसके चिन्तन से केवल यही पाया कि परमेश्वर की सत्ता शाश्वत सत्य है। बिना उसे स्वीकार किये, जाने या माने सत्य को नहीं स्वीकार किया जा सकता।

परमेश्वर निराकार है किसी ने किसी मन्दिर मस्जिद गिरजाघर गुरुद्वारे या तीर्थों में ढूंढ ढूंढकर भी उसे नहीं पाया। उसे केवल उसी ने पाया जिसने उसकी इस सृष्टि की निर्मिति को देखकर कर्ता का बोध अपने अन्तरतम मे करने का प्रयत्न किया।

ठीक इसी प्रकार सत्य केवल उसी के जीवन का अंग बनता है जो उसको पाने के लिये सतत चिन्तन प्रयत्न करता है। मैने सुना अमुक व्यक्ति बहुत खराब है। जबकि वास्तव मे वह बहुत सज्जन है। मैने–दूसरे से उसे कह दिया, मैने असत्य नहीं कहा परन्तु है वह असत्य। मैंने उस बात को सुनने के बाद उस व्यक्ति को मिलकर उसको समझने का प्रयत्न किया और उसके व्यक्तित्व को समझ और जान लिया फिर पहली सुनी बात को असत्य मान कर सत्य जो मिला वही दूसरे को बताया। इससे प्यार व स्नेह बढ़ा। पहले बिना विचार व खोज के–असत्य को सत्य समझकर उसे कहने से विग्रह संघर्ष हो सकता था।

आज देश का मूलमन्त्र 'सत्यमेव जयते' होते हुए भी सत्य का विश्लेषण नहीं किया जाता। अपने–स्वार्थों की पूर्ति के लिये असत्य पर सत्य का मुलम्मा चढ़ाकर जन सामान्य को धोखा दिया जाता है। धार्मिक नेता भी इस दोष से वंचित नहीं बल्कि वे–अत्यधिक ग्रस्त होकर अपने कथन को ही सर्वथा–ग्राह्य, स्वीकार्य, मानने का दम्भ करते हैं।

कभी पृथ्वी को चपटी कहा–जाता था परन्तु वैज्ञानिक, विश्लेषणने अपनी निरन्तर खोज के बाद अन्तत पृथ्वी गोल है इस–सत्य को स्वीकारने के लिए सभी को बाध्य किया।

जो व्यक्ति निरन्तर सत्य (वास्तविकता) की खोज मे निर्लेप भाव से चेष्टा करता है वह अन्तत तह मे पहुच कर झूठ व सच को खुलासा कर देता है। जो परमात्मा की–सत्ता की सत्यता को सर्वात्मना स्वीकार करता है वही केवल सत्य के मूल मे पहुचने का साहस कर सकता है। वही केवल सत्य और असत्य का नीर क्षीर विवेकी हंस की तरह खुलासा करके विश्व मे–सुख शांति स्थापित करने मे सहायक हो सकता है।

आर्य समाज द्वारा राहत कार्य

दिल्ली १७ सितम्बर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने सूखा पीड़ितो की सहायता के लिये देश भर की आर्य समाजो तथा आर्य वीर दल के सैनिको का आह्वान करते हुए कहा कि वे संगठित रूप से देश के सूखा पीड़ितो की सहायता मे जुट जावें।

स्वामी जी ने यह घोषणा आर्य समाज रानीबाग (दिल्ली) मे एक वृष्टि यज्ञ का प्रारम्भ करते हुए की। उनकी अपील पर आर्य समाज रानीबाग के सदस्यो ने १०१ बोरी गेहू स्वामी जी को भेंट किया। स्वामी आनन्द बोध जी ने कहा कि रतलाम, झाबुआ, कुशलगढ़, बांसवाड़ा तथा मध्य प्रदेश के उन क्षत्रो मे आर्य समाज सेवा करने के लिए तत्पर है, जहा विदेशी ईसाई मिशनरी सूखा पीड़ितो की गरीबी और बेकारी का लाभ उठाकर सहायता के नाम पर उनका धर्म परिवर्तन कर रहे हैं।

स्वामी जी ने बताया कि आगामी १६–२० सितम्बर को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक मे भी इस विषय पर विचार किया गया। स्वामी जी शीघ्र ही सूखा पीड़ित क्षेत्रो का दौरा भी करेंगे।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी का हिन्दी सेवी के रूप मे अभिनन्दन

दिनांक १४-६-८७ को सायं ५ बजे हिन्दी दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय हिन्दी परिषद् (पंजीकृत) मेरठ की ओर से देवनागरी इन्टर कालेज मेरठ के हाल मे एक भव्य समारोह मे नगर के प्रमुख हिन्दी सेवियो का अभिनन्दन किया गया। मेरठ मण्डलायुक्त मेरठ, माननीय श्री वी०के० दीवान जी ने सभा प्रधान श्री प०इन्द्रराजजी को एक अलंकरण तथा एक दोशाला उढ़ाकर अभिनन्दन किया। इससे पूर्व श्री राजेन्द्र प्रसाद जी गोयल स्वागताध्यक्ष ने माल्यार्पण द्वारा श्री सभा प्रधान का स्वागत सत्कार किया। इसके अतिरिक्त श्री सुन्दर लाल जी जैन, श्री वि० स० जी विनोद, श्री भारत भूषण जी कवि, श्री हरिओंकार कवि, श्रीमती सरला गंग प्रधानाचार्या चावला देवी आर्य कन्या इण्टर कालेज ब्रह्मपुरी मेरठ, श्रीयुत धर्म वीर जी प्रेमी एडवोकेट एवं मणिपुर केन्द्रीय हिन्दी विद्यालय के आचार्य राधा गोविन्द थोडारम का भी अभिनन्दन किया गया

अमर स्वामी जी की स्मृति मे शोक सभा

आर्य समाज दीवान हाल देहलीमे शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी जी महाराज की स्मृति मे आयोजित सभा मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती एवं अन्य अनेक विद्वानो व नेताओं ने अपनी श्रद्धांजलियां–अर्पित कीं।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने उत्तर प्रदेश की–आर्य जनता की ओर से उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे महान–स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी तथा सिद्धान्तों पर–दृढ़ता से शास्त्रार्थ करके ऋषि के मिशन को बढ़ाने वाले अप्रतिम महात्मा थे। उनके–निधन से आर्य जगत का एक उज्ज्वल–नक्षत्र समाप्त हो गया है।

आइये हम भी धर्म के इस नवें लक्षण को–अपने अन्दर धारण करके विश्व को सुख व शांति के मार्ग पर चलाने का संकल्प लें।

आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री अस्वस्थ

उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से यह सूचना देते हुए हार्दिक कष्ट हो रहा है कि आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान माननीय आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री, जो बड़ौदा से सार्वदेशिक धर्मार्य सभा की बैठक तथा सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक मे भाग लेने दिल्ली पधारे थे, अचानक गत १५ सितम्बर १९८७ को उन्हें फालिज(लकवा) का रोग हो गया है। उन्हें तत्काल अस्पताल मे उपचार के लिए दाखिल कराया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती के प्रयत्नो से आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री को दिल्ली के प्रसिद्ध चिकित्सालय गोविन्द बल्लभ पन्त अस्पताल के वार्ड न० १२ मे प्राइवेट कक्ष मे २०८ नंम्बर कमरे मे रखा गया है। आचार्य जी की चिकित्सा की सब प्रकार से समुचित व्यवस्था की जा रही है।

आचार्य जी के यथाशीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य लाभ की प्रभु से प्रार्थना है।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

सम्पादक के पत्र

दंगे हड़ताल अनुचित

भारत राष्ट्र की प्रगति में दंगे एवं हड़ताल प्रमुख बाधक हैं। सत्ता पक्ष एवं विपक्ष दोनों ही अपनी तुच्छ राजनीतिक स्वार्थ की सिद्धि हित इसके लिये समान रूप से जिम्मेदार है।

जिन क्षेत्रों में दंगे होंगे, वहां के जिलाधिकारी एवं एस० पी० को इसका जिम्मेदार मानकर उन्हें दंडित किया जायेगा इसका कानून लोक सभा में पारित हुआ। क्या ये ही वो अधिकारी दंगों के दोषी है। जबकि सच तो यह है कि राजनीति के ठेकेदार पक्ष विपक्ष के नेताओं की ही भूमिका हर दंगों के पीछे रहती है। ऐसी दशा में इन नेताओं को अछूता छोड़कर केवल अधिकारियों को दोषी मानना उचित नहीं। बिडम्बना की बात तो यह है कि ये अधिकारी स्थिति को नियंत्रित करने हेतु यदि उचित बल का प्रयोग करते हैं तो उसे भी अनुचित ठहराया जाता है। सच तो ये है कि यदि नेतागण अपने स्वार्थों एवं वोटों की राजनीति को तिलांजलि दे दें तो दंगे एवं हड़ताल आदि स्वयं नगण्य हो जायं।

पं० दुर्गाप्रसाद भट्ट सामाजिक कार्यकर्ता
दधौली, जनपद—बाराबंकी उत्तर प्रदेश

श्री यशपाल दत्त दिवंगत

श्री विक्रमादित्य वसंत सम्पादक आर्यमित्र के साढ़ू जगाधरी निवासी श्री यशपाल दत्त का ५२ वर्ष की अवस्था में १७—९—८७ ई० को रात्रि तीन बजे देहावसान हो गया। वे कुछ समय से कैंसर रोग से पीड़ित थे। वे अपने पीछे एक अविवाहित पुत्री एवं शिक्षा रत पुत्र व पत्नी छोड़ गए हैं। सभा एवं आर्यमित्र परिवार—की ओर से दिवंगतात्मा को सद्गति-एवं दु:खी परिजनों को धैर्य धारण कराने की प्रभु से प्रार्थना है।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति

चित्रगुप्त मार्ग—नई दिल्ली—११००५५।

डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति की स्थापना शताब्दी समारोह

समिति की स्थापना की शताब्दी संबंधी कार्यक्रमों की शुरुआत जून, १९८६ से हुई थी जब कि नई दिल्ली में एक भव्य समारोह किया गया। तब से अब तक भारत के अनेक नगरों में, अनेक डी० ए० वी० संस्थाओं और आर्य समाजों ने अनेक कार्यक्रम आयोजित किए। अब शताब्दी का समापन समारोह विशाल पैमाने पर रविवार १५ नवम्बर १९८७ को प्रात: १० बजे से नई दिल्ली के प्रसिद्ध तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में मनाया जाएगा। इस अवसर पर समितिके प्रधान माननीय वेद व्यास जी को एक अभिनन्दन ग्रन्थ और एक करोड़ रुपए की थैली भेंट की जाएगी। इस रुपये का सदुपयोग उड़ीसा, बिहार जैसे पिछड़े क्षेत्रों में डी० ए० वी० संस्थाओं को खोलने मे किया जाएगा। जिन सज्जनों ने डी० ए० वी० आन्दोलन को सफल बनाने के लिए अथक परिश्रम और त्याग किया है, उनका सार्वजनिक स्वागत भी किया जायेगा।

२—समारोह के मुख्य अतिथि होने के लिये महामहिम राष्ट्रपति श्री श्री रामा स्वामी वेंकटरमण से निवेदन किया जा रहा है। उनके अतिरिक्त अनेक साधु-संन्यासियों, विद्वानों और केन्द्रीय मंत्रियों को भी आमंत्रित किया जा रहा है।

दरबारी लाल
संगठन सचिव

अवैतनिक विद्वान उपदेशकों प्रचारकों से निवेदन

अपने देश के प्रदेशों में उत्तर प्रदेश सबसे बड़ा घनी आबादी वाला प्रदेश है जिसमें दो हजार से ऊपर आर्य समाजों मे प्रचारार्थ योग्य प्रचारकों की संख्या भी सबसे अधिक है किन्तु कोई प्रामाणिक सूची रजिस्टर तथा जानकारी न होने के कारण दयानन्द सप्ताह वेद प्रचार सप्ताह आदि-आदि विशेष अवसरों पर प्रचारार्थ अनुभवी विद्वानों का मिलना कठिन हो जाता है। सभा अपने सीमित साधनों से नियुक्त वैतनिक उपदेशकों द्वारा सभी आर्य समाजों की मांग पूरी नहीं कर पाती और अनेकों आर्य समाजें साधन सम्पन्न होने पर भी वेद प्रचार कराने से वंचित रह जाती हैं और अनुभवी विद्वान प्रचारक खाली बैठे रह जाते हैं। दूसरी ओर अनेकों अनुभवहीन अनुशासन रहित अनधिकृत, अविद्वान जाली उपाधियां लगा कर उपदेशक बनकर आर्य समाजों को धोखा देकर लाभ कमाते है इससे आर्य समाज की प्रतिष्ठा पर आँच आती है। इन कठिनाइयों का अनुभव करके सभा के उपदेशक प्रचार विभाग द्वारा अवैतनिक उपदेशकों की एक नई प्रमाणित सूची रजिस्टर्ड की जा रही है। अत: उन सभी अवैतनिक इच्छुक उपदेशकों प्रचारकों वानप्रस्थ और संन्यासियों से निवेदन किया जा जाता है कि जो अपने नाम सूची बद्ध—रजिस्टर्ड कराना चाहते हैं वे अपना नाम, पता, अनुभव और सम्बन्धित आर्य समाज के नाम सहित अधिष्ठाता उपदेश विभाग के नाम से सभा कार्यालय को सूचित करें जिससे उनका नाम सूची बद्ध—रजिस्टर्ड किया जा सके और उनकी सेवा से लाभ उठाया जा सके।

केशवदेव शास्त्री वानप्रस्थ महो०
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति ट्रस्ट की स्थापना

महर्षि दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित कतिपय प्रमुख स्थानों में काशी का आनन्द बाग स्थित शास्त्रार्थ स्थल भी एक है। इसी स्थल पर कार्तिक शुक्ला द्वादशी सम्वत् १९२६ विक्रमी मंगलवार तदनुसार १६ नवम्बर सन् १८६९ ईसवी को ऋषिवर ने मूर्तिपूजा और पौराणिक मत के इस अप्रतिम दुर्ग की विगाज पंडित मंडली से, सत्धर्म की पुनर्स्थापना तथा ईश्वर के सच्चे स्वरूप का ज्ञान कराने के उद्देश्य से ऐतिहासिक शास्त्रार्थ किया था। पंडित वर्ग ने पूर्व प्रतिज्ञा त्याग कर अनेक प्रकरणान्तर उपस्थित किये, परन्तु वे अपनी मान्यताओं की सिद्धि हेतु कोई वेद मन्त्र प्रस्तुत नहीं कर सके। इस शास्त्रार्थ में महर्षि की अपराजेयता सिद्ध हुयी और उन्हें विश्व प्रसिद्धि प्राप्त हुई। इस स्थल पर प्रतिवर्ष उस ऐतिहासिक शास्त्रार्थ का स्मृति दिवस मनाया जाता है। पिछले कुछ वर्षों से एक भव्य यज्ञशाला का निर्माण और आर्य समाज की स्थापना की जा चुकी है। अनेक प्रकार की गतिविधियां चल रही हैं जिनका आर्य समाज के प्रचार की दृष्टि से बहुत महत्व है। इस वर्ष के प्रारम्भ से, इस ऐतिहासिक घटना की स्मृति में एक ट्रस्ट स्थापित करने का प्रयास आरम्भ हुआ है ताकि इसके गौरव के अनुरूप ही इस स्थल पर निर्माण कार्य कराये जा सकें और स्थायी रूप से सैद्धान्तिक प्रचार के कार्यक्रमों को संचालित किया जा सके। महर्षि दयानन्द ने आज से ११८ वर्ष पूर्व इस स्थल से जिस आध्यात्मिक क्रांति का सूत्रपात किया था, उसे चिरस्थायी रखने का कार्य उच्च स्तर पर यह ट्रस्ट करेगा। आर्य समाज के अन्तर्गत शास्त्रार्थ परम्परा को शक्ति प्रदान करना तथा जिन महानुभावों ने अपनी लेखनी और वाणी के द्वारा शास्त्रार्थ के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है, उनकी सहायता करना एवं उनका सम्मान करना, इस ट्रस्ट के प्रमुख उद्देश्य होंगे। इस ट्रस्ट के प्रधान स्वा० दीक्षानन्द जी महाराज वरिष्ठ उप प्रधान म० आर्य भिक्षु जी, मन्त्री डा० आनन्द प्रकाश, प्रकाशन मंत्री डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री निर्देशक प्रो० वीरेन्द्र कुमार वर्मा एवं कोषाध्यक्ष श्री वेदनसिंह आर्य हैं और आजीवन सदस्यों में स्वामी डा० सत्य प्रकाश श्री राजा रणञ्जय सिंह डा० भवानी लाल भारतीय श्री कमलाकान्त इन्जीनियर श्री शांति प्रकाश बहल श्री ओमप्रकाश आर्य अक्षयवर मुनि, आर्य मुनि जी—आदि महानुभावों के नाम प्रमुख है।

—डा० आनन्द प्रकाश मन्त्री

अनुकरणीय दान

आर्य समाज खेड़ा अफगान सहारनपुर के मन्त्री श्री आदित्य प्रकाश गुप्त की पत्नी श्रीमती शशि प्रभा गुप्त ने अपने तीन पुत्र पुत्रियों के शुभ उपनयन संस्कार के अवसर पर दिनांक २३–८–८७ को आर्य समाज के भवन निर्माण हेतु १०११) का सात्विक दान दिया।

सत्यपाल प्रभात
आ० स० खेड़ा अफगान

आर्य संन्यासी अमर स्वामी के निधन पर शोक

आर्य समाज गोविन्द नगर में श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में आयोजित शोक सभामें शास्त्रार्थ महारथी स्वतन्त्रता सेनानी आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान संन्यासी महात्मा अमर स्वामी के ९५ वर्ष की आयु में गाजियाबाद आश्रम में निधन पर भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। मन्त्री

स्वामी दयानन्द जन्म दिवस समारोह

नई दिल्ली २ सितम्बर। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का १६४ वाँ जन्म दिवस प्रसिद्ध वैदिक विद्वान एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डा० सत्यकेतु विद्यालङ्कार की अध्यक्षता में राजौरी गार्डन स्थित वेद-संस्थान में श्रद्धापूर्वक मनाया गया। डा० वेदव्रत "आलोक" एवं श्री आदित्यपाल सिंह आर्य द्वारा लिखित स्वामी दयानन्द की जीवनी "अपना जन्म चरित्र" का डा० सत्यकेतु ने विमोचन किया। इस पुस्तक में स्वामी दयानन्द के जीवन के अज्ञात पक्षों विशेषकर १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम में उनके योगदान पर तथ्यो सहित प्रकाश डाला गया है। आर्य जगत साप्ताहिक पत्र के सम्पादक तथा इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री क्षितीश वेदालङ्कार ने कहा कि जितना इतिहास हमे ज्ञात है वह पूर्ण नहीं और जो कुछ हम जानते हैं वह अन्तिम सत्य नहीं यही कारण है कि आगे आने वाली पीढ़ी भी सत्य का अन्वेषण कर लेती है। श्री आदित्यपाल सिंह द्वारा स्वामी दयानन्द जन्म दिवस के विषय में किया गया अन्वेषण इसका प्रमाण है। साथ ही श्री क्षितीशजी ने यह भी बताया कि महर्षि दयानन्द ने अनेकों क्रान्तिकारियों को प्रोत्साहित किया कुछ के उनके साथ सीधे सम्बन्ध भी थे। जिस प्रकार राजस्थान के केसरसिंह बारठ का परिवार जो १८५७ की क्रान्ति से लेकर लगातार ३ पीढ़ियों तक स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़ा रहा। इस संदर्भ में उन्होंने आगे कहा कि पं० दीनबन्धु शास्त्री द्वारा बंगला में लिखी पांडुलिपियों के अनुवाद और प्रकाशन की आवश्यकता है।

उल्लेखनीय है कि स्वामी दयानन्द की जन्म तिथि भाद्रपद शुक्ला नवमी का निर्णय हाल की खोजों से हुआ है और वेद संस्थान ने गत वर्ष पहली बार इस समारोह की परंपरा डाली थी। गाजियाबाद इलाहाबाद एवं देहरादून की अनेक आर्य समाजों में भी इसी प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

नौकरी में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त हो

आर्य समाज हाल गोविन्द नगर कानपुर में आर्य समाज के तत्वावधान में केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस पर सभा का आयोजन किया गया जिसमें नौकरी में अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करने की सरकार से मांग की गयी। देशमें सरकारी नीति के कारण दिन प्रतिदिन अंग्रेजी के प्रति बढ़ते मोह पर चिन्ता प्रकट करते हुए हिन्दी को अपनाने का संकल्प किया गया। मन्त्री

आन्ध्र प्रदेश में वेदप्रचार

हैदराबाद। आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश के तत्वावधान में एक महीने का वेद प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया गया।

हैदराबाद नगर के समस्त आर्य समाजों की ओर से सामूहिक रूप से श्रावणी उपाकर्म पर्व व सत्याग्रह बलिदान दिवस माहेश्वरी भवन बेगम बाजार में श्री रामचन्द्र राव कल्याणी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

सूचना

घासीराम प्रकाशन विभाग द्वारा सस्ता साहित्य के अन्तर्गत "जानिए आर्यसमाज क्या है" तथा "वैदिक प्रश्नोत्तरी" नामक ट्रैक्ट उपलब्ध हैं। इन्हें अब प्रचारार्थ २०) सैकड़ा के स्थान पर ५) सैकड़ा के हिसाब से प्रचार हेतु दिया जायेगा। समाजें शीघ्रता करें।

व्यवस्थापक—
घासीराम प्रकाशन विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, लखनऊ

शोक समाचार

आर्यसमाज गोनी तहसील सण्डीला (हरदोई) के सदस्य एवं बांगरमऊ इण्टर कालेज के प्रवक्ता श्री शान्तिस्वरूप जी का ४५ वर्ष की अवस्था में गत सप्ताह निधन हो गया। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं परिवार जनों को धैर्य प्रदान करे। वे श्री विमल कुमार अन्तरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के चाचा थे।

मन्त्री सभा

मियाँवाली नगर में डी० ए० वी० विद्यालय स्थापित

समस्त जनता को सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि डी० ए० वी० संस्थाओं की शृंखला में एक नया डी० ए० वी० विद्यालय मियाँवाली नगर, रोहतक रोड, नई दिल्ली में खोला जा रहा है जिसकी आधार शिला ६ सितम्बर को डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति के संगठन सचिव श्री दरबारीलाल जी द्वारा की गई।

रामनाथ सहगल अवैतनिक कोषाध्यक्ष
डी.ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति,
नई दिल्ली—११००५५

यज्ञशाला का शिलान्यास

आर्य समाज उदयपुर के तत्वावधान में हिरनमगरी सेक्टर ४ में दिनांक २३ अगस्त को यज्ञशाला निर्माण का शिलान्यास नगर के सुप्रसिद्ध उद्योगपति दानवीर श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी के कर-कमलों द्वारा हुआ। इस यज्ञशाला का व्यय श्री चौधरी जी ने अपनी ओर से करने का संकल्प किया।

इसी अवसर पर श्रीमती मालती जी अग्रवाल उपप्रधाना के प्रयत्न से महिला आर्यसमाज की स्थापना भी की गई।

—पन्नालाल अरोड़ा मन्त्री आर्यसमाज उदयपुर

महात्मा देवेन्द्र मुनि शान्ति यज्ञ

पिथौरागढ़—आर्यसमाज मन्दिर में ३ सितम्बर को महात्मा देवेन्द्र मुनि की दिवंगत आत्मा हेतु शान्ति यज्ञ सम्पन्न किया गया। मुनि जी ने स्वामी गुरुकुलानन्द ब्रह्मचारी से वानप्रस्थ की दीक्षा सपत्नीक ली थी तथा अपने पीछे पत्नी एवं एक होनहार वैदिक धर्म प्रचारक स्नातक पुत्र ब्रह्मचारी राजेन्द्र शुक्ल छोड़ गये हैं। मुनि जी ने ग्राम—झूलपुल (कानपुर) में २४ अगस्त १९८७ को शरीर छोड़ा।

सत्य के लिये मरो,

गाँधी जी कहते थे, सत्य के लिये मरो।
गांधी जी कहते थे, कर्म तुम सतत करो।
गाँधी जी ने कहा—घृणा द्वेष, दम्भ, पाप है।
छुआ छूत छोड़ो, यह भीषण अभिशाप है॥
सबके मन प्रेम पगे—बन्धन में बँध जायें,
ग्राम ग्राम, नगर नगर, प्रान्त संगठित करो
सत्य के लिये मरो।

बापू ने कहा—ऊँच नीच सब बिसार दो,
मानव हो, जगके, हर मानव को प्यार दो।
शोषण हो जिनका उन्हें कर पकड़ उठाओ तुम,
हृदय से लगालो, दु:ख सिन्धु से उबार दो॥
हर मन मे ममता हो, हर जन मे समता हो,
सब का मन प्रीति से, प्रतीति से द्रवित करो।
सत्य के लिये मरो।

जिसमें हो निष्ठा, अनन्त उत्साह हो।
पद की न इच्छा, न वैभव की चाह हो।
अहंभाव लुप्त, चित्त वृत्तियाँ पवित्र सदा,
साहस अदम्य कार्य क्षमता अथाह हो॥
जिसमें हो स्नेह, सहन शीलता स्वभाव जन्य,
उसी श्रेष्ठ मानव को राष्ट्र के लिये वरो।
सत्य के लिये मरो।
कर्म तुम सतत करो।

—श्रीमती सावित्री रस्तोगी, जवाहर नगर मेरठ कैन्ट

नवीन आर्य समाज स्थापित

ग्राम जौनमाना तहसील बागपत जिला मेरठ मे २ से ८ अगस्त तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ दोनों समय चला और ८-८-८७ को आर्य समाज जौनमाना की विधिवत् स्थापना की गई। यज्ञ के ब्रह्मा श्री धर्मपाल जी शास्त्री तथा ब्रह्मसिंह आर्य छपरोला ब्रह्मसिंह मन्त्री आ० स० छपरौली रहे।

वैदिक शोध सँगोष्ठी सम्पन्न

दिनांक २२-८-८७ को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम में "वैदिक संहिताओं मे नैतिक तत्व" विषय पर एक वैदग्ध्यपूर्ण शोध गोष्ठी, वेदों के मर्मज्ञ विद्वान गुरुकुल के आचार्य, पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज के तत्वावधान में सम्पन्न हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० फतहसिंह अध्यक्ष, वेद संस्थान नई दिल्ली ने की। दिल्ली विश्वविद्यालय से पधारे डा० सत्यपाल नारंग ने मुख्य निबन्ध पढ़ा। इसके अतिरिक्त दूर-दूर से पधारे अनेक वैदिक विद्वानों ने भी भाग लिया। गोष्ठी का संचालन इस शोध संस्थान के निदेशक डा० निरूपण जी विद्यालंकार ने किया।

सभी विद्वानों ने वैदिक नैतिकताओं पर किये जाने वाले आक्षेपों का प्रखर शब्दों में खण्डन कर सशक्त युक्तियों से उनका समाधान किया तथा यह प्रतिपादित किया कि वैदिक संहिताओ के उच्च नैतिक आदर्शों पर चलकर ही मानव अभ्युदय और नि:श्रेयस को प्राप्त कर सकता है।

श्रीवत्स निगमालंकार
गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ (उ०प्र०)

आर्यमित्र साप्ताहिक
१।२ दयानन्द-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45903 ४५६६३
पंजीकरण स० एल डबल्यू/एन पी ७६
कार्तिक कृष्ण ५
११ अक्टूबर रविवार, १९८७ ई०

आर्यमित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

धर्म शिक्षा पुस्तको के सम्बन्ध मे—

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयो एव पुस्तक विक्रेताओ को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश द्वारा प्रकाशित पुस्तकें सभा कार्यालयमे उपलब्ध हैं। पुस्तकें प्राप्ति हेतु कार्यालय से सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआडर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम से भेजें। रेलवे स्टेशन का पूरा पता साफ साफ लिखें। पुस्तको का मूल्य निम्न प्रकार है—

धर्म	शिक्षा	भा	१	१.००
"	"	"	२	१.५५
"	"	"	३	२ ७०
"	"	"	४	२-७५
"	"	"	५	३-६०
"	"	"	६	४-७५
"	"	"	७	४-१५
"	"	"	८	-००
"	"	"	९	४-००
"	"	"	१०	३-००
"	"	"	११	४-६०
धर्म	शिक्षा	भाग	१२	३-५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्य परिव्राजक ब्रह्मा नन्द जी

आर्य परिव्राजक स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने विगत चार माह मे—कलकत्ता वैशाली समस्तीपुर दरभगा—जनकपुर धाम आदि उत्तरी बिहार बगाल—नेपाल आदि स्थानो का भ्रमण किया और आर्य समाज का व्यापक प्रचार किया

निकट भविष्य मे राजस्थान का दौरा करने वाले हैं। स्वामी जी संस्कृत तथा हिन्दी मे कुशल भाषण कर्ता है।

सम्पर्क सूत्र।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी द्वारा श्री अमरनाथ मन्त्री गणेश सेवा आश्रम खादी—भण्डार किदवई नगर कानपुर—११

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ सितम्बर ८७ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

९९३, ९९४, १७८०, २४१५, २४२०, २७८२, २९९३, ३०६७, ३०७३, ३०९०, ३०९७, ३१०६, ३१९६, ५०२७, ५६१४, ५९२१, ५९४८, ६०३४, ६७०१, ६८०१, ६८२२, ७०१०, ७०१२, ७०१५, ८१०६, ८११३ ८२९७, ८३३१, ८३७७, ८६४८, ८७५१, ९००९, ९०९३, ९११७, ९२७९, ९७१४, ९९७४, ९९८०, ९९८१, ११०१७, ११२४३, ११२६६, ११२६९, ११२७०, ११२७३, ११२७८, ११२७९, ११७०३, ११७२१, ११९९४, १२०००, १२००२, १२३९९, १२४०५, १२४०७, १२४०९, १२७३३, १२९६४, १२९६७, १२९६८, १२९६९, १२९८४, १३१९८, १३१९९, १३२०२, १३२०८, १३२११, १३२१२, १३२१३, १३२२३, १३२३३, १३२३५, १३२४४, १३२४५, १३५९२, १३५९६, १३५९७, १३५९८, १३५९९, १३६००, १३६०४, १२६०५, १३६०९, १३६१५, १३६१६, १३६१७, १३६१८, १३९८१, १३९८२, १३९८३, १३९८४, १३९८५, १३९८६, १३९८७, १३९८८, १३९९०, १३९९१, १३९९३, १३९९४, १३९९५, १३९९६, १३९९७, १३९९८, १४००३, १४००४, १४००५, १४००६, १४००८, १४००९, १४०१०, १४०१२, १४०१३, १४०१४, १४०१५, १४०२५, १४०२६, १४०२७, १४०३०, १४०३१, १४०३२, १४०३३, १४०३४, १४०३५, १४०३६, १४०३७, १४०३८, १४०३९, १४०४०, १४०४१, १४०४२, १४०४३, १४०४४, १४०४५, १४०४६, १४०४७, १४०४८, १४०५१, १४०५२, १४०५३, १४०५४, १४०४५।

विनीत—
व्यवस्थापक

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एम० पी० प्रिंटर्स (निकट सुभाष सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित।

आर्य मित्र

वर्ष 18 अंक १९८७ – ५१ – ५२

ओ३म्

आर्यसमाज के संस्थापक–

महर्षि दयानन्द सरस्वती



युगगहनपटलअन्धकारविदारक,
वेदभानुविमलज्योतिप्रसारक ।
युगप्रवर्तक विश्वोद्धारक,
नमस्ते नमस्ते ऋषि दयानन्द दिव्यार्क ॥

★ ★ ★

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के लिए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५-मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एम० पी० प्रिंटर्स प्रेस (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

★ ओ३म् ★

आर्यमित्र

[साप्ताहिक]

दीपावली (ऋष्यंक) विशेषांक

दयानन्दाब्द १६३, विक्रमाब्द २०४४, सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८

वर्ष ९०] रविवार, १८ अक्टूबर १९८७ कार्तिक कृष्ण १२ (द्वादशी) [अङ्क ४१-४२

★

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल—

विक्रमादित्य 'वसन्त' वेदवारिधि

प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए.

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्र देव पाठक एम. ए., साहित्याचार्य

★

स्वत्वाधिकारिणी—

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश

नारायणस्वामी-भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

★

मुद्रक एवं प्रकाशक—
विश्वम्भर दयाल गुप्त

इस अङ्क का
मूल्य ३)

ऋषि निर्वाण दिवस पर—

महर्षि दयानन्द के कार्य को पूरा करने का सकल्प लीजिए

आर्य जनो से–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का निवेदन

आर्य बन्धुओ ! दीपावली के पुनीत अवसर पर महर्षि दयानन्द के महान बलिदान का स्मरण करते हुए हम प्रतिज्ञा करें कि आगामी वर्ष मे हम आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ़ बनाने का पूरा प्रयत्न करेंगे। अनुशासन का पालन करते हुए वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। गुरुवर दयानन्द की कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की इच्छा पूरी करने मे हम अपनी पूरी शक्ति लगा देंगे।



स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

आज आर्य समाज की शिक्षण सस्थाओ की सख्या तो बढ़ती जा रही है किन्तु उसका परिणाम सन्तोषजनक नहीं है। अत हम शिक्षा केन्द्रो को वैदिक सिद्धान्तों के अनुरूप बनाने का प्रयत्न करें। हम देख रहे हैं कि उच्चकोटि के आर्य विद्वान एव सन्यासियो की सख्या नित्यप्रति घटती जा रही है। इस अवस्था पर गम्भीरता से विचार करके आर्य समाज को शक्तिशाली बनाने के लिए जीवन दानी महानुभावो को अपने पारिवारिक बन्धनो से बाहर निकल कर आगे आना चाहिए।

बिना त्याग एव बलिदान से कोई धर्म अथवा सगठन आगे नहीं बढ़ सकता। अत हम सबको स्वार्थ त्याग कर अपने आपको वैदिक धर्म की सेवा के लिए तैयार करना होगा तथा अपने धर्म के प्रति जन-जन के मन मे आस्था और विश्वास पैदाकरना होगा, तभी हम सफलता की ओर अग्रसर हो सकेंगे। हम दूसरो की तरफ न देखकर यह सोचें कि मैं क्या कर रहा हू ?

दीपावली के अवसर पर सब आर्यजनो को नित्य प्रति वैदिक साहित्य का अध्ययन मनन और चिंतन करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिये। इसके अतिरिक्त हम सब अपने अपने नगरो, कस्बो और

गाँवों मे बड़े-बड़े यज्ञ करके जन सामान्य में धर्म के प्रति श्रद्धा जगाकर आर्य समाज को एक धार्मिक आन्दोलन का स्वरूप देने की कोशिश करें।

इस अवसर पर नवयुवकों को सामूहिक यज्ञोपवीत देकर आर्य वीर दलों की स्थापना करके युवा शक्ति को आर्यसमाज के संगठन का अंग बनाना चाहिए क्योंकि आगे चलकर आज के आर्य नवयुवकों को ही वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार का कार्य संभालना होगा। गुरुडम, मूर्तिपूजा तथा अनेक प्रकार के पाखण्ड नित्य नए स्वांग बनाकर धर्म के स्वरूप को धूमिल कर रहे हैं।

आर्य पुरुषो! आज के दिन प्रतिज्ञा करो कि वैदिक सिद्धान्तो का स्वाध्याय करके हम मे से प्रत्येक भाई बहन धर्म प्रचारक का कार्य करेगा। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज के गुरुकुल तथा संस्कृत शिक्षा संस्थाओं को भी भरसक सहायता देकर अपने पैरो पर खड़ा करना चाहिए। हमारा दृढ़ विश्वास है कि संस्कृत शिक्षा से दीक्षित नवयुवक ही मनसा–वाचा–कर्मणा वैदिक धर्म का प्रचार और प्रसार करने में समर्थ हो सकते हैं।

वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज के दायित्व को समझते हुए देश के वातावरण मे अवैदिक विचारधारा को फैलाने तथा देश को तोड़ने वाले तत्वो से सावधान होकर आर्यसमाज के अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता जागरूकता पूर्वक स्वदेश, स्वधर्म तथा स्व-संस्कृति की रक्षा का दृढ़ संकल्प लेकर महर्षि निर्वाण दिवस पर नए उत्साह के साथ आगे बढ़ें। ★

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वार्षिक बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन का कार्यक्रम

आपत्तियो की सुनवाई एवं समाधान	१६–१०–८७ से २०–१० ८७ तक
शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	२७–१०–८७
सभा का बृहदधिवेशन एव निर्वाचन	१४ व १५ नवम्बर ८७

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दिनांक २ अगस्त १९८७ को सभा भवन लखनऊ में सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में हुई और उसमें बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ।

इन्द्रराज — मनमोहन तिवारी

प्रधान — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

देश को सुखी सम्पन्न बनाने का संकल्प

सभा प्रधान जी का आर्य जनों को सन्देश



श्री प० इन्द्रराज जी

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जब प्रादुर्भाव हुआ था तब देश गहन अज्ञान तमिस्रा से आच्छन्न था। अन्ध विश्वास, जातीय भेदभाव छुआछूत मातृशक्ति की उपेक्षा और प्रताड़ना, एवं गुरुडम का घोर प्रभाव था। देश पराधीनता की बेड़ियो मे जकड़ा था सभी तरह से वह लूटा खसोटा जा रहा था।

महर्षि ने वेद वीणा गुंजाई–वैदिक सिंहनाद किया देश मे जागृति आई, पराधीनता की बेड़िया काटने की व्याकुलता बढ़ी, राष्ट्र संगठित हुआ नारी सम्मान बढ़ा, छुआछूत का भेद मिटा अन्ध विश्वासो व गुरुडम के प्रति उपेक्षा हुयी। देश स्वतन्त्र हुआ। परन्तु हम फिर सो गये। आज फिर गुरुडम, अन्ध विश्वास जाति पाति के भेदभाव राजनीतिक जामे के माध्यम से उभर रहे है। देश मे आतंकवाद, ईर्ष्या द्वेष भरपूर पनपकर मानवता को ग्रस्त कर रहा है।

महर्षि दयानन्द ने मानवता की सुरक्षा देश की स्वतन्त्रता और वैदिक धर्म की स्थापना तथा मातृशक्ति को उसके सही सम्मान दिलाने के लिए ही दीपमालिका के दिन अपना बलिदान दिया था और अपनी ज्योति से सारे देश को चमत्कृत किया था।

आइये ! हम उनके पवित्र निर्वाण दिवस पर उनके वैदिक ज्ञान प्रसार के उद्घोष को सर्वात्मना अंगीकार करने का संकल्प लें दृढ निश्चय करें कि हम देश से अज्ञानता, कटुता, ईर्ष्या द्वेष साम्प्रदायिक मदान्धता का सर्वनाश करके पवित्र वैदिक धर्म का संस्थापन करेंगे। प्रेम, स्नेह सौहार्द का प्रसार करेंगे। मानवता की रक्षा करेंगे। राष्ट्र को सुखी सम्पन्न बनायेंगे।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

* * *

आइये दृढ़ संकल्प लें

सभा मन्त्री जी की प्रदेश के आर्यजनों के लिए शुभकामनाएं



ऋषि निर्वाण पर्व के पुनीत अवसर पर हम अपने जीवन को वैदिक मर्यादाओ के अनुकूल बनाकर देश में फैलते–साम्प्रदायिक विद्वेष, आतंकवाद विलगाववाद, की भयंकर विभीषिका से संघर्ष करके उसके सर्वनाश एवं राष्ट्रीय एकता, प्रेम, सहिष्णुता का प्रसार करके देश को सुखी समृद्ध बनाने व स्वाधीनता को अक्षुण्ण रखने का दृढ संकल्प लें।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने अपना बलिदान भारत माता के कण-कण की रक्षार्थ वैदिक संस्कृति के प्रसार द्वारा मानवता की संरक्षार्थ किया था। हम उनके मन्तव्यों के पालन के सर्वात्मना व्रती बनें। उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि तभी हो सकेगी।

श्री मनमोहन तिवारी

हमारा दृढ़ संकल्प, हमारी दृढ़ निष्ठा निश्चय ही हमें हमारे संकल्प को पूर्ण करने में सहायक होंगे।

इस पुनीत पर्व पर हमारी सम्पूर्ण प्रदेशवासियों के प्रति हार्दिक शुभ कामनाएं।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

* * *

सम्पादकीय

आर्य जगत जिनकी याद में श्रद्धावनत है—

तस्मैनमः

हे ! अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक परम कारुणिक प्रभुवर की इस कल्याणमयी सृष्टिरूपी पवित्र यज्ञ के, महिमा मण्डित होता, अध्येता और प्रणेता देव दयानन्द! तुम्हें, और तुम्हारी दिव्यवाणी को हम आर्यों का शत-शत नमन। आज ही के दिन निर्वाण की अन्तिम बेला में, तुम्हारे मुखारविन्द से निकले हुए यह शब्द···"प्रभो ! तूने अच्छी लीला की ? क्या तेरी यही इच्छा है ?? तेरी इच्छा पूर्ण हो ???—आज भी हम आर्यों के श्रवणपुटों में गूंज रहे हैं। ऋषिवर ! तुम्हारी महिमा और गरिमा में हम क्या लिखें···हमारे पास शब्दों का अभाव है······वाणी मूक है। हे वैदिक पावन प्रक्रिया के सजग प्रहरी, पवित्र वेद-वाणी के अभिषेककर्त्ता, वेद के शब्दों में—"मीढ्-वान् आशु:—पर–उपकार में बादलों की तरह बरसने वाले संन्यासी !" मानवता ने आज तुम्हें फिर पुकारा है। दीपमालिका की यह जगमग करती हुई ज्योति, तुम्हारी ज्ञानज्योति के बिना निःस्पन्द है, निष्प्राण है। हे अमर पुत्र ! हे अमरसपूत !! कौन कहता है—उस अमा की यामिनी में, निशा के अन्धकारमें तुम्हारा निर्वाण हुआ था······नहीं नहीं, निर्वाण (मोक्ष) तो तुम चाहते भी नहीं थे, चाह तो, मोक्ष को तुम्हारी थी, वह तुम्हारा अनुगामी अनुचर। तुमने तो कहा था—"मैं संसार की सेवा करने आया हूं... संसार का उपकार करना मेरा...मुख्य उद्देश्य है। विषदायी आततायी की हथकड़ियां खुलवाते हुए तुमने कहा था—'इसे छोड़ दो मैं संसार को कैद कराने नहीं आया हूं...।" हमारा विश्वास है—हे कालजयी ? तुम मरे नहीं तुम मौन हो गए—हम आर्यों की, आर्यावर्त्त की दशा देखकर- उस दिन।

पाठकवृन्द !

विश्व के क्षितिज पर, अज्ञानरूपी—अन्ध-कार की घुमड़ती हुई घोर निशा में, वैदिक ज्ञान-रूपी सूर्य की ज्योति लेकर इस धरा पर दिव्य दयानन्द हमारें बीचमें आये थे। इतिहास बताता है यह देश ही नहीं, अपितु सारा विश्व, उस समय, अविद्या, पाखण्ड, अन्ध विश्वास और कुरीतियों में आकण्ठ डूबा हुआ था। वाममार्गीय कुप्रथाओं ने, व्यक्तियों और समूहों के क्षुद्र स्वार्थों ने, न जाने कितने मतों की, पन्थों की, विश्वासों की, रूढ़ियों की, द्वेषों की, विद्वेषों की, घृणा की पाखण्डों की, प्राचीरें खड़ी कर दी थीं। मान-वता विश्व से तिरोहित हो चली थी। धर्म और ईश्वर के सच्चे स्वरूप को लोग भूलने लगे थे। योरोप की चमकती चकाचौंध ने आर्य जाति के उदात्त वैदिक विचारों को चकनाचूर कर दिया था।

ऐसे समय में यद्यपि, उनके कार्य कलापों की अवधि अत्यल्प ही रही, फिर भी उनके जाज्वल्यमान व्यक्तित्व एवं कृतित्व ने, विचारों ने भावनाओं ने विश्व को चकित कर दिया। लोगों की विचार-धारायें बदलीं धर्मग्रन्थों की परिभाषायें वेदा-नुकूल होने लगीं। अवैज्ञानिक, सृष्टि क्रम के

(शेष पृष्ठ ७ पर)

लखनऊ में वयोवृद्ध आर्य जन अभिनन्दन समारोह

नगर आर्य समाज लखनऊ के तत्वावधान में दिनांक १० अक्टूबर को ७५ वर्ष से ऊपर आयु के नगरवासी वयोवृद्ध आर्यों सर्वश्री राम-कुमार एडवोकेट, नाथूराम आर्य, डा० तेज-नारायण ऐडवोकेट, लालता प्रसाद आर्योपदेशक ठाकुर सुखई सिंह, जगत नारायण जी, पं० राम-चरित्र पांडे, सुधीन्द्र नाथ शास्त्री, पं० पुत्तूलाल जी, बल्देवराज जी दीप नारायण जी, वैद्य कुन्दन लाल जी, आचार्य धर्मानन्द जी का स्नेह पूरित अभिनन्दन किया गया। वैदिक धर्म के प्रति उनके समर्पित जीवन एवं आर्य समाज के प्रति की गई उनकी सेवाओं की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए समाज के प्रधान श्री रमेशचन्द्र एवं मन्त्री श्री रेवती रमण ऐडवोकेट एवं अन्य गण्य-मान्य व्यक्तियों ने उन्हें भाव-भीनी प्रेम पुष्पा-जंलियां भेंट कीं। आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० इस अवसर पर इन सम्माननीय जनों को बधायी देती है और उनके शतायु यशस्वी जीवन की कामना करती है।

० ० ०

वैदिक विचारों से प्रभावित होकर एक मुस्लिम युवक ने स्वेच्छापूर्वक आर्य धर्म में दीक्षित होने की प्रार्थना की तदनुसार उसका, उनके ५ बच्चों सहित शुद्धि संस्कार पं० रामचरित्र पाण्डेय जी ने कराया शुद्ध होने वालों के नाम इस प्रकार रखे गये। पिता का नाम श्री संकटा प्रसाद गुप्ता बच्चों का नाम १—राजेश २—राकेश ३—राजीव ४—संगीता ५—रजनी। यह शुद्धि नगर आर्य समाज में हुई। —मन मोहन तिवारी

तस्मैनमः

[शेष पृष्ठ ६ से आगे]

विपरीत, पाखण्ड और असत्यता से भरी हुई मान्यताओं पर आज वैदिक ज्ञानरूपी सूर्य का प्रभाव स्पष्ट,दृष्टिगोचर हो रहा है। उनकी शुभ्र ज्योति से निकली एक चिन्गारी ने विश्व में, समाज के मन्दिरों में अगणित दीप जला दिए हैं। उस महान् आत्मा ने विरासत में हमें ऐसा पवित्र वैदिक ज्ञान दिया है जो हम आर्यों को अनन्त काल तक प्रेरणा देता रहेगा। वे विश्व को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाना चाहते थे। उनके विचार कालविशेष स्थानविशेष अथवा समाज विशेष की सीमा में नहीं थे। उनका सत्य त्रिकालाबाधित था क्योंकि वह वैदिक सत्य था, शाश्वत रहने वाला सत्य। क्या हमारी श्रद्धा और सत्यनिष्ठा का यह प्रतीक नहीं होगा कि हम आज के दिन उनके महान् गुणों को ग्रहण करने का व्रत लें।

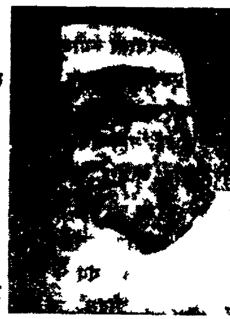
एक दीप दूसरा जलाए।
ऐसे अगणित होवें॥
एक—एक कर जागे मानव।
आर्य बनें जग सारा॥
—मनमोहन तिवारी

दयानन्द के देश में

[प्रो० रमेशचन्द्र एम० ए०]

बृहद् स्वर्णिम स्वप्नो के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक सौ बीस वर्ष पूर्व भारत के उद्धार का गुरुतर बोझा उठाया था, वैदिक ज्ञान के प्रकाश से देश को आलोकित करने का प्रयास किया था। पराधीन भारत को स्वतन्त्रता का सन्देश दिया था और देश जिन कुरीतियो पाखण्डों एव अज्ञानताओ के कारण पराभव ग्रसित था तथा विदेशी मतावलम्बियो एव सम्प्रदायवादी ईसाई तथा इस्लाम प्रचारको द्वारा शोषित किया जा रहा था उस से मुक्ति का मार्ग दर्शित किया था और समाज के स्तम्भ रूप स्त्री-दलित पतित एव पीड़ित जनो के उत्थान का मार्ग प्रस्तुत किया था। महर्षि का सम्बल वेद-ज्ञान था और उनका नैतिक उत्थान का मञ्च आर्य संस्कृति की पृष्ठ भूमि थी महर्षि ने अपने स्वप्नो की पूर्ति हेतु-आधार भूत आर्य समाज की स्थापना की और वैदिक निष्ठा पूर्ण जीवन का उपदेश दिया तथा आर्य समाज के दस नियम सुन्दर सामाजिक एव व्यावहारिक जीवन के लिए नियमानुकूल आचरण हेतु बनाये। वे सतत् जीवन निर्भयता के साथ त्याग के साथ-श्री-समृद्धि के प्रपञ्चीय आवरण से परे रहकर वेद-ज्योति प्रज्ज्वलित करते रहे और सक्षेप मे उनका ऋत एव सत्य से मण्डित जो सन्देश था उसे निर्भय होकर-आत्म प्रकाश को प्रज्ज्वलित करके सत्याचरण पथ गामी होकर भारतवासी ही नहीं विश्व के मानव आचरण करें यही ऋषिवर का मन्तव्य था।

सत्य का प्रचार करते हुए निर्भय जीवन जीते हुए महर्षि ने बलिदान का पथ सृजित किया तथा १८८३ की दीपावलि की अमानिशा मे जहाँ मृत्तिका के दीपक जगमगा रहे थे वहीं सत्य का दीपक बुझकर भी नवीन प्रकाश प्रभा ज्योति से


प्रो० रमेशचन्द्र एम०ए०

जगमगा उठा और महर्षि के महाप्रयाण के साथ ही आर्यजन शक्ति एव वेद-ज्ञान के लक्षो ज्योति-स्फुलिंग के साथ देश एव विदेश मे वैदिक ज्योति बिखेरने मे सक्षम रहे एव ऋषिवर का बलिदान-आत्म त्याग भारत एव विदेशो मे प्रकाश मण्डित हो उठा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के सान्निध्य से प्रेरणा प्राप्त आर्य जनो ने देश को ब्रिटिश शासन से स्वतन्त्रता दिलाई-शिक्षा का प्रसार किया दलित हरिजन गौरववान हुये-महिलायें विकास शील पथ पर चलते हुए प्रधानमन्त्री के पद तक पहुंची तथा आर्य समाज का इतिहास स्वर्णिम अक्षरो मे लिखा जाने लगा। आर्य जनो की महर्षि दयानन्द के बाद तीसरी और जो चौथे पीढ़ी आयी वह ऋषि ऋण से उऋण होने मे प्रयत्नशील है। हमे विश्वास है अन्धकार ग्रसित विश्व को हम पुन अपने आचरण एव कर्तव्य से ज्ञानालोकित कर सकेंगे।

हे ज्योति पुञ्ज भगवन्

—आचार्य देवव्रत अवस्थी



देवव्रत अवस्थी

हे ज्योति पुञ्ज भगवन् शत-शत नमन है तुमको,
आलोक भर हृदय मे कर दो सुमन सुमन को।
दुनिया की रंगशाला हमको लुभा रही है,
निशिदिन हमारे मन को कलुषित बना रही है।
पूजा व अर्चना कुछ बनती नहीं है मुझसे,
ये वासनायें मुझको मिलने न देतीं तुमसे।
हे हे कृपा के सिन्धु ऐसी कृपा करो तुम,
धो डालें सारे मन की अपवित्र भावना हम।
मन मे हमारे केवल बस एक धुन रहे ये,
सारी वसुन्धरा मे सुख शान्ति चैन होवे।
आनन्द गीत गायें ध्यायें सदा ही तुमको,
चरणो मे नाथ तेरे निशि दिन लगायें मन को।

आर्य समाज सदर, लखनऊ का स्वर्ण जयन्ती समारोह

दिनांक ५ नवम्बर, से ८ नवम्बर तक आर्य समाज कैन्टूनमेन्ट, सदर, लखनऊ का स्वर्ण जयन्ती समारोह मनाया जा रहा है जिसमे स्वा० आनन्द बोध सरस्वती, डा० स्वामी सत्य प्रकाश, श्री जय प्रकाश (भू० पूर्व इमाम) महात्मा आर्य भिक्षु जी श्री प० इन्द्रराज जी श्रीमती सावित्री शर्मा वेदाचार्या, कडक ब्रह्मचारी तथा अन्य उच्चकोटि के वैदिक प्रवक्ता पधार रहे हैं।

—मन्त्री, आ० स० सदर, लखनऊ

अवकाश सूचना

दीपावली अवकाश के कारण आर्यमित्र का अगला अङ्क रविवार १ नवम्बर १९८७ को प्रकाशित होगा। कृपया नोट कर लें।

विश्वम्भर दयाल गुप्त
व्यवस्थापक

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

सावित्री शर्मा, वेदाचार्या, १० केला बाग, 'सावित्री सदन' बरेली उ० प्र०

यदि हमारी शस्यश्यामला मातृभूमि भारत माता कहे कि मैं संसार के विशाल पर्वत शिखरों में सर्वोच्च नगाधिराज हिमालय हूं कलकलनिनादिनी सरिताओं में पतित पावनी भागीरथी जाह्नवी हूं। विश्व की समस्त भाषाओं में लोक मंगलकारिणी सुर-भारती संस्कृत भाषा हूं। इस लोक में सभी वैदिक वाङ्मय के मर्मज्ञ, दार्शनिक ऋषियों मे मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती हूं तो कोई अत्युक्ति न होगी। पांच हजार वर्षों से छाये वसुन्धरा के अज्ञान-अविद्या के निबिड अन्धकार मे वेद मार्त्तण्ड की चिरस्थायिनी अलौकिक आभा बिखेरने वाले भारतीय संस्कृति के दिव्य दूत ऋषिवर दयानन्द ही थे क्योंकि उनके आविर्भाव से पूर्व अनेक सुधारक जननायकों ने भी सामयिक समस्याओं का समाधान करने में अपने पवित्र जीवन अर्पित किये थे किन्तु स्वामी जी ने न केवल तात्कालिक कुरीतियों का ही निवारण किया अपितु मानवीय जीवन की सर्वाङ्गीण विषमताओं एवं दुरन्त विपदाओं का समूलोच्छेदन करने में सत्य धर्म की बलिवेदी पर अपना बलिदान कर दिया। यही था उनका ऋषित्व अमर साधना का दिव्य स्रोत जहां से प्रेरणा प्राप्त कर न जाने कितने महापुरुष दीप ज्योति पर मर मिटने वाले पतङ्गों की भांति लोक-हित साधना के मन्दिर में सहर्ष अपने प्राण प्रसूनों को चढ़ा गये। स्वामी जी के अनन्त उपकारों की तुलना में विराट् आकाश के विशाल प्राङ्गण में बिखरे हुए असंख्य टिमटिमाते नक्षत्र भी नगण्य से प्रतीत होते हैं। उनके दिव्य ब्रह्मचर्य तेज के समक्ष भुवन भास्कर भी लजाता सा प्राची में नित्य उदय होता है।

चान्द्रमसी ज्योत्स्ना भी करुणावरुणालय ऋषि के सदय हृदय के माधुर्य के लिए तृषित सी दीखती है। वे विश्व के लिये वेदवीणा के भावक स्वरों में उदात्त संस्कृति का पावन सन्देश सुनाने आये। उनके आप्त वचन प्रामाणिक वेद वाक्य बनकर प्रसुप्त हृदयों को झङ्कृत करने लगे। उनका एक-एक शब्द तार्किक जिज्ञासुओं के हृदय में स्थायी शब्द कोष बनकर गूंजने लगा। वेद राशि से उद्धृत वे सार्वभौम चिरन्तन परिभाषायें अजर अमर बन गईं। इस संक्षिप्त लेख में उनकी कतिपय विचार धाराओं का सारांश निम्नाङ्कित रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

१– वैदिक धर्म—सत्य सनातन वैदिक धर्म ही संसार की सम्पूर्ण मानव जाति का एक मात्र धर्म है। विविध मत-मतान्तरों की मिथ्या कल्पना और अन्ध-विश्वास पूर्ण मान्यताओं से विश्व पटल पर विघटनकारिणी प्रवृत्तियों ने नृशंस हिंसा, द्वेष, छल प्रपंचादि कुटिल दुर्भावनाओं को जन्म दिया। मतान्ध व्यक्तियों से शांति मय सन्देश की आशा करना मूर्खता मात्र है। इन मत वालों ने मानव धर्म, धर्म मन्दिर,

धार्मिक महापुरुष एवं धर्म ग्रन्थों के बीच कट्टर विभाजक रेखायें खींच दीं। एकता, सहिष्णुता, पारस्परिक सामंजस्य तथा विश्वप्रेम की दिव्य-भावनाओं पर कुठाराघात कर मानव को मानवता का शत्रु बना दिया। राष्ट्र विभाजन का कुत्सित राजनैतिक षड्यन्त्र रचाने वाला आतंकवाद इसी साम्प्रदायिक कुप्रवृत्ति की देन है। मत, पन्थ, सम्प्रदाय, मजहब आदि शब्द कदापि धर्म के अनुवादक नहीं हो सकते। केवल वैदिक धर्म के सत्य मार्ग से ही भूली भटकी मानवता अपने शांति निकेतन को पुनः प्राप्त कर सकेगी। ऋषि ने स्पष्ट घोषणा की—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

२—स्वराज्य सदेश—सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास में स्वामी जी भारतीय राज-नेताओं को साधिकार स्वदेश मे स्वराज्य स्थापना का जन्म सिद्ध अधिकार बताते हुए विदेशी शासन का कड़ा विरोध करते है। निष्पक्ष न्याय पूर्ण होने पर भी विदेशी राज्य विमाता के समान प्रजा को कष्ट प्रद होता है। इन आर्ष वचनो मे आर्य राष्ट्र निर्माण की बलवती कामना प्रकट हो रही है। स्वराज्य का यह स्वप्न अद्यावधि साकार नहीं हो सका है। प्यारे ऋषि के स्वर्गीय प्रसारण आज भी आर्य पुत्रों को राष्ट्रभृत् यज्ञ की सफलता के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। वैदिक संविधान के बिना हमारी सस्कृति, सभ्यता, राष्ट्र भाषा सुरभारती एवं राष्ट्रीय एकता कभी सुरक्षित नहीं रह सकती। अतः हम सभी आर्य बन्धु सुसंघटित होकर पाश्चात्य आवरण को हटाते हुए भारतीय धर्मतन्त्र से सम्बद्ध आर्य साम्राज्य की स्थापना करें।

३—शिक्षा प्रणाली—वर्तमान प्रशासन के द्वारा निर्धारित नव शिक्षा नीति आर्य संस्कृति और भाषा का विनाश कर देगें ऐसा सभी प्रबुद्ध विद्वान् शिक्षको का मत है। स्वामी जी ने न केवल भारत अपितु विश्व की प्रतिभाओं के समक्ष मानव की शारीरिक-बौद्धिक-मानसिक शक्तियो के विकास हेतु विशुद्ध वैदिक शिक्षा प्रणाली का प्रकाशन किया। विद्या प्राप्ति का लक्ष्य पुरुषार्थ चतुष्टय की साधना है "सा विद्या या विमुक्तये" "विद्ययाऽमृतमश्नुते" जैसे अमृत-वाक्यो मे शिक्षा के वास्तविक प्रयोजन का निर्देश निहित है। ऐसी आपत्तिकालीन स्थिति मे महर्षि दयानन्द के शैक्षिक सिद्धांत ही देश के नागरिकों को चारित्रिक बल प्रदान कर सकेंगे।

४—सामाजिक सुधार—देव दयानन्द ने भारतीय जन समाज मे व्याप्त अनेक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई। बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, अस्पृश्यता, ईश्वर के स्थान पर जड़ पाषाण पूजा नारी जाति को विद्याधिकार से वञ्चित रखना, गुणकर्म स्वभाव से वर्ण व्यवस्था न मानकर केवल जन्मना जाति निर्धारण, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, मांस भक्षण, सुरापान आदि का प्रबल खण्डन करके मनुष्यो का न्यायोचित पथ प्रदर्शन किया।

५—स्थित प्रज्ञ महान योगी—जन कल्याण के निमित्त आत्म समर्पण करने वाले स्वामी दयानन्द वस्तुतः निस्पृह निष्काम सेवक थे।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

श्री मनमोहन तिवारी, मन्त्री सभा का भ्रमण

दि० १-११-८७

प्रातः	० ६, ००. बजे आर्य समाज			सीसामऊ,	कानपुर
अपराह्न	१२, ००.	,,	,,	,,	औरैया,	इटावा
,,	१४, ००.	,,	,,	,,	अजीतमल,	,,
,,	१५, ३०.	,,	,,	,,	बकेवर,	,,
,,	१६, ३०.	,,	,,	,,	नया शहर,	,,

रात्रि——दयानन्द माण्टेसरी स्कूल, इटावा।

कुं० ध्रुव पाल सिंह 'अटल'
मुख्य निरीक्षक, सभा।

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

(शेष पृष्ठ ११ से आगे)

धर्म प्रचार में मनसा वाचा कर्मणा संलग्न रहते हुए मौन साधक ऋषि ने अनेक बार विरोधियों के द्वारा किए गए दुर्व्यवहारों को प्रसन्नता पूर्वक सहन किया। मनुस्मृति का निम्नांकित श्लोक उन्होंने अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाया।

सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव।
अमृतस्येव चाकांक्षेद अवमानस्य सर्वदा॥

अर्थात् ब्राह्मण धर्मोपदेशक सम्मान से से सर्वदा विषपान के समान उद्विग्न होवे और दुःखद अपमान को अमृत तुल्य समझ कर सहन करे। मानापमान मे समदृष्टा, शत्रु मित्र को समान हार्दिक स्नेह देते हुये उन्होंने "वसुधैव कुटुम्बकम्" का नारा लगाया। उनके जीवन का लक्ष्य था "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" अन्तिम निर्वाण की वेला में नश्वर शरीर का परित्याग करते समय अमर हुतात्मा के मुखारविन्द से निकले वे प्रेरणाप्रद वाक्य उनकी वीतराग प्रवृत्ति और स्थित प्रज्ञता के पूर्ण परिचायक हैं—

"प्रभो! तूने अच्छी लीला की। तेरी इच्छा पूर्ण हो।" गुरुवर तपस्वी दयानन्द ने राष्ट्र के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक तथा शास्त्रीय विचारों में क्रांति का शंखनाद करते हुये निर्भ्रान्त सत्यार्थ का प्रकाश किया। उनकी वेदोक्त सत्य सनातन जीवन पद्धति ही वर्तमान कष्टों का निवारक अमोघ उपाय है। युग प्रवर्तक महर्षि के तपः पूत चरणों में मेरी सादर श्रद्धाञ्जलि समर्पित है—

पाषाणैरस्याहतोऽपि सुमनाः प्रादात् शुभं सौरभम्।
साक्षान्मातृवसुन्धरेव मनसः सद्भावमावेदयत्॥
इत्थंयेन तपस्विनाऽतिकष्टैः स्वजीवनं यापितम्।
मानार्हाय मनस्विने ऋषि दयानन्दाय तस्मै नमः॥

टटीरी में निःशुल्क नेत्र शिविर



[नेत्र शिविर का उद्घाटन करते हुए स्वामी आनन्द बोध सरस्वती]

आर्य समाज अग्रवाल मण्डी टटीरी (मेरठ) द्वारा दिनांक २७ सितम्बर को प्रात १० बजे डी० ए० वी० इन्टर कालेज, अग्रवाल मण्डी टटीरी में 'नि शुल्क नेत्र शिविर' का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन आर्य जगत की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने किया। समारोह की अध्यक्षता आर्यजगत के सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्ता एव आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल ने की। आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री प० इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी भी इस समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल तथा मन्त्री श्री ओम् प्रकाश आर्य एव अन्य गण्यमान्य व्यक्ति भी इस समारोह मे विशेष रूप से पधारे थे। स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने अपने उद्घाटन भाषण मे जहा आर्यसमाज टटीरी के कार्यकर्त्ताओ को भूरि-भूरि प्रशसा की वहीं म० धर्मपाल जी, जिन्होने अपनी पू० माता जी की स्मृति मे माता चन्नणदेवी आर्य धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय नई दिल्ली की स्थापना की है—की उदारता के लिए भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए आभार व्यक्त किया।

मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० इन्द्रराज ने कहा कि ससार मे पीडितो की सेवा से बढ़कर और कोई श्रेष्ठतर कर्म नहीं है। इस अवसर पर उ० प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने आयोजको के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि आर्यसमाज जहा देश और धर्म की रक्षा करने का कार्य सदियो से करता आया है वहीं आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ को असहाय पीडित लोगो की सहायता के लिए आगे आना चाहिए

भारत नेपाल सीमा पर—

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत वेद प्रचार समिति का गठन

सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के पूर्वाञ्चल के दौरे के अन्तर्गत आर्यसमाज बस्ती मे आयोजित आर्य सम्मेलन के अवसर पर श्री ज्ञानानन्द सरस्वती (वेदपाठी) ने सभा मन्त्री जी का ध्यान भारत नेपाल सीमा पर चल रहे प्रलोभनों एवं अनेक कुचक्रो द्वारा धर्मान्तरण की समस्या की ओर आकर्षित किया तथा सभा द्वारा किये गये प्रचार एवं सगठन के कार्यों की ओर आकर्षित करते हुए उपस्थित कठिनाइयो की ओर प्रकाश डाला। सभा मन्त्री जी ने समस्त परिस्थितियों एवं इस ज्वलन्त समस्या का निराकरण करने हेतु 'भारत नेपाल सीमा वेद प्रचार समिति' का गठन कर उसका सयोजक स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती (वेदपाठी) बढ़नी को नियुक्त किया तथा प्रचार कार्यों में सस्ता साहित्य, पुस्तकें एवं अन्य माध्यमो से प्रचार हेतु सभा का पूर्ण सहयोग प्रदान करने का आश्वासन देते हुए 'भारत नेपाल सीमा वेद प्रचार समिति' को यह अधिकार दिया कि वे अपनी सुविधानुसार उपदेशक एवं भजनोपदेशक की नियुक्ति कर अपनी देखरेख मे प्रचार का कार्य सुव्यवस्थित रूप से चलाएं। उपदेशको का वेतन सभा द्वारा दिया जायगा तथा भोजन एवं मार्ग व्यय तथा प्रचार योजना समिति स्वयं बनाएगी। सभा उसका समय-समय पर निरीक्षण अपने माध्यमों से करवाकर आवश्यक निर्देश एवं सक्रिय सहयोग समिति को प्रदान करती रहेगी।

—संवाददाता

★ ★ ★

चाहे वे दंगा पीड़ित हो—बाढ़ पीड़ित हों—चाहे रुग्ण हों अथवा अन्य प्रकार से अभाव ग्रस्त हो। जब तक आर्यसमाज इन क्षेत्रो में आगे बढ़कर कार्य नहीं करेगा तब तक हम आगे नहीं बढ़ सकेंगे।

श्री तिवारी ने श्री अभिमन्युकुमार मन्त्री तथा श्री वीरेन्द्र कुमार बंसल प्रधान की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उपस्थित सभी महानुभावो को विशेषकर नौजवानो को इस प्रकार के सहायता कार्य मे आगे बढ़कर आने का आह्वान किया। उन्होने चिकित्सालय के स्टाफ तथा अन्य कर्मचारियों को इस आयोजन के लिए विशेष रूप से धन्यवाद दिया।

इस नेत्र शिविर में बड़ी संख्या में हर धर्म के निर्धन व्यक्तियो को उनसे सम्बन्धित कठिनाइयों को दूर किया गया तथा भारी संख्या मे लोगो की आंखों के आपरेशन किये गये।

★ ★ ★

सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी का पूर्वांचल का तूफानी दौरा

समाजों में नव स्फूर्ति एवं जागृति की लहर

[विशेष सम्वाददाता द्वारा]

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत पूर्वी प्रचार विभाग के तत्वावधान में उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के गोरखपुर, बस्ती, देवरिया, आजमगढ़, बलिया, गाजीपुर आदि जिलों के कार्यकर्त्ताओं से मिलने तथा आर्य समाजों के निरीक्षण तथा संगठन एवं प्रचार तथा प्रसार की दृष्टि से संयोजक डा० विनय प्रताप जी ने ४ तथा ५ अक्टूबर को सभा मन्त्री जी के दौरे का कार्यक्रम आयोजित किया तदनुसार दि० ४ अक्टूबर की प्रातः सभा मन्त्री जी श्री मन मोहन तिवारी जी, श्री डा० विनय प्रताप जी, श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त जी तथा श्री राम-अवतार सिंह जी लखनऊ से चल कर मध्याह्न बस्ती पहुंचे। आर्य समाज बस्ती में बस्ती जिले की समाजों से पधारे आर्य बन्धुओं का जिला आर्य सम्मेलन श्री शिव नारायण वेद पाठी [स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती] की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। पश्चात, आर्य समाज खलीलाबाद, आर्यसमाज मगहा तथा आर्यसमाज सहजनवां का निरीक्षण किया। सायंकाल आर्य समाज देवरियामें देवरिया जिलेके जिला आर्य सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सभा मन्त्री जी ने संगठन तथा प्रचार एवं रचनात्मक कार्यों में समाज की भूमिका एवं समाजों में नवयुवकों के योगदान का आह्वान किया। रात्रि विश्राम आ.स.मन्दिर गोरखपुर में हुआ। दि० ५ अक्टूबर को प्रातः आर्य समाज मन्दिर बक्शीपुर गोरखपुर के भव्य सभा भवन में गोरखपुर जिले की समाजों के कार्य कर्त्ताओं के आर्य सम्मेलन को सभामन्त्री जीने सम्बोधित किया। बैठक की अध्यक्षता जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर के प्रधान स्वतन्त्रता सेनानी वयोवृद्ध कर्मठ आर्य नेता महाशय कल्पनाथ जी ने की सभा का संचालन पं० सुरेश चन्द्र वेदालङ्कार ने किया। मध्याह्न भोजनोपरान्त आजमगढ़ बलिया तथा गाजीपुर के आर्य सम्मेलन को सम्बोधित करने हेतु प्रस्थान किया। रास्ते में आर्य समाज बड़हलगंज, यज्ञशाला बड़हलगंज, गोंडा, घोसी, बड़ागांव, कोपागंज की आर्यसमाजों का निरीक्षण किया बड़हलगंज, गोंडा घोसी तथा कोपागंज की समाजों के सैकड़ों कार्य कर्त्ताओं ने मन्त्री महोदय का फूल मालाओं एवं नारों से भव्य स्वागत किया। आर्यसमाज कोपागंज में आर्य वीरदल के उत्साही नवयुवकों तथा सदस्यों ने स्वामी आत्मा नन्द जी के नेतृत्व में सभा मन्त्री का भव्य जलूस के रूप में स्वागत करते हुए समाज तक ले जाकर निरीक्षण करवाया। सायंकाल आर्य समाज मन्दिर मऊनाथ भंजन में आजमगढ़ बलिया, गाजीपुर, जिले के सैकड़ों कार्य कर्त्ताओं

[शेष पृष्ठ १६ पर]

सभा मन्त्री का तूफानी दौरा

[शेष पृष्ठ १५ से आगे]

ने सभा मन्त्री का अभूतपूर्व स्वागत किया। वहां विशाल आर्य सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सभा मन्त्री ने पूर्वांचल की आर्य समाजों में नव स्फूर्ति, नवचेतना, तथा जागृति लाकर युवा वर्ग में धार्मिक एवं आध्यात्मिक मान बिन्दुओं के प्रति आस्था एवं विश्वास के साथ साथ आकर्षक रचनात्मक एवं सृजनात्मक कार्यक्रमों के माध्यमसे उन्हें जोड़नेका आह्वान किया। साथ ही क्षुद्र एवं संकीर्ण मानसिकता त्याग कर आपसी ईर्ष्या द्वेष त्याग कर व्यक्तिगत स्वार्थों से परे हटकर पूर्वांचल की आर्य समाजों के संगठन का एक गौरवमय स्वरूप खड़ा करने का भी आह्वाहन किया। मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए उन्होंने अपने काल की सभा की उपलब्धियों का वर्णन करते हुए प्रचार एवं प्रसार की दिशा में उठाये गए कदमों को स्पष्ट किया तथा सभा द्वारा छापे गए सस्ते साहित्य एवं नैतिक शिक्षा की पुस्तकों का उपयोग करने हेतु आग्रह किया साथ ही इन कार्यों में सभा द्वारा हर प्रकार की सहायता सर्वंव उपलब्ध करवाने का भी आश्वासन दिया। प्रचार की दिशा में एकक्रांतिकारी कदम की घोषणा करते हुए मन्त्री महोदय ने कहा कि जिले या मंडल प्रचार हेतु उपदेशक एवं भजनीक जिला सभा के माध्यम से स्वयं नियुक्त करें इनका वेतन सभा द्वारा दिया जायेगा तथा भोजन एवं मार्ग व्ययकी जिला सभायें व्यवस्था करें। इनके कार्यों का निरीक्षण सभा अपने माध्यम से समय समय पर करवाती रहेगी। सैकड़ों समाजों से आये प्रतिनिधियों ने स्थान स्थान पर सम्पन्न आर्य सम्मेलनों के अनेक विकरण समस्यायें एवं कठिनाइयां भी प्रस्तुत कीं। सभा मन्त्री जी ने ध्यान पूर्वक उनकी बातों को सुन कर उनका निराकरण एवं समाधान भी किया तथा करने का आश्वासन भी दिया।

इस प्रकार पूर्वांचल की गोंडा बड़हलगंज कोपागंज देवरिया आदि की सभी समाजें हर्षातिरेक से अभिभूत हो उठीं जहां उनकी स्थापना वर्ष से आज तक पचासों वर्ष से सभा का कोई वरिष्ठ अधिकारी नहीं पहुंचा था वे सभा मन्त्री को अपने बीच पाकर भावना विभूषित हृदय से सभा मन्त्रीजी के स्वागतार्थ उपस्थित थी। नई जागृति की लहर से तरंगित थे। अनेक कार्यकर्ताओं के उत्साह को देखते हुए सभा मन्त्री महोदय ने आश्वासन दिया कि वे समाजें जब भी जहां भी उनका सहयोग चाहेंगी वे सर्वंव उनके हेतु तत्पर रहेंगे।

प्रभात आश्रम के छात्रों का आदर्श

आज विश्वविद्यालयों, कालेजों तथा अन्य शिक्षा संस्थाओं में सम्पन्न होने वाली परीक्षाओं में नकल करके उत्तीर्ण हो जाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। हमें झज्जर से श्री कुन्दनसिंह आर्य, जो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक द्वारा आयोजित परीक्षाओं में कक्ष निरीक्षक थे, का पत्र प्राप्त हुआ है। उसमें उन्होने गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी [मेरठ] के विद्यार्थियों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा है—कि आश्रम के किसी भी विद्यार्थी ने अन्तिमतिथि तक नकल के विषय में एक भी चेष्टा नहीं की। छात्रों के इस आदर्श चरित्र पर उन्हें बधाई।—सभा मन्त्री

ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में गुलेरी जी के लेख

[डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री, रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी]

[स्व० प० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी का जन्म ऋषि निर्वाण वर्ष १८८३ ई० मे ७ जुलाई को हुआ था। इनका निधन १२ सितम्बर १९२२ ई० को हुआ। ३९ वर्ष की अल्पावधि तक उन का जीवन ससार रहा। वे हिन्दी, सस्कृत, पालि, प्राकृत के अनन्य विद्वान् और अंग्रेजी के प्रकाण्ड पण्डित थे। व्याकरण, भाषाविज्ञान, पुरातत्व, इतिहास, समालोचना, हिन्दी पत्रकारिता आदि के विषय मे उन्होने जो कुछ लिखा है वह आज भी मानक है। हिन्दी कथा साहित्य मे अपनी विशिष्ट शैली के कारण वे प्रख्यात है। गुलेरी जी ने ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के सम्बंध मे जो लिखा है, वह अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। विद्वान लेखक ने 'आर्यमित्र' के पाठको की सेवा मे उनके वचनो को आवश्यक टिप्पणी के साथ बहुत ही रोचक शैली मे प्रस्तुत किया है—

—प्र०सम्पादक]

वैदिक तथा सस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान् और लेखक प०सत्यव्रत सामश्रमी प्रसिद्ध अनुसन्धाता थे। उन्होने वैदिक ग्रन्थो का सम्पादन तथा शोध परक आलोचनात्मक साहित्य बहुत ही परिश्रम तथा पाण्डित्य के साथ प्रस्तुत किया उनके देहावसान १ जून १९११ ई० के बाद गुलेरी जी ने अपने समय की प्रसिद्ध पत्रिका 'मर्यादा' भाग ३, पृ० १५२—१५९ मे सामश्रमी जी के जीवन तथा कार्यों का महत्वपूर्ण आकलन किया है। इसमे स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित अश निम्न है—'जब सरकार ने सस्कृत विद्या के प्रचार के लिए क्वींस कालेज खोला तब पादरियो ने शोर मचाया था कि कृस्तान सरकार हीदन (अधर्मी) हिन्दुओ के धर्म का प्रचार न करे, इसी से क्वींस कालेज मे व्याकरण, न्याय आदि के पाठन का प्रबन्ध होने पर भी वेद और मीमासा की गद्दिया नहीं स्थापित हुई। काशी का अभाग्य और भारतवर्ष की गवर्नमेंट का अभाग्य! नही तो कोई बालशास्त्री या कोई बापूदेव वेदो का भी निकल आता और जो खोजें जर्मनी मे हुई हैं वे काशी मे होतीं। और न वह ही समय आता जब एक वेदपाठी गुजराती सन्यासी काशी के पण्डितो को खसूचि बनाकर छोड जाता जैसा कि आगे लिखा जायगा।"

टिप्पणी—उक्त लेख मे 'वेदपाठी गुजराती सन्यासी' से तात्पर्य ऋषि दयानन्द सरस्वती से है और प्रसग काशी शास्त्राथ का है। स्वामी जी द्वारा काशीवासी पण्डितों से प्रश्न पूछने पर पण्डितगण आकाश की ओर (खसूचि) देखने लगते थे अर्थात् बगलें झाकने लगते थे। बाल शास्त्री व्याकरण के तथा बापूदेव शास्त्री ज्योतिष के प्रसिद्ध पण्डित थे। काशी शास्त्रार्थ का सक्षिप्त विवरण लिखते हुए आगे गुलेरी जी लिखते है—

"इन्हीं दिनो मे स्वामी दयानन्द धूमकेतु की तरह काशी मे आ पहुचे और अक्षोभ्य समुद्र की तरह काशी की सतह उनके आने से पेंदे तक हिल गई। लोग विस्मय से आखे फाड़ हुए रह

गये कि स्वामी जहां मन्त्र पाठ कंठ करने वाले वैदिकों से मिलता है वहां उन्हें अपने भाष्य व्यापी व्याकरण के ऊपर स्थित अर्थज्ञान से गूंगा कर देता है और जहां नव्य व्याकरण मिलते हैं, वहां वह 'घटो घटः' का तुषकंडन छोड़कर उन्हें सीधा व्याकरण की बकाबू में गोते खिलाता है। जिन्होंने नव्य निर्दयता के साथ 'कल्म संज्ञा' में उलझा दिया और जिन्हें सारा शतपथ ब्राह्मण कंठ था उन्हें एक शब्द का अर्थ पूछकर चुप कर दिया। वर्तमान महाराज काशिराज के पिता महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह के सभापतित्व में एक बड़ी भारी सभा हुई जैसी कदाचित् काशी में कभी नहीं हुई थी। स्वामी दयानन्द जी का विशेषत्व यह था कि वे वेद को प्रमाण मानते थे परन्तु अपने किये हुए अर्थों से वेद से वे बातें कहते थे जिन्हें लोग वेद विरुद्ध समझते थे। सभा में कुछ नहीं हुआ। आर्यसामाजिक तो कहते हैं कि काशीवाले गुण्डों ने ईंटें बरसाईं और ताली पीट दी और काशीवासी कहते हैं कि स्वामी के हाथ में एक पत्र दिया गया जिसकी पंक्ति का अर्थ उनसे नहीं हुआ।"

टिप्पणी—स्व० गुलेरी जी ने ऋषि दयानन्द के प्रसिद्ध काशी शास्त्रार्थ का उक्त विवरण १९११ ई० में लिखा था। उनके द्वारा प्रस्तुत उक्त विवरण को पढ़कर यह सुतरां स्पष्ट है कि 'काशी शास्त्रार्थ' में स्वामी जी की विजय हुई थी। काशी शास्त्रार्थ के सम्बन्ध में पौराणिक पण्डित हमेशा पैंतरा बदलते रहे हैं। १९१६ ई० में पं० मथुराप्रसाद दीक्षित ने (काशी शास्त्रार्थ के ४६ वर्ष बाद तथा गुलेरी जी के उक्त लेखन के ५ वर्ष बाद) "काशी के विद्वानों और दयानन्द जी का सच्चा काशी शास्त्रार्थ" शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित की। इसमें दीक्षित जी ने अपनी कपोल कल्पना से तोड़ मरोड़कर शास्त्रार्थ को गलत रूप में प्रस्तुत किया। १९८१ ई० में प्रसिद्ध पौराणिक विद्वान् पं० बलदेव उपाध्याय ने काशी की पाण्डित्य परम्परा (द्वितीय भाग) पृ० ३७-४२ में काशी शास्त्रार्थ के विवरण में अनर्गल प्रलाप तथा मिथ्या लेखन का निन्दनीय कार्य किया। अस्तु! गुलेरी जी के लेख—'वर्तमान महाराज काशिराज' से तात्पर्य श्री प्रभु नारायण सिंह जी से था जो श्री ईश्वरीनारायण सिंह जी के पुत्र थे। स्वामी दयानन्द जी ने बाल शास्त्री से पूछा था कि-'स प्राचीं विशमन्वावर्तेऽस्येति' (षड्० ब्रा० ५-१०) में 'स' शब्द का वाच्यार्थ क्या है? पं० बाल शास्त्री ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया था। जब पं० शिवसहाय ने 'इसके द्वारा अन्तरिक्ष आदि गमन और शांति करने का फल कहा गया है?—कहा तो स्वामी जी ने उनसे पूछा कि 'यदि आपने वह प्रकरण देखा है तो किसी मन्त्र का अर्थ कहिए।' तब शिवसहाय जी चुप हो गये। स्वामी जी ने पं० बाल शास्त्री से जो प्रसिद्ध वैयाकरण थे, पूछा—'किस सूत्र के महाभाष्य में संज्ञा तो नहीं की किन्तु उपहास किया। यदि जानते हो तो इसका उदाहरण प्रत्युदाहरण पूर्वक समाधान कहो।' पुनः पं० बाल शास्त्री मौन हो गये। काशीवासियों का यह कहना गलत था कि स्वामी जी के हाथ में दिये गये पत्र का अर्थ उनसे नहीं हुआ। स्वामी जी उस पत्र को हाथ में लेकर कुछ क्षण तक विचारकर उत्तर देना ही चाहते थे कि स्वामी विशुद्धानन्द—'हमको विलम्ब होता है' यह कह कर उठ खड़े हुए। उनके साथ ही अन्य पंडित

भी खड़े हो गये और कोलाहल करते हुए चले गये। इस सम्बन्ध में ए० एम० के० नामक एक काशीवासी सज्जन ने २० नवम्बर १८६९ ई० के 'पायोनियर' में लिखा—"धर्म के विषय में शीघ्रता से परिणाम निकालने से उसकी बातों की सत्यता व असत्यता सिद्ध नहीं हो सकती। संन्यासी को इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए, जो शास्त्रार्थ के मुख्य विषय से किसी अंश तक भिन्न थे, समय दिया जाना चाहिए था। बहुत लोग यह भी कहते हैं कि संन्यासी पण्डितों के उठाये गये प्रश्नों का उत्तर देने के लिए उद्यत था और उत्तर देने की इच्छा भी उसने प्रकट की थी, परन्तु हमारे बनारस के पण्डितों ने यह सोचकर कि यह विलम्ब उनके विपक्षी को परास्त करने का सबसे अच्छा अवसर है, उसे बोलने न दिया और इस प्रकार वह साहित्य-क्षेत्र से बलात्कार करके विजयश्री छीन ले गये। हमें यह कभी आशा न थी कि महाराजा और समस्त प्रतिष्ठित नागरिकों की उपस्थिति में विषय का निर्णय ऐसी उतावली और ऐसे असभ्य व्यवहार से पण्डितों के अनुकूल जबरदस्ती कर लिया जाएगा।' हिन्दू पेट्रियट' के १७ जनवरी १८७० ई० के अंक में सम्पादक ने लिखा था—"कुछ समय हुआ कि महाराजा रामनगर (काशी) ने एक सभा की जिसमें उन्होंने बनारस के चुने हुए और बड़े-बड़े विद्वान् पण्डितों को बुलाया। दयानन्द सरस्वती और पण्डितों में बड़ा भारी और लम्बा शास्त्रार्थ हुआ। परन्तु पण्डितों का जिन्हें अपनी शास्त्रज्ञता का बड़ा गर्व था, पूर्ण पराजय हुआ। पण्डितों ने जब जान लिया कि नियमबद्ध शास्त्रार्थ में ऐसे महान् व्यक्ति से जीत पाना असम्भव है तो वह अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए पापमय उपायों के अवलम्बन पर उतारू हो गये। उन्होंने ऋषि को पुराणों का एक पन्ना दिया जिसमें मूर्तिपूजा का विषय अंकित था और उनसे कहा कि यह वेदों के मंत्र हैं। जब वह उस पन्ने को देख रहे थे तब पंडित मण्डली ने महाराज के नेतृत्व में यह प्रकट करते हुए कि धार्मिक शास्त्रार्थ में वह पण्डितवर्य पराजित हो गया, तालियां बजा दीं।" पं० घासी राम ने भी लिखा है—इसमें कोई सन्देह नहीं है कि स्वामी जी शास्त्रार्थ में पराजित नहीं हुए। शास्त्रार्थ के बीच में उन्होंने कई बार पण्डितों के मुंह बन्द कर दिए, कई बार उन्हें निरुत्तर कर दिया। परन्तु पण्डितों की ढिठाई देखिए कि पराजित होने पर भी उन्होंने लज्जा को सर्वथा तिलांजलि देकर अपनी विजय घोषणा की। धर्म के नेता ही जब ऐसी झूठी, असभ्य, अन्याय-युक्त और अशिष्ट कार्यवाही करें तो इतरजनों की कथा ही क्या है?' (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित, पृ० २१०–११, चतुर्थावृत्ति, २०१८ विक्रमी)

काशी शास्त्रार्थ में स्वामी दयानन्द द्वारा पूछे गये 'कल्म' संज्ञा की चर्चा गुलेरी जी ने अन्यत्र भी की है। एक स्थल इस प्रकार है—

पं० गुलेरी जी ने 'डिंगल' (राजपूताने की प्राचीन कविता, जिसमें देशी अपभ्रंश अधिक आते हैं और कर्कश शब्दों का अधिक प्रयोग होता है, 'डिंगल' कहलाती है। लक्षणशास्त्र और लक्ष्य रचना के अभेदोपचार से हिन्दी कविता 'पिंगल' कहलाई। उससे भेद करने के लिए, श्रुतिकटु टवर्गबहुल भाषा की कविता के लिए 'डिंगल' एक यदृच्छा शब्द है, 'डित्थ' आदि की

तरह इसका कोई अर्थ नहीं है।) शीर्षक से एक निबन्ध 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' के तीसरे भाग में पृष्ठ ९७ से १०७ तक संवत् १९७९ में प्रकाशित कियागयाथा। उसमें भी स्वामी दयानन्द का नाम इस प्रकार आया है—"कर्म का अर्थ सब जानते हैं। कुछ धातु द्विकर्मक होते हैं जिनके साथ एक कर्म गौण या अनुक्त होता है और दूसरा प्रधान या उक्त। इस अनुक्त या अकीर्तित कर्म के लिए वैयाकरणों के यहाँ 'कल्म' संज्ञा है। यह संज्ञा भाष्यकार पतंजलि ने बनाई है या परीक्षाभवंतो आदि की तरह पुराने आचार्यों की बनाई है, इसका तो कोई पता नहीं किन्तु इसका अर्थ कुछ नहीं है केवल 'कर्म' से भेद करने के लिए उससे मिलता जुलता नाम बना लिया है। स्वामी दयानन्द ने केवल परिष्कार जानने वाले नवीन वैयाकरणों को चकराने के लिए इसका उपयोग किया, किन्तु 'कल्म' 'कर्म' ऐसे ही हैं जैसे 'डिंगल, 'पिंगल'।

गुलेरी जी ने 'विक्रमोर्वशी की मूलकथा' शीर्षक से एक शोधपूर्ण निबन्ध लिखा था। (द्रष्टव्य—'समालोचक' भाग ३, जनवरी—अप्रैल, १९०५, सख्या ३०—३३, पृष्ठ २३४—२५८ तक)

इस निबन्ध में उन्होंने वैदिक तथा संस्कृत साहित्य में जहां कहीं भी उर्वशी, पुरूरवा सम्बन्धी विवरण या आख्यान मिलता है, उसका उल्लेख तथा समीक्षा प्रस्तुत की है। इसी सन्दर्भ में ऋग्वेद दशम मण्डल के ९५वें सूक्त का सायण भाष्य का अनुवाद, यास्कीय निरुक्त, शतपथ ब्राह्मण, सर्वानुक्रमणी बृहद् देवता, मैक्समूलर और आफ्रेक्ट के आधार पर ग्रिफिथ का अनुवाद आदि सामग्रियों को प्रस्तुत करते हुए स्वनिष्कर्ष दिया है। गुलेरी जी का निष्कर्ष ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज की वैदिक मान्यताओं से मिलता है। अपने निबन्ध में गुलेरी जी ने इस सूक्त पर ऋषि दयानन्द के भाष्य के अभाव के कारण खेद व्यक्त किया है—

'बड़े खेद का विषय है कि स्वामी दयानन्द जी का ऋग्वेद भाष्य यहां तक पहुंच ही न पाया नहीं तो 'नैरुक्त' शैली का एक और अर्थ यहाँ उद्धृत किया जा सकता।'

जिन महापुरुषों द्वारा हिन्दी को बढ़ावा मिला और इसकी श्री वृद्धि हुई उनके गुण कथन में गुलेरी जी किसी भी प्रकार संकोच नहीं करते थे। 'समालोचक' पत्र में उन्होंने लिखा था—'आर्यसमाज के प्रचारक एक बड़े दूरदर्शी पुरुष थे, जिन्होंने अपने शिष्यों की वृद्धि और गौरव के लिए हिन्दी का आश्रय लिया। इस बात को कट्टर से कट्टर आर्यसमाजी भी मानेगा कि यदि स्वामी दयानन्द हिन्दी को अपनी धर्मभाषा न मानते तो उनका यह जलवा नहीं होता।' आगे चल कर एक स्थान पर इसी टिप्पणी मे लिखा है—'यदि स्वामी दयानन्द को इसलिए स्तुति की जाय कि उन्होंने हिन्दी को अपनी धर्मभाषा बनाकर उसके साहित्य कोपुष्टि कराई, की, तो पण्डित दीनदयालु को भी अटक से कटक तक और काश्मीर से कन्याकुमारी तक हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के अन्यतम प्रधान उपाय व्याख्यान मे वसंने के लिए धन्यवाद देने चाहिए।'

★ ★ ★

स्वामी दयानन्द तथा आर्य समाज

[श्री जगदीश चन्द्र दीक्षित सदस्य विधान परिषद् उ० प्र०]

इण्डियन नेशनल कांग्रेस के जन्म के लगभग १८ वर्ष पूर्व सन् १८६७ के कुम्भ के मेले में, स्वामीजी के सार्वजनिक व्यक्तित्व का जन्म हुआ था। उस कुम्भ के मेले में पहुंचते ही उन्होंने अपना खेमा गाड़ दिया था। खेमे पर एक पताका फहरा दी। उस पताका पर "पाखण्ड खण्डिनी पताका" के अक्षर मुद्रित थे। वहीं से उन्होंने अपने सत्य सनातन धर्म का प्रचार किया। अपने गुरु विरजानन्द जी को आर्य धर्म के प्रचार का उन्होंने जो वचन दिया था तथा उसे पूरा करने के लिये उन्होंने जो व्रत लिया था—उसका उद्घाटन उन्होने उक्त प्रकार से हरिद्वार में कुम्भ के मेले के अवसर पर किया। आर्य धर्म के प्रचार का लक्ष्य-क्षेत्र वास्तव में उत्तर प्रदेश ही था।

हरिद्वार कुम्भ के तीन वर्षों के पश्चात्—सन् १८७० में प्रयाग में कुम्भ हुआ। प्रयाग के कुम्भ का मेला दो महापुरुषों के मिलन की वेला थी। एक दूसरे से मिलने वाले दो महापुरुषों में एक महर्षि देवेन्द्र नाथ टैगोर थे और दूसरे महर्षि दयानन्द। उस भेंट से एक दूसरे पर क्या प्रभाव पड़ा ?—न अब तक ज्ञात हो सका है और न उसका अनुमान ही लगाया जा सकता है।

आर्य समाज का संस्था के रूप में जन्म सन् १८७५ में बम्बई में हुआ था। बम्बई में आर्य समाज की स्थापना के बाद स्वामी दयानन्द सरस्वती उत्तर भारत की ओर चल दिये। उन्होंने उत्तर भारत का दौरा प्रारम्भ किया। वे पहले व्यक्ति थे जो साधारण व्यक्तियों के बीच से निकले थे तथा साधारण व्यक्तियों के बीच जी रहे थे। बाद के वर्ष अर्थात् सन् १८७७ के प्रारम्भ होते-होते, यों कहिए सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के उत्तर प्रदेश के प्रथम दौर से पूर्व, स्वामी जी प्रदेश की वाराणसी, जौनपुर, अयोध्या, लखनऊ, शाहजहांपुर, मुरादाबाद आदि नगरियों का परिव्राटन कर चुके थे।

स्वामी जी ने प्रारम्भ में फर्रुखाबाद को अपने कार्य का केन्द्र बिन्दु बनाया। उनके बम्बई से फर्रुखाबाद पहुंचने के पूर्व से वहां एक आर्य समाजी पाठशाला चल रही थी। उन्हें पाठशाला की गति विधि पसन्द न आई। पाठशाला के अध्यापक को ही, स्वामी जी ने वेद-असम्मत सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते पाया। उस पाठशाला को बन्द करना ही उन्होंने ठीक समझा। पाठशाला के संचालन के लिये जो राशि एकत्र हुई थी, उसे उन्होंने अपने वेद भाष्य के मुद्रण पर व्यय करने का निश्चय किया। इच्छा तो स्वामी जी की यह थी, कि फर्रुखाबाद में, बम्बई की तरह, वे उत्तर भारत के लिये एक आदर्श आर्य समाज की स्थापना करें। किन्तु करते कैसे ? उसके लिये आवश्यक लगन तथा उत्साह का वहाँ उन्होंने सर्वथा अभाव पाया। उन्हें उससे बड़ी निराशा हुई। फर्रुखाबाद के स्थान पर उनकी आशाएं, काशी पर केन्द्रित हुईं। फर्रुखाबाद छोड़ इसीलिए स्वामी जी काशी की ओर चले। किन्तु चलते-चलते, फर्रुखाबाद निवासियों से वे कहते गये कि यदि उन्होंने वहाँ

आर्य समाज की स्थापना कर दिखाई, तो अवश्य वहां पुनः आकर वहां लोगों से मिलेंगे। और यदि उन्होंने आर्य समाज की स्थापना न की, तो फिर हो चुका मिलना न हम खाली न तुम खाली। उस अवसर पर स्वामी जी फर्रुखाबाद में लगभग एक पखवारे तक रहे।

स्वामी जी फर्रुखाबाद से चलकर २७ मई, १८७६ को काशी पहुंचे। १५ अगस्त तक, लगभग पौने तीन महीने वे काशी में रहे। दयानन्द जी जिन दिनों फर्रुखाबाद में थे अपनी मन की आकांक्षाओं के अनुकूल भीमसेन शर्मा नाम के एक युवक को उन्होंने ढूंढ निकाला। पण्डित भीमसेन शर्मा, फर्रुखाबाद की उसी पाठशाला के विद्यार्थी थे, जिसे बन्द कर दयानन्द जी फर्रुखाबाद से काशी चले थे। पण्डित भीमसेन शर्मा ने संस्कृत भाषा फर्रुखाबाद के उसी विद्यालय में सीखी थी।

स्वामी दयानन्द जी का काशीवास, अध्ययन, चिन्तन तथा लेखन को समर्पित रहा। उन्होने इसी समय अपने वेद भाष्य की कल्पना की। इस अवधि में न कोई उन्होंने शास्त्रार्थ किया और न कोई व्याख्यान दिया। उनके मुख्य सहयोगी इन दिनों पं० भीमसेन शर्मा थे।

काशी से स्वामी जी जौनपुर आए। जौनपुर से चलकर वे अयोध्या पहुंचे। अयोध्या में लगभग पांच सप्ताह रहे। इस प्रकार अयोध्या एक प्रकार से, फर्रुखाबाद तथा काशी के बाद स्वामी जी का तीसरा पड़ाव बना। गोस्वामी तुलसीदास ने यदि अयोध्या में रामचरित मानस का प्रणयन प्रारम्भ किया था तो स्वामी दयानन्द ने वहां ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका के लेखन का श्रीगणेश किया। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका लिखने के लिये उन्होंने अपनी लेखनी १८ अगस्त, १८७६ को उठाई थी। अपनी रचना पूरी कर अयोध्या से उन्होने लखनऊ के लिए प्रस्थान किया।

[२६ सितम्बर १८७६ को स्वामी जी लखनऊ पहुंचे।] स्वामी जी की यह लखनऊ की यात्रा, दूसरी यात्रा थी। इसके पूर्व स्वामी जी लखनऊ सन् १८७२ मे आए थे। सन् १८७२ में वे घसियारी मण्डीमे श्री गदाधर सिंह के यहां ठहरे थे। ये गदाधर सिंह सम्भवतः स्वर्गीय बाबू त्रिलोकी सिंह जी के पूर्वजों मे से एक थे। अपनी इस दूसरी यात्रा में स्वामी जी हुसेनाबाद मे सरदार विक्रमसिंह के साथ ठहरे थे। वहां इनका सत्संग केशवराम विष्णु पंड्या, रामाधार बाजपेयी तथा पण्डित कन्हैया लाल के साथ हुआ। लखनऊ में इस समय इन्होने आर्य समाज की स्थापना की। पण्डित इन्द्र नारायण मसलदान, लखनऊ आर्य समाज के अध्यक्ष हुए। उसके अन्य सदस्य थे देवी प्रसाद मिश्र (पं० गोकरण नाथ, पं० हरकरण नाथ तथा डा० जयकरण नाथ मिश्र के पिता), बेणी माधव बाजपेयी, हर प्रसाद (मास्टर जो लखनऊ के बाद में कांग्रेस के एक बड़े नेता हुए) छोटे लाल बी० ए० तथा केशव राम विष्णु लाल पण्ड्या। लखनऊ पहुंच कर तथा पूर्ववत् व्यक्तियों के सम्पर्क मे आ स्वामी जी की मनीषा में बड़ी क्रान्ति आई। [जहां वे जाते थे चाहे वह फर्रुखाबाद हो अथवा काशी, जौनपुर हो अथवा अयोध्या, तथा चाहे वह लखनऊ ही क्यों न हो, प्रबुद्ध लोगों के बीच बैठते ही पाश्चात्य संस्कृति, पाश्चात्य दर्शन, पाश्चात्य विज्ञान, पाश्चात्य राजनीति के गुण ग्राम उनके कानों में गूंजने लगते थे। श्रुतियों मे निहित बातें यथार्थ हैं अथवा कृत्रिम इसको वही जान सकता है जो उनसे परिचित हो।

उनसे परिचय के लिये, उनकी भाषा जानना आवश्यक था तथा उनके देश को देखना भी जरूरी था। इंगलैण्ड जाने की उनमें अभिलाषा जागी, किन्तु आंग्ल देशवासियों के साहित्य, दर्शन, धर्म, रीति तथा नीति समझने के लिये आंग्ल, भाषा के ज्ञान की आवश्यकता थी। अतः लखनऊ पहुंच कर उन्होंने अंग्रेजी भाषा सीखनी प्रारम्भ कर दी। उनका यह कार्य गुप्त न रह सका। उसका समाचार धीरे-धीरे फैलने लगा। बहुतों के लिये यह आश्चर्य जनक समाचार था। कट्टर संस्कृतज्ञ, आंग्ल भाषा की ओर कैसे आकृष्ट हो गया ? जिन्होंने यह बात जानी वे सब यह प्रश्न एक दूसरे से पूंछने लगे। समाचार पत्रों में भी उसके समाचार छपने लगे। उसकी उनमें चर्चा, टीका तथा टिप्पणी होने लगी। लखनऊ की बात लाहौर में भी छपकर बंट गई, १ अक्तूबर, १८७६ के, लाहौर से प्रकाशित होने वाले, "हिन्दू बान्धव" से न रहा गया' उसने छाप ही दिया : प्रसिद्ध पण्डित दयानन्द सरस्वती जो इन दिनों लखनऊ में ठहरे हुये हैं, वहां अंग्रेजी भाषा सीखने में संलग्न है। इस भाषा को सीखने के पश्चात् उनका विचार इंगलैण्ड जाने का है। इसमें सन्देह नहीं कि उनके विलायत जाने से, वहां के पूर्वी भाषाओ के विद्वानों में उनकी विद्वता की बड़ी धूम मचेगी।" लखनऊ में स्वामी जी ने किससे अंग्रेजी पढ़ी तथा उतने अल्प समय में वे कितनी अंग्रेजी सीख पाये न तो हमें ज्ञात है और न उसका अनुमान लगाने के लिये हमारे पास कोई आधार है।

सन् १८७६ के नवम्बर मास के प्रारम्भ में स्वामी जी ने लखनऊ छोड़ा और लार्ड लिटन द्वारा आयोजित दिल्ली दरबार का प्रदर्शन देखने दिल्ली चल दिए। प्रदेश के सभी भावी नेताओं के चरण दिल्ली की ओर चल पड़े थे। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा सय्यद अहमद खां आदि सब दिल्ली की ओर प्रस्थान कर रहे थे। [जिन कारणों ने इन लोगों को दिल्ली पहुंचने की प्रेरणा दी थी, उन्हीं कारणों ने स्वामी जी की इच्छा शक्ति को भी बल दिया था।]

लखनऊ से स्वामी जी शाहजहांपुर पहुंचे तथा वहां से बरेली गए। बरेली में वे कुछ दिन ठहरे। उनके यहां कुछ भाषण हुए। वहां के पौराणिक पण्डितों की उनसे मुठभेड़ हुई। हिन्दुओं के जन-मानस को अपनी ओर आकृष्ट करने में उन्हें बड़ी सफलता मिली। उनका यश बढ़ा। बरेली में उनकी ख्याति को चार चांद लग गए।

स्वामी जी बरेली से मुरादाबाद आए। मुरादाबाद में ईसाई पादरियों से डटकर उनका शास्त्रार्थ हुआ। उसमें जनता की दृष्टि में उन्हें सफलता मिली। वहां से वे छलेसर तथा अलीगढ़ होते हुए, अन्ततोगत्वा दिल्ली पहुंच गये। छलेसर स्वामी जी एक बार पहले भी जा चुके थे। उन्होंने वहा एक संस्कृत पाठशाला स्थापित की थी। उसकी प्रगति उन्हें संतोषजनक न लगी। अतः जब वे दिल्ली से लौटे, उन्होंने वह पाठशाला भी बन्द कर दी।

सन् १८७६ के वर्ष की समाप्ति के समय से लेकर सन् १८७७ की जनवरी के मध्य तक स्वामी दयानन्द जी दिल्ली में रहे। स्वामी जी का शिविर अजमेरी दरवाजे के दक्षिण-पश्चिम के कोने में कुतुब मीनार की ओर जाने वाली सड़क पर लगा था। स्वामी जी के शिविर के समीप कई अन्य शिविर लगे थे। स्वामी जी के साथ, पं० भीमसेन शर्मा, इन्द्रमणि जी तथा

कर्णवास के अनेक ठाकुर भी दिल्ली गए थे तथा स्वामी जी के साथ ठहरे थे। स्वामी के दिल्ली पहुँचते ही लोगों में स्वामीजी का "सत्य और असत्य का निर्णय" नामक पैम्फलेट बटा। दिल्ली पहुँच-कर और लार्ड लिटन द्वारा आयोजित दरबार देखकर स्वामी जी में सन् १८५७ के विद्रोह की स्मृति जागी। फिर उन्हें स्मरण आया कि किस प्रकार उनके गुरु स्वामी विरजा नन्द ने उसमें सक्रिय भाग लेकर हिन्दू व मुसलमानो–दोनो का उत्साह वर्द्धन किया। सम्भवतः उसी स्मृति से प्रेरित होकर स्वामी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के हेतु एक ऐतिहासिक आयोजन किया था, जिसकी चर्चा अब अभीष्ट हो गई है।

दिल्ली में स्वामी जी ने, अपने डेरे पर, कलकत्ता निवासी केशव चन्द्र सेन, लाहौर के बाबू नवीन चन्द्र राय, अलीगढ़ के सैय्यद अहमद, अलवर के मुंशी कन्हैया लाल अलखधारी, आर्य समाज बम्बई के बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि तथा मुरादाबाद के मुंशी इन्द्रमणि को एक साथ आमंत्रित किया। स्वामी दयानन्द के उपर्युक्त आश्चर्यजनक आयोजन का समाचार देते हुए तथा टिप्पणी करते हुये, कलकत्ता के "इण्डियन मिरर" ने अपने १४ जनवरी सन् १८७७ के अङ्क में कहा था: "हमने सुना है कि पण्डित दयानन्द सरस्वती के निवास स्थान पर एक सभा इस प्रयोजन से हुई कि वर्तमान सुधारकों के बीच एक वास्तविक तथा व्यावहारिक आधार पर एकता स्थापित की जाए। इसमें सन्देह नहीं कि इससे बड़े शुभ परिणाम उत्पन्न होंगे। हम इसकी सफलता के लिए प्रार्थना करते है। कलकत्ता में ही नहीं, इस आयोजन के समाचार ने लाहौर के कुछ लोगों को भी हर्ष विभोर कर दिया। लाहौर के "बिरादराने हिन्द" के १४ जनवरी, १८७७ को अंक का कथन था: "हमें यह सूचित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि दिल्ली दरबार के अवसर पर भारत के प्रसिद्ध और योग्य सुधारकों ने पण्डित दयानन्द सरस्वती के मकान पर एक विशेष सभा इस प्रयोजन से आयोजित की कि हमारा वास्तविक ध्येय सबकी एकता है और भविष्य में पृथक्-पृथक् कार्य करने के स्थान पर हम सबको एक मत होकर देश जाति के सुधार में संलग्न हो जाना चाहिए और यदि आप मे किसी प्रकार का मतभेद हो तो उसका निर्णय परस्पर बातचीत से कर लेना चाहिए।" दुर्भाग्य से आयोजन का मन्तव्य पूरा न हुआ। बात बनी नहीं, टूट गई।

उसका उल्लेख करते हुये बाबू नवीन चन्द्र राय ने अपनी पत्रिका "ज्ञान दर्पण" में बताया कि "स्वामी जी ने हम लोगों से यह प्रस्ताव किया कि हम लोग पृथक्-पृथक् धर्मोपदेश न करके एकता के साथ करे तो अधिक फल होगा। इस विषय पर बातचीत हुई, परन्तु मूल विश्वास मे हम लोगों का उनसे मतभेद था, इसलिए जैसे वे चाहते थे, एकता न हो सकी।" दिल्ली का दरबार समाप्त हुआ। स्वामी जी का भारतीय सुधारकों के बीच एकता स्थापित करने का प्रयत्न असफल रहा।

स्वामी जी का डेरा दिल्ली से उठा और मेरठ की ओर चल दिया। उस समय वर्ष १८७७ के जनवरी मास के मध्य का समय था। मेरठ से स्वामी जी का प्रस्थान सहारनपुर की ओर हुआ। उत्तर प्रदेश के पश्चिमोत्तर क्षेत्र का यह उनका प्रथम परिभ्रमण था। जिस समय स्वामी जी सहारनपुर में टिके हुए थे, उस समय उनके

चांदपुर के मेले में पधारने का अनुरोध किया गया।

चांदपुर, वैसे भी स्वामी जी का ध्यान आकर्षित कर चुका था। ईसाई मिशनरियों ने उस क्षेत्र में बड़े जोर से धावा बोल रखा था। कालान्तर मे स्वामी जी जब लखनऊ से बरेली जा रहे थे, वे चांदपुर मे पाच दिन ठहरे। चांदपुर के मेले में ईसाइयों और मौलवियों से उनका १९-२० मार्च १८७७ को डटकर शास्त्रार्थ हुआ।

स्वामी दयानन्द जी की ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' वर्ष भर से बस्ते में बंधी पड़ी थी। सन् १८७७ में उसके मुद्रण के प्रति स्वामी जी सचेष्ट हुए। उसकी पाण्डु लिपि प्रकाशन के लिये काशी के लाजरस प्रेस को दी गई। उसने उसके चौदह खण्ड प्रकाशित किए। शेष दो खण्ड बम्बई के निर्णय सागर प्रेस से प्रकाशित हुए।

सन् १८७७ के मार्च मास के समाप्त होते-होते स्वामी जी पजाब पहुंच गए। मार्च सन् १८७७ से लेकर वर्ष १८७८ के मध्य तक, या कहिए लगभग १६ महीने का समय उन्होने पंजाब मे व्यतीत किया। पंजाब की सांस्कृतिक भूमि आर्य समाज के बीजारोपण के लिए सर्वथा उपयुक्त थी।

इस अवधि मे स्वामी जी ने घूम-घूम कर वेदों का प्रचार किया और पंजाब मे अनेक स्थानों पर आर्य समाजों की स्थापना की। पंजाब से अब स्वामी जी पुनः उत्तर प्रदेश की ओर चले। इस बार उत्तर प्रदेश मे वे लगातार लगभग ३० महीने रहे।

सन् १८७८ की जुलाई के मध्य स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने रुड़की में थामसन इन्जी-नियरिंग के विद्यार्थियों की एक सभा को सम्बोधित किया। उस सभा में स्वामी जी ने जो व्याख्यान दिया उसमें भारतीय ज्योतिष शास्त्र के सूर्य-सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए, सौर्य मण्डल तथा उसकी उन गतिविधियों पर जो प्रकाश डाला। प्राचीन ग्रेविटी सम्बन्धी सिद्धान्त की व्याख्या की। स्वामी ने दृढ़ता से कहा कि प्राचीन भारत किसी भी प्रकार, विज्ञान तथा अभियंत्रण की विद्याओ और कलाओं में किसी से पीछे न था।

इन्हीं दिनों, स्वामी जी अजमेर भी गये, अजमेर में उन्होने क्या किया यह आज उतने महत्व का नहीं जितना अजमेर के हसबैन्ड नामक पादरी का, "इण्डियन मिरर" में प्रकाशित वह वक्तव्य है जिसमे उसने स्वामीजी के व्यक्तित्व का शब्द-चित्र खींचा था। उसमें उसने कहा था कि यद्यपि मुसलमान हम से क्रुद्ध हैं और सभी हिन्दू भी उनके मत के नहीं, पर सब यह अनुभव करते है कि उनके सम्मुख एक ऐसा व्यक्ति विद्यमान है, जिसकी बुद्धि परिष्कृत और तर्क सूक्ष्माति-सूक्ष्म व प्रभावोत्पादक है और जिसका व्यक्तित्व अत्यन्त शक्ति सम्पन्न है। उनके व्याख्यानों ने बहुत प्रभावोत्पन्न किया और देशवासियों में धार्मिक विषयो के प्रति ऐसी उत्तेजना प्रभूत हुई जैसे कि मैने पहले कभी नहीं देखी थी।

सन् १८७९ में हरिद्वार के कुम्भ का अवसर पुन. आया।

१६ फरवरी को विज्ञापनों और घोषणाओं के साथ स्वामी जी ने मेरठ से हरिद्वार के लिये प्रस्थान किया। वह २० फरवरी, १८७९ से लेकर १४ अप्रैल तक हरिद्वार में झण्डा गाड़े रहे। उनका लगभग २ महीनों का वह हरिद्वार वास

धार्मिक व दार्शनिक वाद-विवादों तथा षडमाधकों से भरा रहा। १४ अप्रैल को उनका हरिद्वार वास समाप्त हुआ।

२६ अप्रैल, १८७६ को दयानन्द जी ने, देहरादून आर्य समाज की स्थापना की। वहीं पर उन्होंने एक मुसलमान को शुद्ध कर और उसे अलखधारी का नाम दे, अपना शिष्य बनाया। देहरादून से स्वामी जी सहारनपुर लौटे। उनके साथ इस बार थियोसौफिकल सोसाइटी के कर्नल आलकाट और मदाम ब्लेवोत्सकी भी थे।

२० जुलाई १८७६ को मुरादाबाद में आर्य समाज की स्थापना की। अलीगढ़ में उन्होंने जीवन का प्रथम राजनीतिक भाषण दिया। जिस सभा में उनका वह व्याख्यान हुआ था, उस सभा में मुरादाबाद के कलेक्टर शेरिंग भी मौजूद थे। स्वामी जी ने अपने उस भाषण में–उस भारतीय राजतन्त्र का चित्र खींचा जिसका विवरण संस्कृत साहित्य में मिलता है और जो पिछले पांच वर्षों से "हिन्दू पालिटी" के नाम से, भारतीय विश्वविद्यालयों के प्राचीन भारतीय इतिहास की एम० ए० कक्षाओं के लिये निर्धारित कार्यक्रम का एक अंग है।

मुरादाबाद से स्वामी जी बदायूं गये। बदायूं में वे लगभग दो सप्ताह रहे। १४अगस्त, १८७६ को उन्होंने बदायूं में आर्य समाज की स्थापना की। अपने निश्चित कार्य को सम्पन्न कर स्वामी जी बरेली पहुंचे।

स्वामी जी की बरेली की यह यात्रा उनके जीवन में उनके उद्देश्यों की सफलता का कारण बनी। यहीं उनकी मुन्शीराम जी से भेंट हुई। जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द बने। उस समय वे काशी के क्वींस कालेज में छात्र थे। उनके पिता बरेली के कोतवाल थे तथा कट्टर सनातनी तथा मूर्ति पूजक थे। वहाँ मुंशीराम जी के पिता कट्टर सनातनी थे, वहां क्वींस कालेज में पढ़ते समय पाश्चात्य विज्ञान तथा दर्शन के सम्पर्क में आने पर युवक मुंशीराम लगभग अनीश्वरवादी हो गया था। जिस समय स्वामी जी इस बार बरेली पहुंचे थे, उस समय युवक मुंशीराम बरेली में ही थे। वे स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आए। उनके भाषण सुने। और वे स्वामी जी के हो गये। वे परम आस्तिक हो गये और वह वेदों का डंका बजाने लगे। बड़े होने पर कांग्रेस में प्रविष्ट हो, दिल्ली व पंजाब प्रान्तों की कांग्रेस में प्राण फूंके तथा देश को गुरुकुल कांगड़ी विश्व - विद्यालय दिया। बरेली के इसी प्रवास काल में स्वामी जी ने अपना वह "आत्म चरित्र" लिखा, जो कलकत्ता के "थियोसोफिस्ट" में छपा था। वहाँ से स्वामी जी ४ सितम्बर १८७६ को शाहजहाँपुर पहुंचे।

उस बार शाहजहाँपुर में स्वामी जी ने १३ दिन ठहर कर १७ सितम्बर को लखनऊ के लिये प्रस्थान किया। वहाँ से फर्रुखाबाद फिर कानपुर गये। १६ नवम्बर १८७६ को कानपुर में आर्य समाज की स्थापना की। उस समय लाला माधव राम को उसका अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

कानपुर से स्वामी जी ने काशी के लिये प्रस्थान किया। वह १७ नवम्बर १८७६ को प्रयाग पहुंचे। प्रयाग में कुछ दिन रहकर २३ नवम्बर १८७६ को मिर्जापुर होते हुये काशी जाकर रुके। काशी में उन्होंने विजयनगरम् के आनन्द बाग में अपना डेरा बनाया। काशी में रहते हुये स्वामी जी ने वैदिक यन्त्रालय की स्थापना की। उनके प्रकाशन कार्य में इतनी

वृद्धि हो चुकी थी कि बिना एक छापाखाना स्थापित किए, उनका काम नहीं चलने वाला था। अनेक आर्य समाजों ने तथा आर्य सज्जनों ने स्वामी जी की छापेखाने की आवश्यकता की पूर्ति के लिए उदारतापूर्वक दान दिया था। वर्ष १८८०-८१ की प्रान्त की प्रशासनिक रिपोर्ट के अनुसार, प्रेस का पंजीकरण क्रमांक ३४ पर "वैदिक प्रेस" के नाम से हुआ। उसके स्वामी के रूप में स्वामी दयानन्द सरस्वती का उल्लेख है। उसी के साथ "आर्य प्रेस" के नाम से भी एक प्रेस पंजीकृत हुआ। उस प्रेस से श्री हर किशोर नाम के व्यक्ति "आर्यमित्र' का प्रकाशन कर रहे थे। काशी में आर्य समाज १५ अप्रैल १८८० को स्थापित हो सका। वहां आर्य समाज की स्थापना के बाद भी स्वामी जी कई दिन काशी में रहे। वे ५ मई को काशी से लखनऊ की ओर चले।

९ मई १८८० को इस बार, स्वामी जी ने लखनऊ में दूसरे आर्य समाज की स्थापना की। वे इस बार लखनऊ में ५ मई से लेकर २० मई तक रहे। लखनऊ से वे फर्रुखाबाद गये। फर्रुखाबाद से ३० जून को वे मैनपुरी पहुंचे। वहां उन्होंने आर्य समाज ११ जुलाई को स्थापित किया। मैनपुरी से स्वामी जी मेरठ की ओर गए।

सन् १८८० को जुलाई के मध्य मेरठ पहुंच कर स्वामी जी वहां ७ अक्तूबर तक रहे। इस अवसर पर १६ अगस्त को स्वामी जी ने मेरठ परोपकारिणी सभा की स्थापना की। लाला मूलराज को उसका अध्यक्ष बनाया।

कांग्रेस के संस्थापक ह्यूम साहब तथा स्वामी जी के बीच सम्पर्क था। कलकत्ता की "थियोसोफिस्ट" नामक पत्रिका के वर्ष १८८३ के मार्च अङ्क में ह्यूम साहब ने स्वामी जी के वेद-भाष्य पर कुछ प्रतिकूल टिप्पणी की थी। स्वामी जी का ह्यूम को दिया गया उत्तर कलकत्ता के "भारत मित्र" नाम के २ अगस्त के अङ्क में प्रकाशित हुआ था। उसमें स्वामी जी ने जोर दिया था कि ह्यूम साहब यदि सामान्य भ्रम व्यक्त करने के स्थान पर किसी मन्त्र का उदाहरण दें, जिसका अर्थ मैंने गलत लगाया है तो मैं उसका उत्तर "भारत मित्र" में छपवाकर दे दूंगा।

आगरा से स्वामी जी ने, मेरठ की परोपकारिणी सभा के अध्यक्ष मूलराज को ३० नवम्बर १८८० को एक पत्र लिखा। उस पत्र में, स्वामी जी देश के पढ़े लिखे युवकों में बढ़ती हुई बेरोजगारी से चिन्तित दिखाई देते हैं। भारतीयों को औद्योगिक नैपुण्यों में दक्षता प्रदान करने के लिये, उन्हें जर्मनी के सहयोग की अपेक्षा थी। पत्र यह भी सिद्ध करता है कि स्वामी जी केवल मात्र धर्म प्रचारक न थे, वे राष्ट्र निर्माता भी थे। वह पत्र, ऐतिहासिक होने के कारण उसका कुछ अंश उद्धृत है:—

"लाला मूलराज जी, आनन्दित रहो।

आपका २६ नवम्बर १८८० का पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुआ। आजकल हम आगरा में हैं, लगभग एक मास यहां रहने का विचार है।

अब यह स्पष्ट है कि बहुत से पढ़े लिखे लोगों को भी नौकरी नहीं मिलती, या वे जीवन निर्वाह का प्रबन्ध नहीं कर सकते। ऐसी अवस्था देखकर मैं एक कला कौशल के स्कूल की आवश्य-

करता विचारता हूं। प्रत्येक पुरुष को अपनी आय का १००वां भाग प्रस्तावित संस्था को देना चाहिए। इस धन से चाहे जो विद्यार्थी कला कौशल सीखने जर्मनी भेजे जावें या वहां से अध्यापक यहां बुलाये जायें। जो कोई इस फंड के व्यय पर इन धन्धों को सीखे, उसे प्रतिज्ञा करनी होगी कि स्वशिक्षा समाप्त करने पर सभा या फण्ड की वह १२ वर्ष तक सेवा करेगा। यह प्रश्न यहां विचारा जा रहा है और जब कोई परिणाम निकलेगा तो हम आप को सूचना देंगे।

मुझे अपने भाइयों और उनके अब के पता का हाल लिखो। अब समय है कि आप ला० श्रीराम को कला कौशल सीखने इंग्लैंड भेज दें।

जर्मनी से पत्र आ रहे हैं। हम सब आनन्द से हैं। सबसे हमारा नमस्ते कह दें।

ह० दयानन्द सरस्वती

३० नवम्बर १८८० बाग गिरधारी लाल

आगरा।

स्वामी जी कोई साधारण धर्म प्रचारक न थे। उनकी धर्म की कल्पना में राष्ट्र धर्म भी प्रच्छन्न रूप से विद्यमान था। यदि उनकी धार्मिक चेतना राष्ट्रीयता की बागडोर से न बंधी होती तो काहे को वे, आर्य समाज के सदस्यों से विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार का तथा स्वदेशी वस्त्रों के प्रयोग का व्रत लिवाते। सन् १८७९ के १४ अगस्त को कलकत्ता के स्टेट्समैन ने छापा था।

"दयानन्द सरस्वती द्वारा लाहौर में स्थापित आर्य समाज के सब सदस्यों ने समाज मंदिर में एकत्र होकर निर्णय किया था कि वे अंग्रेजी वस्त्रों को धारण नहीं करेंगे और केवल ऐसे ही वस्त्रों को प्रयोग में लायेंगे जो भारत में बने हों।"

स्वामी जी की यह उक्ति कि "कोई कितना करे जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।" "माता पिता के समान (लार्ड-कैनिंग तथा लार्ड रिपन आदि) कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

इस प्रकार कांग्रेस की सर्जना की पृष्ठ भूमि में भी ऋषि दयानन्द के विचार निश्चित रूप अपना योगदान करते रहे हैं।

प्रदेशीय विद्यार्य सभा

प्रदेशीय विद्यार्य सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ से सम्बन्धित प्रत्येक शिक्षण संस्था को सूचित किया जाता है कि विद्यालय के निरीक्षण हेतु श्री श्याम मोहन जी आर्य एवं श्री विजय सिंह जी राघव को नियुक्त किया गया है। सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं का कर्त्तव्य है कि निरीक्षक महोदय के पहुंचने पर विद्यालय/कालेज का निरीक्षण करावें तथा आवश्यक प्राप्तांक धन देकर रसीद प्राप्त करें।

माधव सिंह

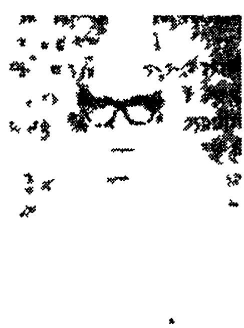
मन्त्री

प्रदेशीय विद्यार्य सभा

"कथनी और करनी में सामञ्जस्य"

(चन्द्रकिरण शर्मा, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश)

अनादि काल से ही गंगा यमुना की पवित्र धाराओं से सिंचित हमारा यह प्रदेश, जनसंख्या की दृष्टि से, देश का एक बड़ा प्रदेश है। चाहे देश का राजनैतिक क्षितिज हो अथवा सांस्कृतिक, यहाँ की मिट्टी ने भगवान् राम और कृष्ण से लेकर आधुनिक युग के अनेकों महापुरुषों यथा श्री मदन मोहन मालवीय श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री लाल बहादुर शास्त्री आदि को जन्म दिया जिनकी प्रेरणा समस्त भारतीय जनता को ही नहीं अपितु विश्व को सुख और शांति का संदेश देने वाली है। आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द की यह मुख्य प्रचार स्थली रही है। यह उन्हीं का आशीर्वाद है कि आज प्रदेश मे आर्य समाजो का जाल बिछा हुआ है। उनका संगठन बड़ा सुदृढ़ है और प्रदेश की आर्य जनता आर्य समाज के झण्डे के नीचे अपने लक्ष्य पथ की ओर निरन्तर अग्रसर हो रही है। पिछले अक्टूबर मे हमने अपनी प्रिय आर्य प्रतिनिधि सभा की शताब्दी मनाई और उसमे बढ़ते कदमो का आकलन भी किया।



चन्द्रकिरण शर्मा

किन्तु कभी-कभी इतिहास मे ऐसे अवसर आ जाते हैं जब विजेता विजय के उन्माद मे शिथिल हो जाता है और अतीत की उपलब्धियो पर गर्वान्वित होकर वह अपने कर्तव्य पथ से विचलित होने लगता है उसकी कथनी और करनी मे अन्तर आ जाता है। यह स्थिति चाहे व्यक्ति हो अथवा समाज, दोनो पर समान रूप से लागू होती है। आज हमारे देश की स्थिति कुछ इसी प्रकार की होती जा रही है। प्रत्येक व्यक्ति राजनीतिज्ञ बनता जा रहा है वह अपनी कथनी और करनी मे सामञ्जस्य नहीं कर पा रहा है। आर्य समाज को छोड़कर लगभग सभी संस्थाओ मे राजनीति प्रवेश कर चुकी है जिसका परिणाम यह है कि राष्ट्र की चिन्ता से अधिक उन्हे अपने पद की ओर अस्तित्व की चिन्ता है। आर्य समाज को इस स्थिति से बचकर रहना है उसे अपने एकमात्र लक्ष्य "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" की ओर रचनात्मक पग रखते हुए बढते जाना है।

हमारा कार्य विश्व मे वैदिक धर्म का प्रचार करना है। हमारी कथनी और करनी मे कोई अन्तर नहीं होना चाहिए। संगठन की दृष्टि से हम कोई भी व्यवस्था स्वीकार क्यो न करें

(शेष पृष्ठ ३० पर)

"ऋषिवर तुम्हें प्रणाम !"

(राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर उत्तर प्रदेश)

वेदों के उद्धारक हे ऋषि !
तुम हिमगिरि से अधिक महान ।
गंगा से भी अधिक सुपावन,
रहा तुम्हारा जीवन—मान ।
वैदिक धर्म ध्वजा फहराकर,
मानवता का अलख जगाया ।
दूर किया अन्याय–अनय सब,
धरती का तम दूर भगाया ।
स्वतन्त्रता का मन्त्र तुम्हीं ने,
दिया हमें निर्भय सत्वर ।
जगा अपरिमित शक्ति हमारी,
हमें बनाया शौर्य—प्रवर ।
तेरे सिंह—निनादों से ही,
जगी राष्ट्र की तरुणायी ।
तेरे ही पावन प्रयास से,
अरुण हुई भारत अरुणायी ।
शक्ति नवलतम दी तुमने ही,
युवकों को दुर्धर्ष अपार ।
ली अँगड़ाई नूतन युग ने,
जाग उठा सारा संसार ।
वैदिकता की विमल पताका,
लगी भूमि मण्डल लहराने ।
जन-जन में नवजीवन आया,
उत्सुक हुए धरम दीवाने ।
पाखण्डों व अन्य पथों को,
जग में जन ने फिर ठुकराया ।
सत्य–शिवम् से आलोकित पथ,
को जनता ने गले लगाया ।
तेरे सतत निवेशन से ही,
मिली हमें है यह आजादी ।
तुमने ही ऋषि रोकी निर्भय—
सत्य–धर्म की वह बर्बादी ।
ऋषिवर ! जीवन रहा तुम्हारा,
सत्य– शिवम् –सुन्दर –सुललाम ।
हे युग शिल्पी, युग उद्बोधक !
कोटि–कोटि है तुम्हें प्रणाम ॥

"कथनी और करनी में सामञ्जस्य"

(शेष पृष्ठ २९ आगे)

हमारा मुख्य लक्ष्य प्रचार है । यदि ऐसा न हुआ, तो एक दिन राजनीति का इस संस्था पर भी आधिपत्य हो जायेगा और हम अपने मूल उद्देश्य को भूल कर बहक जायेंगे । हमारे ऋषिवर की कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं था उन्होंने "यन्मनसि तद्वचनं यद्वचने तदाचरणम्" का हमें मन्त्रपाठ पढ़ाया जो हमारे सँगठन का मूलमन्त्र है इसलिये आज आर्य समाज में छोटी-सेछोटीइकाई से लेकर जिला स्तर, प्रदेशस्तर, एवं सार्वदेशिक स्तर पर विराजमान समस्त अधिकारीगण एवं सदस्यगण मन वचन और कर्म से अपनी कथनी और करनी में बढ़ते हुए भेद को कम करें ताकि हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सकें—मेरा समस्त आर्यजनों से विनम्र निवेदन है कि आइए ऋषि निर्वाण की इस पावनवेला के शुभ दिवस पर हम सब संकल्प लें कि मन वचन कर्म से अपनी कथनी और करनी में बढ़ते हुए इस अन्तर को कम करेंगे और तब तक प्रयत्न करते रहेंगे जब तक पूर्ण सामञ्जस्य प्राप्त न हो जाय अन्यथा हमारा उद्घोष "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अपूर्ण ही रह जायेगा ।

साम्प्रदायिकता धर्म नहीं !

[श्री विश्वम्भर दयालु गुप्त]

धर्म का दूसरा नाम कर्त्तव्य है। कर्त्तव्य उसे कहते हैं जो हर देश, काल परिस्थिति और समय में सदैव करने योग्य हो। इसीलिए हमारे पूर्वजों ने कहा है कि धर्म एकता का सूत्र है धर्म से सुख और शान्ति फैलती है। धर्म से प्यार और सहिष्णुता उपजती है। परन्तु आज धर्म के नाम पर चारो ओर टकराव संघर्ष और मार धाड़ हो रही है। ईर्ष्या द्वेष पनप रहा है। हर गलत को सही सिद्ध करने के लिए विविध आडम्बर फैलाये जा रहे हैं। रोज नये-नये भगवान पैदा हो रहे हैं और यह सभी धर्म के नाम पर अधर्म का प्रसार करके मानवता को विदीर्ण कर रहे हैं। सभी अपने-अपने कथन को ही ब्रह्मवाक्य कहकर उसी के पीछे चलने का नारा देते हैं। वे तथा कथित भगवान या धर्माचार्य या तो धर्म को जानते नहीं या जानकर भी उसे मानना नहीं चाहते—क्योंकि धर्म पर चलने के लिए त्याग और तप करना पड़ता है कष्ट उठाने पड़ते हैं। धर्म का व्रती प्रभुप्रदत्त अपने पवित्र मानव-जीवन को अपने लिए नहीं समाज और राष्ट्र के लिए जीता है। धर्म का धनी स्वार्थ में नहीं परमार्थ में रत रहता है।

सम्प्रदाय और धर्म के अन्तर को न समझने के कारण ही आज देश में चारो ओर विग्रह टकराव और भटकाव चरम सीमा पर है विभिन्न सम्प्रदायो या फिरकों की अन्ध मान्यतायें ही धर्म का कलेवर लेकर फूट व विलगाव फैलाती हैं। सामान्य जन ही नहीं आज का अधिकांश पढ़ा लिखा वर्ग भी सम्प्रदायवाद को ही धर्म मान बैठा है। इसीलिए सभी धर्मों में एकता होने की बातें वे करते हैं। धर्म के सच्चे स्वरूप को जानने वाले की दृष्टि में धर्म अनेक हो ही नहीं सकते। धर्म के किसी एक अंग का आधार लेकर विभिन्न सम्प्रदायों का निर्माण हुआ। उसके निर्माण के मूल में धर्म के उस विशेष अंग को अंगीकार करने का लक्ष्य रखागया होगा। बाद में उनके अनुयायियों ने धर्म को उसी एक नाम में ही बांध डाला। कालान्तर में अन्धानुकरण या मत्था टेक प्रवृत्ति के कारण धर्म के दूसरे अंग की उपेक्षा ही नहीं की गयी अन्य अंगो की परिचर्या करने वालों से द्वेष भी मानना आरम्भ कर दिया।



श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त

सम्प्रदाय का स्वरूप—धर्म के किसी अंग विशेष का अनुसरण या अन्ध विश्वास अथवा स्थान विशेष परिस्थिति विशेष के बनाये गये रीति रिवाजों से निर्मित वर्ग विशेष की मान्यताएं हैं (जिनमे स्थान परिस्थिति व चिन्तन विशेष से अन्तर अवश्यम्भावी है)।

धर्म का स्वरूप-धैर्य-क्षमा सहनशीलता, शालीनता, मनका वशीकरण, और वृत्ति का परित्याग, आलस्य प्रमाद से दूर रहने का निश्चय पवित्रता शारीरिक मानसिक वाचिक व व्याव-सायिक पवित्रता, इन्द्रियों का सदुपयोग संयम बुद्धि का विकासोन्मुखी प्रयोग, विद्या वेद ज्ञान का धारण करना।

इन सभी लक्षणों को वास्तविक धर्म का स्वरूप स्वीकारने वालो मे कभी भी मतभेद नहीं हो सकते। इन लक्षणो से युक्त व्यक्तियो में कभी विग्रह और संघर्ष नहीं हो सकता।

महर्षि स्वामी दयानन्द ने देश में फैले अन्ध-विश्वास भेद, मतभेदों से कड़ा संघर्ष करके वास्तविक धर्म के स्वरूप की पहचान सबको दी और साम्प्रदायवाद का डटकर विरोध किया। धर्म की उस पहचान को सर्वात्मना अंगीकार करके राष्ट्रीय एकता के लिए सदैव सजग सचेत-रहने के लिए ही आर्य समाज आन्दोलन चलाया और अज्ञान अन्धकार को दूर करके जन-जन का अधिकार उसे दिलाया। उसी के प्रतिफलस्वरूप राष्ट्र स्वतन्त्र हुआ। परन्तु आज फिर आलस्य प्रमाद तथा अज्ञानता की घनघोर घटायें छा रही हैं इसीलिए धर्म के नाम पर धर्म की भी मानवता की भी हत्या की जा रही है।

आइये आज महर्षि दयानन्द के निर्वाण पर्व पर हम आत्म-चिन्तन करें और कटिबद्ध हो जन-जन मे धर्म के सच्चे स्वरूप की पहचान कराने के लिए। संकल्प हो, कदाचार अनाचार मिटा-दें राष्ट्र की, राष्ट्रीयता की और मानवता को बचाने के लिए। दृढ़व्रत, नये देश को सुखी समृद्ध बनाने के लिए।

-विनम्रता सहित-

निवेदन

विद्वान लेखको एवं रचनाकारों ने ऋष्यङ्क के लिए जो लेख और रचनाएं भेजी हैं उसके लिए हम उनके आभारी हैं। अभी और रचनाएं हमारी आशा से भी अधिक प्राप्त होती जा रही है जबकि सामग्री प्रेस में मुद्रणार्थ पहुंच चुकी है। खेद है कि इन सबको इस अङ्क में स्थान देना संभव नहीं हो सकेगा। अतः जो शेष रह गये है उन्हें आगामी अङ्कों मे प्रकाशित किया जाता रहेगा। —प्रबन्ध सम्पादक

दिव्य दयानन्द

[कृष्ण गोविन्द गुप्ता]
राजघाट बांध परियोजना, ललितपुर उ० प्र०

दिव्य दयानन्द देव मूर्ति श्री देव की,
दया कर दीपक दिव्य वेद का जला गया।
छूत-छात छोड़ के अछूता उपदेश दिया,
भद्दी भेद भावना के भूत को भगा गया।
वैर को विसारा और प्रीति का पढ़ाया पाठ,
आनन्द सुशान्ति मार्ग प्रीति का पिला गया।
वेद का अकाट्य उपदेश दिया देव ने,
पाखण्ड की ओर-छोर जड़ से मिटा गया।
ईश की उपासना मे सबको लगा के आज,
झूठे देवी देवता के जाल से छुड़ा गया।
ले रहा था विश्व सारा हिचकियाँ जब,
वेद का अमृत पिला हमको पुनः जिला गया।
आरती उतारती है दीपमाला ऋषि की,
'गोविन्द' को ज्योति सद्ज्ञान की दिखा गया।
दिव्य दयानन्द देव ... ...

आर्यसमाज के साहित्य का एक विशेष अध्याय

[डा० भवानीलाल जी भारतीय]

दृष्टान्त साहित्य–

आर्यसमाज के उपदेशकों ने कथा साहित्य के अन्तर्गत एक नवीन विधा–दृष्टान्त साहित्य का प्रवर्तन किया है। पुरातन संस्कृत साहित्य में ऐसी कथा=कहानियाँ प्रचलित रही हैं जो किसी कल्पित कथा के व्याज से मानव के लिए किसी उपदेश अथवा नीति का विधान करती थीं। पंचतंत्र तथा हितोपदेश आदि ग्रन्थों में संग्रहीत पशु–पक्षियों तथा मानव–जीवन से सम्बद्ध अनेक रोचक कथायें नीति–उपदेश के लिये ही लिखी गई थीं। यह भिन्न बात है कि उनके पाठकों का पर्याप्त मनोरंजन भी होता था। आर्यसमाज के उपदेशक–लेखकों ने संस्कृत के ऐसे ही ग्रन्थों से प्रेरणा लेकर हिन्दी में दृष्टान्त कथाओं का प्रणयन किया। उन्हें इस प्रकार के दृष्टान्तों को लिखने में स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों से भी प्रेरणा मिली थी। हम देखते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में ही स्वामी दयानन्द ने बाबु-पोप संवाद, काजी–पण्डित संवाद, नारायणस्वामी (नकटा) सम्प्रदाय की कथा जैसे लोक रुचिवाले दृष्टान्त लिखकर धर्म के नाम पर प्रचलित अनेक पाखण्डों का खण्डन किया है। इसी प्रकार उन्होंने व्यवहारभानु में भी शेखचिल्ली की कथा, जड़-बुद्धि और तीव्र-बुद्धि संवाद, प्रियदास के चेले भगवानदास का संस्कृत अध्ययन, लालबुझक्कड़ उपाख्यान, बजाज–ग्राहक–प्रसंग, मूर्ख ब्राह्मण और राजा का दानाध्यक्ष, अंधेर नगरी की कथा, आदि रोचक दृष्टान्तों के द्वारा बालकों को नीति धर्म तथा लोक व्यवहार का ज्ञान कराया है।

आर्यसमाज के जिन विद्वान् उपदेशकों ने कथा–कहानी और दृष्टान्तों को धर्मोपदेश के माध्यम के रूप में प्रयुक्त किया उनमें स्वामी दर्शनानन्द का नाम सर्व–प्रथम आता है। उन्होंने उर्दू में कथापच्चीसी लिखी जिसका हिन्दी अनुवाद मदनमोहन शुक्ल 'मदनेश' ने किया था। पच्चीस दृष्टान्तों का यह संग्रह १९२५ ई० में श्यामलाल सत्यदेव बरेली द्वारा प्रकाशित हुआ था। दृष्टान्त साहित्य के लेखकों में निम्न नाम गणनीय हैं–पं० हनुमानप्रसाद शर्मा–वे उत्तरप्रदेश के प्रसिद्ध उपदेशक थे। इन्होंने दृष्टान्त रत्नाकर शीर्षक ग्रन्थ की रचना की है। सम्भल (जिला मुरादाबाद) निवासी पं० शिवशर्मा ने दृष्टान्त समुच्चय लिखा जो १९१५ ई० में छपा। पं० बिहारीलाल शास्त्री तथा पं० रामजी शर्मा मधुबनी लिखित दृष्टान्तसागर भी अनेक संस्करण देख चुके हैं। पं० जगत्कुमार शास्त्री ने दृष्टान्त-मंजरी की रचना की है जो विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय से प्रकाशित हुई। पं० कालीचरण शर्मा ने हास्यरस के कुछ रोचक चुटकुलों का संग्रह हास्यरत्नमाला शीर्षक से किया है।

किसी युग में दृष्टान्तों के रूप में लिखी गई इन कथाओं को सामान्य जनता बड़ी रुचि के साथ पढ़ती थी।

धर्म शिक्षा विषयक साहित्य–

आर्यसमाज के विद्यालयों में धर्म शिक्षा का विषय अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम में सम्मिलित रहता है। यह एक प्रसिद्ध बात है कि डी० ए० वी० कालेज, लाहौर में धर्म शिक्षा का अध्यापन

स्वयं महात्मा हंसराज करते थे। छात्रों को वैदिक धर्म के मौलिक सिद्धान्तों, आर्यसमाज की विचारधारा तथा स्वामी दयानन्द के जीवन एवं कृतित्व से परिचित कराने की दृष्टि से धर्म शिक्षा विषयक अनेक ग्रन्थों की रचना समय-समय पर हुई। प्रथम श्रेणी से लेकर विद्यालयों की उच्चतम श्रेणी तक का धर्म शिक्षा का पाठ्यक्रम निर्धारित करने के अनन्तर उसी क्रम से धर्म शिक्षा की पाठमालाएं लिखी जाती थीं। स्वामी प्रकाशानन्द रचित शिशु-वर्ण बोध इस विषय की अत्यन्त प्राचीन पुस्तक है जिसमें वर्णमाला के ज्ञान के साथ-साथ धर्म सम्बन्धी कुछ प्रारम्भिक बातें अंकित हैं। यह जोधपुर से प्रकाशित हुई थी।

आर्यसमाज के उच्चकोटि के अनेक लेखकों ने धर्म शिक्षा विषयक ग्रन्थ लिखे हैं। अजमेर के श्री मथुराप्रसाद माहेश्वरी ने जो 'धर्म शिक्षा' पुस्तक लिखी उसे मथुराप्रसाद गुलाबदेवी आर्य कन्या पाठशाला अजमेर के पाठ्यक्रम में रक्खा गया था। इसका प्रकाशन १९८७ वि० में हुआ। कुछ अन्य प्रसिद्ध धर्म शिक्षा लेखकों के नाम हैं—पं० बंशीधर पाठक (धर्म शिक्षा)। पं० राजाराम (धर्म शिक्षा), स्वामी दर्शनानन्द (बाल शिक्षा), पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय (धर्म शिक्षा पद्धति १६ भाग), पं० शिव शर्मा (धर्म शिक्षा-भाग ४) अजमेर के डा० सूर्यदेव शर्मा लिखित १० भागात्मक धर्म शिक्षा को अनेक डी०ए०वी० स्कूलों में पाठ्य ग्रन्थ के रूप में रक्खा गया। आर्य समाज के जिन पुराने लेखकों ने धर्म शिक्षा पर अपने ग्रन्थ लिखे हैं उनमें से कुछ महत्वपूर्ण नाम हैं—वजीरचन्द विद्यार्थी (धर्म शिक्षा), स्वामी अनुभवानन्द शान्त (बाल शिक्षा), डा० केशवदेव शास्त्री (धर्म शिक्षा प्रवेशिका), पं० जे० पी० चौधरी (वैदिक धर्म शिक्षा), पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने लोकोपयोगी वैदिक धर्म तथा पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने 'बालकों की धर्म शिक्षा' लिखी। इसका एक सम्पादित संस्करण इन पंक्तियों के लेखक ने जोधपुर से प्रकाशित किया। पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति की वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी प्रश्नोत्तर शैली में लिखी गई है। इन्होंने डी०ए० वी० कालेज कमेटी दिल्ली के अनुरोध पर हाईस्कूलों की ८ वीं व १० वीं श्रेणी के लिये धर्म शिक्षा के दो भाग भी लिखे थे। डी० ए० वी० कालेज, लाहौर से तो धर्म शिक्षक ११ भाग १९०६ ई० में ही छप चुके थे।

कुछ अन्य लेखक, जिन्होंने इस विषय पर अपनी लेखनी चलाई, स्वातन्त्र्योत्तर युग के हैं। इनमें से कुछ नाम उल्लेखनीय हैं—पं० वीरेन्द्र शास्त्री (धर्म शिक्षा), पं० चन्द्रभानु सिद्धान्त भूषण (धर्म शिक्षा), पं० सत्यभूषण वेदालंकार (वैदिक धर्म शिक्षा भाग ८), स्वामी विद्यानन्द विदेह (वैदिक बाल शिक्षा ४ भाग) तथा विश्वनाथ आर्योपदेशक (धर्म शिक्षा ६ भाग) आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर ने प्रथम से लेकर ११ वीं श्रेणी तक के विद्यार्थियों के लिये धर्म शिक्षा के ११ भाग अजमेर के विभिन्न आर्य शिक्षकों से लिखवायें। सभी कक्षाओं के पाठ्यक्रम का क्रमिक निर्धारण करने के पश्चात् योजना बद्ध शैली में लिखी गई ये पुस्तकें धर्म शिक्षा की आदर्श ग्रन्थमाला कही जा सकती हैं। गुजराती में पं० ज्ञानेन्द्र सिद्धान्तभूषण लिखित बालोपयोगी धर्म शिक्षा महागुजरात प्रकाशन मण्डल करोली से प्रकाशित हुई थी। आर्यसमाज हिम्मतनगर तथा द०ए०वी०स्कूल भावनगर ने भी गुजराती में धर्म शिक्षा की पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

"उठो! आर्य वीरो!"

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश)

धरा है प्रकम्पित, गगन रो रहा है,
भरत भूमि का क्यों तरुण सो रहा है;
मिटी जा रही सुसंस्कृति हमारी,
सहम सी गई है स्वयं भूमि प्यारी;
मनुजता डरी सी यहां छटपटाती,
दनुजता बिहंसती, उसे है डराती;
बिलखती है सीता, बिलखता है मनुजत्व,
निडर बन बढ़ा आ रहा आज दनुजत्व;
पौरुष हमारा पराजित हुआ है,
संघर्ष जनहित का चित अब हुआ है;
अन्याय बढ़ता, अनय है निरन्तर,
हुआ भ्रष्ट जन-जन का है आचरण;
लज्जा है लुटती यहां नारियों की,
नहीं शील-संकोच-शुचिता है बाकी;
कहां सो रहे हैं यहां राम वंशज,
बढ़े आ रहे हैं असुरों के अंशज;
उठो! आर्य वीरों! तुम्हें अब शपथ है,
चुनौती है आयी, खुला आज पथ है;
तुम्हें राम बनना, है हनुमान बनना,
दनुजता से, बढ़कर तुम्हें आज लड़ना;
उठो! मातृभू को चलो सांत्वना दो,
नरक तुल्य धरती को स्वर्णिम बना दो;
दनुजता के कदमों को, छोटा करो तुम,
दलित-दीन के कष्ट बढ़कर हरो तुम;
दयानन्द के स्वप्न साकार करना,
तुम्हें आर्य बनकर, प्रशस्त पथ है करना।।

ऋषि निर्वाण दिवस कैसे मनाएं ?

(श्री हरिवंशलाल मेहता—वेदमनीषी ८—बी सिंगार नगर—लखनऊ)

ऋषिवर दयानन्द के निर्वाण को १०० वर्ष से ऊपर हो गए। आर्य समाज को वेद प्रचार करते हुए भी ११२ वर्ष से ऊपर हो गए। जिस अनुपात से प्रारम्भ में लोग वैदिक सिद्धान्तों को समझकर आर्य समाज के सदस्य बने और अनेक-जनों ने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार हेतु अपना सर्वस्व समर्पित किया आज वह स्थिति नहीं है। यद्यपि आज आर्यसमाजके मन्दिर, सभायें, संस्थाएं, स्कूल, गुरुकुल तथा अन्य कई साधन प्रारम्भिक युग की अपेक्षा कहीं अधिक हैं। कारण विचार-णीय है।

आर्यसमाज के कार्यक्रम का एक क्षेत्र समाज सुधार का क्षेत्र है यह सर्व विदित है और इस क्षेत्र की उपलब्धियां भी बहुत हैं। परन्तु कार्य-क्रम को न केवल आर्य समाज, न केवल अन्य संस्थाओं ने अपनाया है इसे सरकार ने भी अपने कार्यक्रमों का प्रमुख अंग बनाया हुआ है, जन-साधारण ही नहीं अपितु आर्य समाज से जितने भी इतर जन हैं, विद्वान हैं, नेता हैं, चिन्तक हैं वे आर्य समाज, को केवल इसी समाज सुधार के कार्यों में अग्रणी होने के कारण ही सराहते हैं। ऋषि दयानन्द की प्रशंसा भी ये लोग इसी कारण करते हैं। परन्तु आर्य समाज की जो नींव है, आर्य समाज का जो वास्तविक आधार है जिसे हम वेद के सिद्धान्त, वेद की मान्यताएं अथवा वैदिक दर्शन कहते हैं ये लोग हमारे इस क्षेत्र की न तो जानकारी रखते हैं, न लेना चाहते हैं न अपनाना चाहते हैं। हमारे विद्वानों ने जो प्रारम्भ में थोड़े ही थे और उनके पास वैदिक साहित्य भी केवल मात्र ऋषिकृत ग्रन्थ ही थे उसी के आधार पर वैदिक दर्शन, वैदिक सिद्धान्तों का भरपूर प्रचार किया। उस समय के प्रधान, मंत्री तथा अन्य सदस्य न केवल सदाचारी, संयमी, सत्संग प्रेमी, स्वाध्यायशील होते थे वे पूरी निष्ठा से रविवार के साप्ताहिक सत्संग में उपस्थित होना अपना परम कर्तव्य समझते थे। वे सिद्धांतों को समझ कर, वैदिक दर्शन को जान कर तब आर्य समाज में आते थे। आज परिस्थिति एक-दम विपरीत है। वेद सप्ताह मनाए जाते हैं, उत्सव होते हैं बड़े-बड़े सम्मेलन होते हैं नेता आते हैं विद्वान आते हैं विचार वही समाचार-पत्रों के अथवा देश की सामयिक चर्चाओं के होते हैं। वेद प्रवचन अथवा वैदिक दर्शन पर बहुत कम सुना-सुनाया जाता है। हम यह भूल रहे हैं कि जिस किसी को वैदिक धर्म के वास्त-विक स्वरूप का बोध वैदिक दर्शन, सिद्धान्त तथा मान्यताओं के तत्व को जान लेने से हो जायेगा वह देश जाति तथा धर्म के प्रति अपने कर्तव्यों का स्वतः ही पालन करने लगेगा। वैदिक मान्य-तायें ही ऐसी हैं जो मानव को सच्चा, खरा तथा निष्ठावान मानव बना ही देंगी। आज बहुत सा अधिकारी वर्ग ही वैदिक सिद्धान्तों से अनभिज्ञ दीख रहा है। नेता लोगों को तो समाज के धार्मिक सत्संगों में पैर रखना अब घटिया

(शेष पृष्ठ ३९ पर)

प्रेरणाप्रद व श्लाघ्य—

सहस्रों इन्द्रराज चाहिये

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

(अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उत्तर प्रदेश)

न केवल आर्य समाज को अपितु भारत राष्ट्र और मानवता की सेवा के लिए सहस्रों इन्द्रराज चाहियें। मेरठ के पिछले दिनों हुए रक्तपात के पश्चात् श्री पण्डित इन्द्रराज जी ने जो कर्त्तव्य प्रदर्शित किया है, वह अद्भुत है और अत्यन्त श्लाघनीय है। आर्य समाज के लिए तो वह महान गौरव और सौभाग्य की बात है।

श्री पण्डित इन्द्रराज जी आज कल आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे हैं। वह उच्चकोटि के वैदिक विद्वान्, महान विचारक, कवि तथा गीतकार हैं। जन सेवा की भावना तथा पीड़ितों के प्रति उनके हृदय में एक टीस है, भारी समवेदना है और उनके लिये कुछ कर गुजरने की उत्कट अभिलाषा है।

अभी पिछले दिनों मेरा मेरठ जाना हुआ तो जिस किसी भी व्यक्ति से मिला, उसी ने पण्डित जी के विषय में मुझसे यह प्रश्न किया कि इन्द्रराज जी कैसे व्यक्ति हैं? आपका उनके विषय में क्या विचार हैं? और फिर स्वयं ही मेरठ के हत्याकांड के समय उनके कर्त्तव्य का वर्णन अत्यन्त प्रशंसात्मक शब्दों में किया।

मुझे पण्डित जी से मिलना था, मैं उन्हें जब उनके श्री गृह पर मिला तो वह पीड़ितों की सहायतार्थ जाने ही वाले थे तथा जब भी मेरे रहते ही अनेक व्यक्ति उनसे मिलने आये। मुझे यह पता तो श्री शांतिप्रकाश जी मित्तल मन्त्री आर्य समाज सदर मेरठ से ही चल गया था कि प्रातः या तो आठ बजे से पहले ही वह मिल सकते हैं अन्यथा फिर एक बजकर तीस मिनट पर वह भोजन के लिये घर आ पाते हैं और ठीक दो बजे फिर निकल जाते हैं और उन लोगों को सहायता पहुंचाने में लगे रहते हैं, जो उपद्रवों में बर्बाद हो गये हैं।

धन्यवाद के पात्र हैं, वह मेरठ नगर के के निवासी भी जिन्होंने पण्डित जी की अभ्यर्थना का समुचित तथा सद्भावनापूर्ण उत्तर धन और अन्न से सहयोग करके दिया। २७ अगस्त को प्रातःकाल मैं पण्डित इन्द्रराज जी को उनके श्री गृह पर मिला था, तब तक वह दो सौ एक बोरी आटा वितरण कर चुके थे, चावल और दालें इससे अलग थे, जिनका वितरण हो चुका था। पचास सहस्र से अधिक रुपया भी उनके द्वारा वितरित हो चुका था।

पहले उन्होंने पीड़ितों की परिस्थितियों का

(शेष पृष्ठ ३८ पर)

देवता

(श्री जगदीश शरण "शीतल" चांदपुर (बिजनौर)

दीप हंस हंस भवन में जला रात भर लोक हित की प्रबल भावना को लिए ।
प्राण अपने शलभ ने दिये दीप पर प्रेम की उस अमर साधना को लिये ॥
फल लगे और तरुवर हैं नीचे झुके, तुमने पाषाण मारे तो फल दे दिये ।
बह रहा है निरंतर पवन और क्या सूर्य तपता किसी कामना को लिये ॥
सुख से जीने की इच्छा है तुमको यदि, दूसरों को भी दो सुख से जीने यहां ।
लक्ष्य तक पहुंचना है तो आगे बढ़ो अपने मन में सही धारणा को लिये ॥
अपने जीवन का शीतल यही सार हो, दूसरों पर दया और उपकार हो ।
देवता की यही एक पहचान है कर्म करता न जो वासना को लिये ।

सहस्रों इन्द्रराज चाहियें

(शेष पृष्ठ ३७ से आगे)

ठीक-ठीक पता लगाया तथा तत्पश्चात् उन सबके घर पर्चियां भिजवायीं और तब उन पर्चियों के माध्यम से मन्दिरों में सहायता केन्द्र बनाकर अन्न व धन की सहायता पहुंचायी। पण्डित जी तो अपने इस कर्त्तव्य के लिये धन्यवादार्ह हैं ही, आर्य प्रतिनिधि सभा भी ऐसे नरपुङ्गव को प्रधान के रूप में पाकर धन्य हो गयी है और धन्यवाद उन प्रतिनिधियों का भी—जिन्होंने श्री पण्डित इन्द्रराज जी का सभा के प्रधान पद के लिये चयन किया।

परमपिता परमात्मा स्वनाम धन्य श्री पंडित इन्द्रराज जी को दीर्घायुष्य प्रदान करे, जिससे वह मानवता और मानवता के पुजारी तथा विश्व बन्धुत्व के उद्घोषक आर्य समाज की अधिकाधिक सेवा कर सकें और अपने प्रेरणाप्रद जीवन से युवकों और आने वाली सन्ततियों का मार्ग दर्शन कर सकें।

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि—सभा के आगामी निर्वाचन में भाग लेने हेतु जिन प्रतिनिधियों को स्वीकृत किया गया है उनकी सूची सभा-भवन के सूचना पट पर अवलोकनार्थ उपलब्ध है।

मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

दयानन्द फिर आवो

(श्री ब्रह्मानन्द जिज्ञासु आतरबह मुजफ्फरपुर (बिहार)

भारत में विधर्मी बढ़ रहे, दयानन्द फिर आवो।
इन विधर्मियो को अब पुनः सच्चा मार्ग दिखावो ॥
देश के दुश्मन भारत में तोड़-फोड़ करते जा रहे।
ऋषि-भक्तों ! पुनः भारत-विघटन होने से बचावो ॥
भारत की संस्कृति नष्ट करते जा रहे विधर्मी।
कहा हो दयानन्द ! विधर्मियों को सच्चे आर्य बनावो ॥
आर्य संस्कृति पर आसुरी संस्कृति हावी हो रही।
भारत से आसुरी संस्कृति यथा शीघ्र मिटावो ॥
देश के नेता व कर्णधार गफलत मे डूबे जा रहे।
इन नेताओं को अब शीघ्र सन्मार्ग पर लावो ॥
यदि नेता सुधर गये तो देश का अहो भाग्य है।
जनता का कल्याण कर देश का गौरव बढ़ावो।
वेद-मार्ग पर चलने से ही देश का उद्धार है।
'ब्रह्मानन्द' विश्व बन्धु अब वैदिक धर्म अपनावो ॥
तभी सारे विश्व में सुख-शान्ति का साम्राज्य होगा।
दयानन्द फिर आवो, विश्व में वैदिक धर्म फैलावो ॥
भारत मे विधर्मी बढ़ रहे, दयानन्द फिर आवो ॥

ऋषि निर्वाण दिवस कैसे मनाएं

(शेष पृष्ठ ३६ से आगे)

काम चल रहा है। न सन्ध्या, न यज्ञ, न वेद स्वाध्याय न सत्संग। इससे रहित सेवा की जाएगी तो वह निश्चित ही स्वार्थपूर्ण होगी।

क्या ऋषि दयानन्द का निर्वाण दिवस हमें पुनः वैदिक दर्शन के प्रचार-प्रसार हेतु उसी लगन तथा निष्ठा से आगे बढ़ने की प्रेरणा देगा ? आर्यो ! हमारा यही क्षेत्र पुनः अपनाने योग्य है-समाज सुधार के बिना फिर हम रह ही नहीं सकेंगे। पहिले पक्के दृढ़ विचारों के आर्य तो बनें ॥

स्वामी दयानन्द के अमर ग्रंथ—

सत्यार्थ प्रकाश में दार्शनिक चिंतन

[श्री जगदीश आर्य, 'सिद्धान्तरत्न' सासाराम]

उन्नीसवीं सदी के महान् दार्शनिक ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में दार्शनिक मन्तव्यों का विवेचन किया है। उनके रचित कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में उत्कृष्ट दार्शनिक तत्व हैं। दर्शन का सिद्धान्त जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध रखता है। इसका प्रभाव व्यक्तिगत जीवन पर तो पड़ता ही है, उससे सामाजिक जीवन भी प्रभावित होने से अछूता नहीं रहता।

दयानन्द दर्शन के मुख्य तीन तत्व हैं—जीव, प्रकृति, और ईश्वर। इसी को भोक्ता—भोग्य,और नियन्ता भी कहते हैं तथा इसे ही त्रैतवाद भी कहा गया है।

जीवात्मा—

आत्मा के सम्बन्ध में कई मत हैं। चार्वाक के मत से आत्मा देह से पृथक नहीं है। भारतीय दर्शन में बौद्ध दर्शन को अनात्मवादी कहा गया है ऋषि दयानन्द ने बौद्ध—जैन—दर्शन को अनात्मवादी नहीं माना है। सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं— "बौद्ध—जैन प्रत्यक्षादि चारो प्रमाण अनादी जीव पुनर्जन्म, परलोक और मुक्ति को भी मानते हैं।"

आत्मा का स्वरूप

जीवात्मा के स्वरूप का कथन करते हुए स्वामी जी महाराज (स्वा० दयानन्द) ने यह बतलाया है—जीव चेतन है—अविनाशी है, कर्त्ता एव भोक्ता है। प्रमाण स्वरूप न्याय दर्शन एवं वैशेषिक का सूत्र उद्धृत किया है। पाणिनीय अष्टाध्यायी का सूत्र उद्धृत करते हुए वे कहते हैं कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है अर्थात् वह कर्त्ता है।

प्रसंग वश चार्वाक, बौद्ध एवं शांकर के सिद्धान्तों का खण्डन करते हुए वे कहते हैं—

चार्वाक मत समीक्षा—ऋषि दयानन्द ने चार्वाक के मत के निराकरण में निम्न युक्तियां दी हैं—(१) पृथिव्यादि भूत जड़ हैं – उनसे चेतन की उत्पत्ति नहीं हो सकती। मद के समान चेतन की उत्पत्ति नहीं हो सकती। मद के समान चेतन की उत्पत्ति और विनाश नहीं होता। क्योंकि मद चेतन को होता है, जड़ को नहीं। पदार्थ नष्ट अर्थात् अदृष्ट होते हैं, परन्तु अभाव किसी का नहीं होता। इसी प्रकार अदृश्य होने से जीव का भी अभाव न मानना चाहिये। जीव अविनाशी है इसके प्रमाण में बृहद० ४–५–१४ का श्लोक प्रस्तुत किया है।

जीव प्रत्यक्ष क्यों नहीं दिखता

इसमे एक प्रबल युक्ति यह दी है कि जैसे आंख सबको देखती है, परन्तु अपने को नहीं। इसी प्रकार प्रत्यक्ष करने वाला अपने को ऐन्द्रिय प्रत्यक्ष नहीं कर सकता। जो द्रष्टा है वह दृश्य कभी नहीं होता—द्रष्टा ही रहता है।

बौद्धों के क्षणिक वाद के खण्डन में दयानन्द कहते हैं—यदि जीव क्षणिक हो तो उसका ज्ञान भी क्षणिक होवे। प्रत्यभिज्ञा अर्थात् मैंने यह बात कही थी, ऐसा स्मरण न होना चाहिये परन्तु पूर्व दृष्ट-श्रुत का स्मरण होता है। अतः क्षणिक वाद ठीक नहीं है।

जीव और ब्रह्म एक दूसरे से नितान्त भिन्न हैं। शांकर मत का ऋषि ने प्रतिवाद किया है। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं—

"नवीन वेदान्तियों का कहना सत्य नहीं। क्योंकि जीव का स्वरूप अल्प होने से आवरण में आता—शरीर के साथ प्रकट होने रूप जन्म लेता, कर्मों का फल भोग रूप बन्धन में आता है। दुःख से छूटने की इच्छा करता है, दुःखों से छूटकर परमानन्द परमेश्वर को प्राप्त कर मुक्ति को भी भोगता है।

जीव अनादि एवं नित्य है

दयानन्द महाराज ने जीव को नित्य—अनादि अनेक स्थलों पर बतलाया है। इस पर एक प्रश्न उठता है कि जीव जब नित्य है तो उसका ज्ञान भी नित्य होना चाहिये। क्योंकि नित्य वस्तु के गुण भी नित्य होते है। (सत्यार्थप्रकाश ८ वें समुल्लास) में वे लिखते हैं—"इन तीनों (ईश्वर, जीव एवं प्रकृति) के गुण कर्म, और स्वभाव भी अनादि हैं।")

जैसे परमात्मा नित्य हैं, अतः उसका ज्ञान भी नित्य है। परन्तु देखा यह जाता है कि जीवों का ज्ञान सदा नहीं रहता है, अपितु ज्ञान उत्पन्न होता है—और नष्ट हो जाता है। इस प्रश्न का समाधान इस प्रकार है—जीव में ज्ञान आदि की शक्ति सदा विद्यमान रहती है। इसीसे उसके ज्ञान आदि गुण नित्य हैं। किन्तु जो मन, इन्द्रिय आदि द्वारा ज्ञान उत्पन्न होता है वह नित्य नहीं है। जीवों के ज्ञान, प्रवाह से अनादि एवं नित्य हैं।

जीव और ईश्वर में व्याप्य-व्यापक का भाव है। इस भाव को स्पष्ट करते हुए ऋषि दयानन्द ने लिखा है—"जीव का स्वरूप अत्यल्प अर्थात् सूक्ष्म है और परमेश्वर अतीव सूक्ष्म, अनन्त, सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है। इसलिये जीव और परमेश्वर का व्याप्य—व्यापक सम्बन्ध है।

(सप्तम समु० पृष्ठ २८१)

जीव शरीर में विभु है या परिछिन्न

स्वामी दयानन्द ने यह प्रश्न स्वयं उठाया है। स्वामी जी ने इसका उत्तर भी दिया है—"जीव शरीर मे परिछिन्न, जो विभु होता तो जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति, मरण-जन्म-संयोग-वियोग, आना—जाना कभी नहीं हो सकता। जीव के परिछिन्न होने से ही जन्म, मरण, कर्म-फल-भोग बंधन—मोक्ष की व्यवस्था सुचारु रूप से बन सकती है। भारतीय दर्शन में आत्मा के विभु और परिछिन्न विषय पर मतभेद पाया जाता है। ऋषि दयानन्द महराज कहते है—

"अर्हत् लोग देह के परिमाण के समान जीव का भी परिमाण मानते हैं। उनसे पूछना चाहिये कि जो ऐसा होगा तो हाथी में कैसे समा सकेगा। मध्यम परिमाण वाले मन्तव्य में सबसे बड़ा दोष यह है कि जीव का संकोच—विकासशील मानना होगा। ऐसा मानने से जीव परिवर्तनशील होगा तथा अनित्य हो जायेगा। उपर्युक्त विवेचन से यह सिद्ध होता है कि दयानन्द ने जीव को परिछिन्न कहा है। अर्थात् मध्यम परिमाण वाला न मान कर अणु-परिमाण वाला माना है।

मुक्त जीव शुद्ध दिव्य नेत्र और शुद्ध मन से कामों को देखता, प्राप्त होता एवं रमण करता है।.........परमात्मा में स्थित होके मोक्ष-सुख भोगते हैं। जो-जो संकल्प करते हैं,-वह-वह लोक-और सब काम प्राप्त होते हैं। वे मुक्त जीव स्थूल शरीर छोड़कर संकल्प मय शरीर से आकाश में विचरते हैं।' (नवम समु० ३५१-५४)

मुक्ति से पुनरावृत्ति :-

ऋषिवर ने अनेक युक्तियों, वेद एवं ऋषियों के वचनों से मुक्ति से पुनरावृत्ति मन्तव्य का प्रतिपादन किया है। भारतीय दार्शनिकों का यह सामान्य मन्तव्य है कि मोक्ष प्राप्ति के बाद जीव संसार में पुनः नहीं आता है। वे अपने सिद्धांत की पुष्टि में छान्दोग्य उप० का 'न च पुनरावर्तते, न च पुनरावर्तते'। तथा ब्रह्म सूत्र का 'अनावृत्तिः शब्दादना वृत्तिः शब्दात्' प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। स्वामी दयानन्द जी ने इन सभी मतों का प्रतिवाद करते हुए कहा है कि वेद में उसका निषेध है। ऋ० १-२४-१/२ के मन्त्रों से, तथा सांख्य सूत्र १ १५९ से अपने सिद्धांत की पुष्टि की है। मुन्डकोपनिषत् (३। २।६) से भी प्रमाण दिया है। मु० उप० में 'परामृतात्' और 'परिमुच्यन्ति' पद है। (नोट-अभी जो मुन्डको० मिलता है, उसमें परामृता:' पाठ है-स्वामी जी महाराज ने स० प्र० चौथा समु० पृष्ठ १८४ में 'परामृताः ही पद लिखा है परन्तु नवम समु० में-'परामृतात्' पद लिखा है। इस सम्बन्ध मे पाठक रामलाल० ट्रस्ट से छपी हुई (शता० संस्करण) का फुट नोट अवश्य देखें पृष्ठ १८४) इन पदों का अर्थ है-मुक्ति से सभी परिमुच्यन्ति-अर्थात् लौटते हैं।

अपने सिद्धांत को वेद एवं शास्त्रों से पुष्टि करने के पश्चात् प्रबल युक्तियां भी दी हैं-१-जीव का सामर्थ्य अल्प है अनन्त फल कैसे प्राप्त किया जा सकता है। २- जो मुक्ति से कोई जीव लौट कर नहीं आवें तो संसार का उच्छेद अर्थात् जीव निश्शेष हो जाना चाहिए। ३-ईश्वर अगर अन्त वाले कर्मों का अनन्त फल देवे तो उसका न्याय नष्ट हो जावे।" (नवम समु० पृष्ठ-३५५-५७-५८)

मोक्ष सुख की अवधि:-

मुक्त जीव मोक्ष-सुख के महाकल्प के पश्चात् संसार में पुनः आते हैं। अवधि ३१ नील १० खरब और ४० अरब (एकतीस नील, दस खरब, और चालीस अरब) वर्ष होता है। इनकी अवधि तक सुख भोग कर पुनः ससार में आते है। (सृष्टि के आदि में इनका जन्म अमैथुनी सृष्टि से होता है।

कर्म फल की व्याख्या:-

कुछ चिन्तकों का मत है कि परमेश्वर की प्रेरणा से जीव कर्म करता है। स्वामी जी महाराज ने इस मत के खण्डन में यह उक्ति दी है-"जो परमेश्वर कर्म कराता, तो कोई जीव पाप नहीं करता। क्योंकि परमेश्वर पवित्र और धार्मिक होने से किसी जीव को पाप करने की प्रेरणा नहीं करता। अतः जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है। (सप्तम समु० पृष्ट २७३)।

जीव अगर कर्म करने में स्वतन्त्र न हो तो उसको पाप पुण्य का फल प्राप्त कभी-नहीं हो सकता।

(शेष पृष्ट ४८ पर)

समस्त आर्य (हिन्दू) जनता एवं आर्यसमाजों से अपील–

सूखे से पीड़ित आदिवासियों की सहायता कीजिए . . .

'सौ हाथों से कमाया हुआ हजार हाथों से दान कर'

—पवित्र वेदवाणी

मध्यप्रदेश व राजस्थान के सूखाग्रस्त क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासियों की वर्तमान दुर्दशा (भुखमरी) का लाभ उठाकर उनके धर्मान्तरण के लिए सक्रिय बनी हुई मिशनरियों के कार्य-कलापों पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने समस्त आर्य (हिन्दू) जनता को सावधान करते हुए सार्वदेशिक सभा द्वारा खोले गये 'राहत कोष' में अन्न, धन, वस्त्र आदि से भरपूर सहायता तुरन्त भेजने की मार्मिक अपील की है। देश विदेश से बड़ी मात्रा में अन्न, धन, वस्त्र आदि की सहायता उक्त 'राहत कोष' में प्राप्त हो रही है जिसे वितरणार्थ सूखाग्रस्त क्षेत्रों में भिजवाया जा रहा है।

धर्मरक्षा एवं मानवीय सेवा के इस महान कार्य में आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० समस्त मानवता प्रेमी उदार जनता विशेष कर आर्य जनता एवं प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों से विनम्र अपील करती है कि वे उपरोक्त राहत कोष में अधिक से अधिक अन्न, धन, वस्त्र आदि की सहायता भेजकर इस पुण्य कार्य में हमारे हाथों को मजबूत करें।

नोट–धनराशि चेक/बैंक ड्राफ्ट, अन्न, वस्त्र आदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के पते पर भेजें।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

विश्व को दयानन्द स्वामी की देन—सत्यार्थ प्रकाश

(श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम० ए० आर्य समाज, गोरखपुर)

'ऋषि दयानन्द" का स्मरण आते ही एक अपार श्रद्धा से हमारा मन अनुप्राणित होने लगता है। दयानन्द प्रकाश का सैनिक था, भगवान् की सृष्टि का प्रदीप्त योद्धा था, मनुष्यों और उसके प्रयासों का शिल्पी, समस्याओं का निर्भीक समाधान, दृढ़ आत्म शक्ति, एवं आत्म-विश्वास संपन्न और अजेय था। जब भावी पीढ़ी विश्व के महापुरुषों और महात्माओं को देखेगी तो अद्वितीय विद्वत्ता एवं महान् कार्यों से संपन्न एक व्यक्ति अनुपम तथा अतुलनीय स्पष्टता के साथ उसके सामने उभर आयेगा, वह दृश्य ऐसा होगा कि अनेकों पहाड़ों की चोटियां ऊपर नीचे जाती हुई, अपने अंग प्रत्यंगों की छवि हरे वस्त्रों से आखों को मुग्ध कर रही है परन्तु इन सबमें एक पर्वत श्रृंग अपनी सुदृढ़ वज्र के समान, अपने शिखर की हरियालीवाले एक देवदार वृक्ष से गगन की उच्चता को चूम रहा हो। शक्ति एवं उर्वरता प्रदान करने वाला एक निर्मल निर्झर घाटी को आरोग्यता तथा जीवन के जल से सींच रहा हो। मेरे मन पर दयानन्द का ऐसा ही प्रभाव पड़ता है।" भारत के एक प्रमुख विद्वान्, विश्व में योग के मार्ग दर्शक अरविन्द घोष के उपर्युक्त शब्द स्मरण कर दयानन्द महर्षि के प्रति श्रद्धा से हमारा सिर झुक जाता है।

ऋषि दयानन्द का जन्म १८२४ ई० में हुआ था। नाम रखा गया मूलशंकर! मूलशङ्कर शिवरात्रि के दिन जब मन्दिर में सब सो रहे थे खामोश मंदिर में एक दीपक, एक बालक अकस्मात् उसके मनमें प्रभु प्रेम का प्यार जाग उठा। वह नर्मदा के तट पर पहुंचा। वहां के योगियों के कहने से मूलशङ्कर शुद्ध चैतन्य बने। चार-पांच वर्ष और बीते। वह शिवशङ्कर नहीं मिला। योगियों से मिले। उनके कहने से बन गए संन्यासी नाम रखा—दयानन्द! लंगोटी बांधकर नंगे बदन, नंगे पावों घूमते रहे पर शांति नहीं मिली तब चल पड़े हिमालय की ओर, उत्तर-काशी पहुंचे। जमनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ ऊंचे पहाड़, घने जंगल, तेज बर्फीली हवायें, घनघोर घटायें आईं, तो ध्यान लगाकर बैठे। वहां इतने कष्ट सहे कि सुनकर रोंगटे खड़े होते हैं। अन्त में पहुंचे गुरु विरजानन्द के दरवाजे पर १८६० ई० में जब वे ३६ वर्ष के थे। १८६३ तक गुरु से दीक्षा ली। दीक्षा के समय जब वे अर्थाभाव के कारण लौंग लेकर पहुंचे तो गुरु ने कहा 'दयानन्द! इस दक्षिणा से काम न चलेगा। वत्स, मेरी सच्ची दक्षिणा तो यह होगी कि भारत के दीन हीन जन अनेक विध दुःख भोग रहे हैं, जाओ उनका उद्धार करो, कुरीतियों को दूर करो, आर्य जाति की बिगड़ी हुई दशा को सुधारो, पाखंडों और ढंगों को मिटाओ, ऋषि शैली को प्रचलित कर आर्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन में लोगों की चित्त वृत्ति को लगाओ और लोगों को सच्चे ईश्वर के दर्शन कराओ, परतन्त्रता की बेड़ियों को तोड़ स्वतन्त्रता का राज्य कायम करो।" गुरुवर, की इस वाणी को सुन

कर शिष्य दयानन्द गद्गद् हो उठे और उत्साह भरी वाणी में कहा "गुरुदेव मैं तन मन सहित अपने आपको आपके चरणों में अर्पित कर चुका हूं, आपके आदेशों का प्राण पण से आजन्म पालन करूंगा।"

इस प्रण को निभाने के लिये स्वामी दयानन्द ने १८६० से १८६३ ई० तक की अर्थात् कुल इन तीन वर्ष की वास्तविक शिक्षा का मनन और चिन्तन किया और इसके पश्चात् अपने जीवन काल में उन्होंने जितने व्याख्यान दिए, जितने ग्रन्थ लिखे, जितने शास्त्रार्थ किए वह इन तीन वर्षों के अध्ययन का परिणाम था। इन तीन वर्षों का अध्ययन ही भारत का ही नहीं विश्व का १०० सौ वर्षों का इतिहास बन गया।

सत्यार्थ प्रकाश की रचना १८७४ ई० में की गई। एक बार राजा जयकृष्ण दास जी डिप्टी-कलेक्टर थे और मुरादाबाद के निवासी थे काशी में रह रहे थे। स्वामी दयानन्द वहां आए हुए थे। राजा साहबने जाकर उनसे कहा महाराज! आपकी बातें और विचार अत्यन्त उत्कृष्ट हैं परन्तु उनका लाभ अस्थायी होता है। क्योंकि जो व्यक्ति आपका व्याख्यान सुनते हैं वे तो आपके विचारों से लाभ उठाते हैं पर वे भी व्याख्यान की बहुत सी बातें भूल जाते हैं और जो नहीं आ पाते आपकी बातों से वंचित रह जाते हैं। स्थायी और सबके लाभ के लिए ग्रन्थ रचना करने की कृपा करें। महर्षि सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के लिए सदा तत्पर रहते थे। उन्होंने ग्रन्थ लिखने का निश्चय कर लिया।

स्वामी दयानन्द ने बृहत्काय सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ लिखा। यह ग्रन्थ लिखने में महर्षि दयानन्द को साढ़े तीन महीने का समय लगा। इस ग्रन्थ का जिन्होंने अध्ययन किया है वे जानते हैं कि इसमें १७७ ग्रन्थों का उद्धरण है। इसमें १५४२ वेद मन्त्रों या श्लोकों का उद्धरण दिया गया है चारों वेद, सब ब्राह्मण ग्रन्थ, उप-निषदें, सब दर्शन, सभी स्मृतियां अठ्ठारह पुराण, सभी पुस्तकों का उद्धरण ही नहीं उनका रेफ-रेन्स भी दिया गया है। इन सब ग्रन्थों के अति-रिक्त बाइबिल कुरान, पुराण आदि का भी पूरा पूरा हवाला दिया गया है। इसके प्रथम दश समुल्लास सिद्धांत विषयक है और ग्यारह से चौदह तक के समुल्लास में अन्य मतों की अनुप-युक्त लगने वाली बातों का खण्डन किया गया। यह ग्रन्थ सत्या सत्य के विवेचन के लिए किया गया है, निष्पक्ष भाव से विवेचन हुआ है। यह बृहत्काय ग्रन्थ यदि कोई रिसर्च का विद्यार्थी संस्कृत को अप-टू-डेट लाइब्रेरी में बैठकर करे तो उसे ६-७ वर्ष लग जायेंगे परन्तु महर्षि ने जबानी केवल तीन महीने में इसे पूरा किया। यह ग्रन्थ वैसे भी ऐसा वैसा नहीं है। श्री गुरुदत्त विद्यार्थी ने इसके विषय में कहा है कि मैंने इसे चौदह बार पढ़ा और हर बार के अध्ययन से उन्हें नया रत्न हाथ आया। इसकी एक दूसरी विशेषता है कि इस ग्रन्थ ने विश्व में सभी प्रकार के विचारों में क्रान्ति की उसी काल में यूरोप में जर्मनी में कार्लमार्क्स नामक एक व्यक्ति हुआ। उसने विश्व में आर्थिक क्रांति की दृष्टि से एक पुस्तक कैपिटल लिखी। यह ३४ वर्ष में इंगलैंड में बैठ कर लिखी गई और यह केवल ३ मास में

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

सत्यार्थ प्रकाश मे दार्शनिक चिंतन

(शेष पृष्ठ ४४ से आगे)

कर्म करने तथा उसका फल भोगने के लिए ईश्वर ने जीव को शरीर, प्राण इंद्रिय और अन्त करण् आदि साधन दिये है। जीवात्मा की तीन अवस्थाओ जाग्रत, स्वप्न एव सुषुप्ति का उल्लेख करते हुए तीन शरीरो (स्थूल, सूक्ष्म, एव कारण) का भी वर्णन किया है। इन शरीरो के वर्णन के प्रसग मे पच कोषो का भी उल्लेख किया है। इन सभी साधनो से जीव कर्म करता तथा फलो को भोगता है।

जीव केवल इसी जीवन मे सभी भले-बुरे कर्मों का फल नहीं भोगता, अपितु एक शरीर को त्याग कर दूसरे शरीर को धारण करता है, जिसे पुनर्जन्म कहते हैं—और उस दूसरे शरीर से भी नये कर्मो को करता तथा कृत कर्मो के फलो को भोगता भी है।

श्रद्धांजलि

ओम प्रकाश आर्य ११६/१२२ बम्बा रोड, कानपुर

स्वामी जी तुमने लाखों दीप जलाये।
इतने हैं उपकार, भला कैसे कोई गा पाये।।
दुनिया भर मे पाखडो के काले बादल छाये।
वेद-सूर्य चमका करके सारे तम-तोम हटाये।।
पराधीनता मे भारत नैनों से नीर बहाये।
तब स्वराज का मन्त्र फूकने, तुम ही आगे आये।।
नारी और शूद्र, दोनो ही, अधम यहा कहलाये।
तुमसे पाकर स्वाभिमान, इनके चेहरे मुस्काये।।
मत-पंथो के जगल मे, जब मानवता घबराये।
वैदिक-पथ दिखला करके, सबके सबकष्ट मिटाये।।
सारा विश्व आज तेरे, चरणो मे शीश झुकाये।
अपना जीवन-दीप बुझाकर, तुम दीवाली लाये।।

विश्व को दयानन्द स्वामी की देन—सत्यार्थ प्रकाश

(शेष पृष्ठ ४७ से आगे)

लिखी गई और इस ग्रन्थ ने विश्व मे आर्थिक क्राति का मार्ग सुझाया। शिक्षा के क्षेत्र मे नवीन विचार धारा को जन्म दिया और बालको के निर्माण के लिये १६ सस्कारो का महत्व बतलाया। शिक्षा मे माता, पिता और आचार्य की भूमिका बताई। इसमे हरिजनो की समस्या का हल बताया, स्त्रियो की समस्या का हल सुझाया देश मे अनुशासन की समस्या, भ्रष्टाचार को दूर करने के उपाय, गोरक्षा की आवश्यकता, नशाबन्दी, नवयुवको की समस्या अर्थात् समाज की सभी समस्याओ की ओर ध्यान दिलाया और उस समस्या के हल का उपाय भी बताया।

इसलिए हमारा विचार है कि हमे सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन—चिन्तन और मनन तथा निदिध्यासन आवश्यक है। आज उसका अध्ययन कर हम ऋषि के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धाजलि अर्पित कर सकते हैं।

दयानन्द ऋषि महादेव कल्याणी

कर दिया प्रकाशित वेदों को, वे गए मुखर मनुवाणी हैं ।
दयानन्द ऋषि दिव्य हमारे, मृदु महादेव कल्याणी हैं ।।

ऋषि दयानन्द के जन्म समय, पीड़ा ने पाँव पसारा था ।
अन्याय बढ़ा, अज्ञान बढ़ा, दिन-दिन अभाव विस्तारा था ।।
जो हुई आज दिवराला में, हत्या वह नित्य हुआ करती ।
बाल वृद्ध विवाह के कारण, अबला बहु सती हुआ करतीं ।।
अबलाओं को सबला करके, की परित्राणी इन्द्राणी हैं ।
दयानन्द ऋषि दिव्य हमारे, मृदु महादेव कल्याणी हैं ।।

छुआ छूत औ जाति पांति के, बढ़ गए हजारों झगड़े थे ।
ऊंच-नीच औ भेद भाव के, मतभेद हजारों तगड़े थे ।।
आडम्बर और अविद्या ने, था भारी विघटन कर डाला ।
था चक्रवर्ती सम्राट कभी, भारत को दास बना डाला ।।
शुभ स्वराज्य प्रेरणा करके, वे दिए विपुल बलिदानी हैं ।
दयानन्द ऋषि दिव्य हमारे, मृदु महादेव कल्याणी हैं ।।

गुरु विरजानन्द से शिक्षा ली, सब ग्रन्थ अनार्ष बहाये थे ।
वेदों की ज्योतित विद्या से, सारे पाखण्ड मिटाये थे ।।
प्रिय पंच यज्ञ का कर प्रचार, हरक्षेत्र किए उत्थान कई ।
दी सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की, मानवता को मुस्कान नई ।
वर्णाश्रम का विज्ञान दिया, संस्कार दिए जगत्राणी हैं ।
दयानन्द ऋषि दिव्य हमारे, मृदु महादेव कल्याणी हैं ।।

गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु, सत्यार्थप्रकाश किया शोभित ।
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका से, सुन्दर शास्त्रार्थ किए शोभित ।।
तलवार सर्प ढेले पत्थर, आक्रमण सभी घिर आए थे ।
बहुबार घोर विषपान किया, पर चरण नहीं रुक पाये थे ।।
वैदिक धर्म सूर्य मुस्काया, मुस्काये जनगण प्राणी हैं ।
दयानन्द ऋषि दिव्य हमारे, मृदु महादेव कल्याणी है ।।

ऋषि दयानन्द की जय बोलो, औ शिष्टाचार बढ़ाओ जी ।
अनाचार अपमिश्रण अभाव, भय भ्रष्टाचार हटाओ जी ।।
दानव दहेज का दलन करो, पंचायतन पूज्य बनाओ जी ।
हर अस्त्र-शस्त्र बल संग्रह कर, आतप आतंक मिटाओ जी ।।
लेकर निर्वाण दिवाली को, वे गए प्रभा परिमाणी है ।
दयानन्द ऋषि दिव्य हमारे, मृदु महादेव कल्याणी हैं ।।

★

—देवनारायण भारद्वाज
एफ-४२, मानसरोवर
कालोनी, रामघाट मार्ग,
अलीगढ़

 पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन०पी० ७९
Regd. No. L. W. / N. P. 79

२०५८

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु

❀ आवश्यक सूचना ❀

समस्त आर्यसमाजों, जिला उपसभाओं एवं शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० की शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं कविसम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमें विभिन्न वाद-विवाद प्रतियोगिताएं तथा सम्मेलनों के अंश सम्मिलित हैं एवं विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह एवं कवि सम्मेलन की वी०डी०ओ० (फिल्म) कैसेट के अतिरिक्त शताब्दी में पधारे हुए संन्यासियों, विद्वानों, उपदेशकों, आदि के महत्वपूर्ण उपदेश एवं जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह मे भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किए उनके रिकार्डिंग कैसेट निम्न प्रकार, सभा कार्यालय में बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। जो सज्जन अथवा संस्थाएं इन्हें प्राप्त करना चाहती हैं वह श्री विश्वम्भरदयाल गुप्ता, व्यवस्थापक 'आर्यमित्र' ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आर्डर देकर प्राप्त कर सकते है।

१—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी०डी०ओ० कैसेट—	मूल्य	१०००-०० रु०
२—सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कैसेट—	मूल्य	१००-०० रु०
३—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग कैसेट (कुल संख्या ३०) प्रति कैसेट—		२०-०० रु०
४—कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो—		५-०० रु०

(बड़ी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध कराई जा सकती है)

नोट—जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह मे भाग लिया एवं पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें १८, १९ तथा २० अक्टूबर के एक एक दिन के अलग से रिकार्डिंग कैसेट उचित मूल्य पर अलग से मिल सकते हैं।

आर्यसमाज के कार्यक्रम तथा सभा की शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओं को ऐसे चित्र एवं कैसेट प्रचार कार्य मे बहुत सहायक होंगे।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

२/५

ओ३म

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स० २२४१।५७ घोषणा पत्र स ७।२८ २ ८५

कार्तिक शुक्ल ११ रविवार संवत २०४४ वि० दिनाक १ नवम्बर १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल

विक्रमादित्य वसन्त
वेद वारिधि

★

प्रो० रत्नेशचन्द्र एम ए

★

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

★

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	१५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

★

वष	९०
अङ्क	४३

अवैदिक, अमानवीय, एवं सती प्रथा' के नाम पर निर्दोष पत्नी को जीवित जला देने की क्रूरतम प्रथा के विरुद्ध एकजुट होकर विरोध करने का

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का आह्वान

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर अलवर मे आयोजित महिलाओ की एक विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने सती प्रथा के नाम पर निर्दोष पत्नी को पति के शव के साथ जीवित चिता मे जलाए जाने की प्रथा को पूर्णतया अवैदिक एव विश्वरूपमन्त्र के निहाम का बीभत्सतम अमानवीय घटना बताते हुए हिन्दू समाज के युवको युवतियो से उनके संन्यासियो एव महन्त से सबला प्रमी जनता से मार्मिक अपील की है कि वे एकजुट होकर इस कलंक को सदा सदा के लिए विश्वरूपमन्त्र के इतिहास से तिरोहित कर देने का संकल्प ले

इस सम्बन्ध मे श्री स्वामी जी ने उन धर्माचार्यों विशेष कर पुरी के शंकराचार्य श्री निरंजन देव तीर्थ को चुनौती देते हुए कहा है कि वे पवित्र वेदवाणी की दुहाई देकर इस बीभत्स प्रथा के औचित्य को सिद्ध करने का यत्न न करें वैदिक साहित्य मे वेद के किसी मन्त्र मे मृतपति के शव के साथ पत्नी को जीवित चिता मे जलकर सती बनने का न तो कोई निर्देश है और न कोई विधान सती शब्द का यह अर्थ ही नहीं है। वास्तव मे मध्ययुग के विकृत एव पाप पंकिल मस्तिष्क की यह उपज प्रतीत होती है जब वेदो की शिक्षा लुप्त हो चली थी और आर्य जनता अनेको कुरीतियों एव कुप्रथाओ मे ग्रस्त हो चुकी थी।

आर्यमित्र ने इस सम्बन्ध मे वेद विरुद्ध काण्ड की घोर भर्त्सना करते हुए अपने १९ अक्टूबर के अङ्क में देश की युवा पीढ़ी का इस कुप्रथा के विरुद्ध अभियान छेड़ने हेतु आह्वान किया था। उत्तरप्रदेश की आर्य जनता अपने नेता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती को विश्वास दिलाती है कि वह उनके द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान मे प्राणपण से उनके साथ है।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ५-मीराबाई मार्ग लखनऊ

अन्तरगाधिवेशन की सूचना

१४ नवम्बर १९८७ दिन शनिवार को प्रात १० बजे से डी० ए० वी० कालेज लखनऊ मे होगी। समस्त अधिकारी एव अन्तरग सदस्य गण नियत तिथि एव समय पर पधारने की कृपा करे।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

जो आँख नीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—कार्तिक शुक्ल ११ सम्वत् २०४४ रविवार १ नवम्बर १९८७, दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८

सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्

भारत में सती प्रथा को लेकर इस समय एक धार्मिक वाद विवाद छिड़ा हुआ है। यद्यपि अंग्रेजी शासन के समय स्वामी दयानन्द जी सरस्वती तथा राजा राममोहन राय के द्वारा किये गये प्रबल विरोध के कारण लार्ड विलियम बेन्टिक ने सन् १८२९ ई० में सती प्रथा को अवैध घोषित कर दिया था और इसे रोकने के लिए कठोर कार्यवाही की थी तथापि देश की स्वतन्त्रता के उपरान्त यदाकदा पति के देहान्त के उपरान्त उसकी पत्नी का चिता पर चढ़कर जल जाना, ऐसे समाचार प्राप्त होते रहते थे परन्तु ४ सितम्बर ८७ को राजस्थान के दिवराला ग्राम निवासी मालसिंह के मृत हो जाने पर उसके शव के साथ उसकी १८ वर्षीय युवती पत्नी रूपकुंवर के जला देने पर देश में नवचेतना की एक लहर आई है और स्थान-स्थान पर प्रबल विरोधों का प्रदर्शन हुआ है जिसके फलस्वरूप राजस्थान राज्य सरकार ने इस पर पूर्ण प्रतिबन्ध घोषित कर दिया है और भारत सरकार द्वारा भी विधेयक पारित किए जाने के समाचार प्राप्त हुए हैं।

इधर बम्बई से पत्रकारों का जो दल राजस्थान में रूपकुंवर के सती होने के विषय पर अध्ययन करने के लिए गया था, वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि रूपकुंवर स्वेच्छा से पति के शव के साथ नहीं जली अपितु उसे बलपूर्वक उस स्थान से लाया गया जहाँ वह भय से छिपी हुई थी। जब वह मरघट में लाई गई तब वह सामान्य स्थिति में नहीं थी। उसके मुख से फेन निकल रहा था कि उसे किसी नशीली औषधि का बलात सेवन कराया गया हो ताकि वह शिथिल हो जाए। परिवार के डाक्टर का उपलब्ध न होना इस सन्देह की पुष्टि करता है। पुलिस की आख्या के अनुसार रूपकुंवर दहेज में ४४० ग्राम सोना, ३०००० रुपये की स्थायी निधि, एक रंगदार टी० वी०, एक फ्रिज, खाना बनाने के आधुनिक साधनों वाली मशीन आदि लेकर आई थी; जो उसके पति के देहान्त के बाद उसके साथ मायके वापस भेजने पड़ते क्योंकि वह सन्तति विहीन थी। अतएव स्वार्थवश उसे डराया गया धमकाया गया और बलात चिता पर चढ़ा दिया गया।

पुलिस द्वारा दोषी व्यक्तियों को बन्दी बनाये जाने पर राजस्थान के कतिपय राजनैतिक नेताओं द्वारा स्वार्थवश जहाँ सरकारी हस्तक्षेप का विरोध किया जा रहा है, वहाँ पुरी के शंकराचार्य श्री निरंजनदेव तीर्थ का धर्म के नाम पर सती प्रथा का समर्थन करना जहाँ घोर आश्चर्यजनक है, वहाँ भ्रमात्मक स्थिति भी उत्पन्न करता है। उनका यह कथन कि फांसी के तख्ते पर लटक कर भी वे सती प्रथा का अनुमोदन करेंगे क्योंकि वह धर्मानुकूल है और शास्त्र सम्मत है। उनका यह कथन कि वेद मनुस्मृति आदि इसका समर्थन करते हैं, केवल उनकी अनभिज्ञता को व्यक्त करते हैं। आर्यसमाज के अनेक विद्वानों द्वारा उन्हें शास्त्रार्थ की खुली चुनौती दी गई है जिसे उन्होंने अभी तक स्वीकार नहीं किया है।

जहाँ तक इस सम्बन्ध में वेद का प्रश्न है एक भी वेद मन्त्र ऐसा नहीं है जो इस अमानुषिक कृत्य का समर्थन करे। वेद ईश्वरीय ज्ञान है अतएव उसमें किसी जीवित स्त्री को जला देने का कोई आदेश नहीं हो सकता।

सर्वे देवा उपाशिक्षन्त तदजानाद्वधूः सती—
ईशा वशस्य या जाया सास्मिन्वर्णमाभरत्॥

(अथर्व० ११—८—१७)

अर्थात् एक सती वधु है जो वशयिता की ईश्वरीय जाया है। सब देव उसके सम्मुख उपस्थित होते हैं, वह सबको जान पहचान कर नाना प्रकार के रंग भरती है।

क्या इस मन्त्र में पति के साथ जलने वाली नारी की चर्चा है अथवा सत्यरूप प्रकृति की। पुरी के शंकराचार्य जो अपने को हिन्दु धर्म का रक्षक मानते हैं और सनातन धर्म की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग करने को तत्पर हैं, उनसे इस प्रसंग में आर्यमित्र निम्नांकित प्रश्नों के शास्त्रीय उत्तर की अपेक्षा करता है।

(१) क्या स्त्री पुरुषों का धर्म एक क्या है। यदि दोनों का एक ही मानव धर्म है तो क्या पत्नी के देहावसान के उपरान्त उसके पति को उसके शव के साथ जलकर अपने पति धर्म का पालन नहीं करना चाहिए?

(२) त्रेतायुग में दशरथ, द्वापर में अभिमन्यु चित्रांगद, विचित्र वीर्य तथा कलियुग में गुप्त सम्राट विक्रमादित्य के भाई की मृत्यु के बाद उनकी पत्नियां अपने पति के शव के साथ चिता में क्यों न जलीं। क्या उस समय वेद प्रतिपादित धर्म प्रचलन में नहीं था?

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश का
वार्षिक बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन का कार्यक्रम

सभा का बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन १४ व १५ नवम्बर १९८७

अन्तरंग सभा की बैठक १४ नवम्बर १९८७ (प्रातः १० बजे)

बृहदधिवेशन १४ नवम्बर १९८७ (मध्याह्नोत्तर ३ बजे)

निर्वाचन १५ नवम्बर १९८७ (प्रातः ११ बजे)

स्थान—डी० ए० वी० कालेज, मोतीनगर, लखनऊ

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दिनांक २ अगस्त १९८७ को सभा भवन लखनऊ में सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में हुई और उसमें बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ.

इन्द्रराज, प्रधान — मनमोहन तिवारी, मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

वेद-विवेचन

सेवा-वरण

—स्वामी गुरुकुलानन्द कन्याहारी, पिथौरागढ़ उ० प्र०

चौरासी लाख योनियों की बात प्रसिद्ध है। प्रत्येक योनि एक जाति है। 'आकृति जाति लिंगाख्या' अर्थात् एक समान आकृति वालों की एक जाति होती हैं, जैसे—मानव, गाय, तोता, मछली आदि जातियां। मानव जाति ही भोग कर्मयोनि, है शेष केवल भोगयोनियां हैं। परमात्मा प्रत्येक जीवात्मा को उसके पूर्व जन्म के संचित कर्मों के आधार पर ही जाति आयु भोग हेतु निश्चित जाति योनि में जन्म देता है।

विजानीहि आर्यान्ये च दस्यव (ऋग्वेद १-५१ ८) के अनुसार सज्जन—सदाचारी—शान्तिवादी—सुकर्मी मानव—आर्य जाति के हैं इसके विपरीत दुराचारी—कुकर्मी दुर्जन मानव—दस्युजाति के माने जायेंगे। आर्य जाति सेवा करने वाली मानवजाति है। मानव कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परमात्मा की न्याय व्यवस्था के आधीन परतन्त्र है। मानव अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र वर्ण का वरण (चुनाव)—एक विशेष सेवा-कर्म का चुनाव ही है।

न विशेषोऽस्ति वर्णानाम् सर्वं ब्राह्ममिदं जगत्।
ब्रह्मणा पूर्वं सृष्टिंहि कर्मभिर्वर्णता गतम्॥

(महाभारत शान्तिपर्व १८८-१०

अमैथुनी आदि सृष्टि में ब्रह्मा ने सब मनुष्यों को ब्राह्मण ही उत्पन्न किया था। अतः ब्राह्मणों में कोई विशेष नहीं है। बाद में कार्य—भेद से भिन्न भिन्न वर्ण बन गये।

एक एव पुरा वेद प्रणव सर्व वाङ्मय।
देवो नारायणो नान्य एकोऽग्निर्वर्ण एव च॥

(भागवत पुराण ९-१४)

आदि काल में संसार में एक वेद, एक मन्त्र प्रणव, एक ही देव सर्व व्यापक नारायण, एक अग्नि और एक ही वर्ण था।

सृष्टि के आदि में आर्य समाज में सुव्यवस्था हेतु मनीषियों ने आर्य जाति को चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र) के वरण (चुनाव) की परम्परा चलाई। वर्ण का अर्थ है—वरण किया हुआ, चुना हुआ।

वर्ण-व्यवस्था की स्थापना के समय प्रत्येक आर्य मानव को छूट दी गई थी, कि वह अपने स्वभाव के अनुसार चार वर्णों में किसी एक वर्ण का चुनाव करके आजीविका का आधार बनावे। आर्यों की सामाजिक व्यवस्था का मूलाधार है, वर्णाश्रम व्यवस्था—चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र) और चार आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यास)। इस व्यवस्था को न मानने वालों को 'अनार्य' घोषित किया गया।

वर्ण व्यवस्था स्थापित हो जाने पर माता—पिता के वर्ण को स्वीकार करने के लिये बाध्य न होकर ब्रह्मचर्याश्रम में ब्रह्मचारी (वर्णी) को अपनी शारीरिक—मानसिक—आत्मिक प्रगति के साथ गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने से पहले अथवा न करने पर भी स्वेच्छा से वर्ण के वरण (चुनाव) की छूट थी।

एते ह्यांगिरस पुत्रा जाता वंशोऽथ भार्गवे।
ब्राह्मणा क्षत्रिया वैश्य शूद्राश्च भरतर्षभ॥

[हरिवंश पुराण—३१]

अर्थात् भार्गववंश में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों ही वर्ण हुये।

वत्सरस्य ध्रुवो यज्ञ रैभ्यश्च सुमहायशा।
रैभ्यस्य जज्ञिरे शूद्रा पुत्रा श्रुतिता वरा॥

[कूर्म पुराण—१९]

अर्थात् वत्सर के दो पुत्र—ध्रुव और रैभ्य हुए। रैभ्य के श्रेष्ठ वेद पारंगत पुत्र ने शूद्र वर्ण को चुना।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवं तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च॥

[मनुस्मृति १०—६५]

अर्थात् शूद्र, ब्राह्मण और ब्राह्मण, शूद्र हो जाता है। क्षत्रिय व वैश्य की सन्तानों के भी वर्ण इसी प्रकार बदल जाते हैं। विभिन्न वर्णों में एक समान गोत्र का मिलना सिद्ध करता है, कि एक ही ऋषि की सन्तानों ने समय समय पर स्वेच्छा से अपनी आजीविका हेतु अलग—अलग वर्णों को चुना।

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचं राजसु नस्कृधि।
रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम्॥

[यजुर्वेद १८—४८]

चारों वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र को समान रूप से तेज देने की प्रार्थना परमात्मा से इस मन्त्र में है।

ब्राह्मणा भुञ्जते नित्यं, नाथवन्तश्च भुञ्जते।
तापसा भुञ्जते चापि, श्रमिणाश्चैव भुञ्जते॥

[वाल्मीकि रामायण सु० १२)

अर्थात् राजा दशरथ जी के यज्ञ में शूद्रों द्वारा पकाया भोजन ब्राह्मण, तपस्वी तथा शूद्र मिलकर करने लगे। खान—पान एक था।

प्राचीन काल में चारों वर्णों के मध्य वैवाहिक सम्बन्ध भी होते थे। भविष्य पुराण में वचन है कि श्वपाकी से पाराशर मुनि, शुकी से शुकदेव और उलूकी से कणाद ऋषि उत्पन्न हुए। मुनि मन्दपाल नाविका से पैदा हुए और ब्राह्मण बन गये।

गुण—कर्म स्वभाव पर आधारित वर्ण-व्यवस्था, सरिता का बहता स्वच्छ पानी है तथा जन्म मूलक वर्ण व्यवस्था ताल का रुका पानी है। जन्म मूलक वर्ण-व्यवस्था के कारण मानव धर्म ग्रन्थ (वेद) केवल ब्राह्मणों की पोथी बन गई। औरों के लिये वेदपाठ के कपाट बन्द होने से मानवता के खण्ड होने लगे और पाखण्ड बढ़ने लगे। सनातन वैदिक धर्म के स्थान पर मानवता के मैदान में विभिन्न सम्प्रदायों के मकान बन गए।

(शेष पृष्ठ १० पर)

सुख शान्ति का मूलाधार धर्म ही है

धर्म के स्वरूप की पहचान करें

धर्म का दशम लक्षण—'अक्रोध'

—आचार्य देवव्रत अवस्थी वेद मन्दिर हिन्दनगर, लखनऊ

अक्रोध—क्रोध (गुस्सा) न करना। उतावलापन न होना।

क्रोधाद्भवति संमोहः सम्मोहात् स्मृति विभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

क्रोध से मोह उत्पन्न होता है मोह से स्मृति भेद होकर बुद्धि नाश का कारण बनता—बुद्धि नाश से सर्वस्व नष्ट हो जाता है। ऐसा हमारे पूर्वजों का सन्देश है। इसीलिए हर साधक विद्वान् व प्रज्ञ ही नहीं सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी क्रोध की निन्दा करता है। क्रोध नहीं करना चाहिये ऐसा कहता है। इसीलिए महाराज मनु ने धर्म के लक्षणों में अक्रोध को एक लक्षण माना है। नवों लक्षणों से संयुक्त होने के बाद भी यदि व्यक्ति क्रोधजित न बन सका तो वह अपना ही नहीं अपने से सम्बद्ध सभी के सर्वनाश का कारण बन जाता है।

आज देश में अराजकता उच्छृंखलता, विघटन की प्रवृत्तियों के प्रसार के मूल में यह क्रोध ही कार्यरत है।

धर्म या राजनीति के तथाकथित अलम्बरदारों का सभी के अभ्यानुकरण नहीं करने से उनके मन में क्रोध के वशीभूत विग्रह उत्पन्न कराने की मीठी लुभावनी साजिश करके और विग्रह उत्पन्न कराने में वे सफल हो जाते हैं।

ऐसे कठिन समय में धर्म के प्रति सत्य निष्ठा रखने वालों के लिए अत्यधिक सजग सचेत होकर कर्तव्यरत रहने की अपेक्षा है।

पानी का गुण शान्ति है, शीतलता है। पानी में प्रवाह होता है। प्रवाहित पानी स्वच्छ निर्मल व स्वास्थ्यवर्धक कहा जाता है। वही पानी बांध बांधकर रोक दिया जाये उसमें कीड़े पड़ जाते हैं अस्वास्थ्यकर बन जाता है। बांध न बांधा जाये परन्तु प्रवाह की गति सामान्य से तीव्र हो जाये बाढ़ आ जाये वह पानी भी दूषित हो जाता है।

आज के इस विग्रहपूर्ण समय में हमें गम्भीरता से चिन्तन करते हुए अपने अन्दर जल के शान्त शीतल गुण को धारण करने, क्रोधजित होने का संकल्प लेना है। जल के सदृश सामान्य प्रवाह, मन्थर गति से प्रवाह हमें निरन्तर क्रियाशील कर्तव्यरत रहना है। जल के प्रवाह में तीव्रता हानिकर है इसे अंगीकार करते हुए उत्तेजना (क्रोध) से बचना है। जल के बांध बंधने से कीड़े पड़ जाते हैं इसे दृष्टि में सर्वदा रखते हुए आलस्य और प्रमाद को तिलांजलि देनी है क्योंकि इसके संगी बनने से किसी भी अभाव की स्थिति में ये क्रोध उत्पन्न करके हमें विनष्ट कर सकते हैं।

निश्चय ही यदि हमने इस प्रकार धर्म के दसों लक्षणों को अभ्यास के द्वारा अपने जीवन में धारण कर लिया तो हमारा जीवन धर्ममय बन जायेगा। और हम अपने पवित्र जीवन से सम्पूर्ण विश्व को सुखी, समृद्ध बनाने में सामर्थ्यवान होंगे। फिर सभी स्वयं ही 'धर्मो धारयते प्रजा' धर्म ही प्रजा अर्थात सम्पूर्ण प्राणिजगत् की सकल सृष्टि की रक्षा करता है इसे स्वीकार करेंगे और स्वयं धर्म पर चलकर सुखी समृद्ध होंगे। सबको सुखी समृद्ध बनायेंगे।

दूर करो यह बुरी प्रथा

स्वच्छ भाल पर है समाज के,
एक अमिट कलंक दहेज।
दुर्भि दानवी का परिचायक,
करो सदा इससे परहेज।
इस दहेज ने मानवता का,
सत्यानाश कराया है।
जाने कितनी ललनाओं को,
पावक भेंट चढ़ाया है।
इस दहेज के कारण जानें—
कितनी बहनें हैं अविवाहित ?
इस दहेज ने किया हमारा,
तथा समाज का बड़ा अहित।
लोभ तथा दानवता की है,
वृद्धि कर रहा यह दहेज।
कण्टक से आकीर्ण कर रहा,
सतत, सुखों की सुखमय सेज।
मानव छोड़ मनुजता पथ को,
दानवता का पथ अपनाता।
दुष्ट दहेज के मोह जाल में,
फंस कर राक्षस बन जाता।
सभ्य—सुसंस्कृत से समाज में,
यह दहेज है भीषण रोग।
इसने पैदा किया धरा पर—
असमय में ही विपुल वियोग।
सच मानो ! कन्या ही सबसे—
बड़ा हमारा है दहेज।
मूल्यवान सामान तथा धन—
से हमको करना परहेज।
इस दहेज से बढ़ी जा रही,
अब समाज में घोर व्यथा।
नारी का अपमान मत करो,
दूर करो यह बुरी प्रथा ॥

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर



सस्वर वेद-पाठ की आनन्दानुभूति

—ब्रह्मचारी व्यासनन्दन 'वैदिक', शास्त्री, विद्यारत्न, एम० ए० (संस्कृत) स्नातक–गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम, एवं भागलपुर विश्वविद्यालय (बिहार)

विगत कई वर्षों से सस्वर वेद–पाठ सीखने की मेरी हार्दिक इच्छा बनी रही। परम पिता परमेश्वर की महती कृपा से ऐसा सु–अवसर प्राप्त हुआ। आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वेदों के पण्डित आचार्य प्रवर वीरसेन जी वेदश्रमी वेद–विज्ञानाचार्य (इन्दौर) द्वारा १८ जुलाई से १९ अगस्त ८७–एक मास का सस्वर वेदपाठ–प्रशिक्षण शिविर मातृमन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी में लगा वहां की आचार्या डा० पुष्पावती जी के सौजन्य से मुझे शिविर में भाग लेने का सुन्दर अवसर मिला।

मैं आर्य समाज का उत्साही प्रचारक हूं और मेरे द्वारा अनेक पारायण यज्ञ भी सम्पन्न हुए। आर्य जगत के बड़–बड़े वेदों के विद्वानों के साथ यज्ञ करने कराने के अनेक अवसर मिले। सबने मेरे वेद–पाठ की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस आशा और उत्साह को संजोये मेरा श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी जी से प्रथम साक्षात्कार हुआ। उन्होंने मुझसे कहा–'आप यहां किस प्रयोजन से आए हैं ?' इस पर मैंने निःसंकोच कहा–"सस्वर वेद पाठ सीखने हेतु भागलपुर विश्वविद्यालय से आया हूं।' तुरन्त उन्होंने मुझे कुछ मन्त्र सुनाने को कहा, मैंने प्रार्थना के कुछ मन्त्र तथा प्रत्येक वेद के प्रारम्भिक मन्त्रों का पाठ किया। सुनकर प्रसन्न हुए और कहा कि पाठ तो बहुत अच्छा है गले में माधुर्य भी खूब है, परन्तु यदि सस्वर वेद-पाठ सीखना है तो पूर्व के सारे गद्य–पाठ की प्रणाली को उसी तरह भूल जायं जिस तरह स्वामी विरजानन्द जी दण्डी के समक्ष स्वामी दयानन्द जी पूर्व के ज्ञान को भूल गए थे। मैंने प्रसन्नमनसा आचार्य जी की आज्ञा का पालन किया।

शिविर के दिनों का अनुभव—

शिविर के प्रारम्भिक दिनोंमें आचार्य जी ने सर्वप्रथम गायत्री–मन्त्र का सस्वर पाठ सिखाया। तत्पश्चात् ईश्वर–स्तुतिप्रार्थनोपासना के आठ मन्त्रों का पाठ सिखाया। उन मन्त्रों के पाठ से ऐसा लगा कि हममें अभी बहुत कमी है इस क्रम में मैंने उदात्त, अनुदात्त और स्वरित की यथार्थ उपयोगिता समझी। एक–श्रुति क्या है ? इस सम्बन्ध में मुझे जानकारी मिली। जब कभी मुझसे मन्त्रोच्चारण में स्वर वर्णों के उच्चारण में दोष होता तो आचार्य जी तुरन्त दोष–निवारण करते हुए महाभाष्यकार पतञ्जलि की निम्न पंक्ति का संकेत करते जिसे महर्षि दयानन्द जी ने भी "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में उद्धृत किया है–

'दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥'

इन सारी बातों को जानने के बाद भी गलत अभ्यास से यदा–कदा दोष हो जाते परन्तु आचार्य जी के बारम्बार परिशोधन से वे दोष क्रमश निवारित होते रहे।

हस्त–संचालन से ही स्वरों के उच्चारण में कुशलता प्राप्त होती है और उदात्त–अनुदात्तादि स्वरों का कण्ठ से उच्चारण का ज्ञान तथा श्रवण से उनकी प्रतीति होना–इनका भी यहां हमें स्पष्ट बोध कराया गया।

"संस्कार–विधि के सामान्य प्रकरण के अन्त में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं–'जैसा कि जिस वेद का उच्चारण है, वैसा यजमान ही करे।' किस वेद का कैसा उच्चारण होता है, इसका ज्ञान महर्षि ने ऋग्वेदादि–भाष्यभूमिका में कराया है।

संस्कार विधि में आगे चलकर महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं–मंगल कार्य अर्थात् गर्भाधानादि से सन्यास संस्कार पर्यन्त सब संस्कारों के अन्त में वामदेव्यगान और महावामदेव्यगान अवश्य होना चाहिए तथा गोभिलगृह्यसूत्रमें प्रवृत्ते कर्मणि वामदेव्यगानम् शान्त्यर्थं शान्त्यर्थम् ... अर्थात् यज्ञकर्म की समाप्ति पर वामदेव्यगान शान्ति के निमित्त अवश्य होना चाहिए इसीलिए महर्षि ने संस्कार विधि में इसका विधान किया है। परन्तु आर्य समाजों में वामदेव्यगान के अभाव में जो भजनों द्वारा पूर्ति की जाती रही है जिससे वामदेव्य-गानों की पूर्ण उपेक्षा होती रही है तथा वेद के सस्वर पाठ के प्रचलन में एक बड़ी बाधा उपस्थित होती रही है। यह सौभाग्य की बात है कि इस अल्पावधि में मुझे यहां चारों वेदों की रीति से सस्वर वेद-पाठ का अभ्यास प्राप्त हुआ तथा वामदेव्यगानों का ज्ञान मिला। सामगान (प्रणवसाम, व्याहृति साम आदि) तथा मन्त्रगानों का कुछ अभ्यास हुआ सामगान में सामान्य रूप से ५ स्वर (स–रे–ग–म–प) ही आते हैं, कहीं–कहीं इससे अधिक भी। सामगान एवं मन्त्र गानों का यथाविधि सप्तस्वरों में गान बहुत ही श्रुतिमधुर एवं चित्ताकर्षक है और उनके गान से वेदों का अनेक प्रकार से प्रचार होगा।

मन्तव्य—

ऋग्वेद के सस्वर–पाठ की काशी की प्रचलित प्रणाली में केवल दो ही स्वर का उच्चारण होता है अर्थात् अनुदात्त और स्वरित का। उदात्त उच्चारण में उदात्त स्वर प्रकट नहीं होता है और स्वरित में ही उदात्त का उच्चारण प्रकट होता है तथा स्वरित के उच्चारण में पाणिनि के अनुसार जो उच्चारण प्रकट होता है उससे ये दोनों उच्चारण सर्वथा विपरीत हैं जबकि ऋग्वेद की भी शिक्षा पाणिनीय शिक्षा है इस दोष के परिहारार्थ पण्डित वेदश्रमी जी ने ऋग्वेद में भी तीनों स्वर यथावत प्रकट हों इसका भी यथावत ज्ञान एवं अभ्यास कराया जो कि एक महान् उपलब्धि है।

शिविर की एक खास उपलब्धि—

आर्यसमाज का प्रमुख आधार ग्रन्थ वेद है, अतः आर्य संस्थाओं में विशेष रूप से गुरुकुलों में, वानप्रस्थ आश्रमों में तथा प्रत्येक स्थानों में सस्वर वेद पाठ के प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन आवश्यक रूप से होने चाहिये। मेरे अनुभव से तथा औरों के अनुभवों से ऐसा स्पष्ट है कि इन शिविरों का आयोजन श्री पं० वेदश्रमी जी के ही संरक्षण में लगाने से यथावत उपलब्धि होगी।

सस्वर वेद पाठ के नाम पर जो गड़बड़ियां चल रही हैं, तथा एक श्रुति के नाम पर जो भ्रान्ति प्रचलित है वह सब दूर होकर शुद्ध सस्वर वेद पाठ का प्रचलन होना चाहिए तभी उसके यथार्थ ज्ञान और विज्ञान की प्राप्ति का लाभ कर सकते हैं।

अस्तु विश्व में शान्ति, सुव्यवस्था एवं ऋषि ऋण से उऋण होने हेतु घर-घर में वेदों का शुद्ध और सस्वर पाठ का प्रचार होना परमावश्यक है और यह कार्य सस्वर वेद–पाठ प्रशिक्षण शिविरों से ही सम्भव है।

अग्नि-पूजा

(रूपचन्द्र दीपक आर्य समाज शृंगार नगर लखनऊ)

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्न धातमम्

-ऋग्वेद [मण्डल-१ सूक्त-१ मन्त्र-१]

पदच्छेद--अग्निम ईळे पुरोहितम यज्ञस्य देवम ऋत्विजम ।
होतारम रत्नधातमम ।।

व्याख्या-[अग्निम] अग्नि की पूजा कर ऐसा वेद मे उपदेश है । इसके आधार पर पाश्चात्य इतिहासकारो ने यह प्रसिद्ध किया है कि आर्य अग्नि की पूजा करते थे और उनके गृहो मे निरन्तर अग्नि जलती रहती थी । वस्तुत अग्नि शब्द के प्रमुख अर्थ दो है--परमेश्वर और आग । वैदिक मत के अनुयायी अर्थात आर्य जन सदैव से परमेश्वर की उपासना एव आग मे होम करते आये हैं । जहा तक उपासना का प्रयोजन है अग्नि का अर्थ परमेश्वर ही है । निरुक्त के अनुसार अग्नि अग्रणी भवति अर्थात अग्रणी को अग्नि कहते हैं । स्पष्ट है कि परमेश्वर ही अग्रणी है आग नहीं । यजुर्वेद [अध्याय-४० मन्त्र-१६] के अनुसार-अग्ने नय सुपथा राये अस्मान अर्थात हे अग्ने ! हमको सुपथ पर ले चलो । सुपथ पर वही ले जा सकता है जो चेतन एव ज्ञान शक्ति सम्पन्न हो अर्थात परमेश्वर न कि आग । शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ब्रह्म हि अग्नि अर्थात ईश्वर ही अग्नि है । इस प्रकार अग्नि पूजा से तात्पर्य है--परमेश्वर की पूजा कर । वह सर्वज्ञ पवित्र एव तेजस्वरूप है । उसकी उपासना करके हम भी विद्वान पवित्र एव तेजस्वी बनें ।

(पुरोहितम) ईश्वर पुरोहित अर्थात हित करने मे सर्वदा सर्वथा सबसे आगे है इसके चार प्रमाण है-[१] सब देहधारियो के जन्म से पूर्व ही उसने समस्त आवश्यक पदार्थों की उत्पत्ति की [२] पदार्थों की रचना के साथ उसने वेद विद्या भी दी अन्यथा विद्या के अभाव मे पदार्थों से हितसाधन न हो पाता जैसे मार्ग के किनारे खड़े पौधो को अज्ञानी व्यक्ति घासफूस ही समझते हैं और आयुर्वेद का विद्वान उन्हीं मे से औषधियां खोजकर जगत का उपकार करता है [३] सृष्टि के किसी कार्य मे ईश्वर का स्वहित लेशमात्र भी नहीं है अपितु समस्त प्राणियो का ही सम्पूर्ण हित है [४] मनुष्य अपने हित के विरुद्ध असत्य असंयम क्रोध हिंसा आदि के अनेक कर्म करता है किन्तु ईश्वर गर्मी सर्दी वृद्धावस्था मृत्यु एव प्रलय भी जीवो के हितार्थ ही करता है । ऋग्वेद (मण्डल-१ सूक्त-५५ मन्त्र-३) के अनुसार विश्वस्मा उग्र कर्मणे पुरोहित अर्थात ईश्वर समस्त कर्त्तव्यो के लिए पुरोहित अर्थात हितकारी है ।

[यज्ञस्य देवम] यज देव पूजा संगति करण दानेषु अर्थात यज्ञ के तीन अंग हैं--देवपूजा संगतिकरण दान देवपूजा अर्थात माता पिता आचार्य अतिथि एव जीवन-साथी के प्रति सम्मान सेवा सत्कार एव स्नेह का स्थायी भाव रखना । उपासना ज्ञान काण्डयोरीश्वरस्यैव देवता शब्देन सर्वत्र स्वीकारात अर्थात ज्ञान एव उपासना में देव शब्द से ईश्वर का ही ग्रहण करना चाहिए । संगतिकरण अर्थात विद्वानो का संग एव सुपात्रो से सहयोग करना । दान अर्थात यथा सामर्थ्य धन अन्न विद्या आदि का निःस्वार्थ दान करना । उक्त यज्ञ के पांच प्रकार हैं--ब्रह्मयज्ञ अर्थात होम पितृ यज्ञ अर्थात माता पिता आदि की सेवा बलिवैश्वदेव यज्ञ अर्थात पशु पक्षियो एव अक्षम मनुष्यो को अन्न देना और अतिथि यज्ञ अर्थात अतिथि सत्कार । इस प्रकार यज्ञ मे सभी श्रेष्ठ कर्म आ जाते हैं । शतपथ मे भी कहा है-यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म । इन श्रेष्ठ कर्मों के लिए पदार्थों एव प्रेरणाओ का देने हारा तथा इन्हें करते समय कर्ता का इष्टदेव परमेश्वर ही है । वही यज्ञस्य देव अर्थात यज्ञ का एक मात्र देवता है ।

[ऋत्विजम] ईश्वर सब ऋतुओ का रचयिता है । उसने वसन्त ग्रीष्म वर्षा शरद हेमन्त एव शिशिर की व्यवस्था की है ताकि मनुष्य उनसे विविध उपयोग ले सके । ग्रीष्मो हेमन्त शिशिरो वसन्त शरद वर्षा स्विते नो दधात । [अथर्ववेद काण्ड-६ सूक्त-५५ मन्त्र-२]। यदा कदा मनुष्य किसी एक ऋतु से अति प्रभावित होकर दुःख का अनुभव करता है किन्तु समवेत रूप से समस्त ऋतुएं सुखकारी हैं । ईश्वर यथाकाल जगद्रचकन अर्थात समय आने पर सृष्टि एव पुन समय आने पर प्रलय करता है । वही यथा समय ऋतुओं के विशेष पेड़ पौधे उत्पन्न करता है । मनुष्यमे भी बालपन यौवन एवं वृद्धावस्था उसी के कालनियम से आती है । वह सर्वेषु ऋतुषु यजनीय (महर्षि दयानन्द) अर्थात प्रत्येक ऋतु मे उपासनीय है । वसन्त ग्रीष्म वर्षा आदि वायुमण्डलीय ऋतुओं एवं सुख दुःख जन्म मरण क्रोध शान्ति आदि मानसिक ऋतुओ मे वह समान रूप से पूजनीय है अर्थात हमें प्रतिक्षण ईश्वर का स्मरण रखना चाहिये ।

[होतारम] ईश्वर दानकर्ता आदानकर्ता एवं होमकर्ता है । वह जगत के प्राणियो को सब पदार्थ देता है । उन्हे उनके समस्त कर्मो का यथानुरूप फल अर्थात शुभकर्मों से सुख एवं दुष्कर्मों से दुःख देता है । शुभ कर्म करने हेतु जीवात्माओ मे प्रेरणा देता है । सब मनुष्यो के कल्याणार्थ सृष्टि के आदि मे वेदविद्या का प्रकाश करता है । संसार की तपन से त्राण पाने हेतु उपासना मे बैठे सदाचारी भक्त को अनुपम सुख देता है । मोक्ष समय मे मोक्षाधिकारी जीवो का ग्रहण करता है । सर्वदा जगत का धारण करता है । सुख शिक्षा बल वीर्य आदि गुणो को सदा लिये हुए है । वह सृष्टि का प्रलय मे एवं प्रलय का सृष्टि मे होम करता है । वास्तुत सृष्टि पालन मे महानतम यज्ञ वही कर रहा है वह यज्ञरूप है । वही मौलिक होता है । त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां [सामवेद मन्त्र २] हे प्रभो ! आप सब यज्ञो के होता अर्थात स्वामी हैं आपकी कृपा से हमारा जीवन यज्ञमय बने ।

[रत्न धातमम] पृथ्वी रत्नधा है क्योंकि उसके गर्भ मे सोना चांदी हीरा आदि तथा उसके समुद्र मे मूंगा मोती माणिक आदि रत्न भरे पड़े हैं । द्युलोक पृथ्वी जैसे असंख्य पिण्डो का समूह होने से रत्नधातर है । परमात्मा समस्त लोको का स्वामी होने से रत्नधातम है । मनुष्य के लिए सत्य धर्म शिक्षा सुख आदि गुण भी रत्न ही हैं । इनको धारण करने से मनुष्य रत्नधा है । ऋत्विज इनको विशेष रूप से धारण करने से रत्नधातर है । ईश्वर इन्हे पूर्णरूप से धारण करने एवं विद्वान उपासक को धारण कराने से रत्नधातम है । प्रकृति सत रूपी एक स्वाभाविक गुण वाली होने से रत्नधा जीव सत एव चित होने से रत्नधातर तथा ईश्वर सत चित एवं आनन्द होने से रत्नधातम है । वह रत्नधातम परमात्मा ही सब प्रकार के रत्नो अर्थात सांसारिक एवं आध्यात्मिक सम्पदाओं का देने हारा है । उससे प्राप्त सम्पदायें दिन प्रतिदिन आनन्दकर होती जाती हैं । अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे [ऋग्वेद मण्डल-१ सूक्त-१ मन्त्र-३] ।।

[शेष पृष्ठ ९ पर]

उत्तरप्रदेश की समस्त आर्य उप प्रतिनिधि समाओं के पदाधिकारियो, समस्त समाजों के पदाधिकारियों तथा समस्त सम्मानित प्रतिनिधियों की सेवा में आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा निष्कासित कुछ व्यक्तियो द्वारा प्रदेश के कुछ स्थानो पर पत्र लिखकर यह भ्रामक प्रचार किया जा रहा है कि सभा का वार्षिक बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन दिनांक १४, १५ नवम्बर १९८७ को डी० ए० वी० कालेज लखनऊ मे सम्पन्न नहीं होगा साथ ही साथ सभा के भूतपूर्व मुख्य लेखक श्री कृष्णगोपाल शर्मा, जिनकी सेवाएं सभा द्वारा समाप्त की जा चुकी हैं, वह भी आर्यजनों को भ्रमित करने के लिए प्रचार कार्य मे संलग्न हैं।

अतः मेरा सभी आर्य जनो / प्रतिनिधियो से अनुरोध है कि वह इस प्रकार के कुप्रचार से भ्रमित न हो। सभा का बृहदधिवेशन पूर्व घोषित तिथियो मे अर्थात् १४ व १५ नवम्बर १९८७ को ही डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ मे सम्पन्न होगा।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश, के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर डी०ए०वी० कालेज, लखनऊ के प्रांगण में दि० १४ नवम्बर १९८७ की रात्रि को ९ बजे

आर्य कवि सम्मेलन

★ ★ ★

जिसमें प्रतिनिधियों को पहली बार राष्ट्र और राष्ट्र भाषा के लिए समर्पित देश के प्रसिद्ध लब्धप्रतिष्ठ आर्य कवियो को इस विशाल मंच पर एक साथ सुनने और काव्यामृत का पान करने का अभूतपूर्व अवसर प्राप्त होगा।

निवेदक—

इन्द्रराज	मनमोहन तिवारी	जयनारायण अरुण
सभा प्रधान	सभा मन्त्री	संयोजक

स्वागत महान

[प्रदेश के पूर्वांचलीय क्षेत्र में, सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के तूफानी दौरे मे आर्य नवयुवकों मे नवजागरण का सन्देश फूंका है। राष्ट्रीय चेतना जागृत हुई है आर्यसमाज के मन्दिरो मे विश्व को आर्य बनाने का शंखनाद किया है। यहां की जनता ने सभा मन्त्री का स्वागत पलकपांवड़े बिछाकर किया। गोरखपुर पहुंचने पर उनके अभिनन्दन में प्रस्तुत कविता]

सभा मन्त्री पधारे है स्वागत महान

दे दो वैदिक धर्म का ज्ञान।
बुद्धि करो बलवान ॥ दे दो · ·

नैतिक पतन हुआ है जिनका,
आत्म–बल खोया है जिनका,
कराओ हमे महर्षि का ध्यान ॥ दे दो ··· ···

आज के युग का साम्यवाद,
वेदो का करता अपवाद,
भ्रष्ट हुआ विज्ञान ॥ दे दो ···।

वेदो से विज्ञान मिलेगा,
यह हमको भक्तिदान करेगा,
देते हम सम्मान ॥ दे दो··· ···।

वेद बुद्धि का दर्पण है,
जीवन अपना अर्पण है,
आर्य सभा का गौरव मान,
सभा मन्त्री पधारे हैं स्वागत महान ॥

—दयाशंकर जैसवाल आर्यसमाज मन्दिर बक्शीपुर, गोरखपुर

आर्यसमाज के नियम

वेद ज्ञान से सृष्टि ज्ञान से, जो कुछ है जाना जाता।
उन सबका निमित्त कारण, परमेश्वर को माना जाता ॥
आर्यसमाज का प्रथम नियम जानना उसी जगदीश्वर को।
तथा समझना आदिमूल सबका केवल सर्वेश्वर को ॥
नियम दूसरा सगुण ब्रह्म, उसका ही चिन्तन मनन करें ॥
वही, अनादि, अजन्मा, निर्गुण उसको ही नित नमन करें ॥
नियम तीसरा प्रभु के गुण का हम सर्वत्र बखान करें।
पढ़ें–पढ़ायें सुनें–सुनायें, वेदों का रसपान करें ॥
चौथा नियम महत्वपूर्ण है, सब अपने उर मे धारें।
तत्पर रहें असत्य त्याग मे, सत्य सर्वदा स्वीकार करें ॥
नियम पांचवा अपनायें, धर्मानुकूल आचरण सदा।
करें विचार असत्य सत्य का, सतपथ का अनुसरण सदा ॥
छठा मुख्य उद्देश्य आर्य जन का, परहित मे रत रहना।
शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक, उन्नति नित करते रहना।
नियम सातवां बरतें हम, व्यवहार प्रीति पूर्वक सबसे।
प्रेम सिन्धु लहरें ले उर मे, खिन्न न कोई हो हमसे ॥
नियम आठवां निर्बलता, अज्ञान अविद्या दूर करें।
विद्या रूपी धन बल से हम अपने को भरपूर करें ॥
नियम नवां सन्तुष्ट न हो केवल अपनी ही उन्नति में।
बल्कि समझनी हमें चाहिए उन्नति सबकी उन्नति मे ॥
अन्तिम नियम व्यक्तिगत हित के, कार्यों मे स्वाधीन रहे।
'शिव' सामाजिक हितकारी नियमो के सदा आधीन रहे ॥

—शिवकुमारसिंह 'रैकवार' धुरखी (कैसरगंज) बहराइच

आर्यसमाज आदर्शनगर लखनऊ का उत्सव

—आर्यसमाज आदर्श नगर लखनऊ का वार्षिक उत्सव ७ दिसम्बर से १३ दिसम्बर तक मनाया जा रहा है।

पुस्तक-परिचय

नाम—मुनी गुरुदत्त लेखावली

प्रकाशक—वेद प्रचारक मण्डल रामजस रोड करौलबाग नई दिल्ली

पृष्ठ संख्या—३१६ मूल्य—१३)

उपरोक्त पुस्तक मे जैसा कि उसके नाम से ही स्पष्ट है, मुनिवर प० गुरुदत्त जी विद्यार्थी के लेखो का सग्रह है। इस पुस्तक मे उन सब लेखो का आर्यभाषानुवाद है जो आज तक आर्य भाषा मे अप्रकाशित रहे। इसका प्रथम प्रकाशन श्री जीवनदास जी उपप्रधान आर्यसमाज लाहौर (जो अब पाकिस्तान मे है) द्वारा १५-१०-१८९७ को किया गया था और इसके प्रकाशन का उद्देश्य यह था कि जो लोग आर्य शास्त्रो का अध्ययन मूल सस्कृत मे नहीं कर सकते, वे उनके महत्व को भलीभांति समझ सकें। कालान्तर मे इस पुस्तक का प्रकाशन श्री राजपाल जी प्रबन्धकर्त्ता आर्य पुस्तकालय व सरस्वती आश्रम लाहौर द्वारा नवम्बर १९१८ मे किया गया।

इस पुस्तक मे जहाँ प० गुरुदत्त जी का जीवन चरित्र विस्तारपूर्वक ५० पृष्ठो मे दिया गया है, वहाँ उनके निम्नलिखित विषयो पर लेखों का सग्रह किया गया है—(१) वैदिक सज्ञा विज्ञान और योरपीय विद्वान (२) 'इण्डियन विजडम' नामक पुस्तक की आलोचना [चार व्याख्यानो के रूप मे] (३) जीवात्मा के अस्तित्व के प्रमाण (४) ईशोपनिषद की व्याख्या (५) माण्डूकोपनिषद् की व्याख्या (६) वेद वाक्य जिनमे क्रमश वायु मण्डल, जल की रचना, गृहस्थ, आध्यात्मिक जीवन के तत्व, धन की डाह आदि लेखो का सकलन है (८) वेदो मे मूर्तिपूजन तथा नियोग विषयो पर डॉ० विलियम्स को दिया गया उत्तर (९) वेदो के विषय मे पिनकाट साहब का पत्र और दिया गया उत्तर।

श्री प० गुरुदत्त विद्यार्थी के लेखो का आर्य भावानुवाद करने का श्रेय आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वानो यथा प० सन्तराम जी और प० जगदत्त जी को है।

पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है विशेष कर उन स्वाध्यायशील प्रचारको के लिए जो वैदिक धर्म के प्रचार कार्य मे, निरन्तर जिज्ञासुओ की शकाओ का भी समाधान करते है। पुस्तक के नवीनतम प्रकाशन के लिए वेद प्रचारक मण्डल का प्रयास स्तुत्य है। छपाई साफ और सुन्दर है। ३१६ पृष्ठो की पुस्तक का १३) रु० का अल्प मूल्य सर्वथा उचित है।

—बसन्त

शोक समाचार

आर्यसमाज शमशेरगढ़ देहरादून के सभासद श्री दर्शनसिह जी की कन्या सरिता का १६ वर्ष की आयु मे देहान्त हो गया। प्रभु दिवगता को शान्ति एव दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करें।

—झांसी निवासी श्री ज्ञानचन्द्र गुप्त के पिता स्व० श्री स्वामी जी के निधन पर आर्य वीर दल कोषागज द्वारा उनके निवास स्थान पर दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए बृहत् यज्ञ हुआ। ईश्वर से शान्ति व धैर्य प्रदान करने की सामूहिक प्रार्थना की गयी श्री ज्ञानचन्द्र गुप्त ने आर्यसमाज झांसी को ११५१) एक हजार एक सौ इक्यावन रुपया दान दिया। —नरेन्द्रप्रसाद सचालक आर्यवीर दल कोपागज (आजमगढ़)

सम्पादक के पत्र

[इस स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित विचारो से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।]

महोदय,

देहरादून मे एक अनाथ आश्रम कुछ आर्य बन्धुओ द्वारा चलाया जा रहा है परन्तु वहा एक व्यक्ति बिहार से कुछ युवको को लाकर वहा उनको अनाथ दिखाकर भर्ती करता चला आ रहा है। वह व्यक्ति बरेली मे कार्य करता है। कुछ दिनो अनाथ आश्रम मे रहने के बाद यह बिहारी युवक शहर मे चोरी करके भाग जाते है जिससे आर्य समाज जनता की निगाह मे गिरता है हाल मे ही एक वीर सिह नाम का लडका जो देहरादून के इसी आश्रम मे रहता था एक वी०सी०आर० चुराकर गायब हो गया है जिस कारण पुलिस अनाथ आश्रम तथा आस पास के व्यक्तियो से पूछ ताछ कर रही है जिससे लोगो मे आर्य बन्धुओ के बारे मे भिन्न भिन्न प्रकार की चर्चायें हो रही हैं। मेरा सुझाव है कि उ०प्र० के मस्थानो मे उ० प्र० के बालको को ही भर्ती किया जाये।

भवदीय—
अमरनाथ सेठ
५१, न्यूकनाट प्लेस देहरादून

भूल सुधार

दिनाक २० सितम्बर के आर्यमित्र मे आर्य समाज अनाज मण्डी, वृन्दावन (मथुरा) के अधिकारियो के जो नाम प्रकाशित हुए हैं उनके स्थान पर अब निम्नलिखित निर्वाचित पदाधिकारियो के नाम प्रकाशित किये जाते हैं जो वैध हैं और सभा द्वारा मान्य हैं।

प्रधान—श्री प० बिहारीलाल शर्मा
मन्त्री—श्री वेद प्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री सीताराम

पूर्व प्रकाशित नामो के लिए खेद व्यक्त किया जाता है।

वेद प्रचार

आर्य समाज लाजपत नगर कानपुर मे दिनांक १९-१०-८७ से २२-१०-८७ तक सामवेद पारायण यज्ञ तथा वेद कथा का आयोजन किया गया। श्री सुरेन्द्रकुमार जी के सुमधुर भजन तथा श्री विक्रमादित्य 'बसन्त' के सारगर्भित वेदोपदेश हुए। गुरुकुल एटा के ब्रह्मचारियो द्वारा सामवेद का पाठ किया गया। २२-१०-८७ को कानपुर जिले की समस्त आर्यसमाजो का सामूहिक अधिवेशन जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कानपुर के तत्वावधान मे ऋषि निर्वाण दिवस के रूप मे सुसम्पन्न हुआ।

आर्य समाज नकुड़ का वार्षिक उत्सव

—आर्यसमाज नकुड़ (सहारनपुर) का ५७ वा वार्षिकोत्सव दिनांक ४, ५, ६ नवम्बर १९८७ को मनाया जा रहा है।

श्रीमती महादेवी वर्मा

[ले०—प्रो० रमेशचन्द्र एम० ए०]

परिचय इतना इतिहास यही ।
उमड़ी थी कल मिट आज चली ।।

हिन्दी साहित्य एवं काव्य में अद्वितीय स्थान प्रतिष्ठा सम्पन्न एवं छायावाद की प्रमुख कवियित्री श्रीमती महादेवी वर्मा का प्राणान्त दिनांक ११ सितम्बर १९८७ को रात्रि साढ़े नौ बजे हो गया। समस्त हिन्दी जगत शोकाकुल हो उठा एवं क्रान्तिमती के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने लगा आर्य मित्र भी देशवासियों के साथ कवियित्री जी के प्रति सादर श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है।

उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जनपद में १९०७ को श्री गोविन्द वर्मा के गृह में उनका जन्म हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा घर पर हुई और रूढ़िवादी परम्परा में ग्रस्त अभिभावकों ने दस वर्षीय बालिका का विवाह कर दिया ससुराल गयी एक दो दिन रही और रूढ़िवादिता के प्रति विद्रोह की भावना जागृत हुई तथा शिक्षा की ओर अभिमुख हुई।

प्रयाग महादेवी का शिक्षा केन्द्र रहा। वहीं से संस्कृत में एम० ए० किया। साहित्य एवं दर्शन के प्रति अनुराग निरन्तर बढ़ता गया। प्रयाग विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० धीरेन्द्र वर्मा एवं हिन्दी के योग्य विद्वान डा० रामकुमार वर्मा के निर्देशन एवं सहयोग से महादेवी लाभान्वित हुई और वैदिक एवं औपनिषदिक रहस्यवाद तथा छायावाद की भावना से सम्मोहित होकर काव्य रचना-विशेष रूप से गीत विधा में कुशल एवं निष्णात होती गयीं। कुछ वर्षों में उस समय के प्रसिद्ध छायावादी (रोमान्टिसिज्म) एवं रहस्यवादी (मिस्टीसिज्म) के प्रमुख कवि प्रसाद—पन्त—एवं निराला के समकक्ष प्रतिष्ठा प्राप्त करने में समर्थ हो गयीं।

महादेवी छायावादी गीत लेखिका के साथ सुधारवादी मनोवृत्ति की थी स्वयं जातीय एवं पारिवारिक रूढ़िवादिता को चोट खाई थी अतः जीवन भर विद्रोहिणी बन नारी जागरण की मशाल को प्रदीप्त करती रहीं। स्त्री शिक्षा की उन्नायिका के रूप में कार्य किया तथा प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना की और सतत जीवन पर्यन्त उस संस्था की एवं उसके द्वारा स्त्री शिक्षा स्त्री सुधार में लगी रहीं और रूढ़िवादी भावनाओं से संघर्ष करती रहीं। अपने गृहस्थ जीवन का भी परित्याग करके अपने ध्येय की ओर बढ़ती रहीं, स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में उनका कार्य श्लाघनीय है।

विराट् विश्व में ईश अनुभूति को उसकी रहस्यमयी सत्ता को वैदिक ऋषियों ने तथा औपनिषदिक विचारकों ने अनुभूत किया उसी दार्शनिक विचार धारा को महादेवी ने हिन्दी काव्य में गीतों द्वारा अभिव्यक्त किया और सुन्दर प्रभावी भाषा कोमल भाव अनुभूति की तीव्रता तथा अनुभावों की व्यञ्जना से महादेवी की पंक्तियाँ सजीव हुई तथा जीवन पर्यन्त इसी दिशा में साधना रत रहीं—महादेवी ने एक दर्जन से ऊपर काव्य ग्रन्थों की रचना की—नीरजा नीहारिका रश्मि यामा आदि प्रमुख है—वे ज्ञानपीठ पुरस्कार से अलंकृत हुई कवि के अतिरिक्त महादेवी कहानी लेखिका विचारिका चित्र कर्मी भी रहीं, उनकी कृतियाँ हिन्दी-साहित्य में अमर रहेंगी।

वैदिक धर्म प्रशिक्षण शिविर

आर्य कन्या इन्टर कालेज, सीतापुर

(नवम्बर ८, ९ तथा १०, १९८७)

वैदिक धर्म प्रेमी जनता, विशेष कर आर्य शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनशील छात्र एवं शिक्षकों के हितार्थ, प्रदेशीय विद्यार्य सभा द्वारा आयोजित उक्त शिविर में वैदिक मान्यताओं के विभिन्न विषयों, ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, तथा आर्य समाज से सम्बन्धित कार्य कलापों पर प्रदेश के प्रसिद्ध आर्य विद्वान बड़ी ही रोचक शैली में अपने विचार प्रस्तुत करने आ रहे हैं। इस अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किए जायेंगे। सभी धर्म प्रेमी शिक्षित जनता सस्नेह आमन्त्रित हैं।

माधवसिंह मन्त्री, प्रदेशीय विद्यार्य सभा, लखनऊ

बंगा पीड़ित कोष में

दान दाताओं की सूची

[क्रमश]

१—पुरुष आर्य समाज चाँदपुर बिजनौर	२५१)
२—महिला ,, ,, ,,	२००)
३—श्री ओम प्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष (व्यक्तिगत)	५१)
४—श्री देवेन्द्र कुमार त्यागी मन्त्री आर्य समाज (व्यक्तिगत)	५१)
५—श्री रामेश्वर प्रसाद वर्मा सदस्य आर्य समाज (व्यक्तिगत)	११)
	५६४)
६—श्री देवदत्त बाली मन्त्री आ० स० देहरादून	१०००-०० (चेक)

अग्नि-पूजा

[शेष पृष्ठ ६ से आगे]

(ईड) जो परमात्मा चेतन, ज्ञानस्वरूप, सर्वहितकारी, यज्ञों का इष्टदेव, प्रतिक्षण पूजनीय, सुखादि का धारक एवं दाता है, उसी की उपासना करनी योग्य है। सब मनुष्य उसकी स्तुति अर्थात् गुणों, का चिन्तन, प्रार्थना अर्थात् पुरुषार्थ करके सहाय की याचना, एवं उपासना करें अर्थात् ईश्वर के आनन्द स्वरूप में अपने को मग्न कर दें। यजुर्वेद [अध्याय—३१, मन्त्र—१८] के अनुसार "तमेव विदित्वाति मृत्युमेति" अर्थात् उसी परमात्मा को जानकर एवं प्राप्त होकर जीव जन्म—मरण आदि क्लेशों से छूटकर परमानन्द स्वरूप मोक्ष को प्राप्त करता है।

महान कवियित्री समाज सुधारिका नारी शिक्षा में समर्पित निर्धन की सेविका के प्रति आर्यमित्र अपने समस्त पाठकों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित करता है—

वेदोपदेशक विद्यालय में प्रवेशार्थ सूचना

हाई स्कूल या इसके समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण आजीवन वेद प्रचार का संकल्प १६ से २५ वर्ष की आयु के स्वस्थ युवक प्रवेश के लिये सम्पर्क करें। भोजन आवास वस्त्र आदि व्यवस्थाय सर्वथा नि:शुल्क उपलब्ध हैं।

स्वामी वेदानन्द वैदिक वेदोपदेशक विद्यालय ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर ब्रजघाट जिला गाजियाबाद (उ० प्र०)

स्वराज्य की रक्षा एवं सुराज्य की स्थापना के लिए

महर्षि दयानन्द के पथ का अनुसरण करें

ऋषि निर्वाण पर्व पर आर्य सभा को सभा मन्त्री का उद्‌बोधन

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद लखनऊ द्वारा श्री मद्‌दयानन्द बाल सदन मोती नगर लखनऊ में दिनांक २२-१०-८७ को प्रात ७॥ बजे से १२ बजे तक ऋषि निर्वाण दिवस का भव्य समारोह आयोजित किया गया जिसमें लखनऊ के सकडों नर-नारियों ने उपस्थित होकर महर्षि स्वामी दयानन्द को भाव-भीनी—श्रद्धांजलि अर्पित की।

समारोह का आरम्भ ठीक ७॥ बजे बृहद यज्ञ से आरम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेदव्रत अवस्थी कुलपति गुरुकुल लखनऊ ने उ होने गुरुकुल के १९ ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवीत देकर ब्रह्मचर्य-व्रत के महत्व को समझाया तथा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को ही राष्ट्रीय चरित्र के उत्थान का एक साधन बताया।

यज्ञ के अनन्तर नगर के बच्चों के भाषण व गायन प्रतियोगिताय हुयीं।

वेद मनीषी श्री हरिवंशलाल मेहता डा० कंचन लता सब्बर वाल श्रीमती विमला महाना श्रीमती उर्मिला सेवक तथा श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने अपने भजन गीत व व्याख्यानों द्वारा महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की।

श्री मनमोहन तिवारी ने कहा कि लखनऊ में गुरुकुल की स्थापना से उन्हें आन्तरिक हर्ष है और वे गुरुकुल की उन्नति में सदैव समर्पित रहेंगे महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धा सुमन भेंट करते हुए सभा मन्त्री ने कहा कि देश के स्वराज्य की रक्षा एवं सुराज्य की स्थापना के लिए महर्षि दयानन्द के पथ का अनुसरण ही एक मात्र उपाय है। महर्षि दयानन्द ने हमें वेद के पथ पर ही चलने का सन्देश दिया।

सभा के अनन्तर ऋषि लङ्गर प्रीति भोज भी हुआ। जिसमें लगभग ५०० नर नारियों ने—भाग लिया। समारोह की अध्यक्षता श्री अर्जुन देव महाना ने की।　　—सम्वाददाता

—शास्त्रार्थ महारथी श्रद्धेय अमर स्वामी जी महाराज के निधन पर निम्नलिखित संस्थाओं ने भी शोक प्रस्ताव पारित किये—

१ आर्य समाज गोरखपुर
२ आर्य समाज सरायतरीन हयात नगर
३ आर्य समाज सदर बाजार झाँसी
४ आर्य समाज गांधी कालोनी मुजफ्फर नगर
५ स्त्री आर्य समाज गाजियाबाद
६ सार्वदेशिक दयानन्द सन्यासी वानप्रस्थ मण्डल ज्वालापुर
७ आर्य समाज मुगलसराय वाराणसी
८ आर्य समाज बिसौली बदायू
९ आर्य गुरुकुल ऐरवा कटरा इटावा
१० आर्य समाज वाराणसी छावनी

लखनऊ में अष्ट दिवसीय स्वस्ति याग सम्पन्न

दिनांक १४-९-८७ से २१-९-८७ तक श्रीमती सुभद्रा देवी-चरिटेबिल कसर अस्पताल द्वारा बिरवा लखनऊ में अस्पताल के संचालक डा० हर प्रसाद सक्सेना ने अपनी पुजनीया माता सुभद्रा देवी की पुण्य स्मृति में नित्य प्रात ७ से ९ बजे तक श्री विक्रमादित्य बसन्त के ब्रह्मत्व में स्वस्ति याग का आयोजन किया। इस बृहद यज्ञ में नित्य एक घण्टे यज्ञ एवं १ घण्टे श्रीमती सन्तोष कुमारी महाना श्रीमती विमला महाना एवं श्री मदनमोहन जोशी के भजन एवं श्री विक्रमादित्य बसन्त आचार्य वेद व्रत अवस्थी तथा श्री कृष्ण बलदेव महाना के प्रवचनों से सकडों आर्य नर-नारियों ने अत्यन्त लाभ उठाया। अन्तिम दिन ऋषि लंगर भी हुआ जिसमें ५०० से अधिक नर नारियों ने सहयोग किया।

डा० सक्सेना ने अपनी स्वर्गीया माता के दिवंगत होने का एक वर्ष पूर्ण होने पर यह यज्ञ रचाया। धर्म परायण माता जी के-निर्देशानुसार ही वे यह धर्मार्थ होम्यो पथिक कसर अस्पताल चलाते हैं। जिसमें ३० रोगियों की शय्याओं की व्यवस्था नि:शुल्क चिकित्सार्थ की हुयी है।　　सम्वाददाता

सेवा-वरण

(शेष पृष्ठ ३ से आगे)

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य कृत ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्य पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत ॥
(यजुर्वेद-३१ ११)

अर्थात राष्ट्र समाज रूपी शरीर में ब्राह्मण (शिक्षक चिकित्सक वैज्ञानिक आदि) मुख के समान क्षत्रिय (रक्षक सैनिक पुलिस आदि) भुजा के समान वैश्य (पोषक कृषक शिल्पकार आदि) उदर के समान तथा शूद्र (श्रमिक कुली स्वच्छक आदि) पैर के समान हैं। ये चारों वर्ण सवर्ण हैं क्योंकि इन्होंने जीवनयापन हेतु इष्ट सेवा का वरण (चुनाव) करके गुण कर्म स्वभाव के अनुसार वर्ण अपनाया है।

दस्यु मानव अवर्ण हैं क्योंकि इन्होंने समाज सेवा हेतु किसी वर्ण का वरण नहीं किया है और ये तब तक अछूत (घृण डूबे हुए) हैं जब तक कि इनका आचरण व्यवहार सुधर न जाय।

जिस राष्ट्र के चार वर्ण तालमेल के साथ सेवा करते हुए अग्रसर होते हैं वह राष्ट्र अष्ट भुजावाली दुर्गाशक्ति से सम्पन्न होकर अजय दुर्ग का रूप धारण करता है।

वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष्य में

६० पैसे की दस पुस्तकें

प्रचार के लिये भेजी जाती हैं।

धर्मशिक्षा बालशिक्षा ज्ञान शिक्षा युवा शिक्षा वैदिक प्रश्नोत्तरी आर्य समाज क्या है सत्य पथ ईश्वर प्रार्थना गुरु भक्ति महर्षि की अमर कहानी सौ सेट मगाने वालों के लिये दस दैनिक यज्ञ प्रकाश और एक किलो हवन सामग्री मुफ्त में भेजी जावेगी-१०) रु० मनीआडर भेजें। सत्यार्थ प्रकाश ६ रुपये व्यवहार भानु २५ पैसा मुक्ति का मार्ग ४० पैसा उपासना का मार्ग ८० पैसे वेद प्रचारक मण्डल।
६०/११ रामजस रोड करोल बाग नई दिल्ली ५

सम्पादकीय

(पृष्ठ २ का शेष)

(३) शरीरान्त जिसे आत्म हत्या कहा जाता है पुण्य है या पाप और क्या स्वकर्मों का फल पति पत्नी पृथक रूप मे भोगते हैं या संयुक्त ?

वास्तविकता तो यह है कि मुगल काल मे पतियो के देहान्त के उपरान्त कामी स्वेच्छाचारी मुगल शासको और उनके सेवको से सतीत्व की रक्षा करने के उद्देश्य से राजस्थान की वीर महिलाओ ने जिसे जौहर प्रथा की संज्ञा देकर अपने सतीत्व की रक्षा की थी, कालान्तर मे अज्ञान और अविद्या के कारण उसे प्रचलित कर दिया गया ताकि स्वार्थी जन विधवाओं की सम्पत्ति का उपभोग कर सकें।

आज जो अज्ञानी दुर्भाग्यपूर्ण घटना की महिमा का बखान कर रहे हैं। मृतिका रूपकुंवर के जयघोष लगा रहे हैं। उसके नाम पर दिव-राला और रांची मे सती मन्दिर बनाने के स्वर गुंजा रहे हैं। राजस्थान सरकार के सती निरोधक अध्यादेश का विरोध कर रहे हैं, उन्हे दिग्भ्रमित न होकर वास्तविकता का साक्षात्कार करना चाहिए और इसे धार्मिक मामलो मे हस्तक्षेप न समझ कर इस अमानवीय कृत्य का विरोध करना चाहिए क्योंकि वेदानुसार 'सत्यस्य नाव सुकृतमपीपरन्' सत्य की नौकाए ही सत्कर्मों को पार लगाती हैं।

वसन्त

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायण स्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45913   ४५६६३
पञ्जीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
कार्तिक शुक्ल ११
१ नवम्बर रविवार, १६८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

१२९४६—श्री पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

धर्म शिक्षा पुस्तकों के सम्बन्ध में—

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश द्वारा प्रकाशित पुस्तकें सभा कार्यालयमे उपलब्ध हे। पुस्तकें प्राप्ति हेतु कार्यालय मे सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम से भेजें। रेलवे स्टेशन एवं पूरा पता साफ साफ लिखें। पुस्तकों का मूल्य निम्न प्रकार है—

धर्म शिक्षा भाग १	१.००
” ” ” २	१.५५
” ” ” ३	२.७०
” ” ” ४	२-७५
” ” ” ५	३-६०
” ” ” ६	४-७५
” ” ” ७	४-१५
” ” ” ८	[illegible]-००
” ” ” ९	४-००
” ” ” १०	३-००
” ” ” ११	४-००
धर्म शिक्षा भाग १२	३-५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु

❋ आवश्यक सूचना ❋

समस्त आर्यसमाजों, जिला उपसभाओं एवं शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रकार के कृतिक, शैक्षणिक एवं कविसम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह का रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमें विभिन्न वाद-विवाद प्रतियोगिताएं तथा सम्मेलनों के अंश सम्मिलित है एवं विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह एवं कवि सम्मेलन का वी० डी० ओ० (फिल्म) कैसेट के अतिरिक्त शताब्दी मे पधारे हुए सन्यासियों विद्वानों उपदेशकों, आदि के महत्वपूर्ण उपदेश एवं जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किए उनके रिकार्डिंग कैसेट निम्न प्रकार सभा कार्यालय मे बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। जो सज्जन अथवा संस्थाएं इन्हें [illegible] ना चाहती है वह श्री विश्वम्भरदयाल गुप्ता व्यवस्थापक आर्यमित्र ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आर्डर देकर प्राप्त कर सकते हैं।

१—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसेट—	मूल्य	१००० ० रु०
२—सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कैसेट—	मूल्य	१०० ०० रु०
३—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग कैसेट (कुल संख्या ३०) प्रति कैसेट—		२० ०० रु०
४—कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो—		५ ०० रु०

(बड़ी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध कराई जा सकती है)

नोट—जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह मे भाग लिया एवं पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें १८ १९ तथा २० अक्टूबर के एक एक दिन के अलग से रिकार्डिंग कैसेट उचित मूल्य पर अलग से मिल सकते हैं।

आर्यसमाज के कार्यक्रम तथा सभा की शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओं को ऐसे चित्र एवं कैसेट प्रचार कार्य मे बहुत सहायक होंगे।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एम० बी० प्रिंटर्स (निकट दूरदर्शन [illegible]) बारबाग लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स० २२४१५७ घोषणा पत्र स ७।२८ २ ८५

मार्गशीर्ष कृष्ण ३ रविवार सवत २०४४ वि० दिनाक ८ नवम्बर १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

— — —

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल

विक्रमादित्य म बस त

वेद वारिधि

★

प्रो० रमेशचन्द्र एम ए

★

आचाय बवव्रत अवस्थी

★

प्रब ध सम्पादक–

इ द्रदेव पाठक एम० ए०

साहि याचाय

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	१५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१३)
विदेश मे	१५ पौंड

★

वष	९०
अङ्क	४४

पति की चिता पर जीवित पत्नी को जलाना या जलने को विवश करना पूर्णतया वेद विरुद्ध

आर्यसमाज द्वारा शकराचार्य को खुली चुनौती

कानपुर मे शकराचाय शास्त्राथ से मुकर गये

कानपुर ३०-१० ७ को राघवाश्रम कानपुर मे एक समारोह मे काशीपीठ के शकराचाय स्वामी शकरान द जी एव पुरी के शकराचाय स्वामी शिवान द जी ने सती प्रथा व बाल विवाह को वेद सम्मत बताया आयसमाज सीसामऊ कानपुर का भी वार्षिको सव चल रहा था समाचार पत्रो मे उनकी घोषणा पढकर श्री प० लक्ष्मणकुमार शास्त्री प्रधान आयसमाज सीसामऊ ने सावजनिक सभा मे उनसे इसके सिद्ध करने की बात की और सवसम्मति से निश्चय करके ३१-१०-८७ को साय ठीक ४ बजे श्री देवीराम आय उपप्रधान आय प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एव प्रधान आय केन्द्रीय सभा

> ३१-१० ८७ को प्रात प्रो० रमेशच द्र एम० ए० सम्पादक आयमित्र ने पत्रकार के रूप मे काशीपीठश्वर शकराचाय से भट करके उनके कथन का प्रमाण पूछा उनसे उन्होने प्रमाण देने के बजाय केवल यह ही उत्तर दिया कि हमने जो किसी से सुना था वह कह दिया है। प्रो० रमेशच द्र जी ने उनसे कहा कि बिना प्रमाण कोई बात जनता मे कहना उपयुक्त नहीं आप अपने कथन का प्रतिवाद द। इस पर वे मौन हो गये

कानपुर के नेतृ व मे कानपुर के भारी सख्या मे आय नर नारियो के साथ राघवाश्रम कबाडी मार्केट पहुच कर शकराचाय जी को शास्त्राथ करने का कथन वापस करने की माग की। काशीपीठ के शकराचाय ने नि यक्रम मे व्यस्तता का बहाना बनाकर पुरी के शकराचाय से मिलने को कहा। सभी आय नरनारी झण्डो व बनर के साथ उनके पास जाकर उनसे शास्त्राथ करने का कथन वापस लेने की बात कही वे चर्चाओ मे लगातार बहाने बाजी ही करते रहे। कभी कहा कि हम तो यहा मेहमान हैं हम शास्त्राथ की व्यवस्था कसे कर फिर कहा कि पुस्तक उपलब्ध कसे होगी। उस प्रवसन मे आयमित्र–सम्पादक आचाय देवव्रत अवस्थी भी उपस्थित थे उ होने कहा कि आप शास्त्राथ स्वीकार कर एक घण्टे के अ दर सभी ग्र थ आपको उपलब्ध करा दिये जायगे फिर समयाभ व का बहाना बताया कि अभी ४ तारीख तक अति व्यस्तता है। इस पर श्री लक्ष्मणकुमार शास्त्री कानपुर ने उ हे कहा कि आप ४ तारीख के बाद की तिथि तय कर तब उ होने बहाना बनाया कि उ हे दि ली प्रदशन मे जाना है अत ७ तारीख तक बिल्कुल समय नहीं है अगर ७ को वहा गिरफ्तार हो गये फिर क्या होगा। शास्त्री जी ने कहा कि यदि ऐसा होता है तो वह तिथि परिवर्तित करके आपके छूटने के बाद रख ली जायेगी। फिर बहाना बनाया कि मध्यस्थ कौन होगा। सरकारी अधिकारी आय विद्वान हमारे विरुद्ध निणय दगे। आचाय अवस्थी ने कहा कि निणय जनता देगी परन्तु जनता को भेड बकरी कहकर उससे भी मुकर गये। फलत आय केन्द्रीय सभा के म त्री श्री श्यामप्रकाश ने लिखित चुनौती–उ हे दी और जनसमूह नारे लगाता हुआ आयसमाज सीसामऊ मे वापस पहुचा और फिर वहा के महोत्सव कायक्रम मे सभी विद्वानो ने सती प्रथा की नि दा करते हुए उसे अवदिक–अमानवीय कहा–और इसका समथन करने वालो को शास्त्राथ की खुली चुनौती दी।

★ ★ ★

से आंख मीच अन्याय देख बह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ-मार्गशीर्ष कृष्ण ९ सम्वत् २०४४ रविवार ८ नवम्बर १९८७, दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि संवत् १९७२९४९०८८

आर्य अपना कर्तव्य निभायें

देश में आज चारों ही ओर से आतंक, अशांति, विग्रह-फैल कर जन मानस को ग्रस्त कर रहा है। मानवता को डस रहा है। शासक और विपक्ष सभी उससे निपटने का दम भरते, नारे लगाते भाषण देते है परन्तु दवा के साथ मर्ज बढ़ता ही जा रहा है। इस मर्ज के बढ़ने में सबसे अधिक धर्म को ही जोड़ा जा रहा है। सत्ता लोलुप कथित धार्मिक नेता अपने संकुचित मनोभावों—से धर्म की रक्षा के नाम पर धर्म का नाश करने पर तुले हुये हैं। धर्म भेद साम्प्रदायिक विद्वेष बढ़ाने में ही सहायक बन रहे हैं।

अन्ध विश्वास, गुरुडम, अज्ञान का अन्धकार, स्वाध्याय व चिन्तन में प्रमाद के कारण निरन्तर बढ़ता जा रहा है। महर्षि स्वामी दयानन्द का जब प्रादुर्भाव हुआ था तब भी देश में अज्ञानता गुरुडम, अन्ध विश्वासो का बोल बाला था। उन्होंने अपने को धर्म के प्रति समर्पित करके जीवन की अन्तिम श्वास तक अन्ध—विश्वास, गुरुडम, मतमतान्तरों के भेद मिटाने का सतत प्रयत्न—किया। जहर पिया, पत्थर खाये, ताने सुने, जाने क्या-क्या—सहना पड़ा परन्तु उन्होंने धर्म के सच्चे स्वरूप की की पहचान—करायी, स्वराज्य प्राप्ति के लिए प्रबल नाद किया। मानव-मानव के प्रति सहिष्णुता, प्यार स्नेह के सम्बन्ध का सन्देश घर-घर पहुंचाया। आर्य समाज की स्थापना करके आने वाली पीढ़ी को वैदिक धर्म की रक्षा का दायित्व सौंपा।

देश से अज्ञानता का तिमिर मिटने लगा, जातीय भेदभाव मिटा, नारी का सम्मान बढ़ा धर्म के स्वरूप को पहचान कर उसके राही बढ़ने लगे। देश स्वतन्त्र हुआ। आशा थी—उसी राह पर चलते हुए देश सुखी और सम्पन्न बनेगा। मानव—मानव से प्यार का व्यवहार कर परमात्मा की सम्पूर्ण सृष्टि में सुख शांति प्रसार का सन्देश पहुंचायेगा। परन्तु स्वाधीनता के—बाद शासक राष्ट्रोत्थान के लिए पश्चिम की ओर प्रभावित हुये। धर्म का सांस्कृतिक ह्रास होने लगा—हममें आलस्य आने लगा, प्रमाद घर करने लगा, हम महर्षि के शिष्य तो अपने को कहते हैं आर्य समाज के सभासद भी संख्या की दृष्टि से बहुत हैं परन्तु वह चिन्तन वह प्रबल धर्म की रक्षा की भावना, वह वेद का सन्देश घर-धर पहुंचाने की लालसा हमारी लुप्त हो रही है हम भी संस्थाओं में पदों से चिपके रहना चाहते हैं। उन्हें पाने के लिए सही गलत भी करने में हमारे कदम बढ़ जाते हैं। हमारी यह वृत्ति निश्चय ही हमारे—देश के लिए, सम्पूर्ण मानव जाति के लिए अत्यन्त घातक है।

महर्षि दयानन्द ने हम पर जो दायित्व छोड़ा है उसका निर्वाह करना हमारा धर्म है। यदि हम अपने दायित्व का पालन नहीं करेंगे तो हम निन्दा के ही पात्र होंगे। देश की वर्तमान दुरवस्था का निदान सोचना, प्रत्येक आर्य का धर्म है। आज आवश्यकता है कि हम प्रातः सायं जब सन्ध्या करने बैठते हैं तब नित्य अपने कर्तव्यो का गम्भीरता से चिन्तन करें। अपने अन्दर झांक कर देखें कि हम स्वय महर्षि—के मन्तव्यो को कितना कुछ अपने जीवन में अपना सके हैं, जो अपनाया है उसे कितना संजो रहे हैं। जो अवशिष्ट हैं उन्हें अपनाने—के लिए क्या यत्न कररहे हैं। निश्चय ही इसप्रकार हमारा अनुशीलन हमें हमारे पथ का स्पष्ट निदर्शन करेगा। हमें अपने अन्दर झांक कर देखना होगा कि कहीं पद लोलुपता, संकुचित पार्टी बन्दी की भावना तो हममे नहीं बढ़ रही कहीं हम अपने कर्तव्यों के प्रति निराशा, हताशा तो अनुभव नहीं कर रहे। कहीं हम अपने को ही सब पर लादने की भावना से तो ग्रस्त नहीं होरहे। यदि कहीं हमारे अन्तर्मन में ऐसे कलुष—पनप रहे हैं तो हमें उन पर दृढ़ता से विजय पाने के—लिए संकल्पित होना होगा।

देश को वर्तमान दुरवस्था से उबार कर देश में अमन, चैन सुख शांति स्थापित करने के लिए ये धर्म को बिल्कुल ही न समझने वाले राजनीतिक नेता कभी भी सक्षम नहीं हो सकते। धार्मिक नेता का कलेवर ओढ़कर विभिन्न-मतमतान्तरों की कुण्ठा से ग्रस्त—गोवर्धन पीठाधीश्वर—शंकराचार्य निरंजन देव तीर्थ जैसे लोग—जिन्होंने सती प्रथा जिसके द्वारा नारी को बलात् पति की चिता पर जलने को विवश किया जाता है—जिसे आत्म हत्या नहीं हत्या ही कहा जायेगा—वेद सम्मत सिद्ध करने का ढोंग रचते हैं। जब कि वेद में आत्म हत्या, हत्या को

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्तर प्रदेश का

वार्षिक बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन का कार्यक्रम

सभा का बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन — १४ व १५ नवम्बर १९८७

अन्तरंग सभा की बैठक — १४ नवम्बर १९८७ (प्रातः १० बजे)

बृहदधिवेशन — १४ नवम्बर १९८७ (मध्यान्होत्तर ३ बजे)

निर्वाचन — १५ नवम्बर १९८७ (प्रातः ११ बजे)

स्थान—डी० ए० वी० कालेज, मोतीनगर, लखनऊ

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दिनांक २ अगस्त १९८७ को सभा भवन लखनऊ में सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में हुई और उसमें बृहदधिवेशन एवं वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ।

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

चिन्मयता

[आचार्य मुन्शीराम शर्मा, कानपुर]

✶

सत्ता के तीन भेद हैं—भौतिकी सत्ता, चिन्मयी सत्ता और आनन्द-मयी सत्ता। सत्ता स्वयं सत् का भाव है। सत का अर्थ सत्य, सद्भाव और सत्कर्म तीन प्रकार का है। सत्कर्म में यज्ञ, तप और दान आते हैं। इन तीनों की सिद्धि के लिये जो कर्म किया जाता है, वह भी सत है। कर्म के साथ श्रद्धा संयुक्त रहे, तभी वह सत कहा जायेगा। श्रद्धा से विरहित कर्म असत् माना जाता है।

सत्ता के जो तीन भेद ऊपर लिखे गये हैं, वे हम सबके शरीरों में संलग्न हैं। त्वचा-मांस-रक्त-हड्डी से बना शरीर भौतिक सत्ता वाला है। इसके भीतर मनोमय और विज्ञानमय दोनों शरीर चिन्मय हैं। प्राण भौतिक शरीर को चिन्मय शरीर से जोड़ने वाला है। प्राण के निकलते ही भौतिक शरीर छूट जाता है। चिन्मय शरीर को सूक्ष्म शरीर भी कहते हैं। विज्ञानमय शरीर जब आनन्दमय कोष से युक्त होता है, तब वह कारण शरीर कहलाता है। आत्मा इन तीनों से ऊपर है। उसे ये तीन शरीर परमात्मा की ओर से दिये जाते हैं जिनसे वह कर्म करता है, भोग भोगता है और अपवर्ग या मोक्ष की साधना करता है।

अपवर्ग का अर्थ है वर्ग से हटना। तीनों शरीर वर्ग के अन्तर्गत हैं। वर्ग का अर्थ है समूह। सामूहिकता तीनों शरीरों में है, पर एक समान नहीं। भौतिक शरीर में ७२ हजार नाड़ियां ही उसकी सामूहिकता के आधिक्य को अभिव्यक्त कर रही हैं। चिन्मय शरीर में वितर्क और विचारों का बाहुल्य है। आनन्दमय कोष में आनन्द की अनेकरूपता है। तीनों अहं या अस्मिता से जुड़े हैं। मैं सानन्द हूं, मैं विचार कर रहा हूं, मैं भोजन करता—चलता फिरता हूं—सर्वत्र अहं लगा है। संप्रज्ञात में अहं की ही प्रधानता है।

कोष में तो तीनों शरीर साथ चलते हैं। अपवर्ग में भौतिक शरीर की सामूहिकता नष्ट हो जाती है, परन्तु अहं बना रहता है। आनन्द भी भोग है परन्तु वह सूक्ष्म है। आनन्द कई प्रकार का हो सकता है। स्वर्ग जिसे आनन्द धाम कहा जाता है, कई रूप रखता है। नाक का आनन्द स्वर्ग के आनन्द से पृथक है एक में सत्कर्म का उत्कर्ष या परिणाम है तो दूसरे में ज्ञान ज्योति का। सत्कर्म और ज्ञान-ज्योति के भी स्तर हैं। इन्हीं स्तरों के आधार पर देव कोटियां भिन्न-भिन्न हैं। नाना के स्तर हैं, पर उनसे ऊपर महः से सत्य तक चार स्तर और भी ऊपर के हैं। नैमित्तिक प्रलय में भूः, भुवः और स्वः की प्रलय आती है, ऊपर के चार लोकों की नहीं। आत्यन्तिक प्रलय में ही वे अपनी सत्ता खो पाते हैं।

तो चिन्मयता मनोमय और विज्ञानमय कोष से सम्बद्ध है और आनन्दमय कोष तक पहुंचने के लिये आवश्यक है। जैसे भौतिक शरीर को स्वस्थ, निर्मल और विकसित किया जाता है, वैसे ही चिन्मय विकास को भी। साधन दोनों के लिए पृथक-पृथक हैं। शरीर समुचित भोजन, प्राणायामादि द्वारा, तो चिन्मयता वितर्क और विचार के संशोधन द्वारा। मन में शिव संकल्प उठने चाहिये। आनोभद्रा:—क्रतवो-यन्तु—भद्रक्रतु या शुभ संकल्प मन को पवित्र करते हैं। बुद्धि सविता के वरेण्य भर्ग के ध्यान और धारणा से निष्पाप बनती है। सविता का भर्ग या तेज ऐसा प्रकाश है जो समग्र पापीयान् तमतोम को ध्वस्त करता है। सविता देव आदित्य भी कहलाता है। द्वादशादित्य या अदिति के बारह पुत्र ऐसी प्रकाशमयी दिव्य शक्तियां हैं जिनका ध्यान और आह्वान, जिनका सख्य और देन अपरिमित शक्ति रखते हैं। विश्वेदेव, सर्वदेव जिसके साथ हो गये, जिसके पास आ गये, वह विशुद्ध धी-सम्पन्न ज्योतिर्मय मस्तिष्क से क्या नहीं कर सकता? उसकी अतुल शक्ति पाप-राशि को भस्मकर पुण्यवान दीर्घायु प्रदान करती है।

चिन्मयता चित्त के प्रसादन से प्रफुल्लित और अध्यात्म—प्रसाद से आनन्द का अनुभव करती है। चित्त का प्रसादन बाह्य व्यवहार और शुद्ध विचार—वितर्क पर अवलम्बित है। सुखी पुरुषों से मैत्री, दुःखी व्यक्तियों पर करुणा, पुण्यवानों को देखकर मुदित होना और पापियों की उपेक्षा करने से चित्त प्रसन्न रहता है, उस पर कालिख नहीं लग पाता। इस व्यवहार में सामाजिकता के प्रसंग के साथ वितर्क और विचार दोनों लगे रहते हैं। जब मनुष्य निर्विचार होने लगता है, विचार को, बाह्योन्मुखता से हटाकर, अन्तर्मुखी होने लगता है, तब उसे अध्यात्म प्रसाद प्राप्त होता है। यह बहुत ऊंची स्थिति है जिसमें ऋतम्भरा प्रज्ञा का उदय होने लगता है।

ऋतम्भरा प्रज्ञा, श्रुत और अनुमान पर आधारित प्रज्ञा से पृथक है। श्रुत और अनुमान का सम्बन्ध बाह्य जगत से है। ऋत सबके भीतर समाया हुआ वह तत्त्व है जो निखिल जगत पर शासन करता है और जिसके कारण सूर्य—चन्द्र आदि सभी ग्रह—उपग्रह, अनन्त सूर्य और यह अमित ब्रह्माण्ड अपनी-अपनी परिधि में चलते हुए सत्तावान बने हुए हैं। इस ऋत को अपने अन्दर भरने वाली प्रज्ञा विशुद्ध आध्यात्मिक है, पर उसके भी अपने संस्कार हैं। ऋतम्भरा प्रज्ञा तक प्राकृत बीज विद्यमान रहता है। वह सूक्ष्मतर है पर है तो बीज ही। निर्बीजता उसके और सबके निरोध के बाद की उपलब्धि है और अन्तिम है। चिन्मयता इसी उपलब्धि में विश्राम पाती है। यही उसकी अन्तिम कक्षा है। इसी की उत्तीर्णता के लिये हम सब शरीर धारण किये हुये हैं। शरीर रूपी साधना इस साध्य तक पहुंचा दें, यही इस जीवन का एकमात्र ध्येय है।

★

महर्षि दयानन्द दिवस

आर्यसमाज मेस्टनरोड कानपुर ने महर्षि दयानन्द सरस्वती का १०४ वां निर्वाण दिवस २२ अक्टूबर ८७ को डा० मुंशीराम जी शर्मा 'सोम' की अध्यक्षता में मनाया गया।

—डा० विजयपाल शास्त्री मन्त्री

—आर्यसमाज लौरिया प० चम्पारण बिहार द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह दिनांक ५–१०–८७ से १०–१०–८७ तक बहुत धूमधाम से मनाया गया।

—श्री धर्मवीर विद्यालंकार, पीलीभीत ने १८–१०–८७ को दयानन्द मठ, दीनानगर पंजाब में, पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा ली है।

—महिला आर्यसमाज नाथूराम वार्ड कासगंज द्वारा श्री ला० राम प्रकाश जी अग्रवाल के सौजन्य से दिनांक २४–९–८७ से १–१०–८७ तक सूत की मण्डी में यजुर्वेद पारायण यज्ञ बड़े समारोहपूर्वक किया गया। जिसके ब्रह्मा स्वा० वेदानन्द जी मण्डी गुरुकुल एटा थे।

कुछ योरोपियन संस्कृतज्ञ

[डा० वसन्तकुमार शास्त्री, अमेठी (उ० प्र०)]

पाश्चात्य विद्वानों ने पुरातत्व, भाषाविज्ञान आदि की गवेषणा में संस्कृत को गौरवपूर्ण स्थान दिया है। इस क्षेत्र में अज्ञात या अल्पज्ञात संकीर्ण पथ को उन्होंने प्रशस्त किया। इस कार्य में उनके श्रम को संस्कृत भाषा के अध्ययन में आई उनकी कठिनाइयों को देखते हुए सम्यक् समझा जा सकता है। डा० कीलहार्न पूरे योरोप में वैयाकरण के रूप में प्रसिद्ध थे। पातञ्जल महाभाष्य का उनके द्वारा सम्पादित संस्करण बहुत ही महत्वपूर्ण आज भी माना जाता है। डाक्टर बूलर अपने मित्रों को संस्कृत में पत्र लिखा करते थे। उनका एक पत्र महामहोपाध्याय स्वर्गीय पं० दुर्गाप्रसाद जी द्वारा सम्पादित 'काव्यरत्न' के द्वितीय संस्करण में छपा है। डाक्टर पीटरसन को उनके मित्र 'पीतरसन' (सरस्वती को पी जाने वाला) कहते थे। उन्होंने और महामहोपाध्याय दुर्गाप्रसाद जी ने मिलकर जो 'सुभाषितावलि' छपवाया था उसमें दो श्लोकों में डाक्टर साहब ने अपने गुरु बोरवास को यह ग्रन्थ समर्पित किया है। लाहौर ओरियण्टल कालेज के भूतपूर्व प्रिन्सिपल डा० स्टेन अपने नाम का संस्कृतीकरण करते हुए 'डाक्टर स्तेन' लिखते थे।

डाक्टर मैक्समूलर ने संस्कृत पढ़ने में बड़ा परिश्रम किया था। उन्होंने मोम का कागज अक्षरों के ऊपर रखकर कलम फेरते फेरते सम्पूर्ण सायण भाष्य की नकल की थी। उन्होंने जर्मनी को 'शर्मण्य' और आक्सफोर्ड को 'उक्षातरण' बनाया। उनके भक्त भारतवासियों ने उन्हें 'भट्ट' की उपाधि दी और उनका शुद्ध नाम 'मोक्षमूलर भट्ट' बन गया। स्वामी दयानन्द ने सम्भवतः सर्वप्रथम उनका सह नामकरण किया। 'सत्यार्थ प्रकाश' के एकादश समुल्लास में उन्होंने प्रो० मैक्समूलर को 'मोक्षमूलर' लिखा है। प्रो० मैक्समूलर द्वारा सम्पादित ऋग्वेद के अन्त में एक श्लोक में उपर्युक्त संस्कृत नामों की बहार दर्शनीय है—शार्मण्यदेशजातेन उक्षतरनिवासिना। मोक्षमूलर-भट्टेन पुस्तकमिदं शोधितम्। जर्मनी के प्रोफेसर वेबर भी संस्कृत के बड़े पण्डित और गवेषक माने गये। डा० भाण्डारकर ने उनको 'याज्ञवल्क्य' की उपाधि दी थी। प्रो० वेबर ने यजुर्वेद संहिता प्रकाशित की। उसमें वे लिखते हैं—योग्वेन मुद्रिता सेयं वेबरेण च शोधिता। वाजसनेयसंहिता वेददीपेनसंयुक्ता॥ ग्रन्थ के आदि में लिखा है—"शुक्लयजुर्वेदे वाजसनेयिसंहिता—माध्यन्दिनीयानां च काण्वीयानां च शाखेऽनुसृत्य श्रीमन्महीधरकृत वेददीपाख्यभाष्यसहिता अल्वेर्तेन वेबरेण शोधिता प्रुष्यनाम्नि जनपदेबेर्लीनाख्यां / राजधान्यां मुद्रिता संवत्सरे १८५२॥'

कील युनीवर्सिटी के वेदान्ताध्यापक डाक्टर डेवसन (देवसेन) वेदान्त और संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। उन्होंने बादरायण (वेदान्त) सूत्रों का जर्मन भाषा में अनुवाद किया। वे भारतवर्ष में भी आये थे। उन्होंने राथ और बोथलिंग (बोधलिङ्क) नामक पण्डितों की प्रशंसा में दो श्लोक अपनी 'एलीमेंट्स आफ मैटाफिजिक्स' में लिखा है। राथ बोथलिंग ने जर्मन भाषा में संस्कृत का बड़ा भारी प्रकाण्ड कोश बनाया जिसका नाम 'वार्टेबुख' है। मुक्तकण्ठ होकर कहना ही होगा कि संस्कृत का इतना बड़ा कोश और इतना अच्छा कोश संसार में नहीं है। डेवसन (देवसेन) के श्लोक ये हैं—

येन संस्कृतभाषाया ज्ञानं सुपावनं कृतम्,
अद्वितीयमहापारख्यं यन्त्रे ग्रन्थमुत्तमम्।
सकलं जीवितं याभ्यां महाविद्याप्रकाशके,
मान्यर्थमे समावृत्त ताभ्यामस्तु नमो नमः॥

ये श्लोक सन् १८७७ ई० में बनाये गये थे।

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश

कक्षा ५ के विद्यार्थियों के लिए धर्म-परीक्षा

सभी आर्यविद्यालयों एवं दयानन्द बाल मन्दिरों की कक्षा ५ के विद्यार्थियों के लिये एक प्रश्न पत्र की धर्म परीक्षा १९८८ से प्रारम्भ की जावेगी। सभी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों से अनुरोध है कि वे अपने विद्यार्थियों को इस परीक्षा में अवश्य प्रविष्ट कराने की कृपा करें। उत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये जावेंगे। परीक्षा विशेषतया आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित धर्म शिक्षा की पुस्तक भाग ५ पर आधारित होगी। सामान्यतया उसमें प्रार्थना व सन्ध्या के मन्त्र यम-नियम, महर्षि दयानन्द एवं गुरुवर विरजानन्द की जीवनी, आर्य समाज के नियम एवं प्रमुख कार्य, प्रमुख वैदिक ग्रन्थ आदि होंगे। परीक्षा शुल्क दो रुपये मात्र होगा। फार्मों के लिए विद्यार्य सभा कार्यालय को लिखा जावे। सभा से सम्बद्ध विद्यालयों के विद्यार्थी भी इस परीक्षा में बैठ सकते हैं।

परीक्षा मार्च १९८८ में होगी। सभी आर्यसमाजों से इस कार्य में हार्दिक सहयोग अपेक्षित है। —माधवसिंह मन्त्री

५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

जिहादे इस्लामी की धमकी से कोई डर नहीं

श्री दौलतराम चड्ढा प्रधान महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा ने देवलाली कैम्प नासिक से सूचित किया है कि उन्हें अराष्ट्रीय तत्वों द्वारा विशेष तौर से जिहादे इस्लामी नाम से धमकी भरे पत्र मिल रहे हैं कि वे अपने आर्यसमाज के प्रचार को बन्द करें वर्ना उन्हें व आर्यसमाज के अन्य नेताओं को मार दिया जायेगा। परन्तु उन्होंने लिखा है कि वे उन पत्रों से डरने वाले नहीं महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार में आजन्म लगे रहेंगे।

आर्यसमाज नगर गोण्डा का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नगर गोण्डा का वार्षिकोत्सव दिनांक २१ से २४-११-८७ तक बड़े समारोह के साथ मनाया जायेगा जिसमें मूर्धन्य सन्यासी एवं उच्चकोटि के विद्वान उपदेशक, प्रचारक पधार रहे हैं।

बलराम गोविन्द अधीक्षक
विधिक एवं भूसम्पत्ति विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश, लखनऊ

आर्य समाज सीसामऊ कानपुर द्वारा सभामन्त्री जी को थैली भेंट

आर्यसमाज सीसामऊ एवं स्त्री समाज सीसामऊ कानपुर का वार्षिकोत्सव दिनांक ३० अक्टूबर से १ नवम्बर तक समाज के भव्य सभागार में ससमारोह सम्पन्न हुआ जिसमें आचार्य प्रियव्रत जी हरिद्वार, शास्त्रार्थ महारथी पं० शान्तिप्रकाश जी जयपुर आचार्य देवव्रत तपस्वी लखनऊ के नित्य वेदोपदेश एवं श्री ब्रह्मानन्द जी हरदोई, श्री जलेश्वर मुनि कानपुर श्री पन्नालाल जी पीयूष के भजनोपदेशों से भारी संख्या में उपस्थित श्रोताओं ने लाभार्जन किया।

१ नवम्बर को आर्य विद्वानों का अभिनन्दन समारोह श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की अध्यक्षता में होना था परन्तु उनकी कार मार्ग में खराब हो जाने के कारण वे विलम्ब से पहुंचे अतः श्री ओ३म् प्रकाश आर्य मुख्य अभियन्ता कानपुर विकास प्राधिकरण की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें आचार्य प्रियव्रत जी, आचार्य मुंशीराम शर्मा 'सोम' शास्त्रार्थ महारथी पं० शान्तिप्रकाश जी एवं माता यशोदादेवी का अभिनन्दन किया गया। आर्यसमाज सीसामऊ की ओर से समाज प्रधान श्री लक्ष्मणकुमार शास्त्री ने चारों ही विद्वानों को शाल उढ़ाये एवं महिला समाज की प्रधाना श्रीमती शशिकान्ता शास्त्री ने समाज की ओर से चारों महानुभावों को ११०१/ की राशि (प्रत्येक को) ससम्मान प्रदान की। श्री देवीदास आर्य सहित कानपुर की सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों ने माल्यार्पण से विद्वानों का अभिनन्दन किया।

सभा मन्त्री जी के विलम्ब से सभी चिन्तातुर थे कि मुस्कराते हुये मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी श्री विश्वम्भरदयालु गुप्त सहित सभा कक्ष में पहुंचे और कार के लखनऊ के निकट ही खराब हो जाने से विलम्ब से पहुंचने की क्षमायाचना की। उनके पहुंचने के बाद आर्यसमाज के प्रधान श्री लक्ष्मणकुमार शास्त्री ने सभा मन्त्री जी को ग्यारह सौ एक रुपये की थैली आर्य रक्षा कोष के लिए भेंट की।

सभा मन्त्री जी कानपुर से इटावा के पूर्वायोजित कार्यक्रम में भाग लेने के लिये ठीक २-३० बजे श्री विश्वम्भरदयालु गुप्त सहित कार से इटावा के लिये रवाना हो गये।

इसी दिन मध्यान्होत्तर २-३० बजे से म हुला सम्मेलन का विशेष आयोजन श्रीमती शशिकान्ता शास्त्री की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें सभी विदुषियों ने सती प्रथा के नाम पर मृतपति के साथ पत्नी के जल कर मरने को वेद, धर्म, एवं मानवता विरुद्ध कहा और इसका समर्थन करने वालों की तीव्र भर्त्सना करते हुए महिलाओं से जागृत होकर सती प्रथा का समर्थन करने वालों का सामाजिक बहिष्कार करने की मांग की।

आर्यसमाज जमानियां द्वारा बाढ़पीड़ितों की सहायता

आर्यसमाज जमानियां द्वारा विभिन्न ग्रामों में पूड़ी और सब्जी के १५० पैकेट ओवर चक ग्राम में, मुगलसराय के आर्य समाज से प्राप्त ७०० पैकेट झलियां ग्राम से आकर सड़क पर डेरा डाले बाढ़ पीड़ितों भूखों को, दिलदारनगर बाजार में, दिलदारनगर बाढ़ कन्ट्रोल रूम के, पास, एस० के० बी० एम इण्टर कालेज, में राजकीय बालिका इण्टर कालेज दिलदारनगर में एस०डी० एम० मुहम्मदाबाद, थानेदार दिलदारनगर के सराहनीय सहयोग से वितरित किये गये।

उत्तरप्रदेश की समस्त आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों, समस्त समाजों के पदाधिकारियो तथा समस्त सम्मानित प्रतिनिधियों की सेवा में आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा निष्कासित कुछ व्यक्तियों द्वारा प्रदेश के कुछ स्थानों पर पत्र लिखकर यह भ्रामक प्रचार किया जा रहा है कि सभा का वार्षिक बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन दिनांक १४, १५ नवम्बर १९८७ को डी० ए० वी० कालेज लखनऊ में सम्पन्न नहीं होगा साथ ही साथ सभा के भूतपूर्व मुख्य लेखक श्री कृष्णगोपाल शर्मा, जिनकी सेवाएं सभा द्वारा समाप्त की जा चुकी हैं, वह भी आर्यजनों को भ्रमित करने के लिए प्रचार कार्य में संलग्न हैं।

अत मेरा सभी आर्य जनों / प्रतिनिधियो से अनुरोध है कि वह इस प्रकार के कुप्रचार से भ्रमित न हों। सभा का बृहदधिवेशन पूर्व घोषित तिथियों में अर्थात् १४ व १५ नवम्बर १९८७ को ही डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

१४ नवम्बर १९८७ दिन शनिवार को प्रातः १० बजे से डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ में होगी। समस्त अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य गण नियत तिथि एवं समय पर पधारने की कृपा करें।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

क्षेत्रीय प्रचार का आयोजन

४-१०-८७ को आर्यसमाज गोला में 'क्षेत्रीय प्रचार गोष्ठी' का आयोजन किया गया, जिसमें, दिनांक १-११-८७ से १२-१२-८७ तक गोला मुख्यालय एव क्षेत्रीय प्रचार ब्रह्मानन्द आर्य भजनोपदेशक द्वारा सम्पन्न किया जायेगा।

अन्तर्जातीय विवाह

कुमारी साधना रानी (सुपुत्री श्री जगदीश प्रसाद प्रधान आर्यसमाज उसंड, सहारनपुर) का शुभ विवाह श्री करणसिंह [सुपुत्र श्री पक्षदेव वानप्रस्थी, सिकन्दरपुर, सहारनपुर के साथ दिनांक ४-१०-८७ को सम्पन्न हुआ।

दान की अपील

आर्यसमाज पाठन (उन्नाव) के भवन निर्माण हेतु भूमि अप्रैल १९४४ में ली गई थी किन्तु धनाभाव से अब तक भवन निर्माण नहीं हो सका धर्म प्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि, मुक्तहस्त हो धन से सहायता करें। —डा० श्यामलाल गुप्त मन्त्री

डा० प्रह्लाद कुमार स्मारक समिति

भारतीय संस्कृति का विस्तार बहुत अधिक है। इण्डोनेशिया तथा अन्य देशों में यहां तक कि मुस्लिम देशों में भी रामायण तथा महाभारत से प्रभावित हैं। हमें वैदिक संस्कृति के प्रचार पर विशेष बल देना चाहिये। ये शब्द कार्यकारी पार्षद् (शिक्षा) श्री कुलानन्द भारतीय जी के हैं। श्री भारतीय जी डा० प्रह्लाद कुमार समिति द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित वैदिक व्याख्यान माला में मुख्य अतिथि रूप से अपने उद्गार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने स्नातकोत्तर वेद-विषय के छात्रों को छात्रवृत्तियां भी प्रदान कीं।

व्याख्यान गुरुकुल कांगड़ी के भूतपूर्व कुलाधिपति डा० सत्यकाम वर्मा का विश्व संस्कृतियों का उद्गम : वैदिक संस्कृति विषय पर था। डा० सत्यकाम ने अनेक देशों की यात्रा के बाद प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर यह बताया कि संसार में सर्वत्र किसी न किसी रूप में वैदिक संस्कृति विद्यमान है।

समारोह की अध्यक्षता प्रो० डा० ब्रजमोहन चतुर्वेदी, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने की।

डा० चतुर्वेदी ने वैदिक व्याख्यान माला के द्वितीय स्तबक "वेद-व्याख्या और वैदिक विचार धारा" पुस्तक का विमोचन भी किया।

डा० प्रशांत वेदालङ्कार ने बताया कि प्रख्यात वैदिक विद्वान डा० प्रह्लाद कुमार की ३२ वर्ष की अल्पआयु में ही १९७७ में मृत्यु हो गयी थी। प्रतिवर्ष उनके जन्म दिवस पर एक वैदिक विद्वान का व्याख्यान कराकर उनका स्मृति पर्व मनाया जाता है। यह डा० प्रह्लाद कुमार की ४२ वीं जयन्ती थी।

डी० ए० वी० शताब्दि समापन समारोह उपराष्ट्रपति मुख्य अतिथि होंगे

डी० ए० वी० शताब्दि समापन समारोह, रविवार १५ नवम्बर को प्रातः १० बजे से दोपहर १ बजे तक तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली में मनाया जा रहा है। भारत के उप राष्ट्रपति, माननीय डा० शङ्कर दयाल जी शर्मा उसके मुख्य अतिथि होंगे।

—दरबारी लाल संगठन सचिव

टंकारा सूखा राहत केन्द्र

सौराष्ट्र मे गत तीन वर्षों से निरन्तर वर्षा न होने से वहां स्थिति अत्यन्त गम्भीर है। इसलिए महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा के सहयोग से टंकारा में एक सहायता केन्द्र खोल दिया गया है। अपनी राहत सामग्री व सहायता राशि, "आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—११०००१" के पते पर अथवा "महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा (राजकोट), गुजरात–३६३६५०" के पते पर भेजें।

रामनाथ सहगल मन्त्री

वेदायन गृहप्रवेश यज्ञ

पिथौरागढ़। आर्य समाज के तत्वावधान में ७ अक्तूबर १९८७ को कामकी विष्ट के नवनिर्मित भवन का "वेदायन" नामकरण के साथ गृहप्रवेश यज्ञ स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी के संयोजन में पं० तुलाराम अध्यापक के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज बदायूं में प्रचार कार्य

आर्य समाज- बदायूं में वेदों की उपयोगिता पर समय-समय पर सर्वश्री आचार्य राम प्रसाद वेदालङ्कार उपकुलपति, गु० कां० विश्वविद्यालय हरिद्वार, पं० नरदेव शास्त्री, (भरतपुर) आचार्य सुधीन्द्रनाथ आचार्य ब्रजनन्दन मिश्र, श्रीमती सावित्री शर्मा, श्रीमती प्रकाशवती शर्मा, श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर (एम० एस० सी०) उपप्रधाना आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० लखनऊ, पं० धर्मपाल विद्यालङ्कार पूर्व मन्त्री, आ० प्र० नि० सभा उ० प्र० के प्रवचन-उपदेश आयोजित किए गए।

पानीपत में डी ए. वी पब्लिक स्कूल के भवन का उद्घाटन

१ अक्तूबर, १९८७ को पानीपत थर्मल पावर प्लान्ट हरियाणा के राज्य के विद्युत एवं सिंचाई मन्त्री माननीय वीरेन्द्र सिंह जी ने अपने कर-कमलों द्वारा डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल के भवन का उद्घाटन किया और डी० ए० वी० प्रबन्धकर्तृ समिति द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

निर्वाचन

आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई	आर्य समाज कसवाड़ी बस्ती
प्रधान श्री जगत प्रसाद गौतम	प्रधान श्री जयवश सिंह
मन्त्री श्री करसन दास राणा	मन्त्री श्री रामपाल सिंह
कोषा० श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय	कोषा० श्री राजेश्वरी प्रसाद उपाध्याय
आर्य समाज स्वरूप नगर कानपुर	आर्य समाज मसेना मिर्जापुर
प्रधान श्री रामछुमाया बजाज	प्रधान श्री महावीर प्रसाद आर्य
मन्त्री श्री सतीश कुमार दत्त	मन्त्री श्री राजकरन आर्य
कोषा० श्री ओ३मप्रकाश भार्गव	कोषा० श्री वैद्य ओम पालसिंह

आर्य अपना कर्तव्य निभायें

(शेष पृष्ठ २ से आगे)

महापाप कहा गया है। हत्यारे या आत्म हत्यारे घोर नरक के अधिकारी बनते है ऐसा वेद का सन्देश है। पंजाब में धर्म के नाम पर गुरुओं के नाम पर आतंक मचा हुआ है नर हत्यायें की जा रही हैं—ये तथा कथित धार्मिक नेता कभी भी धर्म के स्वरूप को पहचान नहीं करा-सकते। ये अमन चैन स्थापित करने मे बिल्कुल सहायक नहीं हो सकते।

यह पवित्र कार्य धर्म के सच्चे स्वरूप की पहचान कराके—सम्पूर्ण मानव जाति में भाई चारे की स्थापना कराने में केवल आर्य ही समर्थ हो सकता है। दयानन्द का समर्पित क्रिया ही यह कर सकता है। हम पर ऋषि का बहुत बड़ा ऋण है—उससे उऋण होने के लिये हमें जागृत, सचेत होकर अपने-अन्तर्मन को पूर्ण शुद्ध करके देश जाति धर्म—की रक्षा के लिए दृढ़व्रती बनना होगा।

हम आर्य हैं। हमारा धर्म सबकी उन्नति में अपनी उन्नति देखना है। हम अपने पवित्र चरित्र से सबको आकृष्ट करके सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने का दृढ़ संकल्प लें। अन्ध विश्वास गुरुडम, नाना पन्थों के अज्ञानता पूर्ण-क्रिया कलापों का निष्ठा से विरोध करें उनसे जन-जन को बचने का सन्देश दें। वेद ज्ञान को आत्म सात् करके हर मानव को उससे परिपूर्ण बनाने का दायित्व लें। इस प्रकार सच्चे धर्म का प्रसार करके भारत माता के-दुःख दर्द को मिटा कर सुख शांति अमन चैन का-विस्तार करने में सक्षम बनें।

—आचार्य वेदव्रत अवस्थी

हम महान भारत के निर्माण में भागीदार बनें

डा० शकुनचन्द्र आर्य लालगंज बैसवारा रायबरेली

इतिहास साक्षी है कि विश्व मे सभ्यता का उदय सर्वप्रथम भारत में हुआ। इसका प्रमाण वह पावन वेदो का ज्ञान है जिसे पृथ्वी के आदि में परमपिता परमेश्वर ने ऋषियों की अन्तरात्मा मे प्रकाशित कर मानव जाति को प्रदान किया था। इसी देश ने सर्वप्रथम शून्य तथा अकों का आविष्कार किया था। यहीं पर विश्व के प्राचीनतम महाकाव्य रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि द्वारा की गई थी। यहीं पर महर्षि वेदव्यास ने विश्व के महानतम महाकाव्य महाभारत की रचना की थी। यही पर ससार की सबसे प्राचीनतम स्वास्थ्य-विज्ञान आयुर्वेद का जन्म हुआ था। ससार की सबसे प्राचीन भाषा सस्कृत जिससे ससार की अनेक भाषाओ का जन्म हुआ है, इसी भूमि की उत्पत्ति है। गूढ़ ज्ञान के ग्रन्थ उपनिषद् इसी भूमि के उपज है। भारत वह भूमि है जहाँ के आदि पुरुष मनु ने सारे ससार मे सभ्यता का प्रकाश फैलाया था। यहा के अगस्त आदि ऋषियो, विद्वान ब्राह्मणो तथा बौद्ध भिक्षुओ ने हिन्द चीन, इन्डोनेशिया सखुरा, मलाया मध्य एशिया, मगोलिया तथा मेक्सिको आदि अनेक देशो मे जाकर वहा के अर्द्धसभ्य लोगों को सभ्य, सुसस्कृत तथा हैवान से इन्सान बनाया था। आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास मे लिखा है कि 'महाभारत युद्ध होने के पूर्व तक आर्यावर्त वासी भारत के चक्रवर्ती सम्राटो का शासन सम्पूर्ण पृथ्वी पर था।'

ज्ञान, विज्ञान एव प्रभुसत्ता मे ही नहीं अपितु सम्पन्नता मे भी ससार मे कोई प्रतियोगी नहीं था। विश्व के प्राचीन इतिहास मे इस बात के प्रमाण विद्यमान है कि कभी यहा के वैश्य [व्यापारी वर्ग] सभी सभ्य देशों मे जाकर अपना व्यापार करते थे। यहा के सूती वस्त्रो, लौह एवं काष्ठ | के सामानो, रासायनिक पदार्थों तथा आभूषणो को दूरस्थ देशों में ले जाकर भारी मात्रा मे धन कमाते थे तथा बदले मे असीम मात्रा मे सोना, चादी तथा बहुमूल्य रत्न लाकर भारत को माला माल कर देते थे। इसी से प्राचीन काल मे भारत सोने की चिड़िया के नाम से विख्यात था। यहा की सम्पन्नता की कहानियो को सुनकर मध्य एशिया तथा पश्चिमी एशिया के बर्बर लुटेरे शासको के मुखो मे पानी भर आता था। इस देश पर हूण, कुशान, शक, अफगान तथा मुगलो आदि के आक्रमण का यही कारण था। गुजरात के सोमनाथ मन्दिर से अतुल सम्पदा लूटकर महमूद गजनवी गजनी ले गया।

नैतिक क्षेत्र मे भी हम अभूतपूर्व थे। कहा जाता है कि जब यूनानी योद्धा सिकन्दर भारत विजय के लिए चला तो उसके गुरु ने उससे अपने लिए एक भारतीय गुरु लाने का आदेश दिया था। निस्सन्देह संसार के इतिहास में राम ऐसा त्यागी, माता पिता का भक्त, भ्रातृ-प्रेमी, प्रजारक्षक शासक, धर्मात्मा तथा मर्यादा पालक मिलना कठिन है। गीता ऐसे महान ग्रन्थ का उपदेशक, साथ ही साथ युद्ध, कूटनीति में प्रवीण विरोधाभास से युक्त योगिराज कृष्ण ऐसे महापुरुष का जीवन चरित्र दुर्लभ है।

परन्तु मध्ययुग में हमारी फूट तथा असावधानी के कारण जब विदेशी मुस्लिम आक्रमण कारियों तथा बाद मे अग्रेजो का इस देश पर शासन हो गया तो प्रत्येक क्षेत्र में हम अवनति की ओर अग्रसर हो गये। विदेशी शासको ने हमारे नैतिक मूल्यो, मान्यताओं, आदर्शों एवं प्रतीकों को नष्ट एवं विकृत करने का हर सम्भव प्रयास किया। अयोध्या की राम जन्म भूमि, मथुरा की कृष्ण जन्म भूमि, गुजरात का सोमनाथ मन्दिर, काशी का विश्वनाथ मन्दिर- नालन्दा का विश्व विख्यात विद्यालय तथा उसका विशाल पुस्तकालय तथा ऐसे अनेक सास्कृतिक केन्द्र नष्ट भ्रष्ट कर दिये गये। सुप्रसिद्ध भारतीय इतिहास कार प्रो० ओक के मतानुसार "आगरा का ताजमहल प्राचीन राजपूत महल है दिल्ली एव आगरे के किले राजपूतों के भवन थे। दिल्ली का कुतुबमीनार सम्राट समुद्रगुप्त द्वारा निर्मित वेधशाला है जिसका साक्षी पास मे खड़ा आश्चर्यजनक धातु का बना हुआ लौह स्तम्भ है।" क्या इस बात को पुष्टि नहीं करते हैं कि कोई भी राष्ट्र अपनी स्वतन्त्रता खोकर न अपने आदर्शों, न मान्यताओं, न महान विचारो, न अपने गौरवशाली इतिहास की रक्षा कर सकता हैं।

हम रानी लक्ष्मीबाई, मगल पाडे, सरदार भगतसिह, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकुल्ला खा, तात्याटोपे तथा आजाद हिन्द फौज के अनेक वीरों आदि के बलिदान, स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा दिखाये गये मार्ग, लोकमान्य तिलक लाला राजपत राय, विपिन चन्द्रपाल महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, तथा वीर सावरकर आदि की तपस्या तथा देशवासियो द्वारा चलाये गये स्वाधीनता आन्दोलन के कारण हम १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्र हो गए। परन्तु कहना अनुचित न होगा कि आजादी के ४० वर्ष व्यतीत हो जाने के बावजूद हमने वैसी प्रगति नहीं की जैसी कि होनी चाहिए। जहाँ कि द्वितीय विश्व महायुद्ध मे बरबाद एव ध्वस्त जापान एव जर्मनी आज विश्व के प्रथम श्रेणी के राष्ट्र बन चुके हैं, अभी भी हमारी गणना विकासशील राष्ट्रो मे की जाती है, हम अभी अग्रजी भाषा की गुलामी से मुक्त नहीं हुए हैं, हम खरबो रुपयो के विदेशियो के कर्जदार हैं, देश के सार्वजनिक जीवन मे अनैतिकता एव भ्रष्टाचार का प्रभाव बढ़ता जा रहा है विश्व के अनेक राष्ट्रो की कुदृष्टि हमारे ऊपर है जो कि हमारी स्वतन्त्रता को निगलने के लिए अवसर की प्रतीक्षा कर रहे है तथा चीन ने तो हमारे आक्साई चीन क्षेत्र पर बलपूर्वक अधिकार जमा रखा है।

निस्सन्देह उपरोक्त स्थितिया भारत को महान राष्ट्र बनने मे बाधक है परन्तु महान भारतके निर्माण के बिना न तो हमारी स्वतन्त्रता की रक्षा हो सकती है न हम अपने गौरवशाली इतिहास एव अस्तित्व की रक्षा कर सकते हैं और न साम्राज्यवाद से पीड़ित एव शोषित विश्व के अर्ध विकसित एव विकासशील राष्ट्रो को कुशल नेतृत्व ही प्रदान कर सकते हैं।

हमारा कर्तव्य

ऐसी स्थिति मे आवश्यकता है कि हम महान भारत के निर्माण की दिशा मे अपने कदम बढ़ाये। इस सम्बन्ध मे हमारी सरकार जो ठीक कर रही है, उसमे सहयोग दें, उसे रचनात्मक सुझाव दें, जो आवश्यकतानुसार नहीं कर रही, उसके लिये बाध्यकर तथा आवश्यकता पड़ने पर उसकी समालोचना कर उपरोक्त लक्ष्य की पूर्ति मे भागीदार बनें।

किसी देश की प्रगति एव उन्नति के लिए यह परम आवश्यक है कि देश आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी एव सम्पन्न हो। इसके लिए आवश्यक है कि देश का भारी पैमाने पर उद्योगीकरण हो ताकि वह भी जापान जर्मनी रूस तथा अमेरिका की भांति विश्व का अग्रणी धनवान राष्ट्र बन सके तथा कर्ज से मुक्त होकर पश्चिमी देशों के आर्थिक साम्राज्यवाद से मुक्त हो सके। इसके लिये हमे खेतों एव कारखानो मे उत्पादन बढ़ाकर, हड़तालो आदि से बचकर, बिजली, पानी तथा अन्य वस्तुओं की

(शेष पृष्ठ १० पर)

सफलताओं और सेवा के दो वर्ष

जी हाँ ! उत्तरप्रदेश मे विगत दो वर्ष विशेष रूप से कथ्य रहे। इस अवधि में निर्माण के लगभग सभी क्षेत्रों मे आशातीत सफलताए मिलीं। न केवल विभिन्न क्षेत्रो मे निर्धारित लक्ष्य प्राप्त कर लिए गये बल्कि अनेक विकास सूत्रों के अन्तर्गत सौ फीसदी से भी अधिक और कुछ के अन्तर्गत दो सौ फीसदी से भी अधिक उपलब्धियाँ प्राप्त हुई। इन सफलताओं के पीछे जन जन का सहयोग तो था ही, प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाँधी तथा मुख्य मन्त्री श्री वीरबहादुरसिंह का प्रेरणादायक नेतृत्व भी कम महत्वपूर्ण नहीं रहा।

कृषि क्षेत्र में अनाजो का उत्पादन वर्ष १९८५–८६ मे ३१३.९५ लाख मी० टन हुआ जो एक नया कीर्तिमान था। वर्ष १९८६–८७ मे यह और बढ़ा और ३१९.६७ लाख मी० टन हो गया।

असहायो और उपेक्षितो की भलाई के लिए चलाये गये कार्यक्रमो का परिणाम यह हुआ कि वर्ष १९८६–८७ के अन्त तक तीन लाख अस्सी हजार अनुसूचित जाति के परिवार गरीबी की रेखा से ऊपर आ गये। चालू वर्ष १९८७–८८ के अन्त तक लगभग तीन लाख छप्पन हजार और ऐसे परिवारों को स्पेशल कम्पोनेंट प्लान मे लाभान्वित होने की आशा है।

ऐसे बेसहारा एव विकलाग व्यक्तियो को जिन्हे अभी तक किसी भी सरकारी योजना मे कोई सहायता नहीं मिली है तथा जो गरीबी की रेखा से निचले स्तर पर हैं उन्हें पहली बार चालू वर्ष मे अनुदान देने के लिए ५ करोड़ रुपयो की व्यवस्था।

तृतीय और चतुर्थ श्रेणी पदो के लिए चयन समितियो मे अल्प सख्यकों का एक प्रतिनिधि। समाज के कमजोर वर्गों के लिए १९८६–८७ मे ३१३७ भवन निर्मित और ३५० भूखण्ड विकसित।

गरीबों की सहायता के लिए चलाये जा रहे बीस सूत्री कार्यक्रमो के कार्यान्वयन मे प्रदेश समूचे देश मे दो बार लगातार वर्ष १९८५–८६ और १९८६–८७ मे प्रथम स्थान पर रहा। सभी सूत्रो के अन्तर्गत शत प्रतिशत या उससे भी अधिक सफलता मिली।

समस्याग्रस्त गावो मे पीने का पानी सुलभ कराने का काम इतनी तत्परता से हुआ कि निर्धारित लक्ष्य की तुलना मे उपलब्धि २१७.५ प्रतिशत रही। सूखे का मुकाबला करने के लिए नवम्बर, ८७ के अन्त तक ६५ हजार नलकूप नि शुल्क बोरिंग का लक्ष्य।

सातवीं पचवर्षीय योजना के प्रथम दो वर्षों मे पंतीस हजार से भी अधिक लघु औद्योगिक इकाइयो की स्थापना हुई और चालू वर्ष के अन्त तक बीस हजार और नई इकाइयाँ स्थापित होने की आशा।

राष्ट्रीय रोजगार कार्यक्रम तथा ग्रामीण रोजगार कार्यक्रमों के अन्तर्गत भी शत प्रतिशत या अधिक सफलताएँ मिलीं।

खादी ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा ग्रामोद्योगो के विस्तार के लिए ९ करोड़ रुपयो का वित्त पोषण तथा १.५० करोड़ रुपयो का बैंको से ऋण।

हथकरघा उद्योग मे १५ लाख लोगों को रोजगार। वर्ष १९८६–८७ मे ६२५.४१ मिलियन मीटर हथकरघा वस्त्रों का उत्पादन।

शिल्पकार प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत प्रदेश मे ९७ औद्योगिक प्रशिक्षण सस्थान कार्यरत।

अब आम आदमी की आशाएं बलवती हुई है।
उसका विश्वास और सुदृढ़ हुआ है और
विकास कार्यों में दूने उत्साह के साथ भाग लेने को
उसे प्रेरणा मिली है।

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

कविता कलाप

देश को दयानन्द जैसे लाल चाहिए

—आर्य कवि रघुवीरशरण
शिवसेवक नगायनटोला,
बहजोई मुरादाबाद

देश दुर्दशा को आंखो से निहार ले।
गिरते हुओं को पकड़कर जो संभाल ले॥
जलती देशभक्ति की मशाल चाहिए।
देश को दयानन्द जैसे लाल चाहिए॥
स्त्री–पुरुषों को सिखा दें करना सन्ध्या यज्ञ।
योग क्रिया से बनावें सब स्थित प्रज्ञ॥
हिन्दी भाषा प्रचारक तत्काल चाहिए।
देश को दयानन्द जैसे लाल चाहिए॥
संस्कारों की भट्टियों मे तपते रहे।
जनहित करने हेतु शीत गर्मी जो सहे॥
पाखण्डों से बचाने को ढाल चाहिए।
देश को दयानन्द जैसे लाल चाहिए॥
अज्ञान, कुरीतियों का करके विरोध।
विश्व के कल्याण हेतु करते रहे शोध॥
एकता अखण्डता हित चाल चाहिए,
देश को दयानन्द जैसे लाल चाहिए॥
पाखण्डियों से करें जो दम को सतर्क।
दुख दम्भ, छल का करें बेड़ा शीघ्र गर्क।
अमृत धारा वाले बहुत ताल चाहिए।
देश को दयानन्द जैसे लाल चाहिए॥
भारत माता के कष्टों को दूर जो करें।
जनता मे बल ओज प्रेम भावना भरे॥
दुष्टो और पापियों के काल चाहिए।
देश को दयानन्द जैसे लाल चाहिए॥

प्रभु गुण कैसे गाऊं रे!

प्रभु गुण कैसे गाऊं रे, ईश गुण कैसे गाऊं रे।
मुझ मे तो सामर्थ्य नहीं है, ईश्वर गुण का गान करूं।
बहती है अमृतधारा जो उसका मैं भी पान करूं॥
औरों से जो सुना आज तक वही सुनाऊं रे॥१॥
सत्‌चित् और आनन्द स्वरूप वह घट घट अन्तर्यामी है।
निराकार सर्वशक्तिमान है, सारे जग का स्वामी है॥
सर्वान्तर्यामी है वह, बहुत दयालू रे॥२॥
ईश्वर देते न्याय हैं सबको, अजर अमर सर्वाधार हैं।
हैं अनादि अनुपम सर्वेश्वर, अभय और निर्विकार है॥
उस अनादि ईश्वर के गुण को कितना गाऊं रे॥३॥
सारे जग के निर्माता है, ईश्वर सृष्टिकर्ता है।
विश्व जीव को जीवन देते, सबके पालनकर्ता हैं॥
'सुशील' की है विनय, प्रभु की, भक्ति पाऊं रे॥४॥

—रामपाल आर्य 'सुशील' सुभाषनगर, उतरौला

बाल जगत

बच्चो! दुर्भिक्ष–अकाल में कहानी सुनो!!

[स्वा० दयानन्द विदेह, वेद संस्थान, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-२७]

एक गरीब ब्राह्मण के एक पुत्र और पुत्री थी। उन बच्चो के पिता का नाम था–चन्द्रस्वामी। गांव के लोगो को चन्द्रस्वामी अच्छी-अच्छी शिक्षाए दिया करता था। विशेषकर बच्चो को। बच्चो के माता-पिता अत्यन्त प्रसन्न होते थे। धीरे धीरे वह गरीब ब्राह्मण अब धनाढ्य बन गया। कुछ वर्षों के बाद उस ग्राम मे भयानक अकाल पड़ा। किसी तरह ग्रामवासियो ने एक वर्ष निकाला दूसरे वर्ष भी भयंकर सूखा पड़ा। सभी अन्न दो! अन्न दो! का आर्तनाद करने लगे। सारा गांव भूखे की अग्नि मे स्वाहा हो रहा था।

यह भयानक दृश्य देखकर चन्द्रस्वामी का हृदय द्रवित हो उठा। उसने अपनी पत्नी देवमती से कहा–'हमारे घर मे काफी अनाज है, तुम इन भूखों को अनाज क्यो नहीं देतीं?" देवमती ने कहा–'इसे तो वही जानता है, जिसे विपत्ति का सामना करना पड़ता है। भूख लगने पर बच्चे मां के पास दौड़कर आते हैं, पिता के पास नहीं। यदि इस प्रकार मैं अनाज लुटा दूं तो फिर बच्चे कहां जायेंगे? हमारे भी दो बच्चे हैं। यदि वे रोटी मांगेंगे तो कहां से दोगे? चन्द्रस्वामी समय की विषमता देखकर चुप हो गए। एक दिन दोपहर के समय चन्द्रा–महिपाल–ब्राह्मण के दोनों बच्चे आंगन मे खेल रहे थे। उसी समय एक मां अपने बच्चों सहित भीख मांगने गई। उसके बच्चो ने महिपाल से खाना मांगा। उसे देखकर चन्द्रा को बड़ा दुख हुआ। वह दौड़कर अपनी मां के पास गई। और बोली मां तू इन भूखे बच्चो को खाना दे दे। वे बेचारे भूख से रो रहे हैं मां ने कहा–कहाँ से दूं? यदि उनको दे दूंगी तो तुम दोनो क्या खाओगे?

चन्द्रा से इन बच्चो का तड़पना देखा नहीं जा रहा था। उसने बड़ी नम्रता से कहा–'मां! मेरी शाम की रोटी इन्हे दे दो मैं रोऊंगी नहीं और अपना हिस्सा भी नहीं मांगूगी।' इसी समय महिपाल ने भी कहा–'हां, मां, एक ही समय हम भोजन करेंगे। तू हमारे हिस्से का खाना उन्हे दे दे।'

ऐसे समझदार समय पर, त्याग करने वाले बालकों को अनन्त प्रणाम!! तेन त्यक्तेन भुंजीथा

शुद्धि समाचार

एक मुस्लिम युवक कलीकुल इस्लाह उर्फ भी डाक्टर बाबा को उनकी स्वेच्छा से वैदिक धर्म मे दीक्षित किया गया। शुद्धि नगर आर्य समाज लखनऊ में हुई। —प० चन्द्रभूषण शास्त्री

पुरी के शंकराचार्य, श्री निरंजनदेव तीर्थ की चुनौती स्वीकार

बड़हलगंज, गोरखपुर निवासी आचार्य पं० सत्यमित्र शास्त्री ने सती प्रथा को पुरी के शंकराचार्य द्वारा वेद सम्मत बताने वाले के विरुद्ध उनको चुनौती देते हुए कहा है कि वेदों में कहीं भी सती प्रथा सम्मत कोई मन्त्र अथवा उक्ति नहीं है। स्वामीजी जहाँ चाहें शास्त्रार्थ कर सकते हैं।

—सम्वाददाता

आर्य समाज लालबाग, लखनऊ का वार्षिक–उत्सव

दिनांक ९, १० तथा ११ नवम्बर को आर्य समाज, लालबाग, लखनऊ का वार्षिक उत्सव ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के सभा भवन के प्राङ्गण में ससमारोह मनाया जा रहा है जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य सन्यासी डा० स्वामी सत्य प्रकाश, म० आर्यभिक्षु जी तथा और उपदेशक प्रचारक पधार रहे हैं।

—ई० सत्यदेव सैनी, मन्त्री

चूड़ाकर्म संस्कार

आ० स० महगवाँ [हरदोई] के भू० पूर्व प्रधान श्री रामऔतार शर्मा की चि० सुपौत्री कुमारी वाणी एवं मीनाक्षी का मुण्डन संस्कार २५-१०-८७ को ससमारोह सम्पन्न हुआ। प्रधान जी ने २१) आ० स० को दान दिया।

केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ का चुनाव

आ० स० बाग़र नगर, मेरठ में केन्द्रीय आर्य समिति, मेरठ का वार्षिक चुनाव निम्नवत ४-१०-८७ को सम्पन्न हुआ।

प्रधान श्री मानसिंह जी वर्मा
मन्त्री श्री पं० इन्द्रराज जी
कोषा० श्री शांति प्रकाशजी मित्तल

वार्षिक चुनाव

जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, जनपद अलीगढ़ के वार्षिक वृहद आर्य सम्मेलन में सर्व सम्मति से निम्न अधिकारी निर्विरोध चुने गये।

प्रधान डा० रघुवीर शास्त्री डी० लिट्०
मन्त्री डा० विजयपालसिंह पी-एच०, डी०
कोषा० श्री महेशचन्द्र अग्रवाल

—कोई अनाथ-बालक या बालिका जो इन्जीनियरिंग या मेडिकल के चुनाव में आ गया हो परन्तु धनाभाव के कारण पढ़ाई करने में असमर्थ हो—आर्य समाज देहरादून ने ऐसे एक छात्र के लिए पूरी छात्रवृत्ति की व्यवस्था की है। स्थानीय आर्य समाज के प्रधान से प्रमाणित करा के प्रार्थना-पत्र भिजवायें।

—प्रधान आर्य समाज सभी मन्त्री देहरादून

हम महान भारत के निर्माण में भागीदार बनें

(शेष पृष्ठ ७ से आगे)

की बरबादी रोककर इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए अपने कर्तव्य का पालन करना तथा सहयोग देना चाहिये।

भारत को महान बनाने के लिए परम आवश्यक है कि भारत सांस्कृतिक एवं भाषाई दृष्टि से स्वावलम्बी राष्ट्र बने। जिस प्रकार इस समय देश में अंग्रेजी एवं अंग्रेजियत का प्रभाव बढ़ रहा है, यह दुःख एवं चिन्ता का विषय है। हमें चाहिये कि हम सरकार पर दबाव डालें कि वह अंग्रेजी को हटाकर देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी को उसका गौरव मय स्थान दें। अंग्रेजी का प्रयोग केवल विदेशी भाषा के रूप में करें, सारे देश की शिक्षा संस्थाओं में संस्कृत भाषा को अनिवार्य करें, देश के इतिहास में भारतीय मान्यताओं के अनुसार संशोधन कर तथा नवीनतम शोधों के अनुसार उसमें परिवर्तन कर विद्यालयों में पढ़ावें, शिक्षा संस्थाओं एवं सार्वजनिक जीवन मे स्वदेशी भावना प्रोत्साहित करें। हम अपने निजी जीवन में हिन्दी एवं संस्कृत भाषाओं को अपनायें, हम अपने बच्चों को हिन्दी एवं संस्कृत माध्यम वाले स्कूलो में भेजें तथा हम हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ें तथा महान भारत के निर्माण में भागीदार बनें।

इस समय हमारा देश नैतिक संकट से गुजर रहा है। जिन नैतिक आदर्शों के बल पर हम विदेशी मुसलमान एवं अंग्रेज आक्रमणकारियों का सामना कर अपने अस्तित्व की रक्षा में समर्थ रहें, वे नैतिक मूल्य हमसे दूर होते जा रहे हैं। इस स्थिति के लिए सिनेमा फिल्मे, पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली तथा हमारे अधिकांश नेताओ के अनैतिक कार्य तथा स्वार्थपरक जीवन प्रणाली उत्तरदायी है। उपरोक्त स्थिति का सामना करने के लिए हम सरकार पर दबाव डाले कि वह अश्लील एवं अनैतिकतापूर्ण फिल्मों पर प्रतिबन्ध लगाकर उनके स्थान पर नैतिकतापूर्ण एवं देशभक्ति से भरपूर फिल्में दिखावें, पश्चिम के भौतिकवाद पर आधारित शिक्षा प्रणाली का प्रचलन न करें तथा हमारे नेता मौर्य साम्राज्य के महामन्त्री आचार्य चाणक्य की भाँति जीवन बिताकर देश को महान बनाने का प्रयास करें और हम नैतिक जीवन बिताने का व्रत लेकर भ्रष्टाचार को दूर भगाकर महान भारत के निर्माण में भागीदार बनें।

निर्वाचन

आर्य समाज अमेठी (सुलतानपुर)	आर्य समाज सुनारों वाली बुलंदशहर
संरक्षक राजर्षि रणंजयसिंह	
प्रधान डा० सोमसेनगुप्त	प्रधान श्री वीरेन्द्र पाल शर्मा
मन्त्री डा० ब्रजलाल कुमार शास्त्री	मन्त्री श्री कुशलपाल सिंह
कोषा० श्री रामनिवास अग्रवाल	कोषा० श्री जगदीश प्रसाद

—आर्य समाज वेद मन्दिर गोविन्दपुरी कानपुर का वार्षिकोत्सव ७ से ८ नवम्बर ८७ तक—समाज मन्दिर परिसर में मनाया जा रहा है।

समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी जी भी आमन्त्रित हैं।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. स० २२४१।५७ घोषणा पत्र स ७।२८-२-८५

मार्गशीर्ष कृष्ण ६, रविवार, सवत् २०४४ वि०, दिनाक १५ नवम्बर १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

सम्पादक मण्डल

विक्रमादित्य 'वसन्त'
'वेद वारिधि'

★

प्रो० रमेशचन्द्र एम. ए

★

आचार्य वेदव्रत अवस्थी

★

प्रबन्ध सम्पादक—
इन्द्रदेव पाठक एम० ए०
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	११)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	९०
अङ्क	४५

स्वागतम् ★ ओ३म् ★ स्वागतम्

शुभं ते संकल्पमस्तु

गोमती के पावन तट पर अवस्थित लक्ष्मणपुरी नामक इस नगरी मे प्रदेश के कोने-कोने से आये हुये ऋषि भक्तो का यह सम्मेलन हमारी उस प्राचीन परम्परा का गौरवमय प्रतीक है जब 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्घोष करते हुये वैदिक धर्म के दीवाने निकल पडते थे धराधाम को वेदामृत की धारा से सिंचित करने, वैदिक रवि का प्रकाश करने तथा प्रेममयी सगठन की उमडती धारा मे अवगाहन करने । परिणाम स्वरूप चिरकाल तक इस वसुन्धरा पर वैदिक सस्कृति का साम्राज्य रहा । मानवता विश्व के धरातल पर मुस्कराती रही ।

आज आपके शुभागमन की वेला मे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के समवेत स्वरो मे 'आर्यमित्र' परिवार अपने मान्य प्रतिनिधियो का सादर अभिनन्दन करते हुये परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि हमारे अभ्यागत स्वजनो का चिन्तन मगलमय हो । आपके बढते चरण लोक मे व्याप्त अविद्या-अधकार के विनाश मे भुवनभास्कर के समान सक्षम हो । आपका सुसगठित प्रयास वैदिक गीत 'असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।' के शाश्वत स्वप्नो को साकार कर सके । हमारा लक्ष्य अज्ञान, अन्धविश्वास तथा अन्याय के विरुद्ध सतत सघर्ष करना है और महर्षि दयानन्द के वैदिक सस्कृति पर आधारित कल्याण मय समाज की रचना करना है, जहा मानव मानवता की चरमसीमा का छूते हुए प्रभु के आशीर्वाद से समन्वित हो सके । इस समन्वित आन्दोलन के लिये हमे एकजुट होकर अपनी वैश्वानर यात्रा निरन्तर चलानी होगी और ग्राम-ग्राम, नगर-नगर, द्वार-द्वार, वेद वीणा के ज्ञानमय संगीत से इस आर्य धरा को गुजायमान करना होगा ।

आइए ! इस सकल्पशील आन्दोलन के लिए हम अपनी विश्व कल्याणमयी यात्रा को सतत गतिशीलता प्रदान करने का शुभ सकल्प लें ।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्यमित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ... वार्षिक बृहदधिवेशन एवं ...

सम्पादकीय

लखनऊ–मार्गशीर्ष कृष्ण ६ सम्वत् २०४४ रविवार १५ नवम्बर १९८७ दयानन्दाब्द।

१९१ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८

मा विद्विषावहै

"आर्यसमाज" सकल विश्व का सजग प्रहरी है। इसके शाश्वत सिद्धान्तों का आधार सार्वभौम ईश्वरीय ज्ञान वेद है। हमारी विश्ववारा प्रथमा संस्कृति के मूल मे कलकलनिनादिनी वेदामृतमयी श्रुतिधारा का अजस्र स्रोत प्रवाहित हो रहा है अमृत पुत्रो को जागृति का सन्देश देती हुई कह रही है— 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' आर्य पुत्रो ! उठो ! जागो ! श्रेष्ठ जनो के सत्सग से अपने सामयिक कर्तव्यों को पहिचानो। तुम्हारी विजयश्री का मूल मन्त्र है 'सगच्छध्व, सवदध्व सवो मनासि जानताम्' अर्थात् तुम्हारा लक्ष्य समान हो, लक्ष्य प्राप्ति का गन्तव्य पथ भी समान हो तभी तो सगठित होकर अपने मुख्य उद्देश्य मे सफल हो सकोगे। 'सवदध्वम्' तुम्हारी पारस्परिक व्यवहार भाषा एक हो। लक्ष्य, मार्ग और सभाषण की एकता मे ही हमारा उत्थान सुनिश्चित है।

कहा गया है 'सघे शक्ति कलौयुगे' कलियुग में हो सघीय शक्ति मे ही हमारा अभियान सफल हो सकता है किन्तु वेदवाणी तो राग–द्वेष, छल प्रवचना रहित, सद्भाव सम्पन्न सघटन शक्ति को सर्वदा ही सिद्धि-दायिनी घोषित करती है। वर्तमान जीवन समस्याओ का समाधान आर्यजनों के सुदृढ़ स्नेहबन्धन की अपेक्षा रखता है। शस्यश्यामला भारत माता की दुर्दशा का कारण विघटनकारी, आतकवाद या अन्य सक्रिय विधर्मी समुदाय नहीं है अपितु हमारी आपसी भेदनीति, कलह क्लेशकारिणी वृत्ति हमे निरन्तर अध पतन की ओर लिये जा रही है। विचार कीजिये–दुर्बल तृण समुदाय भी सघटित होकर मदोन्मत्त गज को बाधने मे समर्थ है 'द्वितीयवान् हि वीर्यवान्' (शतपथ) अकेले से दुकेला ही होकर अपने में द्विगुण शक्ति सचार का अनुभव करता है फिर यदि असख्य आर्य बन्धु सकीर्ण स्वार्थों से ऊपर उठकर स्नेह सवलित होकर अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर जयघोष करते हुये बढ़ेंगे तो हमे विश्वास है जय लक्ष्मी स्वय आकर हमको आरती उतारेगी। साधना सिद्धि बनकर सोल्लास चरण चूमेगी। सत्य है "वीर भोग्या वसुन्धरा। सगठित और वीर बनकर ही पृथ्वी का बल भोगा जाता है।

आइए ! व्यर्थ के वाद-विवाद, अहम्मन्यता आदि दुर्गुणो को छोड़कर सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करते हुए हम अपनी प्रिय सभा के मच पर स्वच्छप्रशासन को पूर्ण सकल्प लें।

सभा का बृहदधिवेशन एव निर्वाचन — १४ व १५ नवम्बर १९८७

अन्तरग सभा की बैठक — १४ नवम्बर १९८७ (प्रात १० बजे)

बृहदधिवेशन — १४ नवम्बर १९८७ (मध्याह्नोत्तर ३ बजे)

निर्वाचन — १५ नवम्बर १९८७ (प्रात ११ बजे)

स्थान–डी० ए० वी० कालेज, मोतीनगर, लखनऊ

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरग सभा दिनांक २ नवम्बर १९८७ को सभा भवन लखनऊ में सभा प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में हुई और उसमें बृहदधिवेशन एव वार्षिक निर्वाचन सम्बन्धी उपरोक्त कार्यक्रम सर्वसम्मति से निश्चित हुआ।

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्यसमाज गोविन्दपुरी (गाजियाबाद) के वार्षिकोत्सव पर सभा प्रधान श्री इन्द्रराज द्वारा कवि सम्मेलन का उद्घाटन

दिनांक १८–१०–८७ को रात्रि ९–३० बजे सभा प्रधान जी ने कवि सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहाकि आज व्यक्ति भौतिकवादी हो गया है आज जीवन का चरम उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति की ओर चलना चाहिये। आज चारो तरफ भ्रष्टाचार, बुराइयो और देश को तोड़ने के षड्यन्त्र हो रहे हैं। कवियो की सशक्त वाणी इन सबका निराकरण कर सकती है। इसलिए राष्ट्र निर्माण की ओर कवियों का ध्यान जाना बहुत आवश्यक है। जो इस समय की अति आवश्यक माँग है।

अवकाश सूचना

सभा का बृहदधिवेशन होने के कारण सभा कार्यालय मे अवकाश रहेगा। अत आर्यमित्र का अगला अक २९–११–८७ को प्रकाशित होगा। —व्यवस्थापक

और जनमानस की भावनाओ का आदर करते हुये लोकहितार्थ समर्पित जीवन का आश्रय लेकर अपने सगठन को, सुदृढ़तर बनाने की प्रेरणा प्राप्त करें।

—मनमोहन तिवारी

"त्रयी"

[आचार्य मुन्शीराम शर्मा, कानपुर]

गायत्री मन्त्र तीन चरणों का है जो त्रिमात्रिक ओ३म् से प्रारम्भ है और ओ३म् के उपरान्त तीन महाव्याहृतियां:—भू०: भुव: और स्व: बोली जाती हैं। कहते हैं, यह सब ओ३म् की ही महिमा है। ओ३म् की तीन मात्राओं से तीन महाव्याहृतियां निकली हैं और उन्हीं से वेदत्रयी, त्रिलोकी तथा तीन कालों का सम्बन्ध है। महर्षि यास्क ने निरुक्त में इसका स्पष्टीकरण किया है। अग्नि वायु और आदित्य तीन देवों का, रथन्तर, वामदेव्य और बृहत तीन सामों का, त्रिवृत, पंचदश और एकविंश स्तोमो का प्रात.माध्यन्दिन, और सायं तीन सवेना का तथा गायत्री, त्रिष्टुप् जगती छन्दों का भी सम्बन्ध इन्हीं से जोड़ा गया है। गायत्री २४, त्रिष्टुप् ४४ और जगती ४८ अक्षरों के छन्द हैं, जिनके और भी भेद वर्णित हैं।

ओ३म् की पादत्रयी स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीन शरीरों से भी संयुक्त है। वाणी, मन और प्राण भी इसी से सम्बद्ध हैं। ऋ० १-१०-१ गायन्तित्वा, १०-७१-११ ऋचां: पोषमास्ते, यजु:३६-१ ऋचं वाच प्रपद्ये तथा यजु६ ५-१५ इद विष्णु विचक्रमे त्रेधा, यजु० ३४-४३ त्रीणि पदाविचक्रमे, यजु० १९-१५ त्रीणित आसुर्दिव बन्धानि, त्रीणि, अप्सु, त्रीणि अन्त: समुद्रे और १३३१ त्रीन् समुद्रान् आदि मन्त्रो मे यही त्रयी दिखाई देती है। 'त्र्यम्बकं यजामहे' मन्त्र मृत्युञ्जय मन्त्र कहलाता है जिसमें त्र्यम्बकं देव से प्रार्थना की गयी है कि वे हमें मृत्यु के बन्धन से उतनी ही सुगमता से छुड़ा दें जितनी सुगमता से खरबूजे (उर्वारुक) का फल पककर स्वत: अलग हो जाता है। मृत्यु से छुड़ावें, पर अमरत्व से नहीं। उसके साथ तो वे हमें जोड़ दें। बन्धन भी उत्तम मध्यम तथा अधम तीन प्रकार कहे गये हैं जिनका प्रकृति के सत्, रज तथा तम तीन गुणों से सम्बन्ध है। उदुत्तमं वरुण पाशमस्म मन्त्र, ऋ० १-२४-१५ जो अथर्व और यजु में भी आया है इन्हीं तीन बन्धनों का वर्णन करता है। इनसे मुक्ति मिले तो साधक अनागास, निष्पाप होकर अदिति, अखण्डनीय अवस्था को प्राप्त कर लेता है।

त्रयी का सम्बन्ध व्यवहार से है जिसे प्रपञ्च भी कहा जाता है क्योंकि उसका पञ्चभूतो से सम्बन्ध है। ओ३म् की तुरीया या चतुर्थी दशा अमात्रिक है। इसीलिये उसे 'ओंकारो अविमात्र' मात्राओं से ऊपर कहा गया है। त्रयी से ऊपर चले जाना प्रपञ्च से मुक्ति पा जाना है, जहां त्रयी क्या, द्वैत भी नहीं है। वहां है केवल अद्वैत शिव। मानव योनि में इन तीनों बन्धनो का अनुभव किया जा सकता है। स्थूल शरीर तमोमय अधम बन्धन है, सूक्ष्म शरीर रजोमय मध्यम बन्धन है और कारण शरीर सत् से सम्बद्ध तथा तथा उत्तम बन्धन है। बन्धन रहित अवस्था का अनुभव भी कुछ सन्तो, साधकों को योगाभ्यास द्वारा हो जाता है। पर तीनों को बन्धन त्रयी से छुटकारा पाना सहज नहीं, अतीव दुर्लभ साधना-साध्य है। पुनर्जन्म की गाथा अनवगाहनीय है।

हम देवों को स्वर्गवासी कहते हैं। वे सुकृत, सुकर्मा, शोभन-पवित्र कार्य करने वाले थे। वे मनायु अर्थात् मन से भी चिन्तन करने वाले थे। वे सुन्दर प्रकृष्ट रूप से अपनी तथा पराई रक्षा करने वाले थे और सोमी, सोम रस सेवी भगवान के अनन्य भक्त, सत्व से सम्पन्न तथा समर्पणशील थे। व्यवहार की यह पावनानता ही उन्हें स्वर्ग में समासीन कर सकी प्रपञ्च से वे पृथक हो गये। मंगलमय स्थिति में पहुंच गए, जहां कोई अमीवा या रोग नहीं कोई अराति या शत्रु नहीं, आनाहुति नहीं, अयाज्ञुकता नहीं, टेढा मेढ़ापन नहीं, विशुद्धि वैभवदति विद्यमान है। जहां कोई घात नहीं, सुरक्षा ही सुरक्षा, सुपथ ही सुपथ, और बह मीसुगम ही सुगम भक्त इन्हीं—देवों, दिव्य शक्तियों को पुकारता हुआ कहता है-देवों तुम नाका के प्रकाश में विचरण कर रहे हो (विरोचमानां वसते) माता आदिति के क्रोड में किल्लोलें करते हुए पीयूष का पान कर रहे हो (येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते) निद्रा और प्रमाद तुमसे कोसों दूर खड़े हैं, तुम अनिमिन्त अर्थात सतत जागरूक रहते हो, तुम्हारा अमरत्व बृहत है—हमारी सुषुप्ति स्वल्पकालिक नहीं (बृहद्देवा सो अमृतत्व मानुशु:) तुम पूज्यो के पोपूज्य याज्ञियों के भी यज्ञिय, ऋत के साक्षात द्रष्टा, प्रचेता और सुत्रामा हो। मैं आह्वान कर रहा हूं, हृदय से पुकार रहा हूं (हुवायसत्व्टाम् महान् वर्शसन) दुःखी हूं, आओ और मुझे दुरितों से निकाल लो। तुम्हारा आश्रय मानव को अरिष्ट (बाधो) से पृथक और स्वस्थ कर देता है, वह ससार में तुम्हारी दिव्यता के बल पर फलता फूलता है—झंझटों के धर्मों, बखासो में नहीं पड़ता—उसे सुनीति का सुगम मार्ग मिल जाता है और इस प्रकार चलते-चलते अन्त मे तुम्हारे ही निकट स्वर्ग का निवासी बन जाता है।

देवो, तुम्हारे अन्दर ऋजुता ही ऋजुता है, सुमति ही सुमति है, मधुर ही मधुर मैत्री है, त्याग ही त्याग है—मुझे अवलम्ब देकर कटुता दुर्मति कार्पण्य और कसैलेपन से छुड़ा दो। तुम्हारे सद्गुणों की सुरभि मुझे भी प्रमुदित कर दे। मै करों-संघर्षों के भार से भुना जा रहा हूं—इस पापमय परिवेष्ठन से निकाल लो। मेरे मान और चक्षु जिस विभीषिक मयी स्थिति के श्रवण और दर्शन से भयभीत हो रहे हैं, उन्हें अपने भद्र का श्रवण और दर्शन करा दो। मुझे देवहिति = दिव्य पथ प्राप्त हो जावे, तुम्हारा सम्यक स्वस्ति प्रदान करे। तुम जिसके सान्निध्य में साक्ष्य में निरन्तर निरत रहते हो उसी जगदम्बा के चरणों में मै भी पहुंच जाऊं। वह परमशक्ति तुम्हारे द्वारा अपना संदेश भेजती ही रहती है—मुझे भी उस सदेश श्रवण का अधिकारी बना दो।

देवो! मेरे प्राण मेरे मन, मेरी मेधा में आकर बस जाओ, इनमें दिव्यता ही दिव्यता दिखाई दे। पाप का स्पर्श तक न हो। जागरण और स्वप्न मे जो भी प्रवृत्ति उत्पन्न हो वह पावन ही पावन हो। प्रपञ्च के इस द्वैत में असपत्नता, वैमनस्य का अभाव मुझे प्रभावित करता रहे, सौतिया डाह मुझे दग्ध न करे। यदि कोई द्वेषी अपनी दुरिताग्नि में मुझे डालना चाहे तो तुम्हारे अमोघ कवच मेरी रक्षा करने के लिये आ जावें। वे द्वेषी के द्वेष को दूर कर दें, ध्वस्त कर दें और मुझे संत्राण दें। तुम्हारा शुद्ध ज्ञान, उदारता महत्ता और शर्म, सुख, शरण स्थान, निर्विघ्नता निरन्तर मेरे साथ रहें। यदि मैंने अज्ञान वश कभी व्रत भंग किया हो, तुम्हारे प्रति द्रोह का आचरण हो गया हो, तो धर्म लोप से उत्पन्न उस पाप से आप मेरा उद्धार करें। मुझे धर्म-निष्ठ कर दें-द्रोह, द्वेष और हिंसा से एक दम विहीन।

देवो! मै पतित हूं, मुझे उठाओ। मै आलस की आग में जलकर मरा जा रहा हूं, मुझे जीवन दो, दिव्यता का सम्बल दो। मेरा स्थूल शरीर स्वस्थ रहे, मेरा सूक्ष्म मानस मण्डल निर्मल रहे, मेरा कारण शरीर नित्य दिव्यता में विचरण करे। मेरी वाणी ऋचामयी, दिव्य स्तोत्रमयी हो, मन यजुमय-सकर्म-प्रभा से विभूषित हो और प्राण सामोपासना के सोऽहं जप का सतत अनुशीलन करता रहे। मेरे चक्षुओं मे सविता का भर्ग और श्रवणों में श्लोक-मन्त्र वाले दिव्य संगीत स्वर आते रहे। मेरा ओज आपके पावन ओज से प्रदीप्त रहे। मेरा बहिर्गमन और पुन: प्रवेश आपके ही निर्देशन का अनुसरण करें। जागरण, स्वप्न और सुषुप्तिमयी त्रयी आपकी आभा से आलोकित रहे। मेरे भाव-ज्ञान-क्रिया असत से सत और तम से ज्योति की ओर चलते रहे। देवो! त्रयी की मृत्यु से छुड़ा दो-अपनी अमरता का दान दो।

चालीस वर्ष,

राजनीतिक आजादी और–

आर्थिक पुर्ननिर्माण के

★ ★ ★ ★

"स्वराज्य का अर्थ है–विदेशी शासन से पूर्ण स्वतन्त्रता, और पूर्ण आर्थिक स्वतन्त्रता। इस प्रकार स्वराज्य के एक सिरे पर राजनीतिक स्वतन्त्रता है तो दूसरे सिरे पर आर्थिक स्वतन्त्रता। उसके दो सिरे और हैं। तीसरा सिरा है———नैतिक या सामाजिक और चौथा है धर्म का। स्वराज्य प्राप्ति के लिए हिन्दू, मुसलमान और अन्य धर्मावलम्बियों का एक दूसरे को भाई–भाई मानना और एक समान समझना जरूरी है। अस्पृश्यता के पाप को समझकर उसे दूर करना है। दलित भाई–बहनों से प्रेम करना भी आवश्यक है।"

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने डेढ़ सौ सौ वर्ष की दुर्धर्ष अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध अहिंसात्मक आन्दोलन का विश्व में अनूठा हथियार उठाया और उनके नेतृत्व मे लाखो देशभक्तों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर स्वतन्त्रता अर्जित की। बापू ने "पवित्र लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साधन भी पवित्र होने चाहिए" इस सिद्धान्त की सार्थकता सिद्ध की और एक सशक्त तथा समृद्ध भारत की कामना की।

राजनीतिक आजादी ने हमे जहा अपना भविष्य अपने हाथो बनाने, सवांरने का अधिकार और सुअवसर दिया वहीं अपनी नव स्वतन्त्रता की हर परिस्थिति और हर कठिनाई मे रक्षा करने का दायित्व भी सौंपा। साम्प्रदायिक वैमनस्य का विष, जातिगत और क्षेत्रीय संकीर्णता, नैतिकता का ह्रास और टूटी–फूटी अर्थ व्यवस्था–ये सभी समस्याए प्रारम्भ से ही विकराल रूप ले चुकी थीं। फिर भी हमने दृढ़ मनोबल और सुन्दर भविष्य के प्रति अटूट विश्वास के सहारे इन पर विजय पाई और अपनी आजादी पर आंच नहीं आने दी।

जहा तक आर्थिक पुर्ननिर्माण का प्रश्न है देश के नेताओं ने इस कार्य की शुरूआत करने मे तनिक भी देर नहीं की। विषम परिस्थितियों के बावजूद कुछ ही वर्षों के अन्दर पंचवर्षीय योजनाओं का सूत्रपात हो गया। आज हम सातवीं पंचवर्षीय योजना कार्यान्वित कर रहे हैं। इस अवधि में कितनी प्रगति हुई, इसका सही अनुमान कितने ही लोग नहीं कर पाते हैं लेकिन खुले दिल और दिमाग से विचार करने वाले यह निःसंकोच कहेंगे कि बिना बाहरी सहायता के हमने जो हासिल किया उस पर किसी को भी गर्व हो सकता है।

इन उपलब्धियो ने आम आदमी में नये उत्साह और विश्वास को जन्म दिया है।

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

जनपदीय आर्य महासम्मेलन में सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का उद्घाटन भाषण

दि० ८-१०-८७ को जनपदीय आर्य महासम्मेलन मुजफ्फरनगर के दिन में सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी के पहुचने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। श्री मनमदत्त जी के स्वागत भाषण के उपरान्त सभा प्रधान जी ने अपने उद्घाटन भाषण मे व्यक्तिगत चरित्र निर्माण पर बल देते हुए राष्ट्र की वर्तमान समस्याओं के समाधान का संकल्प लेने का आह्वान किया। देश मे उग्रवाद, हिंसा, और भ्रष्टाचार के विरुद्ध आर्यसमाज का आन्दोलन तीव्र होना बहुत आवश्यक है। आज के युग में दहेज पर बलिदान और सती प्रथा आदि भारत के लिए अभिशाप हैं। अपने छोटे-छोटे मतभेद भुलाकर आर्यसमाज को ही इन कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करना है।

आर्यसमाज आयुध निर्माणी पूर्वी क्षेत्र मुरादनगर के योग शिविर में सभा प्रधान श्री इन्द्रराजजी का समापन भाषण

दि० २५-१०-८७ को योगशिविर के समापन भाषण में सभा प्रधान जी ने मानव तन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रभु प्राप्ति को चरम लक्ष्य बताया तथा योगाभ्यासियों से आग्रह किया कि वे निराकार भगवान् को ध्यान योग के मार्ग से प्राप्त करने मे निरन्तर लगे रहें। योग मार्ग ही संसार में सुख और शान्ति स्थापित करने का एकमात्र साधन है। अतः इस प्रकार के शिविरों को लगाने की बहुत आवश्यकता है।

देश को शिक्षित बनाने में डी० ए० वी० संस्थाओं की विशेष भूमिका

—रघुनन्दन भाटिया

अक्तूबर १६—उक्त शब्द लोकसभा सदस्य श्री रघुनन्दन भाटिया ने डी० ए० वी० माडल स्कूल, शालीमार बाग, दिल्ली के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर अपने भाषण में कहे। उन्होंने कहा कि साक्षरता–शिक्षा–प्रसार के क्षेत्र मे पिछले १०० वर्षों में डी० ए० वी० संस्थाओं ने शानदार और निस्वार्थ भाव से अपनी भूमिका निभायी है। आशा है कि आगामी वर्षों के लिए डी०ए०वी० प्रबन्धकर्तृ समिति ने शिक्षा के क्षेत्र में विस्तार का जो कार्यक्रम बनाया है वह अवश्य पूरा होगा।

२—समारोह की अध्यक्षता डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति के प्रधान प्रो० वेदव्यास ने की। इस अवसर पर पंजाब केसरी के प्रबन्ध निदेशक श्री अश्वनी कुमार जी भी उपस्थित थे। इन दोनों महानुभावों का डी. ए. वी प्रबन्धकर्तृ समिति की ओर से उसके महा सचिव श्री जी. पी. चोपड़ा, संगठन सचिव श्री दरबारी लाल, कुमारी विद्यावती, श्री रामनाथ सहगल, प्रिंसिपल संतोष तनेजा आदि ने माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

वाक् प्रतियोगिता सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस के उपलक्ष में आर्य समाज नैनीताल द्वारा आयोजित 'महर्षि दयानन्द वाक् प्रतियोगिता' दिनांक ११ अक्तूबर १९८७ को समारोहपूर्वक सम्पन्न हुई जिसकी अध्यक्षता श्रीमती मर्च अम्बलोध बालिका विद्यालय निरीक्षिका, नैनीताल ने किया अनेक विद्यालयों से आये प्रतियोगियो ने अपने उत्कृष्ट विचारों से जनता में पुनर्जागरण का प्रयास किया।

प्रतियोगिता की चल वैजयन्ती संयुक्त रूप से सैनिक स्कूल घोड़ाखाल एवं नगरपालिका बालिका इण्टर कालेज ऐयरडेल–सूखाताल (नैनीताल) ने जीती। आर्यसमाज नैनीताल की ओर से श्री बकिलाल कंसल ने प्रतियोगियों और जनता का धन्यवाद किया।

वेगवान कर दो !

ओ३म् अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत्पाणी शुभस्पती।
पुरुभुजा चनस्यतम् ॥ ऋ० मं० १ अ० १, व. ३ मं० १

प्रभु अश्व–यान बहु वेगवान कर दो।
सब शिल्प कला विज्ञान बढ़ायें हम।
चढ़ यन्त्र यान बढ़ते ही जावें हम।
शुभ भुज प्रकाश पालन विहान कर दो।
प्रभु अश्व–यान बहु वेगवान कर दो।
ये अश्व अग्नि–जल की गति वाले हों।
जल–अग्नि प्रयोजन उन्नति वाले हों।
भरपूर भुजायें भोज्य दान कर दो।
प्रभु अश्व–यान बहु वेगवान कर दो ॥
हो शिल्प क्रिया से अभीष्ट पूर्ण सब।
मिल जांय वस्तुएें अन्नादि स्वर्ण सब।
गगन भूमि सागर में प्रयाण कर दो।
प्रभु अश्व–यान बहु वेगवान कर दो ॥

★ ★ ★

ओ३म् चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्।
यज्ञं दधे सरस्वती ॥ ऋ. १–१–३
प्रिय धारणा करो यज्ञ हे सरस्वती।
तुम सत्य वचन शुभ सत्य कर्म वाली।
विद्वानों को सुमित सुझाने वाली।
चिर चेतना चित्त में दो वाग्मती।
प्रिय धारण करो यज्ञ हे सरस्वती ॥
प्रिय प्रेरणा गुणों में करने वाली।
वाणी ही है सरस्वती रसवाली ॥
हो वाणी कल्याणी प्रिय यज्ञमती।
प्रिय धारण करो यज्ञ हे सरस्वती ॥

–देवनारायण भारद्वाज एफ-४१, मानसरोवर कालोनी, अलीगढ़

★

उत्तरप्रदेश की समस्त आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों, समस्त समाजों के पदाधिकारियों तथा समस्त सम्मानित प्रतिनिधियों की सेवा में आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा निष्कासित कुछ व्यक्तियों द्वारा प्रदेश के कुछ स्थानों पर पत्र लिखकर यह भ्रामक प्रचार किया जा रहा है कि सभा का वार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन दिनांक १४, १५ नवम्बर १९८७ को डी० ए० वी० कालेज लखनऊ में सम्पन्न नहीं होगा साथ ही साथ सभा के भूतपूर्व मुख्य सेवक श्री कृष्णगोपाल शर्मा, जिनकी सेवाएं सभा द्वारा समाप्त की जा चुकी हैं, वह भी आर्यजनों को भ्रमित करने के लिए प्रचार कार्य में संलग्न हैं।

अतः मेरा सभी आर्य जनों / प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि वह इस प्रकार के दुष्प्रचार से भ्रमित न हों। सभा का वृहदधिवेशन पूर्व घोषित तिथियों में अर्थात् १४ व १५ नवम्बर १९८७ को ही डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

त्रिकालदर्शी महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य कवि रघुवीर शरण मिश्र लेखक विश्व कल्याण शोध संगम
नरायन टोला बहजोई मुरादाबाद (उ० प्र०) २०२४१०

ज्ञान की साधना मे रत भारत वर्ष की सुजला सुफला शस्य श्यामला भूमि पर संकट बेला मे अनेकानेक युगपुरुषो ने जन्म लेकर यहां के सोये पुरुषत्व, नारीत्व और देश भक्तो को अपने बुद्धि चातुर्य और पराक्रम से इस प्रकार झकझोर कर जगाया है कि हाड़ मांस के पुतलो में भी अभय, साहस, और देशभक्ति का संचार देखकर महान से महान शक्ति को भी दुम दबाकर भागना पड़ा है। उन्नीसवीं शताब्दी मे देश की दुर्दशा अपनी चरम सीमा पर थी। ऐसी संकटबेला में काठियावाड़ प्रांत मोरवी राज्य में टंकारा नाम ग्राम में करसन जी तिवारी नामक औदीच्य ब्राह्मण की पत्नी यशोदाबाई के गर्भ से एक तेजस्वी बालक ने जन्म लिया जिसका नाम मूलशङ्कर रखा गया। उसके सभी संस्कार वैदिक रीति से किये गये थे। प्यार सभी इन्हें करते थे चौदह वर्ष की अवस्था में शिवमूर्ति पर चूहों की भागदौड़, बहिन व चाचा जी की मृत्यु से दुःखी होकर सच्चे शिव की खोज करने और कालजयी बनने हेतु गृहत्याग करके योग की दीक्षा प्राप्त करने के उपरांत ३ वर्ष के गुप्तकालवास मे आपने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया। अनेकानेक देशभक्त तैयार किये जिनके प्रयत्नों और बलिदानों से १५ अगस्त १६४७ को देश स्वतन्त्र हुआ। मथुरा मे गुरुवर विरजानन्द जी से व्याकरण की शिक्षा प्राप्त की। गुरु दक्षिणा में गुरु चरणों में शीश रखकर उनकी आज्ञापालन की प्रतिज्ञा की। गुरु की आज्ञा से ही आपने वेदों के प्रचार द्वारा पाखण्डों, कुरीतियों का खण्डन किया।

वेद भाष्य के साथ-साथ लघु पुस्तिकाओं और सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ लिखा। जगह-जगह शास्त्रार्थ किया। योगबल से राजाओं को परास्त किया। अनेकानेक विद्वानो की प्रशंसा के पात्र बने। धूर्तों ने कई बार विष दिया जिसके प्रभाव को आपने योगक्रिया से समाप्त कर दिया और अन्त में नन्हींजान वेश्या के कहने से जगन्नाथ रसोइय्या द्वारा दूध में पिसा शीशा देने से महान कष्ट सहते हुए दीपावली के दिन वेद मन्त्रों के पाठ, ईश्वरी उपासना, ईश्वर के गुणो का कथन, गायत्री मन्त्र का पाठ करने के उपरांत हे सर्वशक्तिमान ईश्वर! तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो कहकर करवट ली और श्वास को रोककर एक बार में ही प्राण निकाल दिया।

महर्षि दयानन्द के आर्य जाति एवं विश्व मानवता पर अनेकानेक उपकार हैं। वे आदित्य ब्रह्मचारी, जगदुद्धारक, भारत हितैषी, महान शिक्षा शास्त्री, समाज सुधारक, संस्कृत प्रचारक, राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रसार कर्ता, वेदो के परम प्रचारक, उदारतम सनातनी, मानव दशक सूत्र निर्माता थे।

वर्तमान संकट की वेला में भारत ही क्या समस्त विश्व का मार्ग दर्शक प्रकाश स्तम्भ महर्षि दयानन्द जी का साहित्य ही है। आर्यसमाज के सदस्यो को ऋषि साहित्य अधिक से अधिक संख्या में वितरित करते रहना चाहिये। अपने बच्चों मे उत्तम से उत्तम संस्कार डालते रहना चाहिये। जब वैज्ञानिको शासकों, धर्म गुरुओं के सामने से स्वार्थ युक्त असत्य का पर्दा हटेगा तो एक न एक दिन सत्य सनातन वैदिक धर्म ही सार्वभौमिक, सर्वमान्य अकाट्य धर्म होगा जल थल नभ में ओ३म् का स्वर गूंजेगा गो-सेवा, संध्या, यज्ञ का प्रसार होगा।

इस कार्य हेतु आर्य जनों को विशेष आहुतियां देनी होगी। परमेश्वरकृत प्राण प्रतिष्ठित जीवों की तन-मन धन से निष्काम सेवा करनी होगी तभी हम ऋषि को श्रद्धांजलि देने के पात्र होंगे अतः वीरों उठो! जागो! आगे बढ़ो और सौ बार असफल होने पर भी अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए मानव बनने का प्रयत्न करो। ऋषि का स्वप्न साकार करो। जागते रहो! जागते रहो! जागते रहो! चलते रहो! चलते रहो! चलते रहो!

ओ३म् शांतिः शांतिः शांतिः।

आवश्यक सूचना

१—समस्त आर्य समाजों जिला उपसभाओं एवं शिक्षण संस्थाओं की मांग पर उन्हें सूचित किया जाता है कि सभा की शताब्दी के अवसर पर सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसटों का एक सेट जिसका मूल्य १००० = है २५% प्रतिशत छूट पर अब संस्थाओं को दिया जायेगा।

२—सभा ने 'सती प्रथा वेद विरुद्ध' है नाम का एक ट्रैक्ट प्रकाशित किया है जिसमे प्रबल युक्तियां देते हुए सती प्रथा को सर्वथा वेद विरुद्ध बताया है। सभी समाजें तथा शिक्षा संस्थाएं इसे खरीद कर अधिक से अधिक प्रचार करें—

सभा मन्त्री

वर्षा करवाने के लिए मद्रास सरकार की चुनौती स्वीकार

मद्रास सरकार के विद्युत मन्त्री माननीय आई० पी० स्वामीनाथन ने घोषणा की है कि जो कोई व्यक्ति मद्रास नगर में वर्षा करवाएगा उसे मद्रास सरकार सम्मानित करेगी। आचार्य वेदभूषण ने मद्रास सरकार की घोषणा का स्वागत करते हुए मद्रास नगर में वर्षा कराने सम्बन्धी प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है। आपनेमद्रास सरकार को पत्र द्वारा सूचित किया है कि वे वैदिक यज्ञ विज्ञान के आधार पर मद्रास में वर्षा कराने को समुद्यत हैं।

यह परीक्षण एक महत्वपूर्ण घटना हो जायेगी। संसार यज्ञ विज्ञान की ओर आकृष्ट होगा।

सती प्रथा या नारी हत्या ?

[डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी प्रोफेसर कालोनी, श्यामगंज-बरेली]

सम्प्रति धर्म की आड मे निरन्तर भ्रष्टाचार व अन्धविश्वास पनप रहा है। सर्वत्र दानवता, रूढ़िवादिता, आतङ्क व अज्ञान का ताण्डव हो रहा है। राजनीतिक कार्य कलाप, हत्याकाण्ड, बुद्धि व कुसंस्कार से होते हैं।

धर्म के नाम पर सती प्रथा वस्तुत नारी शोषण का सूचक है। ईश्वरीय सृष्टि मे नर-नारी समान हैं, फिर नारी के साथ यह दुर्व्यवहार क्यों ? न जाने कितनी रूपकुंवरि को लोभ, दबाव, व छल के द्वारा अग्नि की भेंट चढ़ा दिया जाता है किन्तु कितने पति मृत पत्नी के साथ 'सता' होते हैं ? बलात् किसी भी नारी को मृतपति के साथ जलाना नारी बर्बरता का सूचक है। स्वेच्छा से कोई स्त्री सती नहीं होती। स्वयं रूपकुंवर को, जो सती होने को तैयार नहीं थी, भूसे के कोठे से घसीट कर चिता मे झोंका गया, ऐसी सूचनायें पत्रकार यूनियन के अध्ययन दल, व सी० आई डी के अधिकारियो से प्राप्त हुई हैं। रूपकुंवर के पति मानसिंह की मृत्यु का कारण अभी अज्ञात है।

शैशव से ही किसी बालिका के हृदय मे संस्कार भरना कि सती होना देवी बनना है, तथा विवाह के साथ ही वह बालिका विधवा होकर आत्महत्या द्वारा देवी बनने की बात निकाल दे, एवं बलात् चिता मे झोंककर उसकी जयजयकार होने लगे, तो क्या यह स्वेच्छा की सज्ञा हो सकती है ? सती प्रथा वस्तुत न शास्त्र सम्मत है और नाही विवेक सम्मत। यह तो पुरुष प्रधान समाज के कारण उत्पन्न एक मध्ययुगीन विकृति है तथा भारतीय समाज और आर्य धर्म पर एक कलंक है।

सती प्रथा का उद्गम वेद द्रोही नास्तिको की मूर्खता और स्वार्थपरता से हुआ।

राजा राममोहन राय ने जब सती प्रथा के विरोध मे अभियान चलाया तब भी तत्कालीन पुरातन पंथियो एवं गोवर्धन पीठ के शंकराचार्य निरंजन देव तीर्थ जैसे धर्माचार्यों ने इसे हिन्दू धर्म मे हस्तक्षेप बताया। तथा ऋग्वेद के एक मन्त्र को तोड मरोड कर प्रस्तुत किया—

"इमा नारीरविधवा सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं विशन्तु।
अनश्रवोऽनमीवा सुरत्ना आरोहन्तु जनयो योनिमग्रे॥'
—ऋग्वेद १०-१८-७

इस मन्त्रार्थ के अनुसार 'रविधवा' शब्द सौभाग्यवती नारियो का सूचक है जिसका अभिप्राय है कि वे नवागत वधू का स्वागत करें। 'योनिमग्रे' शब्द को तोड मरोड कर 'अग्ने' अर्थ तथा 'रविधवा' का 'र' ऊपर चढ़ाकर 'विधवा' अर्थ हठवादियो ने कर लिया। वेद शास्त्रों मे किसी भी स्थान पर सती होने का समर्थन नहीं मिलता। अत सती प्रथा को धर्म से जोड़ना पाखण्ड और बर्बरता का सूचक है। 'मनुस्मृति' में नारीश्रेष्ठता का प्रतिपादन है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' मनुस्मृति मे आठ प्रकार के कसाई वर्णित हैं—

'अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातका॥' (५ ५१)

अर्थात्—मारने की सलाह देने वाला, अंग काटने वाला, मारनेवाला खरीदने वाला, बेचने वाला रांधने वाला, परोसने वाला तथा खाने वाला है।

मननयोग्य तथ्य है कि रूपकुंवर की राख खरीदने वाले किस श्रेणी में आयेंगे ? ऐसी कुप्रथाओ के समर्थन से व्यक्ति व समाज का कल्याण सम्भव नहीं। ये अन्ध परम्परायें वेद विषयक भ्रान्तियाँ उत्पन्न करती हैं। राजनैतिक दुरुपयोग की वोट बटोरने की नीति में देखा जा सकता है। अनेक नेता रूपकुंवर के दाह स्थल को मन्दिर बनवाने का आश्वासन भी दे चुके हैं।

यह सब हीन मनोवृत्ति का सूचक है। नारी जाति के गौरव को सुरक्षित रखने हेतु व्यापक जन जागृति अपेक्षित है। तभी कुरीतियो व अन्धविश्वास नष्ट हो सकेंगे।

४० वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज तथा स्त्री आर्यसमाज एवम् आर्य कन्या इण्टर कालेज गोविन्दनगर-कानपुर का ४० वा वार्षिकोत्सव ३ से ५ नवम्बर १९८७ के मध्य आर्यसमाज के भव्य भवन मे सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर शोभायात्रा भी निकली एव प्रभावी प्रचार हुआ, इस अवसर पर प० क्षितीश जी वेदालंकार सम्पादक 'आर्यजगत, प्रो० उत्तमचन्द्र जी 'शरर' प० शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी, सोहनलाल पथिक-पन्नालाल पीयूष के प्रभावी प्रवचन और भजन हुए।

आर्य कन्या इण्टर कालेज की छात्राओ ने प्रतियोगिताओ मे भाग लिया तथा पुरस्कार वितरण श्री ओमप्रकाश जी आर्य प्रमुख अभियन्ता विकास परिषद द्वारा हुआ तथा विगत वर्षों मे जिन मुस्लिम महिलाओं ने आर्यत्व स्वीकार करके हिन्दू युवको से विवाह किया ऐसे सात दम्पतियो का अभिनन्दन श्री देवीदास जी आर्य प्रधान आर्यसमाज के प्रयासो से हुआ—नवदम्पति को भावर वस्त्र एव स्टेनलेसस्टील के बर्तन भेंट किये गये इस समारोह मे अभिनन्दन तथा भेंट वितरण प्रो० रमेशचन्द्र सम्पादक 'आर्यमित्र' द्वारा हुआ। दम्पतियो ने नवीन जीवन प्रदाता श्री देवीदास आर्य के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की—ऋषिलंगर मे सहस्रों व्यक्तियो ने भोजन किया।

आर्यसमाज गोविन्दनगर—उससे सम्बन्धित संस्थायें श्री देवीदास आर्य के त्यागमय अथक प्रयास की उपलब्धियां हैं, तथा प्रदेश मे और कानपुर मे सहस्रो महिलायें श्री आर्य द्वारा उद्धारित की गयीं और सम्माननीय जीवन व्यतीत कर रही हैं।

प्रधान श्री देवीदासजी आर्य और मन्त्री शुभकुमार बोहरा की सेवायें सराहनीय हैं। —संवाददाता

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५६६३
पंजीकरण स० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
मार्गशीर्ष कृष्ण ६
१५ नवम्बर रविवार, १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

3835-श्रीसम्पादक जी
गुरुकुल पत्रिका
गुरुकुल कांगडी (सहारनपुर)

धर्म शिक्षा पुस्तको के सम्बन्ध मे–

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयो एव पुस्तक विक्रेताओ को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश द्वारा प्रकाशित पुस्तकें सभा कार्यालयमे उपलब्ध हैं। पुस्तकें प्राप्ति हेतु कार्यालय से सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम से भेजें। रेलवे स्टेशन एव पूरा पता साफ-साफ लिखें। पुस्तको का मूल्य निम्न प्रकार है–



धर्म शिक्षा भाग १	१.००
,, ,, ,, २	१.५५
,, ,, ,, ३	२.७०
,, ,, ,, ४	२-७५
,, ,, ,, ५	३-६०
,, ,, ,, ६	४-७५
,, ,, ,, ७	४-१५
,, ,, ,, ८	८-००
,, ,, ,, ९	४-००
,, ,, ,, १०	३-००
,, ,, ,, ११	४-००
धर्म शिक्षा भाग १२	३-५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु

❀ आवश्यक सूचना ❀

समस्त आर्यसमाजो, जिला उपसभाओ एव शिक्षण संस्थाओ को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० की शताब्दी समारोह के अवसरपर आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक, शैक्षणिक एव कविसम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमे विभिन्न वाद-विवाद प्रतियोगिताए तथा सम्मेलनो के अंश सम्मिलित हैं एव विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह एव कवि सम्मेलन की वी० डी० ओ० (फिल्म) कैसेट के अतिरिक्त शताब्दी मे पधारे हुए सन्यासियो, विद्वानों, उपदेशकों, आदि के महत्वपूर्ण उपदेश एव जिन शिक्षण संस्थाओ ने समारोह मे भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किए उनके रिकार्डिंग कैसेट निम्न प्रकार, सभा कार्यालय मे बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। जो सज्जन अथवा संस्थाए इन्हे प्राप्त करना चाहती हैं वह श्री विश्वम्भरदयाल गुप्ता, व्यवस्थापक 'आर्यमित्र' ५ मार्ग, लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आडर देकर प्राप्त कर सकते हैं।

१–सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसेट–	मूल्य	१०००-०० रु०
२–सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कैसेट–	मूल्य	१००-०० रु०
३–सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग कैसेट (कुल संख्या ३०) प्रति कैसेट–		२०-०० रु०
४–कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो–		५-०० रु०

(बड़ी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध कराई जा सकती है)

नोट–जिन शिक्षण संस्थाओ ने समारोह मे भाग लिया एव पुरस्कार प्राप्त किए उन्हे १८, १९ तथा २० अक्टूबर के एक एक दिन के अलग से रिकार्डिंग कैसेट उचित मूल्य पर अलग से मिल सकते हैं।

आर्यसमाज के कार्यक्रम तथा सभा की शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओ को ऐसे चित्र एवं कैसेट प्रचार कार्य मे बहुत सहायक होगे।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए प्रकाशनार्थ म... [illegible]
एन० पी० प्रिंटर्स (निकट गुरुनानक सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स० २२४१।५७ घोषणा पत्र स ७।२८ २ ८५

मागशीष शुक्ल ६ रविवार सवत २०४४ वि० विनाक २९ नवम्बर १९८७

इस अङ्क के आकषण

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

★

प्रब ध सम्पादक–

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०
साहि याचाय

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश मे	१५ पौंड

★

वष	९०
अङ्क	४६

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का बृहदधिवेशन सम्पन्न

नये वर्ष के लिए सर्वसम्मत निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधियो द्वारा सौहार्दपूर्ण वातावरण में सगठन के प्रति पूर्ण समर्पण का सकल्प



श्री प० इ द्रराज जी



श्री प० मनमोहन जी तिवारी

आय प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का १०२ वा बहदधिवेशन एव निर्वाचन दिनाक १४ एव १५ नवम्बर ८७ को डी० ए० वी० कालेज लखनऊ के प्रागण मे निर्मित भव्य पण्डाल मे सोल्लास एव सौमनस्य के वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

आय प्रतिनिधियो ने नये वष के लिए सगठन के नेतृ व का भार सवसम्मति से श्री प० इ द्रराज जी मेरठ को प्रधान एव श्री प० मनमोहन तिवारी लखनऊ को म त्री पद पर निर्वाचित करके सारा और एक स्वर से सगठन को सुदृढ बनाकर महर्षि दयान द के म त यो के अनुरूप नये समाज के निर्माण की दिशा मे सतत य नशील होने का व्रत लिया।

बहदधिवेशन के खुले सत्र का उदघाटन सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रद्धेय स्वामी आन दबोध जी सरस्वती ने किया। उ होने आय कायकर्ताओ की विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए कहा–आर्यो! तुम्हे सम्पूण विश्व को आय बनाना है यही तुम्हारा एकमात्र ग तव्य और अ तिम लक्ष्य है। ऋषिवर की दी हुई ज्ञानज्योति से सारे विश्व को आलोकित कर दो ससार मे कहीं भी अविद्या पाखण्ड और अज्ञान रहने न पाये तुम्हारे होते हुये–ससार के किसी कोने मे सती प्रथा के नाम पर किसी निर्दोष महिला पर इस प्रकार के अ याचार की पुनरावृत्ति न होने पाये। आज राष्ट्रीय सकट की इस वेला मे तुम्हे सगठित होकर अपनी शक्ति का परिचय देना है। उनके उदबोधन से आय कायकर्ताओ मे नवचेतना का सचार हुआ है।

प्रतिनिधि सभा के सवसम्मत निर्वाचन के लिये आयजनता की शतशत बधाइया और शुभकामनाए।

ले आंख मीच अन्याय देख यह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—मार्गशीर्ष शुक्ल ६ सम्वत् २०४४ रविवार २९ नवम्बर १९८७, दयानन्दाब्द
१६३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८

'समानो मन्त्रः समितिः समानी'

हमारी प्रदेशीय शिरोमणि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का १०२ वां वार्षिक वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन गत १४ तथा १५ नवम्बर को डी० ए० वी० कालेज लखनऊ के सुसज्जित प्रांगण में बड़े ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ। इसमें प्रदेश के कोने—कोने से पधारे हुए आर्य प्रतिनिधि वस्तुतः बधाई के पात्र हैं जिन्होंने राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी मे संगठन के प्रति पूर्ण समर्पित एवं एकनिष्ठ होकर कार्य करने का संकल्प लिया है। सभा की गौरव मयी परम्परा के इतिहास में ऐसी अभूतपूर्व एकता, संगठन के प्रति उत्कृष्टतम निष्ठा, एवं आत्मविश्वास के साथ वैदिक लक्ष्यो की ओर समवेत होकर बढ़ते रहने की अदम्य कामना, प्रशंसनीय ही नहीं अपितु स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है। वातावरण इतना स्नेहपूरित और उल्लासमय था मानो आर्यजनों का उमड़ता हुआ यह समूह अपने प्रिय संगठन के माध्यम से जनसेवा के पवित्र कार्य में बढ़ते रहने के लिए आपादमस्तक आतुर है, कटिबद्ध है। उनके स्वरो मे एक ही गूंज सुनाई दे रही थी—"सभा हमारी है, हम सभा के हैं" "हम शरीर हैं तो वह हमारी प्राण है"। यह वह महान कल्पवृक्ष है जिसे आर्यसमाज के प्रात. स्मरणीय पू० महात्मा नारायणस्वामी जी, स्वामी ध्रुवानन्द जी, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय और आर्य युवक नेता पं० प्रकाशवीर शास्त्री जैसे रहनुमाओं ने अपने खून पसीने से सींचा है। आज इस वृक्ष को फलता, फूलता, लहलहाता देखकर कौन ऐसा आर्य हृदय न होगा जो प्रसन्नता से न उमड़ पड़ता हो। हमारी सभा देश की सर्वोत्कृष्ट प्रदेशीय प्रतिनिधि सभा मानी जाती है स्वयं इस तथ्य को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध जी ने अपने उद्बोधन में स्वीकार किया है।

प्रायः देखने में आता है कि निर्वाचन के समय आपसी मतभेद उभरते हैं। पदलिप्सा हेतु जोड़ तोड़ के प्रयत्न भी होते हैं परन्तु इस अधिवेशन में उमड़ता हुआ सौमनस्य ही सर्वत्र दिखाई दे रहा था। समस्त प्रतिनिधियों ने एक स्वर में प्रदेशीय संगठन के नेतृत्व का भार प्रधान के रूप में श्री पं० इन्द्रराज जी, मन्त्री के रूप मे श्री मनमोहन तिवारी एवं कोषाध्यक्ष के रूप मे श्री यशपाल जी को सौंपा। इसके अतिरिक्त अन्य सभी पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य भी सर्वसम्मति से चुने गये। यह सब आर्यसमाज के प्रति समर्पित निष्ठा का द्योतक है हमारे निर्वाचित अधिकारीगण प्रशासनिक संगठन में दक्ष एवं अनुभवी कार्यकर्त्ता हैं उनके हाथों, हमें विश्वास है, हमारी सभा का भविष्य सुरक्षित तथा उज्वल से उज्वलतर है।

हम अपने पूज्य नेता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के प्रति भी श्रद्धावनत हैं जिन्होंने इस अवसर पर वृहदधिवेशन के खुले अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए बड़े प्रेरणाप्रद स्वरों में कहा—आर्यो, उठो तुम्हें सारे विश्व को आर्य बनाना है यही तुम्हारा लक्ष्य है और यही तुम्हारा गन्तव्य है। महर्षि की दी हुई ज्ञानज्योति से सारे संसार को आलोकित कर दो।

हमें विश्वास है सभा के नवनिर्वाचित अधिकारी गण योजनाबद्ध तरीके से अपने कार्य कौशल्य का परिचय देते हुए सभा को उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर बढ़ाते रहने के अपने संकल्प में सफल होंगे।

★ ★ ★

झलकियाँ वृहदधिवेशन की

सभा का वृहदधिवेशन कई दृष्टियों से अत्यन्त सफल माना जायेगा। डी० ए० वी० कालेज के ओमध्वजमण्डित विशाल पण्डाल मे आर्य नरनारियों का विशाल समूह अपने प्रिय नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के दर्शन के लिए उपस्थित था। जैसे ही स्वामी जी ने सम्मान्य विद्वज्जनो एवं सभा के उच्चाधिकारियो सहित पण्डाल में पदार्पण किया, जनता ने करतलध्वनि एवं पवित्र वैदिक नाद से आकाश गुंजायमान कर दिया।

★ ★ ★

मंच पर प्रसिद्ध आर्य संन्यासी के अतिरिक्त, विद्वद्वरेण्य आचार्य विशुद्धानन्द, सच्चिदानन्द शास्त्री, डा० प्रशान्त कुमार, वेदमर्मज्ञ वयोवृद्ध आचार्य विश्वश्रवाः आदि अनेको गण्यमान्य विद्वज्जन तथा सभा—अधिकारी विराजमान थे। सभा की ओर से, श्रद्धेय स्वामी आनन्द बोध जी ने आचार्य विश्वश्रवाः का सम्मान करते हुए, उन्हे ११००) रु० की सम्मान राशि एवं दुशाला भेंट किया और उनके दीर्घजीवन की कामना की। इस अवसर पर आचार्य जी की मर्मान्तिकवेदना से भरी हुई यह वाणी सुनकर—"हमारे बाद ऋषि की इस ज्योति को अब कौन जलाएगा ·· ··· ··· ···" शतशः सहस्रशः कण्ठ एक स्वर में गूंज उठे—"यह ऋषिवर की ज्योति है, कभी न बुझने वाली है, हम जलायेंगे ······ हम जलायेंगे।

★ ★ ★

प्रतिनिधियों के आवास, भोजन, जलपान आदि की सुन्दर और मनोहर व्यवस्था के लिए सभी सभा मन्त्री का साधुवाद कर रहे थे। उनके गुलाब से हंसते हुये चेहरे को देखकर कोई इस बात का अनुमान नहीं लगा सकता था कि दिन को रात और रात को दिन कर देने वाला, अनवरत प्रबन्ध व्यवस्था में रत, यह व्यक्तित्व, कितना धैर्यशाली एवं आतिथ्य के प्रति श्रद्धासमर्पित है।

★ ★ ★

माहौल चुनाव का था, पर द्वेष, दम्भ, जोड़-तोड़ का नामोनिशां न था, क्योंकि सभा आर्यों की थी, "समानो मन्त्रः" वालों की थी। १४ ता० की यामिनी में, कविसम्मेलन की गोष्ठी ने, श्रुतिमधुरकाव्यरस धारा बहाकर प्रेम और स्नेह की गंगा बहा दी थी। कविता के स्वर बोल रहे थे, ··· ··· उषाकाल तक बोलते रहे ··· · सुनो दुनियाँ वालो, हम आर्य एक हैं, एक रहेंगे। हम सभा के हैं, सभा हमारी है।

★ ★ ★

—इन्द्रदेव पाठक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का पंचसूत्री कार्यक्रम

लेखक – [आचार्य विश्वश्रवा व्यास]
वेद मन्दिर, बरेली (उ० प्र०)

यह हम उस समय का वर्णन कर रहे हैं, जब कांग्रेस का जन्म भी नहीं हुआ था और महात्मा गांधी उस समय कहीं पढ़ रहे होंगे। स्वामी जी ने इस विशाल भारत की आजादी के लिये अकेले ही सघर्ष प्रारम्भ किया। स्वामी जी के समय में भारतवर्ष पजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान, बर्मा, आदि तक एक महान देश था। इतने महान् देश की आजादी के लिये स्वामी जी ने जो प्रोग्राम बनाया, वह इस प्रकार था।

१ स्वामी जी का कहना था कि जब तक इतने बड़े देश में एक धर्म, एक भाषा, एक सस्कृति नहीं होगी तब तक शान्ति नहीं हो सकती। इस अभागी देश को धर्म ने हिन्दुस्तान पाकिस्तान के टुकड़े किये और भाषा ने बगला देश और पाकिस्तान के टुकड़े किये तथा सस्कृति ने धर्मों को अलग किया और आतकवाद फैलाया। अत शान्ति के लिये एक धर्म, एक भाषा एक संस्कृति का होना आवश्यक है।

न यावत भार्षेका न च मनुजधर्मोऽपि एक विषय
विरोध सस्कृत्या न हि भवति पुर्शान्ति कथमपि।
दयानन्दस्येद कथनमिह देशे न हि श्रुतम्,
गतोऽस्मार्यावर्तो पुनिरहृषिभूह पञ्चशकलाम् ॥

अर्थ – जब तक भाषा एक नहीं होगी, मनुष्य का समानधर्म नहीं होगा, समान सस्कृति नहीं होगी, तब तक देश में शान्ति नहीं होगी। महर्षि दयानन्द का यह कहना किसी ने नहीं सुना, अत देश पाँच टुकड़ों में विभक्त हो गया।

२ दूसरा प्रोग्राम स्वामी जी का यह था कि –

विभिन्ना या भाषा दिशि दिशि प्रचार परिगता
कुरु ज्ञान तासां तु ऋषिमतप्रचाराय विबुधा
तथा देशे देशे व्रजत परितांविश्वमधुना
तदार्यं साम्राज्य भवति प्रार्थित स्यात द्रुततरम ॥

अर्थ – नाना देशों में जो भाषायें हैं—उनका ज्ञान प्राप्त करो और उन भाषाओं में उन देशों में जाकर ऋषि के सिद्धान्तो को फैलाओ। इससे ससार के अन्दर जो आर्यों का साम्राज्य है, वह जल्दी हो जायेगा। शायद यह काम स्वामी जी ने श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा के सुपुर्द किया था।

३ तीसरा प्रोग्राम स्वामी जी का यह था कि –

समस्त साहित्य मुनिऋषिकृत भाष्यभिवतो
विनाश सम्प्राप्त श्रुतिरपि च धूर्तैकलुषिता।
पुनर्भाष्य कृत्वा कुरु सकलग्रन्थान् ऋषिमताम्
दयानन्दस्वामि कथयति च सर्वान् बुधवराम् ॥

अर्थ – समस्त वैदिक साहित्य भाष्य करके नाश को प्राप्त कर दिया गया है और धूर्तो ने उल्टे भाष्य करके वेदो को भी कलुषित कर दिया है। अत समस्त ग्रन्थो का फिर से भाष्य करो जिससे वे ऋषियों के सिद्धान्तों के अनुसार ठीक प्रतीत हों– यह स्वामी दयानन्द सब विद्वानों से कह रहे हैं। इस काम मे स्वामी जी ने अपना सहयोगी भीमसेन शर्मा इटावा वालो को बनाया।

४ चौथा प्रोग्राम स्वामी जी का यह था कि –

या इक्ष्वाकुवश्या रविशशिकुला राजतनया
विराजन्ते लोके कुरुत प्रणय तैर्सविनयम्।
अमीषां पूर्वेषां स्मृतिपथमुपयातमधुना
यश पुंज पुण्य प्राचीनतम ऐतिह्य जगति ॥

अर्थ – ससार के प्रथम राजा इक्ष्वाकु की परम्परा में जो सूर्यवशी और चन्द्रवशी राजा हुए हैं– उनकी सन्तान जो इस समय विराजमान हैं, उनके साथ विनयपूर्वक प्रेम करके सम्बन्ध स्थापित करो। ऐतिहासिक जगत में उनके पूर्वजों का जो यश है, वह उन्हें याद दिलाओ। इस काम को स्वामी जी स्वय कर रहे थे।

५ स्वामी जी का पाँचवाँ प्रोग्राम था –

न भाषाविज्ञान न च भुवि कालमार्क्स सरणि
न हितार्थं लोकाना नहि नहि डार्विन मतमपि।
न वास्त्वोर्विज्ञान जन-जन विनाशाय हि च तत्
कुविज्ञान्येतानग्निविनिवाधान् परिहर ॥

अर्थ – भाषा विज्ञान, कालमार्क्स की थ्योरी, डार्विन का मत, वास्तुविज्ञान– ये सब ससार के हित के लिये नहीं हैं। ये कुविज्ञान हैं, इनको समाप्त करो।

तदा सर्वं कर्तु स्वयमपि प्रवृत्तो महऋषि
तथा भीमाद्योन्यानापि स कृतवान् कार्यनिरतान्।
जगन्नाथो धूर्तो यवनसहिता चापि नर्तिका
महर्षे स्वर्याने कुटिलमतिषु पश्य सफला ॥

अर्थ – इन सब पचसूत्री प्रोग्राम को स्वामी जी ने स्वय करना प्रारम्भ किया, भीमसेन शर्मा आदि को कार्य पर लगाया, किन्तु धूर्त जगन्नाथ, अली मर्दान खा और वेश्या नन्ही जान के कारण कुटिलमतियों की चालें सफल हुई और स्वामी जी स्वर्ग सिधार।

महर्षौस्वर्याते दिशि दिशि प्रयातास्तदनुगा
गता ईश्वर अल्लामत अथ च भीता जनगणा।
तटस्था सजाता ऋषिवरनुभक्ता नृपतय
तथा भाईभीमप्रभृतय इतो निष्कासितपर ॥

अर्थ – महर्षि के स्वर्ग सिधारने के बाद उनके अनुयायी भिन्न भिन्न दिशाओ मे चले गये, कुछ ईश्वर-अल्ला मत (कांग्रेस) मे प्रविष्ट हो गये, कुछ डरे हुए लोग जनसभा मे चले गये, ऋषि की भक्ति करने वाले राजा लोग तटस्थ हो गये तथा भाई परमानन्द जी तथा भीमसेन शर्मा आदि आर्य समाज से निष्कासित कर दिये गये।

समाप्त तद् सर्वं यदपि ऋषिणा भाषितवर
समाजश्चार्याणा अनुकृतवन् ईशोमतमयम्।
समाजे सर्वस्मिन्नुपकृतिपर कार्यनिवह
समाजो चर्चो वा न हि किमपि भिन्न द्वयमपि ॥

अर्थ – ऋषि ने जो भी कहा था, वह सत्य समाप्त हो गया। आर्यों के समाज ने ईसाई मत का अनुकरण किया। समाज में सब जगह उपकार परक कार्य किये जाने लगे, समाज में और चर्च में कुछ भी अन्तर शेष नहीं रहा।

क्वचित् डिस्पेंसर्या क्वचिदपि रीडिंगगृहमपि
समाचार सर्वं पठतु जनता दैनिक मपि।
क्वचित् सिलाईस्कूल क्वाचिदपि मसाजागृहमपि
अनाथानां स्त्रीणां कथमपि च न्यायभवनमपि ॥

[शेष पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ तीन का शेष]

अर्थ :– (समाजों में) कहीं डिस्पेंसरियां खुल गईं, कहीं रीडिंग-रूम खोले गये, कहीं जनता के पढ़ने के लिये दैनिक समाचार पत्रों का प्रबन्ध किया गया, कहीं सिलाई स्कूल खोले गये, कहीं अनाथालय खोले गये, कहीं अनाथ विधवा स्त्रियों के लिये धनार्जन की व्यवस्था की गई।

महाकूपे भंग न हितकर श्रोता हितजनः
त्वमायाः हे स्वामिन् पुनरपि यथार्थं कथयितुम्।
त्यजन्तां ते भक्ताः उपकृतिपराम् कार्यनिवहाम्
भवेयुः संलग्नाः तवकथित कार्येष्वभिरताः॥

अर्थ :– पूरे कुंए में ही भांग पड़ी हुई है, श्रोताओं के हित की बात कहने वाला कोई नहीं रहा। हे स्वामी (दयानन्द सरस्वती) यथार्थ बात को कहने के लिये तुम फिर आओ, ताकि तुम्हारे भक्त (तथा-कथित) उपकार वाले कार्यों को छोड़कर तुम्हारे द्वारा बताये गये कार्यों में लग जावें।

विहायालस्यं स्वं कुरुत यवनान् आर्यमतिषु
मतिं शिष्याणाम् वधुः न गुरवः आसन् ऋषिद्रुहः।
प्रभुर्बुद्धिं दद्यात् पुनरपि समाजं कथमपि
सर्वे स्युः संलग्नाः स्वमतनिजदेश प्रतिहरः॥

अर्थ :– अपने आलस्य को छोड़कर यवनों को आर्यबुद्धि वाला बनाओ। शिष्यों को यह बुद्धि दो कि गुरु लोग (शिष्यों के वस गुरु) ऋषियों से द्रोह करने वाले नहीं थे। भगवान इस समाज को फिर किसी तरह से बुद्धि दें– सभी लोग अपने देश की दुरवस्था को दूर करने में लग जायें।

अनार्या वर्धन्ते न नयमवन्तो अत्र जगति
ऋषीणां देशेऽस्मिन् प्रतिदिवसमेते बहुतराः।
समाजस्त्वार्याणां भवति ऋषिकार्येष्वभिरतः
तथाह्यार्यावर्तो भवतु ऋषिदेशः पुनरपि॥

अर्थ :– इस संसार में नीति का पालन न करने वाले अनार्य बढ़ते जा रहे हैं; ऋषियों के इस देशमें उनकी संख्या प्रतिदिन अधिक होती जा रही है। आर्यों का यह समाज ऋषि के कार्यों में लग जावें और यह आर्यावर्त पुनः ऋषियों का देश हो जाये।

दयायाः आनन्दो विलसति परः स्वात्मविदितः
सरस्वत्यग्रे विलसति मुदा वेदमननात्।
श्रुतीनां उद्धर्ता सकल जन मान्यो गुरुवरः
दयानन्दस्वामि जयतु सुचिरं विश्व जगति॥

अर्थ :– अपनी और दूसरों की आत्मा को जानने वाला दया का आनन्द शोभायमान हो रहा है। वेदों का मनन करने के कारण इसके आगे सरस्वती प्रसन्नतापूर्वक विराजमान है। दयानन्द स्वामि वेदों के उद्धारक हैं, सभी व्यक्तियों द्वारा स्वीकृत श्रेष्ठ गुरु हैं, इस समस्त संसार में चिरकाल तक उनकी जय हो।

भारत पर हमला करने से पाक का विश्व से नामोनिशान मिट जायेगा

आर्य समाज की स्थापना शताब्दी समारोह में आनन्द बोध सरस्वती का भाषण

शाहजहांपुर २ नवम्बर। आर्य समाज तिलहर की स्थापना शताब्दी समारोह में आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्यसभा के अध्यक्ष स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि यदि पाकिस्तान ने भारत पर हमला करने का प्रयास किया तो विश्व के नक्शे से पाकिस्तान का नामोनिशान ही मिट जायेगा।

उन्होंने कहा कि यदि पाकिस्तान अणुबम बनाने के योग्य हो जाता है तो उसे इसराइल अपने लिए खतरा मानते हुए पहले ही नष्ट कर देगा।

आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि सीमाओं पर हमारी सेनायें प्रत्येक स्थिति का मुकाबला करने के लिए सक्षम हैं। आर्य समाज देश के अन्दर किसी भी प्रकार की विघटनी स्थिति का सामना करने के लिए प्राण-प्रण से तैयार है।

स्वामी जी ने कहा कि यदि कांग्रेस ने राज गोपालाचार्य की बात मान ली होती तो आज भारतवर्ष का नक्शा ही कुछ और होता भारत का विभाजन कदापि नहीं होता।

उन्होंने सती प्रथा के सम्बन्ध में पुरी के शंकराचार्य द्वारा दिये गये वक्तव्य की भर्त्सना करते हुए चुनौती दी कि यदि शंकराचार्य मे अपनी बात कहने का साहस है तो वह हमें बतायें कि वेद सहित कौन से शास्त्रों में सती प्रथा का निरूपण किया गया है।

समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप मे बोलते हुए मारीशस से पधारे प्रह्लाद राम शरण ने आर्य समाज तिलहर के संस्थापक मुन्शी चिम्मन लाल वैश्य को याद करते हुए बताया कि जब मेहता जैमिनी मारीशस से वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु भारत से जो पुस्तकें प्रचुर मात्रा में ले गये और उन पुस्तकों को जब अन्वेषण की दृष्टि से देखा गया तो उसमें एक पुस्तक नारायणी शिक्षा नाम की निकली जो कि मुन्शी चिम्मन लाल की लिखित है। तब मुझे यह जानने की आकांक्षा हुई कि भारतवर्ष में तिलहर कहां और कैसा है।

हिसार से आये पं० जय प्रकाश आर्य ने कहा कि आज देश में धर्म निरपेक्षता एवं राष्ट्रीय सद्भावों के नाम पर हिन्दुओं को दबाया जा रहा है और सरकार मुसलमानों को अलगवाद का नारा बुलन्द करने का अवसर दे रही है।

आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के प्रधान पं० इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने मेरठ के हाल ही में हुए दंगों की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि सरकार की कमजोर नीतियों एवं अदूरदर्शिता के कारण ही वहां की प्रशासनिक लापरवाही से इतना बड़ा काण्ड हो गया। इस वीभत्स स्थिति में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने मेरठ के अन्दर अपने प्राणों को जोखिम में डालकर जो राहत कार्य किये उसे सारे मेरठवासी तथा प्रदेशवासी जानते हैं।

समारोह का पहले दिन उद्घाटन स्वामी मुक्तानन्द जी सरस्वती ने ध्वजारोहण से किया। राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के अन्त में श्री बृजनन्दन प्रसाद शर्मा जी प्रधान आर्य समाज तिलहर ने संक्षेप में आर्य समाज तिलहर के कार्य कलापों का विवरण प्रस्तुत करते हुए धन्यवाद दिया। शताब्दी समारोह में राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के अतिरिक्त शिक्षा सम्मेलन महिला सम्मेलन भी आयोजित हुए।

समान नागरिक संहिता (इण्डियन कोडबिल) बने—

धारा ३० समाप्त करके शिक्षा संस्थाओं को स्वायत्तता दी जाये

सती प्रथा सर्वथा वेद विरुद्ध

जैसलमेर से कश्मीर तक सीमा पट्टी कायम करके ४१ लाख भू.पू. सैनिक परिवारों को बसाया जाय पट्टी की सुरक्षा व्यवस्था सेना को सौंपी जाये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की पत्रकार सम्मेलन में स्पष्ट वार्ता

[निज सम्वाददाता द्वारा]

लखनऊ—आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का १०२वां वृहदधिवेशन दिनांक १४ एवं १५ नवम्बर को डी०ए०वी० कालेज लखनऊ के प्रांगण मे निर्मित भव्य पण्डाल मे सुसम्पन्न हुआ। जिसमे प्रदेश के विभिन्न अंचलो से पधारे लगभग २५०० नर-नारियों ने सोल्लास भाग लेकर अपने सुसंगठन का परिचय दिया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ दोनो ही दिन प्रातः ७-३० से ९-३० तक बृहद् यज्ञ एवं सत्संग से किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य देवव्रत अवस्थी थे। यज्ञ के अनन्तर आचार्य अवस्थी के अतिरिक्त आचार्य सुरेशचन्द्र वेदालंकार गोरखपुर, डा० रघुवीर शास्त्री अलीगढ़ के प्रवचन हुये।

१४-११-८७ को प्रात. १०-३० बजे से अन्तरंग सभा की बैठक एवं मध्यान्होत्तर ठीक ३ बजे से खुला अधिवेशन सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्रद्धेय स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में उनके ओजस्वी सम्बोधन के साथ आरम्भ हुआ। रात्रि में ९ बजे से कवि सम्मेलन भी स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में आरम्भ होकर प्रातः ४ बजे तक चलता रहा जिसमें कवियों की ओजस्वी रचनाओं ने श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। सम्पूर्ण रात्रि पण्डाल खचाखच भरा रहा। सम्मेलन का संयोजन सभा के वरिष्ठ उपमन्त्री श्री जयनारायण अरुण ने किया।

१५-११-८७ को सत्संगोपरान्त ११ बजे से बृहदधिवेशन का दूसरा सत्र आरम्भ हुआ जिसमे नये वर्ष के लिए पदाधिकारियों का निर्वाचन सर्वसम्मति से बड़े ही सौहार्दपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत् के वयोवृद्ध विद्वान् आचार्य विश्वश्रवा: का अभिनन्दन किया गया। सभा के पदाधिकारियो ने माल्यार्पण करके उनका अभिनन्दन किया। श्रद्धेय स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने सभा की ओर से ११००) की राशि एवं शाल देकर उन्हे सम्मानित किया।

निर्वाचन कार्यक्रम में प्रदेश से आये ९२० प्रतिनिधियों ने भाग लेकर संगठन के प्रति अटूट आस्था प्रकट की।

पत्रकार सम्मेलन

ठीक १२-३० बजे एक पत्रकार सम्मेलन हुआ जिसमें सभी समाचार पत्रो के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और खुलकर स्वामी जी से प्रश्नोत्तर किये। स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने पत्रकारों के समक्ष स्पष्ट घोषणा की कि संविधान में धारा ३० के माध्यम से सरकार हमारी शिक्षण संस्थाओं में हमारे सिद्धान्तो के विरुद्ध विचारो वाले अध्यापक अध्यापिकायें रखने को विवश करती है। आर्य शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के मूल मे विशुद्ध वैदिक संस्कृति का प्रचार प्रसार नैतिक शिक्षा भारतीय दर्शन का पुन प्रतिष्ठापन एवं अन्धविश्वास का समापन उद्देश्य था परन्तु इस धारा के माध्यम से हमारे मूल उद्देश्य पर प्रहार किया जा रहा है जबकि इसके सहारे मे मुस्लिम, ईसाई शिक्षण संस्थाओं को अपने मत मतान्तरों के प्रसार के लिए अपने मनोनुकूल नियुक्तियों का पूर्ण अधिकार प्रदान किया जाता है। पी-एल० ४८० के माध्यम से अरब देशो से प्राप्त पेट्रो डालर की सहायता से ये संस्थायें धर्मान्तरण का पुरजोर प्रयत्न करती है वैदिक संस्कृति के विरुद्ध अपनी संस्थाओं के माध्यम से वे अपने धर्म प्रचार में रत हैं अतः हमें अपने सिद्धान्तों के अध्यापक नियुक्त करने का अधिकार दिया जाये या यह धारा ही समाप्त करके स्वायत्तता दी जाये। इसी सन्दर्भ में श्री मोरारजी देसाई जब प्रधानमन्त्री थे तब, स्वामीजी ने बताया कि उन्होंने एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ उनसे मिलकर इस धारा का विरोध किया था तो मुरार जी ने कहा था कि मुझे तो इसका ज्ञान ही नहीं था हम शीघ्र ही इस पर विचार-विमर्श करके इसे हटायेंगे परन्तु वे उसके बाद अधिक दिन प्रधान मन्त्री रहे ही नहीं।

पत्रकारो ने पंजाब समस्या पर उनके विचार पूछे—स्वामी जी ने कहा कि मेरा स्पष्ट विचार है कि जैसलमेर से कश्मीर तक एक सीमा पट्टी बनाकर उसमे ४१ लाख भूतपूर्व सैनिको के परिवारों को बसाया जाये और उन्हें सुरक्षा व्यवस्था सौंप दी जाये। पंजाब में राष्ट्रपति शासन का स्वागत करते हुए स्वामी जी ने कहा कि राष्ट्रपति शासन समस्या के पूर्ण निदान होने तक रखा जाना चाहिए।

राम जन्म भूमि को पुरातत्व विभाग को सौंपने के सम्बन्ध में पत्रकारो ने स्वामी जी के विचार पूछे—स्वामी जी ने स्पष्ट कहा—पुरातत्व विभाग को सौंपने का प्रस्ताव सर्वथा अनुचित है-रामजन्म भूमि हिन्दुओं की है उन्हे ही सौंपी जानी चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि श्री जाकिर हुसेन जब राष्ट्रपति थे उन्होंने राष्ट्रपति भवन में मस्जिद बनानी चाही थी इन्दिरा जी तैयार हो गयीं परन्तु स्वामी जी के प्रबल विरोध से वह मस्जिद न बनायी जा सकी थी।

स्वामी जी ने हिन्दू कोड बिल के स्थान पर इण्डियन कोड बिल (समान नागरिक संहिता) बनाये जाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि शाहबानो केस में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद मुसलमानों

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सती-प्रथा वेदविरुद्ध है
विधवा जीवलोक में ही रहे
चाहे तो पुन:विवाह कर सकती है

—डा० रामनाथ वेदालङ्कार वेदमन्दिर, ज्वालापुर (हरिद्वार)

चतुर्वेदभाष्यकार सायण ने चारों वेदों में से केवल अथर्ववेद के एक मन्त्र में सती प्रथा के समर्थन करने का प्रयास किया है, जिसमें वह पूर्णत असफल रहा है। वह मन्त्र निम्नलिखित है–

इयं नारी पतिलोकं वृणाना
निपद्यत उप त्वा मर्त्य प्रेतम् ।
धर्मं पुराणम् अनुपालयन्ती
तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि ॥ अथर्व १८।३।१

इस मन्त्र का सामान्य अर्थ यह है– [इयं नारी] यह नारी, [पुराणं धर्मम् अनुपालयन्ती] पुरातन धर्म का पालन करती हुई [पतिलोकं वृणाना] पतिगृह को पसन्द करती हुई [मर्त्य] हे मरण-धर्मा मनुष्य! [प्रेतं त्वा] तुझ मृत के [उप] समीप [निपद्यते] नीचे भूमि पर बैठी हुई है। (तस्यै) उसे (प्रजाम्) सन्तान (द्रविणं च) और सम्पत्ति (इह) यहां [धेहि] सौंप।

पति की सन्तान और सम्पत्ति विधवा की

जिस स्त्री के पति की मृत्यु हो गई है, उसके लिए यह स्वाभाविक है कि वह शोक विह्वल होकर मृत पति के पास बैठी हो। मन्त्र में उसके लिये पुरातन वेदानुमोदित धर्म यह बतलाया गया है कि वह मृत पति के शव को छोड़कर पतिलोक में रहे। वेद में पतिलोक से पतिगृह तथा पितृलोक से पितृगृह अभिप्रेत होता है। अथर्व वेद के विवाह सूक्तों में पतिलोक और पितृलोक इन्हीं अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं, यथा–'शिवा स्योना पतिलोके विराज' (अ० १४।१।६४)। उशती कन्यला इमा पितृलोकात् पतिं यती अ० १४।२।५२ "अपनी विधवा पत्नी को सन्तान और सम्पति सौंप' यह कहने का अभिप्राय यह है कि पति की सन्तान और सम्पत्ति पर उसकी विधवा पत्नी का ही अधिकार होगा।

सायण की लीला

अब सायण की लीला देखिए। उन्होंने इस मन्त्र का अर्थ सहमरण परक किया है, जो हास्यास्पद प्रतीत होता है। सायण का अर्थ इस प्रकार है—"यह नारी अनादि शिष्टाचार सिद्ध, स्मृति–पुराण आदि में प्रसिद्ध सहमरणरूप धर्म का परिपालन करती हुई, पतिलोक को अर्थात् जिस लोक में पति गया है उस स्वर्गलोक को वरण करना चाहती हुई तुझ मृत के पास सहमरण के लिये पहुंच रही है। अगले जन्म में तू इसे पुत्र-पौत्रादि प्रजा और धन प्रदान करना।"

सायण कहते हैं कि सहमरण के प्रभाव से अगले जन्म में भी उसे वही पति मिलेगा, इसलिए ऐसा कहा गया है।

पाठक देखें कि सहमरण को वेदोक्त सिद्ध करने के लिये सायण को कितना प्रपंच रचना पड़ा है। प्रथम तो 'पतिलोक' का वेद-प्रसिद्ध अर्थ छोड़कर स्वर्णलोक अर्थ किया, फिर पुराण धर्म से स्मृति–पुराणादि में प्रोक्त धर्म का ग्रहण किया। भला 'पुराण धर्म' से स्मृति–पुराणादि प्रसिद्ध धर्म का ग्रहण कैसे हो सकता है, क्योंकि स्मृति-पुराणादि तो वेदों के बाद बने हैं। कोई ग्रन्थ अपने परवर्ती साहित्य का हवाला कैसे दे सकता है। पुराण धर्म का अभिप्राय 'अनादिकाल से चला आ रहा शिष्ट जनसम्मत धर्म' ही लेना चाहिये। फिर मृत पति चिता में भस्म हुई पत्नी को सन्तान और धन कैसे देगा, इसके लिए कल्पना करनी पड़ी कि जन्मान्तर में भी उसे वही पति मिलेगा। पर मन्त्र में तो 'इह' शब्द है जिससे सूचित होता है कि इसी जन्म में पत्नी को संतान और संपत्ति प्राप्त होनी है।

सती–प्रथा सम्बन्धी एक श्लोक

मृत पति के साथ चिता में जलकर मर जाना ही स्मृति-पुराणादि प्रसिद्ध धर्म है यह सिद्ध करने के लिए सायण ने एक श्लोक भी उद्धृत किया है, जिसका पता उन्होंने नहीं दिया।

भर्तारम् उद्धरेन्नारी प्रविष्टा सह पावकम् ।
व्यालग्राही यथा सर्पं बलाद् उद्धरते बिलात् ॥

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सभा के वार्षिक निर्वाचन, १५ नव० ८७ में निर्वाचित पदाधिकारियों की सूची

प्रधान–श्री प० हंसराज जी, १२१५, गौहरीपुरा–निकट ओडियन सिनेमा मेरठ–

उप प्रधान–१–श्रीमती सन्तोष कपूर, एम० एल० सी० मिर्जापुर–

उप प्रधान–२–श्री धर्मेन्द्रसिंह आर्य, १२।१–भगवान दास क्वार्टर्स देहरादून–

उप प्रधान–३–श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली–

उप प्रधान–४–श्री आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री, आनन्द मन्दिरम् कूचा पाती बदायू–

मन्त्री– श्री मनमोहन तिवारी, ६–पुराना गनेशगंज, लखनऊ–

उपमन्त्री–१–श्री जयनारायण अरुण, प्रसाद कुञ्ज–सिविल लाइन्स बिजनौर–

उपमन्त्री–२–श्री डा० विनयप्रताप, आर्य समाज बक्शीपुर गोरखपुर–

उपमन्त्री–३–श्री श्रीचन्द गौड़, आर्य समाज–ज्वालापार सहारनपुर–

उपमन्त्री–४–श्री वीरेन्द्रपाल आर्य, ११६, सुनार गली बुलन्दशहर–

कोषाध्यक्ष–श्री यशपाल आर्य, आर्य वस्तु भण्डार, देहरादून

स० कोषाध्यक्ष–श्री चन्द्रकिरण शर्मा, नगला अब्बू (गाजियाबाद)

पुस्तकाध्यक्ष–श्री विजयपाल शास्त्री, आर्य समाज–मेस्टन रोड, कानपुर –

स० पुस्तकाध्यक्ष–श्री वीरेन्द्र आर्य, आर्य समाज–अमरोहा–

आय–व्यय निरीक्षक–श्री रोशनलाल आर्य, आर्य समाज–आगरा–

मनमोहन तिवारी मन्त्री

विचार–विमर्श

वेद समस्त विद्याओं से विभूषित हैं

(–पण्डिता डा० प्रज्ञादेवी, वाराणसी—)

पिछले वार मैंने वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति पू० पू० कुलपति गुरुकुल कांगड़ी द्वारा तीन भागों में लिखित 'वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त' ग्रन्थ पर "क्या वेदों के आधिदैविक अर्थ उपेक्षणीय हैं।" शीर्षक से एक समालोचनात्मक लेख लिखा था। लेख अभी प्रकाशित नहीं हो पाया और इसी बीच मुझे जुलाई मास के कलकत्ता आर्य समाज से प्रकाशित 'आर्य संसार' पत्रिका को देखकर एक सुखद आश्चर्य हुआ। श्री रामकृष्ण जी आर्य शोध-छात्र ने इस ग्रन्थ पर "क्या वेद केवल राजनीतिक सिद्धान्तों के ही हैं" शीर्षक से कुछ शंकायें व्यक्त की हैं जो उचित हैं। वेद मन्त्रों के अर्थों की सीमा बाँध देना उसकी व्यापकार्य को समाप्त करना है क्योंकि वेद के सभी शब्द यौगिक हैं अतः वेद के शब्दों के प्रकरण भेद से अनेक अर्थ होते हैं 'आर्य संसार' के सम्पादक श्री पं० उमाकान्त जी उपाध्याय जी श्री रामकृष्ण आर्य के लेख के शीर्षकसे तो सहमत हैं पर लेख से नहीं उन्हें ग्रन्थके तत्तत् स्थलों को तो अवश्य देखकर अपनी टिप्पणी व्यक्त करनी चाहिए थी जिन स्थलों पर श्री रामकृष्ण जी को शंका या आपत्ति है। किसी शोध छात्र को समस्या का असली समाधान करते हुए उत्साह बढ़ाना भी तो अपना कर्त्तव्य है। मुझे आश्चर्य है कि श्री प० उपाध्याय जी ने इस ग्रन्थ के तीनों भागों में से जितने पृष्ठों का अध्ययन किया है उसमें से वे स्थल अछूते कैसे रह गये कि जो समालोच्य कोटि में आ सकते हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्बन्ध में प्रथम बात तो यह है कि इस ग्रन्थ की सामग्री को देखते हुये यह कहा जा सकता है कि इसके तीन भागों में फैले विशालकायत्व को अधिक से अधिक दो भागों में रखा जा सकता था। श्री आचार्य जी एक ही मन्त्र की प्रसंगतः अनेकत्र आया है की व्याख्या प्रायः सर्वत्र सविस्तर करते जाते हैं। तद्यथा–"आ त्वाहार्षम्" (अथर्व–६–८७–१) "इहैवेधि माषच्योष्ठाः" (अथर्व–६–८७–२) मन्त्रों की व्याख्या प्रथम भाग में सात बार सविस्तर आयी है। "सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय" (अथर्व ८–४–१२) मन्त्र की सविस्तर व्याख्या ५६४ पृ० में करने के पश्चात् पुनः १३ पृष्ठों के बाद ही उसी प्रकार सम्पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करते हैं जब कि ऐसे स्थलों में पूर्वकृत व्याख्या सन्दर्भ को फुटनोट में देकर भी काम चलाया जा सकता था।

ग्रन्थ में एक ही विषय की अनेकत्र आवृत्ति भी बहुत बार हुई है। तद्यथा—"राजा के चुनाव के अधिकार' प्रकरण [पृ० ११६] में कही हुई समस्त बातें पुनः 'राज्याभिषेक' प्रकरण [पृ० ५८७] में दोहराई गई हैं।

ग्रन्थ में कभी-कभी किसी छोटे से विषय के प्रतिपादन के लिये एक बहुत बड़े व्यूह–रचना के ढङ्ग से ऐसा रूपक बांधा गया है कि प्रतीत होता है जैसे वेदार्थ में आये किसी महान् विभ्रम का निवारण किया जा रहा हो किन्तु परिणाम हल्का सा देखकर चकित होना पड़ता है। तद्यथा–दास एवं दस्यु शब्द की विवेचना पर भाग २ के ३४८ से ३५० पृष्ठ तक देखे जा सकते हैं जहाँ दस्यु और दास को पर्यायवाची समझना भारी भूल है यह बड़े वटाटोप से प्रतिपादित किया गया है और अन्त में उसी दास शब्द की "यः दस्यति स दासः; यः दस्यते स दासः" ऐसी कर्त्ता और कर्म में व्युत्पत्ति करके दास शब्द से ही दस्यु अर्थ भी सिद्ध कर दिया गया है। ऐसे विवेचन ग्रन्थ में बहुत हैं।

ग्रन्थ में कहीं-कहीं विषयों एवं उपविषयों का चुनाव एक जैसा ही हो गया है जिससे कथ्य वस्तु भी प्रायः एक ही हो गई है। उदाहरण के लिये भाग १ पृ० २०४ में "स्त्रियां राजा भी चुनी जा सकती हैं" उपविषयों को देखें। एक विषय को एकत्र संगृहीत न कर देने से भी ग्रन्थ का सौन्दर्य घटने के साथ-साथ पाठकों के लिए भी असौविध्य कतिपय स्थलों में होता है। उदाहरणार्थ—भाग २ पृ० १०६ में "यज्ञों में पशुवध वेद विरुद्ध है" तथा इसी भाग पृ० ३७२ में "यज्ञों में हिंसा वेद विहित नहीं" ये दो उपविषय बनाये हैं जब कि दोनों का विषय एकत्र ही संगृहीत हो सकता था।

अब मैं इस ग्रन्थ पर कुछ अन्य बातें ऐसी प्रस्तुत करती हूं कि जिनका सैद्धांतिक महत्त्व विशेष है—मुझे समझ में नहीं आता कि श्रद्धेय आचार्य जी वेद के यौगिकवाद के सम्बन्ध में अर्द्धजरतीय न्याय क्यों स्वीकारते हैं? वेद में सर्वत्र यौगिकवाद को स्वीकार कर लेने से आखिर कौन सी कठिनाई उपस्थित हो जा रही है जिसके लिए वे लिखते हैं—"हम सर्वत्र ही बिना हेतु के यौगिकवाद का सहारा नहीं लेते हैं। दयानन्द के अनुयायी यौगिकवाद का वहीं आश्रयण लेते हैं जहाँ वैसा करने से चमत्कार उत्पन्न होता ....अतः हमें यहां नर का रूढ़ अर्थ मनुष्य ही करना चाहिये।" [देखें भाग ३ पृ० १९] पाठक देखें कि मन्त्रों में नरः शब्द का अर्थ मनुष्य ही है और कुछ नहीं इसको सिद्ध करने के लिये भी आचार्य जी वेद के मकाट्य सिद्धान्त यौगिकवाद को भी झटक दे रहे हैं। अपने अभीष्ट अर्थ को सिद्ध करने हेतु वेद को सीमित अर्थ में बांध देना कितना अनुचित है यह समझने की बात है।

वेद में मरुत् शब्द के 'वातत्विषः' (ऋ० ५-५७-४) आदि विशेषणों के होते हुए मरुत् शब्द का जल कणों की विद्युद्युक्त रश्मियां अर्थ भी क्यों नहीं हो सकता? केवल इस सूक्त में 'नर' शब्द को देखकर मनुष्य ही अर्थ क्यों हो सकता है? इसका समाधान आचार्य जी के पास क्या हो सकता है? आखिरनरः शब्द को रूढ़ार्थ मानकर और अर्थों में रोक लगा देने से क्या उपलब्धि सिद्ध हो रही है? ज्ञान विज्ञान परक अर्थ देना तो वेद की विशेषता है इसको हम कैसे खो सकते हैं अतः अग्नि शब्द का यही अर्थ हो सकता है, मरुत् का यही अर्थ हो सकता है, इन्द्र का केवल यही अर्थ है यह कथन बुद्धि में नहीं बैठता।

श्री आचार्य जी भाग १ पृ० १६२ पर पाञ्चजन्य शब्द पर बड़े विस्तार से लिखते हैं कि "कतिपय जन पांचवां जन का निषाद अर्थात् दुष्ट दस्यु ऐसा अर्थ करते हैं वह कदापि नहीं हो सकता। जो ऐसा अर्थ करते हैं वह उनकी भूल है।" यहां भी आचार्य जी का प्रतिपाद्य यह है कि पांचवे जन का अर्थ दुष्ट और दस्यु नहीं किन्तु अपने प्रतिपाद्य से भिन्न आचार्य जी यहाँ यह भी लिख देते हैं कि यास्क ने भी निरुक्त में 'निषण्णमस्मिन् पापकमिति' ऐसा लिखकर निषाद का अर्थ धर्म–मर्यादा भंग करने वाला पापी किया है।" भला बताइये! आचार्य जी का कथन है कि पांचवें जन का अर्थ दुष्ट दस्यु नहीं अतः उसे निषाद के पर्याय के रूप में न लिया जाये पर यास्क ने निषाद शब्द की व्युत्पत्ति

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वेद समस्त विद्याओं से विभूषित हैं

(पृष्ठ ७ से आगे)

वाणी के क्रम मे की है इससे आचार्य जी को क्या ? अनावश्यक यास्क महर्षि को क्यों यहां लाया गया ?

श्री आचार्य जी प्रथम भाग की अपनी भूमिका पृ० १८ में धड़ल्ले से लिखते हैं कि "चन्द्रमा एक सूखा पिण्ड है उसमें न वायु है न जल है। जल और वायु के बिना न तो कोई प्राणी ही जीवित रह सकता है और न कोई वनस्पति ही उग सकती है इसी भांति सूर्य मे भी कोई प्राणी नहीं रह सकता........सूर्य मे या तो पिघला हुआ उत्तप्त पदार्थ है या उत्तप्त गैसें.......।" वस्तुतः इसे वेदो पर आये अधुनातन विज्ञान का संकट ही कहना चाहिये कि जिसके कारण वेद और वैदिक साहित्य के प्रमाणों को हम एक ओर ताक पर रखकर ऐसा कहने लगें कि आज का विज्ञान मानता है कि सूर्य मात्र गैस का गोला है "तो वह गैस का गोला है।" अधुनातन विज्ञान कहता है कि चन्द्रमा में न जल है न वायु वह एक सूखा पिण्ड है "तो वह एक सूखा पिण्ड है।" यह सत्य है कि वैदिक प्रमाणो के आधार पर सूर्य मे अग्नि के साथ वायु और जल का समावेश भी है और तभी "अपां गम्भन् सीद" (यजु० १३-३० की व्याख्या में शतपथ ब्राह्मण में कहा—"एतद् ह अपां गम्भिष्ठं यदेष एतत् तपति" (श० ब्रा० ७-४-२-८) ऋ० १।१६४।४७ मे—"कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत्पतन्ति" कहा है जिका अर्थ यही है कि जल के वस्त्र ओढ़े हुए रश्मियां द्युलोक की ओर उड़ जाती हैं। ब्राह्मण ग्रन्थ कहते हैं कि आदित्य के मध्य का भाग उसका जलीय अंश है। इसी प्रकार चन्द्रमा के लिये "चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्" (तै० आ १।२२।१) में कहा है। निरुक्त टीकाकार दुर्ग ने भी "अम्मयं हि चन्द्रमसो मण्डलम् (निरु० २।६) कहा। इन अनेकों प्रमाणों से सिद्ध होता है कि चन्द्रमा मे जलीय अंश हैं। मै यहां पर उन सभी प्रमाणो को उद्धृत नहीं कर पाऊंगी किन्तु यह अवश्य कहना चाहूंगी कि महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में सूर्य और चन्द्र लोक में प्रजा होना बताया है तो आचार्य जी "वहा कोई प्राणी जीवित नहीं रह सकता" अपने इस कथन से ऋषि दयानन्द के कथन का स्पष्ट खण्डन नहीं कर रहे क्या ? यह बहुत बड़ी भूल है ऐसे विषयो मे तत्काल निर्णय सुनाना अत्यन्त अनुचित होता है। महाभाष्यादि में अब्भक्षः वायुभक्षः, साग्नि कपोतः आदि उदाहरण इस बात को सिद्ध करते हैं कि ऐसे भी जीव हैं जिनका भोजन ही वायु हैं या जल है या अग्नि है क्योंकि उनके अन्दर उस तत्व की अधिकता है पुनः उन लोकों में जीव हों इसमें क्या सन्देह ? हमें गम्भीरता से ऐसे विषयों पर अनुसंधान करना चाहिये किन्तु तत्काल ऐसा निर्णय उपस्थित नहीं करना चाहिये जिससे महर्षि दयानन्द की भी बात कट जाये।

इस ग्रन्थ से कतिपय उदाहरण इस बात को सिद्ध करते हैं कि ग्रन्थ लेखन का कार्य बहुत पहले से हुआ है और छपते हुये उचित संशोधन न करके जैसे का तैसा रहने दिया गया है ग्रन्थ के भाग १ में "राजा की राष्ट्रीयता" पर लिखते हुए भी आचार्य जी यह उदाहरण देते हैं कि हमारा भारत देश अंग्रेजों के आधीन है स्वतन्त्र होने के बाद वर्षों की पराधीनता के कारण यदि कोई योग्य शासक न मिले तो बाहिर से योग्य व्यक्ति शासन के लिये बुलाया जाये यह बात तो मान ली जाये किन्तु इसमें इतना हेय उदाहरण प्रस्तुत करना कि जिससे अपने देश का गौरव घटता हो इसकी क्या आवश्यकता ? ये पंक्तियां जब पराधीनता के युग में लिखी गई तो छपते समय काटी भी जा सकती थीं। मैंने यह थोड़ी सी समीक्षा इस ग्रन्थ की इस लेख के माध्यम से प्रस्तुत की है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यह ग्रन्थ उपादेय वस्तु को बिल्कुल प्रस्तुत नहीं कर रहा ग्रन्थ उपयोगी और उपादेय तो है ही कस्तु खटकने योग्य विषयों का संशोधन, परिमार्जन एवं संक्षेपीकरण भी अनिवार्य है।

वेद मन्दिर (गोविन्द नगर) वार्षिकोत्सव

आर्य समाज गोविन्द नगर (वेद मन्दिर) कानपुर (सभा द्वारा मान्य वर्ग) का वार्षिकोत्सव ६-७-८ नवम्बर ८७ को एच ब्लाक पार्क में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रो० रमेश चन्द्र एम० ए० सम्पादक आर्यमित्र प्रो० उत्तम चन्द्र शरर के प्रभावी भाषण तथा पन्नालाल पीयूष, श्यामदेव जी एवं बलेश्वर सिंह के भजनोपदेश हुए श्री देवीदास आर्य एवं श्री लक्ष्मण कुमार शास्त्री का पूर्ण सहयोग रहा।

कतिपय भ्रमित आर्य जनों के विरोध की उपेक्षा करते हुए जनों का पूर्ण सहयोग रहा और उत्सव सफल हुआ समाज के युवा प्रधान ओमप्रकाश आनन्द—मन्त्री हरदेव पाण्डेय तथा उत्साही सभासदों के और श्री सुरेन्द्र मुनि शुक्ल के प्रयास सराहना के योग्य है।

—सम्वाददाता

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी का वक्तव्य

आर्य समाज सदर लखनऊ की स्वर्ण जयन्ती तथा लालबाग आ०स० के वार्षिकोत्सव पर पधारे हुए अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मूर्धन्य सन्यासी स्वामी सत्य प्रकाश जी ने संवाददाता सम्मेलन मे कहा कि मुझे अत्यन्त आश्चर्य है कि राजस्थान की रूपकुंवर के सती हो जाने की घटना पर जगतगुरु शङ्कराचार्य श्री निरञ्जनदेव प्रभृति पुरानी परम्परा के विद्वानों ने सती प्रथा का पोषण वेदादि शास्त्रों और धर्मग्रन्थों के आधार पर किया है। हम तो समझते थे कि राजारामोहन राय ने इस प्रथा के विरुद्ध अधिनियम बनवा कर भारतीयों का बड़ा उपकार किया था। राजाराम मोहन राय जी के विरुद्ध भी हमारे धर्माचार्यों ने कुछ बातें कहीं हैं। आर्य समाज का दृष्टिकोण सती होने की बात को निन्द्य आत्म हत्या मानता है, और सती होने वाली महिला की प्रशंसा करने या उसके सती होने की बात को जो गौरव समझते हैं, वे भी दण्ड के भागी होने चाहिए। किसी नारी को बलात् अग्नि की ज्वालाओ में ढकेल देना जब कि स्वतः वह चिता से बाहर निकल जाना चाहती हो—यह तो अति दण्डनीय है।

हमारा पुराना ऋषि कालीन इतिहास इस प्रथा का समर्थन नहीं करता। रामायण में दशरथ की मृत्यु के बाद उनकी तीनों पत्नियां पूर्णायु तक जीवित रहीं, ऐसा हम अपने ग्रन्थो मे पढ़ते हैं। पाण्डवों की माता कुन्ती भी विधवा होने पर सती नहीं हुई। उसने अपनी सन्तानो का पालन किया। अच्छा होता यदि भारत के सभी सम्प्रदायों के विद्वान और धर्माचार्य इस प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाते और इसकी निन्दा करते। थोड़ी सी लोकप्रियता के लिये जो इसका समर्थन करते हुए प्रतीत हो रहे हैं। हमे उनका प्रतिवाद करना चाहिए।

उन्होंने स्पष्ट शब्दों मे बताया कि इस प्रथा का समर्थन करना दण्डनीय होना चाहिए। स्वतन्त्रता के बाद अगर इस सम्बन्ध में कोई नया कानून बनाना आवश्यक हो तो उसका भी शीघ्रातिशीघ्र प्रयास करना चाहिये क्योंकि जिन रूढ़ियो के विरुद्ध आर्य समाज ने आन्दोलन किया था वे फिर पनपने लगीं हैं। उन्होंने आर्य समाज के कार्यकर्ताओं का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए ऐसी रूढ़ियों के विरुद्ध पुनः अपना आन्दोलन प्रारम्भ करने का आह्वान किया।

(शेष पृष्ठ ६ से आगे)

इसका अर्थ यह है कि 'जैसे सांपों को पकड़ने वाला सपेरा बलपूर्वक सांप का बिल से उद्धार कर लेता है वैसे ही वह नारी जो पति के साथ चिता की अग्नि में प्रविष्ट होती है, पति का उद्धार कर देती है।'

असल में इस श्लोक से सायण जो अभिप्राय लेना चाहते हैं उससे उल्टा ही अभिप्राय निकल रहा है, यह बात दी हुई उपमा से स्पष्ट है। सांप अपने बिल में आनन्द से निवास कर रहा होता है, पर सपेरा बिल मे से उसे पकड़कर उसका जैसा उद्धार करता है, वह सबको ज्ञात ही है। वह उसे और भी संकट में डाल देता है, अपनी पिटारी में डाल कर उसे पराधीन कर देता है। ऐसे ही मृत पति की आत्मा विधवा पत्नी को अपने शव के साथ चिताग्नि में भस्म होता हुआ देखकर रो उठती है, पुनर्जन्म में भी उसे इस अकथनीय घटना को याद कर चैन नहीं मिलता, यही श्लोक का भाव निकलता है। जैसे सपेरा सांप को अच्छी स्थिति से निकालकर कष्टदायक स्थिति में डाल देता है वैसे ही मृत पति के साथ चिता में भस्म हुई पत्नी पति को उत्कृष्ट स्थिति से निकाल कर कष्टापन्न कर देती है, यह अभिप्राय लिया जाना चाहिए।

विधवा को जीवलोक में रहने का निमंत्रण

वस्तुतः वेद के शब्द इतने स्पष्ट हैं कि अगले ही मन्त्र के भाष्य में सायण को सती-प्रथा के पक्षधर होने का आग्रह छोड़ देना पड़ा है। वहाँ वे लिखते हैं कि मृत पति के पास बैठी हुई वह विधवा यदि जीवित रहना चाहे तो उसे उठाकर जीवलोक ले आए। मंत्र इस प्रकार है—

उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं
गतासुमेतमुप शेष एहि।
हस्तग्राभस्य दधिषोस्तवेदं
पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ अथर्व० १८।३।२

इसका सायणकृत अर्थ यह है—'हे मृत पति की धर्म पत्नी! तू मृत पति के पास से उठकर जीवलोक मे आ, तू इस निष्प्राण पति के पास क्यों पड़ी हुई है? अपने पाणिग्रहणकर्ता पति से तू सन्तान पा चुकी है, उसका पालन पोषण कर।'

सायणकृत इस अर्थ से हमें भी विरोध नहीं है। पर सायण की बुद्धिमत्ता इसमें होती कि वे इस मंत्र में प्रतिपादित अर्थ के अनुकूल ही प्रथम मंत्र का भी अर्थ करते।

यह द्वितीय मन्त्र ऋग्वेद (१०।१८।८) में भी आया है, केवल इतना भेद है कि 'दधिषोस्' के स्थान पर 'दिधिषोस्' पाठ है, जिससे अर्थ में कुछ अन्तर नहीं पड़ता। उसके भाष्य में 'आश्वलायन-गृह्यसूत्र' का विनियोग दर्शाते हुए सायण लिखते है कि जो विधवा पत्नी सहमरण का निश्चय करके मृत पति के पास लेटी हुई है उसे उठाकर देवर, उसका कोई अन्तेवासी अथवा बूढ़ा सेवक जीवलोक में अर्थात् पुत्र-पौत्रों वाले घर में ले आवे।

सायण के अर्थों में परस्पर विरोध

अथर्ववेद के उपर्युक्त प्रथम और द्वितीय मंत्र के सायण-कृत अर्थों में विरोध स्पष्ट है। उसका परिहार करने के लिए सायण ने एक अनोखा समाधान खोज निकाला है। वे लिखते हैं कि प्रथम मंत्र अदृष्ट फल के लिए अर्थात् परलोक सुधारने की दृष्टि से है, किन्तु दूसरा मंत्र दृष्ट अर्थात् ऐहलौकिक फल की दृष्टि से है, दोनों ही फल शास्त्रानुकूल हैं, अतः जो विधवा स्वर्गादि अदृष्ट फल को अधिक महत्त्व देती है, उसे पति के साथ सती हो जाना चाहिए, किन्तु जो ऐहलौकिक सुख का लाभ करना चाहती उसे जीवित रहना चाहिए। किन्तु पहले विरोध उत्पन्न कर फिर इस प्रकारके समाधान खोजने की अपेक्षा सायण के लिए उचित यह होता कि वह ऐसा भाष्य करता जिससे एक मंत्र से विरोध होता ही नहीं। वस्तुतः दोनों ही मंत्रों में विधवा नारी को जीवलोक में रहने का सौजन्यपूर्ण निमंत्रण दिया गया है यह हमारे अर्थ से स्पष्ट है।

विधवा का पुनर्विवाह

इस सम्बन्ध में अथर्ववेद के इसी प्रकरण का तीसरा मन्त्र भी देखना उपयोगी होगा, जिसमें विधवा के पुनर्विवाह की चर्चा है। यदि विधवा के साथ पतिगृह में सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार होगा तथा उसके सुख-दुःख का ध्यान रखा जाएगा तो वह आयु पर्यन्त वहीं रहने में गौरव अनुभव कर सकती है, विशेष कर उस स्थिति में जबकि वह बड़ी आयु की हो। विधवा के पुनर्विवाह की अनुमति भी अथर्व वेद के इसी प्रसंग में दी गई है।

अपश्यं युवतिं नीयमानां जीवां मृतेभ्यः परिणीयमानाम्।
अन्धेन यत् तमसा प्रावृतासीत् प्राक्तो अपाचीमनयं तदेनाम्॥

—अ० १८-३-३

मैंने [युवतिं] विधवा युवति को [जीवां] जीवित, [मृतेभ्यः नीयमानाम्] मृतों के बीच से अर्थात् श्मशान भूमि से ले जायी जाती हुई तथा [परिणीयमानाम्] पुनर्विवाह को जाती हुई [अपश्यम्] देखा है। [यत्] क्योंकि यह [अन्धेन तमसा [पति विरह जन्य दुःख रूप घोर अन्धकार से [प्रावृता आसीत्] प्रावृत थी, [तत्] इस कारण [एनाम्] इसे [प्राक्तः] पूर्वपत्नीत्व से हटाकर [अपाचीम्] दूसरा पत्नीत्व [अनयम्] मैंने प्राप्त करा दिया है।

यह मंत्र उस विधवा के विषय में है जो अभी युवति है तथा जिसने सम्बन्धी जनों के आग्रह पर दूसरा विवाह करना स्वीकार कर लिया है। मंत्र का पूर्वार्ध पुनर्विवाह के प्रत्यक्षदर्शी की ओर से कहा गया है तथा उत्तरार्ध पुनर्विवाह करवाने वाले की ओर से जिसने पुनर्विवाह की व्यवस्था की है वह कह रहा है कि इसके पतिविरह के दुःख को दूर करने के लिए मैंने इसका पुनर्विवाह करा दिया है। मंत्र मे 'युवति' शब्द द्रष्टव्य है। यदि विधवा नारी युवति है तो उसका विवाह हो जाना ही अच्छा है, यह इससे ध्वनित होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वेद विधवाओं के सुख-सुविधापूर्ण तथा सम्मानित जीवन-यापन के लिए सतर्क है और वे चाहे तो उन्हें पुनर्विवाह की भी अनुमति देता है। सती 'प्रथा या सहमरण का समर्थक एक भी मंत्र किसी भी वेद में नहीं है। 'वैदिक इन्डैक्स' में पति-पत्नी शब्द के विवरण में मैक्डानल लिखते हैं कि अथर्व वेद में सती प्रथा है ऋग्वेद में नहीं है, ऋग्वेद में देवर के साथ उसका विवाह होना वर्णित है विधवेव देवरम् (ऋ० १०-४०-२५, अथर्ववेद में सती प्रथा का होना उन्होंने ऊपर उद्धृत केवल एक मंत्र [१८-३-१] के आधार माना है, जिसका सायण ने सती प्रथा परक अर्थ किया है, जिस अर्थ का अनौचित्य हम अभी बतला चुके हैं। मध्यकाल में बंगाल के कुछ पण्डितों ने 'आरोहन्तु जनयो योनिमग्रे' [ऋग्० १०-१८-७] मंत्र में 'अग्रे' के स्थान पर 'अग्ने.' पढ़कर सती प्रथा को वैदिक सिद्ध करना चाहा था, परन्तु यह उनका छल ही था, क्योंकि वास्तविक पाठ 'अग्रे' ही है। सायण ने भी 'अग्रे' पाठ मानकर ही व्याख्या की है और मंत्र को सती प्रथा के पक्ष में न लगाकर मंत्र का आशय यह लिया है कि गृह प्रवेश में पत्नियां आगे-आगे चलें।

आज के प्रगतिवादी युग में राजस्थान के 'दिवराला' ग्राम में हुआ सती काण्ड और पुरी के शंकराचार्य द्वारा किया गया सती प्रथा का समर्थन दोनों ही सचमुच विडम्बनापूर्ण हैं।

दयानन्द ज्योति

[डा० मुंशीराम शर्मा 'सोम' कानपुर]

दयानन्द देखते हैं, देश परतन्त्र हुआ,
हम हों स्वतन्त्र मन्त्र सबको पढ़ा गये ।
रूढ़ियों से ग्रस्त, अन्धविश्वासों से त्रस्त,
ध्वस्त देश को विमल वेदवाणी से बढ़ा गये ।
फूट-फूट पीके बिखेरे थे पड़े लाल उन्हें,
एकता सूत्र मुक्ता माल में मढ़ा गये ।
देश-प्रेम, धर्म-प्रेम, भाषा-प्रेम भाव द्वारा,
सत्य के सोपान पर हमको चढ़ा गये ।१।

ज्ञान हेतु ऋषि ने सत्यार्थ का प्रकाश किया,
भक्ति हेतु आर्य अभिविनय बनाया था ।
कर्म हेतु गोरक्षा की शिक्षा दी शरीर दिया,
क्षण-क्षण देश को उठाने में लगाया था ।
मेरी मुक्ति क्या है? देश बन्धनों से मुक्ति पावे,
आर्य तेज ओज को सुषुप्ति से जगाया था ।
जागें आर्य, जागे देश, शासन हो चक्रवर्ती,
स्वस्ति केतु विश्व शान्ति हेतु फहराया था ।२।

दयानन्द में था ज्ञान सांख्य के कपिल जैसा,
दयानन्द में था त्याग बुद्ध-महावीर सा ।
दयानन्द में था ओज भीम, पवमान जैसा,
शुद्ध था आचार द्युतिमान हार हीर सा ।
वेद अनुराग था अन्तरतम में भरा,
सत-असत-विवेक भी था हंस नीर-क्षीर सा ।
दयानन्द में था ब्रह्म-तत्त्व योग ज्योतिपुंज,
वेद ध्वनि साथ ही हुंकार था गम्भीर सा ।३।

ऋषि दयानन्द ने हमें था उपदेश दिया,
पन्थ-मत नहीं, एक वेद धर्म-मूल है ।
वेद से ही पावन प्रवृत्ति का विकास हुआ,
वर्णाश्रम मार्ग वेद के ही अनुकूल है ।
शास्त्रकार वेद को ही परम प्रमाण मान,
उनके भी ज्योतिधाम में न कहीं भूल है ।
गीता में ध्वनित ओ३म्, बौद्धों में ध्वनित ओ३म्,
शैव साधना में ओ३म् नाम ही त्रिशूल है ।४।

ऋषि दयानन्द के सन्देश में है वेद-ज्ञान,
मुनियों–महर्षियों के अनुरूप अनुमत ।
ब्रह्मा से ले जैमिनि पर्यन्त इसे मानते हैं,
शास्त्र स्मृतियों से अनुमोदित सतत सत ।
मान्यता इसी की मानवों को प्रेय-श्रेय देती,
श्री-समृद्धि, स्वस्ति-शान्ति, लोक-परलोक मत ।
ज्योति है ज्वलित, इसे निहित हृदय मध्य,
आर्य ही करेंगे जो जगत-हित में निरत ।५।

वेद प्रचार शिविर गढ़मुक्तेश्वर मेले में सभा प्रधान का भाषण

दि० १-११-८७ से ५-११-८७ तक उत्तरी भारत के विशाल गढ़मुक्तेश्वर मेले में प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी विशाल वेद प्रचार शिविर लगाया गया। जिसमें गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा विशेष यज्ञ, विविध सम्मेलन सम्पन्न हुए। जिले के बड़े-बड़े भजनोपदेशकों और सन्यासियों ने उसमें भाग लिया। सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का मद्यनिषेध सम्मेलन में भाषण हुआ जिसमें उन्होंने देश में बढ़ती हुई मद्यपान की प्रवृत्ति पर चिन्ता व्यक्त की तथा प्रत्येक आर्य को इस मद्य निषेध के कार्य में लग जाने की प्रेरणा की। शिविर के समापन भाषण में सबके लिए मंगल कामना करते हुए अपने-अपने घर और ग्राम जाकर राष्ट्रीय शक्तियों को मजबूत करने का आह्वान किया इस शिविर की सफलता का श्रेय संयोजक श्री चन्द्रकिरण जी शर्मा, श्री सत्यप्रकाश जी त्यागी, श्री कैलाशचन्द्र जी, श्री हरस्वरूप जी एवं श्री महावीर जी आदि सज्जनों को जाता है। —सभा मन्त्री

आर्यसमाज अमरोहा के वार्षिकोत्सव पर सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का भाषण

दि० १३-१०-८७ को सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी के आर्यसमाज अमरोहा के वार्षिकोत्सव में पहुँचने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। अपने भाषण में उन्होंने देश पर आए संकटों का जिक्र करते हुए श्रोताओं से आर्यसमाज को ही वर्तमान समस्याओं का समाधान बताया।

आर्यसमाज मवाना (मेरठ) के वार्षिकोत्सव पर सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का भव्य स्वागत

दिनांक २६-१०-८७ को आर्यसमाज मवाना के वार्षिकोत्सव की रात्रि सभा में बोलते हुए प्रधान जी ने मेरठ के साम्प्रदायिक दंगे को विद्रोह की संज्ञा दी तथा राष्ट्र रक्षा के लिए हिन्दू संगठन को दृढ़ करना बहुत आवश्यक बताया सभा प्रधान जी ने संगठन को मजबूत करने की आर्य जनों से अपील की।

आ० स० तिलहर के शताब्दी समारोह में सभा प्रधान श्री इन्द्रराज, सभा उप प्रधान श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर तथा श्री मनमोहन जी तिवारी सभा मन्त्री का भव्य स्वागत

३१-१०-८७

सभा प्रधान श्री इन्द्रराजजी ने देश में भ्रष्टाचार, मद्यपान, मांसाहार, दहेज हत्याओं, अराष्ट्रीय विचारधारा तथा हिंसा के निरन्तर बढ़ने की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करते हुए आर्यसमाज के विशेष उत्तरदायित्व का वर्णन किया। आर्यसमाज की युवा शक्ति का आह्वान करते हुए इन सबके विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा दी। बाद में पशुपति एम० ए० ने महर्षि दयानन्द के प्रति मधुर काव्य के द्वारा महर्षि को श्रद्धांजलि अर्पित की।

सभा मन्त्री श्री मनमोहन जी तिवारी ने आर्यसमाज में युवा शक्ति का आह्वान करते हुए देश को तोड़नेवाली अराष्ट्रीय शक्तियों को पूरी तरह से परास्त करने की अपील की।

श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर जी ने महिला सम्मेलन में बोलते हुए महिलाओं को आगे आकर वर्तमान समस्याओं के समाधान हेतु समाज का नेतृत्व करने का उद्बोधन किया।

आर्यसमाज लालबाग लखनऊ का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिनांक ९ से ११ नवम्बर तक उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रांगण में आर्यसमाज लालबाग का वार्षिकोत्सव समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, महात्मा आर्यभिक्षु जी, श्रीमती सावित्री देवी वेदाचार्या, श्री प० इन्द्रराज (सभा प्रधान), श्री पं० मनमोहन तिवारी (सभा मन्त्री), डा० शान्तिदेव बाला, बेतिया (बिहार) के भूतपूर्व इमाम पं० जयप्रकाश आर्य, एवं पं० क्षेत्रपाल 'कड़क' ब्रह्मचारी के सुन्दर प्रवचनों एवं मधुर भजनों से जनता आनन्द विभोर हो उठी। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने विभिन्न मतों मे व्याप्त कुरीतियो ओर पाखण्डो से रहित समाज की रचना की आवश्यकता पर बल देते हुए वेद के आधार पर मानवीय धर्म की स्थापना पर बल दिया। हरिद्वार से पधारे हुए महात्मा आर्यभिक्षु ने कहा प्रभु सर्वत्र व्याप्त है उसे देखने के लिए निर्दोष अन्तःकरण की आवश्यकता है। प्रसिद्ध विदुषी श्रीमती सावित्री देवी 'वेदाचार्या' ने नारी जाति को आगे आकर समाज में फैली भयंकर कुप्रथाओं को दूरकर देने का आह्वान किया। ब्रह्मचारी कड़क के सुमधुर भजनों ने श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। स्वामी जी ने लालबाग आर्यसमाज का कोई अपना स्थान या मन्दिर न होनेपर गहरी चिन्ता प्रकट करते हुए समाज के सुन्दर भवन निर्माण के लिए अपना आशीर्वाद एव शुभ कामनाएं प्रदान की हैं। समाज उनका आभार व्यक्त करती है।

कार्यक्रम का सुन्दर सचालन पं० दीनानाथसिंह अमेठी ने किया तथा युवा आर्य नेता इ. सत्यदेव सैनी (मन्त्री), श्रीमती उर्मिला आर्या (प्रधान), श्री ओमप्रकाश डावर (संयोजक), प० इन्द्रदेव पाठक प्रबन्ध सम्पादक आर्यमित्र श्री विश्वमित्र अरोड़ा (कोषाध्यक्ष) श्री सत्यपाल चापर (पुस्तकाध्यक्ष) तथा अन्य सदस्यों ने उत्सव की सफलता में अभूतपूर्व योगदान दिया। —संवाददाता

कैन्टूनमेन्ट आर्यसमाज मन्दिर लखनऊ का स्वर्णजयन्ती समारोह

दिनाक ५ से ८ नवम्बर तक कैन्टूनमेन्ट आर्यसमाज सदर बाजार लखनऊ ने अपना स्वर्णजयन्ती समारोह बड़ी ही धूमधाम से मनाया। ५ नवम्बर को विशाल शोभा यात्रा जिला सभा के प्रधान श्री अर्जुनदेव महाना एवं मन्त्री श्री सत्यदेव सैनी के निर्देशन मे निकली। सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने समारोह का उद्घाटन करते हुए आर्य नर-नारियो का आह्वान किया कि वे वेद का सन्देश संसार के कोने-कोने मे सुनाने के लिए कृत संकल्प हों। स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, श्रीमती सावित्री देवी वेदाचार्या, महात्मा आर्यभिक्षु जी, पं०जयप्रकाश आर्य(भू०पू०इमाम बेतिया)तथा ब्रह्मचारी क्षेत्रपाल 'कड़क' के सुन्दर भाषणों एवं मधुर भजनों से जनमानस आनन्द विभोर हो उठा। —संवाददाता

[पृष्ठ ५ का शेष]

को दूर करने के लिए संविधान मे संशोधन करके ठीक नहीं किया गया है इससे नारी जाति का अपमान हुआ है। संविधान में प्रत्येक संशोधन राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा के आधार पर ही होने चाहिए। किसी वर्ग विशेष की सन्तुष्टि के लिए नहीं।

सती प्रथा के नाम पर हत्या या आत्महत्या के लिए वेद या शास्त्र कोई भी आज्ञा नहीं देते। यह सर्वथा अमानवीय कृत्य है। इस पर सख्ती से नियन्त्रण किया जाना चाहिए।

अन्त में स्वामी जी ने पत्रकारों को सर्वसम्मति से प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर श्री इन्द्रराज जी एवं मन्त्री पद पर श्री मनमोहन जी तिवारी के निर्वाचित किये जाने की सूचना भी दी।

* * *

आ०स०जिला सम्मेलन ठाकुरद्वारा (मुरादाबाद)में सभा प्रधान श्री इन्द्रराज एवं सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी का भव्य स्वागत

दि० १६-१०-८७-श्री मनमोहन जी तिवारी ने सभा मे बोलते हुए देश की समस्याओ के समाधान के लिए मात्र आर्यसमाज को बताया तथा आर्यसमाज को सम्पुष्ट करने की अपील की।

श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान ने युवाशक्ति का आह्वान करते हुए कहा कि दहेज प्रथा, सती प्रथा जैसी कुरीतियो को युवा शक्ति ही दूर कर सकती है। इस समय अराष्ट्रीय शक्तियों से देश को बचाने की आवश्यकता है। इसलिये युवको को आगे आकर देश की रक्षा करनी चाहिए।

आर्यसमाज शबगा (मेरठ) के वार्षिकोत्सव पर सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का स्वागत

दि० १८-१०-८७ को सभा प्रधान जी आर्य समाज शबगा के वार्षिकोत्सव पर पहुंचे। जनसभा में बोलते हुए उन्होने बताया कि इस समय भ्रष्टाचार के कारण देश का बड़ा ह्रास होरहा है। अराजनैतिक संस्था आर्यसमाज ही सदाचार एवं चरित्र का निर्माण कर सकती है। इस समय देश के चारित्रिक ह्रास को रोकना बहुत आवश्यक है। सभा प्रधान जी ने आर्य समाज के संगठन को दृढ़ करने का आह्वान किया।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 46993 ४५९९३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७९
मार्गशीर्ष शुक्ल ९
२९ नवम्बर रविवार, १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

धर्म शिक्षा पुस्तको के सम्बन्ध में-

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयो एव पुस्तक विक्रेताओ को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश द्वारा प्रकाशित पुस्तकें सभा कार्यालयमे उपलब्ध हैं। पुस्तकें प्राप्ति हेतु कार्यालय से सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम से भेजें। रेलवे स्टेशन एव पूरा पता साफ-साफ लिखें। पुस्तको का मूल्य निम्न प्रकार है-

धर्म शिक्षा भाग १	१.००
" " " २	१ ५५
" " " ३	२ ७०
" " " ४	२-७५
" " " ५	३-६०
" " " ६	४-७५
" " " ७	४-१५
" " " ८	-००
" " " ९	४-००
" " " १०	३-००
" " " ११	४-.०
धर्म शिक्षा भाग १२	३-५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु

❀ आवश्यक सूचना ❀

समस्त आर्यसमाजो, जिला उपसभाओ एव शिक्षण सस्थाओ को सूचित किया जाता कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० की शताब्दी समारोह के अवसरपर आयोजित विभिन्न प्रकार के सास्कृतिक, शैक्षणिक एव कविसम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमे विभिन्न वाद विवाद प्रतियोगिताए तथा सम्मेलनो के अश सम्मिलित हैं एव विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह एव कवि सम्मेलन की वी० डी० ओ० (फिल्म) कैसेट के अतिरिक्त शताब्दी मे पधारे हुए सन्यासियो, विद्वानों, उपदेशको, आदि के महत्वपूर्ण उपदेश एव जिन शिक्षण सस्थाओ ने समारोह मे भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किए उनके रिकार्डिंग कैसेट निम्न प्रकार, सभा कार्यालय मे बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। जो सज्जन अथवा सस्थाए इन्हे [illegible] करना चाहती हैं वह श्री विश्वम्भरदयाल गुप्ता, व्यवस्थापक 'आर्यमित्र ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आर्डर देकर प्राप्त कर सकते हैं।

१-सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसेट-	मूल्य	१००० ०० रु०
२-सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कैसेट-	मूल्य	१००-०० रु०
३-सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग कैसेट (कुल सख्या ३०) प्रति कैसेट-		२०-०० रु०
४-कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो-		५ ०० रु०

(बड़ी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध कराई जा सकती है)

नोट-जिन शिक्षण सस्थाओ ने समारोह मे भाग लिया एव पुरस्कार प्राप्त किए उन्हे १८, १९ तथा २० अक्टूबर के एक एक दिन के अलग से रिकार्डिंग कैसेट उचित मूल्य पर अलग से मिल सकते हैं।

आर्यसमाज के कार्यक्रम तथा सभा की शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य सस्थाओ को ऐसे चित्र एव कैसेट प्रचार कार्य मे बहुत सहायक होंगे।

[शिक्षण सस्थाओ को २० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा]

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में एन० पी० सिंह (निकट सुदर्शन सिनेमा) चारबाग, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स० २२४१।५७ घोषणा पत्र स ७।२८ २ ८५

पौष कृष्ण १ रविवार सवत २०४४ वि० दिनाक ६ दिसम्बर १९८७

इस अङ्क के आकर्षण

गुरुवर विरजानन्द के जीवन का
सर्वतोमुखी उत्कट अभिलाषा
प० श्यामजी कृष्ण वर्मा और
महर्षि दयानन्द
नारी उत्थान और आर्यसमाज
महर्षि दयानन्द की विनोद
प्रियता एव निर्भीकता
सार सूचनायें एव आय जगत

प्रधान सम्पादक—

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	१५१)
वार्षिक	१५)
छमाही	११)
विदेश मे	१५ पौंड

★

वर्ष	९०
अङ्क	४७

शाश्वत वैदिक धर्म की विजय

सती प्रथा कोई धार्मिक परम्परा नही

राजस्थान उच्चन्यायालय की खण्डपीठ का निर्णय—अध्यादेश से किसी भी धार्मिक परम्परा का उल्लघन नही

१६ नवम्बर—राजस्थान उच्च न्यायालय की खण्डपीठ ने अपनी व्यवस्था देते हुए कहा है कि सती प्रथा का हिन्दू धर्म मे न कोई स्थान है न कोई प्राविधान। न तो यह धार्मिक परम्परा है और न किसी धार्मिक विश्वास का अग।

दिवराला प्रकरण के सम्बन्ध मे जिसमे ४ अक्टबर को एक १८ वर्षीया विवाहिता नवयुवती रूप कवरि को उसके मृतपति के साथ जीवित चिता मे जला दिया गया था और इस पर तथाकथित धर्माचार्यों ने धर्म का आवरण डालने के कुत्सित प्रयास किया था राजस्थान सरकार ने सती निरोधक अध्यादेश जारी किया और उसके अन्तर्गत हत्या एव हत्या करने की प्रेरणा देने के आरोप मे कतिपय गिरफ्तारिया हुई। इन गिरफ्तारियो को चुनौती देने वाली विभिन्न याचिकाओ पर अपना आशिक फसला देते हुए खण्डपीठ ने स्पष्ट किया— कि सती प्रथा कोई धार्मिक परम्परा नही है तथा इस अध्यादेश के कारण सविधान मे प्राप्त किसी धार्मिक अधिकार का उल्लघन नहीं होता है। खण्डपीठ ने स्पष्ट किया कि भारतीय सविधान की धारा २५ व २६ मे जिन जिन धार्मिक अधिकारो तथा अनुष्ठानो की छूट है उन पर राजस्थान सरकार द्वारा जारी— सती निरोधक अध्यादेश के कारण कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योकि भारतीय सविधान मे विधवा द्वारा मृतपति के साथ स्वेच्छा या लोगो के उकसाने पर सती प्रथा के नाम पर जल जाने जैसी कुरीतियो का कोई स्थान नही है और न ही इस प्रकार के कुकृत्य के लिए किसी को मान्यता या छूट है।

सती प्रथा के नाम पर घटित इस अमानवीय और क्रूरतम प्रथा के विरुद्ध आर्यसमाज ने पुनापेक्षी का आह्वान करते हुए तथाकथित धर्माचार्यों को जो इसे धर्म का आवरण देने का कुत्सित प्रयास कर रहे हैं शास्त्रार्थ का खुला चलैञ्ज दिया हुआ है। आर्यसमाज इस प्रथा को पूर्णतया अवैदिक अमान्य और मानवीय इतिहास की क्रूरतम घटनाओ मे मानता है और हमारा यह अभियान है कि विश्व के किसी भी कोने मे ऐसी घटना की पुनरावृत्ति नहीं होने देंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने इस विषयक एक प्रामाणिक ट्रैक्ट सती प्रथा वेद विरुद्ध प्रकाशित किया है जिसका जनता मे अधिक से अधिक प्रचार करने की आवश्यकता है।

खण्डपीठ के माननीय न्यायाधीशो ने इस बहुचर्चित प्रकरण पर अपना फसला देते हुए परोक्षरूप मे आर्यसमाज की ही विचारधारा का समर्थन किया है। विद्वान न्यायाधीशो ने विभिन्न धर्म ग्रन्थों व उनके टीकाकारो का सदर्भ देते हुए स्वीकार किया कि ऋग्वेद के एक मन्त्र में आये एक शब्द के अपभ्रश के कारण सती प्रथा के शास्त्र सम्मत होने या न होने पर विवाद है। न्यायाधीशो के अनुसार अग्र के स्थान पर अग्ने शब्द मानने वाले टीकाकार उसका अर्थ विधवा पत्नी मृतपति के साथ अग्नि में समर्पित होकर स्वर्ग लोक जाने वाली बताते हैं दूसरी ओर अन्य टीकाकार अग्र शब्द के स्थान पर अग्ने' शब्द की व्युत्पत्ति को धोखाधड़ी की सज्ञा देते हैं।

इस सम्बन्ध में सभा द्वारा प्रकाशित सती प्रथा वेद विरुद्ध को पढ़िये इसका प्रचार कीजिए। आप देखेंगे विद्वान लेखक ने इस शब्द का कितना युक्तियुक्त प्रामाणिक अर्थ किया है।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

जो आंख नीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ-पौष कृष्ण १ सम्वत २०४४ रविवार ६ दिसम्बर १९८७ दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८

संकल्प का महत्त्व

किसी व्यक्ति अथवा संस्था के जीवन मे संकल्प का बहुत महत्त्व है। अतीत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि उन्नति के शिखर पर पहुंचने वाली जातियां अपने संकल्पित प्रयास तथा समवेत होकर आगे बढ़ने की अदम्य कामना से सिद्धियो और समृद्धियो का आकाश चूमने लगी थीं। इतिहासकारो ने ऐसे युग को स्वर्ण युग के नाम से पुकारा है। सृष्टि के आविर्भाव से लेकर महाभारत काल पर्यन्त आर्यों का ऐसा ही इतिहास रहा है। उस समय हमारी जीवन पद्धति की आधारशिला परमात्मा का दिया हुआ वह ज्ञान था जिसे हम अपौरुषेय कहते हैं और जो हमारे प्राणो के प्राण प्रभुवर का दिया हुआ आदि ज्ञान, पूर्ण ज्ञान कहलाता है। इसका प्रमाण यह है कि आर्यों का चाहे वैयक्तिक जीवन हो, चाहे सामाजिक जीवन हो, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय कार्मिक, पारिवारिक, आर्थिक, धार्मिक, भौतिक समृद्धि, शिक्षा एव मानव कर्त्तव्य आदि सभी क्षेत्रो मे वेदो की शिक्षा का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। उस समय हमारी समस्त विचारधाराओ का मूल केन्द्र वेद ही था यद्यपि अवशीय आचरण जिसे महाभारत के परवर्ती काल मे वाम-मार्गीय नाम दिया गया, कभी-कभी प्रबल हो उठते थे—परन्तु उनका समाधान वेदो में दी हुई शिक्षा के आधार पर कर लिया जाता था और फिर वही समता, समानता, एकता, बन्धुता और प्रेम की गंगा बहने लगती थी। चारो ओर सुख और शान्ति का साम्राज्य छा जाता था। आकाश मे 'द्यौ शान्ति, अन्तरिक्ष शान्ति के स्वर गूंजा करते थे। मानव का हृदय शान्त था मानव समाज की आत्मा सुखी थी, समृद्धियां चरण चुम्बित थीं, विचार आकाश से भी ऊंचे थे, आतंकवाद, विघटनवाद, सम्प्रदायवाद उस समय की शब्दावली मे थे ही नहीं।

यह क्यो था ? अथर्ववेद का एक मन्त्र है—

आकूति देवीं सुभगा पुरो दधे, चित्तस्य सुहवा नो अस्तु।
या मा शामेमि केवली सा मे अस्तु विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम् ॥

संकल्प, चाहे संस्था का हो, चाहे व्यक्ति का, चिन्तन शक्ति को प्रेरणा देता है। वह अपने अनुकूल विचारो का सृजन करता है और जिस दिशा मे, जिस विषय क्षेत्र मे, संस्था या व्यक्ति कार्य करता है सिद्धियां उसे मिलती जाती हैं और वह महान से महानतर, उच्च से उच्चतर बनता जाता है।

इसीलिये "तन्मे मन शिव संकल्पमस्तु" जहां व्यक्ति के लिये चरितार्थ है वहां समाज के लिए भी है क्योंकि व्यक्ति और समष्टि दोनों एक दूसरे के प्रतिबिम्ब ही तो हैं।

पिछले दिनों हमारी सभा का चुनाव हुआ था कितने शान्त और सफल वातावरण मे। यह सब आर्यों की संकल्प शक्ति, एकजुट होकर काम करने की उत्कट अभिलाषा एव 'समानो मन्त्र' की वैदिक प्रेरणा का परिणाम था। १०२ वर्ष के जीवन काल मे हमने एक पग और आगे बढ़ाया है। किसी संस्था के जीवन मे यह समय अल्प भी है, अधिक भी है। वस्तुत यह आत्मनिरीक्षण का समय है यदि हम उत्तरोत्तर प्रगति मार्ग पर बढ़ते जा रहे हैं तो यह समय अल्प ही कहा जायेगा, और यदि घिसटते—घसीटते किसी प्रकार चलते जाना है तो यह समय चाहे अल्प हो या अधिक नगण्य ही माना जायेगा। संस्था या व्यक्ति की सफलता रूपी वस्तु बाजार मे उपलब्ध तो है परन्तु उसका मूल्य वही दे सकता है जो अपने निश्चित लक्ष्य के प्रति अपने को सर्वात्मना समर्पित कर दे। हमारा लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" है। सभा का कार्य उस लक्ष्य तक व्यक्तियो, समाजो को पहुंचाने मे साहाय्य करना है। यदि हम इस लक्ष्य से विचलित हो गये तो हमारा उद्देश्य अधूरा रह जायेगा और हम संसार मे उपहास के पात्र बन जायेंगे।

सभा की स्थापना, उसके संगठन और संचालन की लोकतन्त्रीय पद्धति, हमारे रहनुमाओ के मस्तिष्क की सर्वोत्कृष्ट देन है। हम अपने प्रतिनिधियों का प्रतिनिधित्व करते है। लोकतन्त्रीय व्यावहारिक पद्धति से संगठन का संचालन करते हैं और लक्ष्य के प्रति योजनाबद्ध होकर आगे बढ़ने मे विश्वास रखते हैं।

हमारी सभा प्रदेश की ही नहीं अपितु विश्व की सर्वोत्तम प्रतिनिधि सभाओ मे गिनी जाती है इसके विशाल संगठन और सुनियोजित कार्य प्रणाली की सर्वत्र प्रशंसा हुई है। हम इसे ऊंचाइयो के शिखर तक पहुंचाना चाहते हैं। व्यक्ति की भांति संस्थाओ के जीवन मे भी आन्तरिक आंधियां आती रहती हैं परन्तु भर्तृहरि के शब्दो मे "न्यायात्पथ प्रविचलन्ति पद न धीरा" हमने विचलित होना नहीं सीखा है। हम प्रदेश की, समस्त विश्व की, आर्य जनता का आह्वान करते हैं कि वह हमारे किये हुए कार्यों से हमारा मूल्यांकन करे।

★ ★ ★

आर्यसमाज अमरोहा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज अमरोहा का ८६वां वार्षिकोत्सव दिनांक ११, १२, १३ अक्तूबर १९८७ को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। उत्सव मे अनेक पूज्य मान्य विद्वानों के अतिरिक्त स्वामी ओमानन्द जी महाराज, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान श्री प० इन्द्रराज जी एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती के प्रभावशाली विचार जनता ने मन्त्र मुग्ध होकर सुने। आर्यसमाज अमरोहा के प्रधान श्री वीरेन्द्रकुमार जी आर्य ने स्वामी आनन्द बोधजी का हार्दिक स्वागत करते हुए आर्यसमाज की ओर से सूखा राहत कोष के लिए कुल १८५७ रु० की राशि भेंट की।

गुरुवर विरजानन्द के जीवन की सर्वतोमुखी उत्कट अभिलाषा

[आचार्य डा० सुरेन्द्रदेव, शिरोमणि, शास्त्री, एम ए पी एच डी, जिला–मैनपुरी]

मथुरा निवासी गुरुवर विरजानन्द जी सम्पूर्ण वैदिक साहित्य के ज्ञाता थे। उनकी हार्दिक अभिलाषा यही थी कि इस प्रसीयमान आर्य जाति के पुनरुत्थान एवं कल्याण का कार्य किया जाय, किन्तु दुर्भाग्य से वे आंखों से अन्धे थे।

यद्यपि उनकी पाठशाला मे अनेक शिष्य अध्ययन कर चुके थे और निरन्तर अन्य अनेक शिष्य अध्ययनार्थ उनके समीप आते ही रहा करते थे किन्तु उन्हे एक भी शिष्य ऐसा नहीं मिल सका था कि जिसके माध्यम से वे अपने उपर्युक्त अभीष्ट की सिद्धि प्राप्त कर पाते। अतएव उनके हृदय मे निरन्तर यही उत्कट इच्छा विद्यमान रहा करती थी कि मुझे एक ऐसा सुयोग्य शिष्य मिले कि जो मेरी आकाक्षाओ तथा मेरे उद्देश्यो की पूर्ति कर सकने मे सक्षम हो।

स्वामी दयानन्द सन्यास लेने के पश्चात् सच्चे ज्ञान की खोज मे इतस्तत घूमते रहे एक बार उन्होने पूर्णाश्रम के मुख से यह सुना कि मथुरा निवासी स्वामी विरजानन्द जी महान विद्वान् व्यक्ति हैं तथा वे वैदिक साहित्य एव ऋषि प्रणीत–ग्रन्थो मे पूर्णतया पारंगत हैं। उनकी तो पहले से ही यह प्रबल अभिलाषा थी कि उनको एक ऐसा गुरु मिल जाय जो उनके ध्येय को पूर्ण करने सम्बन्धी ज्ञान को उन्हे प्रदान कर सके।

फलस्वरूप ३४–३५ वर्ष की आयु मे उन्होने मथुरा के लिये प्रस्थान किया। मथुरा पहुचकर उन्होने गुरुवर विरजानन्द जी के निवास स्थान का पता लगा लिया तथा वे एक दिन उनके समीप पहुचे। दरवाजा अन्दर से बन्द था। अत उन्होने बाहर से खटखटाया। विरजानन्द जी ने अन्दर से ही पूछा–कौन है? ऋषि दयानन्द ने उत्तर दिया कि मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती हू। पुन यह पूछ जाने पर कि यहा किस उद्देश्य से आये हो? दयानन्द ने कहा– शिक्षा ग्रहण करने हेतु। यह सुनकर विरजानन्द ने कहा कि आज तक तुमने जो कुछ मनुष्य प्रणीत ग्रन्थो मे पढ़ा है वह सब भूल जाओ क्योकि जब तक मनुष्य प्रणीत ग्रन्थों का प्रभाव रहेगा तब तक आर्ष ग्रन्थो का प्रकाश तुम्हारे अन्त-करण मे प्रवेश न कर सकगा। और यदि कोई मनुष्य प्रणीत ग्रन्थ तुम्हारे पास हो, उसे भी यमुना के प्रवाह मे फेंक आओ। इसके अनन्तर उन्होने यह भी कहा कि "तुम सन्यासी हो, मै कभी किसी सन्यासी को विद्यार्थी रूप मे ग्रहण नहीं किया करता हू क्योंकि जिसके पास भोजन और रहने के स्थान की स्थिरता न हो वह मनोयोग के साथ विद्याभ्यास कैसे कर सकता हे? अत पहले तुम अपने खाने-पीने और रहने के स्थान की व्यवस्था कराओ और फिर मेरे पास आकर विद्याभ्यास मे लगो।'

नवागत विद्यार्थी की मेधा–परीक्षा करने का गुरुवर विरजानन्द का नियम था। इस नवागत सन्यासी विद्यार्थी की बुद्धि–परीक्षा करने तथा उससे दो चार बातें करके ही उन्होने समझ लिया कि यह सन्यासी विद्यार्थी एक अनन्य तथा असाधारण मेधावी है। उन्होने इस संन्यासी–विद्यार्थी के साथ कुछ और भी वार्तालाप किया और पारस्परिक के वार्तालाप मे जान लिया कि यह विशिष्ट गुण सम्पन्न है तथा वास्तविक एव सत्य यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति का सुयोग्य पात्र भी।

तदनन्तर नवागत सन्यासी ने विदा ली। उसके चले जाने पर गुरुवर मन ही मन यह सोचने लगे कि अभिप्रेत लक्ष्य की सिद्धि के लिए वे जिस प्रकार के मानव की प्राप्ति की आशा एव विश्वास सर्वथा छोड़ कर एकमात्र परमेश्वर पर अपने आपको निर्भर कर चुके थे, ज्ञात होता है कि लक्ष्य-सिद्धि के लिए परमात्मा ने इस सन्यासी को मेरे पास भेजा है।

उधर पाठशाला से लौटते समय सन्यासी विद्यार्थी दयानन्द भी मन ही मन सोचने लगे कि मै अनेक शिक्षकों के संसर्ग मे आया हू, अनेक आचार्यों से मैंने अध्ययन किया है, किन्तु किसी शिक्षक को इस प्रकार की बातें करते हुए नहीं सुना तथा इस प्रकार की प्रकृति (स्वभाव) किसी आचार्य मे दृष्टिगोचर नहीं हुई। जिस अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति की आशा मे मै इतने अधिक समय से भ्रमण कर रहा हू, हो सकता है कि वह इस चक्षुविहीन गुरु के समीप मे मुझे प्राप्त हो जाय।

मथुरा मे अमरलाल नाम के एक सज्जन व्यक्ति थे सज्जनता एव आतिथ्य के लिये प्रसिद्ध थे। वे गुजरात के निवासी तथा औदीच्य ब्राह्मण थे। श्री अमरलाल जी को यह ज्ञात हो जाने पर कि नवागत सन्यासी गुजरात प्रदेश का निवासी है और उन्हीं की श्रेणी का ब्राह्मण है। अतएव श्री अमरलाल जी दयानन्द के प्रति पूर्णरूपेण आकृष्ट हो गये। जब उन्हे यह ज्ञात हुआ कि नवागत सन्यासी की पढने की अभिलाषा अत्यधिक बलवती है और उसी इच्छा के कारण वह मथुरा मे विरजानन्द जी के समीप अध्ययन हेतु आया है तो उन्होने प्रसन्न होकर अपने ही घर मे नियमित रूप से उनके भोजन का प्रबन्ध कर दिया।

मथुरा मे विश्राम घाट के ऊपरवाले भाग मे जो लक्ष्मीनारायण का मन्दिर है उसी के नीचे की मंजिल मे स्थित एक छोटी सी कोठरी मे उनके रहने की व्यवस्था भी हो गई।

इस भांति रहने तथा भोजन की व्यवस्था करके दयानन्द गुरुवर विरजानन्द के समीप गये। उन्होने अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया। दण्डी विरजानन्द भी यह जानते थे कि पाणिनि के सूत्रो से निसृत प्रकाश के बिना आर्ष ग्रन्थ समूह मर्मग्राही नहीं हो सकता है। इसी दृष्टि से उन्होने नवागत सन्यासी दयानन्द को पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। विरजानन्द जी की वाणी से विभिन्न शास्त्रों की विभिन्न प्रकार की व्याख्या दयानन्द को आश्चर्य मे डाल दिया करती थी। स्वयं चक्षु विहीन होने पर भी स्वकीय प्रज्ञारूपी चक्षु के प्रभाव से सभी शास्त्रो के सभी स्थानो का परिशीलन करके प्रस्तुत विषय की अत्यधिक स्पष्ट मीमासा किया करते थे। दयानन्द उनके उपर्युक्त प्रकार के अद्भुत पूर्व वैशिष्ट्य को देखकर अत्यधिक प्रभावित हुये तथा उन्होंने उनको एक अलौकिक पुरुष माना।

अध्ययन काल मे गुरुवर के साथ दयानन्द का वाग्युद्ध भी हो जाया करता था। दण्डी विरजानन्द तो वाग्युद्ध मे प्रवीण थे ही, दयानन्द भी वाग्युद्ध मे पीछे रहने वाले न थे। दयानन्द की बुद्धि एव तर्कपटुता को देखकर गुरुवर मन ही मन अतीव प्रसन्न हुआ करते थे। यहा तक कि कभी गुरुवर दयानन्द को 'कालजिह्व तथा 'कुलंकर कहकर भी

(शेष पृष्ठ ४ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

पुकारा करते थे। 'कालजिह्व' का अर्थ है, जिसकी जिह्वा असत्य का खण्डन करने मे काल के सदृश हो। 'कुलक्कर' का अर्थ है कि जो शास्त्रार्थ के समय कूटे के सदृश अविचलित रहते हुये दूसरे पक्ष को पराजित करे।

इस प्रकार विरजानन्द जी शनै शनै दयानन्द की शैली एव चरित्र तथा उनकी मानसिक दशा एव हृदय की अभिलाषाओ को जानते गये। दयानन्द की प्रकृति किस उपादान से बनी है? उनका जीवन किस लक्ष्य को लेकर परिचालित है ? तथा वे किस लक्ष्य की पूर्ति के लिये उनके समीप मथुरा अध्ययनार्थ आये ? यह सभी कुछ गुरुवर के मस्तिष्क मे आ गया। साथ ही उन्हे यह भी विश्वास हो गया कि यह ही एक ऐसा शिष्य मिला है कि जो उनके जीवन के ध्येय को पूर्ण करने मे समर्थ है। अतएव उनके पास जो कुछ भी संचित ज्ञान था उस सभी को उन्होंने दयानन्द को दे डाला।

इस प्रकार गुरुवर के समीप दयानन्द को लगभग दो या तीन वर्ष रहना पड़ा। उनके लक्ष्य की पूर्ति तो हो ही गई। साथ ही उन्हें वह यथार्थ ज्ञान भी उपलब्ध हो गया कि जिसके लिये वे निरन्तर अनेक वर्षों तक उद्विग्न बन रहे थे।

गुरु के समीप से विदा लेने के पूर्व उन्होंने सोचा कि गुरुवर को दक्षिणा मे क्या दिया जाय ? मेरे पास तो देने योग्य कुछ है ही नहीं। गुरुवर विरजानन्द जी किसी शिष्य से कोई दक्षिणा कभी नहीं लिया करते थे। फिर दयानन्द से तो लेते ही क्या ? अतएव उन्होंने दयानन्द से कहा–

'मै तुमसे तुम्हारे जीवन की दक्षिणा चाहता हू। तुम प्रतिज्ञा करो कि जितने समय तक तुम जीवित रहोगे उतने समय तक आर्यावर्त (भारतवर्ष) मे आर्ष ग्रन्थो की महिमा स्थापित करोगे, अनार्ष ग्रन्थो का खण्डन करोगे और भारतवर्ष मे वैदिक धर्म की स्थापना मे अपने प्राण तक अर्पण कर दोगे।'

ऋषिवर दयानन्द ने इसके उत्तर मे केवल एक शब्द ही कहा– "तथास्तु"। इसके पश्चात् गुरुवर के चरणो मे नतमस्तक होकर प्रणाम किया और गुरुवर द्वारा कराई गई प्रतिज्ञा के अनुसार ही उस दिन से लेकर अपने जीवन काल पर्यन्त उसका प्राणपण से पालन भी करते रहे।

★ ★

पुस्तकालय भवन का उद्घाटन

रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महा विद्यालय अमेठी के नवनिर्मित पुस्तकालय भवन का उद्घाटन दिनांक २–१०–८७ को अवध विश्व-विद्यालय के कुलपति डा० ए०सी० बनर्जी द्वारा सम्पन्न हुआ।

सती प्रथा अवैदिक

आर्यसमाज गोविन्द नगर कानपुर, आर्यसमाज रुड़की, आर्यसमाज साहबगज गोरखपुर, आर्य उप प्रतिनिधि सभा वाराणसी ने अपने-अपने यहा सार्वजनिक सभाओं मे देवराला मे सती के नाम पर नारी के आत्मदाह की तीव्र भर्त्सना की है। इस काण्ड को पूर्णतया अवैदिक बताया है साथ ही शकराचार्य निरञ्जन देव तीर्थ के वक्तव्य की निन्दा की है।

सती प्रथा वेद विरुद्ध का पुनः मुद्रण

सभा द्वारा प्रकाशित 'सती प्रथा वेद विरुद्ध' की समस्त मुद्रित ५००० प्रतियां समाप्त हो गई हैं। आर्यजनों की हार्दिक मांगपर इसे पुन मुद्रित कराया जा रहा है और प्रचार की दृष्टि से यह पूर्ववत ६० रु० सैकड़ा की दर से विक्रयार्थ सभा मे उपलब्ध रहेगी। ज्यादा से ज्यादा संख्या में मगाकर जन जन तक पहुचावें।'

–सभा मन्त्री

वार्षिकोत्सव

–आर्यसमाज लखीमपुर का वार्षिकोत्सव दिनांक १४–११–८७ से १६–११–८७ तक आयोजित किया गया। जिसमे महिला, राष्ट्रभाषा, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सम्पन्न हुये।

–आर्यसमाज जगीगज वाराणसी का वार्षिकोत्सव २७ से २९ सितम्बर तक सतमारोह सम्पन्न हुआ।

–आर्यसमाज फजलपुर (सुन्दरनगर) मेरठ का वार्षिकोत्सव दिनाक ४–१० से ७–१०–८७ तक सम्पन्न हुआ।

–आर्यसमाज वि ।ना एव दयानन्द बाल मन्दिर का संयुक्त उत्सव २ से ५ अक्टूबर तक ससमारोह सम्पन्न हुआ।

–वैदिक वृद्ध स वास आश्रम के निर्माण का शुभारम्भ दिनाक २२ नवम्बर ८७ को धर्मपुरा कालोनी यमुनानगर हरियाणा मे हुआ।

शुद्धि समाचार

करनाल–ग्राम बडवर मवाना जि० झुझनू मे हिन्दू शुद्धि सगठन समिति एव आर्यसमाज सभासभा के प्रयत्न से स्वामी सेवानन्द जी एव पं० नागेराम जी द्वारा आयोजित यज्ञ मे ७ अक्टूबर को ६ यवन मद परिवारो ने तथा १३ अक्टूबर को नूर मुहम्मद ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया।

शोक समाचार

–दयानन्द बाल मन्दिर पिथौरागढ़ मे शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी जी के निधन पर शान्ति यज्ञ हुआ।

–आर्यसमाज अमेठी और रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्या-लय अमेठी सुल्तानपुर मे अमरस्वामी जी की स्मृति मे शोक सभायें हुयीं।

–स्व० कामतानाथ रसबिन्दु प्रख्यात साहित्यकार एव स्वतन्त्रता सेनानी की चतुर्थ पुण्य तिथि पर उनके निवास स्थान गोरखपुर मे स्मृति यज्ञ २५–१०–८७ को सम्पन्न हुआ।

–पं० निरञ्जनदत्त वानप्रस्थ आर्यसमाज बहराइच का निधन १२ अक्टूबर को हो गया था। उनकी स्मृति मे शान्ति यज्ञ २३ अक्टूबर १९८७ को हुआ।

–श्री हेमराज वासा सदस्य आर्यसमाज आदर्शनगर लखनऊ का दिनाक १८–१०–८७ को मेरठ मे उनके पुत्र के यहाँ आकस्मिक निधन हो गया। आर्यसमाज आदर्शनगर मे शोक सभा मे उनके प्रति श्रद्धा-ञ्जलियां दी गयीं।

–अमरस्वामी जी महाराज के निधन पर श्री आनन्द प्रकाश मन्त्री महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति ट्रस्ट वाराणसी तथा उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा ने श्रद्धांजलि भेंट की। उन्होंने कहा कि स्वामी जी ने शास्त्रार्थ की परम्परा का आजन्म निर्वाह किया। उनके निधन से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा और महर्षि दयानन्द

[श्री पवन कुमार एम० ए०, सिद्धान्त शास्त्री, लखनऊ]

महर्षि दयानन्द के प्रधान शिष्य क्रान्तिकारियों के पितामह स्वरूप श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म ४ अक्टूबर सन् १८५७ को हेलवाला जाति के भानुशाली परिवार में हुआ। हेलव जा लोग अपना सम्बन्ध क्षत्रियों से मानते हैं और अपने नाम में वर्मा शब्द जोड़ते हैं।

श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा के पिता साधारण स्थिति के गृहस्थ थे। मेहनत मजदूरी करके ही वे अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे। उनकी आय बहुत ही सीमित थी।

श्याम जी का बचपन अपनी माता के साये में बीता वह अपनी माता की बहुमूल्य पूंजी थे। माता बालक को लोरियों में भारतीय संस्कृति की शिक्षा देती थी और स्कूल के पाठ को घर पर याद कराती थी।

श्याम जी की प्रारम्भिक शिक्षा उनके ग्राम में हुई। अन्त को एक दिन श्याम जी अपने प्राथमिक पाठशाला में सर्वप्रथम आया। माता ने अपने पुत्र को भुज के एक अंग्रेजी स्कूल म प्रविष्ट करा दिया। जब पुत्र श्याम जी ११ वष के थे माता स्वग सिधार गई। कुछ दिनों के उपरान्त जब श्याम जी १२ वष के थ एक सन्यासिनी माता हरिकुंवरि बा के साथ कच्छ चले गए। वहाँ इस संन्यासिनी देवी ने बालक श्याम जी को संस्कृत का कुछ अभ्यास कराया और अपनी यात्रा की समाप्ति के पश्चात् उन्हें संस्कृत की कुछ पुस्तकें देकर और आशीर्वचन के साथ घर लौटा दिया। माता की मृत्यु के पश्चात उनकी मातामही (नानी) ने उनका लालन पालन किया। उन्हीं की सार सम्भाल में श्याम जी की शिक्षा चालू रही। सन् १८७० में बालक श्याम जी ने पुन सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर नानी तथा अन्य शुभचिंतक जनों को प्रसन्न किया।

कुशाग्र बुद्धि तथा अपनी कक्षा में प्रथम आने वाले श्याम जी से सर्वप्रथम कच्छ के एक व्यापारी सेठ मथुरादास भाटिया प्रभावित हुए। उनको श्रीकृष्ण वर्मा की पारिवारिक निर्धनता का भी पता चला। सेठ जी ने शीघ्र ही श्याम जी एव उनकी नानी को बुला लिया तथा बालक को विल्सन हाईस्कूल में प्रवेश दिला दिया तथा एक धर्मशाला में बालक श्याम जी और उनकी नानी के ठहरने की व्यवस्था करा दी।

सेठ मथुरादास भाटिया एक दिन श्याम जी को अपने कुल पुरोहित पं० विश्वनाथ शास्त्री के पास ले गए जो संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान थे। एक संस्कृत पाठशाला उन्होंने खोल रखी थी, जिसका खर्चा सेठ जी देते थे। सेठ जी ने शास्त्री जी से कहा—'यह लड़का बहुत मेधावी है मिडिल में भी प्रथम आया है। संस्कृत में इसकी रुचि है इसे अपना शिष्य बना लो। शास्त्री जी ने बड़े ध्यान से विद्यार्थी को देखा। दो चार प्रश्न किये। शिष्ट उत्तर से सन्तुष्ट होकर शास्त्री जी ने श्याम जी से कहा—'देखो! श्याम! तुम प्रतिदिन स्कूल से छुट्टी के बाद मेरी पाठशाला में आ जाया करो। किताब कापी की कोई विशेष जरूरत नहीं। विद्या तो कण्ठस्थ होनी ही चाहिये। अगले दिन से श्याम जी ने नियमित रूप से शास्त्री जी की पाठशाला में जाना आरम्भ कर दिया। श्लोक और व्याकरण कण्ठस्थ कराये जाने लगे। कुछ ही वर्षों में उन्होंने पाणिनि की अष्टाध्यायी भी याद करली माता हरिकुंवरि बा के सम्पर्क से बालक श्याम जी के मन में संस्कृत भाषा के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हुई उसका विकास श्री विश्वनाथ शास्त्री जी की पाठशाला में हुआ। इस प्रकार श्याम जी अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में पारंगत होते गए।

महर्षि के मुम्बई प्रवास की अवधि में उनसे सर्वाधिक प्रभावित होने वाला युवक श्याम जी ही था। अपने संस्कृत ज्ञान और सुधारवादी दृष्टिकोण के कारण श्याम जी शीघ्र ही महर्षि के प्रियपात्र बन गए। उन्होंने महर्षि दयानन्द का शिष्यत्व स्वीकार किया। सन् १८७५ में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना होनेपर श्री श्याम जी ने उसकी सदस्यता स्वीकार की।

श्याम जी कृष्ण वर्मा ने महर्षि स्वामी दयानन्द जी से वेदांगों विशेषकर पाणिनि मुनि की अष्टाध्यायी, महर्षि पतञ्जलि का महाभाष्य महर्षि चरक रचित निघण्टु निरुक्त का विशेष अध्ययन किया। महर्षि कृत अष्टाध्यायी भाष्य तथा वेदांग प्रकाश का भी स्वाध्याय किया। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका से भी मार्ग दर्शन प्राप्त किया। सत्यार्थप्रकाश का भी पारायण किया। स्वामीजी के अन्य ग्रन्थों को भी देखा। श्री श्याम जी जैसे महान पण्डित की विद्या तथा समाज सुधार की भावना पर महर्षि दयानन्द की विचारधारा का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

वेद भाष्य के माध्यम से वे वेद के अभ्यास की ओर भी अनुरक्त हो गए। वेदों में पाण्डित्य भी प्राप्त किया। महर्षि ने श्याम जी के अन्त करण में वैदिक धम आय संस्कृति के प्रति स्वाभिमान जागृत किया। स्वदेशाभिमान, राष्ट्रीयता के संस्कार तथा सशस्त्र क्रान्ति की आस्था भी महर्षि से ही प्राप्त की।

सन् १८७७ के जनवरी मास से मार्च १८७८ तक तो श्याम जी ने अपना समय आयसमाज के प्रचार और प्रसार में लगाया। स्वामी जी ने श्याम जी को आदेश दिया कि वे आयसमाज की प्रगति के विषय में स्वामी जी को पत्र लिखते रहें।

स्वामी दयानन्द के आदेश पर श्याम जी धर्म प्रचार के लिए निकल पड़े। उस समय उनकी आयु २० वष की थी। कभी पत्रव्यवहार के द्वारा, कभी व्यक्तिगत रूप से स्वामी जी के सान्निध्य में रहकर युवक श्याम जी कृष्ण वर्मा स्वय धर्म प्रचारक बन गए। सन् १८७७ में प्रचार करते हुए वे नासिक पहुंचे। वहाँ से अहमदाबाद, बड़ौदा, भड़ौच, सूरत आदि स्थानों पर प्रचार किया। उनके भाषण सरल संस्कृत भाषा में होते थे। उनके भाषणों में मधुरता रहती थी।

सन् १८७८ में श्याम जी ने उत्तरी भारत विशेष कर उत्तर प्रदेश और पंजाब में धर्म प्रचार किया। वाराणसी, प्रयाग, लाहौर आदि सभी स्थानों पर उनके भाषणों की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा हुई।

ऋषि दयानन्द की कृपा से श्याम जी का विवाह सेठ छबीलदास की पुत्री भानुमती से हुआ था। सन् १८७४ से ७८ तक लगभग ५ वष तक श्याम जी ने महर्षि दयानन्द के सम्पर्क और साहचर्य से लाभ उठाया। उस समय वे महर्षि के प्रमुख शिष्य और सहायक के रूप में दृष्टिगोचर हो रहे थ। वेदभाष्य के मुद्रण और विक्रय का प्रबन्ध महर्षि ने आपको सौंपा। महर्षि से दूरस्थ रहते हुए श्याम जी ने उनसे सम्पर्क बनाए रखा। आपके (श्याम जी के) प्रश्नों के उत्तर में स्वामी जी ने उन्हें २१ पत्र हिन्दी और संस्कृत में लिखे जिनमें वैदिक धर्म के प्रचार और देश सेवा की प्रेरणा रहती थी। स्वामी जी ने अपने पत्रों के माध्यम से श्याम जी के अन्त करण में राष्ट्रीयता तथा संघर्षशील क्रान्तिकारिता के संस्कारों का बीजारोपण किया। उन्हीं के पथ प्रदर्शन में श्याम जी ने इंग्लैण्ड में सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलन का सूत्रपात किया तथा स्वतन्त्रता के लिए आजीवन संघर्ष करते रहे।

नारी उत्थान और आर्यसमाज

उपलब्धियां, संभावनाएं और कर्तव्य

—ले० डा० भवानीलाल भारतीय

आर्य समाज और नारी जागरण—

आर्य समाज ने नारी उत्थान के लिये वैदिक आदर्शों को ही अपनाया है। वैदिक संस्कृति मे नारी को अत्युच्च स्थान दिया गया था। वेदो मे स्त्रियो के लिए अत्यन्त सम्मान पूर्ण शब्द प्रयुक्त हुए हैं। वहाँ कहा गया है—शुद्धा पूता योषितो यज्ञिया इमा अर्थात् स्त्रियां शुद्ध, पवित्र एवं यज्ञ के तुल्य आदरणीय होती हैं। भारत के अतीतकाल में नारी जाति को पुरुष के तुल्य ही अधिकार प्राप्त थे। न केवल गृहस्थ मे ही उसकी सत्ता एव प्रभुता निर्विवाद थी, अपितु धर्म एवं अध्यात्म के क्षेत्र मे भी उन्नति करने के सर्वोच्च अवसर उन्हे प्राप्त थे। वशिष्ठ, विश्वामित्र और वामदेव की ही भांति वेदो के मन्त्रो की द्रष्टा ऋषिकाओ के रूप मे घोषा, अपाला, लोपामुद्रा, शची इन्द्राणी आदि के नाम उल्लिखित हुए हैं जिन्होने वेद मन्त्रो मे निहित रहस्यों का दर्शन एवं प्रचार किया था। वैदिक कर्मकाण्ड मे भी उनका पूर्ण अधिकार स्वीकार किया गया था। 'स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ इस वैदिक प्रमाण के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि स्त्रिया न केवल यज्ञो मे भाग ही लेती थीं, किन्तु ब्रह्मा पद पर आरूढ़ होकर यज्ञों के सचालन की दक्षता भी उन्हे प्राप्त थी। युद्ध विद्या तथा सेना सचालन मे भी वे यदा-कदा अपने कौशल का प्रदर्शन करती थीं। इन वीर नारियों की सन्तान वीरता का मूल मन्त्र तो माता के स्तन्यपान से ही सीखती थी। एक वीर माता की गर्वोक्ति का उल्लेख वेदों में इस प्रकार मिलता है—'मम पुत्रो शत्रुहणो मम दुहिता विराट्।' अर्थात् मेरा पुत्र शत्रु हन्ता है और पुत्री विराट् व्यक्तित्व धारिणी है।

वैदिक काल की नारी विषयक उदात्त धारणाए उपनिषद् युग में भी सक्रमित हुई। उपनिषद् साहित्य में गार्गी और मैत्रेयी जैसी ब्रह्मवादिनी नारियो का उल्लेख मिलता है। ये शास्त्रों की पूर्ण पण्डिता, शास्त्रार्थ कला में निष्णात तथा ब्रह्म विद्या की मर्मज्ञ विदुषियां थीं जिनके समक्ष वाद में उस युग के बड़े ब्रह्मवेत्ता खड़े होने में संकोच करते थे। महाराज जनक द्वारा आयोजित ब्रह्मविद्या की प्रसिद्ध गोष्ठी में गार्गी ने ही ऋषि याज्ञवल्क्य से अनेक मार्मिक प्रश्न पूंछ कर उसके ज्ञान एव वैदुष्य की थाह ली थी।

यह अवश्य स्वीकार किया जाना चाहिये कि भारत के मध्यकालीन युग में नारी जाति की दशा नितान्त हेय तथा शोचनीय हो गई थी। पौराणिक साहित्य में उसकी अवनत दशा के सकेत मिलते हैं तो संस्कृत के परवर्ती काव्य एव नाटक साहित्य में उसे विलास एवं भोग की वस्तु ही मान लिया गया है। "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" की बात करनेवाले अद्वैत वेदान्त के प्रतिष्ठापक आचार्य शङ्कर भी नारी की अवमानना करते हुए उसे नरक का द्वार कहने मे कोई सकोच नहीं करते, चाहे यह बात उन्होने वैराग्य में बाधक तत्वों की चर्चा के प्रसंग में ही क्यों न लिखी हो। ऐसा कथन करते समय शायद वे उस महामहिमाशालिनी विदुषी उभय भारती को विस्मृत कर गये, जिन्होंने मण्डन मिश्र के समय शास्त्रार्थ के प्रसग में इन दोनो प्रतिवादि भयंकरों के वाग्युद्ध में मध्यस्थ का कार्य किया था। नारी के प्रति अनुदारता का प्रदर्शन करने में मध्यकालीन धर्माचार्य एवं निर्गुण व सगुण धारा के भक्त एवं सन्त भी पीछे नहीं रहे। रामानुज, निम्बार्क, मध्व और वल्लभ आदि वैष्णवाचार्य नारी को पुरुष की अनुचरी ही मानते हैं, सहचरी नहीं। कबीर आदि निर्गुण सन्तों तथा सूर, तुलसी आदि साकार वादी भक्तों ने तो नारी जाति के प्रति स्पष्ट अवज्ञा, तिरस्कार एवं अवमानना का ही प्रदर्शन किया है जो उनके साहित्य में अभिव्यक्त शतशः वचनों से प्रकट होता है।

वर्तमान युग में स्त्री जाति के उद्धार और उसके लुप्त गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने का श्रेय आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी को है जिन्होंने स्मृतिकार मनुम के निम्न शब्दों में नारी को पूजार्ह ठहराया—

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" ॥

मध्ययुगीन आचार्यों ने जहाँ नारी की प्रगति के मार्ग में आवर्जनाओ और अवरोधो की प्रस्तर शिलाएं रक्खीं, और "स्त्री शूद्रौनाधीयाताम्" जैसे कपोल कल्पित वाक्य रचकर उनके वेद पठन पाठनाधिकार का अपहरण किया, वहा स्वामी दयानन्द ने "यथेमां वाचं कल्याणी—मावदानि जनेभ्य.। "ब्रह्म राजन्याभ्याम् शूद्राय चार्याय चारणाय" जैसे वेद मन्त्रों द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि परमात्मा की इस कल्याणी वाणी को पढ़ने का अधिकार स्त्री, शूद्र, चाण्डाल, निषाद आदि सभी को प्राप्त है। अथर्ववेद के "ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्" आदि मन्त्रों के आधार पर उन्होने यह प्रतिपादित किया कि जैसे ब्रह्मचर्य से पूर्ण विद्या, और सुशिक्षा को प्राप्त होकर युवक विदुषी अपने अनुकूल प्रिय, सदृश युवतियों के साथ विवाह, करते हैं, वैसे कुमारी कन्यायें ब्रह्मचर्य सेवन से वेदादि शास्त्रों को पढ़कर पूर्ण विद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त युवती होकर पूर्ण युवावस्था मे अपने सदृश प्रिय, विद्वान पूर्ण युवावस्था युक्त पति को प्राप्त होवे। कल्प सूत्रों के प्रमाणों से भी स्वामी ने स्त्रियों के वेदपठनाधिकार को सिद्ध किया क्योंकि वहां "इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्" जैसे आदेश उपलब्ध होते हैं। यदि कन्यायें शास्त्रों के पठन से दूर रहेंगी तो वे मन्त्रो का सस्वर उच्चारण तथा संस्कृत सम्भाषण कैसे कर सकेंगी?

भारतीय महिलाओं के विगत गौरव को पुनः स्मरण करते हुए स्वामी जी ने लिखा—"भारतवर्ष की 'स्त्रियों में भूषण रूप गार्गी आदि वेदादि शास्त्रो को पढ़कर पूर्ण विदुषी हुई थीं। यह शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है। भला जो पुरुष विद्वान और स्त्री अविदुषी और स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान हो तो प्रति दिन देवासुर संग्राम घर में मचा रहे, फिर सुख कहां .....देखो, आर्यावर्त के राजपुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद, युद्ध विद्या भी अच्छी प्रकार जानती थीं। क्योंकि न जानती होती तो कैकेयी आदि दशरथ के साथ युद्ध में क्यों कर जा सकतीं।"

आर्यसमाज ने नारी जाति की विमल महिमा को पुनः प्रतिष्ठित किया। साथ ही उसपर किये जाने वाले अशेष अत्याचारों को अविलम्ब बन्द करने के लिए सार्थक प्रयास भी किये। आर्य समाज की यह दृढ़ धारणा थी कि जब तक नारी जाति को पुरुषों के तुल्य ही शिक्षित एवं सुसंस्कृत नहीं बनाया जायगा तब तक उससे समाज में किसी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। फलतः आर्य समाज ने नारी शिक्षा हेतु अथक प्रयास किये। जिस युग में स्त्री शिक्षा की तो बात ही क्या, पुरुषोंमें भी शिक्षा प्रचार के लिए भी किसी संस्था

((शेष पृष्ठ ११ पर)

आर्य परिव्राजक–शंकराचार्य तथा महन्त मठाधीश निर्भयतापूर्वक देश का मार्ग–दर्शन करें

–प्रो० रमेशचन्द्र एम० ए०

आज देश की बिखरती हुई एकता एव अखण्डता तथा राजनैतिक दलों की स्वार्थ लिप्सा और सत्ता पर अधिकार का जो द्वन्द्व-युद्ध चल रहा है उससे सब परिचित हैं और उसके भयावह परिणाम क्या हो सकते हैं उसकी भी कल्पना की जा सकती है। खेद है स्वतन्त्रता के चालीस वर्षों के अन्तराल मे हमारे देश के नेता और सत्ता पर बैठे व्यक्ति भगवान तथागत–आचार्य शंकर एव महर्षि दयानन्द की शिक्षाओ को भूल गए फल रहित समाज सेवा से विरत हो गए, त्याग की महिमा से हाथ धो बैठे तथा केवल एक उद्देश्य कि येन केन प्रकारेण शासन पर अधिकार रहना चाहिये ही अपना लक्ष्य बनाया। नेहरू ने इस दिशा की ओर कदम बढ़ाया–सत्ता अपने हाथ में केन्द्रित की, श्रीमती इन्दिरा गांधी जी नेहरू के लक्ष्य से भी आगे बढ़ीं और अपनी कुर्सी की रक्षा के लिए फूट-और जाति संघर्ष के बीज बोये–पञ्जाब की समस्या इन्दिरा जी की अदूरदर्शिता की देन है। राजीव ने जो कुछ विरासत मे पाया उसे सहेज न सके अपितु बिखेरते चले गये। निरन्तर दो वर्ष से ऊपर हो गये–पंजाब समझौता हुआ परन्तु निरन्तर निरपराध व्यक्तियो की हत्या का कार्यक्रम चालू रहता है–दुर्भाग्य है कि हिन्दू और सिखो मे उसीप्रकार का विवाद और दूरी बढ़ रही है जैसी जिन्ना ने मुस्लिम लीग का आवरण लेकर हिन्दू मुसलमानों मे दूरी बढ़ाई। पञ्जाब की समस्या राजीव जी एवं उनके सलाहकार सुलझाने मे असमर्थ रहे तथा हिंसा को खुली छूट पञ्जाब में मिली है और देश की अखण्डता पर भी चोट करने की तैयारी है।

दक्षिण भारत की समस्या यद्यपि पञ्जाब के समान नहीं है फिर भी तमिलनाडु मे विरोध झलक रहा है–श्री लंका समझौता का डंका पीटा गया परन्तु आज स्थिति ऐसी हो रही है कि श्रीलंका के उत्तरी एव पूर्वी प्रान्तों में तमिल संगठन और भारतीय शान्ति सेना आमने–सामने है। समझौता के समय तमिल ईलम के नेता प्रभाकरन आदि को साथ लेना आवश्यक था। यदि तमिल लंका वासी और भारतीय सेना मे संघर्ष बढ़ता गया तो वह दुर्भाग्य पूर्ण होगा–इससे तमिलनाडु मे भी कटुता बढ़ेगी।

आज देश मे इससे भी अधिक गम्भीर समस्या है नैतिक पतन की और भ्रष्टाचार की, ऐसा कभी नहीं हुआ था कि प्रधान जो देश की गरिमा का प्रतीक होता है, दोनों हाथ उठाकर संसद मे घोषणा करें कि मैंने या मेरे परिवार के किसी व्यक्ति ने बोफोर्स के मामले मे कोई धन नहीं लिया है। इससे अधिक जो चर्चा है उससे सब परिचित हैं कि सुरक्षा के शस्त्रों की खरीद में दलाली दी गयी और ली गयी इससे अधिक आरोप किसी सरकार पर क्या हो सकता है?

देश मे आसुरी प्रवृत्ति बढ़ रही है लोकतन्त्र में भाषण और अभि-व्यक्ति की स्वतन्त्रता रहती है परन्तु आज स्थिति क्या है, पूर्णरूपेण अधिनायकवादी कांग्रेस में आज आलोचना के मार्ग बन्द हैं केवल अध्यक्ष या प्रधान मन्त्री की खुशामद ही कांग्रेस के प्रति निष्ठा मानी जाती है और जो व्यक्ति खरी आलोचना को लेकर सामने आते हैं उनका विरोध शाब्दिक नहीं हिंसक हो रहा है। यादवीय युद्ध का उल्लेख ग्रन्थों में आता है वही स्थिति आज स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ रही है यदि कोई सत्यवक्ता है उस पर घातक प्रहार हो रहा है। देश की सारी स्थिति हिंसामय हो रही है। नैतिक पतन चरम सीमा पर है भ्रष्टाचार व्यापक है और सुधार मार्ग अवरुद्ध है।

राजनैतिक नेता असफल हैं–स्वार्थ मे लिप्त हैं तथा देश को स्वच्छ दिशा देने में असफल हैं–ऐसी स्थिति मे आध्यात्मिक एव सामाजिक नेताओं का कर्त्तव्य है कि वह देश का नेतृत्व अपने ढंग से करें, निर्भय होकर हिंसा का विरोध करें–स्वार्थ के लिए हिंसा को प्रश्रय देने वाले व्यक्तियो और नेताओ को प्रताड़ित करें–भारत स्वच्छ राजनीति से ही आगे बढ़ सकता है। ऐसे दल जो देश में अराजकता फैलाते हैं उनका बहिष्कार हो।

आशा है आर्य परिव्राजक–शंकराचार्य–महन्त–साधु एव मठाधीश अपने कर्त्तव्य को पहिचानेंगे। एक सम्मेलन आध्यात्मिक जनो का होना चाहिये और इसके द्वारा देश को सही दिशा दी जानी चाहिये जहाँ से भौतिक जगत में शान्ति स्थापित हो सके।

हिन्दू धर्म और संस्कृति खतरे में है

२२ नवम्बर—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्यसमाज लल्लापुरा, वाराणसी में एक विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत में हिन्दू धर्म और संस्कृति खतरे मे है। कश्मीर में ५ प्रतिशत हिन्दू बचे हैं। रामजन्म भूमि मन्दिर का ताला खुलने के विरोध मे विद्रोही मुसलमानो ने कश्मीर मे १०० से अधिक मंदिर तोड़ दिए। वहां के पण्डित भयभीत हैं खाड़ी के ४४ मुस्लिम देश भारत मे पेट्रो डालर के बल पर गरीब हिन्दुओं और हरिजनों का धर्मान्तरण करके राष्ट्रीय एकता को चुनौती दे रहे हैं। उन्होने कहा कि १ हजार वर्ष पहले जब मुसलमान आक्रान्ता हिन्दुस्तान नहीं आये थे, तब कोई भी मस्जिद देश मे नहीं थी लेकिन मन्दिर तो देश मे तब से हैं जब से इस देश का अस्तित्व है। समूचे देश मे एक भी ऐसा उदाहरण नहीं है जहां मस्जिद तोड़ कर मन्दिर बनाया गया हो। अतः रामजन्म भूमि जिनकी है उनको मिलना चाहिए। कट्टरपन्थी मुसलमान सकीर्णता छोड़ें और रामजन्मभूमि स्थल को हिन्दुओ को सौंप दें। पंजाब मे आतंकवादियों को उन्होने पाकिस्तान का एजेण्ट बताया और हिन्दुओं के जान माल की रक्षा की माग की। उन्होने कहा कि पंजाब मे आतंकवाद मर रहा है और अब समय का तकाजा है कि जैसलमेर से कश्मीर तक ५ मील चौड़ी सुरक्षा पट्टी बनाकर भूतपूर्व सैनिको को वहां बसाया जाय।

सती प्रथा पर आर्यसमाज का दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए स्वामी जी ने कहा कि वेद के किसी भी मन्त्र मे सती को जलाने का विधान नहीं है। शंकराचार्य एक भी मन्त्र प्रस्तुत करें और जहां चाहें आर्य समाज से शास्त्रार्थ कर लें। सती प्रथा एक जघन्य अपराध है, इसको सख्ती से बन्द करना चाहिये। छुआछूत और दहेज प्रथा को पूरी तरह समाप्त करने का आह्वान स्वामी जी ने हिन्दुओं से किया और सरकार से यह मांग की कि धारा ४८ के अन्तर्गत पूरे देश में गो हत्या बन्दी का व्यापक कानून बनाया जाय और लागू किया जाय।

आवश्यकता

इस सभा को अपनी आर्यसमाजों व संस्थाओ की गतिविधियो के निरीक्षण, उनके आय-व्यय के सम्परीक्षण तथा उनसे, सभा के प्राप्तव्य धन की वसूली आदि के कार्यों के लिये प्रत्येक जनपद में एक-एक अवैतनिक निरीक्षक की तुरन्त आवश्यकता है।

अत. जो आर्य जन पूर्ण निष्काम एवं निःस्वार्थ भाव से इस सभा की, उक्त प्रकार के कार्यों के माध्यम से, अवैतनिक सेवा करने के इच्छुक हो वे कृपया अपना प्रार्थना पत्र, साधारण कागज पर लिखकर अधोहस्ताक्षरी को दि० ११-१२-८७ तक भेजने का कष्ट करें। शुद्ध यात्रा-भत्ता व आतिथ्य सम्बन्धित आर्यसमाजो से प्राप्त होगा।

विशेष जानकारी हेतु इस सभा के मुख्य निरीक्षक कुं०भुवपालसिंह जी 'अटल' (बरपरी, मैनपुरी) से सम्पर्क करने का कष्ट करें।

प्रार्थना पत्र में निम्नतथ्यो का उल्लेख अवश्य होना चाहिये—
१—नाम' २—पिता का नाम, ३—वर्ण, ४—जन्म तिथि, ५—शिक्षा, ६—व्यवसाय तथा ७—आर्य सभासदी आदि।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

धर्म परीक्षा एवं प्रशिक्षण शिविर सम्बन्धी आवश्यक सूचना

धर्म रत्न परीक्षा

कक्षा ५ में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों के लिए इस वर्ष 'धर्म रत्न' नामक धर्म परीक्षा अनिवार्य होगी चाहे वे सभा से सम्बद्ध विद्यालयों में पढ़ते हों या असम्बद्ध में, आर्यसमाज के अधिकारी एवं विद्यालयों के प्रबन्धक महोदय इस ओर विशेष ध्यान देने की कृपा करें। परीक्षा आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित कक्षा ५ की धार्मिक शिक्षा की पुस्तक के आधार पर होगी। प्रथम तीन स्थान पाने वाले परीक्षार्थियों को पुरस्कृत किया जायेगा, परीक्षा फार्म सभा कार्यालय से प्राप्त करें।

धर्म प्रशिक्षण शिविर

प्रदेशीय विद्यार्य सभा कुछ विद्यालयो में धर्म प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन करती है ये तीन दिन तक चलते हैं उनमें वेद शास्त्र, उपनिषद, ब्राह्मणादि आर्ष ग्रन्थो, पंचमहायज्ञ, संस्कार, महर्षि दयानन्द जीवनी एवं कृतियां, आर्यसमाज की मान्यताएं, आदि विषयो की सामान्य जानकारी शिक्षकों, छात्रों को दी जाती है।

दयानन्द रामेश्वर हंसरानी आर्य कन्या इण्टर कालेज सीतापुर मे एक शिविर ८, ९, १० नवम्बर १९८७ को वहा की प्रबन्ध समिति, प्रधानाचार्या एव छात्राओं तथा अध्यापिकाओ के हार्दिक सहयोग से हो चुका है।

सभी आर्य विद्यालयों में इस प्रकार के शिविरों का आयोजन होना चाहिये इन शिविरो में विद्वानों की व्यवस्था में विद्यार्य सभा सहयोग देगी जो विद्यालय इस शिविर को चलाना चाहते हैं वे मन्त्री प्रदेशीय विद्यार्य सभा, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्पर्क करें।

धर्म परीक्षाएं

प्रदेशीय विद्यार्य सभा द्वारा संचालित धर्म प्रवेशिका, धर्मभूषण, धर्माधिकारी परीक्षाएं २८ फरवरी १९८८ को होंगी जिनको क्रमशः कक्षा ७, ९, ११ के छात्र सुगमता से दे सकेंगे।

प्रधानाचार्य महोदय इन कक्षाओ के सभी विद्यार्थियों को इन परीक्षाओ में प्रविष्ट होने के लिए प्रेरित करें। प्रश्न पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा प्रकाशित कक्षा ७, ९, ११ की पुस्तको पर सामान्यतया, आधारित होंगे जिनको विद्यार्थी स्वयं भी पढ़ सकते है। सभा कार्यालय से तुरन्त फार्म मंगा लें परीक्षा शुल्क क्रमशः २) रु०, २.५० रु० तथा ३) रु० होगा।

माधवसिंह
मन्त्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ० प्र०, लखनऊ

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में सूखा ग्रस्त राहत कार्य जोरों पर

आर्य जनों को सूचित किया जाता है कि महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में टंकारा ट्रस्ट के अन्तर्गत सूखा राहत कार्य आरम्भ कर दिया गया है। जो लोग धन भेजना चाहें वह बैंक ड्राफ्ट, चैक, मनीआर्डर द्वारा "महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा के नाम केवल खाते में रजिस्ट्री द्वारा भिजवा सकते हैं। सबको यह भी जानकारी दी जाती है कि महर्षि दयानन्द स्मारक टंकारा में जो राशि आती है वह क, मुक्त होती है।

महर्षि दयानन्द की विनोदप्रियता एवं निर्भीकता

[डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री (महोपदेशक) रायबरेली]

स्वामी दयानन्द का सम्पूर्ण जीवन संघर्षों एवं कठिनाइयों का इतिहास है। आर्य जाति को जगाने तथा इसकी अनेकानेक बुराइयों को दूर करने के लिए उन्हें कई बार अपमानित होना पड़ा प्राणों की बाजी लगानी पड़ी तथा जहर पीना पड़ा किन्तु वे अपने लक्ष्य से बिलकुल ही दूर नहीं हटे अपितु इन सबको जीवन में हंसते हंसते सहते रहे तथा इन्होंने जो महान आत्मिक शक्ति और अप्रतिम ईश्वर भक्ति का परिचय देकर निरन्तर संघर्ष करते हुए देश और समाज के उत्थान में लगे रहे। स्वामी जी का जीवन तथा परिहासप्रिय व्यवहार सर्वदा सोद्देश्य एवं शिक्षाओं से पूर्ण तथा प्रत्येक के लिए प्रेरक रहा। हम उनकी जीवनी की कुछ ऐसी ही बातों को पाठकों के समक्ष उपस्थित कर रहे हैं जिससे उनकी तार्किकता और बौद्धिकता के ज्ञान के साथ ही अन्धविश्वास और पाखण्ड के प्रति अनास्था का भाव जागृत होता है। ये समस्त घटनाएं बाबू देवेन्द्रनाथ जी मुखोपाध्याय कृत स्वामी दयानन्द की जीवनी से उद्धृत हैं।

मेरी बात सुनो

लुधियाना में स्वामी जी का व्याख्यान था। वहां एक ब्राह्मण आया तथा बातचीत में ही अपने साथी से बोला कि यह दुष्ट है इसका मुख देखना भी धर्म विरुद्ध है अतः यहां से चलो। संयोगवश उसकी यह बात स्वामी जी के कानों में पड़ी तो स्वामी जी ने उससे कहा कि—मेरे मुख में तो कोई विशेष बात है नहीं जिसे तुम देखो। यदि मेरा मुख देखने से तुम्हें ग्लानि होती है तो तुम मेरे पीछे खड़े हो जाओ मेरी बात ही केवल सुन लो।

उपासना धर्म का निरादर न करो

लाहौर की बात है। एक दिन स्वामी जी महाराज आर्यसमाज के सत्संग में पधारे। उस समय ईश्वरोपासना हो रही थी। स्वामीजी को आता देखकर उनके सम्मान प्रदर्शनार्थ सब उठकर खड़े हो गए। उपासना की समाप्ति पर स्वामी जी ने उपदेश दिया कि उपासना काल में उपासक ईश्वर के सत्संग में मग्न होते हैं। ऐसे समय में कोई कितना ही बड़ा मनुष्य आवे उपासकों को उपासना ऐसा पवित्र और ध्यानावस्थित चित्त को त्यागकर बीच में ही खड़ा न होना चाहिए क्योंकि परमेश्वर से बड़ा कोई नहीं है। ऐसा करने से उपासना धर्म का निरादर होता है।

स्वामी जी की इस घटना से आजकल के पाखण्डी सम्प्रदायवादी गुरुओं के व्यवहार से तुलना करने पर कितना महान अन्तर स्पष्ट ही दिखाई पड़ता है।

अन्नों दा पुत्तर

पंजाब के गुजरात नगर में एक प्रसिद्ध बदमाश था जिसे लोग अन्नों दा पुत्तर (अन्नों का पुत्र) कहते थे। उससे सब कोई डरते थे तथा वह बाजार भर में कहता फिरता था कि दयानन्द को मार डालूंगा। फिर उसकी नाक काट दूंगा, मेरे लिए तो छः मास या एक वर्ष का कारागार कोई बड़ी बात नहीं। इस दयानन्द को मारने से हिन्दुओं की रक्षा हो जाएगी क्योंकि यह देवी देवताओं की मूर्तियों का खण्डन

'दयावान-दयानन्द' देव तू महान है

★

ममता की मूर्ति दयानन्द महाऋषि धन्य
धमका तुम्हीं से देश धर्म का विधान है।
करुणा-कुसुम की सुरभि से महक रहा
पुष्प-सी मनुजता का प्रेम उद्यान है।
अवनी पे अविरल गूंज रही जयकार
तना हर ओर तव कांति का वितान है।
विश्व करता है गुण गान तेरा हर आन
दयावान दयानन्द देव तू ! महान है।

★ ★ ★

धधक रहा था हिंसा ज्वाल में मनुजता की
भूतल भी भयभीत डोला बार बार था।
तूने संत सरसायी सरस स्नेह-सुधा
अवनी पे धर्म की बहाया रस धार था।
बिखरी थी जब प्रखर ज्योति रश्मि जब
मुंह को छिपा के दूर भगा अन्धकार था।
देश धर्म से लगाव तेरा था अटूट संत
जननी के कण कण से असीम प्यार था।

★ ★ ★

जीवन को घेरे हुए गहन तिमिर आज
दीख रही उसकी विकल श्वास डोर है।
त्राहि त्राहि मची हुई अवनी पे हर पल
छाई दुख द्वन्द्व की घटा भी घनघोर है।
लूट-फूट अन्याय दमन कुनीति चक्र
हत्या औ हनन का हर ओर जोर शोर है।
चकित-चकित प्राण रो रहे विकल आज
संत ! धर्म-नाव चली पतन की ओर है।

—कलाम अहमद खां तनवीर असुवापुर मवई बाराबंकी उ०प्र०

करता फिरता है तथा ब्राह्मणों को पोप कहता है आदि आदि।

इस प्रकार उसकी उद्दण्डता बढ़ती गई तथा वह खुलेआम स्वामीजी के प्रति अपशब्दों का प्रयोग करता फिरता। पुलिस ने भी उसे डाटा-डपटा नहीं तथा स्वामी जी की सुरक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं किया। अनेक ईर्ष्यालु लोग तो उसकी गालियों से प्रसन्न होते थे।

स्वामी जी के भक्त मेहता ज्ञानचन्द एवं उनके साथियों को यह भय हुआ कि यह मूर्ख कहीं वास्तव में कुछ अभद्रता न कर बैठे। एक दिन वे स्वामी जी के पास पहुंचे और बोले कि आज आप अपने स्थान से बाहर न जाएं। भला स्वामी जी ऐसी बातों से कहां डरने वाले थे। उन्होंने बिना संकोच कहा कि मैं आज व्याख्यान देने अवश्य जाऊंगा। मुझे कोई भय नहीं है। मेरा यह सोटा देखते ही मुझ पर कोई आक्रमण का साहस नहीं कर सकता। मैं अकेला ही १२-१२ मनुष्यों पर भारी हूं। यदि मैं ऐसे डर जाया करता तो फिर देश में वेदों का उपदेश कैसे करता। अन्त में यही हुआ और वह दुष्ट कभी भी स्वामी जी के सामने आने का साहस न कर सका। इस घटना से स्वामी जी की निर्भीकता और आत्मबल पर विश्वास की ही पुष्टि होती है।

सभा मन्त्री जी का भव्य स्वागत

(१)

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के महामन्त्री श्री प० मनमोहन जी तिवारी के, दि० १-११-८७ को, इटावा पहुंचने पर वहां की आर्य समाज, दयानन्द स्कूल तथा आर्योपसभा ने माल्यार्पण करके भव्य स्वागत किया और अभिनन्दन स्वरूप क्रमश १००१), १००१) तथा ५०१) मुद्रा से युक्त थैलियां सादर भेंट की। माननीय मन्त्रीजी ने स्वागत और अभिनन्दन का उत्तर देते हुए अपने को, आर्यसमाज के लिए सर्वात्मना समर्पित करके निष्काम सेवा करने का आश्वासन दिया।

रजत जयन्ती

(२)

दयानन्द माण्टेसरी स्कूल इटावा की रजत जयन्ती श्री राम कुमार जी की अध्यक्षता, श्री भगवतप्रसाद जी की व्यवस्था तथा श्री छेदालाल जी के संयोजन में दि० ३० अक्टूबर से १ नवम्बर १९८७ तक समारोह पूर्वक मनाई गई जिसमे आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान आचार्य प० विश्व बन्धु जी शास्त्री (ज्वालापुर) आचार्य डा० वागीश जी (गुरुकुल एटा) डा० आनन्दसिंह जी सुमन (देहरादून), श्री महिपालसिंह एवं श्री कृपाराम जी आदि पधारे। जयन्ती का समापन आर्य नेता श्री प० मनमोहन जी तिवारी, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० ने किया। इस अवसर पर माननीय महामन्त्री ने श्री छेदालालजी ने आर्य का हार्दिक अभिनन्दन करके उन्हे एक शाल तथा एक प्रशस्ति पत्र सादर भेंट किया तथा स्कूल के बच्चों को पारितोषिक प्रदान किये। स्कूल के प्रबन्धक श्री भगवतप्रसाद जी ने माननीय महामन्त्री जी को १००१) मुद्रा सादर भेंट करके उनका हार्दिक अभिनन्दन किया।

कुं० ध्रुवपालसिंह 'अटल'
मुख्य निरीक्षक, सभा

ऋग्वेद पारायण बृहद् यज्ञ

आर्यसमाज मन्दिर मैनपुरी में प० सरताज बहादुर जी के सौजन्य से दि० ३१-१०-८७ से ९-११-८७ तक दस (१०) दिवसीय ऋग्वेद पारायण बृहद् यज्ञ स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती (हरिद्वार) के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० से उसके अन्तरग सदस्य प० नरेन्द्रार्य, निरीक्षक श्री सूबेदार जी एवं मुख्य निरीक्षक कुं० ध्रुवपालसिंह जी 'अटल', गुरुकुल एटा से स्वामी वेदानन्द जी, फर्रुखाबाद से महात्मा सच्चिदानन्द जी वानप्रस्थ (प्रधान, आर्य उपप्रतिनिधि सभा), श्री यज्ञमुनि जी, एवं महाशय सूरजप्रसाद जी वानप्रस्थ आदि अनेक आर्य नेता और विद्वान पधारे।

फतेहगढ से आये हुये वरिष्ठ आर्य पत्रकार एवं वेदनिष्ठ याज्ञिक प० शान्तिस्वरूप पाण्डेय जी ने इस मन्दिर की यज्ञशाला के नवीकरण हेतु ५००) रु० का सात्विक दान दिया।

यह प्रसन्नता की बात है इस अवसर पर इस आर्यसमाज के सभी सदस्यो ने पारस्परिक मतभेद भुलाकर, श्री सुरेशचन्द्र जी एडवोकेट के नेतृत्व मे पूर्ण विश्वास व्यक्त करते हुए एकजुट होकर आर्यसमाज को सुदृढ़ करने के कार्य को करने का शिव सकल्प किया।

—रघुनन्दनसिंह शास्त्री
संयोजक, आर्यसमाज मन्दिर, मैनपुरी

परम आवश्यक अनुरोध

प्रदेश की समस्त आर्य उप प्रतिनिधि सभाओ के अधिकारियो से अनुरोध है कि वे अपनी-अपनी उपसभाओ के समस्त अधिकारियो के नाम एवं पते शीघ्र ही भेजना सुनिश्चित करें।

साथ ही यह भी लिखना न भूलें कि उपसभा की डाक किस पते पर भेजी जाय।

मुझे आशा है कि आप शीघ्र ही पूर्ण विवरण से सूचित करने की कृपा करेंगे, जिससे आप से पत्र-व्यवहार करने मे कठिनाई न हो।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

सचमुच मेरा देश महान है

पैदा हुये यहा राम कृष्ण ऐसे महान
जिन्होने की थी धर्मराज्य की स्थापना
उत्पन्न हुये दयानन्द गौतम गाधी ऐसे दयानिधान
जिन्होने फैलाई थी नैतिकता की भावना
जन्मे रघु विक्रमादित्य चन्द्रगुप्त ऐसे वीरता के धाम
जिन्होने प्रबल की राष्ट्रीय एकता की सम्भावना
हुये कपिल कणाद ऐसे ज्ञानवान
जिन्होने आजीवन की ज्ञान की साधना
हुये वाल्मीकि तुलसी ऐसे कवि विद्वान
जिन्होने मृत्यु पर्यन्त की पुरुषोत्तम राम की वन्दना
सचमुच मेरा देश महान है
इसीसे यहा के महापुरुष कहलाये भगवान हैं।

—डा० शकुनचन्द्र आर्य लालगंज, जि० रायबरेली

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ अक्टूबर ८७ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पडेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

२२४८, ३२४०, ४५६६, ५०४१, ५३५२, ५३६१, ५९५४ ५९८०, ६२३४, ९२९९, ९७२०, १००९, ११२९, ११३०६, ११३३०, ११७२८, १२०१३, १२०१६ १२०४७, १२७३८, १२७५७, १३२७०, १३३७७, १३२८५, १३६२०, १३६२१, १३६२७, १३६२८, १३६३१, १३६३३, १३६३७, १४०६०, १४०६१, १४०६२, १४०६३, १४०६४, १४०६५, १४०६६, १४०६८, १४०७०, १४०७१, १४०७२, १४०७३, १४०७४, १४०७७, १४०७८, १४०८०, १४०८१, १४०८२, १४०८३, १४०८४, १४०८५, १४०८६, १४०८८, १४०८९, १४०९०, १४०९१, १४०९२, १४०९३, १४०९५, १४०९६, १४०९७, १४०९८, १४०९९, १४१००, १४१०१, १४१०३, १४१०४, १४१०५, १४१०६, १४१०७, १४१०८, १४१०९, १४११०।

विनीत—
व्यवस्थापक

आर्य समाजो की सूचनार्थ परिचय-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रज्ञाचक्षु ब्र० अशोक अपने पिता श्री रामेश्वर शर्मा, ग्राम बंजनक्वाड़ पो० जमपुर जिला बर्दमान (प० बंगाल) को सब आर्य समाजो मे वेद प्रचार कार्य के लिए अधिकृत किया जाता है। सभी आर्य समाजो का कर्तव्य है कि इनको यथाशक्ति सहयोग करें तथा प्रचार आदि से लाभ उठायें। इन्हे यजुर्वेद कण्ठस्थ है, उसकी अच्छी प्रकार व्याख्या करते हैं।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ३/५ महर्षि दयानन्द भवन आसफअली रोड, नई दिल्ली

शेष पृष्ठ ६ से आगे)

नारी उत्थान और आर्य समाज

या समाज के आगे आने की कल्पना नहीं की जा सकती थी उस युग मे महिलाओ के लिये शिक्षण संस्थायें स्थापित करना और उन्हे पर्दे की अभेद्य, दुर्गम काराओ से मुक्त कर स्वतन्त्रता व उल्लासपूर्ण वायुमंडल मे सांस लेने के लिये कहना सचमुच एक आश्चर्य की बात थी। महिला मुक्ति का यह वन्दनीय कार्य आर्य समाज ने ही किया। कूपमण्डूक वृत्ति के पुराण पन्थियो को महिला उद्धार का यह कार्यक्रम भला क्यो पसन्द आता? आश्चर्य है कि उन्होंने आर्य समाज के इस प्रारम्भिक युग मे स्त्री शिक्षा के औचित्य को लेकर आर्य समाजी विद्वानो से शास्त्रार्थ करने का भी दुस्साहस किया। आज के इस प्रगतिशील युग मे नारी शिक्षा के लिए शास्त्रार्थ की बात कितनी उपहासास्पद तथा विचित्र लगती है।

जब भारत का महिला वर्ग शिक्षा के मार्ग पर अग्रसर हुआ तो उसमे उन्नति एव प्रगति के संस्कार स्वत ही उद्बुद्ध होने लगे। सुगठित महिलाओ ने शताब्दियो से होने वाले अत्याचारो के विरुद्ध आवाज उठाई। बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह आदि को उन्मूलित करने, विधवाओ की दशा सुधारने तथा उन्हे पुनर्विवाह करने का अधिकार देने, पर्दा, दहेज, आदि की रूढ़ियो को उन्मूलित करने के लिये अनेक प्रयास किये गये। निष्कर्षत हम कह सकते हैं कि उन्नीसवीं शती के नवोदय मे नारी जाति के उत्कर्ष का जो श्लाघनीय प्रयास किया है उसमे दयानन्द एव आर्य समाज का योगदान अभूतपूर्व रहा है। हिन्दी के विख्यात कथा शिल्पी प्रेमचन्द ने अपनी पत्नी श्रीमती शिवरानी देवी से वार्तालाप के एक प्रसग में कहा था कि ऋषि दयानन्द ने नारी जाति के उत्थान के लिये जो महान प्रयत्न किये हैं, तदर्थ वे महिलावर्ग के सदा ऋणी रहेंगे फ्रांस के साहित्यकार और चिन्तक रोमा रोला ने तो स्वामी जी के एतद्विषयक कार्य की समीक्षा करते हुए निम्न वाक्य लिखे थे—'भारत की स्त्री जाति की पतितावस्था को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता और निर्भीकता का परिचय दिया। दयानन्द ने उन बुराइयों के विरुद्ध क्रांति की जिससे स्त्रियां पीड़ित थीं। उन्होंने बताया कि स्वर्णिम युग में स्त्रियो को घर और समाज में पुरुषो के समान स्थान प्राप्त था। उन्हें पुरुषो के समान शिक्षित करना चाहिए और गृहस्थ के प्रबन्ध तथा धर्म पर उनका ही सर्वोपरि अधिकार रहना चाहिये। दयानन्द ने विवाह में पुरुष और स्त्री को समानाधिकार प्रदान किया।"

ऋषि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति दिवस समारोह

आनन्द बाग, काशी। आर्य समाज को फिर से शास्त्रार्थ की परम्परा को पुनर्जीवित करना होगा। ये शब्द २ और ३ नवम्बर १९८७ को यहां आनन्दबाग दुर्गाकुण्ड वाराणसी मे काशी शास्त्रार्थ स्मृति दिवस पर स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने कहे। इस समारोह मे डा० प्रशान्त वेदालङ्कार (दिल्ली) व प्रो० वसन्त कुमार जी शास्त्री (अमेठी) ने सती प्रथा के पक्ष मे स्वामी निरञ्जनदेव तीर्थ के अनर्गल प्रलाप की कटु आलोचना की और खुले शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। उनका कहना था कि वैदिक साहित्य के किसी स्थल पर सती प्रथा का विधान नहीं है। इस जघन्य कृत्य की कल्पना घोर पाप है। इस अवसर पर डा० वेदालङ्कार ने कहा कि छुआछूत, बाल विवाह का विरोध तथा विधवा विवाह का प्रचलन जैसे सामाजिक आन्दोलन का फिर से अभियान चलाना होगा। ज्योतिषाचार्य हरिहरप्रसाद जी पाण्डेय ने फलित ज्योतिष जैसे पाखण्ड के विरोध मे प्रबल तर्क प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर आयोजित गो-रक्षा सम्मेलन काशी के समाज सेवी श्री रामकुमार रुगटा की अध्यक्षता मे भारत सरकार से यह मांग की गई कि देश की अर्थ-व्यवस्था की रीढ़ गोवंश की रक्षा के लिए कदम उठाने होंगे तथा गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाना होगा। श्री शम्भू लाल पोद्दार ने बताया कि मुगलसराय आर्य समाज, कटनेवाली गौओ को छुड़ाने के लिये सशक्त अभियान चला रहा है। इस समारोह मे डा० प्रशान्त वेदालङ्कार ने आर्य समाज की भावी रूपरेखा निर्धारित करने के लिये योजना प्रस्तुत की और सबसे इस सम्मेलन को सफल करने की अपील की। इस स्मृति समारोह मे भारत के विभिन्न प्रान्तो से प्रतिनिधि उपस्थित हुए।

सम्वाददाता

वेद प्रचार

दिनांक ४-५ नवम्बर को जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर ने अनूपशहर गंगा पर वेद प्रचार शिविर बड़ शानदार तरीके से आयोजित किया जिसके अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र पाल शर्मा मन्त्री कुशलपालसिंह संयोजक श्री धनेन्द्रसिंह प्रधानाचार्य, उप संयोजक ठा० लोकेन्द्रसिंह थे श्री पी०के० शर्मा राज्यमन्त्री उच्च शिक्षा ने समापन किया श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा ने शिविर की सफलता के बाद सभी-सहयोगियो का आभार व्यक्त किया।

वी० पी० शर्मा

आवश्यकता है

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश, के अन्तर्गत वक्तृत्व कला युक्त योग्यतानिक उपदेशक, प्रचारक एव भजनोपदेशक की आवश्यकता है। हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान होना अत्यन्तावश्यक है। महानुभाव इस सम्बन्ध मे आवेदन पत्र देना चाहते हो वे मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश, दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार हैदराबाद को ३० दिसम्बर के पूर्व लिखें तथा उसके साथ विशेष योग्यता प्रमाण पत्र संलग्न करें।

माणिकराव मन्त्री

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष 46943 ४५६६३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
पौष कृष्ण १
दिसम्बर रविवार १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

3835—श्रीसम्पादक जी
गुरुकुल पत्रिका
गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)

धर्म शिक्षा पुस्तकों के सम्बन्ध में—

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश द्वारा प्रकाशित पुस्तकें सभा कार्यालय में उपलब्ध हैं। पुस्तक प्राप्ति हेतु कार्यालय से सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम से भेजें। रेलवे स्टेशन एवं पूरा पता साफ साफ लिखें। पुस्तकों का मूल्य निम्न प्रकार है—

धर्म शिक्षा भाग	१	१ ००
	२	१ ५५
		२ ३०
	४	२ ७५
	५	३ ६०
	६	४ ७५
	७	४ १५
	८	००
	९	४ ००
	१०	३ ००
	११	४ ००
धर्म शिक्षा भाग	१२	३ ५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु

❀ आवश्यक सूचना ❀

समस्त आर्यसमाजों जिला उपसभाओं एवं शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक शैक्षणिक एवं कवि सम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमें विभिन्न वाद विवाद प्रतियोगिताएं तथा सम्मेलनों के अंश सम्मिलित हैं एवं विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह एवं कवि सम्मेलन का वी० डी० ओ० (फिल्म) कैसेट के अतिरिक्त शताब्दी में पधारे हुए संन्यासियों विद्वानों उपदेशकों आदि के महत्वपूर्ण उपदेश एवं जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किए उनके रिकार्डिंग कैसेट निम्न प्रकार सभा कार्यालय में बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। जो महानुभाव मंगवाना चाहते हैं वह श्री विश्वम्भरदयाल गुप्ता व्यवस्थापक आर्यमित्र ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आर्डर देकर प्राप्त कर सकते हैं।

१ सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसेट—	मूल्य	१००० रु०
२—सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कैसेट	मूल्य	१०० ०० रु०
सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग कैसेट कुल संख्या ३० प्रति कैसेट		० ०० रु०
४ कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो		५ ०० रु०

(बड़ी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध कराई जा सकती हैं)

नोट—जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया एवं पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें १८ १९ तथा २० अक्टूबर के एक एक दिन के अंश से रिकार्डिंग कैसेट उचित मूल्य पर अलग से मिल सकते हैं।

आर्यसमाज के कार्यक्रम तथा सभा की शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओं को ये चित्र एवं कैसेट प्रचार कार्य में बहुत सहायक होंगे।

[शिक्षण संस्थाओं को २० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा]

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए सस्ताई रूप में एम० पी० प्रिंटर्स (निकट दूरदर्शन केन्द्र) बारबाग लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

ओ३म्

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स० २२४१।५७ घोषणा पत्र स ७।२८ २ ८५

पौष कृष्ण ८ रविवार सवत २०४४ वि० दिनाक १३ दिसम्बर १९८७

प्रधान सम्पादक–

मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक–

इन्द्रदेव पाठक एम० ए०
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	१५)
छमाही	११)
विदेश मे	१५ पौंड

★

वर्ष	९०
अङ्क	४८

आज देश को आगे बढ़ाने के लिए 'साइमन कमीशन के बहिष्कार' जैसी

देश भक्ति, एकता एवं अदम्य साहस की महान आवश्यकता

–के० सी० पन्त रक्षामन्त्री भारत सरकार

लखनऊ २९ नवम्बर–उ०प्र० की राजधानी लखनऊ के चारबाग रेलवे स्टेशन के ऐतिहासिक स्थान पर जहाँ आज से ५९ वर्ष पूर्व ३० नवम्बर १९२८ को ब्रिटिश साइमन कमीशन का बहिष्कार किया गया था–के स्मृति दिवस पर आयोजित एक विशाल जन सभा में अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए रक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने देश की जनता को साइमन कमीशन के बहिष्कार जैसी देश भक्ति एकता एव अदम्य साहस की भावना के साथ राष्ट्र को आगे ले चलने का आह्वान किया।

लखनऊ में इस ऐतिहासिक प्रदर्शन का नेतृत्व श्री प० जवाहरलाल नेहरू प० गोविन्द बल्लभ पन्त एव प०रासबिहारी तिवारी तत्कालीन मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश एव मेम्बर लेजिस्लेटिव कौंसिल ने किया था। बहिष्कार करने वाले इस विराट जलूस में देश भक्तों की अपार भीड़ थी। सभी देश भक्त और आर्य नेता साइमन गो बैक का नारा लगाते हुए शहर की प्रमुख सड़कों अमीनाबाद, लाटूश रोड होते हुए चारबाग की ओर बढ़ रहे थे तभी ब्रिटिश पुलिस और घुड़सवारों ने इन निहत्थे नेताओं एव नवयुवकों पर अचानक लाठियों से बर्बर हमला कर दिया जिसमें अनेक प्रमुख नेताओं को गम्भीर चोट आयी थी। प० जवाहरलाल नेहरू को बचाने के प्रयास में श्री प० गोविन्द बल्लभ पन्त एव श्री प० रासबिहारी तिवारी अपनी शारीरिक लम्बाई का फायदा उठाते हुए सफल तो हो गये किन्तु स्वयं गम्भीर रूप से घायल हो गये। प्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री एव आर्य नेता श्री चन्द्रभानु गुप्त ने अपने साथियों सहित इस अवसर पर पतंगों में कमीशन गो बैक लिखकर उस स्थान पर गिराने की योजना कार्यान्वित की जहाँ कैसरबाग (बटलर पार्क) में अवध के कुछ ताल्लुकेदारों द्वारा कमीशन को शानदार पार्टी दी जा रही थी। इस प्रकार इस अभूतपूर्व प्रदर्शन के लिए लखनऊ की जनता भारतीय स्वाधीनता संग्राम के स्वर्णिम इतिहास मे सदा सदा के लिए जुड़ गई है।

रक्षा मन्त्री श्री के० सी० पन्त एव श्रीमती इला पन्त के लखनऊ आगमन पर उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री अजनदेव महात्मा तथा समाजों व आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधियों सहित हवाई अड्डा पर उनका भव्य स्वागत किया। मान्य अतिथि के स्वागत में स्थान स्थान पर फूलमालाओं से सजे स्वागत द्वार बने हुए थे। इस अवसर पर डी०ए०वी० कालेज दयानन्द विद्या मन्दिर दयानन्द शिशु मन्दिर तथा आर्यसमाजों द्वारा आयोजित स्वागत समारोह मे रक्षा मन्त्री का भावभीना अभिनन्दन करते हुए श्री मनमोहन तिवारी ने आर्यसमाज गनेशगंज के संस्थापक सदस्य स्व० प० गोविन्द बल्लभ पन्त का स्मरण करते हुए इस परिवार द्वारा आर्यसमाज के प्रति की गई सराहनीय सेवाओं के लिए आर्य जनता की ओर से उनका कृतज्ञता भरे स्वरों मे महान आभार प्रकट किया।

ले आँख मीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ—पौष कृष्ण ८ सम्वत २०४४ रविवार १३ दिसम्बर १९८७ दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८

सावधान ! मोड़ खतरनाक है

सृष्टि के आदि काल से लेकर युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द काल पर्यन्त सभी मनीषियो, चिन्तको, ऋषियो, मुनियो की एक ही विचार धारा रही—वेद प्रतिपादित सत्य सनातन वैदिक धर्म ही मानव कल्याण कारी सच्चा धर्म है। महाभारत के परवर्तीकाल मे जब वाममार्गीय प्रथाएं प्रबल होने लगीं उस समय भी मानव की श्रद्धा और विश्वास के केन्द्र पवित्र वेद ही थे, यह अलग बात है कि तत्कालीन सत्कृतज्ञो ने अपने-अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर मनमाने ढंग से मन्त्रो का अर्थ करके अनेक मत और सम्प्रदाय खड़े कर दिए और धर्म के नाम पर अनेको अवैदिक मान्यताओ को जन्म दे दिया परन्तु उन सबका उद्गम उन्होने वेद को ही माना क्योंकि वेद को ईश्वरीय ज्ञान तथा स्वतः प्रमाण मानते हुए वे उन्हे अपनी श्रद्धा और विश्वास का केन्द्र समझते थे। केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान और वेद प्रतिपादित धर्म ही सच्चा मानवीय धर्म है—यह धारणा महाभारत के परवर्तीकाल मे जितने भी विचार अथवा ग्रन्थ रचे गये उनमे मिलती है और उन सभी पर वेदो की छाप है, वेदो की प्रशंसा है, और उन्हें साक्षात् ब्रह्मा के मुख से निकला हुआ परमात्मा का ज्ञान माना गया है।

ऋषि दयानन्द ने वेदो को अपौरुषेय बताते हुए इसी धारणा को पुष्ट किया और उन्होने बताया कि वेद प्रतिपादित धर्म ही सत्य सनातन एक मात्र मानव धर्म है। अन्य विचारो को, विचार ग्रन्थो को, आप कोई भी नाम दे लें, धर्म की संज्ञा नहीं दे सकते क्योंकि मानव का धर्म तो एक ही है और वह है वैदिक धर्म जिसका आधार है स्वतः प्रामाण्य वेद वाणी। आर्य समाज ऋषि प्रदत्त इसी पुष्ट एवं तर्क संगत विचार धारा का आधार लेकर अपनी श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते हुए बहुत द्रुतगति से बढ़ रहा था आंधी और तूफान की तरह दुनिया का झुकाव वेदो की ओर बढ़ चला था कि एकाएक एक मोड़ आ गया जिसका नाम है सर्व धर्म समन्वयवाद। वे भी ठीक, हम भी ठीक—जैसे वेद वैसे कुरआन, बाईबिल आदि। इस विचार धारा के पीछे चिन्तन क्या है इस पर हमने विचार नहीं किया, अगर किया भी तो ऊपरी सतह से। ऋषियो की तरह द्रष्टा बनकर नहीं। इसके दो प्रमुख कारण थे—एक तो पराधीन देश को स्वाधीन बनाने के लिए येन केन प्रकारेण सब धर्म समन्वय के आधार पर समस्त भारतीयों को एकीकृत करने की उतावली और दूसरे, धर्म के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान न होने के कारण वेद और परवर्ती ग्रन्थो को एक धरातल पर लाकर उनसे मानव कल्याण की झूठी आशा। उपासना पद्धति की भिन्नताओ को उन्होने अनेक मार्गों की संज्ञा दी और उन सबका मन्तव्य एक ही माना जहाँ पहुंचकर किसी भी मार्ग से गया हुआ व्यक्ति अपने लक्ष्य पर पहुंच जाता है। वे यह भूल गये कि यदि मार्गों की दिशाएं विपरीत हैं तो एक ही लक्ष्य पर कैसे पहुंचा जा सकता है। यदि एक मार्ग खाई की ओर और दूसरा कूप की ओर ले जाता है तो लक्ष्य कितना ही ऊंचा हो वहाँ तो गिरना ही गिरना है। जिस प्रकार प्रकाश और अन्धकार की विपरीत दिशायें हैं उसी प्रकार विचारो की भी हैं। उदाहरणार्थ जड़ पूजा को लीजिये। ऋषि के मन्तव्य से जड़ या मूर्ति पूजा खाई की ओर ले जाने वाली दिशा है तो निराकार व्यापक ब्रह्म की उपासना ईश्वर तक पहुंचानेवाली है। शास्त्रार्थ की परम्परा डाली ही इसलिये गई थी कि जो श्रेष्ठ मार्ग है—उसकी श्रेष्ठता सिद्ध कर दी जाये। अब जब सभी श्रेष्ठ हैं और वहीं पहुंचाने वाले हैं तो शास्त्रार्थ की जरूरत ही क्या है क्योंकि जब सब सच्चे सब श्रेष्ठ हैं तो शास्त्रार्थ किससे और किस लिये ? यही मोड़ खतरनाक है अब समाजो मे शास्त्रार्थ नहीं होते रुचि भी कम होती जा रही है। ऋषि दयानन्द का तो जीवन ही शास्त्रार्थों मे बीता। अगर यह स्थिति अधिक दिनो तक रही तो हम पिछलग्गू बन जायेंगे उनके जो असरदार हैं धर्म के क्षेत्र में नहीं अन्य क्षेत्रों मे और जो धर्म शून्य होकर भी धर्म मे व्यवस्था देने का अधिकार अपना सुरक्षित समझते हैं।

आर्य समाज धर्म के क्षेत्र मे समन्वयवाद पर विश्वास नहीं करता चाहे वह हिन्दू विश्वपरिषद का कलश हो, अजमेर के चिश्ती साहब हो या देहली का राजघाट फूल या चादर चढ़ाने वाले आर्य समाजी को हम नेता तो कह सकते हैं आर्य समाजी नहीं। दोनों जगह दोनो रूप हैं यह कहना और समझना तो और भी खतरनाक है। यह शाश्वत सत्य के प्रति अनास्था है। दुर्भाग्य से सत्य सनातन सिद्धान्तो के प्रति दृढ़ता मे शैथिल्य आ जाने के कारण आर्य समाज इसी खतरनाक मोड़ पर खड़ा है। आज हमे अपने प्यारे ऋषि की आंखो से अपनी मन्तव्य दिशा देखनी होगी और उसी पर चलकर ही हमारी यह प्यारी संस्था संसार मे वैदिक रवि का प्रकाश फैला सकती है।

आवश्यक सूचना

इधर कुछ समाजो से हमे यह समाचार प्राप्त हुआ है कि आर्य प्रतिनिधि सभा से निष्कासित कुछ स्वार्थी व्यक्ति समाजो को पत्र भेज कर यह भ्रमित प्रचार कर रहे हैं कि वे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान व मन्त्री हैं।

इस विषय मे प्रदेश की समस्त जिला सभाओ, एवं आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि विगत १५ नवम्बर को लखनऊ मे विधिवत् सम्पन्न हुए चुनाव मे सर्वश्री इन्द्रराज, मनमोहन तिवारी यशपाल आर्य क्रमशः प्रधान मन्त्री व कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। इसके अतिरिक्त अन्य सभी पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य भी निर्वाचित घोषित किये गये हैं।

अतः मुझे पूर्ण आशा एवं विश्वास है कि आर्य जनता उपर्युक्त भ्रामक प्रचार से सावधान रहेगी।

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

★ ★ ★

मन की चंचलता

(श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० एल० टी०, आर्यसमाज गोरखपुर)

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु (यत् देवम्) जो दिव्य शक्ति-वाला (जाग्रतः) जागते हुए (दूरम उदैति) दूर-दूर तक उड़ाने भरता है (तत्उ) वही (सुप्तस्य) सोते हुए (तथा एव) वैसे ही (एति) गति करता है (तत्) वह (दूरंगमं) दूर तक जाने वाला (ज्योतिषां) ज्योतियों का या प्रकाशकों—अर्थात् ज्ञान करने वाली इन्द्रियों का (ज्योतिः) प्रकाशक अर्थात् ज्ञान-साधक (एकं) एक ही है (तत् मे मनः) वह मेरा मन (शिव संकल्पम्) शुभ विचारों वाला (अस्तु) हो ।

प्रार्थना का भाव है कि हे परमेश्वर ! दिव्य भाव और विचारों वाला मेरा मन जो मन जागते और सोते हुए विचार करता हुआ दूर तक चला जाता है, जो ज्ञानेन्द्रियों को ज्ञान देने वाला है, जिनके बिना इन्द्रियों को ज्ञान नहीं मिल सकता वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला हो ।

साधारण मनोवैज्ञानिक विचारधारा के अनुसार मन वह वस्तु है जिसे हम अपने चिन्तन करके, पुरानी बात याद करने, कल्पना करने तथा किसी बात का निश्चय करने में जानते हैं । इस बात को और बढ़ा कर कहा जाय तो मन के विषय में पहली बात उसकी चंचलता है । आपने प्राणियों में बन्दर को देखा होगा । वह एक स्थान पर कभी टिकता नहीं है । वह एक शाखा से दूसरी शाखा पर कूदता फिरता है । इसी प्रकार यह मन भी ध्यान लगाये बैठा दिखाई देता है परन्तु कभी यह पर्वत की ऊँची चोटियों पर चमकती बर्फ की चट्टानों की चमक देख रहा होता है कभी योग-मुद्रा में बैठा हुआ भजन सा करता प्रतीत होता है पर उस समय यह किसी अन्तःपुर वासिनी के विषय में चिन्तन कर रहा होता है, कभी वह अपने गुदगुदे बिछौने पर पड़ा दूसरे के धन की बढ़ती को देख कर ईर्ष्या की अग्नि में जलता हुआ अपने आंसू बहा रहा होता है इसीलिये मन को प्राचीन ग्रन्थों में अत्यन्त चंचल माना गया है । ऊपर का मन्त्र यजुर्वेद के ३४ वें अध्याय के शिव संकल्प के ६ मन्त्रों में पहला मन्त्र है । इस मन्त्र में मन का दिव्य शक्ति सम्पन्न हजारों मील दूर क्षण भर में चलने वाला, सोते समय भी देश काल को लांघ जाने वाला कहा गया है । शंकराचार्य जी महाराज ने अपनी प्रश्नोत्तरी में कहा है 'जगत् केन जितम्' 'येन मनो जितम्' जगत् को किसने जीता ; जिसने मन को जीता ।

मन को वश में करना साधारण मनुष्यों के लिये तो कठिन है ही राम जैसे महान् पुरुष भी इसको वश में नहीं कर पाते है और वश में करने का उपाय अपने गुरु वशिष्ठ जी से पूछते हैं । वे कहते हैं.—

कथमस्याति लोलस्य वेगो वेगैकधारकम् ।
चलतो मनसो ब्रह्मन् बलतो विनिवार्यते ।।

अर्थात् अत्यन्त वेगवान्, बहुत चंचल, दूर-दूर चलने वाले इस मन को गुरु जी महाराज ! कैसे बल पूर्वक वश में किया जा सकता है ?

राम की बात की पुष्टि करते हुए आचार्य वशिष्ठ कहते हैं:—

नेह चंचलता हीनं मनः क्वचन् दृश्यते ।
चंचलत्वं मनोधर्मः वह्नेः धर्मः यथोष्णता ।।

इस संसार में चंचलता से रहित मन कभी और कहीं नहीं दिखाई देता है । आग में जैसे गर्मी रहती है, वैसे ही मनमें चंचलता रहती है ।

भगवान् श्रीकृष्ण ने साम्य अथवा साम्यबुद्धि से उत्पन्न होने वाला जो (कर्म) योग बतलाया, उसे सुनकर अर्जुन ने गीता के छठे अध्याय में कहा 'हे मधुसूदन साम्य अथवा साम्य बुद्धि से प्राप्त होने वाला जो यह कर्मयोग बतलाया है वह मन की चंचलता के कारण स्थिर नहीं रह सकता । अर्जुन ने कहा—

चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ।।

गीता ६ । ३४

क्योंकि हे कृष्ण ! यह मन चंचल हठीला, बलवान् और दृढ़ है । वायु के समान (हवा की गठरी के बांधने के समान) इसका निग्रह करना मुझे अत्यन्त दुष्कर दीखता है ।

वहां अर्जुन की बात और कठिनाई को सुनकर कृष्ण कहते हैं—

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ।।

अर्थात् हे महाबाहु अर्जुन ! इसमें सन्देह नहीं कि मन चंचल है और उसका निग्रह अर्थात् वश में करना कठिन है; परन्तु हे कौन्तेय ! अभ्यास और वैराग्य से यह मन वश में किया जा सकता है । मेरे मत से जिसका अन्तःकरण वश में नहीं, उसे योग का प्राप्त होना कठिन है, किन्तु अन्तःकरण को काबू में रखकर प्रयत्न करते रहने पर उपाय से इस योग का प्राप्त होना सम्भव है ।

श्रीकृष्ण की बात का भाव है कि पहले जो बात कठिन लगती है, वही अभ्यास से और दीर्घ उद्योग से अन्त में सिद्ध हो जाती है । किसी भी काम को बार-बार करना (अभ्यास) कहलाता है और वैराग्य का मतलब है राग या प्रीति न रखना अर्थात् इच्छा विहीनता । पातञ्जल योग सूत्र के प्रारम्भ में आया है 'योगश्चित्त वृत्ति निरोधः.' चित्त-वृत्ति के निरोध को योग कहते हैं और उससे अगले सूत्र में कहा है 'अभ्यास वैराग्याभ्यां तन्निरोधः' अभ्यास और वैराग्य से चित्त वृत्ति का निरोध हो जाता है ।

आजकल जगह-जगह योग की चर्चा सुनाई देती है । योग को एक सामान्य विषय मानकर कोई योग विश्वविद्यालय चला रहा है तो कोई महाविद्यालय । एक योगी का बस्ती या कहीं पर योग विषय पर भाषण हुआ । उन्होंने योग को बहुत आसान बतलाया और कहा कि शराबखाने में शराब का स्वाद लेते हुये, वेश्याओं के साथ रमण करते हुए, मांस और अण्डों को उड़ाते हुए किसी भी अवस्था में योग किया जा सकता है । कोई मनाही नहीं । बाल योगेश्वर अमेरिकन रमणियों से विवाह करके योगेश्वर बने हुए हैं । तस्करी आदि को अनुचित नहीं मानते । संभोग से समाधि में आस्था रखने वाले तो चार्वाक् मत के महन्त होने लायक हैं, युवकों से खिलवाड़ करना, उनके साथ सोना आदि ब्रह्म प्राप्ति का साधन मानते हैं ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मन का निग्रह असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है किन्तु जैसा कि योगदर्शनकार ने कहा है—'योगश्चित्त वृत्ति निरोधः' योग से मन की वृत्तियों को संयमित करना सम्भव है परन्तु वह योग, आजकल जैसा बाजारू योग नहीं अपितु एक उत्कृष्ट-तम साधना है ।

—

आर्यों का आदि देश

[श्री मुरारीलाल आर्यसमाज कैसरबाग लखनऊ]

वैदिक सभ्यता का उदय आर्यों से स्वीकार किया जाता है। उनके आदि देश के विषय मे निर्भ्रान्त मत नहीं है। कतिपय इतिहासज्ञ विद्वानो का मत है कि आर्यो का मूल स्थान भारत देश है। अन्य विद्वानो का मत है कि आर्यो का आगमन भारत देश मे किसी बाहरी देश से हुआ। इस विचारधारा के पक्षधर मैक्समूलर जी हैं जिनकी मान्यता है कि आर्यो का आदि स्थान मध्य एशिया, काला सागर के उत्तर का मैदान, मध्य एशिया एव पश्चिमी जमनी, आस्ट्रिया, हगरी और बोहेमिया मे से कहीं है।

पंडित बालगंगाधर तिलक ने आर्कटिक होम इन द वेदाज' मे अपना मत स्पष्ट किया है कि आर्यो का मूल स्थान आर्कटिक वृत्त मे था। यहीं से आर्यो का आना भारत आदि देश मे हुआ। इस सम्बन्ध मे पुष्कल प्रमाण के अभाव मे स्पष्ट निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है। पुराणो के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारत मे दो प्रसिद्ध वशो के राज्य मे जिनका नाम मानववश और एलवश था। ऐलो का 'प्रतिष्ठान' मे राज्य था। इसी वश से आर्यो का विस्तार सारे भारत मे हुआ। इस आधार पर कुछ विद्वानो की धारणा है कि आर्य भारत के मूल निवासी थे और यहीं से यह विश्व के अन्य देशो मे प्रस्थान समयानुसार किया।

मैक्समूलर के मतानुसार 'आर्य' शब्द किसी वश अथवा जाति का बोधक नही है। इस विवादग्रस्त विषय के सम्बन्ध मे निम्न भारतीय विद्वानों का मत उनके नाम के सामने दिया जाता है—

(१) महामहोपाध्याय डा० गगानाथ झा भारत के ब्रह्मर्षि प्रदेश को आर्यो का आदि देश मानते हैं।

(२) डा० सम्पूर्णानन्द ने सप्तसैन्धव को ही आर्यों का आदि देश स्वीकार किया है।

(३) डा० अविनाशचन्द्र दास भी सप्तसैन्धव को ही आर्यो का आदि देश मानते हैं।

(४) डा० राजबली पाण्डेय भारत के मध्य देश को आर्यो का आदि देश स्वीकार करते हैं।

(५) कुछ विद्वान कश्मीर अथवा हिमालय प्रदेश को ही आर्यो का मूल देश मानते हैं।

(६) महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने त्रिविष्टप अर्थात् जिसको तिब्बत कहते हैं, सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास मे आर्यो का मूल स्थान लिखा है।

विदेशी शासक शासित देशो के निवासियो मे उनके पूर्वजो के प्रति अनास्था उत्पन्न करने का सतत प्रयास करते हैं। अनुमान किया जाता है कि इसी भावना से प्रेरित अग्रेजो से प्रभावित होकर विदेशी इतिहासज्ञो ने स्पष्ट प्रमाण के अभाव मे भी आर्यो का मूलदेश भारत को स्वीकार नहीं किया। सम्भवत अग्रेजो का विचार था कि जैसे हम लोग और मुसलमान भारत के मूल निवासी नहीं हैं उसी प्रकार यदि यह सिद्ध कर दिया जाय कि आर्य (हिन्दू) भी भारत का मूल निवासी नही है वह भी बाहर से आकर इस देश का निवासी बना है तो आर्यो (हिन्दुओ) मे अग्रेजी शासन से देश को मुक्त करने की भावना जागृत ही नहीं हो सकेगी। फलत विदेशी इतिहासकारो के विचारो से अनुप्राणित हो भारतीय इतिहासकारो ने भी उनके मत की समीक्षा किये बिना ही यह स्वीकार किया कि आर्य भारत के मूल निवासी नहीं थे। आर्यावर्त्त नाम से ही स्पष्ट है कि इसे आर्यो ने ही बसाया। वे ही इस देश के मूल निवासी हैं।

साधना का अद्वितीय मूलमन्त्र

[मनोरमा देवी अग्निहोत्री लखनऊ]

१—जो मनुष्य सबका उपकार करने एव सुख देने वाले हैं उन्हीं की साधना सफल होती है।

२—साधक का सम्पूर्ण पुरुषार्थ जीवमात्र के सुख के लिये होता है।

३—परमेश्वर का उपासक साधक कभी आसुरी भावो व कर्मों का निर्माण करता है।

४—साधको! साधक के लिए ऋषिवर की उक्ति अर्थात हृदय—परमेश्वर के समीप होकर उसकी स्तुति किया करो।

५—साधको! तुम काम क्रोधादि शत्रुओ का उन्मूलन करने वाले मोक्ष की ओर ले जाने वाले प्रभु का स्मरण करो जो सबका है।

६—हे साधको! जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं वैसे अपने भी बनाना है। ईश्वर को सर्वव्यापक जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है— ऐसा निश्चय करते हुए योगाभ्यास से साक्षात्कार करना या उसका प्रयास करना ही तुम्हारा उपासना कार्य है।

७— तीर्थ—जिससे दुःखसागर से पार उतरें ऐसे सत्य भाषण विद्या, सत्सग क्षमादि, योगाभ्यास, विद्या दानादि शुभ कर्म ही तीर्थ हैं ऐसी तीर्थ यात्रा मे तुम्हारी सदा प्रीति हो।

८— परीक्षा—परीक्षा पच प्रकार से होती है—ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और वेद विद्या के आधार पर, २—प्रत्यक्षादि अष्ट प्रमाण से, ३—सृष्टि क्रम से, ४-आप्त व्यवहार से, ५—सत्यासत्य निर्णयपूर्वक। सभी कर्मो तथा व्यवहार को इसी कसौटी पर कसकर देखें।

९—ऋषि का यह मन्तव्य न केवल भारतवासियो के लिए वरन् विश्व भर मे शान्ति की स्थापना हेतु सार्व भौमिक सिद्धांत के रूप मे मानवमात्र के लिए अनुकरणीय है। ऐसा अद्वितीय, श्रद्धेय महर्षि प्रात स्मरणीय एव वदनीय है।

सूचना

हमे यह सूचित करते हुए बड़ा हर्ष है कि आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र० के कार्यालय मे विगत माघ १९८७ से अधीक्षक विधिक एव भू सम्पत्ति पद पर श्री बलराम गोविन्द जी गोण्डा की सेवायें उपलब्ध हो गई हैं। प्रदेश की समस्त आर्य समाजें भूसम्पत्ति सम्बन्धी विवादो के विषय मे उनसे सहयोग लें।

मन्त्री सभा

महानता के पुंज सत्यव्रती स्वामी दयानन्द सरस्वती

—लेखक—शकुनचन्द आर्य लालगंज जिला रायबरेली

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महान विद्वान, वेदों के प्रकाण्ड पंडित, प्रमुख समाज सुधारक, राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रबल पक्षधर, मानव जाति के हितैषी, महिलाओं एवं पतितों के उद्धारक, सच्चे वैदिक धर्म के प्रचारक, स्वदेशी भावना के पोषक, भारतीयों के शुभ चिन्तक एवं प्रखर राष्ट्र वाद के समर्थक थे। उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर, गालियों एवं पत्थरों के प्रहारों को सह कर तथा अनेक बार विषपान करके वैदिक धर्म के प्रचार, कुरीतियों एवं अन्ध विश्वास की समाप्ति, वास्तविक ज्ञान के प्रसार, ऊंच-नीच एवं छुआछूत की भावनाओं के उन्मूलन, राष्ट्रवाद एवं अतीत के प्रति गौरव भाव के जागरण, महिलाओं की उन्नति और नैतिकता की पुनः स्थापना के लिये जो अभूतपूर्व प्रयास किये, वे भुलाने योग्य नहीं हैं, उनके लिए देशवासी सदैव उनके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

महर्षि का जीवन चरित्र अनेक रोचक, शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक घटनाओं से परिपूर्ण है जो कि उनके आदर्श पूर्ण जीवन का परिचायक है। वे परमश्रेष्ठ दूरदर्शी महापुरुष थे। फ्रांस के प्रसिद्ध लेखक रोमन रोलेण्ड के शब्दों में "आधुनिक भारत में केवल एक महान दिव्य द्रष्टा ऋषि दयानन्द ही ऐसा महापुरुष हुआ है जिसने तक और वैदिक ज्ञान की ऐसी सुदृढ़ चट्टान खड़ी कर दी जिससे टकराकर पाश्चात्य सभ्यता की लहरें चकनाचूर हो गई।" जिस प्रकार कि स्वामी जी ने यह समझ कर कि भविष्य में भारत की राष्ट्र एवं सम्पर्क भाषा हिन्दी होगी, स्वयं गुजराती भाषा-भाषी होते हुए अपने सत्यार्थ-प्रकाश समेत सभी ग्रन्थ हिन्दी में लिखे, उसे आर्य भाषा की संज्ञा देकर उसके प्रचार प्रसार का कार्य आर्य समाज को सौंप दिया, भारतीय कांग्रेस के जन्म के पूर्व अपनी दिव्य दृष्टि से यह जानकर कि भावी भारत में आजादी के सैनिकों के वस्त्र खादी के होंगे, शाहपुरा के महाराजा को खादी के वस्त्र बनवाने का आदेश दिया था। आज से एक सौ वर्ष पूर्व मकाले द्वारा प्रारम्भ शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन कर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर जोर दिया था, उनकी दूरदर्शिता का प्रमाण था।

गुरुभक्त दयानन्द

स्वामी दयानन्द अपने गुरु विरजानन्द जी के परम आज्ञाकारी थे। मथुरा में अपने गुरु की पाठशाला में वेद वेदांगों के अध्ययन के बाद जब उन्होंने गुरु को लौंगों का भरा थाल गुरु-दक्षिणा में देना चाहा तो गुरु जी ने उसे न लेकर अपना आशीर्वाद और अन्तिम आदेश यह दिया कि "भारत की अविद्या का नाश करो, पाखण्ड का खण्डन करो, वैदिक धर्म का प्रचार करो।" गुरु के उपरोक्त आदेश का पालन स्वामी जी ने आजीवन किया।

महान योगी एवं अखण्ड ब्रह्मचारी

तप समाप्त कर स्वामी दयानन्द वैदिक धर्म के प्रचार में लग गये। एक बार बदायूं के कलेक्टर ने उनसे पूछा "आपको ठंड क्यों नहीं लगती? उन्होंने उत्तर दिया—आपके मुख को ठंड क्यों नहीं लगती? जैसे आपके मुख को अभ्यास है, उसी प्रकार मेरे शरीर को।" एक बार स्वामी जी ने यौगिक प्राणायाम के बल से पौष की सर्दियों में देह से पसीना निकाल कर सबको आश्चर्य में डाल दिया था। यह सब उनके अखण्ड ब्रह्मचर्य का परिणाम था।"

निर्भयी स्वामी जी

स्वामी जी सदैव निर्भय रहते थे। उनमें अहिंसा का इतना बल था कि वह खतरनाक से खतरनाक जीवधारी से भयभीत नहीं होते थे। एक बार वे गंगा में लेटे हुए थे, पास में एक मगरमच्छ तैर रहा था पूछने पर बोले "कोई भय नहीं, जब हम उसे कुछ नहीं कहते, तब वह हमें क्यों कुछ कहेगा?'

क्षमा की मूर्ति

स्वामी जी बहुत दयालु थे। अनूप शहर में किसी ने उनको पान में विष दे दिया। उन्होंने विष को न्योली क्रिया द्वारा निकाल दिया उनके भक्त तहसीलदार ने विष देने वाले को उनके सामने पेश किया परन्तु स्वामी ने उसे छुड़ाते हुए कहा कि "छोड़ दो इसे, मैं किसी को कैद में डालने नहीं आया बल्कि संसार को कैद से छुड़ाने आया हूं।

इसी प्रकार स्वामी जी ने अपने रसोइये जगन्नाथ जिसने उन्हें दूध में बारीक पिसा हुआ कांच दे दिया था और जो उनकी मृत्यु का कारण बना, को क्षमा ही नहीं कर दिया था अपितु उसे धन देकर भारत से बाहर नेपाल चले जाने को कहा था जिससे वह पकड़ा न जा सके।

सत्यव्रती महर्षि

स्वामी जी को सत्य में इतनी दृढ़ निष्ठा थी कि वह अपने व्याख्यान में खण्डन-मण्डन खूब करते थे। एक बार लोगों ने उनसे कहा कि "स्वामी जी! कलेक्टर महोदय आ रहे हैं, तीव्र खण्डन न करें। उन्होंने उत्तर दिया 'चाहे मेरे प्राण चले जाय पर मैं सत्य को नहीं छोड़ सकता हूं।"

तपस्वी, बली एवं पराक्रमी व्यक्तित्व

कर्णवास के ठा० कर्णसिंह किसी बात पर स्वामी जी से रुष्ट हो गये, उनपर तलवार लेकर झपटे परन्तु स्वामी जी ने निर्भयता पूर्वक उससे तलवार छीनकर जमीन पर टेक कर दो टुकड़े कर दिये। तत्पश्चात वह लज्जित होकर वहां से चला गया। इसके बाद उसने रात को स्वामी जी को मारने के लिए कुछ सशस्त्र व्यक्ति भेजे परन्तु वे स्वामी जी की हुंकार को सुनकर भाग गये।

स्वामी जी में ब्रह्मचर्य का अपार बल था। एक बार जालन्धर में सरदार विक्रमसिंह ने स्वामी जी के बल पर सन्देह व्यक्त किया। स्वामी जी उस समय नहीं बोले परन्तु जब सरदार जी एक दिन दो घोड़ों की बग्घी पर सैर के लिए निकले तो स्वामी जी ने चुपके से बग्घी के चक्र को पीछे से पकड़ लिया, घोड़े बहुत चाबुक मारने पर भी एक कदम आगे नहीं बढ़े। सरदार जी ने पीछे मुड़कर देखा कि स्वामी जी चक्र को हाथ से पकड़े हुये हैं। इस पर वह अपने सन्देह के लिए लज्जित हुए तथा स्वामी जी से क्षमा मांगी।

मातृशक्ति के प्रति पूज्यभाव

स्वामी जी के हृदय में नारी जाति के प्रति बड़ा आदर भाव था एक बार वे एक मन्दिर के सामने से गुजरते समय मन्दिर के समी

(शेष पृष्ठ ७ पर)

राष्ट्र भाषा हिन्दी की उपेक्षा

[श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज बान्द्रा (बम्बई)]

जिस प्रकार अंग्रेजो को सत्ता से हटाये बिना आजादी का स्वप्न अधूरा था। उसी प्रकार सत्ता के काम–काज से अंग्रेजी को हटाये बिना राष्ट्र भाषा हिन्दी का स्वरूप विकृत ही रहेगा विदेशी भाषा को बनाये रखने मे अंग्रेजो के मानस पुत्रो का स्वार्थ अवश्य पूरा होता रहा है परन्तु देश की एकता और अखण्डता पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। हिन्दी जन जन की सम्पर्क भाषा होने के उपरान्त भी आजादी के ४० वर्ष बाद देश के कई प्रान्तो मे सत्ता के भूखे भेड़ियो द्वारा इसका विरोध बढ़ता ही जा रहा है। हमारे नेताओ का यह कहना कि हिन्दी किसी पर थोपी नहीं जायेगी–इस स्थिति ने राष्ट्र भाषा के रूप को हास्यास्पद बना दिया है। व्यक्तिहित से परे राष्ट्र हित ही सर्वोत्तम होता है। उचित निर्णय और कठोर अनुशासन से ही राष्ट्र को एक सूत्र मे बाधा जा सकता है। अंग्रेजी के रहते हिन्दी को स्वेच्छा से अपनाने का अवसर कभी हाथ नहीं आयेगा। क्षेत्रीय वाद का सहारा लेकर इसका उत्थान नहीं किया जा सकता है।

हिन्दी देश की एकता और अखण्डता की कड़ी है। प्रमुख व्यक्तियो द्वारा यह नारा बार–बार लगाये जाने के बाद भी इस एकता की कड़ी की धज्जियां उड़ रही है। इस कुकृत्य के लिये भारत के किसी भी कोने की जनता को दोष देना बेईमानी होगी दोष उनका है जो हिन्दी की तरक्की के लिये घड़ियाली आसू तो बहाते हैं परन्तु उनका सारा जीवन, व्यवहार, शिक्षा और वेशभूषा, खान–पान अंग्रेजी व परम्परा से जुड़ा हुआ है हिन्दी फिल्मो ने अपनी लोकप्रियता से यह साबित कर दिया है कि संविधान की शपथ ग्रहण करने वाले राजनेताओ ने सच्चे मन और ईमानदारी से राष्ट्र भाषा का आदर किया होता उसे गौरव से अपनाया होता तो आज राष्ट्र भाषा हिन्दी का विरोध कहीं भी नहीं होता। उन्ही की मेहरबानी का फल है कि आज अंग्रेजी सभी भारतीय भाषाओ की छाती पर दनदना रही है। हिन्दी हम थोपेंगे नहीं–अंग्रेजी हम छोड़ेंगे नहीं की स्थिति ने हमारा स्वाभिमान मिट्टी मे मिला दिया है।

अदालत जैसे महत्वपूर्ण विभाग की कार्यवाही मे हिन्दी होना चाहिये अथवा प्रान्तीय भाषा मे, अंग्रेजी के कारण बेचारा भोलाभाला भारतीय वकीलो की बहस मे उलझ कर लाचार अवस्था मे ठोकरें खाता फिरता है। दूरदर्शन पर अंग्रेजी के कार्यक्रम और नेताओ के भाषणो से ऐसा प्रतीत होता है कि अंग्रेजी ही देश की राष्ट्रभाषा है। मुट्ठी भर अंग्रेजी भक्तो के कारण करोड़ो लोगो की उपेक्षा की जाती है। अंग्रेजी के ज्ञान के बिना नौकरी पाना टेढ़ी खीर है। यही वजह है कि उत्तरप्रदेश जैसे हिन्दी राज्य मे अंग्रेजी मीडियम के माण्टेसरी स्कूल गाव–गाव और कस्बो मे धड़ाधड़ खुल रहे हैं। देहात के बच्चे अंग्रेजी भाषा और वेशभूषा धारण करने मे गौरव अनुभव करने लगे हैं। किस तरह एक विदेशी भाषा सभी भारतीय भाषाओ पर अपना साम्राज्य कायम किये हुये है। काश संविधान के रखवालो ने अंग्रेजो के साथ-साथ अंग्रेजी का भी बहिष्कार किया होता तो आज हिन्दी सम्पूर्ण भारत मे राष्ट्र भाषा का गौरव प्राप्त कर चुकी होती और देश की एकता मजबूत होती।

महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा गाधी, लोकमान्य तिलक रवीन्द्र नाथ टैगोर, वीर सावरकर, दामोदर सातवलेकर, सुभाषचन्द्र बोस, डा० राधाकृष्णन ये सभी गैर हिन्दी भाषी महापुरुष भी देश की एकता के लिये हिन्दी के पक्षधर रहे हैं लेकिन हमारे कतिपय नेताओं ने इन के अरमानो पर पानी फेर दिया। सभी भारतीय भाषाओ की जननी संस्कृत घोर उपेक्षा का कारण बनी हुई है। जबकि हम भारतीयो के सभी धार्मिक, राजनैतिक, ज्योतिष और नैतिकता की शिक्षा देने वाले ग्रन्थ संस्कृत भाषा मे है। जिस प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के कारण भारत विश्व गुरु था उस ख्याति को हमने मिट्टी मे मिला दिया है। हम अपनी ही सुख-सुविधा ऐशो आराम मे मस्त होकर पशु प्रवृत्ति के शिकार हो रहे हैं। देश की युवा पीढ़ी का तेजी के साथ पतन हो रहा है हम चाहकर भी उसे रोक नहीं पायेंगे क्योकि हमने शिक्षा की दूषित बुनियाद की नींव डाली है। जो बोया है–वही काटना पड़ेगा। अन्यथा देश की भाषा नीति और शिक्षा नीति में आमूलचूल परिवर्तन करना होगा जिसका स्वरूप शुद्ध प्राचीन भारतीय शैली पर होगा।

बाल जगत

आह्वान

*

धर्म बढ़ाने की तमन्ना अब हमारे दिल मे है,
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है'।
सदा न रहेगा जमाना किसी का
हो ,, ,, ,,।
अच्छा नहीं है दिल दुखाना किसी का
सदा न ... ...।
मिलेगा वही जो भाग्य मे लिखा है
नहीं मिल सकेगा खजाना किसी का
सदा न... ... .।
आयेगी मौत जब जाना पड़ेगा
वहा न चलेगा बहाना किसी का
सदा न.. ... ...।
दुनिया दिवानी देखो दौलत मे हुई है
धर्म भी बना लो अब सत्य वही का
सदा न .. ..।
मोह ममता न बचता जीवन किसी का
मोह ममता अब, छुड़ाना पड़ेगा
सदा न . ...।
नाम तो रटो अब जीवन मे उसी का
बस इन्हीं शब्दो मे है कहना 'ऋषि' का
सदा न ... .।

–ऋषिपालसिंह कक्षा ११ ब ३ उदयराज हिन्दू इन्टर कालेज, काशीपुर

महानता के पुंज सत्यव्रती स्वामी दयानन्द सरस्वती

(शेष पृष्ठ ५ से आगे)

कन्याओं को देखकर उन्होंने सिर झुका लिया। कुछ लोगों के पूंछने पर वे बोले "उन्होंने मंदिर को सिर नहीं झुकाया अपितु समाज की मातृरूप कन्याओं को सिर झुकाया जो कि पूज्या हैं।

स्वदेशी भावना के पक्षपाती

स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वराज्य, स्वभाषा एवं स्वदेशी वस्तुओं के पक्षपाती थे। उन्होंने अपने मुख्य ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" समेत सभी ग्रंथों की रचना राष्ट्र भाषा हिन्दी में की है। वे खद्दर के वस्त्र पहिनते थे। राष्ट्रवाद के प्रचारक थे। उनका विचार था कि "अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से बुरा से बुरा स्वदेशी राज्य बेहतर होता है।" इसीलिए वे आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के जन्मदाता माने जाते हैं।

गोरक्षा के हिमायती

स्वामी जी गौरक्षा के परम समर्थक थे। उन्होंने गोवध पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये कई लाख हस्ताक्षर कराकर भिजवाने का प्रयत्न किया था। उन्होंने गोकरुणानिधि" नामक पुस्तक लिखकर अपने गोप्रेम का परिचय दिया था।

अंतिम दृश्य देखकर नास्तिक आस्तिक बना

पंडित गुरुदत्त एम० ए० विज्ञान के विद्वान थे किन्तु नास्तिक थे परन्तु वे स्वामी जी का बहुत सम्मान करते थे। स्वामी जी के कई बार प्रमाणों के सामने निरुत्तर होने के बावजूद उन्होंने हृदय से कभी ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं किया।

दीपावली के दिन सायंकाल जब स्वामी दयानन्द का अंतिम समय आया तो उनके दर्शनार्थ आने वाले लोगों में पंडित गुरुदत्त भी थे। स्वामी जी ने अपनी मृत्यु के समय सब भक्तों को अपने सामने से हटा दिया, उन्हें पीछे की ओर खड़ा होने का आदेश देकर, प्रसन्न चित्त हो आसन लगा, उच्च स्वर से वेद मन्त्रों का पाठ कर, ईश्वर स्तुति एवं प्रार्थना कर वातावरण को शांत बनाया। तत्पश्चात प्राणायाम द्वारा जब अंतिम सांस छोड़ने का समय आया तो मुखमण्डल पर तेज भरी मुस्कान लाकर ईश्वर में अपना ध्यान लगाया तथा "ईश्वर तूने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो" कहकर अपना शरीर त्याग दिया। इस घटना ने चमत्कारिक प्रभाव दिखाकर गुरुदत्त ऐसे कट्टर नास्तिक को आस्तिक बना दिया।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द सरस्वती मृत्युपर्यन्त राष्ट्र, समाज एवं मानव मात्र को सद्ज्ञान का उपदेश देकर उन पर उपकार करते रहे। जिस प्रकार कि उनके उपदेशों, विचारों, सिद्धांतों एवं मान्यताओं का प्रभाव धार्मिक जगत एवं राजनीति के क्षेत्र दोनों पर पड़ा, उन्हें उन्नीसवीं शताब्दी का युग पुरुष कहना अनुचित न होगा।

महात्मा गांधी की दृष्टि में स्वामी दयानन्द एक महान आधुनिक ऋषि, समाज सुधारक एवं श्रेष्ठ पुरुष थे। कवीन्द्र रवीन्द्र टैगोर ने गुरुवर दयानन्द कहकर उन्हें बारम्बार प्रणाम किया है पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने उन्हें अपने गुरु एवं धर्म के पिता के रूप में आदर प्रदान किया था। यह स्वामीजी की महानता का परिचायक है।

आभार सहित–

गत १५ नवम्बर १९८० को सम्पन्न हुए सभा के वार्षिक निर्वा॰ मे क्रमशः प्रधान, मन्त्री तथा कोषाध्यक्ष पद पर हमारे चुने जाने उपलक्ष्य मे अनेकों शुभचिन्तकों, मित्रों, आर्यसमाजों तथा अन्य संस्था के बधाई पत्र निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं। हम आर्यमित्र के माध्यम उन सबके प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं और परमपि परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह उन सबकी भावनाओं के अनु हमें कार्य करने की प्रेरणा एवं शक्ति प्रदान करें।

इन्द्रराज	मनमोहन तिवारी	यशपाल आ॰
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य समाज मन्दिर सुलतानपुर [म०प्रदेश के भवन निर्माणार्थ अपील

कस्बा सुल्तानपुर, म० प्र० की राजधानी भोपाल के पास ही अ स्थित है। यह इलाका ईसाइयों, मुसलमानों तथा अराष्ट्रीय तत्वो केन्द्र के रूप मे विख्यात है। आदिवासी बहुल होने के कारण प्रलोभ देकर धर्म परिवर्तन का कार्य यहा विदेशी मिशनरिया बड़े जोर शोर कर रही हैं। अत आर्य समाज के कार्य को महत्व देते हुए आर्य सम मन्दिर के विशाल भवन का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो चुका है। दा महानुभाव एवं संस्था इस पुनीत कार्य मे दान देकर यश के भागी बने

सभा मन्त्री

श्री दरबारीलाल का सार्वजनिक सम्मान

१२–नवम्बर, भारतीय बाल–शिक्षा परिषद् द्वारा राष्ट्रीय बाल शिक्षा सम्मेलन के अवसर पर डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समि के संगठन सचिव, प्रसिद्ध आर्य नेता श्री दरबारी लाल का सार्वजनि अभिनन्दन किया गया। उप राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा समार के मुख्य अतिथि थे। रक्षा मन्त्री श्री कृष्ण चन्द्र पंत ने भी सम्मेलन सबोधित किया। यह सम्मान श्री दरबारी लाल जी द्वारा बच्चों के क्षे में किये गये विशेष कार्य के फलस्वरूप किया गया। प्रशस्ति–पत्र प॰ हुए परिषद् के महासचिव श्री जय प्रकाश भारती ने कहा कि देश डी० ए० वी० समिति ही ऐसी है जिसने शिक्षा के क्षेत्र मे सबसे अधि योगदान दिया है और उसके लक्ष्यों को सफल बनाने मे सबसे महत्व पूर्ण भूमिका श्री दरबारी लाल जी की रही है।

इस समय जबकि देश नैतिक पतन की ओर उन्मुख है, हमारी र भाषा, राष्ट्रीयता आदर्श एवं राष्ट्र प्रतीक खतरे मे पड़ते जा रहे हैं। मे आडम्बर, ढोंग तथा मिथ्याविश्वास तेजी से बढ़ रहे हैं तथा अराष्ट्र व विघटनकारी शक्तियो द्वारा राष्ट्र की एकता, अखण्डता एवं प्रभु को चुनौती दी जा रही है, आवश्यकता है कि हम स्वामी जी के विचा को घर घर और जन-जन तक पहुंचा कर उनके कार्यान्वयन के लि हर सम्भव प्रयास करें। तभी देश उपरोक्त विषम परिस्थितियों से उ सकता है। यही देशवासियो की स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

कविता कलाप

पुनर्जन्म

एक बार
आया एक पादरी
पास दयानन्द के,
पुनर्जन्म पर उसने आशंका व्यक्त की।
पादरी से प्रश्न किया स्वामी दयानन्द ने
खाना पीना, सोना
हँसना और रोना सब
संभव किसके लिए–
देहधारी जीव को
या देह रहित जीव को ?

पादरी ने उत्तर दिया
यह सब कर सकता है
तन धारी जीव ही !

ऋषि ने फिर प्रश्न किया
त्याग कर शरीर जब
जीव चला जाता है
क्या वह पुन शरीर धारण करता नहीं ?

बोला वह पादरी
पुण्य आत्माएं तो
स्वर्ग भोग भोगती हे,
पातकी जो होती वह पुन लौट आती हैं !

बोले ऋषि दयानन्द
बिन शरीर फिर कैसे जीव भोग भोगता,
उस कल्पित स्वर्ग मे ?
स्वयं मानते हो जब
भोग भोग सकता है
देह युक्त जीव ही !
यह भी स्वीकार तुम करते हो आत्माएं
पुन लौट आती हैं धारण करतीं शरीर।
फिर क्यों तुम्हारा मन
आशंका विद्ध है ?
कथन से तुम्हारे ही पुनर्जन्म सिद्ध है।

—बद्री प्रसाद गुप्त 'आब', दिल्ली

देश और धर्म बचाना है

प्राणों की आहुति देकर भी देश और धर्म बचाना है।
महर्षि दयानन्द जी का हमको उपकार चुकाना है॥
जब ऋषि आये यहाँ उस समय छाया घोर अंधेरा था,
भेदभाव और छुआछूत का गढा हुआ तो डेरा था,
तब ऋषि ने वेदों की ज्योति जला कर किया उजेरा था,
उसी ज्योति को लेकर के घर घर प्रकाश फैलाना है।
महर्षि दयानन्द जी का हमको उपकार चुकाना है॥
जाति धर्म पर लेखराम, श्रद्धानन्द जी ने प्राण दिया,
विधर्मियो की हठधर्मी का निर्भय हो अपमान किया,
'धर्म हमारा सर्वोपरि है' कह कर सीना तान दिया,
उसी कुर्बानी की कीमत को अब तो हमें चुकाना है।
महर्षि दयानन्द जी का हमको उपकार चुकाना है॥
प्राण भले ही जायें किन्तु निज आन नहीं जाने देंगे,
देश धर्म की परम्परा पर आंच नहीं आने देंगे,
भारत को खालिस्तान और पाकिस्तान नहीं बनने देंगे,
जन-जन के मन मे देश भक्ति की जगमग ज्योति जगाना है।
महर्षि दयानन्द जी का हमको उपकार चुकाना है॥
हम दीपक की तरह जलेंगे जग को मार्ग दिखायेंगे,
सारे जगत को आर्य बनाओ यह उद्देश्य बनायेंगे,
वेद हमारा मूल धर्म है, यह सन्देश सुनायेंगे,
'सरल' विश्व मे ओ३म् प्रभू का ही ध्वज फहराना है।
महर्षि दयानन्द जी का हमको उपकार चुकाना है॥

—आर्य वीर राजेन्द्रप्रसाद विश्वकर्मा 'सरल' (लखीमपुर खीरी)

नमस्कार सौ बार

विश्व की विमल विभूति महान,
अहिंसा के साधक श्रीमान।
सरलता, समता के आगार,
तुम्हे है नमस्कार सौ बार॥
आत्म बल, दृढ़ता के श्रीधाम,
विमल भावो के देव ललाम।
शील संयम के शुचि शृंगार,
तुम्हे है नमस्कार सौ बार॥
वेद की पावन शुचिमय नीति,
धर्म की क्षमता परम पुनीत।
स्नेह की सरिता मधुल धार,
तुम्हे है नमस्कार सौ बार॥
विश्व की नूतन विजय विभूति,
सत्य के सम्बल, शुभ अनुभूति,
दीन दुखियो की करुण पुकार।
तुम्हे है नमस्कार सौ बार॥
कर्मगीता का अनुपम योग,
अखिल मानवता का सुख लोक।
करोड़ों हृदयों की गुंजार,
तुम्हें है नमस्कार सौ बार॥
विश्व की अनुपम ज्योति महान,
प्रगतिमय भारत के अभिमान।
सभ्यता, समता के आधार,
तुम्हे है नमस्कार सौ बार॥

—प्रेम–दिनेश, आर्यसमाज बैंकाक

आर्य समाज भवाली (नैनीताल) के जीर्णोद्धार हेतु अपील

कुमायू के मुख्य द्वार पर अवस्थित भवाली का आर्यसमाज मन्दिर एवं पुस्तकालय बहुत जीर्ण शीर्ण अवस्था मे है। अल्मोड़ा, रानीखेत, रामगढ़, आदि को जाने वाले आर्यजनों की यह पड़ावस्थली (विश्राम स्थल) रही है। यहा एक आधुनिक शौचालय एवं विश्रामकक्ष के निर्माण की बहुत आवश्यकता है। अत सभी आर्यजनो एवं आर्यसमाजों से मुक्तहस्त होकर दान देने की प्रार्थना है।

सभा मन्त्री

यज्ञ की महत्ता और उपयोगिता

[श्रीमती कृष्णा चोपड़ा हस्तिनापुर (मेरठ]

यज्ञ का अर्थ है—त्याग, परोपकार। वैयक्तिक उन्नति और सामाजिक प्रगति का सारा आधार इसी एक प्रवृत्ति पर निर्भर है। यदि माता अपने रक्त मास मे से एक भाग नये शिशु का निर्माण करने के लिए न त्यागे, प्रसव की वेदना न सहे, अपना शरीर निचोड़कर उसे दूध न पिलाये, पालन पोषण म कष्ट न उठाये और वह यह सब कुछ नितान्त नि स्वार्थ भाव से न करे तो फिर मनुष्य का जीवन धारण कर सकना ही सम्भव न हो। इसीलिए कहा जाता है कि मनुष्य जन्म यज्ञ भावना क द्वारा या उसके कारण ही सम्भव होता है।

यज्ञ क द्वारा जो शक्तिशा ली तत्व वायु मण्डल मे फैलाये जाते है उनसे हवा मे घूमते हुए असख्य राग कीटाणु सहज ही नष्ट होते है। डी० डी० टी० फिनाइल आदि छिड़कने, बीमारियो से बचाव करने की दवाए या सुइया लेने से कही अधिक कारगर उपाय यज्ञ करना है। साधारण रोगो एव महामारियो से बचने का यज्ञ एक सामूहिक उपाय है। दवाओ मे सीमित स्थान एव सीमित व्यक्तियो को ही बीमारियो से बचाने की शक्ति है पर यज्ञ की वायु तो सबत्र पहुचती है और प्रयत्न न करन वाले प्राणियो की भी सुरक्षा करती है। मनुष्यो की ही नही पशु पक्षियो, कीटाणुओ एव वृक्ष वनस्पतियो की भी यज्ञ से रक्षा होती है।

यज्ञ की उपमा मनुष्य क अन्त करण पर देवत्व की छाप डालती है। जहा यज्ञ होते है वहा की भूमि एव प्रदेश सस्कारों की छाप अपने अन्दर धारण कर लेते हैं और वहा जाने वालो पर भी दीर्घकाल तक प्रभाव डालते है। प्राचीन काल मे तीर्थ वहीं बने हैं जहा बड़े-बड़े यज्ञ हुए थे। जिन घरो मे जिन स्थानो मे यज्ञ होते है वहा भी एक प्रकार का तीर्थ बन जाता है और वह जिनका आगमन रहता है उनकी मनोभूमि उच्च सुविकसित एव सुसस्कृत बनती है।

कुबुद्धि, कुविचार, दुर्गुण एव दुष्कर्मों से व्यक्ति की दूषित मनोभूमि मे यज्ञ से भारी सुधार होता है। इसलिए यज्ञ को पाप नाशक कहा गया है. यज्ञीय प्रभाव का प्रतिफल जीवन के प्रत्येक क्षण को स्वर्गीय आनन्द से भर देता है इसलिए यज्ञ को स्वर्ग देने वाला कहा गया है।

यज्ञ त्यागमय जीवन के आदर्श का प्रतीक है। इदम् न मम (यह मेरा नहीं सम्पूर्ण समाज का है) इन भावनाओ के विकास से ही हमारा सनातन, आध्यात्मिक, राजनीतिक, समाजवाद जीवित रह सकता है। मनुष्य अपनी योग्यता, शक्ति, विद्या, सम्पत्ति, प्रतिष्ठा, प्रभाव, पद आदि का उपयोग अपने सुख के लिए कम से कम करके समाज को उसका अधिकाधिक लाभ दें यही आदर्श यज्ञ मे सन्निहित है।

अपनी थोड़ी सी वस्तु को सूक्ष्म वायु रूप बनाकर उन्हे समस्त जड़ चेतन प्राणियो को बिना किसी अपने मित्र या शत्रु का भेद किये साँस द्वारा इस प्रकार गुप्त दान के रूप मे खिला देना कि उन्हे पता भी न चले कि किस दानी ने इतना पौष्टिक तत्व खिला दिया—कम खर्च मे बहुत अधिक पुण्य प्राप्त करने का यज्ञ एक सर्वोत्तम उपाय है।

यज्ञ सामूहिकता का प्रतीक है अन्य उपासनायें या धर्म प्रक्रियायें ऐसी हैं कि उन्हे अकेला ही किया या कराया जा सकता है पर यज्ञ ऐसा कार्य है जिसमे अधिक जनता के सहयोग की जरूरत होती है। होली आदि के यज्ञ तो सदा सामूहिक ही हुआ करते हैं। यज्ञ आयोजन मे सामूहिकता सहकारिता और एकता की भावनायें विकसित होती हैं।

जो वस्तु अग्नि के सम्पर्क मे आती है उसे वह दुराती नहीं वरन अपने मे आत्मसात् करके अपने समान ही बना लेती है उसी तरह हमें भी अपने सम्पर्क मे आये व्यक्तियो को आत्मसात् करने का आदर्श पूरा करना चाहिए अग्नि की लौ कभी नीचे नहीं जाती ऊपर उठती है उसी प्रकार हमे भी अपने विचारो और कार्यों को नीच मे नहीं छोड़ना चाहिए। मानव जीवन का अन्त मुट्ठी भर भस्म के रूप मे शेष रह जाता है इसीलिये अपने अन्त को ध्यान मे रखते हुये जीवन के सदुपयोग का प्रयत्न करना चाहिए। जो उदारता, त्याग, सेवा और परोपकार के लिए कदम नहीं बढ़ा सकता है उसे जीवन की सार्थकता का श्रेय और आनन्द भी नहीं मिल सकता।

यज्ञ कम पवित्र धर्म है ईश्वर की सर्वोत्तम उपासना है—उसके प्रत्येक चरण मे मंगलमयी प्रेरणायें भरी पड़ी है।

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यो का शुल्क १५ अक्टूबर ८७ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने मे ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यो से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमे बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

२२४८, ३२४०, ४५६६, ५०३१, ५३५२, ५३६१, ५९१४, ५९८०, ६२३४, ९२९९, ९७२०, १००४, ११२९, ११३०६, ११३३०, ११७२८, १२०१३, १२०१६ १२०४७, १२७३८, १२७५७, १३२७०, १३३७७, १३२८५, १३६२०, १३६२१, १३६२७, १३६२८, १३६३१, १३६३३, १३६३७, १४०६०, १४०६१, १४०६२, १४०६३, १४०६४, १४०६५, १४०६६, १४०६८, १४०७०, १४०७१, १४०७२, १४०७३, १४०७४, १४०७७, १४०७८, १४०८०, १४०८१, १४०८२, १४०८३, १४०८४, १४०८५, १४०८६, १४०८८, १४०८९, १४०९०, १४०९१, १४०९२, १४०९३, १४०९५, १४०९६, १४०९७, १४०९८, १४०९९, १४१००, १४१०१, १४१०३, १४१०४, १४१०५, १४१०६, १४१०७, १४१०८, १४१०९, १४११०।

विनीत—
व्यवस्थापक

आर्यसमाज गोण्डा मे सभा मन्त्री जी का भव्य स्वागत

१०११ रुपये की राशि भेंट

नगर आर्य समाज गोण्डा का वार्षिकोत्सव दिनांक २१ से २४ नवम्बर तक समारोह सम्पन्न हुआ जिसमे शास्त्रार्थ महारथी श्री प० शान्तिप्रकाश जी, प्रसिद्ध याज्ञिक श्री प० इन्द्रदेव पाठक एव श्री तेज पाल 'कमल' ब्रह्मचारी भजनोपदेशक आदि के प्रभावशाली प्रवचनों एव मधुर भजनो से जनता आनन्दविभोर हो उठी। दिनांक २२ को स्वा-मीन गांधी विद्या मन्दिर इण्टर कालेज मे छात्रों तथा अध्यापको को सम्बोधित करते हुए श्री पाठक ने शिक्षणालयो में वैदिक शिक्षा के पठन पाठन की आवश्यकता पर बल दिया।

अन्तिम दिवस आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के गोण्डा आगमन पर जनपद की समस्त आर्यसमाजो की ओर से उनका भव्य स्वागत किया गया और उन्हें जिला सभा के माध्यम से (रु० १०११) की राशि भेंट की गई जो उन्होने दंगापीडितों के सहाय-तार्थ स्वीकार की। मार्ग मे कर्नलगंज आर्यसमाज एव विद्यालय की ओर से श्री मन्त्री जी तथा उनके साथ पधारे हुए श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त तथा श्री आर० ए० सिंह का भावभीना स्वागत हुआ।

मन्त्री जी ने अपने एक दिवसीय व्यस्त कार्यक्रम मे सर्वप्रथम वयो-वृद्ध स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी बा० ईश्वरशरण जी का स्नेहपूरित अभि वादन किया तत्पश्चात श्रीमती कृष्णा चन्द्रा के साथ स्त्री आर्यसमाज की भूमि का निरीक्षण करके भवन निर्माण की भावी योजना पर आव-श्यक विचार विमर्श किया। सायंकाल प्रकाश दयानन्द बाल विद्या मन्दिर के नवीन कक्ष का उद्घाटन किया। इस अवसर पर विद्यालय के उपाध्यक्ष सेठ सुन्दरदास जी ने मन्त्री जी तथा सभी आगन्तुकों का स्वा गत किया और विद्यालय की प्राचार्या उषा श्रीवास्तव एव नन्हे मुन्ने बच्चो एव अध्यापिकाओं ने ईश प्रार्थना के मन्त्रों का सस्वर पद्यमय पाठ एव सुमधुर भजन प्रस्तुत किए। जिसकी उपस्थित जन समुदाय ने प्रशंसा की।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में दयानन्द बाल मन्दिर की अध्यापिकाओं ने मन्त्री जी का स्वागत-गान से अभिनन्दन किया। मन्त्री जी ने पदा-धिकारियो एव अध्यापिकाओ को सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां भेंट कीं।

वार्षिकोत्सव का समापन करते हुए मन्त्री जी ने देश की वर्तमान समस्याओ पर आर्यसमाज की भूमिका का प्रकाश डाला एव नवयुवकों का आह्वान किया कि वे आर्यसमाज मे आकर उसकी गतिविधियो मे भाग लें तथा उसे सम्पुष्ट करें।

उपर्युक्त धनराशि मे निम्न महानुभावों ने सहयोग प्रदान किया—

प्रकाश दयानन्द बाल मन्दिर, स्टेशन रोड गोण्डा	२०० रु०
श्री सेठ सुन्दर दास जी, बड़गांव, गोण्डा	१०१ रु०
श्री रामचन्द्र प्रधान, कोडिया बाजार	१०१ रु०
श्रीमती कृष्णा चन्द्रा	१०१ रु०
श्री के० सी० शर्मा इक्साइज इन्सपेक्टर	१०१ रु०
श्री बी० एस० मल्होत्रा (मल्होत्रा ट्रैक्टर्स, गोण्डा)	५१ रु०
श्री बलराम गोविन्द	५१ रु०
श्री कृष्णकुमार गुप्ता, (उपमन्त्री आ०स० बड़गांव)	५१ रु०
श्री काली प्रसाद शुक्ला, बड़गांव, गोण्डा	५१ रु०
श्री बाबू ईश्वर शरण जी, अध्यक्ष जिला सभा	५१ रु०
श्री धर्मवीर सक्सेना जी, एस डी फैजाबाद	५१ रु०
श्री आनन्द उपमन्यु मन्त्री आ०स० बलरामपुर	५१ रु०
श्री बलराम तिवारी, सदस्य आ० स० गोण्डा	५१ रु०

कार्यक्रम का संचालन श्री बलराम गोविन्द, मन्त्री जिला सभा गोण्डा ने किया। अन्त मे श्री नरेन्द्रनाथ श्रीवास्तव प्रधान तथा मन्त्री श्री बल-वन्तराम मिश्र ने सभी आगन्तुको एव सहयोगियो के प्रति आभार प्रकट किया। —संवाददाता

* * *

३३ बीबी (श्रीगंगानगर) मे वानप्रस्थ संस्कार

श्री गंगानगर। ३३-बीबी-श्रीविजयनगर मे ९ से १५ नवम्बर १९८७ तक पं० रतनराम आर्य की प्रेरणा से योग साधना शिविर आयोजित किया गया। स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी ने प० पूर्णराम सोलंकी के सहयोग से योग प्रशिक्षण दिया। यज्ञ हवन के साथ राष्ट्रीय एकता-अखण्डता-सम्पन्नता सम्बन्धी विचार देने वालो में स्वामी जी के अतिरिक्त सर्वश्री प० शान्तिपाल भजनोपदेशक, कृष्णमुनि, पन्नालाल प्रेमी, जगदीशप्रसाद शर्मा, भुवन तिवारी, अमीचन्द शर्मा, परमेलसिंह, सन्त सुरजाराम आदि थे। नेहरू जयन्ती पर स्वामी जी द्वारा सर्वश्री रतनराम (रतनमुनि) व सहीराम (सहजमुनि) को वानप्रस्थ की दीक्षा के साथ अमरसिंह, त्रिलोकचन्द्र लक्ष्मीनारायण, लालचन्द्र, कृष्ण लाल, जगदीशचन्द्र, मदनलाल, शान्ती देवी, रामकरण, कमलादेवी, इन्द्रराज और गुलाबराम को यज्ञोपवीत पहनाये गये।

श्रीगंगानगर, राजस्थान का सीमान्त जनपद है। यहां के जन वीर धीर और मानव (वैदिक) धर्म के चिरकाल से पिपासु हैं।

—सभा मन्त्री

उत्सव

—आर्यसमाज मेस्टनरोड कानपुर का १०८ वां वार्षिकोत्सव शिव-रात्रि के अवसर पर १३ से १६ फरवरी १९८८ तक समारोहपूर्वक मनाया जायेगा।

—आर्यसमाज रेलवे कालोनी, समस्तीपुर (बिहार) का तृतीय वार्षिकोत्सव ११-११-८७ से १५-११-८७ तक ससमारोह मनाया गया।

शुद्धि

—आर्यसमाज एव विश्व हिन्दू परिषद आंवला के सत्प्रयासों से ग्राम करीपुरा (बदायू) के दो नव मुस्लिम परिवारो के ९ सदस्यों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म स्वीकार किया।

—हिन्दू शुद्धि संरक्षण समिति हरियाणा के तत्वावधान मे स्वामी सेवानन्द सरस्वती के प्रयत्नो से २५-१०-८७ तथा २८-१०-८७ को आर्यसमाज मन्दिर समालखा के रविवारीय सत्संग के पश्चात ११ मुस-लमान नटों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

—आर्यसमाज नेपियर टाउन, दयानन्द भवन जबलपुर के तत्वाव-धान मे ४ अक्टूबर से ११ अक्टूबर तक शहर के भिन्न-भिन्न भागों मे वेद प्रचार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्रीनगर (काश्मीर) से पधारे आर्य विद्वान् श्री वेदपाल शास्त्री ने वेद के विभिन्न विषयों पर सरल, सरस एव सुबोध भाषा में प्रकाश डालकर जनमानस को मोहित कर लिया।

वेद–विवेचन

वेद-मन्त्रो के विविध अर्थ

—आचार्य वीरसेन मुनि विश्व वेदपरिषद, लखनऊ

५ जुलाई १९८७ के आर्य जगत् मे आचार्य सत्यदेव विद्यालङ्कार का 'यज्ञ योग तथा रोग' शीर्षक से लेख छपा है जिसमे वेद मन्त्रो के अनेक अर्थ होने पर आपत्ति की गयी है और लिखा है कि 'कुछ ऐसी होड़ सी लग गई है कि सर्वम् वेदात् प्रसिद्ध्यति' को पूरा करके ही छोड़ना चाहते है क्या वेद म से यह सब निकालना होगा। यह तो वेदो के साथ *अन्याय होगा'* इत्यादि।

इस सम्बन्ध मे यह कहना है कि प्राय मन्त्रो के आध्यात्मिक, आधि दैविक, आधिभौतिक अर्थ होते हैं और हो सकते हैं। अनेक अर्थ होना श्लेष अलङ्कार गुण है—दोष नहीं। महर्षि दयानन्द ने भी कई मन्त्रो के कई कई अर्थ किये है और पदार्थ मे अनेक अर्थों का सङ्केत है।

यदि कोई विद्वान सप्रमाण उन अर्थो के अतिरिक्त भी अर्थ करता है तो यह महर्षि का विरोध नहीं, किन्तु विस्तार और परिशिष्ट कहा जायेगा। विद्यालङ्कार जी ने अघमर्षण मन्त्र का उदाहरण दिया है। इसमे ऋत और सत्य आदि के महर्षि दयानन्द जी युधिष्ठिर मीमांसक और श्री वीरसेन वेदश्रमी के अर्थ-भेद दिखाये हैं जो सभी ठीक है— एक ही बात को तीन प्रकार से कहा गया है—

शब्द	महर्षि दयानन्द	मीमांसकजी	वेदश्रमी जी
ऋत	वेदज्ञान	गतिशील	गति करते हुए
		चेतन जगत्	इलेक्ट्रान्स
सत्य	त्रिगुणात्मक	स्थिर	केन्द्रस्थ
	प्रकृति	अचेतन जगत्	प्रोट्रान
रात्रि	प्रलयावस्था	——	सृष्टि की
			अविकसित अवस्था
समुद्र	जलपूर्ण अन्तरिक्ष	——	धूमनयतत्त्व
अर्णव	——	——	जल रूप तत्त्व
संवत्सर	समय काल गणना	——	कालचक्र

इस प्रकार वेदश्रमी जी के अर्थ महर्षि के विरुद्ध न होकर वर्तमान विज्ञान को अधिक स्पष्ट रूप से प्रकाशित करने वाले आधिदैविक (वैज्ञानिक) अर्थ हैं। ऐसे ही अर्थ आज के वैज्ञानिक युग मे आवश्यक हैं।

शुभविवाह

आर्य समाज मण्डी बास (मुरादाबाद) के उपप्रधान श्री सतीश-चन्द्र गुप्त ऐडवोकेट तथा श्रीमती रक्षा, आर्य, पूर्व मन्त्राणी महिला आर्य समाज के पुत्र कैप्टेन अतुल का शुभ विवाह श्री श्याम नारायण गुप्ता की सुपुत्री आयुष्मती सोमा एम० ए० के साथ पूर्ण वैदिक रीति से १–११–८७ को सम्पन्न हुआ। नगर के गण्यमान्य व्यक्तियो ने वर–वधू को आशीर्वाद दिया।

वार्षिकोत्सव

वैदिक योगाश्रम गुरुकुल (शुकताल) मुजफ्फर नगर का वार्षि-कोत्सव २ से ५ नव० तक ससमारोह मनाया गया जिसमें वैदिक विचार धारा के प्रख्यात विद्वानो के भाषण हुये।

धर्मार्थ चिकित्सालय

आ० स० मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली मे एक नि शुल्क डा० दौलतराम होम्यो० औषधालय चल रहा है जिसमे डा० जियालाल सूद, भू० पूर्व चिकित्सा अधिकारी की सेवायें प्राप्त हो गई है। जनता से अनुरोध है उनकी सेवाओ से लाभ उठावें।

शोक समाचार

—आ० स० नेपियर टाउन जबलपुर के पुरोहित श्री अभयशरण आयुर्वेदालङ्कार का २७ ११ ८७ को आकस्मिक निधन हो गया।

आ० स० रांची (बिहार) के भूतपूर्व प्रधान एव मन्त्री वैदिक सिद्धांतो के निष्णात विद्वान एव समाज सेवी श्री बालगोविन्द सहाय की २८-१० को मृत्यु हुई।

वार्षिकोत्सव

—आ० स० लार टाऊन(देवरिया)का ५४वां वार्षिकोत्सव २०-१२ से २२-१२ तक शिव मन्दिर लार बाजार मे मनाया जायेगा।

—गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम (कोटद्वार)का वार्षिकोत्सव २२ से २५ जनवरी तक मनाया जायेगा।

—स्वामी दयानन्द के १०४ वें निर्वाण दिवस पर परोपकारिणी सभा अजमेर की ओर से २८-१०-८७ से १-११-८६ तक अजमेर मे ऋषि मेला आयोजित हुआ जिसमे यजुर्वेद पारायण यज्ञ, आर्य महिला सम्मेलन, कवि सम्मेलन, चरित्र निर्माण सम्मेलन, वेद सम्मेलन सहित कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित हुए। देश के विख्यात आर्य मनी-षियो, सन्यासियो एव उपदेशको, प्रचारको मे भाग लिया।

आवश्यकता

आ० स० कोसीकला (मथुरा) को एक योग्य अनुभवी वैदिक सस्कारो मे निपुण पुरोहित की आवश्यकता है न्यूनतम स्वीकार्य पारिश्रमिक लिखते हुए निवेदन करें।

मन्त्री आर्य समाज कोसीकला (मथुरा)

आर्यमित्र साप्ताहिक अभियान

विश्व की सुखशांति तथा राष्ट्रीय एकता अखण्डता सम्पन्न हेतु वर्ष १९८८ से आर्यमित्र साप्ताहिक के ग्राहक अभियान मे अपना पावन योग दीजिये। जन जन के विचारों को पवित्रतम बनाने मे सहयोग दीजिये—कम से कम एक ग्राहक बनाकर वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे ऋषि ऋण से उऋण होइये।

गुरुकुलानन्द

भवन निर्माण हेतु दान की अपील

आ० स० शास्त्री नगर मेरठ के पास अपना कोई भवन नहीं है। आवास विकास परिषद उ० प्र० ने १० ० गज भूमि आवंटित की है। इस पर भवन बनाने हेतु विशाल धनराशि की आवश्यकता है। प्रदेश के दानी मानी महानुभावो एवं आर्यसमाजियो से इस पुनीत कार्य मे सहयोग की प्रार्थना है। —मन्त्री आ० स० शास्त्री नगर (मेरठ)

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी-भवन ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993 ४५८८३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी. ७५
पौष कृष्ण ८
१३ दिसम्बर रविवार, १९८७ ई०

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

धर्म शिक्षा पुस्तकों के सम्बन्ध में—

आवश्यक सूचना

समस्त आर्य विद्यालयों एवं पुस्तक विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि प्रदेशीय विद्यार्य सभा उत्तरप्रदेश द्वारा प्रकाशित पुस्तकें सभा कार्यालयमें उपलब्ध हैं। पुस्तकें प्राप्ति हेतु कार्यालय से सम्पर्क करें अथवा अपने आर्डर के साथ आधा धन मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के नाम से भेजें। रेलवे स्टेशन एवं पूरा पता साफ साफ लिखें। पुस्तकों का मूल्य निम्न प्रकार है—

धर्म शिक्षा भाग १	१ ००
" " " २	१ ५६
" " " ३	२ ७०
" " " ४	२ ७५
" " " ५	३-६०
" " " ६	४-७५
" " " ७	४-१५
" " " ८	३-००
" " " ९	४ ००
" " " १०	३-००
" " " ११	४ ००
धर्म शिक्षा भाग १२	३-५०

व्यवस्थापक
प्रदेशीय विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ५—मीराबाई मार्ग लखनऊ

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु

❀ आवश्यक सूचना ❀

समस्त आर्यसमाजों जिला उपसभाओं एवं शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की शताब्दी समारोह के अवसरपर आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक शैक्षणिक एवं कविसम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कैसेट) जिसमें विभिन्न वाद विवाद प्रतियोगिताएं तथा सम्मेलनों के अंश सम्मिलित हैं एवं विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह एवं कवि सम्मेलन की वी० डी० ओ० (फिल्म) कैसेट के अतिरिक्त शताब्दी [illegible] संन्यासियों विद्वानों उपदेशकों आदि के महत्वपूर्ण उपदेश एवं जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया [illegible] पुरस्कार प्राप्त किए उनके रिकार्डिंग कैसेट निम्न प्रकार सभा [illegible] में बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। जो सज्जन अथवा संस्थाएं इन्हें प्राप्त करना चाहता है वह श्री विश्वम्भरदयाल गुप्ता व्यवस्थापक आर्यमित्र ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आर्डर देकर प्राप्त कर सकते हैं।

१—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसेट—	मूल्य १००० ०० रु०
२—सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कैसेट— मूल्य	१०० ०० रु०
३—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग कैसेट कुल संख्या ३०) प्रति कैसेट—	२० ०० रु०
४—कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो—	५ ०० रु०

(बड़ी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध कराई जा सकती है)

नोट—जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया एवं पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें १८ १९ तथा २० अक्टूबर के एक एक दिन के अलग से रिकार्डिंग कैसेट उचित मूल्य पर अलग से मिल सकते हैं।

आर्यसमाज के कार्यक्रम तथा सभा की शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओं को ऐसे चित्र एवं कैसेट प्रचार कार्य में बहुत सहायक होंगे।

[शिक्षण संस्थाओं को २० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा]

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए छपाई कम में

ओ३म

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि स० २२४१ ५७ | घोषणा पत्र स ७ ८२८५

पौष कृष्ण ३० रविवार सम्वत २०४४ वि० दिनाक २० दिसम्बर १९८७

प्रार्थना

ओ म अ ने य यनम व
विश्वत प रम म
स इह् यु ग ह त ऋ १
ह नेजस्व त भगवन जस
अखण्ड यश शुभ कमक हम
कल यो मे अ प सवत
विर अम न बह् यश
(ह र कम व य है म न
है उव यम न

इस अङ्क के आकर्षण

प्रध न सम्प दक

मनमोहन तिवारी

प्रब ध सम्पादक

इन्द्रदेव प ठक एम० ए०

स हित्याच य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	१५१)
व र्षिक	१५)
छमाही	११)
विदेश मे	१५ पौंड
वष	६
अङ्क	४९

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज



जिनका बलिदान दिवस २३ दिसम्बर को सारे आयजगत मे मनाया जायगा।

कमवीर व्रतशील स य के प्रबल सह यक
धम धुर धर देश ज ति के मसय न यक
दय न द के भक्त शिष्य अविचल अनुग म
वदिक म य कणध र जन यक म मो
बिछड़ हुओ का म्ल न मुख शद्धि सुध से धो गये
बलिद न दिय प्रभु धम पर ध य अमर तुम हो गये

जो आंख नीच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है ॥

–सारस्वत मोहन 'मनीषी'

सम्पादकीय

लखनऊ–पौष कृष्ण १० सम्वत २०४४ रविवार २० दिसम्बर १९८७ दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८

अनन्त प्रेरणा के स्रोत–

अमर बलिदानी श्रद्धानन्द

कुल पवित्र जननी कृतार्था, वसुन्धरा पुण्यवती बभूव ।

हे 'मोहयान' बादलों की तरह बरसने वाले सन्यासी ! दिव्य गुण आगार, क्रान्ति के दूत, युगदृष्टा–युग पुरुष, आज जनता के प्राणो के प्राण, जिस जननी ने तुम्हें जन्म दिया वह जननी धन्य हो गई, जिस धरती पर तुम्हारे चरण पड़े वह धरती पवित्र हो गई । हे ऋषिवर्य की आशाओं, आकांक्षाओं की सगुण साकार प्रतिमा ज्वलन्त मूर्ति, आहुति देने के पूर्व तुमने कहा था–'अब तो यही इच्छा है दूसरा शरीर धारण कर शुद्धि के अधूरे काम को पूरा करू, वैदिक धर्म की सेवा करू '।

और २३ दिसम्बर १९२६ की वह भयानक शाम

अस्ताचल की ओर बढ़ती हुई उस क्रूर काली निशा ने तुम्हारे सीने को चीरते हुए विश्व को अन्धकारमय बनाने का असफल प्रयास किया था । उसे नहीं मालूम था–शहीदों के खून से शहीद पैदा होते हैं । अगर कब्र से उठकर देखना चाहता है तो देख ले, आज घर–घर मे हमारा प्यारा श्रद्धानन्द विराजमान है । शुद्धि का डंका बज रहा है, छुआछूत का नामोनिशां मिट गया है, ओ३म् की पताका लिये उसके दीवाने घर-घर मे श्रद्धासमन्वित यज्ञ की सुरभ सौरभ मादकता बिखेर रहे हैं । आनन्द की वर्षा हो रही है ।

पाठक वृन्द !

आज उस अमर हुतात्मा का बलिदान दिवस है । वे पवित्र वेद वाणी मे वर्णित सर्वतोमुखी क्रान्ति के ज्वलन्त प्रतीक थे । वीरता, धीरता, गम्भीरता उनका सहज गुण था । उनके चमत्कारी व्यक्तित्व को उजागर करने वाले प्रेरक प्रसंग आप इस आर्य पत्रिका में पढ़ेंगे, आप देखेंगे विश्व के क्षितिज पर ऐसा महान् क्रान्तिकारी जिसने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के प्रत्येक क्षेत्र मे क्रान्ति का बिगुल बजाया हो, युगो युगों के बाद ही सम्भव है–'सम्भवामि युगे युगे' । जिस समय ब्रिटिश साम्राज्यशाही के दरिन्दों ने देहली के चांदनी चौक मे बायनेटो को उनके सामने किया तो उन्होंने सीना खोलकर कहा था–'हिम्मत हो तो चलाओ गोली सीना खुला हुआ है'। भारतीय संस्कृति के महान शत्रु लार्ड मैकाले की कलुषित शिक्षा प्रणाली का मुंहतोड़ उत्तर देते हुए प्राचीन आर्ष पद्धति पर पवित्र गंगा तट पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की–जो आज भी उनके शिक्षा के प्रति असीम अनुराग को प्रकट करती है । जाति बन्धन तोड़कर गुण कर्मों के आधार पर विवाह प्रथा का सूत्रपात स्वयं अपने परिवार से ही प्रारम्भ किया । अपने पूर्वजों की अनमोल विरासत, एक दो नहीं सैकड़ो हजारों लाख, जो गोरक्षक से गोभक्षक बने हुए थे, शुद्धि का पीयूष पिलाकर फिर उन्हे वैदिक धर्म मे दीक्षित कर लिया । ऋषिवर्य के अनूठे व्यक्तित्व और जिज्ञासाप्रद वाचन को सुनकर जिस युवा मुंशीराम का असंयमित आचार हीन जीवन प्रभु के प्रेम में दीवाना हो गया, आचार की ऊंचाइयों को

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन रविवार दिनांक ३ जनवरी १९८७ को प्रातः १०–३० बजे नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ मे होगा । विचारणीय विषयो की सूची सभी पदाधिकारियो एवं अन्तरंग सदस्यो को डाक द्वारा भेज दी गई है । मनमोहन तिवारी

मन्त्री–आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

आवश्यक सूचना

इधर कुछ समाजो से हमे यह समाचार प्राप्त हुआ है कि आर्य प्रतिनिधि सभा से निष्कासित कुछ स्वार्थी व्यक्ति समाजो को पत्र भेज कर यह भ्रमित प्रचार कर रहे हैं कि वे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान व मन्त्री हैं ।

इस विषय मे प्रदेश की समस्त जिला सभाओं, एवं आर्य समाजो को सूचित किया जाता है कि विगत १५ नवम्बर को लखनऊ मे विधि-वत् सम्पन्न हुए चुनाव मे सर्वश्री इन्द्रराज, मनमोहन तिवारी, यशपाल आर्य क्रमशः प्रधान, मन्त्री व कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं । इसके अति-रिक्त अन्य सभी पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य भी निर्वाचित घोषित किये गये हैं ।

अतः मुझे पूर्ण आशा एवं विश्वास है कि आर्य जनता उपर्युक्त भ्रामक प्रचार से सावधान रहेगी । मनमोहन तिवारी

सभा मन्त्री

साधता हुआ महान से महानतम बन गया–उस बलिदानी वीर की कहानियां अकथ हैं, आर्य जाति के इतिहास मे अविस्मरणीय और स्वर्णाक्षरो मे लिखे जाने योग्य ।

आज हमारा राष्ट्र संकट की घड़ी मे है । पंजाब की वीर भूमि जिसे इस महान आत्मा को जन्म देने का श्रेय प्राप्त है, विघटन और आतंक की आग मे झुलस रहा है । निर्दोष मां बहिनो का सुहाग, बच्चो के सिर की छाया, बूढ़े माता पिताओं की लाठी एक मिनट मे छीन ली जाती है । हत्या और अराजकता का यह ताण्डव हमे उस बर्बर युग की याद दिला देता है जब इन्सान, इन्सान को इन्सान नहीं समझता था । ऐसे समय मे उस वीरवर की आत्मा को जगाना होगा–हमे और आपको, आर्यसमाज को, जगाना होगा, हम यदि सीना खोल कर उन क्रूर हाथो को शान्त करना चाहते हैं तो निर्दोषो के खून के प्यासे बने हुए उन्मत्त हो गये हैं ।

आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी अभियान है अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध अपने को आहूत कर देना हमने अपना सौभाग्य समझा है हमारी यही परम्परा है और यही हमारी शृंखला । हमारे इस रहनुमा का बलिदान सत्य और धर्म की बलिवेदी पर हुआ था–वह सत्य और धर्म जो शाश्वत है, नित्य है, कल्याणकारी है । जीवन तो आता जाता रहता है, परन्तु ऋषिवर्य के शब्दों मे–

'न्याय्यात् पथ प्रविचलन्ति पद न धीरा'

धीर पुरुष कभी भी न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते । आर्य समाज अपने प्रातः स्मरणीय हुतात्माओं की राह पर चलने के लिए कृत संकल्प तथा कटिबद्ध है। आज हमारी उस महान आत्माके प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि है । आइए, हम सब कुछ भूलकर–भुलाकर एक दूसरे को सहयोग दें प्यार दें, मिलकर उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का व्रत लें, तभी तो–

लोग कहते हैं, बदलता है जमाना अक्सर ।
आर्य वह हैं, जो जमाने को बदल देते हैं ॥

जन्मजात सफल सेनानी–

स्वामी श्रद्धानन्द

[श्री धर्मवीर विद्यालंकार, अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा]

धन्या नरा विहित कर्म परोपकारा । वे मनुष्य धन्य हैं, जिनका जीवन दूसरों के दुःखों को दूर करने में समर्पित है । वे जातियाँ धन्य हैं, जो इस प्रकार सेवा-व्रती मनुष्यों को उत्पन्न करती हैं, और वे जातियाँ अमर हो जाती हैं जो उन परहितचिन्तक, प्रातः स्मरणीय मनीषी महापुरुषों को स्मरण करती रहती है, और उनके पद-चिह्नों पर चलते हुए विश्व के सुख-समृद्धि और शांति में वृद्धि करती हैं। भारतीय परम्परा में महापुरुषों के जन्म दिवस मनाने की प्रथा कम है। महापुरुषों द्वारा सम्पादित महत्त्वपूर्ण कार्यों के अनुसार उनको स्मरण करने का दिन निश्चित किया जाता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म १३ फाल्गुन, संवत् १९१३ तदनुसार सन् १८५६ में हुआ था। परन्तु भारतीय जनता २३, दिसम्बर को उन्हें स्मरण कर अनुप्राणित होती है। २३ दिसम्बर सन् १९२६ के दिन एक धर्मान्ध मुसलमान, अब्दुलरशीद की तीन गोलियों को झेलकर वे अमर बलिदानी हो गये। उनकी जीवन गाथा से अपने जीवन में उत्साह, कर्मण्यता, देश प्रेम और प्राणिमात्र की सेवा में अपने को समर्पित करने का संकल्प ग्रहण करते हैं।

मेधावी बालक

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बचपन का नाम मुन्शीराम था। उनके दो बड़े भाइयों को पढ़ाने एक पण्डित जी घर आया करते थे। कभी कभी बड़ी विचित्र बात होती। वे दोनों बालक जब पण्डित जी को पढ़ा पाठ न सुना पाते, तब ३। ४ वर्ष का बालक मुन्शीराम सुना देता। अपने भाइयों को वह पढ़ते देखता, और पण्डित जी की बात सुनता था। बात को ग्रहण करने और स्मरण करने वाली प्रखर मेधा का ही प्रभाव था। नवयुवक मुन्शीराम आस्तिक से नास्तिक बना। फिर स्वामी दयानन्द के तर्कों से पराजित हो ऐसा आस्तिक बना कि हजारों को आस्तिक बना दिया। फिर कठिन वेदमन्त्रों का सरल मनोहारी व्याख्यान करने लगा। यह बचपन की प्रखर मेधा का ही अद्भुत परिणाम था।

सत्य का कर्मठ अन्वेषक

मुंशीराम के माता-पिता धार्मिक वृत्ति के थे। मुन्शीराम भी 'पितु अनुगत पुत्र' शिव के उपासक थे। किशोरावस्था में बनारस रहते हुए प्रतिदिन 'विश्वनाथ' के दर्शन हेतु मन्दिर जाया करते थे। एक दिन कुछ देर हो गई। रीवां रियासत की रानी पूजा-पाठ कर रही थीं। मुंशीराम को प्रवेश न मिला। उस नव युवक हृदय को ठेस लगी। उन्हीं दिनों ब्राह्मणों के पाखण्ड और वाम-मार्गियों के कुकृत्य को स्वयं देख ईसाई बनने चल पड़े। पादरी की अनुपस्थिति में, उसके घर एक अश्लील घटना देख लौट पड़े कि-कर्तव्य-विमूढ़ हो गये तथा नास्तिक हो गये धर्म-कर्म के प्रति श्रद्धा पूर्णतः लुप्त हो गई। परन्तु समस्त हृदय की आस्तिकता स्वामी दयानन्द के अद्भुत दिव्य स्पर्श पाकर पवित्र गंगा की निर्मल, शीतल धारा के समान स्वतन्त्र प्रवाहित होने लगी। यह घटना सन् १८७९ की है। इसके पांच वर्षों के उपरान्त मुन्शीराम ने सन् १८८४ में आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। इन ५ वर्षों में वे निरन्तर संघर्ष करते रहे। सत्यार्थ-प्रकाश का अध्ययन करते रहे। व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में परखते रहे। शराब पीना छोड़ा, फिर मांस खाना छोड़ा और आचरण को निरन्तर पवित्र और सत्यान्वेषी बनाते रहे। आर्य समाज की सदस्यता के अनुरूप चरित्रवान् होने पर ही उसकी सदस्यता ग्रहण की फिर तो वे उन्मुक्त पक्षी की तरह पंख फैला उड़ने लगे। आर्य सिद्धान्तों का मनन करना, मनन किए का व्याख्यान करना अपने उर्दू अखबार 'सद्धर्म प्रचारक' में उसे प्रकाशित करना, नगर नगर, ग्राम-ग्राम में उसका प्रचार करना, लाहौर की आर्य समाजों के वार्षिक उत्सवों में स्वयं जाना, दूसरों को ले जाना, नये-नये ज्ञान प्राप्त कर उन पर आचरण करना और कराना—उनके जीवन के अंग हो गए। सांसारिक धन्धे छूट गये, वकालत बन्द कर दी, बच्चों को गुरुकुल में प्रविष्ट कर दिया। इतना कर्मठ कोई व्यक्ति नहीं हुआ जो आर्यसमाज का प्राथमिक सदस्य बनने के चार वर्ष के भीतर प्रांतीय सभा का पद पा ले। यह सत्य के ग्रहण का प्रभाव है।

वकालत करते हुए वे सदा सत्य पक्ष को ही ग्रहण करते थे। एक बार वे मुन्सिफ के सामने मुकदमा छोड़कर चले गये। प्रतिवादी के बयानों के मध्य वकील मुन्शीराम ने अपने मुवक्किल से पूछा कि क्या प्रतिवादी सत्य कह रहा है? मुवक्किल ने सत्य स्वीकार कर लिया। वकील मुन्शीराम ने मुन्सिफ से सत्य स्वीकार कर मुकदमा समाप्त कर दिया और मुवक्किल की प्राप्त फीस उसे लौटा दी। अदालतों में इसका इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि अगर कोई गवाह अपने को आर्य समाजी कह दे तो उसे सत्यवादी मान लिया जाता था।

निर्भीक एवं साहसी

सत्य को मन एवं बुद्धि से जान, उस पर निर्भीकता और साहसपूर्वक आचरण करना उनका स्वभाव था। इसकी एक झलक उनकी नवयौवनावस्था में मिलती है। बनारस में विद्या अध्ययन के दिनों में एक बालिका को चार गुण्डों से अकेला ही लड़कर बचाया।

पण्डितों के पाखण्ड के कारण' ईसाइयों के बलात्कार को देख उनकी धर्म के प्रति श्रद्धा समाप्त हो गई। इसे निर्भीकता से अपने पिता के सामने स्वीकारा। आर्य समाज में प्रविष्ट हुए फिर कन्या पाठशाला की स्थापना की तो बिरादरी से निकाले गये। इस समय अपूर्व साहस का धैर्य का और स्थिर अविचल बुद्धि का परिचय दिया।

सन् १९१९ में अंग्रेजों द्वारा लागू रोलेक्ट एक्ट के विरोध में भारी जुलूस चाँदनीचौक दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व में जा रहा था। चाँदनी चौक के घण्टाघर पर गोरखा फौजियों द्वारा अंग्रेजों ने जुलूस को रोका और गोली चलाने का आदेश दिया। ऐसे घोर संकट में वह स्थित-प्रज्ञ सन्यासी सामने आया। अपने कुरते के बटन खोले। दोनों हाथों से सीना खोल कर निर्भीकता पूर्वक बोला—'पहले मेरे सीने पर गोली चलाओ, फिर जनता पर चलाना।' उसके अदम्य साहस के सामने गोरखा सैनिक हतप्रभ और अंग्रेज दंग रह गये। रास्ता खुल गया। जुलूस पार्क में पहुंचा। शान्त और गम्भीर वातावरण में सभा सम्पन्न हुई। इस घटना के बाद भी १५ दिन तक ऐसी शान्ति रही, मानो रामराज्य स्थापित हो गया हो।

अमृतसर में होने वाले सन् १९१९ के कांग्रेस अधिवेशन का दायित्व कोई लेने को तैयार न था। इसके पहले जलियांवाला बाग में

(शेष पृष्ठ ४ पर)

[पृष्ठ १ का शेष]

हजारों निहत्थे भारतीयों को क्रूर अंग्रेजों ने गोलियों से भून दिया था। गम्भीर आतंक दिल-दिमाग पर घर कर चुका था। ऐसे संकट के समय स्वामी श्रद्धानन्द कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष बने। गली-गली मुहल्ले-मुहल्ले में प्रचार किया। बाहिर से आने वाले प्रतिनिधियों का स्वागत अमृतसर निवासियों ने दिल खोलकर किया। प्रतिनिधियों को अपने घरों में ठहराया—उनके भोजन की व्यवस्था घरों में की। सम्मेलन को अभूतपूर्व सफलता मिली।

संकट के समय कांग्रेस को उबारने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ने उसी कांग्रेस को निर्भीकता और साहस से एक दिन छोड़ अपनी अलग राह पकड़ी। कारण था कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति। नया मार्ग जो स्वामी जी ने पकड़ा वह था शुद्धि आन्दोलन और राजनीति में हिन्दू हितों की रक्षा, अर्थात् हिन्दू महासभा की स्थापना। यह उस से भी अधिक साहस और निर्भीकता की अपेक्षा करता था। मुसलमान बने मेवो (मेवातों) को फिर से हिन्दू बनाना परम आवश्यक था। इसी कार्य के कारण पं० लेखराम सन् १८९७ में बलिदान हो गये थे।

उन दिनों दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेज घोर अत्याचार कर रहे थे। महात्मा गांधी वहाँ सत्याग्रह कर रहे थे। गुरुकुल छात्रों ने मजदूरी से कमाया पर्याप्त धन बचाया अपनों अन्न दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी को भेजा। इससे अंग्रेजो को नाराज करना था—जो उग्र आतंक से भयभीत भारतीयों के लिए जोखिम का काम था।

गुरुकुल तो खुल गया। पर सन्तोष तब हुआ, जब चौधरी अमर सिंह जी ने जिला बिजनौर के कांगड़ी ग्राम में बहुत बड़ा भू-खण्ड १०० एकड़ जो गंगा के पवित्र धाराओं के मध्य, हिमालय की तलहटी में ऋषिनिर्माण के पवित्र उद्देश्य से मुन्शीराम जिज्ञासु को दे दिया। उन्हें अपना स्वप्न साकार होता प्रतीत हुआ। वेद की निम्न ऋचा उन्हें अपनी ओर प्रबल आकर्षण से खींच रहीं थी:—

उपह्वरे गिरीणां, संगमे च नदीनाम्।
धिया विप्रो अजायत।' यजु २६। १५

हिंसक पशुओं के मध्य घने जंगल में, घास की कमजोर झोपड़ियों में, जिसमें जेठ मास की लू, पौष मास की बर्फीली ठण्डी हवा, बिना रुकावट अन्दर आती थी, मुन्शीराम जी जिज्ञासु ३४ छोटे बालकों के साथ ब्रह्मचारियों के साथ पहुंचे, और पहुंचा हजारों की संख्या में आर्य संस्कृति का अनुयायी, एक भक्त-जन-समूह जो इस अद्भुत, नवीन, चमत्कारपूर्ण प्रयोग देखने का अभिलाषी था। उस वर्ष हरिद्वार में प्लेग फैल गया। जनता को इस बीमारी से सावधान करते हुए, वहाँ जाने से मना कर दिया। परन्तु इस चेतावनी की पूर्ण उपेक्षा करते हुए, जंगल में मंगल करने वाली अभूतपूर्व शिक्षा-प्रणाली के भक्त कब रुकने वाले थे। सोत्साह चले आये। यह था अप्रैल सन् १९०२ ई०।

जैसे माता अपने पर्यंस्थ बालक का रक्षण-पालन-पोषण अत्यन्त सतर्कता, निपुणता से, वात्सल्य से करती है, ऐसे ही महात्मा मुन्शीराम जी जिज्ञासु इन ३४ ब्रह्मचारियों के आचार्य—माता-पिता के रूप में—दिन में, रात्रि में, उषः काल और सायंकालीन सन्ध्या वेला में, उनके चरित्र निर्माण में—शारीरिक सबलता, सुडौलता, मानसिक दृढ़ता के विकास के लिए, आत्म-ज्योति प्रदीप्त होने के लिए अथक प्रयत्न करने लगे। यह शिक्षा प्रणाली विश्व भर में प्रसिद्ध हुई। इस संस्था ने अनेकों मनीषियों, तपस्वियों, ऋषियों को जन्म दिया, जिन्होंने वेदों के ज्ञान-प्रकाश से विश्व को आलोकित किया, अनेकों देश के स्वातन्त्र्य संग्राम में, धर्म संकट में आहुत हुए। सभी ने आर्य भाषा हिन्दी के साहित्य ऐश्वर्य में वृद्धि की। सभी ने सामाजिक सेवा के कीर्तिमान स्थापित किये। इस प्रकार के छोटे-छोटे अनेक गुरुकुल इस गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की शाखा रूप में प्रस्फुटित हुए। यह कहने में किंचित भी अत्युक्ति नहीं कि आज के पब्लिक स्कूल गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पाश्चात्यीकरण है।

गुरुकुल में स्वदेश-प्रेम, जाति—धर्म—संस्कृति पर निष्ठा, आस्तिकता सदाचरण पर बल दिया जाता रहा। खादी वस्त्रों का पहिरावा, स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग (देखें आर्य मर्यादा का अंक दिनांक ७-१२-८६ का पृष्ठ संख्या २ पर ११ मार्च १९३४, दयानन्दाब्द ११० पर गुरुकुल यात्रियों की सेवा में निवेदन'। इसमें लिखा है—'शुद्ध खद्दर के सादे वस्त्र पहनकर, —कम से कम इन तीन चार दिन के लिए आवें।'—

प्राचीन शिक्षा के साथ-साथ, अंग्रेजी और विज्ञान की शिक्षा आरम्भ हो चुकी थी। शिल्प शिक्षा की व्यवस्था का प्रयत्न आरम्भ कर दिया था। शिक्षा माध्यम हिन्दी था। विज्ञान की पुस्तकें भी हिन्दी में ही छपा ली गई थीं। विश्व-विद्यालयों में पढ़ाया जाने वाला इतिहास भारतीयों को भ्रम में डालने वाला है। अंग्रेजों द्वारा खरीदे गये व्यक्तियों द्वारा—अंग्रेजों ने जैसा चाहा, लिखाया। गुरुकुल कांगड़ी में प्रोफेसर रामदेव जी आचार्य की अध्यक्षता इतिहास सत्यरूप में प्रकाशित हुआ।

२३ दिसम्बर १९२६ को एक मुसलमान युवक उनसे इस्लाम धर्म पर चर्चा करने आया। स्वामी जी कुछ दिनों से शैया पर बीमार पड़े थे। उसे फिर कभी आने को कहा। उसने अवसर पा स्वामी जी पर पिस्तौल से तीन फायर कर दिए। निःस्वार्थ सेवी, राष्ट्रनायक जन्मजात सफल सेनानी, भारतीय संस्कृति के पुनरुद्धारक जनहितार्थ समर्पित-जीवन दलितोद्धारक, आदर्श कर्म-योगी ने अपना धन, सम्पत्ति तन-मन तो राष्ट्र को पहले ही समर्पित कर दिये थे। आज इस नश्वर शरीर को भी आहुत कर दिया। उनका पार्थिव-शरीर आज हमारे मध्य नहीं है। परन्तु उनके सेवा—वाणी—और कर्म हमारे मार्ग को प्रशस्त कर रहे है। जब तक चांद और सूर्य है, उनकी अमर-गाथा जन-मानस को उत्साहित करती रहेगी।

मेरे विचार मे यह कहना कुछ अंश में ठीक नहीं कि एक धर्मान्ध मुसलमान ने उनके प्राण हर लिए। अंग्रेज बड़ा चालाक है। अंग्रेजों ने ही—मुसलमान के माध्यमसे उनके प्राण हरण किये हैं। स्वामी जी द्वारा गुरुकुल-स्थापना, शुद्धि आन्दोलन, दलितोद्धार, हिन्दी भाषा का प्रसार आदि किये गये कार्यों से जितना अधिक खतरा अंग्रेजों को था, उतना किसी को नहीं। पहला प्रमाण है उनके बलिदान का दिन वही है जो अंग्रेजो के बड़े दिन' का महत्वपूर्ण पर्व है। अर्थात् २५ दिसम्बर।

इस परम ज्योति के ओझल हो जाने से भारतीय जनता ने अंग्रेजों के जाने का मार्ग प्रशस्त किया। कांग्रेस को आर्य समाज का पूर्ण सहयोग मिला। उनके बलिदान के २१ वें वर्ष भारत स्वतन्त्र हो गया और अंग्रेज चला गया।

इस अमर बलिदानी, निर्भीक संन्यासी, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के संस्थापक, जन्म-जात सफल-सेनानी को हमारा शत-शत प्रणाम है।

—

मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द

[संकलनकर्ता–आचार्य धर्मवीर जिज्ञासु आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर]

श्री विद्यानिधि (अथवा श्री ओनिधि) सिद्धान्तालंकार विद्वान् व्यक्ति हैं आजकल वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर मे रह रहे हैं। चारो वेदो के व्याख्याता के रूप में प्रसिद्ध हैं। चतुर्वेद पारायण यज्ञ कराने मे निष्णात हैं। वेद मत्रो का स्पष्ट, शुद्ध, सम्यक् उच्चारण करने मे पटु हैं। इसके साथ ही निर्भय होकर वन्य–हिंसक पशुओ के जीवन का अध्ययन करते रहे हैं। वन्य जीवन के सम्बन्ध मे उनकी ज्ञान पुस्तकें आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई हैं। इन पुस्तको द्वारा वे प्रशसनीय प्रसिद्ध पा चुके हैं।

श्री विद्यानिधि जी इस समय ८७ बसन्त बिता चुके है। सन् १९०७ मे वे गुरुकुल कांगड़ी मे प्रविष्ट हुये तथा सन् १९२१ मे स्नातक हुए श्रद्धेय गुरु (महात्मा मुंशीराम का) स्मरण कर वे भाव–विभोर हो जाते हैं।

अपने गुरुकुल प्रवेश की घटना उन्हे आज भी ऐसे स्मरण है जैसे कि कल की ही बात हो। उनके पितु श्री मातु श्री गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट कराने लाये थे। आयु थी लगभग ६ वर्ष। मा कब अपने हृदय के टुकड़े को प्रसन्नता से अलग कर सकती है। पितु श्री बालक के भावी जीवन को दृष्टि मे रखकर उसके निर्माण का सदुप्रयत्न करता है। माता ने कह दिया–"रात्रि भोजनोपरान्त दूध पीकर आ जाना। बालक वासुदेव ने (उनके घर का नाम वासुदेव था) रात्रि भोजनोपरान्त दूध पीकर रोना आरम्भ कर दिया–'अम्मा ने कहा था–दूध पीकर आ जाना।' स्नेहसिक्त अधिष्ठाता महोदय ने बहलाने का बहुत प्रयत्न किया। दूसरे सह–अध्यायी ब्रह्मचारियो ने भी प्रलोभन दिए। पर बालक ने जो रट लगाई–'अम्मा ने कहा था, दूध पीकर आ जाना।' सो वह बन्द नहीं हुई। यह वचन सुन महात्मा मुंशीराम भी आ गए। बालक को गोद मे उठाया। पुचकारा। ममता से दुलारा, पर बालक अपनी रट से अविचलित रहा। महात्मा जी अपनी कुटिया मे गए। एक सन्तरा लाए। छील-छील कर बालक को खिलाया निधि जी कहते हैं कि उनका परम सौभाग्य है जो उन्होने महात्मा जी की गोद मे बैठने का पुण्य अवसर पाया। उन्होने आगे बताया कि महात्मा जी को सन्तरा बहुत पसन्द था। वे ब्रह्मचारियों से कहा करते थे कि जब प्यास लगे तो सन्तरे का रस पिया करो। उनके समय ब्रह्मचारियो को सन्तरा आदि अनेक फल प्रचुर मात्रा मे मिला करते थे।

गुरुकुल कांगड़ी के चारो ओर घना वन था। उसमे हिंसक वन्य प्राणी घूमते-घूमते गुरुकुल मे भी आ जाते थे। एक बार रात्रि के दो बजे एक बघेरा गुरुकुल आ गया। तीन-चार ब्रह्मचारियों ने उसे मारने के लिए उसका पीछा किया। बघेरा भी अपनी जान बचाने हेतु भागा। वह महात्मा जी की कुटिया के चारो ओर चक्कर लगाने लगा। ब्रह्मचारी भी उसके पीछे-पीछे महात्मा जी की कुटिया के चारो ओर उसका पीछा करते दौड़ने लगे। महात्मा जी बाहर आए। यह जान कर कि बघेरा है वे भी उनके साथ आगे-आगे चल पड़े। बघेरा तब तक गगा की धार के पार जा चुका था। उसे पार जाते देखा। महात्मा जी ने पूछा–'ब्रह्मचारियो! अब क्या इरादा है?' उन्होने स्वयं नहीं कहा कि अब पीछा करना व्यर्थ है। चलो, आश्रम चलो। न ही उन्होने डाटा कि रात मे हिंसक पशुओ का पीछा करना अच्छा नहीं। वे तो ब्रह्मचारियों की वीरता एवं साहस को चुनौती देकर बढ़ाते थे। ब्रह्मचारी स्वयं वापिस आश्रम उनके साथ आ गए।

एक दिन एक अन्य बघेरा महात्मा जी की कुटिया मे आ गया। महात्मा जी कुर्सी पर बैठे थे। सामने मेज थी। जगह तग थी। महात्मा जी एकदम जल्दी उठ न सकते थे। बघेरे ने चिक एक तरफ की और अन्दर आकर सामने खड़ा हो गया। दोनों ने एक दूसरे को भरपूर देखा। महात्मा जी ने एक छोटी सी रद्दी कागजो की भरी टोकरी उसके ऊप ' भू कहते हुए फेंकी। बघेरा चिक उठाकर भाग गया।

उस घटना की बात तुरन्त गुरुकुल मे फैल गई। सभी धीरे-धीरे महात्मा जी की कुटिया पर इकट्ठे होने लगे। महात्मा जी के चेहरे पर भय के कुछ भी चिन्ह नहीं थे। सबको भय मुक्त करते हुए शान्त भाव से घटना बताते रहे। निधि ब्र. छात्रावस्था मे विनोद प्रिय ब्रह्मचारी थे उन्होने विनोद की बात अत्यन्त गम्भीर स्वर मे कही। महात्मा जी! बघेरा आपके पास शिकायत करने आया था।' सभी ने आश्चर्य एव क्रोध से ब्रह्मचारी निधि की ओर देखा। मना रहे हो कि क्या यह मजाक का समय है?' ब्र० निधि स्थिर शान्त बना खड़ा रहा। महात्मा जी ने पूछा–'क्या शिकायत करने आया था?'

निधि ने कहा–'वह यह शिकायत कर रहा था कि आपने ब्रह्मचारियो की झोपड़ियो के लिए जगल की सारी घास कटवा दी है। अब वह कहा छिपे?

महात्मा जी ने इस उत्तर को मजाक समझ टाला नहीं। गम्भीरता से लिया। तत्कालीन मुख्याधिष्ठाता श्री नन्दलाल जी को आदेश दिया कि अब जगल की घास न काटी जाय। यह थी उनके हृदय की करुणा उन हिंसक पशुओ के लिए।

महात्मा मुंशीराम जी का सदा यह प्रयत्न रहता था कि गुरुकुल के वातावरण मे सहृदयता, सौमनस्यता बनी रहे। ब्रह्मचारियों मे, या गुरु वर्ग मे या अन्य कार्यकर्त्ताओ मे किसी प्रकार से भी विद्वेष ईर्ष्या न फैले।

एक दिन ब्रिटिश प्रधान मत्री श्री रेम्जे मैकडानल्ड गुरुकुल पधारे। उनका स्वागत मुख्य द्वार पर किया गया। सभी अध्यापक एव ब्रह्मचारी द्वार के दोनो ओर पक्ति-बद्ध खड़े थे। श्री मैकडानल्ड हाथी से उतरे महात्मा जी ने उनकी अगवानी की और गुरुकुल के अन्दर ले आए। ब्रह्मचारियो की दृष्टि मे महात्मा मुंशीराम जी का व्यक्तित्व ससार मे सर्वोत्कृष्ट था। श्री रेम्जे मैकडानल्ड को हाथी पर देख लगा कि वह व्यक्तित्व भी कम नहीं। जब वे हाथी से उतरे और दोनो ने परस्पर अभिवादन किया, तब भी महात्मा जी का व्यक्तित्व उत्कृष्ट था। बाद मे प्रधान मन्त्री ने लन्दन जाकर वहा के समाचार पत्र 'टाइम्स' मे अपनी गुरुकुल यात्रा का सविस्तृत समाचार छपवाया। गुरुकुल के पवित्र वातावरण से वे बहुत प्रभावित हुए थे। सायंकालीन यज्ञ कुण्ड की अग्नि की लपलपाती हुई ज्वालाओ से ब्रह्मचारियो के शरीर की छायाए नाचती हुईं, ऐसी मनोहारी प्रतीत होती थीं, मानो स्वर्ग से पृथ्वी पर उतर कर अप्सराए नाच रही हैं। उसी विवरण मे आगे जो लिखा उससे स्पष्ट होता है कि वे महात्मा मुंशीराम जी के व्यक्तित्व से कितने अधिक प्रभावित हुए थे। वे लिखते हैं–

"अगर आप आज के युग मे पूज्य एव पवित्र क्राइस्ट (ईसा) के दर्शन करना चाहते हैं, तो भारत के गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार मे, हिमालय की रमणीय तलहटी में गगा की पवित्र धाराओं के मध्य, सघन वनो की छाया मे, हिंसक वन्य जन्तुओं के मध्य, थोड़े से शिष्यों को प्राचीन ऋषियो के रूप मे निर्माण कर रहे, महात्मा मुंशीराम से मिलिये। आपकी आत्मा अद्भुत अनिर्वचनीय पवित्रता से आनन्दित होगी।"

२३ दिसम्बर जिनकी पुण्य तिथि है

स्वाधीनता संग्राम के अजेय सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द

—आचार्य देवव्रत अवस्थी वेद मन्दिर हिम्मत नगर मरु मऊ–५

स्वाधीनता संग्राम के सेनानियों का स्मरण आते ही अग्रिम पंक्ति मे एक अप्रतिम प्रतिभा उभर कर सामने आती है जिसे पहले महात्मा मुंशीराम एव बाद मे स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से जाना गया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को मोहनदास कर्मचन्द गांधी से महात्मा गांधी का सम्मानित नाम प्रदान करनेवाले उस दिव्य पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द—जिन्हे महात्मा गांधी बड़े भाई के रूप मे सदा सम्मान देते रहे—का बलिदान दिवस २३ दिसम्बर हमारे लिए महान् प्रेरणा स्फुरण का दिन है। इसी दिन उस दिव्य पुरुष को धर्मान्ध अब्दुल रशीद ने—प्यासा बनकर पानी पिलाने का बहाना करके धोखे से गोलियो से मारकर हमसे सदा-सदा के लिए छीन लिया था।

वीर मरा नहीं करते। जीवन मरण के रूप मे काया परिवर्तन तो—सृष्टि क्रम है। दिव्य पुरुषो के हर जीवन की हर श्वास अनुकरणीय होती है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का शरीर निश्चय ही हमारे मध्य नहीं है परन्तु उनका ज्वलन्त जीवन दर्शन सदैव प्रकाश की किरणें देता हुआ हमारा मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। आइये उनके जीवन के एकाध प्रेरक प्रसग हम स्मरण करके उनसे प्रेरणा लेने का व्रत लें।

स्वामी श्रद्धानन्द का पूर्व नाम मुंशीराम था वे पूरी तरह से अंग्रेजियत में रंगे थे, अनेकों दुर्गुणों से युक्त उनका जीवन महर्षि—स्वामी दयानन्द सरस्वती के तर्क, गवेषणापूर्ण भाषण वेदो का वैज्ञानिक विवेचन सुनकर एकदम से ही पलट गया। सभी दुर्गुणो का सर्वथा परित्याग करके वे महर्षि के परम भक्त बन गये। महात्मा हो गये।

एक बार महात्मा मुंशीराम अपने परिवार मे बैठे थे उनकी पुत्री जो एक कान्वेण्ट स्कूल मे पढ़ती थी—"ईसाईसा बोल तेरा—क्या लगेगा मोल" अपनी बाल सुलभ मुद्रा मे गा रही थी। महात्मा जी का अन्तर मन विचलित हो गया कि यह ईसाईयत का बीज तो बड़ी ही सहजता से जन-जन मे बोने की कुत्सित योजना कारगर ढग से चलाई जा रही है। बस उसी दिन से उन्होने बालिका को कान्वेण्ट स्कूल मे पढ़ने भेजना—बन्द करके भारतीय पद्धति की शिक्षण की व्यवस्था की चिन्तना की। महर्षि दयानन्द की सुस्पष्ट भावना थी कि भारत माता को पराधीनता से मुक्त कराके सदैव सुखी सम्पन्न रखने का एक मात्र उपाय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रचार प्रसार—के लिये गुरुकुल की स्थापना गंगा के तट पर पर्वत माला के—मध्य हरिद्वार के निकट की (वही बाद में गुरुकुल कांगड़ी—विश्व विद्यालय के नाम से विख्यात हुआ और अनेको दिव्य विभूतियों का प्रणेता बना। सर्वप्रथम महात्मा मुंशीराम ने अपने ही दो पुत्रों को उक्त गुरुकुल मे प्रवेश दिलाकर—जनता वाचा कर्मणा ऋषि मन्तव्यों के प्रति अपना समर्पण दर्शाया। प्रसिद्ध विद्वान् —इन्द्र विद्या वाचस्पति महात्मा मुंशीराम के पुत्र एव गुरुकुल कांगड़ी के प्रथम वरिष्ठ स्नातकों मे थे।

एक बार कतिपय स्वार्थी तत्वो ने जो गुरुकुल—व्यवस्थापिका समिति के सदस्य थे, स्वामी जी पर "जिन्होंने अपनी पारिवारिक सम्पत्ति भी गुरुकुल के लिये स्वाहा कर दी थी" गुरुकुल के कुछ धन के हड़पने का लांछन—लगाया। समिति की बैठक हुई उनके प्रति अटूट निष्ठा और विश्वास रखने वाले सदस्य बड़े ही चिन्तित थे। स्वामी जी ने बैठक में उस विषय पर पूर्णतया मौन धारण कर लिया। उनके विरुद्ध लाया गया प्रस्ताव भारी—बहुमत से अस्वीकार कर दिया गया परन्तु समिति की बैठक के बाद सदस्यो ने जिन्हें स्वामी जी पर पूर्ण विश्वास था कहा—स्वामी जी आपने इस दोष का खुलासा न करके जान बूझकर दोषियों को बचाया ऐसा क्यों ? स्वामी जी ने बड़ी ही गम्भीरता से उत्तर दिया—यदि इस सत्य—का खुलासा हो जाता तो हमारे कई एक समर्थ साथी (जिन्होने किसी कारण यह दोष किया) हमसे सदा—सदा के लिये अलग हो जाते, फिर संस्था की इससे भी कई गुना अधिक क्षति होती। मेरे मौन रहने से यह अपूरणीय क्षति बच गई।

स्वराज्य आंदोलन तीव्र गति पर था, दिल्ली मे आन्दोलनकारियों का जुलूस निकला, जुलूस का—नेतृत्व भगवावस्त्रधारी स्वामी श्रद्धानन्द कर रहे थे, जामा मस्जिद के निकट संगीनधारी गोरी फौज ने रास्ता रोका, उस निर्भय सन्यासी ने सिंह गर्जना की—छाती खोलकर—फौज को ललकारा-हिम्मत हो चलाओ गोलिया। हमारे शरीर के खून का एक एक कतरा तुम्हारी अंग्रेजी सल्तनत को जड़ मूल से नष्ट करने के लिए आग मे घी सदृश होगा। गोरी—पल्टन की संगीने—झुक गयीं। यह पहले आर्य सन्यासी थे—जिन्होंने जामा मस्जिद पर वेद मन्त्रो के पाठ के साथ स्वाधीनता संग्राम का उग्र एक भाषण दिया, जिसे मुसलमानो ने भी बड़ी ही श्रद्धा से सुना। जामा मस्जिद की प्राचीर से किया गया उनका उद्घोष अन्तत अपना रंग लाया, भारतसे अंग्रेजो को भाग कर ही दम मिला।

ईसाई और मुसलमान मजहबियो द्वारा बलात्—भय दिखाकर प्रलोभन देकर भोली भाली भारत की जनता को ईसाई मुसलमान बनाने का कार्य तीव्रगति पर—होता देख स्वामी जी को महान् चिन्ता हुई—क्योंकि—उस समय मजहब बदलने वाला सदा-सदा के लिये अपनों से बेगाना बन जाता था—स्वामी जी ने शुद्धि आन्दोलन आरम्भ किया और निर्भय होकर विधर्मियों के चंगुल मे फसने से बचने के आह्वान के साथ-साथ बिछुड़ों को पुन वापस लाकर गले लगाने शुद्ध कर वैदिक धर्म मे लौटाने का प्रबल आंदोलन छेड़ा।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी में मुस्लिम ईसाई तुष्टीकरण की नीति से क्षुब्ध होकर कांग्रेस से त्यागपत्र देकर—स्वामी जी ने हिन्दू महासभा की स्थापना करके हिन्दू—हित रक्षण की प्रबल आवाज उठाई।

स्वामी श्रद्धानन्द की धर्म, संस्कृति सभ्यता और—मानवता की सुरक्षा का संकल्प लेकर बढ़े थे, अनेकश कठिनाइयो, आपदाओं का मुकाबला करते हुये, बढ़ते—गये, बढ़ते गये और अन्तत उसी के लिये—बलिदान हो गये।

२३ दिसम्बर उनके उस उदात्त चरित्र को—अपना कर देश जाति धर्म के लिये जीवन्त पावन—जीने का संकल्प दिवस है। आइये आज—रत लें सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति देखते हुये, भारत—भूमि पर छाये अविद्या अन्धकार विदेशी मानसिकता, अंग्रेजियत के प्रबल प्रभाव, धर्मभेद, असहिष्णुता का सर्वथा समापन करके भारतीय संस्कृति ... य दर्शन—भारतीय सभ्यता—प्रेम—स्नेह—सौहार्द का प्रचार प्रसार करके राष्ट्र को सुसम्पन्न बनायें।

बलिवेदी के अमर शहीद–स्वामी श्रद्धानन्द

(डा० सुनीता शास्त्री, मण्डी चोब अमरोहा)

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द वास्तव में लौहपुरुष थे, जो स्वामी दयानन्द जैसे पारस के संसर्ग से विद्वता, त्यागशीलता, कर्मनिष्ठा सहनशीलता आदि गुण सहज प्राप्त कर स्वर्णमय हो गये।

स्वामी श्रद्धानन्द ने चाँदनी चौक में गोरों की संगीनों के समक्ष जब अपनी छाती खोलकर निर्भीक स्वर में कहा—"देश की जनता पर प्रहार करने से पूर्व उन्हें सन्यासी की छाती को छलनी बनाना पड़ेगा।'

' तब इनकी निर्भीकता और देश प्रेम को देखकर पं० जवाहरलाल नेहरू ने कहा था—

"वे निर्भीकता और साहस की प्रतिमा थे।" स्वामी जी ने जीवन के हर क्षेत्र में कड़ा संघर्ष किया चाहे वह सामाजिक हो चाहे राजनैतिक और धार्मिक। वे अपनी पारिवारिक स्थिति से भी सन्तुष्ट न थे। सरकारी अफसर के पुत्र होने के कारण अंग्रेज परिवारों से प्रभावित थे। वे अंग्रेजी मेम जैसी स्त्री के सपने देख रहे थे विवाह के पश्चात् मन से बहुत दुःखी हुये। इनका मन विद्रोह की आग में जलने लगा। इन्होंने अपनी विद्रोही प्रवृत्ति को सामाजिक उत्थान और आन्दोलन में बदल दिया। इनकी पत्नी पढ़ी लिखी न थी, इन्होंने पत्नी शिवदेवी को सुशिक्षिता बनाने का बड़ा प्रयत्न किया। स्त्री शिक्षा व प्रचार में उनसे सहयोग की आशा रखते थे। परन्तु विधाता विमुख ही रहा और ३१ अगस्त १८९१ को शाम ५ बजे उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। शिवदेवी १० वर्षीय वेद कुमारी, ६ वर्षीय अमृतकला, ४ वर्षीय हरिश्चन्द्र और २ वर्षीय बालक इन्द्र को मुन्शी जी को सौंप गयीं। परिजनों ने पुनर्विवाह के लिए दबाव डाला परन्तु इन्होंने अस्वीकार कर मातृत्व भार को भी स्वयं ही सम्भाला। जो इनकी सच्चरित्रता और अथक् साहस का प्रतीक है। क्योंकि वे बरेली के कोतवाल साहब के सबसे छोटे लाड़-प्यार में बिगड़े हुये निरंकुश प्रकृति के पुत्र थे। जिससे इनके अन्दर कुछ सामाजिक दोष भी आ गये थे। इन्होंने अपनी आत्मकथा "कल्याण पथ का पथिक" में स्वयं कहा है।—"इसमें सन्देह नहीं कि मेरी गिरावट की कहानियां बहुत से श्रद्धालु हृदयों को ठेस लगायेंगी परन्तु मुझे यह विश्वास है कि इस आत्मकथा के पाठ से बहुत से युवकों को संसार यात्रा में ठोकरों से बचने की शक्ति मिलेगी।"

इनके पिता पौराणिक कर्मकाण्डों के पक्षपाती थे। पिता की नौकरी के स्थानान्तरण के कारण ये गंगा स्नान, मूर्तिपूजा, मठ-मठान्तर आदि के खोखले आडम्बर को देखकर नास्तिक हो गये थे लेकिन स्वामी दयानन्द के प्रथम भाषण मात्र से ही आस्तिक बन गये। बाद में इनके पिता भी वैदिक सिद्धान्तों की ओर आकृष्ट हुये।

शताब्दी के प्रारम्भ १९०२ में हरिद्वार में गंगा के पवित्र तट पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। गुरुकुल शिक्षा से स्वामी जी विद्यार्थी के वास्तविक जीवन निर्माण के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और चारित्रिक सम्यक् विकास को आदर्शरूप में निखरा हुआ देखना चाहते थे।

गुरुकुल के जन्म से विरोधों का सामना करना पड़ा। इसके लिये स्वामी जी ने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया प्रारम्भ में अपने दोनों पुत्रों को गुरुकुल को अर्पित किया। सम्वत् १९५९ अपना सम्पूर्ण पुस्तकालय भेंट किया। स० १९६४ में सद्धर्म प्रचारक प्रेस दी। जालन्धर की कोठी बेच कर स० १९६८ में वार्षिकोत्सव में रुपये भेंट किये, जबकि स्वयं दूसरों के १६००० के ऋणी थे और स्वयं निस्वार्थ सेवा करते थे। स्वामी जी ने १७ वर्ष तक आचार्य और मुख्याधिष्ठाता के पद पर कार्य किया। आपका स्वास्थ्य अथक् परिश्रम के कारण बिगड़ने लगा। स० १९६५ में हार्निया का आप्रेशन हुआ। साथ ही ब्रिटिश सरकार की कड़ी दृष्टि भी लगी रहती थी। वह गुरुकुल को क्रान्तिकारियों का एकान्त स्थल मानती थी प्रतिनिधि सभा में इनके विरुद्ध एक दल ने गबन का आरोप लगाया जिससे किसी सार्वजनिक संस्था का अधिकारी न बन सके। वह सब आरोप अन्तत. मिथ्या ही रहे जैसे चन्द्रमा पर धूल फेंकने पर भी उसकी शीतल कान्ति प्रभाव हीन नहीं होती। उसी प्रकार स्वामी जी भी शान्त भाव से सब सहकर दीप्तिमान रहे, वह कहते थे—"सिद्धांतों से समझौता न करने की वृत्ति उनकी सफलता का मूल है।"

ये गांधी जी के सिद्धान्तों को भी मानते थे, जब गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत आये तो उन्हें गुरुकुल में आमन्त्रित किया। गांधी जी भारतीय शिक्षा संस्कृति और स्वदेशीय भावना से ओत-प्रोत, सच्चरित्रता के सागर इस शिक्षण स्थल को देखकर हतप्रभ रह गये।

हिन्दी भाषा के क्षेत्र में भी सर्वप्रथम स्वामी जी ने ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन भागलपुरमें मातृभाषा कहकर पुकारा, स० १९१९ में अमृतसर कांग्रेस में स्वागत भाषण भी हिन्दी में दिया। जालन्धर से प्रकाशित होने वाला 'सद्धर्म प्रचारक' पत्र को हिन्दी में निकलवाना प्रारम्भ किया, विजय, अर्जुन और सत्यवादी, पत्र अपने संरक्षण में प्रसारित कराये, स्वामी जी सम्पूर्ण जीवन हिन्दी भाषा की सेवा में प्रयत्नशील रहे।

वास्तव में स्वामी जी, ने जीवन, समाज और राष्ट्र के हरक्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी के साथ महादानी और बलिदानी भी थे।

आर्य महिला समाज की स्थापना

आर्य समाज महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति स्थल आनन्द–बाग दुर्गाकुण्ड, वाराणसी ने उक्त स्थल पर एक 'आर्य महिला' समाज की स्थापना की है। जिनके पदाधिकारियों के नाम निम्नलिखित हैं—

१—श्रीमती लज्जावती देवी गौतम, प्रधान,

२—श्रीमती विद्योत्तमा देवी मन्त्री,

३—श्रीमती गीता देवी कोषाध्यक्ष

शिवमित्र शास्त्री मन्त्री
आर्य समाज काशी शास्त्रार्थ स्मृति स्थल
आनन्द बाग–वाराणसी–२

निर्वाचन

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य (पन्जीकृत)

प्रधान श्री महाशय धर्मपाल

मन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री

कोषा० श्री ओम प्रकाश कपूर

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के वार्षिक निर्वाचन दिनांक १५ नव० के निर्वाचित अन्तरंग सदस्यो की सूची निम्नप्रकार है

क्र० सं० जिला	नाम
१–मेरठ	श्री धर्मपालसिंह आर्य
२–फर्रुखाबाद	श्री सच्चिदानन्द वानप्रस्थी
३–देहरादून	श्री सन्तूदयाल
४–हमीरपुर	श्री सुन्दरलाल आर्य
५–झांसी	श्री महेश श्रीवास्तव
६–मथुरा	श्री डा० राजेन्द्रसिंह स्नातक
७–मिर्जापुर	श्री देवनसिंह
८–नैनीताल	श्री कैलाश कलश
९–जौनपुर	श्री रमाशंकर
१०–लखनऊ	श्री अर्जुनदेव महाना
११–कानपुर महानगर	श्रीमती डा० माताराणी राय
१२–कानपुर देहात	श्री पद्मप्रसाद शास्त्री
१३–पीलीभीत	श्री डा० ओंकार स्वरूप तिवारी
१४–इटावा	श्री देवप्रकाश आर्य
१५–बुलन्दशहर	श्री कुशलपालसिंह
१६–बहराइच	श्री गोविन्दराम आर्य
१७–गाजियाबाद	श्री डा० विजयभूषण आर्य
१८–आजमगढ़	श्री गोविन्दराम
१९–बरेली	श्री ओमप्रकाश आर्य
२०–गोरखपुर	श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार
२१–उन्नाव	श्री विमल कुमार एडवोकेट
२२–अलीगढ़	श्री डा० रघुवीर शास्त्री
२३–बलिया	श्री सुदर्शन सिंह
२४–बस्ती	श्री स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती
२५–सहारनपुर	श्री प्रकाशचन्द्र
२६–गाजीपुर	श्री जयकृष्ण आर्य
२७–देवरिया	श्री कृष्ण वेदालंकार
२८–वाराणसी	श्री डा० आनन्द प्रकाश
२९–फतेहपुर	श्री रूपकिशोर अग्रवाल
३०–एटा	श्री आशीष शर्मा
३१–मुरादाबाद	श्री विक्रमसिंह
३२–शाहजहाँपुर	श्री राजेन्द्र वर्मा
३३–रामपुर	श्री जयदेव सिंह आर्य
३४–मुजफ्फरनगर	श्री देवपाल आर्य
३५–आगरा	श्री हरपालसिंह आर्य
३६–मैनपुरी	श्री रामप्रकाश
३७–कोटद्वार	श्री शमशेरसिंह
३८–सुल्तानपुर	श्री स्वतन्त्रकुमार शास्त्री
३९–बदायूं	श्री नरेन्द्रप्रकाश आर्य
४०–बाराबंकी	श्री माताप्रसाद त्रिपाठी
४१–बिजनौर	श्री आदित्यनारायण मिश्र
४२–जालौन	श्री लक्ष्मीचन्द्र
४३–इलाहाबाद	श्री बाबासिंह
४४–प्रतापगढ़	श्री अजित किशोर कपूर
४५–लखीमपुर खीरी	श्री ओमप्रकाश आर्य
४६–अल्मोड़ा	श्री जयदत्त उप्रेती
४७–हरदोई	श्री डा० भगवती प्रकाश
४८–गोण्डा	श्री जगदीश प्रसाद एडवोकेट

कुछ जनपदो का तत्काल प्रतिनिधित्व न होने के कारण सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि उनके स्थान की पूर्ति आगामी अन्तरंग सभा की बैठक मे कर ली जाय।

प्रधान जी ने सूचित किया कि इस वर्ष १५ प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा के लिये जो निर्वाचित होने हैं, श्री सच्चिदानन्द जी ने निम्न १५ नाम प्रस्तुत किये, श्री अरुण जी ने इन नामों का समर्थन किया, प्रस्तुत नाम इस प्रकार हैं –

(१) श्री प० इन्द्रराज, मेरठ
(२) श्री मनमोहन तिवारी, लखनऊ
(३) श्री जयनारायण अरुण, बिजनौर
(४) ,, मती सन्तोष कपूर, मिर्जापुर
(५) श्री यशपाल आर्य, देहरादून
(६) ,, सच्चिदानन्द शास्त्री, हरदोई
(७) ,, लक्ष्मीचन्द्र आर्य, दिल्ली
(८) ,, शिवकुमार शास्त्री, दिल्ली
(९) ,, कैलाश जोशी, मेरठ
(१०) ,, वीरेन्द्र आर्य, अमरोहा
(११) ,, आचार्य विशुद्धानन्द, बदायूं
(१२) ,, प्रि० रोशनलाल, आगरा
(१३) ,, विश्वबन्धु जी विद्यालंकार, मेरठ
(१४) ,, माधवसिंह जी, मेरठ
(१५) श्रीमती माताराणी राय, अलीगढ़

अन्य कोई नाम प्रस्तुत नहीं हुआ, अत सर्व सम्मति से उपरोक्त १५ नाम निर्वाचित घोषित हुए।

विद्यार्य सभा (रिक्त स्थानो की पूर्ति) सर्व श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री, शिवकुमार शास्त्री, माधवसिंह व लक्ष्मणकुमार के विद्यार्य सभा मे इस वर्ष चार स्थान रिक्त हैं। विद्यार्य सभा के लिए श्री इन्द्रराज जी ने इनके स्थान पर अन्य ४ नाम प्रस्तावित किये, अन्य कोई नाम नहीं आया, विचार-विमर्श के उपरान्त सर्वसम्मति से (१) श्री माधवसिंह (२) श्री लक्ष्मणकुमार शास्त्री (३) डा० गयाराम अलीगढ़ (४) स्वतन्त्रकुमार शास्त्री, अमेठी सुल्तानपुर उपरोक्त चारो नाम प्रादेशिक विद्यार्य सभा के लिए निर्वाचित घोषित किये गये।

प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने धन्यवाद प्रस्तुत किया और सभी पदों पर सर्वसम्मति से सद्भावना पूर्वक निर्वाचन करने हेतु सदन का धन्यवाद किया।

शान्ति पाठ के उपरान्त निर्वाचन की कार्यवाही निर्विरोध समाप्त घोषित की गई।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

वन्दना-नरेन्द्र, वेद–वीणा परिणय पर श्री वसन्त जी को हार्दिक बधाई

श्री विक्रमादित्य वसन्त की द्वितीय पुत्री आयुष्मती कुमारी वन्दना का शुभ विवाह चि० नरेन्द्र कुमार गोरखपुर के साथ दिनांक २ अक्तूबर ८७ को गोरखपुर में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

उनके ज्येष्ठ पुत्र चि० वेदादित्य का विवाह संस्कार––दिनांक १२ अक्तूबर ८७ को आयुष्मती कुमारी वीणा के साथ लखनऊ मे आचार्य वेदव्रत अवस्थी एवं श्री वेद कुन्दन लाल आर्य द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया।

दोनो ही संस्कार पूर्णतया सादगी से शुद्ध मर्यादा-युक्त सम्पन्न हुये। उपस्थित जन समूह पर संस्कारो की व्याख्या का हृदयग्राही प्रभाव पड़ा।

मै 'आर्यमित्र' परिवार की ओर से इस अवसर पर श्री वसन्त जी को हार्दिक शुभ कामनाएं एवं चि० वर-वधू को शुभाशीष देता हूं।

मनमोहन तिवारी
प्रधान सम्पादक एव सभा मन्त्री

नम्र निवेदन

सब धर्मप्रेमी सज्जनों को यह सूचित करते हुये अत्यन्त हर्ष होता है कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के तत्वावधान मे ऋषि जन्मभूमि टंकारा मे श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा की देख-रेख मे एक सूखा राहत केन्द्र चलाया जा रहा है जिसमे हमारे आचार्य और सहायक प्रबन्धक जगह-जगह जाकर व्यक्तियो को खाद्य-सामग्री बांट रहे है। इस कार्य हेतु मेरी सब दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि वे खुले दिल से खाद्य-सामग्री (आटा दाल, चावल आदि) अथवा धन राशि दान के रूप मे गरीबों के सहायतार्थ श्री म० द० स्मारक ट्रस्ट, टंकारा अथवा आर्य समाज मन्दिर–अनारकली, दिल्ली (मुख्य कार्यालय–आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को भेजकर इस शुभ कार्य में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें।

अवैतनिक प्रबन्धक

शोक समाचार

(१)

आर्य समाज बड़गांव गोण्डा एवं प्रकाश दयानन्द बाल विद्या मंदिर के कर्मठ सदस्य श्री सुखदेव प्रसाद श्रीवास्तव का हृदयगति रुकने से ४ दिस० को उनके निवास स्थान राजेन्द्र नगर लखनऊ में आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हुआ। परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति एव पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है। ––बलराम गोविन्द मन्त्री जिला सभा गोण्डा

(२)

––आर्य समाज सिरसागंज व जिला उपसभा मैनपुरी के पू० पू० प्रधान जिला भिक्षु श्री वानप्रस्थ (सियाराम जी आर्य) के लघु सुपुत्र श्री रामशरण जी के आकस्मिक निधन का दारुण समाचार सुनकर हृदय ––स्तब्ध रह गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवं-गत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिक जनों को इस दारुण दुःख का सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

इन्द्रराज
सभा प्रधान

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

उत्सव

आर्य समाज विकास नगर, लखनऊ का प्रथम वार्षिकोत्सव धूम-धाम से ९ से ११ अक्टूबर तक मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा प० कुन्दन लाल जी वेद थे। प्रचारकों का जनता पर सुन्दर प्रभाव पड़ा।

आवश्यक विज्ञप्ति

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध समस्त उत्तर प्रदेशीय जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभाओ आर्यसमाजों, गुरुकुलों, शिक्षा संस्थाओं तथा दयानन्द बालमन्दिरों एव श्रद्धानन्द बाल विद्यालयो का शत वर्षीय विस्तृत इतिहास लिखा जा रहा है अतः समस्त आर्य समाजों के प्रधान एवं मन्त्री, गुरुकुलों के आचार्यों तथा शिक्षण संस्थाओं के व्यवस्थापकों एवं प्रधानाचार्यों तथा बाल मन्दिरो के मैनेजरो से प्रार्थना है कि वे अपनी-अपनी समाजों शिक्षा संस्थाओं तथा गुरुकुलो एवं बाल विद्यालयों का सम्पूर्ण विवरण मन्त्री आ० प्र०नि० सभा उ०प्र० के नाम भेजने की कृपा करें, जिससे इतिहास को पूर्णता मिल सके। आशा है आपका क्रियात्मक सहयोग प्राप्त हो सकेगा।

इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा
उ० प्र०

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आ० प्र० नि० सभा उ० प्र०
५ मीराबाई मार्ग,
लखनऊ।

रजत जयन्ति समारोह

––महिला आर्य समाज बापर नगर मेरठ का रजत जयन्ति समारोह दिनांक २० तथा २१ दिसम्बर १९८७ को आर्य भवन बापर नगर मे सम्पन्न होगा। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी, महोपदेशक एवं विदुषी बहनें भाग लेंगी।

इन्द्रराज प्रधान

वार्षिकोत्सव

–गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोलाझाल मेरठ का वार्षिकोत्सव दि० १३ तथा १४ जनवरी १९८८ को गुरुकुल भूमि में सम्पन्न होगा। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी, महोपदेशक एवं राज नेता भाग लेंगे।

बुधवार दि० १३–१–८८ को प्रातः ११ बजे समर्पणानन्द वैदिक पुस्तकालय का उद्घाटन तथा प्रातः ११॥ बजे सायंच शोध संस्थान के अन्तर्गत एक शोध गोष्ठी होगी जिसका शीर्षक है "वैदिक स्त्री ऋषि" दि० १४–१–८८ को प्रातः १० बजे दि. २१–१२ ८७से प्रारम्भ होने वाले गायत्री ब्रह्म पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति तथा विद्वानों और ब्रह्मचारियों के भाषण आदि होंगे।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की काशी में राष्ट्र के नाम घोषणा

गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाए, अन्यथा आर्यसमाज भीषणतम आन्दोलन चलाएगा

अनेक वर्षों के अन्तराल के उपरात, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आनन्द बोध सरस्वती जी २२-२३ नवम्बर को काशी नगरी की यात्रा पर पधारे। २२ नवम्बर की प्रात काल मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, वाराणसी के प्रधान, श्री शकरलाल पोद्दार एव सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री, डा० आनन्द प्रकाश के नेतृत्व मे हजारो आर्य नर नारियो ने श्रद्धेय स्वामी जी का भव्य स्वागत किया। वैदिक जयघोष के गगन भेदी नारों से पूरा प्लेटफार्म गुंजायमान हो उठा। काशी नगरी से मुगलसराय रेलवे स्टेशन १५ किलोमीटर दूर स्थित होने और शीतकालीन मौसम होने पर भी प्रात काल ३ बजे नगर के अनेक विशिष्ट आर्य जन वहा स्वागत हेतु पहुच गये थे। रेलवे स्टेशन से स्वामीजी को शोभा-यात्रा मे आर्य समाज मुगलसराय लाया गया, वहाँ पर उन्होने ध्वजारोहण किया और उपस्थित जन-समूह को सम्बोधित करते हुये कहा कि सम्पूर्ण विश्व की मानवता को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलने का सन्देश परमपिता परमात्मा की यह ओ३म् पताका हमे देती है। इस ध्वजा के नीचे सभी श्रेष्ठ व्यक्तियो को एकत्रित करना ही हमारा लक्ष्य है।

इसके पश्चात् आर्य समाज मुगलसराय के विशेष साप्ताहिक अधिवेशन एव गोरक्षा आन्दोलन से जुडे प्रमुख महानुभावों की सम्मिलित बैठक मे श्रद्धेय स्वामी जी सम्मिलित हुए। ज्ञातव्य है कि भारत का सबसे बडा जकशन और यार्ड, रेलवे स्टेशन मुगलसराय ही है, जो जी० टी० रोड पर स्थित है। देश के पश्चिमी एव उत्तरी प्रान्तो से आने वाले माल को पूर्वी प्रान्तों मे जाने के लिए इस जकशन से गुजरना अनिवार्य है। इसीलिए पजाब, हरियाणा, राजस्थान आदि भागो से जो पशुधन रेलमार्ग अथवा सडक द्वारा बगाल ले जाया जाता है, वह मुगलसराय से गुजरता है। मुगलसराय के आर्य बन्धु पिछले अनेक वर्षो से जाने वाले गोधन को रोकते हैं और सशक्त रूप से गोरक्षा आन्दोलन चला रहे हैं। इस बैठक मे सर्व प्रथम डा० आनन्द प्रकाश ने स्वामी जी का स्वागत करते हुये कहा कि मुगलसराय का भारत के मानचित्र मे प्रमुख स्थान बन चुका है और यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यहाँ की आर्य समाज प्राय सभी प्रकार की सामाजिक गतिविधियो की अगुवाई करती है। यदि काशी नगरी मे आर्य समाज का प्रचार शक्तिशाली हो, तो इसके बहुत दूरगामी परिणाम होगे। आर्य समाज मुगलसराय के प्रधान—श्री शकरदयाल पोद्दार एव मन्त्री—श्री राधेश्याम गुप्ता, गोरक्षा अभियान समिति के मन्त्री—श्री जयप्रकाश आर्य, बुद्धिजीवी सघ के मन्त्री—श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य, महिला आर्य समाज की प्रधाना—माता कलावतीदेवी, जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा वाराणसी के मन्त्री—श्री अशोककुमार त्रिपाठी, महात्मा मोतीलालजी, आलोककुमार गोस्वामी, श्री वेदप्रकाश आर्य, वयोवृद्ध आर्य समाजी श्री रामकिशन कपाही, श्री भगवती प्रसाद आर्य, श्री बुद्धिराम प्रसाद, श्री रामविलास शास्त्री एव श्री देवनराम आर्य आदि सज्जनो ने भी स्वामी जी का स्वागत किया और आर्य समाज के प्रभावशाली कार्यों तथा सामाजिक गतिविधियो से उन्हे अवगत कराया। प्रमुख गो-भक्त श्री विजय प्रकाश केसरी ने इस कार्यक्रम के अध्यक्ष पद से अपने भाषण मे कहा कि महर्षि दयानन्द के आदेश का पालन करने के लिए, प्राथमिकता के आधार पर सर्व प्रथम कार्य पूर्ण गोवध बन्दी का ही होना चाहिए। यदि हिन्दू समाज तय कर ले तो ६ मास मे यह हो सकता है। एक जीवित गाय का वध कर देने पर, उसका मूल्य ५ हजार से बढकर १५ हजार हो जाता है। ५० हजार गौवें रोज काटी जा रही हैं। यदि इसी गति से गोवश की समाप्ति जारी रही, तो देश रसातल को चला जायेगा। गोरक्षा अभियान समिति के मन्त्री—श्री जयप्रकाश आर्य ने पिछले २ दशको से चलाये जा रहे गोरक्षा आन्दोलन की उपलब्धियो पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अब तक हजारो गाय—बैलो को मुगलसराय से आगे कसाईखाना मे जाने से रोका जा चुका है। यह कार्य न्यायपालिका का सहारा लिये बगैर आगे नहीं बढाया जा सकता। सम्पूर्ण गोवश की रक्षा का कानून अविलम्ब बन जाना चाहिए। यदि आवश्यकता पडे तो आर्य समाज अपनी ओर से याचिका दायर कर सकता है। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने उद्बोधन मे घोषणा की कि गोवध पर पूर्ण पाबन्दी के लिए एक सशक्त केन्द्रीय कानून बनाया जाय अन्यथा आर्य समाज को भीषणतम आन्दोलन चलाना होगा। अभी तक धारा ४८ के अन्तगत् जो कानून लागू है, उसे महाराष्ट्र, नागालैंड तथा पश्चिमी बगाल प्रान्तों की सरकारें स्वीकार नहीं करती। यद्यपि पिछले समय में अनेक बार गोरक्षा आन्दोलन चले, तथापि पूर्ण सफलता अब तक नहीं मिल पाई। पुरी के शकराचार्य श्री निरजनदेव तीर्थ ने अपना आमरण अनशन बगैर लक्ष्य प्राप्त किये, समय से पूर्व ही तोड़ दिया और उनके इस कार्य से अब तक के सबसे बडे आन्दोलन को क्षति पहुची। आपने सुझाव दिया कि जो आन्दोलन मुगलसराय से चलाया जा रहा है, यदि उसे दिल्ली में केन्द्रित किया जाय तो अधिक प्रभावकारी सिद्ध हो सकता है। जहा से पशु लाये जाते हैं, उन निकासी के स्रोत पर ही पाबन्दी लगायी जाये। इसके साथ ही स्वामी जी ने गोवर्धन, नस्ल को उत्तम बनाने, गोदुग्ध की उपयोगिता समझने आदि व्यावहारिक पहलुओं पर भी अपने विचार प्रकट किये। अन्त मे, श्री शकरलाल पोद्दार ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यदि प्रशासन भी सहयोग करता तो गोरक्षा आन्दोलन अब तक काफी सफल हुआ होता। उन्होंने घोषणा की कि चाहे जितनी सख्या मे यहाँ पर गोधन पकड़ा जाये, उसके चारे की पूरी व्यवस्था, वे चदौली के व्यापारियो की आर्थिक मदद से बराबर करते रहेंगे। उन्होंने यह आशा व्यक्त की कि स्वामी जी आगे भी मुगलसराय के गोरक्षा आन्दोलन से अपना सम्पर्क बनाये रखेंगे। स्वामी जी ने आर्य समाज मुगलसराय के नव निर्मित भवन का भी निरीक्षण किया।

प्रेरक संस्मरण

निर्भीक सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी योगानन्द—हाथी खाना पीलीभीत

अहिंसा का सच्चा स्वरूप

स्वामी श्रद्धानन्द सन १९१९ ई० स्वतन्त्रता संग्राम क्षेत्र मे आये ७ मार्च—सन १९१९ ई० को कांग्रेस मंच चांदनी चौक दिल्ली मे फिरंगी के बनाए "रौलट एक्ट" के विरुद्ध व्याख्यान दिया। वहीं से स्वामी जी के नेतृत्व मे एक जुलूस उठकर घंटा घर की ओर चला। जिसमे स्वतन्त्रता के दीवाने सर से कफन बांधे हथेली पर प्राण हाथो में तिरंगा मस्ती से राष्ट्र गान करते हुए।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा।
इस झण्डे की शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाय ॥

सभी दीवाने भारत माँ का ऋण चुकाने के लिये आगे बढ़ रहे थे, जैसे ही जुलूस घंटा घर पर पहुंचा, फिरंगी ने रायफलो पर संगीन चढ़ाकर कहा—अगर आगे बढ़ोगे तो गोली से उड़ा दिये जाओगे। यह सुनते ही निर्भीक सन्यासी का खून खौल गया सीने के बटन खोलकर कहा अगर हिम्मत हो तो पहले मुझे मारो, जानते हो बुजदिल मौत से डरते है, सन्यासी की निर्भीकता को देखकर फिरंगी की हिंसक भावना अहिंसा के समक्ष घबरा गई। जुलूस गाते हुए आगे बढ़ा।

आप दिखला रहे हैं जिसे गुरजिया।
वह गले वह नहीं जो उतर जायेंगे ॥

यह अहिंसा पालन का सच्चा आदर्श है। अहिंसा का पालन करना कायर-डरपोक बुजदिलो का नहीं अहिंसा यह भी नहीं, जाति, देश, धर्म पर आक्रमण हो रहे हो, हम उनके सामने हाथ जोड़े खड़े हो तो मै समझता हू वह शास्त्र के रहस्य को नहीं जानता।

कांग्रेस से स्वामी जी का इस्तीफा

सन १९१४ मे जर्मनी और फिरंगी से युद्ध छिड़ गया था, जर्मनी ने अरबियों से सन्धि कर रखी थी। भारतीय सेनाओ के जहाज फिरंगी की सहायता को जा रहे थे—अदन बन्दरगाह के पास जहाज पहुचे कि अरबियो ने तोपों से गोले बरसाने शुरू कर दिये। भारतीय सेनाओ ने जहाजो के लंगर—डालकर कहा अरबियो से भी निबटते चलो। युद्ध वहीं छिड़ गया, अरब सेनायें परास्त हो गई मुसलमानो के धार्मिक स्थल मक्का शरीफ और मदीना पर फिरंगी का अधिकार हो गया पर जर्मन फिरंगी से युद्ध मे हार गया। भारतीय मुसलमानो ने फिरंगी के खिलाफ धार्मिक स्थलो के कारण खिलाफत शुरू कर दी। रामपुर के मौलाना मुहम्मद अली शौकत अली महात्मा गांधी के साथ साथ चल पड़े अकबर इलाहाबादी लिखते हैं।

शौकत मियां भी हजरते गांधी के साथ है।
जो गर्दे राह है मगर गांधी के साथ हैं ॥

फिरंगी हिन्दू मुस्लिम एकता को देखकर चौंक उठा, उसने मक्का और मदीना को स्वतन्त्र कर मुसलमानो को अपनी तरफ कर लिया लीगी मुसलमान ने कांग्रेस की आड़ मे तबलीग का काम शुरू कर दिया, यह देख स्वामी श्रद्धानन्द ने महात्मा गांधी से कहा कि यह आपकी कांग्रेस है या मुस्लिम लीग। महात्मा जी ने कोई उत्तर नहीं दिया। आर्यत्व की रक्षा हेतु स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया—कांग्रेस से हिन्दुओं को होशयार रहने के लिये 'खबरदार' नाम की पुस्तक निकाली।

शुद्धि आन्दोलन

स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस से अलग होते ही शुद्धि आन्दोलन जारी कर दिया दिल्ली के आस पास के मलकाने राजपूतो के ग्राम के ग्राम शुद्ध करके वैदिक धर्म की दीक्षा देकर राजपूतो मे मिला दिये शुद्धि आन्दोलन से इस्लाम का तख्त हिल उठा, गुम नाम चिट्ठियां कत्ल करने की स्वामी जी के पास आने लगी, स्वामी जी इन गीदड़ भभकियो से कहा डरने वाले थे कहने लगे अगर बुढ़ापे मे यह अमरत्व जीवन मिल जावे तो मै अपने को सौभाग्यशाली समझूगा, इसी दरम्यान मे कुमारी असगरी बेगम जिसका ईमान इस्लामियत से उठ चुका था। शुद्धि के लिए स्वामी जी के पास आई। शरणागत असगरी बेगम को वैदिक धर्म की दीक्षा से महरूम रखना उचित न समझा शुद्ध कर शान्ति देवी के नाम से सुशोभित कर दिया इस घटना से लीगी मुसलमान और भी बौखला उठा, अपना मतलब सिद्ध करने के लिए मुस्लिम युवक को शंका समाधान के बहाने रिवालवर देकर स्वामी जी के पास भेजा।

अब्दुल रशीद का कातिलाना हमला

स्वामी जी को बीमारी ने आ घेरा, दिन ब दिन शरीर शिथिल होने लगा, इलाज बराबर चल रहा था। बातचीत को डाक्टर ने मना करा दिया था, सेवा मे धर्म सिंह लगा था, दफ्तर का काम धर्मपाल विद्यालङ्कार बदायू नी कर रहे थे, २३ दिसम्बर सन १९२६ ई० को बृहस्पति के दिन एक मुस्लिम युवक शंका समाधान के बहाने आया, सेवक ने रोककर कहा कहा जाते हो, क्या बात है—युवक बोला स्वामी से शंका समाधान करने आया हू सेवक बोला, स्वामी जी बीमार हैं, ठीक होने पर आना, यह बात स्वामी जी के कानो मे पड़ी—बोले कौन है—आ जाने दो, युवक अन्दर पहुचा, बोला शंका समाधान को आया हू, स्वामी जी ने नाम पूछा, युवक ने अपना नाम अब्दुल रशीद बताया स्वामी जी ने शंका समाधान स्वस्थ होने पर करने को कहा—युवक मारने का मौका ढूढ़ रहा था, पीने को पानी मांगा, धर्मसिंह पानी लेने गया, युवक ने स्वामी जी को अकेला देखकर जेब से रिवालवर निकाल तीन फायर किये, फायर की आवाज सुनकर धर्मसिंह दौड़ा, युवक को पकड़ना चाहा, उसने धर्मसिंह को भी वहीं ढेर कर दिया, दफ्तर से धर्मपाल बदायू नी दौड़े-और युवक को घटना स्थल पर पकड़ लिया। कातिल ने छूटने की बड़ी कोशिश और हाथा पाई की मगर धर्मपाल बदायू नी के चुगल से न निकल सका, पुलिस ने आकर अपनी हिरासत मे कातिल को ले लिया, अभियोग के पश्चात् युवक अब्दुल रशीद को फांसी की सजा हो गई।

हत्यारे अब्दुल रशीद ने शुद्धि के महान नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी को आर्यों से हमेशा के लिये जुदा कर दिया।

हो गया इक सिरफिरे मुस्लिम के हाथो से शहीद।
नाम था उस कातिले मरदूद का अब्दुल रशीद।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष 46993 ४५६६३
पंजीकरण सं० एल डब्ल्यू/एन पी ७६
पौष कृष्ण ३०
२० दिसम्बर रविवार १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के वृहदधिवेशन दिनांक १४ नवम्बर १९८७ को डी ए वी कालेज लखनऊ के विशाल प्राङ्गण में एक अखिल भारतीय स्तर पर आर्य कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ था जिसकी रिकार्डिंग की गई थी। सभा कार्यालय में सम्पूर्ण कवि सम्मेलन की रिकार्डिंग के कसेट ६०) रु० में (प्रति कसेट ६ मिनट का) तथा प्रति कसेट ३०) रु० के हिसाब से उपलब्ध

इच्छुक महानुभाव आर्डर देकर अथवा सभा कार्यालय में स्थापित कर प्राप्त कर सकते हैं।

—सभा मन्त्री





सर्वोत्तम हवन सामग्री ४ ०० किलो (बहुरंगी आकर्षक डिब्बा पैक)
अतिउत्तम हवन सामग्री ०० किलो (बहुरंगी एच०एम०प्लास्टिक में)
उत्तम हवन सामग्री ५ ० किलो (बहुरंगी प्लास्टिक में)

निर्माता—प्रभाकर गृह उद्योग

५४/१० नयागंज कानपुर—१

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु

❀ आवश्यक सूचना ❀

समस्त आर्यसमाजों जिला उपसभाओं एवं शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं कवि सम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कसेट) जिसमें विभिन्न वाद विवाद प्रतियोगिताएं तथा सम्मेलनों के अंश सम्मिलित हैं एवं विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह एवं कवि सम्मेलन की वी० डी० ओ० (फिल्म) कसेट के अतिरिक्त शताब्दी में पधारे हुए संन्यासियों विद्वानों उपदेशकों आदि के महत्वपूर्ण उपदेश एवं जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किए उनके रिकार्डिंग कसेट निम्न प्रकार सभा कार्यालय में बिक्री हेतु उपलब्ध हैं जो सज्जन अथवा संस्थाएं इन्हें प्राप्त करनी चाहितीं हैं वह श्री विश्वम्भरदयाल गुप्ता व्यवस्थापक आर्यमित्र ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आर्डर देकर प्राप्त कर सकते हैं

१ सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कसेट—	मूल्य	१००० ०० रु०
२—सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ४ कसेट—	मूल्य	१ ० ०० रु०
सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग कसेट कुल संख्या ३०) प्रति कसेट—		३० ०० रु०
४ कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो—		५ ०० रु०

(बड़ी फोटो भी आर्डर देकर उपलब्ध कराई जा सकती हैं)

नोट—जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह में भाग लिया एवं पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें १८ १९ तथा २० अक्टूबर के एक एक दिन के प्रसंग से रिकार्डिंग कसेट उचित मूल्य पर अलग से मिल सकते हैं।

आर्यसमाज के कार्यक्रम तथा सभा को शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओं को ऐसे चित्र एवं कसेट प्रचार कार्य में बहुत सहायक होंगे।

[शिक्षण संस्थाओं को २० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा]

मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए भागवतीय आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए अस्थाई रूप से एल० वी० प्रिंटर्स (निकट कुबेर सिनेमा) चारबाग लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि. सं० २२४१।५७ घोषणा पत्र सं. ७।२८-२-८३

पौष शुक्ल ८, रविवार, संवत् २०४४ वि०, दिनांक २७ दिसम्बर १९८७

प्रार्थना

ओ३म् पाहि नो अग्ने रक्षसः,
पाहि धूर्तेरराव्णः ।
पाहि रीषत उत वा,
जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठ्य ॥
—ऋ० १-३६-१५

हे प्रकाशमान महाशक्ति ! हमारी राक्षसों, धूर्तों, कृपणों, हिंसकों और विश्वासघातियों से रक्षा कीजिए । इन स्वभाव वाले व्यक्तियों से हम सदैव बचकर चलें और सावधान रहें ।

इस अङ्क के आकर्षण

महर्षि दयानन्द की स्वदेश भक्ति

देश के पुजारी अमर स्वामी जी

नव जागरण के अग्रदूत महर्षि दयानन्द

बाल जगत

आर्यजगत एवं सार सूचनायें

प्रधान सम्पादक—
मनमोहन तिवारी

★

प्रबन्ध सम्पादक—
इन्द्रदेव पाठक एम० ए०
साहित्याचार्य

★

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	२५१)
वार्षिक	२५)
छमाही	१५)
विदेश में	१५ पौंड

★

वर्ष	९०
अंक	५०

भारतीय लोक सभा द्वारा सती निवारण विधेयक पारित—

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा अब किसने नहीं पुकारा

भारत की लोक सभा ने १५ दिसम्बर १९८७ को कुछ सरकारी और विपक्षी सदस्यों के सहयोग के साथ सती निवारक विधेयक सर्वसम्मति से पारित कर दिया है । प्रथम बार बनाये जा रहे इस अखिल भारतीय कानून में सती या उसे महिमामण्डित करने वालों को मृत्यु दण्ड तक के दण्ड अथवा आजीवन कारावास का प्रावधान किया गया है । कल्याण मन्त्री श्रीमती मार्गरेट अल्वा के अनुसार यह विधेयक राजस्थान विधान सभा में पारित कानून से अधिक प्रभावी व प्रभावी है ।

विधेयक के अन्तर्गत जन प्रतिनिधि कानून १९५१ में संशोधन करके अभियुक्तों को चुनाव लड़ने के भी अयोग्य घोषित किया जा सकेगा । इससे पूर्व किये गये राजस्थान उच्च न्यायालय की उच्च पीठ के निर्णय से सभी परिचित हैं, जिसने सती प्रथा को कोई धार्मिक परम्परा न मानते हुए इस प्रकार की नारी हत्याओं को रोकने पर बल दिया गया है ।

यह सर्व विदित है कि जब ४ सितम्बर १९८७ को दिवराला में सती के नाम पर असहाय युवती श्रीमती रूपकुंवरि का बलात् देह दहन किया गया था, तब से आर्यसमाज ने इसके विरुद्ध अपने रोष का महोच्चार किया था, और अन्य सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं महिला संगठनों को इसके विरुद्ध धर्म युद्ध छेड़ने की प्रेरणा दी थी । जिस समय पौराणिक जगत के तथाकथित धर्म नेता शंकराचार्य आदि इस कुत्सित प्रथा का समर्थन करके इसे प्रश्रय प्रदान कर रहे थे—उस समय आर्यसमाज के सन्त, महात्मा और विद्वान उनकी मान्यताओं का शास्त्रार्थ के आह्वान द्वारा भण्डाफोड़ कर रहे थे । आर्य समाज इस प्रथा को पूर्णतया अवैदिक, अधार्मिक, अमान्य तथा मानवता के प्रति क्रूरतम प्रहार की संज्ञा देता रहा है, और इसी तथ्य को सभी बहुदल जन, जन प्रतिनिधि, विधान सभा, लोक सभा और न्यायालय भी स्वीकार कर रहे हैं ।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं राजा राममोहन राय के दिखाये हुए मार्ग पर चलकर आर्यसमाज ने ज्ञान अग्नि के प्रकाश को बिखराया है, जिसकी गुणात्मक व्याख्या में सती प्रथा जैसी कुरीतियाँ नष्ट हो रही हैं, और संसार को श्रेष्ठ बनाने का नारा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' एक क्रियात्मक जय घोष का रूप ले रहा है । आर्यसमाज की ज्योत्स्ना में अभी दहेज-लोभ, अश्लीलता, अशिक्षा, भ्रूणहत्या, असमानता और असम्मानता के अभिशापों से नारियों को मुक्ति दिलाकर 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' के आर्ष वचन को सार्थक रूप दिया जाना है ।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

है जिसके बीच अन्याय देश वह खून नहीं है पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है॥

—सारस्वत मोहन मनीषी

सम्पादकीय

लखनऊ-पौष कृष्ण ८ सम्वत् २०४४ रविवार २७ दिसम्बर १९८७ दयानन्दाब्द १६३ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८८

साइमन कमीशन का ऐतिहासिक बहिष्कार लखनऊ की नगरी में

प्रथम महायुद्ध की समाप्ति पर ब्रिटिश सरकार ने लन्दन की पार्लियामेन्ट में यह घोषणा की थी कि सर जान साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया जा रहा है जो भारत जाकर वहां की विभिन्न राजनैतिक पार्टियो तथा नेताओं से विचार-विमर्श करके लन्दन में एक गोलमेज कान्फ्रेंस बुलाएगा जिसमे भारत को किस सीमा तक स्वशासनाधिकार दिया जाय—इस पर अपनी आख्या प्रस्तुत करेगा। इसी योजना के अन्तर्गत लन्दन मे गोलमेज सम्मेलन हुआ और उसके उपरान्त ही लन्दन की पार्लियामेन्ट ने गवर्न० आफ इण्डिया ऐक्ट १९३५ देश मे लागू कर दिया था। इस ऐक्ट में अनेकों विसंगतियां थीं और आजादी मिलने तथा संविधान निर्माण के समय तक इस देश की जनता 'अंग्रेजों की फूट डालने और शासन करने' की नीति के अन्तर्गत जुल्मो सितम के अकथनीय अमानवीय बवण्डरों से गुजरती रही। इस अवधि मे जनता पर हुए भयानक अत्याचारों की एक लम्बी शृंखला है, जिस पर हम फिर कभी प्रकाश डालेंगे। सुधार के नाम पर सबसे बड़ी विसंगति हिन्दू मुस्लिम पृथक निर्वाचन पद्धति थी, जिसने भारतीय जनता मे द्वेष और घृणा का ऐसा बीज वपन किया कि आज भी हम उसका कुफल भोग रहे हैं। दूसरी विसंगति सवर्ण और अनुसूचित जाति के पृथक निर्वाचन की थी जो प्रात स्मरणीय म० गांधी के आमरण अनशन के कारण सफल न हो सकी, इसके लिए इस देश की जनता उस महान आत्मा के प्रति सदा-सदा के लिए कृतज्ञ है।

साइमन कमीशन के सभी सदस्य अंग्रेज थे और वे सुधार अथवा स्वशासन दिये जाने के नाम पर येन केन प्रकारेण भारतीय जनता को ब्रिटिश हुकूमत का अंग ही बनाये रखना चाहते थे जबकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' का नारा घोषित कर चुकी थी। साइमन कमीशन की नियुक्ति की खबर मिलते ही अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने मद्रास मे अपना अधिवेशन बुलाया जिसमें सर्वसम्मति से 'कमीशन के पूर्ण बहिष्कार' का निश्चय किया गया। लाहौर मे कमीशन का बहिष्कार करते हुए आर्यजगत के सुप्रसिद्ध नेता पंजाब केसरी लाला लाजपतराय पर पुलिस ने लाठियों से जमकर वर्षा कर दी जिसके परिणाम स्वरूप उस वीर पुरुष को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। हमारे राजनैतिक इतिहास की यह क्रूर दुर्घटना भयंकरतम दुर्घटनाओं में गिनी जाती है। सारे पंजाब और देश मे हड़ताल हो गई और कमीशन के विरुद्ध विद्रोह की भयंकर ज्वाला भड़क उठी। सारा देश आसेतु हिमाचल एक अग्नि पहाड़ की तरह विरोध में खड़ा हो गया।

और फिर ३० नवम्बर १९२८को साइमन कमीशन लखनऊ आया। उसके बहिष्कार की घोषणा बहुत पहले हो चुकी थी। विरोध के लिये जबर्दस्त प्रदर्शन की अभूतपूर्व तैयारियां आर्यवीर [illegible] की [illegible] तिवारी, श्री चन्द्रभानु गुप्त, [illegible] के नेतृत्व मे चल रही थीं। गली-गली, मोहल्ले-मोहल्ले प्रभातफेरियां निकाली जा रही थीं। सारे शहर अपने प्रिय आर्य नेता श्री [illegible] बिहारी तिवारी तथा अन्य कार्यकर्ताओं के नेतृत्व में कार्यवाहियों का केन्द्र बन चुका था। कमीशन के लखनऊ आने के एक दिन पूर्व ही २९ नवम्बर की हजरतगंज क्षेत्र के [illegible] मोहल्ले मे एक जुलूस पं० जवाहरलाल नेहरू तथा पं० गोविन्दवल्लभ पन्त ने निकाला था। उसी रात सारे शहर मे अफवाह फैल गई कि नेहरू जी पर लाठियां मार पड़ी है। जनता और भड़क उठी तथा ३० नवम्बर की विशाल प्रदर्शन के लिए मानसिक एव शारीरिक रूप से तैयार हो गई। प्रातः ४ बजे से ही पूरे शहर में बिगुल बजने लगे और छोटी-छोटी टोलियां 'कमीशन गो बैक' का नारा लगाते हुए सड़कों पर निकल पड़ीं। इस प्रकार धीरे-धीरे विशाल रूप लेता हुआ और बढ़ता हुआ वह अपार जनसमूह अमीनुद्दौला पार्क मे इकट्ठा हो गया और वहाँ से चारबाग स्टेशन की ओर बढ़ चला। अगुवाई करने वालो में नेहरू पन्त के अतिरिक्त हमारे आर्य नवयुवक नेता श्री मनमोहन तिवारी के दादा, श्री प० रासबिहारी तिवारी एम०एल०सी० जो उस समय आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के मन्त्री भी थे, तथा अन्य स्थानीय नेता कर रहे थे। चारबाग स्टेशन के सामने उस समय एक बहुत बड़ा खाली मैदान था। जलूस को स्टेशन के अन्दर जाने से पहले ही पुलिस ने रोक दिया। दोनों आमने-सामने हो गये। एक ओर जनता का लहलहाता हुआ सागर था तो दूसरी ओर पुलिस घुड़सवार थी। इधर जनता नारे लगा रही थी 'साइमन गो बैक'। अचानक ही घुड़सवारों का एक झुण्ड घोड़ों को सरपट दौड़ाता हुआ भीड़ पर टूट पड़ा। निर्ममतापूर्वक डण्डे बरसने लगे अनेकों धराशायी हो गये चारों ओर चीख पुकार मचने लगी। इसी समय भीड़ के एक कोने से चिल्लाहट सुनाई दी 'नेहरू जी को बचाओ' 'नेहरू जी को बचाओ'। श्री गोविन्दवल्लभ पन्त एव श्री रास बिहारी तिवारी ने तुरन्त दौड़कर नेहरू जी को चारों ओर से कवच कर लिया और उन्हें पंक्ति से पीछे उठाकर ले गये। यह दोनों नेता अपने विशालकाय लम्बे चौड़े शरीर के कारण स्वयं लाठियां झेलते रहे परन्तु नेहरू जी पर आंच नहीं आने दी। इसी समय मौका पाकर कमीशन मोटरों के काफिले में तेजी से स्टेशन से निकला और पलम० हाउस चला गया।

शाम को अमीनुद्दौला पार्क में विशाल सभा का आयोजन हुआ। प० रासबिहारी तिवारी जिनका हाथ और सिर पट्टियो से बंधा हुआ था—मंच पर एक ही हाथ से एक कागज दिखाते हुए अपनी ओजस्विनी और रोषपूर्ण वाणी में बोले—यह पर्चा अधिकारियों ने मुझे दिया था जिसमे प्रदर्शनकारियों के खड़े होने का स्थान लाल स्याही से अंकित है। मानो यह चेतावनी पहले ही दे दी गई थी कि खून बहाया जायेगा। इसी समय अवध के ताल्लुकेदारों द्वारा कमीशन को कैसरबाग (बटलर पार्क) मे शानदार पार्टी दी जा रही थी। श्री तिवारी एव श्री चन्द्रभानु गुप्त ने अपने साथियों सहित एक योजना बनाई कि पतंगों पर 'साइमन गो बैक' लिखकर ठीक उसी जगह पर गिराया जाय जहां साइमन अपने साथियों के साथ दावत खा रहे हो और चौधरी खलीकुज्जमा जो उस समय एक राष्ट्रीय नेता एवं कांग्रेस के सहयोगी थे—के मकान की छत से उड़ाई गई काली पतंग,ठीक उसी मेज पर गिरी जहां साइमन बैठे हुए दावत उड़ा रहे थे। पतंग पर 'साइमन गो बैक' लिखा हुआ था।

इस प्रकार इस अभूतपूर्व प्रदर्शन के लिए लखनऊ की जनता भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास मे हमेशा हमेशा के लिए स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

महर्षि दयानन्द की स्वदेश भक्ति

श्री डा० धीरेन्द्र बहादुर सिंह अध्यक्ष, पातञ्जल योग संस्थान, अलीगंज, लखनऊ

जगत नियन्ता परमेश्वर सब का पिता है। सर्वज्ञ ईश्वर की कल्याणकारी वेदवाणी एक देशीय न होकर सार्वभौम है। वेद वादी दयानन्द का दृष्टिकोण भी सार्वभौम था। उदार दयानन्द नीतिकार के इन शब्दों के अनुसार कि 'उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' सारे संसार का कल्याण चाहते थे। अपने इस विश्व व्यापी उद्देश्य की ओर संकेत करते हुए आर्य समाज के छठे नियम में स्वामी दयानन्द ने कहा है कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।' इसका अर्थ अनेक लोगों ने यह लगाया कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत राष्ट्र और आर्य जाति, हिन्दू जाति, के लिये कम काम किया है। किन्तु हम यह जानते हैं कि आर्य समाज के संसार के उपकार करने के उद्देश्य का आधार व्यक्ति की शारीरिक और आत्मिक उन्नति तथा समाज की सामाजिक उन्नति है। महर्षि स्वामी दयानन्द व्यष्टि और समष्टि को साथ-साथ लेकर चलने का उपदेश देते थे। सारे संसार की दृष्टि से हमारा देश उसकी इकाई या व्यष्टि होगा और संसार की उन्नति का प्रारम्भ हमें अपने देश की उन्नति से करना होगा।

अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के ग्यारहवें समुल्लास में प्रार्थना समाजियों और ब्रह्म समाजियों में स्वाभिमान स्वदेश भक्ति और स्वदेशाभिमान की न्यूनता दर्शाते हुए महर्षि ने लिखा है कि आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्य के अनुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आप को अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जन मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता।' यही कारण है कि आर्य समाज और उसके अनुयायियों ने देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन में अपना सक्रिय योगदान दिया है। वैलेन्टाइन शिरोल ने अपनी पुस्तक 'अन रेस्ट इन इण्डिया' में लिखा है कि 'जहाँ आर्य समाज का जोर है, वहाँ-वहाँ राजद्रोह प्रबल है' इसी कारण अंग्रेज सरकार की वक्र दृष्टि आर्य समाजों और उनके सदस्यों पर थी, स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उस समय लिखा था कि, 'यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है कि पंजाब के सब सिविल कमिश्नरों ने अपने आधीन और पराधीन सब कर्मचारियों को समझा दिया है कि यदि वे आर्य समाज के अधिवेशनों में सम्मिलित होंगे तो उनको अपनी आजीविका से हाथ धोना होगा।'

स्वामी दयानन्द का जन्म १८२४ ई० में हुआ था और २२ वर्ष की अवस्था में जब उन्होंने घर छोड़ा तो ब्रिटिश शासन का जाल पूरे देश में फैल चुका था। सारा देश शारीरिक और मानसिक दासता में जकड़ा हुआ था। महर्षि दयानन्द ने इस बात को अच्छी तरह समझा था कि शारीरिक दासता को तो कुछ प्रयत्न से हटाया जा सकता है किन्तु किसी देश या जाति को मानसिक दासता से छुड़ाने के लिए कठोर श्रम करना पड़ता है। हजारों वर्षों की पराधीनता का परिणाम यह हुआ कि हमारी मानसिक दासता बढ़ती चली गई। एक के बाद एक शिकारी बदले गये किन्तु प्रत्येक बदलाव पिंजड़ों की सलाखें और कठोर होती गयीं। पठान गये तो मुगल आये, मुगल गये तो अंग्रेज आये, इस तरह हिन्दू दासता की बेड़ियों में जकड़ता चला गया। मैकाले ने अपने पिता को सन १८३६ में एक पत्र में लिखा था कि 'जो भी हिन्दू अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण कर लेता है वह अपने धर्म में सच्ची श्रद्धा और विश्वास खो बैठता है। यह मेरा पक्का और निश्चित विश्वास है कि यदि शिक्षा की हमारी योजना पूरी तरह काम में लाई गई तो तीस वर्ष में बंगाल के अच्छे घराने में एक भी मूर्तिपूजक अर्थात् हिन्दू न रहेगा।' मैकाले ने एक लेख में इस पद्धति के उद्देश्य के सम्बन्ध में १८३५ में लिखा था कि 'हमें इस देश में एक ऐसी जमात पैदा करने में अपने सब यत्न लगा देने चाहिए जो हमारे और उन करोड़ों के बीच जिन पर हमें शासन करना है, मध्यस्थ का काम कर सके वह जमात ऐसी हो जो हाड़ मांस और रक्त से हिन्दुस्तानी रहे पर आचार-विचार रहन-सहन और दिल-दिमाग से अंग्रेज बन जाये।' महर्षि दयानन्द ने इस बात को समझा था और इसीलिए बाल्यावस्था से ही इस मानसिक दासता को दूर करने के लिये 'सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में बालक बालिकाओं की शिक्षा का विस्तार से वर्णन किया है। भूत, प्रेत, ग्रह, नक्षत्र, फलित, ज्योतिष, पण्डा, पुजारी आदि की मानसिक दासता से राष्ट्र को छुड़ाने के लिये इसमें प्रचुर सामग्री दी गई है।

स्वामी दयानन्द ने इतिहास के उन पृष्ठों को समझा था जिनमें हम देखते हैं कि राणा सांगा के वीर सैनिक बाबर के सिपाहियों से लोहा ले सकते थे किन्तु जाति के शत्रु ज्योतिषियों ने उनके हृदय को ग्रहों और नक्षत्रों के परोक्ष भय से निर्बल बना दिया था। अंग्रेजों ने हमारे गौरवशाली इतिहास को 'प्राग् ऐतिहासिक काल' कह कर झुठलाने का प्रयत्न किया था। हम जानते हैं कि पराधीनता के काल में भी इस देश के वीर संत और महात्मा कभी चुप नहीं बैठे। कफन में बन्द रहे फिर भी फड़फड़ाते रहे।' इस काल के इतिहास में भी अंग्रेजी इतिहासकारों ने राजाओं का गुणगान किया है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इतिहास को देखने के हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन किया है उनके कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं—

१— इस बात के मिथ्यात्व का प्रकाश किया कि यह देश सदा विदेशी विजेताओं से शासित रहा है। महर्षि दयानन्द का मत था कि आर्य बाहर से नहीं आये वे इस देश के मूल निवासी हैं और उनका चक्रवर्ती साम्राज्य सारे विश्व में था। सत्यार्थ-प्रकाश के ११ वें समुल्लास में वे लिखते हैं कि 'सृष्टि से लेकर ५ सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एक मात्र राज्य था। अन्य देशों में माण्डलिक अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे।

२—'सत्यार्थ प्रकाश' के इस ग्यारहवें समुल्लास के अन्त में स्वामी दयानन्द ने प्राचीन भारतीय राजाओं के नामों की एक सूची दी है इसका उद्देश्य यही है कि भारतवासी अपने महान युग के महान इतिहास को समझें।

३—महर्षि दयानन्द का विश्वास था कि रामायण और महाभारत काल्पनिक ग्रन्थ नहीं हैं। राम और कृष्ण इतिहास के व्यक्ति हैं। महर्षि दयानन्द अपने व्याख्यानों और लेखों में इन महापुरुषों की वश परम्पराओं और घटनाओं का उल्लेख किया करते थे।

[शेष पृष्ठ ४ पर]

महर्षि दयानन्द की स्वदेश भक्ति

[पृष्ठ ३ का शेष]

४—विज्ञान आयोग और इसाई धर्म की देन नहीं है वरन् ईसाई धर्म विज्ञान का विरोधी रहा है। पृथ्वी को गोल बताने वाले गैलेलियो को इसलिए कष्ट दिया गया क्योंकि पादरी अपने धर्म ग्रन्थों के आधार पर पृथ्वी को चपटी बताते थे। स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ-प्रकाश' में स्थान स्थान पर मनुस्मृति और अन्य ग्रन्थों के प्रमाण देकर यह बताया है कि भारत के लोग भी किसी युग में विज्ञान के उच्च शिखर पर थे। वे नये-नये आविष्कार करते थे। महर्षि ने राजा भोज के समय के एक तीव्रगामी घोड़े का वर्णन किया है। इसका उद्देश्य यही है कि राजा भोज के उस काल में भी जब देश में अवनति का काल प्रारम्भ हो चुका था तब भी हम वैज्ञानिक आविष्कार करते थे।

स्वतन्त्रता के मन्त्र दृष्टा

भारत के तत्कालीन १८७२–७३ वायसराय लार्ड नार्थ ब्रुक से उनकी कलकत्ते के लार्ड विशप ने मुलाकात कराई थी। वायसराय ने अपनी डायरी में सेक्रेटरी आफ स्टेट को लिखा था इस सन्यासी की कड़ी निगरानी के लिये गुप्तचर लगा दिये हैं। मिलने की घटना इस प्रकार है कि लार्ड नार्थ ब्रुक ने जब महर्षि से कहा कि जब आपको अंग्रेजी राज्य में सब प्रकार की पूरी सुविधा दे दी गई है तो अपनी प्रार्थना में अखण्ड अंग्रेजी शासन की भी प्रार्थना किया करें। इस प्रकार महर्षि ने उत्तर दिया था कि—

'मैं ऐसी किसी बात को मानने में असमर्थ हूं, क्योंकि मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे देशवासियों को अबाध राजनीतिक उन्नति और अन्य के राष्ट्रों में समानता का दर्जा पाने के लिए शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। श्रीमान जी! ईश्वर के नित्य सांय प्रातः उसकी अपार कृपा से इस देश की विदेशियों की दासता से मुक्ति की ही प्रार्थना करता हूं।

प्रत्येक आर्य के लिए नित्य कर्म विधि की व्यवस्था करते हुए ब्रह्म यज्ञ अर्थात् सन्ध्या के उपस्थान मन्त्र में 'अदीना स्याम शरदः शतम्' की व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि ,सर्वदा सर्वथा भद्र कृपया स्वतन्त्रा वय भवेम।' अर्थात् सदा सर्वथा ईश्वर की कृपा से हम स्वतन्त्र रहें।

कांग्रेस ने स्वराज्य की बात १९०६ से प्रारम्भ की। १९१६ में लखनऊ कांग्रेस ने 'स्वराज्य के जन्म सिद्ध अधिकार' की घोषणा की। १९२९ में लाहौर में पूर्ण स्वराज्य की घोषणा की गई। किन्तु स्वामी दयानन्द ने इससे आधी शताब्दी पूर्व स्वराज्य की चर्चा प्रारम्भ करते हुये स्पष्ट लिखा था कि कोई कितना ही करें, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत-मतान्तर के आग्रह से रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य,प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा न्याय एवं दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, जिन्होंने स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है की घोषणा की थी, ने लिखा है कि—

'महर्षि दयानन्द जाज्वल्यमान नक्षत्र थे, जो भारतीय आकाश पर अपनी अलौकिक आभा से चमके और गहरी निद्रा में सोते हुए भारत को जाग्रत किया 'स्वराज्य' के वे सर्व प्रथम सन्देश वाहक तथा मानवता के उपासक थे।'

अन्तरंग अधिवेशन की सूचना

आर्य प्रतिनिधि-सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग-सभा का साधारण अधिवेशन रविवार दिनांक ३ जनवरी १९८८ को प्रातः १०–३० बजे नारायणस्वामी-भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में होगा। विचारणीय विषयों की सूची सभी पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को डाक द्वारा भेज दी गई है। मनमोहन तिवारी

मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

परतन्त्रता के कारण.—

महर्षि स्वामी दयानन्द प्रत्येक कारण की मीमांसा करते थे और कारण को दूरकर उसका निदान करना चाहते थे। महाभारत के बाद भारत की अवनति मुख्यतः आपसी मतभेद, द्वेष, ईर्ष्या, विरोध एवं आपसी कलह के कारण हुई थी। 'सत्यार्थ-प्रकाश' में कितने दुःख व्यथा और वेदना के साथ वे लिखते हैं कि विदेशियों के आर्यावर्त्त में राज्य होने का कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना पढ़ाना, बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषण आदि कुलक्षण, वेद विद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं।' जब आपस में भाई भाई लड़ते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।' आपस की फूट से कौरव, पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःख सागर में डुबो मारेगा। उसी दुष्ट गोत्र हत्यारे, स्वदेश विनाशक, नीच, दुर्योधन के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चल कर दुःख बढ़ा रहे हैं। परमात्मा कृपा करे कि यह राजरोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाय।' देश की उन्नति के निदान के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के दशवें समुल्लास में लिखा है कि 'जब तक एक मत, एक हानि लाभ, एक सुख-दुःख, परस्पर न मानें, तब तक उन्नति होना बहुत कठिन है।' देश की उन्नति के प्रसंग में ही समुद्र यात्रा की चर्चा करते हुए महर्षि ने लिखा है कि 'क्या बिना देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में राज्य व व्यापार किये बगैर देश की उन्नति कभी हो सकती है।'

उदयपुर में एक बार मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या ने महर्षि से पूछा कि 'भगवान! भारत का पूर्ण हित कब होगा? यहां जाति उन्नति कब होगी?' महर्षि ने उत्तर दिया कि 'एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है। सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहाँ भाषा, भाव और भावना में एकता आ जावे वहां सागर में नदियों की भांति सारे सुख एक एक करके प्रवेश करने लगते हैं। मैं चाहता हूं कि देश के राजे महाराजे अपने शासन में सुधार और संशोधन करें। अपने राज्य में धर्म, भाषा और भावों में एकता पैदा करें फिर भारत भर में आप ही आप सुधार हो जायगा।'

स्वदेशी आन्दोलन

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर बल देते थे। स्वामी जी के जो वस्त्र अजमेर में समाधि पर आज तक रखे हुए हैं वे सब खादी के हैं। महर्षि के जीवन चरित्र लेखक स्वामी सत्यानन्द जी ने श्री मद्दयानन्द प्रकाश में

[शेष पृष्ठ १० पर]

ऐसे थे गुरुवर अमर स्वामी जी

—डा० विक्रमसिंह (व्याख्यान मार्तण्ड) ३।४२१ ललितपुरी एक्स
नई दिल्ली

१—आर्य उपदेशक विद्यालय हापुड़ में एक दर्शनानन्द नाम के संन्यासी पधारे थे उन्हें बहुत कुछ तो याद न था हां स्वामी दर्शनानन्दजी के कुछ ग्रन्थ अवश्य पढ़े थे और इसी कारण अपना नाम भी दर्शनानन्द रख लिया था तथा वृक्षों में जीव नहीं मानते थे और ना ही अकाल मृत्यु को मानते थे गुरुवर डा० अमरसिंह जी ने कहा आप बेकार के पचड़े में पड़े हुए हैं स्वामी दयानन्द जी महाराज वृक्षों में जीव भी मानते थे और अकाल मृत्यु को भी मानते थे, संन्यासी दर्शनानन्द न माने और शास्त्रार्थ की चुनौती दे बैठे। शास्त्रार्थ का समय उसी रात्रि को तय हुआ और आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान, तर्क शिरोमणि, पण्डित रामचन्द्र शास्त्रार्थ महारथी ने समारोह की अध्यक्षता की लम्बी—२ डींगें मारने वाला दुराग्रही साधु पांच मिनट में धूल चाटता नजर आया।

२—गोरखपुर के आस पास किसी आर्य समाज का उत्सव हो रहा था पूज्य अमर स्वामी जी महाराज उत्सव में पधारे हुए थे। एक संन्यासी ब्रह्मानन्द नाम से प्रसिद्ध थे। और दिल्ली में आर्य समाज शक्ति नगर व कालका, में अधिक ठहरते थे अपनी आयु सौ वर्ष से अधिक बताते थे और बड़ी अड़ियल प्रकृति के थे अहंभाव ज्यादा था वे उत्सव में व्याख्यान दे रहे थे उन्होंने कोई बात आर्य समाज के सिद्धांत के विरुद्ध कह दी। और व्याख्यानमें बार-२ घोषणा करते रहे हैं कोई माई का लाल जो मेरी बात को काटे। सभा में तमाशा हो गया अमर स्वामी जी गरज उठे। इसमें से आपकी बात कोई नहीं काटेगा। हां मैं आपकी बात काटूंगा। इतना कहना था स्वामी ब्रह्मानन्द के होश उड़ गये। रंग पीला पड़ गया कुर्बानी हो गई काटो तो खून नहीं अब क्या करें बड़ी मुश्किल में फंस गये। आर्य समाज के अधिकारी असमंजस में और जनता तमाशा देखना चाहती थी। अन्त में स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने अपने शब्द वापिस लेकर अपनी मिट्टी पलीत होने से बचा ली।

३—स्वामी ब्रह्ममुनि जी महाराज आर्य समाज के प्रकाण्ड पण्डित थे कई-२ ग्रन्थ लिखे हैं एक समारोह में अमर स्वामी जी व स्वामी ब्रह्ममुनि जी उपस्थित थे यज्ञ की समाप्ति पर प्रार्थना बोली जाने लगी। कि भगवन प्रभु हमारे साथ उपकार कीजिये। अन्त में एक पंक्ति आई हाथ जोड़ झुकाए मस्तक वंदना हम कर रहे तो कुछ सज्जनों व देवियों ने हाथ जोड़कर मस्तक झुका लिया। तो स्वामी ब्रह्ममुनि जी गर्म हो उठे कि यह अवैदिक है। ईश्वर को हाथ नहीं जोड़े जाते न मस्तक झुकाया जाता है। प्रेम रस में तृप्त होकर वंदना हम कर रहे, कहो। पूज्य अमर स्वामी जी शांत बैठे रहे परन्तु सभा में बैठी किसी स्त्री ने ही कह दिया कि अमर स्वामी जी को निर्णय देने और वही सर्व मान्य होगा पूज्य स्वामी ने निर्णय दिया कि हाथ तो जोड़ने चाहिये और मस्तक भी झुकाना चाहिये बस फिर क्या था स्वामी ब्रह्ममुनि जी ने इसे अपना अपमान समझा। अब तो कुछ न बोले और घर लौटकर अमर स्वामी जी को एक लम्बा पत्र लिखा और लिखित शास्त्रार्थ की चुनौती देकर शास्त्रार्थ प्रारम्भ कर दिया अमर स्वामी जी के सामने बोलने की हिम्मत न हुई तो लिख कर ही मन की भड़ास निकाल दी अमर स्वामी जी महाराज ने स्वामी ब्रह्ममुनि जी के पत्र का बड़ा करारा उत्तर दिया स्वामी ब्रह्ममुनि जी घबरा गए उनकी बेचैनी कुण्ठित हो गई और लिखकर क्षमा याचना कर ली भूल सुधार ली ऐसे थे अमर स्वामी जी महाराज।

४—पुरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव जी तीर्थ जहां भी जाते अपने व्याख्यानों में आर्य समाज की आलोचना करते थे और शास्त्रार्थ के लिये चुनौती देते। यह बात कई आर्य समाज के विद्वानों व अधिकारियों ने अमर स्वामी जी महाराज को बताई अमर स्वामी जी महाराज कैसे आर्य समाज पर आरोपों को सहन करते उन्होंने तुरन्त पुरी के पते पर शंकराचार्य को पत्र लिखा उसका कोई उत्तर शंकराचार्य ने न दिया जहां कहीं सूचना मिलती कि शंकराचार्य यहां ठहरे हैं अमर स्वामी जी महाराज वहीं पत्र लिखते किन्तु शंकराचार्य अत्यन्त चालाक थे पत्र का उत्तर ही न देते और उधर आर्य समाज से शास्त्रार्थ की घोषणा करते अन्त में शंकराचार्य जी लखनऊ पहुंचे और फिर वहीं शास्त्रार्थ की घोषणा। पूज्य अमर स्वामी जी ने लखनऊ को तार भेजा कि शास्त्रार्थ का स्थान व समय निश्चित करें तो शङ्कराचार्य का तार आ गया कि कल लखनऊ आ जाओ यहीं शास्त्रार्थ होगा अमर स्वामी जी समझ गये कि यह व्यक्ति ज्यादा चालाक है शास्त्रार्थ से बचना भी चाहता है और शेखी भी बघारता है। स्वामी जी ने कहा शास्त्रार्थ का स्थान समय निश्चित करो दिल्ली में हो तो सबसे अच्छा है मैं बूढ़ा आदमी आप तारीख दे रहे हैं और आज हो तार मिला है ऐसे कैसे आ सकता हूं पुस्तकें भी साथ लानी हैं भला ऐसे कैसे शास्त्रार्थ होगा।

संयोग कहिये या शङ्कराचार्य के दुर्दिन आखिर सनातन धर्म सभा के उत्सव में शङ्कराचार्य सब्जी मण्डी दिल्ली में पधारें और फिर रात्री को वहीं घोषणा कर दी करें कोई आर्य समाजी शास्त्रार्थ, पूज्य अमर स्वामी जी महाराज को आर्य युवक परिषद ने बुला रखा था और पूर्ण तैयारी कर रखी थी पहले से पता ही था कि शङ्कराचार्य जी पधारेंगे और फिर वही बकवास करेंगे। इसकी बार मुंह तोड़ उत्तर देना ही चाहिये। शङ्कराचार्य जी की घोषणा होनी थी कि आर्य युवक अमर स्वामी जी महाराज को लेकर वहीं पहुंच गये और सनातन धर्म के पण्डाल में ही स्वामी निरंजन देव जी से शास्त्रार्थ हो गया जो व्यक्ति महीनों शास्त्रार्थ करने की घोषणा करता था वह एक घण्टे भी न ठहर सका अपनी मिट्टी पलीत कराकर ही बैठा आखिर जब शङ्कराचार्य से स्वामी जी के प्रश्नों का उत्तर न देते बन पड़ा तो हो हल्ले में सभा समाप्त हो गई फिर कभी शङ्कराचार्य को आर्य समाज के विरुद्ध कहने की हिम्मत न हुई और अमर स्वामी जी महाराज ने विजय शंखनाद किया जनता ने पुष्पों व नोटों की वर्षा की, ऐसे थे शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी जी महाराज।

श्री हरीराम गुप्ता का निधन

श्री हरीराम जी गुप्ता कोषाध्यक्ष आर्य समाज कैसरबाग एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ एवं परशुराम जिज्ञासु संस्कृत समिति का दुःखद दुर्घटना से दिनांक ८-१२-८७ को लखनऊ में निधन हो गया। उनकी आयु ७८ वर्ष की थी। अपने पीछे सम्पन्न परिवार छोड़कर वे स्वर्गवासी हो गए।

परमात्मा से उनकी आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करने हेतु प्रार्थना है।

—सभा मन्त्री

नव जागरण के अग्रदूत, महर्षि दयानन्द

श्री चन्द्रशेखर आर्य, मुसाफिर खाना (सुल्तानपुर)

जिस समय इस मातृ भूमि पर सारे समाज मे न्याय के स्थान पर अन्याय, सत्य के स्थान पर असत्य, धर्म के स्थान पर अधर्म, नैतिकता के स्थान पर अनैतिकता, का बोल बाला था। बाल विवाह, सतीप्रथा जाति-पाति, ऊंच-नीच, भेद भाव, गरीबी, अशिक्षा असभ्यता, अज्ञानता भ्रष्टाचार, अत्याचार, का गहन अन्धकार फैला हुआ था, मन्दिरों के नाम पर करोड़ों की सम्पत्ति एकत्रित की जा रही थी, राम और कृष्ण जैसे युगान्तरकारी महामानवों का नाम बेचकर धन कमाया जा रहा था। भूत-प्रेत, डाकिनी, पिशाचिनी, का माया जाल बिछाकर जनता को बहकाया जा रहा था। हमारे देश मे अंग्रेजों का राज्य था, भारतीय संस्कृति और भारतीय सभ्यता को लोग भूल चुके थे।

तभी सन् १८२४ ई० में भारत की दिव्य वसुन्धरा पर ऐसे महा मानव का अवतरण हुआ जिसका नाम था युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती। उन्होंने बताया कि यदि अपनी मुक्ति चाहते हो तो वेदों के उपदेश का अनुसरण करो। अनुपमेय अखण्ड ब्रह्मचर्य से मुखमण्डल दमकता रहा था, स्वामी जी एक महान क्रांतिकारी के रूप में दासता से टकराने के लिये निकल पड़े।

सन् १८५७ को स्वतन्त्रता के प्रथम संग्राम को अंग्रेजो ने इतनी बुरी तरह से कुचल दिया था कि भारत में स्वतन्त्रता की बात करना मौत को निमंत्रण देने के समान समझा जाता था तभी आर्य समाज की विधिवत स्थापना सन् १८७५ ई० में बम्बई में हुई।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द, इस देश के लोगों के उद्धार के लिये कर्म क्षेत्र में उतर पड़े। सर्व प्रथम हरिद्वार में कुम्भ के पर्व पर गंगा के किनारे पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराया। तत्पश्चात इन्होंने ऋग, यजु:, साम अथर्व वेदों की नित्यता और ईश्वर द्वारा संरचना ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्रों का गुण कर्म और स्वभाव से विभाजन न कि जन्म के अनुसार, चार आश्रम, ईश्वर एक ही है, ब्रह्म, पितृ, देव, अतिथि, बलिवैश्वदेव, पंच महायज्ञ, आदि नित्य करना चाहिये, स्त्री और शूद्रों को भी वेद पढ़ना चाहिये, आदि का प्रतिपादन कर सभी को वेदाध्ययन का अधिकार व्यवस्थित किया। नारी जाति की शिक्षा पर बहुत बल दिया, इसलिए सत्यार्थ-प्रकाश में लिखा है कि—

'लड़को के साथ-साथ नगर से बाहर लड़कियो की भी पाठशालाएं होनी चाहिए और उनमें पढ़ाने वाली भी सब महिलाएं होनी चाहिए।'

महर्षि ने स्त्री जाति को केवल जननी के रूप में निहारा 'माता निर्माता भवति'। वह जानते थे कि सन्तान का निर्माण करनेवाली केवल माँ ही है। यदि माता, माता न बन सकी तो फिर मानव का निर्माण कैसे हो सकेगा। और महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में सर्व प्रथम स्वराज्य का मन्त्र दिया और आर्य समाज ने स्वदेशी का आन्दोलन चलाया। आगे चलकर लाला लाजपत राय, वीर सावरकर राम प्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, स्वामी श्रद्धानन्द, सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्र शेखर आजाद जैसे वीरों ने आर्य समाज से ही प्रेरणा लेकर मां की बलि-वेदी पर अपने प्राणो को न्योछावर कर दिया। १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतन्त्र हुआ।

बलिदान

(कविवर प्रणव शास्त्री एम० ए०)

बलिदानों की अमर कहानी,
कभी नहीं मिट पाती है।
बलिदानों की गाथाओं को,
धरती हंस-हंस गाती है ॥ १ ॥

कमनीय जो बीज धरा की गोदी में सो जाता है,
मर्मों का सहयोग प्राप्त कर गलकर अंकुर बन जाता है।

उस अंकुर पर फूल फलों की,
नयी फसल उग आती है ॥ २ ॥

सदा सजाने औरों को ही जिसने जीना सीखा है,
शैल शिला पर मर मिटने को अनुपम नया तरीका।

मेंहदी रक्त रंगीला लाती,
ज्यों-ज्यों पिसती जाती है ॥ ३ ॥

घृत, शाकल्य, कपूर चिहुंसते जाते अम्बर शाला में,
नाच नाच कर समिधाएं चढ़ती हैं अग्नि-ज्वाला में।

तब मन मोहक सुरभि,
सजीली चतुर्दिश महकाती है ॥ ४ ॥

ध्येय के लिए प्राण को देना कोई मुश्किल बात नहीं है,
राष्ट्र स्वत्व में रक्त बहाने से बढ़कर सौगात नहीं है।

वीरों की वह भव्य भावना,
पकड़ाती लहराती है ॥ ५ ॥

बलिदानों की परम्परायें स्वार्थ भाव का लेश नहीं।
आत्म समर्पण में होता है, किञ्चित् भी क्लेश नहीं।

यह तो निर्भय त्याग योग की,
राग-रागिनी गाती है ॥ ६ ॥

बलिदानी बागों में आता है, पतझर का राज नहीं,
वीरानी रानी का सजता है, गीतों का साज नहीं।

वहां सदा श्रृंगार सजीली,
वासन्ती मुस्काती है ॥ ७ ॥

हमारे देश की पवित्र धरती पर आदि काल से ही महान आत्माओं का जन्म होता रहा है लेकिन शायद विगत पांच हजार वर्षों में योगराज श्रीकृष्ण के पश्चात दयानन्द सा दूसरा महामानव इस धरती पर नहीं पैदा हुआ, स्वामी जी ने पथ भ्रष्ट मानव जाति का उद्धार करने में अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया।

डाल अमृत कुछ घोलकर पिला गया।
विश्व को दयानन्द फिर से जिला गया ॥

बाल जगत

[माध्यमिक स्तर तक की शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन करने वाले बालक बालिकाओं को पवित्र वैदिक विचारधारा की ओर उन्मुख बनाने के दृष्टिकोण से 'आर्यमित्र' [बाल जगत] शीर्षक के अन्तर्गत, उनसे प्राप्त लेख, कविता, कहानी आदि का प्रकाशन कर रहा है। उत्तम लेख लिखनेवाले बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप हम "आर्यमित्र" वर्षभर उन्हें निःशुल्क भेजेंगे। हमें आशा है हमारे उदीयमान बच्चे अधिक से अधिक संख्या में अपनी रचनाएं पृष्ठ के एक ओर सुन्दर साफ अक्षरों में लिखकर हमें भेजते रहेंगे।]

१६ दिसम्बर १९८७ के अंक में प्रकाशित कविता "आह्वान" के लेखक अखिलपालसिंह कक्षा ११, जयराज हिन्दू इन्टर कालेज, काशीपुर को पुरस्कृत किया गया है।

—प्रबन्ध सम्पादक

ब्रह्म-यज्ञ (संध्या) और उसका रहस्य—

[कुमारी अर्चना गुप्ता कक्षा १० वर्ग (अ) विवेकानन्द इन्टर कालेज मडियाहू]

मनुष्य कर्तव्य की पूर्ति के लिए कर्तव्य योनि में आया करता है। कर्तव्य तीन हैं। जिनकी पूर्ति उसको करनी होती है।

१—उसे अपने साथ क्या करना चाहिए।

२—अन्यों के साथ क्या करना चाहिए।

३—ईश्वर के साथ क्या करना चाहिए।

इन्हीं कर्तव्यों का विधान ब्रह्म यज्ञ अर्थात वैदिक सन्ध्या में है। मुख्य संध्या आचमन 'शन्नो देवी' मन्त्र से आरम्भ होकर 'नमः शम्भवाय—' इस नमस्कार-मन्त्र के साथ समाप्त होती है।

'शन्नो देवी रभिष्टय' इत्यादि मन्त्रमें संध्या का उद्देश्य वर्णित है। मन्त्र का भाव यह है कि 'परमेश्वर सर्वव्यापक हैं, इच्छित फल और आनन्द की प्राप्ति के लिए हम पर कल्याणकारी हो और हम पर सुख की वर्षा करें—संसार में मनुष्य इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये आया करता है, और उद्देश्य की पूर्ति के लिए तीनों कर्तव्यों का पालन किया करता है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य यदि दो शब्दों में वर्णन कर देना हो, तो इस प्रकार कहा जा सकता है, कि मनुष्य को दुनिया में अपना जीवन इस प्रकार व्यतीत करना चाहिये कि जब वह यहां से विदा हो तो उसे दुनिया के हर्ष समुदाय, खुशी मजमुए में कुछ वृद्धि करके जाना चाहिये। मन्त्र में इसी हर्ष की मात्रा—वृद्धि के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई है। इस प्रकार आचमन मन्त्र द्वारा तीनों कर्तव्यों का उद्देश्य वर्णन कर देने के बाद उन तीनों कर्तव्यों का विधान किया गया है। पहला कर्तव्य कि मनुष्यों को अपने साथ क्या करना चाहिए, इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र से प्रारम्भ होकर अघमर्षण मन्त्रों तक समाप्त होता है। दूसरा कर्तव्य मनसा परिक्रमा' के ६ मन्त्रों में वर्णित है। तीसरे और अन्तिम कर्तव्य का उपदेश उपस्थान के मन्त्रों में किया गया है। अब उनका क्रमशः वर्णन किया जाता है।

पहला कर्तव्य

मनुष्यों को अपने साथ क्या करना चाहिए।

इन्द्रिय स्पर्श के मन्त्र में इन्द्रियों को स्पर्श करते हुए प्रार्थना की गई है कि उसमें बल आवे यह मनुष्य का अपने साथ पहला कर्तव्य है उसे अपनी इन्द्रियों को बलवान बनाना चाहिए। मनुष्य का बाह्य शरीर इन्द्रिय मन अर्थात इन्द्रियों का समुदाय मात्र है। इस बाह्य शरीर अर्थात समस्त ज्ञान और कर्मेन्द्रियों को बलवान बनाना चाहिये। आंख, नाक, कान, हाथ, पांव आदि दसों इन्द्रियों को बलवान बनाना कर्तव्य है। स्पर्श करने का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक इन्द्रिय पर विशेष ध्यान देकर इच्छा शक्ति का उसपर प्रयोग करके मन में यह विचार स्थिर करना चाहिये कि इन्द्रिय में बल आ रहा है बल की इतनी अधिक उपयोगिता है कि अपने सम्बन्धी कर्तव्यों में उनका सबसे पहला स्थान है। उपनिषद् में कहा गया है कि नायमात्मा बल हीनेनलभ्यः। अर्थात जो मनुष्य निर्बलात्मा और निर्बलीय है वे ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते, परन्तु बल का जहां सदुपयोग हो सकता है वहां दुरुपयोग भी हो सकता है। अन्याय और अत्याचार बल ही से किये जाते हैं इसलिये बल के लिए नियन्त्रण अपेक्षित है और इसी उद्देश्य की पूर्ती के वास्ते मनुष्य का दूसरा कर्तव्य इसी स्पर्श मन्त्र में यह स्थिर किया गया है कि उसे अपनी इन्द्रियों को यश वाला भी बनाना चाहिये बल के साथ यश को जोड़ देने से बल का नियन्त्रण हो गया, अब बल का दुरुपयोग नहीं हो सकता। अन्याय और अत्याचार करने वाले से कभी नेक काम नहीं होते, वे सदैव बदनाम रहा करते हैं। संसार में यश और कीर्ति उन्हीं की हुआ करती है जो बल का सदुपयोग किया करते हैं। यश इसलिए अनिवार्य है प्रसिद्ध कहावत है 'कीर्तियस्य सः जीवति' अर्थात वही मनुष्य मर जाने पर भी जिन्दा समझा जाता है जिसका संसार में यश रहा करता है।

मनुष्य का जहां पहला कर्तव्य यह है कि अपने को बलवान बनावे उसके साथ ही दूसरा कर्तव्य यह है कि अपनी इन्द्रियों को यशवाला भी बनावे। मनुष्य को अपने साथ तीसरी बात क्या करनी चाहिए—उसका आदेश मार्जन मन्त्र में दिया गया है मार्जन के मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि उसके सिर नेत्रादि इन्द्रियों में पवित्रता आवे यही अपने साथ करने के लिए तीसरा कर्तव्य है कि मनुष्य को अपनी समस्त इन्द्रियों को पवित्र बनाना चाहिये। इन्द्रियों में पवित्रता आने से मनुष्य का आचार ठीक हुआ करता है और मनुष्य सदाचारी समझा जाया करता है यदि नेत्र पवित्र है तो इसका भाव यह है कि वह "मातृवत परदारेषु" की नीति के अवलम्बन के साथ ठहरा हुआ है और किसी को कुदृष्टि से नहीं देख सकता। पवित्रता से स्वास्थ्य भी प्राप्त हुआ करता है मनु ने कहा है—"अद्भिर्गात्राणि शुद्धयन्ति" अर्थात जल से शरीर शुद्ध हुआ करता है उस पर थोड़ा विचार करो। हमारे इस शरीर के असंख्यछिद्रों से शरीर का भीतरी मल पसीना द्वारा खारिज हुआ करता है जिस प्रकार कारखानों में दिन रात काम होने से बहुत सा मल बाहर फेंक देने के योग्य निकला करता है इसी प्रकार शरीर रूपी कारखानों से निरन्तर काम होने से कई प्रकार मल मूत्र और पसीने के रूप में निकला करता है तीनों मार्ग शुद्ध और साफ होने चाहिये। तभी यह खारिज होकर शरीर शुद्ध हो सकता है इसलिए मनुष्य का कर्तव्य है कि शरीर को जल से स्नान द्वारा शुद्ध रखे। शुद्ध रखने का मतलब यह है कि शरीर अच्छी तरह मल मलकर साफ किया जावे जिससे

(शेष पृष्ठ ११ पर)

मेरठ में आर्यसमाज की ओर से दंगा पीड़ितों एवं गरीबों में कम्बल व अन्य गर्म कपड़ो का वितरण

श्री प०इन्द्रराज की सभा प्रधान के निर्देशन मे मेरठ में दंगा पीड़ितो एवं गरीब हरिजनों मे पजाबी आर्य भ्रातृ सभा की ओर से १०० कम्बल तथा आर्यसमाज मेरठ शहर की ओर से ५५ कम्बल २५ दरियां एवं अन्य गर्म वस्त्रो का वितरण किया गया है। —मन्त्री सभा

सम्माननीय विद्वज्जनो से—

निवेदन है कि १६ फरवरी १९८८ को 'आर्यमित्र' अपना 'ऋषि-बोध अक' प्रकाशित करने जा रहा है। विद्वद्वर्ग अपनी रचनाए भेजने की कृपा करें। —प्रबन्ध सम्पादक

स्वाधीनता सेनानी सम्मान

भारत सरकार द्वारा स्वाधीनता सेनानी सम्मान दिए जाने पर अनेक मित्रों और शुभचिन्तको ने अभिनन्दन तथा बधाई भेजकर अनुगृहीत किया है। मैं उन सभी का हृदय से आभारी हू।

वस्तुत मुझे यह जो सम्मान मिला है उसे मैं आर्यसमाज की सेवा का फल मानता हू। मुझे यह सम्मान मिलने के बाद उन हजारों आर्य सत्याग्रहियो या उनकी विधवाओ का स्मरण आ रहा है जो कि सर्वथा इस सम्मान के पात्र होते हुए भी अब तक केन्द्र व राज्य से सम्मानित नहीं हो पाए हैं। पिछले १८ वर्षों की भांति मेरा आगे भी कार्यक्रम उन सब की सहायता और मार्गदर्शन करना बना रहेगा।

—महावत स्नातक
सो ४ बी ३३२ बी जनकपुरी
नई दिल्ली—५८

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा मे १५, १६, १७ फरवरी को ऋषिबोधोत्सव मेला

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी १५, १६, १७ फरवरी १९८८ को महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा मे ऋषि मेला मनाया जा रहा है। इस मेले में हर वर्ष न केवल भारत से अपितु विदेशों से भी हजारों ऋषि भक्त उपस्थित होकर अपने गुरु महर्षि दयानन्द जी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं।

अत समस्त आर्य हिन्दू जाति से प्रार्थना है कि वे इन तिथियों को अभी से अंकित करलें और मेले के अवसर पर टंकारा अवश्य पधारें। टंकारा आने वाले ऋषि भक्तों के आवास का तथा भोजन का प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से नि शुल्क किया जाता है। —सभा मन्त्री

पुरोहित चाहिये

वैदिक सिद्धान्त तथा कर्मकाण्ड की रीति से वैदिक सस्कार कराने मे दक्षता प्राप्त विद्वान्, धर्म प्रचार की लगन तथा आर्यसमाज के प्रति निष्ठावान् पुरोहित की आवश्यकता है।

शैक्षिक योग्यता, आयु तथा पौरोहित्य का अनुभव वांछित वेतन आदि के पूर्ण विवरण सहित आवेदन शीघ्र निम्न पते पर भेजें।

मन्त्री—आर्यसमाज नेपियर टाउन
दयानन्द भवन, बरार पथ, जबलपुर (म०प्र०)

श्री देवीदास आर्य का बड़ौदा में अभिनन्दन

बड़ौदा—गारिया नगर मे अखिल भारतीय सिन्धी आर्य सभा के तत्वावधान में आयोजित एक सभा में नगर की अनेक सामाजिक शिक्षण संस्थाओ की ओर से सुप्रसिद्ध महिला उद्धारक आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य (कानपुर) का नागरिक अभिनन्दन किया गया। उनकी समाज सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी।

श्री आर्य उक्त सभा के अखिल भारतीय अध्यक्ष के नाते कार्य समिति की बैठक में सम्मिलित होने आये थे। स्टेशन पर भी उनका स्वागत किया गया।

श्री आर्य ने अपने भाषण मे कहा कि देश के स्वतन्त्र होने के ४० वर्ष पश्चात् भी महिलायें व लड़कियां गाय बकरियों की भांति बेची जाती हैं। यह खेद की बात है कि इस युग में भी सती प्रथा का अनेक बुद्धिजीवी लोग समर्थन कर रहे हैं। समारोह की अध्यक्षता श्री ज्ञान-चन्द्र आर्य ने की। - समतराम आर्य

श्री आर्य को पितृ शोक

आर्यसमाज लखनऊ नगर एव जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ के पूर्व मन्त्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के पूर्व अन्तरग सदस्य श्री वीरसेन आर्य के पिता श्री शिवनारायण जी का ४ दिसम्बर ८७ को ८८ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

—सभा मन्त्री

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज सदर बाजार झांसी के पुरुष एव महिला साप्ताहिक सत्सग में १९-११-८७ को वेद मन्दिर बांदपुर के अध्यक्ष बल्देव जी वानप्रस्थी के आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव पारित हुआ।

स्वर्गीय वानप्रस्थी जी वेद मन्दिर बांदपुर के सक्रिय कार्यकर्ता थे। आपने हजारो बालक-बालिकाओं को वैदिक धर्म मे दीक्षित किया, और आपके नेतृत्व मे वेद मन्दिर बांदपुर की चहुमुखी प्रगति हुई।

हम परमपिता परमात्मा से दिवगत आत्मा को शान्ति तथा सद्गति हेतु प्रार्थना करते हैं। —मनमोहन तिवारी सभा मन्त्री

अनाथालय में बच्चों को प्रविष्ट कराएं

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय आगरा के मन्त्री जी पत्रसूचना मे हमें सूचित किया है कि यह सस्था नि सहाय बालक बालिकाओं के आवास भोजन, शिक्षा आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था अपनी ओर से कर रही है १० वर्ष से कम आयु के अनाथ बालक बालिकाओं को नि सकोच इसमें भेजकर वैदिक सस्थाओ और आर्यों को विधर्मी होने से बचाइए।

—सभामन्त्री

दान की अपील

गोसाईगज जिला फैजाबाद में ऋषि दयानन्द की आर्य प्रणाली पर वैदिक गुरुकुल चल रहा है। विद्यानुरागी सज्जनों से उदारतापूर्वक दान देने की प्रार्थना है। —स्वामी सच्चिदानन्द अध्यक्ष

डायरी १९८८ खरीदें

डायरी १९८८ खरीदें जिसमें स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, सन्ध्या, हवन आदि हैं मूल्य प्रति डायरी १०)। तथा अतिम वैदिक महर्षिराज कलेण्डर १९८८ स्वामी जी की जीवनी तथा चित्र सहित, १ कलेण्डर मूल्य १) दस कलेण्डर मूल्य ६) अग्रिम ४०) भेजें।

वेद प्रचारक मण्डल, ६०/१३ रामजस रोड, करोलबाग, दिल्ली-५

सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी का प्रचार कार्यक्रम

[१] दिनांक १९ तथा २० नवम्बर को महीयुद्दीनपुर एवं मुरादाबाद (गाजियाबाद) में श्री जयप्रकाश जी कोषाध्यक्ष जिला सभा गाजियाबाद के सुपुत्र के विवाह पर वर-वधू के आशीर्वादार्थ गये।

[२] दिनांक २६-११ को मुजफ्फरपुर-बुढ़ाना एवं बड़ौत गये। श्री धर्मपाल जी की सुपुत्री के विवाह में सम्मिलित होकर श्री अरविन्द कुमार जी, मन्त्री जिला सभा मुजफ्फरनगर के दुर्घटनाग्रस्त होने पर उन्हें देखने गये तथा चौ० भागमलसिंह जी के साथ बड़ौत होते हुए मेरठ लौट आये।

[३] २८-१०-८७ को दिल्ली होते हुए आर्य समाज हापुड़ के वार्षिकोत्सव में पहुंचे। वहां विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए श्री प्रधान जी ने सतीकाण्ड को पूर्णतया अमानवीय एवं अवैदिक बताया तथा दहेज पर बलिदान होती हुई बहुओं की संख्या वृद्धि पर घोर चिन्ता व्यक्त की। देश में प्रच्छन्न रूप से होते हुए इस्लामीकरण तथा ईसाईकरण को राष्ट्र विघातक बताते हुए जनता और सरकार को चेतावनी दी कि यदि विदेशों से आते हुये धन को न रोका गया तो हमारा राष्ट्र धर्मपरिवर्तन की बाढ़ में बह जायगा और पुनः परतन्त्र हो जायगा।

[४] ३०-११-८७ को दयानन्द संस्कृत महाविद्यालय सभागृह बाग में खेलकूद प्रतियोगिता का सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने उद्घाटन करते हुए देश की वर्तमान परिस्थितियों में युवा शक्ति का आह्वान किया कि वे शारीरिक बल और संकल्प शक्ति का विकास करके देश को वर्तमान समस्याओं से ऊपर उठावें। उन्होंने नशीली गोलियों और युवकों में बढ़ती हुई शराब का जिकर करते हुए इससे युवा शक्ति को बचाने के लिये युवकों का आह्वान किया। साथ में इस संस्कृत विद्यालय को बन्द करने के षड्यन्त्रों का उल्लेख करते हुए अराजक तत्त्वों को सावधान किया कि विद्यालय के अहित में किये गये प्रयास को आर्य समाज कदापि सहन नहीं करेगा और हर स्तर पर इसका मुकाबला किया जायगा।

[५] दि० ३०-१२-८७ को सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी भोलाझाल मेरठ गए।

[६[दि० ४-१२-८७ को सभा प्रधान दिल्ली गये।

[७] दि० ५-१२-८७ को सभा प्रधान जी मुजफ्फरनगर गए।

[८] दि० ६-१२-८७ को सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने नगर के संभ्रान्त सेठ श्री मनोहरलाल जी की जन्मभूमि सोन्धा में लाला हेतराम स्वास्थ्य केन्द्र में डा० उषा त्यागी के कार्य सम्भालने पर उन्हें बधाई दी तथा अपने स्वागत भाषण में बोलते हुए कामना की कि डा० उषा त्यागी जी की सेवाओं से ग्रामीण जनता अधिक से अधिक लाभान्वित होगी और डा० उषा त्यागी भी मानव सेवा के इस अधिष्ठान में अपनी ममता और योग्यता से सेवा में रत रहेंगी। सेठ मनोहर लाल जी ने मनोहरलाल ट्रस्ट सोसाईटी से हर प्रकार की मदद करने का आश्वासन दिया तथा आगन्तुक महानुभावों को धन्यवाद दिया।

[९] दि० ९-१२-८७ को प्रातः १० बजे सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी बरनावा के सम्भ्रान्त नागरिक श्री विद्यासागर जी कौशिक की धर्मपत्नी स्व० प्रतिभा जी कौशिक के शान्ति यज्ञ में सम्मिलित हुए तथा उन्हें श्रद्धांजलि देते हुये बताया कि वैदिक धर्म संसार के सब मत मतान्तरों से केवल दो सिद्धांतों से ही दूसरे मतों की अपेक्षा श्रेष्ठता रखता है। (१) कर्म सिद्धान्त (२) पुनर्जन्म। किसी पर विश्वास लाकर लेने से कभी भी किये किए हुए पाप नष्ट नहीं होते और यह मनुष्य संसार में पहली बार और अन्तिम बार नहीं आया है। बल्कि जीवात्मा शरीर बदलता रहता है इसी का नाम मृत्यु और जन्म है और यह क्रम तब तक जारी रहता है कि जब तक मुक्ति न हो जाए। इस बात का पुनर्जन्म को न मानने वाले मतावलम्बियों के पास कोई उत्तर नहीं है कि पहली और अन्तिम बार ही मनुष्य ने जन्म लिया है तो फिर कोई अन्धा, लंगड़ा, लूला, बहरा, गूंगा, गरीब और बीमार क्यों है? एक तरफ खुदा रहीम अर्थात् रहम करने वाला और दूसरी तरफ जीर्ण शीर्ण विविध प्रकार के दुःख भोगते हुये मानव। इस सब का समाधान वैदिक धर्म के पुनर्जन्म में निहित है। यह पुनर्जन्म और फिलासफी ही विकासवाद का सिद्धांत है। क्रमशः व्यक्ति विकसित होता हुआ इस पुनर्जन्म के चक्र-व्यूह से सदा के लिये छूट जाता है। परन्तु यह सदा भी अनन्त नहीं है। मुक्ति से फिर जीवात्मा की, बहुत लम्बे समय के पश्चात्—अर्थात् ३६ हजार बार सृष्टि का प्रलय होने के बाद पुनरावृत्ति होती है। इसलिए वर्तमान जीवन को पवित्र और सुन्दर बनाना चाहिए तभी मानव जीवन का लक्ष्य पूरा हो सकता है।

वार्षिकोत्सव

—आर्य समाज बहराइच का वार्षिकोत्सव १९-११ से २२-११-८७ तक धूम-धाम से मनाया गया। शास्त्रार्थ महारथी पं० शान्तिप्रकाश वैदिक प्रवक्ता डा० आनन्द सुमन, आचार्य रामकृष्ण शास्त्री के ओजपूर्ण भाषणों से जनता बहुत प्रभावित हुई। आचार्य सोममित्र 'आधुनिक अर्जुन' ने शक्ति प्रदर्शन के अनेक कार्यक्रम दिखाते हुए नयी पीढ़ी को ब्रह्मचर्य पालन करने की प्रेरणा दी।

—आ० स० भाट टाउन (देवरिया) का वार्षिकोत्सव २० दिस० से २२ दिस० तक ससमारोह मनाया गया। प्रसिद्ध वेदविद्वान श्री सत्यमित्र शास्त्री, पं० जयप्रकाश आर्य (हरियाणा) डा० विनयप्रताप तथा उपमन्त्री, डा० आशारानी राय आचार्या, (कानपुर) आदि विद्वानों एवं विदुषियों के सारगर्भित भाषण हुये।

—आ० स० छिवलहा जनपद फतेपुर का वार्षिकोत्सव १५ अक्तूबर से १७ अक्तूबर तक मनाया गया। इस अवसर पर कई सम्मेलन आयोजित हुए।

—आ० स० आर्यनगर धूड़ बरेली का वार्षिकोत्सव ९ से १२ अक्तूबर तक ससमारोह मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्र सम्मेलन, धर्म एवं संस्कृति रक्षा सम्मेलन का आयोजन हुआ। डा० वसन्तकुमार शास्त्री, श्रीमती सावित्री शर्मा, आचार्य विश्वबन्धु के प्रभावशाली भाषण से जनता सम्मोहित हुई।

—आ० स० रीवां (म० प्रदेश) का १७ वां वार्षिकोत्सव २० नवम्बर से २३ नवम्बर तक सोत्साह मनाया गया। पं० सत्यदेव शास्त्री (वाराणसी) श्री सियाराम निर्भय (बिहार) कुंवर महीपालसिंह (बलिया) प्रमोदकुमार शास्त्री (मैनपुरी) आदि विद्वानों तथा भजनोंपदेशकों के भाषणों एवं भजनों का जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा। आर्य समाज द्वारा संचालित दयानन्द आर्य विद्यालय के बालकों ने राष्ट्रीयता से ओतप्रोत अनेक रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस अवसर पर आर्य महिला सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती विद्यादेवी ने नारी जागरण पर बल दिया।

—नगर आ० स० साहबगंज गोरखपुर का ४९ वां वार्षिकोत्सव २७ अक्तूबर से ३० अक्तूबर तक ससमारोह मनाया गया। वेदपारायण यज्ञ पं० शिवराज शर्मा के संचालन में हुआ एवं दिनांक ३०।१० को विशाल शोभायात्रा का आयोजन हुआ। इस अवसर पर एक ईसाई परिवार की भी शुद्धि कीगई।

महर्षि दयानन्द की स्वदेश भक्ति

[पृष्ठ ४ का शेष]

एक घटना का वर्णन करते हुए लिखा है कि 'एक दिन का वर्णन है कि ठाकुर उमरावसिंह आवली निवासी अपने पिता और ठाकुर भूपालसिंह के साथ स्वामी जी के दर्शन करने के लिये अलीगढ़ में आये। इस दिन उमरावसिंह के वस्त्र नये ढंग के थे और सब के सब विलायती कपड़े के बने थे। स्वामी जी ने अति प्यार से कहा उमरावसिंह! देखो तुम्हारे पिता कैसे मोटे सादे और अपने देश के बने वस्त्र पहनते हैं। उनका जाति बिरादरी में कितना सम्मान है। क्या तुम इस विदेशी कपड़े के बने नये वेश में विभूषित होकर अपने पिता जी से अधिक संस्कृत हो गये हो?' उमरावसिंह अपने ही देश की वस्तु अपनाने में शोभा है। स्वामी जी का उपदेश उमरावसिंह जी के हृदय में घर कर गया। उन्होंने अपने डेरे पर जा कर वे वस्त्र उतार दिए और पुराने ढंग के स्वदेशी वस्त्र धारण कर लिये।

परानुकरण और अपने प्रति हीन भावना का प्रबल विरोध महर्षि ने किया है प्रार्थना समाजियों का वर्णन करते हुये ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि परन्तु इन लोगों में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। ईसाइयों के आचरण इन लोगों ने लिये हैं अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसके बदले बहुत निन्दा करते हैं। व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भर पेट करते हैं। ब्रह्मा आदि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते। प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई भी विद्वान नहीं हुआ। आर्यावर्ती लोग सदा से मूर्ख चले आ रहे हैं।' इसी प्रसंग में स्वामी जी ने आगे लिखा है कि 'परन्तु उन्होंने अंग्रेजों ने अपने देश का चाल चलन नहीं छोड़ा और तुममें से बहुत से लोगों ने उनकी नकल कर ली है। अनुकरण करना किसी बुद्धिमान का काम नहीं है।' उस समय देश में भ्रम बहुत था और स्वदेश भक्ति भी थी। 'ऋषि महर्षियों के किये उपकारों को न मान कर ईसा आदि के पीछे झुक पड़ना अच्छा नहीं। ब्रह्मा से लेकर पीछे आर्यावर्त में बहुतसे विद्वान हो गये हैं उनकी प्रशंसा न करके यूरोपियन की स्तुति में उतर पड़ना पक्षपात और खुशामद के बिना क्या कहा जाये।' स्वदेश भक्ति और राष्ट्रीयता की भावना महर्षि को वेद की ऋचाओं, स्मृति ग्रन्थों और ऋषि मुनियों के आप्त वचनों से ही उन्हें प्राप्त हुई थी इस सम्बन्ध में उदाहरणार्थ अथर्ववेद ११०-७-३११ का एक मन्त्र यहाँ दे देना पर्याप्त होगा। वह यह है कि 'यदधः प्रथमं संबभूव, सह तत्स्वराज्यमियाय: यस्मान्नान्यत्परमस्ति भूतम्।' अर्थात् 'जब कि कर्म योग प्रजाजन सब से प्रथम संगठित होता है, तब वह स्वराज्य प्राप्त करता है, जिससे श्रेष्ठ दूसरा कोई राज्य नहीं है।'

देश की दुर्दशा पर पीड़ा

आज स्वतन्त्रता के ४० वर्षों पश्चात् आर्यों (हिन्दुओं) की जनसंख्या शनैः शनैः घट रही है। इसका एक प्रमुख कारण है कि हमने जाति से बाहर निकलने का दरवाजा खोल रखा है। अपने ही भाइयों को अछूत कहकर तिरस्कृत किया है और विरोध और वैमनस्य से दरिद्रता को बढ़ाया है। महर्षि को देश की इस दुर्दशा से बड़ी पीड़ा होती थी। एक बार स्वामी जी बरेली में महात्मा मुन्शीराम के पिता के घर ठहरे थे। एक दिन आधी रात को वह जाग पड़े स्वामी जी की व्याकुलता को देखकर वैद्य बुलाने का प्रस्ताव रखा गया इस पर स्वामी जी ने उत्तर दिया कि 'मेरा दुःख औषधि से दूर नहीं होगा, मेरी पीड़ा भारत के परिश्रमी लोगों की दुर्दशा के चिन्तन से चित्त में उत्पन्न हुई है ईसाई लोग कोल भील आदि भारतवासियों को ईसाई बना रहे हैं और उनका पानी की तरह बहाते हैं, परन्तु आर्य जाति कुम्भकरण की नींद में सोई पड़ी है। उनके कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। मैं अब चाहता हूं कि राजों महाराजों को सन्मार्ग पर लाकर जाति का सुधार करूं और जाति को एक उद्देश्य रूपी सुदृढ़ सूत्र में बांध दूं।'

उक्त विचारों से हम देश की दुर्दशा और देशी नरेशों की अवनति तथा स्वजाति की दयनीय स्थिति पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के हृदय के संताप को देख सकते हैं। आज ऋषि के ऋण से उऋण होने के लिए हम उनके राष्ट्रीय विचारों को समझ कर देश को पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न बनाकर चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना की ओर बढ़ सकते हैं। ऋषि के पद चिन्हों पर चलने के लिए उनके निम्न शब्दों से हम प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं कि 'धर्म गुरुओं और सामाजिक नेताओं की असावधानी, प्रमाद और आलस से भावना, भाव और भाषा आदि एकता के चिन्ह बदल जाते हैं। जाति के आचार विचार बिगड़ जाते हैं। रहन-सहन के ढंगों में भेद आ जाता है। यदि इसे सम्भाला न गया तो आर्य जाति परिवर्तन के चंचल चक्र में पड़कर अतिशय दलदली से अपने पूर्व पवित्र स्वरूप को बिगाड़ डालेगी ऐसे समय में तो कड़े हाथों से इनकी चोटियाँ पकड़कर जगाना होगा.. .... यही भावना मुझे, विपत्तियों के कठिन और विकट काल में समाज सुधार के लिये प्रोत्साहित कर रही है।' परमात्मा से यह प्रार्थना है कि हमें सामर्थ्य दे कि हमारे हृदयों में आर्य जाति को जागृति करने की ऐसी उत्कृष्ट इच्छा पैदा हों।

—

आवश्यक सूचना

कृपया अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें

'आर्यमित्र' के निम्न सदस्यों का शुल्क माह नवम्बर ८७ को समाप्त हो गया है। वी० पी० भेजने में ७-५० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क १५ दिन के अन्दर २५) रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी० पी० भेजी जायेगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी० पी० भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट करलें, नम्बर नीचे लिखे हैं। १ जनवरी १९८७ से वार्षिक शुल्क २५) रु० हो गया है।

६३२, ८१३९, ८८५४, ८८५९, ११०६९, ११३६५, ११३६८, १२४५८, १२७६५, १२७७७, १३६५०, १३६५१, १३६५३, १४१११, १४११३, १४११५, १४१२१, १४१२२, १४१२४, १४१२५, १४१२६, १४१२७, १४१२९।

विनीत—
व्यवस्थापक

'हेडमास्टर की आवश्यकता'

सहायता तथा मान्यता प्राप्त आर्य उच्च माध्यमिक विद्यालय के लिए एम० ए०, बी० एड० तथा हायर सेकण्डरी कक्षाओं के शिक्षण का पाँच वर्ष का अनुभव अथवा सेकण्डरी विद्यालयों में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्य करने का पाँच वर्ष के अनुभवी योग्य प्रशासक तथा निष्ठावान आर्य समाजी हेडमास्टर की प्रारम्भिक वेतन १७२० वेतन श्रृंखला १७२०—३३५० में आवश्यकता है। विस्तृत आवेदन मन्त्री, आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर को शीघ्र प्रस्तुत करें।

वेगवान कर दो

देव नारायण भारद्वाज–अलीगढ़

ओं त्वं सुतस्य पीतये सद्योवृद्धो अजायथा : ।
इन्द्र ज्येष्ठयाय सुक्रतो ॥ ऋ० १।१।५।६
उठो मनुज तुम विद्या में वृद्ध बनो ।
ऐश्वर्य युक्त तुम श्रेष्ठ कर्म कर लो ।
तुम बल्लाऐ सकल संसारी भर लो ॥
कर उत्तम अनुष्ठान तुम ज्येष्ठ बनो ।
उठो मनुज तुम विद्या में वृद्ध बनो ॥
धन बल विद्या सकल सशुभकारी हों ।
परोपकार सुवत सुख संचारी हों ।
शुभ उपदेश ईश का तुम इन्द्र बनो ,
उठो मनुज तुम विद्या में वृद्ध बनो ॥
ओं तु वे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिण : ।
न विन्धे अस्य सुष्टुतिम ॥ ऋ० १/१/४/७
प्रभु वस्तु वस्तु में झलक तुम्हारी है ।
कितना विशाल संसार बनाया है ।
अपार वस्तु भण्डार सजाया है ।
वन पर्वत ग्राम नगर फुलवारी है ।
प्रभु वस्तु वस्तु में झलक तुम्हारी है ॥
अत्यन्त पराक्रम इन्द्र तुम्हारा है ।
सबका सन्ताप मिटाने हारा है ।
ईश्वर की महिमा अपरम्पारी हैं ।
प्रभु वस्तु वस्तु में झलक तुम्हारी है॥
स्तुति का प्रभु मान कौन कर सकता है ।
शोभा का वर्ण कौन कर सकता है ।
जग में प्रभु की शोभा विस्तारी है ।
प्रभु वस्तु वस्तु में झलक तुम्हारी है ॥

ब्रह्म-यज्ञ (संध्या) और उसका रहस्य—

(शेष पृष्ठ ७ से आगे)

प्रत्येक छिद्र का मुंह साफ, खुला हुआ और इस योग्य हो जावे कि सुगमता से भीतर का मल बाहर निकल सके । स्नान न करने, अथवा नाम मात्र के स्नान करने से छिद्रों का मुंह मल से बन्द सा रहेगा और भीतर का मल बाहर न निकल सकने से वह भीतर ही भीतर अनेक रोगों के उत्पत्ति का कारण होगा । इस प्रकार विचार करने से पता चला कि प्रत्येक इन्द्रिय की शुद्धि से उसकी नीरोगता बनी रहती है इसलिये अपने सम्बन्ध में करने के लिए मनुष्य का तीसरा कर्तव्य यह है कि वह अपनी इन्द्रियों को शुद्ध रखे । इन्द्रिय के शुद्ध रखने के सम्बन्ध में मनुष्य के इस प्रकार तीन कर्तव्य हैं ।

१–इन्द्रियों को बलवान् बनाना ।
२–इन्द्रियों को यशवाला बनाना ।
३–इन्द्रियों को पवित्र बनाना ।

इन कर्तव्यों के पालन कर लेने से इन्द्रियों अर्थात बाह्य-शरीर के सम्बन्ध में मनुष्य का कर्तव्य पूरा हो जाता है ।

आदर्श विवाह

अमरोहा १३–१२–८७ सौभाग्यवती उर्मिला आर्य, सुपुत्री, श्री धीरेन्द्र कुमार जी आर्य तथा आयुष्मान राजेश कुमार गुप्त, सुपुत्र श्री जगदीश प्रसाद गुप्त, फरीदाबाद का शुभ परिणय संस्कार आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के यशस्वी प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी ने पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया । इस अवसर पर सभा के उप प्रधान विद्वद्वरेण्य आचार्य विशुद्धानन्द जी तथा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी, सभा कोषाध्यक्ष श्री पं० यशपाल आर्य जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के प्रधान तथा मन्त्री श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य आदि अनेकों गण्यमान्य प्रतिष्ठित पुरुषों एवं महिलाओं ने उपस्थित होकर वि० वरवधू को अपना मंगलमय आशीर्वाद प्रदान किया ।

सम्पूर्ण विवाह प्रक्रिया पूर्ण वैदिक निष्ठा के साथ बिना किसी दहेज तथा आडम्बर के सम्पन्न हुई । आर्य मित्र परिवार की ओर से बधाई ।

प्रबन्ध सम्पादक

उत्सव

(१)

——आर्य समाज बसेना मिर्जापुर, रामनगर जनपद फैजाबाद का ५३वां वार्षिकोत्सव दि० ४ नवम्बर से ६ नवम्बर ८७ तक आर्य समाज के प्रांगण में बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ ।

(२)

आर्य समाज कलकत्ता का १०२ वां वार्षिकोत्सव मुहम्मदअली पार्क में (दयानन्द पार्क) दि० १९–१२–८७ से २७–१२–८७ तक समारोह पूर्वक मनाया जायेगा । इस अवसर पर प्रातः ७ से ९ बजे तक ऋग्वेद पारायण बृहद् यज्ञ एवं अपराह्न विविध सम्मेलन तथा सायं ६ से १० बजे तक विभिन्न विद्वानों के उपदेश होंगे ।

रिपोर्ट

केन्द्रीय आर्य समिति तथा आर्य समाज शास्त्री नगर द्वारा दि०–२९–११–८७ को प्रातः ८बजे ग्राम–शेरगढ़ी (शास्त्री नगर) मेरठ में एक विशेष यज्ञ का सामूहिक आयोजन किया गया ।

यज्ञ के उपरान्त उसी स्थल पर रामायण-सीरियल का दूरदर्शन पर आर्य समाज शास्त्री नगर के तत्वावधान में प्रदर्शन दिखाया गया ।

इसके उपरान्त श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान आ० प्र० सभा उ० प्र० श्री धर्मपाल जी शास्त्री एवं श्री मानसिंह जी, प्रधान केन्द्रीय आर्य समिति ने सभा को सम्बोधित करते हुए उपरोक्त हरिजन बस्ती के उपस्थित निवासियों एवं आर्य बन्धुओं को देश की वर्तमान स्थिति से अवगत कराकर सचेत रहने का आवाहन किया । हरिजन भाइयों को अन्तःकरण से हीन भावना त्यागने, हिन्दू समाज से जुड़ने व आपसी भाई चारे के वातावरण को प्रोत्साहन देने की प्रेरणा दी गई ।

अन्त में केन्द्रिय समिति के उपमन्त्री श्री देवदत्त आर्य ने केन्द्रिय आर्य समिति एवं आर्य समाज शास्त्री नगर की ओर से उपस्थित सभी आर्यजनों व हरिजन बस्ती के निवासियों का सामूहिक रूप से आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद दिया ।

सभा मन्त्री

निर्वाचन

आर्य समाज भूड़ बरेली का निर्वाचन श्री बहोरसिंह जी चुनाव अधिकारी ने २९–११–८७ को करवा दिया है जो निम्नलिखित है ।

प्रधान–श्री जगदेव प्रसाद
मन्त्री–श्री सुरेशचन्द्र शर्मा
कोषा०–श्री दयास्वरूप वर्मा

आर्यमित्र साप्ताहिक
नारायणस्वामी भवन ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष 46998 ४१९९९
पंजीकरण सं० एल डब्लू/एन पी. ७५
पौष शुक्ल ८
२७ दिसम्बर रविवार १९८७ ई०

आर्य मित्र

उत्तर-प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के बृहदधिवेशन दिनांक १४ नवम्बर १९८७ को डी० ए० वी० कालेज लखनऊ के विशाल प्रांगण मे एक अखिल भारतीय स्तर पर आर्य कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ था जिसकी रिकार्डिंग की गई थी। सभा कार्यालय मे सम्पूर्ण कवि सम्मेलन की रिकार्डिंग के ३ कसेट ९०) रु० में (प्रति कसेट ९० मिनट का) तथा प्रति कसेट ३०) रु० के हिसाब से उपलब्ध हैं।

इच्छुक महानुभाव आडर देकर अथवा सभा कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर प्राप्त कर सकते हैं।

सभा मन्त्री





सर्वोत्तम हवन सामग्री १४ ०० किलो (बहुरंगे आकर्षक डिब्बा पक)
अतिउत्तम हवन सामग्री ८ ०० किलो (बहुरंगी एम०एम० प्लास्टिक में)
उत्तम हवन सामग्री ६ ०० किलो (बहुरंगी प्लास्टिक में)

निर्माता—प्रभाकर गृह उद्योग

५३/१० नयागंज, कानपुर—१

शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु

❀ आवश्यक सूचना ❀

समस्त आर्यसमाजों जिला उपसभाओ एव शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० की शताब्दी समारोह के अवसरपर आयोजित विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक सामाजिक एव कविसम्मेलन आदि के चित्र (फोटो) तथा सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग (कसेट) जिसमे विभिन्न वाद विवाद प्रतियोगिताएं तथा सम्मेलनो के अंश सम्मिलित हैं एव विशेष रूप से सम्पूर्ण शताब्दी समारोह एव कवि सम्मेलन की वी० डी० ओ० (फिल्म) कसेट के अतिरिक्त शताब्दी में पधारे हुए सन्यासियो विद्वानों उपदेशकों आदि के महत्वपूर्ण उपदेश एव जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह मे भाग लिया और पुरस्कार प्राप्त किए उनके रिकार्डिंग कसेट निम्न प्रकार सभा कार्यालय मे बिक्री हेतु उपलब्ध हैं। जो सज्जन अथवा संस्थाएं इन्हें प्राप्त करना चाहती हैं वह श्री विश्वम्भरदयाल गुप्ता व्यवस्थापक आर्यमित्र ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से सम्पर्क स्थापित कर अथवा आडर देकर प्राप्त कर सकते हैं।

१—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह के ४ वी० डी० ओ० कैसेट—	मूल्य	१००० ०० रु०
२—सम्पूर्ण कवि सम्मेलन के ५ कसेट—	मूल्य	१०० ०० रु०
३—सम्पूर्ण शताब्दी समारोह की रिकार्डिंग कैसेट (कुल संख्या ३०) प्रति कसेट—		२० ०० रु०
४—कलर फोटो (पोस्ट कार्ड साइज) प्रति फोटो—		५ ०० रु०

(बड़ी फोटो भी आडर देकर उपलब्ध कराई जा सकती है)

नोट—जिन शिक्षण संस्थाओं ने समारोह मे भाग लिया एव पुरस्कार प्राप्त किए उन्हें १८ १९ तथा २० अक्टूबर के एक एक दिन के अलग से रिकार्डिंग कैसेट उचित मूल्य पर अलग से मिल सकते हैं।

आर्यसमाज के कार्यक्रम तथा सभा की शताब्दी स्मृति को स्थायी रखने हेतु प्रत्येक आर्य परिवार तथा आर्य संस्थाओं को ऐसे चित्र एवं कसेट प्रचार कार्य में बहुत सहायक होंगे।

[शिक्षण संस्थाओं को २० प्रतिशत कमीशन दिया जायगा]

मनमोहन तिवारी
सभा-मन्त्री

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के लिए नारायणस्वामी आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ के लिए सम्पादक ... (सिक्का दुर्लभ जिसेला) बारदाना, लखनऊ में श्री विश्वम्भरदयाल गुप्ता द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।